

---

---

*Printed by Babu Durga Prasad Manager at,  
Shri Sukhadeo sahai Jain Printing Press  
Dhanmandi, Ajmer.*

---

---

*London Agents*  
PROBSTHAIN & CO.  
Oriental Booksellers,  
41 Great Russell Street, London, W. C. 1.

colleague Mr. Banarsi Das Jain, who had been invited to advise, consulted several other scholars, including Drs. Gune, Belvalkar, and A. B. Dhruva. It was then decided that the meanings of the Prākṛit words should be given in English as well as in Hindī and Gujarātī. The editing and the Gujarātī translation have been done by Swāmī Ratnachandraji, a renowned monk of great literary abilities and reputation, while the Hindī and English translations are by other hands. The expenses have been borne by the S. S. Jain Conference. As Dr. Suali records, the question was debated at the Jain (Śvetāmbara) Conference at Bhāvanagar in 1908. The opinion of Prof. H. Jacobi was asked, and he had suggested the name of Dr. Suali. This Dictionary, however, is not of the comprehensive character then contemplated. It has been confined to Ardha-Māgadhī.

### 3. Ardha-Māgadhī Glossaries and Encyclopaedias:—

Several Jain Sūtras have been published with Prākṛit-Sanskṛit glossaries. The following may be mentioned:—

- I. *Āyāramga (Ācārāṅga-sūtra)* First Śruta-skandha, ed. W. Schubring, German Oriental Society, Leipzig, 1910.
- II. *Fragment der Bhagavatī*, ed. Weber. Legend of Khamdakā. Berlin, 1866-67.
- III. *Specimen der Nāyādhammakahā*, by P. Steinthal, First Chapter, Leipzig, 1881.
- IV. *Uvāsagadasāo*, ed. Hoernlo, Calcutta, 1888-90.
- V. *Ovavāyā (Aupapātika)*, ed. E. Leumann, Leipzig, 1883.
- VI. *Nnāyāvaliyā-suttam*, ed. S. J. Warren, Amsterdam, 1879.
- VII. *Kappa-suttam*, ed. H. Jacobi, Leipzig, 1879.

Mention should be made of the *Abhidhāna-Rājendra*. Some 80 years ago a Jain priest, Rājendra Vijaya by name, conceived



॥ श्रीः ॥

ॐ नमोऽस्तु महावीराय ॐ

सचित्र

# अर्ध-मागधी कोष.



सम्पादक

पूज्यपाद श्री गुलाबचन्द्रजी स्वामी के शिष्य

शतावधानी जैनमुनि श्री रत्नचन्द्रजी महाराज

( लीम्बड़ी सम्प्रदाय ).

भाग १.

श्री श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फरन्स की तरफ से

प्रकाशक

केसरीचंद भंडारी.

राजवाड़ा चौक इन्दौर.



सर्व अधिकार स्वाधीन.

# कोष देखने के नियम ।

( १ ) प्रथम मूल शब्द मोटे टाइप में दिया गया है और उसके बाद उस शब्द का लिङ्ग अथवा जाति दर्शक संक्षिप्त वर्ण दिया गया है । तदनन्तर उस मूल शब्द का संस्कृत प्रातिशब्द दिया है, और फिर उस शब्द के अर्थ गुजराती, हिन्दी और अंग्रेजी भाषाओं में क्रमशः दिये गये हैं । ये अर्थ पूर्ण हो जाने पर मूल शब्द जिन जिन सूत्रों में या ग्रन्थों में प्रयुक्त हुआ है उन २ सूत्रों के या ग्रन्थों के संक्षिप्त नाम और जिस जगह वह शब्द आया है उस गाथा ( श्लोक ) या अध्ययन आदि का निर्देश अङ्कों द्वारा किया गया है, जिनका पूर्ण खुलासा कोषान्तर्गत सूत्रों की सूचि से तथा व्याकरण के सक्षेप की सूचि से हो सकता है । कई शब्दों के साथ सूत्रों के प्रमाण-वाक्य ( अवतरण ) भी दिये गये हैं । जिन शब्दों के अनेक अर्थ होते हैं उनके भिन्न २ अर्थ १, २, ३, इत्यादि अङ्कों द्वारा क्रमशः बताये हैं ।

( २ ) जहां कहीं मूल शब्द अर्थान्तर की दृष्टि से लिङ्गान्तर में प्रयुक्त हुआ है, वहां उस अर्थ के साथ जाति का निर्देश भी कर दिया है ।

( ३ ) सामासिक शब्द मूल शब्द के पेटे में दिये हैं और उन्हें भी मूल शब्द के समान मोटे टाइप में रखकर उनके पूर्व यह—चिन्ह किया है और इसी प्रकार सामासिक संस्कृत प्रातिशब्दों को भी ऊपर निर्दिष्ट चिन्ह के साथ रक्खा है ।

( ४ ) धातु को पहिचानने के लिये उसके पूर्व यह ✓ चिन्ह किया है और उसके जितने रूप प्रायः उपलब्ध हो सके, वे सब लकारादि क्रम से दिये हैं अथवा विशेष प्रातिपत्ति के लिये तत्सङ्गकार का निर्देश भी किया गया है जैसे विधि लकार, आज्ञार्थ लकार ।

( ५ ) जो मूल शब्द अर्ध-मागधी का नहीं है किन्तु पैशाची आदि अन्य सर्वग भाषाओं का है, उसके पूर्व यह \* चिन्ह किया है और ऐसे शब्दों के संस्कृत-प्रतिरूप उपलब्ध न होने के कारण उनका अनुवादमात्र संस्कृत में दिया है, जैसे — \* अगड ( रूप ) आदि ।

( ६ ) जिस मूल शब्द का संस्कृत पर्याय तो यों का त्यों हो सकता है किन्तु वह पर्याय संस्कृत-साहित्य में प्रसिद्ध नहीं है अथवा पूर्व काल में प्रसिद्ध होगा और अब प्रचलित नहीं है, ऐसे संस्कृत पर्यायों को पहिचानने के लिये उनके पूर्व यह : चिन्ह लगाया है, जैसे—अवलुय ( \* अवलुक-नौकादण्ड ), अगड ( \* अगत-अज्ञात ), अभिसरमाण ( \* अभिसरमाण-अभिसरत् ), अवचरोचित्ता ( \* अव्यपरोपिता-अव्यपरोपण ) आदि । कहीं कहीं मूल शब्द और संस्कृत-पर्याय में बृहद् अन्तर देखने में आता है, जैसे—फास ( स्पर्श ), नाग ( ज्ञान )

---

---

प्रबन्धकर्त्ता बाबू दुर्गाप्रसाद के प्रबन्ध से श्रीसुखदेवसहाय  
जैन छापाखाना धानमण्डी अजमेर में मुद्रित.

---

---

the region to the east and west of Meru remains in darkness, and when the sun shines over the Mahāvīdeha Kṣetia the region of Bharata Iravata Kṣetra remains in the dark. The lighted part and the dark part of the earth increase and diminish according as the sun changes his position from the inner to the outer circle and from outer to the inner circle. जं० पं० ७, १३५,—पक्ख. पुं० ( -पक्ष ) कृष्णपक्ष, अंधारीउं कृष्णपक्ष, the dark half of a month सू० पं० १३;

अंधार. पुं० ( अन्धकार ) अंधार अंधेरा. Daikness. ओघ० नि० २७०;

अंधारिय. त्रि० ( अन्धकारित ) अंधकारमय करेला अंधकारमय किया हुआ. Darkened. सु० च० २, ५६६;

अंधारूव. त्रि० ( अन्धरूप ) अवयव शून्य-आकृति; लोडसारूप अवयव रहित आकृति Without limbs; shapeless “ तए णं सामियादेवी तयारूवं हुंठं अंधारूवं पासइ ” विवा० १, १;

अंधिय. पुं० स्त्री० ( अन्धिक ) चार इन्द्रिय वाला जीव A living being having four sense-organs. पक्ष० १; जीवा० १; भग० १५, १; उत्त० ३६, १४५;

अंधिल्ल. त्रि० ( अन्ध ) जन्मांध; जन्म से अंधा. Born blind. पिं० नि० ५७२;

अंधिल्लग. त्रि० ( अन्धक ) जन्म से अंधा. Born blind परह० १, १; २, ५;

अंध. पुं० ( अम्ब ) जे परमाधामी नारकीने दुखे अने जिये उछाले ते अंध; ५६२ परमाधामी माने अंध जो परमाधामी नारकी को मारे और ऊँचा उछाले वह; पंद्रह परमाधामी में से एक One of the 15 Paramādhāmīs (tormentors) who torture beings in hell and toss them aloft. भग० ३, ७; सम० १५;

अंध. पुं० ( आम्र ) आंआनु आउ, आओ आम वृक्ष, आम A mango tree राय० ४; पक्ष० १; आया० २, ४, २, १३८; ठा० ४, १, ओघ० नि० ७७०, निर्सी० १५, ५; ( २ ) डेरी; आंआनु इल आम्रफल, आम a mango पिं० नि० १६६, असुजो० ६४; भग० ८, ३; १६, ६; २२, २; दस० ७, ३३; आया० २, ७, २, १६०; ( ३ ) डेरीना गोठ-लातु धोखु आमों की गुठलियों के धोवन का पा. a drink prepared by washing the mango stones भग० १५, १;—आराम पुं० ( -आराम ) आश्रयन; आंआनु वन आम्रवन, आमों का वन. a grove of mango trees निर० ३, २,—कृण्ण. पुं० ( -कृण्णक ) आंआना इल-नो गोटले; डेरीना गोटले आम की गुठली. a mango stone. भग० १५, १;—खुज्ज. न० ( -कुज्ज ) आंआना इलनी पेड़े वक्र धारे स्थिति करती ते, आसननो अंध प्रकार आम्रफल की भांति वक्राकार स्थिति करना; आसन का एक प्रकार a bodily posture with a curve like that of a mango. प्रव० ५६३; पंचा० १८, १७;—खुज्जय. पुं० ( -कुज्जक ) आंआना आउनी पेड़े वाक्रे वणी गथेल-कुथडे. आम्र के मूद के समान जो टेढ़ा हो गया हो-कूबदा. one who is bent like a mango tree: a hump back भग० १, १,

सचिव अर्ध-मागधी कोष

त्वरितं किं कर्त्तव्यं, विदुषा संसारसंततिच्छेदः ।  
किं मोक्षतरोर्बीजं, सम्यग् ज्ञानं क्रियासहितम् ॥  
किं पथ्यदनं धर्मः, कः शुचिरिह यस्य मानसं शुद्धम् ।  
कः पण्डितो विवेकी, किं विषमवधीरिता गुरवः ॥

जेभां आंआना पक्षवनी रचना विशेष करवा-  
भां आवे अेलुं अेक नाटय; अत्रीस प्रकारना  
नाटकभांनुं अेक. जिसमे आम के पत्तों की  
रचना विशेष रूप से की जाय ऐसा एक नाट्य;  
बत्तीस प्रकार के नाटकों में से एक प्रकार का  
नाटक. One of the thirty-two  
dramas characterised by the  
decoration of the leaves of the  
mango-tree राय० ६४;

**अंबय.** पुं० ( आम्रक ) डेरी; आंआनुं ३७  
आम. A mango उत्त० ३४, १२; सु०  
च० ११, १०, ( २ ) अे नामनु अेक माणुस  
इस नाम का एक पुरुष. name of a man  
अणुजो० १३१;

**अंबर.** न० ( अम्बर ) आकाश आकाश The  
sky. भग० २०, २; कप्प० ३, ४६; ( २ )  
वस्त्र कपड़ा; वस्त्र a cloth परह०  
१, १, पञ्च० २; ( ३ ) उभरनु अंड  
गूलर का वृक्ष. a kind of tree  
bearing fig-like fruit भग० २२, ३;  
—तल न० (—तल) आकाशनुं तणु-सपाटी  
आकाशतल the vault of the sky.  
नाया० १; ६; भग० ३, २, कप्प० ३, ३६,

**अंबरस.** न० ( + अम्बरस—अम्बर ) आकाश  
आस्मान The sky भग० २०, २,

**अंबरिस.** पुं० न० ( अम्बरीष ) लुहारनी  
डोडनी लाडो-लुहरी. लुहार की भट्टी A fur-  
nace in a blacksmith's shop  
जीवा० ३, (२) पदर नति पैडी नील नतना  
परमाधामी, डे अे नारडीना शरीरना डटडा-  
अंड डेरी लाडोमा पकाववानुं डाम्र डरे छे  
पंद्रह प्रकार के परमाधामियों में से दूसरे  
प्रकार का परमाधामी, जो नारकियों के शरीर  
के टुकड़े कर भट्टी में पकाने का काम  
करता है the second of the  
fifteen kinds of Paramādhāmīs

(torturers) who cut into pieces  
the beings living in hell and  
roast them in the furnace  
भग० ३, ७;

**अंबरिसि.** पुं० ( अम्बपिं ) लुओ। “अंबरिन”  
शब्दने नीले अर्थ देखो “अवरिस” शब्द  
का दूसरा अर्थ. vide “अवरिस ” २  
सम० १५;

**अंबरीस.** पुं० न० ( अम्बरीष ) लुओ। “अंबरिस”  
शब्द देखो “अंबरिस” शब्द. vide “अव-  
रिस.” जीवा० ३,

**अंबलसाग.** पुं० ( अम्बलसाक ) अेक नतनी  
वनस्पति एक जाति की वनस्पति A kind  
of vegetation भग० २१, ७;

**अंबसालवण.** न० ( आम्रशालवन ) आमल-  
डडपा नगरीना ईशान भुआमां आवेलुं आंआनुं  
वन आमलकल्पा नामक नगरी के ईशान कोन-  
का आम का वन A grove of mango-  
trees situated to the north-east  
of the city named Āmalakalpā  
“ आमलकल्पाए शयरीए बहिया उत्तरपुर-  
तिथिमे दिसीमाए अंबसालवणे याम चेंइए  
होत्था, पोराणे जाव पडिरुवे ” राय० ४;  
निर० ३, २,

**अंबा** स्त्री० ( अम्बा ) माता; जननी मा,  
माता; जननी A mother हे अंब. स०  
प्र० ए० नाया० १४, ( २ ) नेमनाथना  
शासननी अधिष्ठात्री देवी. नेमनाथ तीर्थ-  
कर के शासन की अधिष्ठात्री देवी. the  
presiding goddess of Nenn-  
nātha's cult प्रव० ३७८,

**अंबाडग** पुं० ( आम्रातक ) अयाडनुं अंड;  
अडुभीअवाणा वृक्षनी अेक नत. बहुत  
बीज वाले वृक्ष का एक जाति A kind  
of tree the fruit of which is  
full of seeds. भग० २२, ३; पञ्च० २,



अणुत्त० ३, १; अणुजो० ६४; १५४; ( २ )  
न० अम्बाडानुं कृणु उक्त वृक्ष का फल  
fruit of Ambādā tree आया० २,  
१, ८, ४३, ( ३ ) अम्बाडाना कृणु धोवण  
—पाणी उक्त वृक्ष के फल का धोवन-पानी  
water in which Ambādā fruit  
has been washed भग० १५, १;  
—पेसिया. स्त्री० (—पेशिका ) अम्बाडानी  
पेशी—डातणी बहुवीजकवृक्ष का टुकड़ा. a thin  
cutting of a tree named Ambādā  
दसा० १०, ५;

अंबालिया. स्त्री० ( आम्लिका ) आंयणी  
इमली A tamarind tree भग० १८, ६;

अंबावल्ली. स्त्री० ( आम्बलवल्ली ) आटास  
वाणी अक्ष वेद-लता खट्टे रस वाली एक  
वेल-लता A creeper having acid  
juice पञ्च० १;

अंबिया. स्त्री० ( अम्बिका ) अम्बिका—पायभा  
वासुदेवनी माता पाँचवे वासुदेव ( सुदर्शन )  
की माता का नाम Name of the mo-  
ther of the fifth Vāsudeva सम०  
अंबिल न० ( अम्बिल ) आयम्बिल; तपने  
अक्ष प्रकार आयम्बिल, तप का एक प्रकार  
A mode or species of austerity,  
Āyambila प्रव० २०६;

अंबिल. न० ( अम्बिल-अम्बला ) अक्ष लतनी  
हरी वनस्पति एक प्रकार की हरी वनस्पति  
( अम्मीखंडी, पञ्जाबी ). A kind of  
green vegetable. पञ्च० १;

अंबिल. पु० ( अम्बल ) आटे रस, अटास  
खट्टा रस; खटाई Acid juice; acidity  
मम० २२; ( २ ) त्रि० अटास वाणु, आटु-  
खट्टा; खटाई वाला acid, having sour  
juice. भग० २, १; ११, ११; २०, ५;  
दस० ५, १, ६७; जीवा० ३, १, पञ्च० १;  
आया० १, ५, ६, १८; २, १, ७, ४१; ठा० १,

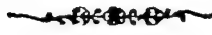
१; उत्त० ३६, १८; नाया० १; पि० नि०  
भा० ८३; ज० प० २, ३८; अणुजो० ३१;  
—उद्गम. न० (—उदक) कंठ जेयुं अत्यन्त  
आटु पाणी कांजी के समान अत्यन्त खट्टा  
पानी water resembling gruel,  
very acid in taste पञ्च० १;—णाम.  
न० (—नामन् ) नामधर्मनी ८३ प्रकृति-  
मान्नी अक्ष, जेना उदयथी ज्वने अटास  
वाणुं शरीर भजे-जेम आंयणीना ज्वने  
भज्यु छे नामकर्म की ६३ प्रकृतियों में से  
एक प्रकृति, जिसके उदय से जीव को खटास  
वाला शरीर प्राप्त हो—जैसे इमली का जीव.  
one of the 93 varieties of  
Nāma-Karma as a result of  
which the soul has to bear  
acidity in the body; e g the  
life in a tamarind tree क० गं०  
१, ४१; —रस. पुं० (—रस ) आटे रस  
खट्टा रस. acid juice; acidity. भग०  
८, १;

अंबिलिआ. स्त्री० ( आम्लिका ) आंयणीनुं  
अक्ष इमली का वृक्ष. A tamarind tree.  
ज० प० ३;

अंबु. न० ( अम्बु ) पाणी; ज० पानी.  
Water ओव० ३८, —तथंभ. पुं० (—स्तम्भ)  
पाणीने रोकवानी अक्ष कृणा; ६४ कृणाभांनी  
१३ भी कृणा पानी को रोकने की एक कला,  
६४ कलाओं में से १३ वाँ कला the art  
of stopping a flow of water;  
the thirteenth Kalā or art  
ओव० ४०;—भक्ति. त्रि० (—भक्तिन् )  
पाणी उपर ज्वनार पानी के आधार से  
अथवा पानी के ही द्वारा जीने वाला living  
on water भग० ११, ६; निर० ३, ३;  
—वासि. त्रि० (—वासिन् ) पाणीभां  
रहेवा वाणे पानी में रहने वाला, residing



# अर्पणपत्रिका ।



धर्म-धुरंधर प्रवर-पांडित पूज्यपाद श्रीगुलाबचंद्रजीस्वामी  
तथा तल्लघुभ्राता महाराजश्रीवीरजीस्वामी ! आप  
बन्ने सहोदरोप घणी न्हानी वयमां प्रवज्या अंगीकार  
करी शास्त्रामृतनो अपूर्व आस्वाद लीधो अने आ  
चरणरज सेवकने दीक्षित करी, विद्यानो मधुर रस  
चखाड्यो, शास्त्राभ्यासमां घणी सहाय्य आपी,  
म्होटो उपकार कर्यो छे, एटलुंज न्हो पण  
शासनोपयोगी साहित्यविकासना कार्यमा  
पण आजसुधी सहाय आपता रहो छो,  
तेथीज आ सेवक कोषनिर्माण जेवा  
विकटमार्गमां चालवाने समर्थ  
थयो छे अने तेनो पार पाम्यो  
छे, ते सर्व आपनी कृपानुं  
फळ छे एटला माटे आ-  
भारवश आ सेवक धर्म-  
साहित्य अने भाषा  
साहित्यना अंग-  
रूप आ पुस्त-  
क अपना  
चरण मां  
अर्पण  
करे  
छे.

रत्नचंद्र.

food contains matter with life in it. " आजीवियसमयस्स णं अयमहे पयस्सते अकसीणपडिभोइणो सम्बसत्ता " भग० ८, ५;—महाणसिय. पुं० (—महानसिक—महानसमन्नपाकस्थानं तदाश्रितत्वाद्वाऽन्नमपि महानसमुच्यते; ततश्चाक्षीणं पुरुषशतसहस्रेभ्योऽपि दीयमान स्वयमभुक्तं सत् तथाविधलब्धिविशेषादनुदितं, तच्च तन्महानसं भिक्षालब्धं भोजनमक्षीणमहानसं तदस्ति येषां ते तथा ) ७० लब्धिना प्रभावथी हुणरो भाणुसेने नभाडे तो पणु पोते न आय त्यां सुधी अन्न पुटे नहि तेवी लब्धि वाणे भाणुस-साधु. जिस लब्धि के प्रसाद से जब तक स्वयं कुछ न खाय तब तक हजारों मनुष्यों को जिमाने पर भी भोजन न खुटे ऐसी लब्धि वाला मनुष्य—साधु. a person whose store of food is not exhausted, even though he feeds thousands of men, until he himself has not taken it, by virtue of a particular Labdhi or spiritual acquisition. प्रव० १५१८; ओव० १६,

अकसीणमहाणसी. स्त्री० (अक्षीणमहानसी) ७०नाथी थोडा अन्नभा हुणरो भाणुसेने नभाडी शकाय तेवी लब्धि. थोड़े से अन्न में हजारों मनुष्यों को भोजन करा सकने वाली लब्धि A spiritual attainment by which thousands of men can be given food from a small quantity of it. प्रव० १५०६;

अकसीरमहुसप्पिय. पुं० ( अक्षीरमधुसप्पिक ) दूध, घी आदि वर्जनार—अलिग्रह धारी साधु दूध, घी आदि का त्यागी साधु An ascetic abstaining from milk, ghee etc. परह० २, १,

अकखुअआआरचारिस्स. पुं० ( अकखुआरचारित्र—अकखुआरमतिचारिप्रतिहतं स्वरूपं चरित्रं येषां ते तथा ) अतिआर रहित आरित्र पाणनार; अप्पंडित आरित्र पाणनार. अतिचार रहित चारित्र पालने वाला, अखडित चारित्र पालने वाला One who observes unbroken right conduct. वव० ३, ३;

\*अकखुडिअ त्रि० ( स्वलित ) डेस लागेल; आभडेल. ठुकराया हुआ Obstructed; stumbled. सु० च० ४, २२६;

अकखुद्ध. पुं० ( अकुद्ध ) गंभीर—उदार—दयालु श्रावक; श्रावकना अेडवीस गुणुमानो पहेलेो गुणु उदार—गंभीर—दयालु—श्रावक; श्रावक के इक्कीस गुणों में से पहिला गुण A kind and generous Śrāvaka; the first of the 21 qualities of a Śrāvaka or Jaina layman पंचा० ७, ४, प्रव० १३७०;

अकखुपुरी स्त्री० ( अकुपुरी ) अे नामनी अेड नगरी, डे न्यां सूर्यनी अअमहिपीतरीडे उत्पन्न थवानी सूर्यप्रल गृहस्थनी सुरप्रला आदि पुत्रीअो रहेती हुती एक नगरी का नाम, जहा कि, सूर्यप्रभ गृहस्थ की सूरप्रभा आदि कन्याएं रहती थीं और जो सूर्य की पटरानो होनेवाली थीं The name of a othcity where Sūriprabhā and other daughters of Sūryapiabha were living destined to become the crowned queens of the Sun god नाया० ४०

अकखुभिअ त्रि० ( अकुभित ) क्षोभ न पाभेक्ष क्षोभ रहित. Undistracted; unagitated " अतथे अणुविग्गे अकखुभिअ " उवा० २, ६६, नाया० ६,

अकखेत्त न० ( अकखेत्त ) आर नगीन; पाडने



अवसकरण. न० (अवप्वकरण) पाछा ७० पुंते पीछे जाना. Act of following; pursuit. पंचा० १३, १०;

अवसक्कि त्रि० (अवप्वक्किन्) दूर रहने वाला, पीछे हटने वाला Remaining at a distance; retreating backwards सूय० २, ६, ६,

अवसन्न. त्रि० (अवसन्न) निमग्न, तल्लीन थयेला; डुबी गयेला निमग्न; तल्लीन; डूबा हुआ. Plunged in, absorbed in, drowned in उक्त० १३, ३०, ३२, ७६;

✓अवसप्प. धा० I. (अप + सृप्) दूर भागी ७० पुं, सट्टी ७० पुं. दूर भग जाना; सटक जाना. To escape, to run away अवसप्पंति. सूय० १, ३, २, १४;

अवसप्पि. त्रि० (अवसप्पिन्) छोड़ीने भागी- ७० तार; छोड़कर भाग जाने वाला (One) who abandons and flies away. "अपडिन्नस्स लवावसप्पिणो" सूय० १, २, २, २०;

अवसप्पिणी. स्त्री० (अवसप्पिणी) ६१ कोडि कोडि सागरोपम प्रमाण उतरतो कोडि; समये समये ६१ कोडि ६१ कोडि आरापरिमित कोडि- विभाग दस कोडिकोडि सागरोपम प्रमाण काल, जिसमें हर समय अवनति ही होती रहती है वह छ आरा परिमित कालविभाग. The æon of decrease, measuring six Āiās; the time of descent equal to ten Kodākodī Sāgaropamas, a Kodākodī=(a crore x a crore). भग० ३, २, ५, १;

अवसुय. त्रि० (अपसद) तु० ७. हलका, तुच्छ. Mean; low; base ठा० ४, ४;

अवसवस त्रि० (अपस्ववस) परवश, स्वतंत्रता रहित. परवश, परार्थीन Not free; dependent. नाया० १६; १६;

अवसव्व. न० (अपसव्व) ग्रहणी गतिविशेष. ग्रहों की गतिविशेष. A particular kind of the motions of the planets जीवा० ३, ३;

अवसह पुं० (अवसथ) धर; आश्रय, आश्रम. घर, आश्रय; आश्रम A place of shelter, a house, an ascetic's abode. उक्त० ३२, १३; परह० १, १;

अवसाण. न० (अवसान) छेडा, अंत; पर्यवसान; समाप्ति. पर्यवसान, अन्त, समाप्ति. End, conclusion पिं० नि० ११३; ओघ० नि० भा० ४५, ओघ० नि० ७६०; ओघ० ३१; जीवा० ३, ४, विशेष० ८८, अणुजो० १२८, निसी० २०, ११, नाया० १; प्रव० १३४८; कप्प० ४, ६२;

अवसिद्धंत. पुं० (अपसिद्धान्त) अपसिद्धांत; असत्य सिद्धांत, असत्य सिद्धान्त A false principle or doctrine विशेष० २४५७, ✓अवसीअ धा० I (अव+पद्) सीढ़ीपुं; डलेश पाभवे। दुखी होना, क्लेश पाना. To be afflicted, to feel pain.

अवसीअद उक्त० २७, १५,

अवसेस. पुं० (अवशेष) आधीनुं, शेष रहलुं; पधेलुं. शेष रहा हुआ, बचा हुआ. A remnant भग० ३, १; ५, ८, ६, ३, ४; ७, ६; १२, ६, २०, ८, २४, १, २०; नाया० १, ५, ८; १६, विवा० ६, वव० २, ५; ओघ० ३४; सम० प० २३१; उक्त० २६, २०, वेय० २, १२; जं० प० २, ३३; ५, ११७; राय० ७३; ठा० ७, उवा० १, १६; प्रव० ८६६;

अवसोद्विय. सं० कृ० अ० (अवशोध्य) दूर करीने; परिहरीने. दूर करके. Having removed or abandoned. "अवसोद्विय कंट्यापहं" उक्त० १०, ३२;

# INTRODUCTION.

---

## 1. Need and Value of an Ardha-Māgadhī Dictionary:—

All those who have occasion to study the ancient scriptures of the Jains will welcome this Dictionary. Especially will this be true of laymen who are not deeply learned in the ancient language of the Jain church, and also of those who are starting the study of Ardha-Māgadhī, whether for the purposes of philology, of philosophy, or for the general history of Indian thought and religion. Such have had to depend on Commentaries and detached Glossaries dealing each with one particular text. A further justification for the enterprise lies in the hope that it may furnish useful material for a more comprehensive Prākṛit Dictionary embracing all the known dialects of the Middle stage of the Indian language, which has come down in various forms from Vedic ages to the Indo-Āryan languages of to-day. The spelling of MSS. varies and in order that a student or editor may be able to see what forms are found in other passages and are recognised as correct he needs a Dictionary with references to the texts. That is what this book proposes to supply for Ardha-Māgadhī. Further study may lead to the correction of many forms, but it is to facilitate such study that this work has been undertaken.

## 2. Inception and Compilation of the Dictionary:—

In 1912 Dr. Luigi Sualì announced his intention of preparing a Prākṛit Dictionary, ( Z D M G 1912-p. 544 ) Mr. Kesarichand Bhandāri of Indore had sent a list of words to Dr Sualì, who returned it when his work was interrupted by the Great War. Mr Kesarichand Bhandāri then persuaded a Jain priest Śatāvadhānī Pandit Śrī Ratnachandrajī to take up the work of making a Dictionary of the Jain Prākṛits. The Sūtras were indexed with the assistance of three other priests. For this they used their own MSS., and Bāluchar printed texts ( *see below* ). In 1920 my pupil and

the idea of preparing an encyclopaedia of Jainism. After 22 years' work in collaboration with several disciples he brought out the first volume of the *Abhidhāna Rājendra* in 1910. Since then four more volumes have appeared, the last word being *Bhola*. One or two more volumes are expected to complete the work.

Each Prākṛit word is followed by its Sanskrit equivalent, meanings in Sanskrit, reference to the text, and a discussion of the various aspects of the word with quotations from other works. The size and cost (each volume 1000 pages for Rs. 25) make it a work of reference for libraries rather than a student's dictionary. The introduction contains Hemacandra's Prākṛit Grammar with his commentary. In the sketch of the declensions, all possible forms are given, whether they occur in literature or not. Thus about 50 forms of the Ablative singular of *yushmad* are catalogued, though hardly any of these occur in AMg. literature. This Encyclopaedia puts together under each head what is to be found in the original texts and in the commentaries.

#### 4. Texts —

For the general student without an inside knowledge of the Jain Scriptures it may be useful to mention the AMg texts which have been published.

(a) *BĀLUCHAR TEXTS* — R B Dhanpati Singh of Bāluchar, Murshidabad District (Bengal) brought out an edition of the AMg. canon with a Sanskrit commentary and Gujarātī translation, printed at Benares, Bombay, and Calcutta, 1875-1886. Hoernle criticised this series as paying "no regard whatsoever to textual or grammatical correctness". The series was presented free to Sādhus, Jain temples, and several libraries.

(b) *JAINĀGAMODAYA TEXTS* — More scholarly is the series brought out by the Jaināgamodaya Samiti, Bombay, 1910-1920. The volumes are printed in MS form, i. e., on loose leaves

tied in a bundle. There is a Sanskrit commentary and some variant readings in footnotes.

(c) *HYDERABAD SERIES*.—AMg Texts with a Hindī translation prepared by a Jain priest, Śrī Amolak Rikhi; printed at the expense of a rich Jain patron, Hyderabad (Deccan) 1919–1920, in MS. form, and distributed free to Sādhus and libraries. The text is not free from errors.

Besides these, of which the second series is much the best for students of the language, there are various editions of the more popular works such as the Kappa, Uttarajjhayaṇa, Dasaveyāliya, etc.

In Section 3 above have been enumerated seven texts published by European scholars with vocabularies. To these may be added four without vocabularies:—

VIII. *Āyālaṃga*, ed. H. Jacobi, Pali Text Society, 1882.

IX. *Anuttarovavāiya*, ed. L. D. Barnett, Oriental Translation Fund, Vol. XVII. London 1907 (appendix to Translation of *Antagaḍa* ).

X. *Dasaveyāliya*, ed. Leumann in Z. D. M. G., Vol. 46.

XI. *Uttarajjhayaṇa* ed. Jarl Charpentier, Uppsala, 1922.

## 5 Translations.—

The Gujarātī translation of the whole Canon in the Bāluchar series and the Hindī translation in the Hyderabad edition have been mentioned above. In English there are Jacobi's in the "Sacred Books of the East" Series, ( Vols XXII, XLV ), Hoernle's *Uvāsagadasāo*, and Barnett's *Antagaḍadasāo* and *Anuttarovavāiya*.

## 6. Grammars and Readers :

*Ardha-Māgadhi* ( or *Ārsha* ) grammar is expounded by the Prākṛit grammarians. The most important are those of Hemacandra in India and of Pischel in Europe. A sketch of the grammar, which



has been prepared by Mr. Banarsi Das Jain, M. A., is appended to this introduction. Mention may also be made of an Ardha-Māgadhi Reader by the same scholar, which is being published by the University of the Punjāb.

## 7 Material included in this Dictionary :

About 50,000 words have been collected by indexing 49 works. These include 11 Angas, 12 Upāṅgas, 7 Paṇṇas, 6 Chedasūtras, 4 Mūlasūtras, the Nandīsutta, the Anuogadāra, and the Oghanir-yukti. That is nearly the whole of the Śvetāmbara Canon and all important supplementary works.

## 8. History and peculiarities of Ardha-Māgadhi :

The Language of the Jain Sūtras is called Ardha Māgadhi. The Sūtras state that the Blessed Mahāvīra preached the Law in that language, and regard it as the basic language from which others are derived. The Indian Grammarians call the language of the Sūtras “Ārsam,” i.e. the language of Rishis.

Pischel in his Prakrit Grammar, §16, quotes the following passages :—

Samavāyaṅga-sutta 98 Ovavāiya-sutta 56 Pannavanā-sutta 59. Hemacandra I. 3, IV. 287. Premacandra Taikavāgīśa's commentary on Daṇḍin's Kāvyaḍarśa I 33. Namisādhu on Rudrata's Kāvyaḷamkāra 2. 12. Vāgbhata's Aḷamkāratilaka. I. 1.

From these passages Pischel shows (§17) “that Ārṣa and Ardhamāgadhi are identical, and that according to the tradition the language of the old Jaina-suttas was Ardha-Māgadhi, and indeed as Hemacandra's example from the Dasa-veyāliya-sutta (633-19) shows, not only prose but also Poetry.”

Why was it called Ardha-Māgadhi? The chief characteristics of Māgadhi are *rasor laśau, la* and *śa* instead of *ra* and *sa* and *e* in the nom. sing. masc.; thus *Rāmo* becomes *Lāme*. Ardha-Māgadhi



retains *ra* and *sa*, but has the nom. masc. in *e*; *Mahāvīre* except in poetry, where *o* is frequently found.

Thus Ardha-Māgadhī has some of the peculiarities of Māgadhī but not all. This is the explanation of the name "Half-Māgadhī" given by Abhayadeva on *Samavāyaṃga* p. 98 and *Uvāsagadasāṃ* p. 46. (Pischel, *Prākṛit Gr.* §17.)

In poetry the language differs somewhat from that of prose. Nominative singular in *-o* is frequently found instead of *e*. The AMg. form *milakkhu* (Skt *mleccha*) is found only in prose; poetry has *meccha* like other Prākṛits. Some of these differences have been attributed to translation from Sanskrit originals.

The metrical works have also a number of peculiarities common to Māhārāshtrī, and this form of the language has been described as a mixture of Māhārāshtrī and Māgadhī. The later Jain writings are in a form of Māhārāshtrī tinged with Ardha-Māgadhī. In this change of dialect we may see a trace of the spread of Jainism towards the South-West.

Where did Ardha-Māgadhī originate?

The oldest Sanskrit work on poetics, ascribed to Bharata, mentions (17 48) Ardha-Māgadhī as one of the seven languages, the others being Māgadhī, Āvantī, Prācyā, Śaurasenī, Bāhlikā and Dākṣiṇātyā. In the Drama, according to the same authority, it is the language of servants, Rājputs and guildmasters (śresthinām). In the MSS. of the Dramas, however, this statement is not borne out. The monk Jīvasiddhi in the *Mudrārāksasa*, and Kṣapanaka in the *Prabodhacandrodaya* are shown as speaking Māgadhī.

Nevertheless in the fragments of Buddhist plays found in Central Asia, and ascribed to Aśvaghoṣa, the learned editor Professor Lüders would recognise some passages of Old Ardha-Māgadhī.

In the Southern dialect of Aśoka's inscriptions we find *sa* and *ra* combined with nom. sing. in *e*.

Aśoka's Eastern dialect has *la* for *ra* e *q* *lājā* for "king", so that we may conclude Ardha-Māgadhi was not the language of Patna in the Mauryan period.

Exactly when and where what we call Ardha-Māgadhi arose remains a question for investigation. It seems probable that its original home was not very far to the West or perhaps to the South West of ancient Magadha.

During the Mauryan empire it is likely that the Eastern language of Patna spread further to the West, at least in palaces and bazars though not in villages. When the Mauryan empire declined, the use of the Eastern idiom probably contracted, when in later times the central power had its centre of gravity further West, the Śaurasenī form of speech would press further down the Ganges valley. Such movements of the prevailing literary dialects would make it difficult to locate a particular form of language, even when the exact date was given, a circumstance that occurs but rarely.

According to tradition Mahāvīra taught in Ardha-Māgadhi, and his words are recorded in that language. According to tradition again Gautama Buddha taught in Māgadhi, while his words are recorded not in Māgadhi but in Pāli. Yet both are represented as contemporaries, and associated with the same part of the country.

If both Teachers used the same language, perhaps an old form of language, resembling Ardha-Māgadhi, spoken round Benares, between the Śaurasenī and the Māgadhi countries, the literary language of either church must have changed before the extant scriptures were recorded in writing. When such changes took place, and how great they were, it would be hardly possible to determine.

Ardha-Māgadhi, as we have it, is (like Pāli) more archaic than the Dramatic Prakrits. It agrees with Māgadhi in having the Nom. sing. masc. in *e*; the use of gen. sing. *tava*, past participles

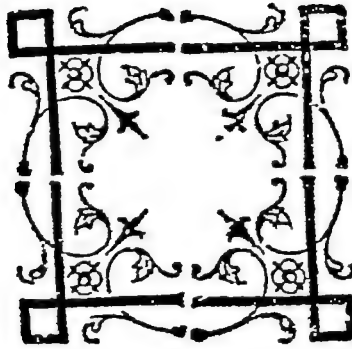
in *Ḍa* for *Ṭa* after roots in *ṛ* (but not always); *ga* for *ka*, "*Asoga*"; but this is rare in *Māgadhi*.

It differs markedly in retaining *ra* and *sa*. *Ardha-Māgadhi* differs in many respects from *Māhārāstri* e. g. locative in *msi*; (*M.* has—*mmi*) dative in *ttāe*, infinitives in *ttae*, *ittae*, gerunds in *ttā*, *ttāṇam*, *ccā*, *ccāṇam*, and so on.

A clearer view of the structure of the language is given in Mr. Banarsi Das' sketch of the grammar appended herewith. This is based on forms found in the texts, not merely on the theory of the grammars.

*Oriental College, Lahore.*

*A. C. Woolner.*



# Skeleton Grammar of Ardha-Māgadhī.

## Alphabet.

### Vowels.

1. Short	अ a	इ i	उ u	( ए ) ẽ	( ओ ) ɔ
Long	आ ā	ई ī	ऊ ū	ए e	ओ o

### Consonants

2.	Suads	Sonants
----	-------	---------

	Unaspirate	Aspirate	Unaspirate	Aspirate	Nasal
Mutes.	क् k	ख kh	ग् g	घ gh	ङ ñ
	च् ch	छ chh	ज् j	झ jh	ञ ñ
	ट् t	ठ् th	ड् d	ढ dh	ण ɳ
	त् t	थ् th	द् d	ध dh	न् n
	प् p	फ् ph	ब् b	भ bh	म् m
Fricatives		स् s	य् y, र् r, ल् l, व् v,	ह् h	ः m ( anusvāra )

### Notes

- 3 ( 1 ) Nasal vowels, also, are used in verse. A pure vowel when followed by an anusvāra is often nasalised for the sake of metre, and then the anusvāra disappears

( 2 ) Short ण् and ओ are not distinguished in MSS. They are indifferently denoted by ण् or ह् and ओ or उ respectively.

( 3 ) इ, उ, ए, न and म् when followed by mutes of their class, are always replaced by the + anusvāra.

( 4 ) Conjunct consonants may occur as ( i ) double e. g. क्क, ग्ग, च्च etc, ( ii ) an unaspirated followed by a similar aspirate of the same class e. g. क्ख, ग्घ, च्छ etc, ( iii ) a nasal followed by a mute of the same class in which case the nasal must be changed to anusvāra e. g. अंग ( अङ्ग ), संख ( शङ्ख ), पंच ( पञ्च ) etc, ( iv ) anusvāra followed by व् or म् e. g. सवर, हंस etc. or ( v ) ए or म् followed by ह् e. g. विण्ह, अम्हे etc.

### Declension.

- 4 Ardha-Māgadhī admits of declension in ३ nouns for number and case. It has two numbers, Singular and Plural; three ‡ genders, Masculine, Feminine and Neuter, and eight cases Nominative, Accusative, Instrumental, † Dative, Ablative,

+ This is only a peculiarity of spelling. In pronunciation the nasals retain their proper sound e. g. अंग is pronounced as अङ्ग anga, पञ्च as पच pañcha, दंड as दण्ड danda, दंत as दन्त danta, अंब as अम्ब amba and so forth.

३ Including Adjectives, Numerals and Pronouns

‡ The gender of most nouns is fixed. Nouns denoting animate objects and adjectives change their gender according to certain rules

† To say that Prakrits have no Dative case means that they have lost the direct descendant from the old Indian prototype, its place having been taken by the Genitive form. Ardha-Māgadhī, however, retains the old 'Dative Singular' side by side with the new one

Genitive, Locative and Vocative with their same functions as in Sanskrit

The order of cases as given above is that followed by Sanskrit Grammarians who based it on similarity of forms. On the same principle the order of cases in a Prakrit Grammar should be Nominative, Vocative, Accusative, Dative, Genitive, Instrumental, Locative and Ablative which will be followed when full declension of a word is given

### Nouns.

5 For convenience sake, the declension of nouns may be treated under the following heads —

- a Masculine nouns ending in अ
- b Masculine nouns ending in इ or उ.
- c Neuter nouns ending in अ, इ or उ
- d Feminine nouns ending in इ or उ.
- e Feminine nouns ending in आ, ई or ऊ.
- f Irregular forms.

6

देव m. ' a god '

	Singular	Plural
N.	देवे, देवो	देवा
V.	देवा ' देवो !	देवा !
Ac.	देवं	देवे, देवा
D	देवस्स, देवाण्	देवाण
G.	देवस्स	देवाण
I	देवेणं	देवेहिं
L	देवासि, देवे	देवेसु
Ab.	देवाओ, देवा	देवेहितो

Note 1 Sometimes in poetry the final anusvāra disappears and the preceding vowel may or may not be nasalised.

2. The forms देवो N Sing and देवा Ac Pl. are frequent in poetry, but rare in prose.

7 मुनि 'sage' साहु 'monk'

### Singular

N	मुनी	साहु
V	मुनी !	साहु !
Ac	मुनि	साहु
D G.	मुनिणो, मुनिस्म	साहुणो, साहुस्म
I	मुनिणा	साहुणा
L	मुनिसि	साहुमि.
Ab	मुनीओ, मुनिणो	साहुओ, साहुणो

### Plural

N Ac	मुनिणो, मुनी	साहुणो, साहु, साहवो
V	मुनिणो ! मुनी !	साहवो !
D G	मुणीणं	साहुणं
I	मुणीहिं	साहुहिं
L	मुणीसु	साहुसु
Ab	मुणीहितो	साहुहितो

Note. In N and Ac Pl the forms मुनीओ and साहुओ, also, are met with

8 वण n. 'forest' दहि n. 'curd' महु n 'honey'

### Singular

N, Ac वणं	दहि	महु.
-----------	-----	------

### Plural

N Ac. वणाइ, वणाणि	दहीइं, दहीणि	महुइ, महुणि
-------------------	--------------	-------------

Note. For other cases the neuter stems are declined like the corresponding masculine ones.

9 कुच्छि f. 'womb' धेणु f 'cow'

## Singular

N. V.	कुच्छी	धेणू
Ac	कुच्छि	धेणु
D G I.	कुच्छीए	धेणूए
L	कुच्छिमि	धेणुमि
Ab.	कुच्छीओ	धेणूओ

## Plural

N V Ac	कुच्छीओ, कुच्छी	धेणूओ, धेणू
D G	कुच्छीण	धेणूण
I	कुच्छीहिं	धेणूहिं
L.	कुच्छीसु	धेणूसु
Ab.	कुच्छीहितो	धेणूहितो

10 साला f 'house'      देवी f 'goddess'      वहू f 'daughter-in-law'

## Singular

N.	साला	देवी	वहू
V	साले	देवी	वहू
Ac	साल	देवि	वहु
D G I L	सालाए	देवीए	वहूए
Ab	सालाओ	देवीओ	वहूओ

## Plural.

N. V Ac	सालाओ, साला	देवीओ, देवी	वहूओ, वहू
D G	सालाण	देवीण	वहूण
I	सालाहिं	देवीहि	वहूहि
L	सालासु	देवीसु	वहूसु
Ab	सालाहितो	देवीहितो	वहूहितो

- 11 There are a number of words of frequent use that are declined a little differently from the above types. Their irregular forms are generally the direct descendants of the corresponding old Indian ones which analogy has failed to reduce to any of the common types. Among masculines may be noted —



पिउ or पिड ( skt. पितृ ) 'father'.

	Singular	Plural
N V	पिया ( skt पिता, पितः )	पियरो ( skt. पितरः )
Ac	पियरं ( skt पितरम् )	पियरो
D G	पिउणो, पिउस्स	पिऊणं, पिईणं
I	पिउणा	पिऊहिं, पिईहिं
L	पियरि ( skt. पितरि )	पिऊसु, पिईसु
Ab.	पिउणो	पिऊहिंसो, पिईहिंसो

भाउ or भाइ ( skt. भ्रातृ ) 'brother'.

Sing N. V भाया ( skt भ्राता, भ्रातः ), Ac. भायरं ( skt भ्रातरम् ); D G भाऊणो, भाउस्स; Pl N V. भायरो ( skt भ्रातरः ), भायरा; Ac. भायरो, भायरं; D G. भाऊण, भाईण, I भाऊहि, भाईहि.

Similarly are declined the agent nouns derived from the old stems ending in ऋ e. g. दाउ or दाइ ( skt दातृ ) 'giver'.

Among feminines may be noted —

12

माउ or माइ ( skt. मातृ ) 'mother'.

	Singular	Plural
N	माया ( skt माता )	मायरो ( skt मातरः )
Ac	मायर ( skt मातरम् )	मायरो
D G.	माउण	माऊणं, माईण
I.	माउणा	माऊहिं, माईहि, मायाहि
L.	माउण	माऊसु, माईसु

धूया ( skt. दुहितृ ) 'daughter' is declined like साला f, but धूयरं Ac. Sing and धूयराहिं I. Pl also occur. Other examples are राय m 'king' and आय or अप्प m. 'self'.

राय ( skt. राजन् ) m 'king'.

Sing N. राया ( skt. राजा ), V. राय ( skt राजन् ), राया, Ac रायं, रायाणं ( skt. राजानम् ), D G. रायणो ( skt. राजन् ) रायस्स; I. राइणा, राणा

(skt. राज्ञा), Pl N V. रायाणो (skt. राजानः); Ac रायाणं, D G राइणः  
I राईहि, L राईसु.

आयं or अप्प (skt. आत्मन्) in 'self'

Sing. N आया, अप्पा (skt. आत्मा), Ac आयाणं, अप्पाण, अत्ताण (skt. आत्मानम्), D G अप्पणो (skt. आत्मनः), I अप्पण (skt. आत्मना), Ab. आयओ, अत्तओ (skt. आत्मनः), Pl N अप्पणो (skt. आत्मानः), Ac अप्पणो (skt. आत्मनः).

- 13 Sometimes the irregular forms exist side by side with the regular ones. This occurs chiefly where old stems end in अत्, वत्, सत् or अस् e.g. वयं 'word' has I Sing. वएण and वयसा (skt. वचसा), तव 'penance' has I Sing. तवेण and तवसा (skt. तपसा); तेय 'heat' has I Sing. तेण and तेयसा (skt. तेजसा); अरहंत 'Arahanta' has N Sing. अरइते and अरहं (skt. अर्हन्), भगवत् 'venerable' has G Sing. भगवत्सेण and भगवओ (skt. भगवत्), I. Sing. भगवत्तेण and भगवया (skt. भगवता); etc

### Adjectives

- 14 Adjectives are declined exactly like nouns. They take the same number, gender and case as the nouns which they qualify.

Comparative and Superlative degrees are expressed by adding -यर (or -तर) and -यस (or -तस) respectively to the positive e.g. अप्प 'little' अप्पयर 'less' अप्पयस 'least', दद 'strong' ददयर 'stronger' ददयस 'strongest', मह (skt. महत्) 'great' महत्तर 'greater' महत्तम 'greatest'. Some of the forms are the remnants of the old prototypes in ईयस् and इष्ट e.g. सेय (skt. श्रेयस्) 'better' कणिष्ट (skt. कनिष्ठ) 'youngest', जेष्ट (skt. ज्येष्ठ) 'eldest'.

### Numerals

#### 15 Cardinal

1. एग or एक्क used in the singular.

	N	Ac	D	G	I	Ab
Mas.	एगे	एगी	एगस्से	एगेण	एगसि	एगाओ
Neu.	एग	"	"	"	"	"
Fem	एगा	"	एगाए			"

एग when used in the plural means 'some', 'a few'.

	N. Ac	D G	I	L	Ab.
Mas.	एगे	एगेसि	एगंहि	एगेसु	एगेहितो

2 xदो from 2—18 ( दो to अट्ठारस ) are used in the plural.

	N. Ac	D G	I.	L	Ab.
Mas	दो	दोएहं	दोहि	दोसु	दोहितो
Neut	दोएणि	"	"	"	"
Fem	दुवे	"	"	"	"

At the beginning of a compound दो often becomes दु or वे e. g. दोमासिय 'lasting for two months', दुगुण 'double' दुपय 'biped' वेइंदिय 'having two sense-organs.'

3 ति

	N Ac.	D. G	I.	L.	Ab.
Mas	तओ	तिएहं	तिहि	तीसु	तीहितो
Neut	तिणि	"	"	"	"

At the beginning of a compound ति may become ते e. g. तिबिह 'of three kinds', तेइंदिय 'having three sense-organs'.

4 चउ

	N Ac.	D. G	I	L	Ab.
Mas	चत्तारो	चउएहं	चउहि	चउसु	चउहितो
"	चउरो	"	"	"	"
Neut	चत्तारि	"	"	"	"

In compounds चउ becomes चउर् before words beginning with a vowel, e. g. चउरिंदिय 'having four sense-organs'. But if the word begins with a consonant, the latter is doubled e. g. चउग्विह 'of four kinds', चउप्पय 'quadruped'

× No regard is paid to the gender of दो, ति and चउ. The same form may be used for all genders, thus we find तिणि पुरिसा 'three men' तओ वणाइ 'three forests'. Other numerals have a single form to represent all the genders.

≈ Sometimes तीहि ।

## 5 पंच

N Ac.	D G	I.	L	Ab
पच	पंचरह	पंचहिं	पचसु	पंचहिंतो

Before other numerals पंच becomes पण or पण्य e g पण्यबोसं 'twenty-five', पण्यरस 'fifteen'.

## 6 छ

In compounds छ becomes सड before words beginning with a vowel, e g. सडंगवी 'knowing the six Angas ( of the Vedas ) A consonant after छ is doubled, e. g छम्मासिय 'lasting for six months', छदिसि, in six directions'.

7 सत्त, 8 अट्ट, 9 नव, 10 दस, 11. एकारस, इकारस, 12. दुवात्तस, वारस; 13. तेरस, 14 चोदस, चउदस, 15 पण्यरस, 16. सोत्तस, 17 सत्तरस, 18 अट्टारस; 19 एगूणवीस, अउणवीसइ; 20. वीस, वीसइ, 21 एगवीस, 22 वावीस; 23. तेवीस; 24 चउवीस, 25. पणवीस, 26 छव्वीस, 27 सत्तवीस, 28 अट्टावीस; 29. अउणत्तीस, 30 तैस, 31. एकत्तीस, 32. बत्तीस, 33 तेत्तीस, 34 चोत्तीस, 35 पणत्तीस, 36 छत्तीस, 37 सत्तत्तीस, 38 अट्टत्तीस, अट्टत्तीस, 39 एगूणचालीस, 40. चालीस, 41. एकचत्तालीस, इगयाल, 42. बायालीस, 43 तेयालीस, 44 चउयालीस, चोयालीस, 45 पणयालीस, पणयाल; 46. छायालीस, 47 सत्तचत्तालीस, सत्तचालीस, सायालीस, 48 अट्टचत्तालीस, अट्टयालीस, अट्टयाल, 49 एगूणपण्यस, अउणपण्य, 50 पण्यास<sup>1</sup>, 51. एक्कावरण, 52 बावरण, 53. तेवरण, 54 चउवरण, 55 पण्यपण्य, 56 छप्पण, 57. सत्तावरण, 58. अट्टावरण, 59. एगूणसट्ठि, अउणट्ठि, 60 सट्ठि<sup>2</sup>, 61. इगसट्ठि, एगट्ठि, 62 वासट्ठि, बावट्ठि, 63 तेसट्ठि, तेवट्ठि, 64 चोसट्ठि, चउवट्ठि, 65 पणसट्ठि, पण्यट्ठि; 66. छावट्ठि, 67 सत्तसट्ठि, 68. अट्टसट्ठि, अट्टसट्ठि, 69 एगूणसत्तरि, अउणत्तरि, 70 सत्तरि<sup>3</sup>; 71 एक-सत्तरि, 72 बावत्तरि, 73 तेवत्तरि, 74 चोवत्तरि, 75 पंचहत्तरि, पण्यत्तरि, 76 छावत्तरि; 77. सत्तहत्तरि, 78 अट्टहत्तरि, 79. एगूणसीइ, 80 असीइ, 81 एक्कासीइ, 82. वासीइ, 83. तेसीइ, तेयासी, 84 चउरासीइ, चोरासी, 85. पचासीइ, 86. छत्तसीइ, 87. सत्तासीइ; 88 अट्टासीइ; 89. एगूणणउइ, 90. नउइ, 91. एकणउइ, 92 बाणउइ, 93. तेणउइ, 94 चउणउइ, 95. पंचाणउइ, 96 छणउइ, 97. सत्तणउइ 98 अट्टाणउइ, 99 नवणउइ

1 Changed to. -पण्य or -वरण in other numerals

2 May change to -अट्ठि or वट्ठि in other numerals.

3 May change to -हत्तरि or -वत्तरि in other numerals.

## 6 Rules for the use of Numerals

1 is used in the Singular and in all the genders

2-4 have different forms in different genders but no regard is paid to them.

5-18 are used in the Plural as Masculine and are declined exactly like पंच.

19-48 are used in the Singular. They are declined in the Nom and Acc like Neuters ending in अ and in other cases like Feminines ending in आ or ई.

49-58 are used in the Plural and are declined like पंच.

In cases other than the Nom and Acc they are often declined like Feminines ending in आ

59-99 are used in the Singular. They are declined in the Nom and Acc like Neuters ending in इ, and in other cases like Feminines ending in ई.

## 17 Examples

Nom अष्टमस्स अगस्स दस अज्झयणा परणत्ता ' of the eighth Anga ten chapters have been preached ' नायाणं पुगूखवीस अज्झयणा परणत्ता ' of the Nāyas nineteen chapters have been preached ' तेवीस तित्थयरा '( there had been) twenty-three 'Tirthankaras' सुमिणसत्थेसु वायालीसं सुमिणा, तीसं महासुमिणा, वावत्तरि सच्चसुमिणा परणत्ता ' in books on dreams forty-two dreams, thirty great dreams seventy-two dreams in all, have been preached.

Acc. अरहतमायरो चउदस महासुमिणे गसित्ता पडिबुड्ढत्ति 'mothers of Arhantas awake after seeing fourteen great dreams, वीस वासाइं सामण्यपरियाणं पाउणित्ता 'after leading the life of a Samana for twenty years' अरहते कित्तइस्तमि चउवीस पि केवली 'I shall praise the Arhantas, all the twenty-four Kevalin.' वावत्तीरं कल्लायो सिद्धाविन्ता 'having taught the seventy-two arts'

lostr एक्कवीसाण तित्थयेरोहि by twenty-one Tirthankaras पंचहत्तरीए वासेहिं सेसेहि 'seventy-five years being left'.

Gan दुवाल्सण्हं भारियाण ' of twelve wives' एणसिं चउइसण्हं महानुमिणाण  
' of these fourteen great dreams ' वत्तीसाण देवाण ' of thirty-two gods '

Loc. तीसाण वास सहस्सेसु ' in thirty thousands of years ' वावीसाण  
परीसहेसु 'in twenty-two sufferings'

18

## Higher numerals

100 सय used as Neut. or Mas 200 दो सयाइ, दो सया, 300 तिण्णि सयाइ;  
400 चत्तारि सयाइ.

1000 दस सया, सहस्स Mas or Neut साहस्सी Fem 2000 दो सहस्साइ, दुवे  
सहस्से. 14000 Samanas चौइसमणसाहस्सीओ 36,000 Nuns छत्तीस अज्जिया  
साहस्सीओ

108 अट्ठसय, 1008 अट्ठसहस्स, 30, 249 Yojanas तीस च सहस्साइ, दोरिण य  
अउणापण्णे जोयणसण् 1721 Yojanas सत्तरस एक्कवीसे जोयणसण् 430 Yojanas  
चत्तारितीसे जोयणसण्

100,000, सयसहस्स (Neut, Mas) सयसाहस्सी Fem Sometimes तक्ख N  
1,000,000 दस रायसहस्साइ

10,000,000 कोडि Fem 100,000,000,000,000 कोडाकोटि Fem

19

## Ordinals

1 पढम, पढमिण्ण, 2 बिइय, बीय, दोच्च, 3 तइय तच्च, 4 चउत्थ, 5 पचम, 6 छट्ठ; 7 सत्तम, 8  
अट्ठम, 9 नवम, 10 दसम, 11 एक्कारसम, 12 बारसम, दुवाल्सम, 19 एणूणवीसइम, एणूणवीसम,  
20 बीसइम, वीस, 23 तेवीसइम, 24 चउवीसइम, 30 तीसइम, तीस, 40 चत्तालीसइम, 49  
अउणापण्ण, 50 पन्नपन्नइम, 72 बावत्तर, 80 असीइम, 84 चउरासीइम, 97 सत्ताणउय

Note 1 Ordinals are generally formed by adding ऋ to the cardinals.

2 Their Feminine is formed by adding ई or आ पढम has  
always पढमा.

20

## Numerals increased by half

half अद्ध, अद्ध, 1½ दिवद्ध 2½ अद्धाइज्ज, 3½ अद्धट्ठ, 4½ अद्ध पचम 5½ अद्धछट्ठ,  
6½ अद्धसत्तम 7½ अद्धद्वम 8½ अद्धनयम.

Note A number increased by half is generally denoted by adding the next higher ordinal to अर्द्ध, दिवद्ध=Skt. द्विकार्ध or द्वितीयार्ध.

21

### Multiplicatives.

1 सङ् 'once' 2 दुसुत्तो, दुक्खुत्तो, दोच्च 'twice' 3 तिसुत्तो, तिक्खुत्तो, तच्च 'thrice' 7 सत्तसुत्तो 'seven times' 3×7 तिसत्तसुत्तो 'twenty-one times' अयंतसुत्तो 'infinitely, ad infinitum'

### Pronouns.

22

#### First person

	Singular.	Plural
N	अहं, हं	अम्हे, वय
Ac.	ममं, म	अम्हे, ये
D. G.	मम, ममं, मे	अम्हं, यो
I	मए	अम्हेहि
L	[ ममंसि, मइ ]	अम्हेसु
Ab	[ ममाहिंतो ]	[ अम्हेहिंतो ]

23

#### Second person

	Singular	Plural
N	तुम, तं	तुम्हे, तुम्हे
Ac	तुम	तुम्हे, मे
D. G	तव, ते, तुम्भ	तुम्हं, तुम्हं, मे, वो,
I.	तुमे	तुम्हेहि
L	तुमंसि, [ तइ ]	[ तुम्हेसु ]
Ab	[ तुमाहिंतो ]	[ तुम्हेहिंतो ]

24

#### Third person

	Singular.		
	Mas.	Neut.	Fem.
N.	से, सो	तं	सा
Ac.	त		

D. G.	तस्स, से	तीसे
I.	तेयं	तीए, ताए
L	तंसि, तंमि	सीसे
Ab.	ताओ	ताओ

## Plural.

	Mas.	Neut.	Fem.
N. Ac	ते	ताहं, ताणि	ताओ
D. G			तासि
I			ताहि
L			तासु
Ab	[ तेहितो ]		ताहितो

25

Demonstratives 1. एय (Skt एतद्) 'this', 'that'.

## Singular

	Mas.	Neut	Fem.
N	एसे, एसो	एय	एसा
Ac.			एयं
D G			एयाए
I			एयाए
L			एयाए
Ab.			एयाओ

## Plural

	Mas.	Neut	Fem
N Ac	एए	एयाहं	एयाओ
D G.			एयासि
I			एयाहि
L			एयासु
Ab.	[ एएहितो ]		[ एयाहितो ]



## 2. इम ( Skt. इम् ) ' this. '

Singular			
	Mas	Neut	Fem.
N	अय, इमे	इम, इदं	इयं इमा
Ac.	इम	इमं. इदं	इम
D G.	<div>इमस्स, अस्स</div> <div>इमेण</div> <div>इमामि, इममि अस्सि</div> <div>इमाग्रो</div>		इमीसे, इमाए
I,			इसाए
L			इमीसे इमाए
Ab.			इमाग्रो
Plural			
	Mas	Neut.	Fem
N Ac	इमे	इमाइं	इमाग्रो
D. G	<div>इमेनि</div> <div>इमेहि</div> <div>इमेसु</div> <div>[ इमेहितो ]</div>		इमांसि
I			इमाहि
L			इमासु
Ab.			[ इमाहितो ]

26 Interrogative. क ( Skt किम् ) ' who ' ' which ' ?

Singular					
	Mas.	Neut	Fem.		
N.	के	क	का		
Ac	<div> <div></div> <div>क</div> </div>			कं	
D. G.				कस्स	कीसे
I.				केण	कए
L				कसि, [ कंमि, कस्सि ]	कीसे
Ab.				काग्रो	काग्रो
Plural.					
	Mas.	Neut.	Fem.		
N. Ac	के	काइ	काग्रो		

D G	केलिं	कासिं
I	केहि	काहिं
L.	केसु	कासु
Ab	[ केहितो ]	[ काहितो ]

27 Relative, ज ( Skt यद् ) ' who ' ' which '

Declined exactly like the Interrogative ' क '.

28 Other pronouns.

अय्य ' other ', अवर ' other ' एग ( pl ) ' some ', कयर ' which ' पर ' other ' सव्व ' all ' etc. are declined like ' क '

29 Sandhi

In Ardha-Māgadhī there is no room for the Visarga and Consonant Sandhi, for the former does not exist in it and the latter never stands alone at the end of a word. From among the Vowel Sandhi, the following are the chief types —

(i) अ + अ = आ

जीव + अजीव = जीवाजीव 'Jīva and Ajīva'.

य + आवि = यावि 'and also'.

(ii) अ + अ followed by a Conjunct Consonant\* = अ

मरण + अंत = मरणत 'lasting till death', 'fatal'.

उत्तर + अर्द्ध = उत्तरर्द्ध 'northern half'.

न + अत्थि = नत्थि 'it is not'.

(iii) अ + इ = ए

राय (राज) + इसि = राएसि 'a royal sage'

महा + इसि = महेसि 'the great sage'.

---

\*Anusvāra must be regarded as a consonant

(iv) अ + इ followed by a Conjunct Consonant = इ

देव + इद = देविद 'the lord of gods'.

महा + इङ्गि = महिङ्गी 'great glory'.

(v) अ + उ = ओ

सीय (सीअ) + उदग = सीओदग 'cold water'

समण + उवासग = समणोवासग 'Samaṇa's servant', 'a Shrāvaka'

(vi) अ + उ followed by a conjunct consonant = उ

पुरिस + उत्तम = पुरिसुत्तम 'the best among men', 'an epithet of the Jinas'

जिण्ण + उज्जाण = जिण्णुज्जाण 'a ruined old garden'.

(vii) अ + ए = ए

इह + एव = इहेव 'even here'

(viii) अ + ओ = ओ

भक्ख + ओयण = भक्खोयण pastry and boiled-rice'

(ix) An anusvāra followed by a vowel is changed into म् e g.  
धम्मं + आइक्खइ = धम्ममाइक्खइ 'he declares the law', फलं इच्छइ = फलमिच्छइ  
'he desires the fruit'.

(x) In compound, an anusvāra is often inserted when the next member begins with a vowel e g. अण्ण + अण्ण = अण्णमण्ण 'one another' दीह + अद्धा = दीहमद्धा 'having a long journey', 'distant', 'vast', गोण्ण + आइ = गोण्णमाइ 'ox' etc.

### Verb,

30 A verb in Ardha-Māgadhī is conjugated for persons number, \* tense, mood and voice There are three persons, three tenses, two moods – and two voices

\* Present Past and Future with their usual functions

– Imperative denoting order or command and Potential denoting precept, authority or choice.

The verbal roots are divided into two groups—the **पास** group and the **कर** group—according as the terminations are directly added to the root, or an additional **ए** is inserted between the root and some of the terminations .

31

### Present Tense (Active)

#### Terminations.

	III	II.	I.
Singular	इ	सि	आमि
Plural	अति	ह	आमो

Note. Sandhi rules are observed while adding terminations to the root.

Exceptions 1 इ ( III Sing ) does not undergo Sandhi.  
2 In कर roots अति ( III pl ) loses its अ,  
and आमि ( I Sing ) and आमो ( I pl ) their आ.

पास ' to see '			कर ' to do '		
	Singular	Plural		Singular	Plural
III	पासइ	पासंति		करेइ	करेति
II	पाससि	पासह		करेसि	करेह
I	पासामि	पासामो		करेमि	करेमो

#### Irregular.

अस्ति	He, she, it is	सन्ति	they are
असि, सि	Thou art	स्य	you are
असि, मि	I am	मो	we are

The above are derived from the corresponding forms of the Sanskrit root **अस्** ' to be '.

\*Especially the Present and Imperative terminations.

## Past Tense ( Active ).

### Terminations.

Sing	III, II, I	इत्था.
Pl	III, II, I	इंसु

Sing	III, II, I	पासित्था		करेत्था or करित्था
Pl.	III, II, I	पासिसु		करेसु or करिसु

Irregular —व्यासी from वय ' to speak ' and अकासी from कर 'to do' are used for all numbers and persons.

## Future Tense ( Active ).

### Terminations.

	III,	II,	I
Sing	इस्सइ	इस्ससि	इस्सामि.
Pl.	इस्सति	इस्सह	इस्सामो.
III.	पासिस्सइ	पासिस्संति	करिस्सइ
II.	पासिस्ससि	पासिस्सह	करिस्ससि
I	पासिस्सामि	पासिस्सामो	करिस्सामि

Besides this, there is another way of forming the future viz by substituting हि for स्स in the terminations कर is changed to का before हि.

III-	पासिहिइ	पासिहिति		काहिइ or काही	काहिति
II.	पासिहिसि	पासिहिह		काहिसि	काहिह
I	पासिहिमि	पासिहिमो		काहिमि	काहिमो

Note In the III Sing ही + इ often contract into ही as in काही 'he will do', नाही 'he will know'.

Irregular, I Sing वोच्छ from वय 'to speak', करिस्स from कर 'to do'.

## Imperative Mood

### Terminations.

	III	II	I
Sing	उ	०, आहि	आमि
Pl.	अतु	ह	आमो

III पासंउ	पासंतु	करेउ	करेंतु
II पासं, पासाहि	पासह	करेहि	करेह
I पासामि	पासामो	करेमि	करेमो

Irregular. (1) II Sing. sometimes ends in सु e. g. सरसु from सर 'to remember', कहसु from कह 'to tell'.

(2) अथु III Sing corresponds to Sanskrit अस्तु from अस् 'to be'

35

### Potential Mood.

Terminations	III	II	I
Sing.	एजा	एजा, °सि, °हि	एजा, °मि
Pl	एजा	एजाह	एजाम
	Singular	Plural	
III	पासेजा	पासेजा	
II	पासेजा, पासेजासि, पासेजाहि	पासेजाह	
I	पासेजा, पासेजामि	पासेजाम	

Note. (1) No distinction is made between the roots of पास and कर groups.

(2) The Vowel before जा is short ए for which इ or ए are indiscriminately found in MSS.

Another way of forming the Potential Mood is to add ए to the root for all numbers and persons e g III, II, I Sing, and Pl पासे, करे etc.

Irregular कुजा III Sing (Skt कुर्यात्) from कर 'to do,' लिया (Skt स्यात्) from the Sanskrit root अस् 'to be'.

36

### Causals and Denominatives.

Note These roots are generally conjugated like those of कर group.

( i ) Causals are formed by adding व to the roots that end in आ e g. ठा ' to stand ', ठाव् ' he stands ', ठावेव् ' he causes to stand ', स्ना ' to bathe '. स्नाव् ' he bathes ', स्नावेव् ' he causes to bathe. '

( ii ) If a root ends in short अ, the short अ is lengthened and व added to it e g. कर ' to do ', करेव् ' he does ', करावेव् ' he causes to do ', कप् ' to cut '. कप्पेव् ' he cuts ', कप्पावेव् ' he causes to cut'.

( iii ) In some roots the medial short अ is lengthened without adding व e g मर ' to die ', मरेव् ' he dies ' मरेवेव् ' he kills ', पड ' to fall, to lie ', पडेव् ' he lies ', पाडेवेव् ' he lays'.

( iv ) In Demonstratives, the nouns themselves are used as verbs Sometimes व is inserted. स्नायेव् 'he bathes' (स्नाय ' bath ') उचारेव् ' he eases himself ' ( उचार ' stools '), पासवयेव् ' he makes water ' ( पासवय 'urine' ), सदावेव् ' he calls ' ( सद ' sound ' ).

37

### Passive Voice.

As a general rule, the Passive is formed by inserting इज् between the root and the termination e g सुणव् 'he hears' सुणिज्जव् ' he is heard', पुच्छव् 'he asks' पुच्छिज्जव् ' he is asked,' कहव् 'he says', कहिज्जव् 'he is said '

### Irregular.

( i ) लब्धव् ( Skt लभ्यते ) 'he is found', मुच्यव् ( Skt मुच्यते ) 'he is released', मिज्जव् ( Skt भिद्यते ) 'he is separated,' नज्जव् ( Skt ज्ञायते ) 'it is known' etc.

( ii ) कीर is sometimes used instead of करिज्ज e.g. कीरव् 'it is done.'

38

### Participles.

( i ) Present Active Participle is formed by adding अंत or माण to the root, e g पासंत, पासमाण 'seeing'; चिहंत चिहमाण 'staying'; चरत, चरमाण 'moving'.

( ii ) Present Passive Participle is formed by adding श्रंत or माण to the Passive form of the root e g. करिज्जत, करिज्जमाण ' being done, ' दिज्जत, दिज्जमाण ' being given '

( iii ) Past Active Participle is formed by adding वंत to the Past Passive Participle e g. रक्खियवत '( he )protected ' हसियवत '( he )laughed' Its use is extremely rare in Ardha-Māgadhi

( iv ) Past Passive Participle is generally formed by adding इय to the root e. g रक्खिय 'protected' पुच्छिय 'asked' चलिय 'shaken ' **Irregular.**

गय ( Skt गत ) 'gone' कड ( Skt कृत ) ' done ' मुय, मड, ( Skt. मृत ) ' dead ' मुत्त ( Skt मुक्त ) ' released ' etc.

( v ) Future Active Participle. No examples have been met in the scriptures

( vi ) Future Passive participle ( Necessitative ) is formed ( a ) by adding णिज्ज to the root or ( b ) by adding व्व to the Past Passive Participle e g करणिज्ज 'ought to be done' वंदणिज्ज 'ought to be greeted, respectable' पासियव्व 'ought to be seen', जाणियव्व ' ought to be known, ' knowable ' पुच्छियव्व 'ought to be asked '

**Irregular.**

कायव्व 'ought to be done' पेज्ज 'ought to be drunk, drinkable'.

### Gerund.

Gerundial Participle is formed in many ways. The chief ones are noted below -

( i ) By adding इत्ता to the root e. g पासित्ता 'having seen' करित्ता 'having done ' गच्छित्ता ' having gone. '

( ii ) By adding णं to form No. 1 e g पासित्ताणं 'having seen, ' चइत्ताणं 'having left '

( iii ) By adding ऊण or इऊणं to the root e g नाऊण 'having known' दाऊण ' having given ' बंधिऊणं 'having bound' पासिऊण ' having seen.'



( iv ) By adding इत्तु to the root e. g. बधित्तु 'having bound ' जाणित्तु 'having known '

Irregular.

( a ) कटु 'having done ' साहटु ' ' having removed,'

( b ) कित्त्वा ( Skt कृत्वा ) ' having done ', नच्चा ( Skt ज्ञात्वा ) 'having known', चित्त्वा ( Skt. त्यज्त्वा ) 'having left'.

( c ) अभिगम्म ( Skt अभिगम्य ) 'having known', निसम्म ( Skt. निशाम्य ) 'having heard'

( d ) परिणाय ( Skt परिज्ञाय ) 'having known', समादाय (Skt.) 'having taken'.

40

### Infinitive.

The Infinitive is generally formed by adding इत्तए to the root e g. करित्तए 'to do', गच्छित्तए 'to go', पाउब्भावित्तए 'to appear'

Sometimes उं or इउं is added to the root e g. दाउ 'to give', काउ 'to do', पासिउं 'to see', निणिह्उं 'to take'.

41

### Compounds.

Two words joined together without using the termination to express the relation between them form a compound. Compounds are treated like single words. They may be divided into three classes according to their use as a noun, an adjective or an adverb.

42 A noun compound may be formed in the following ways—

( a ) By putting together two nouns which would have required the copulative and (च or य) to express their relation if used separately Such compounds are generally used in the Plural, e. g. जीवार्जावा (जीवे य अजीवे य) 'soul and non-soul', नरपसूयं ( नरा य

पसूय=नरपसूयो ते सि ) 'of men and animals', गाम नगरेषु ( गामेषु य नगरेषु य ) 'in villages and towns'.—

( b ) By putting together two nouns of which the first would have taken an oblique case, if used separately e g. विसमरण ( विसरण मरण ) 'death by taking poison', सुहृद्वर्मे ( सुहाए धर्मे ) 'virtuous actions for happiness', चोरभय ( चोरायो भय ) 'fear from a thief', पुण्यफलं ( पुण्यस्स फल ) 'result of good deeds' गृहवासे ( गृहसि वासे ) 'residence at home'.

( c ) By putting together an adjective and a noun, the latter being qualified by the former e g नीलुष्पलं ( नील उष्पल ) 'blue lotus', सुभकम्माइ ( सुभाइं कम्माइ ) 'good deeds' <sup>1</sup>

An adjective compound may be formed:—

( a ) By putting together two 'adjectives e g. सेयरत्ते ( सेए रत्ते ) 'white and red' <sup>2</sup>

( b ) By putting together a noun which would have taken an oblique case if used separately, and an adjective e g गृह गए ( गृहं गए ) 'gone home' सज्जम संजुत्ते ( सज्जमेण सज्जुत्ते 'possessed of restraint,' रुक्खपडिए ( रुक्खाओ पडिए ) 'fallen from a tree', गायकुसले ( गायसि कुसले ) 'skilled in singing' <sup>3</sup>

( c ) By putting together two nouns, or an adjective and a noun, the relation between which would have been expressed by an oblique case of the relative pronoun 'ज' if used separately e g जियकोहे ( जिए कोहे जेय ) 'that has overcome wrath' पंचिदिए ( पंच इदियाइ जस्स ) 'who has five sense-organs' <sup>4</sup>

An adverb compound is formed by adding an adverbial preposition to a noun e. g अगुंग 'along the Ganges', आगुपुन्वि 'in due order' <sup>5</sup> Such compounds are rarely met with

—Sanskrit name for these compounds is द्वन्द्व

\*Any case except the Nominative and the Vocative.

\*Sanskrit name for such compounds is तत्पुरुष

<sup>1,2</sup> Sanskrit कर्म धारय.

<sup>3</sup> Sanskrit तत्पुरुष

<sup>4</sup> Sanskrit बहुव्रीहि.

<sup>5</sup> Sanskrit अव्ययीभाव.

- 45 A compound may be further joined with an other compound, a noun or an adjective. e. g. पंचिन्द्रियजीवा (पंचिन्द्रिय adj comp.+जीव) 'souls having five sense-organs', सत्यकोसहत्थे (सत्यकोस noun com.+हत्थ) 'having a surgical box in hand'.

### Suffixes.

- 46 To form a feminine आ or ई is added to words ending in अ e. g. अय 'he-goat', अया 'she goat.', दारय 'male child', दारिया 'female child' भुजमाण m. भुजमाणी f 'enjoying', पंचम m पचमी f. 'fifth',
- 47 To form an abstract त्त or त्तण is added to the word e. g. देव 'god,' देवत्त 'godhood', पुत्त 'son' पुत्तत्त 'sonship', आयरिय 'preceptor', आयरियत्त or आयरियत्तण 'preceptor ship', तक्कर 'thief', तक्करत्त or तक्करत्तण thievishness,
- 48 To form a possessive वत्त or मत्त is added to the noun e. g. धण 'wealth' धणवत्त 'wealthy', गुण 'merit' गुणवत्त 'possessing merits' विज्जा 'knowledge' विज्जामत्त 'learned', मइ 'wisdom', मइमत्त 'wise'
- 49 To form an adjective इल्ल is added to the noun e. g. दाहिण 'south' दाहिणिइल्ल 'southern' 'right', गाम 'village' गामिल्ल or गामेइल्ल 'vulgar', 'rural'.

50

### Syntax.

In prose the words are arranged much in the same order in Hindi, Punjabi or Gujarati e. g. से खं नरगाओ उवटित्ता सुपइट्टपुरे नयरे गोणताए पच्चायाहिइ 'returning from hell, he will be born as an ox in the town of Supatthapura', अहं पिवासिय पुरिसायं अट्टा कूवाओ सयिल जलं कड्ढामे 'I draw cold water from the well for the sake of thirsty persons'

51

In a verse, however, the words may be put in any order e. g. सुणेहे मे एगगमणा, मग्ग जिणेहिं देसियं 'O ye ! Listen heedfully of me, the law preached by the Jinas.



# GRAMMATICAL ABBREVIATIONS

AND

Their Equivalents.

कोषान्तर्गत-व्याकरणानां संकेतो ।

पु०	पुलिङ्ग.
स्त्री०	स्त्रीलिङ्ग
न०	नपुंसकलिङ्ग
पु० न०	पुलिङ्ग अने नपुंसकलिङ्ग
पु० स्त्री०	पुलिङ्ग अने स्त्रीलिङ्ग
त्रि०	त्रिलिङ्ग-पुलिङ्ग, स्त्रीलिङ्ग अने नपुंसकलिङ्ग.
सं० कृ० अ०	सम्बन्धार्थ कृदन्त अव्यय.
हे० कृ० अ०	हेत्वर्थ कृदन्त अव्यय
व० कृ० त्रि०	वर्तमान कृदन्त त्रिलिङ्ग.
अ०	अव्यय
धा० I II. I, II	धातुनो पहेलो गण बीजो गण अथवा उभयगण
ना० धा०	नाम धातु
वि०	विध्यर्थ
आ०	आज्ञार्थ
भूत०	भूतकाल.
भवि०	भविष्यकाल
सं० कृ०	संबन्धार्थ कृदन्त
हे० कृ०	हेत्वर्थ कृदन्त
व० कृ०	वर्तमान कृदन्त
क० वा०	कर्मणि वाच्य
णि०	णिजन्त
प्र० ए० व०	प्रथमा विभक्तिनु एक वचन, बहुवचन
द्वि० ए० व०	द्वितीयानु एक वचन, बहुवचन.
तृ० ए० व०	तृतीयानु एक वचन, बहुवचन.
प० ए० व०	पंचमीनु एक वचन, बहुवचन.
ष० ए० व०	षष्ठीनु एक वचन, बहुवचन
स० ए० व०	सप्तमीनु एक वचन, बहुवचन.

# A GUIDE TO TRANSLITERATION.



## Vowels.

अ=A	उ=U	लृ=Li	ओ=O
आ=Ā	ऊ=Ū	लृ=Lli	औ=Au
इ=I	ऋ=Ṛi	ए=E	ॠ=M̐
ई=Ī	ॠ=Ṛī	ऐ=Ai	ॡ=H̐

## Consonants.

क-Ka	ट-Ta	प-Pa	ष-Ṣa
ख-Kha *	ठ-Tha	फ-Pha	स-Sa
ग-Ga	ड-Da	ब-Ba	ह-Ha
घ-Gha	ढ-Dha	भ-Bha	क्ष-Kṣa
ङ-Na	ण-Ṇa	म-Ma	ज्ञ-Jña
च-Cha	त-Ta	य-Ya	
छ-Chha	थ-Tha	र-Ra	
ज-Ja	द-Da	ल-La	
झ-Jha	ध-Dha	व-Va	
ञ-Ña	न-Na	श-Śa	

# PREFACE.

---

It is an established fact that Prākṛit had once been the chief language in India, and religious and important literary works of different castes and creeds have been written in this language. Such monumental works prove beyond doubt the lofty ideals and brilliant progress of India in olden days. Archæologists and scholars have discovered its outstanding and chosen works from time to time and have appreciated the high ideals with which the language is well nigh saturated. Its richness in thought and classical literature has thus attracted the attention of scholars both in the East and the West and has made them discover its hidden literature from time to time with increasing zeal and devotion. It may safely be said that the works have a shining flush of their own and have awakened the curiosity of men of letters more and more with the advance of research work. The importance of its literature has carved its way for being prescribed in the different Eastern and Western Universities. The greatness of ancient India in general and of Jainism in particular lies in the depths of this language. It is the mother of almost all Āryan languages in India and due to its resourcefulness is the key note to the real comprehension of other languages and dialects, once prevalent in India and now in some form or other connected with its vast literature. This should speak for the importance of the language in the annals of India and her people. That there should be no dictionary on scientific lines for such an all-absorbing literature is in itself pitiable.

It is an admitted fact that no language can be rightly understood without its grammar and dictionary. This speaks for the pressing necessity of compiling these volumes. Aīdha-Māgadhi is the one important offshoot of this great language as is evident from the fact that the great Tīrthaṅkara Mahāvira of enlightened intelligence preached the sacred tenets of the great religion in this form of Prākṛit language. As has already been remarked, no-

dictionary on scientific lines exists for throwing sufficient light on even the most important expressions, used by these master minds of old. In the existing literature, only two small dictionaries are seen and these too are rare. Their names are Pāialachhīnāmamālā and Deśināmamālā.

Both are on metrical lines and not very useful, for the general public or for scholars of modern taste and type.

With the researches made by scholars, it has now become a matter of prime importance to prepare comprehensive dictionaries, elucidating the important terms, used in the different branches and offshoots of the great Prākṛit which stands in need of the close and unceasing attention of scholars and general readers without whose active co-operation no hope can exist for the revival of the great literature, reflecting India and her people in the real light of civilization. The importance of a comprehensive dictionary on scientific lines is not unknown to scholars. In the absence of such a dictionary, confusion in thought is unavoidable and it is for this confusion that the great author of the Mahābhārata, the renowned Vyās of old remarked "Veda is afraid of a man of little learning, lest he might harm it" (by putting wrong interpretation on its contents). From what is written above it will be clear that the glorious history of ancient India is lying in the dark depths of obscurity and no history of the civilization of the country in the past can be brought together without compilation of dictionaries, explaining the real sense of the important terminology of the literature. The whole of Jaina literature, especially the thirty-two Āgamas (the sacred scriptures of the Jainas) is written in the Ardha-Māgadhī form of Prākṛit. While studying these sacred texts, my father's attention was drawn to the English translation of some of these works by Western scholars, who with all their keen intelligence, vast erudition and admirable love for literature, have not been able to avoid putting in wrong interpretations because of their ignorance of the definite significance of technical terms due to the lack of a real dictionary. Even the great German scholar of Jaina literature, the learned Professor Herman Jacobi of

established répute, "Jaina Ratna Divākara," the sun of Jaina religion has not been able to escape misunderstanding, creating a great disturbance among the Jaina public because of his wrong interpretations here and there, in the absence of a really helpful dictionary. Thus a great harm has been done to the religious and literary ancient Prākṛit works, the literature is not yet safe and free from being misinterpreted. Such events and circumstances attracted the attention of my revered father and made him realise the absolute necessity of the preparation of one such dictionary, enabling scholars to understand the right application of words and their real significance. Accordingly, in 1910 A. D. my father began the work of collecting and arranging systematically the words, used in the Jaina Sūtras and could with his incessant efforts collect about fourteen thousand words in a short time. On this occasion the reputed Italian scholar, Dr. Sualī, expressed his intention of preparing a Prākṛit dictionary to the Śvetāmbara Jaina Conference, a fact, which pleased my father Mr. Kesarichandji Bhandāri who made over this list of words to the said conference for being forwarded to Dr. Sualī with the view that the great scholar's work would be facilitated to an extent at least, by this collection and would be best arranged by the well-known scholar with his keen intelligence and ability. Unfortunately in the meantime the great war broke out in Europe and on account of this and such other various reasons, Dr. Sualī could not undertake the work. At my father's request the Śvetāmbara Sthānakvāsī Jaina Conference promised to help the preparation and publication of this dictionary and happily he took up the work, which was no easy task in the absence of help from scholars and such other important equipments. The great work thus could not make a fast progress and was a source of great anxiety to my father, who for his pressing work, was at this stage called upon to go to Bombay, where he could luckily chance to see the great saint and scholar Śatāvadhānī Muni Śrī Ratnachandrajī Mahārāj. Eagerly conscious of the great task before him, my father lost no time in availing himself of this happy occasion and he requested and appealed to the great sage to accept the work. In keeping with the magnanimity of heart and the great devotion



to the sacred cause of literature, the learned sage accepted the task and by his mighty learning and admirable exertion, has been able to finish up so accurately and admirably the work within the short space of only three years

### Sketch of the life of the great sage.

The great sage, to whose active and constant efforts these volumes owe their compilation was born on Thursday the 12th of Vaishākha Śukla Samvat 1936 in the village of Bhārora (Kathiawār). His mother's name was Laxmibai and his father was known as Vīrpāl Shāh. After finishing the six books (complete vernacular course) of Gujarātī language, he, according to the family tradition, was initiated into the commercial work in the twelfth year of his life. In this connection he went to places like Bombay, Belāpur (south) Sanāvad (C. I) with his elder brother for trading purposes. He was married in his thirteenth year. Hardly had three years of matrimony rolled on when his dear wife left this transitory world for ever, leaving her only daughter behind. This bereavement tended to intensify the pre-existing and growing desire for seclusion from worldly ties and instead of grief and sorrow, gave him an occasion to qualify himself much more for the sacred Mission of his future life. Accordingly Pandit Śrī Ratnachandrajī Mahārāj learnt a good deal of the religious principles of ascetic life and received instructions from the great sage Śrī Gulābchandrajī Swāmī of Limbdi (Kathiawār). Fortunately his father and his elder brother, though following the commercial occupation, had in themselves a religious turn of mind and did not, as is not unusual, raise obstacles in his way to asceticism. The affection of a mother, however, is invariably unbounded, and she for her sublime affection, could not easily permit her young son to sever all connection with household affairs. Thus for a year more he led the life of a layman, but blessed was he all through to conduct his studies in Daśavaikālīka, Uttarādhyāyana, Thokadās etc. The deep study of the sacred and philosophic works enlightened his vision all the more and in his seventeenth year he became an avowed disciple of the Limbdi sage. As his extremely keen intelligence would have it, he lost not a minute and just began his Sanskrit

studies, finishing the Siddhānta Chandrikā, Siddhānta Kaumudī, Tatva Bodhinī, Manoramā, Pañcha Kāvya (all the five important literary works), works on Figures, Prosody, Logic and Dramaturgy, in all of which he became an accomplished scholar very soon. This was followed by his literary pursuits of the different systems of philosophy, Sāṅkhya and Pātañjal specially. Thus the period of thirteenth to twentififth year of his life was devoted entirely to literary pursuits, followed by discourses and sermons in Samvat 1966. Due to his extraordinary talents he can carry on one hundred discourses at one and the same time, a fact to which testimony is borne by personages like Sir Nārāyaṇ Chandāvarkar of Bombay, who was much pleased to admit and admire the great capacity, learning and intelligence of this great sage, endowed with the rare power of discrimination, tranquillity of mind, absence of vanity, energetic enthusiasm and indefatigable exertion. He is an advanced writer and a poet, author of several Sanskrit and Gujarātī works of established repute, of which the following may be noted — Kartavyakaumudī, Bhāvanīśataka, Life of Ajarāmarajī Swāmī, Thirty-five verses etc. Many of his articles have been published in several Gujarātī journals. All these have been well put together in Ratna Gadya Māhikā. The present dictionary is the product of the efforts of this learned sage, to whom best thanks are due from men of literary tastes.

### Utility of the Dictionary.

It is a happy fact, indeed, to see the growing number of readers of Jaina literature not only in India, but also in countries abroad like England, Italy, Germany, America, France etc. To learn Jaina literature as also to carry on research work, scholars and historians have to study Ardha-Māgadhī. To such gentlemen these volumes, it is hoped, will be useful as a constant companion. To those interested in Philology and Etymologies of Āryan languages and dialects, like Hindī, Gujarāty, Bengālī, and Marāthī as also to those interested in a comparative study of these and such other languages, these volumes, it is hoped, will be found very useful and instructive. These volumes will again be helpful to those interested in

the development of modern Indian languages, and to scholars of advanced literary tastes. Besides Sanskrit, English, Gujarātī and Hindī languages have also been used in explaining the words in, order that the volumes may be helpful to gentlemen, conversant with different important languages in India and abroad. It is now an admitted fact that Hindī is the Lingua Franca of India and English is the one common language for the vast British Empire and other civilised countries. This dictionary explains the meanings of important terms describing the high ideals and advanced civilization of ancient India. A large number of quotations from standard works have been inserted to signify the exact connotation and use of the particular word. These quotations add considerably to our knowledge and mental pleasure. Derivations of nouns and verbs along with their equivalents have also been discussed herein. Lest some words might yet remain unexplained and unelucidated frequent use has been made of illustrations, showing the form and nature of a particular thing, signified by a word. Technical words have been written in English form with proper marks, explaining their clear pronunciation, which may be of great use to Western scholars. Thus every effort has been made to make these volumes as good and useful as possible by using the five languages. The meanings given herein do not illustrate or explain a particular creed or religion, but are clear, free from all prejudices and admittedly correct on all hands. Such a dictionary then sees the light of the day, due to the perseverance and self-sacrificing nature of a learned propounder of Jainism. I must specially invite the attention of my Jaina brethren, following a form of creed other than that of Śvetāmbara Sthānakavāsī Jains to the fact that the volumes are expected to be useful not merely to Śvetāmbara Sthānakavāsī Jains but also to the Digambara Jains equally.

### Difficulties in the compilation of this dictionary

It is a well-known fact that the majority of those, supposed to be well-versed in the Ardha-Māgadhī form of Prākṛit are the Jaina ascetics, whose religion is wholly written in this language. As enjoined by the Śāstras (scriptures) a Jaina saint cannot stay in

one particular place beyond a prescribed period and must move round from place to place, big or small, a fact which on the face of it looks arduous and inconvenient for collection of words and compilation of a dictionary. Learned Pandits, belonging to other religions, being not well acquainted with Jainism and its principles, could not be fully well utilised. Again, they could not freely undertake a change from place to place with the compiler of this dictionary. Thus when some learned men, trained in the technicalities, left the work, others had to be engaged afresh and the same amount of trouble had again to be taken in training them for the work.

Great, again, was the difficulty in finding out scholars for English and Hindi translation work. Some non-Jainas or Digambara Jainas were the person obtainable for the work and they, on account of their unfamiliarity with the technicalities could not do full justice to the real significance of terms and thus in some places the meaning was entirely upset or misunderstood. In order that the readers may fully realise the difficulty in the translation work, a few specimens, proposed before consultation, the second and third, those of the English translator and all the rest those of the Hindi translator are noted below.

**Original expressions. Correct meanings. Mistaken translation.**

1-अजाया. त्रि०	Careful abandonment of things on the part of an ascetic.	Careful preservation of things on the part of a Sādhu.
2-अणादत्त. त्रि०	Unwary, without proper circumspection.	Useless.
3-अणादत्तगम्य न०	Movement without proper circumspection.	Unnecessary movement, useless movement.
4-अणाययण न०	A place where persons of non-ascetic conduct etc. lodge.	A place of residence for beasts, impotents, etc.
5-अणिदानता. स्त्री०	Doing actions without any desire of fruit,	(That) of which the reasons can-not be fathomed.

6-अथेसयिज त्रि०

Not acceptable to a Unimaginable to a  
Sādhu due to some Sādhu  
fault.

It would, however, be unfair to say that this in any way reflects upon the literary ability of the persons concerned.

The last and the greatest difficulty in bringing out the work was the great physical and mental suffering of my revered father, Mr. Kesharīchandjī Bhandārī, whose keen interest and devoted zeal for editing and publishing the Kosa is clear on the very face of it. In obedience to his esteemed commands I had the fortune to conclude the remaining work. Fully confident though I am of my lack of knowledge and intelligence, yet I venture to submit this literary work to its literary readers with a repeated request for their kind indulgence.

My duty will only be half done without an expression of gratitude to those, who have been of special use and help in the compilation and bringing out of this work. Swāmī Śrī Uttamchandrajī (Limbdī). Upādhāyājī Atmārāmjī of the Punjāb, Pandit Mādhava Munijī and Pandit Deochandrajī of Cutch deserve my hearty thanks for their kind assistance in the collection of words. Besides the aforesaid learned Jaina saints I am indebted to Mr. Popatlal Kevalchand Shāha for his kind help in the collection of some words, to Dr. S. K. Belvakar, Professor of Sanskrit, Deccan College Poona, for his kind and valuable suggestions from time to time and to Pandit Gaurīśāṅkara Hīrāchand Ozhā of Ajmer for the kind help he gave in correcting proofs to an extent.

My hearty thanks are due to A. C. Woolner Esquire M. A. (oxon) Principal, Oriental College, Lahore for the scholarly contribution that he has made in the form of a really informing Introduction to this Kosa. He undertook this purely as a labour of love and this affords a clear proof of his noble generosity of heart.

We owe the skeleton Grammar prefixed to the Koṣa to Babu Banarsidasjī M. A., professor, Oriental College, Lahore. Although



merely in outlines it must be the result of a great amount of reading of the original Sūtras. For the benefit that he has thus voluntarily given us of his knowledge, I am greatly indebted to him.

I must express my feelings of gratefulness to Mr P. N. Kachhi B. A. of M. S. High School, Indore, for the trouble he took in translating the Gujarati meanings into English, chiefly because, though he was paid for the same, his work was not mercenary. Moreover, almost the whole of the English portion of this volume has passed under his scrutinising eye. The Koṣa has had the benefit of having Pandit Thakurdattaji as one of the most conscientious and steadily working subordinate working under the supervision of the original compiler. The energy with which he conducted the work of carrying such a vast and varied mass of matter through the press is simply admirable and specially entitles him to my thanks.

Messrs. Naginadas Manakalal of Bombay, Bhavasar Gulabchand Kalyanchand of Surat, Maganlal Kuberdas of Kathor, Nyhalchandji Jaychandji of Dhoraji, Vakil Jivaraj Vardhaman of Jetpur, Ghevaria Devidas Lakhamchand of Porbander, Seth Dhirajlal Trimbaklal of Limbdi, Seth Vanechand Deoji of Vankaner, Seth Vikamechand Amritlal of Morvi and Gopalji Ladka of Thangai have deserve my appreciation and thanks for their kindness in looking after the comforts and conveniences of the compiler and his assistants.

Muni Rupchandrajī, Muni Shivalalji and Mr Kalidas Damji of Dhoraji Girl School deserve my thanks for their kind assistance to the compiler in different ways.

My best and grateful thanks are due to the Śvetāmbara Sthānakavāsī Jaina Conference, whose ready help in money and encouragement, led to the accomplishment of this great work.

Last, but not the least, indebted and grateful am I to the learned gem, the expounder of Jainism, Swāmī Śrī Ratnachandrajī Mahārāja of Limbdi, owing to whose incessant, active labours and greatest pains in compiling and conducting the dictionary work as

a whole, I have this day been able to put these volumes before the learned for opinion and use. I must frankly admit that the work would not have seen the light of the day had it not been for the learned devotion, energetic attention and dutiful enthusiasm of the Śaṭāvadhānī saint Ratnachandraji.

In conclusion, I respectfully request scholars and readers kindly not to mind minor errors, due to mistakes in printing, translation etc. here and there. I shall feel much obliged to those who will kindly take the trouble of communicating their kind suggestions to me, with a view to correction and improvement in the second edition.

Rajawada Chowk, SARDARMAL BHANDARI,  
Indore (C. India).



## Publisher's Note.

---

Almost immediately since the time that my longcontinued efforts in the direction of getting a reliable and comprehensive Ardha-Māgadhī Dictionary compiled by competent authorities on the subject, began to take a practical and tangible shape, my health began to fail and I fell a victim to a malady which is peculiarly antagonistic to mental work. Burning with an ardent desire on the one hand to realise an ideal which I had made one of the supreme aims of my life and deprived on the other, of the very instrument which led to its accomplishment, I continued to work with as much energy as I could command, throwing a great deal of my burden and responsibility upon the shoulders of my son Sardarmal. A time came at last, however, when it became absolutely imperative upon me to shift the whole burden upon him and if I am to judge from the results so far achieved, I feel I have every reason to hope that the work will be successfully brought to completion under his care and management. Very few of those persons not actually engaged in a task similar to this, can have an idea of the demand that it makes upon the energy and mental resources of its organizers. Endless correspondence, touring, watchful and diligent supervision of the work as it progressed, from the literary standpoint of accuracy and from the artistic standpoint of external attractiveness—these were and still are the demands to which he has proved himself equal. And I think it is a part of my sacred duty to acknowledge cheerfully the debt I owe to him in this connection. But for the fervour and energy with which my son devoted himself to the work which I was compelled to give up, the Ardha-Māgadhī Dictionary, at least in its present shape, would have taken an indefinitely long time to see the light of the day.

My son, Sardarmal has given an account of the vicissitudes through which my earlier efforts at the compilation of an Ardha-



Māgadhi Dictionary had to pass and so I need not detail them here. Enough also has been said by him as to its utility.

In conclusion I request scholars and general readers who consult this dictionary to have due regard to the circumstances sketched above and pardon minor inaccuracies if they have crept in.

Rajwada Chowk,

Indore (c. i. )

KESARICHAND BHANDARI.



## TRANSLATOR'S NOTE.

---

It was not without a considerable amount of diffidence that I undertook the work of translating into English the Gujarati portion of the *Ardha-Māgadhī Dictionary*. The original compiler of a work like this has got certain advantages which a mere translator cannot be expected to have. The former gives the meanings and explanations of words with a thorough grasp of their contextual bearings, while the latter has to depend upon these meanings and explanations without an opportunity to consult the texts on which they are based. One Gujarati word, for instance, might convey a number of different senses and it would be difficult to give the right equivalent for it in English, without knowing the context. Under these circumstances the only course left for me was to consult *Mahārāj Shri Ratnachandraji* by correspondence and this I have done as far as possible.

Another difficulty was about Jaina religious technical terms in which the Jaina scriptures abound. The little smattering of Jaina religion which I had, was altogether insufficient to answer the purpose of rendering accurately in a foreign tongue the sense conveyed by these technical words. It is true that a number of scholars both Eastern and Western have worked in this field, but the lack of a single comprehensive lexicon made it a matter of great labour, at least, at the commencement of my work, to find out the required information lying scattered in various works. Happily for me, however, Mr. Kesharichandji Bhandari, the publisher, of this work placed at my disposal his wide and varied stock of books on Jainism and I have amply and freely availed myself of the information, both in point of manner and matter, supplied by these works. I have frequently referred to the works of Mrs. Sinclair, Messrs. Jagmahendialal Jaini, Champatrai Jaini, H Jacobi, Hoernle, Warren, Gandhi etc etc.

Mr. J. L. Jaini's "Jaina Gem Dictionary" has been of inestimable use to me and the same also has been the case with Mrs. Sinclaire's "Heart of Jainism". I have also frequently referred to V. S. Apte's "Sanskrit Dictionary". My sincere thanks are due to all the above named scholars for the help I have derived from their works.

In spite of all this, I am far from thinking that the work of translation might be deemed satisfactory by scholars. However, since I have not yet finished the whole stock of 50,000 words, if opinions and suggestions reach me through the publisher, I shall be highly grateful for them and shall willingly make use of them in my future work.

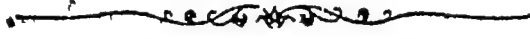
In conclusion I have to express my deep debt of gratitude to Messrs, Kesharichandji J. Bhandari and Sardarmalji K. Bhandari for the untiring zeal with which they answered my numerous queries on various difficult points of Jaina creed. Mr, Sardarmalji, who in consequence of his father Kesharichandji's illness, has devoted himself with indefatigable energy to the work of publishing this dictionary, specially deserves my thanks for critically going through my work before it is carried to the press.

Praying, that the great Tirthankaras may enable me to go through the whole of my work and thus to render my services to the cause of the noble Jaina religion, I conclude.

**Pritamlal N. Kachhi, B.A.**

M. S. High School,

# Hints for the study of this Dictionary.



1. The original word is printed in the large type followed by the grammatical gender. Then is given its Sanskrit equivalent. The Gujarati, Hindi and English explanations come next in order. References to the Sūtras and other works from which the original word is taken are indicated by an abbreviated terminology, the full explanations of which can be learnt from the list of Sūtras given in the Kōṣa. Explanations of grammatical abbreviations can be learnt from the list of abbreviations. In many cases quotations too, are given, followed by proper references. Where a word has more than one sense, the different senses are marked (1) (2) (3) etc.

2. Where a word bears a different sense in a different gender, the latter is indicated along with the former.

3. Compounds of the original word are given along with the latter and are enclosed into brackets with the sign—standing for the original word. The Sanskrit equivalents of compounds are also similarly given with the same mark prefixed.

4. Roots are given with the mark √ prefixed to them and as far as possible, conjugated forms in different tenses and moods are also given.

5. A word which does not belong to Aīdha-Māgadhī proper but to some other cognate dialect such as Paisāchī etc. is marked with an asterisk, thus \*, and its explanation only is given for want of the exactly corresponding Sanskrit word to which it can be traced, e. g. \* अगड् (कूप), etc.

6. When a word which can, by ordinary rules of Prakrit grammar be given a Sanskrit garb, which, however, is not current in Sanskrit literature the nearest approximate Sanskrit equivalent is given with the mark — prefixed to it, e. g. अवलुय, (अवलुक-नौकादयः), अगड् (अगत-अज्ञात), अभिसरमाण (अभिसरमाण-अभिसरत्), अवरोविता (अव्यपरो-पिता-अव्यपरोपय) etc. In some places a great divergence is met with

between the original principal word and its Sanskrit prototype, e. g. फल (स्पर्श), नल (ज्ञान), उपरिल्ल† (उपरितन) etc. No asterisk is prefixed to such words as these, because they belong to Ardha-Māgadhī proper; and they are invariably rendered into Sanskrit by words included in brackets above.

7. The gender given before the principal word applies to that Ardha-Māgadhī word only, and not to its Sanskrit equivalent. Of course, as a general rule, the Sanskrit equivalents agree with the original principal words in gender. Genders of words have been given according as they are found in the Sūtras, e. g. अकखुद. पु० (अबुद) a Jaina layman. This word is here assigned the masculine gender although in Sanskrit, as an adjective, it would have all the three genders. But in the Sūtras it is used in the sense of "a Jaina layman" only, and so is assigned the masculine gender. In the same way अंवल. न० (अम्ला) a kind of vegetation. This word is feminine in Sanskrit but in the Sūtras it is used in the neuter gender only and so it is assigned neuter gender only.

8. In Ardha-Māgadhī an Anusvāra is not changed to the nasal of the class of the following consonant as in Sanskrit. The order of words therefore is based upon the natural rank of the Anusvāra which comes after ओ e. g. after ओ ओ comes ओक and after ओक comes ओकड etc.

9. Absolute participle, infinitive of purpose, and present participle have been given separately when the root from which they are formed has not been met with. In other cases they have been included under the root from which they are formed. When the first two formations have been given independently they are regarded as indeclinables, after the fashion of the Sūtrakāras:—e. g. अकियारं. सं. क० अ० (अकृत्वा), अभिगंतुं. हे० क० अ० (अभिगन्तुम्) etc.

---

† The termination ङ is very common in Ardha-Māgadhī and so no asterisk is prefixed where it occurs. It is rendered in Sanskrit by तर, तस, तन.

10. Roots have been principally divided into three conjugations viz I, II, and I-II. Some conjugated forms of roots have been given separately, e g. अकरोत्, अलाहि etc the reason for this being that they are in the past tense and take the augment अ. The roots from which they are formed have been indicated here, e g. वीदे कृ, लभ् etc. In Aīdha-Māgadhī words, a preposition is prefixed to the root and the whole given as one word, while in the Sanskrit equivalents they have been separated by a cross

Denominatives have also been sometimes given and they have been indicated by the abbreviation ना० धा०

11. When the same word ending in अ and also in य signifies the same meaning, either अ or य has been placed after it, preceded by a dash, e. g. अवगअ-य. Sometimes the case is otherwise, य being substituted for अ. This procedure is based upon the frequency of a particular form in the Sūtras or upon the references and quotations given in the Kosa. Similarly the third person singular terminations namely इ and ति have been given along with the root in the same place. Although अवगअ and अवगय are both met with in the Sūtras, still however, the inflected form is one only, namely अवगए

12. There are some cases in which क is optionally changed to ग in the middle of a word, these have not been given separately, but the change has been indicated in one and the same place; e g. अव्वोक-ग-ड ( अव्याकृत ) etc.

13. तद्, युष्मद्, अस्मद् and other pronouns have been declined in all their cases as far as possible. There is no dative case in Aīdha-Māgadhī. Its sense being conveyed by such terminations as, त्वे, द्वे etc. Some words in their inflected forms, undergo changes which are not found in the case of other words, e g. राजन् Gen. Sing. रयणो

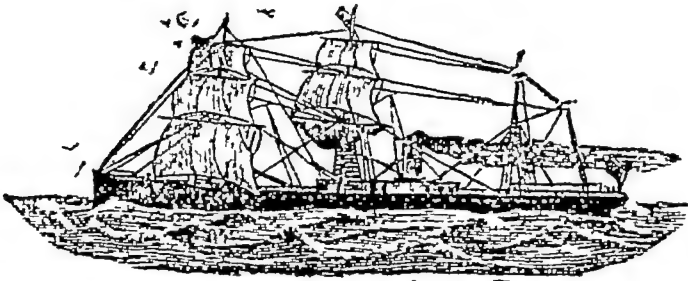
---

\* ए is prefixed to the terminations ( तिप्, तस्, मि etc ) before they are applied to the roots in the case of the I Gana. In the case of the II Gana it is not so prefixed. In the case of I-II it is prefixed optionally.

14. No word, not occurring in the Sūtras, has been admitted in the Koṣa, nor has any word been introduced in it before clearly grasping its proper sense. Quotations, however, have been given only where necessary or useful. For reasons of space the number of quotations has had to be limited within a reasonable compass. Still however, they have been given in the case of nearly fifty per cent words. The references given have been verified several times over and are therefore absolutely correct. These references are based upon the available works, a classified index of which along with their abbreviations has been given in the Kosa under the heading "A list of works consulted"

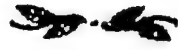
15. The Sanskrit equivalents are grammatically correct and have been given after consulting a number of dictionaries. Where one equivalent did not fully serve the purpose, another equivalent has been added. In some cases the original roots and even the terminations applied to them have been shown. Compounds, etymological analysis etc. have been given in some cases where necessary but not too often, for fear of swelling the bulk of the work. Explanations in Gujarati, Hindi and English have been made as full as possible by resorting to different modes of expression.

16. Only that meaning of a word which it bears in the Sūtras is given here; others, though they might be met with in Sanskrit literature, have been excluded.





# પ્રસ્તાવના



[ અનુવાદક મિ. પી. એન. કચ્છી ]

## ( ૧ ) અર્ધ-માગધી કોષની આવશ્યકતા અને ઉપયોગિતા ।

પુરાતની જૈન શાસ્ત્રોના અભ્યાસીઓ આ કોષનો આનંદથી સ્વીકાર કરશે વિશેષે કરીને જૈન ધર્મની પુરાતની ભાષાનો જેઓને પૂર્ણ પરિચય નથી એવા શ્રાવકો તેમજ તુલનાત્મક ભાષાશાસ્ત્ર, તત્ત્વજ્ઞાન અથવા ભારત ભૂમિમાં પ્રચલિત કિંચારસરણી અને ધર્મનું ऐतिहासिक अवलोकन કરવાના હિસાબથી આ ભાષાનો અભ્યાસ કરનારાઓને આ કોષ આદરણીય થશે. ઉપર કહેલા વર્ગના અભ્યાસીઓને પ્રત્યેક શાસ્ત્રીય ગ્રંથ ઉપરની ટીકાઓ અને તે ગ્રંથને જોડેલા શબ્દકોષો ઉપર આધાર રાખી કાર્યનિર્વાહ કરવો પડે છે. આ ઉપરાંત વૈદિક સમયથી આરંભીને આધુનિક ભારતવર્ષીય આર્યભાષાઓનાં વિવિધ સ્વરૂપોમાં પ્રચલિત, હિન્દી આર્યભાષાની મધ્યમાવસ્થાના સર્વે રૂપાતરોનો સમાવેશ કરતા એક વૃહદ્ શબ્દકોષ માટે આ કોષ ઉપયોગી સાધન પૂરું પાડશે એવી આશા રાખી શકાય અને તે દૃષ્ટિથી જોતાં પણ આ સાહસિક પ્રયત્નની આવશ્યકતા સિદ્ધ કરી શકાય તેમ છે. હસ્તલિખિત પુસ્તકોમાં એકજ શબ્દના ભિન્ન ભિન્ન રૂપો જોવામાં આવે છે અને આવા શબ્દો કયે કયે સ્થળે છે અને તેનાં કેવાં કેવાં રૂપો છે એ જાણવા માટે અભ્યાસી અથવા તો ગ્રંથસંપાદકને મૂળગ્રંથમાં જો સ્થળે તે આવેલા છે તે દર્શાવનાર એક કોષની આવશ્યકતા રહે છે અર્ધમાગધી-ભાષા પૂરતી આ આવશ્યકતા પૂરી પાડવા માટે આ કોષ સમર્થ થશે આ ભાષાના અભ્યાસમાં પ્રગતિ થતાં કદાચિત્ત ઘણાં રૂપો અશુદ્ધ સિદ્ધ થાય પરંતુ આવા અભ્યાસની વૃદ્ધિ કરવાના હેતુથીજ આ કોષ પ્રસિદ્ધ કરવાનું કાર્ય હાથમાં લેવામાં આવેલું છે ।

## ( ૨ ) કોષની શરૂઆત અને રચના ।

ઈ. સ. ૧૯૧૨ માં ડૉ. લ્યુઈગી સ્વૉલીએ એક પ્રાકૃત શબ્દ-કોષ તૈયાર કરવાનો પોતાનો હિસાબ જાહેર કર્યો ( Z. D. M. G. ૧૯૧૨ પૃ ૪૪૪ ). હંદોર નિવાસી શ્રી. કેસરીચંદજી મંડારીએ પોતે એકત્ર કરેલાં શબ્દો ડા. સ્વૉલીને મોકલી આપેલા પરંતુ યુરોપીય મહાન યુદ્ધ શરૂ થવાથી તેમાં ( ડૉ. સ્વૉલીના ) કાર્યમાં અંતરાય આવવાથી આ શબ્દો તેમણે શ્રી. કેસરીચંદજી મંડારીને પાઠ્યા મોકલી આપ્યા. શ્રી. કેસરીચંદજી મંડારીએ વિવિધ જૈન પ્રાકૃતોમાં આવેલા શબ્દોનો એક કોષ તૈયાર કરવા એક જૈન મુનિને આપ્યો કર્યો. અને તેમણે તે વાત સ્વીકારી, અને ત્રણ અન્ય મુનિઓની સહાયતા લઈ સૂત્રોમાંથી શબ્દોનો સંગ્રહ કર્યો. શબ્દો સંગ્રહ કરવામાં તેઓએ પોતાના પાસેની હસ્તલિખિત પ્રતો અને બાલુચર ( Bāluchar ) છાપેલા ગ્રંથોનો ઉપયોગ કર્યો. ઈ. સ. ૧૯૨૦ માં મારા શિષ્ય અને સહાધ્યાપક શ્રી. બનારસીદાસજી ને આ બાબતમાં સલાહ આપવા માટે આમન્ત્રણ કરવામાં આવ્યું અને તેઓએ ડા. ગુણે, ડા. મેલવેલકર આ. બા. ધ્રુવ વગેરે વિદ્વાનોની સલાહ લઈ ઠરાવ્યું કે પ્રાકૃત શબ્દોના અર્થો ઇંગ્લીશ, તેમજ હિન્દી અને ગુજરાતી ભાષાઓમાં આપવા ગ્રંથ સંપાદન તથા ગુજરાતી ભાષાન્તરનું કામ સ્વામી મુનિ રત્નચંદ્રજીએ કરેલું છે અને હિન્દી અને ઇંગ્લીશ ભાષાન્તરો અન્ય વ્યક્તિઓએ કરેલાં છે આ કાર્યમાં લાગેલો સર્વ શ્રે. સ્થા. જૈન કૉન્ફરન્સે આપવાનું સ્વીકારેલ છે ।



ડૉ. સ્વૉલીના લખવા પ્રમાણે આ પ્રશ્ન ઈ. સ. ૧૯૦૮ માં જૈન શ્વેતાંવર કૉન્ફરન્સે માવનગર-માં ચર્ચેલો હતો અને એ વાતમાં પ્રો. હ. જેકોવીનો અભિપ્રાય પૂછવામાં આવતા તેઓએ ડૉ. સ્વૉલીનું નામ સૂચવેલું હતું. આ કોષ તે સમયે ધોરેલી વિશાળ યોજનાને અનુસરતો નથી, કારણ કે અત્રે તો માત્ર અર્ધમાગધી શબ્દોનો સમાવેશ કરવામાં આવેલો છે ।

### ( ૩ ) અર્ધ-માગધી શબ્દસંગ્રહો અને વિશ્વ-કોષો ।

પ્રાકૃત-સંસ્કૃત શબ્દકોષો સહિત ઘણાં જૈન સૂત્રો પ્રસિદ્ધ થયેલાં છે. તેમાંના કેટલાં એક નીચે પ્રમાણે છે —

- ૧ આચારાંગ ( આચારાંગ સૂત્ર ) પહેલું શ્રુતસ્કંધ, સંપાદક, ડૉ. શુબ્રિંગ જર્મન ઓરિયન્ટલ સોસાઈટી લીપ્સીગ ૧૯૧૦ ।
- ૨ ફ્રાગમેન્ટ ડર ભગવતી, સંપાદક, ડૉ. ડેવર, ટ્રાન્સક્રીપ્શન પુરાણિક કથા, ઘર્લિન ૧૮૬૬—૬૭ ।
- ૩ સ્પેસિમેન ડર નયધર્મકથા(જાતાધર્મકથા)સંપાદક, પી. સ્ટેઈનથલ પહેલું અધ્યયન, લીપ્સીગ ૧૮૮૧
- ૪ ઉવાસગદસાઓ ( ઉપાસકદશા ) સંપાદક, હાર્નેલ, કલકત્તા ૧૮૮૮—૯૦ ।
- ૫ ઓવવાઈય ( ઔપપાતિક ) સંપાદક ઈ. લ્યુમ્મન, લીપ્સીગ ૧૮૮૩ ।
- ૬ નિરયાવલીય સુત્તં, ( નિરયાવલિકા ) સંપાદક, એસ. જે. ડેવરેન, એમસ્ટર્ડેમ, ૧૮૭૬ ।
- ૭ કપ્પ સુત્તં ( કલ્પ સૂત્ર ) સંપાદક, હ. જેકોવી, લીપ્સીગ ૧૮૭૬ ।

અત્રે અભિધાનરાજેન્દ્ર નામના જૈન ધર્મના વિશ્વકોષનો નામ નિર્દેશ કરવાની પણ જરૂર છે. લગભગ ત્રીશ વર્ષ પહેલાં રાજેન્દ્રવિજય નામના સાધુએ ઉપરોક્ત વિશ્વકોષ તૈયાર કરવાનો સંકલ્પ કર્યો. તેમણે પોતાના કેટલાએક શિષ્યોની સાથે વારીસ વર્ષ શ્રમ કરી ઈ. સ. ૧૯૧૦ માં અભિધાનરાજેન્દ્રનું પહેલું પુસ્તક ( પહેલો ભાગ ) બહાર પાડ્યો ત્યાર પછી વીંચા ચાર ભાગો પ્રસિદ્ધ થયાં છે અને બાકીના ભાગનો અંતિમ શબ્દ “ મોલ ” છે હજુ એક વે ભાગો બહાર પડ્યાં સકલ પ્રથમી સમાપ્તિ થશે એવી આશા છે ।

ઉપરોક્ત વિશ્વકોષમાં પ્રત્યેક પ્રાકૃત શબ્દની પાછળ તેનું સંસ્કૃત રૂપ, સંસ્કૃતમાં વિવરણ, મૂળગ્રંથમાં જે સ્થળે તે આવેલો છે તેનો નિર્દેશ અને અન્ય ગ્રંથોમાં જે વિવિધ અર્થોમાં તે વપરાયેલો છે તેની અવતરણો સહિત ચર્ચા આપવામાં આવેલ છે. પ્રત્યેક ભાગના પૃષ્ઠ ૧૦૦૦ હજાર છે અને મૂલ્ય રૂ. ૨૫ છે પરંતુ આ ગ્રંથને વિદ્યાર્થીઓને ઉપયોગી શબ્દ કોષ ન કહેતા પુસ્તકાલયોમાં રાખવા લાયક એક વૃહત્-કોષ કહી શકાય. પ્રસ્તાવનામાં હેમચન્દ્રનું પ્રાકૃત-વ્યાકરણ તેમનીજ કરેલી ટીકાસહિત આપવામાં આવેલ છે. નામના રૂપાંખ્યાનો આપવામાં જેટલા શક્ય તેટલા રૂપો આપવામાં આવેલાં છે. પછી તે સાહિત્ય-માં મળી આવે કે નહિ. ઉદાહરણાર્થ પંચમી એક વચનમાં ‘યુષ્મદ્’નાં પચાસ રૂપો આપવામાં આવેલા છે પરંતુ અર્ધ-માગધી સાહિત્યમાં આ રૂપોમાંનું કોઈ પણ ભાગ્યેજ જોવામાં આવે છે. આ વિશ્વકોષમાં પ્રત્યેક વિષયના સમ્બન્ધમાં જે કાંઈ નૂઠ્ઠા ગ્રંથોમાં તેમજ ટીકાઓમાં આવેલું છે તે સઘળાનો સમાવેશ કરવામાં આવેલો છે ।

## ( ૪ ) મૂળ ગ્રંથો ।

જૈન શાસ્ત્રોનું જ્ઞાન ન ધરાવતા સામાન્ય પરિચય માટે અભ્યાસ કરનારાઓને નીચેના મૂળ અર્ધ-માગધી ગ્રંથો ઉપયોગી થશે એમ ધારી અત્રે નિર્દિષ્ટ કરવામા આવે છે ।

( ૬ ) વાલુચર મૂળગ્રંથો-મુર્શિદાબાદ ( બંગાળ ) જિલ્લામાં આવેલ વાલુચર નિવાસી રા. ધનપતિસિંહે અર્ધ-માગધી શાસ્ત્રોની સંસ્કૃત ટીકા અને ગુજરાતી ભાષાન્તરસહિત એક આવૃત્તિ બનાવસ, મુંબઈ અને કલકત્તામા છપાવી વહાર પાડી ( ई सन् १८७५-१८८६ ) હૉર્નેલ આ પુસ્તક-માળા ઉપર ટીકા કરતા જણાવે છે કે “તેની અંદર મૂળગ્રંથની તેમજ વ્યાકરણની શુદ્ધતા ઉપર કોઈ પણ લક્ષ આપવામાં આવેલું નથી ” આ ગ્રંથમાળા સાધુઓને, જૈન દેવાલયો અને ઘણા પુસ્તકાલયોને વિના મૂલ્ય આપવામા આવેલ છે ।

( ૭ ) જૈનાગમોદય મૂળગ્રંથો-જૈન આગમોદય સમિતિએ મુંબઈમા ई. સ. ૧૯૧૦-૧૯૨૦ મા વહાર પાડેલ ગ્રંથમાળા, ઉપરની માળા કરતા વિદ્વત્તાની દૃષ્ટિએ વધારે સારી છે આ માળાના પુસ્તકો પોથીના રૂપમા છપાયેલા છે તેની અંદર સંસ્કૃત ટીકા આપવામા આવેલી છે તેમજ ટીપોમાં કોઈ કોઈ પાઠ ભેદો પણ આપેલા છે ।

૩( સી ) હૈદ્રાબાદ ગ્રંથમાળા-અમોલકઋષિ નામના જૈન સાધુએ તૈયાર કરેલ હિન્દી ભાષાન્તર સહિત અર્ધ-માગધી મૂળગ્રંથો-આ માળા ई સ. ૧૯૧૬-૧૯૨૦ હૈદ્રાબાદ ( દક્ષિણ ) ના એક ધનવાન આશ્રયદાતાએ પોતાને સ્વર્ણ પોથીના આકારમા છપાવી વિનામૂલ્ય સાધુઓ તેમજ પુસ્તકાલયોમા વહેંચી આપેલ છે પરંતુ મૂળગ્રંથની અંદર અશુદ્ધતાઓ આવી ગયેલી છે ।

આ ઉપરાત ( જેમાની બીજી ગ્રંથમાળા અર્ધ-માગધીના અભ્યાસીઓ માટે સર્વોત્તમ છે ) કપ્પ, ઉત્તરા-જમ્મયણ, દસવેયાલિય ઇત્યાદિ વધારે લોકપ્રિય ગ્રંથોની જુદી જુદી ઘણી આવૃત્તિઓ વહાર પડેલી છે ।

આ પ્રસ્તાવનાના ત્રીજા મથાળાની નીચે યુરોપીય વિદ્વાનોએ શબ્દાર્થ-કોષસહિત છપાવી પ્રસિદ્ધ કરેલા સાત મૂળ ગ્રંથો આપવામાં આવેલા છે આ ઉપરાત શબ્દાર્થ-કોષસહિત પણ વીજા ત્રણ વહાર પડેલા છે તે નીચે પ્રમાણે—

૮ આચારાગ, સંપાદક, હ. જેકોબી પાલી ટેક્સ્ટ સોસાયટી ૧૮૮૨

૯ અણુત્તરોવવાઈય, સંપાદક, વર્નેટ, ઓરિયન્ટલ ટ્રાન્સલેશન ફાઉન્ડેશન પુસ્તક ૧૭ મુ, લન્ડન ૧૯૦૭  
( અતગઢ સૂત્રના ભાષાન્તર ને પારિશિષ્ટના રૂપમા જોડેલ )

૧૦ દસવેયાલિય, સંપાદક, લ્યુમેન પુસ્તક ૪૬ મુ ( Z D M G. મા )

## ( ૫ ) ભાષાન્તરો ।

૧ વાલુચર માળામા આપેલ ગુજરાતી અને હૈદ્રાબાદ માળામાં આવેલ હિન્દી ભાષાન્તરો વિષે ઉપર કહેવામાં આવેલુ છે ફ્રેજોમા જેકોબિએ “ સેકેડ બુક્સ ઓફ ધિ ઈસ્ટ ” ના પુસ્તક ૨૨ મા અને ૪૪

મો કરેલ ભાષાન્તર, હોનેલનું કરેલ ઉવાસગદસાઓનું ભાષાન્તર અને બાર્નેટનું કરેલ અંતગદ-  
દશાઓ અને અણુત્તરોવવાઈયનું ભાષાન્તર એ પ્રમાણે છે ।

### ( ૬ ) વ્યાકરણો અને પાઠ્ય પુસ્તકો ।

અર્ધ-માગધી ( અર્ધકા આર્ષ ) વ્યાકરણો પ્રાકૃત વૈયાકરણિકોએ રચેલાં છે. દેશી વ્યાકરણોમાં મુખ્ય હેમચન્દ્રાચાર્ય કૃત અને વિદેશી સાક્ષરોએ રચેલ વ્યાકરણોમાં મુખ્ય પિશ્ચેલ કૃત છે. શ્રી. ચનારસીદાસ જૈન એમ. એ. એસોએ તૈયાર કરેલ સંક્ષિપ્ત વ્યાકરણ આ પ્રસ્તાવનાને જોડવામાં આવેલ છે. શ્રીચનારસીદાસે તૈયાર કરેલ એક અર્ધ-માગધી પાઠ્ય પુસ્તક પંજાબ વિશ્વવિદ્યાલય દ્વારા પ્રકાશિત કરવામાં આવનાર છે ।

### ( ૭ ) આ કોષમાં આપેલી શબ્દ સંખ્યા ।

ઓગણ પચાસ ગ્રન્થોમાંથી લગભગ ૫૦,૦૦૦ શબ્દોનો સમ્રહ કરી અત્રે સમાવેશ કરવામાં આવેલો છે આ ગ્રન્થોનો અંદર ૧૧ અંગો, ૧૨ ઉપાંગો ૭ પદ્યગણાઓ, ૬ છેદ સૂત્રો, ૪ મૂળસૂત્રો, નન્દીસૂત્ર, અણુઓગદ્વાર અને ઓઘનિર્યુક્તિ એ ગ્રન્થોનો સમાવેશ થયેલો છે; એટલે કે સઘઠાં શ્વેતાંબરી શાસ્ત્રોનો અને તેને લગતા સઘઠા મુખ્ય ગ્રન્થોનો સમાવેશ થયેલો છે ।

### ( ૮ ) અર્ધમાગધી ભાષાનો ઇતિહાસ અને તે ભાષાની વિશેષતાઓ ।

જૈન સૂત્રોની ભાષાને અર્ધ-માગધી કહેવામાં આવે છે-આ સૂત્રોમાં કહેવામાં આવેલ છે મગવાન મહાવીરે આ ભાષામાં જૈનસિદ્ધાન્તનો ઉપદેશ કર્યો અને તેની અંદર એમ પણ કહેવામાં આવેલ છે, કે આ ભાષામાંથી અન્ય ભાષાઓ શાસ્ત્રારૂપે ઉદ્ભવેલી છે ।

દેશી વૈયાકરણિકો આ સૂત્રોની ભાષાને “ આર્ષમ્ ” એટલે ઋષિઓની ભાષા એવું નામ આપે છે. પિશ્ચેલકૃત પ્રાકૃત વ્યાકરણ ( ૧ ) માં નીચે નિર્દિષ્ટ અવતરણો આપેલાં છે ।

સમવાયાંગ સુત્ર ૬૮, ઓવવાઈય સૂત્ર ૫૬, પણવણા સૂત્ર ૫૬, હેમચન્દ્ર ૧, ૩, ૪, ૨૮૭, પ્રેમચંદ્ર તર્કવાગીશકૃત દંઢીના કાવ્યાદર્શ ઉપરની ટીકા ૧, ૩૩, રુદ્રટકૃત કાવ્યાલંકાર ઉપર નમિસાધુ કૃત ટીકા ૨, ૧૨, અને વાગ્ભટકૃત અલંકાર તિલક, ૧, ૧

ઉપર કહેલાં અવતરણો ઉપરથી પિશ્ચેલ સિદ્ધ કરે છે કે ( ૧૭ ) “ આર્ષ અને અર્ધ-માગધી એ બેમાં પરસ્પર ભેદ નથી અને જૈન પુરાતની સૂત્રોની ગદ્ય અને પદ્ય બંનેની ભાષા પરંપરાગત મતાનુસાર અર્ધમાગધી છે; અને હેમચન્દ્રે દસવેયાલિય સુત્રમાંથી આપેલું ઉદાહરણ ( ૬૩૩-૧૬ ) પણ એજ વાત સિદ્ધ કરે છે ” ।

આ ભાષાને અર્ધ-માગધી શા માટે કહેવામાં આવી ? માગધી ભાષાની મુખ્ય વિશેષતાઓ આ પ્રમાણે છે ‘રસોર્લસૌ’ એટલે ‘ર’ અને ‘સ’ ને બદલે અનુક્રમે ‘લ’ અને ‘શ’ થાય છે, ઉદાહરણાર્થ, ‘રામે’ ને બદલે ‘લામે’ થાય છે, અને પ્રથમા એ વ. પું માં એ આવે છે. અર્ધ-માગધીની અંદર ‘ર’ અને ‘સ’ એમના એમ રહે છે. પરંતુ પ્ર. એ. વ. પું. મા ‘એ’ આવે છે, ઉદાહરણાર્થ ‘મહાવીરે’, પરંતુ કાવ્યોમાં પ્રથમા એક વચન પુ. ઓકારાન્ત પણ યશી વચ્ચે દૃષ્ટિગોચર થાય છે ।

આ પ્રમાણે અર્ધ-માગધીમાં માગધી ભાષાની કેટલી એક વિશેષતાઓ સમાઈતી છે, અર્થાત્ તેની સઘઠી વિશેષતાઓનો સમાવેશ થયેલો નથી માટે તેને અર્ધ-માગધી કહેવામાં આવે છે એવો ખુલાસો “અર્ધ-માગધી” ની વ્યાખ્યા આપતાં સમવાયાંગ ( પૃષ્ઠ ૬૮ ) અને ઉવાસગદસાંગ, ( પૃ. ૪૬ ) ઉપરની તેમની ટીકામાં અભયદેવે આપેલી છે ( પિથેલ પ્રાકૃત વ્યા. ૧૭ ).

કાવ્યોની ભાષા ગદ્યાત્મક લેક્ષોની ભાષાથી થોડી ઘણી વિભિન્ન જોવામાં આવે છે ઉદાહરણાર્થે એકારાન્ત પ્રથમા એક વચનને સ્થાને ઘણી વસ્તુત ઓકારાન્ત પ્રથમા એક વચન જોવામાં આવે છે.

અર્ધ-માગધી રૂપ ‘મિલક્ષુ’ ( સં. મ્લેચ્છ ) માત્ર ગદ્યમાજ જોવામાં આવે છે, પરંતુ કાવ્યમાં અન્ય પ્રાકૃત ભાષાઓ પ્રમાણે ‘મેચ્છ’ રૂપ આપવામાં આવેલ છે ગદ્ય અને પદ્યની ભાષામાના તફાવતો-માંના કેટલા એકનું કારણ એવું બતાવવામાં આવે છે, કે મૂળ સસ્કૃત ગદ્ય પદ્યાદિનું પ્રાકૃત ભાષાન્તર થયેલુ હોવાથી આ તફાવતો ઉદ્ભવેલા છે ।

કાવ્ય ગ્રંથોમાં મહારાષ્ટ્રી પ્રાકૃતની પણ કેટલી એક વિશેષતાઓ જોવામાં આવે છે અને તેથી આ ગ્રંથોની ભાષાને મહારાષ્ટ્રી અને માગધીનું મિશ્રણ પણ કહેવામાં આવેલ છે. અર્વાચીન જૈન ગ્રંથો અર્ધ-માગધીથી થોડે અંશે મિશ્રિત મહારાષ્ટ્રીના એક રૂપાન્તરમાં લખાઈ છે. ભાષાના થયેલા આ રૂપાન્તર ઉપરથી આપણે અનુમાની શકીએ કે તે સમયે જૈન ધર્મનો નૈર્ઋત કોણ ( દક્ષિણ પશ્ચિમ દિશા ) તરફ પ્રચાર થયેલો હોવો જોઈએ ।

અર્ધ-માગધીનું મૂળ ઉદ્ભવ સ્થાન કયું ? ભરતે રચેલ કહેવામાં આવતા કાવ્યશાસ્ત્ર વિષયક અતિપ્રાચીન ગ્રંથમાં અર્ધ-માગધીને સાત ભાષાઓમાંની એક ગણવામાં આવી છે, આ સાતમાંની ચાર્કાની છ આ પ્રમાણે છે —માગધી, આવન્તી, પ્રાચ્ય, સુરસેની, બાહલીક અને દાક્ષિણાત્ય ( ૧૭, ૪૮ ).

ઉપરોક્ત ગ્રંથકારનું કહેવું એમ પણ છે, કે નાટકોમાં આ ભાષા, નોકરો, રજપુતો અને વ્યાપારીઓ વાપરે છે પરંતુ નાટકોની હસ્તલિખિત પ્રતોમાં ઉપર આપેલો નિયમ પલાળેલો જોવામાં આવતો નથી. સુદારાક્ષસ નામક નાટકમાં જીવસિદ્ધિ નામનો સાધુ અને પ્રવોધચન્દ્રોદયમાં ક્ષપણક, માગધી ભાષા, વાપરે છે એમ બતાવવામાં આવેલ છે ।

તો પણ મધ્ય એશિયામાં મળી આવેલા અશ્વધોષકૃત કહેવાતા કેટલાં એક અપૂર્ણ બૌદ્ધ નાટકો-માંના કેટલા એક સંદર્ભો પ્રાચીન અર્ધ-માગધી ભાષામાં છે એવું તે નાટકોના વિદ્વાન્ સંપાદક પ્રોફેસર લ્યુડર્સનું માનવું છે ।

અશોકના દક્ષિણના શિલાલેખોની ભાષામાં એકારાન્ત પ્રથમા એક વચન તેમજ ‘સ’ અને ‘ર’ વચ્ચેનો સમાવેશ જોવામાં આવે છે.

અશોકની પૂર્વતરફની ભાષામાં ‘ર’ ને સ્થાને ‘લ’ જોવામાં આવે છે ઉદાહરણ—ભાજા—રાજા; અને આ ઉપરથી આપણે અનુમાની શકીએ કે મૌર્ય સમયમાં પટણાની ભાષા અર્ધ-માગધી ન હતી.

જે ભાષાને આપણે અર્ધ-માગધી કહીએ છીએ તે ભાષા ઘરાવર કયે સ્થળે અને કયે નમયે

उद्भवती आ प्रश्ननो हजु निर्णय थयेलो नथी. तेनुं मूळ उत्पत्तिस्थान प्राचीन मगधदेशना पश्चिम भागथी अथवा नैर्ऋत ( दक्षिण-पश्चिम ) भागथी बहु दूर न होतुं एवी मान्यता संभावित जणाय छे ।

मौर्य सार्वभौम राजाओना समयमां पूर्व तरफनी पटणानी भाषा पश्चिम तरफ फैलाती गई; पछी तेनो फैलाव मात्र राजमहेलोमा अने बजारोमाज थयेलो होय अने गामडाओमां न थयेलो होय ।

ज्यारे मौर्यवंशी राज्यनी पडती थई त्यारे कदाचित् आ पूर्वनी भाषानो उपयोग कम थई गयो होय. ज्यारे पाछला समयमा सार्वभौम सत्तानुं केन्द्र पश्चिम तरफ थयुं त्यारे प्राकृत भाषानुं शौरसेनी स्वरूप गंगानदीनी आसपासना प्रदेशोमा वधारे वधारे प्रचलित थयुं होय ए स्वाभाविक छे आ प्रमाणे भाषानां मुख्य रूपान्तरोनी एक प्रदेशमाथी बीजा प्रदेशमां थयेली गतिओने लोथे भाषाना अमुक रूपान्तरनुं स्थान निश्चित करवुं ए, ( जोके ते समयना लेखको क्वचित्ज तारीखनो निर्देश करे छे ) लेखकोए बराबर तारीखनो निर्देश करेलो होय तो पण सुसाध्य नथी ।

परंपराए चाली आवती दन्तकथा उपरथी आपणे जाणी शकीए छीए के महावीरे अर्ध-मागधीमां उपदेश कयौं हतो तेन प्रमाणे दन्तकथा द्वारा आपणे जाणवा पामीए छइए के गौतम बुद्धे मागधीमां उपदेश कयौं हतो ( जो के गौतमबुद्धनो उपदेश मागधीमां लखायेलो नथी परन्तु पालीमां लखायेलो छे ) परन्तु बन्ने समकालीन हता अने एकज प्रदेशमा रहेता हता एवं वर्णन करवामा आवे छे ।

जो बन्ने धर्मोपदेशकोए एकज भाषानो उपयोग करेलो होय अने आ भाषा शौरसेनी अने मागधी भाषाना प्रदेशोनी वच्चेना बनारसनी आसपासना प्रदेशनी अर्धमागधीने मळती आवती प्राकृतनुं कोई प्राचीन रूपान्तर होय तो एम कही शकय के आ भाषा बन्ने धर्मोना शास्त्रो, ग्रन्थोमा लखायां ते पहेला विकृत थयेली होवी जोइए ( अर्थात् रूपान्तरने पामेली होवी जोइए ), आ रूपान्तर क्यारे थयुं अने केटले अंशे थयुं ए निश्चित करवुं ए शक्य जणातुं नथी ।

जे स्वरूपमा अर्ध-मागधी आपणा जोवामा आवे छे ते स्वरूप ( पाली प्रमाणे ) नाटकोनी प्राकृत भाषाओथी वधारे प्राचीन छे मागधीनी पेठे तेमा प्र ए. व पुं एकारान्त थाय छे, षष्ठी. एक वचनमा “ तव ” नो उपयोग करवामा आवे छे, रकारान्त धातुओनुं भूत कृदन्तनु रूप “ त ” ने बदले “ द ” थी करवामा आवे छे ( परन्तु आम सर्वत्र थतुं नथी ) ‘क’ ने बदले “ ग ” थई जाय छे; उदाहरण ‘असोग’ ( परतु मागधीमा आ बहु न्यून प्रमाणमा थाय छे ) ।

अर्ध-मागधीनी अंदर ‘र’ अने ‘स’ नुं रूपान्तर न थतुं होवाथी ते मागधीथी आ बावतमा स्पष्ट रीते जुदी पडे छे अर्ध मागधी, महाराष्ट्रीथी घणां बावतोमा जुदी पडे छे. उदाहरणार्थ अर्ध-मागधीनी, अंदरनो सप्तमीनो प्रत्यय ‘अंसि’ ( महाराष्ट्री अंदर ‘मिम’ छे ) चतुर्थीनो त्तञ्जे, हेत्वर्थक कृदन्तनो त्तञ्जे ‘इत्तए’ संबधक कृदन्तनो ‘त्ता’ ‘त्तणम्’ इत्यादि ।

अर्ध-मागधी भाषानी घटनानुं वधारे विस्तृत वर्णन श्री बनारसीदासे तैयार करेल अने अत्रे जोडवामा आवेल व्याकरणनी रूपरेखामां करवामा आवेल छे. आ रूपरेखा मूलग्रन्थोमा वापरवामा आवेला नाम, धातु इत्यादिना रूपो ऊपरथी तैयार करवामां आवेल छे. केवळ प्राकृत व्याकरणोमा आपेल सिद्धान्तो उपरथी नहि ।

ओरियंटल कॉलेज लाहोर.

ए. सी. बूलनर.

# प्रकाशक की ओर से दो शब्द ।

यह बात निर्विवाद है कि प्राकृत भाषा भारत वर्ष की प्रधान भाषा है और इसमें समय समय पर अनेकानेक धार्मिक और साहित्य विषयक महत्वपूर्ण ग्रन्थ लिखे गये हैं, जो कि आज भी भारतवर्ष के उज्ज्वल आदर्श और उच्च विचारों को प्रकाशित कर रहे हैं। प्राचीन तत्त्ववेत्ताओं और अन्वेषण-कर्त्ताओं ने इस भाषा के उत्तमोत्तम ग्रन्थों को उपलब्ध किया है और इसके गुप्त महत्व पर मुग्ध होकर इसके गुणों को विशेष परिश्रम से अधिकाधिक प्रकट किया है; यहां तक कि इस भाषा के जो अमूल्य ग्रन्थ अब तक गुप्त थे आज अपनी जागृत ज्योति से देश देशान्तरों को वेदीप्यमान कर रहे हैं और प्राचीन भारत की विशेषतः जैन साहित्य की उज्ज्वल कमनीय कीर्ति का प्रत्यक्ष प्रमाण दे रहे हैं। ग्रन्थों की उपलब्धि के साथ साथ विद्वानों की रुचिपूर्ण साहित्य की गवेषणा और इसके बढ़ते हुए महत्व को देखकर केवल भारतवर्षीय ही नहीं वरन् प्राच्य और पाश्चात्य समस्त प्रतिष्ठित विश्वविद्यालयों ने अपनी उच्च शिक्षा प्रणाली में किसी न किसी रूप में इस भाषा के रूप रूपान्तरों को योग्य स्थान प्रदान कर इसको यथावत् सम्मानित किया है। पुनः आधुनिक भारतवर्षीय आर्य-भाषाओं ( हिन्दी, गुजराती, बंगला, मराठी आदि ) का इस भाषा के किसी न किसी रूप से प्रादुर्भाव और निकट सम्बन्ध, तथा इन भाषाओं के सम्यक् ज्ञान के लिये इस भाषा की उपयोगिता आदि अनेक महत्वपूर्ण बातों को यथावत् समझने के लिये इस भाषा के बृहत् कोष की परम आवश्यकता प्रतीत हुई।

किसी भाषा का ज्ञान कोष और व्याकरण के बिना सुलभ नहीं हो सकता। प्राप्य ग्रन्थों में अभी तक आधुनिक शिष्ट प्रणाली के अनुसार अर्धमागधी का कोई कोष उपस्थित नहीं है।

अर्ध-मागधी भाषा इसी प्राकृत भाषा की प्रधान एवं महत्वपूर्ण शाखा है, जिसमें सर्वश्रम भगवान तीर्थंकर श्री महावीर स्वामी ने जैन धर्म का उपदेश किया है। यह बात विद्वानों को ज्ञात ही है कि प्राकृत भाषा का साहित्य बहुत विस्तृत है और इसकी एक एक शाखा तथा प्रशाखा पर इस कोष के सदृश अनेक कोष निर्माण करने की बड़ी आवश्यकता है, जो कि विद्वानों के अविश्रान्त परिश्रम, साहित्य सामग्री की उपस्थिति तथा राजा महाराजा धनी मानी सज्जनों के उत्साह पूर्ण सहानुभूति बिना सुलभ नहीं है। मुझे आशा है कि इस सम्बन्ध में गुणी और विज्ञ सज्जन अवश्यमेव दत्तचित्त और सचेष्ट होकर भारत के प्राचीन साहित्य को प्रत्यक्ष और सुलभ करेंगे। भारत की समस्त आर्य-भाषाओं के बहुतसे अज्ञात शब्दों की व्युत्पत्ति पर इसी भाषा की शाखा प्रशाखाओं के द्वारा पूर्ण प्रकाश डाला जा सकता है। इतिहासकारों को तथा प्राचीन तत्व-संशोधकों को इन्हीं सय कारणों से इस भाषा का ज्ञान सम्पादन करना घय आवश्यक ही नहीं वरन् अनिवार्य होगया है, और भाषा का ऐसा ज्ञान सम्पादन करने के लिये एवं उच्च से उच्च तत्वों से परिपूर्ण साहित्य को पढ़ने के लिये कोष ही एक महान् साधन हो सकता है। कोष के अभाव में अर्थ के स्थान में अनर्थ आदि होजाते हैं जिस कारण साहित्य को यही हानि



हो रही है, और जिससे विद्वान् मज्जन रचय परिचित भी हैं। व्यासजी ने महाभारत के आदि में ठीक कहा है “विभेत्यल्पश्रुताऽदो मामयं प्रहरिष्यति”। उपरोक्त से यह प्रत्यक्ष ही है कि कोष की अनुपलब्धि के कारण प्राचीन भारत का गौरवयुक्त इतिहास प्रायः सर्व साधारण के लिये अबतक प्रकाशित नहीं हुआ है और इसके बिना भारत की प्राचीन सभ्यता का दिग्दर्शन होना असम्भवसा ही है।

अर्थ सागरी का महत्व प्रायः जैन साहित्य में बरा पडा है। इन्हीं परम उपयोगी सद्ग्रन्थों के अध्ययन करते समय मेरे पूज्य पिताजी तथा उनके एक मित्र की दृष्टि पाश्चिमात्य विद्वानों के जैन सूत्रों के अंग्रेजी अनुवाद पर पड़ी और उनको यह प्रतीत हुआ कि इन परिश्रम-शील कुशाग्र-बुद्धि विद्वानों ने भी साम्प्रदायिक शब्दों के अर्थ से नितान्त अनभिज्ञ होने के कारण विपरीत अर्थ लिख डाले हैं। उदाहरणार्थ—पाश्चात्य ग़रब विद्वान् और प्रख्यात पण्डित प्रसिद्ध जर्मन् डॉ० हरमन जेकोबी जो जैन साहित्य के प्रौढ पण्डित होने के कारण आज भारतवर्ष में “जैनरत्न-दिवाकर” नाम से प्रख्यात है, आचाराग आदि सूत्रों का जो अंग्रेजी अनुवाद कुछ वर्ष पूर्व किया था उसमें कितने ही शब्दों का जैन सिद्धान्त से विपरीत और अमात्मक अर्थ कर डाला, जिससे जैन समाज में एक प्रकार का चोभ उत्पन्न हो गया और जिसकी दुःखमय स्मृति अभी तक लोगों के हृदय पटल से नहीं हटी है। इस प्रकार साम्प्रदायिक शब्दों को जानने के साधनों के अभाव के कारण साहित्य सम्बन्धी और धार्मिक बहुत कुछ हानि हो चुकी है और हो रही है। ऐसी घटनाओं को देखकर ऐसी त्रुटियों के सशोधन के हेतु, यथार्थ भाव प्रकट करने के लिये कोष के समान अनुपम साधन की अतीव आवश्यकता प्रतीत होने लगी और उसके सम्पादन की इत्कट इच्छा दिन प्रतिदिन बढ़ने लगी। इस दशा में मेरे पूज्य पिताजी ने सन १९१० ईसवी में जैन सूत्रों से शब्द संग्रह करना प्रारम्भ कर दिया और स्वल्प समय में ही लगभग १४००० शब्दों का संग्रह भी कर लिया। इसी समय इटली के सुप्रसिद्ध विद्वान् डॉ० स्वाली ने इसी प्रकार का एक कोष निर्माण करने की इच्छा श्री श्वेताम्बर जैन कॉन्फरन्स को प्रकट की। जब यह बात मेरे पूज्य पिताजी केसरीचन्द्रजी भट्टारी को ज्ञात हुई तब उन्होंने यह विचार करके कि ये माननीय विद्वान् स्वाली महोदय इस महत्वपूर्ण कार्य को अधिक सुयोग्यता और दक्षता से सम्पादन कर सकेंगे, अपनी संग्रह की हुई शब्दावली उक्त कॉन्फरन्स को डॉ० स्वाली महोदय की सेवा में भेजने के लिये स्मर्पण कर दी। समय के फेर से यूरोप में भीषण महायुद्ध प्रारम्भ हो गया तथा अनेक ऐसे कारण उपस्थित हो गये जिससे यह कोष उक्त महोदय द्वारा सम्पादित न हो सका। मेरे पिताजी के अनुरोध से श्री श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फरन्स ने इस कार्य में अभिरुचि प्रकट की तथा व्यय आदि की मजूरी देकर पूर्ण सहायता एवं सहानुभूति प्रकट की। तथापि विद्वानों की सहायता तथा अन्य साधनों की अनुपस्थिति के कारण कोष का महान् कार्य यथेष्ट रूप से उन्नति न कर सका। पिताजी कोष को सुव्यवस्थित रीति से और शीघ्रतासे सम्पादन करने की उग्र चिन्ता में ही थे कि इतने में उन्हें कार्यवश बंवाई जाना पडा और वहां शतावधानी पण्डित मुनिवर श्री रत्नचन्द्रजी स्वामी के शुभ दर्शनों का सुअवसर प्राप्त हुआ। मुनिजी की प्रख्यात विद्वत्ता और सामयिक दर्शन का उपयोग पूज्य पिताजी ने पूर्ण रूप से किया और श्री स्वामी जी महाराज से कोष सम्पादन कार्य के वास्ते विनीत विनय किया, जिसको स्वनामधन्य रत्नचन्द्रजी महाराज ने कृपाकर स्वीकार कर लिया, और बहुत ही अल्प समय में सुचारु रूप से सम्पादन कर

ढाला । केवल तीन वर्ष की अवधि में ऐसे महान् कार्य को सर्वाङ्ग सुन्दर और सम्पूर्ण करना स्वामीजी की विद्वत्ता, बुद्धिमत्ता और कल्याणार्थी परिश्रम का प्रत्यक्ष प्रमाण है ।

## श्री स्वामीजी का संक्षिप्त जीवनचरित्र ।

जैन मुनि श्री रत्नचन्द्रजी महाराज के अविश्रान्त परिश्रम का फल यह कोप है । आपका जन्म संवत् १६३६ वैशाख शुक्ल १२ गुरुवार को कच्छ देश में सुंद्रा नगर के पास भारोरा नामक ग्राम में हुआ । आपकी मातेश्वरी का नाम लक्ष्मीबाई और पिताजी का नाम वीरपाल शाह था । गुजराती भाषा की छः पुस्तकों का अध्ययन करने के अनन्तर आप अपने जेष्ठ बन्धु के साथ कुल-क्रमागत प्रणाली के अनुसार वाणिज्य व्यापार में कुशलता प्राप्त करने के हेतु केवल चारहवें वर्ष ही में बम्बई, बेलपुर ( दक्षिण ) सनावद ( मालवा ) आदि व्यापार स्थानों में भेजे गये, वहां आपने धान्यादि का व्यापार किया । आपका विवाह-संस्कार १३ वें वर्ष हुआ । गृहस्थाश्रम में तीन वर्ष भी व्यतीत न हो पाये थे कि आपकी सहधर्मिणी ने अपने स्मारक स्वरूप केवल एक कन्या को छोड़ इस असार संसार का सदैव के लिये परित्याग कर दिया, और इस प्रकार अपने वियोग से महाराज श्री के सहज परम गुण वैराग्य को परिपूर्ण करने में सहायता दी । महाराज श्री के हृदय में वैराग्य का पूर्ण प्रादुर्भाव तो था ही अपनी धर्मपत्नी के विछोह से आपको अपने इस उत्तम उत्पन्न सहज गुण की वृद्धि करने का अवसर प्राप्त होगया और अत्यंत शोक तथा क्षोभ के स्थान में वैराग्य-वासना ने अपना उत्तरोत्तर बढ़ता हुआ अधिकार जमाया और मुनि श्री रत्नचन्द्रजी महाराज को साधुत्व ग्रहण करने में सहायता दी । साधुत्व अङ्गीकार करने के पूर्व आपने कुछ समय साधुत्व सम्बन्धी आवश्यक तत्वों के ग्रहण करने में व्यतीत किया । दीक्षा स्वरूप महान् सकल्प ग्रहण करने में आप को विशेष आपत्ति न हुई । “ प्रसादचिन्हांनि पुरः फलानि ” क्योंकि आपके पूज्य पिताजी तथा ज्येष्ठ भ्राता वाणिज्य व्यापार द्वारा आजीविका करते हुए भी ऐसे शुभ तथा महान् पुण्य कार्य में मनाही न करने का सत्य सङ्कल्प पहिले ही कर चुके थे । यह असाधारण सुविधा होने पर भी माता के अपार और अगाध प्रेम के कारण महाराज श्री को इस निमित्त आज्ञा तुरन्त न मिल सकी । इस प्रकार एक वर्ष पर्यन्त आपने सासारिक मनुष्य की भांति जीवन व्यतीत करते हुए दण्डवैकालिक, उत्तराध्ययन, थोकड़े इत्यादि का अध्ययन दत्तचित्त होकर किया और इसी अवधि में आपने अपने तीव्र वैराग्य भावों का दृश्य इस प्रकार प्रत्यक्ष किया कि स्वयं, पूज्य माताजी ने उन्हें दीक्षा ग्रहण करने के लिये अनुमति प्रदान कर दी । इस प्रकार आपने संवत् १६५३ के जेष्ठ शुक्ल ३ के दिन पूज्यपाद श्री १००८ श्री गुलाबचन्द्रजी स्वामी ( लीबडी संप्रदाय ) के समीप अपनी उमर के १७ वें वर्ष में परम पवित्र दीक्षा ग्रहण की । दीक्षित होने के पश्चात् शीघ्र ही आपने सस्कृत का अध्ययन प्रारम्भ कर दिया और अल्प काल में ही सिद्धान्तचन्द्रिका, सिद्धान्तकौमुदी, तत्त्वत्रयी, जगदीश, पञ्चकाव्य, अलङ्कार, साहित्य, नाटक आदि का सम्यक्ज्ञान उपार्जन कर लिया, और अनन्तर न्याय के तर्कसंग्रह से लगाकर जगदीश गदाधर के बाध-अनुमति ग्रन्थ तक अध्ययन भलीभांति किया । इसके पश्चात् साख्यदर्शन, पातञ्जलदर्शन आदि ग्रन्थों का जिज्ञा कच्छ और काठियावाड़ के



अनेक ग्रामों में रहकर उपार्जन की और इस प्रकार सतरहवें वर्ष की अवस्था से लगाकर उनतीस वर्ष तक संस्कृत का अध्ययन किया तदनन्तर संवत् १९६६ से व्याख्यान देना और अध्यान करना प्रारम्भ किया। आप ऐसे प्रतिभाशाली मुनिरत्न हैं कि लगातार सौ अध्यान कर सकते हैं। इन श्रीमान् के अध्यान कई अच्छे अच्छे ग्रामों में हुए हैं और उनकी रिपोर्ट पुस्तकाकार रूप में प्रसिद्ध हो चुकी है। बम्बई में भी एक समय अध्यान हुए थे, उस समय महाराजजी की विद्वत्ता का प्रत्यक्ष प्रमाण करने के लिये सर चंदावरकर आदि अनेक विद्वान उपस्थित हुए और अन्त में महाराज की सामर्थ्य, विद्वत्ता और बुद्धिमत्ता की मुक्तकण्ठ से प्रशंसा की है। जैन मुनियों में आपके सदृश विद्वान, बुद्धिमान, उत्साही, परिश्रमी, विवेकी, शान्तप्रकृति और निरभिमानी मुनि थोड़े ही होंगे। आप जैसे विशिष्ट विद्वान हैं वैसे ही धुरंधर लेखक और आशुकवि भी हैं। आपने कई ग्रन्थों की रचना संस्कृत और गुजराती भाषा में की है जिनमें कर्तन्यकौमुदी, भावनाशतक, अजरामरजी स्वामी का जीवन-चरित्र, गर्भित भक्ताम्बर की पादपूर्ति, ३५ स्तोत्र आदि प्रधान हैं। आपके कई संस्कृत और गुजराती लेख मासिक पत्रों द्वारा प्रसिद्ध हो चुके हैं और उनका संग्रह “रत्नगयमालिका” नामक पुस्तक में प्रकाशित हो चुका है। यह कोष जिसके अभाव में बड़े बड़े विद्वान जैन धर्म के अगम्य और अद्वितीय तत्वों का भाव यथावत् न समझ सकते थे और जिसके लिये आज सकल विद्वत्समाज टकटकी लगाये हुए आतुरता से देख रहा था उक्त मुनिजी ही के अविश्रान्त परिश्रम का फल है।

## कोष की उपयोगिता।

यह सन्तोष की बात है कि जैन धर्माध्यायी सज्जनों की संख्या अब दिन प्रतिदिन बढ़ती जा रही है। भारतीय विद्वान ही नहीं, किन्तु इंग्लैंड, जर्मनी, फ्रान्स, इटली, अमेरिका आदि देशों के प्रसिद्ध २ विद्वान भी इस धर्म के साहित्य को ग्रहण करने लगे हैं। इस लिये उन्हें और इतिहास-खोज करने वालों को अर्ध-मागधी भाषा के साहित्य का अध्ययन करना पड़ता है। इन पाठकों तथा सज्जनों के लिये कोष अमूल्य ही है। इसके सिवाय वर्तमान आर्य भाषाओं जैसे हिन्दी, गुजराती, बंगला, मराठी आदि के शब्दों की व्युत्पत्ति ढूँढ कर निकालने में तुलनात्मक भाषा-शास्त्र के अध्ययन करने वाले को बड़ी कठिनाई होती है। इस कोष से वे कठिनाइयाँ भी दूर हो सकती हैं। साथ में वर्तमान देशी भाषाओं के विकास की जो चर्चा साहित्य-संसार में चल रही है, उसको भी इस ग्रन्थ से बड़ी भारी सहायता मिलने की पूर्ण संभावना है। इसके सिवाय यह कोष अर्ध मागधी के अतिरिक्त संस्कृत, गुजराती, हिन्दी और अंग्रेजी इन चार भाषाओं में होने के कारण हर एक देश के विद्यार्थी को उपयुक्त हो सकता है। प्रायः आज तक जितने कोष देखने में आये हैं, वे सब केवल एक या दो ही भाषा के हैं, और इस कारण सर्व साधारण के लिये उपयुक्त नहीं हो सकते। सार्वजनिक उपयोगी बनाने के हेतु इस कोष की रचना पर विशेष ध्यान रक्खा गया है। हर एक देश के विद्यार्थियों से लेकर बड़े २ विद्वानों के भी उपयोग में आ सके, इस हेतु भारत की राष्ट्र भाषा हिन्दी, राजभाषा अंग्रेजी, आदि भाषा संस्कृत तथा गुजराती का उपयोग किया गया है। अर्ध-मागधी शब्दों का अनुवाद उपरोक्त कही हुई भाषाओं

में किया जाने के कारण तुलनात्मक भाषा शास्त्र और साहित्य अध्ययन करने वालों के लिये यह बड़े ही महत्व की चीज़ होगी, इतना ही नहीं, परन्तु यह कोष अर्ध-मागधी भाषा में भरे हुए जो अगम्य तत्व हजारों वर्ष पहिले जाने जा चुके हैं उन्हें सुलभता से और सुगमता से जानने की कुजी है। इस ग्रन्थ में हजारों अर्ध-मागधी अवतरण भी दिये गये हैं, इस कारण यदि इस कोष को अवतरण-कोष भी कहें तो अनुचित न होगा। इन अवतरणों को पढ़ने से आनन्द और शान्ति के साथ २ ज्ञान की भी खूब वृद्धि होती है। कोष की उपयोगिता बढ़ाने के हेतु क्रियाओं और सज्ञाओं के रूपाख्यान भी दिये गये हैं, तथा गहन शब्दों का स्वरूप स्पष्ट रीति से समझाने के अभिप्राय से जहाँ तहाँ कितने ही चित्रों की भी योजना की गई है। इस कोष की एक और विशेषता यह है कि इसके अंग्रेजी अनुवाद में जहाँ २ पारिभाषिक आदि शब्द ज्यों के त्यों अंग्रेजी अक्षरों में रखे हैं उनका उच्चारण शुद्ध और सुलभता से हो सके इस हेतु उन शब्दों के अक्षरों के ऊपर अलग २ तरह के चिन्ह किये हैं जिससे पाश्चिमात्य विद्वान शब्दों का शुद्ध उच्चारण बहुत ही सुलभता से कर सकते हैं। इस प्रकार इस ग्रन्थ को सर्वाङ्ग सुन्दर बनाने में विशेष ध्यान रक्खा गया है। मैं यह कहना अत्युक्ति नहीं समझता कि इसके समान उपयुक्त पञ्चभाषिक कोष आज तक प्रकाशित नहीं हुआ। इस कोष में जो अर्थ दिये गये हैं वे विशिष्ट साम्प्रदायिक मंतव्य रहित हो कर निर्विवाद, असन्दिग्ध और शुद्ध हैं क्योंकि इस ग्रन्थ के संपादक एक विद्वान तत्वज्ञानी और जैन धर्म के आचार विचार को पूर्णतया जानने वाले निर्मल मुनि-रत्न हैं। अन्य साम्प्रदायिक जैनी भाइयों से मैं यह विशेष प्रार्थना कर देना चाहता हूँ और उनको पूर्ण विश्वास दिलाना आवश्यक समझता हूँ कि इसमें साम्प्रदायिक भेदभाव नहीं रक्खा गया है। इस कारण जैन धर्मान्तर्गत श्वेताम्बर, दिगम्बर, स्थानकवासी आदि समस्त संप्रदाय के महानुभाव इस ग्रन्थ से महान् लाभ उठा सकते हैं।

## कोष बनाने के कार्य में उपस्थित बाधाएं।

प्रथम तो इस भाषा के जानकार विशेषतः जैन मुनि ही होने के कारण प्रायः इन मुनियों के सिवाय इस कार्य में विशेष सहायता इतर सज्जनों से प्राप्त न हो सकी। जैन मुनि धर्मशास्त्रानुसार मर्यादित काल से अधिक समय एक ग्राम में निवास नहीं कर सकते और छोटे बड़े सब ही प्रकार के ग्रामों में उन्हें विचरना होता है ऐसी दशा में कोष जैसे महान् कार्य को करने के साधन व सञ्चित सामग्री सर्वत्र समुचित उपस्थित न हो सकी। इस कारण शब्द-संग्रह आदि कार्यों में नाना प्रकार की बाधाएं उपस्थित हुईं। पुनः इस कार्य में सहायता के हेतु जो शास्त्री आदि अन्य सहायक श्री महाराजजी की सेवा में रखे गये थे वे जैन धर्म से अपरिचित होने के कारण उनसे यथेष्ट सहायता न मिल सकी। श्री महाराजजी के विहार के कारण शास्त्री आदि अन्य कार्यकर्त्ताओं को भी उनके साथ २ बारबार एक ग्राम से दूसरे ग्राम जाना आवश्यक होता था और यह परिश्रम बहुतों को असह्य होने के कारण किञ्चित् अनुभवप्राप्त कार्यकर्त्ता इस कार्य का परित्याग कर देते थे। नये कार्यकर्त्ताओं को पुनः कार्य से परिचित कराने में बहुत कुछ कष्ट उठाना पड़ा और कार्य में विलम्ब हुआ। जिन जैन मुनियों से शब्द-संग्रह के कार्य में सहायता प्राप्त हुई उनके शुभ नाम

उल्लेख करना मेरा आवश्यक धर्म है और वे परिणत, मुनि श्री उत्तमचन्द्रजी स्वामी (लौदही सम्प्रदाय) पंजाब के श्री उपाध्यायजी श्री आत्मारामजी महाराज, प्रवर परिणत पूज्य श्री माधव मुनिजी महाराज और कच्छ आठकोटि सम्प्रदाय के परिणत मुनि श्री देवचन्द्रजी स्वामी हैं। इन्हों के अतिरिक्त श्रीयुत पोपटलाल केवलचंद शाह ने भी शब्द-संग्रह के कार्य में यद्यपि अल्प किन्तु जो तन मन से सहायता की है उसके लिये मुझे आशा है कि साहित्यानुरागी विद्वान आप सर्व महानुभावों के अवश्य आभारी होंगे। यह कार्य अत्यन्त विद्वत्तापूर्ण होने के कारण इस कार्य में योग देने योग्य सज्जन केवल गिने चुने उपरोक्त मुनिवर हैं। मैं उनका परम उपकार मानता हूँ। इन निर्दिष्ट मुनिवरो के सिवाय जैन साधुवर्ग में दो चार महात्मा ऐसे हैं कि जो इस कार्य में विशेष सहायता दे सकते थे, कारण वे अच्छे विद्वान भी हैं किन्तु कई ऐसे अनिवार्य कारण उपस्थित होगये कि जिससे वे साधुजन कोप जैसे महत्वपूर्ण कार्य में योग न दे सकें। यदि उन महात्माओं द्वारा इस कोप के कार्य में सहायता मिलती तो यह कोप और भी सुन्दर होजाता किन्तु “कर्मणो गहना गतिः” इस अद्वैत सिद्धान्त के अनुसार हमें उनकी मौलिक विद्वत्तापूर्ण सहायता से वञ्चित ही रहना पड़ा।

मूल शब्दों के गुजराती अर्थ का हिन्दी अनुवाद करवाने में बड़ी भारी बाधा उत्पन्न हुई। वैसे ही अंग्रेजी अनुवाद के लिये अंग्रेजी जानने वाले विद्वानों की खोज की गई परन्तु जितने विद्वान मिले सब अजैन या दिगम्बर जैन मिलने के कारण उनसे अनुवाद करवाने पर कई जगह त्रुटियाँ पाई गई, जिसका कारण इन सज्जनों का साधुओं के आचार से तथा अन्य पारिभाषिक शब्दों से अनभिज्ञ होना ही है। पारिभाषिक शब्दों का अनुवाद यथावत् न कर सके, इतना ही नहीं, किन्तु कई स्थानों में अर्थ के अनर्थ कर डाले, जिन्हें सुधारने में बहुत ही परिश्रम उठाना पड़ा। इन अनर्थों के कुछ नमूने नीचे उद्धृत किये जाते हैं जिससे विज्ञ सज्जनों को यह ज्ञात होजायगा कि साम्प्रदायिक पारिभाषिक शब्दों का भाव अन्य भाषा के अनुवाद में लाना विशेषतः जैन धर्म के रहस्य से अपरिचित विद्वानों के लिये कितना कठिन है।

मूल शब्द ।	गुजराती अनुवाद ।	हिन्दी या अंग्रेजी अशुद्ध अनुवाद ।	हिन्दी या अंग्रेजी शुद्ध अनुवाद ।
१ अजाया त्रि०	साधुने नाखी देवानी चीज यत्ना-सहित परठववी ते.	साधु की फैंकदेने योग्य चीज को यत्ना पूर्वक सभाल कर रखना	साधु के तजने योग्य वस्तु को यत्नान्तर पूर्वक त्यागना
२ अणाउत्त त्रि०	उपयोग रहित, उप- योग विनानो, असा- वचेत	बिना उपयोग का; निरूपयोगी Useless	उपयोग रहित अ- सावधान. Un- wary, without proper circum- spection
३ अणाउत्तगमण न०	उपयोग विना चाल- वु ते.	Un-necessary movement	Movement without proper circumspection

पासत्था वगैरेणुं उत्तरवानु स्थान

पशु अथवा नर्पुसक आदि के उत्तरने (ठहरने) का स्थान.

शिथिलाचारी आदि के उत्तरने (ठहरने) का स्थान

५ अणिदानता स्त्री०

नियाणुं न करवानो भाव, फलाशसा रहितपणु

जिसका निदान न किया जासके वह

फलाशा रहित भाव, नियाणा न करने का भाव,

६ अणसणिजः त्रि०

साधुने न कल्पे तेवु

साधु की कल्पना में न आवे ऐसा.

साधुके लेने योग्य न हो वैसा, किसी भी दोष से जो अभ्राष्ट्र होगया हो वह

इस कोप की अंग्रेजी प्रस्तावना लिखने में प्रो ए. सी वूलनर साहिब ने जो परिश्रम उठाकर इस कोप की उपयोगिता और उपादेयता बढ़ाई है उसके लिये मैं उनका अन्त करण से आभारी हू। वैसे ही श्रीयुत बनारसीदासजी एम. ए प्रोफेसर ओरियंटल कॉलेज लाहोर, इन्होंने ने कोप की उपयोगिता बढ़ान के लिये जो अर्थ-मागधी व्याकरण देकर उदारता बतलाई है तथा कोप के कार्य में जो यथा समय सूचनाएँ दी है उनके लिये मैं आपका बहुत आभार मानता हू।

इस कोप का अंग्रेजी अनुवाद श्रीयुत प्रीतमलालजी कच्छी बी ए ने किया है। यद्यपि आप अजैन हैं-तो भी आपने इस कार्य के पूर्व ही जैन-शास्त्र आदि का मनन कर लिया था जिस कारण आप साम्प्रदायिक व पारिभाषिक आदि शब्दों के अर्थ का भाव भलीभाँति अंग्रेजी में ला सके। यद्यपि इन महाशय को शब्दानुवाद के लिये पर्याप्त द्रव्य प्रदान किया गया था तथापि इन्होंने यह कार्य केवल वैतनिक दृष्टि से ही नहीं किया, वरन् उत्साह और प्रेम के साथ किया जिसके लिये मैं आपका परम उपकार मानता हू। इसी ही प्रकार परिद्धत ठाकुरदत्तजी शास्त्री ने महाराज श्री रत्नचन्द्रजी के समीप रहकर जो कोप का कार्य किया है तथा छापखाने में रहकर सशोधन के कार्य में जो परिश्रम उठाया है उसके लिये आप अनेक धन्यवाद के पात्र हैं।

इस कोप के कार्य में प्रो एस् के डेलवेलाकर एम् ए पीएच् डी डेफन कॉलेज पूना, ने बारम्बार अनेक सूचनाएँ देकर कोप को उपयुक्त और सर्वाङ्ग सुन्दर बनाने में जो सहायता दी है तथा परिद्धत गौरीशकर हीराचदजी ओझा ने कतिपय प्रूफ सशोधन के कार्य में जो कष्ट उठाया है उसके लिये मैं आपको अनेक धन्यवाद देता हू। जिन २ ग्रामों में श्री महाराजजी ने रहकर कोप का काम किया है और वहाके सघ के जिन जिन नेताओं ने परमार्थ बुद्धि से स्वयं कोप के कार्य में सहायता दी है उन महानुभावों के नाम निम्नलिखित हैं। मैं उनका परम उपकार मानता हू।

बम्बई-श्रीयुत नगीनदास माणिकलाल ।  
कोर-भावसार मगनलाल कुबेरदास ।  
जैतपुर-वकील जीवराज वर्धमान ।  
लीवडी-शेठ धीरजलाल त्रिबकलाल ।  
वांकाणे-शेठ वनेचंद देवजी ।

सूरत-भावसार गुलाबचन्द कल्याणचन्द ।  
धोराजी-शा न्यालचन्द जेष्ठजी ।  
पोरबंदर-धेवरिया देवीदास लखमीचंद ।  
थानगढ-शेठ गोपालजी लाडका ।  
मोरवी-शेठ वांकमचंद अमृतलाल ।

इन सज्जनों के अतिरिक्त मुनि श्री रूपचन्द्रजी स्वामी, मुनि श्री शिवलालजी तथा बाहीलाल छोटावाल ( लोंवड़ी ), धोराजी कन्याशाला के अध्यापक श्रीयुत कालिदास दामजीने भी जो यथाशक्ति मदद दी है उसके लिये मैं आपका आभारी हूँ ।

साहित्य सम्बन्ध में मेरे पूज्य पिताजी को कितनी निर्मल और उग्र रुचि है इसका साक्षी स्वयं यह कोष प्रकाशनका कार्य है । मुझे पूर्ण विश्वास है कि प्रकाशक के यह दो शब्द यदि स्वयं मेरे पूज्य पिताजी की लेखनी से लिखे जाते तो कहीं अधिक उपयुक्त और रुचिकर होते, परन्तु इस कोष की हस्तलिखित प्रति संपूर्ण पूरी होने के पूर्व ही “ श्रेयांसि बहुविघ्नानि ” इस नियम के अनुसार मेरे पूज्य पिताजी को गहन मानसिक व्याधि ने आ घेरा और उन्हें यह कार्य इसी ही दशा में विवश हो छोड़ना पड़ा । श्रीमान् पिताजी की आज्ञानुसार यह अवशिष्ट कार्य करना मेरा परम धर्म हुआ । यद्यपि मेरी शक्ति और बुद्धि इतनी नहीं है कि मैं इस उत्तम ग्रन्थ को विज्ञ सज्जनों की सेवा में उपस्थित कर सकूँ, तथापि पूज्य पिताजी के अनुग्रह और विद्वानों की सुदृष्टि के आधार पर मैं इस कोष को विद्वत्समाज की सेवा में सादर समर्पण करता हूँ और यह विनती करता हूँ कि मेरे अल्पज्ञान के कारण सशोधनकार्य में यदि त्रुटियाँ रह गई हों तो उदार पाठक वृन्द “ हंसक्षीरन्यायेन ” शुद्ध बातों को ग्रहण करेंगे और मेरी अज्ञानता के लिये क्षमा प्रदान करेंगे, तथा द्वितीय संस्करण के हेतु रचना पद्धति अनुवाद, छपाई आदि सम्बन्धी त्रुटियों की सूचना मुझे देनेका परम अनुग्रह प्रकट करेंगे । ग्रंथेजी अनुवाद सम्बन्धी कठिनाइयों का सार अनुवादक महोदय की वचनावली से प्रकट होगा ।

अंत में शतावधानी मुनिवर श्री रूपचन्द्रजी महाराज को पुनः अनेकानेक धन्यवाद देना मैं अपना परम कर्तव्य समझता हूँ क्योंकि उनके उत्साह, सद्धर्म-पालन और अनेक शास्त्र परिशीलन बिना यह प्रकाशन सर्वथा असंभव ही होता । श्री श्वे० स्था० जैन कान्फरन्स को धन्यवाद देना और उसका गुणगान करना मेरा आवश्यक धर्म है, क्योंकि इस संस्था की सहायता और उत्साह वृद्धि के कारण इस उत्तम साहित्य सेवा का परम सौभाग्य मेरे पूज्य पिताजी को प्राप्त हुआ ।

राजवाड़ा चौक

इन्दोर (मालवा)।

विनीत

सरदारमल भंडारी





उपरिक्त - ( उपरितन ) आदि २ किन्तु ऐसे शब्दों के पूर्व यह \* चिन्ह नहीं दिया उसका कारण यह है कि ये शब्द खास अर्ध-मागधी भाषा के ही हैं और इनके लिये संस्कृत के निर्दिष्ट रूप ही प्रचलित तथा प्रसिद्ध हैं । वर्णभेद होते हुए भी केवल अवगणमात्र से ही उनके संस्कृत रूपों का बोध हो जाता है । इस कारण ऐसे शब्दों के पूर्व यह \* चिन्ह नहीं दिया । वैसे ही ऐसे शब्दों के रूपान्तर साहित्य में किसी जगह देखने में नहीं आये ।

( ७ ) मूल शब्द के आगे जो जाति दी गई है वह अर्ध-मागधी शब्दों की ही है न कि उनके संस्कृत-पर्यायों की । प्रायः मूल शब्द और संस्कृत प्रतिशब्दों की जाति अधिकांश मिलती जुलती ही है तथापि खासकर वह जाति मूल शब्दों की ही है । जिस शब्द की जो जाति सूत्र में मानी गई है अर्थात् सूत्रकारों ने जिस शब्द को जिस जाति में प्रयुक्त किया है उस शब्द की वही जाति यहां भी दी गई है जैसे:-अक्खुद्. पुं० ( अक्षुद्र ) गंभीर श्रावक । यह शब्द पुलिङ्ग माना गया है, किन्तु संस्कृत में क्षुद्र अथवा अक्षुद्र दोनों विशेषण माने गये हैं, वास्ते यह तीनों लिङ्गों में प्रयुक्त होना चाहिये था किन्तु सूत्रों में यह शब्द केवल श्रावक के लिये ही आया है और उसे पुलिङ्ग ही माना है वास्ते कोष में भी उसे पुलिङ्ग बतलाया है । इसी प्रकार अंविस्त न० ( अम्लता ) एक प्रकार की वनस्पति । संस्कृत में यह शब्द स्त्रीलिङ्ग माना है किन्तु सूत्रों में इस शब्द को नपुंसक लिङ्ग में ही प्रयुक्त किया है वास्ते यहां भी उसे नपुंसक लिङ्ग में ही रखा है ।

( ८ ) शब्दों का अनुक्रम वर्णमाला के अनुसार-अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ए, ओ, अं, और षाद में व्यञ्जन-क, ख, ग, वगैरह इस प्रकार रखा है ।

( ९ ) संस्कृत भाषा में जिस प्रकार अनुस्वार को परसवर्ण-वर्ग के अन्त्याक्षर के रूप में परिवर्तन कर स्थानान्तर-अनुनासिक + अक्षर के बाद रखा जाता है, वैसा अर्ध-मागधी भाषा में नहीं होता । इस भाषा में अनुस्वार को अनुस्वार के ही रूप में रखा जाता है अतः उसकी गणना अनुस्वार ही में की गई है, इस कारण इस कोष में अनुस्वार को व्यञ्जन के पूर्व ही रखा है, जैसे—अओ के बाद अंक और उसके पश्चात् अकड आदि ।

( १० ) सम्बन्धार्थ कृदन्त, हेत्वर्थ कृदन्त, और वर्तमान कृदन्त इनमें जिसका धातु नहीं मिला वह अलग दिया है और जिसका धातु उपलब्ध है, उसे धातु के साथ ही रखा है । तीनों प्रकार के कृदन्त जहां स्वतन्त्र ( धातु के अतिरिक्त ) दिये हैं, वहां उन्हें अव्यय कर दिया है, कारण कि सूत्रकारों ने भी ऐसी हालत में प्रायः इनको अव्यय ही माना है । जैसे:- अक्रियार्ण

÷ 'ल्ल' प्रत्यय अर्धमागधी में प्रसिद्ध होने के कारण यह \* चिन्ह नहीं दिया । इसकी संस्कृत छाया ' ल्ल, ल्ल, ल्ल ' है ।

+ अनुस्वार के बाद जब 'क' से 'म' तक कोई भी अक्षर आता है तब अनुस्वार को परसवर्ण अर्थात् कवर्ग का कोई अक्षर हो तो 'ङ' और चवर्ग का कोई वर्ण हो तो 'ञ' आदि आदि होजाता है । इसीसे संस्कृतमें अनुस्वार सबसे प्रथम न रखकर अन्त में दिया जाता है । वही अनुस्वार प्रथम आता है जिसके अन्त्य वर्ण य र ल व श ष स ह होते हैं ।

सं० कृ० अ० ( अकृत्वा ) आदि २ । जहां तक हो सका वहां तक ऐसे रूपों को धातु के साथ ही रक्खा है; परन्तु जिनके धातु खोज करने पर भी न मिल सकें और जो धातु मिलें उनके साथ वर्ण-सादृश्य न होने के कारण इन्हें पृथक् ही रखना पड़ा ।

( ११ ) धातु + के मुख्यतया तीन गण माने गये हैं जो धातु प्रथम गण के हैं उनके आगे I ऐसा अङ्क दिया है । जो द्वितीय गण के हैं उनके आगे II ऐसा अङ्क दिया है और जो उभयगण के हैं उनके आगे I, II ऐसे अङ्क दिये हैं । थोड़े धातुओं की क्रियाएँ अलग भी दी गई हैं, जैसे:-अकरिंसु, अलाहि आदि २ । इन क्रियाओं को पृथक् रखने का कारण यह है कि, ये क्रियाएँ लुङ् लकार की हैं और इनके पूर्व 'अ' है, अनुक्रम में फरक न आने के हेतु इनको अलग रखकर इनके आगे लिख दिया है कि देखो 'कृ' धातु और 'लभ्' धातु । क्रिया को देखने के पूर्व उसके धातु को देखना चाहिये जिससे उस धातु के साथ ही सब क्रियाएँ मिल सकती हैं । अर्ध-मागधी में उपसर्ग धातु के साथ ही रक्खा है और संस्कृत में उपसर्ग और धातु के बीच यह + चिन्ह दिया है । कहीं कहीं नाम धातु भी आये हैं और उनके आगे ना० धा० ऐसा सन्नेप किया गया है ।

( १२ ) एकार्थ वाचक शब्दों का अन्तिम अक्षर यदि 'अ' अथवा 'य' आया है तो दोनों ( अ, य ) उस शब्द के साथ दिखला दिये हैं, जैसे:-अवगअ-य \* । इसी प्रकार धातु के रूपों में भी अन्तिम अक्षर 'इ' और 'ति' उस रूप के साथ ही बतलाए हैं । कहीं पर 'अवगअ' व कहीं पर 'अवगय' ऐसे दोनों रूप देखने में आते हैं परन्तु इस शब्द का प्रयोग जहाँ जहाँ स्वतन्त्र रूप से किया है और जब वह विभक्त्यन्त हो जाता है तब 'अवगए' ऐसा ही होता है ।

( १३ ) कई स्थानों में शब्दान्तर्गत 'क' और 'ग' के दो शब्द न दिखलाकर उन दोनों को और ग का एक ही शब्द में वैकल्पिक समावेश कर दिया है, जैसे—अव्वोक-ग-ङ (अव्याकृत) ।

( १४ ) तद्, युष्मद्, अस्मद् आदि त्यदादि शब्दों के रूप जहाँ तक सूत्रों में मिल सके, सभी प्रथमा विभक्ति से सातवीं विभक्ति तक अनुक्रम से दिये हैं । अर्ध-मागधी में चतुर्थी विभक्ति का व्यवहार नहीं होता वास्ते उसके रूप नहीं दिये । चतुर्थी विभक्ति को जानने के प्रत्यय

+ जिस धातु के उपान्त्यवर्ण अर्थात् प्रत्यय ( तिप्, तस्, मि आदि ) के पूर्व के अक्षर में 'ए' की मात्रा लग जाती है, वे धातु द्वितीय गण के होते हैं । जिस धातु के उपान्त्य अक्षर में "ए" की मात्रा नहीं लगती वे प्रथमगण के होते हैं । कोई धातु ऐसे भी है कि जिनको यह मात्रा विकल्प से लगती है । ऐसे धातु उभयगणी माने गये हैं, जैसे:-, अरिहइ प्रथमगणी, अवमय्येति द्वितीयगणी, अवक्कमइ, अवक्कमेइ उभयगणी ।

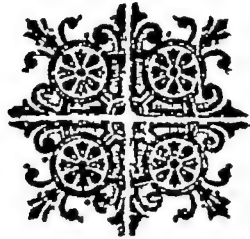
\* इस शब्द में 'अ' के पीछे 'य' है, कहीं पर 'य' के पीछे 'अ' मिलेगा इस प्रकार का विन्यास प्रमाणाधिक्य ( अर्थात् सूत्रों में अकारान्त शब्दों का बाहुल्य होने से 'अ' प्रथम और यकारान्त शब्दों की प्रचुरता से 'य' प्रथम रक्खा है ) रेफरन्स और कोटेशनस के लिहाज से किया है ।

‘ तथे ’ ‘ हे ’ हैं । कई शब्दों के ऐसे भी रूप दिये गये हैं कि जिनका अन्य शब्दों की अपेक्षा किसी विभक्ति में भिन्नरूप होता है, जैसे—‘ राजन् ’ शब्द का षष्ठी विभक्ति में ‘ राणो ’ ऐसा रूप होता है ।

( १५ ) कोई भी शब्द बिना सूत्रों में देखे और बिना अनुसन्धान किये नहीं दिया गया । अवतरण ( कोटेशन ) केवल जहां देना उपयुक्त व आवश्यकीय समझा वहीं दिया गया है तो भी प्रायः फी सदी पचास के अवतरण दिये गये हैं । सूत्रों के जो प्रमाण अङ्क (रेफरन्स) दिये हैं वे बिलकुल ही सही हैं; कारण उनको एक बार ही नहीं किन्तु अनेक बार जांचकर दिया है । समस्त शब्द वर्तमान में जितने ग्रन्थ उपलब्ध हैं और जिनकी सूचि दे चुके हैं, उन्हीं में से चुने गये हैं । खुलासे के लिये देखो “ कोषान्तर्गत सूत्रोनी यादी ” ।

( १६ ) संस्कृत-पर्याय अनेक कोषानुमोदित और व्याकरणरीति से भी शुद्ध हैं । जहां एक संस्कृत पर्याय से काम नहीं चला वहां उसका दूसरा पर्याय भी दिया है, वैसे ही कहीं कहीं प्रकृति-प्रत्यय भी दिखलाया है; व्युत्पत्ति समास भी किये हैं । प्रत्येक शब्द का धातु वगैरह लिखने से या प्रकृति-प्रत्यय समासादि करने से अथवा दूसरा पर्याय आदि देने में ग्रन्थ का विस्तार एक दम बढ़ जाता, वास्ते आवश्यकता से अधिक इस विषय की ओर ध्यान नहीं दिया । अन्य भाषाओं में दो दो तीन तीन पर्याय देकर प्रकारान्तर से अर्थ करके समझाया गया है ।

( १७ ) संस्कृत साहित्य के अनुसार एक शब्द के अनेक अर्थ हो सकते हैं, किन्तु इस कोष में केवल वे ही अर्थ दिये गये हैं जो कि सूत्र-प्रतिपादित हैं । प्रकारान्तर से इस कोष को “आगमकोष” भी कह सकते हैं ।





## चित्र-सूची ।

क्र.	नाम	पृष्ठ संख्या
१	अंधयारखेत ( अन्धकार-क्षेत्र ) .. ...	३५
२	अट्टमंगल ( अष्ट-मङ्गलिक ) .. ...	१२५
३	अट्टारससहस्ससीलंगरह ( अष्टादशसहस्र-शीलाङ्ग-रथ ) ...	१३१
४	अट्टाद्वज्जदीव ( अढी-अढाई द्वीप ) ...	१३६
५	अभिगम ( अभिगमन ) ...	३४६
६	अभिसेयसिला ( अभिषेक-शिला ) ...	३६७
७	अहोलोय ( अधोलोक ) . ...	५१०



॥ श्रीः ॥

→॥ नमोऽस्तु महावीराय ॥←

❀ सचित्र ❀

## ॥ अर्द्धमागधी-कोष ॥

अ ]

अ.

[ अड्डकस

अ. अ० ( च ) अने, वणी और And, also दस० ६, १, १३, ( २ ) गाथानुं यरलु पु३ डरवा आ अव्यय वपरायछे गाथा का चरण पूरा करने के काम में आने वाला a particle used expletively. अणुत्त० १०, ८, क० गं० १, ३६, ५८,

अअगर. पुं० ( अजगर ) अज-अडरे, तेने गर-गणीनार, ओक जतनेो भोटेो पीडामलो साप, अजगर अजगर एक साप का नाम, जो वकरो को भी निगल जाता है A huge serpent ( boa-constrictor ) said to swallow goats सू० २, ३, २४,

अइ. अ० ( अति ) अतिशय, धलु, वधारे, अत्यंत ज्यादा, बहुत, अतिशय. Excessive, too much नाया० १, १५, पंचा० १, २, पि० नि० भा० २५,

अइअंवल. त्रि० ( अत्यम्ल ) अतिआदु बहुत खट्टा Very sour, very acid कप्प० ४, ६५;

अइअच. सं० क० अ० ( अत्येत्य ) अतिक्रमण डरीने, उल्लंघनीने उलाघकर Having transgressed, having gone beyond bounds. “अइअच सव्वयो सगं” आया० १, ६, २, १८३, ( २ ) उपेक्षा डरीने,

गणुडार्या विना उपेक्षा करके having neglected, not having minded. “फरसाड दुत्तितिव्खाड अइअच मुणी परकम-मारो” आया० १, ६, १, ६,

अइआर. पुं० ( अतिचार ) व्रत, डे प्रतिज्ञा लांगवानी तैयारी डरवी, व्रतभंगने सन्मुख थयुं ते, व्रतनी छे उल्लंघवाने पग उपाउवे; व्रतविगधवानी डाशिश व्रत, अथवा प्रतिज्ञा भंग करने को उद्यत होना Readiness to violate a vow, a preparatory stage of the violation of a vow. ठा० ३, ४, प्रव० २६६;

अइइ. स्त्री० ( अदिति ) पुनर्वसु नक्षत्रनेो अधिष्ठाता देवता पुनर्वसु नक्षत्र का अधिष्ठाता देवता The presiding deity of the Punaivasu constellation the seventh of the lunar asterisms. “पुराव्वमू अइइदेवयाए परणत्ते” सू० ५० १०; ठा० २, ३,

अइउकस. त्रि० ( अत्युत्कर्ष-उत्कर्षमभिमान-मतिक्रान्तः ) अभिमानगदित, आहुंकार विनानेो अहकार रहित अभिमान विनाका. Devoid of pride “नवस्सो अइउमो” दस० ५, २, ४२;

अइउच्च. त्रि० ( अन्युच्च ) अति उंचुं, धाणु  
उंचुं बहुत ऊंचा Very high “नाइउ-  
चे व नीएवा” उत्त० १, ३४,

अइउज्जल. त्रि० ( अत्युज्जल ) अतिशुभ्र,  
धाणुयोक्षुं बहुत अच्छा. Extremely  
clear, very bright. सु० च० ४, १८०,

अइउरह. त्रि० ( अत्युष्ण ) अति उनुं बहुत  
गर्म Excessively hot. कप्प० ४,  
६५;

\* अइउल्ल. त्रि० ( अत्यार्द्र ) अतिभिनुं, भाणु  
‘ बिनाशवाणुं बहुत गोला Very damp  
कप्प० ४, ६५,

अइउसिण. त्रि० ( अत्युष्ण ) धाणुं गरम,  
धाणु उनुं बहुत गर्म Very hot सु० च०  
२, ४१६,

अइकंङ्कइय. न० ( अतिकण्डूयित ) नभवडे  
अतिशय भन्नेणवु-वलेरवुं. नखो से बहुत  
ज्यादह खुजाना Scratching too  
much with nails “नाइकंङ्कइयं सेयं”  
सूय० १, ३, ३, १४,

अइक्कखड. त्रि० ( अतिकर्कश ) अत्यन्त  
डंकेणु-डंकेणु; धाणु भडभयणुं बहुत खरदरा  
Very hard, extremely rough  
विशे० १०४५,

अइकाय. पु० ( अतिकाय ) दक्षिण दिशाभा  
रहेनार महोरग नतिना व्यंतरदेवतानो  
४५ दक्षिण दिशा से रहने वाले महोरगजाति के  
व्यंतरदेव का इन्द्र Lord of the Vya-  
ntara gods of the Mahoraga  
class inhabiting the southern  
regions नाया० २, ५. भग० ३, ८ १०,  
५, ठा० २, ३ पन्न० २, ( २ ) त्रि० भेट्टा  
शरीर वाला बड़े शरीर वाला. of a bulky  
body corpulent नाया० ६;

अइक्किलिह. त्रि० ( अतिक्लिष्ट ) अत्यंत सं-  
क्षिष्ट-क्षेश युक्त बहुत क्लेश वाला, अत्यन्त  
क्लिष्ट Greatly troubled or agita-  
ted. क० प० ४, ७६;

अइक्कंत. त्रि० ( अतिक्रान्त ) उल्लंघन करेणुं.  
उलाघा हुआ Transgressed. नाया०  
१, पन्न० २, ( २ ) जे वण्त मुक्कर  
करेणुं होय तेने उल्लंघीने करेणुं तप अथवा  
पय्यभाणु निश्चित समय का उल्लंघन करके  
किया हुआ तप अथवा प्रत्याख्यान (पचखाण)  
austerity or vow practised af-  
ter the time fixed for it has  
elapsed. “सोदाइंतवोक्कम्मं पडिवज्जइ तं  
अइच्छिण काले एवं पचखाणं अइक्कंतं होई  
नायव्वंति” ठा० १०, भग० ७, २, प्रव० १८७,  
—चारि. त्रि० (—चारिण् ) भयांदाणुं उल्लंघन  
करी विचरनार-वर्तनार सर्यादा को उलांघ  
कर चलने वाला (one) who violates  
prescribed rules of conduct;  
a transgressor. “ कालाइक्कंतचारिणो  
जडवि” प्रव० ७८४,

अइक्कंत. त्रि० ( अतिक्रान्त ) अतिभनोहर,  
अति सुंदर बहुत सुन्दर, परममनोहर Very  
charming परह० १, ४;

✓ अइक्कम. धा० I ( अति+क्कम् ) अतिक्रमण  
करेणु; उल्लंघन करेणुं उलाघना To trans-  
gress, to violate

अइक्कमइ भग० १, ६, ५, २. ६, पिं० नि०  
१६४, ओव० ३८,

अइक्कमंति कप्प० ६, ६३,

अइक्कमेज्जा वि० वेय० ५, ४१,

अइक्कम्म. सं० कृ० गच्छा० ५,

अइक्कमित्तु ल० कृ० दस० ५, २, ११;

अइक्कममाण. भग० १, ६,

अइकमंत. व० कृ० पि० नि० १८४, प्रव०  
८४६,

अइकम. पुं० ( अतिक्रम ) क्षीधेल व्रत-प२२-  
भा० अथवा प्रतिज्ञा लांगवानो, संकटप  
-ध२७७७ इ२पी, ६ अनुमोदन इ२युं ते लिये  
हुए व्रत की प्रतिज्ञा का भंग करना या उसका  
अनुमोदन करना A thought or an  
inclination to violate a vow or  
a self-imposed oath, approval  
of such thought or deed. "आहा  
कम्मणिमंतण, पडिसुणमारो अइकमो होइ"  
पि० नि० १७६, वेय० ५, ६, पंचा० १, ३२,  
ठा० ३, ४, दस० ५, २, २५, [ २ ] उल्लंघन  
इ२युं, अतिक्रमण इ२युं उल्लाघना, अतिक्रमण  
करना violation, transgression  
आव० ४, ६;

अइकमणिज्ज. त्रि० ( अतिक्रमणीय ) उल्लंघन  
इ२वा योग्य उल्लंघन करने योग्य Fit to  
be transgressed. सूय० २, ७, ८१,  
अइगअ. त्रि० ( अतिगत ) अेडवार भरी इरी  
तेमान उत्पन्न थयेल, अतिशय-वारंवार  
उपजेल एक बार मर के फिर उसी में उत्पन्न  
हुआ; बारवार उत्पन्न हुआ Reborn  
in the same species, born fre-  
quently. उत्त० १०, ५,

अइगंतूण. सं० कृ० अ० ( अतिगम्य ) उल्लंघनी  
उल्लाघकर Having transgressed.  
विशे० ६०४,

✓अइगच्छु धा० I. ( अति+गम् ) उल्लंघन  
इ२युं. उल्लाघना. To transgress  
अइगच्छइ दसा० ५, २७;  
अइगच्छमाण व० कृ० नाया० १,

अइगमण. न० ( अतिगमन ) नवा आववानो  
मार्ग आने जाने का मार्ग Way in or  
way out. नाया० २,

अइगुण. पुं० ( अतिगुण ) अतिशय-प्रभाव  
वाला गुण अतिशय-प्रभाव वाला गुण High-  
ly powerful quality. उत्त० ३१, २०,  
अइचित्त. त्रि० ( अतिचिन्त ) अत्यन्त चिन्ता-  
युक्त अतिशय चिन्तायुक्त Full of exce-  
ssive anxiety नाया० १,

✓अइच्छु. धा० I ( ~ अति-गच्छ+गम् )  
प्राप्तयुं, प्राप्त इ२युं प्राप्तकरना, पाना.  
To obtain. ( २ ) अतिक्रमण इ२युं.  
अतिक्रमण करना. to pass over.  
अइच्छइ ओघ० नि० ५१८,  
अइच्छत व कृ० उत्त० २६, ५,

\* अइच्छिअ-य, त्रि० ( अतिक्रान्त ) अति-  
क्रमण इ२युं, अन्यत्र गमन इ२युं अति-  
क्रमण किया हुआ, अन्यत्र गया हुआ.  
Transgressed; gone elsewhere.  
पि० नि० २८८, उत्त० ३३, २४, क० प०  
१, ३५, ( २ ) अतिक्रमण इ२युं, उल्लंघन  
इ२युं अतिक्रमण किया हुआ, उल्लंघन किया  
हुआ transgressed, violated.  
"जेसिं तु विउला सिक्खा मूलियंते अइच्छिअ"  
उत्त० ७, २१,

अइजाअ. पुं० ( अतिजात-अतिक्रान्तो जातं  
जाति जनक वा अतिजात ) आप इ२ता अधिष्ठ  
पराक्रमी पुत्र, नति, ६ पिता इ२ता वधाये  
संपत्ति अने इती मेणवनार पुत्र जाति,  
अथवा पिता की अपेक्षा अधिक संपत्ति और  
कीर्ति प्राप्त करने वाला पुत्र A person  
who is more renowned than  
his father or any other person  
of his own community ठा० ४, १;  
( २ ) विज्जतीय सिन्नज्जतीय विज्जतीय;  
भिन्नजाति वाला of a different caste  
or class "जे भिन्नं वत्थं अइजाअ गहेइ  
गहन वा साइजइ " निर्मा० १, ४५,

अइजागरण न० (अतिजागरण) धातुं जगवु  
ते; धणो उज्जगरो इरवे। बहुत जगना।

Excessive vigil नाया० १६;

अइजायमाण. व० कृ० त्रि० ( ~ अतियात् )  
आवतुं आताहुआ Coming. दसा० १०, ३,

अइहुभइंत. त्रि० (अतीष्टभद्रान्त-अत्यन्तमिष्टो-  
भद्रोऽन्तःपरिणामो यस्य तत् ) अत्यन्त ४४  
अने इत्याणु इरी नेतुं परिणाम छे अयेवुं  
अत्यन्त इष्ट और कल्याणकारी परिणाम वाला  
Productive of very desirable  
and wholesome results दसा० १०, १,

अइण. न० (अजिन) आभुं; यर्भ चमड़ा  
Leather, skin सू० प० २०;

अइणिच्चल. त्रि० (अतिनिश्चल) अत्यन्त दृढ-  
अलायमान न थाय तेवुं अत्यन्त दृढ. Very  
firm, highly constant पंचा० १४, ३७,

अइणिद्धमहुरत्त. न० (अतिस्निग्धमधुरत्त्व)  
ने वयनमा अत्यन्त स्निग्धता अने मधुरता  
धी गोणनी भाइइ रहेल छे अयेवा तीर्थइरना  
वयनने अनिशय, तीर्थइरनी वाणीने १८  
मे। अतिशय तीर्थकर की वाणी का १६वाँ  
अतिशय, कि जिससे वाणी में अत्यन्त माधुर्य  
होता है Extraordinary loveliness  
and sweetness of the speech  
of Tirthamkaras; the 19th  
superhuman virtue of Tirtham-  
karas' speech सम० ३५,

✓ अइतुइ. धा० I (असि×तुइ) अइइम तोडुं,  
तोडी नाभतुं एकदम तोड़ देना. To break  
off.

अइतुइंति सूय० १, १, २, २२;

अइतेया. स्त्री० ( ~ अतितेजा-अतितेजस् )  
अतुईशी, आइशनी रात्रिनु नाम चतुर्दशी  
की रात्रि का नाम The night of the

fourteenth day of the bright  
half of a month जं० प० ७, १५२;

अइत्था. स्त्री० (अदिस्ता) लिखा न आया-  
वानी ४५४ मिज्ञान देने की इच्छा Unwill-  
ingness to give alms. विशेष ३५४;

अइत्थावणा. स्त्री० (अतिस्थापना) उल्लं-  
घन इरवायोग्य कर्मस्थिति; अयाधाकाल  
उपरान्तनी कर्मस्थिति उल्लंघन करने योग्य  
कर्मस्थिति, अवाधाकाल के बाहिर की कर्म-  
स्थिति State of Karma after its  
fructification “होइ अवाधा अइत्था-  
वणाओ” क० प० ३, १;

अइत्थिय. त्रि० (अतिस्थित) उल्लंघन इरी  
रहेल उलांघकर ठहरा हुआ Gone  
beyond; transcended दसा० ६, ३२;

अइत्थणी. स्त्री० (अतिस्तमी) मोटा स्तन  
वाणी स्त्री बड़े स्तन वाली स्त्री A woman  
with big breasts पि० नि० ४१८,

अइदंपज्ज. न० (ऐदम्पर्य) तात्पर्य; भावार्थ  
गर्भित तत्त्व सारांश, तात्पर्य. Gist, pur-  
port पंचा० १४, १०,

अइदीह. त्रि० (अतिदीर्घ) धातुं लांभुं बहुत  
लंबा. Excessively long विशेष ५१६;  
—कालरण. त्रि० (—कालश्) धातुं लांभा  
इणने जणुनार बहुत लंबे काल को जानने  
वाला. one whose knowledge  
extends over a very long period  
of time विशेष ५१६;

अइदुक्ख. न० (अतिदुःख) धातुं दुःख;  
अत्यन्त असाता. बहुत दुःख, अत्यंत असाता  
Excessive pain or misery. सूय० १,  
५, १, २१;

अइदुल्लह. त्रि० (अतिदुर्लभ) अत्यन्त मुश्किली-  
धी प्राप्त थाय तेवुं अत्यंत कठिनार्थ से प्राप्त  
होने योग्य Very rare, very difficult

to obtain. गच्छा० ६१;

**अद्भुतसह** त्रि० ( अतिदुःसह ) अत्यन्त दुःसह, धर्षणी मुश्केलीधी सहन थाय नेवु. अत्यन्त दुःसह, वषी कठिनाई से सहन करने योग्य. Extremely unbearable. उत्त० १६, ७३;

**अद्भुतदूर** त्रि० ( अतिदूर ) अतिदूर-धर्षणे छेदे, वेगगुं बहुत दूर. Very far. उत्त० १, ३४, ओव० २७, ३२, उवा० ७, २०८,

**अद्भुतसमा.** स्त्री० ( अतिदुष्पमा ) दुष्पम-दुष्पम नामे अवसर्पिणी कालनो छोडो अने उत्सर्पिणी नो पडेलेो आरे। दुष्पम-दुष्पम नामक अवसर्पिणीकाल का छठा भेद और उत्सर्पिणी काल का पहिला आरा. The first division ( Ārā ) of Utsarpiṇī and the sixth division ( Ārā ) of Avasarpini named Dussama. Dussama कालो अद्भुतसमाएवि” प्रव० १०५१,

**अद्भुतधायि.** त्रि० ( अतिध्राष्टि ) लभवेष्ट उगाया हुआ, छला हुआ. Misled, deceived परह० १, ३;

**अद्भुत** त्रि० ( अतिधूर्त-अतीव प्रभूतं धूर्तमष्ट-प्रकारं कर्म यस्य सः ) भारेकर्मी, अहुल कर्मी बहुकर्मी, बडा धूर्त, आठ प्रकार के कर्मों में तल्लीन. One excessively absorbed in the eight sorts of Karma, a rogue सूय० २, २, ५६,

**अद्भुतनीच.** त्रि० ( अतिनीच ) अतिनीच स्थल, उंडु बोयर् वगेरे बहुत नीचा स्थान, गहरा भोंयरा वगेरह A very low place, an underground cellar or cavity उत्त० १, ३४,

**अद्भुतपंडुकवलसिला** स्त्री० ( अतिपाण्डुकवल-शिला ) मेरुपर्वत उपरती दक्षिणदिशा तरङ्गनी अलिपेक शिला. मेरु पर्वत के ऊपर

की दक्षिण दिशा की अभिपेक शिला. Name of a stone, situated in the southern direction of the mountain Meru on which the birth ceremony of a Tirthamkara is performed ” दो अद्भुतपंडुकवलसिलाओ ” ठा० २, १, जं० प० २,

**अद्भुतपाडागा** स्त्री० ( अतिपताका ) पताका उपर पताका, ध्वज उपर ध्वज ध्वजा पर ध्वजा, अतिपताका A flag above a flag. नाया० १, ओव०

**अद्भुतपरिणाम.** पुं० ( अतिपरिणाम-अति व्याप्स्य परिणामोऽर्थ परिणामनं यस्य सोऽतिपरिणाम ) शास्त्रमां अतावेष्ट अपवादकरतां पञ्च वधावे अपवादने आश्रय करना, उत्सन्नमतिवाणे। शास्त्रोक्त अपवाद से भी अधिक अपवाद का आश्रय करने वाला, उत्सन्नमति वाला One who stretches the meaning of the scriptures in the matter of exceptions allowed therein विशेष १२६२,

**अद्भुतपास** पुं० ( अतिपार्श्व ) भरतक्षेत्रना कुंथुनाथ-स्वामीना समकालीन इरवत क्षेत्रना तीर्थकरनु नाम भरतक्षेत्र के तीर्थकर कुंथुनाथस्वामी का समकालीन इरवतक्षेत्र का तीर्थकर Name of the Tirthamkara of Iravata Ksetra, being a contemporary of Kunthunātha of Bharata-Ksetra सम० ८४,

**अद्भुतपासंत** त्रि० ( अतिपश्यत् ) असाधारण दृष्टिमे जेनाइ असाधारण दृष्टि से देखने वाला One who sees with an extraordinary sight. सूय० १, ३, ४, १४,

**अद्भुतप्रमाण** त्रि० ( अतिप्रमाण ) प्रमाण(माप) थी वधावे. प्रमाण (माप) से अधिक Exceed-

ing proper measure. पि० नि० ६४७;

**अइप्पसंग.** पुं० ( अतिप्रसङ्ग ) अनिपरिचय  
इरेवे ते अनिपरिचय करना Too much  
familiarity or acquaintance  
पंचा० १०, २१; ( २ ) अतिव्याप्ति, लक्ष्यते  
भुङ्गी लक्ष्यथी ञ्छार लक्ष्णुनुं ञ्चुं ते. अतिव्याप्ति  
लक्षण का दोष, लक्ष्य को छोड़ कर लक्ष्यान्तर  
में भी जाने वाला. the logical defect  
of a definition being too wide  
पंचा० ६, ६;

**अइवल.** पुं० ( अतिवल ) आवती येवीसी-  
ना पायभावाभुदेवतु नाम आगामी चोवीसी के  
पाचवें वासुदेव का नाम. Name of the  
fifth Vāsudeva of the next cycle  
सम० ५ ( २ ) भरतचक्रवर्ती पौत्र; महायशानो  
पुत्र भरतचक्रवर्ती का पौत्र; महायश का पुत्र  
grandson of Bharata Chakra  
vartī and son of Mahāyasa  
ठा० ८, १; ( ३ ) अतिशक्तवान्; धृष्टी  
शक्तिवाणुं अत्यन्तवलवान्, अमितशक्ति-  
शाली. very powerful, strong.  
ओव० ६६;

**अइभद्वय.** त्रि० ( अतिभद्रक ) ञ्चेनुं दर्शन धणुं  
साइं होय ते जिसका दर्शन बहुत अच्छा हो  
वह. One whose sight is very  
auspicious. नाया० १६;

**अइभार.** पुं० ( अतिभार ) ६६ उपरातनो भार  
मर्यादा से अधिक भार. Excessive  
burden. “अइभारो न आरोवेयव्वो” उवा०  
१, ४५, प्रव० २७५; पंचा० १, १०; ( २ )  
पहेला अणुव्रतनो येथो अनियार पहिले  
अणुव्रत का चौथा अनिचार The  
fourth Atichāra of the first  
Anuvrata. उवा० १, ४५, —रोवरण  
न० ( —रोपण ) अनिहार लरेवे ते,

आवडना पहेला व्रतनो येथो अनियार.  
अतिभार लादना; श्रावक के पहिले व्रतका  
चौथा अनिचार. overloading, the  
first Atichāra of the first vow  
of a Jaina layman. प्रव० २७५;

**अइभूमि** स्त्री० ( अतिभूमि ) ञे ञ्च्या उपर  
साधुओने ञ्चा भाटे गृहस्थनी मनाछे ते  
ञ्च्या जिस स्थान में साधुओं को जाने के  
लिये गृहस्थ की मनाही हो वह स्थान. The  
place where Sādhus are forbid-  
den to go by the laity. दस० ५,  
१, २४;

**अइभोयण.** न० ( अतिभोजन ) धणुं भोऽन  
इरुं ते, धणुं भायुं ते बहुत भोजन करना;  
बहुत खाना Eating too much; glu-  
ttony. नाया० १६;

**अइमंच** पुं० ( अतिमञ्च ) भांथा उपरनो भाथो.  
अतिमञ्च, पलंग पर पलंग. A cot upon  
another cot “मंचाइमंचकालियं” ओव.

**अइमद्विया.** स्त्री० ( अतिमृत्तिका ) भाटीनी  
गार; डाढ़व कीचड़ Mud जीवा० ३,

**अइमत्त.** त्रि० ( अतिमात्र ) मात्रा-परिमाणु  
उपरांतनुं मात्रा-परिमाण से अधिक. Be-  
yond proper measure. “ नाइमत्तं  
तु भुंजेज्जा ” उक्त० १६, ८, आया० २, १५,  
१७८;

**अइमाण** पुं० ( अतिमान ) अत्यन्त अलिमान;  
सुभूमचक्रवर्तीनी माइइ धणुं अलिमान  
इरुं ते बहुत अभिमान; सुभूमचक्रवर्ती के  
समान बहुत अभिमान करना. Inordinate  
pride, e. g. like that of Chakra  
vartī Subhūma सूय० १, ८, १८;

**अइमाय.** त्रि० ( अतिमात्र-मात्रामतिक्रान्तो-  
ऽतिमात्रः ) प्रमाण उपरनुं; ६६ उपरातनुं.



मर्यादा से अधिक, अतिमात्र Beyond proper limits “पणीयं भत्तपाणं च अइमायं पाणभोयणं” उक्त० १६, ८, प्रव० ५६५, सम० ६,

**अइमाया. स्त्री०** ( अतिमात्रा-अत्यधिका मात्रा इति ) अधिक प्रमाण अधिक प्रमाण Excessive measure “ नो अइमायाए पाणभोयणं आहारित्ता भवई से निग्गंथे ” उक्त० १६, ८, प्रव० ५६५,

**अइमुच्छिय त्रि०** ( अतिमूर्च्छित ) विषयादि-  
कृमा अतिआसक्त, सासारिककार्यमा अति-  
लीन थयेल विषयादि में अधिक आसक्त,  
सासारिककार्यों में अतिलीन Too much  
engrossed in temporal affairs,  
given too much to worldly  
pursuits परह० १, ४,

**अइमुत्त पुं०** ( अतिमुत्त ) अंतगडसूत्रना छडा  
वर्गना १५मा अध्ययननु नाम अंतगड  
सूत्र के छठे वर्ग के १५वे अध्ययन का नाम  
Title of the fifteenth chapter  
of the sixth section ( Varga )  
of the Antagada Sūtra अंत०  
६, १५, ( २ ) पोलासपुरना विजय राजनो  
पुत्र, 'डे' ने न्हानी उभरमां छोडराओनी  
साथे रमतता गौतमस्वामीने नेध पोताने  
धेर तेडीलावी आहारादि न्होरावी साथे साथे  
समवसरण सुधी गयो, त्यां महावीरनो ओध  
सांलणी वैराग्य पाभी दीक्षा लीधी अगिथार  
अगनो अभ्यास डरी धणु वरसनी प्रवज्या  
पाणी गुणुरयणुतप डरी आपर विपुल  
पर्वत उपर परभ पद पाभ्या पोलासपुर के  
विजयनरपति का पुत्र, जिसने वचपन में  
लडका के साथ खेलते खेलते गौतमस्वामी को  
देखा और अपने घर लेजाकर आहारादि सम-  
र्पण किया और साधगाथ समवसरण तक गया

वहा महावीर के उपदेश से विरक्त हो दीक्षा ग्रहण  
की, एकादश ग्रंथों का अभ्यास कर चिरकाल  
की प्रवज्या पालन की और गुणुरयण नामक  
तपकर अन्त में विपुल पर्वत पर परमपद प्राप्त  
किया Son of king Vijaya of  
Polāsapura He (Aimutta) while  
yet a boy listened to Mahāvīra's  
Sermons He was converted  
and entered Nirvāna at Vipula  
Mountain after studying the  
Angas and performing penan-  
ce अंत० ६, १५, ( ३ ) भगवतीमां स्थविर  
साधुओओ नेनामाटे सिद्धिविषयक प्रश्न  
पूछयो तेपणु आने आ 'अइमुत्त' त्या कुमार  
समण तरीडे आलेगेल छे ओटला माटे डे,  
कुमारअवस्थामां धणुी न्हानी उभरमा दीक्षा  
लीधी ओटली न्हानी उभर डे, नेणु ओडफा  
न्होता पाणुी आडी माटीनी पाण पाधी,  
पोतानी पातरी तेमां तरावी, नावानी रमत  
डरवामां साधुपणुनो ज्याल न राज्यो  
आ नेधने स्थविरसाधुओने तेनामाटे  
आशका थतां, महावीरस्वामीने पूछी नेधु  
डे, 'अइमुत्तकुमारसमणु' डेटले लवे सिद्ध  
थशे ? महावीरस्वामीओ उत्तर आप्यो डे,  
आलवमाडीन सिद्ध थशे, माटे तमो तेनी  
लीलना न डरे। ( ३ ) भगवतीसूत्र में  
स्थविर साधुओं ने जिसकी सिद्धि के सम्बन्ध में  
पूछा है वह भी यही “अइमुत्त” है वहा कुमार  
समण नाम से उल्लेख किया गया है इसने  
एकाएक छोटी अवस्था में दीक्षा ग्रहण की  
थी, उस समय इसका इतना वचपन था कि,  
एकवार वहते जल में मृत्तिका का बन्ध बांध  
दिया और अपनी पात्री की नौका बना तराने  
लगा, उस खेल में इतना लीन होगया  
कि, निजसाधुत्व को भुला दिया, यह देख  
कर ही स्थविर साधुओं में आशका हुई और

उन्हों ने महावीरस्वामी से पूछा कि, 'अइमुत्त कुमारसमण' कितनेक जन्म ग्रहण कर सिद्ध होगा ? तब महावीर ने उत्तर दिया कि, इसी भव में ही सिद्ध होगा इसकी अवहेलना न करो ( ३ ) The "Kumāra Samana" about whose future Siddhahood a question is asked by Sthavira monks to Mahāvīra, is identical with this same Aimutta He is here i. e. in the Bhagavatī Sūtra styled Kumāra because he was initiated into the order at such an early age that once, forgetting his monkhood, he dammed with a little mud wall some flowing water and converting his alms-bowl into a toy boat began to play. The Sthavira monks thrown into doubt at this, questioned Mahāvīra as to his future Siddhahood. Mahāvīra told them not to mock at him, assuring them that he would become a Siddha immediately after the end of that very life. भग० १, ४; ( ४ ) माधवीलता माधवी लता. a creeper known as Mādhavī. कप्प० ३, ३७; ( ५ ) तिन्दुङ्गुं अउ तिन्दुक का वृक्ष a Tinduk-tree ओव० जं० प० ( ६ ) तालुं अउ ताल वृक्ष. a Tāl-tree. ओव० जं० प०

अइमुत्तग. पुं० ( अतिमुक्तक ) माधवी वेद माधवी वेल. Mādhavī creeper. जीवा० ३, ४, पन्न० १; ( २ ) पूर्णरति मुक्त थयेले; अनिष्टुटे थयेले पूर्णरति मुक्त. pei-

fectly liberated. पन्न० १;—चंद्र. पुं० (—चन्द्र ) संपूर्णचंद्रमा; राहुथी मुक्त थयेले चंद्रमा पूर्णचन्द्र; राहु से मुक्त चन्द्र full moon; the moon freed from the grasp of Rāhu ( eclipse ). पन्न० १, ( २ ) लुहारनी धमलु. लुहार की धोकनी bellows. पन्न० १;

अइमुत्तया. स्त्री० ( अतिमुक्ता ) माधवी वेद, वासंती माधवी वेल; वासंती The Mādhavī creeper. पन्न० १;

अइमुत्तलया. स्त्री० ( अतिमुक्ता ) माधवी-भोगरानी वेद, भोगरे की वेल, माधवीलता. A kind of creeper, Mādhavī creeper. ओव० राय० १३७,—मंडव. न. (—मण्डप ) भोगरानी वेदले मांडवे भोगरे की वेल का मण्डप. a bower of Mādhavī creeper. राय० १३७;

अइमोह त्रि० ( अतिमोह ) अतिशय मोह युक्त. अत्यन्त मोह से युक्त Highly infatuated or charmed. नाया० १,

अइयंचिय. सं० कृ० अ० ( अत्यन्चय ) अतिक्रमण करके, उलाघकर Having transgressed, going beyond ठ० ५, १,

अइयाण. न० ( अतियान ) नगरमां प्रवेश करे ते नगर में प्रवेश करना. Entering a town ठ० ३, ४,—इइदि. स्त्री० (—इद्धि ) राजा नगरमां प्रवेश करे ते वप्पते थल्लर-हाट पक्ति वजेरे शलुगार-वामां आवे ते. राजा के नगर में प्रवेश करते समय बाजार-हाट वगैरह का शृंगार. decoration of the shops, bazars etc at the time of a king's entry into a town. ठ० ३, ४;—कहा.

श्री० ( -कथा ) राज्ञे नगरमां प्रवेश  
कथो होय तेनी कथा कहेवी-वर्णन करवुं ते.  
राजा के नगर प्रवेश की कथा narration  
of a king's entry into a town.  
ठा० ४, २;—गिह न० ( -गृह ) नगरमां  
प्रवेश करतां दरवाजा पासो जे घर होय ते  
नगर में प्रवेश करते समय दरवाजे के पास  
जो घर हो वह घर. a house situated  
near the entrance of a town.  
ठा० २;

अध्याय. त्रि० ( अतिवात ) रवाना थध गयेल  
रवाना हुआ, प्रस्थित. Departed. “अ-  
ध्यायो णराहिवो ” उत्त० २०, ५६;

अध्यायरक्ख त्रि० ( अत्यात्मरक्-अतीवास-  
ज्जमनः परैः पापकर्मभिः रक्षा यस्य सोऽत्या-  
त्मरक्ः ) पापकर्मथी आत्माने संसारमा  
रखवावनार पापकर्म से आत्मा को संसार में  
भटकाने वाला One who causes the  
soul to wander in the world  
by wicked Karmas ( sins )  
“ अध्यायरक्खे दाहिणगामिए नेरहर ”  
सू० २, २, ५६;

अध्याय पुं० ( अतिचार ) जुओ ‘अध्याय’  
शब्द देखो “अध्याय” शब्द. Vide  
“अध्याय”. पञ्च० १०, दस० ५, १, ६;  
( २ ) जे दोषथी व्रत भलीन थाय, जे  
भांगे तेवो दोष. वह दोष, जिससे व्रत मलिन  
अथवा नष्ट हो. a defect in the obser-  
vance of vow which makes it  
violated. पञ्च० १, उत्त० २६, ३६; प्रव० २,  
पंचा० १, ६०, ( ३ ) आधाकर्म्म आश्री साधुओ  
आधाकर्म्म आहार पात्रमां लीधो त्यागी भाडी  
उपाश्रये आवी ते आहार मोढामा नापे त्यां  
सुधी अतिचार, पछी अलुआयार अतिक्रम तथा  
व्यतिक्रम पछी अने अलुआयार पहेलानी जे

दोषनी स्थिति ते; अपराध, जे दोषनुं व्रीणुं  
पगथीयुं अपराध अथवा दोष का तीसरा  
भेद, अर्थात् दोष के चार भेद हैं-अतिक्रम,  
व्यतिक्रम, अतिचार, और अनाचार इन में  
से तीसरा भेद the third stage of  
the violation of a vow. The  
four stages are Atakrama, Vya-  
tikrama, Atichāra and Anā-  
chāra. “पयमेयाइं वड्ढम्मगहिण तइयरो-  
गिलिए” पिं० निं० १८२, ( ४ ) आवक व्रतना  
“ जवाइद्ध ” धियादि ६६ अतिचारमानो  
गमे ते ओक आवक के व्रतो के “ जवाइद्ध ”  
आदि ६६ अतिचारों में का कोई भी एक  
अतिचार one of the ९९ acts of  
transgressing a layman's vow.  
आव० १, ४;—चरण न० ( -चरण )  
अतिचार-दोष वाणुं चारित्र दूषित चारित्र.  
faulty or sinful conduct भक्त० २०;

अहर त्रि० ( \* अतिर-अतिरोहित ) अ-नहि,  
निरोहित-ढांडेलु-छुपावेले, प्रगट प्रकट;  
नहीं छुपाया हुआ Not concealed,  
manifest. पिं० निं० ५६०,.

अहर. पुं० ( अतर-सागर ) समुद्र. समुद्र The  
sea सु० च० १, ३६६.

अहरत्त पुं० ( अतिरात्र ) अधिक तिथि, दिन  
वृद्धि, ओकवर्षमा छ दिवस वधे छे तेमानो  
गमे ते ओक अधिकतिथि, दिनवृद्धि, वर्ष में  
जो छ. दिन बढ़ते हैं उनमें से कोई भी एक  
दिन. One of the six intercalary  
days in a calendar “ छ अहरत्ता  
परणत्ता तंजहा-चउत्थेपव्वे अट्ठमेपव्वे ” ठा०  
६, १, सू० ५० १२,

अहरत्तकंवला श्री० ( अतिरक्तकंवला )  
भेड़ना शिखर उपरनी ओक लाना जे नया  
तीर्थकरनो नन्मासिपेक थाय छ मर पवत के

शिखर के ऊपरकी एक शिला, कि, जिस पर तीर्थकर का जन्माभिषेक होता है A stone on the summit of Meru where the birth of a Tirthankara is celebrated. ठा० २, ३;

✓अहरयाच धा० १. ( अति+रच्-णि० )  
पिण्डानु करावयु; आसन गोठवावयु. विछोना कराना, आसन लगवाना. To get a bed or seat arranged.

“अहरयावेइ”. नाया० २,

“अहरयावेइत्ता.” सं० कृ० नाया० २;

अहरा स्त्री० ( अचिरा ) १६मा तीर्थकर अथवा ५मा चक्रवर्ती शान्तिनाथनी माता १६वें तीर्थकर अथवा ५ वें चक्रवर्ती शान्तिनाथ की माता का नाम The mother of Śāntinātha the 16th Tirthankara or the 5th Chakravartī सम० प्रव० ३२३;

अहरा अ० ( अचिरात् ) तत्काल; ओकदम तत्काल-एकदम, तुरंत At once, immediately विशेष० १३११, पंचा० १८, ५०,

अहरित्त त्रि० ( अतिरिक्त ) भिन्न, जुद्ध भिन्न, जुदा Separate. पि० नि० भा० ४, नाया० ८, परह० २, ५, ( २ ) अधिक, वधारे ज्यादाह much, more उवा० १, ५२, विशेष० ४६, ३४०, —सेज्जासणिय त्रि० ( —शय्यासनिक ) प्रमाण उपरांत आसन-पथारी राखनार ( साधु ). प्रमाण से अधिक विछोना रखने वाला साधु one ( e g a Sādhu ) who keeps a larger seat or bed than that allowed by rules दसा० १, ७,

अहरुव. पुं० ( अतिरूप ) भूतदेवतानी ओक जात. भूत देवता की एक जाति A class of infernal gods पञ्च० १०;

अहरेक. पुं० ( अतिरेक ) वधारे; विशेषता. विशेष, अधिकता. Excess; peculiarity निसी० १, ४७, —बंधण. न० ( —बन्धन ) अधिक बंधन ज्यादाह बन्धन. strict bondage निसी० १, ४७,

अहरेग पुं० ( अतिरेक ) लुओ “अहरेक” शब्द. देखो ‘अहरेक’ शब्द Vide ‘अहरेक’. भग० ३, ३, ६, ३३; ओव० १६, ४०, ओष० नि० ६७०, प्रव० २८३, कप्प० ३, ३४, जीवा० ३, ३, निसी० १४, ५; नाया० १, —पडिग्गह पुं० न० ( —पतद्ग्रह ) प्रमाण उपरांत पात्र. प्रमाण-नियम से अधिक पात्र a receptacle or vessel exceeding proper number. वव० ८, १४; —प्रमाण न० ( —प्रमाण ) अधिक प्रमाण. अधिक प्रमाण excess of measure. निसी० ५, ७;

अहरेगयर त्रि० ( अतिरेकतर ) अतिशय वधारे. बहुत ज्यादाह Excessive. प्रव० २०७;

अहरेगया स्त्री० ( अतिरेक-ता ) अधिकता. अधिकता Excess; state of being in excess. पंचा० १, २४,

अहरेय. पुं० ( अतिरेक ) विशेषता; वधारे अधिकता, विशेषता. Excess, particularity नाया० १,

अहलाभ. पुं० ( अतिलाभ ) अतिलाभ, धनो लाभ बहुत लाभ, ज्यादाह लाभ Immense gain “आप्पिच्छया अहलाभेवि सते” दस० ६, ३, ५,

अश्लोलुअ. त्रि० ( अतिजोलुप ) अत्यन्त जोलुपी, रसलपट. अत्यन्त लोलुपी, लंपट. Very covetous, of an extremely sensual nature उक्त० ११, ५;

अइव अ० ( अतीव ) अहु, वधारे, अति  
बहुत; ज्यादह Excessively नाया० १२;

अइवइत्ता सं० कृ० अ० ( अतिव्रज्य ) छोडीने,  
तछने त्यागकर. Leaving off, having  
left off भग० ७, १, (२) उलंघीने, अति-  
क्रमण करीने उलाघ कर, अतिक्रमण करके  
having transgressed, having  
gone beyond. सूय० २, २, ६५;  
नाया० ६,

अइवईय सं० कृ० अ० ( अतिवर्त्य ) उलंघीने  
उलाघ कर Having crossed or  
transgressed क० प० ३, ४,

✓ अइवइ धा० १ ( अतिवृत् ) उलंघनुं उलाघ-  
ना To transgress

अइवइज्जा वि० आया० १, ५, ६, १६८,

अइवइण न० ( अतिवर्तन ) उलंघन करे  
उलाघना Transgression. आया० १,  
५, ६, १६६,

अइवइत्ति स्त्री० ( अतिवृष्टि ) अतिवृष्टि, हृदयी  
वधारे वरसाह अतिवृष्टि, ज्यादह नरसात  
Excessive rain सम० ३४,

✓ अइवत्त धा० १ ( अतिवृत् ) अतिक्रमण कर-  
नुं, उलंघनुं उलाघना To transgress,  
to go beyond

अइवत्तइ “कतारं अइवत्तइ” उत्त० २७, २,

अइवत्तिय त्रि० ( अतिपात्तिक ) निर्दोष, दोष  
रहित. निर्दोष, दोष रहित Sinless, fault-  
less “ अइवत्तिय अयाउट्टि ” आया० १,  
६, १, १७,

अइवयंत व० कृ० त्रि० ( अतिव्रजत् ) अतिक्रमण  
करेता उलाघता हुआ Transgressing.  
नाया० १,

✓ अइवाअ धा० १. ( अतिवृत् ) नाश करेता,  
वध करेता, दुःख उपजावतुं नाश करना, वध

करना, दुःख देना, घात करना To destroy;  
to kill, to inflict pain

अइवाइज्ज. वि० आया० १, २, ४, ५५,

अइवाएज्जा वि० दस० ४,

अइवायावेज्जा शि० वि० दस० ४;

अइवाइत्ता सं० कृ० भग० २, ६,

अइवाइ त्रि० ( अतिपातिन् ) हिंसा करनेवाला;  
घातकी हिंसा करने वाला, घातकी One  
who kills or injures. सूय० १, ५,  
१, ५;

अइवाइत्ता त्रि० ( अतिपातयित् ) अतिपात-  
हिंसा करनेवाला, नाश करनेवाला हिंसा करने वाला,  
नाश करने वाला One who kills or  
injures or inflicts pain. ञ० ३, १;

अइवाय, पुं० ( अतिपात ) हिंसा, नाश. हिंसा.  
Destruction, killing, injury.  
भग० ७, १, उवा० १, ४५;

अइवासा. स्त्री० ( अतिवर्षा ) ज़ोरने वरसाह,  
घोधमार वृष्टि बड़े जोर की वर्षा, मुसलधार  
वर्षा Heavy rain भग० ३, ७,

अइविगिह. न० ( अतिविकृष्ट ) तप, चार, छे  
तेथी वधारे उपवास भोगा करवाते; आठ  
तप एक साथ तीन, चार, या अधिक उपवास  
करना, कठोर तप Fasting for three,  
four or more days continuously,  
severe penance उत्त० ३६, २५१,

अइविज्ज. त्रि० ( अतिविद्य ) आगमना सहजाने  
जानने वाला आगम के सद्भाव को जानने वाला  
One knowing the essence of  
the Sūtras “तस्मा अइविज्जो यो पडिसं-  
जज्जिआसि ” आया० १, ४, ३, १३६,

अइवुट्टि. स्त्री० ( अतिवृष्टि ) अतिवृष्टि, हृदयी  
वधारे वरसाह हृद मे ज्यादह वर्षा Exco-  
ssive rain प्रव० ४२०,



**अहवेग.** पुं० ( अतिवेग ) उतावणी गति; धृष्टी  
अप. शीघ्रगति; बहुत जल्दी. Great  
speed. नाया० १६; कप्प० ३, ४६;

**अहवेलं.** अ० ( अतिवेकम् ) वेला-काल  
उलंघनीने समय को उलंघ कर. Trans-  
gressing the proper time. सूय०  
१, १४, १५;

**अहवेला.** स्त्री० ( अतिवेला ) साधुना आचारीनी  
भर्यादा. साधु के आचार की मर्यादा. Restric-  
tions imposed upon a Sādhu  
in point of conduct “नाहवेलं  
विहजेजा पावदिही विहजई” उक्त० २, २२;

**अहसंकिलेस** पुं० ( अतिसंक्लेश ) चित्तनी  
अत्यंत मलीनता; संकिलष्ट-क्षुद्र मनोभाव.  
चित्त की अत्यन्त मलीनता; क्षुद्रभाव. Utter  
debasement of mind पंचा० १५, ६;

**अहसंघट्ट.** पुं० ( अतिसंघट्ट ) अत्यंत-संघट्टो-  
ल्लोखुं संमर्दन अत्यन्त जीवों का संमर्दन.  
Excessive mutual collision of  
living beings. प्रव० ६०२;

**अहसंपयोग.** पुं० ( अतिसम्प्रयोग ) ऐकद्रव्यनी  
साथे भीन द्रव्यनो अतिशय योग करवे। ते  
एक द्रव्य के साथ दूसरे द्रव्य का अत्यन्त संयोग  
करना. Uniting too much; ( e. g.  
one substance with another ).  
सूय० नि० २, २, १६२;

**अहसय.** पुं० ( अतिशय ) अतिशय; धृष्टुं;  
अधिक. ज्यादा, बहुत Excess. सु०  
च० १०, २२६, सम० १०, नंदी० ५४, विशेष०  
३२१६; ( २ ) प्रभाव प्रभाव. power,  
poweress. सु० च० १०, २२६; नंदी०  
५४, विशेष० ३२१६, प्रव० ६०५, —राणि  
पुं० ( —ज्ञानिन् ) अवधि आदि प्रत्यक्ष ज्ञान  
—युक्त अवधिज्ञानादि प्रत्यक्षज्ञान सहित.

possessed of direct visual know-  
ledge, such as Avadhijnāna etc.  
वव० १;

**अहसाइ** त्रि० ( अतिशयिन् ) केवल मनः पर्यय  
अने अवधिज्ञानवाला; यौद्धर्षी अने आमर्षी-  
पधि आदि लब्धि युक्त; प्रभावक पुत्रप. केवल  
मनःपर्यवज्ञान और अवधिज्ञान वाला; चौदह-  
पूर्वा और आमर्षीपधि आदि लब्धि सहित;  
प्रभावकपुरुष. One possessed of  
Kevala, Manah-paryāya and  
Avadhijñāna or knowledge and  
also of spiritual attainments  
such as Āmarsaśadhi etc. पंचा०  
५, २०;

**अहसीय.** त्रि० ( अतिशीत ) अत्यन्त ठंडा.  
बहुत ठंडा. Extremely cold. ठा० ५,  
१; कप्प० ४, ६५,

**अहसुहुम.** त्रि० ( अतिसूक्ष्म ) अत्यंत-प्यारीक.  
बहुत बारीक. Excessively minute.  
पंचा० १८, ३३,

**अहसेस** पुं० ( अतिशेष ) अतिशय असाधारण  
प्रभाव; परम अहलुत प्रभाव; तीर्थंकर अने  
तेमनी वाणीनो अहलुत प्रभाव असाधारण  
प्रभाव; अद्भुत प्रभाव. Wonderful pow-  
er—e. g. supernatural power of  
a Tirthāṅkara's words ओव० २७;  
ठा० ३, ४; वव० ६, ७;—अजभयण. न०  
(—अध्ययन) अतिशय वाणी अध्ययन; उत्थान  
समुत्थान वगेरे अध्ययन. अतिशय वाला-  
उत्थान समुत्थान वगैरह का अध्ययन. Adhy-  
ayanās or scriptural studies such  
as Utthāna, Samutthāna etc. of  
supernatural power. विशेष० ५५२;

**अहसेसि.** त्रि० ( अतिशेषिन् ) अतिशययी युक्त;  
प्रभावशाली. अतिशय से युक्त, प्रभावशाली.

Possessed of supernatural powers. ओघ० नि० भा० ३०,

अरिह. पुं० ( अतिथि-न विद्यन्ते सततप्र-  
वृत्त्या विशदैकाकाराऽनुष्ठानतया तिथयो दिन-  
विभागा यस्य सोऽतिथिः ) अभ्यागत; अतिथि..  
मेहमान. A guest. भग० ११, ६; (२) नेनी  
आववानी तिथि-दिवस मुकरर नथी ओवा साधु  
-भुनि. जिसके आने की तिथि नियत न हो ऐसा  
साधु-मुनि. an ascetic whose day  
of arrival is not certain भग० ११,  
६; —पूजा स्त्री० ( -पूजा ) अतिथिनी  
सेवा-आकरी, परोक्षगत, आहारदिमां  
सत्कार. अतिथि की सेवा; मेहमानदारी.  
hospitality to guests. “अरिहपूयं  
करेह करेहता तमो पच्छा अप्पणा आहारमा-  
हरेह ” भग० ११, ६,

✓ अरिहील धा० I. ( अति+हील् ) धातु  
हील्लु करपी; निन्दा करपी बहुत निन्दा  
करना To censure greatly.

अरिहील्लिजा. वि० दस० ५, १, ६६;

✓ अरि. धा० I ( अति+इ ) अतिक्रम-  
उल्लंघन करवुं उलाघना To transgress;  
(२) प्रवेश करवो. प्रवेश करना. to enter.

अरिंति-इ. पंचा० १८, १३,

अरित. व० कृ० कप्प० ७, २०७,

अरि स्त्री० ( \* अजी-अजा ) अकरी बकरी  
A she-goat. “अरि-कुवसी ” नाया० १,

अरिय. वि० ( अतीत ) पसार गयेल; उल्लंघी  
गयेल उलाघा हुआ Transgressed;  
past; gone beyond ओघ० नि० २८२,  
दस० ७, ८, नाया० १, आया० १,  
३, ३, ११७, १, ४, १, १२८; पञ्च० १५;  
उत्त० २६, २१, ३३, १७, प्रव० २७,  
( २ ) ईर्ष्य कारणसुर पर्युपणादि पर्व-  
मा करवानु तप के पञ्चपाणु पर्व वीत्या

पछी करवुं ते, दश प्रकारना पञ्चपाणुमानुं  
पछी पञ्चपाणु किसी कारण से पर्युपणादि  
पर्व में करने का तप या पञ्चखाण पर्व व्यतीत  
होने पर करना; दश प्रकार के पञ्चखाण में  
से दूसरा पञ्चखाण. the 2nd of the  
ten kinds of Pachchakhāṇas;  
viz. practising an austerity or  
observing a vow after the time  
scripturally fixed for it has  
elapsed ( due to unavoidable  
causes ) प्रव० १८७; —काल पुं०  
( -काल ) गयेला काल; भूतकाल. गुजरा  
हुआ काल; अतीत समय. past time.

सम० १०; —पञ्चकखाण न० ( -प्रत्याख्यान-  
न ) भूतकालमां करवा योग्य पञ्चपाणु;  
पञ्चपाणुना दश प्रकारमानो ओक प्रकार.  
भूतकाल में करने योग्य प्रत्याख्यान, प्रत्या-  
ख्यान के दस भेदों में से एक. a vow of  
time past, one of the ten  
varieties of vows known as  
Pachchakhāṇas प्रव० १८७,

अरिं अ० ( अतीव ) लुओ “ अरि ”  
शब्द बहुत विशेष; ज्यादाह Very much;  
extremely. नाया० १, ८; भग० ३,  
१; पराह० १, १, जं० प० ५, ११६,

अउअ-य पुं० न० ( अयुत ) ८४ लाख  
अठ्ठिअंग प्रमाणे काल विभाग ( ८४ लाख  
अयुतांगनो ओक अयुत थाय ) ८४ लाख  
अयुतांग प्रमाण काल A period of  
time known as Ayuta, consist-  
ing of 84 lacs of Ayutāṅgas  
( one Ayuta is equal to 84 lacs  
of Ayutāṅgas ). अयुजो० ११५, ठा०  
२, ४, भग० ५, १, २५, ५, —अंग पुं० न०  
( -अङ्ग ) ८४ लाख अर्थनिपुण प्रमाणे काल

विभाग. ८४ लाख अर्थनिपूर प्रमाण काल.  
measurement of time equal to  
eighty-four lacs of Arthanipūras ( a smaller measure of  
time ). अणुजो० ११५; ठा० २, ४;  
भग० ५, १; २५, ५;

अउज्झ त्रि० ( अयोध्य ) परसैन्यथी जेभां  
प्रवेश करी न शक्य तेवुं. जिसमें शत्रु की सेना  
प्रवेश न कर सके. Impenetrable to a  
hostile army. पञ्च० २,

अउज्झा. स्त्री० ( अयोध्या ) गंधिलावती  
विजयनी मुख्य रानधानी गंधिलावती विजय  
की मुख्य रानधानी. Capital town of  
Vijaya or continent named  
Gandhilāvati. ठा० २, ३; ( २ ) विनी-  
ताऽपरनामक अयोध्या नगरी. अयोध्या नगरी,  
जिसका दूसरा नाम विनीता भी है. city  
of Ayodhyā also called Vinitā.  
सु० च० १५, २२६;

अउण. त्रि० (\* अणुण-ऊन) विंशति आदि दश-  
कानी पूर्वे आ शब्द जेडाय छे तेनो अर्थ  
ओक कम-ओछो थाय छे. बीस आदि दहाई के  
पीछे इसे जोड़ने से उक्त संख्या का अर्थ एक कम  
होजाता है. उदाहरणार्थ यदि विंशति ( बीस )  
के पीछे इसे लगाया जाय तो उसका अर्थ उन्नीस  
होता है । “Less by one” prefixed  
to multiples of ten. नाया० ३; जं०  
५० १, ६;—असीति. स्त्री० ( -असीति )  
ओगणुअसी; ७८नी संख्या. उन्नासी,  
७८ की संख्या. seventy-nine. जं०  
५० १, ६;—टि. स्त्री० ( -पष्टि ) ओगणु  
साठनी संख्या; ५८. उनसठ; ५६. fifty-  
nine, 59. कप्प० ५, १३५;—त्तरि. स्त्री०  
( -सप्तति ) ओगणुसीतेर; ६८; उनहत्तर;  
६६ sixty-nine; 69. क० ग० ६, २१;

—सीस. स्त्री० ( -त्रिंशत् ) ओगणुत्रीस;  
२९नी संख्या. उन्तीस की संख्या; २९.  
twenty-nine; 29. उत्त० ३६, २४३;  
नाया० ३;—पण्ण त्रि० ( -पञ्चाशत् )  
ओगणुपयास; ४९ नी संख्या. उन्चास  
की संख्या forty-nine. पञ्च० २; भग०  
२, १;—पन्नास त्रि० ( -पञ्चाशत् )  
४९; ओगणुपयास उन्चास; ४९ forty-  
nine; 49. प्रव० ११११;—घरण त्रि०  
( -पञ्चाशत् ) ओगणुपयास; ४९ उन्-  
चास की संख्या. forty-nine. विशेष०  
३५४५;—चीस त्रि० ( -विंशति ) ओग-  
णुस; १९. उन्नीस की संख्या. nineteen.  
“ सागरा अउणवीसं तु उक्कोसेयं ठिहंभवे ”  
उत्त० ३६, २३३;—सत्तरि. स्त्री० ( -सप्त-  
ति ) ओगणुतेर; ६८ नी संख्या उनहत्तर.  
sixty-nine. कप्प० ५, १३६;

अउमाण. न० ( अपमान ) अपमान; अना-  
दर. अपमान; तिरस्कार. Disrespect.  
“अउमाणं परिवज्जय” सूय० १, १, ४, ४;

अउल. त्रि० ( अतुल ) जेनी तुलना थई शकै  
नहि तेवुं जिसकी तुलना न हो सके.  
Matchless. दस० ७, ४३; ६, ३, १५;  
पञ्च० २; उत्त० ३६, ६५;

अउव्व. त्रि० ( अपूर्व ) पूर्वे न जेअेलुं.  
पाहिले न देखा हुआ Unseen before;  
unprecedented. भक्त० १६७,

अओ. अ० ( अतः ) आदिथी. यहां से.  
Hence; from here. प्रव० ८४१;  
( २ ) ओटला माटे; ओ डारणुथी. इसलिये.  
therefore, hence. प्रव० २१६;

अओज्झ त्रि० ( अयोध्य ) युद्ध योध्य नहि.



युद्ध के अयोग्य. One unfit for fighting. भग० ७, ६,

अओपरं अ० ( अतः परम् ) ओ पछी इसके बाद. After this or that, next to this or that क० ग० ४, ७५,

अओमय. त्रि० ( अयोमय ) लोहातु. लोहेका; लोहमय Made of iron. " अओमयुगं संहासयुगं गहाय " सूय० २, २, ८१, विवा० ४; जीवा० ३, १,

अंक. पुं० ( अङ्क ) ओक जतने सङ्केत भण्डि एक जाति का सुफेद मणि. A kind of white gem. उत्त० ३४, ६, ( २ ) ओक जतनु रत्न, अङ्करत्न, सञ्चित पृथ्वीतु ओक परिणाम. एक जाति का रत्न, अङ्करत्न, सञ्चित पृथ्वी का एक परिणाम a jewel; a precious stone उत्त० ३६, ७५, कण्ठ० २, २६, नाया० १; राय० २८, ६४, पञ्च० १, जीवा० ३, ४, ( ३ ) ओलो, ओल. गोद, उत्संग a lap निसी० ७, २४, राय० १३०; २८८, नाया० १; ८१, पि० नि० ४१०; जीवा० ३, ४, ( ४ ) चिन्ह, लाञ्छन, निशानी चिन्ह, लाञ्छन, निशानी a sign or mark. ओव० १०, सू० प० २०, ( ५ ) ओकथी नव सुधीना आङ्कडा एक से नौ तक के अङ्क. numerals from one to nine. पञ्च० २, ( ६ ) आङ्कडानी लिपि, १८ लिपिभानी ओक अङ्कलिपि-अठारह प्रकार की लिपियों में से एक लिपि a figure-script, one of the eighteen scripts. पञ्च० १, —कंड पुं० ( —काण्ड ) रत्नप्रभा पृथ्वीना अठारडाने अङ्करत्नमय सो जेजन्ने जडे-औदमे भाग रत्नप्रभा पृथ्वी के खर कांड का अङ्करत्नमय सौ योजन चौथा चौदहवां भाग the fourteenth division of the Khar-kānda of Ratnaprabhā world, consisting of

white jewels and with a breadth of hundred Yojanas.

जीवा० ३, १; ठा० १०, १, —करेलुग पुं० ( —करेलुक ) पाण्डुभानी ओक जतनी वनस्पति जल में की एक प्रकार की वनस्पति a kind of aquatic plant. आया० २, १, ८, ४७, —टिह् स्त्री० ( —स्थिति ) आङ्कडा तथा रेखाएँ विचित्ररीते स्थापवाते, ६४ कलाभानी ४३मी कला अंक तथा रेखा की विचित्र स्थापना करनी, ६४ कलाओं में से ४३वाँ कला. a striking arrangement of numerical figures and geometrical lines; forty-third of the sixty four arts. ओव० ४०;

—धर पुं० ( —धर ) चन्द्र. चन्द्रमा. the moon जीवा० ३, —धार् स्त्री० ( —धारी ) ओलाभां-ओलभां ओसाडी सुवाडी आलकने रमाडनार धावभाता; पांय प्रकारनी धावभाताभानी ओक गोदी में बिठला या सुला कर बालक को खिलाने वाली धाय, पांच प्रकार की धाय में से एक प्रकार की धाय. a wet nurse who fondles a child in her lap, one of the five sorts of nurses. नाया० १, १६, आया० २, १५, १७६; विवा० २, भग० ११, ११; —मुह न० ( —मुख ) पद्मासनने अग्रभाग पद्मासन का अग्रभाग the fore part of Padmāsana (a kind of posture)

सू० प० ५, —लिवि स्त्री० ( —लिपि ) अङ्क लिपि, वर्णमाला, अठार लिपिभानी ओक. अठारह प्रकार की लिपियों में से एक लिपि; वर्णमाला figure script; one of the eighteen scripts. सम० १८. —वणिय पुं० ( —वणिज् ) अङ्करत्नना व्यापारी. अङ्करत्न का व्यापारी. a dealer

in Ankaratna jewels. राय०  
—हर पुं० ( -हर ) चंद्रमा. चन्द्र the  
moon. जीवा० ३;

अंकण. न० ( अङ्कन ) तपावेल सणीयाथी वाछ-  
रडा वगेरेने आंङवा-शियाणना पग वगेरेने  
आङारे यिन्हुं डरपुं ते. चेंचुए लगाना; तपे  
हुए लोहे के सरिये से बछ्वा वगैरह को  
दागना-चिन्हविशेष करना. Branding of  
animals with red hot iron bars.  
नाया० १७; कप्प० ३, ३६;

अंकवडंसय पुं० ( अङ्गावतंसक ) धशान  
धन्द्रना भुज्यविमाननुं नाम. ईशानइन्द्र के  
मुख्य विमान का नाम. Name of the  
principal heavenly abode of  
Isāna-Indra. भग० ४, १;

अंकामय. त्रि० ( अङ्कमय ) अङ्क- रत्नमय  
पदार्थ. अङ्क-रत्नमय पदार्थ. (A substance)  
inlaid with white gems “अंकामया  
पक्खा पक्खवाहा” ओव० जं० प० ७, १६६;

अंकावई. स्त्री० ( अङ्गावती ) महाविदेहनी  
सीतोदा नदीने जम्बुए डांडे आवेली रम्य  
विजयनी राजधानी. महाविदेह की सीतोदा  
नदी के दक्षिण की ओर रम्यविजय की  
राजधानी. The capital of Ramya-  
Vijaya situated on the right  
bank of Sitodā river of Mahā-  
Videha. ठा० २, ३; ( २ )  
पश्चिममहाविदेहना दक्षिणप्रांतवानी पहेली  
विजयनी सरहद उपरने वज्जारा पर्वत.  
पश्चिम महाविदेह के दक्षिणखंड की पहिली  
विजय की सीमा परका वज्जारा पर्वत.  
the Vakhārā mountain on the  
boundary of the first Vijaya  
in the southern division of  
western MahāVideha. जं० प०

अंकिय त्रि० ( अङ्कित ) अङ्कितथयेल; यिन्ह  
सहित. चिन्ह सहित. Bearing a mark.  
ओव० १०, पक्क० २;

अंकुर. पुं० ( अङ्कुर ) पांङ्गानो प्रथम नीङ्गेल  
झुण्णो; पांङ्गानी शङ्खातनी लालटीसी. पत्तों  
की कोंपत्त A sprout of a leaf. पक्क०  
१७; ३६, राय० ६३; १५६, दसा० ५, १६;  
भग० ७, ६;

अंकुस. न० ( अङ्कुश ) हाथीना भायाभा  
भारवानुं हथियार; लोढानो अङ्कपासथी  
वाणेल आंङो. हाथी को मारने का लोहे का  
अङ्कुश. A hook for driving ele-  
phants. “अंकुसेण जहा नागो धम्मे संत्ति  
वाङ्मो” उक्त० २२, ४८; दस० २, १०;  
जं० प० ५, ११६; जीवा० ३, ३; परह० १,  
४; ठा० ४, २; राय० ६३, नाया० १७;  
( २ ) अङ्कुशने आङारे हाथ पगनी रेखा.  
अङ्कुश के आकार की हाथ पाँव की रेखा.  
the curved lines on the palm  
and the sole of the foot re-  
sembling a hook उक्त० ६, ६०; ( ३ )  
वृक्षना पक्षव छेदवानुं सन्यासीनुं अङ्क उपकरण.  
वृक्षों के पत्ते छेदने का सन्यासियों का एक  
शस्त्र an instrument used by a  
Samnyāsī to cut the foliage of  
trees नाया० ५, ( ४ ) भाषा लटकाववानो  
चंदरवामानो अङ्कुशाकार आंङो. चंदवा-  
छत वगैरह में माला लटकाने का अङ्कुश के  
समान टेढ़ा आँकड़ा. a hook fastened  
to a ceiling cloth for hanging  
garlands जीवा० ३, ४; ( ५ ) महाशुकदेव  
लोडना अङ्क विमाननुं नाम, ३ जेमां रहेनार  
देवतानी १६ सागरोपमनी स्थिति-आयुष्य  
छे महाशुक देवलोक के एक विमान का नाम,  
जहाँ के रहने वाले देव की १६ सागरोपम

की आयु है a celestial mansion of the heavenly world Mahā-Sūkra where the gods live 16 Sāgaropamas of years. सम० १६, ( ६ ) वन्दनातो छोटा दोष, रजोहरणने अंकुशनी पेडे पे हाथमा राभी शुर्वादिङ्कने वन्दना करवाथी लागतो ओङ्क दोषः वन्दना का छठा दोष रजोहरण को अंकुश के समान दोनो हाथों में रखकर गुरु आदि को वन्दना करने से लगने वाला एक दोष the sixth fault of Vandana ( obeisance ) committed by holding the Rajoharana like a hook while saluting or bowing to elders \* प्रव० १५०;

अंकुसत्र. पुं० ( अङ्कुशक ) लुओ। 'अंकुश' शब्दना त्रीन् नभरनेो अर्थ देखो 'अंकुश' शब्द का तीसरा अर्थ. Vide 'अंकुश' ३ ओव० ३६, भग० २, १,

अंकुसा स्त्री० ( अङ्कुशा ) यैदमा श्रीअनन्तनाथ-तीर्थङ्करनी शासन देवीनु नाम १४ वें तीर्थंकर-श्रीअनन्तनाथ की शासनदेवी का नाम. Name of the tutelary goddess of the 14th Tirthankara, Shri Anantanātha. प्रव० ३७८,

अंकेल्लण न० ( अङ्केलन ) धोडाने मारवानेो याभुङ्क घोडे को मारने का चाबुक A whip to strike a horse भग० १, १,

—पहार पुं० (—प्रहार) याअभानेो मार-धा चाबुक की मार का घाव a lash of a whip. जं० प०४,

अंकेसाहणी स्त्री० ( अङ्केशायिनी ) भोलाभा सुवावाणी पुत्री जेवी गोद मे सोनेवाली पुत्री के समान Sleeping in a lap ( like a daughter ) मूय० १, ४, १, २८,

अंकोल पुं० ( अङ्कोल—अङ्कयते लक्ष्यते कीलाकारकण्टकैरिति ) अङ्कोलनु जाड; ओ जाड छिदना दरेङ्क प्रान्तमा उगे छे, ओना भीनु तेल नीङ्कने छे, ओ अङ्क विशाल होय छे, तेना पांदा आंगण मे आगण पड़ोनां अने करणीना जेवा लाया अने रेखावाणा होयछे. अंकोल का वृक्ष, यह वृक्ष हिंदुस्तान के प्रत्येक प्रान्त मे पैदा होता है, इसके बीज का तेल निकलता है, यह काष्ठ विशाल होता है, इस के पत्ते एक दो अंगुल चौड़े होते हैं और करणी के पत्तों के समान लंबे एवं रेखा वाले होते हैं A species of large trees bearing oil seeds, found throughout India. भग० २२, २, ४, पञ्च० १;

अंग न० ( अङ्ग ) अङ्गद्वयवाना शुभाशुभ इल अतापनार निमित्तशास्त्र, २६ पाप सूत्रमांनु ओङ्क. अङ्गफरकने के शुभाशुभ फल को कहने वाला निमित्तशास्त्र. The science that foretells events from the throbbing of a limb,

\* नोट—आ दोष परत्वे लुदा लुदा मत छे, ओङ्क डहेछे, डे सुतेल शुर्वादिङ्कनी पछेडी वगेरे जेथी जगाडी ओङ्कडरी वदना करे ते अंकुश दोष. भीन्ड डहे छे, हाथीने अंकुश लागता शिर उठ्यु नीयुं डरे तेम वदना करे ते अंकुश दोष त्रीन्ने मत उपर न्णुअव्यो ते वान्णी छे

x नोट—इस दोष के सम्बन्ध मे भिन्न भिन्न मत हैं कि, सोये हुए गुरु आदि को उन के वस्त्रादि सँच कर जगाना और फिर बैठ कर उन्हें वन्दना करना यह अंकुश दोष है । दूसरा कहता है कि, हाथी को अंकुश लगाने से जिस प्रकार हाथी सिर ऊंचा नीचा करता है उसी प्रकार वन्दना के समय करना तीसरा मत ऊपर दिया गया है और वही उचित भी है

\* Note—According to some, salutation after rudely awakening them etc.



dant, household female servant  
 नाया० १; १४; भग० ११, ११,—प्रविष्ट.  
 त्रि० (—प्रविष्ट) अंगशस्त्र-न्तर्गतश्रुतविभाग,  
 आचारंग अदि ५२ अंग अंगशास्त्रों के  
 अन्तर्गत श्रुतविभाग, आचारागादि बारह अंग  
 12 Angas such as Āchārāṅga  
 etc. ठा० २, १, नंदी० ४३, क० ग० १,  
 ६;—स्फुरणा. स्त्री० (—स्फुरणा-स्फुरणम्)  
 अंगनुं द्रुतुं अंगों का फरकना. throbb-  
 ing of limbs प्रव० १४२०,—फास पुं०  
 (—स्पर्श) शरीरने स्पर्श शारीरिक स्पर्श.  
 bodily touch नाया० १६,—बाहिर  
 त्रि० (—बाह्य) श्रुतने अेक विभाग,  
 उत्तराध्ययन वगेरे अंग ञ्छारना सूत्रे  
 श्रुत का एक विभाग, अंगों के अतिरेक  
 उत्तराध्ययनादि Sūtras outside the  
 Angas, a division of Jaina  
 canon ठा० २, १; नंदी० ४३,—भंजण.  
 न० (—भञ्जन) आणस भरोधी, शरीरने  
 अवयव ने मे उवा. आलस्य से शरीर मरोड़ना,  
 शरीर के अवयव मरोड़ना twisting and  
 stretching of limbs through  
 sloth. परह० २, ५,—भेय पुं० (—भेद)  
 अंगना लेह अंग का भेद the different  
 sorts of limbs विशेष ११६,—मंदिर  
 न० (—मन्दिर) चंपानगरीनी ञ्छारनु अेक  
 उद्यान चंपानगरी के बाहिर का उद्यान  
 a garden situated outside the  
 Champā city “अगमदिरसि चेदयंसि  
 महारायस्स सरीरं विप्पजहामि” भग० १५, १,  
 —मगह पुं० (—मगध) अंग अने मगध  
 अे अे प से प से ना देश अंग और मगध  
 नामक (पास पास के) दोनों देश two  
 adjacent countries named Anga  
 and Magadha वेय० १, ४६,—मह पुं०

(—मर्द) अंगनु मर्दन डरनर माणस शरीर  
 की मालिश करने वाला मनुष्य. a man  
 who rubs the body with oil etc.  
 सु० च० ४, ७८,—मर्दिया स्त्री० (—मर्दिका)  
 मर्दन डरनर दासी मालिश करने वाली  
 दासी a maid servant who rubs  
 the body with oil etc भग० ११,  
 ११,—राग पुं० (—राग) अंग ७पर मस-  
 णवाना-लेपवाना डेसर, यदन वगेरे सुगंधी  
 पदार्थ अंग ऊपर लगाने का सुगन्धित उवटना.  
 fragrant substances like saffron,  
 sandal etc used to perfume the  
 body राय० ५४, नाया० १६,—राय पुं०  
 (—राज) अंगदेशने राजा अगदेश का  
 राजा a king of the country of  
 Anga नाया० १६,—लोग पुं० (—लोक)  
 देशविशेष देशविशेष name of a  
 country जं० प० ३, ५२;—वंस पुं०  
 (—वंश) अगदेशने वंश वंश अगदेश का  
 राजकीय वंश lineage of the king  
 of the country of Anga सम०  
 ७६,—विगार पुं० (—विकार) अंग  
 स्फुरणना द्रुत द्रुतु ड्यन अंगफरकने के  
 फलाफल का कथन divining the re-  
 sults of the throbbings of the  
 parts of the body “अंगविगारं  
 सरस्स विजय जो विज्जाहि न जीवडस  
 भिक्खू” उक्त० १५, ७,—विज्जा स्त्री०  
 (—विद्या) अगद्रुतुना शुभ शुभ द्रुत  
 ञ्छाणनी विद्या अंगफरकने का शुभाशुभ  
 फल जानने की विद्या. the science of  
 divining the results good or  
 bad from the throbbing of  
 limbs ‘अगविज्ज च जे पडजति, नहु ते  
 समणा वुच्चति” उक्त० ८, १३, (२) निभि-



तादि इलाइल अतावनार अेड शास्त्र-अेड  
पठन्तो निमित्तादि फलाफल वताने वाला शास्त्र.  
a science interpreting omens.  
उत्त० ८, १३;—संचाल पुं० (—सञ्चाल )  
शरीरना अवयवोनुं सहज थोडुं थालवुं ते  
शरीर के अवयवों की थोड़ी सी हलचल.  
slight movement of the limbs  
of the body. “ सुहुमेहि अंग  
संचालेहि ” आव० ५, १;

अंगण. पुं० न० ( अङ्गण ) आंगणुं; इणियु,  
योड; धर आगणतो भुव्वा लाग आगन,  
चौक. A courtyard राय० ३३, १३०;  
ओव० १७, जं० प० २, ३१, जीवा० ३, ४,  
उत्त० ७, १, पञ्च० ११,

अंगणा. स्त्री० ( अङ्गना ) अंग उपर अनुराग  
उपजवनार भाटे अंगना, स्त्री अंगों पर  
अनुराग उत्पन्न कराने वाली होने से अंगना,  
स्त्री A woman, a beautiful wo-  
man. तंडु० २४. पि० नि० २१४,

अंगमंग न० ( अङ्गाङ्ग ) अंगउपाग, अवयवना  
अवयव अङ्गोपाङ्ग, छोटे २ अवयव Parts  
of a limb “ रायलक्खणविराड्यंग-  
मंगा ” नाया० ६; १४, भग० ७, ६, जं०  
प० २, ३३,

अंगय पुं० न० ( अङ्गद ) आडुआसरणु,  
आंलुअन्ध भुजा का गहना, बाजूबंद A  
bracelet worn on the upper  
arm पञ्च० २, ओव० २२; नाया० १,  
जीवा० ३, ४ परह० १, ४, ( २ ) देवतानु  
अेड आसरणु देवता का एक आभूषण  
an ornament of a deity राय०  
१८६,

अंगारंगप्रविष्ट त्रि० ( अङ्गारङ्गप्रविष्ट )  
अंगप्रविष्ट-आचारंग वगेरे सूत्र अने  
अनंगप्रविष्ट-आवय्यड वगेरे सूत्र अङ्ग

प्रविष्ट-आचाराङ्गादिसूत्र और अनङ्गप्रविष्ट-  
आवय्यक वगेरे सूत्र Sūtrās like  
Āchārāṅga included in Aṅgas  
and those like Āvaśyaka not  
included in Aṅgas. विशेष ५२७;

अंगार पुं० ( अङ्गार ) अग्नि; अणतो डोलसो.  
अङ्गार; जलता हुआ कोयला. A burning  
charcoal. पि० नि० ११४; प्रव० २६७;  
( २ ) स्वादिष्टअन्न अने तेना दातारनी  
प्रशंसा करता आहार करताथी साधुने लागतो  
अेड आहारनो दोष, धंगाल दोष स्वादिष्ट अन्न  
और अन्नदाता की प्रशंसा करते २ आहार  
करने से साधु को लगने वाला दोष; इङ्गाल  
दोष a sin incurred by a Sādhu  
while eating, by praising the  
deliciousness of the food and  
the giver of it गच्छा० ७,—कहिदणी.  
स्त्री० (—कर्पिणी ) अग्नि देवता-उथलाव-  
वानो दोढानो सणीओ. अग्नि उलटपुलट  
करने का लोहे का सरिया-खौंचा. a poker.  
भग० १६, १;—दाह. पुं० (—दाह ) अग्नि  
लाडज आणी डोलसा पाडवामां आवे छे ते  
अथान वह स्थान, जहां लकड़ी जलाकर कोयले  
बनाये जाते हैं a place where wood  
is converted into coal by com-  
bustion आया० २, २, १,—पतावणा.  
स्त्री० (—प्रतापना ) टाढ उडावने अग्निपासे  
जर्ध शरीर तपाववुं ते, तापणी; धुणी ठंड  
मिटाने के लिये अग्नि के पास जाकर शरीर  
तपाना to warm the body at the-  
fireside. परह० २, ५,

अंगारक पुं० ( अङ्गारक ) अंगणनाभनो  
ग्रह; ८८ ग्रहनाभनो अेड ग्रह मंगल नामक ग्रह;  
= ग्रहों में का एक ग्रह. The planet  
Mars परह० १, ५, ओव० २६; पञ्च० २;

**अंगारमर्दक** पुं० ( अङ्गारमर्दक ) अंगारमर्दक  
ये नाम्नी प्रसिद्धिपात्रेला इन्द्रदेवतामे अङ्क  
अलव्य आचार्य अङ्गारमर्दक नाम से प्रसिद्धि  
प्राप्त एक रुद्रदेव नामक अभव्य आचार्य. A  
preceptor unworthy of salvation  
named Rudradeva who become  
famous by his name of Angāla-  
Mardaka पंचा० ६, १३,

**अंगारिय** त्रि० ( अङ्गारित-अङ्गारो रोग-  
विशेषः स जातोऽस्येति ) अंगाररोग वाणी  
शेरी, के ने रोगी शेरीनी डातणीने रोग  
अलव्य अङ्क अंगाररोग वाला गला-सांठा,  
जिस रोग से उसके छिलके का रंग बदल जाता  
है A sugarcane with a disease  
which alters its colour आया० २,  
१, ६, ४८,

**अंगाल** पुं० ( अङ्गार ) अंगारो, डायलो अंगार,  
कोयला. A burning charcoal, a  
coal. पंचा० १, २२,

**अंगिरस** त्रि० ( आङ्गिरस ) अंगिरस-गौतम  
गोत्रनी अङ्क शाखा तेमां उपनेल पुरुष ते-  
आंगिरस गौतमगोत्र की एक शाखा में  
उत्पन्नपुरुष One born in a branch  
belonging to the line of Gau-  
tama ठा० ७, १,

**अंगुष्ठ** पुं० ( अङ्गुष्ठ ) अंगुष्ठो अंगूठा  
The thumb, the great toe नाया०  
८, सम० ११, ओष० नि० ३६०, भग० ३, २,  
प्रव० २५८,—**पसिण** पुं० न० (—प्रक्ष) अङ्गु-  
ष्ठमां देवतानु आलवान करी अङ्गुष्ठधीन नवाय  
देवानी विद्या अंगुष्ठे मे देवता का आन्धान कर  
के अंगुष्ठे से ही उत्तर देने की विद्या, एक प्रकार  
की हाजरात a branch of learning

dealing with answering by  
means of the thumb after in-  
voking a deity in it (२) ते विद्यानु प्रति-  
पादन करनार प्रश्नोपादरानु नवमु अध्ययन,  
के ने लाल विच्छेद थर्ग गयेल छे उक्तविद्या का  
प्रतिपादन करने वाला प्रश्नव्याकरण का नवौ  
अध्याय, जिसका कि, अब विच्छेद हो गया है.  
the ninth chapter of Praśna-  
vyākaraṇa which explains the  
above but which is now extinct.  
ठा० १०, १,

**अंगुष्ठ** पुं० ( अङ्गुष्ठ ) अंगुष्ठो अंगूठा.  
the thumb, the great toe.  
नाया० १४,

**अंगुल** न० ( अङ्गुल ) आगुल; आलव्य  
प्रमाणे लरपविशेष-वैतनी आरमे लाग.  
अगुली, अगुल; वैत का बारहवाँ हिस्सा.  
A finger, a measure of length  
equal to the twelfth part of a  
span भग० १, ५ ३, १ ६, ५, ७, ११,  
१; २१, १, २४, १२, ३६, १, ज० प० ३,  
५७, पञ्च० १२, सू० प० १६, उत्त०  
२६, १३, ओष० नि० २७; प्रव० ७५,  
—**पहुत्त** न० (—पृथक्त्व) लुओ “अगुलपु-  
हुत्त” शब्द देखो ‘अगुलपहुत्त’ शब्द  
vide “अगुलपहुत्त” भग० २१, ६, २४, १,  
—**पुहुत्त** न० (—पृथक्त्व) अगे आगुली ८  
आगुलमुधी दो अंगुल से नौ अंगुल तक a  
measure of length, from two to  
nine Angula measures ( finger  
—breadth ) भग० २२, १,—**पोहत्तिय**.  
त्रि० ( \*—पृथक्त्व—अङ्गुलपृथक्त्वं शरीरा-  
वगाहनामानमेपामस्तीत्यङ्गुलपृथक्त्वकाः )  
नेनी अथी भागी नव अङ्गुलमुधीनी शरीर  
अवगाहना-आयाधि छे ते जिसके शरीर की

ऊंचाई २ से ६ अंगुल तक की है वह one whose height is from 2 to 9 Angula measures ( finger-breadth). पञ्च० १;—भाग पुं० (-भाग) अंगुलनो (असंख्यतमो) भाग अंगुल का असंख्यतमो भाग an (infinite simal) division of the measure called Angula .i.e., a finger's breadth क० प० १, ६;—वगाह. पुं० (-अवगाह) अंगुलीनी अवगाहना-क्षेत्रस्पर्शना. अंगुल की अवगाहना; क्षेत्रस्पर्शना occupation of space equal to a finger's breadth, क० प० १, २०;

**अंगुलि.** स्त्री० (अङ्गुलि) आंगुली (हाथपगनी) अंगुली. A finger or a toe. निसी० ३, ४६; ओव० १०, पञ्च० २; नाया० १, ८, दस० ४, आया० १, १, २, १६, उवा० २, ६४,—कोस. पुं० (-कोश) आंगुलीभा पहरेवनी लेटानी, लाडनी, के यमडनी अगे'डी अंगुली में पहिरने का लोहे, लकड़ी, अथवा चमड़े का अंगुस्ताना. a thimble राय०—फोडण न० (-स्फोटन) आंगुलीना टय डा वगडवा ते चुटकी बजाना a snap of the thumb and the finger तंडु० २५.—भमुहा स्त्री० (-भ्रू) इ.उसग्गमा अ गणीना वेडा गलुव थी के कंधे संकेत जलुवव-अकुटि हल वव थी ल गते अके देप, इ उसग्गने. अके देप कायोत्सर्ग का एक दोष; अंगुली के पेर गिनने से या कुछ इशारा करने से अथवा भौ चलाने से कायोत्सर्ग में लगने वाला दोष. a fault in Kāūsagga ( a kind of trance-condition ) consisting in counting the finger joints or moving the eyebrows

to signify something. “ अंगुलि भमुहाओ विय चालंतो तह य कुणइ उस्समां” प्रव० २६२;

**अंगुलिजग.** न० ( अङ्गुलीयक ) आंगुलीना आभरणो; वेड, वींटी वगेरे अंगुलियों का गहना, अंगूठी वगैरह. A ring. जीवा० ३, ३; नाया० १; ओव० ३१; कप्प० ४, ६२;

**अंगुलिया** स्त्री० (अङ्गुलिका) आंगुली. अंगुली. A finger, a toe भग० ८, ३; जीवा० ३, ३; निसी० १, २; पि० नि० २८७;

**अंगुवंग** पुं० ( अङ्गोपाङ्ग ) नामकर्मनी अके प्रकृति नामकर्म की एक प्रकृति. A species of Nāma-Karma.(ie .body-making Karma.) प्रव० १२७५;

**अंगोवंग.** न० ( अङ्गोपाङ्ग ) भस्तकादि अथ अने अंगुलि आदि उपांग भस्तकादि अंग और अंगुल आदि उपाङ्ग. Parts of a body and their sub-divisions “ नहकेसमंसुअंगुलिओहा खलु अंगोवंगाणि ” उत्त० टी० ३; पञ्च० २३; विवा० १, क० गं० १, ३४; ४८; क० प० ४, ७४,—णाम न० (-नामन् ) जेना उदयथी शरीररूपे लीधेल पुद्गलो अंग उपांग रूपे परिणुमे ते नामकर्मनी अके प्रकृति; अंगोपांगनामकर्म. नामकर्म की एक प्रकृति, जिसके उदय से शारीरिक पुद्गल अंगोपाङ्ग रूप में परिणत होते हैं; अंगोपाङ्ग नाम कर्म. a variety of Nāma-Karma ( i e , body-making Karma ) by the maturing of which are produced the limbs of the body and their sub-divisions क० गं० १, ४८,



✓ अंच धा० I. ( अञ्च् ) संकेद्युं, संकेयुं, भेयुं करुं. इकठा करना To fold up, to gather up ( २ ) पूज्युं, पूज्य करवी पूजा करना; पूजना to worship ( ३ ) गति करवी. जाना to go.

अंचति पंचा० १६, २६,

अंचेइ. “ वामं जायुं अंचेइ ” राय० १६, श्रोव० १२; जीवा० ३, ४, जं० प० ३, ५३; भग० ६, २२,

अंचेइत्ता. सं० कृ० भग० ६, ३३,

अंचि. पुं० ( अञ्चि ) गति करवी ते, ज्युं ते गति करना; जाना. The act of going. भग० १५, १;

अंचि. पुं० ( अञ्चि ) आवुं ते. आना. The act of coming. भग० १५, १;

अंचिअ. न० ( अञ्चित ) ऐकप्रकारुं न'टक, देवताना उर नाटकमानु २५ भुं न'टक एक प्रकार का नाटक, देवताओं के ३२ नाटकों में से २५ वाँ नाटक. A kind of a drama, the 25th of the thirty two dramas of gods. जीवा० ३, ४, राय० ६४, ( २ ) त्रि० पूज्य; रज्जमन्य पूज्य, राजमान्य. worthy of worship or reverence भग० १५, १, ( ३ ) न० ऐकवार ज्युं ते एक बार जाना the act of going once भग० १५, १,

अंचियंचिय न० ( अञ्चितान्चित ) गमना-गमन, आहिथी त्यां अने त्याथी आहि ज्युं आवुं ते, गति आगति, गमागम आना जाना, गमनागमन Walking to and fro. भग० १५, १,

अंचियरिभिय. न० ( अञ्चितरिभित ) ऐक प्रकरुं न'टक, देवताना उर नाटकमानु २७ भुं न'टक एक प्रकार का नाटक, देवताओं के ३२ नाटकों में से २७ वाँ नाटक. A kind of

drama, the 27th of the thirty-two dramas of gods. जीवा० ३, ४; राय० ६४;

✓ अंछ धा० I ( अञ्छ-आ+कृप् ) आकर्षण करुं; भेयुं आकर्षित करना, खेंचना. To attract, to pull, to draw.

अंछति विशेष० ७६४,

अंछवेइ. शि० नाया० १; भग० ११, ११;

अंछवेइत्ता शि० सं० कृ० नाया० १, भग० ११, ११;

अंजण न० ( अञ्जन ) क्षण्ण; आंजण काजल; अञ्जन Collyrium for the eye. भग० १५, १, पि० नि० भा० ४४, उत्त० ३४, ४, उवा० २, १०७, नाया० ६; प्रव० ८५७, ( २ ) सौवीरांजन, सुरमे, धातुविशेष; सयित्तद्धिनपृथ्वीतो ऐक प्रकर सौवीराञ्जन. सुरमा, धातुविशेष, सचित्तफठिन पृथ्वी का एक भेद sulphuret of antimony etc used as collyrium for the eye राय० ६०; १२३; उत्त० ३६, ७५, आया० २, १, ६, ३३, पन्न० १, विशेष० २१२, निसी० ४, ४८, सू० प० २०; ( ३ ) रसांजन, रसवती, ६३-हुणदरना अष्टमाश उकाण मां पकरीनु मूत्र भेणवी अन वेल आंजव नी शणी रसाञ्जन, रसवती, दाह-हल्दी के अष्टमाश काढे में बकरी का मूत्र मिलाकर उस से सस्कारित आजने की सलाई a pencil of collyrium for the eye made of a certain medicinal plant दस० ३, ६; ( ४ ) तपावेज लोह नी शणीथी आपमां दुप उत्पन्न करुं ते गर्म की हुई लोहे की सलाई से आख में दुख उत्पन्न करना. act of causing pain in the eye by means of a red hot iron rod. सम० ११; ( ५ ) आप अ.जी, आपमा क्षण्ण वगेरे आंजुं ते आख में काजल

चगैरह लगाना. to apply collyrium to the eyes. “ वमणंजणपलिमंथं ” सूय० १, ६, १२; ( ६ ) रत्ननी अेड जल. रत्न की एक जाति. a variety of jewel. राय० २६; कप्प० २, २६; नाया० १; पन्न० १७, ( ७ ) रत्नप्रभा पृथ्वीना भरद्वाजो दशमो भाग, ३ ७ अेड हज्जर जेज्जनो जडे छे. रत्नप्रभा पृथ्वी के खर खण्ड का दशवाँ भाग, जो एक हजार योजन चौड़ा है. the tenth part of the Kharakāṇḍa of Ratnaprabhā world, which is 1000 Yojanas in width जीवा० ३, १, ठा० १०, १; ( ८ ) रम्यविजयनी पश्चिमसरह छे उपरतो वज्जारा पर्वत रम्यविजय की पश्चिम सीमा का वज्जारापर्वत the Vakhārā mountain on the western boundary of Ramyavijaya ठा० २, ५; जं० प० ५, ११५; ( ६ ) आइमा देवलोडनुं अे नामनुं अेड विमान, ३ ७यां देवतानी १८ सागरनी स्थिति छे. आठवे देवलोक का इस नाम का एक विमान, जहा के देवो की १८ सागर की आयु है a heavenly mansion of the eighth Devaloka ( abode of gods ) where the gods live for 18 Sāgaras ( a vast measure of time ) सम० १८; ( १० ) रुचकवर पर्वतनुं सातमुं इट रुचकवर पर्वत का सातवाँ कूट. seventh summit of Ruchakavara mountain ठा० ८, १; ( ११ ) अे नामतो अेड वेलधर देवता इस नाम का वेलधर देव. a Velandhara god of that name. भग० ३, ७. ( १२ ) द्वीपकुमारना धन्ना त्रील लोडपालनुं नाम द्वीपकुमार के इन्द्र के तीसरे लोकपाल का नाम name of the third Lokapāla of

the Indra of Dvīpakumāra. भग० ३, ६; ( १३ ) उदधिकुमारना धन्ना प्रलंजनना योथा लोडपालनुं नाम. उदधि कुमार के इन्द्र-प्रभंजन के चौथे लोकपाल का नाम name of the fourth Lokapāla of the Indra ( Prabhañjana ) of Udadhi-kumāra ठा० ४, १ ( १४ ) वनस्पतिविशेष वनस्पति विशेष a species of vegetation. ओव० ( १५ ) वायुकुमारजतिना धन्नुं नाम वायुकुमारजाति के इन्द्र का नाम. the name of the Indra ( lord ) of the class of gods known as Vāyukumāra भग० ३, ८;—धाड. पुं० ( -धातु ) धातुविशेष, सुरमो धातु विशेष, सुरमा Sulphuret of antimony etc used as collyrium नंदी० ३१,—रिट्ट. पुं० ( -रिट्ट ) वायुकुमारना योथा धन्ना वायुकुमार का चौथा इन्द्र the fourth Indra of Vāyukumār. भग० ३, ८;—समुग्ग पुं० ( -समुद्रक ) अंजनना जललो. अंजन का डिब्बा. a box for keeping collyrium जीवा० ३, ४;—सलागा स्त्री० ( -शलाका ) अंजवानी शणी अंजने की सलाई. a stick for applying collyrium to the eye. “ तिलगकरणिमंजणसलागं ” सूय० १, ४, २, १०;

अंजणई स्त्री० ( अंजनकी ) अे नामनी अेड लता—वेल इस नाम की एक वेल. A kind of a creeper. पन्न० १०,

अंजणकोसिया स्त्री० ( अंजनकोशिका ) वनस्पतिविशेष वनस्पतिविशेष A species of vegetation. पन्न० १७, राय० ६२; जीवा० ३, ४;

**अंजणग** पुं० ( अञ्जनक ) अञ्जन रत्नमय पर्वतविशेष, नंदीश्वर द्वीपमां आवेल अञ्जनगिरि पर्वत. नंदीश्वर-द्वीप का अञ्जनगिरि-पर्वत, रत्नमयपर्वतविशेष A mountain named Añjanagiri situated in Nandīśvara island ज० प० २, २३, ठा० ४, १, प्रव० १४८७,

**अंजणगिरि** पुं० ( अञ्जनगिरि ) काला रंगने पर्वतविशेष, अञ्जनगिरि पर्वत काले रंग का पर्वतविशेष; अञ्जनगिरि A mountain of black colour named Añjanagiri. नाया० ८, १६, प्रव० १४८७, ( २ ) मेरुना भद्रसाल वननु योयुं कूट. मेरु के भद्रसाल वन का चौथा कूट fourth summit of Meru ( a mountain ) situated in Bhadrāsāla forest. ठा० ८, १, ( ३ ) ते कूटने अधिपति देवता उक्त कूट का अधिपति देव the presiding deity of that summit ज० प० ४,

**अंजणजोग** पुं० ( अञ्जनयोग ) सत्तावीसवीं कला The twenty-seventh art ओव० ४०,

**अंजणपर्वत** पुं० ( अञ्जनपर्वत ) नंदीश्वर-द्वीपने एक पर्वत, ८४ हजार जेजने नो उयो, अष्टहजार जेजने नो उडो, अने दशहजार जेजने नो लाये पडोणे छे नंदीश्वर-द्वीप का एक पर्वत, जो ८४ हजार योजन ऊंचा, एक हजार योजन ऊडा और दश हजार योजन लंबा चौड़ा है. A mountain of the island Nandīśvara which is eighty-four thousand Yojanas high, one thousand Yojanas under-ground and ten thousand Yojanas in length and width जीवा० ३, ४,

**अंजणपुलक** न० ( अञ्जनपुलक ) रत्ननी

अेक जत रत्न की एक जाति. A kind of jewel कप्प० २, २६,

**अंजणपुलक** पुं० ( अञ्जनपुलक ) रत्न विशेष रत्नाविशेष A kind of precious stone नाया० १;

**अंजणपुलाअ** पु० ( अञ्जनपुलाक ) अञ्जनपुलाकडांड, अरडांडने ११मे विभाग अञ्जनपुलाक काण्ड; खरकाण्ड का ११ वां हिस्सा The eleventh division of the Kharakāṇḍa. जीवा० ३, १,

**अंजणा** स्त्री० ( अञ्जना ) नैऋत्य कोण की एक वावड़ी का नाम The name of a well in the southwest of Jambū Vrikṣa ( a sacred tree ). जीवा० ३, ४, ( २ ) योथी वरकनु नाम चौथे नरक का नाम name of the fourth hell जीवा० ३, १, ठा० ७, १, प्रव० १०८५,

**अंजणिया** स्त्री० ( अञ्जनिका ) आंगु रक्षणावाली उल्लि अञ्जन रखने की डिब्बी A box for keeping collyrium. मूय० १, ४, २, ७;

**अंजलि** पु० स्त्री० ( अञ्जलि ) भोभो, करसंपुट, जेडेला भे हाथ जोडे हुए दो हाथ, करसंपुट. The cavity formed by hollowing the palms of two folded hands नाया० १, ५; १६, भग० २, १, ७, ६, १५, १, जीवा० ३, ४, ओव० ११; २०, राय० २८; दस० ६, २, १७; मम० १२; अणुजो० ३६, ओघ० ति० ७६७, वव० १, ३७, कप्प० १, ५, ( २ ) भे हाथ जेडी मस्तके लगावना ते दोनों हाथों को जोड़कर मस्तक पर लगाना. touching the head with folded hands दंस० ६, ३. १२;

जं० प० ३, ४३, ५, ११२; ११५,—उड पुं० (—पुट) भे हाथों दोनो हाथों का सपट cavity formed by folding two hands. नाया० १,—कम्म न० (—कर्मन्) भे हाथ जोड़ना ते दोनो हाथों का जोड़ना the act of folding two hands भग० १५, १,—प्पगह पुं० (—प्रग्रह) भे हाथ जोड़ी नमस्कार करवे ते दोनों हाथ जोड़कर नमस्कार करना. bowing with hands folded. भग० ६, ३३, १४, ३; सम० १२;

अंजु त्रि० ( अजु ) सरल; मायाप्रपंच रहित. सरल, मायाप्रपञ्च रहित Straight-forward “अंजुधम्मं जहातच्चं जिणाय तं सुणेह मे” सूय० १, ६, १, आया० १, ४, ३, १३४, ( २ ) संयमी, संनमधारी संयमी. self-controlled आया० १, ६, १, ७; सूय० १, १, २, २१, ( ३ ) निर्दोष; योद्धो. निर्दोष; शुद्ध. innocent. सूय० २, १, ४६,

अंजुया स्त्री० ( अञ्जुका ) सत्तरमा तीर्थंकरनी भुज्य साध्वीनु नाम सत्रहवे तीर्थंकर की मुख्य साध्वी का नाम. The name of the chief female ascetic disciple of the 17th Tirthankara. सम०

अंजू स्त्री० ( अञ्जू ) शकेन्द्रनी येथी अग्रम-हिपीनु नाम शकेन्द्र की चौथी पटरानी का नाम The name of the fourth principal queen of Śakrendra. भग० १०, ५, ( २ ) धनदेव-सार्थवाहनी पुत्री, डे जेतुं वर्णन ‘विपाकसूत्र’ ना दशमा अध्ययनभां छे. धनदेव-श्रेष्ठी की पुत्री का नाम, जिसका वर्णन विपाकसूत्र के दशवें अध्याय में है name of the daughter of Dhanadeva,

a merchant mentioned in the tenth chapter of Vipāka Sūtra. विवा० १; ठा० १०; नाया० ध० ६;

अंड पुं० ( अण्ड ) धुं, धंडा-डीडी वगेरे-ना धंडा An egg. उत्त० ३२, ६; राय० ४६; ६३; सूय० २, ३, २२; ठा० १०, १, आया० १, ७, ६, २२२; ( २ ) विपाक-सूत्रनुं अंजुनामनुं त्रीनुं अध्ययन विपाक-सूत्र का अण्डनामक तीसरा अध्याय. the third chapter of Vipāka Sūtra named Anda विवा० ३; ( ३ ) मोरना धंडना दृष्टान्तवाणुं ज्ञातासूत्रनुं त्रीनुं अध्ययन. ज्ञातासूत्र का मोर के अंड के दृष्टान्त वाला तीसरा अध्याय the third chapter of Jñātā Sūtra where the illustration of a peacock's egg is given नाया० ३; सम० १६; ( ४ ) उत्तर भरतमानो ओड देश उत्तर भरतक्षेत्र का एक देश a country of northern Bharata जं० प०—उड न० (—पुट) धंडानु डेटुं. अंड के बाहिर का छिलका egg-shell दसा० ६, १६,—कड. त्रि० (—कृत) धंडाभाथी थयेव, धंडाओ करेव. अंड मे से उत्पन्न, अंडाद्वारा किया हुआ. produced from an egg. “माहणा समणा एगे आह अंडकडे जगे” सूय० १, १, ३, ८,—सुहुम. न० (—सूक्ष्म) ग्रीष्मा धंडा; भाभी, डीडी, गरीणी, डाडिंडा वगेरेना धंडा. मक्खी चांटी आदि छोटे २ जंतुओं के अंडे. an egg of a small insect. “अंडसुहुमं च अट्टमं” दस० ८, १५; कप्प० ६, ४४,

अंडअ पुं० न० ( अण्डक ) धुं. अंडा. An egg भग० २, ६, प्रव० ८२१;

अंडक पुं० न० ( अण्डक ) धुं. अंडा. An egg. परह० १, २;

**अण्डग.** पुं० न० ( अण्डक ) ँडु अण्डा. An egg. ओव० १६, भग० ३, १,

**अण्डय.** त्रि० ( अण्डज ) ँडामांथी उत्पन्न थयेल प्राणी-पक्षी सर्प वगेरे अण्डज प्राणी ( Creatures ) born of eggs, oviparous creatures. नाया० १; ३, दस० ४; सूय० १, ७, १, आया० १, १, ६, ४८, भग० ७, ५, ठा० ३, १, ७, १, जीवा० ३, २. प्रव० १२५०, ( २ ) डेशेटामांथी उत्पन्न थेतो तातणो कोसा ( कोया ) का तार. silk thread of the cocoon. अणुजो० ३७;—**ग्राहि** पुं० ( -ग्राहिन् ) ँडामांथी उत्पन्न थयेल प्राणिने पकडनार पक्षियों को पकड़ने वाला one who catches birds नाया० २,—**वाणिय** पुं० न० ( -वाणिज्य ) ँडानो व्यापार अडे का व्यापार. trade in eggs विवा० ३, —**वाणियअ** त्रि० ( -वाणिज्यक ) ँडानो व्यापारी अडे का व्यापारी a dealer in eggs. विवा० ३,

**अण्डयमेत्त** त्रि० ( अण्डकमात्र ) ँडानेवपुं. अडे के बराबर Of the size of an egg. पंचा० १६, २१;

**अण्डु** न० ( अण्डू ) दशडला; डुथडडी लोहे अथवा लकड़ी की हथकड़ी An iron or wooden hand-cuff ओव० ३८,

**अंत** न० ( आन्त्र ) आतरड आंत The entrails, the bowels “ दो अतापंच वामापरणत्तातजहा थूलते तणुयंतेय ” तंडु० सूय० २, १, ४६,—**गय** त्रि० ( -गत ) आंतरडामां रडेडुं आंतो मे रहा हुआ existing in the bowels. सूय० २, १, ४६,

**अंत** त्रि० ( आन्त-अन्ते भोजनान्तेऽवशिष्टमा-न्तम् ) आतां आता वधेडुं खाते र वचा हुआ Remnants of food taken “ अताहारे पंताहारे ” भग० ६, ३३;

नाया० ५; १६;—**अह** त्रि० ( -अदिन्-अन्ते भवमान्तं जघन्यं घल्लचणकादि तदत्तं भोक्तुं शीलमस्येत्यान्तादी ) तु०७ आहार लेनार; अत'हारी ( मुनि ) तुच्छ आहार लेने वाला, अंताहारी ( मुनि ). ( an ascetic ) eating inferior kind of food पंचा० १८, २३,—**आहार** पुं० ( -आहार ) आता आडी रहेडो ( शेष ) डेय ते आहार खाते र बाकी वचा हुआ आहार remnants of food taken ठा० ५, १, ( २ ) डलडुं धान्य, अणु वाल वगेरे हलका अनाज; चण आदिक inferior kind of corn. e g gram etc ओव० ४०,

**अंत** अ० ( अन्तर् ) अन्तर, माहि अन्दर; भीतर In, inside भग० १४, ६, ( २ ) मध्य, वय्ये. मध्य, बीच में in the middle भग० ३, ४,—**मुहुत्त** न० ( -मुहूर्त्त ) मुहूर्त्तथी अन्तरनो समय, मुहूर्त्तथी ओछो डाल मुहूर्त्त के अन्दर-भीतर का काल, मुहूर्त्त से कम समय a space of time shorter than a Mubūta ( a measure of time ) उत्त० ३३, ३१, ३४, ६०;

**अंत** त्रि० ( अन्त्य ) अन्तिम, छेडु आखिरी, अन्तिम. Last विश० ८८;

**अंत** पुं० ( अन्त ) पर्यंत छेडो पर्यन्त, सिरा Final limit भग० १, १, ६, २, १, ३, ३, ५, ५, नाया० १, क० ग० २, ६, १३, ( २ ) बेद, प्रकार भेद, प्रकार sort, variety “ चाउरत ” चत्वारोऽन्ता गतिभेदा यत्र स सगारश्चाउरंत. ” सूय० २, ५, २३; ( ३ ) रागद्वेष रागद्वेष passion and hatred. “ दोहिहि अंतेहि अहिस्समाणेहि ” आया० १, ३, ३, ११६, सूय० २, १, ४६; ( ४ ) भूमिभाग; प्रदेश भूमिभाग, प्रान्त a land, a region “ एगंतमनं अवकमनि ” भग० २, १; ३, ३;



( ५ ) समीप, पास नज़दीक. near. नाया० ८; ( ६ ) निर्णय, युद्धो निर्णय; फैसला. decision “ तिविहे अंते पन्नत्ते संजहा-ल्लोगंते वेयंते समयंते ” ठा० ३, ४; ( ७ ) विनाश; भंग भंग, विनाश destruction. नाया० १६; सम० १, ( ८ ) रोग चामारी. disease. विशेष० ३४५४;—आहार पुं० (—आहार) आतां आडी रहेलो ( शेष ) होय ते आहार खाते २ बाकी बचा हुआ आहार remnants of food taken. ठा० ५, १, —कड त्रि० (—कृत) जेणे संसारने अंत क्यो होय ते संसार का अंतकरने वाला. one who has attained final liberation आया० २, १५, १; सूय० १, १२, १५; भग० २, १, —कम्म न० (—कर्मन्) लुगडानी डेर; पखनी डिनारी. बस्त्र की कोर. the border of a garment. जीवा० ३, ४, राय० १८६; —कर त्रि० (—कर) संसारने अंतकरनार संसार का अन्त करने वाला one who is to attain final liberation. भग० १, ४; ५, ४, —काल पुं० (—काल) भरणुक्षण; प्रलयक्षण मृत्युसमय; प्रलयकाल. the time of death or dissolution. परह० १, ३, —किरिया स्त्री० (—क्रिया) संसार या कर्मने अंत करवानी क्रिया-अनुष्ठान संसार अथवा कर्म के नाश करने की क्रिया. process of securing final liberation. पन्न० २०, ठा० ४, १, सम० ६; ( २ ) सद्धकर्मक्षयरूप मोक्ष सकल कर्मों का क्षयरूप मोक्ष salvation resulting from destruction of all Karmas i. e. actions. भग० १, ८, ३, ३; पंचा० १६, १६; —कुल न० (—कुल) उच्च कुल, हीनकुल, नीचकुल. a low family कर्प० २, १६; दसा०

१०, १०, —कखरिया. स्त्री० (—अखरिका) अठारलिपिभांती नवमी लिपि. अठारह लिपियो मे की नवी लिपि. the ninth of the eighteen scripts पन्न० १; ( २ ) ६३ भी डण्णा. ६३ वीं कला. sixty-third art. ओव० राय० ४०; —गमण. न० (—गमन) छेडे जयुं ते. अन्त तक जाना. act of going to the end नाया० १; —चरअ-य. पुं० (—चरक) गृहस्थे भोजन क्यो पछी अवशेष रह्यु होय तेनी गवेषणा करनार अभिग्रहधारी साधु गृहस्थ के भोजन करने के पश्चात् बचे हुए भोजन की जाँच-पड़ताल ( गवेषणा ) करने वाला अभिग्रहधारी साधु. an ascetic who has made up his mind to beg food after satisfying himself that the householder has finished his meal ठा० ५, १; परह० २, १; —चारि पुं० (—चारिन्) अंत आहार-तुच्छ आहार लेवानो अभिग्रह धरनार साधु. तुच्छ आहार लेने का अभिग्रह धारण करने वाला साधु a Sādhu who has vowed to take inferior kind of food ठा० ४, ४, १०; —जीवि पुं० (—जीविन्) गृहस्थे आता शेष रहेल आहार छोडरी तेना उपर जवन यदावनार साधु. गृहस्थ का अवशिष्ट आहार लेकर अपना उदर पालन करने वाला साधु a Sādhu who lives on remnants of food taken by householders ठा० ५, १, —दुग न० (—द्विक) सयोगीकेवली तथा अयोगी केवली ये अंतना ये गुणुहाणा. सयोगी केवली और अयोगी केवली ये अन्त के दो गुणस्थान. the last two Gunasthānas ( stages of spiritual progress ) viz. those of Sayogī–Kevalī

( i. e. a would-be omniscient with vibratory activity of the soul not quite gone ) and Ayogī Kevalī (i.e one free from all such vibratory activity of the soul ). क० गं० ४, ५१, —पाल पुं० (—पाल) देशनी सीमा के सरहदतु रक्षायु करनार पु३५. देश की सरहद—सीमा की रक्षा करने वाला. one who guards the boundaries of a country जं० प० अंतः. पुं० ( अन्तः ) कामेने छोड़ धनुष का आखिरी सिरा The end of a bow वि० नि० ६७; उत्त० ३२, १६, अंतःक्रिया स्त्री० ( अन्तःक्रिया ) पन्नवर्णना वीसमा पदं नाम, के जेभां अंतःक्रियाने अधिकार छे. पन्नवर्णना के बीसवें पद का नाम, जिसमें अन्तःक्रिया का अधिकार है The twentieth chapter of Pannavanā Sūtra treating of ' Antakriyā ' पञ्च० १, भग० १, २; अंतर्गत पुं० ( अन्तः ) छोड़, अंत आखिर, अन्त End “तस्संतं गच्छद् वीररागो” उत्त० ३२, १६; ( २ ) वि० विनाशकारक, अन्त करने वाला. ( one ) who destroys or ends सूय० १, ६, ७, ( ३ ) दुष्परित्यज, मुश्किलीयी छोड़ी शक्य तेवु. कठिनाई से छूट सकने वाला. difficult to be avoided or given up. “ चिन्ता अंतर्गतं सोयं शिरवेवसो परिच्युत ” सूय० १, ६, ७, अंतर्गत वि० ( अन्तःकृत ) जेले ससारने अने नन्ममरणने अंत कर्ये अथवा तीर्थ-करादि संसार का और जन्ममरण का अंत करने वाले तीर्थकरादि One ( a Tirthaṅkara etc. ) who has freed himself from birth and death

कप्प० ५, १२३; नाया० ५; अणुजो० १२७; —दसा. स्त्री० ( —दशा ) संसारने अंत करनार मुमुक्षु महात्माओनी दशा-अवस्थानुं जेभां वर्णन करवाभां आवुं छे अथवा “अंत-गडदशा” नामनु आहं अंगसूत्र, जेभां आहं वर्णन ६० अध्ययनने सभावेश करवाभां आवुं छे संसार का अंत करने वाले मुमुक्षु महात्माओं की दशा का जिसमें वर्णन किया गया है ऐसा “अंतर्गतदशा” नाम का आठवाँ अंगसूत्र, जिसके आठवर्गों में ६० अध्ययन हैं. the eighth Anga Sūtra named Antagada Daśā, dealing with the ten conditions or states of persons desirous of emancipating themselves from the cycle of worldly existence; eighth Anga Sūtra named Antagada Daśā in which is given the description of the state of Sādhus who have attained to final liberation It contains ninety nine chapters ठा० १०, १, सम० १, ८, नंदी० ४४, ५२, अंत० १, १; अणुजो० ४२,—भूमि स्त्री० ( —भूमि ) संसारने अंतकरनार निर्वाणसमय महा-पुत्रोनी भूमि-निर्वाणसमय निर्वाणभूमि-संसार का अंतकरने वाले महापुरुषों का निर्वाणसमय the time of final liberation of saints जं० प० २, ३१, नाया० ८, कप्प० ७, २२६, अंतर्गत न० ( अन्तर्गत ) आनुगाभिः अवधि ज्ञानने अथवा भेद आनुगात्मिक अवधिज्ञान का एक भेद A variety of Ānugā-mika Avadhijñāna, i. e. visual knowledge which accompanies the soul “ से कि तं अंतर्गतं, अंतर्गतं



तिविहं पराणत्तं तंजहा पुरओ अंतगयं, मगओ  
अंतगयं, पासओ अंतगयं ” नंदी०

अंतर्द्वारा. न० ( अन्तर्धान ) गेय थर्धं लुनुं;  
अदृश्य थर्धं. अदृश्य होना; गुप्त हो जाना.  
Act of disappearing पि० नि०  
५००;

अंतर्द्वारिया. स्त्री० ( अन्तर्धानिका ) अदृश्य  
थवानी विद्या. अदृश्य होने की विद्या. The  
art of making oneself invisible.  
सूय० २, २, ३०;

अंतर्द्वारिणी. स्त्री० ( अन्तर्धानिका ) लुओ  
उपयो शब्द देखो ऊपर का शब्द. Vide  
“अंतर्द्वारिया ” सूय० २, २, ३०;

अंतर्मिल्ल. त्रि० ( अन्तिम ) अंतनुं, छेवटनुं.  
आखिरी; किनारे का. Last; final “ तम्हा  
दोण्हं पि अंतर्मिल्लाणं ” क० प० १, ३८;

अंतमुहु न० ( अन्तर्मुहूर्त ) अन्तर्मुहूर्तनुं  
हुंहुं नाम. अन्तर्मुहूर्त का छोटा नाम. An  
abbreviation of Antarmuhūrta  
( a measure of time ). क० गं०  
१, १६; ५, ५६;

अंतमुहुन्त. न० ( अन्तर्मुहूर्त ) मुहुर्त-ये धडी-  
नी अंदरने डाण दो घड़ी के बीच का काल,  
जिसे अंतर्मुहूर्त कहते हैं. A period of  
time falling short of a Muhūrta  
( a measure of time ). क० गं० ५,  
६२; प्रव० १०१४;

अंतर. पुं० ( अन्तराय ) विघ्न विघ्न. An  
obstacle. “अंतरमकार वा निहारे संक-  
मरणं वा ” ओघ० नि० भा० २६७;

अंतर त्रि० ( आन्तर ) अंदरनुं; आंतरिक;  
अंतर्-इत्यु संप्रधी. भीतर का; अंत-करण  
सम्बन्धी. Internal. सु० च० १, १; उत्त०  
२७, ११;

अंतर. न० ( अन्तर ) आंतरं; व्यवधान; ये  
पन्तुनुं देश आश्री परस्पर छेदुं स्थान अथवा

क्षेत्र की अपेक्षा से दो वस्तुओं के बीच का  
अंतर-व्यवधान. Interval of space.  
जं० प० ३, ६६; राय० २६३; भग०  
२, १०; २५, ४; ७; ( २ ) ये वस्तुवच्येनुं  
अथवा अेकवस्तुनी ये परिस्थिति वच्येनुं डाण  
आश्री आंतरं-छेदुं, जेम अथलदेव अने  
महावीरस्वामीनुं अंतर समय की अपेक्षा  
से दोवस्तुओं के बीच का अंतर-जैसे ऋषभदेव  
और महावीरस्वामी के बीच का अंतर. in-  
terval of time. नंदी० ५६; अणुजो०  
८०; उत्त० ३६, १४; पि० नि० २७१; क०  
प० १, २१; ( ३ ) अंतर.ल; मध्य; वच्येने  
लाग. बीच का हिस्सा; मध्यभाग. interven-  
ing portion उत्त० ७, ४; पन्न०  
२; राय० ३२; भग० २, १; ३, ६; ८, ७;  
१०, ३; १५, १; १८, ७; २०, ६; नाया० १;  
१८; ( ४ ) लेद; विशेषता; गुणुआश्री तक्षवत.  
भेद, गुणसम्बन्धी भेद difference. भम०  
२, ३; ( ५ ) वच्यत; अवसर अवसर; समय.  
time. आया० १, २, १, ६५, परह० १, ३;  
नाया० ६; ( ६ ) भर्म; अथ छिद्र, मर्म.  
fault नाया० ८; ( ७ ) विघ्न; आडपिल.  
विघ्न obstacle. भग० ८, २; ओघ० नि०  
भा० २६७; नाया० १; २; ( ८ ) विना; वगर.  
विना; सिवाय. without. भग० ५, ७; ८,  
३, १५, १,—अद्धा स्त्री० ( -अद्धा ) आं-  
तराने डाण बीच में का समय. inter-  
vening time आया० १, ८, ८, ६;  
—अप्पा. पुं० ( -आत्मन् ) शरीर अंतर्गत  
आत्मा. शरीरान्तर्गत आत्मा. embodi-  
ed soul. भग० २, २,—उअग पुं० न०  
( -उदक ) पाणीनी अन्दर रहेल द्वीप. जल के  
अंदर का द्वीप. an island जं० प० ३, ६६;  
—कंद. पुं० ( -कन्द ) पाणीमा उत्पन्न  
थती अेक जलनी वनस्पति जल में उत्पन्न  
होने वाली एक जाति की वनस्पति. an aqua-

the plant पत्र० १;—करण न० (—करण) यथाप्रवृत्तिकरण, अपूर्वकरण, अने अनिवृत्तिकरण ये त्रयुभांनु गमे ते अेक, सम्यक्त्वना करणरूप अध्यवसायविशेष यथाप्रवृत्तिकरण, अपूर्वकरण और अनिवृत्तिकरण इन तीनों में से कोई एक, सम्यक्त्व का कारणरूप अध्यवसायविशेष any one of the three conditions of spiritual thought, activity known as Yathāpravṛttikarāṇa, Apūrvakarāṇa and Anivṛttikarāṇa, these conditions being the cause of right knowledge ( Samyaktva ) क० प० २, ४; —गृह न० (—गृह) अे धरनी वर्येनुं अंतर दो घरों के बीच का अंतर distance between two houses वेय० ३, १६, —जाय. न० (—जात) लापाना ने पुद्गले अंतराले समश्रेणीमां रहीने लापापरिणामने पमे छे ते लापापरिणतपुद्गल भाषारूप परिणत वे पुद्गल जो अंतराल में समश्रेणी में रहकर भाषारूप से परिणमते हैं the molecules of speech coming out at measured intervals giving rise to speech आया० नि० टी० २, ४, १, ३१३, —गई स्त्री० (—नदी) महानदीनी अपेक्षाअे नानी नदी, जेते १२५ जेनने ५८ छे अेवी बार अंतर नदीअे सीता अने सीतादाने उलयडांछे. महानदी की अपेक्षा से छोटी नदी, जिसका पाट १२५ योजन का है, ऐसी बारह नदिया सीता और सीतोदा नदियों के दोनों किनारों पर हैं. any of the twelve small rivers, viz. on each bank of the two great rivers Sitā and Sitodā. “ जम्भूमंदरपुरत्थिमेणं सीयाए महाणदीए उभयकूले छ अंतरणईओ पण्ण-त्ताओ संजहा-गाहाणई दहवई पंकवई तत्त-

जला मत्तजला उम्मत्तजला । जम्भूमंदर पच्चत्थिमेणं सीओयाए महाणदीए उभयकूले छ अंतरणईओ पण्णत्ता तंजहा-खीरोदा मीह-सोया अंतोवाहिणी उम्ममालिणी फेन-मालिणी गभीरमालिणी” ठा० ६, १, जं० प० ५, १२०, —तुल्ल त्रि० (—तुल्य) अनुलाग अंधना अेक स्थानथी थीन स्थानवर्येना आतरा नेटलु अनुभागबंध के एक स्थान से दूसरे स्थान बीच के अंतर के समान equal to the interval existing between one stage of Anubhāga Bandha ( intensity of Karma bondage ) and the next stage. क० प० १, ३२, —पडिबिबिय त्रि० (—प्रति-बिम्बित) अंदर पडछायावाण भीतर प्रतिच्छाया वाला reflecting within सु० च० २, १०५, —पल्ली स्त्री० (—पल्ली) मूलक्षेत्र-मुप्यनगरथी अदीगाडि उपरनु गामडु मूलक्षेत्र-मुख्यनगर से अर्द्धाई कोस की दूरी पर का ग्राम a suburb about five miles distant from a city प्रव० ६२८, —भासिल्ल पुं० (—भाषावत्) गुर्वादिअे अेलता होय तेनी वर्ये अेली उन्नार शिष्य गुरुजनों के बीच में बोल उठने वाला शिष्य. a disciple interrupting a preceptor in his speech उत्त० २७, ११; अंतरंजिया स्त्री० (अन्तरजिका) अे नामनी अेक नगरी, के न्यां त्रैराशिक निहवनी उत्पत्ति थई इस नामकी एक नगरी, जहा त्रैराशिक निहव की उत्पत्ति हुई Name of a city where arose the Tairāsika Nihava ( a heretic ). विशेष० २४५१; अंतरंगय त्रि० (अन्तर्गत) अंतर्भाव पामेडुं; अंदर अ वीगयेडुं अंत प्रविष्ट; भीतर गया हुआ, अंतर्भावप्राप्त Involved, included, remaining inside पण्ह० २, ३;

अंतरदीव. पुं० (अन्तर्द्वीप) युद्धहिमवन्त अने शिखरी पर्वतनी लवणसमुद्र तरङ्ग नीङ्गेल-  
उठा उपरना द्वीप; ५६ अंतरद्वीप. चुल्ल  
हिमवन्त और शिखरीपर्वत के लवणसमुद्र की  
ओर निकले हुए हिस्से पर के द्वीप; ५६  
अंतर्द्वीप. A group of the fifty-six  
islands on that part of Chulla-  
Himavanta and Sikhari mount,  
which projects into the Lavana  
ocean. भग० ६, ३; १०, १; जीवा० १;  
प्रव० ६१;

अंतरदीवग पुं० स्त्री० (अन्तर्द्वीपग) अंतर  
द्वीपमां रहेनार; युद्धहिमवन्त अने शिखरी  
पर्वतनी लवणसमुद्रमां पउनी उठाभानां  
द्वीपा उपर रहेनार मनुष्य; ५६ अंतरद्वीपाना  
मनुष्य. अंतर्द्वीपों में रहने वाला; चुल्ल  
हिमवन्त और शिखरीपर्वत के लवणसमुद्र में  
आये हुए हिस्से के द्वीपों में रहने वाला मनुष्य  
A person residing in any of the  
islands named Antara-Dvīpas,  
fifty-six in number. पञ्च ०१; उत्त०  
३६, १६४;

अंतरदीविया स्त्री० (आन्तरद्वीपिका) ७५पन  
अंतरद्वीपमा उत्पन्न थयेकी स्त्री छप्पन  
अन्तर्द्वीपो में उत्पन्न हुई स्त्री. A wo-  
man born in any of the fifty-six  
Antara-Dvīpas ठा० ३, १;

अंतरद्धा स्त्री० (अन्तर्द्धानम्) अंतर्धान थवुं;  
भ्रंश-नाश थवे ते. अन्तर्धान होना, नाश होना.  
Disappearance; vanishing; des-  
truction "सद् अंतरद्धं च" पंचा० १, २०;  
उवा० १, ५०;

अंतरभाव. पुं० (आन्तरभाव) परमार्थ.  
परमार्थ. Benevolence; charity.  
पंचा० १८, २४;

अंतरभूय त्रि० (अन्तर्भूत) अंतर्भूत थयेल,

जीनामां भणी गयेल. दूसरे में मिलाहुआ; जो  
दूसरे में अन्तर्भूत हो गया हो वह Amalga-  
mated, included विशेष १६;

अंतरा. अ० (अन्तरा) मध्ये; वच्ये; अंदर.  
मध्य में; अन्दर. Inside; between.  
भग० ३, ६; १५, १; सूय० १, २, १, ३१;  
१, ८, १५; वेय० १, १२; ओष० नि० ११२;  
दस० ८, ४७; कप्प० २, ३०; पञ्च० १६;  
नाया० १५,—आवण न० (आपण)  
अन्दरनुं छोट भीतर का बाजार. a market  
or a shop inside a place. नाया०  
११, विवा० १,—दोमासिय. त्रि० (द्विमा-  
सिक) ये मासनी अंदरनुं दो मास के अंदर का.  
of less than two months' dura-  
tion निसी० २०, १७,—पह. पुं० (पथ)  
ज्यांजुं छे अने ज्यांथी ज़ुं छे ते ये वच्ये  
ने। मार्ग जहा जाना है और जहा से जाना है  
उन दोनों के बीच का मार्ग. the path that  
lies between the place of start-  
ing and that of destination.  
भग० २, १;—मंथ. पुं० (मन्थ) केवल-  
समुद्घातक्रियामा मथानाकारने। समय; के०  
स० ने। पांचवो समय केवलसमुद्घातक्रिया  
में मंथनाकार का समय; केवलसमुद्घात का  
पांचवो समय. the fifth unit of time  
in Kevala-samudghāta "अंतरामंथे-  
वटमाणो " भग० ८, ६,—वास पुं०  
(वास) मुसाफरीमां वच्ये वच्ये मज्जल ६२  
मज्जल भेलाणु डरवे। ते यात्रा में बीच बीच  
मंजिल दर मंजिल ठहरते जाना. halting  
at intervals in a journey. रत्न०  
२१३;

अंतराहय न० (आन्तरायिक) दान आदिमां  
विघ्न नापनार अंतराय कर्म दानादि में  
विघ्न डालने वाला अन्तराय कर्म. (Obstruc-  
tive) destiny which debars

inclination to charity etc भग० ६, ३; ८, ८; ११, १, २६, १; ठा० २, ४, ४, १; पञ्च० २२; ( २ ) अन्तरायकर्मजनकपाप अन्तरायकर्मजनक पाप. sin producing obstructive destiny पि० नि० ३८७, भग० ८, ६;—कर्म न० (—कर्मन् ) अन्तराय कर्म. देखो “अन्तराद्य” शब्द. vide “अंतराद्य.” भग. ८, ६;

**अंतराय** न० ( अन्तराय ) कर्मनो आश्लेक्ष्य भेद; दान, लाभ, भोग, उपभोग अने वीर्य-सामर्थ्यभा अंतराय-विघ्न नाभनार कर्म. कर्म का आठवाँ भेद, दान, लाभ, भोग, उपभोग और वीर्य में विघ्न डालने वाला कर्म The eighth variety of Karma ( destiny ) which obstructs charity, profit, comfort, happiness and power ओव० २०, भग० ६, ३; उत्त० ३३, ३; दसा० ६, १५, क० गं० २, २०; ६, ३६, ( २ ) विघ्न; नउतर, अउयलु विघ्न, अडचन an obstacle क० गं० १, ५४; सम० ३०, पि० नि० ३७०; पञ्च० २३;—**प्रभाव** पुं० (—प्रभाव ) अंतरायकर्मनो प्रभाव-सामर्थ्य. अन्तरायकर्म का सामर्थ्य the power of obstructive destiny प्रव० १२७४,

**अंतराल** न० ( अन्तराल ) वर्येनो भाग बीच का हिस्सा; मध्यभाग Intermediate space; middle भग० १४, १; नाया० १२, प्रव० १४६७;

**अंतराधि** अ० (अन्तराधि) वर्येपलु, वयगाणे पलु बीच में भी Even in the middle, even in the midst कप्प० ६, ६२,

**अंतरिक्ष** य० (अन्तरिक्ष) आन्तरे-छेदे गेहुं दूरी पर रहा हुआ. Situated at a distance पि० नि० १३४, ओघ० नि० ६६७; प्रव० १६८; गच्छा० ८३, कप्प० ४, ८३;

**अंतरिक्ष** न० ( अन्तरिक्ष ) अन्तः-स्वर्ग पृथिव्योर्मध्ये ईक्ष्यते, अन्तः-ऋक्षाणि वा यस्य), आकाशमां यथा ग्रहवेध आदिनुं शुभाशुभफलं लब्ध्वावनार निमित्तशास्त्र. आकाश में होने वाले ग्रहवेध आदि का, शुभाशुभ फल जताने वाला निमित्तशास्त्र. A science interpreting the good or bad effects of heavenly phenomena in the planetary system etc प्रव० १४२२,

**अंतरिक्षिया** स्त्री० ( अन्तरीया ) वेसवाडिय गलुथी निक्षेपे त्रीं शाखा वेसवाडिय गण से निकली हुई तीसरी शाखा. Name of the third branch of the Gana ( order of monks ) called Vesa-vādiya कप्प० ८,

**अंतरिया** स्त्री० ( अन्तरिका-अन्तरातीति ) आन्तरं, व्यवधान, छेद, दूरी, व्यवधान, अन्तर. Distance; interval. सू० प० १०; ( २ ) (अन्तस्य विच्छेदस्य कारणमन्तरिका), विवक्षितवस्तुनी समाप्ति, विवक्षितवस्तु की समाप्ति Conclusion of any particular thing “आन्तरियाण वदमाणस्म” जं० प० २,

**अंतरुच्छुय** न० ( अन्तरिक्षुक ) शे० गीनी वयली गाड़ साठे-गन्ने की विचली गाठ Joint of a sugarcane आया० २, ७, २, १६०;

**अन्तरेण** अ० ( अन्तरेण ) विना; पण०. विना, सिवाय Without उत्त० १, २५,

**अंतलिकख** न० ( अन्तरीक्ष-अन्तर्मध्ये ईक्ष्य-दर्शन यस्य तदन्तरीक्षम् ) आकाश आकाश. The sky “अतलिकखत्ति एं वया गुज्जाणु-चरियत्ति य” दस० ७, ५३, ओव० ३१; जं० प० ३, ४५; नाया० १ ८, आया० २, १, ६, ३७, सूय० १, ५, २, १७, उत्त० १०, २५, ओघ० नि० २८, भग० २०, २, (२) पि० (अन्तरीक्षमाकाशं तत्रभवमान्तरीक्षम्) आकाश-

शमां यतां उल्कापात, गंधर्वनगर, ग्रहवेध  
वगेरे. आकाश में होने वाला उल्कापात,  
ग्रहवेध वगैरह heavenly pheno-  
mena e, g the fall of a  
meteor etc. ठा० ८, १, (३) आकाशमा  
यता ग्रहवेधादिना कलाकल यतायनार  
निमित्तशास्त्र; आकाशविद्या. आकाश में  
होने वाले ग्रहवेधादि का फलाफल बनाने  
वाला निमित्तशास्त्र; आकाशविद्या. the  
science which interprets the  
omens of heavenly phenomena;  
astrology सू० २, २, २६, उत्त० १५,  
७, सम० २८,—उदय न० (—उदक)  
वरसादनु पाणी वर्षा का पानी. rain-  
water उवा० १, ४१,—जाय त्रि० (—जात)  
जमीनथी उये रहेनार पदार्थ. पृथ्वी से ऊंचा  
रहने वाला पदार्थ things existing in  
the sky. उवा० १, ४१, निसी० १३, ६,  
१६, २८,—पडिवरण त्रि० (—प्रतिपन्न)  
आकाशमां रहेनार आकाश में रहने वाला  
celestial; heavenly उवा० २, ११३.

अंतव त्रि० (अन्तवत्) अत-छेडावाणुं अन्त वाला,  
आखिर वाला Having an end. सू०  
१, १, ४, ६,

अंतसो अ० (अन्तशस्) छेवट, अंते अन्त  
में. At the end, at last, finally  
सू० १, २, १, ६;

अंतालिक्तय त्रि० (अन्तलिप्त) मांहु लिपेणुं.  
भीतर लिपा हुआ. Smeared from  
within दे० १, १६,

अंति त्रि० (अन्तिन्-अन्तो जात्यादिप्रकर्ष-  
पर्यन्तोऽप्राप्तीन्यन्ती) जात्य दिनी अपेक्ष ये  
उत्तमोत्तम जातिवगैरह की अपेक्षा से  
उत्तमोत्तम Highest in point of caste  
etc. ठा० १०, १;

अंति त्रि० (अन्त्य) छेडु, अन्तमां उत्पन्न

थयेल अन्त में उत्पन्न हुआ. Last. विशेष  
४२२,

अंतिअ-य न० (अन्तिक) पास; समीप;  
नजदीक Near; in the  
vicinity “अरण्येसि अंति एवासोष्वा”  
आवा० १, १, १, ४; नाया० १; ५; ८; ६;  
१०, १२; १६; भग० १, ७; ६; २, १; ५;  
५, ४; ७, ६, १५, १; १८, १०; दस० ८,  
४६; ओव० १२; ३६; राय० ३६; ठा० ३,  
१, उत्त० १, ४; ७, १२; वव० ७, १७;  
कप्प० २, २६, ४, ५६;

अंतिम त्रि० (अन्तिम) छेडुं; छेवटुं;  
अन्त चरम, आखिर का; अन्त का. Last;  
final पि० नि० १५६; भग० १, ६;  
क० गं० ४, २६, प्रव० ४३२; ठा० १, १;  
—ऊसास पुं० (—उच्छ्वास) छेलेलो श्वास.  
आखिरी श्वास. last breath; final  
breath प्रव० १३६७,—राई. स्त्री०  
(—रात्रि) रात्रिने छेडा-छेलेलो भाग पिछली  
रात. the last part of the night.  
भग० १५, १; १६, ६;—लोभ. पुं० (—लोभ)  
चारयोऽडीमानी छेडी सज्जनी योऽडीने  
लोभ; नेनी वधारेमां वधारे पंढर दिवसनी  
स्थिति हेःय ते लोभ. चारचौकडी में की  
अन्तिम संज्वलन की चौकडी का लोभ, जिसकी  
ज्यादह से ज्यादाह १५ दिन की स्थिति हो वह  
लोभ the last variety of the four-  
fold greed known as “संज्वलन”  
having a maximum duration of  
fifteen days क० प० ७, ४१;—सरीरिय  
पुं० (—शारीरिक) अन्तशरीरी श्रव;  
छेडुं शरीर धारण करना; अर्थात् नेने तेज  
लवमा भोक्ष जुं छे ते. चरमशरीरी जीव;  
अर्थात् आखिरी शरीर वाला जीव. one who  
is embodied for the last time,  
i. e. one who is to obtain salva-



tion in the very life. भग० १, ४;  
५, ४; ठा० १, १;

अंतिमल. त्रि० ( अन्तिम ) छेव० जुं. आखिरी.  
Last; final "तम्हा कालो त्थ अंतिमल्लाणं"  
क० प० १, ११;

अंते अ० ( अन्तर ) भांडि; अंदर भीतर  
In; inside. निसी० १७, २०,

अंतेउर. न० ( अन्तः पुर ) अंत पुर; जनान-  
आनुं; राणीवास. अन्त पुर, जनानखाना.  
A harem ओव० ३३, जं० प० ३, ७०,

जीवा० ३, ४; राय० २०, ३३, १३०, २२२,  
२४२; ओघ० नि० भा० १८, २६, नाया० १,  
८, १४, भग० ६, ३३; १३, ६, १५, १,

सु० च० २, ३६३, विवा० १, निर० १, १,  
कप० ४, ८८; ५, १०६,—परियाल पुं०  
(-परिवार ) अंत पुरने परिवार, दास दासी

वगेरे. अन्त पुर के दासदासी जगेरह  
male and female servants etc  
of a harem. निर० १, १,

अंतेउरिया स्त्री० ( अन्तःपुरिका ) अंत पुरमां  
रहेनारी स्त्री, राजनी राणी अन्त पुर में  
रहने वाली स्त्री; राजा की राणी A woman

living in a harem, a queen.  
नाया० १६,

अंतेपुरिय. त्रि० ( अन्तःपुरिक ) अंत पुर संभं  
धी. अंत पुरसम्बन्धी Relating to a  
harem विवा० ४,

अंतेवासि पुं० ( अन्तेवासिन् ) शिष्य, चेला,  
पासेरहेनार-छेनुरी-शिष्य शिष्य, चेला,  
समीप रहने वाला A disciple who

always lives near his preceptor  
जं० प० १, २, सू० प० १; नाया० १, ६;  
१६; ओव० १४, भग० १, ६, २, १, ३,  
१; ५, ६; ७, १०; सम० १०००; उवा० १, ७६;

७६; दसा० ४, ६१; वव० १०, १५;  
वप्प० ७, २२४; ( २ ) आशा छेव० नार;  
throat दसा० ६, २,—कुट्ट. पुं० न०

सभीपवर्ती. आजानुयायी, समीपवर्ती one  
who obeys " तत्थ णं सावत्थीए  
णयरिए पणसिस्स रण्णो अंतेवासी जियस-  
सुणामं राया होत्था" राय० २११,

अंतो अ० ( अन्तर ) अंदर, भांडिलि डोर;  
मध्ये. अंदर, भीतर, मध्य में In the inte-  
rior, inside "अंतोपडिग्गहासि" आया०

२, ६, १, १५२, "एवामेव मायी मायं कट्टु  
अंतो अंतोउमियाइ" ठा० ८, १, ओव० ३३;  
पञ० १, २, पिं० नि० २३२; ठा० २, ४,

वव० ६, ७, ६, १०, निमी० ८, १२, ६,  
२०, दसा० २, ८, ६; ६, १, ७, १; वेय०  
१, ७; २, १; ४, २८, भग० २, १, ८,

८; १५, १, नाया० १; २; ३; ८, १६;  
सूय० २, २, ६६, उत्त० ३३, १७,  
—कोडीकोडि त्रि० (-कोटिकोटि ) डेडा

डोडि ( डेरेडने डेरेड गुलु डेरेडते ) सागरे-  
पमनी अंदरनु कोडाकोड सागरोपम के भीतर  
का falling short of-less than-one

crore into one crore of Sāgaro-  
pamas ( a period of countless  
years ) क० प० ५, ५,—खरिया स्त्री०

( -वेश्या ) गामनी अंदर रहेनार वेश्या-  
(-वेश्या ) गामनी अंदर रहेनार वेश्या-  
नायिका गाँव के भीतर रहने वाली वेश्या a

prostitute living inside a town  
or village "वेज्जपि रायगिहेणयर अंतो-  
खरियाए उववज्जिहिति " भग० १५, १;

—गय नि० (-गत ) अतर्भूत; तेनी  
अंदर आवीगथेल अन्तर्गत, भीतर-अंदर  
आया हुआ. included in नाया० ६;

—जल न० (-जल ) पाणीनी अंदर. पानी  
के भीतर in the water, under  
water नाया० ६,—एदंत त्रि० (-ए-

दव ) गगामाथी छेव० डरेतो. गले से  
बोलता हुआ uttering from the  
throat दसा० ६, २,—कुट्ट. पुं० न०

(-दृष्ट) अंदर रही पीड़ा डरना शल्य. अंतरंग में पीड़ा करने वाला शल्य. a pain rankling in the heart like a thorn. ठा० ४, ४; —धुम्म. पुं० (-धूम) धरनी अंदर धुंधवाता धुमांडो. घर के भीतर भरा हुआ धुआ. dense smoke filled in a house. दसा० ६, ४, —मुहुत्त. न० (-मुहूर्त) मुहूर्त-ये घड़ीनी अंदरने समय मुहूर्त-दो घड़ी के भीतर का समय. duration of time less than forty-eight minutes भग० २, ५, ५, ८; ६, ३; १८, ८; २४, ६; जीवा० १; पक्ष० ४; क० प० १, ११; ३८; जं० प० २, ३१; अणुजो० १४१; —मुहुत्तिश्च त्रि० (-मौहूर्तिक) जेनु डाणपरिभाषु अंत-मुहूर्त-मुहूर्तनी अन्दरनु छे ते अन्तर्मुहूर्त कालप्रमाण. lasting for a duration of time shorter than forty-eight minutes “तत्थणं जे से आभोगनिम्बत्तिण्ण सेणं असंखेज्जसमइण्ण अंतोमुहुत्तिण्ण” भग० २, ४; —लित्तय त्रि० (-लित्तक) अन्दर दिपेणु भीतर से लिपा हुआ plastered with cow-dung etc in the inside. वेय० १, १६; —वट्ट. त्रि० (-वृत्त) अंदरना लागभां गोण, अंतरगोण भीतरी भाग में गोल round in the inside “तेणं शरणा अंतोवट्टा वाहि चउरंसा” सूय० २, २, ३६; —वाहिणी स्त्री० (-वाहिनी) कुमुदविन्द्यानी पश्चिमसरहद उपरनी महाविदेहनी पार अन्तर्नदीमानी ओड. कुमुद विजय की पश्चिमसीमा पर की महाविदेह की वारह अतर्नदियों में से एक नदी. one of the twelve subterranean rivers of Mahāvīdeha continent flowing on the western boundary of Kumudavijaya country “कुमुद

विजय अरजा रायहाणी अंतोवाहिणी वाई” जं० प० ४, १०२, ठा० २, २, —सप्त. त्रि० (-शल्य-अन्तर्मध्ये शल्यं यस्य) अंदरनु शल्य; ५६२ न देभातो जप्पम जेने छे ते. जिसके भीतर शल्य हो वह. one having internal sorrow ठा० ४, ४; (२) जेजे अपराध करी आलोचना नहीं करी ते; जेना मनमां अपराधरूप शल्य छे ते जिसने अपराध करके आलोचना नहीं की वह; जिसके मन में अपराधरूपी कांटा चुभता है. one who has bitings of conscience for faults भग० २, ५, —सप्तमरण. न० (-शल्यमरण) अंतोशल्यमरण-माया नियाणु वगेरे शल्य राप्पीने मरवु ते माया आदि शल्य सहित मरना. death without expiation for deceit, desire for future sense-enjoyments etc. which rankle in the heart. भग० २, १; सम० १७; निसी० ११, ४१, —हियय. न० (-हृदय) अन्त. डरणु, मन अन्त. करण; मन. mind; heart उत्त० २३, ४५; अंतोअंत पुं० (अन्त्योपान्त) अंतमध्य सहित. अन्त मध्य सहित. The middle as well as the end taken together तुमं चैव णं संत्तियं वत्थं अंतोअंतेण पडिलोहिस्सामि” आया० २, ५, १, १४६; अंतोमज्जावसाणिय. न० (अन्तमध्यावसानिक) अलिनयना चार प्रक्षरमानो छेले प्रक्षर अभिनय के चार भेदों में से अन्तिम भेद. The last of the four kinds of dramatic gesticulation. राय० ६६; अंडुय. पुं० (अन्दुक-अन्धते बध्यतेऽनेनेति) हाथीना पग बांधवानी सांझ हाथी का पैर बांधने की साँकल. A chain for tying the foot of an elephant. सूय० २ = ६३;



अंधू स्त्री० ( अन्धू ) पग आंधवानी सांडण;  
थेडी पांव बाधने की साकल; बेडी.  
fetters सू० १, ५, १, २१;

अंदोलन पुं० ( आन्दोलक ) हिंडोणो;  
हिंथको. झूला. A swing जीवा० ३, ४,

अंदोलित त्रि० ( आन्दोलित ) आन्दोलन  
आपेनुं हींथकोपेनुं. झुलाया हुआ; हिलाया  
हुआ Swung. ओव० ३८,

अंदोलन न० ( आन्दोलन ) हिंडोणाभाट  
खाट का झूला. A swinging cot.  
सू० १, ११;

अंध पुं० ( अन्ध ) अंधदेश, जगन्नाथनी नीचे  
आवेस ओकदेश, जेनी म्लेच्छदेशमां गणुना  
करेदी छे अन्धदेश; जगन्नाथ के दक्षिणभाग  
का एक देश, जिसकी गणना म्लेच्छदेशों में  
की गई है. Name of a country  
situated to the south of Jagan-  
nātha. पञ० १; परह० १, १, प्रव०  
१५६८, ( २ ) त्रि० अंधदेशवासी मनुष्य  
अंधदेशवासी मनुष्य an inhabitant of  
the Andhra-country. पञ० १, परह०  
१, १, प्रव० १५६८,

अंध त्रि० ( अन्ध ) आंधणो, नेत्रहीन अन्धा.  
Blind आया० १, १, २, १६; ठा० ७, १;  
अणुजो० १२८, सू० १, १, २, १६, १,  
१२, ८; पंचा० ११, ११, ( २ ) ज्ञान रहित;  
अज्ञानी ( लाक्षणिक ) ज्ञानरहित; अज्ञानी.  
( लाक्षणिक ) Illiterate, ignorant.  
भग० ७, ६;—पुरिस. पुं० (—पुरुष )  
जन्मांध, जन्मही आंधणो. जन्मान्ध, जन्म से  
अन्धा. One who is born blind  
विवा० १,—रूप. पुं० न० (—रूप ) शून्या-  
कार; जेनुं शरीर अवयवशून्य-लोलासारूप  
छे ते. अवयवशून्य शरीर वाला One  
having a body devoid of limbs  
विवा० १, १,

अंधत्र. त्रि० ( अन्धक ) आंधणो; अध अन्धा.  
Blind. विशेष० ११५६;

अंधकार. पुं० ( अन्धकार ) अधा३; अधा३२.  
अंधेरा Darkness. ओव० २१; भग० ६,  
५, ७, ७, परह० १, ३; सम० ३४, ठा०  
२, ४;

अंधग. पुं० ( अन्धक-अंधिप ) वृक्ष, आ३ झाड़.  
A tree. भग० १८, ४,—वरिह पुं०  
(—वन्हि-अंधिपा वृक्षास्तेषां वन्ध्यस्तदाश्रय-  
त्वेनेत्यांधिपवन्ध्यः ) आ३२ अग्नि; आ३ना  
लाड्डांने आ३री-उत्पन्न थयेल अग्नि वृक्षों  
की लकड़ी के द्वारा उत्पन्न अग्नि. fire pro-  
duced by friction of trees. भग०  
१८, ४,

अंधगवरिह. पुं० ( अन्धकवन्धि-अन्धका  
अप्रकाशकाः सूक्ष्मनामकर्मोदयाद्ये वन्ध्यस्ते  
अन्धकवन्ध्यः ) सूक्ष्मअग्नि; सूक्ष्म ते-  
जःशाय सूक्ष्मअग्नि, सूक्ष्म तेजःकाय.  
Latent fire, a body in which  
fire is latent “ हंता ? गोयमा ?  
जावइया चरा अंधगवरिहणो जीवा तावइया  
परा अंधगवरिहणो जीवा सेव भंते ? भंतेत्ति ”  
भग० १८, ४;

अंधगवरिह पुं० ( अन्धकवृष्णि ) समुद्रवि-  
जयराजपुं० अपर नाम समुद्रविजय राजा  
का दूसरा नाम. Another name of  
king Samudravijaya. “ चारवती-  
ए णयरीए अंधगवरिहणामं राया परिवसइ ”  
अंत० १, १, दस० २, ८; उक्त० २२, ४४,

अंधगार. पुं० ( अन्धकार ) अधा३ अंधेरा.  
Darkness. सू० ५० १३;

अंधत न० ( अन्धत्व ) अधपाणुं अधपन.  
Blindness आया० १, २, ३, ७८;

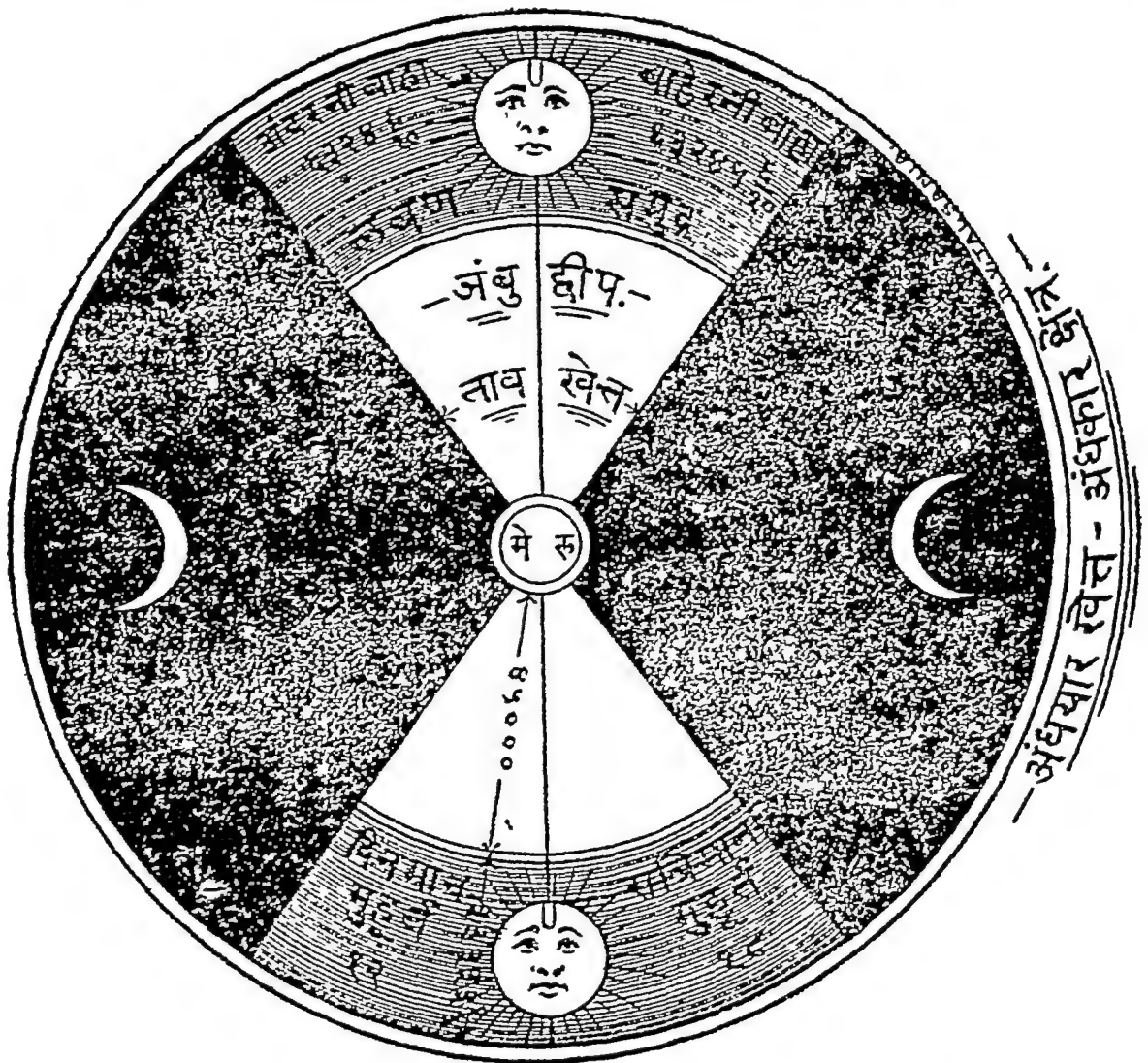
अंधतण. न० ( अन्धत्व ) अधपाणु अधपन.  
Blindness प्रव० १३८८;

अंधतम. न० ( अन्धतमस् ) अधा३२; अधा३३.

अंधेरा, अंधकार. Darkness “ असुरियं  
नाम महाभितावं अंधत्तमं दुष्पतरं महंतं ”  
सूय० १, ५, १, ११;

अंधयार. पुं० ( अन्धकार ) अंधा३ अंधेरा;  
अंधकार. Darkness. ओव० ३०; अणुजो०  
१३०; उत्त० २८, १२; सु० च० २, ५६;  
पञ० २; भग० ५, ६; नाया० १; विशेष०

लेथी अंधार अने अंधारने भांडलेथी अंधर  
आवे तेम अंधकारक्षेत्र अने तापक्षेत्रनी  
न्यूनाधिकता थाय छे जहां सूर्य का प्रकाश नहीं  
पड़ता वह प्रदेश; सूर्य जब भरतहरवतक्षेत्र  
में रहता है तब मेरु की पूर्व और पश्चिम  
दिशा की ओर अंधकारक्षेत्र होता है और जब  
सूर्य महाविदेहक्षेत्र में रहता है तब भरत-



७७३; कप्प० ३, ३२; ६०; पंचा० १३, ११;  
जं० प० ३, ५४; ७, १३५;—खेत्त. न०  
( -क्षेत्र ) ज्यां सूर्यने प्रकाश न पडे ते  
प्रदेश; सूर्य ज्या.रे भरतहरवतक्षेत्रमां छेय  
त्या.रे मेरुनी पूर्व पश्चिमे अंधकारक्षेत्र छेय  
अने महाविदेहमा सूर्य छेय त्या.रे भरतहरवत  
तरक्ष अंधकार क्षेत्र छेय; सूर्य अंधरने भांड-

इरवतक्षेत्र अंधकाक्षेत्र बन जाता है.  
सूर्य अंधर के मंडल से बाहिर और बाहिर के  
मंडल से अंधर आता है तब अंधकारक्षेत्र  
और तापक्षेत्र की न्यूनाधिकता होती है. the  
region where the sun does not  
shine. when the sun shines over  
the Bharata Iravata Ksetra

दसा० ७, १०; वेय० ५, ३१;—\*चोयग. स्त्री० ( -त्वच् ) आं०नी छाल आमके झाड़ की छाल. the bark of a mango tree. भग० १५, १; निसी० १५, ७; —डाल. न० ( -डालक ) डेरीतुं नातुं पटुं. आम का छोटा टुकड़ा. a small slice of a mango आया० २, ७, १६१; निसी० १५, ७;—पेसिया. स्त्री० ( -पेशिका ) आं०नी डलनी-डेरीनी चीर आम की फाँक. a slice of a mango. दसा० १०, ५; —पेसी. स्त्री० ( -पेशी ) आं०नी-डेरीनी चीर-डातणी. केरी की फाँक. a slice of a mango. निसी० १५, ७;—फल. न० ( -फल ) डेरी. आम का फल. a mango. वव० ६, ३३;—भित्त. पुं० ( -भित्त ) आं०नी डटके. आम के झाड़ का टुकड़ा a piece of a mango tree. निसी० १५, ७; —भित्तय. न० ( -भित्तक ) डेरीनी अर्धी डड-डडसीडि; अडधीयुं आधा आमफल. a half of a mango. आया० २, ७, २, १६०; —सालग. पुं० न० ( -शालक ) आं०नी नडी छाल आमवृक्ष की मोटी छाल. thick bark of a mango tree निसी० १५, ७; अं०. न० ( आम्ल ) छाल वगेरेथी संस्कारेल पदार्थ. छाछ डालकर बनाया हुआ पदार्थ. An article prepared with butter-milk; etc जं० पं० ३; अं०. त्रि० ( अम्ल ) आटुं खट्टा. Sour निसी० १५, ७; —कांजिया. स्त्री० ( -कांजिका ) आटी डांछ खट्टा छाछ. sour gruel. निसी० १७, ३०; अं०. न० ( आम्रक ) डेरी. आम्रफल. आम. A mango. इत्त० ७, ११; अणुत्त० ३, १; —ठिया. स्त्री० ( -अस्थिका ) डेरीनी गोटले आम की गुठली A mango stone. अणुत्त० ३, १;

अं०. पुं० ( अम्बष्ठ ) माताना पक्षनी अपेक्षाये आर्य नति माताना पक्षे आर्य. माता के पक्ष से आर्यजाति Arya from the mother's side. अ० ६, १; पञ्च० १; ( २ ) ब्राह्मणपुरुष अने वैश्यस्त्रीथी उत्पन्न थयेले ओके अवांतर नति. ब्राह्मणपुरुष और वैश्यस्त्री से उत्पन्न एक अवान्तर-दूसरी जाति. a mixed sub-caste sprung from a Brāhmana father and a Vaiśya mother. सूय० टी० १, ६, २;

अं०. पुं० ( अम्बड ) अं०नामे ओके ब्राह्मण संन्यासी. अं०नाम का एक ब्राह्मण सन्यासी. A Brāhmana ascetic named Ambada, ओव० ३८; ( २ ) जम्बूद्वीपना भरतपंडमां थनार २२ मा तीर्थकरना पूर्वजपुं नाम जम्बूद्वीप के भरतखण्ड में होने वाले २२वें तीर्थकर के पूर्वज का नाम name of the 22nd Tirthankara in Bharata Khanda of Jambū Dvīpa in his last previous birth. सम०.—जीव. पुं० ( -जीव ) अं०नामना तापसना ७५; डे ने आवती ओपीसीमां आवीसमा 'देवजिन' नामे तीर्थकर थशे अं०नामक तापस का जीव, जो आगामी चौबीसी में २२ वॉ 'देवजिन' नाम का तीर्थकर होगा. the soul of an ascetic named Ambada who will be the 22nd Tirthankara by name Devajina in the coming Chovisī (cycle) प्रव० ४७४; अं०. न० ( अम्लस्व ) अटाल. खटाई. Sourness. विशेष० १४६७;

अं०. स्त्री० ( अम्बधायी ) धावमाता; आलडने धवरावनारी माता. धायमाता; बालक को दूध पिलाने वाली माता. A foster mother; a wet nurse नाया० १; अं०. न० ( आम्रपञ्चवर्षविभक्ति )

in water; aquatic भग० ११, ६,  
निर० ३, ३;

**अंस. पुं०** ( अंश ) भाग, हिस्सा  
Part; share उत्त० २२, १३;

**अंस. पु०** ( अंस ) २३-ध, आध, अर्ध कथा  
Shoulder ठा० ४, ३, पञ्च० ३६, क०  
ग० २, २६;—उवसत्त त्रि० (—उपसक्त)  
अंसा उपर रहै कंधे पर रहा हुआ resting  
on a shoulder कप्प० ३, ३६;  
—गअ-य. त्रि० (—गत) अंसा उपर रहै  
कंधे पर रहा हुआ resting on a shoul-  
der विवा० १, ३; नाया० १८;

**अंसय. पुं०** ( अंशक ) कल्पेय भाग—हिस्सा  
कल्पित भाग—हिस्सा A fixed part  
वेय० १, ६,

**अंसि. स्त्री०** ( अंसि ) अंगुली कोना A cor-  
ner ठा० ८, १,

**अंसि. व० उ० ए०** ( अस्मि ) हुं छुं मैं हू  
I am “दिसाओ आगओ अहमंसि जाव”  
आया० १, १, १, ४,

**अंसिया. स्त्री०** ( + अंशिका—अंशस् ) अंश,  
गुह्यप्रदेशमा भसानो रोग अंश, बवासीर,  
गुह्यप्रदेश में होने वाली मसे की बामारी का  
नाम Piles भग० १६, ३,

**अंसिया. स्त्री०** ( + अंशिका—अंश ) न्हातो  
भाग, हिस्सा छोटा भाग, छोटा हिस्सा  
A small part वेय० २, १८,

**अंसु. न०** ( अश्रु ) आसु, नेत्रजल आंसु,  
आँखों का पानी; नेत्रजल Tears उत्त०  
२०, २८; नाया० १, ५, ज० प० २, ३३,  
भग० ६, ३३, परह० १, १,—धारा. स्त्री०  
(—धारा) आँसुनी धारा आँसुओं की  
धारा flow of tears नाया० १;

**अंसुय पुं०** ( अंशुक ) चीन देशमा अगाठना  
वपतमा अनतु कीडानी लाणतु हीर; चीनाई  
हीर प्राचीन काल में चीनदेश में कीड़े

की लार से बनने वाला रेशम, चिनाई रेशम  
China silk आया० २, ५, १, १४५;  
अणुजो० ३७, ( २ ) वस्त्रविशेष; सुंवाणा  
वस्त्रनी ओइ जत; चीनना सत्रनी अनावटनु  
वस्त्र वस्त्रविशेष, कोमलवस्त्र की एक जाति,  
चीन के सूत से बना हुआ वस्त्र a kind of  
soft cloth made of China silk.  
जीवा० ३, ३; ४, आया० २, ५, १, १४५;  
नाया० १, म० प० २०, निसी० ७, ११,

**अंसोत्थ. पु०** ( अश्वत्थ ) पिप्पलानु आ  
पीपल का वृक्ष The holy fig-tree, ficus  
religiosa भग० २२, ३.

**अकंटय. त्रि०** ( अकण्टक ) काटा रहित; काटा  
बिनातु. काटा रहित, बिना काटे का Thorn-  
less जीवा० ३, ( २ ) प्रतिस्पर्धी बिनातु.  
प्रतिस्पर्धी से रहित unrivalled, having  
no rival “ ओह्यकटय मलियकटयं  
अकटयं ” नाया० १, भग० ११, ६,  
**अकंड. न०** ( अकारण्ड ) अनवसर, वपत  
वगरेतु, अडाणी अनवसर, अकाल, वे समयका.  
Inopportune, out of season सु०  
च० १३, ३१,

**अकंडूअय. पुं०** ( अकण्डूयक—न कण्डूयत  
इत्यकण्डूयकः ) शरीरमा अणआवे तोपणु  
अन्त्याणे नहि ते, अलिग्रहविशेषधारी साधु.  
शरीर में खुजली चलने पर भी न खुजाने  
वाला, अभिग्रहविशेषधारी साधु One who  
has a vow not to scratch his  
body even though troubled by  
itching sensation, an ascetic  
who has taken this vow ठा०  
५, ३, ओव० १६, परह० २, १,

**अकंडूयग. पुं०** ( अकण्डूयक ) लुथो  
“अकंडूयय” शब्द देखो शब्द “अकंडूयय”  
vide “अकंडूयय” ठा० ४, १;

**अकंत. त्रि०** ( अकान्त ) अन्ति बिनातु, तेन

वगरनुं; सौन्दर्य रहित कान्तिहीन; तेजहीन; सौन्दर्यरहित. Devoid of lustre; devoid of beauty. ठ० ८, १, नाया० १, भग० १, ५; ६, २; ७, ६, ६, ३३, पञ्च० २८, जं० प० २, ३६; ( २ ) अलुग-भु; अप्रिय अप्रिय unpleasant, obnoxious भग० १, ७,—स्सर, पुं० ( -स्वर ) अप्रिय स्वर; कठोर स्वर harsh voice भग० १, ७; जं० प० २, ३६,

**अकंततर, त्रि० ( अकान्ततर )** अतिअप्रिय; धलु अलुगभु. बहुत अप्रिय Extremely unpleasant. भग० १६, ३,

**अकंप, त्रि० ( अकम्प )** कं५-क्षोभ रहित कम्प रहित; क्षोभ रहित. Firm; fixed; free from destruction जं० प० २, ३१, ३, ५२;

**अकंपिय, पुं० ( अकम्पित )** महावीरस्वामी-ना आठमा गणधर महावीरस्वामी के आठवें गणधर का नाम The eighth Gana-dhara of Mahāvīra Svāmī सम० ११, ७८; विशेष० १८८५,

**अककस, त्रि० ( अकर्कश )** कर्कश नहि; मृदु, कामल मृदु; कोमल. Soft, not harsh “अणवज्जमककसे” दस० ७, ३, भग० ७, ६;

**अकज्ज, न० ( अकार्य )** न करवा योग्य कार्य, अधटित काम. न करने योग्य कार्य; न करने लायक काम. An improper action नाया० २, १६, पिं० नि० १८५, भग० ७, ६; जं० प० २, ३६;—**पडिबद्ध, त्रि० ( -प्रतिबद्ध )** अकार्य करवाभा तत्पर. न करने लायक काम को करने में तत्पर Intent on doing an improper action नाया० १८,

**अकज्जमाण त्रि० ( अक्रियमाण )** कथी वगरनुं; न करवा जो न किया जाता हो Not being done भग० १, १७;—**कड, त्रि० ( -कृत-क्रियमाण )** वर्तमानकाले कृतं तन्निषेधादक्रिय-

माणकृतम् ) वर्तमानकाल अने भूतकालनी क्रियाथी अनेध नहि वर्तमानकाल और भूतकाल की क्रिया से नहीं बना हुआ. not resulting from what is being done in the present nor from what has been done in the past “अकिच्च दुक्खं अफुसं दुक्खं अकज्जमाणकडं दुक्खं” भग० १, १०;

**अकहदु, सं० कृ० अ० ( अकृत्वा )** कथी वगर; न करीने बिना किये Without having done; without doing. ठ० ३, २; भग० १, १०,

**अकट्ट, त्रि० ( अकाष्ट )** काष्ठ रहित, धंधलु विनातुं काष्ठ रहित, बिना लकड़ी का Without fuel “जंसि जलंतो अगणी अकट्टो” सूय० १, ५, २, ११;

**अकड, त्रि० ( अकृत )** नहि करेनुं नहीं किया हुआ. Unperformed; not done. “कडं कडित्ति भासिज्जा, अकडं नो कडित्ति य” उक्त० १, ११; “अकडं करिस्सामित्ति मण्णमाणे” आया० १, १, २, ६६; भग० १, ६;

**अकठिण, त्रि० ( अकठिन )** कामल, कठलु नहि कोमल, कठिनता रहित Soft; easy; not hard जीवा० ३, ४,

**अकरण, पुं० ( अकर्ण )** लवणसमुद्रमां सात सौ जेज्जत उपर आवेले अक अंतरद्वीप; १७ भो अंतरद्वीप लवणसमुद्र में सात सौ योजन की दूरी पर का एक अंतरद्वीप, १७वें अंतरद्वीप का नाम An island situated in the Lavana ocean at a distance of 700 Yojanas from the shore ठ० ४, २; ( २ ) ते अंतरद्वीपमां रहेनार मनुष्य. उक्त अंतरद्वीप में रहने वाला मनुष्य. a person residing in that island. ठ० ४, २; पञ्च० १;

**अकरणलिङ्ग, त्रि० ( अकर्णलिङ्ग )** अभं३



ज्ञानवाणो; जेणे ज्ञान छेदाव्या नथी ते अखड कान वाला; जिसने कान नहीं छिदाये हैं वह.  
Having unperforated ears, having ears not perforated. निसी० १४, ६,  
**अकति.** त्रि० ( अकति-न कति न संख्याता इत्यकति ) संख्याता-गणनीया न आवे तेदला; असंख्य वा अनंत असंख्य; अगणित, अनन्त Innumerable, infinite  
ठ० १, ३, —संचिय. पुं० ( -सञ्चित )  
એક સમયે અસંખ્યાતા-અનંતા ઉત્પન્ન થતા  
एक समय में असंख्यात-अनन्त उत्पन्न होने वाले जीव innumerable lives coming into existence simultaneously ठ० १, ३, भग० २०, १;  
**अकप्प** पुं० ( अकल्प ) कल्पे नहि तेवु; अपे नहि तेवु, अयोग्य, साधुने अहण्ड करवा योग्य नहि अयोग्य, साधु के न प्रहण करने योग्य Unacceptable, improper for a Sādhu “वयच्छकं कायच्छकं अकप्पो गिहिभायणं ” दस० ५, ८, सम० १८, पिं० नि० १८६, आव० ४, ८; पंचा० १२, १४; प्रव० २७, ८२०;

**अकप्पठिय** पुं० ( अकल्पस्थित ) अथेलकादि दश प्रक्षरना कल्प-भर्यादा रहित, वर्येना २२ तीर्थक्षरना साधु अचेलकादि दश प्रकार के कल्प-रहित, बीच के २२ तीर्थकरों के साधु Having no restrictions of ten kinds as regards nakedness etc, disciples of the 22 intermediate Tirthankaras वेय० ४, १४;

**अकप्पिय.** त्रि० ( अकल्पिक ) अयोग्य, अकल्पनीक-अनेपण्णिय अयोग्य; अकल्पनीक, अनेपणीय Improper, not prescribed; unacceptable “अकप्पियं ण इच्छिज्जा पडिगाहेज्ज कप्पियं” दस० ६, ४८; ५, १, ८१, ४३, ४८,

**अकम्म.** न० ( अकर्मन् ) कर्मनो अभाव, आश्रय निरोध. कर्मों का अभाव, आश्रय का निरोध  
Absence of Karma ( action ), checking of Āśrava भग० ३, ३, १७, २, ( २ ) त्रि० कर्म रहित कर्म रहित. free from actions “अस्थिणं भते । अकम्मस्स गहं पण्णायह हंता अस्थि ” भग० ७, १; आया० १, ५, ६, १६६; प्रव० ११३२; सूय० १, १, २, १५,

**अकम्मओ.** अ० ( अकर्मतस् ) कर्मविना. कर्मविना Without Karma ( action ). “ओ अकम्मओ विभत्तिभाव परिणमइ” भग० १२, २;

**अकम्मंस.** पुं० ( अकर्मांश-न विद्यते कर्मांशो यस्य सः ) कर्मरज रहित कर्मरज रहित. Free from even the slightest Karma “अप्पत्तिञ्च अकम्मंसे, एयमहं मिगे चुण् ” सूय० १, १, २, १२, ठ० ५, ३, ( २ ) धातीकर्म रहित स्नातक विशेष, केवली. a Snātaka abstaining from actions which destroy the spiritual qualities of the soul; a Kevali भग० २५, ६;

**अकम्मकारि.** त्रि० ( अकर्मकारिन् ) अयोग्य काम करनार अयोग्य कार्य करने वाला. A doer of an improper action. परह० १, २,

**अकम्मभूम.** पुं० ( अकर्मभूमि ) असि, मसी अने इसी ( तलवार, कलम अने पेती ) ओ त्रणु प्रक्षरना कर्मव्यापार विना कल्पवृक्ष उपर आधार राप्पी छवन निर्वाह करनार; जुगलिया असि, मसी और कृषि ( तलवार, कलम और खेती ) रूप कर्मव्यापार के बिना कल्पवृक्षों के आधार में जीवन निर्वाह करने वाला; जुगलिया

One of those who depend for their livelihood entirely on Kalpavṛkṣa ( wish-fulfilling tree ) without doing any business e. g. of fighting, writing or agriculture; one of the Jugaliyās उत्त० ३६, १६७;

**अकर्मभूमग. पुं०** ( अकर्मभूमक-कर्म-कृषिवा-णिज्यादि मोक्षानुष्ठानं वा तद्विकला भूमिर्ये-षां तेऽकर्मभूमास्त एवाकर्मभूमकाः ) अकर्म-भूमिना गर्भजमनुष्य, जुगलिया. अकर्मभूमि (जिस समय पृथ्वी पर विना कृषि, वाणिज्यादि कर्म किये भी मनुष्य जीवन निर्वाह कर सकता है ) के गर्भज मनुष्य, जुगलिया One of the Jugaliyās born in a land devoid of any action such as agriculture etc पञ्च० १;

**अकर्मभूमय. पुं०** ( अकर्मभूमक ) लुओ। 'अकर्मभूमग' शब्द देखो "अकर्मभूमग" शब्द. vide "अकर्मभूमग" सम० १४,

**अकर्मभूमि, स्त्री०** ( अकर्मभूमि ) लोगभूमि; कृषिआदि कर्म रहित उत्पत्ति वाली भूमि, जुगलियाना ३० क्षेत्र भोगभूमि, कृषि आदि कर्मरहित कल्पवृक्ष वाली भूमि; जुगलियाओं के ३० क्षेत्र ( ऐसे ३० स्थान हैं जहाँ जुगलिया उत्पन्न होते हैं ) Any of the 30 regions of inaction for the Jugaliyās, the land of enjoyment "कह विहेणं भंते? अकर्मभूमिओ परणत्ताओ गोयमा ! तीसं अकर्मभूमिओ प० तं० पंच हेमवयाइं पंच हेरणवयाइं पंच हरिवासाइं पंच रम्मगवासाइं पंच देवकुराइं पंच उत्तरकुराइं" भग० २०, ८, २५, ६; ७, प्रव० ३६,

**अकर्मभूमिय. पुं० स्त्री०** ( अकर्मभूमिज ) तीस अकर्मभूमि-भोगभूमिना मनुष्य; जुग-

लिया तीस अकर्मभूमि-भोगभूमि में उत्पन्न मनुष्य, जुगलिया Men belonging to the thirty lands of inaction; the Jugaliyās ठा० ३, १;

**अकर्मया स्त्री०** ( अकर्मता ) कर्मने अभाव; कर्मने उच्छेद कर्म का अभाव, कर्म का उच्छेद. Absence of Karma; eradication of Karma उत्त० २१, ७१;

**अकर्मवीरिय. न०** ( अकर्मवीर्य ) पंडित वीर्य; पंडितभावसहित सामर्थ्य परिडत वीर्य, पंडितभावसहित सामर्थ्य Power coupled with wisdom सूय० १, ८, ६;

**अकर्महा. अ०** ( अकस्मात् ) अकस्म; अचानक. अचानक, एकदम Accidentally; suddenly सु० च० ४, २६२, —दंड. पुं० (—दण्ड ) धार्या वगर अकस्मात्—ओथिंतुं अकने लुतां पीलुं लुतां लय ते; ओथुं क्रियास्थानक एक को दण्ड देते समय विना निश्चय के अकस्मात् दूसरे को दण्ड दे देना; चौथा क्रियास्थानक striking a wrong person quite accidentally, the fourth Kriyāsthānaka ठा० ५, २, सम० १३, प्रव० ८३०;—दंडवत्तिय. पुं० न० (—दण्डप्रत्ययिक-अकस्माद्दण्डः प्रत्ययः कारणं यस्य ) ओथुं क्रियास्थानक; अकने मारवानुं धारी मारता अकस्मात् पीलने मारी नापनुं ते चौथा क्रियास्थानक, एक को मारने का निश्चय कर अकस्मात् दूसरे को मारडालना the fourth Kriyāsthānaka originating from killing or striking a wrong person quite accidentally सूय० २, २, १७,—भय. न० (—भय ) आल निमित्त विना उत्पन्न मात्रथी उत्पन्न थतु लय; सात लयमानुं अक बाह्य कारण के विना कल्पनामात्र में



उत्पन्न होने वाला भय, सात प्रकार के भयों में से एक प्रकार का भय imaginary fear, one of the seven kinds of fear ठा० ७, १, सम० ७, भग० ७, १, प्रव० १२३४;

**अकय** त्रि० ( अकृत ) न करेले विना किया हुआ Unperformed परह० २, १, ( २ ) साधुने उद्देशीने न अनावेले साधु के उद्देश्य से न बनाया हुआ not specially prepared for ascetics “अकयमकारियमसकप्पियमणाहुय ” भग० ७, १; क० प० २, ५०, पचा० १२, ४१, —आगम पुं० (—आगम) अकृताभ्यागमन, न करेले पाप वगेरेना झुलनी प्राप्ति, न्यायशास्त्रप्रसिद्ध अेक दोष विना किये हुए पाप आदि के फल की प्राप्ति, न्यायशास्त्र का माना हुआ एक प्रसिद्ध दोष experiencing the fruits of sins etc without committing them, A well-known fallacy in Nyāya or logic विशेष० १५, १७, —करण न० (—करण) न करवायेले कामनुं करुं ते न करने योग्य काम को करना performance of an improper action भक्त० ७६, —प्रायश्चित्त त्रि० (—प्रायश्चित्त) जेले प्रायश्चित्त नथी झीधु ते जिसने प्रायश्चित्त न किया हो वह one who has not atoned for his sins निसी० १०, १४,, —पुरय. त्रि० (—पुरय) पुण्यथी रहित होय ते, जेले पुण्य उर्युं नथी ते, अकृतपुण्य जो पुरय से रहित हो वह, जिसने पुरय नहीं किया हो वह; अकृतपुरय one who has not earned religious merit by holy actions “अकयपुरयणजणमणो-रहाविव चित्तिज्जमाणी ” नाया० २; ६, १२, १६, निर० १, १, —लक्षणा त्रि० (—लक्षण)

अशुभ लक्षण वाणु, अपलक्षण वुरे लक्षण वाला, कुलक्षणी a man possessed of ominous signs or marks राय० २७६, —संभोग पुं० (—सम्भोग) न करेले ( धर्म अधर्मेना ) सम्भोग-प्राप्ति न किया हुआ ( धर्माधर्म का ) सम्भोग-प्राप्ति. experiencing the results of action not done. विशेष० ३२३१, —सुय पुं० (—श्रुत) अगीतार्थ; शास्त्रवेत्ता नहि अगीतार्थ, शास्त्रज्ञान रहित one not acquainted with the Śāstras or scriptures वव० ४, ६,

**अकयणु** त्रि० ( अकृतज्ञ-कृतमुपकारं पर सम्बन्धिन न जानातीत्यकृतज्ञः ) कृतन, करेले नहि जालुनार कृतज्ञ, किये हुए उपकार को भूलजाने वाला Ungrateful नाया० ६; ठा० ४, ४,

**अकयणुया** स्त्री० ( अकृतज्ञता ) कृतनता; करेला उपकारने नहि जालुनुं ते कृतज्ञता; किये हुए उपकार को भूल जाना Ingratitude “चउहि ठाणेहिं संते गुणे णासेज्जा तंजहा-कोहेण पढिणिवेसेणं अकयणुयाणं मिच्छताहिणिवेसेण ” ठा० ४, ४,

**अकयत्थ** त्रि० ( अकृतार्थ ) अकृतार्थ-कृतार्थ नहि, निष्फल अकृतार्थ, निष्फल Unsuccessful, unhappy राय० २७६, नाया० १२,

**अकरंदुय** त्रि० ( अकरण्डक-अविद्यमानं मांस-लतयाऽनुपलक्ष्यमाणं करण्डकं पृष्ठवशा-स्थिकं यस्य देहस्याऽऽवाकरण्डकः ) जेना वासानां हाडकां भासथी लयी होवाथी ष्ठार देभाता नथी तेनुं ( शरीर ) जिस शरीर के रीढ़ ( पृष्ठवंश ) की हड्डी मांस में भरी हुई होने से बाहिर नहीं दिखाई देती हो A body of which the spinal cord is not visible owing to excess of flesh

‘अकरंदुयकणगस्यगाणिम्मलसुजायणिरुवहय-  
देहधारी’ ओव० १०;

अकरण न० (अकरण) न करे; न आचरणं.  
नहीं करना, आचरण में नहीं लाना Omitting  
to do. ओव० ३५, भग० ६, १; वव० १, ३७,  
अकरणओ. अ० (अकरणतस्) न करे आश्रीने  
नहीं करने के सम्बन्ध में On account of  
omitting to do. भग० १, १,

अकरण्या स्त्री० (अकरण्या) न आचरणं;  
न सेवणं. आचरण नहीं करना, सेवन नहीं  
करना Omitting to do. “अकरण्याए  
अभुत्ति” ठा० २, १, “सज्जायस्स अक-  
रण्याए उभओ कालं” आव० ४, ६, भग०  
८, ६; १५, १, वेय० ४, २५;

अकरणि स्त्री० (अकरणि) आदेश वचनार्थी  
शम करेवानी ना पाउती ते चित्ताकर काम करने  
से इनकार करना. Emphatic prohibi-  
tion of an action परह० १, १;

अकरणिज्ज. त्रि० (अकरणीय) नहि करेवा  
योग्य कार्य, अकर्तव्य न करने योग्य;  
अकर्तव्य Improper not fit to be  
done. “मिच्छन्ति वा वितहन्ति वा असच्चन्ति  
वा अकरणिज्जन्ति वा एगहा” आया० १, १,  
७, ६१; २, १, ३, १५;

अकरित. व० कृ० त्रि० (अकुर्वत्) न करे, न  
आचरे. न करता हुआ; आचरण न करता  
हुआ. Not doing “भणंता अकरिता य  
बंधमोक्खपहण्णिणो” उक्त० ६, १०, पंचा०  
५, ४६;

✓ अकरिसु. कृ० धा० भू० उ० ए० (अकार्षम्) मे  
कर्युं मैंने किया I did. ठा० ३, १,

✓ अकरिस्सं. कृ० धा० भू० उ० ए० (अकार्षम्) में  
कर्युं मैंने किया I did आया० १, १, १,  
५०;

अकरेमाण. व० कृ० त्रि० (अकुर्वत्) न करे; न  
आचरे. न करता हुआ; न आचरता हुआ

Not performing. नाया० ६; भग०  
१५, १; अणुजो० २७;

अकलंक. त्रि० (अकलङ्क) डलंड-दोष रहित.  
कलंक-दोषहीन Stainless; faultless.  
पंचा० ६, २०,

अकलुण. त्रि० (अकरुण-नास्ति करुणा यस्य यत्र  
वा) निर्दय; दयावर्गने दयाहीन; निर्दयी.  
Merciless, cruel नाया० ६; परह० १, ३;

अकलुस. त्रि० (अकलुष) क्रोधादि क्लुषभाव  
रहित; द्वेष रहित क्रोधादि क्लुषभाव रहित,  
द्वेष रहित. Not turbid; pure, clear;  
free from anger hatred etc.  
अंत० ७;

अकलेवर. पुं० (अकलेवर) शरीर रहित;  
सिद्धभगवान् शरीर रहित; सिद्धभगवान् One  
having no physical body; a Si-  
ddha. उक्त० १०, ३५;

अकसाइ पुं० (अकषायिन्-कषाया न विद्यन्ते  
यस्यासावकषायी) क्रोधादि कषाय रहित; अक-  
षायी. अकषायी; क्रोधादि विकार रहित. Free  
from passion “अकसाई विगयगेही  
य सहसुवेसु अभुच्छिण्णं माई” आया० १,  
६, ४, १५; भग० ६, ४; ६, ३१; जीवा० १;  
प्रव० १२६२;

अकसाइय पुं० (अकषायिक) कषाय रहित  
जिव; अकषायी कषायरहित जीव; अकषायी.  
A soul free from Kaṣāya i. e.  
passions such as anger etc. भग०  
८, २;

अकसाय. त्रि० (अकषाय) कषायने सर्वथा  
उपशम-क्षय करेनार कषाय का सर्वथा उपशम  
करने वाला Entirely free from  
passions, anger, hatred etc. “अक-  
सायं अहक्खायं छउमत्थस्स जिणस्स वा”  
उक्त० २८, ३३; जं० प० २, ३८;—मोहणिज्ज-

न० (—मोहनीय) हास्यादि नोकषायरूप मोहनीय कर्मनी प्रकृति. हास्यादि नोकषायरूप मोहनीय कर्म की प्रकृति the Karmic nature of Mohaniya Karma (excluding Karma) in the shape of Nokasāya (nine minor faults) such as laughter etc उत्त० ३६, १०;

**अकसायि** त्रि० (अकषायिन्) लुप्तो 'अकसाइ' शब्द. देखो 'अकसाइ' शब्द Vide 'अकसाइ.' भग० १८, १; २५, ६; २६, १; ३०, १, ४०, १.

**अकसिण**, त्रि० (अकृत्स्न) अपूर्ण; अधुः अपूर्ण, अधूरा Incomplete; falling short of perfection. अणुजो० ६०, पंचा० ६, ४२, (२) त्रि० अपरिपूर्ण-अकृत्स्न स्कंध-ज्येष्ठाथी अति मोटा पीन्ने स्कंध छे ते, द्विप्रदेशी भाडीने यावत् अनंत परमाणुसमूह-थी थयेव पणु ओक परमाणु ओछो होय ते अकृत्स्नस्कंध, ओवी रीते कभश ये त्रणु आर परमाणुओ ओछा करतां छेवट द्विप्रदेशिक स्कंध पणु अकृत्स्न स्कंध छेवाय छे अपरिपूर्ण-अकृत्स्नस्कंध-जिससे बहुत बड़ा दूसरा स्कंध है वह, द्विप्रदेशिक (दो प्रदेश वाला) परमाणु स्कंध से लेकर एक कम अनंत परमाणु तक के स्कंध तक अकृत्स्नस्कंध ही कहलाते हैं any integral part which falls short of perfection by one to innumerable atoms in relation to the whole विशेष० ८६७,—पवत्तय पु० (—प्रवर्त्तक-अकृत्स्नमपरिपूर्ण सयम प्रवर्त्तयन्ति विदधति ये ते तथा) ओक देशी निवृत्ति पाभेव एक देश से निवृत्ति पाया हुआ. one partially following the practice of self-control “अकमिणपवत्तयाणं विरयाविरयाण एव मलु जत्तो संसारपयणु-

करणे दम्बत्थए कूवदिट्ठतो” पंचा० ६, ४२; **अकसिणा** स्त्री० (अकृत्स्ना) आरौपणा-नो-प्रायश्चित्तने योधो प्रकार, जेभा वधारे तप समाधि शके ते प्रायश्चित्त प्रायश्चित्त का चौथा प्रकार, जिसमें अधिकतप का समावेश होसके वह. The fourth variety of expiation, expiation with a larger scope for severe austerity सम० २८, ठा० ५, २;

**अकाइय** पुं० (अकायिक-नास्ति कायो येषा ते अकायास्त एवाकायिका.) कायारहित. श्रव; सिद्धलगवान् कायारहित जीव; सिद्धभगवान् An emancipated soul, a Siddha भग० ८, २; जीवा० ६, पक्क० २;

**अकाम** पुं० (अकाम) धन्धानो अभाव, धन्धा नहि; अनिच्छा इच्छा का अभाव; अनिच्छा Absence of desire, desirelessness “तं च होज्ज अकामेणं विमणेण पडिच्छियं” दस० ५, १, ८०. (२) न्या सर्वधन्धानी निवृत्ति थाय छे ते, मोक्ष जहाँ समस्त इच्छाओं का निवृत्ति होती है वह स्थान-मोक्ष. a state characterised by the extinction of all desires १०, final bliss “संथव जहेज्ज अकामकामे” उत्त० १५, १, (३) त्रि० विषय-कामना रहित विषय-कामना रहित free from passions भग० ७, ७ ६, ३३, ११, ११, —काम त्रि० (—काम-न विद्यते कामस्व कामोऽभिलाषो यस्य सोऽकामकामः) विषयवाचना रहित, विषयनी धन्धा वगरेना विषयभोग की इच्छा रहित free from sexual desire “संथव जहेज्ज अकामकामे” उत्त० १५, १,—किञ्च त्रि० (—कृत्य-कमनं काम इच्छा न कामोऽकामन्तेन-

कृत्यं कर्तव्यं यस्यासावकामकृत्यः ) ४२७  
 विना काम इरनार विना इच्छा के काम करने  
 वाला acting without any desire  
 ( of gain etc. ) सूय० २, ६, १७,  
 —छुहा स्त्री० (—सुधा ) निर्जरा ४२७  
 वि॥ परतत्रपणे भुष वे३॥ निर्जरा की इच्छा  
 विना पराधीनता से भूख सहन करना in-  
 voluntary endurance of hunger  
 without any desire to put a  
 stop to the fructification of  
 Karma. भग० १, १;—णिगरण  
 त्रि० (—निकरण) नेमां अनि२७—४२७ने  
 अभाव नि३रणु—३रणु छे येयुं जिसमें इच्छा  
 का अभाव कारण हो वह having its ori-  
 gin in absence of desire “ एषणं  
 अंधा मूढा तमप्पविद्धा तमपडलमोहजाल  
 पलिद्धा अकामनिगरणं वेयणं वेयंतीति ”  
 भग० ७, ७;—णिज्जरा. स्त्री० (—निर्जरा )  
 निर्जरा ४२७विना पराधीनपणे भुषतरस  
 वगेरे सहन इरवा ते. निर्जरा की इच्छा  
 विना पराधीनता से सुधा तृषा आदि का सहन  
 करना. the act of enduring hun-  
 ger, thirst etc from compulsion  
 without any desire to put a stop  
 to the fructification of Karma  
 भग० ८, ६; ठा० ४, ४,—तरहा  
 स्त्री० (—तृष्णा ) निर्जरा ४२७ विना  
 परतत्रपण तृषा वे३॥ विना निर्जरा की इच्छा  
 के पराधीनता से तृषा सहन करना involun-  
 tary endurance of thirst, with-  
 out any desire to purge  
 away the fruits of Karma.  
 भग० १, १,—निज्जरा. स्त्री० (—निर्जरा )  
 भुषो “अकामणिज्जरा” शब्द देखो “अकाम-  
 णिज्जरा” शब्द vide “अकामणिज्जरा.”  
 क० गं० १, १६,—दंभचेरवास पुं० (—अ-

क्षचर्यवास ) निर्जरा ४२७ विना इच्छा  
 दयालुथी अक्षचर्य पाणयुं ते विना निर्जरा की  
 इच्छा क किसीके दवाव से ब्रह्मचर्य का पालन  
 करना. compulsory celibacy, with  
 out any desire to purge  
 away the fruits of Karma  
 भग० १, १;—मरण. न० (—मरण—अका-  
 मेन अनिप्पितत्वेन त्रियतेऽस्मिन्नित्यकाम-  
 मरणम् ) आलभरण; आलभावे—अज्ञानपणे  
 विषय आदिनी आसक्तिभा थतुं मरण बाल  
 मरण; बालभाव—अज्ञानभाव ( विषय आदि की  
 आसक्ति ) में मरण Lit involuntary  
 death i e, death after leading  
 an unvirtuous life “ बालाण च  
 अकामं तु, मरण असह भवे ” उत्त० ५, २;  
 अकामअय त्रि० (अकामक) भुषो “अकामक”  
 शब्द देखो “अकामक” शब्द Vide  
 “अकामक” नाया० १६; १६;

अकामक. त्रि० (अकामक) कामना—४२७  
 रहित, विषय वासना रहित कामना रहित, इच्छा  
 रहित, विषयवासना रहित Free from  
 desire. “अकामक परिकम्मं को ते वारिउ-  
 मरिहति” सूय० १, ३, २, ७, नाया० १, (२) अन-  
 लिपपशीय; ४२७वा योग्य नहि. अनभिलष-  
 णीय; नहीं चाहने योग्य undesirable.  
 परह० १, १,

अकाममाण व० क० त्रि० (अकाममान—न काम-  
 यते असावकाममानः) ४२७ न इरतो इच्छा  
 नहीं करता हुआ. Not desiring नाया० १६;

अकामिय त्रि० (अकामिक) निरभिलाषी;  
 ४२७ वगरतो निरभिलाषी, विना इच्छा का.  
 Free from desires. “ तहेव संतातंता  
 परितंता अकामिया ” विवा० १, १;

अकामिय त्रि० (अकाम्य) न ४२७वा योग्य;  
 अनिष्ट न चाहने लायक, अनिष्ट. Undesir-  
 able; evil राय० २६२;

**अकामिया.** स्त्री० ( : अकामिता-अकामता )  
 अनिच्छा, धृच्छाने। अभाव. अनिच्छा;  
 इच्छा का अभाव Absence of desire  
 “अकामियाप् चिन्तांति दुःखं” परह० १, ३,  
**अकाय** पुं० ( अकाय ) क्षायारहित श्व; सिद्ध  
 भगवान्. शरीररहित जीव; सिद्धभगवान्  
 Liberated soul, a Siddha ठा० २, ३,  
**अकारश्च** त्रि० ( अकारक ) अपथ्य अपथ्य.  
 Unwholesome. ओघ० नि० २०३,  
 नाया० १३; ( २ ) न करनार-अकर्ता, क्रिया  
 -शून्य नहीं करने वाला, अकर्ता-क्रिया शून्य  
 not doing; devoid of action  
 “एवं अकारश्चो अप्या एव ते उ पगन्मिया”  
 सूय० १, १, १, १३; परह० १, २,  
**अकारश्च** पुं० ( अकारक ) लुप्तो “अकारश्च”  
 शब्द देखो “अकारश्च” शब्द. Vide  
 ‘अकारश्च’ परह० १, २,  
**अकारि** त्रि० ( अकारिन् ) नहि करवावाणो,  
 नहि करनार नहीं करने वाला A do-no-  
 thing, a lazy fellow. “अकारिणो त्थ  
 वज्झन्ति मुच्चं कारगो जणो ” उत्त० ६, ३०,  
**अकारिय.** त्रि० ( अकारित ) न करायें. नहीं  
 कराया हुआ Not caused to be done  
 भग० ७, १; परह० २, १,  
**अकाल** पुं० ( अकाल ) अनवसर, कुवभत  
 अनवसर; असमय, बुरा वख्त Improper  
 time, unfavourable time नाया०  
 ५, १५, १६, आया० १, २, १, ६२, दसा० १,  
 १३, आव० ४, ७; ( २ ) दुष्काल, दुष्काल  
 दुष्काल, अकाल famine “अका-  
 ले वरिसइ” ठा० ७, १; ( ३ ) गोचरी आदिने  
 निषिद्धकाल; कुसमय prohibited time  
 for begging food etc. “अकाले  
 चरसि भिक्षू काल न पडिलेहसि” दस० ५,  
 २, ५, —चारि पु० ( —चारिन् ) कुवेगा-

कुवभते गोचरी आदि करनार कुसमय में  
 गोचरी ( भिक्षा ) आदि करने वाला one who  
 begs food etc. at the prohibited  
 time. दस० ५, २, ५; —दोहल पु०  
 (—दोहद) कुवेगाये उत्पन्न थतो दोहद-गर्भिणी  
 स्त्रीने थती धृच्छा. कुसमय में गर्भिणी स्त्री को  
 उत्पन्न होने वाली इच्छा-दोहला the long-  
 ing of a pregnant woman at an  
 improper time नाया० १, —पडिवोहि.  
 त्रि० ( —प्रतिवोधिन् ) कुवेगाये-रात्रे जग-  
 नार-करनार कुसमय में-रात्रि में जगने वाला-  
 फिरने वाला a person who keeps  
 late hours “मितक्खणि अणारियाणि  
 दुस्सयणपाणि दुप्पयणवणिजाणि अकाल  
 पडिवोहिणि” आया० २, ३, १, ११५, —पढण.  
 न० (—पठन) अकाले लणुवु-वांयवुं ते अ-  
 समय में पढना-वाचना studying at a  
 prohibited time पंचा० १५, २५;  
 —परिभोइ त्रि० ( —परिभोजिन् ) रात्रि  
 भोजन करनार, रात्रेभानार रात्रिभोजन  
 करने वाला taking one's food at  
 night आया० २, ३, १, ११५; —परि-  
 हीण न० ( —परिहीन-कालविलम्बो न  
 विद्यते यत्र ) धल्लु जल्दी-शीघ्र, तत्काल;  
 वगर विद्यते. तत्काल, बिना विलंब, बहुत  
 जल्दी, शीघ्र instantly, immediate-  
 ly. “अकालपरिहीण चेव सुरियाभस्स अंतियं  
 पाउम्भवह ” नाया० १६; —मेह पुं०  
 (—मेघ) अकाले वरसाइ; भावः. अकाल  
 में-असमय में वर्षा rain out of season.  
 नाया० १, —वासि पु० ( —वपिन् ) भाव-  
 णो वरसाइ; कुवभते वरसनार कुसमय की  
 वर्षा, असमय में वर्षा. rain out of sea-  
 son ठा० ४, ४, ( २ ) वगर जरीआते  
 दानादि देनेार ( दाक्षिण्य ) बिना आवश्यकता  
 के दान देने वाला a person giving



alms without any need on the part of the recipient ( fig ) ठा० ४, ४;—संभ्रायकारश्च पुं० (—स्वाध्यायकारक) ध्वजते स्वाध्याय इति २; अङ्गणे ललुना २; असमाधिनुं १५ भुं स्थानक सेवना २. कुसमय में स्वाध्याय करने वाला; अकाल में पढ़ने वाला; असमाधिके १५ वें स्थानक का पालन करने वाला. one who studies scriptures at an improper time; one who exposes himself to the 15th source or cause of lack of concentration सम० २०,—समय. पुं० (—समय) विपरीत समय. विपरीत समय adverse time. नाया० १;

अकालिय. त्रि० ( अकालिक ) वभत पहेल्या पहेलांनुं; अङ्गणे प्राप्त थयेत्. समय से पहिले का, असमय में प्राप्त. Premature, untimely. “रूवेसु जो गिद्धिमुवेइ तिव्वं अकालियं पावइ से विणासं” उक्त० ३२, २४, ✓ अकासी. क०धा०भू०प्र०ए० (अकार्षीत्) तेले ध्युं-उसने किया He did. सम० ३; सूय० १, ५, २, २३; नाया० ८, दसा० ६, ६,

अकाहल त्रि० ( अकाहल—कुत्सितं हलतीति काहलं न काहल विद्यते यस्यासौ ) २५४ अक्षर भाषी. स्पष्ट अक्षर कहने वाला; स्पष्टाक्षर भाषी. Speaking distinctly. परह० २, २;

अकिंचण. त्रि० (अकिञ्चन) डिंयन—प्रतिबंध इति धनकनकादि रहित; निष्परिग्रही प्रतिबंधकारक-धनकनकादि रहित; निष्परिग्रही Not possessed of worldly effects; poor. दस० ६, ६६, ८, ६४; उक्त० २, १४; नाया० १०; परह० २, ५, ओव० १०, १७, प्रव० ६५७,

अकिंचणया. स्त्री० (अकिञ्चनता) निष्परिग्रहि पणुं निष्परिग्रहपन Freedom from possession of worldly effects. “चउन्निहा अकिंचणया परणत्ता तजहा-मण-

अकिंचणया वहअकिंचणया कायअकिंचणया उवकरणअकिंचणया” ठा० ४, ३,

अकिञ्च न० (अकृत्य) साधुने न इरवा योअ. साधु के न करने योग्य. A thing not fit to be done by an ascetic. पंचा० १५, २; भग० १, १०;—ठाण. न० (—स्थान) आरित्रना भूय गुणादि भांगे तेनुं अकृत्यनुं स्थान. चारित्र के मूलगुणादि को भंग करने वाला अकृत्य का स्थान. cause of an improper action violating the chief principles of right conduct. भग० ८, ६; १०, २; वव० १, ३७;

अकिज्ज त्रि० (अक्रेय) परीदवाने योअ नहि. न खरीदने योग्य. Unfit to be purchased. “सुक्कीयं वा सुविकीयं अकिज्जं किज्जमेव वा” दस० ७, ४५;

अकिट्ट त्रि० (अकृष्ट) नहि भेडेनुं; न भोडेनुं. बिना जोता हुआ, बिना खोदा हुआ. Untilled; not dug भग० ३, २,

अकित्तण. न० (अकीर्त्तन) अकीर्त्तन—गुणग्राम वभाणु न इरवां ते कीर्त्तन नहीं करना, गुण ग्राम का वर्णन न करना. Not praising the merits. उक्त० ३२, १५;

अकित्ति स्त्री० (अकीर्त्ति) अपकीर्त्ति; अपयश. अपकीर्त्ति, बुराई, अपयश, निंदा. Infamy; disrepute गच्छा० ५५,—कर. त्रि० (—कर) अपकीर्त्ति इरवावाणे. अपकीर्त्ति करने वाला, बुराई करने वाला disgraceful; defaming भग० ६, ३२,—कारय. त्रि० (—कारक) अपकीर्त्ति इरवावाणे अपकीर्त्ति-बुराई करने वाला. disgraceful, defaming. भग० १५, १,—जणअ. त्रि० (—जनक) अपकीर्त्ति इरना २ अपकीर्त्ति करने वाला disgraceful, bringing on disgrace; causing ill fame. गच्छा० ५५,

अकित्तिम त्रि० (अकृत्रिम) असली, भूय;

स्वाभाविक; कुदरती; मनुष्यनी कृतिथी नहि  
 पनेनुं. असली, मूल; स्वाभाविक, कुदरती;  
 प्राकृतिक; मनुष्यादि की कृति से नहीं बना हुआ.  
 Natural; not artificial. जं० प० १,  
 १२; विशेष० ४७५;

**अक्रियाणं.** सं० क० अ० (अकृत्वा) न करीने;  
 कर्था वगैरे. बिना किये. Without doing,  
 without having done. ओव० १४२;

**अकिरिय.** पुं० ( अक्रिय ) क्षयिकी, अधिहरण-  
 डी आदि सावध किया रहित शरीरादि की सावध  
 क्रिया-पापक्रिया रहित Free from sin-  
 ful actions connected with the  
 body or with the use of wea-  
 pons etc. भग० ११, १; २५, ७;  
 अणुजो० १५१; ( २ ) स्त्री० श्रवादि पदार्थों  
 ने अस्वीकार; नास्तिकपणु जीवादि पदार्थों  
 का अस्तित्व न मानना; नास्तिकपना  
 atheism, denying the existence  
 of the soul etc. “किरियं च रोयण धीरे,  
 अकिरियं परिवज्जण” उत्त० १८, ३३; (३)  
 त्रि० श्रवादिना अस्तित्वनुं उत्थापन करने  
 वाला, नास्तिक. an atheist, one who  
 denies the existence of the soul  
 “ अकिरिय राहु सुह दुद्धरिस ” नंदा० ६,  
 सम० १,—आय पुं० (—आत्मन्) आत्मा-  
 ने अक्रिय-क्रियाविनाशे भावनार साध्य  
 दर्शन वगैरे. आत्मा को अक्रिय-क्रियारहित  
 मानने वाला. a school of philosophy  
 holding that the soul is not a  
 doer, e. g. the Sāṅkhya System  
 “ जे केइ लोगमि उ अकिरियआया, अन्नेण  
 पुढा धुयमादिसंति ” सूय० १, १०, १६;  
 —वाइ. पुं० (—वादिन्) श्रवादि पदार्थना  
 अस्तित्वनो अपवाद करनेार; अक्रियावादी,  
 नास्तिक, उ० ३५५ अंशमाना ८४ मा गेहना अकि-

यावादी जीवादि पदार्थों के अस्तित्वका अपवाद  
 करने वाला, अक्रियावादी, नास्तिक, ३६३ पाखं-  
 डियों में से ८४ वें प्रकार का अक्रियावादी an  
 atheist, one belonging to the  
 84th of the 363 kinds of here-  
 tics “ओ किरियमाहंसु अकिरियवाइ” सूय०  
 १, १२, ४; भग० ३०, १; ठा० ४, ४, दसा०  
 ६, ३; प्रव० १२०२;

**अकिरिया स्त्री० (अक्रिया)** दुष्ट क्रिया, मिथ्यात्व  
 आदि युक्त अनुष्ठान दुष्ट क्रिया, मिथ्यात्व आदि  
 सहित अनुष्ठान Heretical action, ir-  
 religious action, wicked action.  
 “अकिरिया तिविहा पणत्ता तंजहा ” ठा०  
 ३, ३, भग० २, ५, ७, २; ८, ६; ३५, १; ४१, १;  
 आव० ४, ८, सम० १, सूय० २, १, १७,

**अकीय त्रि० (अक्रीत)** सधुना उद्देश्यी नहि  
 प्रीति. साधु के लिये न खरीदा हुआ Not  
 purchased with the object of  
 giving to an ascetic भग० ७, १;

**अकीरमाण त्रि० ( अकुर्वाण )** न करने.  
 नहीं करता हुआ Not doing भग० १५, १;  
**अकील त्रि० (अक्रील)** भीला विनाशुं कीले बिना  
 का. Without a nail, having no  
 nail. पंचा० ७, १०;

**अकुओभय त्रि० ( अकुतोभय—न विद्यते कुतः  
 कस्माद् भयं यस्य )** जेने डोपथी लय नहीं ते  
 जिसका किसीका भी भय न हो वह Quite  
 fearless. “ आणाण अभिसमेआ अकुओ  
 भयं ” आया० १, १, ३, १२४;

**अकुपकुअ. त्रि० ( अकुपज—कुम्पितं कृजति  
 आक्रन्दतीति कुपजो न कुपजोऽकुपजः )** दुःख-  
 ना उद्गार विनाशुं;—हायवेय—आक्रन्दन  
 रहित दुःख के उद्गार—हायविलाप—आक्रन्दन  
 रहित Unlamenting, free from  
 groans “अकुपकुओ तथ हियामणज्जा”  
 उता० २१, १८,



अकुक्कुय-अ त्रि० ( अकुक्कुच ) भुज्जविकार  
रहित. मुखविकार रहित. Free from dis-  
tortion of the face. आया० १, ६, ४, १४;  
(२) अशिष्ट-भाउ येष्टा विनानो. अशिष्ट-अस-  
भ्य-भाइचेष्टा रहित. free from vulgar  
gestures. “ अकुक्कुओ णिसाएज्जा  
णय वित्तासए परं” उक्त० २, २०;

अकुडिल त्रि० ( अकुडिल ) वांड वगरनुं, आंटी  
धुंटी वगरनुं, सीधुं; लुब्ध्याध वगरनुं; मायारहित;  
सरल कुटिलता रहित; सरल, माया  
रहित; सीधा; निष्कपट Straight, even;  
straightforward. ओव० २१; भग०  
६, ३३; जीवा० ३, ३,

अकुतूहल त्रि० ( अकुतूहल ) कुतूहल-आश्चर्य  
वगरनो, ध्रुज्जालादि विधाना यमत्कार जेवा डे  
पताववानी ध्रुज्जाला विनानो कुतूहल रहित;  
आश्चर्य रहित; इन्द्रजालादि विद्या के चमत्कार  
बताने अथवा देखने की इच्छा से रहित De-  
void of curiosity, free from a  
desire to see jugglery oneself or  
to show it to others. “न्यावित्ति  
अचवले अमाई अकुतूहले” उक्त० ३४, २७;  
११, १०;

अकुत्थ त्रि० ( अकुत्थ ) शीलरूप सुगंध रहित.  
शीलरूप सुगंध रहित Devoid of the  
sweet smell of good or right  
conduct पंचा० १४, ३४;

अकुमार पुं० ( अकुमार ) कुमार-कुंवारा नहि ते  
जो कुंवारा नहीं वह; विवाहित पुरुष A  
married person. सम० ३०;

अकुमारभूअ-य. त्रि० ( अकुमारभूत ) गृह-  
स्थाश्रमी; परल्लोको. विवाहित; जो कुंवारा  
न हो; गृहस्थाश्रमी A householder.  
“अकुमारभूए जे केई कुमारभूएतिहंवर”  
नम० ३०, ( ० ) आश्रमध्यायी नहि ते

जो बालब्रह्मचारी न हो. one not a celi-  
bate from birth. सम० ३०;

अकुव्वमाण. व० कृ० त्रि० ( अकुर्वत् ) न करतो नहीं  
करता हुआ Not doing “धणियं तु पुत्राहं  
अकुव्वमाणो” उक्त० १३, २१;

अकुसल. न० ( अकुशल ) अशुभ, माहु; भराण;  
अभंगल अशुभ, अभंगल. Inauspicious,  
bad ओव० १६; परह० १, २, (२) त्रि० अगल;  
वक्तव्यावक्तव्यनी समज विनानो अजाल;  
वक्तव्यावक्तव्यमूढ. ignorant; indis-  
creet. प्रव० ६०३;—कम्मोदय पुं०  
(—कर्मोदय) अशुभ कर्मनो उदय. अशुभ कर्मों  
का उदय rise or maturity of bad  
Karma. पंचा० १, ३५;—जोग.  
पुं० (—योग) अशुभयोग मन, वचन अने  
कायानो व्यापार अशुभयोग-मन, वचन और  
काया का व्यापार evil activities of  
mind, tongue and body. प्रव० ६०३;  
—निवित्ति. स्त्री० (—निवृत्ति) अशुभयोग-  
पापना व्यापारथी निवृत्ति. पाप के व्यापार से  
निवृत्ति. freedom from or absti-  
nence from sinful operations ( of  
mind, speech and body ) प्रव० ६०३;  
—मण. न० (—मनस्) आर्तध्यानादि युक्त  
मन आर्तध्यानादि सहित मन. a troubled  
mind. भग० २५, ७,—वई. स्त्री० (—वाच्)  
अभंगल वचन, अशुभ वचन अभंगल वचन;  
अशुभ वचन. improper speech; in-  
auspicious words. भग० २५, ७;

अकुसील. त्रि ( अकुशील ) शुद्धाचारी; सुशील.  
शुद्धाचारी, सुशील; अच्छे चाल चलन वाला.  
Of unblemished conduct, “अकुसी-  
ले सया भिक्खू” सूय० १, ६, २८;

अकुहय. त्रि० ( अकुहक ) ध्रुज्जालादि कुतूहल  
रहित इन्द्रजालादि कुतूहल रहित Free  
from curiosity concerning jugg-

glory etc. "अलोलुप अकुहण अमाई" दस० ६, ३, १०,

अक्रूर. त्रि० (अक्रूर) क्रूरता रहित क्रूरता रहित Free from cruelty प्रव० १३७०,

अकेवल. त्रि० (अकेवल-न विद्यते केवल मस्मिन्नित्यकेवलम्) अशुद्ध. अशुद्ध Impure. "एस ठायो अणारिण अकेवले अण्णडिपुत्ते" सूय० २, २, ५७,

अकेवलि. पुं० (अकेवलिन्) देवदत्तानी नहि, सर्वज्ञ नहि केवलज्ञान रहित, असर्वज्ञ. Not possessed of perfect knowledge, not omniscient. भग० १५, १,

अकोऊहल्ल. त्रि० (अकुतूहल) नाटकादि कुतूहल रहित नाटकादि कुतूहल रहित Free from curiosity concerning dramas etc. "अकोऊहल्ले य सया स पुज्जो" दस० ६, ३, १०;

अकोप्प. त्रि० (अकोप्य) दोष करवा योग्य नहि; अदूषणीय. कोप करने के अयोग्य; अदूषणीय Unblamable faultless "अकोप्प जंघजुयला" जीवा० ३, ३, पण्ह० १, २,

अकोविय त्रि० (अकोपित) दूषण रहित. Faultless "आरिय उवसपज्जे, सब्ब धम्ममकोवियं" सूय० १, ८, १३,

अकोविय. पुं० (अकोविद) अपठित, शास्त्र भोध रहित पाठित्यरहित; शास्त्रज्ञान रहित Illiterate; ignorant of the scriptures दस० ६, २, २३; "सूढे णेयाणुगामिण् देवि एण अकोविया" सूय० १, १, २, १८;

अकोसायंत. व० कृ० त्रि० (अकोशायमान) पीलेलु, विक्षिप्तपाभेलु; प्रक्षुब्धित विकास पाया हुआ; प्रफुल्लित Full-blown. ओव० १०, जीवा० ३, ३,

अकोसिया. स्त्री० (अकोशिका) ओ नामनी ओष्ठ मिठाई-मुभाडी एक प्रकार की मिठाई A kind of sweet-meat. जीवा० ३, ३,

अकोहण. त्रि० (अक्रोधन) क्रोध वगरुत; गुस्सा रहित. क्रोध रहित; गुस्सा रहित Free from anger. "अकोहणे सच्चरण तवस्सी" सूय० १, १०, १२;

अक्रंत त्रि० (अक्रान्त) अप्रिय; क्षति रहित. अप्रिय; क्षति रहित Devoid of lustre; unpleasant सूय० १, १, ४, ६, नाया० ८;

अक्रंत त्रि० (आक्रान्त) पीडित, व्याथेल; पराभव पाभेल पीडित, दवाया हुआ; पराजित. Afflicted, overpowered "सब्बे अक्रंतदुक्खा य" सूय० १, १, ४, ६, पि० नि० भा० ३७, (२) पुं० पगनो पृथ्वी साथे संघर्षण थतां नीडणतो वायु, देणे अचित्त वायु डहेवाय छे पौव का पृथिवी के साथ संघर्षण होने से उत्पन्न होने वाला अचित्त (जीव रहित) वायु. the inanimate wind produced by the contact of the foot with the ground ठा० ५, ३,

अक्रंद पुं० (आक्रन्द) रोनुं-रोनुं ते, दुःख भनी भूम पाडनी ते. रोना, दुःख से चिल्लाना Crying. सु० च० ८, ७६, प्रव० ४४०,

अक्रतूवरी स्त्री० (अक्रतूवरी) ओष्ठ जलनी शुष्कवनस्पति एक प्रकार की गुच्छ वनस्पति A kind of vegetable growth. पत्र० १,

अक्रवौदिया स्त्री० (अक्रवौन्दिका) ओष्ठ जलनी वेल एक जाति की वेल. A kind of creeper पत्र० १;

✓ अक्रम धा० I. (आक्रम) आक्रमण करने; पराभव करने आक्रमण करना, पराभव करना To assault, to defeat. (२) पगवडे जमीन साथे भसणयु. पैरों ने जमीन पर मसलना to trample down:

अक्रमेज्जा वि०-भग० १८, ३,

अक्रमित्ता सं० कृ० भग० १४, ३;

अक्रमिड. हे० कृ० सु० च० १, २८०;

**अकिट्ट.** त्रि० ( अक्लिष्ट ) अप्पाधित; उलेश रहित; स्वस्थ. बाधा रहित; क्लेश रहित, तंदुरुस्त. Sound; healthy. भग० ३, २, जं० प० २, २६,

**अक्रिय.** त्रि० ( अक्रिय ) क्रिया रहित; निष्क्रिय. क्रिया रहित; निष्क्रिय. Inactive; free from action. विशेष० ३२;

**अक्कुट्ट** त्रि० ( आकुट्ट ) उठोर वचनधी-आक्रोश वचनधी ओलावेस. कर्कश-कठोर वचन से बुलवाया हुआ Called out with harsh words. असइं वोसट्टचत्तदेहे अक्कुट्टे व हए व लूसिए वा ” दस० १०, १, १३;

**अक्केज्ज.** त्रि० ( अक्केय ) अपरीक्षा योग्य नहि ते. न खरादने योग्य Unworthy of being purchased. विशेष० २६६४;

**अक्केय.** त्रि० ( अक्केय्य ) अपरीक्षित शक्य तेवुं; अमूल्य, अमूल्य, जो खरीदा न जासके Invaluable; priceless प्रव० १२४४;

✓ **अक्कोस** धा० I. ( आ०कुश् ) आक्रोश वचन उठेवां; उपेक्षा आपवे; धमकी आपवी. कठोर वचन कहना, उलहना देना, धमकी देना. To scold, to upbraid.

**अक्कोसइ.** ठा० ५, १; सु० च० १५, १५१;

**अक्कोसंति.** अंत० ६, ३; नाया० १६;

**अक्कोसेज्ज.** वि० उत्त० २, २४;

**अक्कोस** पुं० ( आक्रोश ) आक्रोश वचन; उठोर-निष्ठुर वचन; तिरस्कार लरेस वचन. कठोर वचन, तिरस्कारयुक्त वचन Harsh words. उत्त० १, ३८; १५, ३; प्रव० ६६४; भग० ८, ८,—परिसह पुं० (—परिषह ) आक्रोश-तिरस्कार लरेस वचनतो परिषह; साधुना २२ परिषहमानो ६२ भो परिषह कठोर अथवा तिरस्कार भरे वचनों को सहन करना; साधु के २२ परीषहों में से १२वाँ

परीषह the 12th of the 22 Parisa has of Sādhus viz. the bearing of harsh words. उत्त० २, १;

**अक्कोस.** न० ( \* अक्रोश ) साधुने योग्य नहेवाने अयोग्य क्षेत्र, उ जेनी अेक अे उ तए आलुअे नदी, पहाड उ हिंसक पशु होय तेवुं क्षेत्र. साधु के चौमासा न करने योग्य स्थान, जिसके कि, एक दो या तीनों ओर नदी, पहाड या हिंसक पशु हों A place improper for a Sādhu to live in during the monsoon. वव० १०;

**अक्कोसणा** स्त्री० ( आक्रोशना-आक्रोश ) लुअो “ अक्कोस ” शब्द. देखो ‘ अक्कोस ’ शब्द. Vide “ अक्कोस ” नाया० १६;

**अक्कोह.** त्रि० ( अक्रोध ) लुअो “ अक्कोहण ” शब्द देखो ‘ अक्कोहण ’ शब्द Vide “ अक्कोहण. ” भग० १, ३;

**अक्कोहण.** त्रि० ( अक्रोधन ) लुअो “ अक्कोहण ” शब्द देखो ‘ अक्कोहण ’ शब्द. Vide “ अक्कोहण ” उत्त० ११, ५;

**अक्ख.** पुं० ( अक्ष ) गाडीनी धरी. गाडी का धुरा. An axle of a car. उत्त० ५, १४; सूय० १, ७, ३०; २, १, ५६; भग० ७, ६; ओघ० नि० ८, ५४६; ओव० ४०; अणुजो० १०; ( २ ) रभवाना पासा. खेलने का पासा. a die to play with. सूय० २, २, २३; पि० नि० भा० ७; विशेष० ५८२; ( ३ ) रुद्राक्षनी मणुके. रुद्राक्ष का मनका. a bead of Rudrākṣa ( a kind of tree ). अणुत्त० ३, १; ( ४ ) चार हाथ परिमित अेक अणुत्त० धनुष्य. चार हाथ प्रमाण धनुष्य. the length of a bow. भग०

६, ७; सम० ६६; अणुजो० १३३;  
 ( ५ ) ७५; आत्मा जीव, आत्मा a soul.  
 “जीवो अकखो अत्थवावयवभोयणगुणाणि-  
 ओपण” विशेष० ८६; ( ६ ) छंदिय. इन्द्रिय a  
 sense; an organ. विशेष० ६१; १५६७;  
 निसी० ७, १४,—उवंग न० (—उपाङ्ग-  
 अकख्य धुर उपाङ्गोऽभ्यञ्जनम् ) गाडीनी  
 धरीने तेल वगेरे योपडवाभां आवेछे ते.  
 गाडी के धुरे में जो तैल आदि चुपड़ा जाता  
 है वह. oil etc. used for lubricat-  
 ing the axle of a cart. गच्छा०  
 ५८;—चम्म न० (—चर्मन् ) पाणी डाढवानो  
 डेश. पानी निकालने की चरस a large  
 leather bucket for drawing  
 water. “अकखचम्मं उट्ठगंडदेसं” नाया०  
 ६; ८,—वाडग. पुं० (—पाटक ) योरस  
 आसन; आब्बेड चौकी. a square stool.  
 “तेसिणं बहुमज्झदेसभाए पत्तेयं २ वहरा-  
 मया अकखवाडगा पणत्ता” जीवा० ३,  
 ४,—सुत्तमाला स्त्री० (—सूत्रमाला ) ३६-  
 क्षनी भाला. रुद्राक्ष की माला a rosary  
 having Rudrākṣa beads. “अकख-  
 सूत्तमाला विव गाणिज्जमाणेहि” अणु-  
 जो० ३;—सोय. न० (—स्रोतस् ) आडीनी  
 पैडीनी धरीनुं आंहुं—छिद्र. गाडी के धुरे  
 का तिरछा छेद. a slanting hole in  
 the axle of the wheel of a  
 cart. भग० ७, ६; जं० ५० २, ३६;  
 अकखइय. त्रि० (अक्षतिक) अक्षय; अविनाशी  
 अविनाशी; नाश न होने वाला Undecay-  
 ing, indestructible. “अकखइयवी-  
 णुणं अप्पाणं कम्मबंधणेणं मुहरि” परह०  
 १, २;  
 अकखओदय त्रि० (अक्षयोदक-अक्षयं शाश्व-  
 तमविनाशयुदकं जल यस्य) अणुट पाणीवाणु;  
 सदय पाणीथी लरेनु अखट पानी वाला;

सदा पानी से भरा रहने वाला Ever filled  
 with water. “जहा से सयंभूरमणे  
 उदही अकखओदय” उक्त० ११, ३०,

अकखओवसम पुं० (अक्षयोपशम) क्षयोपश-  
 मतो अभाव; कर्मना उदितभागनो क्षय अने  
 अनुदितभागनो उपशम ते क्षयोपशम, तेनो  
 अभाव. क्षयोपशम का अभाव; कर्म के  
 उदितभाग के क्षय और अनुदितभाग के  
 उपशमको क्षयोपशम कहते हैं उसका अभाव.  
 Absence of Kṣayopāśama ī. e.  
 destruction of that portion of  
 Karma which is ripe for fruit  
 and subsidence of that which  
 is not yet ripe. विशेष० १०४;

अकखण न० (आख्यान) उट्टेनु; आख्यान  
 उट्टेनु कथा कहना. Narration पि० नि०  
 भा० ५०४,

अकखम त्रि० (अक्षम) असमर्थ; अनुयित;  
 अथेअय असमर्थ, अयोग्य Powerless,  
 improper ठा० ३, ३, ५, १;

अकखमा स्त्री० (अक्षमा) क्षमानो अभाव;  
 सहनशीलता नहि. क्षमा अथवा सहनशीलता  
 का अभाव Absence of forgiveness,  
 want of patience. भग० १२, ५,  
 सम० ४२,

अकखय. पुं० (अक्षत) अक्षत—अक्षीशुद्ध योभा  
 पूर्ण (सावुत) चावल Unbroken grains  
 of rice. प्रव० १३४६, पचा० ४, १०,  
 (२) त्रि० परिपूर्ण; अणुड. परिपूर्ण, अखड.  
 whole. सम० १,

अकखय त्रि० (अक्षय) अविनाशी; अक्षय; नाश  
 नहुना नाश रहित, अविनाशी, अक्षय Unde-  
 caying; imperishable. नाया० १, ७;  
 सम० १; ७; भग० १, १, ६, ३३; १८, १०;  
 ओव० १, राय० २३; जीवा० ३, ४, सु० च०  
 ३, १८४, पचा० ४, ४७, काप० २, २४, अज०

६, ११,—आचारचरित त्रि० (—आचार-  
चरित) अ० आचार-चरितवाणु. अखंड  
आचार-चरित वाला of unbroken,  
uninterrupted right conduct  
आव० ४, ८,—गिहि पु० (—निधि) अक्षय  
भंडार; अ० भंडार अखंड भंडार, अक्षय भं-  
डार inexhaustible treasure. “अ-  
क्षयगिहि च अणुवद्वेस्सामि” विवा० १, ७, ना  
या० २,—गीवि स्त्री० (—नीवि-निव्ययति  
निवीयते वेति) अ० मुडी अक्षय पूंजी  
inexhaustible wealth. नाया० २,  
—तईया स्त्री० (—तृतीया) अ० आत्री,  
वैशाख सुदि ३ अक्षयतृतीया, वैशाख सुदि ३  
the third day of the bright-half  
of the month of Vaisākha सू०  
प० १२,—सुख न० (—सुख) शश्वत सुभुत  
स्थान; मोक्ष शाश्वत सुख का स्थान, मोक्ष  
final emancipation permanent  
bliss भक्त० ६६,

अक्षर न० (अक्षर) स्वर व्यंजनरूप अक्षर  
भाषा स्वर व्यंजनरूप वर्णमाला Letters  
of the alphabet consisting of  
vowels and consonants क० प० ४,  
६; क० ग० १, ६, राय० १७०, पञ्च० ३६,  
ओव० १६, ४३, विशेष० ६७, ४६१, अणुजो०  
१३, १४६; ( २ ) सजाक्षर, व्यंजनाक्षर  
अने लघ्विअक्षर अक्षरश्रुतना त्रय भेद-  
माने अक्षर सजाक्षर, व्यंजनाक्षर और लघ्वि-  
अक्षर में से कोई भी एक; अक्षरश्रुत का एक भेद  
one of the three kinds of Aksara  
Śrutas “से कि तं अक्षरमुयं २ तिविहं  
पञ्च तंजहा—सज्जवखरं वंजणवखरं लघ्विअक्षर”  
नदी० ( ३ ) अथल; अविनश्वर अविचल;  
अविनाशी constant, indestruc-  
tible विशेष० ४५७,—अणुसार. पु०  
(—अनुसार) अ० अथने अनुसरु ते श्रुत-

शास्त्र का अनुसरण acting according  
to scriptural texts विशेष० १४४;  
—उवलंभ पु० (—उपलभ) श्रुतज्ञानने  
उपयोग श्रुतज्ञान का उपयोग use of  
scriptural knowledge विशेष० ४६६,  
—गुण पु० (—गुण) अनंतागमा, पर्याय,  
उच्चार वगैरे अक्षरना गुण. अनंतागम, पर्याय,  
उच्चार वगैरे अक्षर के गुण any of the  
properties of letters such as Ana-  
ntāgama, Paryāya, Uchchāra  
etc सू० १, १, १, ६,—पुट्टिया स्त्री० (—पु-  
ष्टिका) अक्षर लिपिमांसी ९वीं लिपि. अठारह  
लिपियों में से ९वीं लिपि का नाम the 9th  
of the 18 scripts पञ्च० १,—पभव.  
त्रि० (—प्रभव) अक्षरना उच्चारणी उत्पन्न थगु;  
अक्षर उच्चारण अक्षर के उच्चारण से उत्पन्न  
होने वाला produced by the sound  
of letters विशेष० १६७,—लंभ. पु०  
(—लभ) शब्दनी जति, अर्थ वगैरे ज्ञान  
शब्द की जाति, अर्थ वगैरे का ज्ञान know-  
ledge of gender, meaning etc.  
of words “अक्षरलंभो सरणी ग होज्ज  
पुरिसाडवरणविणायण” विशेष० ६०, ११७;  
१४३, ४७४,—लभ पु० (—लभ) लुभो  
“अक्षरलंभ” शब्द देखो “अक्षरलंभ”  
शब्द vide “अक्षरलंभ”. विशेष० १२५,  
—संवद्ध पु० (—सम्बद्ध) जे शब्दमां अक्षर  
—वर्ण व्यंजन-स्वर होय ते जिस शब्द में  
अक्षर स्पष्ट हो वह a word in which  
the letters are clear or distinct  
ठा० २, ३,—सरिणवाय पु० (—सन्निपात)  
अक्षराने सयोग, अक्षरानुं जेडाणु अक्षरों  
का सयोग combination of letters  
“अजिणायं जिणसंकासाणं सम्बवखरस-  
रिणवायाण” ठा० ३, ४,—सम न० (—सम)  
सम, दीर्घ, श्रुत वगैरे जे अक्षर जेवा होय



तेवे। भेदवे। ते, गेयस्वरविशेष अक्षरों का शुद्ध उच्चारण, गेय ( गाने का ) स्वर विशेष phonetic pronunciation of a letter अणुजो० १२८; ठा० ६, १; —समास पुं० ( —समास ) अक्षरों के अक्षरों के परस्पर संयोग combination of two or three or more letters क० गं० १, ७, —सुय पुं० ( —श्रुत ) श्रुतज्ञान के अनेक भेद a variety of Śrutajñāna ( scriptural knowledge ) नंदी० ३७,

अक्षरत्रय पुं० (अक्षरक) दास, गुलाम. दास, गुलाम A servant, a slave गोवाल्लय भयण्डकवरण पुत्ते य धूय सुगहाए”पि० नि० ३६७;

अक्षरलिङ्ग-य त्रि० (अस्खलित) अस्थिर, स्पष्ट, योद्धुं, अस्खलित, स्पष्ट Without a break, clear, fluent पंचा० ४, २७; अणुजो० १३ —चरित्र त्रि० (—चरित्र) जेतुं चरित्र अस्थिर छे ते अस्थिर चरित्र वाला of unbroken or unswerving right conduct गच्छा० ४१;

अक्षरवाच्य-य पुं० (अक्षपाद) न्यायदर्शन के प्रणेता अक्षपाद नाम का आचार्य, गौतम मुनि न्यायदर्शन का रचयिता अक्षपाद नामक आचार्य, गौतम मुनि The name of the founder of the Nyāya philosophy is the preceptor named Aksapāda विशे० १५०८,

अक्षविषय त्रि० (अक्षपित) क्षय करने नहि, अपावेक्ष नहि नष्ट नहीं किया हुआ Not destroyed विशे० ५२६,

✓ अक्षवा. धा० 1 (आ-ख्या) डहेलुं, डथन डहुं,

निरूपण डरवु कहना; कथन करना, निरूपण करना To narrate, to tell, to relate अक्षवाड हे० कृ० भग० २, १; दस० ८, २०, अक्षवाडय न० (आख्यातिक) साध्य क्रियापद (यथाऽकरोत् करोतीत्यादि) साध्य क्रियापद.

An inflected verb परह० २, २, अक्षवाड्या स्त्री० (आख्यायिका) वार्ता, इतिहास कथा—इतिहास कहानी; दंतकथा A legend, a fable पञ्च० ११, मम० ६, आया० २, ११, १७०, (य) —ठाण न० (—स्थान) कथा, वार्ता—इतिहास स्थान कथा, कहानी कहने की जगह a place where tales or stories are narrated आया० २, ११, १७०, (य) —लिखित न० (—निश्चित) इतिहास आश्रित लुहालुं, भूपा—लुहने नयने भेद दंतकथा पर अवलम्बित झूठ, झूठ का नवों भेद falsehood based upon a legend, ninth variety of falsehood निरी० १२, ३२, ठा० १०, १, प्रव० ८६६,

अक्षवाडग पु० (अक्षवाट-अक्षवाट) अभाडा-मंझाने कुस्ती डरवानी जगह; प्रेक्षकाने भेसवाने ओटलो, मंझाने स्थान पहलवानों की कुस्ती करने की जगह, अखाडा, दर्शकों के बैठने का चबूतरा, मजलिस का स्थान A gymnasium, a verandah for spectators, a place where a festival is held “तेस्विणं बहुसमरमणिज्जाण भूमिभागाणं बहुमज्झदेसभाणं पत्तेयं रवहरामणं अक्षवाडगे” राय० ६७, भग० ६, ५, ३, ३, ठा० ३, ३;

अक्षवाय त्रि० (आख्यात) डहेलुं; पस्तेलुं; प्रकाशित, प्रकटित Told, related, revealed “सति मेव दुवे ठाण अक्षवाया मारणति य” उत० ५, २, “सुय मे जाउस तेण भगवया एमवयायं” ठा०

१, १; उत्त० ८, १३; २४, ३; आया० १, १, १, १; दस० ६, ४, १; भग० २, १; ६, १; १२, ४; विवा० १; दसा० १, २; सम० १; ओव० ३५;—आयार त्रि० (—आचार) आ०यात आ०यार वाणे. आख्यात आचार वाला. ( one ) of unbroken right conduct. वव० ३, ३;—पव्वज्जा. स्त्री० (—प्रवज्या—आख्यातेन धर्मदर्शनेन प्रवज्या ) धर्मदेशना सांख्यी भोध पाभीते दीक्षा लेवी ते; प्रवज्याने ओ३ भेद. धर्मोपदेश के श्रवण से बोध प्राप्त कर दीक्षा लेना; प्रवज्या का एक भेद. renouncing worldly life as a result of religious teaching; one of the modes of entering religious order. ठा० ३, २; ४, ४;

**अक्खायग.** पुं० ( आख्यायक ) शुभाशुभ क्षल डहेनार; निमित्त प्रकाशक. शुभाशुभ फल कहने वाला; निमित्त ज्ञानी. One who foretells the good or bad consequences of omens. जीवा० ३, ३;

**अक्खायार.** पुं० ( आख्यातारः—आख्यातृ ) डहेनार; डथन डरनार कहने वाला. A teller. “ पुटो पावाउया सव्वे अक्खायारो सय सयं ” सूय० १, १, ३, १३,

**अक्खि** न० ( अक्षि—अश्नुते विषयानिति ) नेत्र; यक्षु; आं० नेत्र; आंख. An eye. “ अक्खिहिं य णासाहिं य जिब्भाहिं ओट्ठेहिं य ” विवा० १, २, नाया० १,—अंतर न० (—अन्तर) आं०नु छिद्र. आख का छेद the pupil of the eye “ अक्खिन्तरेसु दुवे ” विवा० १, १;—राग. पुं० (—राग) आं०नु अंजन सेयरा आदि आखो का अंजन collyrium for the eye “ आसूणि मक्खिरागं च गिद्धुवघाय कम्मगं ” सूय० १, ६, १५.—वेयणा स्त्री०

(—वेदना) आं०नी पीडा—वेदना; आं०ने रोग. आंखों का रोग; आंख की वेदना—पीडा. pain in the eye; an eye-disease. विवा० १, ४;

**अक्खित्त.** त्रि० ( आक्षिप्त ) आ०र्षणु डरेल; भेयेल आकर्षित; खीचा हुआ. Attracted. पि० नि० ३१३; नाया० १६; ( २ ) ललया-वेल; लालय आपेल. लालच में फँसा हुआ; जिसे लालच दिया गया हो वह enticed. नाया० २; ( ३ ) भुडी दीधेल; डूँडी दीधेल; त० दीधेल छोड़ दिया गया; फेंका हुआ. abandoned; thrown away. पंचा० १२, ४१;

✓ **अक्खिव.** धा० I. ( आ+क्षिप् ) आक्षेप डरेवा; आ०र्षणु डरेयुं आक्षेप करना, आकर्षण करना. To attract. ( २ ) स्वीकारयुं. स्वीकार करना. to accept.

**अक्खिवह.** “ अक्खिवह मणं विसमत्थसत्थ-सुहुमत्थकहणेण ” सु० च० २, ३८०;

**अक्खिवरण.** न० ( आक्षेपण ) चित्तनी व्यग्रता-आकुलता डरपी. आकुलता; चित्त की व्यग्रता. Distraction of the mind. परह० १, ३;

**अक्खीण.** त्रि० ( अक्षीण ) क्षय न पाभेयुं; पु३ न थयेयुं अधूरा; क्षय को न पहुँचा हुआ. Not completely consumed; unexhausted “ अक्खीणदव्वसारा ” परह० १, ३; ठा० ४, १,—भं०. त्रि० (—भं०) नेले डलेशने क्षय नथी डयेा ते. जिसने क्लेश का क्षय न किया हो वह one who has not put an end to troubles. दस० ६, १, ११;—पडि-भोइ. पुं० (—परिभोगिन्—अक्षीणमक्षी-णायुष्मन्प्रासुकं परिभुञ्जत इत्येवं शीला अक्षीण परिभोगिनः ) सयेत आहार लेनार. मनेन आहार करने वाला one whose



अथोग्गभूमि.ऊसरभूमि Salt, unfertile land. ठा० ४, ४;—वासि. त्रि० (—वर्षिन्) उपर नमीनमां वरसनार ऊसर भूमि में बरसने वाला. (rain) pouring on barren land. ठा० ४, ४, ( २ ) पात्रा पात्रनी पगीक्षा विना दान देनार. पात्राऽपात्र की परीक्षा के विना दान देने वाला (one) who gives alms without discrimination. ठा० ४, ४;

अक्खेव. पुं० ( आक्षेप ) पूर्वपक्ष, आशंका डरी पुछुं ते; प्रश्न. पूर्वपक्ष; शंका करके प्रश्न पूछना. Stating one's doubts and objections as to the soundness of a reasoned principle “तस्सक्खे-वपमोक्खं च अचयंतो तहि दिओ ” उत्त० २५, १३; भग० १, २, विशेष० १४४४, २००५; ( २ ) गीज्जना हाथमाधी द्रव्यनुं हरणुं डरुं ते; गौणचोरीना १९ मे भेद दूसरे के हाथ में से द्रव्य चुराना; गौणचोरी का १९ वाँ भेद. the 19th variety of minor theft viz snatching away anything from the hands of another person परह० १, ३;

अक्खेवणी. स्त्री० ( आक्षेपणी—आक्षिप्यते मोहा-त्तत्त्वं प्रत्याकृष्यते श्रोताऽनचेत्याक्षेपणी ) नेथी श्रोतानुं तत्त्व प्रत्ये आकर्षणुं थाय तेवी धर्मइथा; आर धर्मइथामानी ओड. धर्मकथा, जिससे श्रोताओं का तत्त्व का ओर आकर्षण हो; चार प्रकार की धर्मकथाओं में से एक Religious preaching which begets love for eternal truth in the hearers, one of the four varieties of religious preaching “अक्खे-वणीकिहा चउव्विहा पन्नत्ता तंजहा—आयार-क्खेवणी ववहारक्खेवणी पणत्तिक्वेवणी दिट्ठिवायक्खेवणी” ठा० ४, २; ओव० २१;

अक्खेवि त्रि० ( आक्षेपिन् ) वशीकरण आदि-थी पारुं द्रव्य हरनार वशीकरणादि से दूसरे का द्रव्य हरण करने वाला. One who takes away the wealth of another by means of fascination or enchantment. परह० १, ३;

✓ अक्खोड. धा० I. ( आ०स्फुट् ) वस्त्रादिकने अधर राप्पी थोडुड अटकुं—पंभेरुं. वस्त्रादि को अधर रखकर थोडासा फटकना—खंखेरना. To flap clothes etc; to whisk. अक्खोडिजा. वि० दस० ४;

अक्खोड. पुं० ( अक्षोट ) अक्षरोटनुं अड. अखरोट का फाड़. A walnut tree. ( २ ) न० तेनुं इण अखरोट. the fruit of a walnut tree. पम्प० १७; प्रव० ६६;

अक्खोभ. त्रि० ( अक्षोभ ) क्षोभ रहित; निश्चल, अग्न चोभ रहित; निश्चल. Un-agitated; firm “अक्खोभे सागरो व्व-यिमिण्” परह० २, ५; एत्थुस्सग्गो अक्खोभो होई जिण चियण्णो ” पंचा० ४, २८, जं० प० ३, ४२; नंदी० ११; ( २ ) अंतगड सूत्रना पहिला वर्गना आठमा अध्ययननुं नाम अंतगड सूत्र के पहिले वर्ग के आठवें अध्याय का नाम. the 8th chapter of the first section of Antagada. अंत० १, ८; ( ३ ) अंधकवृष्णि राजनी धारणी राणीना पुत्र, डे ने नेमनाथ प्रभु पासे दीक्षा लध गुणरयण तप डरी सोण वर्षनी प्रव-न्था पाणी ओड भासनो संथारो डरी शत्रुंजय उपर सिद्ध थया. अंधकवृष्णि राजा को धारणी रानी का पुत्र, जिसने नेमनाथ प्रभु से दीक्षा ली थी और गुणरयण तप करके तथा सोलह वर्ष तक दीक्षित अवस्था में रहकर अंत में एक मास का निरशन किया और शत्रुंजय ऊपर मोक्ष प्राप्त किया. the son of Dhā-ranī the queen of Andhaka

Vrisni, who took Diksā from Neminātha, observed Gunarayana penance, practised Pravrajyā (asceticism) for 16 years, gave up food and drink for one month, and obtained salvation on Śatruñjaya अत० २, १,

**अक्खोवञ्जण** न० ( अक्षोपाञ्जन-अक्षस्य उपाञ्जनमक्षोपाञ्जनम् ) गाडानी धरीने तेल आदि पदार्थ पोषया ते गाडी के धुरे को जो तैल आदि लगाया जाता है वह Oil etc used for lubricating the axle of a cart भग० ७, १;

**अक्खोह** त्रि० ( अक्षोभ ) लुओ " अक्खोभ " शब्द देखो " अक्खोभ " शब्द Vide " अक्खोभ " नाया० ६;

**अखड** त्रि० ( अखण्ड ) अखंड-परिपूर्ण, भागेलुं-तुटेलुं नहि साबुत, अखड, परिपूर्ण Entire, unbroken प्रव० ८४६, पंचा० ४, ३४, नंदी० स्थ० ४०; नाया० ७;—**चारित्त** न० ( -चारित्र ) अखंड-निर्दोष चारित्र निर्दोष चारित्र faultless right conduct, unswerving right conduct प्रव० ८४६, —**दत्त** त्रि० ( -दन्त ) जेना दातनी यत्रीसी अखंड होय ते, परिपूर्ण दांतवाणे अखंड दातो की बत्तीसी वाला; परिपूर्ण दातो वाला ( one ) who has not lost any tooth जीवा० ३, ओव०—**महव्वञ्ज** त्रि० ( -महाव्रत ) अखंडित महाव्रत वाणे अराडित महाव्रत वाला ( one ) of unswerving ascetic vows भक्त० २५; —**विरइभाव** पुं० ( -विरतिभाव ) परिपूर्ण विरतिपायु, सर्व विरतिपायु पूर्ण विरतिपन, सर्व विरतिपन complete asceticism

or renunciation पंचा० १, ३३, **अखंडिय** त्रि० ( अखण्डित ) लुओ " अखंड " शब्द देखो " अखड " शब्द. Vide " अखड. " प्रव० ५८८;

**अखंपण** त्रि० ( अमल ) साफ, स्वच्छ. साफ. Clear, clean सु० च० २, ५६८;

**अखज्ज** न० ( अखाद्य ) अपाण, अपावने अयोग्य पदार्थ अभक्ष्य; न खाने योग्य A substance unfit for eating. नाया० १६;

**अखाग.पु०** ( आख्याक ) ओ नामने ओइ अनार्य देश एक अनार्य देश का नाम. Name of an Anārya country. प्रव० १५६७;

**अखिल** त्रि० ( अखिल ) आभु, संपूर्ण, समस्त; अधुं समस्त, सम्पूर्ण Whole, entire. " अखिले अगिद्धे अणिएयचारी " सूय० १, ७, २८;

**अखेम** त्रि० ( अक्षेम ) उपद्रव सहित. उपद्रव सहित Not free from annoyance. ठा० ४, २, दसा० ७, १२;—**रूव पुं०** ( -रूप ) उपद्रव सहित देभाव-आकार उपद्रव सहित दृश्य-आकार. ( a form or appearance ) with marks of trouble upon it ठा० ४, २;

**अखेयरण** त्रि० ( अखेदश ) भीजना दुःखने न जणुनार-अनभिस दूसरे के दुःख को न जानने वाला-अनभिज्ञ Ignorant of or unsympathetic towards the sufferings of others आया० १, २, ३, ८०,

**अगइ** स्त्री० ( अगति ) अभ्रशस्त गति, नरक आदि गति कुगति, नरक गति Perdition; damnation " दुविहा खेरइया पणत्ता तंजहा-गइसमावज्जगा चेव अगइसमावज्जगा चेव जाव वेमाणिया " ठा० २, २;

—समावरण. पुं० (—समापन्न ) नरकादि गतिने पाभेक्ष. नरकादि कुगति को प्राप्त. gone to perdition. ठा० २, २;  
**अगंठिल्ल. त्रि०** (अग्रन्थिमत् ) गांठ वगरनुं विना गांठ का; गांठ रहित. Without a knot; devoid of knots. भग० १६, ४;  
**अगंतूण. सं० कृ०** अ० ( अगत्वा ) गया विना; न लधने विना गये; न जाकर. Without having gone; without going. पन्न० ३६;  
**अगंध. पुं०** ( अग्रन्ध-न विद्यते ग्रन्थो बाह्याभ्यन्तरोऽस्येत्यग्रन्धः ) निर्ग्रन्थ; साधु. निर्ग्रन्ध; परिग्रह रहित साधु. A Sādhu; an ascetic. “पावं कम्मं अकुव्वमाणे एस महं अगंध वियाहिण्” आया० १, ८, ३, २०७; जं० ५० १, ३१;  
**अगंध. त्रि०** (अग्रन्ध) गंध रहित; गंधविनाजुं. गंध रहित; विना बास का. Devoid of smell. भग० २, १०; ११, १; २०, २०;  
**अगंधण. पुं०** (अग्रन्धन ) सर्पनी अेक जात, के जे आगमां भणवानुं पसंद करे पणु अेर पाधुं थुसे नहि. सर्प की एक जाति, जो अग्नि में जलना पसंद करे पर जहर को पीछा न चूसे. A species of serpents which would never suck back poison even if fire is applied to them. “नेच्छंति वंतयं भोचुं कुले जाया अगंधणे” दस० २, ६; उत्त० २२, ४२;  
**अगड. पुं०** (कूप ) झूला. कूप; कूआं, A well. आया० २, १, २, २१; भग० ५, ७; ८, १; पन्न० २; नाया० ८; १६; ठा० २, ४; ओव० ३८; पिं० नि० भा० १७; ओघ० नि० ६६; विशेष० ७६४; अणुजो० १३४;—**तड. पुं०** (—तट ) कुवाणे डांडा. कूप का तट. A border of a well नाया० ८; १६;  
**—ददुर. पुं०** (—दूर) कुवाणे देडा कूप-

मंडक; कूप का मंडक. a frog in a well. नाया० ८; १६;—**मह. पुं०** (—मह) कुवाणे भोत्थवः उपनिमित्ते महोत्सव कूप का महोत्सव. a festival in connection with a well. आया० २, १, २, १२;

**अगड. त्रि०** (अगत-अज्ञात) न ज्ञाते. बे मालूम; न जाना हुआ. Not known; unknown. वव० ६, १४,—**सुय. त्रि०** (—श्रुत) आचारंग, निशीथ आदि सूत्रों जे जे अभ्यास किये नथी ते. आचारंग, निशीथ आदि सूत्रों का जिसने अभ्यास न किया हो वह. one who has not studied Sūtras (e.g. Āchārāṅga, Nīśītha etc.). वव० ६, १४;

**अगडदत्त. पुं०** ( अगडदत्त. ) शंखपुरना सुंदर राजनी सुलसा राजाणी पुत्र, के जेने पोतानी स्त्री मदनमंजरीनुं दुश्चरित्र जेध वैराग्य उत्पन्न थयो हुतो तेनी विस्तृत कथा उत्त० ४ अ० नी टीका में छे. शंखपुर के सुंदर राजा की सुलसा राणा का पुत्र, जिसको अपनी पत्नी का दुश्चरित्र देखकर वैराग्य उत्पन्न हुआ था. इसकी विस्तृत कथा उत्त० ४ अ० की टीका में है. The name of a son of Sulasā queen of Sundara, the king of Śaṅkhapura, who became an ascetic on knowing the bad character of his wife Madana-mañjarī (for details of this vide Uttarādh. ch. com. 4th ). उत्त० टी० ४;

**अगदिय. त्रि०** (अग्रथित) प्रतिग्रन्ध वगरने; आहारादिमां अग्रद्ध-अनासक्त प्रातिबन्ध रहित; आहारादि में लोलुपता रहित Without restrictions; free from restrictions; free from craving for delicious food etc. “अण्णा-ए अगदिए अदीणे अविमणे ” परह० २, १;

अगणित व० कृ० त्रि० ( अगणयत् ) न गणु-  
रतो. न गिनता हुआ Not minding;  
not caring for. भक्त० ११५,

अगणि पुं० ( अग्नि ) अग्नि; आग,  
अग्नि. Fire “ इंगालं अगणि अचिच  
अलायं वा सजोह्यं ” दस० ८, ८; १०,  
१, २, पञ्च० २, पिं० नि० २५६, आया० २,  
१०, १६६, विशेष० ५६८,—काय-अ पुं०  
(-काय ) अग्निना ज्व, तेजस्काय अग्नि के  
जीव, तेजस्काय के जीव. creatures with  
bodies of the element of fire  
“अगणिकाएण भते, अहुणो ज्जालिए समाणे  
महाकम्मतराए चैव” भग० १, ८; ५, ६; ६,  
६; ७, १०; ८, ६; १४, ५, १५, १;  
१६, १, १८, ६; १६, ५; नाया० १४, १६,  
आया० १, ७, ३, २१०, दसा० ७, १;  
—ज्झामिय त्रि० ( -ध्मात् ) अग्निथी  
द्विजेल-अजेल अग्नि से झुलसा हुआ-जला  
हुआ scorched by fire भग० १५, १;  
—ज्झूसिय त्रि० ( :-जोपित ) अग्निथी  
सेवाजेल अग्नि से गर्म किया हुआ heat-  
ed with fire भग० १५, १,—ज्झूसिय  
त्रि० ( \*-जोपित ) अग्निथी अजेल-रूपांतर  
पाभेल अग्नि से जला हुआ-रूपान्तर पाया हुआ  
transformed on account of be-  
ing heated with fire भग० १५, १,  
—णिक्खित्त त्रि० ( -निक्षिप्त ) अग्निनी  
अदर नाजेलु अग्नि में डाला हुआ thrown  
into fire “अगणिणिक्खित्तं अफा-  
सुय अरोसणिज्जं लाभे सते णो पडिगाहेज्जा”  
आया० २, १, ६, ३६;—परिणामिय. त्रि०  
(-परिणामित ) अग्निरूपे परिणाम पमा-  
जेल अग्निरूप में परिणामित transfor-  
med into fire भग० ५, २, १५, १,  
—सेविय त्रि० ( -सेवित ) अग्निथी  
सेवाजेल अग्निद्वारा उष्ण किया हुआ

heated with fire. भग० ५, २;  
अगणिय सं० कृ० अ० ( अगणित्वा ) न गणु-  
क्षरीने, अवगणुना क्षरीने न गिनकर, अवग-  
णना करके Having disregarded,  
having despised भक्त० १३८;

अगणेमाण व० कृ० त्रि० ( अगणयत् ) नहि  
गणुक्षरतो वेपवाह Not minding.  
नाया० ६;

अगत्थि पुं० ( अगस्ति ) ओ नाभतो ८८ अह-  
भांनो ४५ भो अह ८८ ग्रहों में से ४५ वें ग्रह  
का नाम Name of the 45th of the  
88 planets. ठा० २, ३, सू० प० २०,

अगत्थिय पुं० ( अगस्ति ) अगत्थियानु आउ;  
ओ आउने धोला तथा राता फुलो आवे छे,  
ओना पातरा आबलीनां पातरा जेवां होय छे  
अगस्त का झाड़, इस झाड़ के सफेद और लाल  
फूल होते हैं तथा इमली के समान पत्ते होते  
हैं A kind of tree with white  
and red flowers and leaves like  
those of a tamarind tree अणुत्त०  
३, १;

अगम न० ( अगम ) आकाश आकाश Sky,  
ether. भग० २०, २,

अगमिय न० ( अगमिक ) जेना पाठ-गाथा  
वगेरे परस्पर सरभा नथी ओवु श्रुत, आ-  
आरागादि धादिध श्रुत वह श्रुत ( शास्त्र ),  
जिसके पाठ, गाथा वगैरह परस्पर समान न  
हो, आचारागादि कालिक श्रुत A scripture  
in which the Gāthās etc are  
not harmonious in form, e g.  
Āchāṅga etc “ अगमिय का-  
लियसुयं ” नदी० ४३; विशेष० ५४६;

अगम्म त्रि० ( अगम्य ) नयाने योग्य नहि ते  
न जाने योग्य, पहुंच से बाहिर Unfit for  
restorting to. पणह० १, २, ( २ ) छां०  
गतिहीन अथवा योग्य नहि ते, भा गहेन वगेरे.

रतिक्रीड़ा के अयोग्य; मा, वहिन आदि those with whom sexual connection is prohibited, e. g. a mother, a sister etc परह० १, २, —गासि पु० (—गामिन्) मा, पडेन वगेरे साथे व्यभिचार सेवनार मा, वहिन वगैरह के साथ व्यभिचार करने वाला. an incestuous person. परह० २, १;

**अगय.** त्रि० (अगत) नहि गयेल नही गया हुआ Not gone. भग० ८, ७; ११, १०;

**अगर** पु० (आकर) भाषु-जेभाथी सोनु, रूपु वगेरे अनिष्ट पदार्थ तीक्ष्ण ते खान A mine, e. g. of gold, silver etc. अणुजो० १३१; (२) भीक्षना अगर निमक की क्यारी. a salt pan अणुजो० १३३;

**अगर** पुं० (अगर) अगर-ओड नततो धूप-सुगंधी पदार्थ. अगर धूप, A kind of incense, अणुजो० १३३;

**अगरला.** स्त्री० (अगरला) जे वाणीनी अदर अक्षर, अर्थ वगेरे स्पष्ट होय ते वाणी स्पष्ट अक्षर और अर्थ वाली वाणी Distinct and perspicuous speech “अगरलाए अमम्मणाए सच्चक्खरसखिणवायाए” (‘अगरलाएत्ति’ सुविभक्ताक्षरतया) ओव० ३४;

**अगरहिय** त्रि० (अगर्हित) जेणे पापनी गर्हा-निंदा नथी करेले ते जिसने पाप की निंदा न की हो (One) who has not expressed censure for sins परह० १, २,

**अगरिह** त्रि० (अगर्ह्य) अनिष्ट; निंदाते योग्य नहि ते निंदा के अयोग्य, अनिष्ट Unworthy of censure or blame. “तहाविसे अगरिहे अचेले जे समाहिण” आया० १, ८, ८, १४,

**अगरु.** न० (अगरु) अगरयंदन; ओड नततो सुगंधी पदार्थ. अगर; एक जाति का सुगन्धित

पदार्थ. Aloe wood, a kind of fragrant sandal wood. “कुठं तगर अगुरुं संपिष्टं सम्मसुरिरेणं” सूय० १, ४, २, ८; जावा० ३, ४, —गंधिय त्रि० (—गन्धित) अगर यन्दनतो धूप आपेले अगरचन्दन से धूप दिया हुआ. perfumed with the incense of sandal wood etc तरडु०—पुड पुं० (—पुट) अगरतो पुडो. अगर का पुडा a packet of aloe wood. “अगरुपुडाण वा लवंगपुडाणं वा वासपुडाणं वा” जं० प०—वर पुं० (—वर) कृष्णागर, डाणो अगर कृष्णागर, काला अगर, black aloe wood. नाया० १७;

**अगरुलहु** त्रि० (अगरुलघु) जुओ “अगरुलहु” शब्द देखो ‘अगरुलहु’ शब्द Vide “अगरुलहु” क० गं० १, २५;

**अगलुअ** पुं० (अगरुक) अगर, कृष्णागर. अगर; एक जाति की सुगन्धित लकड़ी. Black aloe wood ओव० ३८;

**अगविह्व** त्रि० (अगवेषित) आहारादिनी गवेषणा-तपास नहि करेले विना खोजा हुआ आहारादि Not sought or searched (e. g. food etc) “अगविह्वस्स उ गहणं न होई न य अगाहियस्स परिभोगो” पिं० नि० ७८;

**अगवेसिय** सं० कृ० अ० (अगवेषित्वा) गवेष्या विना; शोध-तपास कर्या अगर विना खोजे. Without having searched निस्सी० २, ४८; ४, १६, ६, ७, १५, ३४,

**अगहण** त्रि० (अग्रहण) जे पुद्गल वर्गणा औदारिकादि शरीररूपे ग्रहण न थई शके ते जिस पुद्गल वर्गण का औदारिकादि शरीर रूप से ग्रहण न होसके वह. Material molecules which are nonassimilable into the physical body. क० गं० ५, ७५;—अंतरिय. त्रि० (—अन्तरित) ग्रहण न थई शके तेवी वर्गणाने



आंतरे रहेल ग्रहण न हो सके ऐसी वर्गणा के अंतर पर रहा हुआ separated by an interval of non-assimilable material molecules. क० गं० ५, ७५;

**अगाहिय.** त्रि० ( अगृहीत ) नहि ग्रहणु करेले, अस्वीकारेले अस्वीकृत, बिना ग्रहण किया हुआ. Unaccepted. पिं० निं० ७८; प्रव० ६२७;

**अगाह.त्रि०** ( +अगाह ) तत्त्वनिष्ठ, जेले शास्त्रे अवगाहेल छे ते तत्त्वज्ञ, जिसने शास्त्रों का खूब अध्ययन किया हो वह. One who has profoundly studied the scriptures सूय० १, १३, १३; ( २ ) त्रि० ताव वगेरेनी साधारण बेदना. ज्वर वगैरह का साधारण कष्ट an ordinary physical malady such as fever etc. वेय० २, ३८;—**पराण त्रि०**(-प्रज्ञ ) तत्त्वमां निष्ठा पाभेदी जेनी प्रज्ञा-समञ्ज छे ते जिसकी प्रज्ञा-बुद्धि तत्त्वनिष्ठ हो ( one ) who has understood the eternal reality “अगाहपण्ये सुविभावियप्पा, अन्न जण पन्नसा परिहवेज्जा” सूय० १, १३, १३;

**अगामिय त्रि०** ( अगामिक ) आगल आववा वाजुं. भविष्य में होने वाला, आने वाला Arriving, pending in future नाया० १५,

**अगामिया स्त्री०** ( अगामिका ) जेनी अदर डोर्छ गांव नथी तेवी अटवी ऐसा जगल, जिसमें कोई गांव न हो A forest region in which there is no village ओव० ३६; भग० १५, १,

**अगार. पुं०** ( अगार ) धर; मकान घर. A house “ समरेसु य अगारेसु सधीसु य महापहे ” उक्त० १, २६, भग० ८, ६; नाया० १; कप्प० १, १; ( २ ) गृहस्थाश्रम, गृहवास गृहस्थाश्रम the life of a married person. भग० १५, १, ( ३ )

छुटगट; भोडण. छुटछाट, बन्धन रहित. absence of severity. भग० १५, १; ( ४ ) छुटगटवाणे धर्म, आवड धर्म. आवकों का धर्म the religion of a jain layman ओव० २७;—**दाह. पुं०** (-दाह ) धरमा आग लागवी; धर सणगजुं. घर जलना, घर में आग लगनी. catching of fire by a house. ओव० २७; आया० २, ३, ८०,—**बंधण. न०** ( -बन्धन ) पुत्र, इलत्र, धन, धान्यादि गृहस्थधन. स्त्री, पुत्र, धन, धान्य आदि का बंधन a worldly tie which binds a man to a son, wife, wealth etc “ एव समुट्ठिए भिक्खू, वोसिजा-गारबंधणं ” सूय० १, ३, ३, ७,—**वास. पुं०** (-वास ) गृहवास, गृहस्थाश्रम गृहस्थाश्रम worldly life of a married man. “ अगारवासमज्जे वसित्ता ” भग० १५, १, उक्त० २, २६; निर० ३, ४, कप्प० ७, २२७;

**अगारस्थ पुं०** ( अगारस्थ-अगारं गृहं, तत् तिष्ठन्तीति अगारस्था ) गृहस्थ, गृहस्थाश्रमी. गृहस्थ, गृहस्थाश्रमी A householder, a married man leading a worldly life पिं० निं० ३१४,

**अगारव त्रि०** ( अगौरव ) ऋद्धि वगेरेना अलिमानथी गृहित ऋद्धि वगैरह के अभिमान से रहित Free from the pride of spiritual attainments परह० २, ५;

**अगारविल्ल त्रि०** ( अगर्विष्ट ) गर्व-भेद रहित निरहंकारी Free from the intoxication of pride क० गं० १, ५६;

**अगारि पुं०** ( अगारिन् ) गृहस्थ, गृहस्थाश्रमी. गृहस्थ A married man leading a worldly life; a householder.

‘ अगारिणो वि समणा भवतु. सेवति ए तेवि-



तहप्पगारं ” सूय० २, ६, ६; उत्त० ५, १६;  
२३; दस० ६, ५८; कप्प० ६, २;—कम्म.  
न० (—कर्मन् ) गृहस्थत्वं धर्म-आचरण;  
सावध क्रिया गृहस्थ का आचरण; सावध  
क्रिया actions of a householder.  
“शिवकम्म से सेवह गारिकम्मं ए पारए होइ  
विमोयणाए ” सूय० १, १३, ११;

अगाह त्रि० ( अगाध ) अगाध-थाग वगरनुं;  
गभीर अथाह Fathomless, deep  
दस० ७, ३६, ठा० ४, ४;

अगिज्झ त्रि० ( अग्राह्य ) हाथथी लप शक्य  
नहि तेवु हाथ से न ग्रहण करने योग्य  
Incapable of being held in the  
hand “ तत्रो अगिज्झा पणत्ता, तंजहा  
समए पएसे परमाणू ” ठा० ३, २, पिं०  
नि० ५४५,

अगिणि पुं० ( अग्नि ) अग्नि देवता. अग्नि देवता  
Fire, fire god उत्त० ३६, १०६;—उष्मा-  
मिय. त्रि० (—ध्मापित ) अग्निथी धमायेलुं.  
अग्नि से चौका हुआ heated with fire  
by means of bellows भग० ५, २;  
अगिरहमाण. व० कृ० त्रि० ( अगृह्णत् ) ग्रहण  
न करतो, ग्रहण न करता हुआ. ( One )  
not taking पिं० नि० १११;

अगिद्ध त्रि० ( अगृह्ण ) आसक्त नहि-अना-  
सक्त, लोभुपी नहि अनासक्त, खानपानादि  
मे लोलुपता न रखने वाला Not addicted  
to; not enticed by, not greedy  
of food “ अगिद्धे सहपासेसु आरंभेसु  
अणिस्सिए ” सूय० १, ६, ३५, १, १, ४,  
४; दस० १०, १, १६, भग० १४, ७,  
नाया० १७;

अगिला स्त्री० ( अग्लानि ) अक्षानि-भेदेनो  
अभाव, उत्साह; छेदि. ग्लानि-खेद का अभाव;  
उत्साह; जोश. Absence of depress-  
ion; enthusiasm. “ कुज्जा भिवलू

गिलाणस्स अगिलाए समाहिए ” सूय० १,  
३, ३, २०. “ अगिलाए संगिरहह अगिलाए  
उवगिरहह अगिलाए भत्तेण पाणेण विण-  
येण वेयावडियं करेह ” भग० ५, ४, “अगि-  
लाए संगिरहमाणे अगिलाए उवगिरहमाणे”  
भग० ५, ६; “ कायव्वमगिलायओ ”  
( अग्लान्यैवकार्यम् ) उत्त० २६, १०; वव०  
२, ७; ठा० ५, १; पंचा० १५, २६; ओव०  
३४;

अगिलाण त्रि० ( अग्लान ) अक्षानि रहित;  
उत्साही, थाडविनातो ग्लानि रहित-उत्साही,  
जोशीला Buoyant in spirits, en-  
thusiastic नाया० १; ५;

अगिह त्रि० ( अगृह ) धरतो त्याग करतो  
( मुनि ). घर का त्याग करने वाला ( मुनि ).  
Houseless, ( an ascetic ) who  
has abandoned his house. कप्प०  
६, ३०,

अगिहिभूय. त्रि० ( अगृहीभूत ) गृहस्था-  
श्रमी नहि थयेल जो गृहस्थाश्रमी न हुआ हो.  
One who has not become a  
householder वव० २, १६,

अगीय. पुं० ( अगीत ) शास्त्रनो अगणु;  
अगीतार्थ शास्त्र का अज्ञान One igno-  
rant of scriptures पचा० ११, ६;  
अगीयत्थ पुं० ( अगीतार्थ ) शास्त्रनो अगणु.  
शास्त्र को न जानने वाला One ignorant  
of scriptures. जीवा० १, गच्छा०  
४६;

अगुण पुं० ( अगुण ) अगुण-अविनय, प्रमाद  
आदि अवगुण. अविनय, प्रमाद आदि दोष  
A vice like immodesty, fatuity  
etc दस० ५, २, ४१, ६, ३, ११; सु०  
च० १, ४, ( २ ) त्रि० गुण रहित; गुण  
वगरनो. गुण रहित destitute of  
virtue दस० ५, २, ४१, ६, ३, ११;

सु० च० १, ४;—प्येहि त्रि० (—प्रेक्षिन्—  
अगुणान्प्रेक्षते तच्छीलश्च यः ) अवगुणु नेवा  
वाणो; दोषदर्शी दोष-अवगुण देखने वाला.  
fault finding, captious. भग० २, १,  
दस० २, २, ४१;

अगुणतीस. त्रि० ( एकोनविंशत् ) ओगणु-  
त्रीश; २९ उनतीस, २९ Twenty-nine;  
29 क० प० २, २५,

अगुत्त त्रि० (अगुस) मन, वचन अने कायाये  
करी पापथी गुप्त-रक्षित थयेलेो नहि. गुप्ति  
रहित. गुप्ति रहित; जो मन, वचन और काया  
के पाप से रहित न हो. Not free from  
sin arising from mind, speech  
and action. उत्त० ३४, २१, आया० १, १,  
२, १४, पंचा० १६, १६,—इन्द्रिय त्रि०  
(—इन्द्रिय) नेले छद्रिये गोपनी नथी ते  
इन्द्रियाधीन; जिसने इन्द्रियों का दमन न  
किया हो one who has not subdued  
the senses नाया० ४;

अगुत्ति स्त्री० (अगुसि) गुप्तिनेो अभाव,  
मन, वचन अने कायाने पापथी अयाववानेो  
अभाव गुप्ति का अभाव; मन, वचन और  
काया को पाप से न बचाना Not forti-  
fying the senses against mental  
and physical sins “ तत्रो अगुत्तिओ  
परणत्ताओ, तंजहा-मणअगुत्ती वयअगुत्ती  
कायअगुत्ती ” ठा० ३, १, दस० ६, ५६,  
पि० नि० ६३, परह० १, २, \*

अगुरु पु० (अगुरु) अगर यदन अगर  
Aloe wood, a kind of sandal  
wood जं० प० २, २६,—वर पु०  
(—वर) कृष्णशगर कृष्णागर. black aloe  
wood नाया० १,

अगुरुअ. न० (अगुरुक) अगुरुलघु नाम  
कर्म; नामकर्मनी ओक प्रकृति अगुरुलघु  
नामकर्म, नामकर्म की एक प्रकृति The

Nāmakarma called Aguru-  
laghu, a variety of Nāmakarma  
क० गं० २, ६,

अगुरुलघुग न० (अगुरुलघुक) लुओ  
“अगुरुअ” शब्द देखो ‘अगुरुअ’ शब्द Vide  
“अगुरुअ”. क० प० ४, २०,

अगुरुलघु त्रि० (अगुरुलघु) अगुरुलघु नहि ते,  
ने भारे नहि अने लघु पणु नहि ते जो  
भारी और हलका न हो Any thing  
neither very heavy nor very  
light विशेष० ६६, ४६१, पञ्च० १३, ठा०  
१, १, जं० प० २, २६, क० गं० १, ४७;  
—चउ. न० (—चतुष्क) अगुरुलघुनाम,  
उपघातनाम, पराघातनाम अने उच्छ्वास  
नाम ओ नामकर्मनी यार प्रकृति अगुरु-  
लघुनाम, उपघातनाम, पराघातनाम और  
उच्छ्वास नाम ये नामकर्म की ४ प्रकृतियां  
the group of the four varieties  
of Nāmakarma viz Agurulaghu-  
nāma, Upaghātānāma, Parā-  
ghātānāma and Uchchvāsa-  
nāma. क० ग० १, २६;—चउक्क न०  
(—चतुष्क) अगुरुलघु १, उपघात २, पराघात ३  
अने श्वासोच्छ्वास ४, ओ नामकर्मनी यार  
प्रकृतियोनेो समुदाय नामकर्म की-अगुरुलघु १,  
उपघात २, पराघात ३ और श्वासोच्छ्वासरूप ४  
इन चार प्रकृतियों का समुदाय the group  
of the four species of Nāma-  
karma, viz 1, Agurulaghu, 2,  
Upaghāta, 3, Parāghāta and  
4, Śvāsochchhivāsa क० ग० १,  
४७,—णाम न० (—नामन्) नामकर्मनेो  
ओक भेद, के नेना उद्यथी एव अति भारे  
नहि तेम अति लघु नहि तेवु दारीर पाये  
ते नामकर्मनी अगुरुलघु नामे प्रकृति.  
नामकर्म की जिस प्रकृति के उदय से जीव

बहुत भारी या बहुत हलके शरीर वाला नहीं होता उस प्रकृति का नाम. a variety of Nāmakarma by the rise of which the soul acquires a body neither very light nor very heavy. सम० २८,—परिणाम. पुं० (—परिणाम ) अगुरुलहय रूपे परिणति विशेष; अगुरुलहय रूपे पर्याय. ऐसा पर्याय जो अगुरुलहय हो. modification in the form of Agurulaghu. “ अगुरुलहयपरिणामेणं भन्ते ! कतिविहे परणत्ते ? गोयमा ! एगागारे परणत्ते ” पञ्च० १३, ठा० १०, १; सम० २२; अगुरुलहय. त्रि० (अगुरुलहय) जेभां गुरुता-ला-रेपणुं नथी तेम लघुता-ललकापणुं नथी तेवा द्रव्य, गुण अने पर्याय, धर्मास्तिकाय, अधर्मास्तिकाय, आकाश, काल, जीव अने चउफासिया पुद्गल-लाया, मन अने कर्म योग्य द्रव्य-भाव लेश्या, दृष्टि, दर्शन, ज्ञान, अज्ञान, संज्ञा, मनो जोग, वचनजोग, साकारोपयोग अने अनाकारोपयोग अने सर्व अगुरुलहय जणुवा वे द्रव्य, गुण अथवा पर्याय जिनमें गुरुत्व-भारीपन और लघुत्व-हलकापन नहीं है. धर्मास्तिकाय, अधर्मास्तिकाय, आकाश, काल, जीव और चउफासिया पुद्गल अर्थात् भाषा, मन और कर्मयोग्य द्रव्य-भाव लेश्या दृष्टि दर्शन, ज्ञान, अज्ञान, संज्ञा, मनोयोग वचनयोग, साकार, अनाकार उपयोग ये सब अगुरुलहय हैं. A substance, quality etc not being very heavy or very light; e. g medium of motion and rest, space, time, life, mind, knowledge etc. भग० १, ६; २, १; १०; प्रव० १२७७; —गुण. पुं० (—गुण ) ज्ञानादिगुण, के जे गुरु पणुं नथी अने लघु पणुं नथी माटे अगुरु लघु ज्ञानादिगुण, जो कि, गुरु भी नहीं है और लघु भी नहीं है. a quality e. g.

knowledge etc. which is neither heavy nor light. भग० ११, १०; अग्रेज्झ. त्रि० (अग्रेज्झ) अलु अरुवा योअ नहि ग्रहण करने के अयोग्य. Unacceptable. भग० २०, २; अग्रेहि. स्त्री० (अग्रेहि) अनासक्ति; लोलुपतानो अभाव. अनासक्ति, खानपानादि की लोलुपता का अभाव. Absence of greediness for delicious food etc. भग० १, ८; अगोविय. त्रि० (अगोपित) नहि छुपावेस; प्रगट; खुलुं प्रकट, जाहिर. Manifest, unconcealed. “सर्वधम्ममगोवियं” सूय० १, ८, १३; अगग. न० (अग) अग लाग; आगलो लाग आगे का हिस्सा. The forepart. नाया० १८; दसा० ६, १; अगुजो० १२८; सू० प० १; पिं० निं० ३५७; ओघ० निं० ७०; ( २ ) टोय; अण्णी; उपलो लाग. अनी; नोक. top; edge. “ कुसगेणं तु मुंजण ” उत्त० ६, ४४; ७, २३, ( ३ ) छेडानो लाग; आंतलाग; किनारी; वस्त्रनो छेडा. अंतिम भाग; किनार; वस्त्र का पल्ला. end, border of a garment. राय० ८१; ( ४ ) लवोपग्राही-अघातिकर्म भवोपग्राही-अघातिकर्म. a karma which does not destroy the qualities of the soul. “अगं च मूलं च विगिं च धीरे” आया० १, ३, २, १८३, ( ५ ) परिमाणु; वजन. वजन, माप. weight, measure. नंदी० १४, ( ६ ) प्रधान-रत्नादि. प्रधान-रत्नादि. jewels etc. any thing prominent नाया० १; १६; सूय० २, ३, ३; अगग. त्रि० (अग्र्य-अग्रे भवमग्र्यम्) अग्रेसर; प्रधान; शिरोमणि अगुआ, मुखिया. Chief; leading “ अगं वणिण्हि आहियं ” सूय० १, १, २, ३, जं० प० २, ३३; —अणीअ. न० (—अनीक) मोरयानुं सैन्य.

मोरचे की सेना. the van of an army.  
 “ जेणव भरहस्स रणणो अग्गाणीअं तेणे-  
 व उवागच्छति ” जं० प० नदी० २६;—उज्जाण.  
 न० (—उद्यान ) नगरनी ७५२तुं श्रेष्ठ विद्यान.  
 नगर के बाहिर का श्रेष्ठ बगीचा the best  
 garden outside a town. “ हत्थिसी-  
 सयस्स गयरस्स बहिया अग्गुज्जाणे सत्थस-  
 सिण्वेसं करेति ” नाया० ८, ६, १५, १६;  
 —दय न० (—उदक ) लवण समुद्रनी वज्जे  
 वज्ज सोण ६७२ जेवन उंउं पाणी छे तेना  
 ७५२ जे भे गाउनी पाणीनी शिखा वध धट  
 थाय छे ते लवण समुद्र के बीचो बीच  
 सोलह हजार योजन ऊंडा पानी है उसपर जो  
 दो कोस के पानी की शिखा न्यूनाधिक होती  
 है वह the waves, in the centre  
 of Lavana ocean (16000 yojana-  
 nas in depth ) rising and  
 falling to a height of 4 miles  
 “ लवणस्स गं समुद्स्स सट्ठियागसाहस्सीओ  
 अग्गोदयं धारंति ” जीवा० ३, ४, सम० ६०,  
 —केश. पुं० (—केश ) वालाग्र; केशनो अग्र-  
 भाग. केश-बाल का अग्र भाग the fore-  
 part of the hair, the tip of a  
 hair. नाया० ५, भग० ६, ३३,—जीह न०  
 (—जिह्व-जिह्वाग्रम्) ललनो अग्रभाग; जि-  
 ह्वाग्र. जीभ के आगे का भाग, जिह्वाग्र the  
 tip of the tongue “ अवदालियव-  
 यणविवरनिस्सालियगगीहे ” उवा० २, ६५,  
 —तावस. पुं० (—तापस ) धनिष्ठा नक्षत्रं  
 गोत्र. धनिष्ठा नक्षत्र का गोत्र Gotra or  
 family origin of the Dhanisthā  
 constellation “ धणिष्ठाणक्खत्ते किं गोत्ते  
 पण्यत्ते ? अग्गतावसगोत्ते पण्यत्ते ” सू०  
 प० १०,—द्वार. न० (—द्वार) आगलुं आरलुं  
 आगे का दरवाजा the outer door,  
 front door. ओघ० नि० २६२, प्रव० ६३६,

—द्वारणिज्जामग पु० (—द्वारनिर्यामक)  
 आगला दरवाजा पासो उला रहेनार निर्यामक  
 साधु. अगले दरवाजे के पास खड़ा रहने वाला  
 निर्यामक साधु a Niryāmaka Sādhu  
 who stands at the outer door.  
 ओघ० नि० २६२; प्रव० ६३६,—पपस्स पु०  
 (—प्रदेश) आगलो प्रदेश-भाग. अगला हिस्सा.  
 front part, anterior portion.  
 प्रव० १३२;—पिंड पुं० (—पिण्ड ) भि-  
 दा आपवाभाटे अथवा डागडा, कुतराने ना-  
 भवा भाटे पहुँचेथी डाढी राभेयो भोराकने।  
 भाग भिन्ना देने के लिये अथवा कौआ या कुत्तों  
 को खिलाने के लिये पहिले से निकाला हुआ  
 भोजन का हिस्सा a portion of food  
 which is set apart for mendi-  
 cants or crows and dogs, “ से  
 भिक्खू वार जाव पविट्ठे समाणे से जं पुण  
 जाणेजा, अग्गपिंड उक्खिप्पमाणं पेहाए,  
 अग्गपिंडं णिक्खिप्पमाणं पेहाए अग्गपिंडं  
 हीरमाणं पेहाए अग्गपिंडं परिभाइजमाणं  
 पेहाए ” आया० २, १, ५, २५;—वीय  
 पुं० (—बीज-अग्रं बीजयेपांते तथा) अग्रभाग  
 जेनो बीज छे तेनी वनस्पति, अग्रभाग रे-  
 पनाथी उगे छे ते, जेना के तिण, ताव, पिप्पल  
 वगेरे. जिसका अग्रभाग जमीन में लगाने से  
 जो उत्पन्न होती हो वह वनस्पति, जैसे-तिल,  
 पीपल आदि a kind of vegetation  
 which can be made to grow by  
 planting the top part which  
 serves as a seed आया० २, १, ६,  
 ४७, दस० ४, ठा० ४, १, सूय० २, ३, १०;  
 —महिसित्ता स्त्री० (—महिषीत्व) पट्टगणी-  
 पणु; अग्रमहिषीपणु पट्टरानी पद the  
 position of a crowned queen  
 नाया० ध० ३, ४;—महिस्सी स्त्री० (—महिषी)  
 पट्टगणी-मुप्यगणी, धट्टगणी मुख्यगणां;

इन्द्राणी a crowned queen, wife of Indra कप्प० २, १३, भग० ३, १; १०, ५; नाया० १३, अंत० ५, १; ठा० ३, १; जं० प० १, १४; राय० ६४; उत्त० १६, १, नाया० ध० ४,—रस पुं० (—रस) मुख्य-रस; शृंगार रस मुख्य रस; शृंगार रस. the sentiment of love, the chief sentiment “संपिडिया अगारसप्पभूया” उत्त० १४, ३१;—सिर. न० (—शिरस्) शिर-भाथानो आगलो भाग. मस्तक के आगे का हिस्सा the fore part of the head “घणनिचियसुबद्धलक्खखण्डय कुडागारणिभाणिरूवमपिडियग्गसिरा” तंडु०—सिहर न० (—शिखर) वनस्पतिनी टो-य-डिपरलो भाग वनस्पति का टैखना-ऊपर का हिस्सा. the top part of vegetation “सोहियवरंकुरग्गसिहरा” ओव० राय०—सोण्डा पुं० (—शुण्डा) हाथीनी सुउने आगलो भाग हाथी की सूंड के आगे का हिस्सा. the fore part of the trunk of an elephant उवा० २, १०१, —हत्थ पुं० (—हस्त—हस्ताग्रम्) हाथीने आगलो भाग हाथ के आगे का हिस्सा the fore part of a hand or an arm राय० ३२, ओव० २२, कप्प० २, १४;

अग्गओ अ० (अग्रतस्) आगल आगे In front of, before पंचा० ५, २४;

अग्गओकाउं सं० कृ० अ० (अग्रतः कृत्वा) आगल करीने आगे करके. Having placed in front, having placed at the head प्रव० ६५६;

अग्गदत्त. पुं० (अग्रदत्त) धरत क्षेत्रना आलु येवीसीना तेवीसमा तीर्थंकरु नाम इरवत क्षेत्र के वर्तमान चौवीसी के २३ वें तीर्थंकर का नाम. Name of the 23rd Tīr-thāṅkara of Iravata Kṣetra in

the current Chovīsī. प्रव० ३००; अग्गय. न० (अग्रक) अग्र भाग. अग्र भाग. Front part; anterior portion. प्रव० १४०५;

अग्गल न० (अर्गल) ८६ भा महाग्रहणुं नाम ८६ वें महाग्रह का नाम. The 86th great planet so named सू० प० २०; (२) भोगण-आरण्णो आहुं मुक्खानुं लाडुं. दरवाजे की चटकनी-आडी. A bolt of a door, a latch “अग्गलं फलिहं दारं कवाडं वा विसंजण्” दस० ५, २, ६;—पासग पुं० (—पाशक-यत्रार्गला-निक्षिप्यन्ते सः) भोगणना पास; जेभां भोगण नाप्पवामा आवेछे ते साकल का कुंदा receptacles or fasteners of a door-bolt, a hook for a latch. राय० १०६;—पासाय पुं० (—प्रासाद) लुओ शब्द “अग्गल पासग” देखो शब्द “अग्गलपासग” vide “अग्गलपासग.” जीवा० ३, ४;—अग्गला. स्त्री० (—अर्गला) भोगण; आरण्णुं दांडवानो आगणीयो दरवाजा बंद करने का आडा (२) सांडण; अण्णर. साकल. a bolt of a door, a latch. “अग्गला अग्गलपासाया य वहरामईतो” राय० उत्त० ६, २०, दस० ५, २, ६; ७, २७; अया० २, ४, २, १३८, अग्गहण. न० (अग्रहण) अस्वीकार; न अल-णुं करवुं ते. अस्वीकार. Non-acceptance क० प० १, १६,—वग्गणा. स्त्री० (—वर्गणा) वर्गणा विशेष, औदारिक शरीरादिरूपे अलणु न थर्ध शके ओवे। पुद्गलसमूह. वर्गणा विशेष, औदारिक शरीरादि के रूप से ग्रहण न हो सकने वाला पुद्गल समूह a particular kind of molecules, a collection of molecules which are not capable of forming a physical body etc. क० प० १, १६;



अग्रहणा क्री० ( अग्रहणा ) औदारिकादि  
शरीररूपे ग्रहण न थर्छ शिडे तेवा पुद्गलनी  
वर्गणु-समूह. जो औदारिकादि शरीररूप से  
ग्रहण न हो सके ऐसे पुद्गलों की वर्गणा-समूह.  
A collection of atoms which  
cannot be incorporated into the  
Audārika ( physical ) body etc.  
क० गं० ५, ७७;

**अग्गहणिय.** पुं० न० ( अग्गहिक ) अधरणी,  
सीमन्तोत्सव सीमंत; सीमन्तोत्सव. Festi-  
val for the first pregnancy सु०  
च० १, ३०६;

अग्राह्य. त्रि० ( अग्रहीत ) ग्रहण न करे  
ग्रहण न किया हुआ Not taken, not  
accepted. विशेष० २६४,

**अग्गाणीय.** न० (अग्रायणीय-अग्रं परिमाणं तस्यायनं गमनं परिच्छेदः, तस्मै हितमग्रायणीयम्) सर्वद्रव्य, गुण अने पर्यायतुं परिमाणु प्रतिपादन करना १४ पूर्वमानो भीने पूर्व सम्पूर्ण द्रव्य, गुण और पर्याय का परिमाण प्रतिपादन करने वाला १४ पूर्वों में से दूसरा पूर्व The 2nd of the 14 Pūrvas which describes Dravya, Guna and Parīyāya. “बीहयं अग्गाणीयं तत्थ सन्वदव्वाण पज्जवाणं य सन्वजीवाणं य अग्ग परिमाण वन्निज्जहन्ति” नदी० ५६; प्रव० ७१८, जं० प० ३, ५६;

अग्निं पुं०, (अग्नि) अग्नि अग्नि; आग Fire  
भग० ६, ७, नाया० १; २, ८, निर० ३, ३;  
अणुजो० १३१, भक्त० ४२, पंचा० १८,  
१०, उत्त० २, ७; जं० प० ५, ११४, (२)  
कृत्तिकाक्षत्रेण अधिष्ठाता अग्निदेवता. कृत्तिका  
क्षत्रिका अधिष्ठातृदेव. the god fire,  
the presiding deity of Krittikā  
constellation “दो अग्नीशो” ठा० २, ३,  
४, २, सू० प० १०; (३) लवणपति देवतानी

अग्निदेवता, अग्निदेवता देवता। भवनपति देवता  
 की एक जाति, अग्निदेवता देवता a kind of  
 Bhavanapati gods, god known  
 as Agnikumāra. ओ३० २३, उत्त० ३६,  
 २०४, सम० ७६; —का३ पु० (—का३)  
 ओ३ ' अग्निदेवता ' शब्द देखो "अग्निदेवता"  
 का३" शब्द vide "अग्निदेवता." दसा०  
 ६, ४, —जा३ स्त्री० (—जा३)  
 अग्निदेवता ज्वाला-ज्वाला अग्नि की ज्वाला।  
 flames. ना३ ८, —थ३ स्त्री०  
 (—स्तम्भिका) अग्नि स्तम्भन करने वाली  
 विद्या अग्नि का स्तम्भन-रुकावट करने वाली  
 विद्या. the art of stopping the  
 spread of fire. सू३ २, २, ८१,  
 —द३ न० (—दहन) अग्निदेवता, मृतके  
 अग्निदेवता अग्निदेवता, मृतक का अग्नि-  
 संस्कार. the ceremony of crema-  
 ting a dead body. प३ १, १,  
 —प३ पु० (—प्रयोग) अग्निदेवता प्रयोग,  
 अग्नि स३गायत्री ते अग्नि का प्रयोग,  
 आ३ सुलगाना lighting up fire;  
 kindling of fire वि३ ६, रा३ २८२,  
 ज० ५० ३, २८, —मे३ पु० (—मेघ)  
 अग्निदेवता पेटे शरीरों में दे३ उत्पन्न करने  
 वरसा३ अग्नि के समान शरीर में दे३  
 उत्पन्न करने वाली वर्षा rain burning  
 the body like fire भ३ ७, ६;  
 —वि३ त्रि० (—विदग्ध) अग्निदेवता  
 अग्निदेवता आ३ से जला हुआ burnt with  
 fire. प्र३ ८२७, —सा३ त्रि०  
 (—सामान्य) ज्वाला अग्निदेवता आ३-हिस्से  
 में ते३ अग्नि के भाग-हिस्से वाला  
 (that) in which Agni or  
 fire claims a share; shared  
 in common with Agni or fire.  
 ना३ १, भ३ ६, ३३; —सा३ त्रि०



(—साध्यक ) लु० १०६ “अग्निसामरण.” देखो शब्द “ अग्निसामरण. ” vide “ अग्निसामरण. ” “ हिरण्ये य सुवर्ण्ये य जाव सावइज्जे अग्निसाहिण् चोरसाहिण् राय-साहिण् मच्चुसाहिण् ” भग० ६, ३३, नाया० १; —सिंहा स्त्री० (—शिखा) अग्निनी न्याणा. अग्नि की ज्वाला flames. ठा० ४, २; —सेवण. न० (—सेवन ) अग्निनुं सेवन करुं; तापणी करी तपुं ते. अग्नि का सेवन करना—तापना. warming oneself at the fire. प्रव० ४४०;—हुय पुं० (—हुत—हुताग्निः) जेणे अग्निमां होम दीधो छे अवे। तापस; तापसनी अये जत. जिसने अग्नि में होम किया हो वह; एक प्रकार का तपस्वी. an ascetic who has thrown an oblation into fire. निर० ३, २, —होत्त. न० (—होत्र ) आत्मण धर्मप्रमाणे भंत्रोऽप्यारपूर्वकं धी, नव वगेरे अग्निमां होमाय छे ते द्रव्य अग्निहोत्र छे अने जैनदृष्टिअ धर्म ध्यानरूप अग्निमां कर्मरूप धंधण होमवा ते वास्तविक् लाव अग्निहोत्र. वैदिक-धर्म के अनुसार भंत्रोच्चारपूर्वक धी, जब वगैरह जो द्रव्य अग्नि में होमे जाते हैं वे अग्निहोत्र कहलाते हैं और जैनधर्मानुसार धर्मध्यान रूप अग्नि में कर्मरूपी इंधन को होमना वास्त-विक भाव अग्निहोत्र है. an oblation to fire in which, according to Brāhmana's religion, ghee, barley etc are sacrificed with some Mantras or incan- tations, while according to Jaina standpoint fuels in the form of Karma are sacrificed in the fire of religious meditation. “अग्निहोत्तमुहा वेया ” उक्त० २५, १६; विशे० १६४०; निर० ३, ३, —होत्तवाइ. पु०

(—होत्रवादिन् ) द्रव्य—आद्य अग्निहोत्रथी न स्वर्गप्राप्ति माननारवादी. अग्निहोत्र से ही स्वर्ग की प्राप्ति मानने वाला. a believer in the doctrine of the attainment of heaven by only oblation of material substances to fire. “जे अग्निहोत्तवाइ जलसोयं जे य इण्ठंति ” सूय० टी० १, ७; —होम पुं० (—होम ) अग्निमा होमपुं—हवन करुं ते. अग्नि में हवन करना. pouring an oblation into fire. नाया० १४; १६; जं० प० २, ११४; अग्निअ. पुं० ( आग्नि ) अग्निदेवताअे आपेल तेथी “ अग्निक् ” अयेनुं नाम आपेल डोई पु३५. अग्निदेवता की कृपा से उत्पन्न पुरुष का नाम. A person given as a gift by fire-god and hence so named. विवा० १; अणुजो० १३१; अग्निउत्त. पुं० ( अग्निपुत्र ) भरतक्षेत्रना २३ भा पार्श्वनाथस्वामिना समकालीन धरवतक्षेत्रना तीर्थकर भरतक्षेत्र के २३ वें तीर्थकर पार्श्वनाथस्वामी के समकालीन इरवत क्षेत्र के तीर्थकर. Tirthaṅkara of Irvata Kṣetra and a contemporary of Pārśvanātha, the 23rd Tirthaṅkara of Bharata Kṣetra. “ जियरागमग्निसेण खीणरायमग्निउत्तं च ” सम० १७,

अग्नि कुमार. पुं० ( अग्नि कुमार ) अग्नि-कुमार नामे भवनपति देवतानी पांचमी जति. अग्नि कुमार नामक भवनपति देवता की पांचवी जाति. The fifth class of Bhavana- pati gods named Agnikumāra ठा० २, २; पन्न० १; भग० ३, ७; ( २ ) स्त्री० अये जतनी देवी. इस जाति की देवी, a female deity of the above class of gods. भग० ३, ७;

**अग्निचव** पुं० ( अग्नेय ) उत्तर तरङ्गनी भे  
 कृष्णरात्रि वस्त्रे आग्नेयाभ विमानमां  
 वसता ८ भी जतना लोकान्तिक देवता उत्तर  
 की ओर की दो कृष्णरात्रियों के बीच के  
 आग्नेयाभ विमान मे रहने वाले ८ वीं जाति  
 के लोकान्तिक देव. The 8th class of  
 Lokāntika gods in the Āgneyā-  
 bha heavenly abode between  
 the two Kṛṣṇarājīs in the  
 north. ठ० ६, १, भग० ६, ५, नाया० ८,  
 प्रव० १४६२, (२) पुं० कौशिकगोत्रनी ओक  
 शाखा कौशिकगोत्र की एक शाखा. a  
 branch of Kauśika Gotra. ठ० ७,  
 १, ( ३ ) ते शाखामानो पुंष्य उक्त शाखा  
 का पुरुष a person belonging to  
 that branch ठ० ७, १;

**अग्निष्वाभ.** न० ( आग्नेयाभ ) उत्तर तरङ्गनी  
 भे कृष्णरात्रि वस्त्रे पांयमा देवलोकनु ओक  
 विमान उत्तर दिशा की दो कृष्णरात्रियों के  
 बीच का पाचवें देवलोक का एक विमान A  
 heavenly abode of the fifth  
 Devaloka between the 2 north-  
 ern Kṛṣṇarājīs ठ० ५, ३,

**अग्निदत्त** पुं० ( अग्निदत्त ) आर्य भद्रबाहुना  
 शिष्यनु नाम आर्य भद्रबाहु के शिष्य का  
 नाम Name of a disciple of Ārya  
 Bhadrabāhu कप्प० ८,

**अग्निदास.** पु० ( अग्निदास ) अग्नि देवताना  
 संबधथी डोर्ध भांशुसनु आपवामा आवेक्षु  
 नाम अग्नि देवता के सम्बन्ध से किसी मनुष्य  
 का रखा हुआ नाम A personal name  
 ( Lit servant of fire-god )  
 अणुजो० १३१,

**अग्निदिएण** पुं० ( अग्निदत्त ) अग्नि देवताना  
 संबधथी डोर्ध भांशुसनु आपवामा आवेक्षु  
 नाम अग्नि देवता के सम्बन्ध से किसी मनुष्य

का रखा हुआ नाम A personal name  
 ( Lit. given by fire ) अणुजो०  
 १३१,

**अग्निदेव** पुं० ( अग्निदेव ) अग्नि देवताना  
 संबधथी डोर्ध भांशुसनु आपवामा आवेक्षु  
 नाम अग्नि देवता के सम्बन्ध से किसी मनुष्य  
 का रखा हुआ नाम. A personal name  
 ( Lit. the fire-god ) अणुजो० १३१;

**अग्निधम्म** पुं० ( अग्निधर्म ) अग्निदेवताना  
 संबधथी डोर्ध भांशुसनु आपवामा आवेक्षु  
 नाम अग्निदेवता के सम्बन्ध से किसी मनुष्य  
 का रखा हुआ नाम A person so  
 named after the fire-god. अणुजो०  
 १३१,

**अग्निप्पमा** स्त्री० ( अग्निप्रभा ) १२ भा  
 तीर्थंकरनी प्रव्रज्या पालप्पीनु नाम, प्रव्रज्या  
 भोत्सवमां ने पालप्पीमां भेक्षु डता तेनुं  
 नाम १२ वे तीर्थंकर दीक्षामहोत्सव मे जिस  
 पालकी पर बैठे थे उस पालकी का नाम.  
 The name of a palanquin of  
 the 12th Tirthankara in which  
 he sat at the time of the cele-  
 bration of his Pravrajyā. सम०

**अग्निभूइ.** पुं० ( अग्निभूति ) श्रीमहावीरस्वा-  
 मीना जीन गणधरनुं नाम श्रीमहावीर  
 स्वामी के दूसरे गणधर का नाम. The  
 name of the 2nd Ganadhara of  
 Mahāvīrasvāmī विशेष० १८१६, सम०  
 ११, भग० ३, १, नदी० स्थ० २०; ( २ ) म-  
 हावीर स्वामीना आगला दशमा अवतु ( भंदि-  
 रसंनिवेशमा उत्पन्न थयेस आक्षुनु ) नाम.  
 महावीरस्वामी के दशवें भव ( मन्दिर सन्निवेश  
 मे उत्पन्न हुए ब्राह्मण ) का नाम name of  
 a Brāhmaṇa born in the village  
 of Mandua at the time of the

10th birth of Mahāvīrasvāmī.

कप्प० ८;

**अग्निम.** त्रि० ( अग्निम ) आगलुं; आगलनुं, पहेलानु. आगे का, पहिला Foremost; first, anterior. सु० च० १, ५, प्रव० ८८५; जं० प० २, १६, अणुजो० ४६;

**अग्निमाणव** पुं० ( अग्निमानव ) दक्षिण तरङ्गना अग्निदुमार देवतानो षण्ड दक्षिण दिशा के अग्निकुमार देवता का इन्द्र The Indra of the Agnikumāra gods of the south. ठा० २, ३; सम० ३२; पञ्च० २, भग० ३, ८,

**अग्निमिस्ता** स्त्री० ( अग्निमित्रा ) गोशालाना शिष्य पोलासपुरवासी शकदाल कुम्हारनी स्त्रीनुं नाम गोशाला के शिष्य पोलासपुर निवासी शकदाल कुम्हार की स्त्री का नाम. Name of the wife of Śakadāla, a potter and a disciple of Gośālā residing in Polāsapura उवा० ७, २०४;

**अग्निगय** पु० ( अग्निज ) लश्मक व्याधि, जेमां आधेलुं सर्व लश्मरूप थर्ध जय अने लुण मटे नहि तेवे ओइ रोग भस्मकव्याधि, एक रोग का नाम, जिसके होने से सदा भूख बनी रहती है और खाया हुआ भस्म हो जाता है. A kind of disease by which all food taken is burnt away and the hunger is never removed विवा० १, १; ( २ ) वत्सगोत्रनुं ओइ अवा-तर-पेटागोत्र वत्सगोत्र का एक अवान्तर गोत्र a subdivision of Vatsagotra ठा० ७, १;—**रोगि** त्रि० (—रोगिन्) लश्मक व्याधिवाणो; जेटलु आय तेदलुं तटाल लश्मरूप थर्ध जय ओवा रोगवाणो भस्मक व्याधि वाला (one) suffering from a disease by which all the

food, that one takes is burnt away without appeasing hunger. विशेष० २०४८;

**अग्निरक्खिय** पुं० ( अग्निरक्षित ) ये नामनुं ओइ भाणुस इस नाम का एक मनुष्य. Name of a person. अणुजो० १३१;

**अग्निह्व** त्रि० ( अग्निम ) आगलो; पहेलानो. पहिला; अगला. Foremost; first; anterior. “अग्निह्वगमयसिरसो” निसी० १, ४१,

**अग्निह्वय** पु० ( अग्नि ) ८८ अहमांता ५५ भा महुअहुनुं नाम ८८ ग्रहों में से ५५ वे महाग्रह का नाम. Name of the 55th great planets ठा० २, ३; सू० प० २०;

**अग्निवेस.** पुं० ( अग्निवेशमन् ) पक्षना यैदमा दिवसनुं—यैदशनुं नाम पखवाड़े के चौदहवें दिन-चौदस का नाम. The name of the fourteenth day of a fortnight. सू० प० १०, जं० प० ७, १५२; कप्प० ५, १२३, ( २ ) दिवसना २२ भा मुहूर्तनुं नाम दिन के २२ वें मुहूर्त का नाम name of the 22nd Muhūrta of a day. सू० प० १०, ( ३ ) कृत्तिका नक्षत्रनुं गोत्र. कृत्तिका नक्षत्र का गोत्र the Gotra or family origin of the Krittikā constellation. सू० प० १०;

**अग्निवेसायण** पुं० ( अग्निवेशायन ) दिवसना २३ भा मुहूर्तनुं नाम दिन के २३ वें मुहूर्त का नाम Name of the 23rd Muhūrta of a day. सम० ३०, ( २ ) गोशालाना ५ भा दिशाचर साधु गोशाला के ५ वें दिशा-चर साधु. Gośālā's 5th missionary disciple भग० १५, १, ( ३ ) सुधर्मास्वामी गोत्र सुधर्मास्वामी का गोत्र. Gotra

or family origin of Sudharmā-svāmī. नंदी० स्थ० २३; ( ४ ) ते गोत्रमां उत्पन्न थनार पु३५ सुधर्मास्वामी के गोत्र में उत्पन्न होने वाला पुरुष a person born in the above Gotra. नंदी० स्थ० २३, अग्निसम्म पुं० ( अग्निशर्मन् ) ओ नामनेो के३५ ब्राह्मण एक ब्राह्मण का नाम A Brāhmaṇa of that name. अणुजो० १३१,

अग्निसीह पुं० ( अग्निशिख ) दक्षिण दिशाना अग्निकुमार देवतानो धन्व दक्षिण दिशा के अग्निकुमार देवों का इन्द्र Lord of the Agnikumāra gods of the south. भग० ३, ८, पञ्च० २, सम० ३२; ठा० २, ३, ;

अग्निसीह पुं० ( अग्निशिख ) यात्रु अवसर्पिणीना सातमा अलदेव अने वासुदेवना पितातु नाम वर्तमान अवसर्पिणी के सातवें बलदेव और वासुदेव के पिता का नाम Name of the father of the seventh Vāsudeva and Baladeva of the present Avasarpinī सम०

अग्निसेण पुं० ( अग्निषेण ) यात्रु अवसर्पिणी-मां न्यूद्धीपना ध्रुवतक्षेत्रमा थयेला त्रीण तथा ओडविसमा तीर्थकरतु नाम वर्तमान अवसर्पिणी में जंबूद्वीप के हरवतक्षेत्र में उत्पन्न हुए तीसरे तथा २१वें तीर्थकर का नाम Names of the third and the twentyfirst Tīthankara of the Irvata region of Jambūdvīpa in the present Avasarpinī “ चंद्राण्य सुचंदं अग्निसेण च नंदिसेणं च ” सम० ६६; प्रव० २६८, ( २ ) ओ नामनेो ओड भाषुस इस नाम का एक मनुष्य. a man of that name अणुजो० १३१, अग्नेर्ह. स्त्री० ( अग्नेदी ) अग्निडेणु, दक्षिण

अने पूर्व दिशानी वञ्चेतो भुल्लो-विदिशा. अग्निकोन, दक्षिण और पूर्वदिशा का मध्यभाग-विदिशा. The south-east quarter ओच० नि० भा० २७६, भग० १०, १, १३, ४, ( इ )—दिशा. स्त्री० (—दिशा ) अग्नि भुल्लो, पूर्व दक्षिण वञ्चेनी विदिशा. अग्निकोन, पूर्व और दक्षिण के बीच की विदिशा. the south-east quarter भग० १६, ८,

अग्नेज्झ. त्रि० ( अग्नेह्य ) अग्नेह्य, अह्य न थाय तेवुं ग्राह्य न हो ऐसा, अग्नेह्य. Unacceptable. ओच०

अग्नेणीय न० ( अग्नेणीय ) षोड पूर्वमांनेो भीजे पूर्व चौदह पूर्वों में से दूसरा पूर्व. The second of the fourteen Pūrvas. सम० १४,

अग्नेय त्रि० ( अग्नेय ) वत्सगोत्रनी शाखा अने ते शाखानेो भाषुस वत्सगोत्र की शाखा और उस शाखा का मनुष्य A variety of Vatsa Gotra and a man of that Gotra ठा० ७, १,

अग्नेसर त्रि० ( अग्नेसर ) अग्नेसर-आगेवान; प्रमुष्य अणुआ, प्रमुख, नेता A leader. सु० च० २, ६१,

✓ अग्र धा० I. ( अर्ह ) योग्य थयु, लायक थनवुं योग्य होना, लायक बनना To deserve; to be fit for.

अग्रह उत्त० ६, ४४,

अग्रह नाया० ८,

अग्रध. पु० ( अर्घ ) पूजनी सामग्री पूजन की सामग्री Materials for worship नाया० १६, विशेष० १४८०, ( २ ) मच्छ कच्छ आदि जलचर जीव aquatic animals like fish, tortoise etc जीवा० ३, ४, ( ३ ) पुं०

- किम्मत; मूल्य; ५०५. कीमत; मूल्य.  
price; value. संथा० ४६, विशेष० १४८०;
- ✓ अग्घा. वा० I. ( आग्घा ) सुंधुं; गंध  
लेवी. सूचना. To smell  
अग्घाह. पन्न० १५, नाया० १;
- अग्घाडग. पुं० ( आग्घातक ) अग्घे नामनी अग्घे  
जलतनी वनस्पति; अधाडो. एक जाति की  
वनस्पति. A plant growing in  
marshy places. पन्न० १;
- ✓ अग्घाय. धा० I. ( आग्घा ) सुंधुं; गंध  
लेवी. सूचना. To smell.  
अग्घायह. आया० २, १५, १७६;  
अग्घायेंति. नाया० १७;
- अग्घाय सं० कृ० “ सुरभिगंवाणि वा  
अग्घाय से तत्थ आसायवडियाए  
मुच्छिण्ण ” आया० २, १, ८, ४४;
- अग्घायमाण. व० कृ० नाया० १;
- अग्घाय. त्रि० ( आग्घात ) सुंधेयुं; गंध लीधेयुं.  
सूघ्य हुआ. Smelt. विशेष० २३८४;
- अग्घाह त्रि० ( अग्घातिन् ) आत्माना ज्ञानादि  
गुणोनी धात न डरना; आत्मा के ज्ञानादि  
गुणों का घात न करने वाला. (One) that  
does not obstruct the qualities  
of the soul such as knowledge  
etc. क० प० २, ४४; क० गं० ५, १४;  
—कम्म. न० (—कर्मन् ) आत्मगुणोनी स्वतः  
धात न डरे तेवा वेदनीय आदि कर्म आत्मगुण  
की स्वयं घात न करे ऐसा वेदनीय आदि  
कर्म Karma such as Vedaniya  
etc. which do not of them-  
selves destroy the qualities of  
the soul. क० प० २, २३;
- अचंक्रमण ज० ( अचंक्रमण ) अचंक्रमण-यास-  
वानी गतिने अभाव; न यासवुं ते. गति का  
अभाव; न चलना. Motionlessness  
नाया० १,

अचंकारियभट्टा. स्त्री० ( अचंकारितभट्टा )  
धन्यसेठनी पुत्री, जे तेनी आज्ञा उधावे तेनी  
साथे परणववाभां आवी હતી, पतिने सङ्-  
गभां राખતી. એકદા રાખના દબાણથી સ્ત્રીની  
આજ્ઞા ન પાળી તેથી તે માનિની સ્ત્રી રિસાઇ  
ભાગી, ચોરોએ લુંટી; રંગારાને ત્યાં વેચી; ઘણું  
કષ્ટ વેઠ્યા પછી તેના પતિએ તેને છોડાવી,  
ત્યારથી તેણીએ ક્રોધ, માન વગેરે દોષોને દૂર  
કર્યા. મુનિપતિ નામના સાધુના દાઝેલ શરીરની  
દવામાટે લક્ષ્મીપાક તેલ બહોરવા એક સાધુ  
તેને ઘેર આવ્યા. તેમને બહોરાવવામાટે લાવતા  
દાસીના હાથે લક્ષ્મીપાકના એક પછી એક એમ  
ત્રણ સીસા ડુટી ગયા તો પણ જોને ક્રોધ  
ન થયો. ચોથીવાર પોતે સીસો લઈ આવી  
સાધુને બહોરાવ્યો એનો વિસ્તાર મુનિપતિ ચ-  
રિત્રમાં છે. ધન્યસેઠ કી પુત્રી, जिसका विवाह  
उसकी आज्ञा उठाने वाले के साथ हुआ था,  
यह सदा अपने पति को दबाव में रखती थी,  
एक बार राजा के दबाव डालने से स्त्री की  
आज्ञा का पालन नहीं हुआ अतः वह मानिनी  
स्त्री, गुस्सा होकर भाग निकली, रास्ते में  
चोरों ने उसे लूटा और रंगरे के यहाँ बेचा,  
इस प्रकार जब बहुत कष्ट उठाया तब उसे उस-  
के पति ने छोड़ाया और तबसे फिर उसने क्रोध  
मान आदि करना छोड़ दिया. मुनिपति नामक  
साधु के जले हुए शरीर की दवा के लिये  
लक्ष्मपाक नामक तेल लेने के लिये एक साधु  
इसके घर आया उस समय लक्ष्मपाक तेल  
की तीन शीशिया दासी के हाथ से फूट गई तो  
भी उसे क्रोध न हुआ, चौथी बार वह स्वयं  
शीशी लेकर आई और साधु को तेल दिया. इस  
का विस्तृत वर्णन मुनिपतिचरित्र में है.  
The daughter of Dhanyasetha,  
She was married to a person  
who was willing to obey her  
commands. She used to keep



her husband in check. Once as her husband could not obey her order because of his having had to obey some command of the king, that proud woman got exasperated and went away. She was robbed by thieves and was sold to a dyer. Her husband procured liberty for her after she had suffered much. Thenceforth she gave up all vices like anger, pride etc. Once an ascetic came to her house to beg for Laksapāka oil (oil which is produced by mixing a lac of things) for medicinal purposes for a sage named Munipati who was suffering from scalds on his body. At that time her maid-servant chanced to break three bottles of Laksapāka oil one after another as she brought them, yet she did not become angry. At the fourth time she herself brought a bottle and gave it to the sage. This is related in detail in the biography of Munipati गच्छा० २;

**अचंचल** त्रि० (अचंचल) नेत्रे धृष्टिं वश करी होय ते, यथैव नहि ते जिसने इन्द्रियों को वश किया हो वह. One who has subdued his senses जं० प० ३, ५७; प्रव० ५५०;

**अचंड** त्रि० (अचण्ड) निष्कारण को धरित बिना कारण के क्रोध से रहित Devoid of

unreasonable anger. “मा अचंडा-  
लियं कासी” उत्त० १, १०;

**अचक्किय**. त्रि० (अचकित) परिपुष्ट आदिथी यद्धित थाय नहि तेवे; त्रासन पामे तेवे जो परीपह (दुख) से चकित न हो वह. One who is not daunted by sufferings समुद्गंभीरसमा दुरासया, अचक्किया केणइ दुप्पहंसया” उत्त० ११, ३१;

**अचक्खु**. न० (अचक्षु) आभ सिवायनी भीष् चार धृष्टिओ अने मन. नेत्र के सिवाय दूसरी चार इन्द्रिया और मन Mind and four senses other than the eye. क० गं० १, १०; ३, १७; पन्न० २३; (२) त्रि० यक्षु-आंभ वगरने. चक्षु रहित destitute of eyes. क० गं० ४, १५; क० प० ४, ३४;—दंसण. न० (दर्शन) आंभ सिवाय भीष् धृष्टिओथी सामान्य ज्ञान-भेध थाय ते आँख के सिवाय दूसरी इन्द्रियों से जो सामान्य ज्ञान हो वह. ordinary knowledge obtained through senses other than the eyes जीवा० १; भग० २, १०; ८, २; २५, ४;—दंसणावरण न० (दर्शनावरण) दर्शनावरणीय कर्मेनी अेक प्रकृति, के नेना उदयथी एव अयक्षुदर्शन (आंभ सिवाय भीष् धृष्टिओथी सामान्य ज्ञान थाय ते) न पामे दर्शनावरणीय कर्म की एक प्रकृति, जिसके उदय से जीव अचक्षु-दर्शन (आँख के सिवाय दूसरी इन्द्रियों से जो सामान्य ज्ञान हो) नहीं प्राप्त कर सके. A variety of Darśanāvaranīya Karma under the influence of which an individual cannot have knowledge derived through senses other than the eyes. उत्त० ३३, ६; सम० १७;—दंसणि त्रि० (दर्शनिन्) यक्षुदर्शन वगरने एव, अेक



‘इन्द्रियथी त्रयु इन्द्रियवाणो ७४. चक्षुदर्शन-  
रहित एक इन्द्रिय से तीन इन्द्रियों वाला जीव  
“a living being having one or  
more of three senses other  
than the fifth viz the eyes.  
भग० ६, ६, १३, १; ठा० ४, ४,—फास. पुं०  
(-स्पर्श) अन्धकार; अंधाई. अंधेरा; अंध-  
कार. darkness. “पुरश्चो पचाण पिह्यो  
इत्थिभयं दुह्यो अचक्षुफासो मज्जेसरा  
शिवयंति” नाया० १४;—विसय. पुं०  
(-विषय) दृष्टिगोचर नहि ते, आंभथी न  
देभाय ते जो दृष्टिगोचर न हो वह. invis-  
ible; imperceptible “अचक्षुविसयो  
जत्थ पाणा दुप्पडिलेहया” दस० ५, १, २०;  
**अचक्षुस्.** त्रि० ( अचाक्षुष ) आंभथी न  
देभाय तेपुं; जेनुं याक्षुप प्रत्यक्ष न थाय तेपुं.  
जो नेत्रों द्वारा प्रत्यक्ष न हो सके अर्थात् अचा-  
क्षुष. Invisible; imperceptible.  
परह० १, १; दस० ६, २८;  
**अचर्यत.** व०कृ० त्रि० ( अशक्नुवत् ) अशक्त  
थतो, असमर्थ थतो. असमर्थ होता हुआ Be-  
coming powerless or incapable  
“चोइया भिक्खु चरियाण अचर्यता जवित्तण्”  
सूय० १, ३, २, २०; उत्त० २५, १३;  
**अचर.** पुं० ( अचर ) पृथ्वी आदि स्थावर ७४  
पृथ्वी आदि स्थावर जीव. Lives devoid  
of the power of motion e. g  
earth etc उत्त० ३२, २७;  
**अचरम.** त्रि० ( अचरम ) लुओ “अचरिम”  
शब्द. देखो ‘अचरिम’ शब्द Vide “अच-  
रिम”. विशेष० ४११, राय० ७४;  
**अचरिम** त्रि० ( अचरम ) संसार मध्यवर्ती,  
संसारने छेडे आवेला नहि संसार की चरमा-  
वस्था को नहीं पहुँचा, संसारमध्यवर्ती;  
अनेक बार जन्ममरणधर्मयुक्त Plunged  
into the world; far from final

liberation. भग० ३, १; ६, ६, ८,  
६; १३, १; १४, ४; १८, १; २६, ११;  
३३, ११; जीवा० १०, पञ्च० १८,—समय.  
पुं० ( -समय ) अरम-छेडला समयथी  
पहेलातो समय, छेडलो समय नहि ते.  
अंतिम समय से पहिले का समय. duration  
preceding the final period. नंदी०  
**अचरिमय.** त्रि० ( अचरम-क ) लुओ  
“अचरिम” शब्द देखो ‘अचरिम’- शब्द  
Vide “अचरिम” भग० ३४, १;  
**अचल.** त्रि० ( अचल ) चलायमान नहि; स्थिर;  
निश्चल जो चलायमान न हो; स्थिर; निश्चल.  
Motionless; steady “अणिहे अचले  
अवहिसेसे परिच्चण्” आया० १, ६, १६५;  
“अचले जह मंदरे गिरिवरे” परह० २, ५;  
ओव० १०, नाया० १, ८; सम० १; (२) ६२  
दशारमांता ७४ दशाहं दस दशाहों में से छठा  
दशाह. the sixth of the ten Daśā-  
rhas. अत० १; (३) भक्षिनाथना पूर्व भवने  
(भक्षिपलना भवने) ओउ भित्र, के जेले तेमनी  
साथे दीक्षा दीधी हती मल्लिनाथ का पूर्वभवका  
(महाबल के भव का) एक मित्र, जिसने महाबल के  
साथ दीक्षा ली थी A friend of Malli-  
nātha in his ( i.e. Mallināth's )  
previous birth He took Diksā  
from the latter ( whose name  
was then Mahābala ). नाया० ८;  
(४) याक्षुपअसर्पिणी पहेला अवदेवनु नाम  
वर्तमान अवसर्पिणी के प्रथम बलदेव. name  
of the first Baladeva of the cur-  
rent Avasarpinī. सम० (५) अंतग-  
सूत्रना जीनवर्गना पांयमां अध्ययननु नाम,  
अंधकवृषिणु रागनी धारणी राणीना पुत्र, के जे  
नेमिनाथ प्रभु पासे दीक्षा लछ गुणुरयणु तप  
डरी सोण वरसनी प्रवण्या पाणी ओउ भासने  
सथारोडरी शत्रुन्य उपर सिद्ध थया अंतके

दूसरे बर्ग के पांचवें अध्याय का नाम, जिसमें अंधकवृष्णि राजा की धारणी राणी का पुत्र जो नेमिनाथ प्रभु से दीक्षा लेकर, गुणरयण तप करके सोलह वर्ष की प्रव्रज्या पाल कर और एक मास का संथारा ( अनशन ) कर शत्रुञ्जय पर सिद्ध हुआ. Name of the 5th chapter of the 2nd section of the Antagada Sūtra where the son of Dhārānī, the queen of king Andhakavṛṣṇi, is mentioned. He was initiated by Lord Neminātha, and he practised the Guṇarayaṇa austerity, observed asceticism for 16 years and after a month's entire fasting attained final beatitude on mount Śatruñjaya अंत० २, ५,

**अचलपुर** न० ( अचलपुर ) अहमदीपनी पास आवेला आलीर देशमानु ओक नगर, के जेमा रेवतीनक्षत्र आचार्यना शिष्योओ दीक्षा लीधी ब्रह्मद्वीप के पास वाले आभीर देश का एक नगर, जिसमें रेवतीनक्षत्र आचार्य के शिष्यों ने दीक्षा ली थी A city in the Ābhīra country near Brahmadvīpa where the disciples of an Achārya named Revatīnakṣatra took Dīkṣā नदी० स्थ० ३२,

**अचलभाया** पुं० ( अचलभाता-अचलभातृ ) महावीरस्वामीना नवमा गणधर महावीर स्वामी का नवौ गणधर The ninth Gaṇadhara of Mahāvīra Svāmī नदी० स्थ० २०, सम० ११, ७२,

**अचलमाण** व० क० त्रि० ( अचलत् ) न चलातुं न चलता हुआ Motionless, not moving कप्प० ६, ४५,

**अचला** स्त्री० ( अचला ) शक्रेन्द्र की सातवीं अग्रमहिषी The seventh of the favourite queens of Śakrendra नाया० २,

**अचलिय** न० ( अचलित ) पस्त्र तथा शरीर छाने नहि ओवी रीते पडिलेहुणु करवुं ते, पडिलेहुणुओ ओक गुणु वस्त्र तथा शरीर न हिले, इस प्रकार पडिलेहुण करना, पडिलेहुण का एक गुण Carefully passing the eyes over a thing without giving motion to the body or the clothes ठा० ६, १, ( २ ) अयत्त, यत्नाय-मान न थयेल अचल, स्थिर steady नाया० ८, पंचा० १४, १६, भग० १, १०,—कम्म न० (—कर्मन् ) अयत्तित कर्म, उदयमा आवेल नहि ओवु कर्म जिस कर्म का उदय न हुआ हो वह Karmas which have not matured भग० १, १,

**अचवचव** त्रि० ( अचवचव ) अयत्तय ओवा शब्द-अवाग रहित 'चवचव' इस प्रकार के शब्द से रहित Unaccompanied with sound produced by chewing " असुरसुर अचवचवं आहारमाहारेइ " भग० ७, १, पण्ह० २, १,

**अचचल** त्रि० ( अचपल ) अयत्तय, अयत्तता रहित, स्थिर स्वभाववाणो, मन, पयन ओने क्षया वडे धैर्य शम्भनार चपलता रहित, स्थिर स्वभाव वाला, मन, वचन और काया से धैर्य रखने वाला Not restless, steady " अतुरियमचचलममभत्ते सुह पोत्तिरं पडिलेहेइ " भग० २, ५, ७, १०; नाया० १, राय० ३३, दम० ८, २६; उत्त० ३४, २७, कप्प० १, ५; सम० ५० २३६;

**अचाइय** त्रि० ( अ अशक्त ) अशक्ता, असमर्थ अशक्त, नामर्थ रहित Powerless, incapable तमचाइय तरुणम-

पतजातं ढंकाई अवत्तगमं हरेज्जा ” सूय० १,  
१४, २;

अचाय. पुं० ( अत्याग ) न तर्कुं; त्याग न  
करे। न छोड़ना. Not giving up or  
abandoning. “ सच्चित्ताणमचायचाय  
मज्झि ” प्रव० ४४१;

अचायंत. व० कृ० त्रि० ( अशक्नुवत् ) सहन  
करने अशक्त; असमर्थ. सहन करने को  
अशक्त Incapable of enduring;  
powerless “अन्वावाध अचायंतो नेच्छई  
अपचेतए एए” सूय० १, ३, १, ७,

अचिअ. पुं० ( अचित ) नाटकेनो अर्थ प्रचार  
नाटक का एक भेद. A kind of a  
drama. ठा० ४, ४;

अचित. त्रि० ( अचिन्त्य ) अक्षय; अतर्क्य,  
जो कुछ चिंतन न करी शक्य तेवुं. जिसका  
चितन न किया जासके, अचिन्त्य Un-  
imaginable; inconceivable. विशेष०  
६७; १०५८;

अचित्तण न० ( अचित्तन ) चिंतननो अभाव,  
चिंतनन न करुं ते चितन का अभाव. Not  
to think about or imagine. “अचि-  
तणं चेव अकित्तण व” उक्त० ३२, १५;

अचिक्खण न० ( अचिक्खण ) चिदासनो अ-  
भाव चिकनाहट का अभाव. Absence of  
greasiness भग० १६, ४; ( २ )  
चिदास रहित, चिदास वगर्नुं चिकनाहट  
रहित. devoid of greasiness भग०  
१६, ४;

अचिद्ध त्रि० ( अचेष्ट ) येषा रहित; हल्ले आले  
नहि तेवु; निर्जिव चेष्टा रहित; निष्क्रिय;  
निर्जीव. Motionless; inanimate.  
विशे० ११४४;

अचिद्धिसा सं० कृ० अ० ( अस्वित्वा ) उभा  
न रहने खड़े न होकर Not standing,  
without standing. ठा० ३, २;

अचित्त. पुं० ( अचित्त ) अचेत, निर्जिव;  
जो वगर्नी वस्तु; वस्त्र, सुकुं-लाड्डुं, सोनुं  
इपु विगेरे अचेत, निर्जीव; जड़, सोना रूपा  
आदि. An inanimate thing e. g.  
cloth, dry wood, gold etc.  
भग० २, ५; ६, ७; ७, ७; १०; ८, ६; ११,  
७, १८, ७, नाया० १; १६; पि० नि०  
भा० ८; दस० ५, १, ८१; ६, १४; पञ्च०  
६; ठा० ३, १; विशेष० ८६६; सूय १, १, २,  
१; २, ३, २, उक्त० २५, २४; ओव० १७,  
निसी० १, १०; वव० ७, १७; जं० प० २,  
३१, ४६; आया० १, ८, ७, २१; अणुजो०  
४६; १३१,—आहार. पुं० ( -आहार )  
प्रासुक्त आहार; अचेत आहार. प्रासुक आहार,  
अचेत ( दोषरहित ) आहार acceptable  
pure food. भग० १३, ५;—पइड्डिय.  
त्रि० ( -प्रतिष्ठित ) अचित्तने आश्री रहल.  
अचित्त-निर्जीव के आश्रय स्थित-ठहरा हुआ.  
being in touch with inanimate  
objects. निसी० २, ६,

अचित्तकम्म त्रि० ( अचित्तकर्मन् ) चित्रराम  
रहित, चित्रामणु रहित विना चित्र का. Hav-  
ing no paintings on. वेय० १, २०;  
अचित्तत्त न० ( अचित्तत्व ) अचित्तपणुं.  
अचित्तपन; निर्जीवपन. Lifelessness;  
state of being lifeless प्रव० ३७;  
अचित्तमंत. त्रि० ( अचित्तवत् ) येतन रहित.  
चैतन्य रहित Inanimate “चित्तमंतम-  
चित्तं वा खेव सयं अदिअं गिरहेज्जा” दस०  
४, सूय० १, १, १, २,

\* अचियत्त त्रि० ( अग्रिय ) अनिष्ट, अप्रिय.  
अनिष्ट; अप्रिय. Unpalatable, un-  
pleasant पि० नि० ५७०; ५८०, ( २ )  
गुड उपर पूज्यलाय नहि राखनार गुरु मे  
पूज्यभाव न रखने वाला. having no  
reverence for a preceptor. दस०

५, १, १७; ७, ४३; उत्त० १७, ११, ओष० नि० २३६, ( ३ ) स्त्री० अप्रीति, प्रेमनो अलाप अप्रीति, प्रेम का अभाव want of love ओष० नि० भा० २६१, दस० ५, १, १७,—अंतैउरपरघरप्पवेस पुं० ( -अन्तःपुरपरगृहप्रवेश-अचियत्तोऽनभिमतोऽन्तःपुरप्रवेशवत् परगृहप्रवेशो येषां ते तथा ) अन्तःपुरनी भा० ३३ पी० ११ धरमां प्रवेश इरवानुं अनिष्ट गणुनार थावड अन्तःपुर के समान दूसरे के घर में प्रवेश करने को अनिष्ट समझने वाला थावक. a Jaina layman who shuns another's house as if it were a harem “ऊसिय फलिहा अवगुयादुवार अचियत्तैउरपरघरप्पवेसा” सूय० २, २, ७६;

अचिरं अ० ( अचिरम् ) ७८६, त२त०, ओ३ ६म. शीघ्र, तुरंत At once, immediately सू० प० २०, जीवा० ३, ३;

अचिरकाल पुं० ( अचिरकाल ) त२त० तत्काल Immediately, present time प्रव० ७१६;

अचिरवत्त त्रि० ( अचिरवृत्त ) त२त०, थोडा वअतनुं अनेनुं तुरत का, थोड़े समय का बना हुआ Fresh, of recent occurrence भग० १२, ६,

अचिरा अ० ( अचिरात् ) त२त०, उम-शु० तुरंत Immediately, presently क० प० ७, ३३;

अचिरोगय पु० ( अचिरोद्गत ) त२त० उगेले सूर्य, आल सूर्य तुरंत का उगा हुआ सूर्य The early morning sun भग० १४, ६;

अच्युतकप्प पुं० ( अच्युतकल्प ) आ२भे देवलो३ बारहवाँ देवलोक The twelfth Devaloka ( abode of gods ) भग० २, १,

अचेयकड त्रि० ( अचेतकृत ) अचेत वस्तुथी अनेनुं. निर्जीव वस्तु से बना हुआ. Made up of inanimate things. भग० १६, २,

अचेयण त्रि० ( अचेतन ) चेतन रहित, निर्ल०. चैतन्य रहित; निर्जीव. Inanimate, lifeless “इत्थ वावि अचेयणो” आया० १, ८, ७, १५; पगह० १, २, पि० नि० भा० १३, विश० ६१;

अचेल त्रि० ( अचेल ) वस्त्र वगैरहो वस्त्र रहित Devoid of clothes (२) अ२प-वअधारी अल्प वस्त्रवारी using a very small number of clothes “जे अचेले परिपुसिण् संचिक्खव्ह” आया० १, ६, २, १८३, पचा० १७, ११, ( ३ ) अचेय-वस्त्रनो परिपुसि अचेल-वस्त्र का परीपह enduring discomfort caused by absence of garments भग० ८, ८; —परिसह पु० ( -परिपह ) वस्त्रनी तगीनुं इष्ट सहन इरनुं ते, २२ परिपुसमानो छोटे वस्त्रनो परिपुस वस्त्र की न्यूनता-कमी का कष्ट सहन करना, २२ मे से छठा वस्त्रपरीपह. enduring discomfort caused by scantiness of clothes, the sixth of the twenty-two Paisahas. सम० २२, भग० ८, ८,

अचेलअ त्रि० ( अचेलक-न विद्यन्ते चेलानि वासांसि यस्यासावचेलक कुत्तितं वा चेल यस्यासावचेलक ) वस्त्र रहित वस्त्र रहित. Devoid of clothes ज० प० २, ३१; ( २ ) कुत्तित-थोड़ी डिम्भतना वस्त्रवाणो. कुत्तित-अल्पमूल्य के वस्त्र वाला. wearing garments of little or no value. निर्मी० ११, ३६, उत्त० २, १२,

अचेलग पु० ( अचेलक-न विद्यन्ते चेलानि

धिषन्ते वा अप्रशस्तानि मानोपेतैकवर्णानि  
चेज्जानि वस्त्राणि यस्मिन् सः ) वस्त्र न  
राप्पवानो अर्थात् सदेह अने मानोपेत  
अल्पवस्त्र राप्पवानो धर्म-आचार, पडेहा  
अने छेहा तीर्थकरना साधुओंको आचार  
बन्न न रखने का अर्थात् सफेद और मानोपेत  
अल्प वस्त्र रखने का आचार; पहिले और  
अन्तिम तीर्थकर के साधुओं का आचार. The  
religious practice of wearing  
scanty and white clothes; prac-  
tice among the Sādhus of the  
first and the last Tirthankaras  
ठ० ६, १, उत्त० २३, १३,—धम्म पुं०  
(-धर्म) पडेहा अने छेहा तीर्थकरना साधु-  
ओंको आचार पहिले और अन्तिम तीर्थकर के  
साधुओं का आचार. the religious prac-  
tice of the Sādhus of the first  
and the last Tirthankaras ठ०  
६, १;

अचेलिया स्त्री० (अचेलिका) वस्त्ररहित स्त्री  
वस्त्ररहित स्त्री A naked woman.  
वेय० ५, १६;

अचोइअ त्रि० (अचोदित) अप्रेरित, जेने  
प्रेरणा करवाभा न आवी छेय ते अप्रेरित,  
जिसे प्रेरणा न की गई हो Uninspired,  
unimpelled “विस्तो अचोइए निच्चं,  
खिप्पं हवह सुचोइए” उत्त० १, ४४;

अचोक्ख त्रि० (अचोक्ख) अशुद्ध, अपवित्र  
अशुद्ध; अपवित्र Impure जीवा० ३, ३,  
नाया० ६,

अचोरिय. न० (अचौर्य) चोरीने अभाव चोरी  
का अभाव. Act of abstaining from  
stealing. “अचोरियं करेत्तं” परह० १, २;

✓अच्च धा० II. (अत्तिअह) तर्जुं, त्याग  
करवे त्याग करना. To abandon, to  
relinquish

अच्चेहि. सूय० १, २, ३, ७;

✓अच्च धा० II. (अर्च्) अर्चयु, पूजयु; पूजा  
करवी; सत्कार करवे पूजना, पूजा करना,  
सत्कार करना To worship, to pay  
respects.

अच्चेइ जीवा० ३, ४, आया० १, २, १,  
६५, नाया० १६, निर० ५, १,

अच्चेत्ति जं० प० २, ३३,

अच्चेमु उत्त० १२, ३४,

अच्चिमो उत्त० १२, ३४,

अच्चेज्ज सं० कृ० सु० च० २, ७०;

अच्चिज्ज क० वा० सु० च० २, ३८२;

अच्च त्रि० (अर्च्य) अर्चनीय, पूजनीय अर्च-  
नीय; पूजने योग्य. Worthy of wor-  
ship ठ० २, १, (२) ओ नामने लव-  
काण विभाग; प्राणुने सातमे अने सुहूर्तने  
७७ मे भाग. इस नाम का लव-कालविभाग;  
प्राण का सातवाँ और सुहूर्त का ७७ वाँ भाग  
a division of time so named,  
equal to  $\frac{1}{7}$  of Prāna or  $\frac{1}{77}$  of a  
Muhūrta कप्प० ५, १२३,

अच्चंग न० (अत्यङ्ग) अतिशय लोगना अंग-  
मधमांसादि अतिशय भोग का अंग-मद्य  
मांमादि Stimulating and delicious  
food and drink e g flesh, wine  
etc पंचा० १, २१;

अच्चंत त्रि० (अत्यन्त) अतिशय, धण्डं.  
अतिशय, बहुत ज्यादा Excessive.  
(२) अंत-आरंभ-शर्यातने छेधंधी गयेल,  
जेनी शर्यात नथी ते; अनादि अनादि.  
having no beginning; existing  
from eternity. निर० १, १; ३, २;  
उत्त० ३२, १, भग० १८, १; विशेष०  
५६; ७२, पंचा० १४, ४४,—काल त्रि०  
(-काल) धण्डो लाये वामत. बहुत लंबा



समय, अति दीर्घकाल. a very long period of time “अचंचित कालस्स समुत्तयस्स सम्बस्स दुक्खस्स उ जो पमोक्खो” उत्त० ३२, १,—परम त्रि० (—परम) धा० उत्कृष्ट अति उत्कृष्ट excellent “अचंचितपरमो आसी, अउलो रूवविम्हओ” उत्त० २०, ५,—मसिण त्रि० (—मसिण) अत्यंत कोमल बहुत कोमल very soft or delicate प्रव० १४६६,—विसुद्ध. त्रि० (—विसुद्ध) अति विशुद्ध, धा० निर्मल, सर्वथा निर्दोष अत्यन्त विशुद्ध, बहुत निर्मल extremely pure, unsullied “अचंचितविसुद्धदीहरायकुलवंसप्यसूय” ठा० ६,—सुद्धि. त्रि० (—सुखिन्) अत्यंत-धनो सुखी बहुत सुखी extremely happy “तोहोइ अचंचितसुही कयत्थो” उत्त० ३२, ११०,

**अचंचित्य.** त्रि० (अत्यन्तिक) अत्यन्त, धा०. बहुत, ज्यादाह. Excessive, very much “योगंतणचंचित्य उव्वणं वयंति ते दोवि गुणोदयम्मि” सूय० २, ६, २४,

**अचंचित्विल** त्रि० (अत्यन्त) अतिशय आ०. बहुत खटा Extremely sour दस० ५, १, ७८,

**अचंचित्तर** न० (अत्यन्तर) छेय तेथी अधिक अक्षर भो०युं ते; ज्ञानो अेक अतिथार होवे उससे अधिक अक्षर बोलना; ज्ञान का एक अतिचार Speaking or pronouncing more words than are actually contained (e g in a text); a fault connected with knowledge आव० ४, ७, अणुजो० १३,

**अचंचण** न० (अर्चन) अर्था, पूजा, पुज आदिथी सत्कार करवा ते पूजन, पुण्य आदि से सत्कार करना Worship परह० १, ३;

**अचंचणा** स्त्री० (अर्चना) सुभ्य यदन आदिनु विदेपन करु ते. चंदन आदि का लेप

करना. Applying unctuous preparations of sandalwood etc उत्त० ३६, १८,

**अचंचणिआ** स्त्री० (अर्चनिका) अर्थन-विदेपन आदि करवां ते अर्चन-विलेपन आदि करना. Act of worshipping with flowers, sandal etc भग० ४, १,

**अचंचिज्ज** त्रि० (अर्चनीय) अर्थन-पूजन करवा योग्य, यंदन आदिथी अर्थवा योग्य अर्चन-पूजन करने योग्य, चंदन आदि से अर्चने योग्य Worthy of worship. भा० २, ७, १५, १७, १८, १९, भग० १०, ५, ६, राय० १६०, जं० ५० ७, १७१,

**अचंचत्थं** अ० (अत्यर्थम्) अतिशय, धा० अतिशय, बहुत ज्यादाह Excessive, very much. “अंगारपलित्तककप्पअचंचत्थं सीय वेयणा” परह० १, ३, विशेष० १८६६, सूय० २, ६, ४२,

**अचंचत्थत्त** न० (अत्यर्थत्व) सत्य युक्त वाणीना उ० अतिशयमानो आठमो अतिशय, २६स्य युक्त वचन ओलवुं ते सत्य के ३५ अतिशयों में का आठवाँ अतिशय, गंभीर वचन बोलना The eighth of the 35 Atisayas of truth, power of uttering words bearing profound meaning राय०

**अचंचभुय** त्रि० (अत्यद्भुत) अति विलक्षण; अति आश्चर्यकारक अति विलक्षण, बहुत आश्चर्यकारक Extremely wonderful, preternatural सु० च० ३, १७१; ६, ११२,

**अचंचय** पु० (अत्यय) विघ्न, विनाश विघ्न; विनाश An obstacle, destruction. वेय० ३, ४, उत्त० १०, १,

**अचंचसण** पुं० (अत्यशन) पक्षी आदि



द्विस; आरसनुं नाम. पक्ष का बारहवाँ दिन; द्वादशी. The twelfth day of every fortnight. सू० प० १०, जं० प० ७, १५२,

अच्चा स्त्री० ( अर्चा-अर्च्यतेऽसावाहारालङ्कारादिभिरित्यर्चा ) शरीर, देह. शरीर. The body. “एगच्चाए पुण एगे भयंतारो भवन्ति” सूय० २, २, ६, आया० १, १, ६, ५३, ( २ ) क्रोधना अध्यवसायनी ज्वाला क्रोध की ज्वाला. flames of wrath. आया० १, ८, ६, २२१, १, ६, १, ११, ( ३ ) लेश्या. लेश्या Leśyā i e. thought-tint or matter-tint “दुल्लभाओ तहच्चाओ जे धम्मट्ठं वियागरे” सूय० १, १५, १८, ( ४ ) तेज. तेज. lustre. आया० १, ४, ३, १३४,

अच्चाइरण त्रि० ( अत्याकीर्ण ) भीयो भीय लरेल लवालब भरा हुआ, दूंस कर भरा हुआ. Overfilled; filled to excess “अच्चाइरण वित्तो णो परस्स शिक्खमणप्पवेसाए” आया० २, ३, १, १२२,

अच्चासणया स्त्री० ( अत्यासनता ) आसन जमाव, ओड़ जमाये धरु वपत सुधी भेसी रहेवु. आसन जमाना, एक स्थान पर बहुत देर तक बैठे रहना Act of sitting for a long time at the same place ठ० ६, १;

अच्चासण त्रि० ( अत्यासन्न ) अति नज्द, छेड़ पासेनु. बहुत नजदीक, बिल्कुल पास. Very near; close to, just beside “अच्चासणो णाईदूरे सुस्सुसमाणे” भग० १, १, ओव० २२; २७;

✓ अच्चासाअ. धा० I. ( अति+आ+शब्+णि० ) उपसर्ग डरेवो उपसर्ग करना To torment ( २ ) ध्वंस डरेवो, ध्वंस करना. to destroy ( ३ ) अशातना डरेवी. अशातना-अविनय करना to

disturb, to trouble; to destroy.

अच्चासाइ निसी० १०, ४;

अच्चासाइत्तए. भग० ३, २;

अच्चासाइमाण. व० कृ० ठ० १०;

अच्चासायंत. व० कृ० निसी० १०, ४;

अच्चासाइय त्रि० ( अत्याशातित ) उपसर्ग डरेल; आशातना डरेल उपसर्ग किया हुआ; कष्ट दिया हुआ. Tormented, disturbed, troubled. “सेय अच्चासाइए उमाणे परिकुविए” ठा १०; भग० ३, २;

अच्चासायणया. स्त्री० ( अत्याशातनता ) लुओ ‘अच्चासायणा’ देखो ‘अच्चासायणा’ शब्द Vide “अच्चासायणा”. क० गं० १, ५४,

अच्चासायणा स्त्री० ( अत्याशातना ) डीलना डरेवी ते, डलडुं पाउवुं ते. अवहेलना करना. Humiliation; contemptuous conduct निसी० १०, ४; भग० ३, २; ठा० १०;

अच्चि स्त्री० ( अर्चिष् ) डिरेणु किरण. A ray, a beam of light पञ्च० २, ( २ ) रत्नादिना तेजनी ज्वाला. रत्नादि के तेज की ज्वाला. flaming lustre or brilliance of jewels etc. “अच्चिए तेएणं लेसाए दस दिसाए उज्जोएमाणे” भग० २, ५; पञ्च० १; ओव० २२; ( ३ ) शरीरमाथी नीडणती डान्तिनी ज्वाला शरीर में से निकलती हुई कान्ति की ज्वाला halo of light emanating from the body ठा० ८, १; ( ४ ) अग्निनी छुटी पडी गयेली-तूटेली-ज्वाला-जल अग्नि की टूटी हुई ज्वाला. a broken streak of fire उत्त० ३६, १०६, जीवा० ३, १; ठा० ५, ३, राय० ४३; नाया० १६; ( ५ ) दीवानी शिभा दीपक की शिखा flame of a lamp. दम० ४, ८, ८, ( ६ ) डूणु

राशनी वर्ये आवेसु ओड दोडान्तिड देवता-  
नुं विमान कृष्णराजी के बीच में आया हुआ  
लोकान्तिक देवता का एक विमान a heavenly  
abode of the Lokāntika  
gods in the midst of Krisna-  
rājī सम० ८, प्रव० १४६०, भग० ६, ५; (७)  
सूर्य सूर्य the sun नाया० १;—सह-  
स्समालिण्ज त्रि० (—सहस्रमालनीय-  
अर्चिषां किरणानां सहस्रैर्मालिनीयं परिवार-  
णीम्) जेभांथी आसपास आश्चर्य उपजवे  
येवी हजरे डिरेणोनी भाणा छुटती होय  
तेवी वस्तु जिसके आसपास से आश्चर्य जनक  
किरणों की माला निकलती हो ऐसी वस्तु  
a thing from which thousands  
of wonderful series of rays  
emanate नाया० १;—सहस्समाला  
स्त्री० (—सहस्रमाला ) हजरे डिरेणोनी  
भाणा—हार, हजारों किरणों की माला a  
series of thousands of rays of  
light भग० १०, ५,—सहस्समालि-  
णिय त्रि० (—सहस्रमालिनिक ) जेभांथी  
हजरे डिरेणोनी हारे छुटे तेवी वस्तु जिसमें  
से सहस्रों किरण निकलती हैं ऐसी वस्तु. a  
thing from which thousands of  
rays emanate भग० १०, ५,

अचिचप्पभा स्त्री० ( अर्चिप्रभा ) ओड  
देवीनु नाम, एक देवी का नाम Name  
of a goddess नाया० ५० ८,

अचिचमालि त्रि० ( अर्चिमालिन् ) डिरेणोनी  
भाणाथी वीटायेदो किरणों की माला से घेरा  
हुआ. Surrounded by a series  
of rays जीवा० ४, ( २ ) पुं० सूर्य सूर्य  
the sun सूर्य० १, ६, १३, उत्त० ६, २७, जं०  
५० ७, २७, सम० ५० २१४, (३) न० कृष्णराश-  
नी वर्ये आवेसु ओडान्तिड देवतानु विमान  
कृष्णराजी के बीच का एक लोकान्तिक देवता

का विमान a heavenly abode of  
Lokāntika gods situated in  
the midst of Krisnarājī सम०  
८; भग० ६, ५;

अचिचमाली स्त्री० ( अर्चिमाली—मालिनी )  
सूर्य अने चंद्रनी त्रीण अग्रमहिपीनु नाम  
सूर्य और चंद्र का तीसरी पट्टराणी का  
नाम. The name of the third  
chief queen of the sun and the  
moon सू० ५० १८; भग० १०, ५, जीवा०  
४, १; ठा० ४, १; नाया० ५० ७, ( २ )  
अग्निपुष्पाना रतिकर पर्वतनी पश्चिमे न्या-  
वेदी शक्रदेवेन्द्रनी पट्टराणीनी राजधानी.  
अग्नि कोन के रतिकर पर्वत की पश्चिम दिशा  
में आई हुई शक्रदेवेन्द्र की पट्टराणी की  
राजधानी the capital of the queen  
of the lord of first Devaloka  
situated to the west of the  
Ratikara Mountain of the  
south-east ठा० ४, २,

अचिचय त्रि० ( अर्चित ) अर्च्येय, पूज्येय  
अर्चित, पूजित Adored, worshipped  
ओष० नि० भा० ३०७, भग० १२, ८, नाया० १;

✓ अचिचीकर ना० धा० II ( अर्चीकर ) पूज-  
अर्था डरवी अर्चा करना, पूजा करना To  
worship.

अचिचीकरेइ निसी० ४, २,

अच्युक्कड त्रि० ( अत्युक्त ) अति उग्र, अति  
उन्त अति उग्र, बहुत ज्यादा उन्त—उन्कट.  
Furious, highly excited, intox-  
icated with power ओष० नि० ६२२;

अच्युष्टिय त्रि० ( अत्युष्टित ) अत्यन्त अधार्थ-  
धर्तुं अधर्तित धार्थ डरवाने तैयार अथेय  
अत्यन्त बुरा कार्य करने को तैयार Intent  
on doing a most improper act

“ अच्युतियाए घडदासिए वा, अगारिणं वा  
समयाणुसिद्धे ” सूय० १, १४, ८;

अच्युतयाय त्रि० ( अत्युन्नत ) अति उन्नतं बहुत  
उन्नत. Very high; lofty or  
exalted. कण्व० ३, ३६;

अच्युतह. त्रि० ( अत्युष्ण ) अतिशय गरम-उत्तु,  
अति उष्ण स्वभाववाणुं. अतिशय उष्ण;  
बहुत गर्म स्वभाव वाला. Very hot; of  
a very haughty temperament  
ठ० ५, ३;

अच्युत पुं० ( अच्युत ) आरभो देवलोक,  
आरभुं स्वर्ग. बारहवाँ देवलोक, बारहवाँ स्वर्ग.  
The twelfth celestial abode.  
सम० २२, ठ० २, ३, ( २ ) अगियारमा  
तथा आरभो देवलोकना धंनु नाम ग्यारहवें  
तथा बारहवें देवलोक के इन्द्र का नाम.  
name of the Indra of the  
eleventh and twelfth Devalokas.  
ठ० २, ३,—कण्व पुं० ( -कण्व ) आरभो  
देवलोक. बारहवाँ देवलोक the twelfth  
region of gods भग० २४, १२,

अच्युदय न० ( अच्युदक ) मोटा वरसाह;  
महावृष्टि. अतिशय वृष्टि, मूसलधार वर्षा.  
Heavy rain “समए वासत्तायं अच्युदये  
सुखतरं ण वा णेइ” ओब० ( २ ) धणुं  
पाणुं. बहुत जल. excessive rain  
जीवा० ३,

अच्युत पुं० ( अच्युत ) आरभो देवलोक. बार-  
हवाँ देवलोक The twelfth region  
of gods. भग० ३, १; १०, १७, ६; १८,  
७, अणुजो० १०३; १३४, निर० २, ५,  
विशे० ४३६, सम० १५०; भक्त० १७०, जं० प०  
२, ३२, ( २ ) ११ मा अने १२ मा देवलोकना  
धंनु नाम ग्यारहवें तथा बारहवें देवलोक के  
इन्द्र का नाम name of the Indra  
of the eleventh and twelfth

Devalokas. पञ्च० २; सम० ३२; नाया०  
८; ( ३ ) आरभो अच्युत देवलोकवासी देवता.  
बारहवें अच्युत देवलोक में रहने वाले देवता.  
gods residing in the twelfth De-  
valoka named Achyuta उत्त० ३६,  
२०६; पञ्च० १; ( ४ ) अविनाशी अविनाशी.  
eternal, imperishable. भग० १,  
२,—कण्व पुं० ( -कण्व ) आरभो देवलोक.  
बारहवाँ देवलोक the twelfth region  
of gods. भग० १७, ६;

अच्युतवर्द्धिसग पुं० ( अच्युतावतंसक ) आरभो  
देवलोकनु ओक विमान, ६ जेमां रहेनार देवता-  
नी स्थिति आवीस सागरोपमनी छे ओ देवता  
अच्यारमे अच्यारमे महीने श्वासोच्छ्वास ले छे,  
ओने आवीस आवीस हजार वर्षे लुप्त लागे छे.  
बारहवें देवलोक का विमान, जहाके निवासी  
देवों की आयु बावीस सागरोपम की है और वे  
ग्यारहवें २ महीने श्वास लेते हैं और २२  
हजार वर्षों के बाद उन्हें लुप्त लगती है. An  
abode in the twelfth Devaloka.  
The duration of life of the gods  
living there is 22 Sāgaropamas  
(a measure of time). These gods  
breathe every 11th month  
and feel hungry after the lapse  
of every 22 thousand years.  
सम० २२,

अच्युता. स्त्री० ( अच्युता ) श्रीपद्मप्रभु  
तथा श्रीकुन्थुनाथस्वामीनी शासनदेवी श्री  
पद्मप्रभु तथा श्रीकुन्थुनाथस्वामी की शासन  
देवी The presiding goddess of  
the cult of Śrī Padma Prabhu  
and Śrī Kunthunātha Svāmī.  
प्रव० ३७७; ३७८;

अच्युतसिंह त्रि० ( अत्युष्ण ) धणुं गरम-उत्तु.  
बहुत गर्म Very hot. “ अच्युतसिंह

सुप्पेण वा जावकुमारि वा ” आया० २, १, ७,  
३६; निसी० १७, २७; २८,

✓ अच्छ. धा० I. ( आस् ) भेसुं; आसन  
लगानुं बैठना, आसन लगाना. To sit,  
to take a seat.

अच्छत्त उत्त० ३१, ३, सु० च० ७, १६२;

अच्छंति पंचा० १७, ४;

अच्छते. पि० नि० १६८;

अच्छाहि. नाया० ५; भग० ६, ३३;

अच्छउ विशेष० १३४८,

अच्छमाण. व० कृ० ओघ० नि० ७७१,  
नाया० १,

अच्छिउं हे० कृ० भत्त० ८४;

अच्छ त्रि० ( अच्छ ) स्फटिकना जेवुं स्वच्छ,  
निर्मल, योद्धुं. स्फटिक के समान स्वच्छ,  
निर्मल Pure; clear, pure as crys-  
tal. भग० २, ८, १५, १, १६, ७, जं०  
प० ४, ७४, जीवा० ३, १, ४, पञ्च० २;  
सम० प० २११; ओघ० नि० ५५४; नाया०  
४, १२; ( २ ) पुं० मेरु पर्वत. मेरु पर्वत the  
mountain Meru “ ता अच्छंसिणं  
पव्वयंसि ” सू० प० ५, ( ३ ) ओ नामने  
ओक्क आर्य देश एक आर्य देश का नाम  
name of an Ārya country  
भग० १५, १, प्रव० ६०४, ( ४ ) स्फटिक  
स्फटिक. crystal पञ्च० १,—उदग न०  
(—उदक) स्वच्छ पाणी. निर्मल जल स्वच्छ  
पानी, निर्मल जल. pure water, clear  
water राय०

अच्छ पुं० ( अच्छ ) रीछ रीछ Bear  
आया० २, १, ५, २७, भग० ३, ५, ७, ६,  
जीवा० ३, ३, पञ्च० १, नाया० १;  
—भल्ल पुं० (—भल्ल) रीछ रीछ. a bear  
परह० १, १;

अच्छ न० ( अच्छ ) आण आख An eye  
ओघ० ३१

अच्छंद त्रि० ( अच्छन्द ) परार्थीन; पर-  
तंत्र. परार्थीन. परतंत्र Dependent  
“ अच्छदा जेण भुजंति ण से चाडत्ति  
सुच्चई ” दस० २, २,

अच्छण. न० ( आसन ) भेड्ड, आसन बैठक,  
आसन A seat उत्त० २६, ७, जीवा०  
३, ४,—घर. न० (—गृह ) भेड्डनुं  
स्थान बैठक का स्थान the place for  
sitting, a seat नाया० ३;

अच्छण पुं० ( अच्छण ) अहिंसा. अहिंसा  
Abstaining from injury. दस० ८,  
३,—जोय पुं० (—योग ) अहिंसाभय  
प्रवृत्ति अहिंसा की प्रवृत्ति. act or con-  
duct involving no injury “ तेमिं  
अच्छणजोएणं शिच्चं होयव्वयं सया ”  
दस० ८, ३,

अच्छणअ न० ( आसनक ) स्वाध्याय भूमि;  
स्वाध्याय स्थान स्वाध्यायभूमि, स्वाध्याय  
का स्थान. Seat occupied at the  
time of studying Sāstras “ उच्चारे  
पासवणे लाउय निस्सेवणे य अच्छणअ ”  
ओघ० नि० भा० ११६,

अच्छण्डिउर न० ( अच्छनिकुर ) ८४ लाख  
अक्षनिकुरांगेनो ओक्क अक्षनिकुर थाय; ८४  
लाख अक्षनिकुरांग प्रमाणे प्राणविभाग  
८४ लाख अच्छनिकुरांग प्रमाणे काल विभाग.  
A period of time measured by  
eighty-four lacs of Aksanikurā-  
ngas ( a division of time so  
named ) ठा० २, ४,

अच्छण्डिउरंग न० ( अच्छनिकुराङ्ग ) ८४ लाख  
नक्षिनगेनो ओक्क अक्षनिकुराङ्ग थाय; ८४  
लाख नक्षिन प्रमाणे ओक्क प्राणविभाग  
८४ लाख नक्षिन प्रमाणे काल विभाग; अच्छ  
निकुराङ्ग नामक एक कालविभाग. A  
period of time measured by

eighty-four lacs of Nalinas ( a division of time so named ).

ठा० २, ४;

अच्छत्ताग. त्रि० ( अच्छन्नक ) ञुओ “अच्छत्तय” शब्द. देखो “अच्छत्तय” शब्द  
Vide “अच्छत्तय”. नाया० १५;

अच्छत्तय त्रि० ( अच्छन्नक ) छत्र वगस्तुं  
छत्र रहित. Having no umbrella.

“अदंतवणे अच्छत्तए अणुवाणहए” ठा० ६,  
भग० १, ६,

अच्छदिय. त्रि० ( अच्छादित ) ढाँडेहुं ढका  
हुआ. Covered परह० २, ४,

अच्छरकारक. त्रि० ( आश्चर्यकारक ) आश्चर्य  
उपजाने ओयु; विस्मयकारी विस्मयकारी,  
आश्चर्यकारक Wonderful, astonish-  
ing. परह० २, २,

अच्छरस त्रि० ( अच्छरस ) अति निर्मल; अटुं  
निर्मल के जेभां पासेनी वस्तुनुं प्रतिभिंय  
पडे आतिनिर्मल, इतना निर्मल कि, जिसमें  
समीपवर्ती वस्तु का प्रतिबिम्ब पड़ सके Very  
clean, transparently clear. राय०  
१८६, जं० प० ५, १२२,

अच्छरसातंडुल न० ( अच्छरसतण्डुल-  
अच्छो रसो येषु ते अच्छरसाः ते च ते  
तण्डुलाश्च, पूर्वपदस्य दीर्घत्वं प्राकृतत्वात् )  
श्वेत-सङ्केत द्विंय ओभा सफेद चावल.  
Excellent white rice “अच्छेहिं  
सेएहिं रयणामएहिं अच्छरसातंडुलेहिं अट्ट-  
मंगले आलिहइ” राय०

अच्छरा स्त्री० ( अप्सरा-अप्सरस् ) देवांगना,  
अप्सर. अप्सरा, देवाङ्गना A heavenly  
damsel, a celestial nymph नाया०  
५, भग० ३, २; सु० च० ३, ६२, जीवा०  
३, ३, ४, जं० प० २, २१, पन्न० २, ३४,  
निर० ५, १; ( २ ) सौधर्मेन्द्र की

पट्टराणी सौधर्मेन्द्र की दूसरी पट्टराणी.  
second of the principal queens  
of Saudharmendra. ठा० ४, २;  
नाया० ध० ६, ( ३ ) शकेन्द्र की छठी अग्रम-  
हिणी. शकेन्द्र की छठी अग्रमहिणी. sixth  
of the principal queens of  
Śakrendra. भग० १०, ५;—गण पुं०  
(-गण ) अप्सराओ समूह अप्सराओ का  
समुदाय a multitude of heavenly  
damsels निर० ५, १,

\*अच्छरा स्त्री० ( पुटिका ) थपटी वगाडी ते;  
आगणी अने अगुडो बेगा डरी वगाडवा ते.  
चुटकी बजाना Producing a sharp  
sound by snapping the thumb  
against a finger. सूय० २, २, ५४;  
पन्न० ३६,—णिवाय पुं० (-निपात् ) आं-  
भतो पण्डारो भारिओ के थपटी वगाडीओ  
तेटले डाण चुटकी बजाने में या आख का पलक  
मारने में जितना समय लगता है उतना समय.  
time measured by a twinkling  
of an eye or snapping of fingers.  
जीवा० ३, १, भग० ६, ५; ओव० ४२;

अच्छरिय. त्रि० ( अवस्तृत ) आच्छादित;  
ढाँडेहुं ओढाडेहुं ढका हुआ. Covered.  
राय० ६२,

अच्छवि पुं० ( अच्छवि-छविः काययोगः स  
नास्ति यस्य स तथा ) डाथाना योगने रोडनार  
स्नातक, यौदमा गुण्डाणावाणा साधु काया  
के योग को रोकने वाला स्नातक, चौदहवें गुण-  
स्थानवर्ती साधु An ascetic who  
stops the activities of body, a  
Sādhu in the fourteenth Gu-  
nasthāna. ठा० ५, ३, भग० २५, ६;

अच्छविकर पुं० ( अच्छपिकर-नक्षपिः-स्वपर-  
योरायानो यः सः तत्करणशीलो न भवति  
सोऽच्छपिकरः ) प्रशस्त विनयनो ओड प्रशस्त;



पोताने अने परने दुःख न उपजे तेवी रीते  
भनने येणु ते प्रशस्त विनय का एक भेद;  
अपने को और दूसरे को दुःख न हो, इसप्रकार  
मन की योजना करना Guiding the  
mind in a way which would  
cause no harm, a sort of noble  
behaviour भग० २५, ७,

अच्छा स्त्री० ( अच्छा ) वरुण देशमांती ओष्ठ  
नगरी. वरुण देश की एक नगरी A city  
of the country called Varuna.  
पञ्च० १, प्रव० ६०४,

अच्छि न० ( अच्छि ) नेत्र, यक्षु. नेत्र, आँख  
An eye. उत्त० २०, १६, ओव० १०,  
जीवा० ३, १, ३, दस० ८, २०, अणुजो०  
१३०; पञ्च० १, ३, आया० १, १, २, १६,  
ओघ० नि० ७३६, ओघ० नि० भा० २६६;  
निर० ३, ४, निसी० ३, ६१, ६२, राय० १६४,  
विवा० २; दसा० ७, १, भग० ३, ७, १४,  
१, नाया० १, वेय० ६, ४,—अंतर पुं०  
न० (—अन्तर ) जे आपनी वयेतो  
भाग दो आखो के बीच का भाग the  
part intervening the two eyes  
विवा० १,—कणुग, पु० (—कणक ) आप-  
मा पडेव २०-३७ आख में पड़ा हुआ रज-  
कण a particle of dust etc. in  
the eye पंचा० १८, १०,—ठयण न०  
(—स्थगन ) आपनुं ढाडपुं आख का ढकना  
closing the eye, covering the  
eye पंचा० २, २५;—णिमीलिय न०  
(—निमीलित ) आप भियवी ते आख मीच-  
ना shutting of the eye, wink-  
ing of the eye जीवा० ३,—णिमी-  
लियमेत्त. न० (—निमीलितमात्र ) आप  
भियीने उधाडवी ओटलो डाण-वभत आख  
मीच कर फिर खोलने में जितना समय लगता  
है उतना काल time measured by

the twinkling of the eye “अच्छि  
णिमीलियमेत्तं एत्थि सुहे दुक्खमेव अणुवद्धं”  
जीवा० ३,—पत्त न० (—पत्र ) आपनी  
पापणु आँख की वल्ली; पलक an eye-  
lid भग० १४, ८, जीवा० ३, ३, निसी० ३,  
५५, ६०, राय० १६४,—पव्व न० (—पर्व्वन् )  
आपनो सांधी, जे आप वयेतो अतराल.  
दो आखों के बीच का स्थान. the space  
intervening the two eyes पञ्च०  
११,—मल पु० (—मल ) आपनो भेल;  
पीयो आँख का मैल mucus or gum of  
the eye निसी ३, ६४, प्रव० ४३६;  
—रोडय पुं० (—रोडक ) आर धट्टिय-  
वाणो ओष्ठ ७५ चार इन्द्रियो वाला एक जीव.  
a creature having four organs  
of sense पञ्च० १,—विचित्त न०  
(—विचित्र-विचित्रे अच्छिणी यस्य मः) विचित्र  
आंभवाणो अतुरिद्रिय ७५विशेष विचित्र  
आखो वाला चतुरिन्द्रिय जीवविशेष a four  
sensed being having curious  
eyes. उत्त० ३६, १४७,—वेयणा स्त्री०  
(—वेदना ) आपनी वेदना-दुःख, १६ रोग-  
मानो १२ भो रोग आख की वेदना, सोलह  
रोगों में से बारहवाँ रोग pain in the eye;  
12th out of the sixteen diseases  
नाया० १३, उत्त० २०, १६.—वेहग पु०  
(—वेधक ) आर धट्टियवाणो ओष्ठ ७५ चार  
इन्द्रियों वाला एक जीव a creature hav-  
ing four organs of sense. “डोल  
मिंगारीयविराली अच्छिवेहगु” उत्त० ३६,  
१४८, पञ्च० १,—शूल पु० (—शूल )  
आपनुं शय, १६ रोगमानो ओष्ठ रोग.  
आख का शूल, १६ रोगों में से एक रोग.  
eye-sole, a kind of disease of  
the eye; one of the sixteen  
diseases जाना० ३, ३,



अच्छिज्ज. न० ( अच्छेद्य ) छेदवाने अशक्य;  
छेदी न शक्य तेपुं छेदने के लिये अशक्य;  
जो छेदा न जा सके वह. Incapable of  
being cut or pierced ठ० २, २;  
पि० नि० ३६६;

अच्छिज्ज. त्रि० ( अच्छेद्य ) आण्डादि पासे-  
थी छीनवील्ल ने आहारादि साधुने आपवाथी  
लागतो अेड दोष; उद्गमनना १६ दोषमानो  
१४ भो दोष वच्चों से छीनकर साधु को आहार  
आदि देने से लगने वाला एक दोष; उद्गमन के  
१६ दोषों में से १४ वाँ दोष. A sin  
incurred by snatching food  
from others and giving it to  
the Sādhus, fourteenth of the  
sixteen faults of Udgamana.  
आया० १, ८, २, २०२; ठ० ६, १; पञ्च० २,  
निसी० १४, ४, १६, ४; पि० नि० ६३;

अच्छिरण. त्रि० ( अच्छिन्न ) छेदेतुं-डापेतुं नहि  
ते; लुटुं पाडेतुं नहि ते छेदा हुआ न हो वह.  
Uncut, unseparated ठ० १०.

अच्छिरण. त्रि० ( अच्छिन्न ) अविच्छिन्न, निर-  
तर. अविच्छिन्न; निरंतर. Ceaseless, con-  
stant. पि० नि० २३२;—छेदणइय.  
न० (—छेदनयिक) अछिन्नच्छेद नयनी अपे-  
क्षाये रयेला सूत्र; गोशालाना मतना सूत्रनी  
परिपाटी. अच्छिन्नच्छेद नय की अपेक्षा से  
रचित सूत्र; गोशाला के मत की परिपाटी  
Sūtras composed from the stand  
point of Achchhinna-chchheda, a  
method of the Sūtras of Gośālā's  
tenets. सम० २२,—छेदणइय. पुं०  
(—छेदनय) परस्पर अविलक्षितसूत्रानो छेद-  
विलाग छिन्नार नयविशेष; जेम “ धम्मो-  
मंगलमुक्किट्ठं ” अे गाथा अर्थदष्टिये  
थीछ गाथा साथे संक्षिप्त छतां पाइती  
दष्टिअेत्ते तेने अलग अलग मानतार

अेड नय परस्पर अविक्तम सूत्रों का विभाग  
चाहने वाला नयविशेष; जैसे कि, ‘धम्मो  
मंगल मुक्किट्ठं’ यह गाथा अर्थ दष्टि से दूसरी  
गाथा के साथ संकलित होने पर भी पाठ की  
दष्टि से उसे पृथक् मानने वाला नय. the  
standpoint denying the interre-  
lation of scriptural texts. सम० २२;  
अच्छित्ति ली० (अच्छित्ति) अव्यवच्छेद; विच्छेद-  
नो अभाव अव्यवच्छेद; विच्छेद का अभाव.  
Absence of break, continuity.  
प्रव० ७८६;

अच्छित्तिकारि त्रि० ( अच्छित्तिकारिन् ) नाश  
न डरतार, छेद न डरतार. नाश न करने  
वाला, छेद न करने वाला One who  
does not cut, one who does not  
destroy. विशे० १४५८;

अच्छिद्ध त्रि० ( अच्छिद्र ) छिद्र वगरतुं;  
निश्छिद्र; धाटुं-छिद्र विनानुं. छिद्र रहित.  
Without holes. भग० १५, १; जीवा०  
३, ३; ओव० १०; ( २ ) गोशालाना ६ दिशाचर  
साधुमांनो योथा दिशाचर साधु गोशाला के छिद्र.  
दिशाचर साधुओं में से चौथा दिशाचर साधु.  
the fourth of the six Disāchara  
Sādhus of Gośālā भग० १५, १;—  
कुच्छि. पुं० (—कुच्छि ) छिद्र वगरनी भासथी  
भरेली पुष्ट अेवी दुंभ छिद्ररहित मांस से  
भरी हुई कुच्छि. an arm-pit without  
a hollow i. e. full of flesh.  
“अतियाकुच्छी अछिद्रकुच्छी अलंबकुच्छी”  
नाया० १,—पत्त त्रि० (—पत्र-अच्छिद्राणि  
पत्राणि यस्य सः) जेना पांढरां डाई रोगादिथी  
थतां छिद्रवाणां न होय ते जिसके पत्ते किसी  
रोगादि के कारण छिद्र वाले न हो वह. with  
leaves without holes caused by  
some disease etc. “ अच्छिद्रपत्ता  
अविरलपत्ता अचार्दणपत्ता ” नाया० १;

**अच्छिद्य** न० ( अक्षिक ) डोई अथवा वृक्षानुं इल; रंगवामा उपयोगि डोई अउतुं इल. किसी एक वृक्ष का फल; रंगने में उपयोगी वृक्षविशेष का फल. A fruit of a tree used for dying purposes. आया० २, १, ८, ४८;

**अच्छिल** पुं० ( अक्षिल ) आर धंद्विवाणो अथ ७५. चार इन्द्रियों वाला एक जीव A creature having four organs of sense. उत्त० ३६, १४६;

**अच्छी** स्त्री० ( आच्छी-अच्छदेशोद्भवा स्त्री ) अथ देशमां उत्पन्न थयेदी स्त्री अच्छदेश में उत्पन्न हुई स्त्री A woman born in a country called Achchha पञ्च० ११;

✓ **अच्छीकर** ना० धा० II. ( अच्छी × कृ ) स्व२७ डरतुं, साक्ष डरतुं. स्वच्छ करना, साफ करना To cleanse; to purify.

अच्छीकरेइ. निसी० ४, ३;

**अच्छुत्ता** स्त्री० ( अस्पृष्टा ) २० मा तीर्थकरनी शासन देवीनुं नाम २० वें तीर्थकर की शासन देवी का नाम. Name of the tutelary goddess of the 20th Tirthankara. प्रव० ३७८;

**अच्छुय** त्रि० ( आस्तृत ) आच्छादित डरेतुं; ढाँकेतुं ढका हुआ. Covered. नाया० ८;

**अच्छेज्ज** त्रि० ( अच्छेद्य ) छेदी न शक्य अथ छेदा न जा सके ऐसा. Incapable of being cut भग० २०, ५, ठा० ३, २,

**अच्छेज्ज** न० ( आच्छेद्य-आच्छिद्यते पुत्रादेः सकाशाद्यत्साधुदानार्थं तदाच्छेद्यम् ) डोईना हाथमांथी लई साधुने आपतुं ते, आहारने अथ दौप. किसीके हाथ में से छीन कर साधु को देना, आहार का एक दोष Giving (food etc) to a Sādhu after snatching it away from the hands of

another; a fault connected with food. पंचा० १३, ६, पराह० २, ५, दसा० २, ७; भग० ६, ३३;

**अच्छेर** पुं० ( आश्चर्य ) आश्चर्य डारक अनाय; अथेइ आश्चर्य कारक वनाव A wonder, a wonderful event प्रव० ८६६, जीवा० ३, ३,—पेच्छुरिज्ज न० ( -प्रेक्षणीय ) आश्चर्यजनक दृश्य; डैतुड उपमवे अथी वस्तु. आश्चर्यजनक दृश्य a wonderful spectacle; a thing that would excite curiosity. जीवा० २,

**अच्छेरग** पुं० न० ( आश्चर्य ) आश्चर्यकारी अनाय; दश अथेइशमानुं गमे ते अथ. आश्चर्यकारी वनाव, दस आश्चर्यकारी वनावों में से एक. A wonderful event; one of the ten wonderful events. ठा० १०, ( २ ) आश्चर्य पाभतुं ते, अथअो-अथरन पाभतु ते आश्चर्य करना astonishment “अच्छेरगमवमुदण” उत्त० ६, ५१, जं० प० २, २१;

**अच्छेरय** पुं० न० ( आश्चर्य ) लुओ “अच्छेर” शब्द देखो “अच्छेर” शब्द Vide ‘अच्छेर’. नाया० ८, १७, प्रव० ३३, कप्प० २, २२; **अच्छेरयभूय** त्रि० ( आश्चर्यभूत ) नवांथ नेतुं. अचंभे जैसा. Wonderful, astonishing पंचा० ६, ३०;

**अच्छोड** न० ( आच्छोदन ) धोपीनी भाइड लुगडने शिला साथे नेरथी पठाउतुं-जीडतु ते. धोवी के समान वस्त्रों को शिला पर जोर जोर से पछाड़ना Dashing a cloth against a slab of stone for washing etc पिं० निं० भा० ३४,

**अज** पुं० ( अज ) अडरे वकरा A he-goat जीवा० ३, ३, विवा० ४;

**अजड** स्त्री० ( अयति ) अयिरति; अयनीपाय.

अविरति; अव्रतोपन. Absence of freedom from attachment to worldly objects; non-asceticism. क० गं० ३, १८; ४, २३;

अजजर त्रि० (अजजर) ८२१-ध३प७ रहित, ध३प७ वग२नु. वृद्धावस्था से रहित. Free from old age; free from senility. जीवा० ३;

अजडिल. त्रि० (अजडिल) ८२१ वग२नु. जटा रहित Devoid of matted hair. भग० १६, ४;

अजय त्रि० (अयत-न विद्यते यत् यतिर्यतना यस्य सोऽयतः ) यत्ना-न्यथा रहित. यत्नाचार रहित Without efforts at self-control; without minute observation. दस० ४, १. ८, १, पि० नि० ३५३; ( २ ) गृहस्थ जेवा साधु, सावध क्रियाथी निवृत्त न थयेव साधु गृहस्थ के समान साधु, जो सावध क्रिया से निवृत्त न हुआ हो. a Sādhū who acts like a layman, who has not abstained from sinful activity. गच्छा० १, ( ३ ) त्रि० अविरत सम्यग्दृष्टि; योथा गुणस्थानावाणे. अविरत सम्यग्दृष्टि; चौथे गुणस्थान वाला a person in the fourth stage of spiritual evolution, having faith, but not observing rules of conduct. क० गं० २, १५; क० प० ५, २७; ( ४ ) न० यत्नाने अभाव. यत्नाचार का अभाव. absence of minute observation. “अजयं चरमाणो य पाणभूयाइं हिंसई” दस० ४, १;—गुण पुं० (—गुण) अविरति सम्यग्दृष्टि गुणवाणुं; योथुं गुण ठाणुं अविरति सम्यग्दृष्टि गुणस्थान; चौथा गुणस्थान. the fourth Gunasthāna marked with non-cessation from

worldly attachment. क० गं० ३, २१;—जुअ त्रि० (—युत) अविरति सम्यग्दृष्टि गुणवाणु सहित. अविरति सम्यग्दृष्टि गुणस्थान सहित. associated with the Gunasthāna called Avirati Samyagdṛiṣṭi. क० गं० ४, ६;

अजयणा त्रि० (अयतना) यत्ना-न्यथाने अभाव. यत्नाचार का अभाव. Absence of minute observation. “अजयणाण पकुव्वंति पाहुणगाणं अवच्छला” गच्छा० १२०; पचा० १५, १८;

अजयित्ता. सं० कृ० अ० (अजित्वा) न जीतीने. न जीतकर Without conquering. ठा० ३, २;

अजर त्रि० (अजर-नास्ति जरा यस्य) ८२१ रहित; ध३प७ वग२नो वृद्धावस्था रहित. Without old age. ( २ ) पुं० सिद्ध-लगवान्. सिद्धभगवान्. one who has attained to salvation; a Siddha. ओव०

अजराउय त्रि० (अजरायुज) ८२१युज-गर्भाशयमाथी ८२ साधे ८८मतो प्राणिवर्ग, तेथी सिद्ध अ८२युज. जरायुज नहीं सो; जिसका जन्म कोख से न हुआ हो. Not born from the womb, not viviparous. प्रव० १४८२;

अजरामर. न० (अजरामर-न विद्यते जरामरौ यत्र तदजरामरम्) ८२यां ८२१ मरण नथी अणुं स्थान जरा मरण रहित स्थान. A place where there is neither decay nor death तरु० २६; ( २ ) ८२१-ध३प७ मरण रहित. जरामरण रहित. undecaying and immortal. “अहो-यरात्रोपरितप्पमाणे अहेसु सुडे अजरामरेव” सूत्र० १, १०, १८, ( ३ ) पुं० ८२१ मरण

रहित, अमर; सिद्धभगवान् . जरामरण  
रहित, अमर; सिद्धभगवान् ( one ) free  
from old age and death, immortal; a Siddha. गच्छा० ४७,

**अजस** न० ( अयशस् ) अपयश, अपकीर्ति;  
निन्दा अपयश, अपकीर्ति, बुराई, निन्दा  
Disgrace, dishonour. भग० ६,  
३३, ४१, १, क० गं० १, २७, २, ७,  
—कारण. त्रि० (—कारक) अपकीर्ति डर-  
नार बुराई करने वाला, अपकीर्ति करने वाला  
bringing on disgrace; defaming.  
भग० ६, ३३, —किञ्चिणाम. न० (—कीर्तिना-  
मन् ) नामकर्म्मणी ओङ्क प्रकृति, डे गेना  
उदयथी एव अपकीर्ति पावे नामकर्म्म की  
एक प्रकृति, जिसके उदय से जीव की अपकीर्ति  
होती है. a variety of Nāmakarma  
by whose rise a living being is  
subjected to infamy. क० गं०  
१, ६७;—जणग. त्रि० (—जनक ) अपयश  
डरनार अपयश करने वाला. causing  
infamy, libellous, defamatory.  
गच्छा० ५५;—बहुल. त्रि० (—बहुल) गेना  
धर्मां काम अपयश लरेदां होय ते जिसके  
अधिक कार्य अपयश से भरे हों abounding  
in dishonourable deeds,  
infamous, notorious “ शिखिबहुले  
साईबहुले अजसबहुले ” सूय० २, २, ३५,  
**अजसोकिञ्चि**. स्त्री० ( अयशःकीर्ति ) नाम  
कर्म्मणी ओङ्क प्रकृति, डे गेना उदयथी एव अपयश  
पावे नामकर्म्म की एक प्रकृति, जिसके उदय  
से जीव अपयश प्राप्त करता है A variety  
of Nāmakarma by whose rise  
a living being suffers infamy.  
पञ्च० २३; सम० २५;

**अजस्सं**. अ० ( अजसम् ) निरंतर, हमेशा.  
निरंतर, सदा. Always; incessantly.

“आमरणंतमजस्सं संजमपारेपालणं विहिण्णा”  
पंचा० ७, ४६,

**अजह** त्रि० ( अजघन्य ) थोडाभां थोडा नहि ते;  
मध्यम अथवा उत्कृष्ट जघन्य न हो वह, मध्यम  
अथवा उत्कृष्ट Other than the very  
lowest, mediate or the highest.  
भग० ८, १०, ११, ११; क० प० १, ६२,

**अजहरणमणुक्कोस**. त्रि० ( अजघन्यमनुत्कर्ष  
—अजघन्योत्कर्ष ) न्यून नहि अने उत्कृष्ट  
नहि ते, मध्यम मध्यम Intermediate,  
between two extremes भग०  
८, १०, ११, ११; १८, ४, २५, ६; नाया० १६;  
**अजहरणुक्कोस** त्रि० ( अजघन्योत्कर्ष ) न्यून  
डे उत्कृष्ट नहि ते, मध्यम. मध्यम Inter-  
mediate, between the two extre-  
mes. भग० ८, १०, पञ्च० ५, —पएसिय.  
पुं० (—प्रदेशिक ) न्यून नहि अने उत्कृष्ट  
नहि किन्तु मध्यम प्रदेशनुं अनेल-निष्पन्न  
मध्यम प्रदेश का बना हुआ belonging  
to or having its birth in the  
intermediate region. ठा० १, १;

**अजहतथ** न० ( अयथार्थ ) अयथार्थ नाम;  
शुशुहीन नाम. गुणहीन नाम; अयथार्थ नाम.  
Name devoid of real qualities;  
name inconsistent with its  
meaning विशेष० ८४७, ठा० १, १

**अजहन्न** त्रि० ( अजघन्य ) न्यून नहि, मध्यम  
अथवा उत्कृष्ट जघन्य नहीं, मध्यम अथवा  
उत्कृष्ट Not lowest, not minimum,  
medium or highest क० गं० ५,  
४६; ४७;—मणुक्कोस त्रि० (—अनुत्कर्ष )  
न्यून अने उत्कृष्ट नहि, मध्यम जघन्य और  
उत्कृष्ट नहीं, मध्यम. neither highest  
nor lowest. medium प्रव० ११५८.

**अजा** स्त्री० ( अजा ) गधरी बकरी A she-  
goat ज० प० २, २४,

**अजाइय.** त्रि० ( अयाचित ) नहि जयेलुं; अदत्तादान-जया विना दीधेलुं. विना मांगा हुआ; विना याचना किये लिया हुआ. Unso-  
licited. “मुसावायं बहिष्ठं च उगहं च अजाइयं” सूय० १, ६, १०; उत्त० २, २८, नाया० ५;

**अजाइया** सं० कृ० अ० ( अयाचित्वा ) न मां-  
गीने, मांग्या विना. न मांगकर; मागे विना. Without soliciting; without making a demand. “कवाडं नो पणो-  
लिज्जा उगहंसि अजाइया” दस० ५, १, १८; ६, १४;

**अजाणंत.** व० कृ० त्रि० ( अजानत्-अजानान )  
डल्पाडल्पने न जणुतो; अल्पज्ञ, अगीतार्थि.  
कल्पाकल्प को नहीं जानता हुआ; अल्पज्ञ  
Ignorant, not knowing. “अजा-  
णंता सुसं वदे” सूय० १, १, ३, ८,

**अजाणग** त्रि० ( अज्ञानक-अज्ञ ) अज्ञ, अ-  
जणु; अज्ञानी. अज्ञ; अजान, अज्ञानी.  
Ignorant. “अजाणगा जन्नवाई  
विज्जमाहणसंपया” उत्त० २४, १७;

**अजाणमाण.** व० कृ० त्रि० ( अजानान ) न  
जणुतो. न जानता हुआ. Not knowing;  
ignorant of क० प० ५, २४,

**अजाणय.** त्रि० ( अज्ञानक-अज्ञ ) जणुओ  
‘अजाणग’ शब्द. देखो ‘अजाणग’ शब्द  
Vide ‘अजाणग.’ “एव विप्पडिवन्नेगे  
अप्पणा उ अजाण्या” सूय० १, ३, १, ११;

**अजाणिय.** सं० कृ० अ० ( अज्ञात्वा ) जणुया  
विना विना जाने. Without knowing;  
having no knowledge. निसी० २,  
४८; ४, १४; ६, ७, १५, ३४;

**अजाणिया.** स्त्री० ( \* अज्ञानिका-अज्ञा ) अ-  
जणु स्त्री; समज वगरनी अजान स्त्री;  
समझ रहित स्त्री. An ignorant wo-  
man नंदी० स्थ० ४५;

**अजाणू.** स्त्री० ( अज्ञा ) जणुया विना देया देभी-  
थी डे डोधिना डहेवाथी डरेली पापनी निवृत्ति.  
विना जाने देखा देखी या किसीके कहने से की  
हुई पाप की निवृत्ति. Unconscious ab-  
stention from sin. “तिविहा वावत्ती  
पणत्ता तं-जाणू अजाणू वित्तिगिच्छा” ठा०  
३, ४;

**अजाय.** त्रि० ( अजात ) नहि जयेलुं; नहि  
उत्पन्न थयेलुं. विना बना हुआ; अनुत्पन्न. Not  
born or produced. विशेष० ४१८,  
( २ ) अगीतार्थ, शास्त्रना अजणु. अगी-  
तार्थ; शास्त्र का अनजान. Ignorant of  
scriptures. प्रव० ७८७,—आहार. त्रि०  
(—आहार-अजातो न मिलितः शुद्ध आहारो  
यस्यासौ, निराहारो वेति ) निर्दोष आहार न  
भणवाथी आहार विना यक्षापी लेनार (साधु).  
निर्दोष आहार के न मिलने पर आहार के  
बिना चलालेने वाला ( साधु ). ( an asce-  
tic ) who can do without food  
when he does not get faultless  
food. गच्छा० ५७,—कप्प. पुं० (—कप्प)  
अगीतार्थने डल्पा-आचार. अगीतार्थ का  
आचार the conduct or practice of  
a person ignorant of scriptures.  
प्रव० ७८७;

**अजाया.** त्रि० ( अजाता ) साधुये नाभी देवानी  
थीन यतनासहित परखपी ते. साधु के तजने  
योग्य वस्तुको यत्नाचारपूर्वक त्यागना. Care-  
ful disposal of waste things by a  
Sādhu. ओष० नि० ६०७;

**अजिआ.** पुं० ( अजीव ) अणुव; अणु नहि ते.  
अजीव Non-soul; ( any thing )  
inanimate. प्रव० ४४१; क० गं० १, १५;

**अजिआ.** स्त्री० ( अजिता ) भीम तीर्थंकर  
अजितनाथनी शासनदेवीनुं नाम. दूसरे  
तीर्थंकर अजितनाथ की शासनदेवी का नाम.



Name of the tutelary goddess of Ajitanātha, the 2nd Tirthankara प्रव० ३७७,

**अजिहंदिअ-य.** त्रि० ( अजितेन्द्रिय-न जितानि श्रोत्रादीनीन्द्रियाणि येन स तथा ) धृष्टियो नेने वश नथी ते; धृष्टियोने न श्रुतना२. इन्द्रियों को न जीतने वाला, जिसके वश इन्द्रियों नहीं हैं वह. One who has not subdued his senses उत्त० ३४, २२;  
**अजिण.** न० ( अजिन ) भृग-हृरण्य आदिनु यामुं हिरण्य आदि का चमड़ा. Skin of a deer etc आया० १, १, ६, ५३; उत्त० ६, २१, सूय० २, २, ६, ( २ ) यर्म-यामुं धारण्युं कर्तुं ते चर्म धारण करना the act of putting on a skin “चिराजिणं नगिण्णिणं जदी संघाडिमुं डिणं” उत्त० ६, २१; ( ३ ) पुं० जित-तीर्थंकर नहि ते, वीतराग नहि ते. जो जित-तीर्थंकर न हो वह; जो वीतराग न हो वह one who is not a Tirthankara i e one who has not conquered passions ओव० १६, भग० १५, १;—**आहार** त्रि० (—आहारक ) जितनामकर्म अने आहारकशरीर २ ओ ओ प्रकृति शिवायनुं जिननामकर्म और आहारकशरीर इन दो प्रकृतियों के सिवाय का. with the exception of the two Karma Prakritis viz Jinanāma Karma and Ahārakaśarīra क० गं० ३, २३,—**मणुआउ** त्रि० (—मनुजायुप्) जितनाम तथा मनुष्यनुं आयुष्य ओ ओ प्रकृति शिवायनुं जिननाम और मनुष्य इन दो प्रकृतियों के सिवाय का. with the exception of the two Karma Prakritis viz Jinanāma and Manusyāyusya क० गं० ३, ७,  
**अजिण** न० ( अजीर्ण ) अपचो; पोराड

पायन न थाय ते. भोजन का न पचना; अजीर्ण. Indigestion. पि० नि० ८६;

**अजित.** पुं० ( अजित ) अजित नामे भीज्ज तीर्थंकर अजित नाम के दूसरे तीर्थंकर Name of the 2nd Tirthankara सम० २३, २४,  
**अजिय-अ** त्रि० ( अजित ) डोर्ध्थी जिताय नहि तेवे, डोर्ध्थी पराजय पावे नहि तेवे। जो किन्हीं पराजित न हो सके वह. Invincible. भग० ६, ३३, नाया० १; ( २ ) भरतक्षेत्रनी यालु योवीसीना भीज्ज तीर्थंकरनुं नाम भरतक्षेत्र की वर्तमान चौबीसी के दूसरे तीर्थंकर का नाम name of the second Tirthankara, of the present cycle of twentyfour of Bhārata Kṣetra भग० २०, ८; अणुजो० ११६, ( ३ ) नयमा सुविधिनाथ तीर्थंकरना यक्षनुं नाम नवे सुविधिनाथ तीर्थंकर के यक्ष का नाम name of the Yakṣa, of the ninth Tirthankara, Suvidhinātha प्रव० ३७५, —**जिणिद** पुं० (—जिनेन्द्र ) यालु अवसर्पिणीना भरतक्षेत्रना भीज्ज तीर्थंकर वर्तमान अवसर्पिणी के भरतक्षेत्र के दूसरे तीर्थंकर का नाम second Tirthankara of Bhārata Kṣetra in the present Avasarpinī विशेष० ५६६;

**अजियसेण.** पु० ( अजितसेन ) जम्बूद्वीपना भरतक्षेत्रमा यालु अवसर्पिणीमां थयेन नवमा तीर्थंकरनुं नाम जम्बूद्वीप के भरतक्षेत्र के वर्तमान अवसर्पिणी के नवे तीर्थंकर का नाम Name of the ninth Tirthankara, of the present Avasarpinī in the Bhārata Kṣetra of Jambūdvīpa. सम० प० २०० ( २ ) अंतगड मूत्रना त्रीज वर्गना त्रीज अध्ययननु नाम अंतगड



सूत्र के तीसरे वर्ग के तीसरे अध्याय का नाम name of the third chapter of the third part of Antaḡada Sūtra अंत० ३, ३, ( ३ ) भद्रपुर निवासी नाग गाथापतिनी पत्नी सुलसाना पुत्र, के ने नेमनाथ प्रभु पासे दीक्षा लई २० वरसनी प्रव्रज्या पाणी शत्रुंजय उपर ओइ भासनेो संथारेो डरी निर्वाण पद पाया. भद्रपुर निवासी नाग गाथापति की पत्नी सुलसा का पुत्र, जिसने नेमनाथ प्रभु से दीक्षा लेकर २० वर्षों तक प्रव्रज्या पालन की और शत्रुजय ऊपर एक मास का संथारा कर, निर्वाण पद प्राप्त किया. the son of Sulasā the wife of Nāga Gāthāpati, resident of Bhaddalapura, who having taken orders as a disciple of Neminātha, practised asceticism for twenty years, observed absolute fasting for a month on Śatruñjaya and attained salvation. अंत० ३, ३,

**अजिया-आ** स्त्री० ( अजिता ) योथा तीर्थंकर श्रीअभिनन्दनस्वामीनी मुख्य साध्वी चौथे तीर्थंकर श्रीअभिनन्दनस्वामी की मुख्य साध्वी. The principal nun of the fourth Tirthankara, Abhinandana Svāmī प्रव० ३०६, सम० प० २३४,  
**अजीर.** न० ( अजीर्ण ) अपयो; अशुण् अजीर्ण. Indigestion नाया० १३; पि० नि० सा० २५;

**अजीरग.** न० ( अजीर्ण ) लुओ ' अजिरण ' शब्द देखो 'अजिरण' शब्द Vide 'अजिरण' जीवा० ३, ३, भग० ३, ७, ज० प० २, २४;  
**अजीरण,** न० ( अजीर्ण ) अपयो; अशुण्-अजीर्ण Indigestion प्रव० ८७२;  
**अजीव.** पुं० ( अजीव-न जीवा अजीवाः ) ७५,

येतन रहित पदार्थ, निर्णय पदार्थ चैतन्य रहित पदार्थ, जड An inanimate object. "रूविणो य अरूवी य अजीवा दुविहा भवे अरूवी दसहा वुत्ता रूविणो वि चउव्विहा" उत्त० ३६, ४, नाया० ५, ओव० ३४; दस० ४, १२, अणुजो० ८, १२८, पन्त० १, भग० १, ६, २, ५, १०, ५, ६, ७, ७; राय० २२४; जं० प० २, ३१;—**अभिगम.** पुं० (—अभिगम) गुणु प्रत्यय अवधि आदि ज्ञानथी अशुव-पुद्गलादिनेो ओध थवेो ते. गुण प्रत्यय अवधि आदि ज्ञान से पुद्गलादि का बोध होना. realisation of the knowledge, of things devoid of life, through Gunapratyaya, Avadhi and other varieties of knowledge.  
**जीवा० १,—आणवणिया.** स्त्री० (—आज्ञापनिका) अशुव परत्वे आज्ञा-आदेश डरवाथी लागेल डर्म अंध, आणवणिया क्रियानेो ओइ लेइ अजीव सम्बन्धी आज्ञा करने से जो कर्मबंध हो वह. आणवणिया क्रिया का एक भेद Karma incurred by giving orders with reference to things devoid of life; a variety of Ānavanīyā Kriyā ठ० २, १,—**आणवणिया.** स्त्री० (—आनायनी) अशुवरूप वस्तु भगाववाथी लागती क्रिया, आनायनी क्रियानेो ओइ लेइ अजीवरूप वस्तु मंगाने से जो कर्मबंध हो वह, आनायनी क्रिया का एक भेद Kriyā or Karma incurred by asking for things devoid of life; a variety of Ānāyanī Kriyā. ठ० २, १,—**आरंभिया.** स्त्री० (—आरम्भिका) शुवरहित डलेवर निमित्ते आरंभ डरवाथी लागती क्रिया-डर्म अंधाय ते, आरंभिया क्रियानेो ओइ लेइ जीवरहित कलेवर के निमित्त आरंभ करने से जो कर्मबंध हो वह;

आरंभिया क्रिया का एक भेद a variety of Ārambhiyā Kriyā i.e. sin incurred by acts done with reference to dead bodies, a kind of Ārambhiyā Kriyā ठा० २, १;—करण. न० (—करण) अशुचि करण-शुचिना प्रयोग ( व्यापार ) थी निश्चय वस्तुने लेप, रूप वगैरे संस्कार करवा ते जीव के प्रयोग से निर्जीव वस्तु का लेपादि संस्कार करना act of smearing, shaping etc, lifeless things, done by animate things विशेष ३३४२,—किरिया. स्त्री० (—क्रिया) अशुचिना व्यापार, अशुचि पुद्गलसमूहनुं धर्मापथिक अध के सांपरायिक अधरूपे परिणामनुं ते, धरियावहिया अने सांपरायिकी अने क्रिया-भाथी गमे ते अेक. अजीव का व्यापार, अजीवपुद्गलसमूह का ईर्यापथिक बध या सा-परायिक बंधरूपसे परिणामना, इरियावहिया और सापरायिकी इन दोनों क्रियाओं मे से कोई भी एक movements of inanimate objects resulting in groups called Iriyāpathikabandha or Sāmparāyikabandha “दो किरियाओ परणत्ता, तजहा जीवकिरिया चेव अजीवकिरिया चेव” ठा० २, १,—शिसिस्सय त्रि० (—निःश्रित) अशुचिने आ-श्री रहैल अजीव के आश्रय मे रहा हुआ in touch with a thing devoid of life ठा० ७,—शिसिस्सय. त्रि० (—निःसृत) अशुचिकी नीकेलु. अजीव से निकला हुआ produced from a thing devoid of life ठा० ७,—द्वव. न० (—द्रव्य) अशुचि द्रव्य-पदार्थ; धर्मास्तिकाय आदि ५ द्रव्य अजीवद्रव्य, धर्मास्तिकाय आदि पांच द्रव्य inanimate matter classified into five divisions viz

Dharmāstikāya etc. भग० ११, १०, १८, ४; २५, २,—दिट्ठिया स्त्री० (—दृष्टि-का) अशुचि-चित्राभू आदि जेवाथी लाग-ती क्रिया, दिट्ठिया क्रियानो अेक भेद अजीव-चित्र आदि देखने से जो कर्मबंध हो वह, दिट्ठिया क्रिया का एक भेद Kriyā or Karma incurred by seeing inanimate objects such as painting etc, a variety of Ditthiyā-Kriyā ठा० २, १,—देस पुं० (—देश) अशुचिना अेक विभाग, अशुचिरूप आप्ति वस्तुना अेक कडे. अजीव का एक विभाग, अजीवरूप सम्पूर्ण वस्तु का एक टुकड़ा. a part of inanimate matter उक्त० ३६, २, भग० २, १०, १०, १; १६, ८,—पच्चक्खणकिरिया स्त्री० (—अग्रत्या-ख्यानक्रिया) मदिरा वगैरे अशुचिनु प्रत्या-ख्यान नहि करवाथी लागती क्रिया, अपच्य-इभाणु क्रियानो अेक भेद मदिरा आदि अजीव वस्तुओ का प्रत्याख्यान न करने से जो कर्मबंध हो वह, अपचक्खण क्रिया का एक भेद Kriyā or Karma incurred by not taking vows to abstain from drinking wine etc, a variety of Apachchakkhāna Kriyā ठा० २, १,—पज्जव. पुं० (—पर्यव) अशुचिना पर्याय, अशुचिना विशेष धर्म, अ-शुचिना शुचि अजीव का पर्याय, अजीव का विशेष धर्म, अजीव का विशेष गुण specific properties of inanimate matter. अजीवपज्जवाण भते ! कइविहा परणत्ता ? गोयमा ! दुविहा पन्नत्ता, तजहा रुविअजीव पज्जवा अरुविअजीवपज्जवा य ” पन० ४, भग० २५, ४,—परणवणा स्त्री० (—प्रजा-पना) अशुचिनु निम्न पाणु-प्रतिपादन करतु, अथ ५-प्रक्षर अतापना ने अजीव का निम्नपाण

करना-स्वरूप बताना. defining and explaining the nature and varieties of inanimate matter. "से किं तं अजीवपरणवणा ? अजीवपरणवणा दुविहा परणत्ता, तंजहा रूविअजीवपरणवणा अरूविअजीवपरणवणा य" पन्न० १; —पद. न० ( -पद ) पन्नवणा सूत्रना पांचमा पदं नाम पन्नवणासूत्र के पांचवे पद का नाम. name of the fifth part of Pannavanā Sūtra भग० २५, ४;—परिणाम. पुं० ( -परिणाम ) अंधन, गति वगैरे अणुवना परिणाम बंधन, गति आदि अजीव का परिणाम transformations of inanimate matter resulting in molecular bondage, motion etc "दसविहे अजीवपरिणामे परणत्ते तंजहा बंधणपरिणामे गहयपरिणामे ठाणपरिणामे भेदवन्नरसपरिणामे गंधपरिणामे फासपरिणामे अगुरुलहुयसहपरिणामे" ठा० १०, भग० १४, ४,—पाउच्चिया. स्त्री० ( -प्राद्वेषिकी ) अणुवपदार्थ-पथरा वगैरे उपर द्वेष करवाथी लागती क्रिया-कर्मबंध अजीव पदार्थ के साथ द्वेष करने से जो कर्मबंध हो वह Kriyā or Karma incurred by despising things devoid of life. भग० ३, ३; ठा० २, १,—पाडुच्चिया. स्त्री० ( प्रातीतिकी-अजीव प्रतीत्य चो रागद्वेषोद्धवस्तज्जो यो वन्धः सा, अजीवप्रातीतिकी ) अणुव प्रत्ये रागद्वेष करवाथी लागतो कर्मबंध, पाडुच्चिया क्रियातो अेक भेद अजीव से रागद्वेष करने से जो कर्मबंध हो वह, पाडुच्चिया क्रिया का एक भेद Karma incurred by showing fondness for or hatred towards things devoid of life; a variety of Pāduchchiyā Kriyā ठा० २, १,—पुट्टिया

स्त्री० ( \*पुट्टिका-स्पृष्टिका ) अणुवने रागद्वेषे स्पर्श करवाथी लागती क्रिया-कर्मबंध; पुट्टिया क्रियातो अेक भेद. अजीव को रागद्वेष रूप भावो से स्पर्श करने से जो कर्मबंध हो वह; पुट्टिया क्रिया का एक भेद. Kriyā or Karma incurred by touching things devoid of life with feelings of love or hatred; a variety of Putthiyā Kriyā ठा० २, १;—पपस. पुं० ( -प्रदेश ) अणुवद्रव्यतो प्रदेश, अणुव द्रव्यतो ज़ीणुमा ज़ीणो लाग-रुद्धनी साथे लागेल परमाणु. अजीव द्रव्य का प्रदेश; अजीव द्रव्य का छोटे से छोटा हिस्सा. the minutest part of a thing devoid of life, atoms forming a quarter molecule भग० १०, १; १६, ८,—भाव. पुं० ( -भाव ) अणुवना पर्याय. अजीव का पर्याय. various forms of things devoid of life. विशेष० ३३४१;—भावकरण न० ( -भावकरण ) स्वाभाविकरीते विसूसा लावे वादणा विगैरेनु रूपान्तर थाय छे ते स्वाभाविक रीति से मेघ आदि का जो रूपान्तर होता है वह. changes that are naturally produced in matter such as clouds etc. विशेष० ३३४२;—मिस्सिया. स्त्री० ( -मिश्रिता ) सत्यमृषा लापानो अेक भेद, ज्यां धणा भाणुसो मरी गयेल छे थोडा अणुवता होय त्यां अेक जोले के "अहो आ यधा मरी गयेल छे" आमा इंध सायुं अने इंध जोडु अने वणी ते अणुव आश्रित भाटे अणुवमिश्रित सत्यमृषा. सत्यमृषा भाषा का एक भेद; जहा बहुत मनुष्य मरगये हों और थोड़े जीवित हों वहां ऐसा कहे कि "सब मर गये" इसमें सत्य और भूठ दोनों मिले हैं और फिर यह कथन

अजीवयाश्रित होने के कारण अजीव मिश्रित सत्यमृषा कहाता है. speech referring to lifeless things, which is partly true and partly false; a variety of Satyamrīṣā, a kind of speech. पञ्च० ११,—रासि. पुं० (—राशि ) अश्वत्थो समूह अजीव का समूह a collection of things devoid of life. “ अजीवरासी दुविहा परणसा तंजहा रूविअजीवरासी अरूविअजीवरासी ” सम० २;—विजय. पुं० न० (—विचय ) अनंत पर्यायवाणी धर्मास्तिकाय आदि अश्वत्थ द्रव्यनु स्थितन उरुं ते अनंत पर्याय वाले धर्मास्तिकाय आदि अजीव द्रव्य का चिंतन करना. the act of thinking about things devoid of life e. g. Dharmāstikāya etc. which assume various forms. सम० ४, —विभक्ति. स्त्री० (—विभक्ति ) अश्वत्थी विलक्षित—अश्वत्थं पृथक्करण—विवेचन—विलागदर्शन अजीव का पृथक्करण—विभाग analysis of the nature of things devoid of life. “ एसा अजीवविभक्ती समासेण वियाहिया ” उत्त० ३६, ४७, —वैयारणिया. स्त्री० (—वैदारणिका-वैक्रय-णिका-वैचारणिका-वैतारणिका—अजीवं विचारयति, असमानभागेषु विक्रीणाति, द्वैभाषिके, विचारयति, पुरुषादिविप्रतारणबुद्ध्या भणति, यत् सा ) अश्वत्थे विदारवाथी ३ अश्वत्थ वस्तु निमित्ते कोधने छेतरवाथी लागती क्रिया-उर्मयन्ध; विदारणिया क्रियानो ओड लेद अजीव का विदारण करने या अजीववस्तु के निमित्त से किसी को ठगने से जो कर्मबंध हो वह; विदारणिया क्रिया का एक भेद Kriyā or Karma incurred by deceiving somebody in

connection with things devoid of life or by tearing them, a variety of Vidāranīyā Kriyā. ठ० २, १;—सामंतोवणिवाइया. स्त्री० (—सामन्तोपनिपातिकी ) पोतानी वस्तुना वभाणुयतां सालणी मनमां मलकावाथी-राशु थवाथी लागती क्रिया—उर्मयन्धन; सामंतो-वणिवाइया क्रियानो ओड लेद. अपनी वस्तु की प्रशंसा सुनकर प्रसन्न होने से जो कर्म बंधन हो वह, सामंतोवणिवाइया क्रिया का एक भेद. Kriyā or Karma incurred by being elated at the praise of one's own thing, a variety of Sāmantovanivāiyā Kriyā. ठ० २, १;—साहत्थिया स्त्री० (—स्वाहस्तिका) अश्वत्थ-अङ्ग विगेरे लक्ष पोताने हाथे अश्वत्थने मारता लागती क्रिया—उर्मयन्ध, साहत्थिया क्रियानो ओड लेद अजीव-खड्ग वगैरह लेकर अपने हाथ से अजीव को मारने से जो कर्मबंध हो वह, साहत्थिया क्रिया का एक भेद Kriyā or Karma incurred by striking things devoid of life with things devoid of life such as a sword etc, a variety of Sāhatthiyā Kriyā ठ० २, १,

अजीवकाय. पुं० ( अजीवकाय ) अश्वत्थित डाय-धर्मास्तिकाय, अधर्मास्तिकाय, आकाशास्तिकाय अने पुद्गलास्तिकाय. जीवरहित काय-धर्मास्तिकाय, अधर्मास्तिकाय आकाशास्तिकाय और पुद्गलास्तिकाय Matter devoid of life e. g. Dharmāstikāya, Adharmāstikāya, Ākāśastikāya and Pudgalāstikāya प्रव० ८४६; भग० ७, १०,—असंजम. पुं० (—असंजम) अश्वत्थकाय-वस्त्र, पात्रादिः पायन्ता थगेत अश्वत्थी हिंसा. अजीवकाय-वस्त्र,

पात्रादि का उपयोग करने में जो हिंसा हुई हो वह destruction of life caused while using things devoid of life such as garments, vessels etc ठ० ७;—असमारंभ पुं० (—असमारम्भ) अशुवकाय-वस्त्र, पात्रादि लेता मुक्तां डोर्छे छवने परिताप-दुःख न उपज्जवपु ते अजीवकाय-वस्त्र पात्रादि उठाते रखते किसी जीव को दुःख न देना abstaining from causing harm to living beings in the act of taking or laying down lifeless things such as garments etc. ठ० ७,—आरंभ. पुं० (—आरम्भ) अशुवकाय-वस्त्र, पात्रादि लेता मुक्तां छवने दुःख न उपज्जवपु ते, आरंभिया क्रियानो अेड भेद अजीवकाय वस्त्र, पात्र आदि उठाते रखते समय जीव को दुःख देना, आरंभिया क्रिया का एक भेद causing pain to a living being in taking or laying down things devoid of life such as garments etc ठ० ७,—संजम. पुं० (—संयम) पुस्तक, वस्त्र, पात्र आदि लेता मुक्तां यत्ना राखी ते; डोर्छे छवने दुःख न उपज्जवपु ते. पुस्तक, वस्त्र, पात्र आदि उठाते रखते समय यत्नाचार रखना; किसी जीव को दुःख न पहुंचाना. not causing pain to any living being in taking and placing down books, garments etc ठ० ७, अजीवत्त पुं० (अजीवत्व) अशुवपणुं अजीवपन. Lifelessness भग० ७, १०; अजुगलिय. त्रि० (अजुगलित) अेड पडित-अेड हारमां न रहेल; समथेणिये न रहेल. एक पंक्ति में न रहा हुआ, तितर वितर, अव्यवस्थित. Not in a line, not in the same stage. ओव०

अजुज्झित्ता. सं० कृ० अ० (अयुद्ध्वा) युद्ध क्रिया विना, न लडीने; लडाई डीधा वगर. विना युद्ध किये. Without resorting to fighting ठ० ३, २;

अजुत्त त्रि० (अयुक्त) अनुयित; अयोग्य. अनुचित; अयोग्य. Improper. विशेष० १६, प्रव० १६१२, (२) योग्यतानो अलाव योग्यता का अभाव. impropriety. विशेष० १३२,—रूप. त्रि० (—रूप) असंगत-अनुयित वेपवाणो असंगत-अनुचित वेष वाला having improper dress. ठ० ४, ३;

अजूरणया स्त्री० (ः अजीर्णता-अजरणता) शरीरने छर्छु पनावनार शोक-दुःख न डरपी ते. शरीर को जीर्ण करने वाला शोक आदि का न करना Abstaining from grief which causes emaciation of the body “बहूणं पाणाणं जाव सत्ताणं अदुक्खणयाए असोयणयाए अजूरणयाए” भग० ७, ६;

अजोग. त्रि० (अयोग्य) अयोग्य; योग्य नहि ते. अयोग्य Unworthy; improper. प्रव० ५७, सूय० २, ६, ३०;—रूप. त्रि० (—रूप) अयोग्य; अधटित; अनुयित. अयोग्य; अनुचित. improper; unworthy. “अजोगरूपं इह संजयाणं पावंतु पाणाण य संभुकाडं” सूय० २, ६, ३०;

अजोग. पुं० (अयोग) योगनी अपक्षता रहित शैलेशी अवस्था; योग-भन, वचन अने ध्याना व्यापारनो अलाव मन, वचन, और कायरूप योग का अभाव. A state called Saileśī; absence of activities of mind, speech and body भग० २६, १,

अजोगत्त. न० (अयोगत्व) अजोगिपणु;



भोग रहित पणु योग रहित पना Absence of activities of mind, speech and body ओव० ४३,

अजोगया. छी० ( अयोगता ) योगनो अभाव, योगनिरोध, अयोगिपणु योग का अभाव अयोगीपन Vide "अजोगत्त" सम० ५,

अजोगि पुं० (अयोगिन्) योग रहित-मन, वचन अने कथाना योग विनातो; यैदमा गुणुहाणु-वाणो एव तथा सिद्ध भगवान् मन, वचन और काय के भोग से रहित; चौदहवें गुणस्थानवर्ती जीव तथा सिद्ध भगवान् Free from activities of mind, speech and body, a soul in the fourteenth Gunasthāna, a soul who has obtained salvation प्रव० ७३६, १३३३; ठा० २, १; ४, ४; भग० ६, ३; ४, ६, ३१, १८, १, २५, ६, २६, १, क० ग० २, २, ४, ५०,—केवलि पुं० (—केवलिन्-अयोगी चाऽमौ केवली च तथा ) यैदमा गुणुहाणुवाणा शैलेशी अवस्थाने पाभेद डेवली भगवान् चौदहवें गुणस्थान की अवस्था को प्राप्त केवली भगवान् a Kevali in the fourteenth Gunasthāna, who is free from all activities of mind, speech and body. सम० १४,—केवलिगुणह्वाण न० (—केवलिगुणस्थान-न योगी अयोगी अयोगी चासौ केवली च अयोगिकेवली तस्य गुण स्थानम् ) यैदमा गुणुहाणुना नाम चौदहवें गुणस्थान का नाम 14th Gunasthāna so named because the Kevalis are free from physical activity here क० ग० २, २;—भवत्थ पुं० (—भवत्थ ) शैलेशी अवस्थाने पहेलियेड डेवली भगवान्, यैदमा गुणुस्थानवर्ती डेवली चौदहवें गुणस्थानवर्ती केवली Kevali God who has attained

to the fourteenth Gunasthāna where the activities cease. भग०

८, ८,—भवत्थकेवलि पुं० (—भवत्थकेवलिन् ) शैलेशी अवस्थाने पहेलियेड डेवली शैलेशी अवस्था को प्राप्त केवली vide "अजोगिकेवलि" भग० ८, ८,

अजोग्ग त्रि० (अयोग्य) अनुचित; अधटित. अनुचित, अघटित Improper, unworthy पंचा० ५, २०,

अजोगिणिय. पु० (अयोनिक-नास्ति योनिरूपत्ति स्थानं यस्य स तथा ) सिद्धभगवान्; मुक्तात्मा सिद्धभगवान्; मुक्तात्मा The liberated soul ठा० २, १;

अजोसयंत व० क० त्रि० (अजोपयत्) न सेवतो; न पाणतो सेवन न करता हुआ, पालन न करता हुआ Not observing, not resorting to "समाहिमाघातमजोसयता सत्थारमेव फरुसं वयंति" सूय० १, १३, २, आया० १, ६, ३, १८८,

अजोसिय त्रि० (अजुष्ट) न सेवेडु; न पाणेडु, सेवन न किया हुआ, न पालन किया हुआ Not observed, not practised "जे विण्णवणा अजोमिया" सूय० १, २, ३, २,

✓ अज्ज धा० I ( अर्ज् ) उपार्जन करवुं, भेणववुं, भेणुं करवु, सय्य करवो. उपार्जन करना. प्राप्त करना, सचय करना To earn, to obtain, to hoard

अज्जेह भत्त० ६७,

अज्जह क० गं० १, ५६,

अज्जणित्ता सं० क० "एगत्त दुक्खं भवमज्जणित्ता वेदति दुक्खी तमणत्तदुक्खं" सूय० १, ५, २, ३५,

अज्ज अ० (अद्य) आज, आज; आजन्नि; आजन्नेर आज To-day भग० ३, २; ६, ३३ ११, ११; १५, १, नाया० १, ८,



१६; परह० १, २; नंदी० स्थ० ३३; आया० १, ३, २, १११; उत्त० २, ३१; १०, ३१; पिं० नि० १६१; विवा० ५; विशे० २३८५; निसी० ६, १२; भत्त० ४;—अपमिह अ० (—प्रभृति) आ० थी मांडीने आज से शुरू करके. from to-day; hence forth. “खो खलु भंते ! कप्पइ अज्जअपमिह अरणउत्थिया वा ” कप्प० ५, १३२; उवा० १, ५८, जं० प० २, ३१;

अज्ज. त्रि० (आर्य—आरात् सर्वहेयधर्मभ्यो यातः प्राप्तो गुणैरित्यार्यः) श्रेष्ठ, उत्तम; पवित्र; शिष्ट; पवित्र आचार विचारवान् उत्तम, श्रेष्ठ, पवित्र आचार विचार वाला Pure; civilised; noble; refined, cultured. प्रव० १४६; भग० २, ५, ३, १, ५, ४; ८; ८, ७, नाया० १, १६; दस० ६, ५४; नंदी० स्थ० २६; पिं० नि० २०६, अणुत्त० १, १, वव० १, २३; ( २ ) पुं० भानो आप; नानो माता का पिता—नाना maternal grandfather. नंदी० ( ३ ) आपनो आप; दादो. पितामह; दादा, बाबा paternal grandfather. नाया० ८; ( ४ ) गोत्र प्रवर्तक ऋषिविशेष; जेना गोत्रमां शांडिल्यना शिष्य उत्तधरसूरि था। गोत्र प्रवर्तक ऋषिविशेष, जिसके गोत्र में शांडिल्य का शिष्य जीतधरसूरि हुआ. a sage, the patriarch of a Gotra in which Jitadharasūri, the disciple of Sāṇḍilya, was born. नंदी० ( ५ ) पु० वैभारपर्वतनी नीचेनो ओइ ढह. वैभारपर्वत के नीचे का एक जलाशय a pond under the mountain Vaibhāra भग० २, ५,—उत्त. पुं० (—पुत्र) धर्मी भा आपनो पुत्र धार्मिक माता पिता का पुत्र a son of pious and holy parents ठा० ८;—ओभासि. त्रि० (—अवभासिन्) आर्य नहि छतां आर्यनी

पेडे लासतो, आर्याभास. आर्य न होते हुए आर्य के समान प्रतिभासित होने वाला, आर्याभास. Ārya in appearance though not in reality. “अज्जओभासी” ठा० ४, २;—जाइ त्रि० (—जाति) जतिओ इरी आर्य; आर्य जतिमां उत्पन्न थयेल; आर्य जाति में उत्पन्न an Ārya by birth. “अज्जजाइ” ठा० ४, २;—दिट्ठि. त्रि० (—दृष्टि) जेनी दृष्टि आर्यपवित्र होय ते जिसकी दृष्टि पवित्र हो वह. puresighted, noble-sighted. “अज्जदिट्ठी” ठा० ४, २;—परण. त्रि० (—प्रज्ञ) जेनी प्रज्ञा—समज्जु आर्य—उत्तम होय ते उत्तम प्रज्ञा-समझ वाला endowed with great wisdom. “अज्जपरणे चउभंगो” ठा० ४, २,—पय. पुं० (—पद) शुद्ध धर्म दर्शावनार पद—वाक्य, आर्य—आप्त वचन शुद्ध धर्म प्रकट करने वाला वाक्य words of an Ārya pointing out true religion etc; authoritative speech. “पवेयए अज्जपयं महामुणी” दस० १०, १, २०;—परक्कम. त्रि० (—पराक्रम) जेनो पराक्रम अहादुरी लयें। उत्तम होय ते, आंतरिक दुश्मनने लंकाववा पराक्रम दर्शावनार उत्तम पराक्रम वाला, आंतरिक शत्रुओं पर जय प्राप्त करने में पराक्रम प्रकट करने वाला. of renowned valour, heroic in subduing internal enemies e g. passions “अज्जपरक्कमे” ठा० ४, २;—परियाअ. त्रि० (—पर्याय) जेनो पर्याय—प्रमत्त्या-दीक्षा आर्य होय ते उत्तम दीक्षा वाला. practising high and noble asceticism. “अज्जपरियाए” ठा० ४, २,—परिवाल त्रि० (—परिवार) जेनो परिवार आर्य छे ते उत्तम परिवार वाला having high and noble attendants

“अञ्जपरिवाले ” ठा० ४, २;—भासि. त्रि० (—भाषिन्) आर्यभाषा भोलनार. आर्यभाषा बोलने वाला one who speaks a refined language. “अञ्ज-भासी” ठा० ४, २;—मण. त्रि० (—मनस्) जेनुं मन आर्य-पवित्र होय ते आर्य-पवित्र मन वाला pure-minded, noble-minded “अञ्जमणे ” ठा० ४, २, —रूप त्रि० (—रूप) जेतो वेष आर्य छे ते, रूप-देभावमा आर्य आर्य वेष वाला refined in appearance. “अञ्जरूपे” ठा० ४, २,—व्यवहार त्रि० (—व्यवहार) जेतो व्यवहार आर्य-उत्तम-पवित्र होय ते. आर्य-पवित्र व्यवहार वाला noble and refined in dealings “अञ्जव्यवहारे” ठा० ४, २,—वित्ति त्रि० (—वृत्ति) जेतो वृत्ति आशुविडा आर्य-पवित्र होय ते आर्य-पवित्र आजीविका वाला following a noble and holy avocation. “अञ्जवित्ती” ठा० ४, २, —संकल्प. पु० (—सङ्कल्प) जेतो सङ्कल्प-विचार आर्य-पवित्र होय ते आर्य-पवित्र विचार-संकल्प वाला one whose thoughts are pure and holy “अञ्जसकप्पे” ठा० ४, २,—सीलाचार त्रि० (—शीलाचार) आर्यने छजे तेवे। उत्तम आचार विचार जेतो होय ते आर्यपुरुषों को शोभा देने योग्य जिसका उत्तम आचार विचार हो वह of noble and refined conduct “अञ्जसीलाचारे” ठा० ४, २, —सेवि त्रि० (—सेविन्) आर्यनी सेवा करनार. आर्य की सेवा करने वाला one who serves a pure and noble person “अञ्जसेवी” ठा० ४, २;

अञ्जअ-य. पु० (आर्यक) पितामह, दादा; आपने आप पितामह; दादा. चाचा A

paternal grand-father. “अञ्जपञ्जए वादि वप्पुचुल्ल पिउत्ति य ” दस० ७, १८, “अञ्जयपञ्जयपिउपञ्जयागए ” भग० ६, ३३; नाया० १, ६, अंत० ६, ३;

अञ्जआसाढ. पु० (आर्यापाढ) श्रीवीरनिर्वाण पक्षी २१४ वर्षे, जे अव्यक्तदृष्टिमत आल्युं ते अव्यक्तवादीना गुरु श्वेतांशिका नगरीमा हृदयशयना रोगथी डालधर्म पायी सौधर्म देवलोक ग्या, पक्षी पोताना शिष्योने लण्णाववा पोताना मृतक शरीरमां प्रवेश करी, सञ्चलन थछ, शिष्यने लण्णावी, आचार्य जनापी आल्या गया, ते उपरथी शिष्योने आशका थछ के आपणामाथी पणु डोछना शरीरमां देवताने प्रवेश न होय तेनी पात्री शुं ? माटे डोछने वदनाज न करपी आम अव्यक्तवादी पथ थोडे वचन आल्यो. आ मतना मूलनिमित्त आर्यआपाढ छता. श्रीवीरनिर्वाण के २१४ वर्ष पीछे जिसने अव्यक्त दृष्टिमत चलाया था, उसके गुरु का नाम; ये श्वेताविका नगरी मे हृदयशयल के रोग ने मरकर सौधर्म देवलोक मे गये, पीछे अपने शिष्यों को पढाने के लिये अपने मृतकशरीर मे प्रवेश कर सजीव हुए और शिष्य को पढाकर तथा उमे आचार्य बनाकर पीछे चले गये, उसपर से शिष्यों को आशका हुई कि, अपने मे ने किसीके भी शरीर मे देवता का प्रवेश न हुआ हो, इसका क्या विश्वास ? इमानिये किसीको बंदना ही न करने का उन्होंने निश्चय किया यह अव्यक्त पथ थोडे समय तक चला, इस मत के मूलनिमित्त आर्यआपाढ ही थे. The originator and founder of the tenet known as Apyakta-Dristi, in the 214th year after Śrī-Vīraṇivāna. He died in the city named Śvetāmbikā, of heart-disease and went to

Saudharma heaven, whence in order to teach his disciples he entered into his own dead body, instructed his disciples and then passed away. Upon this the disciples suspected the possibility of presence of a god in the body of some one of them, and consequently they did not bow to any one. Thus this faith was in vogue for a time. The chief expounder of this faith was Ārya-Āsādhā उत्त० टी० ३,

**अज्जइसिवालिय.** पु० (आर्यपिपालित) माथरस गोत्री आर्यशान्तिश्रेणिना यथा शिष्य माथरस गोत्री आर्यशान्तिश्रेणि के चौथे शिष्य Fourth disciple of Ārya Śāntisreni of Mātharasa Gotra. कप्प० ८,

**अज्जइसिवालिया** स्त्री० (आर्यपिपालिता) आर्यऋषिपालितथी नीडजेस ओड शाखा आर्यऋषिपालित से निकली हुई एक शाखा A branch originating from Ārya-Risipālita “धेरहितो अज्जइसिवालिया इत्थण अज्जइसिवालिया साहा णिग्गया” कप्प० ८,

**अज्जकरह.** पु० (आर्यकृष्ण) दिगम्बर मतना स्थापक शिवभूतिना गु३ दिगम्बर मत के स्थापक शिवभूति के गुरु The Guru of Śivabhūti, the founder of the Digambara faith. विशेष० २५.५.१;

**अज्जकण्ण.** त्रि० (आर्यकल्प) के आर्या-साध्वीनेरु डइपे साधुने नहि ते आर्य-साध्वी का कल्पने वाला (साधु का न कल्पने वाला) वस्तु Suited to or prescribed for

a nun as distinguished from a monk गच्छा० ६१,

**अज्जकालग** पु० (आर्यकालक) स्वातिसूरिना शिष्य; श्यामार्य (भीलुं नाम) नामना आचार्य स्वातिसूरि के शिष्य; श्यामार्य (दूसरा नाम) नाम के आचार्य The disciple of Svātisūri; a preceptor also named Śyāmārya कप्प० ८,

**अज्जकुवेर** पु० (आर्यकुवेर) आर्यशान्तिसेनना शिष्य आर्यशान्तिसेन के शिष्य Name of a disciple of Ārya-Śāntisena कप्प० ८,

**अज्जकुवेरी.** स्त्री० (आर्यकुवेरी) आर्यकुवेरथी नीडजेसी शाखा आर्यकुवेर से निकली हुई शाखा An offshoot derived from or having as its head Ārya-Kubera कप्प० ८;

**अज्जग** पु० (आर्यग) लुओ “अज्जअ-य” शब्द देखो “अज्जअ-य” शब्द Vide “अज्जअ-य” निर० १, १; नाया० ६; ज० प० ५, १२३,

**अज्जगंग.** पु० (आर्यगङ्ग) द्विक्रिया नामे निहव मतना प्रवर्तक निहवाचार्य; ओडदा आर्यगंग नदी उतरता हुना त्वारे पजे पाण्डुनी हड्डि अने माथे ताप ल ग्यो, ते उपरथी तेले विचार कर्यो के सिद्धांतमा ओड सभये ये क्रियानो अनुभव न थाय ओम डलु छे ते प्रत्यक्ष विद्ध छे आ उपरथी तेले पोतानो लुओ मत स्थाप्यो द्विक्रिया नामक निहव मत के प्रवर्तक निहवाचार्य; एकवार आर्यगंग नदी पार कर रहे थे, उस समय पैरों को पानी की ठंडक और सिरपर धूप लगी, तब उन्होंने विचार किया कि, सिद्धान्त में लिखा है कि एक समय में दो क्रियाओं का अनुभव नहीं होता, परंतु यह कथन तो प्रत्यक्ष विद्ध है वम, इसपर मैंने अपना पृथक्

मत स्थापित किया Name of the expounder of the agnostic faith called Dvikriyā, (dual actions) While crossing a river he felt the cold of the water on the feet and the heat of the sun on the head Upon this he thought two simultaneous operations to be possible though the Scriptures laid down the contrary, and he established his new tenets accordingly

विशे० २४२५,

अज्जघोस पुं० ( आर्यघोष ) पार्श्वनाथस्वामीना श्रीगणधर पार्श्वनाथस्वामी के दूसरे गणधर. The second Ganadhara of Pārsvanātha Svāmī ज० ८, १, कप्प० ६, १५६, ८,

अज्जचंद पुं० ( आर्यचन्द्र ) ओ नामना ओक मुनि एक मुनि का नाम Name of an ascetic कप्प० ५, १३४,

अज्जचंदणा. स्त्री० ( आर्यचन्द्रना ) महावीरस्वामीनी प्रथम साध्वी, ३६००० साध्वीमा मुप्य साध्वी महावीरस्वामी की प्रथम साध्वी, ३६००० साध्वियों में मुख्य साध्वी The first female ascetic of Mahāvira Svāmī, the chief of the 36000 female ascetics भग० ६, ३३; अन्त० ८, १,

अज्जजंबू पुं० ( आर्यजम्बू ) सुधर्मा स्वामीना शिष्य सुधर्मास्वामी के शिष्य The disciple of Sudharmā Svāmī “अज्जसुहम्मं अंतेवासी अज्जजंबू जाव पज्जुवासति” नाया० १, कप्प० ८, नाया० ८,

अज्जजक्खणी स्त्री० ( आर्यजक्खणी ) नेमनाथस्वामीनी प्रथम शिष्या-साध्वी नेमनाथ

स्वामी की प्रथम शिष्या-साध्वी The first female disciple of Nemanātha Svāmī कप्प० ६, १६२;

अज्जजयंत पुं० ( आर्यजयन्त ) आर्य-वज्रसेनना श्रीगण शिष्य आर्यवज्रसेन के तीसरे शिष्य The third disciple of Āiya-Vajrasena कप्प० ८,

अज्जजयंती स्त्री० ( आर्यजयन्ती ) आर्य-रथ नामना स्थविरथी नीकपेल ओक शाखा. आर्यरथ नाम के स्थविर से निकली हुई एक शाखा A branch originating from an old sage named Āiya-Ratha “ धेरेहितो गं अज्जरहेहितो गं हत्थण अज्जजयती साहा णिग्गया ” कप्प० ८,

अज्जजसम्भ पुं० ( आर्यजसम्भ ) आर्य-शयम्भवना शिष्य आर्यशयम्भव के शिष्य. Name of a disciple of Ārya-Sayyambhava कप्प० ८,

अज्जजीयधर पुं० ( आर्यजीतधर ) कैशिक गोत्रना शाण्डिल्यसूरिना शिष्य, उत्तधर नामना सूरि कौशिक गोत्र के शाण्डिल्यसूरि के शिष्य, जीतधर नामक सूरि Jitadhara, the disciple of Śāṇḍilyasūri, of Kauśika Gotra “ वंदे कोसियगुत्तं सडिह्ण अज्जजीयधर ” नंदी०

अज्जजेहिल पुं० ( आर्यजेहिल ) आर्य-नागना शिष्य आर्यनाग के शिष्य Name of a disciple of Ārya-Nāga कप्प० ८,

अज्जण न० ( अर्जन ) भेषु डरवु, ओड्डु डरवु ते इकट्ठा करना Earning, hoarding, accumulating विशे० २०६३,

अज्जसंदिल पुं० ( आर्यसंदिल ) आर्यमंशुना शिष्य अने आर्यनागद्विना गुरु आर्यमगु के शिष्य और आर्यनागहस्ता के गुरु The

disciple of Ārya-Mangu and the preceptor of Ārya-Nāgahastī  
“नाणस्मि दंसणस्मि य तदविणयणिच्चका-  
लमुज्जुत्तं अज्जसत्तिलखमणं सिरसा वदे य  
संतमणं ” नंदी०

अज्जसत्त पुं० ( आर्यनचत्र ) आर्य-  
भद्रना शिष्य आर्यभद्र के शिष्य. Name  
of the disciple of Ārya-Bhadra  
कप्प० ८;

अज्जणाइल. पुं० ( आर्यनागिल ) आर्य-  
वज्रसेनना प्रथम शिष्य. आर्यवज्रसेन के  
प्रथम शिष्य. Name of the first  
disciple of Ārya-Vajrasena.  
कप्प० ८;

अज्जणाइला स्त्री० ( आर्यनागिला ) आर्यनागि-  
ल नामना स्थविरथी नीडणेल शाखा. आर्य-  
नागिल नामक स्थविर से निकली हुई शाखा A  
branch deriving its origin from  
the sage named Ārya-Nāgila  
“ थेराओ अज्जणाइलाओ अज्जणाइला  
साहा णिग्गया ” कप्प० ८,

अज्जणाइली स्त्री० ( आर्यनागिली ) आर्य-  
वज्रसेनथी नीडणेली शाखा. आर्यवज्रसेन से  
निकली हुई शाखा A branch deriving  
its origin from Ārya-Vajrasena  
“ थेरोहितो अज्जवड्ढसेणिएहिंतो इत्थणं  
अज्जणाइली साहा णिग्गया ” कप्प० ८,

अज्जणित्ता. सं० कृ० अ० ( अर्जयित्वा )  
उपार्जन करीने, मेणवीने उपार्जन करके, प्राप्त  
करके Having earned “ एगंतदुक्खं  
भवमज्जणित्ता ” सूय० १, ५, २, ३५;

अज्जता स्त्री० ( आर्यता ) आर्यपणु, श्रेष्ठता,  
साधुवृत्ति आर्यत्व; श्रेष्ठता, साधुवृत्ति  
Nobility; piety. भग० १४, ६; १६, २;

अज्जतावस पुं० ( आर्यतापस ) आर्यवज्रसेनना  
याथा अनेवासी-शिष्य आर्यवज्रसेन के

चौथे समीप रहने वाले प्यारे शिष्य. The  
fourth pet disciple of Ārya-  
Vajrasena. कप्प० ८;

अज्जतावसी स्त्री० ( आर्यतापसी ) आर्य-  
तापसथी नीडणेल शाखा. आर्यतापस से  
निकली हुई शाखा. A branch deriving  
its origin from Ārya-Tāpasa.  
“ थेराओ अज्जतावसाओ अज्जतावसी साहा  
णिग्गया ” कप्प० ८;

अज्जत्त. त्रि० ( अद्यसत्क ) आधुनिक;  
आजकालने आधुनिक. Modern;  
belonging to the present time.  
“ जे इमे अज्जत्ताए समणा निग्गंथा विहरंति ”  
कप्प० ६, ६;

अज्जथूलभद्द. पुं० ( आर्यस्थूलभद्र )  
आर्यसंभूतविजयना शिष्य अने महागिरि  
तथा सुहस्तिना गु३ आर्यसंभूतविजय के  
शिष्य और महागिरि तथा सुहस्ती के गुरु  
The disciple of Ārya-Sambhū-  
tavijaya, and the preceptor of  
Mahāgiri and Suhastī. कप्प० ८,

अज्जदिणण पुं० ( आर्यदत्त ) पार्श्वनाथना पहिला  
गणधर. पार्श्वनाथ के पहिले गणधर. The  
first Ganadhara of Pārśvanātha.  
सम० ( २ ) काश्यपगोत्री छन्दस्तना शिष्य.  
काश्यप गोत्री इन्द्रदत्त के शिष्य. the  
disciple of Indradatta, of Kā-  
śyapa-Gotra. प्रव० ३०८, कप्प० ८,

अज्जद्वय पुं० ( आर्यार्द्रक ) महावीरस्वामी-  
ना शिष्य आर्यआर्द्रकुमार महावीरस्वामी के  
शिष्य आर्यआर्द्रकुमार Ārdrakumāra,  
the disciple of Mahāvīra Svāmī.  
सूय० नि० २, ६, १६०;

अज्जधम्मगिरि पुं० ( आर्यधम्मगिरि ) आर्यधम्म-  
गिरिना शिष्य आर्यधम्मगिरि के शिष्य. Name



of a disciple of Ārya-Falgu-  
mitra. कप्प० ८;

**अज्जधम्म** पुं० ( आर्यधर्म ) आर्य-  
भगुना शिष्य अने भद्रगुप्तना गुरु आर्य-  
मंगु के शिष्य और भद्रगुप्त के गुरु. The  
disciple of Ārya-Mangu, and the  
preceptor of Bhadrāgupta.  
“ वंदामि अज्जधम्मं ततो वंदे य भद्रगुप्ते य ”  
नदी० कप्प० ८;

**अज्जधम्म** पुं० ( आर्यधर्मन् ) आर्यहस्तिना  
शिष्य आर्यहस्ती के शिष्य. Name of  
a disciple of Ārya-Hastī.  
कप्प० ८,

**अज्जनाग** पुं० ( आर्यनाग ) आर्यरक्षना  
शिष्य आर्यरक्ष के शिष्य Name of a  
disciple of Ārya-Rakṣa  
कप्प० ८,

**अज्जनागहस्ति** पुं० ( आर्यनागहस्तिन् )  
आर्यनन्दिलक्षमणुना शिष्य. आर्यनन्दिल-  
क्षमण के शिष्य The disciple of  
Ārya-Nandilaksamana. नदी०  
स्थ० ३०,

**अज्जपडम** पुं० ( आर्यपद्म ) आर्यवज्रना  
शील शिष्य. आर्यवज्र के दूसरे शिष्य.  
The second disciple of Ārya-  
Vajra कप्प० ८,

**अज्जपडमा** स्त्री० ( आर्यपद्मा ) आर्यपद्मथी  
नीलशेख शाखा. आर्यपद्म से निकली हुई  
शाखा A branch originating from  
Ārya-Padma. “ थेरेहिं तो अज्जपड-  
मेहिं तो इत्थण अज्जपडमा साहा सिग्गया ”  
कप्प० ८,

**अज्जपूसगिरि** पुं० ( आर्यपुष्यगिरि ) आर्य-  
रथना शिष्य आर्यरथ के शिष्य A  
disciple of Ārya-Ratha. कप्प० ८;

**अज्जपोमिल** पुं० ( आर्यपोमिल ) आर्य-  
वज्रसेनना शिष्य. आर्यवज्रसेन  
के दूसरे शिष्य. The second disciple  
of Ārya-Vajrasena कप्प० ८,

**अज्जपोमिला** स्त्री० ( आर्यपोमिला )  
आर्यपोमिलथी नीलशेखी शाखा आर्य-  
पोमिल से निकली हुई शाखा. A  
branch deriving its origin  
from Ārya-Pomila. “ थेराओ  
अज्जपोमिलाओ अज्जपोमिला साहा सिग्गया ”  
कप्प० ८,

**अज्जप्पभव** पुं० ( आर्यप्रभव ) काश्यप  
गोत्रना आर्यजम्बूस्वामीना शिष्य. काश्यप  
गोत्र के आर्यजम्बूस्वामी के शिष्य The  
disciple of Ārya Jambū Svāmī,  
of the Kāśyapa Gotra कप्प० ८,

**अज्जफग्गुमित्त** पुं० ( आर्यफलुगुमित्त )  
आर्यपुष्यगिरिना शिष्य अने आर्यधनगिरिना  
गुरु आर्यपुष्यगिरि के शिष्य और आर्यधनगिरि  
के गुरु The disciple of Ārya-  
Pusyagiri, and the preceptor of  
Ārya-Dhanagiri कप्प० ८,

**अज्जभट्ट** पुं० ( आर्यभट्ट ) आर्यशिवभूति-  
ना शिष्य. आर्यशिवभूतिके शिष्य Name  
of a disciple of Ārya-Śiva-  
bhūti कप्प० ८;

**अज्जभट्टवाहु** पुं० ( आर्यभट्टवाहु ) आर्य-  
यशोभद्रना शिष्य आर्ययशोभद्र के शिष्य  
Name of a disciple of Ārya-  
Yaśobhadra. कप्प० ८,

**अज्जम** पुं० ( अर्यमन् ) अर्यमा, पूर्वदिक्पुण्य  
नक्षत्रनो देवता अर्यमा, पूर्वाफाल्गुनी नक्षत्र का  
देवता Āryamā; the god of Pūrvā-  
fālgunī ज०प० ७, १५७; १७१, ठा० २, ३;  
( २ ) उत्तरदिक्पुण्य नक्षत्रनो स्वामी-देवता.



उत्तराफाल्गुनी नक्षत्र का स्वामी-देव the presiding deity of the Uttarāṣāṅgī constellation. सू० प० १०; अणुजो० १३१;

अज्जमंगु पुं० ( आर्य्यमङ्गु ) आर्य्यसमुद्रना शिष्य. आर्य्यसमुद्र के शिष्य. The disciple of Ārya-Samudra. नंदी० स्थ० २८;

अज्जमणग. पु० ( आर्य्यमणक ) शय्यम्भवसूरिना शिष्य अने पुत्र शय्यम्भवसूरि के शिष्य और पुत्र. The disciple and son of Śayyambharasūri छहि मासेहि अहिअ अज्जमणमियं तु अज्जमणगेय ” कप्प० ८;

अज्जमहागिरि. पुं० ( आर्य्यमहागिरि ) आर्य्यस्थूलभद्रना शिष्य, ३ जे जिन-इक्ष्वाकुमाइइ छत्र विहारी छता अमण्णे आर्य्यसुहस्तीथी आहारपाणी जुहुं करी जुद्धे गच्छ यत्ताये; त्याग्यी गच्छन्ती सिन्नता थछ आर्य्यस्थूलभद्र के शिष्य, जो जिन कल्पी के समान उग्र विहारी थे इन्होंने आर्य्यसुहस्ती से आहारपाणी पृथक् कर पृथक् गच्छ चलाया था, तभी से गच्छ की भिन्नता हुई The disciple of Ārya-Sthūlabhadra, he after the manner of a Jinakalpī, used to walk very far. He founded a separate sect, severing his connection with Ārya-Suhastī, which made the beginning of sectarian difference. कप्प० ८;

अज्जय. पुं० ( आर्जक ) ओ नामनी लीली वनस्पति; तुलसीनु आउ इस नाम की हरी वनस्पति, तुलसी का फाड़ The holy basil; ocymum sanctum पन्न० १, अज्जरक्ख. पुं० ( आर्य्यरत्न ) आर्य्यनक्षत्रना

शिष्य. आर्य्यनक्षत्र के शिष्य The disciple of Ārya-Nakṣatra. “ थेरस्स यं अज्जक्खत्तस्स कासवगुत्तस्स अज्जरक्खे थेरे अंतेवासी कासवगोत्ते ” कप्प० ८०;

अज्जरक्खिय पुं० ( आर्य्यरत्नित ) तोसलिपुत्र आचार्य्यना शिष्य, ३ जेणे वज्रस्वामी पास नव पूर्व करतां इंधइ अधिक अभ्यास कर्यो छता तोसलिपुत्र आचार्य्य के शिष्य, जिन्होंने वज्रस्वामी के पास से नौ पूर्वों से भी कुछ अधिक अभ्यास किया था The disciple of the preceptor Tosaliputra, who had studied more than nine Pūrvas under Vajra-Svāmī. “ वंदामि अज्जरक्खियं खमये रक्खियचरित्तं सव्वंगे ” नंदी० १;

अज्जरह पुं० ( आर्य्यरथ ) आर्य्यवज्रस्वामीना त्रीण शिष्य. आर्य्यवज्रस्वामी के तीसरे शिष्य. The third disciple of Ārya-Vajra Svāmī कप्प० ८, अज्जरोहण. पुं० ( आर्य्यरोहण ) आर्य्यसुहस्तिना शिष्य आर्य्यसुहस्ती के शिष्य. Name of a disciple of Ārya-Suhastī. कप्प० ८;

अज्जल. पु० ( अजल ) देशविशेष; पाणीनी तगीवाणे देश. देशविशेष; पानी की जहा कमी है वह देश Name of a country; a country where there is dearth of water ( २ ) त्रि० ओ देशमां रहेनार मनुष्य उक्त देश में रहनेवाला मनुष्य. people residing in the above country. पन्न० १;

अज्जव न० ( आर्जव-वृजो-रागद्वेषद्वयवर्जितस्य सामायिकव्रत कर्म भावो वा आर्जवम् ) सरलता, भाया इष्टते अलाव सरलता; माया कपट का अभाव Straightfor-

wardness, frankness, absence of fraud. प्रव० २६१, उत्त० २६, २, सम० १०, ठा० ४, १, परह० २, १, नाया० १, १०, जं० प० २, ३१; भग० २५, ७, सु० च० २, ४६, ओव० १६; २०; राय० २१२, ( २ ) दश अभयधर्ममानो त्रीन्ने धर्म श्रमण के दस धर्मों में से तीसरा धर्म the third of the ten essential virtues of an ascetic. ठा० २, १, ( ३ ) ३१ योग संग्रहमानो १० मे योग संग्रह ३१ योग संग्रहों में से १० वॉ योग संग्रह the tenth of the thirty-one Yoga-sangrahas सम० ३१, ( ४ ) संवर संवर checking the inflow of Karma ठा० ५, १, —ट्टाण न० (—स्थान ) सवरनु स्थान; साधु, शोभन, आर्जव आदि सवरना पाय भेद सवर का स्थान, साधु, शोभन, आर्जव आदि सवर के पांच भेद the five varieties of straightforwardness e g softness etc which check the inflow of Karma. " पंच अज्जवट्टाणा परणत्ता, तंजहा-साहुअज्जवं साहुमद्वं साहु-त्ताववं साहुखत्ती साहुमोत्ती " ठा० ५, १, —प्पहाण त्रि० (—प्रधान ) सरलता मुख्य छे नेमां ओयुं. सरलता जिसमें मुख्य है ऐसा that in which honesty is prominent. ओव०—भाव न० (—भाव ) सरल वृत्ति, उपरानो अभाव, सरल स्वभाव सरल वृत्ति, कपट का अभाव, सरल स्वभाव straightforwardness, frankness "मायमज्जवभावेण लोभं सतोसओ जिये" दस० ८, ३६,

अज्जवइर पु० ( आर्यवज्र ) आर्यसिंहगिरिना शिष्य. आर्यमिहगिरि के शिष्य. The disciple of Ārya-Simbhagiri कप्प० ८,

अज्जवइरसेण पु० ( आर्यवज्रसेन ) आर्य-वज्रना शिष्य आर्यवज्र के शिष्य The disciple of Ārya-Vajra कप्प० ८, अज्जवइरी स्त्री० ( आर्यवज्री ) आर्यवज्रथी नीडणेल शाखा आर्यवज्र से निकली हुई शाखा A branch deriving its origin from Ārya-Vajra "थेरेहिं तो रं अज्जवइरेहितो रं गोयमसगोत्तेहितो इत्थणं अज्जवइरी साहा शिगया" कप्प० ८, अज्जवया स्त्री० (—आर्जवता—आर्जव) सरलता, माया, कपट तथा दलनो त्याग, दश अभय धर्ममानो त्रीन्ने धर्म सरलता, माया, कपट तथा दंभ का त्याग, श्रमण के दस धर्मों में से तीसरा धर्म Straightforwardness, absence of deceit and hypocrisy, the third of the ten essential virtues of a saint. " अज्जवयाए रं भंते ! जीवे किं जणयइ ? अज्जवयाए रं काटज्जुयय भासुज्जुययं भावुज्जुययं " उत्त० २६, ४२,

अज्जवि अ० ( अजापि ) आज सुधी, आज पर्यंत आज तक, आज पर्यन्त Up to this day सु० च० १, १,

अज्जविण्ह पु० ( आर्यविण्ह ) आर्य-नेहिलना शिष्य आर्यजेहिल के शिष्य. Name of a disciple of Ārya-Jehila. कप्प० ८,

अज्जविय न० ( आर्जव ) माया-दुष्टिलतानो त्याग करवे ते, सरलता माया-कुटिलता का त्याग करना, सरलता. Straightforwardness, honesty सूय० २, १, ५७, आया० १, ६, ५, १६४, सु० च० १, १,

अज्जबुद्ध पु० ( आर्यबुद्ध ) आर्यसम्प-लिङ्ग अने आर्यलङ्ग ओ भेना शिष्य आर्य-सम्पलिक और आर्यभद्र इन दोनों के शिष्य Name of a disciple of Ārya-

Sampalika and Ārya-Bhadra  
कप्प० ८;

अज्जवेडय न० ( आर्यवेटक ) श्रीगुप्तथी  
नीडणेन य रणुणुनु ७८६ दुल श्रीगुप्त से  
निकला हुआ चारणगण का छठ कुल The  
sixth family of the Chārana-  
gana, originating from Śrīgupta.  
कप्प० ८;

अज्जसंघपालक पुं० ( आर्यसंघपालक )  
आर्यवृद्धना शिष्य आर्यवृद्ध के शिष्य.  
Name of a disciple of Ārya-  
Vṛiddha कप्प० ८;

अज्जसंडिल. पुं० ( आर्यशारिङ्गल्य ) आर्य-  
धर्मना शिष्य आर्यधर्म के शिष्य Name  
of a disciple of Ārya-Dharma.  
कप्प० ८,

अज्जसंतिसेणिअ पुं० ( आर्यशान्तिसेनक )  
आर्यदिनना शिष्य. आर्यदिन के शिष्य.  
Name of a disciple of Ārya-  
Dinna. कप्प० ८,

अज्जसंपलिय पुं० ( आर्यसम्पलिक ) आर्य-  
कालका शिष्य आर्यकालक के शिष्य.  
Name of a disciple of Ārya-  
Kālaka. कप्प० ८,

अज्जसंभूयविजय पुं० ( आर्यसम्भूतविजय )  
आर्यशोभना शिष्य आर्यशोभन के  
शिष्य. Name of a disciple of Ārya-  
Yaśobhadra कप्प० ८;

अज्जसमिय पुं० ( आर्यसमित ) आर्य-  
वज्रस्वामीना मामा अने आर्यसिंहगिरिना  
शिष्य. आर्यवज्रस्वामी के मामा और आर्यसिंह-  
गिरि के शिष्य The maternal uncle  
of Ārya-Vajra-Svāmī and the  
disciple of Simhagiri कप्प० ८;

अज्जसमुद् पुं० ( आर्यसमुद्र ) शारिङ्ग-  
व्यामीना शिष्य उदधि आचार्य, जेनुं नंदी-

अल क्षीण थवाथी अपराक्रम मरण थयुं हुं.  
शांडिल्यस्वामी के शिष्य उदधिआचार्य,  
जिनका जंघाबल क्षीण होने से अपराक्रम  
मरण हुआ था The disciple of  
Śāṇḍilya Svāmī, named Udadhi-  
Āchārya, who died without do-  
ing notable deeds on account  
of a disease enfeebling the  
thighs. आया० नि० १, ८, १, २६६;  
नंदी० स्थ० २७;

अज्जसाम पुं० ( आर्यश्याम ) जेनुं भीजुं  
नाम डालकाचार्य हुं ते श्यामाचार्य  
श्यामाचार्य, जिनका दूसरा नाम कालकाचार्य  
था. Śyāmāchārya, whose other  
name was Kālākāchārya. कप्प० ८;

अज्जसिंह. पुं० ( आर्यसिंह ) आर्यधर्मना  
शिष्य. आर्यधर्म के शिष्य Name of  
a disciple of Ārya-Dharma.  
कप्प० ८;

अज्जसिज्जभव. पुं० ( आर्यशच्यम्भव )  
आर्यप्रभवना शिष्य आर्यप्रभव के शिष्य.  
Name of a disciple of Ārya-  
Prabhava कप्प० ८,

अज्जसिवभूद् पुं० ( आर्यशिवभूति ) आर्य-  
धनगिरिना शिष्य. आर्यधनगिरि के शिष्य.  
Name of a disciple of Ārya-  
Dhanagiri. कप्प० ८,

अज्जसीहगिरि. पुं० ( आर्यसिंहगिरि ) आर्य-  
दिनना शिष्य. आर्यदिन के शिष्य. Name  
of a disciple of Ārya-Dinna.  
कप्प० ८;

अज्जसुप अ० ( अद्यः ) आजकल; आज  
के डाले आजकल; आज या कल. Now-a-  
days, today or tomorrow. सूय०  
१, २, ३, ६;

**अज्जसुहत्थि.** पुं० ( आर्यसुहस्तिन् ) आर्य-  
स्थूलभद्रना स्थविर शिष्य. आर्यस्थूल-  
भद्र के स्थविर शिष्य. The old disciple  
of Ārya-Sthūlabhadra. कप्प० ८;

**अज्जसुहम्म** पुं० ( आर्यसुधर्मन् ) महावीरस्वा-  
मिना पायभाणधर, के जेने जन्म कुल्लाग  
संनिवेशमां धम्मिष्ठ ब्राह्मणनी स्त्री सद्धिदा-  
थी भयो हुतो, ५० वरसनी उम्भरे महावीर  
स्वामि पासे प्रव्रज्या लीधी, तीस वरस महावी-  
रस्वामीनी सेवा करी पीरनिर्वाण पछी १२  
वर्ष ६२ वरसनी उम्भरे केवलज्ञान उपज्युं,  
आठ वरस केवल प्रव्रज्या पाणी, अेक सो  
वरसनु आयुष्य भोगवी पोताना शिष्य  
ज्युने पाटे जेसाडी निर्वाण पद पाभ्या  
महावीरस्वामी के पाचवें गणधर, जिनका जन्म  
कुल्लाग सन्निवेश मे धम्मिष्ठ ब्राह्मण की स्त्री  
महिला से हुआ था, इन्होंने ५० वर्ष की  
अवस्था मे महावीरस्वामी से दीक्षा ली और  
तीस वर्ष तक महावीरस्वामी की सेवा की,  
फिर वीरनिर्वाण के १२ वर्ष बाद ६२ वर्ष की  
अवस्था में केवलज्ञान उत्पन्न हुआ, आठ  
वर्ष तक केवल प्रव्रज्या पालन कर १०० वर्ष  
की अवस्था मे अपने शिष्य जम्बू को अपने  
पाटपर बिठला कर निर्वाण प्राप्त किया The  
fifth Gaṇadhara of Mahāvīra. He was born of Bhaddilā, the  
wife of a Brāhmaṇa, named Dhamilla, in the village of  
Kullāga. He took orders as a  
disciple of Mahāvīra, at the age  
of 50 years, and served Mahā-  
vīra Svāmī for 30 years. He  
attained full knowledge at the  
age of 92 years, 12 years  
after Mahāvīra Nirvāna. He  
observed asceticism the

for 8 years and secured absolu-  
tion at the age of hundred  
years after installing his disci-  
ple Jambū as successor. कप्प० ८;  
नाया० ध० सम० १००, विवा० १;

**अज्जसेणिय.** पुं० ( आर्यश्रेणिक ) आर्यशान्ति-  
श्रेणिकना पीण शिष्य. आर्यशान्तिश्रेणिक  
के दूसरे शिष्य. The second disciple  
of Ārya-Sāntisīṇika. कप्प० ८;

**अज्जसेणिया** स्त्री० ( आर्यश्रेणिका ) आर्यश्रेणि-  
कथी नीकुलेदी शाखा आर्यश्रेणिक से निकली  
हुई शाखा A branch deriving its  
origin from Ārya-Sreṇika “धेरे-  
हितो यं अज्जसेणिएहितो इत्थयं अज्ज-  
सेणिया साहा गिग्गया” कप्प० ८;

**अज्जहत्थि** पु० ( आर्यहस्तिन् ) आर्य-  
सधपाणिकना शिष्य. आर्यसधपालक के शिष्य.  
Name of a disciple of Ārya-  
Sanghapālaka कप्प० ८,

**अज्जा** स्त्री० ( आर्या ) शातदेवी, अथा, दुर्गा.  
शान्तदेवी, अम्बा, दुर्गा. The goddess  
Durgā नाया० ८, अणुजो० २०, ( २ )  
आर्या, साध्वी, महासती. आर्या, साध्वी;  
महासती a chaste woman, a  
female ascetic, a nun प्रव०  
३४१; गच्छा० ६६, नाया० १६; भग० ६,  
३३, अंत० ८, १; संथा० ५६, ओघ० नि०  
६७१, निर० ३, ४; नाया० ध० १०, ( ३ )  
आर्या छंद-गाथा अनाववा अने पिछानवानी  
हुआ, ६४ हुगामांनी २१ भी हुआ. आर्या  
छंद बनाने और पहिचानने की कला; ६४  
कलाओ में से २१ वां कला the art of  
composing poetry in the me-  
tric called Āryā भोव० ४०, ( ४ )  
आर्या नामे मात्रा छंद; प्राकृतमा जेने गाथा  
हुएवामां आवे छे ते आर्या नामक मात्रा  
छंद. प्राकृत में जिने गाथा कहते हैं वह छंद

metre Āryā which is called Gāthā in Prākṛita जं० प० २; ( ५ ) पंढरमा तीर्थंकरनी प्रथम साध्वीनुं नाम. १५ वें तीर्थंकर की पहिली साध्वी का नाम. name of the first female ascetic follower of the 15th Tirthankara प्रव० ३१०;—अणुचर पुं० (—अनुचर ) आरज्जनी पाछा यावनार ( साधु ) आर्या के पीछे चलने वाला ( साधु ). an ascetic who walks behind a nun “ अज्जाणु-अरो साहू, लहइ अकित्ति खु अचिरेण ” गच्छा० ६३,—कण्व. पु० (—कण्व-आर्याणामेव साध्वीनामेव कल्पत हृत्या-र्याकल्पः ) आर्यामे लावेअ आहार आर्या द्वारा लाया हुआ आहार food brought by a female ascetic गच्छा० ६१,—लङ्घ. त्रि० (—लङ्घ ) आरज्जमे भेणु-वेअ आर्याका प्राप्त किया हुआ obtained or acquired by a nun. गच्छा० ६०.—संसर्गी. स्त्री० (—ससर्गी—संसर्ग ) साध्वीतो पणियय; साध्वीतो सदुवास—ससर्ग साध्वी का परिचय; साध्वी का सहवास. contact with a female ascetic “ अज्जामंसग्गिअग्गिअविससरीमी ” गच्छा० ६३;—सरिस त्रि० (—सदश ) आरज्जना नेतुं आर्या के मनान. like or resembling a nun “ अज्जास्सरिना हु वंधये उवमा ” गच्छा० ७०;

अज्जावय. पुं० ( अध्यापक ) लक्ष्मणनार, उपाध्याय पढ़ाने वाला; उपाध्याय A teacher, a preceptor. प्रव० ७६४; अज्जावेयव्व. त्रि० ( आज्ञापयितव्य ) हुंम करेवे; दयाशु करुं ने आज्ञा करना, दवाव डालना Act of ordering or commanding “ न हंनवा न अज्जा-

वेयव्वा न परिधिसव्वा ” आया० १, ४, १, १२६; ( २ ) आज्ञा करवा योग्य. आज्ञा करने योग्य. fit to be ordered. सूय० २, १, ४८;

अज्जिअ. त्रि० ( अजित ) भेणवेतुं; अेकटुं करेअ प्राप्त किया हुआ. Earned; accumulated “ धम्मज्जियं च ववहारं, बुदे-हायरियं सया ” उत्त० १, ४२; १८, १६; जं० प० ३, ६७; विरो० २०२२; २०६४,

अज्जिआ-या स्त्री० ( आर्थिका ) दादी; मांके आपनी माता दादी; नानी, मा या पिता की माता. Grand-mother; father's or mother's mother दस० ७, १२; राय० २४६; ( २ ) आर्या-आरज्ज; साध्वी; महासती आर्या; साध्वी; महामती. a female ascetic; a Jaina nun. गच्छा० १११; नाया० २; ८; १६; भग० १, १; जं० प० २, ३१, नाया० ध०—संपया. स्त्री० (—संपद् ) आरज्ज-साध्वीरूप संपदा. साध्वीरूप संपदा. the life of a nun regarded as wealth. कण्व० ७, २१४;—साहस्सी स्त्री० (—सहस्ती ) हजार आरज्जमे हजार आर्यायें. a thousand nuns. कण्व० ७, २२४, नाया० ४, ८,

अज्जुण. पुं० ( अर्जुन ) अहुणीज्वाणुं अेअ नत-तु वृक्ष, डालानुं मंड; आ मंडनी छाल सडेह होय छे, तेमाथी दुध नीकणे छे, अे मंड-ना पादडं अण्णीदार, लाया अने गोण होय छे बहुवाजक वृक्षविशेष; इन काष्ठ की छाल सफेद होती है, उनमें से दूध निकलता है और उसके पत्ते अनीदार, लंबे और गोल होते हैं A kind of tree with white bark and pointed long and oval leaves; terminalia alata glabra ओव० पत्र० १, परद० १, ४; नाया० ६; राय० ६, भग० २१, ६;



२२, ३; ( २ ) तृण-अविशेष एक विशेष जाति की घास. a kind of grass  
 “ अञ्जुणगुहं व तस्स जाणुहं ” उवा० २, ६४, पञ्च० १, भग० २१, ६, जीवा० ३, ४, ( ३ ) सङ्केद रंग. सफेद रंग. white colour पञ्च० २, ( ४ ) सङ्केद सुवर्ण-सोनुं सफेद सोना whitish gold. पञ्च० २, ( ५ ) गौतमपुत्र अर्जुन, केनेना शरीरमां गोशाला-ये छट्ठीवार परावर्त परिहार क्यो छे अमे ते कहेतो हुतो गौतम का पुत्र अर्जुन, जिसके शरीर में गोशाला ने छठी वार परावर्त परिहार (प्रवेश) किया है, ऐसा वह कहता था Arjuna, the son of Gautama in whose body Gośālā had entered for the sixth time ( as he said ) “ अञ्जुणस्स गोयमपुत्तस्स सरीरं विप्पजहामि ” भग० १५, १; ( ७ ) पाण्डु राजानो त्रीने पुत्र; अर्जुन. पारद्वाराजा के तीसरे पुत्र, अर्जुन Arjuna, the third son of king Pāṇḍu नाया० १६, सु० च० १५, ८७, विवा० ८, —सुवर्ण न० (—सुवर्ण) सङ्केद-वेतका-यन-सोनुं. सफेद सोना. whitish gold ओव०—सुवर्णमय. त्रि० (—सुवर्णकमय) सङ्केद सुवर्णमय सफेद सुवर्णमय full of whitish gold उत्त० ३६, ५६,

अञ्जुणम् पुं० ( अर्जुनम् ) राजगृहनिवासी ओक भाणी, केने मुद्गरपाणि नामना यक्षनी मद्धयी छ पुत्र्य अने ओक स्त्री अमे ७ भाणुसोना पुन करतो हुतो, ओक प्रसंगे महावीरस्वामीना समागम यतां ते षोडशपाभ्यो दीक्षा लब्ध छना पारशु करवानी प्रतिज्ञा दीधी अने समताभावनु सेवन करी छ महिनामा सर्व कर्म अपावी सिद्धपद तेशे भेज्युं राजगृह निवासी एक माली, जो कि, मुद्गरपाणि नामक यक्ष की सहायता से ७ मनुष्यों ( छ पुरुष और एक स्त्री ) का खून करता था. एक समय

महावीरस्वामी का समागम होने पर उसे बोध हुआ, और दीक्षा लेकर छठ का पारणा करने की प्रतिज्ञा ली और समताभाव का सेवन कर छ मास में समस्त कर्मों का क्षय कर सिद्धपद प्राप्त किया A gardener of Rājagṛha, who used to murder seven men ( six males and one female ) every day with the aid of a Yakṣa, named Mudgarapāṇi. Once he met Mahāvīra Svāmī, from whom he obtained knowledge From that very moment he became a true penitent, took orders, observed fasts for every two days out of three, secured equanimity, practised severe austerities, and thus having destroyed all his Karmas in six months attained to salvation अत० ६, ३,

अञ्जेव अ० ( जयैव ) आज्ञे, आज्ञेय आज, आजही Even to-day “ अञ्जेव धम्म पडिवज्जयामो, जहिं पवसा न पुण्णम-वामो ” उत्त० १४, २८, भग० २, १, कप्प० १, २६,

अञ्जो पु० ( हे आर्य ) संशोधन, आभंत्रण सम्बोधन, आभंत्रण A form of address ing a revered person “ अञ्जोत्ति समये भगव महावीरे गोयमाहसमये शिगगंये आमतित्ता ” ठा० ३, २, “ अञ्जो ! सामादयं जायामो ” भग० १, ६, “ एत्थं अञ्जो कण्हे वासुदेवे ” (अञ्जोत्ति आमन्त्रणवचनम्) ठा० ६,

अञ्जोग त्रि० ( अयोग्य ) अनुचित, अनेग अनुचित, अयोग्य Unworthy, im- proper पंचा० १३, २८,



अज्झट्ठिअ. न० (अध्यात्मस्थित-अभ्यवसित)  
अध्यवसाय; परिणाम. अभ्यवसाय; परिणाम.  
Mental state, thoughts. विवा० १,  
दसा० १०, ३,

अज्झत्त. न० (अध्यात्म) मन; चित्त. मन;  
चित्त. Mind, conscience. सूय० १, २,  
२, १२;

अज्झत्थ त्रि० (अध्यात्मस्थ-अध्यात्म मनस्त-  
स्मिन् तिष्ठतीत्यध्यात्मस्थम्) मनमां उत्पन्न  
थयेल सुख, दुःख, मिथ्यात्व वगैरे. मन में उत्पन्न  
सुख, दुःख, मिथ्यात्व वगैरह. Born in the  
mind e g conceptions of happi-  
ness, misery etc “ अज्झत्थहेउं  
णिययस्स बंधो, ससारहेउं च वयंति बंधं ”  
( अध्यात्मशब्देनेहात्मस्था मिथ्यात्वादय  
उच्यन्ते ) उत्त० १४, १६, प्रव० ६०३,

अज्झत्थ न० ( अध्यात्मस्थ अध्यात्म-अधि  
आत्मनि वर्तत इत्यध्यात्मम् ) अंतःकरण;  
चित्त अन्तःकरण; चित्त Conscience,  
mind. पञ्च० ११, सूय० १, ४, २, २२,  
( २ ) आत्मध्यान; आत्मभावना आत्म-  
ध्यान, आत्म भावना contemplation  
of the soul सूय० १, ८, १६, ओव०  
२; ( ३ ) (आत्मानमधिकृत्य यद्वर्तते तदध्या-  
त्मम् ) सुख दुःख आदि आंतरिक भाव सुख  
दुःखादि आन्तरिक भाव. internal emo-  
tions e g. of happiness, misery  
etc. “ जे अज्झत्थं जाणइ से बहिया जाणइ  
जे बहिया जाणइ से अज्झत्थं जाणइ ” आया०  
१, १, ७, २६, “ अज्झत्थं सव्वओ सव्वं  
दिस्स पाये पियायप् ” उत्त० ६, ७; ओघ०  
नि० ७४५; पि० नि० ६७१, —उक्ताण-  
जुत्त. त्रि० ( ध्यानयुक्त-अध्यात्मना शुभ  
मनसा ध्यान यत्नेन युक्तो यः स तथा )  
प्रशस्त ध्यानयुक्त प्रशस्त ध्यानसाहित.  
engaged in deep religious

meditation. परह० २, ४;—दंड.  
पुं० ( -दण्ड ) कषाय के आर्तध्यानादि  
निमित्तथी लागतो कर्मबन्ध, आहंभुं क्रिया  
स्थानक. कषाय अथवा आर्तध्यानादिनिमित्त  
से लगने वाला एक कर्मबन्ध; आठवाँ क्रिया  
स्थानक. Karmic bondage incurred  
by anger etc, the eighth Kīyā  
Sthānaka परह० २, ४;—दोस पुं०  
( -दोष ) अंदरना दोष-कषाय, क्रोध, मान,  
माया अने लोभ. अन्तरङ्ग दोष-कषाय, क्रोध,  
मान, माया और लोभ. inward evil  
passions such as anger, pride,  
deceit and greed “ कोहं च मायं  
च तहेव मायं, लोभं चउत्थं अज्झत्थदोसा ”  
सूय० १, ६, २६;—वृत्तिअ. पुं०(—वृत्तिक)  
अध्यात्म-आत्माने आश्री उत्पन्न थयेल  
क्रोधादि कषाय अथवा आर्तध्यानादिनिमित्ते  
लागती क्रिया-कर्मबन्ध, क्रियानां तेर स्थानक-  
भानुं आहंभुं स्थानक. अध्यात्म-आत्मा को  
आश्रयकर उत्पन्न क्रोधादि कषाय अथवा आर्त-  
ध्यानादि के निमित्त से जो कर्मबन्ध हो वह;  
क्रिया के तेरह स्थानको मे से आठवाँ  
स्थानक Karma incurred by think-  
ing of pain, anger etc which  
have the soul for their substratum,  
the eighth of the 13  
ways of incurring sin सूय० २,  
२, १६,—वयण. न० ( -वचन-आत्मान-  
मधिकृत्य प्रवर्तते यत् तदध्यात्मवचनम् )  
अध्यात्म वचन, वचनना सोण प्रकाशमानो  
सातमो प्रकाश. अध्यात्म वचन, वचन के सोलह  
भेदों में से ७ वाँ भेद philosophy  
dealing with the soul; the  
seventh of the sixteen kinds of  
speech आया० २, ४, १, ११२;  
—विशुद्ध त्रि० ( -विशुद्ध ) शुद्ध अंत-

इन्द्रियवाणो. शुद्ध अन्तःकरण वाला. of clear conscience; of pure heart "तन्मा अज्भक्त्यविमुक्ते सुविमुक्ते" सूय० १, ४, २, २२,—विसोहिजुत्त. त्रि० (—विशोध्युक्त) विशुद्ध—पवित्र भाव-वाणो; आंतरिक शुद्धिवाणो. विशुद्ध—पवित्र भाव वाला, आन्तरिक शुद्धि वाला. pure at heart, clear in conscience "जा जयमाणस्स भवे, विराहणा सुत्तविहिसमगास्स । सा होइ शिज्जरफला अज्भक्त्य विसोहिजुत्तस्स" ओव०—सुइ. स्त्री० (—श्रुति) चित्तनिरोधना उपायो अतावनार शास्त्र; अध्यात्मशास्त्र. चित्तनिरोध के उपाय बतलाने वाला शास्त्र, अध्यात्मशास्त्र Sāstra dealing with the means of restraining the mind; a spiritual Sāstra. परह० २, १,

अज्भक्तियोग त्रि० (—अध्यात्मस्थित-आध्यात्मिक) आत्मसम्बन्धी, आंतरिक; आत्माश्रित. आत्मसम्बन्धी, आन्तरिक, आत्माश्रित Relating to the mind, internal अत० ३, ८, (२) आत्मिक भाव; अध्यवसाय विशेष, संकल्प; मानसिक तरंग आत्मिक भाव, अध्यवसाय विशेष, संकल्प; मानसिक तरंग Thought activity. भग० २, १, ३, १; २, ६, ३३, १६, १, नाया० १, ५, ८; १२, १३, १४, १६; आया० २, १३, १४२; जीवा० ३, ४, सूय० २, २, १६, राय० २४, कप्प० ४, ८६; ( ३ ) अध्यात्म—मानसिक शोक, आर्त्तध्यान वगेरे इन्द्रियाधी लागती क्रिया-इन्द्रिय-धन्ध, क्रियाना तेर स्थानकभांनु आहंमु स्थानक. अध्यात्म—मानसिक शोक, आर्त्तध्यान वगैरह करने से जो कर्मबन्ध हो वह; क्रिया के तेरह स्थानको मे से आठवाँ स्थानक. Karma incurred by sorrow etc.; the eighth of the 13 sources of Karmā. सम० १३;

अज्भक्तियोग स्त्री० (—अध्यात्मस्थिता-आध्यात्मिकी) इन्द्रियवाणो विना मनभां अणनर इयां इरपी ते; आहंमु क्रियास्थानक अकारण चित्त में जलना, न वां क्रियास्थानक. The 8th source of incurring Karma viz worry without any ground. प्रव० ८३४;

अज्भक्त्य. न० (—अध्यात्म) लुओ "अज्भक्त्य" शब्द देखो शब्द 'अज्भक्त्य'. Vide "अज्भक्त्य" परह० २, ३, सूय० १, ८, १६, विशेष ६६०,—जोग पु० (—योग) अध्यात्मयोग; धर्मध्यान अध्यात्म योग, धर्मध्यान spirituality; religious meditation सूय० १, १६, १, —रय. त्रि० (—रत) प्रशस्तध्यानभग्न, आत्मध्यानभा तत्पर थयेल प्रशस्त ध्यान में मग्न, आत्मध्यान में तत्पर. engaged in or absorbed in spiritual meditation दम० १०, १, १५; —सबुड त्रि० (—संवृत) अध्यात्मशास्त्रना उपयोगभां भन लगाववाणो अध्यात्म शास्त्र के उपयोग में मन लगाने वाला. one absorbed in thinking upon putting into practice spiritual matters learnt from scriptures "वहगुत्ते अज्भक्त्यसबुडे" आया० १, ५, ४, १५६;

अज्भक्त्यण न० (—अध्ययन) शास्त्रनुं प्रकरण. सूत्रनो पेटा विभाग शास्त्र का प्रकरण, सूत्र का अवान्तर विभाग. A chapter of a scripture क० गं० १, ६०, कप्प० ५, १४६, अणुजो० ६, २८, ओष० नि० भा० ३०६, नाया० १६, विवा० १; (२) अणुनुं; अभ्यास इरपी ते पठना; अभ्यास करना study. वव० १०, २०; पि० नि० ६६०, दस० ४, (३) (अधीयते ज्ञायन्ते एभिरित्यव्ययनानि मामानि) नाम,

अर्थवाचक शब्द. संज्ञा; अर्थवाचक शब्द a word expressing a sense. "ता कहं देवताणं अज्झयणं आहितातिवज्जा" सू० प० १, नाया० १, दसा० १०, ११; निर० १, २, नाया० ध० २; भग० ८, ७; विशे ६६०, अणुजो० १४६;—छक्कवग्ग पुं० (—षट्कवर्ग) छ अध्ययनना समुदायरूप आवश्यक सूत्र. छः अध्ययनों का समुदायरूप आवश्यक सूत्र. Āvaśyaka Sūtra formed of six chapters. अणुजो० २८,

✓ अज्झयाव. धा० I (अधि+इण्+णि०) लशुवतुं; अभ्यास करावणे पढ़ाना, अभ्यास कराना To teach.

अज्झयाविति. विशे० ३१६६;

अज्झवसाण. न० (अध्यवसान) अंत करणुनी वृत्ति; मनना परिणाम; संकल्प. अन्तकरण की वृत्ति, मन का परिणाम-संकल्प. Thought-activity सूय० २, २, ८०; अणुजो० २७; भग० ६, ३१; ११, ११; २४, १; १२; ३१, १; नाया० १; ८; उत्त० १६, ७; ओव० ४१; विशे० १६६; २०४१; पन्न० ३४, क० प० १, ४१; (२) लेख्या-परिणामनी कंठ्य स्पष्टपणु प्रवृत्ति लेख्या-परिणाम की कुछ स्पष्टरीति से प्रवृत्ति thought-activity. अंत० ३, ८,—आवरणिज्ज. न० (—आवरणीय) अध्यवसानभावचारित्रने अटकावनार अेड कर्मप्रकृति; आरित्रमेहनीयनी प्रकृतिविशेष भावचारित्र को रोकने वाली एक कर्मप्रकृति; चारित्र मोहनीय की प्रकृतिविशेष. impure thought-activity obstructing inward right conduct भग० ६, ३१;—णिव्वत्तिय. त्रि० (—निर्वसित) अध्यवसायथी उत्पन्न थयेस. अध्यवसाय से उत्पन्न resulting from thought-activity

"अज्झवसाणणिव्वत्तिपुणं करणोवापुणं" भग० २२, ८;

अज्झवसाय. पुं० (अध्यवसाय) मनना सूक्ष्म परिणाम; संकल्प, बंधहेतुभूत आत्मानि परिणुतिविशेष. मन का सूक्ष्म परिणाम, संकल्प, बंधहेतुभूत आत्मा की परिणति विशेष. Thought-activity causing bondage to the soul सु० च० १२, ६७; क० गं० १, २२; नंदी० १२; अज्झवसिअ-य न० (अध्यवसित) अध्यवसाय; मनोभावविशेष अध्यवसाय; मनोभाव विशेष Thought-activity e. g. love, hatred etc अणुजो० २७, पंचा० १, १६;

अज्झहिय. न० (आत्महित) आत्महित-लक्षु, स्वहित आत्महित, स्वहित One's own welfare, one's own good; spiritual welfare परह० २, १;

अज्झाइयव्व त्रि० (अध्येतव्य) लशुवतुं; अध्ययन करवु पढ़ाना; अध्ययन करना. Study. (२) अध्ययन करवाने-लशुवाने योग्य. अध्ययन करने-पढ़ने के योग्य. worthy of study दस० ६, ४, ३;

अज्झारोह पुं० (अध्यारोह-उपर्युपर्यध्यारोहन्तीति अध्यारोहा.) अण्ण अउ उपर उगती कामवृक्ष नामनी वीली वनस्पति दूसरे झाड़ पर उगने वाली कामवृक्ष नाम की एक हरी वनस्पति. A kind of green vegetation called Kāmavrikṣa growing on another tree. सूय० २, २, ६; पन्न० १,

✓ अज्झाव धा० II (अधि+इ+णि०) लशुवतुं, अध्ययन करावतुं पढ़ाना; अध्ययन करवाना To teach, to cause to study

अज्झावेइ. गच्छा० ६४,

**अजभावरणा** स्त्री० ( +अध्यापना-अध्यापन )  
 लघुपुं० ते पढ़ाना Act of teaching  
 क० गं० १, ६०,

**अजभावरय** पुं० ( अध्यापक ) उपाध्याय  
 उपाध्याय A religious preceptor,  
 who studies and teaches Sā-  
 stras “अजभावरयाणं पढिक्कूलाभासी” उक्त०  
 १२, १६; सु० च० १, ३३७;

**अजभावरसिन्ता** सं० कृ० अ० ( अध्याप्य ) भां  
 रहिने भीतर रह कर, अन्दर रहकर. Hav-  
 ing resided in “पच तिरथगरा कुमार-  
 वासमज्जावरसिन्ता” ठा० ५, ३;

**अजभावरणा** स्त्री० ( +अध्यासना-अध्यासन )  
 सहन करवुं ते, परिसह भ्रमवे ते सहन  
 करना, परीषह सहना Endurance of  
 discomforts उक्त० टी० २,

**अजभाहार** पुं० ( अध्याहार ) आकांक्षित पदं  
 अनुसंधान करवु ते, भूलभां न देणातु पद  
 भांन सूत्रभांथी लेवुं ते आकाक्षित पद का  
 अनुसंधान करना, सूत्र में जो पद न हो उसे  
 दूसरे सूत्र में से लेना. Supplying a  
 portion from another text  
 for completing the meaning  
 of a certain text आया० टी० १, १,  
 ४, ३७,

**अजभीण** न० ( अक्षीण-अर्थिन्योऽनवरतं  
 दीयमानमपि वर्द्धत एव नतु क्षीयत इत्य-  
 क्षीयम् ) शास्त्रनु अभ्ययन, प्रकरण, अध्याय A  
 chapter of a scriptural text  
 विशेष० ६६१, अणुजो० १५४, ( २ ) क्षय  
 न पागेव अक्षय undecayed  
 सम० ३०,—भंभ्र त्रि० (—भम्भ्र ) क्षेश-  
 क्षलक्ष्मी निवृत्त नहि थयेव क्लेश-क्लह से  
 अनिरुत्त not free from troubles  
 and quarrels सम० ३०,

**अजभुववरण** त्रि० ( अध्युपपन्न-अधिकमत्त्वर्थ  
 सुपपन्नस्तश्चित्तस्तदात्मकः ) विषयभोगभा-  
 त-भय भनेलो, विषयासक्त विषयभोग में  
 तन्मय; विषयासक्त Grossly addicted  
 to sensual pleasures सू० १, २,  
 ३, ४, १, ३, २, २२,

**अजभुसिञ्ज** त्रि० ( अध्युषित ) आश्रित;  
 आश्रये आवेव आश्रित, आश्रय में आया  
 हुआ Depending on, seeking  
 shelter of पिं० नि० ४५०;

**अजभुसिर** त्रि० ( अशुषिर ) दर-राक्ष्ण पगरनुं;  
 छिद्र पगरनुं दरार रहित, छिद्ररहित Free  
 from cracks or holes ओघ०  
 नि० ७०७, उक्त० २४, १७, ( २ ) तृण-  
 भ्रथी ढकायेवुं नहि तृण से न ढका हुआ.  
 not covered with grass प्रव० ७१६;

**अजभेया** त्रि० ( अध्येता-अध्येतृ ) पाठ करनार;  
 लघुनार पाठ करने वाला, पढने वाला A  
 student, a reciter, a reader  
 विशेष० १४६४,

**अजभेसरणा** स्त्री० ( अध्येषणा ) सत्कार पूर्वक  
 आरा सत्कार पूर्वक आज्ञा Respectful  
 direction सम०

**अजभोयर** पुं० ( अध्यवपूर ) सधुनेभाटे  
 आधारभुमां उभेरो करी आधार पाणी आदि  
 आपवा ते, आधारने ओक दोष साधु के  
 लिये आधन में और बढ़ती कर आहार पानी  
 आदि देना, आहार का एक दोष A fault  
 connected with food, viz  
 giving that food, water etc to  
 an ascetic which is prepared  
 after specially adding water  
 to that already boiling, when a  
 Sādhu comes दम० ५, १, ५५, पिं०  
 नि० ६३; प्रव० ५७८,

अज्झोयरअ पुं० ( अध्यवपूरक ) गृहस्थ पोतानेभाटे रसोष्ठ डरतो होय तेमां साधुने आववानी अण्णर सांलणी वधारे डरी अथवा आधारणुमा उभेरे डरी तैयार डरेल्ल आहार साधुने आपवार्थी लागतो अेक दोष, सोण उद्गमनमानो सोणभो दोष. गृहस्थ अपने लिये रसोई बनाता हो उस समय साधु के आने का समाचार सुनकर जो अधिक रसोई बनाई हो, अथवा अधान में और मिलाकर जो आहार तैयार किया हो, वह आहार साधु को देने से जो दोष लगे वह; सोलह उद्गमनों में से सोलहवाँ दोष. A kind of sin which a man incurs by cooking more than what is required for himself when he hears of the arrival of a Sādhu or an ascetic; the last of the sixteen sins called Udgamanas. “अज्झोयरओ तिविहो जावत्तिय सघरमीसपासंढे मूलम्मिय पुस्वकए ओयरई तिरह अट्टाए ” पिं० नि० २४८; ओव० ४०,

✓ अज्झोववज्ज धा० I. ( अधि+उप+पद् ) तन्मय ययुं; प्राप्यवस्तुनी साथे अध्यवसायनी अेकता डरती. तन्मय-तर्हान होना; प्राप्यवस्तु के साथ अध्यवसाय की एकता करना. To be completely absorbed in; to concentrate the whole thought-activity upon the object to be obtained.

अज्झोववज्जइ नाया० १७; निर्सा० १२, ३२;

अज्झोववज्जिजा. विधि० आया० २, १५, १७६;

अज्झोववज्जह आ० नाया० ८;

अज्झोववज्जिहिति. भवि० ओव० ४०;

अज्झोववज्जमाण व० क० निर्मा० १७, ७.

अज्झोववज्जणा. स्त्री० ( अध्युपपादना ) विषय आसक्ति. विषयासक्ति Attachment to sensual pleasures. “तिविहा अज्झोववज्जणा जायू अजायू बित्तिगिच्छा ” ठा० ३, ४,

अज्झोववण्ण त्रि० ( अध्युपपन्न ) विषयमां आसक्ति; गृह; मुर्छित; जेनुं जवन विषयाधीन होय ते. विषयासक्त; मुर्छित; विषयाधीन जीवन वाला. Addicted to sensual pleasures नाया० २; ५; ८; १४, १७, भग० १३, ६; सूय० १, २, ३, ४; दसा० ६, १; ओघ० नि० ६००; जं० प० २, २२;

अज्झोववन्न त्रि० ( अध्युपपन्न ) जुओ उपलो १७६ देखो ऊपर का शब्द. Vide “अज्झोववण्ण ”. आया० १, १, ७, ६१;

अज्झोववाय पुं० ( अध्युपपात ) अंठपयु अहणु डरवामा यितनी अेकाग्रता कुञ्ज भी ग्रहण करने में चित्त की एकाग्रता का होना. Concentration of the mind upon the attainment of a thing. “परस्स अज्झोववायजोभजणयाइ ” परह० २, ५,

अज्झंम त्रि० ( अकम्प ) लोल रहित; माया रहित लोभ रहित, माया रहित. Without greed. आया० १, ५, ३, १५३;

अज्झंमा. स्त्री० ( अकम्प ) मायानो अभाव. कपट का अभाव. Absence of deceit. ( २ ) डसहने अभाव. कगडे का अभाव. absence of quarrel “न से समे होइ अज्झंमपत्ते ” सूय० १, १३, ६;

अट्ट. त्रि० ( आर्त्त-अर्त्ति: शारीरमानसी पीडा, तत्र भव आर्त्त: ) शारीरिक या मानसिक पीडाधी पीडतो; पीडित थयेल; दु:खी. शारीरिक या मानसिक पीडा से पीडित Afflicted in mind or body. “अट्टे



लोए परिजुण्यो दुस्संभोहे अविजाणए ”  
 आया० १, १, २, १४, १, २, ५, ६४,  
 नाया० १, १६, निसी० ८, ३; ओव० ३४;  
 आव० ४, ७; क० गं० १, ३०, ( २ ) न०  
 दिलगीर यवुं; इदन करवुं; उरणा करवी;  
 आर्त्तध्यान करवु ते. दुःखी होना, रुदन कर-  
 ना, आर्त्तध्यान करना to give way to  
 sorrow; to moan, to bewail  
 उत्त० ३०, ३३, ३४, ३१, परह० १, २;  
 नाया० १, ८; १३, १६, भग० ३, २;—वस  
 पुं० ( -वश ) आर्त्तध्यानने वश यवु ते.  
 आर्त्तध्यान के वश होना. to be swayed  
 by thoughts of pain. नाया० १;  
 —स्सर. पुं० ( -स्वर ) आर्त्तनाद; दुःखने।  
 शब्द, दुःखने। अवाण आर्त्तनाद, दुःख भरा  
 शब्द lamentation. ( २ ) त्रि० नेनो स्वर-  
 अवाण दुःखपी पीडित होय ते दुःख से  
 पीडित स्वर वाला. having a tone  
 expressive of pain “ अट्टस्सरे ते  
 कलुणं रसते ” सूय० १, ५, १, २४,

अट्टजभाषा न० ( आर्त्तध्यान ) आर्त्तध्यान,  
 चिन्ता; धृष्टिना विधेय के अनिष्टना संयोगभी  
 भेद पाभवे। ते. आर्त्तध्यान, चिन्ता, इष्टविधेय  
 व अनिष्टसंयोग से दुःखी होना. Feeling of  
 affliction, anxiety, to be dejected  
 at the separation of a be-  
 loved thing or at meeting with  
 unfavourable circumstances.  
 कप्प० ४, ६२, राय० २६४, नाया० १; सम०  
 ४, ठा० ४, १,—उवगय त्रि० ( -उपगत )  
 आर्त्तध्यान करना, अर्त्ति-शोच निमग्न आर्त्त-  
 ध्यान करने वाला, शोकमग्न engrossed in  
 painful thoughts “ अट्टज्जाणोवगए  
 भूमिगयदिद्विणं जिक्कयाह ” सूय० २, २,  
 १६, निसी० ८, ११, जं० प० ३, ५६०;

अट्टट्टहास पुं० ( अट्टट्टहास ) उया स्वरथी हसवुं

ते, अट्टट्ट हसवु ते उच्चस्वर से हंसना.  
 Loudlaughter. नाया० ८, प्रव० १४२२;  
 अट्टण पुं० ( अट्टन ) अट्टण नामने उल्लेखणी  
 वासी श्रेष्ठ मल्ल, के ने सोपारक नगरना राजा  
 पासेथी धणी वार धनाम लध आवतो, पण  
 पाछगथी तेनी जरा अवस्थामां अेक जुवान  
 तेनो हरीक्ष जग्ये, तेथी ते पराजय पाग्ये  
 अने आभरे दुःखी थतां विरक्त थछ दीक्षा  
 लीधी. “जरोवणीयस्स हु नत्थि ताणं” उत्त०  
 ४, १, नी टीकांमां विस्तारथी आ दृष्टांत  
 धउपणुमां कोर्ध त्राणु-शरण नथी अे विषय  
 उपर आपनामां आव्यु छे. उज्जयिनी में  
 रहने वाला अट्टण नामक एक मल्ल, जो कि,  
 सोपारक नगर के राजा के पास से बहुतसी वार  
 इनाम लाता था. परन्तु पीछे से उसकी जराव-  
 स्था में एक प्रतिस्पर्धी खड़ा हुआ, जिसने उसे  
 पराजित किया, इससे उसने दुःखी होकर दीक्षा  
 ली “जरोवणीयस्स हु नत्थि ताणं” उत्त० ४, १;  
 की टीका में विस्तार से यह दृष्टान्त वृद्धावस्था में  
 कोई शरण नहीं है, इस सम्बन्ध में दिया गया है.  
 An athlete named Attana,  
 residing in Ujjain. He often  
 received presents from the  
 king of a city named Sopār-  
 aka. But in his old age there  
 arose a rival and he was  
 defeated, so being disgusted  
 he entered religious order.  
 “जरोवणीयस्स हु नत्थि ताणं” उत्त० ४, १;  
 अट्टण. न० ( अट्टन ) वुं-यावुं ते; गति करवी  
 ते चलना; गति करना Going, moving.  
 ओव० ३१; ( २ ) कसरत करवी, शारीरिक  
 अभि लेवे। ते. कसरत करना, शारीरिक अभि  
 करना to take physical exercise.  
 ओव०—साला. श्री० ( -शाळा ) कसरत  
 शाळा, कसरत करवानी जग्या. व्यायामशाला;



कसरत करने की जगह gymnasium “जे-  
थेव अद्वैतसाला तेथेव उवागच्छह्” नाया०  
१; भग० ११, ११, ओव० ३१, कप्प० ५, १०१;  
अद्वैतर न० ( आर्त्ततर ) अतिशय-धनुष  
आर्त्तध्यान; विशेष आर्त्तध्यान करने के  
अतिशय आर्त्तध्यान करना. Intense  
Ārttadhyāna ( lamentation )  
“पज्जिज्जमाणद्वतरं रसंति” सूय० १, ५, १, २५;  
अद्वैतस. पुं० ( अद्वैतरूप-अद्वैतः रूप्यति ) अद्वैतसाला  
आड, गुच्छ वनस्पतिनी ओड अत अद्वैत का  
वृक्ष; गुच्छ वनस्पति की एक जाति A kind  
of tree. पञ्च० १,  
अद्वैतहास पुं० ( अद्वैतहास ) अडअड इंगीते  
हसने के जोर से हंसना Loud laughter  
परह० १, ३;  
अद्वैतलग. पुं० न० ( अद्वैतलक ) गड उपर रहे-  
वानुं स्थान; अटारी, अरूपो गड ऊपर  
रहने का स्थान; भरोखा, अटारी. A  
turret. जीवा० ३, ३, परह० १, १; भग०  
५, ७, ( २ ) गड तथा डिखाना डोहा उपर  
आधे शस्त्र राखवानुं भंडान गड या  
किले पर बनवाया हुआ शस्त्र रखने का स्थान  
a turret on a fortress for stor-  
ing weapons “ पागारं कारयित्ता ण  
गोपुरद्वालगाणि य ” उत्त० ६, १८,  
अद्वैतलय पु० ( अद्वैतलक ) लुओ शब्द “ अद्वै-  
तलग ” देखो “ अद्वैतलग ” शब्द Vide “ अद्वै-  
तलग ”. राय० २०१, निसी० ८, ३, पञ्च० २,  
नाया० १६; अणुजो० १३४; सम० ५० २१०,  
अद्वैत. त्रि० ( अर्त्तित ) पीडित, दुःखी पीडित;  
दुःखी Afflicted ओव० ३४,  
अद्वैत पुं० ( अर्थ ) अर्थ; आचारान्तादि सूत्रो  
अर्थ-भाव; आचार अर्थ, आचारान्तादि सूत्रों  
का अर्थ-भाव Meaning, sense, pur-  
port निसी० १, २८, १६, ६; उत्त० १, ८, ३,  
१०, राय० २३४; नाया० १, ५, दम० ४,

१३; भग० १५, १, ओव० ११, कप्प० १,  
७, क० गं० १, ४१; २, ३१, ( २ ) प्रयोजन;  
उद्देश्य प्रयोजन; उद्देश्य aim; object,  
motive. नाया० १; ५; १८, १६; भग०  
१, ६; २, १, ५; ५, ४; १५, १, १८, ७, दस०  
१०, १, ८; उत्त० ४, ४, पिं० निं० भा० ३, पिं०  
निं० १०३, राय० ३६; वेय० ३, २६, ( ३ )  
पदार्थ; वस्तु-तत्त्व पदार्थ-तत्त्व a thing,  
an object. पञ्चा० ६, १, राय० २५;  
अणुजो० २७; ( ४ ) कार्य-काम. कार्य, कृत्य.  
action, act; work. ठा० ५, २, पञ्च०  
३६, ( ५ ) आधु विषय-प्रसंग प्रसंग-प्र-  
स्तुत विषय. current subject mat-  
ter. अणुजो० १३४, ( ६ ) परमार्थ; मोक्ष.  
परमार्थ, मोक्ष. final emancipation;  
salvation दस० ८, ४३; उत्त० १, ८;  
( ७ ) धारणा धारणा ideal. भग०  
३, १, —कर पुं० ( —कर-अर्थान् हिताहित-  
प्राप्तिपरिहारादीन् राजादीना दिग्यान्नादौ  
तथोपदेशद्वारा करोतीत्यर्थकर ) प्रधान; मंत्री  
प्रधान; दीवान, मंत्री, a minister, a  
counsellor ठा० ४, ३, ( २ ) निमित्त  
प्रकाशक, निमित्तित्यो निमित्तजानी an in-  
terpreter of signs and omens.  
ठा० ४, ३, —क्रिया स्त्री० ( —क्रिया )  
इधने इध प्रयोजन पडये आरम्भादि क्रिया  
इधनी ते; क्रियाना तेरे स्थानकमानुं पडेले  
स्थानक किसी न किसी प्रयोजन के पडने पर  
आरम्भादि क्रिया करना, क्रिया के १३ स्थानकों  
में से पहिला स्थानक the first of the  
13 Kriyā Sthānakas ( sources  
of incurring Karma ), viz doing  
an action involving killing etc  
on some ground or for some  
reasons or other प्रव० ८२४;  
—जाय त्रि० ( —जात ) धनार्थी; धननी

नशीयातवाणो. धनार्थी, धन की जरूरत वाला  
needy “अदृजाय भिक्षुं गिलायमाण  
नो कप्पइ” नव० २, १८, ( २ ) संयमधी  
यलायमान थयेल संयम से चलित one  
who has swerved from  
asceticism “अदृजायं शिग्गये शिग्गार्थिं  
गिरहमाणे वा णाहकमइ” ठा० १, २,  
—उत्त त्रि० ( -युक्त ) हेयोपादेयरूप  
अर्थ युक्त, अर्थ-भोक्षतदुपयुक्त हेयोपादेय  
रूप अर्थ युक्त, मोक्षोपयुक्त containing  
discussion on things that should  
be abandoned or practiced 1 e  
on matters showing the way  
to salvation “अदृजुत्ताणि सिक्खेज्जा  
गिरह्वाणि उ वज्जण” उत्त० १, ८,—दंसि  
त्रि० ( -दर्शिन ) अर्थवेत्ता, शास्त्रना अर्थने  
बालुना२ अर्थवेत्ता, शास्त्रों के अर्थ को  
जानने वाला one knowing the  
sense of scriptures समालवेज्जा  
परिपुत्तभासी, निसामिया सामिय अदृदसी”  
सूय० १, १४, २४,—दुग्ग त्रि० ( -दुर्ग )  
परिष्ठाभे गहन, दुर्गम गूढ, गहन परिणाम  
वाला inaccessible, abstruse “पवे-  
दइस्से दुहमदुग्ग” सूय० १, ५, १, २, १, १०,  
१०;—पय न० ( -पद ) सूक्ष्म बुद्धिधी  
वित्यारवा योग्य पद-वाक्य a sentence  
requiring close thinking to be  
understood. “समाहियं अदृपयोवसुद्ध”  
सूय० १, ६, २६, क० प० २, ४६, ( २ )  
अर्थ-अलुङ्गादि रक्ष, पद-आनुपूर्वी आदि,  
अलुङ्गरक्ष आदि पदार्थनी आनुपूर्वी-परि-  
पाटी त्र्यणुकादि स्कध, पद-आनुपूर्वी आदि,  
त्र्यणुस्कध आदि पदार्थ की परिपाटी pro-  
gressive order of substances e  
g. atom, molecule etc. “ने कि त

येगमववहाराणं अणोवणिहिया दब्बाणुपुब्बी  
पंचविहा प० त० अदृपयपरवणा” अणुजो०  
नंदी० ५६,—सइया सी० ( -शक्तिका )  
सैकडो अर्थ नेभांथी ठे अेवी वाणी ऐसी  
वाणी जिसके सैकडो अर्थ हो सकें speech  
capable of hundreds of mean-  
ings “अणुणरुत्ताहि अदृसइयाहि दग्गहि  
अणुदरणं अभिणदता” जं० प०

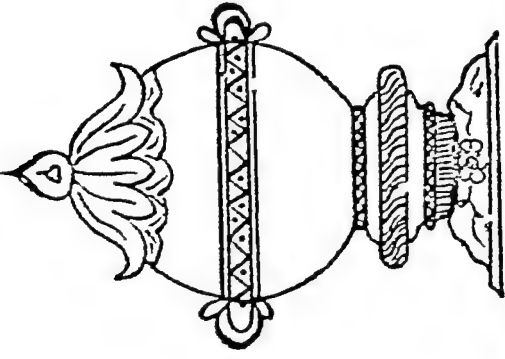
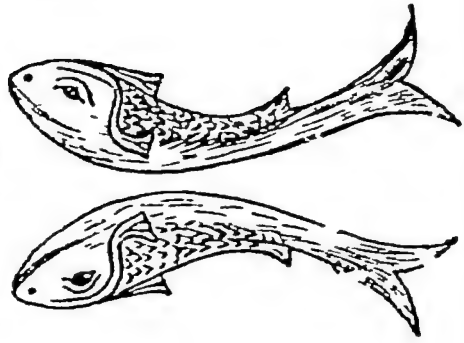
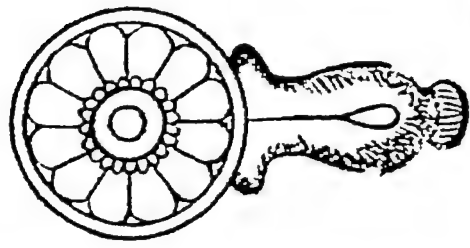
अदृष्ट त्रि० ( अष्टन् ) आठ, आठनी सप्प्या.  
आठ, आठ की संख्या Eight उत्त० २६,  
१६, पक्क० १, ४, सम० ८, ठा० १, १; पिं०  
निं० ६८, नाया० १; २, ५, ६, ज० प० ३, ५२,  
दस० ६, ७, ८, १३, सु० च० २, २४४; सू०  
प० १, भग० १, १, ५, ३, ७, ५, ४, ८;  
६, ७, ८, २; १८, ८, २४, ११, ३१, १;  
क्व० ८, १५, राय० ४७, ओव० १०; १२;  
—अदृमिआ स्ना० ( -अष्टमिका ) आठ  
अठ्ठागिया-६४ दिवस अने २८८ दातनी अेक  
लिङ्गुपडिमा-अभिग्रह तपविशेष, ६ नेभा  
पहेले आठ दिवसे अथवा पहेले अष्टके अेक  
अेक दात अन्नपाणी लेवाय, पछी भीन्न  
अष्टके प्रत्येक दिवसे अे अे दात अन्नपाणी लेवाय  
अेस दरेक अष्टकमा अेक अेक दात वधारता  
आठमे अष्टके आठ आठ दात अन्नपाणी  
लेवाय आठ अठ्ठागि-६४ दिन और २८८  
दात की एक भिक्षुपडिमा-अभिग्रह  
तपविशेष, अष्टक के प्रत्येक दिन एक एक दात  
अन्नजल लिया जाय, दूसरे अष्टक के प्रत्येक  
दिन दो दो दात अन्नजल लिया जाय, इस  
प्रकार प्रत्येक अष्टक में एक एक दात अन्नजल  
वटाने में आठवे अष्टक में आठ आठ दात अन्न  
जल लिया जाय a kind of penance,  
practised by an ascetic, lasting  
for eight weeks or 64 days with  
288 Dātas ( a particular way  
of giving food and water ) of

food and water. On every day of the first week one Dāta of food and water is to be taken, on every day of the second week two Dātas of food and water are to be taken Thus on every succeeding week one additional Dāta of food and water is to be taken " अष्टमियाणं भिक्षुपाणिमा चउसट्ठीए राइंदिएहिं दोहिं य अट्ठासीएहिं भिक्षासएहिं" सम० ६४, अंत० ८, ५; ओव० १२, वव० ६, ३८;—आहिय. त्रि० (—आहिक) आठ दिवस संबंधी आठ दिन सम्बन्धी. relating to or pertaining to eight days. पंचा० ८, ४८, —उत्तर. त्रि० (—उत्तर) आठे डरी अधिक, आठ ७५-२. आठ से अधिक exceeding by eight, exceeding eight "अट्ठुत्तरं सयसहस्सं पीइदायं दलयंति" ओव० भग० २६, १८, "पणहावागरणोसु अट्ठुत्तरं पसियासयं अट्ठुत्तरं अपसियासयं" सम० प० १६०, —उत्तरसय. न० (—उत्तरगत) १०८; अष्ट से आठ. एक सौ आठ one hundred and eight प्रव० ४७७, —उवास पु० (—उपवास) आठ उपवास आठ उपवास eight fasts. पंचा० १६, ३०;—उस्सेह त्रि० (—उत्सेह) जेनी आठ जेजनी उपाध होय ते. आठ योजन की ऊंचाई वाला eight Yojana's in height. "चक्रह पइहाणा अट्ठुस्सेहा य" ठा० ६, —करिण-अ-य त्रि० (—करिणिक) आठ भुजावाणुं अठपेहलु. having eight corners, octagonal. जं० प० ३, ५४; ठा० ८, १; —करम न० (—कर्मन्) आठ डर्म; १ बुं नाना-परणीय, २ बुं दर्शनावरणीय, ३ बुं वेदनीय, ४ बुं मोहनीय, ५ बुं आयुष्य, ६ बुं नाम, ७ बुं

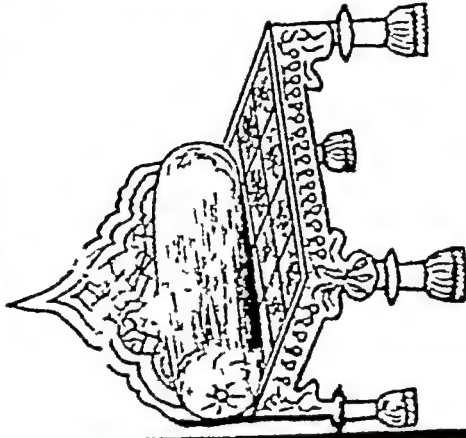
गोत्र अने ८ बुं अंतराय ओ आठ डर्म आठ कर्म; १ ज्ञानावरणीय, २ दर्शनावरणीय, ३ वेदनीय, ४ मोहनीय, ५ आयुष्य, ६ नाम, ७ गोत्र और ८ अन्तराय. the eight varieties of Karmas viz ( 1 ) Jñānāvaraṇīya, ( 2 ) Darśanāvaranīya, ( 3 ) Vedanīya, ( 4 ) Mohanīya, ( 5 ) Āyusya, ( 6 ) Nāma, ( 7 ) Gotra, ( 8 ) Antarāya नाया० ५; ६;—कम्मपगडि. जी० (—कर्मप्रकृति) आठ डर्मनी प्रकृति आठ कर्मों की प्रकृति. the varieties of the eight classes of Karma. नाया० ५; ६, —गडि. जी० (—गति) आठ गति, १ नरक गति, २ तिर्य्य, ३ तिर्य्य स्त्री, ४ नर, ५ नारी, ६ देव, ७ देवी अने, ८ सिद्धगति आठ गति, १ नरकगति, २ तिर्य्यक् गति, ३ तिर्य्यक् स्त्री, ४ नर, ५ नारी, ६ देव, ७ देवी और ८ सिद्धगति. the eight varieties of Gatis or conditions of existence; viz ( 1 ) Narak Gati, ( 2-3 ) lower creatures (male & female) (4-5) human beings (male & female) (6) Deva (7) Devī (8) Siddha. भग० २५, ३, —गुण. पुं० (—गुण) गीतना आठ गुण, आठ गुणो डरी युक्त गीत आठ गुणों सहित गीत; गीत के आठ गुण the eight qualities or merits of a song; a song having the eight qualities "पुण्यं रत्तं च अलंकियं, वट्टतहेव अविपुट्टं, महुरं समं सुललियं अट्ठगुणा हंति गेयस्स" जीवा० ३, राय० १३१;—गुणोववेय न० (—गुणोपपेत) आठ गुणयुक्त गीत आठ गुणसहित गीत. (a song) perfect in its eight merits. जीवा० ३, —चक्रवालपइहाण त्रि० (—चक्रवालप्रतिष्ठान) आठ चक्र-पैदाने



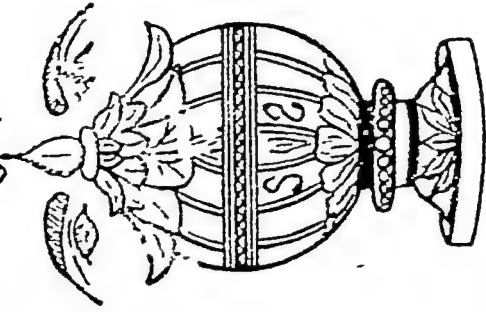
कृष्ण.



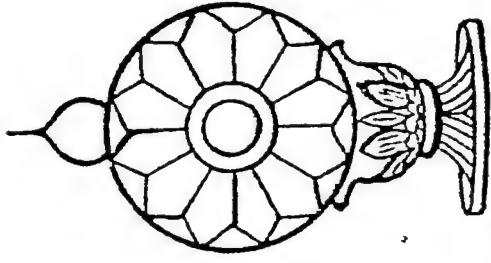
भद्रासन.



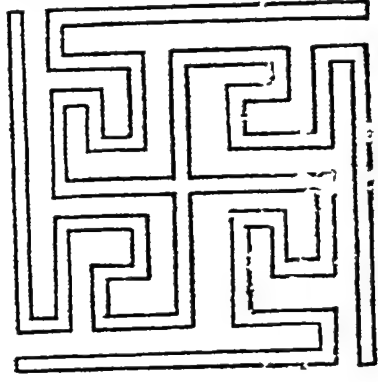
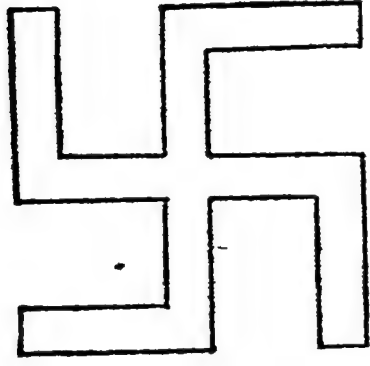
कुम्भ.



संगुट.



भस्मस्तिक.



अष्टमंगल — आठ मंगलिक.

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

आधारे रहे। आठ चाकों-पैयों के आधार पर ठहरा हुआ resting on eight wheels. “एगमेगेण महाविही अट्ठचकवा-जपट्ठायो ” जीवा० ३;—ट्टाण. न० (—स्थान ) षष्ठ्याय सूत्रं आठ्ठु स्थान स्थानाङ्ग सूत्र का आठवाँ स्थान. the eighth Sthāna of Sthānāṅga Sūtra. “ एवं जहा अट्ठट्ठायो ” ठा० १०;—णाय-कुमार. पुं० (—ज्ञातकुमार ) ज्ञातवंशना आठ कुमार. eight princes of the Jñāta dynasty नाया० ८;—तीस पुं० (—त्रिंशत् ) ३८, आठतीस अष्टतीस. thirty-eight नाया० ४० सम० २४; भग० ४१, १, जं० प० १, ११;—दिसाकुमारिया स्त्री० (—दिशाकुमारिका ) आठ दिशाकुमारी आठ दिशाकुमारियों. eight Disākumārīs नाया० ८,—पणसिय त्रि० (—प्रदेशिक ) आठ प्रदेशों के अनेको आठ प्रदेशों का बना हुआ made up of eight particles ठा० “एत्थणं अट्ठपणसिए रूयगे” ठा० १०, भग० १२, ४,—पडल त्रि० (—पटल ) आठ पडवाणुं. आठ पुडत वाला consisting of eight layers or folds. भग० ६, ३३,—पिट्ठणिदिठ्ठया स्त्री० (—पिष्टनिष्ठिता ) आठ बार पिसवायी उत्पन्न थये। मदिशविशेष आठ धार पीसने से बनने वाली मदिरा a kind of wine produced by pounding a substance eight times पन्न० १७, जीवा० ३;—फास पुं० (—स्पर्श ) शीत, उष्ण वगैरे आठ स्पर्श शीत, उष्ण वगैरे आठ प्रकार के स्पर्श. eight varieties of touch, e g cold, hot etc. विशेष० ६४६,—भव पुं० (—भव ) आठ जन्म आठ भव eight births भग० २४, १७,—भाइआ-या स्त्री० (—भा-

गिका) भाणीना आठमा भाग जेट्ठुं रसमाप-वानुं माप, अत्रीश पल प्रमाणे रसमान विगेष माणां के आठवे भाग जितना रस नापने का माप; बत्तीस पल के अनुसार रस का मान-प्रमाण a measure of capacity for liquids equal to the eighth part of a Mānī अणुजो० १३२, १५३,—भागपलि-ओवम न० (—भागपल्योपम-पल्योपमभाग) पल्योपमने। आठमा भाग पल्योपम का आठवाँ भाग period of time equal in extent to the eighth of the Palyopama period भग० २४, १२;—मअ. पुं० (—मद ) आठ मद्, जाति, कुल, पल, रूप, तप, श्रुत, लाल अने ऐश्वर्य—भोटाछ अने आठ परतुपरतवे मद्—अड्डार करवे। ते आठ मद्, जाति, कुल, वल, रूप, तप, श्रुत, लाभ और ऐश्वर्य इन बातों का अहंकार करना eight kinds of pride due to ( 1 ) caste, ( 2 ) family, ( 3 ) physical strength, ( 4 ) beauty, ( 5 ) penance, ( 6 ) learning, ( 7 ) gain, ( 8 ) power & wealth. आऊ० २६,—मंगल न० (—मङ्गल ) आठ मंगल आठ मंगल. eight auspicious things तत्त्वणं असोमवरपायवत्स उवरि बहवे अट्ठ मङ्गलगा पण्यत्ता तंजहा १ सोवत्थिय २ सिरिवत्था ३ शंदियावत्त ४ वड्ढमा-णग ५ भद्दासण ६ कलस ७ मच्छ ८ दप्पण” ओव० ज० प० ३, ५३,—मयमहण त्रि० (—मदमधन ) आठ मदनो नाश करने वाला destroyer of the eight varieties of pride. पणह० २, ५;—महापाडिहारे न० (—महाप्रा-तिहार्य ) तीर्थंकर महाशरणा देवताओं तर्-क्षी आठ प्रभारे अतावातो प्रसाव, अशोड



वृक्ष, दिव्यपुष्पवृष्टि, दिव्यध्वनि, चामर, सिंहासन, भामंडल-अंभोजाना भागनुं तेन, देवदुंदुभि अने छत्र उपर छत्र ये आठ प्रातिहार्य तीर्थंकरों का देवताओं द्वारा प्रकट किये जाने वाला आठ प्रकार का प्रभाव; अशोकवृक्ष, दिव्यपुष्पवृष्टि, दिव्यध्वनि, चामर, सिंहासन, भामंडल, देवदुंदुभि और छत्र ये आठ प्रातिहार्य the glory of Tirthankaras testified by gods, in eight ways; e. g. showering celestial flowers etc. नदी०—**मुक्ति पुं०** (—मूर्ति) शिव; महादेव. शिव; शङ्कर, महादेव the god having eight forms i. e. Śiva, Mahādeva ठ० १,—**रस पुं०** (—रस) शृंगार आदि आठ रस; शृंगार, वीर, करुणा, हास्य, रौद्र, भयानक, बीभत्स अने अद्भुत ये आठ रस आठ प्रकार के रस; शृंगार, वीर, करुणा, हास्य, रौद्र, भयानक, बीभत्स और अद्भुत ये आठ रस. eight kinds of poetic sentiments viz ( 1 ) Śringāra, ( 2 ) Vīra, ( 3 ) Karuṇā, ( 4 ) Hāsyā, ( 5 ) Raudra, ( 6 ) Bhayānaka, ( 7 ) Bībhatsa, ( 8 ) Adbhuta राय० १३१, —**रससंपुटत्रिं०** (—रससम्प्रयुक्त) आठ रसथी लक्ष्मण, आठ रसयुक्त. आठ प्रकार के रसों से युक्त replete with the eight poetic sentiments जीवा० ३;—**चक्र त्रिं०** (—पञ्चाशत्) अष्टावतन, ५८. अठावन, ५८. fifty-eight, 58. क० गं० १, ३२,—**वीस त्रिं०** (—विंशति) आठ अने बीस, २८. अठाईस; २८ twenty-eight, 28. क० गं० १, ३, क० प० २, २४, ७, ११;—**सष्टि स्त्री०** (—षष्टि) ६८, अठसठ ६८, अष्टसठ sixty-eight भग० २४, १, २१,—**समय त्रिं०** (—समय)

नेनी स्थिति आठ समयनी होय ते. जिसकी स्थिति आठ समय की हो lasting for eight Samayas ( i. e. units of time ). क० प० १, ४०,—**सय न०** (—शत) अेक सौ अने आठ; १०८. एक सौ आठ. one hundred and eight. निर० ३, ४; ठ० १०; उत्त ०३६, ६२;—**सयसिद्ध पुं०** (—शतसिद्ध-अष्टशतश्च ते सिद्धाश्च निर्वृत्ताश्च अष्टशतसिद्धा ) ऋषभ-देवस्वामी साथे उत्कृष्टी अवगाहनावाणा तेमना १०८ साधुओं अेकठ वधते सिद्ध यथा ते अछेइं; दश अछेराभांनुं अेक अछे३. ऋषभदेवस्वामी के उत्कृष्ट अवगाहना वाले १०८ साधुओं के एक समय में मोक्ष प्राप्त होने की आश्चर्य जनक घटना, दस अछेरों ( आश्चर्य जनक घटनाओं ) में से एक अछेरा. Rishabhadeva and his Sādhus, 108 in number, who attained to salvation simultaneously. This is one of the ten wonderful events ठ० १०,—**सहस्त्र न०** (—सहस्र) अेक हजार अने आठ. एक हजार आठ one thousand & eight “वहिरामयवत्थणित्थजोइयअदठसहस्सवरकंचण ” ओव०—**सामइय त्रिं०** (—सामयिक) आठ समयमां निष्पन्न थाय ते; देवल समुद्घात वज्रेरे, ३ के आठ समयमा पूर्ण थाय छे आठ समयों में निष्पन्न होने वाला, केवलसमुद्घात वज्रैरह, जो आठ समयों में पूर्ण हो जाते है ( Kevalasamudghāta, etc. ) that can be finished in eight Samayas. “केवलसमुग्घाण अदठसामइय परणत्ते ” ओव०—**सीइ जी०** (—अशीति) अष्ट्यासी; ८८ दस; अष्ट्यासी eighty-eight, 88 प्रव० ३६६,—**सोवणिय त्रिं०** (—सौवर्णिक) आठ सोनाभोज प्रभा-

थु; जेतुं वन्न आऽ सोनाभेडार जेटुं होय  
ते सोने की आठ माहरों जितने वजन वाला  
eight gold Mohars in weight.  
“ऐगमेगस्स रां रणणे चाउरंतचक्कवट्टिस्स  
अट्ठसोवणिण्ण काकिणीरयणे” ठा० ८; जं०  
प० ३, ५४;—हत्तरि त्रि० (-सप्तति) ७८;  
अठोत्तर. अठहत्तर. seventy-eight  
“अट्ठहत्तरिणं सुवण्णकुमारदीवकुमारावासस-  
यसहस्सारं” सम० ७८; पञ्च० २;

अद्वैत न० ( अष्टाङ्ग ) नवमा पूर्वनी त्रीण  
आचारवस्तुमाथी नीक्षेण सुप्रदुष्पना  
शुभाशुभ-निमित्तसूत्र अष्टाङ्ग-निमित्तशा-  
स्त्र; भौम, उत्पात, स्वप्न, आंतरिक्ष, आग  
( अंग इडे ते ), स्वर, लक्षण अने व्यंजन  
ये आऽ अंगराणुं निमित्तशास्त्र नवे पूर्व की  
तीसरी आचारवस्तु में से निकला हुआ सुख  
दुःख का शुभाशुभ फल बतलाने वाला निमि-  
त्तशास्त्र; भौम, उत्पात, स्वप्न, आन्तरीक्ष, अंग  
फरकना, स्वर, लक्षण और व्यंजन, इन आठ  
अङ्गों वाला निमित्तशास्त्र The science  
of interpreting signs and  
omens classified as inquiring  
happiness and misery into  
eight subdivisions such as  
Bhauma, etc It is derived from  
the third Āchānavastu of the  
ninth Pūrva नाया० १, भग० ११, ११,  
१५, १, सूय० १, १२, ६;—आउवेअ  
पुं० (-आयुर्वेद) आऽ अंगसहित आयुर्वेद  
आठ अंगों सहित आयुर्वेद ( वैद्यकज्ञान )  
Āyurveda or medical science  
consisting of eight parts. विवा०  
७,—णिमित्त. न० (-निमित्त) लुओ  
“अद्वैत” शब्द देखो “अद्वैत” शब्द-  
vide “अद्वैत” सूय० १, १२, ६;

अद्वैतमित्त न० ( अष्टकमात्र ) आऽ पर्यन्त

आठ तक Up to eight क० प० १, १२,  
अद्वैत. त्रि० ( अष्टम ) आऽ अष्टम आठवाँ.  
Eighth भग० २, १, ८, १, नाया०  
८; ६; १६, दस० ८, १५; सम० ८, ठा०  
६, १, क० गं० १, २, दसा० ७, ११;  
नाया० ध० ८; ( २ ) अद्वैत-त्रिण  
उपवास, ७ टक-वपत उद्वेगधी आऽ अष्टमे टके  
आहार लेवो ते, त्रिण उपवास भेगा करना ते.  
तीन उपवास साथ २ करना; भोजन के ७  
समयों को उलाघ कर आठवें समय भोजन  
करना Three continuous fasts,  
continuous omission of seven  
meals नाया० ८, भग० २, १, ३, १,  
६, ३१, २०, ६,—भक्त न० (-भक्त)  
अद्वैत, त्रिण उपवास भेगा करना ते.  
तीन उपवास लगातार करना, अद्वैत  
three continuous fasts “तद्व्या  
से भरहे राया अद्वैतभक्तं पोसहसालाओ  
पडिणिक्खमइ” ज० प० ३, २२; भग०  
१, १, ७, ६, ओव० १६, नाया० १, ८, १३,  
१६, जीवा० ३, ४, विवा० १; पञ्च० २८;  
—भक्तिय. त्रि० (-भक्तिक) अद्वैत त्रिण  
करना, अद्वैत अद्वैतना पारणा करना  
लगातार तीन उपवास करने वाला, अद्वैत करने  
वाला observing three continu-  
ous fasts कप्प० ६, २३, भग० १६, ४,  
अद्वैत. त्रि० ( अष्टम-क ) लुओ “अद्वैत”  
शब्द देखो “अद्वैत” शब्द Vide “अद्वैत”  
विशे० १४८७,

अद्वैती स्त्री० ( अष्टमी ) अष्टमी, आऽ अष्टमी  
अष्टमी The eighth day of every  
half of a lunar month दसा० ६,  
२, विवा० ४, ज० प० ७, १५३, जीवा० ३, ४,  
पचा० १, १७, राय० २२५,—पोसहिय त्रि०  
(-पौषधिक) आऽ अष्टमी पोसो ( पोषध )  
करना अष्टमी का पोषध-उपवास करने वाला

observing Pausadha, on the eighth day of every half of a lunar month. आया० २, १, २, १०; —माई. त्रि० (—आदि) आहम आदि पर्व-ना दिवस अष्टमी आदि पर्व ( a sacred day) such as the eighth day of a fortnight etc. “अष्टमिमाईसु दिवसेसु” प्रव० ६६७,

अष्टय न० (अष्टक) आहनेो ज्यो. आठ का समूह. A group of eighth. क० गं० ६, ११, अष्टया. स्त्री० (अर्थता) अपेक्षा अपेक्षा. Desire, expectation “अंगद्वयाप्” सम०

अष्टविह. त्रि० (अष्टविध) आह प्रक्षरनुं आठ प्रकार का Of eight kinds “अष्टविह कम्मतमपडलपडिच्छरणे” उक्त० ३०, २६; भग० १, ६; —चंधय. त्रि० (—बन्धक) आह प्रक्षरनां कर्म आधनार; आह कर्मनी प्रकृतिने पंध करनार. आठ कर्मों का या आठ कर्मों की प्रकृतियों को बांधने वाला. incurring bondage arising from all the eight sorts of Karma भग० ६, ६; अष्टसेण पुं० (अष्टसेन) वत्स गोत्रनी शाखा अने तेमा जन्मेलेो पुत्र्य वत्स गोत्र की शाखा और उसमें उत्पन्न पुरुष A branch of Vatsa-Gotra; a person born in that branch. ठा० ७, १,

अष्टसेण पुं० (अर्थसेन) अर्थसेन नामनेो पुत्र्य. पुरुषविशेष का नाम. Name of a man. ठा० ७, १;

अष्टहा त्रि० (अष्टधा) आह प्रक्षरे. आठ प्रकार से. Of eight kinds, in eight ways. भग० १२, ४; पंचा० ६, २;

अष्टा स्त्री० (अष्टा) मुंडे; लेवा डरवाने केश मुष्टिमा लेवा ते लोच करने के लिये केशों को मुष्टिमें पकड़ना Holding hair by the

fist of the hand to pluck them out. “चउहिं अट्टाहिं लोयं करेह” जं० प० अट्टाण. न० (अस्थान) अस्थान; अनुचित-अनुचित स्थान; अधुटित स्थान अनुचित स्थान; खराब जगह. An improper place. “अट्टाणमेयं कुसजा वयंति, दगेण जे सिद्धिसुदाहरंति ” सूय० १, ७, १५, २, ६, ३३; पिं० नि० भा० २४; —ट्टवणा. स्त्री० (—स्थापना) अस्थान—अुर्ना अवग्रह-मां—उपधि राखवाने अनुचित स्थानमां पडिलेहुणु डरेल उपधि राखवी ते; प्रमाद पडिलेहुणुनेो ओड भेद गुरु के अवग्रह में उपधि रखने के अयोग्य स्थान में पडिलेहुण की हुई उपधि रखना; प्रमादपडिलेहुण का एक भेद keeping the materials and garments inspected minutely, in improper place; a variety of Pramāda, Padīlehanā. ठा० ७;

अट्टाण न० (आस्थान) भेड; सभा बैठक, सभा. An assembly; a meetingplace. ठा० ५, १; —मंडव. न० (—मण्डप) भेड; गृह; भेडडनुं स्थान. बैठक का स्थान; बैठकगृह. a drawing room, a seat ठा० ५, १,

अट्टाणउइ त्रि० (अष्टानवति) ६८; अट्टाणुं अठानवें; ६८. Ninety-eight. जं० प० ७, १४६; सम० ६८;

अट्टाणवइ. स्त्री० (अष्टानवति) अट्टाणुनी सभ्या. ६८, अठानवें. Ninety-eight. प्रव० ३१०;

अट्टाणिअ त्रि० (अस्थानिक) स्थान—आधार नहि ते; अनाधार; अपात्र आधार रहित; अपात्र, स्थान विना. That which would not give support to, incapable of retaining, “अट्टाणिअ होइ यहुगुणायं, जेणायमंकाइ मुमं वपुज्जा” सूय० १, १३, ३;

अष्टादंड पुं० (—अर्थदण्ड—अर्थेन स्वपरोप-  
कारलक्षणेन प्रयोजनेन दण्डो हिंसा अर्थ-  
दण्डः ) पोताना सुअने माटे के पारडा सुअ-  
ने माटे शुअनी हिंसा करी ते, प्रथम क्रिया  
स्थानक. अपने या दूसरे के सुख के लिये  
जीव की हिंसा करना, प्रथम क्रियास्थानक  
Destruction of living beings for  
one's own or another's happi-  
ness, the first Kriyāsthāna  
ठा० २, १, ५, २, सम० २, १३;—वृत्तिअ-य  
पुं० न० (—प्रत्ययिक ) दंडसमादाना तेर  
क्रियास्थानकमानु प्रथम क्रियास्थानक,  
पोताने अर्थे के स्वजनादिना अर्थे हिंसादि  
पाप करु ते दंडसमादान के तेरह क्रिया-  
स्थानकों में से प्रथम क्रियास्थानक, अपने या  
स्वजनादि के लिये हिंसादि पाप करना des-  
truction of or injury to living  
beings for one's own or another's  
benefit, the first of the thirteen  
Kriyāsthānas of Dandasamā-  
dāna “ पढमे दंडसमादायो अष्टादंड-  
समादायो अष्टादंडवसिष्ठाति आहिज्जइ ”  
सूय० २, २, ५,

अष्टापय न० ( अष्टापद ) जुगटु, जुगार  
जुआ Gambling निसी० १३, ८,  
अष्टाबंधि त्रि० ( अर्थबन्धिन् ) विना प्रयोजने  
अधिक बंध न देनेवाला ( साधु ). वेकाम अधिक  
बंध न देने वाला ( साधु ) ( An ascetic )  
who does not incur Karmic  
bondage without absolute ne-  
cessity कप्प० ६, ५४,

अष्टार. त्रि० ( अष्टादशन् ) आठ+दस, अष्टार  
अठारह Eighteen. पक्ष० ४;

अष्टारस. त्रि० ( अष्टादशन् ) अष्टार,  
१८ नी संख्या अठारह की संख्या Eight-  
een “ पढमे छम्मासे अस्थि अष्टारस  
१७

सुहुत्ता राई” सू० प० १, नाया० १, ५; १८;  
नंदी० ४५, ठा० ३, १; ओव० ४१, पक्ष०  
२, ४, भग० ५, १; ८, ७, ६; १०; ८, ८, ११,  
११, २४, २१; २३, जं० प० १, १६, सम० १८;  
—कोडाकोडि स्त्री० (—कोटिकोटि )  
अठार कोडाकोड ( करोड गुणित करोड ).  
अठारह कोडाकोड 18 Kodākoda, i e.  
18 x crore x crore क० प० १, ६४;  
—ट्टाण न० (—स्थान) संयममां अरति-भेये-  
नी पामेल साधुये संयममां मनने स्थिर करवा  
माटे उच्च अने दृढ भाव उत्पन्न करवाने विया-  
रवाना वियारणीय १८ स्थान, वैराग्य भावना  
१८ वियारस्थान संयम मे वैचैनी उत्पन्न होने  
पर संयम मे मन स्थिर करने के लिये, उच्च  
और दृढ भाव उत्पन्न करने के लिये, साधु के  
विचारने योग्य १८ स्थान, वैराग्यभावना के  
१८ विचारस्थान the eighteen  
points of high meditation by  
which a Sādhu steadies himself  
when he feels-disturbed in the  
practice of self-restraint, the  
eighteen points of renuncia-  
tion “समयेण भगवया महावीरेण अष्टा-  
रसट्टाया पन्नत्ता, तण्हा-वयच्छकं कायच्छकं,  
अकप्पो गिहि भाययं । पलियकनिसिज्जा य,  
सिणायं सोभवज्जण ” सम० १८,—देशी-  
भासा स्त्री० (—देशीभाषा ) १८ देशनी  
भाषा अठारह देशों की भाषा language  
of eighteen countries नाया०  
६,—पावट्टाण न० (—पापस्थान ) प्राणा-  
तिपात आदि अठार पापस्थान प्राणाति-  
पात आदि अठारह पापस्थान eighteen  
sources of sins or destroy-  
ing life ( Pānātipāta ) etc.  
“सव्व पाणाइवाय, अलियमदत्त च मेहुणं सव्वं  
सव्व परिगाहं तह, राहभत्तं च घोमिरिमोऽ

सर्वं कोहं माणं, मायं लोभं च राग दोषे  
य । कलहं अभक्खाणं, पेसुमं परपरिचायं ॥  
मायामोसं मिच्छादंसणसहं तहेव वोसिरिमो ।  
अंतिमज्जासम्मि य, देहंपि जिणाइपण-  
क्खं” प्रव० ५४,—मुहुत्त. न० (—मुहूर्त )  
अट्ठार मुहुर्त, ३६ घडी. अट्ठारह मुहूर्त,  
३६ घड़ियाँ eighteen Muhūrtas of  
time equal to 36 Ghadīs. भग०  
५, १; जं० प० ७, १३४,—चंजण. न०  
(—व्यञ्जन) लोन्ननी अट्ठारमी जत; जेभां  
अट्ठारमु व्यञ्जन-शाक छे येवुं लोन्न भोजन की  
१८ वीं जाति; जिसमें १८ वीं व्यञ्जन-शाक होता  
है food containing vegetables,  
the eighteenth variety of food.  
“सूओदणो जवणं, तिण्णि य मंसाइ गोरसो  
जूसो । भक्खा गुल्लावणिआ, मूलफला  
हारियगंडागो ॥ होइ रसालू य तहा, पाण  
पाणीय पाणग येव । अट्ठारसमो सागो  
शिरुवहओ लोइओ पिंदो ॥” चं० प० २०;  
—सीलंगसहस्स न० (—शीलाङ्गसहस्र )  
अट्ठार ण्णर शीलना लेह-प्रकार शील के  
अट्ठारह हजार भेद eighteen thousand  
varieties of the qualities  
of right conduct पंचा० १४, २३;  
—सेणि स्त्री० (—श्रेणि ) प्रभना १८  
वर्ग; अट्ठार वर्ण; नव नारू अने नव  
डारू भली १८ वर्ण नौ नार और नौ कार  
मिलकर १८ वर्ण; जैसे कुम्हार सुनार आदि  
१८ प्रकार के कारीगर eighteen  
classes of artisans & craftsmen,  
e. g. goldsmiths etc “ कुंमार  
पट्टइहा, सुवणकारा य सूचकारा य । गंधवा  
कासवगा, मात्ताकारा य कज्जकरा ॥ तंघोलिआ  
य ण्ण, नवप्पयारा य गारुआ भणिया ।  
अहण्ण णवप्पयारे, कारुअवण्णे पवक्खामि ॥  
चम्म परजत्तपीलगगंछियद्धिपय कंसकारा य ।

सीवगगुआरभिक्खा, धोवण वयणाइ अट्ठदस ॥

“ तण्णं ताओ अट्ठारससेणिप्पसेणिओ  
भरहेणं रआ एवंवुत्ता समाणीओ हट्ठाओ ”  
जं० प० ३, नाया० ८,

अट्ठारसम. त्रि० ( अष्टादशतम ) १८ भुं;  
अट्ठारमु अट्ठारहवों Eighteenth. नाया०  
१८, भग० २०, ५; ( २ ) आठ उपवास भेगा  
करवा ते, १७ टंक-व्यपत उल्लंघने १८ भे  
टंक आठार लेवे ते. लगातार आठ उपवास  
करना; भोजन के १७ टंकों ( वस्तुओं ) में भोजन  
न कर १८ वें टंक में भोजन करना eight  
continuous fasts; continuous  
omission of seventeen meals.  
वव० ६, ४१; ४२; भग० २, १;  
नाया० १; ८;

अट्ठारसय न० ( अष्टादशशत ) अष्ट सो अने  
अट्ठार एक सौ अट्ठारह One hundred  
and eighteen, 118. क० गं०  
३, २२;

अट्ठारसविध त्रि० ( अष्टादशविध ) अट्ठार  
प्रकारनु. अट्ठारह तरह का. Of eighteen  
kinds or sorts. आव० ४, ७,

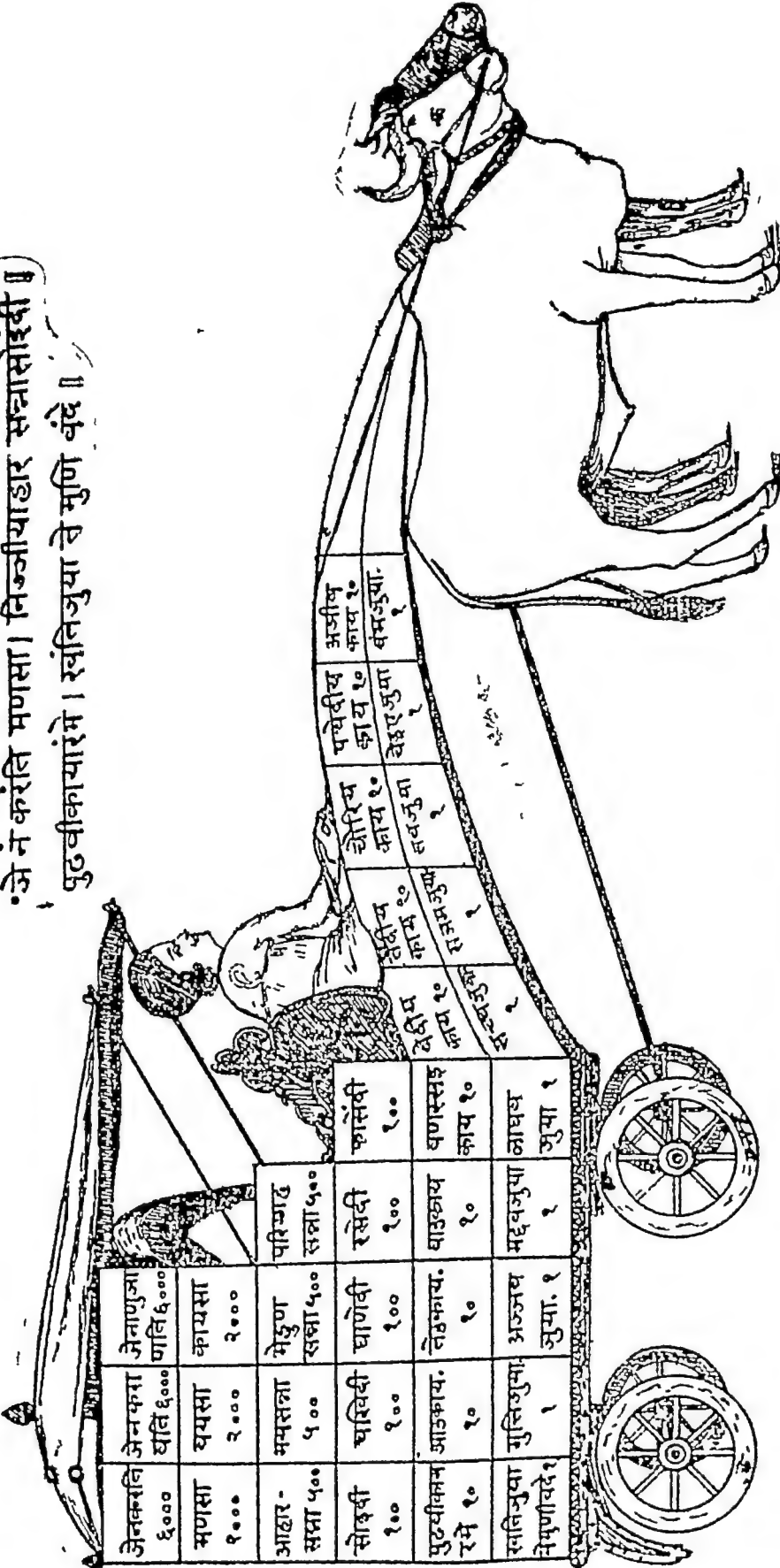
अट्ठालोभि. त्रि० ( अर्थालोभिन्-अर्थे द्रव्ये  
आ समन्तालोभो विद्यते यस्य सः ) द्रव्यतो  
लोभी-लालस्यु द्रव्य का लोभी; लालची.  
Avaricious; covetous of money.  
“ संजोगट्ठी अट्ठालोभी ” आया० १, २,  
१, ६२;

अट्ठावण स्त्री० ( अष्टपञ्चाशत् ) अष्टावन्;  
५८ नी संख्या ५८ की संख्या Fifty-  
eight “ पढमदोषपंचमासु तिसु पुढवीसु  
अट्ठावणं शिरयावाससहस्सा ” सम० ५८;  
क० गं० २, ८, जं० प० ४, ८६;

अट्ठावय पुं० न० ( अष्टापद ) धूत क्रीडा; जुगार.  
जुआ Gambling “ अट्ठावयं ण सिक्खि-  
ज्जा ” सूय० १, ६, १७. नाया० १; ( २ )



जे नं करति मणसा । निज्जीयाहार सन्नासोद्वी ॥  
पुढवीकायारंभे । स्वन्तिजुया ते मुणि वंदे ॥



अद्वारससीलंगसह



योपट; शतरंजनी रमत चौपड़, सतरंज का खेल the game of chess, a kind of gambling play. सूय० १, ६, १७; दस० ३, ४; नाया० १, (३) शतरंज रमवानी कला; ७२ कलाओं में से १३ वीं कला the art of playing the game of chess; thirteenth of the seventy-two arts ओव० ४०, (४) जुगारनु योपट, शतरंज वगेरेने पट जुआ का तख्ता, चौपड़ व सतरंज का पट a gambling board, a chess-board etc. जं० प० २, २०, (५) जेना उपर ऋषभदेवस्वामी निर्वाण पद पाया ते पर्वत, अष्टापद नामे पर्वत जिस पर्वत पर से ऋषभदेवस्वामी ने निर्वाण प्राप्त किया था, उस पर्वत का नाम-अष्टापद a mountain called Astāpada where Rishabhadeva Svāmī obtained liberation पंचा० १६, १७, प्रव० ३६४; (६) अष्टापद नामेनो द्वीप अष्टापद नाम का द्वीप an island called Astāpada जीवा० ३, ३,—सिहर न० (—शिखर) अष्टापद पर्वतनु शिखर अष्टापद पर्वत का शिखर a summit of mount Astāpada कप्प० ७, २२७,—सेल पुं० (—शैल) अष्टापद नामेनो पर्वत अष्टापद नाम का पर्वत the mountain named Astāpada कप्प० ७, २२७,

अष्टावय. न० (अर्थपद) अर्थशास्त्र, धन धान्यादि उपार्जन करवानु शास्त्र अर्थशास्त्र, सम्पत्तिशास्त्र. Economics, political economy. सूय० १, ६, १७.

अष्टावीस. त्रि० (अष्टाविंश) बीस अने आठ; अष्टावीस अष्टावीस. Twenty-eight “ तिष्ठियकोसे अष्टावीस धनु-

सय” ज० प० २, २६; ७, १२६, भग० ३, १; ६, ३; १०, ५; २०, ५; २४, १; ३१, २८, ३२, २, ४१, ३, सु० च० १, ३६६, ओव० २६; पक्ष० २; ४, नाया० ८;

अष्टावीसह त्रि० (अष्टाविंशति) अष्टावीस; २८वीं संख्या अष्टावीस की संख्या Twenty-eight. विशेष ११६; पक्ष० १;

अष्टावीसहस्र. त्रि० (अष्टाविंशतितम) अष्टावीसभुं अष्टावीसवाँ. Twenty-eighth. (२) न० १३ उपवास भोगा करवा ते, २७ टंक उलंघने २८ मे टंक आहार लेवा ते १३ उपवास करना; २७ टंक उलंघकर २८ वें टंक में आहार लेना thirteen consecutive fasts; omission of twenty-seven continuous meals. नाया० १, भग० २, १;

अष्टासीह. त्रि० (अष्टाशीति) ८८; अष्टासी अष्टासी. Eighty-eight नाया० ८; भग० १०, ५, २४, १, १२; सम० ८८, वव० ६, ३८, जं० प० १, १२,

अष्टाह. न० (अष्टाह) आठ दिवसने समुदाय आठ दिनों का समूह. A period of eight days नाया० ८,

अष्टाहिस्र-य त्रि० (अष्टाहिक) निरंतर-लगोलग आठ दिवसनु एक साथ आठ दिनों का. Of continuous eight days. जं० प० नाया० ८,—महिमा स्त्री० (—महिमन्) आठ दिवसने महोत्सव; अष्टाह महोत्सव. आठ दिनों का महोत्सव. a festival of eight days नाया० ८;

अष्टि त्रि० (अर्थिन्) प्रयोजनवाला. प्रयोजन वाला, मतलबी. Having a purpose, intending पक्ष० २८, आया० १, ६, ४, १६२;

अष्टि. न० (अस्थिन्) हाड, हाड हड्डी A bone. “ अष्टीय अष्टीमिजाय ” आया०

१, १, ६, ५३; भग० १, ७; २, १, ५, ३, ४, ५, २, पि० नि० भा० ५०; नाया० १; २, सूय० २, १, १५, औव० ३१, राय० २२४; भत्त० १४२; कप्प० ४, ५१,—कच्छुभ-  
पुं० ( -कच्छप ) अहु-धल्लु ढाड्डांवाणे।  
आयणे। बहुतसी हड्डियों वाला कछुवा a  
tortoise having many bones तंडु०  
—कटिण त्रि० ( -कठिन-कठिनास्थिक-  
कठिनानि अस्थिकानि यत्र तत्तथा ) ढंल्लु  
ढाड्डाणे। कठिन-मज्जवूत हाड वाला hav-  
ing hard, strong bones “अट्टिय-  
कट्टियो सिरणहारुबंधणे ” तंडु०—चम्म-  
सिरत्ता स्त्री० ( -चर्मशिरावत्ता-अस्थीनि  
च चर्म च शिराश्च स्नायवो विद्यन्ते यस्य स  
तथा तज्जावस्तत्ता ) शरीरमां मात्र ढाड्डा,  
आमडी अने स्नायुनुं अस्तित्व, मांस अने  
लोहि विना ढाड्डा, आमडी अने स्नायुनुं रહેवु  
शरीर में केवल हड्डी, चर्म और स्नायुओं का  
अस्तित्व होना, मांस और रक्त के सिवाय हड्डी,  
चर्म और स्नायु का रहना condition  
of being a mere skeleton  
containing nothing but  
bones, skin and sinews, total  
emaciation “अट्टिचम्मसिरत्ताए पण्णा-  
यंति णो चैव णं मंससोणियत्ताए धयं  
अण्णारं” अणुत्त० २,—चम्मावणुत्त त्रि०  
( -चर्मावचन ) अत्यंत कृश-दुर्बल, जेना  
शरीरमा मांस मुकाई न्वाथी आमडी ढाड्डांने  
वण्णगी रही होय ते अत्यन्त कृश, दुर्बल,  
जिसके शरीर का मांस सूख गया हो और आस्थि-  
पंजर शेष हो very lean; with skin  
touching the bones, totally  
emaciated “अट्टिचम्मावणुत्त किडिक्किडि-  
भूए किले धमणिसत्तए यावि होत्था ” भग०  
२, १;—जुद्ध. न० ( -युद्ध ) ढाड्डाथी- ढाड्डा-  
डाना हथियारथी ओडणीजने प्रहार डरना ते

हड्डी से-हड्डियों के शस्त्रों से एक दूसरे पर प्रहार  
करना fighting with weapons  
made of bones नाया० १,—जम्मा.  
न० ( -ध्याम ) अणेनुं-डाणुं पडेनुं ढाड्डुं जली  
हुई-काली पड़ी हुई हड्डी. a bone burnt  
black भग० ५, २,—धंभ पुं० ( -स्तम्भ )  
ढाड्डांने थावले, डे जेनी उपमा अपचक्खाणा-  
णावरणीयना मानने आपवामां आवी छे.  
हड्डियों का स्तम्भ, जिसकी उपमा अपचक्खाणा-  
वरणीय के मान को दी गई है a pillar of  
bones to which the variety of  
pride called Apachchakhāṇā-  
vaṇiṇi is compared “चत्तारि  
थमा पञ्चत्ता, तंजहा सेलथमे अट्टियंभे दास्यंभे  
तिणिसत्तयाधंभे ” ठा० ४, २;—दाम न०  
( -दामन् ) ढाड्डांनी भाणा हड्डियों की माला.  
a garland of bones तंडु०—धम-  
णिसंताणसंतय त्रि० ( -धमनिसन्ता-  
नसन्तत ) ढाड्डा अने नसेथी व्याप्त; नसा-  
नगथी व्याप्त; शरीरे दुर्बल हड्डियों और  
नसों से भरा हुआ; नसों के जाल से व्याप्त;  
दुर्बल शरीरवाला very lean, reduced  
to bones and veins “अट्टिधमणिस-  
ताणसंतय सग्वाओ समंता परिसमंत च ”  
तंडु०—भंजण न० ( -भजन ) शरीर-  
दंड, डरेड्डु ढाड्डुं रीढ़ की हड्डी the  
spinal cord. परह० १;—मिजा स्त्री०  
( -मज्जा ) ढाड्डांने भावे; जेमाथी देत-  
वीर्य छिपन थाय छे ते हड्डियों का गूदा, जिस-  
में से वीर्य उत्पन्न होता है वह marrow of  
the bones of which the vital-  
fluid is formed ( २ ) ढाड्डांनी यरणी,  
ढाड्डांनु तत्त्व-सार हड्डियों का गूदा, हड्डियों  
का सार marrow of the bones.  
सूय० २, २, ६, २, ७, ३; ठा० ४, २;  
आया० १, १, ६, ५३; भग० १, ७, ३, ४,

—मिजापेमाणुरागरत्त. त्रि० (—मज्जाप्रे-  
मानुरागरक्त—अस्थिमज्जा. प्रेमाणुरागेण सा-  
र्वज्ञप्रवचनप्रीतिरूपकुसम्भादिरागेण रक्ता इव  
रक्ता येषां ते तथा ) जेनी हाडेहाडनी  
मिन्नमां प्रवचन धर्मनो रंग लागेलो होय ते;  
जेनु अंतःकरण दृढ श्रद्धा थी लावित थयेजुं होय  
ते जिसकी हड्डी हड्डी में—रंग रंग में धर्म का रंग  
भरा हो; जिसका अन्तःकरण दृढ श्रद्धा से युक्त  
हो. imbued with religious feeling  
to the marrow. “अभिगहियट्टे अट्ठिमि-  
जापेमाणुरागरत्ते ” सूय० २, ७, ६६; भग०  
२, ५; नाया० १;—रासि पुं० (—राशि )  
हाड्डानो ढगलो. हड्डियों का ढेर. a heap  
of bones. नाया० ६; आया० २, १, १, १;  
—सुहा. स्त्री० ( × —सुखा—सुख ) हाड्डाने  
मुण्डारी—यंपी; शरीर या शरीरना अवयव  
यंपाववा—दयाववा ते. शरीर के अवयवों को  
दवाना. shampooing etc. pleasing  
to the bones. विवा० ६; नाया० १;  
कप्प० ४, ६१;

अदिठअ. न० (अस्थिक) गोदली; इलनाहणीया  
वगेरे. गुठली. The stone of a fruit  
दसा० ६, ४; दस० ५, १, ८४;

अदिठअगाम. पुं० ( अस्थिकग्राम ) वेगवती  
नदीने डाठे आवेजुं वर्द्धमानपुर नामनु ग्राम,  
जेनुं प्रथम नाम वर्द्धमान હતુ પણ એક વણ-  
જારનો બળદ નદીમાં થાકતાં તેના ધણીએ  
તેની સારવારને માટે વર્द्धमानपुरના મહાજન-  
ને અમુક રકમ આપી તે આલ્યો ગયો  
મહાજને બરાબર સંભાળ ન લીધી તેથી  
દુઃખી થતો પણ મરણ સમયે સારી લેશ્યા આ-  
વ્યાથી તે મરી શૂલપાણિ નામે યક્ષ થયો ગામ  
અને મહાજન ઉપર કોપાયમાન થવાથી  
મહામારી રોગ મૂક્યો. તેમાં એટલા માણસો  
મર્યા કે હાડકાના ઢગલાના ઢગલા થયા. ત્યારથી  
તેનું ‘અદિઠઅગામ’ નામ પડ્યું. આખરે ગામ

બહાર શૂલપાણિ યક્ષનું મંદિર સ્થાપવાથી  
શાંતિ થઈ. જે મંદિરમાં મહાવીરસ્વામી  
એક રાત રહ્યા હતા અને શૂલપાણિ યક્ષે મહા-  
વીર સ્વામિને પરિપક્વ આપ્યો હતો. વેગવતી  
નદી કે કિનારે બસા હુઆ વર્द्धमानपुर ગ્રામ;  
जिसका पहिला नाम वर्द्धमान था. परन्तु  
एक वनजारे का बैल नदी में थक जाने से जब  
वह बिल्कुल आगे न बढ़ सका, तब वनजारे ने  
उसकी सार संभाल के लिये वर्द्धमानपुर के  
महाजन को कुछ रकम दी और वह वहाँ से  
चला गया. परन्तु महाजन ने उसकी देख रेख  
न की, इससे वह बहुत दुःखी हुआ. अन्त  
में मरते समय शुभ लेश्यारूप परिणाम होने  
से वह मरकर शूलपाणि नामक यक्ष हुआ,  
और उस ग्राम व महाजन पर कुपित होकर, उसने  
महामारी फैलाई, उससे इतने आदमी मरे कि,  
ग्राम में हड्डियों के ढेर हो गये तबसे उसका  
नाम “अदिठअगाम” पड़ गया. आखिर जब गाँव  
बाहिर शूलपाणि यक्ष का मंदिर बनवाया गया  
तब महामारी शांत हुई. इसी मन्दिर में  
महावीरस्वामी एक रात भर रहे थे और शूल-  
पाणि ने उन्हें कष्ट दिया था. (Lit a] heap  
of bones) A city on the Vega-  
vati river, once called Var-  
dhamānapura but afterwards  
styled Atthiagāma, on account  
of the following incident. A  
bullock of an itinerant mer-  
chant crossing the river, got  
fatigued The merchant leav-  
ing some money with the  
Mahājanas of the city for its  
treatment, passed on. The Mah-  
ājanas neglected the bullock  
and it died and was reborn  
as a Yakṣa named Śūlapāṇi.

Enraged at the citizens he spread plague in the city which carried off thousands whose bones formed a great heap, thenceforward this city came to be called Atthiagāma. At last a temple was built in the name of Sūlapāṇi, outside the city, and the plague subsided in the town. In this temple Mahāvīra Svāmī put up for a night Sūlapāṇi gave him much trouble कण्ण० ५, १२१,

अदिठअण्ण त्रि० (अस्थितात्मन्) जेने आत्मा अस्थिर छे जेवे अस्थिर आत्मा वाला Of unsteady soul दस० २, ६;

अदिठग. न० (अस्थिक) ङाडकुं, ङाड हड्डी. A bone परह० १, ३, ( २ ) वर्धमानपुर नगर, अट्ठीअगाम वर्धमानपुर, अट्ठीअगाम a city named Vardhamānapura. भग० १५, १;

अदिठय. न० (अस्थिक) लुओ “अट्ठिग” श०६ देखो “अट्ठिग” शब्द Vide ‘अट्ठिग’. भग० ६, ३३,—कट्टुडिठय त्रि० (—काष्ठोत्थित—अस्थिकान्येव काष्ठानि काठिन्यसाधर्म्यात् तेभ्यो यदुत्थितं तत्तथा ) ङडिन् ङाडनु अनेख शरीर, मज्जुत ङाडनु मज्जुत हड्डियों से बना हुआ शरीर having strong bones, a body made up of hard bones भग० ६, ३३;

अदिठय. न० (आर्थिक-अर्थ्यत इत्यर्थो मोक्षः स प्रयोजनमस्येत्यार्थिकम्) मोक्ष साधक मोक्ष की साधना करने वाला ( One ) endeavouring after final bliss . “पसन्ना लाभइस्सन्ति, विडलं अट्ठियं सुयं” उत्त० १, ४६ ( २ ) त्रि० धम्मिअ करनार

इच्छा करने वाला. wishing. सूय० १, २, ३, १५;

अदिठय. त्रि० (अर्थित) धम्मिअ. इच्छित Wished, desired; longed for. \* उत्त० १, ४६;

अदिठय. त्रि० (अस्थित) स्थिर न रहेल. स्थिर न रहा हुआ. Unsteady; not firm. परह० १, ३; भग० २५, २,

अट्ठियअ. त्रि० (अस्थितक) अनियमित; अनवस्थित, अनियमित. Irregular, unsteady. प्रव० ६६३;

अदिठयकण्ण पुं० (अस्थितकण्ण) अनवस्थित ङट्प,—आचार मर्यादा, वस्त्रेना आवीस तीर्थ-ङरेना साधुओनो आचार, ङे जे ओङ सरभा शास्त्रीय नियमनी मर्यादाथी आधवाभां नथी आव्यो अर्थात् ते साधुओ महिनाथी वधारे पणु रहेवुं होय तो रहे; पडिकमणु अतिआर न लाग्या होय तो न पणु ङरे, राजपिंड पणु ह्ये, वस्त्र रगीन भजे तो ते पणु वापरे, ओङने उद्देशी आहार क्यो होय ते भीन लघु शङे वगेरे आचार ओङ सरभो नहि माटे तेओनो अनवस्थित ङट्प अनवस्थित आचार, बीच के बावीस तीर्थकरो के साधुओं का आचार, जो शास्त्रीय नियमों से मर्यादित नहीं था अर्थात् एक मास से अधिक कहीं रहना हो तो वे साधु रहते थे, अतिचार न लगा हो तो पडिकमण भी नहीं करते थे, राजपिंड भी ले लेते थे और मिलने पर रगीन वस्त्र भी पहिनते थे. साराश यह कि, समान और नियमित आचरण नहीं था इस लिये वह अनवस्थित कल्प कहलाता था. Unsettled rules of conduct; the conduct of the Sādhus of the intermediate 22 Tirthankaras This conduct was not bound down by hard and fast rules of Śāstras, e g they

could stay at the same place for more than a month, they did not perform Padikamaṇa if they had not incurred any faults, they could accept food from a king, they could put on coloured garments if they got them and they could accept the food meant for other Sādhus. This kind of conduct (Āchāra) is called Anavasthitakalpa. भग० २५, ६; ७,

अद्वियगाम. पुं० ( अस्थिकग्राम ) वर्धमानपुर शहेरतुं अपरनाम, डे ज्या शूलपाणि यक्षतुं स्थान हुतुं. वर्धमानपुर का दूसरा नाम, जिस शहर में शूलपाणि यक्ष का स्थान था Another name of the city of Vardhamānapura, where there was an abode of the Yakṣa called Śūlapāni कप्प० ५, १२१; अद्विल्लअ पुं० ( अस्थिक ) डपासीया; डपासतु प्ली०. बिनोला. Cotton-seed पिं० निं० ६०३;

अठायमाण व० कृ० त्रि० ( अतिष्ठत् ) न उभो रहेतो. न खड़ा होता हुआ. Not remaining in a standing posture पंचा० १६, १३;

✓ अड. धा० I. ( अट् ) लभतुं; इत्तुं अमण करना, घूमना. To wander अडइ भग० २, ५, पिं०. निं० २१७; अडंति. परह० १, १; अडंत व० कृ० पिं० निं० १६४, अडमाण व० कृ० नाया० १४, १६; १६ भग० २, ५; ७, १०; १५, १, विवा० १, अडित्तपु. हे० कृ० भग० २, ५; अडेत्ता सं० कृ० भग० ३, १;

अड पुं० ( अट् ) रोमरायनी पाप्मवाणा पा- रेवा अडला वगेरे. कवूतर के पंख समान पख वाला पक्षी विशेष गौरैया वगैरह. A bird, such as dove, sparrow etc. जीवा० १;

अड. त्रि० ( अष्ट ) आठनी संख्या; ८. आठ, ८ Eight, 8 क० गं० ३, २०, ४, २५,—तीस. त्रि० ( -त्रिंशत् ) आठतीस; ३८. अडतीस, ३८. thirty-eight; ३८. क० गं० २, २७;—नडइ स्त्री० ( -नवति ) अडालुं; ६८. अठानवें; ६८. ninety-eight; ९८. प्रव० ३६६,—वन्न. त्रि० ( -पञ्चाशत् ) अडालन; ५८. अठान, ५८. fifty-eight, ५८. क० गं० १, २; २, ६; प्रव० ३७२,—वीस. त्रि० ( -विंशति ) अडालीश; २८. 'अट्टईस; २८. twenty-eight; २८. क० गं० १, ३१;—सडि स्त्री० ( -षष्टि ) अडसड; ६८ नी संख्या. अडसठ, ६८ की संख्या sixty-eight "विमलस्स रां अरहओ अडसट्ठी समणसाहस्सीओ" सम० ६८,

अडई स्त्री० ( अटवी ) अटवी, जंगल जंगल; वन. A forest, a jungle. सु० च० ८; १३६;

अडडम् त्रि० ( अदाह्य ) अग्निधी पाणी श- क्षय नहि तेषु जो अग्नि से न जल सके. In- capable of being burnt ठा० ३, २; भग० २०, ५, पंचा० १४, ३४;

अडड. न० ( अट्ट ) ८४ लाख अडडंग प्रमाण शालविशेष ८४ लाख अडडंग प्रमाण काल A period of time measuring eighty-four lacs of Adadāngas "चउरासीइं अडडंगसयसहस्साइं से पुणे अडडे" अणुजो० ११६, भग० ५, १; ६, ७, २५, ५, ठा० २, ४; जीवा० ३, ४, जं० ५० २, १८,—अंग न० ( -अङ्ग ) ८४ लाख तुष्टि



प्रमाण्यु द्वाविशेष ८४ लाख चुटित प्रमाण  
काल a period of time measur-  
ing eighty-four lacs of Trutitas  
भग० ५, १, २५, ५, ठा० २, ४, अणुजो०  
११६;

अडण न० ( अटन ) अटन डरपुं, २५५पुं; ६२-  
पुं. भटकना, फिरना Wandering  
ठा० ६,

\*अडपत्तारण न० ( लाटदेशे स्वमामख्यातेऽन्यत्र  
च थिक्कित्तिप्रसिद्धे वाहनभेदे ) वाहन  
विशेष एक तरह की सवारी A kind of  
vehicle. जीवा० ३,

अडयाल त्रि० ( अष्टयत्वारिंशत् ) ४८, अड-  
तालीस अडतालीस Forty-eight क०  
ग० २, १५, ६, २७, प्रव० १७, ३७२,  
भग० ३, ७; पञ्च० २, ज० प०—सय न०  
(—शत) अडतालीस अधिक सो, ओक सो अने  
अडतालीस एक सौ अडतालीस; १४८ one  
hundred and forty-eight, 148.  
क० ग० २, २५;

\*अडयाल पुं० ( प्रशंसायाम् ) प्रशंसा; कीर्ति,  
वभाणु प्रशंसा, तारीफ, कीर्ति Fame,  
praise पञ्च० २, ज० प० १, ११,

अडयालीस त्रि० ( अष्टयत्वारिंशत् ) अडता-  
लीस, ४८ नी संख्या अडतालीस की संख्या  
Forty-eight “धम्मस्स यं अरहन्तो अड-  
यालीसं गणा” सम० ४८, भग० ५, ८, ६,  
७, २४, १२, १८, अणुजो० १२३, ज० प०  
२, १२,

अडवि स्त्री० ( अटवी ) जंगल, अटवी जंगल,  
वन. A forest ठा० ५, २;—जत्ता  
स्त्री० (—यात्रा ) अटवी-जंगलनी मुसाफ़री  
वनयात्रा, जंगल की मुसाफ़री. travel in  
a forest निसी० १६, ११,—संसिय.  
त्रि० (—संश्रित ) अटवीने आश्रिते रहेल.

वनवासी, जंगल में रहने वाला. residing  
in a forest. विवा० ३,

अडवी. स्त्री० ( अटवी ) जंगल, अटवी जंगल;  
वन A forest नाया० १५, १८, १६, भग०  
१५, १; ओव० ३६, ज० प० १, १०, परह०  
१, १; सु० च० ७, २३६, विशेष० १२११, राय०  
२६२,—जम्मण. न० (—जन्मन् ) अटवी-  
जंगलमां जन्म थाय ते, जंगलप्रसूतिपुं दु ञ  
वन में जन्म होना, जंगल में प्रसूति होने का  
दु ख birth in a forest, pain of  
child-birth in a forest परह० १,  
१,—वास पुं० (—वास ) जंगलमा. वसपुं  
ते, अटवीनिवास वनवास जंगल में वसना.  
residence in a forest. “ उन्विग्ग-  
अप्पया असरणा अडवीवासं उवेत्ति ” परह०  
१, ३,

अडित्त.पुं० ( अटित्त-चर्मचट्टी ) आमडानी पांछ-  
वाणे ओक पक्षी, यमगीदड़ चमड़े के पखों वाला  
एक पक्षी, चमगीदड़. A kind of a bird  
having wings of leather पञ्च० १;

अडोविय. त्रि० ( आटोपित ) भरल भराहुआ.  
Full परह० १, ३,

\*अडुवियडु त्रि० ( इतस्तत् ) आम तेम,  
आधु पाछु, कम विनानु ह्धर उधर, आगे  
पीछे, क्रम रहित Confused, disorder-  
ed, at sixes and sevens प्रव०  
७५४,

अड्ढ त्रि० ( आढ्य ) धन धान्यादि थी परिपूर्ण  
समृद्धिवान् धनधान्यादि से युक्त, समृद्धि-  
वान् Rich, wealthy नाया० १, ३; ५,  
७, १३, १४, १५, १६, भग० २, १, ५;  
३, १; ६, ३३, १५, १, २५, ७, राय० २८६;  
—इज्जा स्त्री० (—इज्जा-आढ्य क्रियमाये-  
ज्जा आढ्येज्जा ) धनाढ्य पुरुषे डरेल सत्कार,  
सुणविशेष. धनाढ्य पुरुष के द्वारा किया हुआ



सत्कार, सुखविरोध. respect shown by a rich man ठ० १०,

अद्भुत. न० (अर्द्ध) अर्ध, अर्ध, अर्ध, अर्ध भाग आधा, आधा हिस्सा A half, half. नंदी० स्थ० ३३,—अपक्रान्ति. त्री० (—अपक्रान्ति-अर्द्धस्यासमग्ररूपस्य एकदेशस्य वा एकादिपदात्मकस्यापक्रमणमवस्थापनं शेषस्य तु द्वयादिपदसंघातरूपस्य एकदेशस्योर्ध्वगमनं यस्यां रचनायां सा) ऋतुप्रमाणे ऋतु, मध्यम अने उत्कृष्ट तपस्याना परिमाणमा वध घट करवी ते, ऋतु, १ मध्यम २ अने उत्कृष्ट ३ उपवासमाथी ओं देश ओं ले प्रथम ऋतु पदो त्याग करवो ते, दाम्पत्य तरीके ग्रीष्म ऋतुमा ऋतु, १ मध्यम २ अने उत्कृष्ट ३ उपवास करवा, त्याग पछी शिशिर ऋतुमा ऋतु, २ मध्यम ३ उत्कृष्ट ४ उपवास करवा, वर्षा ऋतुमा पक्ष अम समग्रुं ऋतु के अनुसार जघन्य, मध्यम और उत्कृष्ट तपस्या के परिमाण में न्यूनाधिकता करना, जघन्य, मध्यम और उत्कृष्ट उपवास में से एक देश अर्थात् प्रथम जघन्य पद का त्याग करना. उदाहरणार्थ—ग्रीष्म ऋतु में जघन्य, १ मध्यम २ और उत्कृष्ट ३ उपवास करना, शिशिर ऋतु में जघन्य, २ मध्यम ३ और उत्कृष्ट ४ उपवास करना, वर्षा ऋतु में भी इसी क्रम से समझना चाहिये. progressive and regressive regulation of the three kinds of penance viz lowest, middle, and highest according to season, e g if two fasts are middle in summer, they become lowest in winter. विशेष० १२७२,—उरुग पु० (—उरुग-अर्द्ध-मुक्तादिभजतात्पर्योऽरुः) ३३ अने साधन उपर वीटवानु साधनी ओं उपगच्छ, ३ ओं मक्षनी अदी ओं, अथवा नंदी पदनी

उपर ३३ने वीटी लई साधन उपर दशमी अंघाय छे साधनी के पहिने का एक वस्त्र, जो कमर और घुटनों के ऊपर के भाग पर लपेटा जाकर अवग्रहानन्तक पट के ऊपर कटों से बांधा जाता है a garment worn by female ascetics round the waist and the thigh प्र० ५३७;—कृष्ण. न० (—क्षेत्र) ओं अहोरात्र परिमित क्षेत्र पर्यंत यंदनी साथे जोग जेउना नक्षत्र; उत्तराभाद्रपद, उत्तराश्लेषा, उत्तराषाढा, रोहिणी, पुनर्वसु अने विशाखा ओं नक्षत्र. एक अहोरात्र तक चन्द्र के साथ सम्बन्ध रखने वाला नक्षत्रसमूह; उत्तराभाद्रपद, उत्तराश्लेषा, उत्तराषाढा, रोहिणी, पुनर्वसु और विशाखा ये छः नक्षत्र. a constellation remaining in conjunction with the moon for a day and a night These constellations are, Uttarābhādra pada, Uttarāshlāṅgūnī, Uttarāṣādhā, Rohinī, Punarvasu and Viśākhā सू० ५० १०,—भरत. पु० (—भरत) भरतक्षेत्रने अर्ध भाग भरत क्षेत्र का आधा भाग one half of Bharata Ksetra कृष्ण० १, २;—रत्न. पु० (—रात्र) मध्य रात; अर्ध रात. मध्य रात्रि; आधी रात dead of night, midnight ओव० नि० ६६२,

अद्भुतचिन्ता त्रि० (आद्यक) संपत्तिथी लक्ष्य. सम्पत्ति से भरा हुआ. Wealthy; full of wealth; replete with wealth. पचा० १२, १४,

अद्भुतचिन्ता त्रि० (अर्द्धतृतीय-अर्द्ध तृतीय यत्र तत्) अर्द्ध, ओं अने अर्द्ध अर्द्ध. Two and a half. पचा० १३ १८, राय० १०४; जीवा० ३, १ अथवा १३४, भग० २, ८, ६, ३१;

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥





१४, ६, २४, २०, विवा० १, निसी० २०, ३६, दसा० ५, २३; विशेष० ६६३; ओष० नि० ७२३; प्रव० ४०६, आव० ४, ८, जं० ५० १, १४;—दीव पुं० (—द्वीप ) अढी द्वीप; जम्बूद्वीप, धातकीपुंड्रद्वीप अने पुष्करद्वीपने अर्द्धभाग—अर्द्धपुष्करद्वीप એમ બે અને અર્द्ध—अढी द्वीप; पिस्ताणीस લાખ જોગનના વિસ્તારમાં છે, એમાંજ મનુષ્યની વસતિ છે, એટલે તે મનુષ્યક્ષેત્ર કહેવાય છે. અઢાઈ દ્વીપ, जंबूद्वीप, धातकीखंड द्वीप और आवा पुष्कर द्वीप इन अढाई द्वीपों का विस्तार ४५ लाख योजन है, इसी क्षेत्र में मनुष्य रहते हैं, अत इन अढाई द्वीपों को मनुष्यक्षेत्र भी कहते हैं. two continents and a half, viz Jambū-Dvīpa, Dhātakī-Dvīpa and half of the Puskara Dvīpa, their extent is forty-five lacs of Yojanas Human beings live only in these and therefore they are called Manusyaksetra मग० ६, ३३,

✓ अण. धा० I ( अण ) प्राण धारणुं कर्वा, गति कर्वा. प्राण धारण करना, गति करना To breathe, to move.

अणइ विशेष० ३४४१,

अण. त्रि० ( अनन्त ) अनन्तानुबन्धिनु हुंहुं नाम अनन्तानुबन्धी का छोटा नाम An abbreviation of Anantānubandhī क० गं० १, १७, २, ५, १४, ५, ५७, —पगतीस त्रि० (—एकत्रिंशत् ) अनन्तानुबन्धी आदि ३१ प्रकृतियां अनन्तानुबन्धी आदि ३१ प्रकृतियां. thirty-one Prakritis ( Karmic natures ) such as Anantānubandhī etc क० गं० ३, ६, —चउवीस त्रि० (—चतुर्विंशति ) अनन्तानुबन्धी आदि चोवीस प्रकृति अनन्तानु-

बन्धी आदि २४ प्रकृतियां twenty-four Prakritis ( Karmic natures ) such as Anantānubandhī etc क० गं० ३, ८, १६,—छवीस त्रि० (—षट्त्रिंशति ) अनन्तानुबन्धी आदि छवीस प्रकृति अनन्तानुबन्धी आदि २६ प्रकृतियां. twenty-six Prakritis ( Karmic natures ) such as Anantānubandhī etc क० गं० ३, ५,

अण न० ( अण-अणति गच्छति तासु तासु चोनिषु जीवोऽनेनेति अणम् ) पाप पाप Sin. परह० १, १; ( २ ) क्रोधादि आर ३पाप क्रोधादि चार कषाय four passions viz anger etc “ अणदस नपुंसि-त्थिवेयल्लक्क च पुरिसवेय स ” विशेष० १२८४,

अण न० ( ऋण ) कर्ज, ऋण. कर्ज ऋण Debt नाया० १८, विशेष० १३१; परह० १, २,—अस सौ० (—आर्त्त) राजने ० कर्जदार, कर्जथी पीडातो राजा का ऋणी; ऋणपांडित. a debtor of a government, a debtor ठ० ३, ४,—कर पु० (—कर ) ऋण-पाप कर्नार, चोवीसमो गौण प्राणुतिपात ऋण-पाप करने वाला, चोवीसवा गौण हिंसा a sinner, a borrower, the twenty-fourth subordinate variety of Himsā परह० १, १; —धारग पु० (—धारक-ऋण व्यवहार देयं द्रव्यं तस्यो धारयति स ) कर्जदार, देणुदार ऋणी, देनदार a debtor विवा० ३, नाया० १७, १८,—बल पु० (—बल ) दीधेल पैशा पाण देवा-वमुद्ध कर्णानु जेमा यण-सत्ता છે તે દિયે દુણ કર્જ કો વગલ કરને કો સત્તા બાલા ( one ) able to recover the money lent. परह० १, २,—भंजग पु० (—भञ्ज ) २।

न आपे ते; ३२७ भांगे-न आपे ते;  
देवाणीये कर्जं न चुकाने वाला; दिवालिया.  
a bankrupt, an insolvent पञ्च०  
१; ३;

**अण्ड. अ० ( अनति )** अत्यंत नहि, अति-  
क्रमणो अभाव आधिक्य रहित; अत्यन्त  
रहित. अतिक्रमण का अभाव Absence  
of excess. तंडु०—वर त्रि० (—वर—न  
विद्यते अतिवरं यस्मात्तदनतिवरम् ) प्रधान;  
सर्वोत्तम; श्रेष्ठमां श्रेष्ठ. मुख्य; सर्वश्रेष्ठ,  
सर्वोत्तम. pre-eminent, of highest  
excellence. ओव०—विलंबितत्व.  
न० (—विलम्बितत्व ) सत्यवचनना ३५  
अतिशयमानो २८ मे अतिशय; विलंबे  
नहि ५७ अण्ड प्रवाहे ओलवुं ते. सत्यवचन  
के ३५ अतिशयों में से २८ वों अतिशय;  
रुकते हुए न बोलकर धाराप्रवाह से बोलना.  
the twenty-eighth of the  
thirty five Atisayas of truthful  
speech; speaking fluently  
without a break. राय०—संधाय  
न० (—सन्धान) अव्ययन; न छेतरु ते  
कपट न करना, वंचन न करना absence of  
deceit. “भियगाण्डसंधायं सासयवुद्धी य  
जयणा य” पंचा० ७, ६,

**अण्डकमण्डिज.** त्रि० ( अनतिक्रमणीय )  
जोभां व्यभिचार, अतिव्याप्ति आदि दोष न  
आवे तेवो न्याय ऐसा उत्तर जिसमें  
व्यभिचार, अतिव्याप्ति आदि दोष न हों.  
A reply free from logical  
fallacy “अण्डकमण्डिज्जाहं वागरणाह”  
भग० १५, १;

**अण्डवृत्तिय.** सं० कृ० अ० ( अनतिपत्य )  
न उद्धीने; अतिपात-हिसा न करीने न  
उल्लंघकर, बिना हिंस्र किये. Without  
having killed; without having

transgressed, “अण्डवृत्तियं सव्वेसिं  
पाणाणं” आया० १, ६, ५, १६४,

**अण्डवाणमाणा** व० कृ० त्रि० ( अनतिपातयत् )  
नहि मारतो, दु.अ नहि आपतो; प्राणुति-  
पात नहि करतो. न मारते हुए; दु.ख न देते  
हुए Giving no pain, not kill-  
ing. “अणवकंलमाणा अण्डवाणमाणा”  
आया० १, ७, ३, २०७, १, ६, ३,  
१८७;

**अण्डग.** न० ( अनङ्ग ) विषयसेवनना भुज्य  
अंग शिवायना अंग-स्तन, दुक्षि, भुज्य, छाती  
वगेरे विषयसेवन के मुख्य अंग के सिवाय  
अन्य अंग-स्तन, कुक्षि, मुख, छाती आदि.  
Parts of a body other than  
the sexual organ e g. breasts,  
arm-pit, face, chest etc. पंचा० १,  
१६; ( २ ) अनावटी लिग आदि कृत्रिम  
लिग आदि. an artificial sexual  
organ. ठा० ३, २, ( ३ ) विषय  
सेवन के हस्तकर्म आदिनी धृञ्छा विषय  
सेवन की या हस्तक्रिया आदि की इच्छा.  
desire for sexual intercourse,  
masturbation etc. प्रव० १०७६;  
( ४ ) पार अंगसूत्रथी आद्य-भिन्न.  
नारह अंगसूत्रों से बाह्य-भिन्न. not in-  
cluded in the twelve Anga-  
Sūtras. विशेष० ८४४,—कीडा. स्त्री०  
(—क्रीडा) अनेरे अगे क्रीडा-कामयेष्टा  
करवी ते, हस्तकर्म, दुग्धमर्दनादि दुयेष्टा  
करवी ते; आवधना योथा अणुव्रतने  
त्रीजे अतिचार. अनंगक्रीडा करना; हस्त  
मैथुन करना, कुचमर्दन आदि कुकृत्य; आवक  
के चौथे अणुव्रत का तीसरा अतिचार.  
third Atichāra of the fourth  
Anuvrata of Śrāvakas; amorous  
dalliance. प्रव० २७८; १०७६;

उवा० १, ४८, पंचा० १, १६;—पडिसे-  
विणी. स्त्री० (—प्रतिसेविनी ) अनेरे अगे  
विषयसेवन करनारी, परपुरुष साथे व्यभिचार  
सेवनारी. नियमित अंगों के सिवाय दूसरे अंगों  
से विषयसेवन करने वाली, परपुरुष के साथ  
व्यभिचार करने वाली. a woman of  
licentious character. ठा० ५, २;—  
पपचिदूठ न० (—प्रविष्ट) अंग-पुष्टारना सूत्रों,  
उववाच वगेरे सूत्रों अगवाह्य सूत्र—उववाच  
चौरह सूत्र Sūtras not included  
in the Angasūtras, e g. Uvavāi  
etc. नंदी०

अरण्यसेना स्त्री० (अनङ्गसेना) कृष्णवासुदेवना  
वधतमा द्वारकानी मुष्म गण्डिका-वेश्या  
कृष्णवासुदेव के समय की द्वारिका में रहने  
वाली मुख्य वेश्या The principal  
prostitute of Dvārikā in the  
time of Kṛṣṇavāsudeva अत०  
१, १; नाया० ५, निर० ५, १;

अणंत त्रि० (अनन्त) अंत-छेडा वगरनु,  
नि सीम, असंख्यातने पणु उधंधी गयेल,  
अनंत, निरवधि अन्त रहित; सीमा रहित,  
असख्यात से भी बहुत अधिक, अनन्त.  
Unlimited, infinite “अणंते णिइए  
लोए सासए ण विणस्सति” सूय० १, १, ४, ६;  
ओव० १०; २०; ४०, नाया० १; १४; भग०  
१, १, ४, २, १, १०; ३, १, ५, ४, ६; ७,  
७, १४, ४, १६, ६, २४, १६; उत्त० ४, ५,  
१०, ६, २८, ८; सम० १, १६, २४, सू० प०  
२०, राय० २३, नंदी० स्य० ३४; पि० नि०  
भा० २८, ४४; ठा० १, १, अणुजो० ४८,  
विशे० ७३४, ( २ ) न० डेवणस्तान. केवल  
ज्ञान. perfect knowledge नाया० ८;  
( ३ ) न० आकाश आकाश the sky भग०  
२०, २; ( ४ ) पुं० भरतक्षेत्रना आधु  
अवसर्पिणीना १४ भा तिर्थक्षर अनंतनाथ.

भरतक्षेत्र की वर्तमान अवसर्पिणी के १४ वे  
तिर्थक्षर अनन्तनाथ Anantanātha the  
14th Tirthankara of the present  
Avasarpinī of the Bharata  
Kṣetra अणुजो० ११६, सम० ५४, भग०  
२०, ८, ( ५ ) त्रि० अत्यंत; प्रभूत. बहुत  
ज्यादाह. too much, abundant ठा०  
४, १, ( ६ ) पुं० अनन्तकाय; कंदमूलादि.  
अनन्त काय; कन्दमूलादि roots etc.  
( containing many lives ). पञ्च०  
११,—उत्सर्पिणी स्त्री० (—उत्सर्पिणी)  
अनंती उत्सर्पिणी, कालविभागविशेष.  
अनंती उत्सर्पिणी, कालविभागविशेष  
Utsarpinī ( an ascending cycle  
of time ) going on eternally.  
क० गं० ५, ८६,—कर त्रि० (—कर)  
संसारने अंत करवाने अशक्त, संसारने  
अन्त न करनार. संसार का अन्त करने में  
अशक्त powerless to attain final  
bliss “ तेणतिसंजोगमतिप्पहाय,  
कायोवगाणतकरा भवति ” सूय० २, ६,  
१०,—काय. पु० (—काय) अनंतकाय;  
कंदमूलादि अनन्तकाय, कन्दमूलादि.  
vegetables growing under-  
ground, and containing infinite  
lives प्रव० २२५, पञ्च० ११,—काय-  
मिस्स. त्रि० (—कायमिश्र) अनंतकाय-कंद  
मूलादि साथे भेजसभेद थयेल अनन्त  
काय-कंदमूलादि के साथ मिला हुआ mixed  
up with vegetables containing  
infinite lives. निसी० १०, ५,—काल.  
पुं० (—काल) अनंतकाल, छेडा वगरने  
काल अनन्त काल. eternity परह० १,  
३;—गुण पु० (—गुण) अनंतगुण-  
वधारे, अनंतगुण अनन्तगुण infinitely  
multiplied उत्त० २४, १०, भग० ६, ३;



७, ७, ८, २, १२, ४; १७, १२, २०, १०; २५, ४, क० प० १, २६; क० ग० ४, ४२; ज० प० २, २७,—गुणिय त्रि० (—गुणित) अनंत गुण-वधारे, अनंतगुण; अनन्ते गुणेश अनन्त से गुणा किया हुआ; अनन्त गुणित. infinitely multiplied क० प० १, ३१; प्र० १४४६,—घाट. पुं० (—घातिन्-अनन्तविषयतया अनन्ते ज्ञानदर्शने हन्तुं विनाशयितुं शीलं येषां ते अनन्तघातिनः) आत्माना भूय गुणुनी धातु इत्यारु कर्मप्रकृति; धाति कर्मनी प्रकृति. आत्मा के मूल गुणों का घात करने वाली कर्मप्रकृति a variety of Karma destructive of the spiritual qualities of the soul “पसत्थजोगपदिवन्ने यं शं अणगारे अण्यंत-घाटपज्जने सवेइ” उक्त० २६, ७;—चक्रु पु० (—चक्रुप्) अनन्त-अतविनाशु यक्षु-ज्ञान छे न्हेतुं ते; देवगज्ञानी अनन्तज्ञानवाला; केवलज्ञानी. one having perfect knowledge, omniscient. “तरिउं समुइं च महाभवोवं, अभयंकरे वीरे अणत-चक्रु” सूय० १, ६, २५;—जीव. त्रि० (—जीव) अनन्तद्वयिद्वयवाणी वनस्पति; इहमूल वगेरे साधारण वनस्पति अनन्तकायिक जीव वाली वनस्पति, कंदमूल वगैरह साधारण वनस्पति vegetation with infinite lives in it, e. g. radish, carrot etc. “जस्स मूलस्स भग्गस्स, समो भंगो यदीसइ । अणंतजीवे उ से मूले, जेयावण्णे तहाविहा ॥ जस्समूलस्स कट्ठाओ, छल्ली बहलतरी भवे । अणंत जीवा उ सा छल्ली, जायावण्णा तहाविहा ” पक्क० १; भग० ७, ३;—जीविअ-य पु० (—जीविक) अनन्त द्वय जेभा छे ते; अनन्त द्वयिद्वय वनस्पतिविशेष जिममे अनन्त जीव छे; अनन्तकाय वाली वनस्पति veg-

tation with infinite lives in it, e. g. roots etc. भग० ८, ३; ठा० ३, १,—णाय न० (—ज्ञान-अनन्तं स्वपरपर्यायापेक्षया वस्तु ज्ञायते येन तदनन्तज्ञानम्) देवगज्ञान केवलज्ञान omniscience; perfect knowledge. दस० ६, १, ११,—णायउक्कअ. पु० (—ज्ञानोपगत) देवगज्ञान प्राप्त करेह; देवगज्ञानी केवल ज्ञान युक्तः केवलज्ञानी. having perfect knowledge, omniscient दस० ६, १, ११;—णायदंसि. पु० (—ज्ञानदर्शिन्-अनन्तं ज्ञानं दर्शनं च यस्यासावनन्तज्ञानदर्शी) देवगज्ञान अने देवगदर्शनवाणी; देवणी केवलज्ञान और केवलदर्शनवाला, केवली having perfect omniscience and perfect right belief. “अणंत-णायदंसि से, धम्मं देसि तवं सुतं” सूय० १, ६, २४,—णायि. पु० (—ज्ञानिन्) अनन्तज्ञानी, देवगज्ञानी अनन्तज्ञानी; केवलज्ञानी. one having perfect knowledge, omniscient. “अणंत-तणायी य अणंतदंसि” सूय० १, ६, ३, भग० ६, ७, दसा० ६, १८,—दंसि. पु० (—दर्शिन्) देवगदर्शनी, देवणी तथा सिद्ध भगवान् केवलदर्शनवाला, केवली तथा सिद्ध भगवान्. Kevali and Siddhagods, one possessed of perfect right belief. सूय० १, ६, ३;—पणसिअ पु० (—प्रदेशिक) अनन्त प्रदेशिक रक्षक, अनन्त परमाणु भेगा धराथी जनेली अेड वस्तु. अनन्त प्रदेशिक स्कध; अनन्त परमाणुओं के एकत्रित होने से बनी हुई एक वस्तु. a thing made up of innumerable atoms भग० २, १, ५, ७; ८, २; १०, १०; १४, १०, १८, ६; ८, २७, ४, अणुजो० १३२; ठा० १,

१;—पार स्त्री० (—पार—अनन्त पार. पर्य-  
न्तो यस्य काष्ठस्य सोऽनन्तपार. ) अपार  
अपार infinite, endless, bound-  
less “केण अणतं पारं संसारं हिंद्वा जीवो”  
आउ० “से पञ्चया अस्त्वयसागरे वा, महो-  
दहि वा वि अणतपारे” सूय० १, ६, ८,  
—भाग पुं० (—भाग) अनंतमे भाग-अंश  
अनन्तवाँ हिस्सा infinitesimal part  
भग० १, १; १८, ३, २५, ६; अणुजो०  
१४५, उक्त० ३३, २४, विशेष० १४०; क०  
प० १, ३०,—भागहीण त्रि० (—भाग-  
हीन) अनंतमे भागे ओछुं-छीण अनन्तवें भाग  
से कम-न्यून infinitely less, infini-  
tesimally less भग० २५, ६,—भाग-  
मब्भहिय त्रि० (—भागाभ्यधिक) अनंत-  
मे भागे अधिक. अनन्तवें भाग से अधिक in-  
finite limally more भग० २५, ६,—  
मिस्सिया स्त्री० (—मिश्रिता) प्रत्येक वन-  
स्पति पासे पड़ेल अनंतकाय-कंदमूल आदि  
जोड़ने जेम कड़ेवु के “आ अंधु अनंतकायिक  
छे” ते सत्यगृथा भाषानो ओक लेद प्रत्येक  
वनस्पति के पास में पड़े हुए अनन्तकाय-  
कंदमूलादि को देख कर यह कहना कि,  
“ये सब अनन्तकाय हैं” यह सत्यगृथा  
भाषा का एक भेद a kind of speech  
partly true and partly false; e g  
seeing a mixture of Ananta-  
kāya (roots full of infinite lives)  
and Pratyeka vegetable, to  
call the whole as Ananta-  
kāya without mentioning the  
Pratyeka-kāya vegetable पञ्०  
११,—मीसय न० (—मिश्रक) जुओ  
“अणतमिस्सिया” शब्द देखो “अणत-  
मिस्सिया” शब्द vide “अणतमिस्सिया”  
ठा० १०,—मोह त्रि० (—मोह) अनंत-

अंत विनानो मोह-दर्शनमोहनीय जेने छे ते;  
मिथ्यात्वी-अज्ञानी अंतरहित मोह-दर्शनमो-  
हनीय वाला, मिथ्यात्वी, अज्ञानी. infinite-  
ly deluded in the matter of  
right belief. “दीवप्पणट्टे व अग्रंत  
मोहे, नेयाउयं ददुमददुमेव” उक्त० ४,  
५,—वग्ग पु० (—वर्ग) अनंतने अनंत  
गुणा करवा ते, अनंतानो वर्ग. अनन्त को  
अनन्त से गुणा करना, अनन्त का वर्ग multi-  
plying the infinite and making  
it infinite-fold ओव०—वग्गभइय  
त्रि० (—वर्गभक्त) अनंतने वर्गे करी भाग  
पाउल-जुंयणी करेल अनन्त का वर्ग करके  
फिर उसका विभाग किया हुआ. divided  
into infinities “सोऽणंतवग्ग-  
भइओ, सव्वागासेण मीएज्जा” ओव०  
—वत्तियाणुप्पेहा स्त्री० (—वृत्तितानुप्रेषा-  
अनन्ता अत्यन्तप्रभूता वृत्तिर्वर्त्तन यस्यासा-  
वनन्तवृत्तिः, तस्य भावस्यानुप्रेषा अनन्तवृ-  
त्तितानुप्रेषा) शुद्धध्याननी ओक भावना;  
अनंतकाणथी भव भूमणु थाय छे तेनाथी  
निवर्तवानु चितवन करवु ते शुद्धध्यान की  
एक भावना, अनंतकाल से होने वाले संसार  
अमण से छूटने का चितवन deep medi-  
tation on emancipation  
from transmigration, a variety  
of pure concentration of the  
soul on itself ओव० २०, भग०  
२५, ७, ठा० ४, १,—संसारि त्रि०  
(—संसारिन्) जेने संसारभा अनंत भव  
रखवु छे ते ऐमा जीव जिसे संसार में अनंत  
भवो तक अमण करना है involved in  
the cycle of endless births and  
deaths भग० ३, १,—संसारिय पु०  
(—संसारिक) जेने संसारभा अनंत भव  
करवा छे ओया छव ऐमा जांव जिने संसार

मे अनन्त भव धारण करना है. a being involved in the cycle of endless births and deaths राय० ७६; ठा० २, २,—समय पुं० (-समय) अनंता समय अनंत समय. a period of time ranging from one to infinite Samayas ठा० १, १; पञ्च० १;—समयसिद्ध. पुं० (-समयसिद्ध) जेने सिद्ध थये अनन्त समय थया होय ते जिसे सिद्ध हुए अनन्त समय—असंख्य काल व्यतीत हुआ हो वह A Siddha who attained or is said to have attained liberation infinite time ago “ एगा एकसमय सिद्धाणं वग्गणा एगा अणिकसमयसिद्धाणं वग्गणा एगा पढमसमयसिद्धाणं वग्गणा एवं जाव अणंतसमयसिद्धाणं वग्गणा ” ठा० १, १, पन्न० १;—हिय न० (-हित) मोक्ष. मोक्ष salvation, final emancipation, absolution, eternal beatitude. दस० ६, २, १६,—हियका-मुय त्रि० (-हितकामुक) मोक्षाभिलाषी; मोक्षनीधञ्जवाणो; मुमुक्षु मोक्ष का अभिलाषी, मोक्ष की इच्छा वाला; मुमुक्षु. aspiring to final emancipation “ किं पुणं जे सुअग्गाही अणंतहियकामुय ” दस० ६, २, १६;

अणंतअ-य. पुं० ( अनन्तक ) रत्नेदुरणु साधु का रजोहरण-उपकरण A kind of brush kept by a Sādhu to remove dust, insects etc. ओष० नि० २८८; ( २ ) जंघुद्धीपना धरत क्षेत्रना आलु अवसर्पिणीना आदमा तीर्थंकर जंबूद्वीप के इरवतक्षेत्र सम्बंधी वर्तमान अवसर्पिणी के १४ वे तीर्थंकर. the fourteenth Tirthankara of the

present Avasarpinī of the Iravata region of Jambūdvīpa. सम० प० २४०; ( ३ ) अनन्तकाय अनन्त काय Anantakāya पंचा० १, २१; मुहपत्ति; मुभवस्त्रिका मुहपत्ति mouth-cloth or mouth-screen. “मुहयंतय-देहा” प्रव० ६३; ( ५ ) त्रि० अन्त रहित. अन्त रहित endless, eternal प्रव० १२२१;

अणंतअ-युत्तो. अ० ( अनन्तकृत्वस् ) अनंती वार; अनंता वपत; अनतीवेणा. अनन्त वार. Repeated for endless times; infinite times “ असति अदुवा अणंतकृत्वस् ” भग० १२, ६, २, ३; ६, ५, ११, १; १२, ७; १६, ६; २१, १; ३५, १; जं० प० ७, १७६;

अणंतग न० ( अनन्तक ) आभरणविशेष; लुगलमां पहरेवानुं ओड धरेणुं आभरण विशेष, बाँहों में पहिने का आभूषण An armlet, a bracelet. राय० १८६; ( २ ) शाश्वत; अविनाशी शाश्वत; अविनाशी. eternal. “ चिद्धा अणंतगं सोयं, निरवेकणो परिव्वण ” सूय० १, ६, ७; ( ३ ) गणुत्रीरूप संप्रियाविशेष; ज़ुतअनंत, परित्तअनंत अने अनन्ता-नंत ओ त्रणु अथवा ओडकना जवन्य, मध्यम अने उत्कृष्ट ओम त्रणु त्रणु लेद होवाधी नव भेदमानो गमे ते ओड गिन्तीरूप संख्या विशेष; युक्त अनंत, परित्तानंत और अनन्तानत के उत्कृष्ट, जघन्य और मध्यम की अपेक्षा से नौ भेद होते हैं उनमें से एक. ( Math ) infinite; infinity-it is of three kinds viz Juttānanta, Parittānanta and Anantānanta each divided into minimum, medium and maximum. “ से किंत

अणंतग ? अणंतग तिविहे पणणत्ते, तंजहा परिताणंतग जुसाणतए अणंताणतए” अणु-  
जो० ( ४ ) उनतुं वस्त्र, कामण वगेरे. कम्मल  
वगैरह ऊनी वस्त्र woollen clothes  
such as blankets etc. ओघ०  
नि० ३६;

अणंतग त्रि० ( अणन्तक ) गणुवानो ओक  
भेद संख्या का एक भेद. Mode of  
numerical calculation. “ पंचविहे  
अणंतगे पणणत्ते ” ठा० ५, ३;

अणंतजिण. पुं० ( अणन्तजिन ) आधु अवसर्पि-  
णीना भरतक्षेत्रना १४ भा तीर्थंकर वर्तमान  
अवसर्पिणी काल के भरतक्षेत्र के १४ वें तीर्थ-  
कर. The fourteenth Tirthankara  
of the Bharata Ksetra of the  
present Avasarpinī. प्रव० २६४,

अणंतस्थ पु० ( अणन्तार्थ ) धरवतक्षेत्रना  
आवती योवीसीना चौविशी तीर्थंकरनु नाम  
हरवतक्षेत्र के आगामी चौवीसी के २० वें  
तीर्थकर का नाम Name of the 20th  
Tirthankara of Iravata Ksetra  
in the coming Chovīsī. प्रव०  
३०४;

अणंतर न० ( अणन्तर ) अन्तरनिना; अन्तर  
रहित. अन्तर बिना, अन्तर हीन. Without  
intervening space, spaceless  
नाया० १, ८, १५, १६; भग० २, १; ५, १, ४;  
१२, ८; १३, १; १५, १, १६, ३; ३२, १, ३४,  
४; ( २ ) पछी, आ६. पश्चात्, बाद after-  
wards, then पञ्च० २, दत्ता० १०, ३;  
राय० ६६, कप्प० १, २, क० प० २, ५, ( ३ )  
नज्जदीक, पास. adjoining close  
to पिं० नि० २७६; ( ४ ) निच्छेद गये  
आरभा दृष्टिवाद् अगना जीन विभाग-  
सूत्रने प. यमे भेद विच्छेद हुए बारहवे  
दृष्टिवाद अज्ञ के दूसरे विभागसूत्र का

पाचवौं भेद. the 5th division of the  
2nd Vibhāga Sūtra of the 12th  
Aṅga viz. Diṣṭivāda, which  
is no longer extant नदी० ५६;  
—आगम न० (—आगम) तीर्थंकरे गणु-  
धरने सलणवेअ आगम; आगमने ओक  
भेद. तीर्थंकरों ने गणवरों को सुनाया  
हुआ आगम, आगम-शास्त्र का एक प्रकार.  
a mode or variety of scriptur-  
es, a division of scriptures  
भग० ५, ४, सूय० नि० टी० १, १, १, २८,  
—आहार पु० (—आहार) श्रुवे उत्पन्न  
थया पछी पड़ेले समये लीधेला आहार  
उत्पन्न होने के बाद पहिले समय में जीव ने  
लिया हुआ आहार. the first food taken  
after birth by a living being  
भग० १३, ३, —आहारग पु० (—आहारक)  
श्रुवना प्रदेशनी छेक पासे रहेला—अ.तरा रहित  
रहेला पुद्गलने आहार करने न करी वगेरे  
श्रुवे जीव के प्रदेश के बिल्कुल पास वाले  
पुद्गल का आहार करने वाले नारकी वगैरह  
जीव. hellish beings eating matter  
in immediate contact with liv-  
ing beings भग० २६, ६; ३३, ६, ठा०  
१०, ( २ ) उत्पन्न थया पछी पड़ेले समये  
आहार लेना उत्पन्न होने के बाद पहिले समय  
में आहार लेने वाला. one taking food  
in the first moment after birth.  
पञ्च० ३४, ठा० १०;—उच्चिहा लो०  
(—उपनिधा—उपनिधानमुपनिधा, अणन्तरे-  
लोपनिधाअन्तरोपनिधा—मार्गणा) अणन्तरे-  
लोकेना योगस्थान साथे तेना पछीना ये ग-  
स्थाननी मार्गणु करी ते मिले हुए योग-  
स्थान के साथ उसके पाँछे के योगस्थान को  
मार्गणा करना investigation of an  
immediately succeeding Yoga.

sthāna परह० २, ५,—उवचरणग पु० (—उपपन्नक—न विद्यतेऽन्तरं समयादि व्यवधानमुपपन्ने उपपाते येषां ते अनन्तरोपपन्नका ) प्रथम समयमां उत्पन्न थयेल ७५, जेने उपपन्ने ओइ समय थये छे ते प्रथम समय मे उत्पन्न जीव; जिसे जन्म लिये एक ही समय हुआ हो a being after whose birth more than one Samaya or instant has not passed भग० १३, १०, १४, १, २६, २, २६, १, ठा० १०,—ओगाढ त्रि० (—अवगाढ) प्रकृत समयमां आकाश प्रदेशने अवगाढी रहेल प्रकृत समय मे आकाश प्रदेश को अवगाहन कर ठहरा हुआ localised in space in the time present भग० १३ १, ३३, १,—ओगाढग पु० (—अवगाढक) प्रकृत समयमां आकाश प्रदेशने अवगाढी रहेल ७५ प्रकृत समय मे आकाश प्रदेश को अवगाहनकर ठहरा हुआ जाव a living being localised in space in the time present ठा० २, २, भग० २६, ४,—खेत्तोगाढ त्रि० (—क्षेत्रावगाढ) प्रकृत वस्तुनी छेइ पासेना आकाश प्रदेशने अवगाढी रहेल प्रकृत वस्तु के बिल्कुल नजदीक के आकाश प्रदेश को रोके हुए localised in space immediately next to the thing present “खोअणतरखेत्तो-गाढे पोम्गले अत्तमायाण आहारेति ” भग० ६, १०,—गोठिय त्रि० (—ग्रन्थित ) आंतर विना ओइ गाढनी साथे भीछ, भीछनी साथे भीछ ओम गुथेअ विना अन्तर के पान पास लगा हुई गोठो से गुया हुआ knotted without intervals, closely interwoven भग० ४, ६,—णिग्गा त्रि० (—निर्गत ) आंतर

विना—युगपत्—ओइ समये नीछेले युगपत्—एकसाथ निकले हुए started simultaneously. भग० १४, १,—पच्छाकड त्रि० (—पश्चात्कृत—अनन्तर अव्यवधानेन यः पश्चात्कृतः स ) वर्तमाननी जेडेने आगये समय, वर्तमानथी पड़ेलाने समय वर्तमान से मिला हुआ पहिला समय the immediate past सू० प० ८,—पज्जसग. पु० (—पर्याप्तक—न विद्यते पर्याप्तत्वेऽन्तर येषां तेऽनन्तरा, ते च ते पर्याप्तकाश्चेत्यनन्तर पर्याप्तकाः ) पड़ेला समयनी पर्याप्त; पर्याप्त थवाने प्रथम समय पहिले समय के पर्याप्त जीव; पर्याप्त होने का पहिला समय the first Samaya of becoming Paryāpta or fully developed in senses etc ठा० १०, भग० २६, ८, ३३, ८,—पुरक्खड त्रि० (—पुरस्कृत ) वर्तमाननी जेडेने पाछेले समय, भीजे समय वर्तमान समय से लगा हुआ दूसरा समय ( आगे का समय ) the immediate future “अणतरपुरक्खडे कालसमयंसि ” सू० प० ८,—वंध पु० (—बन्ध) आतरा विनाने बंध अन्तर रहित बंध uninterrupted bondage भग० २०, ७,—सिद्ध पु० (—सिद्ध) प्रकृत समयमा सिद्ध थयेल होय ते, प्रथम समयना सिद्ध. प्रकृत समय मे जो सिद्ध हुआ हो, प्रथम समय का सिद्ध the Siddha of the immediate past ठा० २, १, भग० २४, ४; नदी० २०, पञ्च० १, अणंतरहिअ-य त्रि० (—अनन्तरहित ) स-यित, ७१ सहित; सचित्त, सजाव Living; containing life जे भिक्खु माउग्गामस्स मेहुणवहियाण अणतरहियाण पुढवीण णिमी-यावेजा” निर्गा० ७, १६, १३, ६, १४, ३२; १६, २६, उग्गा० २, १५, १६ नम० २१;



**अणंतविजय पुं० (अनन्तविजय)** भरतक्षेत्र-  
मा आवती योषीसीमा थनार २४ मा  
तीर्थंकर भरतक्षेत्र की आगामी चौवीसी में  
होने वाले २४ वें तीर्थंकर The would-be  
twenty-fourth Tirthankara in  
the coming Chovīsī in Bharata  
Kṣetra सम० प० २४१; (२) जंबूद्वीपना  
ध्रुवत क्षेत्रमा आवती उत्सर्पिणीमा थनार  
२० मा तीर्थंकर जंबूद्वीप के इरवतक्षेत्र में  
आगामी उत्सर्पिणी में होने वाले बीसवें तीर्थंकर  
the would-be twentieth Tirth-  
thankara in the coming Utsar-  
pinī in the Iravata Kṣetra  
of Jambūdvīpa प्रव० २६८, सम०  
प० २४१, २४३,

**अणंतवि-वी-रिय पुं० (अनन्तवीर्य)** भरत  
क्षेत्रना आवती योषीसीना त्रेवीशमा तीर्थ-  
ंकरनु नाम भरतक्षेत्र की आगामी चौवीसी के  
२३ वे तीर्थंकर का नाम Name of the  
23rd Tirthankara of Bharata  
Kṣetra in the coming Chovīsī  
प्रव० २६७,

**अणंतसेण पुं० (अनन्तसेन)** गण्ड अवसर्पि-  
णीना ४ था कुलगर गत अवसर्पिणी के चौथे  
कुलगर The fourth Kulagara of  
the past Avasarpinī सम० प० २२६,  
(२) लक्षपुर निवासी नाग गाथापतिनी वार्या  
सुलसानो पुत्र, अरीरीते वसुदेव अने देवकीनो  
पुत्र, ३० वर्षे २० वर्ष दीक्षा पाणी, १४ पूर्व-  
नो अभ्यास कियो अने शत्रुज्य उपर सिद्ध  
थया लक्षपुर निवासी नाग गाथापति की  
भार्या सुलसा का पुत्र, वास्तव में वसुदेव  
देवकी का पुत्र, जिसने २० वर्षों तक दीक्षा  
पाली और १४ पूर्व का अभ्यासकर शत्रुज्य से  
मोक्ष को गया the son of Sulasā  
the wife of Nāga Gāthāpati, a

resident of Bhaddalapura, as a  
matter of fact the son of Vasu-  
deva and Devakī He observ-  
ed asceticism for twenty years,  
studied the fourteen Pūrvas  
and obtained salvation on the  
Śatruñjaya अन्त० ३, २, (३) अंत-  
गडना श्रीज वर्गना णीज अध्ययननु नाम  
अन्तगड के तीसरे वर्ग के दूसरे अव्याय का  
नाम the second chapter of the  
third section of the Antagada  
Sūtra अन्त० ३, २,

**अणंतसो अ० (अनन्तशम्)** अनन्त बार  
अनन्त-अनेक बार Endless times,  
times without number सूय० १,  
१, १, २७, १, २, १, ६, भक्त० ७६,  
**अणंतहा अ० (अनन्तधा)** अनंत प्रकार  
अनन्त प्रकार In infinite ways भग०  
१२, ४,

**अणंताणंत त्रि० (अनन्तानन्त)** अनंत  
गुणया अनंत, अनंतानंत अनन्तानन्त;  
अनन्त से गुणा अनन्त Infinite multi-  
plied by infinite भग० १४, २,

**अणंताणुबंधि पुं० (अनन्तारणुबन्धि)** अनंत  
क्षणसुधी आत्माने ससागसाथे अनु-  
बंध-ससर्ग क्षणवन्त क्षणायनी यार योद्धी-  
भानी प्रथम योद्धी अनन्तकाल तक आत्मा  
को सत्तार में बटकाने वाले कषाय की चार  
चौकड़ियों में से पहिली चौकड़ी The first  
of the fourfold division of  
Kasāyas, eternally binding the  
soul to worldly existence विने०  
१२८७, भग० ६, ३१ उक्त० २६ १;  
सम० १६, पञ्च० १४,—कोह. पु०  
(-क्रोध) अनंतव्यपर्षत अभ्यासवन्त  
क्षय, ३० उत्पन्न थया पक्षी पतितनी शत्रुनी



पेडे भरलु सुधी पलु लुसाय नहि अने सम-  
 धितने अटकावे ते ३।५. अनन्त भव पर्यंत  
 संसार में भटकाने वाला क्रोध, जो उत्पन्न  
 होने के बाद मरण तक न छूटे और जिसके  
 कारण सम्यक्त्व उत्पन्न न हो सके. anger  
 which causes one to wander in  
 worldly existence for eternity,  
 the influence of which can  
 neither be obliterated nor  
 effaced like a cleft in a moun-  
 tain, and which precludes the  
 possibility of Samyaktva ( true  
 religion ). ठा० ४, १;

अरांतिय त्रि० ( अनन्तिक ) पास नहि; नज्द  
 नहि ते असमीप; दूर Not near, not  
 in the vicinity. भग० ५, ४; (२) त्रि०  
 अत वगरनु; छेडा वगरनु, अनंत अंत रहित;  
 छोरे रहित, अनन्त. endless; eternal  
 “ नरस्स लुदस्स न तेहि किचि, इच्छा हु  
 आगाससमा अरांतिया ” उक्त० ६, ४८;

अरांदमाण व० कृ० त्रि० ( अनन्दत् ) सुख न  
 भोगवतो सुख का उपभोग न करता हुआ  
 Not enjoying happiness तडु०

अरांध. त्रि० ( अनन्ध ) आधणो नहि ते;  
 देखतो जो अन्धा न हो वह. Not blind,  
 seeing पंचा० ११, ११;

अरांविल त्रि० ( अनम्ल ) स्वादे देर थयेल  
 नहि, जेभा रस यत्नित न थये। होय-आहुं  
 न पडि गयुं होय ते जिसका स्वाद न  
 बिगडा हो That which has not  
 become sour, or lost its taste  
 through decomposition आया० २,  
 १, ७, ४१, निखो० १७, ३०;

अरांसुवाई. पु० ( अनश्रुपातिन् ) भार्गवो  
 परिश्रम-यत्न लाये। होय तो पलु आसु न  
 भेदनर; घोडा वगैरे थक जाने पर भी श्रौत्

न बहाने वाला, घोडा वगैरह. ( One )  
 not shedding tears though  
 fatigued by journey, e. g. a  
 horse etc. “ जं अचंडपाहि अदंडपाहि  
 अरांसुवाई ” जं० प०

अराकभिण त्रि० ( \*अनासाभिन्न ) नाथ्या  
 वगरतो; नाथेल नहि. विना नया हुआ. With  
 the nose unbored or unperfo-  
 rated. “ अणिलच्छिण्हि अराकभिणोहि  
 गोणेहि तसपाणविवज्जिण्हि वित्तेहि वित्ति  
 कप्पेमाणा विहरंति ” भग० ८, ५;

अराकमिक्ता. सं० कृ० अ० ( अनाक्रम्य )  
 आक्रमण कर्या विना; आक्रमण न करीने  
 विना आक्रमण किये Without attack-  
 ing, without having attacked.  
 भग० १४, ३;

अराक्ख पुं० ( अनक्ष ) म्लेच्छ देशविशेष  
 म्लेच्छ देश. Name of a country of  
 heathens. पत्र० १; परह० १, १, ( २ )  
 त्रि० म्लेच्छ देशभा रहेनार मनुष्य म्लेच्छ देश  
 में रहने वाला मनुष्य. people living in  
 Mlechchha Desā पत्र० १; परह० १, १;

अराक्ख पुं० ( ईर्ष्यायां रोषे च ) ईर्ष्या-अदे-  
 भाई ईर्ष्या Jealousy ( २ ) रोष. क्रोध.  
 anger सु० च० ५, ३७; ६, ५६;

अराक्खर न० ( अनक्षर ) अनक्षर श्रुत  
 अनक्षर ( अक्षर रहित ) श्रुत Illiterate.  
 विशेष० ५०१;—सुय. न० ( -श्रुत ) लुओ  
 उपरो शब्द देखो ऊपर का शब्द. vide  
 above. नंदो० ३८,

अराक्खेअ त्रि० ( अनाख्येय ) कथन करवा  
 योग्य नहि कथन करने के अयोग्य. Not  
 worth describing. विशेष० २६४७,

अराग न ( अराक ) ऋण; ऋण; देखें.  
 कर्ज Debt. सूय० १, ३, २, ८;

अरागाढ. न० ( अरागाढ ) अत्यंत भारी नहि.

प्रबल कारण नहीं। A cause or reason which is not cogent or urgent. गच्छा० ११६;

अणुगार पु० (अनगार-अनागार-नविद्यते आगारादिकं द्रव्यजात यस्यासौ) त्यागी, गृह वगैरना-साधु-महत्त्मा त्यागी, साधु A houseless monk, an ascetic who has abandoned all possessions. ओव० १७, पञ्च० १५, ३६, विवा० १; निसी० २०, ११, उत्त० १, १८, २, १४; आया० १, १, २, १५; १, ६, २, १८३; ठा० २, १, दस० ४, १८; सू० प० १, जं० प० २, ३३; नंदी० ६; पि० नि० २६३; भग० १, १, ६, २, ५; ७, १०; नाया० १, ५, १४; १६; १६;—धम्म पु० (—धर्म) मुनिधर्म, साधुतो धर्म; सर्व विरति आरिरूप यतिधर्म, अंति, मुक्ति आदि दश प्रकारतो यतिधर्म मुनियों का धर्म, सर्व विरति चरित्ररूप यतिधर्म duties of an ascetic, ten in number e g Khanti etc “अणुगारधम्मो ताव इह खलु सव्वओ सव्वयाएमुंहे भवित्ता” भग० १६, ६,—मग्ग पु० (—मार्ग) उत्तराध्ययन सूत्रना ३५ भा अध्ययननु नाम, जेभां अणुगार-साधुतो मार्ग दर्शावामां आये। छे ते, (उत्तराध्ययननु) ३५भु अध्ययन. उत्तराध्ययन सूत्र के ३५ वे अध्याय का नाम, जिसमें अनगार-साधु के मार्ग का निरूपण है name of the thirty-fifth chapter of Uttarādhyayana Sūtra, expounding the duties of a Sādhhu. उत्त० ३५, २१,—महेसि पु० (—महर्षि) साधुना गुण युक्त महर्षि-महात्मा. a great sage having the qualities of a Sādhhu or an ascetic सम०—चाइ.

पुं० (—वादिन्) साधुना गुणरहित होना छता पोताने साधु तरीके ओणअ वनार; वेध मात्र धरनार शक्य दि साधुत्व के गुणों से राहत साधु, केवल वेधमात्र रखने वाला साधु a hypocritical saint, an ascetic in name and dress “अणुगारवाइणो पुढ-विहिंसगा निग्गुणा अगारिसमा” आया० नि० १, १, २, १००,—चिणय न० (—विनय) अणुगार-साधुतो विनय-चारित्रधर्म. अनगार-साधु का विनय-चारित्रधर्म. right belief, right conduct etc. on the part of an ascetic. नाया० ५;—सहस्स न० (—सहस्र) हजार अणुगार-साधुओ हजार साधु a thousand houseless saints कप्प० ७, २२७;—सामाइय त्रि० (—सामायिक) सर्व विरति रूप सामायिक; साधुतो धर्म-अचार साधुओं का एक प्रकार का आचार, सर्व विरतिरूप सामायिक. the conduct of an ascetic e g self-contemplation. ओव०—सीह. पुं० (—सिंह) मुनिभां सिंह समान. मुनियों में सिंह के समान lit a lion of a Sādhhu, the most advanced among the Sādhhus “एवं धुणित्ताण स रायसीहो, अणुगारसीह परमाह भत्तिण” उत्त० २०, ५८,—सुय न० (—श्रुत) सूयगङ्गा-गुं २१भु अणुगारश्रुतनामनु अध्ययन सूत्र-कृताङ्ग का २१ वां अध्ययन. name of the 21st chapter of Sūtra-Kritāṅga सम० २३;

अणुगार. पुं० (अनाकार) अणुगार-दर्शनतो-उपयोग, जेभा आकार २५४ प्रतीत न थाय ते उपयोग दर्शन का उपयोग, जिसमें आकार स्पष्ट न जान पड़े यह उपयोग. Vision without definite perception or form. क० प० १, २६;—

प्पाउग्गा स्त्री० ( -प्रायोग्या ) अध आश्री  
अनाकार उपयोगने योग्य प्रकृति वन्व का  
आश्रयकर अनाकार उपयोग के योग्य प्रकृति  
Karmic nature of the above  
kind, in relation to bondage  
क० प० १, ६६;

अणगारिय. त्रि० ( अनगारिक-अनगारः  
साधुस्तस्येदम् ) साधु संगधी अनुष्ठान वगेरे  
साधु सम्बन्धी अनुष्ठान-कर्मकारण वगैरह.  
Religious practice etc concern-  
ing or relating to a Sādhu ओव०  
२७, उत्त० १०, २६, ज० प० २, ३०,

अणगारिया स्त्री० ( अनगारिता ) साधुपण्य,  
साधुवृत्ति, साधुने लाव साधुपना, साधुवृत्ति.  
Asceticism “अणगारियं पव्वणुजा”  
भग० २, १; ६, ३१, ११, ११, १५, १;  
नाया० १, विवा० १, पन्न० २०,

अणगिलाइअ त्रि० ( अनग्लानिक-न ग्लानि-  
रग्लानिः, न अग्लानिरनग्लानिस्तत्र  
भवोऽनग्लानिक ) ज्यारे आहार विना  
जानि थाय त्यारे आहार लेयुं ते. जब  
आहार विना शरीर में ग्लानि-अशक्ति-निर्वलता  
हो तब आहार लेना Taking food  
only when there is discomfort  
or debility arising from not  
taking it. परह० २, १,

अणग्घ. त्रि० ( अनर्घ्य ) अमूल्य; अलु डिम्भती  
अमूल्य, बहुत कीमती Invaluable,  
precious. सत्या० ४६, ज० प० २, ५४,

अणञ्जितिय पु० ( अनत्यान्तिक ) भेद भाग-  
नारते मुझीने लागी न जयुं, डिनु छेवट सुधी  
भेद आपसी ते सहायता मागने वाले को  
छोडकर न भागना, किन्तु अन्त तक सहायता  
देना Helping a man to the last  
without deserting him at any  
time विशेष० १०२८,

अणञ्चाविय. न० ( अनन्तित ) पडिलेहण  
करतां पोताने तथा वस्त्रने हलाववा-नयाववां  
नहि ते, पडिलेहणने ओड गुण.  
पडिलेहण ( प्रतिलेखन ) करते समय  
शरीर को तथा वस्त्रों को न हिलाना-  
न नचाना; पडिलेहण ( प्रतिलेखन )  
का एक गुण. Examining garments  
without moving them or  
one's own body, a kind of merit  
in Padilehana “ वस्त्रे अप्पाणम्मि  
य चउविहं अणञ्चावियं ” ठा० ६, १, उत्त०  
२६, २५;

अणञ्चासादणया स्त्री० ( अनत्याशातनता )  
जुओ ‘अणञ्चासायणा’ शब्द देखो “अणञ्चा-  
सायणा” शब्द Vide “अणञ्चासायणा”  
भग० २५, ७,

अणञ्चासादणा स्त्री० ( अनत्याशातना )  
जुओ ‘अणञ्चासायणा’ शब्द देखो “अणञ्चा-  
सायणा” शब्द Vide “अणञ्चासायणा”  
भग० २५, ७,

अणञ्चासायणा. स्त्री० ( अनत्याशातना-अतीव  
सम्यक्त्वादिलाभ शातयति विनाशयतीत्यत्या-  
शातना न तथा अनत्याशातना ) गु३  
आदिनी आशातना न करनी ते गुरु आदि  
की आशातना न करना Not showing  
disrespect or irreverence to-  
wards a preceptor etc उत्त० २६,  
४, ओव० २०,—सोल पु० ( -शील )  
अति आशातना न करना अत्यन्त  
आशातना न करने वाला one not  
given to show disrespect to-  
wards a preceptor etc. उत्त०  
२६, ४,

अणज्ज त्रि० ( अन्याय ) अन्याय युक्त;  
न्याययुक्त नहि ते अन्याय सहित. Unjust.  
परह० १, १;

अणज्ज. त्रि० (अनार्य-आराधात सर्वहेयधेम्भ्य इत्यार्यं न आर्यमनार्यम् ) अनार्य; भ्लेच्छ, क्रूर अनार्य; भ्लेच्छ, क्रूर A barbarian; a cruel man सु० च० १२, ६६, परह० १, ४, ( २ ) न० पाप कर्म, अनार्य अनुष्ठान पाप कर्म, बुरा काम an evil deed परह० १, २,—धम्म त्रि० (—धर्म-अनार्याणामिव धर्मः स्वभावो येषां ते तथा ) अनार्यस्वभाववाणो अनार्य स्वभाव वाला of evil disposition ( २ ) धर्मेते नामे अनार्य कर्म करने वाला धर्म के नाम से अनार्य कर्म करने वाला one who does evil actions in the name of religion सूय० १, ७, ६,—भाव. पु० (—भाव ) क्रोधादि दुर्गुणवाणो भाणुस क्रोधादि दुर्गुण वाला मनुष्य a man full of vices such as anger etc ठा० ४, २,

अणज्जभवसाय पुं० ( अनध्यवसाय ) निर्विकल्प ज्ञान, विशेषरहित सामान्य ज्ञान निर्विकल्प ज्ञान, भेदाभेदरहित सामान्य ज्ञान General knowledge without perception of accurate distinctions विशेष० ६२,

अणज्जभोववरण त्रि० ( अनधुपपन्न ) भूच्छा-आसक्तिरहित विषयासक्ति-मूर्च्छा से रहित Free from infatuation or attachment to worldly objects परह० २, १, भग० १४, ७,

अणट्ठ त्रि० ( आनष्ट ) नाश पभेल नष्ट, जिसका नाश हो गया हो वह Destroyed “ अणट्ठाकिप्पि पव्वइण् ” उक्त० १८, ४६,

अणट्ठ. त्रि० ( अनर्थ ) अर्थरहित. निरर्थक. निष्प्रयोजन; निष्प्रयोजन अर्थ-प्रयोजन रहित.

Meaningless, useless प्रव० ८२७, भग० २, ५, १५, १, राय० २२५, निर्मा० १, २०, १८, १, पिं० नि० १०३, दस० ४, ( २ ) डानी, नुकसानी हानि, नुकसान loss नाया० १४, परह० १, २, —कारण त्रि० (—कारक ) अनर्थकारी; पुत्रपार्थनी धातु करने वाला; पुत्रपार्थ का नाश करने वाला harmful; pernicious परह० १, २,—किरिया छां० (—क्रिया ) वगैरप्रये करने आगलाहि क्रिया करने वाली ते निरर्थक आरम्भादि क्रिया करना doing actions involving killing etc. without any necessity प्रव० ८२५,

अणट्ठग पु० ( अनर्थक ) २८ भो गाथु परिग्रह अट्ठावीसवाँ गाथु परिग्रह The twenty-eighth Gauna Parigraha or worldly possession परह० २, १,

अणट्ठमिय त्रि० ( अगस्तमित ) नली आथ-भेदो (भूय) बिना अस्त हुआ (सूर्य) Not yet set e g the sun वेय० ५, ६,—संकप्प त्रि० (—सङ्कल्प ) द्विषस आथम्या पहेला करने आवाते संकल्प छे ते दिन अस्त होने के पहिले जिसका भोजन करने का नियम हो वह having a vow to take food before sun-set वेय० ५, ६,

अणट्ठादंड पु० ( अनर्थदण्ड ) अर्थ-स्वार्थ बिना आत्माने दंडो ते, निष्क्रिय-निष्प्रये न्त पाप करना ते, भीष्णु क्रियास्थानक बिना प्रयोजन पाप करना, दूसरा क्रियास्थानक Purposeless sin ठा० २, १, ५, २, भग० २, १३,—वत्तिअ न० (—प्रत्ययिक ) वगैर प्रये करने मात्र कीडा के व्यसनथी अथदिसादि पापस्थानक सेवयुते, भीष्णु क्रियास्थानक बिना प्रयोजन केवल क्रोडा या व्यसन से जीवहिसादि पाप कृत्य करना, दूसरा क्रियास्थानक the

second Kriyāsthānaka viz. incurring sin without any purpose, out of mere humour. “ अहावरे दोचे दंडसमादाणे अण्डादंडवतिष्ठति आहिज्जइ ” सूय० २, २, ८,—वेरमण. न० (—विरमण) अनर्थ दंड से निवृत्त होना, श्रावक का आठवाँ व्रत the eighth vow of a Jaina; abstention from purposeless sin उवा० १, ५२;

अण्डावधिय. त्रि० ( अनर्थबन्धिक—अर्थेन प्रयोजनेन विना पक्षमध्ये वारद्वयं त्रयं वा लम्पनिकायाः कम्बाना बन्धन यः करोति सोऽनर्थबन्धिकः ) विना प्रयोजने पञ्चादीनां भेदे त्रयं वा २ पात्रं वगेरेते बंध आपनार ( साधु साध्वी ) वे काम दो तीन बार पखवाड़े में पात्रों को बन्ध देने वाला ( साधु साध्वा ) ( One, e. g. an ascetic, male or female ) who unnecessarily fastens together vessels etc twice or thrice in a fortnight कण्ठ० ६, ५३;

अण्डण न० ( अनटन ) अटन—भूमण न डरु ते न भटकना Not wandering or moving from place to place. पंचा० १३, ३४,

अण्डद्ध. त्रि० ( अनद्धेन विद्यते अद्धं येषामित्यनद्धम् ) जेतुं अध न थाय अवेतुं; डटडा न थध शेडे अवेतुं जिसका आधा हिस्सा न हो सके. Incapable of being divided into halves; impartible. भग० ५, ७, २०, ५; २५, ४;

अण्डिह. त्रि० ( अनद्धि ) ऋद्धिही रहित ऋद्धिसे रहित Devoid of prosperity. भग० ८, १; ( ० ) स्त्री० ऋद्धिही अभाव

ऋद्धि का अभाव. absence of prosperity. भग० ८, १;

अणुणुणविय. सं० कृ० अ० ( अननुज्ञाप्य ) २०१ वग२; अनुज्ञा सिवाय. विना आज्ञा के; विना अनुमति के Without permission. आया० २, १, ५, २८;

अणुतावित्ता. सं० कृ० अ० ( अननुताप्य ). तपाय्या विना विना तपाये Without heating; without having heated सूय० २, ४, १०;

अणुनाय त्रि० ( अननुज्ञात ) आज्ञा नहि आपेक्ष जिसे आज्ञा न दी हो वह. Not ordered प्रव० १२६, ६६१, सु० च० ७, ११;

अणुपालण न० ( अननुपालन ) पालन न डरुतुं न पालना Act of not observing or maintaining प्रव० २८६;

अणुपालणया स्त्री० ( अननुपालनता—अननुपालन ) पालन न डरुतुं ते; पाणवुं—वर्तवुं नहि ते पालन नहीं करना, वर्तन नहीं करना. Non-observance. “ पोसहोववासस्त सम्ममणुपालणया ” उवा० १, ५५;

अणुचाइ. त्रि० ( अननुवातिन् ) सिद्धांतने अनुसरुं नहि; सिद्धांतही वि३६. सिद्धान्त के प्रतिकूल Not conforming to scriptural texts. प्रव० १२२;

अणुचाय पुं० ( अननुवात ) न आवुं ते. नहीं आना. Not coming पंचा० ७, ११;

अणुसय पु० ( अननुशय ) गर्दने अलाव गवे का अभाव Absence of pride. ( २ ) पश्चात्तापने अलाव. पश्चात्ताप का अभाव. absence of repentance. अणुजो० १३०;

अणुसासणा स्त्री० ( अननुशासना—अननुशासन ) शिक्षाही अलाव शिक्षा का अभाव. Absence of admonition; absence of instruction. नाया० ११;



अणरण त्रि० (अनन्य) मोक्ष मार्ग थी सिद्ध नहि  
 ते, ज्ञानादि मोक्ष मार्ग से अभिन्न Knowledge etc falling with the path  
 leading to salvation “ अणरणं  
 चरमाणे से ण छरणे ण छणावण ” आया०  
 १, ३, २, ११४, विशेष० ३४, १५६, —आराम  
 त्रि० (—आराम—मोक्षमार्गादन्यत् न रमत  
 इति ) मोक्ष मार्ग सिवाय भी० नहि  
 रमनार मुक्ति मार्ग के अतिरिक्त आनंद न  
 मानने वाला (one) who finds delight  
 in nothing except the path  
 that leads to final bliss आया० १,  
 २, ६, १०१, —चेष्ट त्रि० (—चेष्ट ) अन्य—  
 भी० येषा—प्रवृत्ति वगैरते। अन्य प्रवृत्तिहीन  
 ( one ) having a single activity  
 or business. पचा० ४, १६; —दर्शि.  
 त्रि० (—दर्शिन् ) यथायोग्य पदार्थ जेनार,  
 अन्यथा जेनार नहि ते पदार्थ को यथार्थ  
 रीति से ( अन्यथा रीति से नहीं ) देखने वाला—  
 जानने वाला. looking at a thing  
 from the right point of view.  
 आया० १, २, ६, १०१, —नेय त्रि०  
 (—नेय ) अन्यथी—भी० नही न दोरवाय तेवे,  
 स्वयंशुद्ध स्वयंबुद्ध, दूसरे का अनुसरण न  
 करने वाला self-enlightened “ जेतारो  
 अणेसिं अणरणनेया, बुद्धा हु ते अंतकडा हवन्ति ”  
 ( नच स्वयंबुद्धत्वादन्येन नीयन्ते तस्माद्वयोधं  
 कार्यन्त इत्यनन्यनेया. ) सूय० १, १२, १६, —  
 परम पुं० (—परम—न विद्यतेऽन्यः परमः प्रधानो  
 यस्मादित्यनन्यपरम. ) संयम, आरित्र. समय,  
 चारित्र, character, self-restraint  
 “अणरणपरम याणी, यो पमाण कयाह  
 वि” आया० १, ३, ३, ११६, —मण  
 त्रि० (—मनस्—न विद्यते अन्यद् धर्म-  
 ध्यान लक्षणान्मनो यस्य सोऽनन्यमना. )  
 ओ३अश्रितवाणे। एकाग्र चित्त वाला.

with concentrated mind ओव०  
 अणरणत्त न० ( अनन्यत्व ) अनन्यपणं,  
 तन्मयता अनन्यपना, तन्मयता Identity.  
 विशेष० ६४७,

अणरणहय पुं० (—अनाश्रय ) आश्रयनिरोध,  
 नवां डर्भने आवतां अटडाववां ते आश्रय का  
 निरोध; नवीन कर्मों का आश्रय रोकना.  
 Stoppage of the influx of  
 Karma भग० २, ५, परह० १, १,  
 —कर त्रि० (—कर ) आश्रयनिरोध  
 डरनार, नवा डर्भने आवतां अटडावनार  
 आश्रय का निरोध करने वाला, नये कर्मों  
 का आश्रय रोकने वाला stopping the  
 influx of Karma भग० २५, ७,

अणरणहयत्त न० ( अनहस्कत्व—न विद्यते ग्रह-  
 पापं यस्मिन् तत् अनहस्कं तस्य भायोऽञ्ज-  
 हस्कत्वम् ) पापरहितपणं, आश्रयने। अ-  
 भाव पाप रहितपना, आश्रय का अभाव  
 Absence of sin, freedom from  
 sin उत्त० २६, २६,

अणतिक्रमणिज्ज त्रि० ( अनतिक्रमणीय )  
 अतिक्रमणु डरवा योग्य नहि, उल्लंघन योग्य  
 नहि न उल्लाघने योग्य Improper to  
 be transgressed ओव० ३८, भग० २,  
 ५, —वयख त्रि० (—वचन—अनतिक्रमणीय  
 वचन येषां ते ) जेना वचन उल्लंघन डरवा  
 योग्य नथी ते, माता, पिता, गु३ वगैरे जिसका  
 वचन उल्लंघन करने योग्य न हो, जैसे माता,  
 पिता, गुरु आदि whose words cannot  
 be transgressed, e g parents  
 etc “अस्मापिउण अणइक्कमणिज्जवयणा”  
 ओव० ३८;

अणतिविलंबियत्त न० (अनतिविलम्बितत्व)  
 अतिविश्रम्भित भो३यु ते, वचनना उप  
 अतिशयमानो ओ३ विना विषय किये  
 बोलना, वचन के ३५ अतिशयो ने ने ए३



Speech without too much halting; one of the thirty-five Atiśayas of speech. ओव०

अणत्त. त्रि० ( ऋणात् ) ऋणी; ३२७६१२.  
ऋणी. ( One ) sunk in debt, a debtor. प्रव० १६८;

अणत्त. त्रि० ( अनात्र-आ अभिविधिना त्रायन्ते दुःखात्संरुन्तीति आत्रा, न आत्रा अनात्राः ) दुःखी न भयावनार दुःख से न बचाने वाला. Not saving from misery. “ नेरइयाणं भंते ! किं अत्ता पोगगला अणत्ता पोगगला ? नो अत्ता पोगगला अणत्ता पोगगला ” भग० १४, ६;

अणत्तडिय. त्रि० ( अनात्माधिक ) पोतानुं इरेव नहि ते; अस्वीकारेणुं. बिना अपनाया हुआ. Not accepted as one's own. आया० २, १, १, ८, ( २ ) स्वार्थी नहि ते, परमार्थी परमार्थी, जो स्वार्थी न हो unselfish. परह० २, १;

अणत्तपरण त्रि० ( अनात्मप्रज्ञ-न विद्यते आत्मनो हिताय प्रज्ञा येषां ते ) जेनी बुद्धि आत्महित इरवाभा नथी ते; व्यर्थ बुद्धि-वाणे। जिसकी बुद्धि आत्महित करने में तत्पर न हो. ( One ) whose intelligence is not devoted to spiritual progress: ( one ) of futile intellect “ एणे अवसीयमाणे अणत्तपरणे ” आया० १, ६, १, १७२,

अणत्तव. त्रि० ( अनात्मवत् ) इपायथी युद्ध कपाय वाला. Possessed of moral filth in the form of anger, deceit etc ठ० ६,

अणत्थ अ० ( अन्यत्र ) भीजे स्थले; भीजे देहाणे. दूसरे स्थान पर. At another place; elsewhere पञ्च० ११,—नय

त्रि० ( -गत ) भीजे स्थले गये। दूसरे स्थान पर गया हुआ. gone to another place भग० ७, ६;

अणत्थ पुं० ( अनर्थ ) अनर्थ हेतु; अेध्वी-सभो गौण परिग्रह अनर्थ हेतु; इकवीसवो गौण परिग्रह. A material possession leading to misfortune; the twenty-first Gauna Pari-graha परह० १, ५; पंचा० ७, ४१; ( २ ) त्रि० अर्थरहित; निप्रयोजन वे मतलब बिना प्रयोजन. purposeless. नाया० ५, ८, १६, १७, —दंड. पुं० ( -दण्ड ) प्रयोजन बिना कर्मबंधनमां पडवुं ते; बिना मतलब कर्मबंधनमां पडवुं ते. बिना प्रयोजन कर्मबंधन करना या कर्मफल से दंडित होना. taking in Karma without purpose. ओव०—दंडवत्. पुं० ( -दण्डवत् ) बिना प्रयोजन आत्माने दंडावा न देवे ते; आवडनु आडुं मत आवक का न वों मत, जिसमें वे काम आत्मा को नहीं दंडाते. the eighth vow of a Jaina layman viz. guarding the soul against unnecessary evils ( i. e. evil Karmas ). प्रव० २८३; —फलद. त्रि० ( -फलद ) अनर्थकारी इव आपनार अनर्थकारी फल देने वाला. productive of a disastrous fruit or result. पंचा० ३, ३७;—वाय. पुं० ( -वाद ) निप्रयोजन बोधवु ते बिना प्रयोजन बोलना speaking without any purpose परह० २, २;

अणत्थंतर न० ( अनर्थान्तर-न विद्यतेऽर्थान्तरं यस्य तत् ) अेध्वी अर्थवाणे। शब्द एकही अर्थ वाला शब्द. A word having only one meaning. विशेष० २२०२; अणत्थग त्रि० ( अनर्थक ) निप्रयोजन वे

काम. Causeless; purposeless  
पंचा० ६, ३६;

**अणत्थमियसंकल्प.** त्रि० ( अनस्तमित-  
संकल्प ) जेने दिवसमां आवानो संकल्प  
छे ते. दिवस मे भोजन करने का जिसका  
संकल्प हो ( One ) who has vowed  
to take food during daytime  
only वेय० ५, ६,

**अणत्थय.** त्रि० ( अनर्थक ) निरर्थक. निरर्थक,  
व्यर्थ Useless, fruitless विशेष० २२६,

**अणपरिणय पु०** ( अणपक्षिक-अप्रज्ञसिक )  
कुतूहलप्रिय व्यंतर देवतानी ओके जत;  
व्यंतरनी सोल जतमांती नवमी जत कौतू-  
हल प्रिय व्यंतर देवता की एक जाति, व्यंतरों  
की सोलह जातियों में से नवीं जाति  
An order of celestial beings  
( the ninth of the sixteen  
orders ) indulging in pranks  
भग० १०, २, पञ्च० २, परह० १, ४, ओव०  
२४;

**अणपुराण.** न० ( अन्नपुराण ) अन्न आपत्तां  
पुण्य-शुल कर्म उपार्जन थाय ते अन्न दान  
से उत्पन्न होने वाला पुण्य. Good Karma  
earned by giving food ठा० ६, १,

**अणप्पगमथ.** त्रि० ( अनर्प्यग्रन्थ ) आध्यात्मिक  
ग्रंथनी माझ्छे जेने तेने आपवा योग्य नहि  
ते, अर्पण करवा अयोग्य ज्ञानादि आध्यात्मिक  
ग्रंथ के समान प्रत्येक को न देने योग्य ज्ञान आदि  
Spiritual knowledge etc which  
cannot be like a sacred book  
cannot be transferred from  
hand to hand ओव०

**अणप्पगमंथ पु०** ( अनल्पग्रन्थ ) बहुसूत्री  
बहुसूत्री, बहुत से सूत्रों वाला One well-  
versed in many Sūtras ओव०

**अणप्पगमंथ त्रि०** ( अनात्मग्रन्थ-अविद्यमान

आत्मनः सम्बन्धी ग्रन्थो हिरण्यादिर्यस्य स.)  
परिग्रह रहित; अपरिग्रही परिग्रह रहित;  
अपरिग्रही. Having no worldly  
possessions ओव०

**अणप्पिय न०** ( अनर्पित ) अविशेषित; विशेषण  
विशिष्ट न करे, अविशिष्ट, सामान्य विशेष-  
ता रहित, सामान्य, साधारण Possessed  
of common attributes; similar,  
alike ठा० १०; विशेष० २१५३,—णय  
पुं० ( -नय-अनर्पितमविशेषितं सामान्य  
मुच्यते, तद्वादी यो नयः सः ) सर्व वस्तु सा-  
मान्य छे ओम विशेष-निरपेक्ष सामान्य ग्राही  
नयविशेष सम्पूर्ण वस्तुओं को सामान्य मानने  
वाला-सामान्यग्राही नयविशेष a stand-  
point which regards all things  
alike because they possess  
some common attributes विशेष०  
२१५३,

**अणब्भुट्टिय त्रि०** ( अनभ्युत्थित ) धर्म  
करवाने तैयार न थये, धर्म करने को जो  
उद्यत न हुआ हो Shaking from  
duty नाया० ५,

**अणब्भुवगम पु०** ( अनभ्युपगम ) अस्वीकार  
अस्वीकार Non-acceptance क०  
प० ५, २८,

**अणब्भुवगय त्रि०** ( अनभ्युपगत ) श्रुत  
संप्रदाने न पामे, आत्माने न जलुनार  
आत्मा को न जानने वाला Not initiated  
into the nature of the soul  
विशेष० १४४७,

**अणभिश्रोग.** त्रि० ( अनभियोग ) यथा  
करवा योग्य नहि ते, दुष्टो करवा योग्य नहि  
ते आक्रमण करने के अयोग्य; चढाई के  
अयोग्य. Unworthy of attack  
unsuitable for attack ओव०

**अणभिकत त्रि०** ( अनभिकान्त ) उद्गी

गयेल नहि, अनुद्वंद्वित नहा उलांघा हुआ.  
Not transgressed; not violated  
आया० १, ४, ४, १३८;—किरिया  
स्त्री० (—क्रिया ) जेभां भील डोछ मतना  
लिखु उतर्या नथी जेवी जग्या ऐसा स्थान  
जहां दूसरे मत का भिक्षु न उतरा हो. a  
place where ascetics of another  
faith have not put up आया० २,  
२, २, ८१,

अणभिगम पुं० ( अनभिगम ) विस्तार पूर्वक  
बोधनो अभाव विस्तृत शिक्षा का अभाव.  
Not containing instructions  
in details. भग० १, ६, ( २ ) समझित-  
नी अप्राप्ति. समकित (सम्यक्त्व) की अप्राप्ति  
non-attainment of right belief.  
“अवोहिण् अणभिगमेणं” सूय० २, ७, ३८;

अणभिगगहिय त्रि० ( अनभिगगहिक ) दुमत-  
नी पकड नहि डरनार कुमति की पकड न  
करने वाला ( One ) who does not  
obstinately hold to or stick  
to heretical tenets ठा० २, १;

अणभिगगहिय त्रि० ( अनभिगगहीत )  
पकड डरेल नहि; आग्रहणी पकडेल नहि  
न पकडा हुआ, आग्रह पूर्वक न पकडा हुआ  
Not held, not persistently held  
प्रव० ६७३; उक्त० २८, २६; पञ्च० १,  
—कुदिहि त्रि० (—कुदष्टि—अनभिगगहीता  
अनङ्गीकृता कुदष्टिबौद्धमतरूपा येनासौ )  
जेने मिथ्यात्ववादी मतनो अंगीकार डरेल  
नहि ते जिसने मिथ्यावादी मत का अंगीकार  
नहीं किया है ( one ) who has not  
accepted tenets of heretical  
creeds like those of Buddha  
etc उक्त० २८, २६ प्रव० ६७३,—सिज्जा-  
सणिय त्रि० (—जग्गामनिक ) शय्यासन  
विषयक आसिग्रहणी रहित जग्गामन

सम्बन्धी अभिग्रह से रहित. not practis-  
ing any vow relating to things  
used for bedding and seat.  
कप्प० ६, ५३;

अणभिगगहिया स्त्री० ( अनभिगगहीता ) जेना  
अर्थ जग्याय नहि जेवी भाषा जिसका अर्थ न  
जाना जाय ऐसी अव्यक्त भाषा. Unin-  
telligible or incomprehensible  
speech पन्न० ११; भग० १०, ३,  
प्रव० ६०२;

अणभिगण त्रि० ( अनभिज्ञ ) अजान, भूर्भ.  
अजान, मूर्ख. Ignorant; foolish.  
विशे० १६५६, सु० च० ७, २८६;

अणभिधेय त्रि० ( अनभिधेय ) अवाच्य; नहि  
डहेवा योग्य न कहने योग्य. Unworthy  
of utterance, unfit to be told.  
विशे २५;

अणभिभूअ-य त्रि० ( अनभिभूत ) पराजित  
नहि पाभेल. अपराजित Not defeated,  
not overpowered आया० १, ५, ६,  
१६७,

अणभिलप्प त्रि० ( अनभिलाप्य ) बोधवाने  
अयोग्य, वाणीने अयोग्यर जो कहा न जा सके,  
बोलने के अयोग्य Unspeakable, inex-  
pressible विशे० १४१,

अणभिलसेमाण व० क० त्रि० ( — अनभि-  
लपमाण—अनभिलपत् ) न धर्यतो.  
इच्छा न करता हुआ Not desiring.  
नाया० १, उक्त० २६, ३३;

अणभिबुट्टि स्त्री० ( अनभिबुट्टि ) अनावृष्टि;  
वरसादनो अभाव अनावृष्टि. Drought,  
absence of rain प्रव० ४५०;

अणभिस्संग पुं० ( अनभिष्वङ्ग ) प्रतिबन्ध  
रहित, संग-लेपरहित साधु प्रतिबन्ध रहित;  
संग-परिग्रह रहित साधु Free from

attachment; e g. a Sādhu. पंचा०  
१४, १७,

अणभिस्संगओ अ० (अनभिष्वङ्गतस्) प्रति-  
पक्ष रहित पक्षे प्रतिबन्ध रहितपक्ष से  
Without attachment पंचा० ४, ३५,

अणभिहरोमाण व०कृ० त्रि० (अनभिघ्नत्) न  
हृष्यते, न घात करतो. न मारता  
हुआ, न घात करता हुआ Not  
killing. “ तपुणं अम्हे पुढवि अपच्चेमाणा  
अणभिहरोमाणा ” भग० ८, ७,

अणभिहाण, त्रि० (अनभिधान) नाम रहित  
नाम रहित. Nameless विशेष० ६१,

अणारिह. त्रि० (अनर्ह) अयोग्य; नादायक  
अयोग्य Unfit, unworthy नाया० १,  
भग० १५, १;

अणाल पुं० (अनल-नास्ति अल पर्याप्तिर्य-  
स्य) अग्नि आग. Fīro परह० १, १,  
(२) त्रि० अन्नेग, नादायक अयोग्य unfit,  
unworthy निसी० ११, ३३, ३५,

अणलंकिय. त्रि० (अनलकृत) अलङ्कार वगर-  
नो; आभूषणरहित आभूषणादि से रहित  
Devoid of ornaments निसी० १२,  
३४; उक्त० ३०, २२, भग० २, १, १८, ५,  
—विभूसिय त्रि० (—विभूषित) अलङ्कार  
अने विभूषा-वस्त्रादिकनी शोभायी रहित  
अलङ्कार और वस्त्रादि की शोभा रहित.  
devoid of the splendour of orna-  
ments, dress etc भग० २, १,

अणलक्खिय त्रि० (अलक्षित) अज्ञात  
नहीं जाना हुआ Unknown, not  
marked पिं० नि० ३६५;

अणलिय न० (अनलिक) लुप्त नहि ते, सत्य  
सत्य Not-falsehood, truth. भक्त०  
१५७,

अणलुक्क. त्रि० (अनलोक्य-लोकितुं योग्यो  
लोक्य, न लोक्य. अलोक्य, न अलोक्य

अनलोक्यः) नजरे देखाय तेनु, दृष्टिगोचर.  
दृष्टि से देख सकने योग्य, दृष्टिगोचर  
Capable of being seen, visible.  
‘ अणलुक्के लुक्कमिति अप्पाणं मच्चइ ”  
भग० १५, १,

अणल्लियणिज्ज. त्रि० (—अनाश्रयणीय) आ-  
श्रय करवा योग्य नहि आश्रय करने  
के अयोग्य. Unfit to be resorted to;  
unworthy. ‘ विसवल्लिअणल्लियणिज्जाओ ’  
तंडु०

अणव पुं० (अणवत्) द्विसप्तं २६ भुं  
लोकोत्तर मुहूर्त दिन का २६ वाँ लोकोत्तर  
मुहूर्त The twenty-sixth Lokotta-  
ra Muhūrta of a day जं० प० ७,  
१५२, सू० प० १०;

अणवकंखमाण त्रि० (अनवकाङ्क्षमाण-अ-  
नवकाङ्क्षत्) न धृष्टतो थोडा, भोगनी धृष्ट  
नहि राखतो इच्छा न करता हुआ, भोग की  
इच्छा न रखता हुआ Not desiring, not  
desiring enjoyments “ सुसवडा  
पंचहिं संवरेहिं इह जीवियं अणवकंखमाणा ”  
उक्त० १२, ४२, नाया० १, १६, भग० २, १;  
३, १, काप० ६, ५१, आया० १, ६, ३, १८७,  
१, ७, ३, २०७, ओव० ३६, जं० प० ३, ७०,

अणवकंखवत्ति. न० (अनवकाङ्क्षवत्ति-अनव-  
काङ्क्षा परप्राणनिरपेक्षा स्वगतापायपरि-  
हारनिरपेक्षा वा वृत्तिर्वर्तन यत्र वैरे तत्तथा )  
ज्मेमा परप्राणुनी अथवा पोताना पापना  
परिहारनी अपेक्षा राखवामा नथी आवती  
ऐसा वर्तनवाणु पैर-वेरभाव निममें दुमरे  
के प्राणों की अथवा अपने पाप के परिहार की  
अपेक्षा नहीं रखी जाती ऐसी वृत्ति वाला वैरभाव.  
Feeling of hostility devoid of  
regard for another's life as also  
for the sin incurred by destroy-  
ing it The attitude of the

mind being as careless about another's life as about one's own sinlessness. भग० १, ८;

**अणवकंसवत्तिया.** स्त्री० ( अनवकाङ्क्षप्रत्यया—अनवकाङ्क्षा स्वशरीराद्यनपेक्षत्वं सैव प्रत्ययो यस्याः सा अनवकाङ्क्षप्रत्यया ) पो-  
तानी के परनी उद्गीनी अपेक्षा राभ्या विना  
साहस्यी पापक्रिया थाय ते. अपनो या दूसरे  
की जिदंगी की परवाह किये विना जो साहस  
से पाप क्रिया हो वह Sinful action  
rashly done without regard for  
one's own or another's life. “अण-  
वकंसवत्तिया किरिया दुविहा पयणत्ता, आय-  
सरिरअणवकंसवत्तिया चेव परसरिरअणव-  
कंसवत्तिया चेव” ठा० २, १;

**अणवकंखा.** स्त्री० ( अनवकाङ्क्षा ) धृञिष्ठानो  
अभाव. इच्छा का अभाव. Absence of  
desire. ठा० १, १;

**अणवगत.** त्रि० ( अनवगत ) न ज्ञाते.  
नहीं जाना हुआ. Not known. ठा०  
४, ४;

**अणवगल्ल.** त्रि० ( अनवकल्प—वार्द्धक्यरहित )  
जराजर्णु नहि थयेत्त; जरावगरेतो. वृद्धावस्था  
से रहित; जो जराजीर्ण नहीं हुआ है Not  
infirm through old age. अणुजो०  
१३८, भग० ६, ७,

**अणवज्ज.** त्रि० ( अनवद्य ) निर्दोष, पाप रहि-  
त. निर्दोष; पाप रहित. Innocent; not  
guilty; faultless. ( २ ) न० पाप-  
दोषनो अभाव. पाप—दोष का अभाव.  
innocence; absence of guilt  
आघ० नि० ७४६; दस० ७, ३; ४६;  
भग० ५, ६; विशेष० ७२; ६६८;—भासा.  
स्त्री० ( —भाषा ) पाप—दोषरहित भाषा;  
निरवद्य भाषा; दोषने दुःख न उपज्जावे तेवी

भाषा पाप—दोष रहित भाषा; निरवद्य भाषा;  
किसीको दुःख न देने वाली भाषा.  
faultless and harmless speech.  
भग० १६, २;

**अणवदृष्ट्य.** न० ( अनवस्थाप्य ) दोषभाटे  
साधुने आपवाना प्रायश्चित्तनो ऐक प्रकार;  
जेभां अमुक वप्पतमुधी साधुने व्रतधी ञ्हार  
राप्पी ते पछी देवामां आवे तेवुं ऐक अय-  
श्चित्त. दोषी साधु को देने योग्य एक प्रकार का  
प्रायश्चित्त; जिसमें अमुक समय तक साधु को व्रत  
बाहिर रख फिर उसे साधुत्व में ले लेते  
हैं ऐसा एक प्रायश्चित्त का प्रकार.  
A mode of administering  
expiation to a monk for a sin,  
by temporarily expelling him  
from the fraternity of monks.  
आव० १६; प्रव० ७६२; वव० २, ७;  
( २ ) त्रि० अनवस्थाप्य नामे प्रायश्चित्त-  
ने योय्य. अनवस्थाप्य नामक प्रायश्चित्त के  
योग्य. ( one ) deserving of the ex-  
piation named Anavasthāpya.  
वेय० ४, ३;—अरिह. न० ( —अर्ह—यस्मि-  
न्नासेविते कञ्चन कालं व्रतेष्वनवस्थाप्यं  
कृत्वा पश्चाच्चीर्यतया तदोषोपरतो व्रतेषु  
स्थाप्यते तदनवस्थाप्यार्हम् ) नवमुं प्रायश्चित्त;  
के जे आपवाने, दोष सेवनार साधुने अमुक  
वप्पत मुधी व्रत ञ्हार राप्पी, तप डरावी, ते दो-  
षनी निवृत्ति थया पछी व्रतनुं आरोपणु  
डरवामां आवे ते प्रायश्चित्त नवां प्रायश्चित्त;  
जिसके द्वारा दोषी साधु को अमुक समय तक व्रत  
बाहिर रखकर तप कराने के बाद दोष की  
निवृत्ति हो जाने पर पाँछे उसे व्रत अंगीकार  
कराया जाय वह प्रायश्चित्त. the ninth  
variety of expiation; a Sādhu  
temporarily debarred from  
observing a vow and made to



undergo penance. ठा० १०; भग० २५, ७,

**अणवद्विय.** त्रि० ( अनवस्थित ) अस्थिर. Unsteady. उवा० १, ५३; ( २ ) अनियतप्रमाणवाणो; जेतुं ओक सरपुं प्रमाण नथी ते. अनियत प्रमाण वाला, जिसका प्रमाण एक समान न हो varying, changing. “ अणवद्विआ णं तत्थ खलु राहंदिया पणत्ता ” चं० प० ८; प्रव० २८४; तंडु० २३;—करण. न० ( -करण ) साभायिकनो वभत पुरे तथा पडेला पाणवु ते, आवडना नवभा वतनो पांयभो अतिचार आवक के ६ वें वत का ५ वाँ अतिचार, सामायिक का समय होने से पहिले ही पालन कर लेना. the fifth partial violation ( Atichāra ) of the 9th vow of a Jaina layman, viz failing to observe the time fixed for Sāmāyika. प्रव० २८४,—संठारण न० ( -संस्थान ) ओक ठेकाणु स्थिति न करपी ते; निरंतर गति करपी ते एक स्थान पर स्थित न रहना, निरंतर गमन करना perpetual motion जीवा० ३,

**अणवणीयत्त.** न० ( अनपनीतत्व ) डारक, डाण, वयन, लिंग आदि दोषथी अयुक्त, सत्यवयननो २५ भो अतिशय कारक, काल, वचन, लिङ्ग आदि दोषों से अयुक्त, सत्य वचन का २५ वाँ अतिशय Not being faulty in the matter of case-inflection, tense, gender etc, the 25th supernatural manifestation of truthfulness in speech. सम० ३५;

**अणवरिणाय पुं०** ( अणपन्निक=अप्रज्ञप्तिक ) व्यन्तर देवानी ओक जल व्यन्तर देवों की छोटी ( प्रथम ) जाति के देव. A deity of the minor class of

Vyantara gods. पन्न० २, भग० १०, २;

**अणवत्तप्पया स्त्री०** ( अनवभ्राप्यता ) अंग हीनता. अंग हीनता. Bodily defect; deformity of limbs of the body. ठा० ८,

**अणवत्था स्त्री०** ( अनवस्था ) अनवस्था दोष; जे दलीलनो कयांय पणु अवस्थान न थाय-छेडो न आवेत्यां अनवस्था दोष उपस्थित थाय छे अनवस्था दोष, जहाँ दलील-युक्ति का कहीं भी अवस्थान न हो-अन्त न हो उसे अनवस्था दोष कहते हैं A fallacy in logic leading to ad infinitum argument विशेष० १५, महा० प० ३१; अणुजो० १४८;

**अणवदग्ग.** त्रि० ( अनवनताग्र-अवनत-मासन्नमग्रमन्तो यस्य तत्तथा, तन्निपेधादनवनताग्रम् ) अनंत, छेडवगरनुं अन्त रहित, नित्य, अनन्त Endless; perpetual. भग० १, १;

**अणवदग्ग त्रि०** ( अनवदग्र-न विद्यतेऽवदग्रं पर्यन्तो यस्य सोऽयमनवदग्र इति ) अंत वगरनुं, छेड वगरनुं, अनंत. अंत रहित, नित्य; अनंत Perpetual; endless. भग० १, १, २, १, ५, ६; ७, ७, ६, ३२; १२, २; १५, १; १६, ६; नाया० २; ओव० २१; परह० १, ३, सूय० २, २, ८२; ठा० २, १;

**अणवयवक्खमाणा व० कृ० त्रि०** ( अनपेक्षयत् ) न अपेक्षा राभते; न जेतो अपेक्षा न रखता हुआ; न देखता हुआ Not seeing, not desiring, not expecting “ अणवयवक्खमाणा सेलणुं जक्खेयं ” नाया० ६;

**अणवयवविखत्ता.** सं० कृ० अ० ( अनन्वेक्ष्य ) न जेतने, जेत्या बिना न देखकर, बिना देखे. Without seeing or having seen “ जेयं नो पम् मग्गयो रुवाइं



अणवयक्खित्ता णं पासित्तण् ” भग० ७, ७;  
अणवयगग त्रि० ( अनवदग्र ) जुओ। ‘ अण-  
वदग्र ’ श०६. देखो ‘ अणवदग्र ’ शब्द  
Vide ‘ अणवदग्र ’. भग० १, १;

अणवरय. त्रि० ( अनवरत्त ) निरंतर; हमेश  
सदा, हमेशह Always; perpetually.  
नाया० १, भग० ६, ३३, सु० च० १, १११,  
ओव० ३०, जं० प० २, ३०; पंचा० ५, ४४;

अणवराह त्रि० ( अनपराध ) अपराध  
रहित. अपराध रहित Faultless;  
guiltless विशेष १८४०;

अणविकखया स्त्री० ( अनपेक्षा ) अपेक्षा-दृष्टि-  
रूप न राखी ते. देख रेख न रखना  
Absence of proper supervision.  
गच्छा० ३८,

अणवेक्खमाण. व० क० त्रि० ( अनपेक्षमाण )  
अपेक्षा न राखतो. अपेक्षा न रखता हुआ  
Not expecting. “ धुणे उरालं  
अणवेहमाणे, चिच्चाण सोयं अणवेक्खमाणे ”  
सूय० १, १०, ११; नाया० १६,

अणस्सण न० ( अनशन ) हमेशनेभाटे डे  
थोडा वषतनेभाटे अनपाणीतो त्याग  
करेते ते; उपवास अथवा सथारे सदा के  
लिये या अल्प काल के लिये अन्नजल का त्याग  
करना, उपवास अथवा संथारा Fasting;  
giving up food and water for  
some time or permanently  
ओव० १६; भग० २, १, ३, १; २५, ७, नाया०  
५, ८; १४, १५; सम० ६, ठा० ६, १; सूय० १,  
२, १, १४, उत्त० ३०, ८; निर० ३, १;  
प्रव० २७१; नाया० ४०

अणसायणा. स्त्री० ( अनाशातना ) शु३ आदि-  
नी आशातना ( अनादर ) न करी ते गुरु  
आदि की आशातना ( अनादर ) न करना.  
Not showing disrespect or il-

reverence to a preceptor etc.  
प्रव० १५८;

अणस्सादेमाण व० क० त्रि० ( अनासादयत् )  
अणुपामतो, न प्राप्त करतो प्राप्त न करता  
हुआ Not obtaining “ पव्वयं वा  
विसमं वा अणस्सादेमाणे ” भग० १५, १,  
\*अणह. त्रि० ( अघत ) नाश वगरनुं. नाश रहित;  
नित्य Indestructible. सु० च० २,  
३४,—समग. त्रि० ( —समग्र ) सहिस-  
क्षामत भाव अने सहिसक्षामत दुहुंयवाणो;  
रस्तामां योरादिक्थी जेनुं धन लुंटायेलुं नथी  
ते सुरक्षित धन और कुटुंब वाला, रास्ते मे  
चोर वगैरह से जो न लूटा गया हो वह. with  
property and family quite safe.  
“ लद्धे कयकज्जे अणहसमग्गे णियगं वरं  
हव्वमाणे ” नाया० ८; ६; १८;

अणह. त्रि० ( अनघ ) पाप वगरनुं; निरवध.  
पाप से रहित, पवित्र, निर्दोष Sinless;  
faultless, pure पंचा० १६, ४५;  
ओव० ३२; नाया० ८; प्रव० ६६६;

अणहय त्रि० ( अनाहत ) नहु; वापरैलु नहि  
नया, व्यवहार में न लाया हुआ New;  
unused जीवा० ३, ३;

अणहार पुं० ( अनाहार ) अणुहार ( आ-  
हार न लेवे ते ) मार्गणु-हार अणाहा  
रक मार्गणा—द्वार. Fasting क० ग०  
४, २१;

अणहिगय. त्रि० ( अनधिगत ) अगीतार्थ,  
शास्त्रवेत्ता नहि ते शास्त्रो को नहीं जानने  
वाला, शास्त्रज्ञान रहित Not conversant  
with Śāstras विशेष ३७७;

अणहिज्जमाण त्रि० ( अनधीयमान—यान )  
न लणुतो न पढ़ता हुआ Not study-  
ing “ ते विज्जभावं अणहिज्जमाणा,  
आहंसु विज्जा परिमोक्खमेव ” सूय० १,  
१२, १०,

**अणहिरिविद्ध.** त्रि० ( अनभिनिविष्ट ) अलि निवेश-कुमतना आग्रही रहित. कुमत के आग्रह से रहित Not attached to, free from, insistence on false doctrines पंचा० ३, २८;

**अणहिल्लपाडणगणयर** न० ( प्रभासपत्तन-नगर ) सौराष्ट्र-गुर्जर प्रान्तमां आवेक्ष ओ नामनुं नगर; प्रभासपाटण गुजरात-काठियावाड़ मे सरस्वती नदी के तट पर एक प्रसिद्ध तीर्थस्थान; प्रभासपाटन. Name of a town in Saurāstra in Gujarāt, also named Prabhāsa-Pātana भग० २४, १;

**अणहीण** त्रि० ( अनधीन ) स्वाधीन, परतंत्र नहि स्वतंत्र; स्वाधीन Independent विशेष० १८७५;

**अणहीय** त्रि० ( अनधीत ) अभ्यास न करेक्ष; न लक्षेक्ष विना पढा हुआ. Uneducated गच्छा० ४३,—परमत्थ. पु० (—परमार्थ-अनधीता अनभ्यस्ता परमार्था आगमरहस्यानि यैस्तेऽनधीतपरमार्था. ) अगीतार्थी; शास्त्रवेत्ता नहि ते शास्त्रज्ञान रहित, शास्त्रों को न जानने वाला. one, not conversant with the truths of Śāstras. “ जे अणहीयपरमत्थे, गोयमा ! संजण भवे. ” गच्छा० ४३,

**अणाइ** त्रि० ( अनादि-न विद्यते आदिः प्राथम्यसस्येत्यनादिः ) आदि-शर्यात वगरनु, अनादि द्वाण्थी आलुं आवतु आदि रहित, अनादि काल से चला आता हुआ Beginningless, coming down from eternity ओव० २१, छ० ३, १, ओघ० नि० ७७५; क० गं० ५, ४; क० प० २, ६, विशेष० ५३७,—**णिहण** त्रि० (—निधन) अनादि अनन्त; जेना आदि अने अन्त नथी तेनुं जिसका आदि और अन्त न हो;

अनादि अनन्त. having neither beginning nor end; eternal. सम०—संताण पुं० (—सन्तान) अनादि प्रवाह; अनादि परपर. अनादि प्रवाह, अनादि परम्परा. uninterrupted, stretching from eternity “ अणाइसंताणकम्मदंधण-किंसेसचिक्खिहसुहुत्तारं ” ओव० परह० २, ३;—**सपज्जवसिअ** त्रि० (—सपर्यवसित ) जेनी आदि नथी पण पर्यवसान-छे३ छे ते. जिसका आदि न हो परन्तु अंत हो. ( one ) without a beginning but having an end, beginningless but not endless प्रव० १३२१,

**अणाइअ-य** त्रि० ( अनादिक ) अनादि; उत्पत्ति रहित, शर्यात वगरनुं अनादि; उत्पत्ति रहित Without a beginning, without creation भग० २, १; ८, ८; उत्त० ३६, ८, आया० १, ७, १, ११६, प्रव० १३२१,—**सिद्धंत.** पुं० (—सिद्धान्त) अनादि द्वाण्थी सिद्ध थयेक्ष-रु० थयेक्ष सिद्धात अनादि काल से स्थापित, अनादि काल से रूढि में आया हुआ. established from eternity. अणुजो० १३१,

**अणाइअ** त्रि० ( अज्ञातिक ) स्वजन-कुटुम्ब वगरने विना कुटुम्ब का Destitute of relatives. भग० १, १,

**अणाइअ-य** त्रि० ( अणातीत-अणमणकं पापमतिशयेनेत गतमणातीतम् ) पापने प्राप्त थयेक्ष पाप युक्त; पाप को प्राप्त हुआ Passing into the limit of sin, become sinful; constituted into sin भग० १, १,

**अणाइअ-य.** त्रि० ( अणातीत ) कुटुम्बाणे; देण्डार; करन्दार, कर्जदार, ऋणी. A debtor भग० १, १,

अणाइज्ज. न० ( अनादेय ) नामधर्मेणी ओइ  
प्रकृति डे जेना उदयथी भाणुसनुं वयन  
मान्य न थाय नामकर्म की एक प्रकृति, जिसके  
उदय से मनुष्य का वचन मान्य न हो. A  
variety of Nāma-Karma by the  
rise of which a man's words  
are not accepted (even though  
they be true ). क० गं० १, २७;  
—दुग, न० ( -द्विक ) अनादेय नाम अने  
अजसोधीति नाम. अनादेय नाम और अयशः  
कीर्ति नाम. the two Nāma-Ka-  
rmas viz Anādeya-Nāma and  
Ayaśahkīrti-Nāma. क० गं० २, १६,  
—वयण त्रि० ( -वचन-अनादेयं वचनं येषां  
ते तथा ) अनादेय वयनवाणुं; जेतुं वयन-  
डोई पाणु मान्य न डरे ते. अनादेय  
वचन वाला; जिसके वचन का कोई भी  
मान न करे. one uttering words  
doomed to disbelief भग० ७, ६,

अणाइरण त्रि० ( अनाचीर्ण ) साधुने आयरवा  
योग्य नहि; अडरपनीय; पर अनायीर्णुमानो  
गमे ते ओइ साधु के आचरण के अयोग्य,  
अकल्पनीय; ५२ अनाचीर्णो मे से कोई भी  
एक. Unworthy of being practis-  
ed by an ascetic, one of the  
fifty-two practices unworthy  
of a Sādhu “ तेसि मेयमणाइरणं,  
निगंयाणं महेसिण ॥ १ ॥ उहेसिय कीयगढं,  
नियगं अभिहडाणि य । राहभत्ते सिणाणि य,  
गंधमल्ले य वियणे ॥ २ ॥ संनिहिगिहि-  
मत्ते य, रायपिडे किमिच्छए । सवाहणं वंत-  
पहोयणा य, संपुच्छणा देहपलोयणा य ॥ ३ ॥  
अट्ठावए य नावीए, दत्तस्स य धारणाट्ठाए । तेगि-  
च्छं पाहणा पाए, समारंभं च जोइयो ॥ ४ ॥  
सिज्जायरपिंडं च, आसंदी पलियंकए । गिहंतर  
निसिज्जा य, गायस्सुव्वट्ठणाणि य ॥ ५ ॥ गिहि-

यो वेयावदियं, जा य आजीववत्तिया । तत्ता  
निदुडभोइत्तं, आउरस्सरणाणि य ॥ ६ ॥ मूळए  
सिगवेरे य, उच्छुखंडे अनिच्चुडे । कंदे मूले य  
सच्चित्ते, फले बीए य आमए ॥ ७ ॥ सोववले  
सिंधवे कोणे, रोमा लोणे य आमए । सामुदे  
पंसुखारे य, कालालोणे य आमए ॥ ८ ॥  
धुवणेत्ति वमणे य, वत्थोक्कम्मविरेयणे । अंजणे  
दंतवणे य, गायान्भंगविभूसणे ॥ ९ ॥ दस०  
३, १-६;

अणाइन्न. त्रि० ( अनाचीर्ण ) साधुने आयरवा  
योग्य नहि साधु के न आचरणे योग्य.  
Not worthy of being practis-  
ed by a Sādhu or an ascetic.  
प्रव० १०१६;

अणाइल त्रि० ( अनाविल ) स्वच्छ; भेक्ष  
रहित; पाप रहित. स्वच्छ, मैल रहित; पाप  
रहित Pure, free from sin. “ अणाइ-  
ले या अकसाई भिक्खू, सकेव देवाहिवाई  
जुइमं ” सूय० १, ६, ८; १, १४, २१;  
१, १५, १२; परह० २, १;

अणाउ. पुं० ( अनायुष्-न विद्यते चतुर्विधम-  
प्यायुर्यस्य स भवत्यनायुः ) आयुः कर्म रहित;  
सिद्ध भगवान् सिद्ध भगवान्; आयु. कर्म  
रहित A Siddha; one freed from  
Āyuhkarma. ( २ ) जिन-जेने इरीथी  
उत्पन्न थवु नथी तेवा डेवणी, तीर्थंडर वगेरे.  
जिन-जिन्हें पुनर्जन्म धारण न करना हो; तीर्थ-  
कर, केवली वगैरह. Kevalis etc. freed  
from rebirth. “ अणुत्तरे सम्मज्जगंघि-  
विज्जं, गंधा अतीते अभए अणाउ ” सूय० १,  
६, २६; प्रव० १२६२; ( ३ ) अवविशेष.  
एक प्रकार का जीव. a kind of living  
being. ठा० २, १;

अणाउअ. पुं० ( अनायुष्क ) लुप्त “ अणाउ ”  
शब्द. देखो “ अणाउ ” शब्द. Vide  
“ अणाउ ” अणुजो० १२७;

**अणाउज्जिय.** त्रि० ( अनायोगिक ) उप-  
योग रहित; असावधान उपयोग रहित,  
असावधान Utility; unwary; un-  
circumspect. “उदाहु अणाउज्जिया?”  
भग० २, ५;

**अणाउट्टि** स्त्री० ( अनाकुट्टि ) हिंसानो  
अभाव; अहिंसा हिंसा का अभाव, अहिंसा  
Absence of killing or giving  
pain; non-injury. “अइवत्तियं अणा-  
उट्टि, सयमनेसिं अकरणायाए” आया० १,  
६, १, १७;

**अणाउट्टि.** त्रि० ( अनाकुट्टिन् ) अहिंसक;  
हिंसा न करना. अहिंसक; हिंसा न करने  
वाला Abstaining from killing or  
giving pain; one who abstains  
from killing or injuring others  
“जायं काएणाउट्टी, अबुहो जं च हिंसति”  
सूय० १, १, २, २५;

**अणाउत्त.** त्रि० ( अनायुक्त ) उपयोग रहित;  
उपयोग विनानो; असावधेय उपयोग रहित,  
असावधान. Unwary, without pro-  
per circumspection. ठ० २, १;  
उत्त० १७, ६, भग० ७, १; २५, ७,—आ-  
इणया स्त्री० (—आदानता ) विना उपयोग  
वस्तु देवा भूकवाथी लागती किया-कर्मबंध,  
अणुभोगप्रत्ययक्रियानो अेक भेद असावधानी  
से वस्तु उठाने और रखने की किया से होने  
वाला कर्मबन्ध; अणाभोगप्रत्ययक्रिया का  
एक भेद Karma incurred by tak-  
ing up or laying down a thing  
without proper circumspection;  
a variety of Kriyā called Anā-  
bhogapratyaya ठ० २, १,—गमण  
न० (—गमन ) उपयोग विना आलवु ते,  
उपयोग शून्य गति करवी ते उपयोग विना  
चलना movement without proper

circumspection भग० २५, ७,  
—पमज्जणया स्त्री० ( —प्रमार्जनता—  
प्रमार्जन ) उपयोग रहित पुनवाथी लागती  
क्रिया-कर्मबंध असावधानी के साथ पूजने से  
होने वाला कर्मबन्ध. Karma incurred  
by brushing off carelessly, or  
without proper circumspection.  
ठ० २, १,

**अणाउल.** त्रि० ( अनाकुल ) आकुलता रहित  
आकुलता रहित Untroubled; un-  
distracted “जस्थथमिए अणाउले,  
समविसमाइ सुणी हियासए” सूय० १, २,  
२, १४; नाया० ८, दस० ५, १, १३,

**अणाकुल** त्रि० ( अनाकुल ) लुओ ‘अणा-  
उल’ शब्द देखो ‘अणाउल’ शब्द. Vide  
“अणाउल”. पंचा० ५, ३६;

**अणागअ-य** पुं० ( अनागत ) भविष्य काल;  
आवतो काल भविष्य काल The future.  
भग० १, १, ४; ६; २, १; २, ८, ५, १४,  
३; २५, ५. नाया० ८; जं० प० ७, १३७;  
सम० १३; ओव० ४३, कप्प० २, २०;  
( २ ) न आवेलु नहीं आया हुआ not  
come. ओव० ४३, पन्न० २; नंदी० १४,  
( ३ ) त्रि० भविष्यभा भणवानु, लावी जन्म  
संबन्धी भविष्य में मिलने वाला, भावी जन्म  
सम्बन्धी to be got in the future;  
concerning the future birth.  
“हत्यागया इमे कामा, कालिया जे अणा-  
गया” उत्त० ५, ६, सूय० १, २, २, ५,  
१, २, ३, २१, अणुजो० ४२, ( ४ ) न०  
पर्युपणुमां करवानु तप इंधं करणु अर  
अगाडिथी करी लेवु ते, दस पच्चयाणुमानुं  
अेक पर्युपण में किये जाने वाला तप किसी  
कारण से पहिले कर लेना; दस प्रत्याख्यानो में से  
एक प्रत्याख्यान (पचखाण) performing  
devout austerity (Tapa) of Pa-

ryūṣana at an earlier date for some reason; one of the ten Pachchkhāṇas. प्रव० १८६; भग० ७, २;—लेत्त. न० (—क्षेत्र) ६वे पछी आववानुं क्षेत्र; जे क्षेत्रमां गति नथी करी तेवु क्षेत्र आगे आने वाला क्षेत्र; जिस क्षेत्र मे गति नही की ऐसा क्षेत्र. the future Ksetra. भग० ८, ८,—द्धा. स्त्री० (—अद्धा) भविष्य ङाण. भविष्य काल. future time. अणुजो० ११५; भग० १, ६, १२, ५; २२, ५, प्रव० १०५१;—वयण. न० (—वचन) भविष्य ङाणनुं वचन; भविष्यङाण वाचक विभक्ति प्रत्यय—जेम के 'करिष्यति' भविष्य काल सम्बन्धी वचन; भविष्य काल वाचक विभक्ति, प्रत्यय—जैसे " करिष्यति ". the termination of the future tense ठा० ३, ४, आया० २, ४, १, १३२;

अणागइ. स्त्री० ( अनागति ) न आवुं ते. नहीं आना Not coming back ( २ ) सिद्धशिला; न्याथी करी आवुं नथी ते. सिद्धशिला, जहासे फिर वापिस नहीं आना पड़ता वह स्थान. Siddha-Silā from which there is no return. "गइ च जो जाणइ णागइं च " सूय० १, १२, २०;

अणागंता सं० कृ० अ० ( अनागत्य ) न आवीने. न आकर. Without coming, without having come. ठा० ३, २,

अणागम. पुं० ( अनागम ) आगम लक्षणु दीन आगम; अपौरुषेय आगम अपौरुषेय आगम, आगम के लक्षणों से रहित आगम. Scripture without the indispensable features of such; impersonal scripture, revelation अ० १०;

अणागमण. न० ( अनागमन ) संयम लधने पाछा धेर न आवुं ते संयम धारण करके पीछे घर न आना. Not returning home after a vow of asceticism. " जे लोगंसि अणागमणधम्मिणो आणाए मामगं " आया० १, ६, २, १८४,—धम्मि. त्रि० (—धम्मिन्) लीधेली प्रतिज्ञातेो निर्वाह करनार, संयम लधने पाछा धेर न नार. ली हुई प्रतिज्ञा का पालन करने वाला; संयम लेकर पीछे घर न जाने वाला. ( one ) acting up to the vow taken; ( one ) not returning home after a vow of asceticism आया० १, ६, २, १८४;

अणागलिय. त्रि० ( अनर्गलित ) निवारणु न करेल; अटकावेल नहि. निवारण न किया हुआ, न रोका हुआ. Not stopped; not detained. भग० १५, १; नाया० ६;

अणागलिय त्रि० ( अनाकलित ) प्रमाणु उपरान्तुं, अपरिमित अपरिमित; प्रमाण रहित Beyond measure. भग० १५, १;

अणागाढ. न० ( अनागाढ ) साधारणु डारणु, गाढ डारणु नहि साधारण कारण. Reason, not very serious निसी० ११, २७;

अणागार. न० ( अनाकार—न विद्यमाना आकारा महत्तराकारादयो विच्छिन्नप्रयोजनत्वात् प्रतिपत्तिर्यस्मिंस्तदनाकारम् ) पञ्च-आणुमां दुष्ण, अटवी वगेरेते आगार-छुट न राखी ते; अनाभोग अने सहसा ओ जे सिवाय आङीना आगार विनानु पञ्चआणु पञ्चक्खाण में दुष्काल, वन वगेरह की छूट न रखना, अनाभोग और सहसा, इन दो के सिवाय बाकी के आगारों से रहित पञ्चक्खाण. A vow of omission ( e. g. food ) not admitting exceptions



regarding one's being in a forest etc; a vow of omission with two exceptions only viz listlessness and force भग० ७, २, प्रव० १८४; ठा० १०; ( २ ) ( अविद्यमान आकारो भेदो ग्राह्यस्यास्येत्यनाकारम् ) आकार-भेद-विशेष रहित उपयोग; सामान्यग्राही दर्शनोपयोग आकार-भेद-विशेष रहित उपयोग, सामान्यग्राही दर्शनोपयोग. knowledge without differentiation of particulars. विशेष० ७६३; क० गं० ४, १५; जीवा० १; पञ्च० २; ३०; भग० १८, ८;—उचउत्त त्रि० ( -उपयुक्त ) सामान्यग्राही दर्शनना उपयोगवाला; दर्शनना उपयोग सहित सामान्यग्राही दर्शन के उपयोग वाला; दर्शनोपयोग सहित. possessed of general and undifferentiated view पञ्च० ३; भग० १, ५; ६, ४, ८, २, ६, ३१, ११, १; १८, १; २४, १; २६, १,—उचओग. पुं० ( -उपयोग ) सामान्यग्राही दर्शनना उपयोग सामान्यग्राही दर्शन का उपयोग general and undifferentiated view. विशेष० ४१२, भग० १, ६, १२, ५; अणाघाटज्जमाण त्रि० ( अनाघायमान ) सूँधा वगरनुं. बिना सूँधा हुआ Unsmelt; not smelt. भग० १, १; अणाघाय त्रि० ( अनाघात ) आघात विनानुं आघात रहित Unstruck, not hit उत्त० ६, १८; अणाचार. त्रि० ( अनाचार ) आचार हीन आचार हीन Devoid of Āchāra i e right conduct etc गच्छा० ६४, अणाजीवि त्रि० ( अनाजीविन्-न आजीवी अनाजीवी ) तपना इलनी धृष्ट वगरने, निरपृही इच्छा रहित, निरस्पृही. Dis-

interested; exempt from desire. “अगिलाण अणाजीवी, णायवो सो तवायारो” पंचा० १५, २६,

अणाढाडज्जमाण. व० कृ० त्रि० ( अनाद्रियमाण ) अनादर करतो, सत्कार न करतो अनादर करता हुआ Disregarding, disrespecting. भग० ३, १, नाया० १; १६,

अणाढायमाण. व० कृ० त्रि० ( अनाद्रियमाण ) अनादर करतो, तिरस्कार करतो तिरस्कार करता हुआ Disregarding, showing contempt नाया० १, ६; १४; भग० ३, १; आया० २, १, २, १३,

अणादिअ-य पुं० ( अनादत्त ) अणुादिअ नामे लंघूदीपने अधिष्ठाता देवता अणादिअ नाम का जम्बूद्वीप का अधिष्ठातृ देव The presiding deity of Jambūdvīpa, named Anādhia जं० प० ४, ६०; जीवा० ३, ४, उत्त० ११, २७; ( २ ) कांडी नगरीना ओक गृहस्थ, के जे स्थविरनी पासे दीक्षा लई पड़ेला देवलोकमा अणुादिअ विमानमां जे सागरने आउजे उत्पन्न थयो, त्यांथी यवी महाविदेहमां मोक्ष लशे काकदी नगरी का एक गृहस्थ, जो स्थविर से दीक्षा लेकर पहिले देवलोक के अणादिअ विमान में दो सागर की आयु सहित उत्पन्न हुआ वहांसे महाविदेह में जन्म लेकर मोक्ष को प्राप्त होगा a gentleman of the city named Kākandī, who was born for a life of 2 Sāgaras in Anādhia abode in the first Devaloka, after taking Dikṣā from a Sthavira After dying in that place, he will take birth in Mahāvīdeha and then get salvation. निर० ३, १०; ( ३ ) न० पड़ेला देवलोकनुं ‘अणुादिअ’ नामनु विमान



पहिले देवलोक का "अणादिआ" नाम का विमान. an abode named Anādhia, of the first Devloka. निर० ३, १०; ( ४ ) अनादर पूर्वक वंदना करती ते; वंदनाते पड़ेले दोष. अनादर पूर्वक वंदना करना, वंदना का पहिला दोष salutation without respect; first fault in salutation. प्रव० ६३; १५०;

**अणादिआ-या.** स्त्री० ( अनादृता ) जंबूद्वीपना अधिष्ठाता अनादृत देवतानी राजधानी जंबूद्वीप के अधिष्ठाता अनादृत देव की राजधानी. The capital of Anādrīta, the presiding deity of Jambūdvīpa. जीवा० ३, ४; जं० प०

**अणादिज्जमाण.** व० कृ० त्रि० (अनाद्रियमाण) अनादर पाभतो; तिरस्कार पाभतो. अनादर पाता हुआ; तिरस्कार पाता हुआ. Being insulted; being disregarded. नाया० १४;

**अणाद्रियमाण** व० कृ० त्रि० (अनाद्रियमाण) ओओ "अणादिज्जमाण" शब्द. देखो "अणादिज्जमाण" शब्द. Vide "अणादिज्जमाण". नाया० १;

**अणाण.** न० ( अज्ञान ) अज्ञान अज्ञान. Ignorance. भग० २४, १२; २६, १; —**अभाव.** पुं० ( -अभाव ) अज्ञानते अभाव. अज्ञान का अभाव. absence of ignorance. पंचा० ६, २५;

**अणाणस्त.** न० ( अनानात्व ) भेद रहित, भेदने अभाव भेद रहित, भेद का अभाव Absence of distinction भग० ३४, १;

**अणाणा** स्त्री० ( अनाज्ञा ) आज्ञानो अभाव, जेभा वीतरागनी आज्ञा नथी ते आज्ञा का अभाव; वीतराग की आज्ञा रहित. Absence of command or order e. g. of

a Vitarāga. "अणाणाए एगे सोवट्टाणा अणाणाए एगे निरुवट्टाणा" आया० १, ५, ६, १६६; १, १, २, ४२; १, २, ६, १००; १, ६, ३, १६२;

**अणाणुगामि.** न० ( अनानुगामि ) जे ज्ञाने ज्ञान उत्पन्न थयुं होय ते ज्ञाने ज्ञाने रहे भी ज्ञाने साथे न ज्ञाने ज्ञाने अवधिज्ञान; अवधिज्ञानने ओक भेद. अवधिज्ञान का एक भेद, जो ज्ञान जिस स्थान पर उत्पन्न होता है उसी स्थान पर ज्ञानी उसका उपयोग कर सकता है दूसरे स्थान पर वह नष्ट हो जाता है. A variety of Avadhi Jñāna limited to the place where a person acquired it. नंदी० ६;

**अणाणुगामियत्ता** स्त्री० ( अनानुगामिकता-अनानुगामिकत्व ) लव परंपराभां साथे न आवे ते. भव परम्परा में साथ न रहने वाला. Not accompanying in the cycle of rebirths दसा० ७, १२;

**अणाणुगिद्ध.** त्रि० ( अननुगृह ) अनासक्त; अभुञ्जित; भावानी लोलुपता वगरने। अनासक्त; मूर्छा रहित; खान पान की लोलुपता रहित. Not greedy, e. g. of food. "अणाणस्त पाणास्त अणाणुबिद्धे" सूय० १, १३, १७;

**अणाणुपुव्वी.** स्त्री० ( अनानुपूर्वी ) अनुक्रमणी-परिपाटीथी विपरीत, व्युत्क्रम; अनुक्रमने अभाव. अनुक्रम के विरुद्ध; परिपाटी के विपरीत; व्युत्क्रम; अनुक्रम का अभाव. Against, departing from, regular order. भग० १, ६; १७, ४; २५, २;

**अणाणुबंधि.** न० ( अनानुबन्धिन् ) पडिलेडुलु करतां वञ्चने कोष पणु लाग नञ्ज पडार न रहे ते; अप्रमादपडिलेडुलुने ओक प्रकार. पडिलेहण करते समय वञ्च का कोई भी हिस्सा दृष्टि से बाहिर न रहना; अप्रमादपडिले-

हण का एक भेद Thorough examination of a garment, a variety of Apramāda ( non-negligent ) Padīlehaṇa उत्त० २६, २६;

म० ६, १;

**अणायुवाह** पु० ( अननुवादिन् ) वादिभ्ये ङहेल साधन-हेतुनो अनुवाद इरवान्नी पणु व्याकुलपणुने वीधे नेनामां शक्ति नथी ते वादी के कहे हुए हेतु का अनुवाद करने की भी जिसमें व्याकुलता के कारण शक्ति न हो. One who cannot even rehearse the argument of an opponent through lack of composure. “ से मुम्मुई होइ अणायुवाह ” सूय० १, १२, ५;

**अणायुवीइत्तु**. अ० ( अननुविचिन्त्य ) विचार्या विना बिना विचार किये. Without thinking; without having thought “ अणायुवीइत्तु मुस वयंति ” सूय० १, १२, २;

**अणाताविय**. त्रि० ( अनातापित ) ने साधु योतानां वस्त्र, पात्र वगेरे बिनाशवाणा उप-इरवुने तड्डाभां न नापे ते जो साधु अपने भाँगे हुए उपकरणों को धूप में नहीं सुकाता. Not exposing vessels, clothes etc. which are damp, to sunlight ( said of a Sādhu ) कप्प० ६, ५३,

**अणातीय** पु० ( अनातीत-आ समन्तादतीव इतो गतोऽनाद्यनन्तसंसारे स आतीतः, न आतीतोऽनातीतः ) संसारसमुद्रनी पार नानार; संसारने उल्लधी पड़ेले पार पड़ोयनार श्रव संसारसमुद्र के पार जाने वाला. One who crosses the worldly ocean. आया० १, ८, ६, २२२;

**अणादि**. त्रि० ( अनादि ) अथाहनी अपेक्षाभ्ये आदि रहित; शर्यात वगरनुं प्रवाह की

अपेक्षा से आदि रहित. Without a beginning भग० ५, ६; ६, ३;

**अणादिअ-य**. न० ( अणादिक-अणं पापकर्म तदादि कारणं यस्य तदणादिकम् ) पाप इर्म, पापानुष्ठान. पापकर्म, पापानुष्ठान. Sin; a sinful action. परह० १, १;

**अणादिअ-य**. त्रि० ( अनादिक ) शर्यात वगरनुं; आदि रहित; अनादि अनादि, आदि रहित Without a beginning. भग० १२, २, १३, ६; १५, १; १६, ६; सूय० २, ५, २, ( २ ) लो३; संसार लोक; संसार. the world. सूय० २, ५, २;

**अणादिज्ज**. त्रि० ( अनादेय ) आदरवा योअ नहि ग्रहण करने के अयोग्य. Unfit to be accepted जं० प० २, ३६,

**अणादेज्ज**. न० ( अनादेय ) अनादेयनाम. अनादेय नाम. The term Anādeya. जं० प० २, ३६; सम० २५, भग० ७, ६;

**अणापुच्छित्ता**. सं० क० अ० ( अनापृच्छय ) पुछ्या विना; नहि पुछीने विना पूछे; न पूछ कर. Without asking, without having asked. वव० ६, १, ७, १; सम० ३३, वेय० ४, १८, कप्प० ६, ४६;

**अणापुच्छिय** सं० क० अ० ( अनापृच्छय ) पुछ्या वगर; नहि पुछीने न पूछ कर, विना पूछे. Without asking, without having asked वव० ८, १४, निसी० २, ४५, १४, ५;—**चारि** पु० ( चारिन् ) गणुने पुछ्या विना क्षेत्रातरमा विचरनार साधु, पांयमा निग्रहस्थानने प्राप्त धयेव. गण से विना पूछे क्षेत्रान्तर में विचरने वाला साधु, पाँचवें निग्रहस्थान को प्राप्त. an ascetic who wanders in another place without asking his bro-

thers of the same order; one who has attained the 5th stage of Nigraha-Sthāna. ठ० १, १;

**अणावाह.** पुं० ( अनावाध-न विद्यते आवाधा-पीडा यत्र तदनावाधम् ) स्वाभाविक सुख; मोक्ष सुख; परमानंद. स्वाभाविक सुख; मोक्षसुख; परमानंद Natural happiness; highest bliss. उत्त० ३५, ७; ठ० १०, ( ३ ) आधा-पीडा रहित. पीडा रहित. free from pain or misery. सु० च० ३, १०४; वव० ८, १३;—**सुह.** न० (—सुख) आधा-पीडा रहित सुख; अबाधित सुख; मोक्ष सुख; वाधा रहित सुख; मोक्ष सुख. eternal and unobstructed bliss दस० ६, १, १०,

**अणाभियोगिय.** पुं० ( अनाभियोगिक ) स्वतंत्र देव, जेता छोड़ स्वामी-नायक नहीं तेवो देवता स्वतंत्र देव; जिसका कोई स्वामी न हो ऐसा देव. An independent deity. भग० ३, ५;

**अणाभोग.** पुं० ( अनाभोग ) जेअपर; अज्ञान अनाथ अज्ञान; बेखबर; अज्ञान. Ignorant ओघ० नि० २४१; भग० ७, ६; २५, ७, ठ० ४, १; प्रव० १६५; (२) अत्यन्तविस्मृति-भूली जेवुं ते अत्यन्त विस्मृति-भूल जाना. extreme forgetfulness. आउ० —**गय.** त्रि० (—गत) अनाभोगपणाने-अनाथपणाने पामेल; जेअपर बेखबर ignorant of; unconscious of. क० प० ५, ३० —**ज्झाण.** न० (—ध्यान) अत्यन्त विस्मरण थयानुं ध्यान-लान आनवुं ते; जेभ प्रसन्नयद राजपिने विस्मरण थयेल वतनीयादगिरी थध. अत्यन्त विस्मरण होने वाली बात का ध्यान आना-जिस प्रकार प्रसन्नचंद्र राजपि को विस्मृत वत का स्मरण हुआ या recollection of extreme

forgetfulness, as in the case of the king-saint Prasannachandra who remembered that he had forgotten a vow taken. आउ० —**सिञ्चितिय.** पुं० (—निश्चित) अनाथ पणो निपणेलुं. अज्ञानता से उत्पन्न. unconsciously performed. ठ० ४, १; भग० १, १; प्रव० ११६८;—**पडिसेवणा.** स्त्री० (—प्रतिसेवना-प्रतिसेवन) अनाथपणो छोड़ दोष सेववे। ते. अनजानपन से किसी दोष का सेवन करना. incurring a sin unknowingly. ठ० १०;—**वउस.** त्रि० (—बकुश) अनाथये दोष लगानार अकुश नियंठो-साधुविशेष. अनजानपन से दोष लगाने वाला बकुश प्रकार का साधु. a kind of an ascetic ( Bakusa ) monk unconsciously running into sin भग० २५, ६; ठ० ५, ३;—**भाव.** पुं० (—भाव) अनाथ पणो थयुं ते; अनाथपणुं. अनजानपन से होना; अज्ञानपन. condition of unconsciousness or listlessness. “ इय चरखमि ठियाण होइ अणाभोगभावओ खलणो ” पंचा० १७, ४७;—**वटितया.** स्त्री० (—प्रात्ययिकी) अज्ञानथी उपयोगस्थपणो दुर्भे अन्धाय ते उपयोग विना अज्ञान से जो कर्म बन्ध हो वह; उपकरण; के लेने या रखने से जो कर्म बन्धता है वह. incurring of Karma by unwariness through ignorance. अणाभोगवत्तिया किरिया दुविहा पणत्ता, तंजहा-अणाउत्तपणत्ता चेव ” ठ० २, १;

**अणामंतिय.** सं० क० अ० ( अनामन्थ ) आभन्थ विना; पुण्या विना. विना पूछे. Without having asked; without asking. निसी० २, ४५; १४, ५; आवा० २, १, ६, ५४; वव० ८, १४;

**अणामिय.** त्रि० ( अनामिक ) नाम विनातुं, जेतुं इष्ट नाम पाठ्युं न होय ते विना नाम का. Nameless तंडु०—वाहि पुं०—(व्याधि) नाम वगरेना रोग, असाध्य रोग विना नाम का रोग, असाध्य रोग a nameless-incurable disease तंडु०

**अणाय.** पुं० ( अनात्मन् ) आत्माथी लिंग पदार्थ; नऽ आत्मा से भिन्न पदार्थ, जड. Matter as distinguished from soul सम० १;

**अणायंबिल** त्रि० ( अनाचामस्त ) आयं-पिल विनातो; आयंपिल-तपविशेष जेने नथी ते. आयंबिल नामक तपविशेष से रहित Devoid of Āyambila—a kind of austerity आव० ६, ६,

**अणायग** पुं० ( अनायक—न विद्यतेऽन्यो नायकोऽस्येत्यनायकः ) जेने कोठ नायक नथी जेवे; स्वतंत्र, चक्रवर्ती वगेरे नायक रहित, स्वतंत्र, चक्रवर्ती वगेरेह One who owns no supremacy; independent, a sovereign ruler etc. दसा० ६, १, ११, निसी० ८, १२; सम० ३०; सूय० १, २, ९, ३;

**अणाययण** न० ( अनायतन ) साधुने रहेवा योग्य स्थान नहि, नाटकशाला, वेश्यागृह वगेरे साधु के रहने के अयोग्य स्थान, नाटक शाला, वेश्यागृह आदि A place unworthy of an ascetic to live in e. g. a theatre, a house of prostitute etc परह० २, ४; दस० ५, १, १०, ( २ ) पासत्था वगेरेने उतरानुं स्थान शिथिलाचारि आदि के उतरने (ठहरने) का स्थान a lodging place for Pāsattthās ( ascetics who have transgressed the rules of asceticism ) etc ओव०

**अणायर.** पुं० ( अनादर ) तिरस्कार; अपमान. तिरस्कार, अपमान Insult, disregard प्रव० १२२२; पि० नि० २०३;

**अणायरण्या** स्त्री० ( अनाचरण-ता ) आचर-वा योग्य नहि ते; माया अने कषायनु पर्याय नाम; गौणमोहनीय कर्मने ओक भेद आचरणा के अयोग्य, माया और कषाय का पर्यायवाची नाम; गौणमोहनीयकर्म का एक भेद. Unfitness for performance; a synonym for Māyā. ( deceit ) and Kasāya, a variety of Gauṇa Mohaniya—Karma सम० १२,

**अणायरिय** पुं० ( अनार्य ) आर्य नहि ते; अनार्य, इ२ आर्यत्व रहित; अनार्य, क्रूर. A Non-Ārya, a barbarian, a cruel person आया० टी० १, ४, २, १३३, निसी० १६, १८,

**अणायरिय** त्रि० ( अनाचर्य ) आचरवा योग्य नहि आचरण के अयोग्य Unworthy of performance “अणायरियमज्जाण, आसइत्तु सइत्तु वा” दस० ६, १४,

**अणाय** पुं० ( अनात्मन्—न आत्मा अनात्मा ) नऽ पदार्थ, अशुच जड पदार्थ, निर्जीव A material substance, non-soul “एने अणाय” सम० १; ( २ ) पोता शिवाय, पर; जीने अपने सिवाय; दूसरा other than one'sself “अणायए अवक्कमइ” भग० १, ४,—वाइ. पुं० (—वादिन्—आत्मान वदितुं शीलमस्येत्यात्मवादी नात्मवादी अनात्मवादी ) आत्मानुं अस्तित्व न मान-नार, नास्तिक आत्मा का अस्तित्व न मानने वाला, नास्तिक one who disbelieves in the existence of the soul. ( २ ) आत्माने क्षणिक, सर्वव्यापी या अक्षुण्ण अभिपरीतपणे भाननार; ओइ वेदांती, वगेरे आत्मा को क्षणिक, सर्वव्यापी या अक्षु-

मात्र मानने वाला; बौद्ध, वेदान्ती वगैरह.  
a Vedānti, a Bauddha etc. hav-  
ing false notions about the  
nature of the soul i. e. those  
who believe it as transitory,  
all or partly pervading आया०  
टी० १, १, १, ५,

**अणायण**, न ( अनादान ) अकारण; अकारण.  
अभाव कारण का अभाव; अकारण.  
Absence of reason “ अणायणमेयं  
अभिनाहियसिज्जासणियस्स ’ कप्प० ६, ५४,  
**अणायार** पुं० ( अनाचार ) साधु के आवडना  
आचार व्यवहार तो भंग, पञ्चखाण की सीमा का उल्लं-  
घन करना. Breach of right conduct  
on the part of a Jaina layman  
or an ascetic, transgression  
of Pachchkhāṇa. आव० ४, ६, ठा०  
३, ४, ( २ ) साधु ने न आचरवा योग्य-पर  
अनाचारीमानो गमे ते अेक. वधुभाटे लुओ  
‘अणाइयण’ शब्द साधु के आचरण न करने  
योग्य-पर अनाचारी में से कोई भी एक.  
अधिक के लिये देखो “ अणाइयण ” शब्द  
unworthy of performance for  
an ascetic “ एणहिं दोहि ठायेहि,  
अणायारं तु जाणए ” सूय० २, ५, ३;  
“ अणायारं परक्कम्म, नेव गूहे न निह्वे ”  
दस० ८, ३२; ६, ५७, आया० २, ४, १, १३२,  
पि० नि० १७६;—उभाण. न० ( -ध्यान )  
दुष्टाचारनुं चितवणुं ते दुष्टाचार का चितवन  
करना. contemplation of evil con-  
duct आड० १०३;—सुय ( -श्रुत ) सुयग-  
अगता पीअ श्रुतस्कंधना पायमा अध्ययननुं  
नाम, के नेमा अनेकांतवादनुं समर्थन करता  
आचारनुं देवी रीते पालन करने अने अना-

आचारनुं देवी रीते त्याग करने ते पताचुं छे.  
सूत्रकृतांग के दूसरे श्रुतस्कंध के पांचवें  
अध्याय का नाम, जिसमें अनेकान्तवाद का  
समर्थन करते हुए यह बतलाया है कि, आचार का  
पालन और अनाचार का त्याग किस प्रकार  
करना चाहिये. the fifth chapter of  
the second Śrutaskandha of  
Sūyagadāṅga establishing  
Anekāntavāda and showing  
the manner of observing right  
conduct and that of avoiding  
a wrong one. सूय० २, ५, ३३;

**अणायवि**, त्रि० ( अनातापिन् ) आतापना  
वगेरे परिसह सहन न करना साधु; शीत,  
उष्ण वगेरे सहन न करना, अनातापी  
आतापना वगैरह परीषह सहन न करने वाला  
साधु, शीत, उष्ण वगैरह सहन न करने  
वाला ( An ascetic ) not enduring  
heat, cold etc ठा० ४, ३;

**अणारंभ** पुं० ( अनारंभ ) श्रवणे उपद्रव न  
करने ते. जीव को न सताना Giving no  
pain or trouble to living things.  
“ सत्तविहे अणारंभे पणसे, तंजहा-  
पुढविकाइयअणारंभे जाव अजीवकाय-  
अणारंभे ” ठा० ७; ( १ ) त्रि० ( न विद्यते  
सावय आरम्भो येषां ते तथा ) पापना सावय  
व्यापार रहित. पाप-सावय व्यापार से रहित.  
free from sinful operations.  
“अपरिगहा अणारंभा, भिक्खू ताणं परि-  
व्वए” सूय० १, १, ४, ३; भग० १, १; ५, ७; ८, १;  
—जीवि. पुं० ( -जीविन् ) सर्व आरंभही  
निवृत्त थयेल साधु, सावयानुष्ठान अने प्रमाद  
रहित श्रद्धा गानना. सर्व आरंभ से निवृत्त  
हुआ साधु, सावयानुष्ठान और प्रमाद से रहित  
जीवन बिताने वाला a Sādhu free  
from all sinful actions, one who



leads a life without negligence and sinful actions "आवंतिण्णं अणारंभजीविणो तेषु" आया० १, २, १, १४६,—द्वारा न० (—स्थान) आरंभ रहित स्थान; सावध अनुष्ठाननी सर्वथा निवृत्ति पापानुष्ठान की सर्वथा निवृत्ति, आरम्भ रहित स्थान perfect freedom from all sorts of sin, a stage of character which is free from all sinful actions "एगंतमिच्छे असाहू तत्थं जा सा सब्बतो विरहं एस द्वाये अणारंभद्वाये आरिण्ण" सूय० २, २, ३६,

अणारंभमाण. व० क० त्रि० (अनारम्भमाण) आरंभ न करतो आरंभ न करता हुआ. Not beginning, e g. a sinful action भग० ३, ३;

अणारब्ध. त्रि० (अनारब्ध) महापुरुषों में आयेरुं नहि ते महापुरुषों ने जिसका आचरण न किया हो. Not practised by greatmen "आरंभे जं अणारंभे अणारब्धं च य आरंभे" आया० १, २, ६, १०३;

अणाराहय. त्रि० (अनाराधक) धर्मनो विरोधक धर्म के विरुद्ध, धर्म का विरोधी One adverse to religion; a heretic "अणायवि अस्तमिण्ण धम्मस्स अणाराहण भयइ" ठा० ४, ३;

अणारिय त्रि० (अनार्य) न करवा योग्य काम करना, पापी, अनाचारी न करने योग्य काम को करने वाला; पापी, अनाचारी Doing unworthy deeds, sinful. भग० ३, ७; सूय० १, १, २, १०, जीवा० ३, ३, निसी० ८, १, ( २ ) अनार्य देशवासी, भलेच्छ, क्रूर. अनार्य देशवासी, मलेच्छ, क्रूर. a barbarian, a cruel man 'सूय० २, १, १३, सम० ३४, ओव० ३४, उत० ३४, २६, ( ३ ) न० भलेच्छने जानतुं

आचरण, असत् अनुष्ठान मलेच्छ के योग्य आचरण, असद् अनुष्ठान conduct worthy of barbarian परह० १, १; ( ४ ) अनार्य भूमि, अनार्य क्षेत्र, अनार्य देश अनार्य क्षेत्र; अनार्य देश. a country of barbarians. प्रव० ६४,—द्वारा न० (—स्थान) सावध आरंभनुस्थान सावधारंभ का स्थान a place of sinful operations सूय० २, २, ३४,

अणारोहण. त्रि० (अनारोहक) लुब्धो 'अणारोहय' शब्द देखो "अणारोहय" शब्द. Vide "अणारोहय" भग० ७, ६; अणारोहय त्रि० (अनारोहक) थोड़ाथी रहित; लक्ष्य वगैरं योद्धाओं से रहित. Without a soldier "अणारोहय अणारोहय" भग० ७, ६,

अणालंघण. न० (अनालम्बन) आलम्बनो अभाव, टेका नहि ते. आलम्बन का अभाव; असहारा. Absence of support परह० १, ३,—पइद्वारा त्रि० (—प्रतिष्ठान) टेकना पाया विना, आलम्बन-रक्षक वगैरं आलम्बन (सहारा) के पाये विना का, टेक रहित without support परह० १, ३,

अणालस त्रि० (अनालस) न बोलावेला, आलापसंवाप न करेला जिसके साथ बातचीत न की हो Not talked to, not conversed with "पुत्ति अणालसेण आलवित्तण वा संलवित्तण वा" उवा० १, ५, ५८,

अणालस्स त्रि० (अनालस्य) आलस्य रहित आलस्य रहित Free from laziness or idleness गच्छा० १२६,

अणालस्स न० (अनालस्य) आलस्यो अभाव आलस्य का अभाव Absence of idleness. ( ० ) त्रि० आलस रहित, उद्योगी. आलस्य रहित; उद्योगी free



from idleness; industrious.  
गच्छा० ४१; तंडु०—शिलय. न० ( -नि-  
जय ) उत्साहं धर; अहु उत्साही. उत्साह  
का स्थान; बहुत उत्साही. abode of  
enthusiasm; very enthusiastic.  
तंडु०

अणालसि त्रि० ( अनालस्यिन्—नास्त्यालस्य  
मस्येति ) आलस्य विना. उद्यमी. Free  
from laziness or idleness. गच्छा०  
४१,

अणालाव पुं० ( अनालाप ) भुत्सित लाषणु-  
आलाप; भ्राण्य भोलवुं ते कुत्सित भाषण;  
खराब बोल चाल. Indecent speech.  
ठा० ७, १;

अणालिप्त- त्रि० ( अनालिप्त ) अणुभोलाव्यो.  
बिना बुलाया Not spoken to; not  
talked to. प्रव० ६५२;

अणालिद्ध- त्रि० ( अनालिद्ध ) आलिङ्गन न  
दीधित आलिङ्गन न दिया हुआ Not  
embraced प्रव० १५२;

अणालोद्व-य त्रि० ( अनालोचित ) आलो-  
चना न करे; नेने पोताना दोष गुण पासे  
आलोच्या नथी ते गुरु के समीप जिसने अपने  
दोषों की आलोचना न की हो One who  
has his faults unconfessed to  
a preceptor ओव० ३८; भग० ३, ४;  
५, ६; ६, ३३; २०, ६, नाया० ध० दसा०  
१०, ३; नाया० १६;—अपडिकंत. त्रि०  
( -अप्रतिक्रान्त ) नेने गुणी सभीपे दोष  
आलोच्या नथी अने ते दोषही निवृत्त थये  
नथी ते जो गुरु के समीप दोषों की आलोचना  
न करने के कारण, उन दोषों से निवृत्त न  
हुआ हो. one who is not freed  
from faults through confession  
to a preceptor. ओव० भग० १०, २;

अणालोक. न० ( अनालोक ) अज्ञान. अज्ञान.  
Ignorance. परह० १, ३;

अणालोयाविच्छा. सं० कृ० अ० ( अना-  
लोचयित्वा ) आलोच्या विना. बिना  
आलोचना किये. Without having  
reviewed; without reviewing.  
वव० ६, २०;

अणावरिय. त्रि० ( अनावृत ) ढांड्या वगरनुं. न  
ढका हुआ. Uncovered. भग० १५, १;

अणावाय. न० ( अनापात ) भाणुसनी आव-  
णव विनानुं स्थण, निर्जन स्थण. निर्जन स्थान;  
मनुष्य के आवागमन से रहित स्थान. A  
place unfrequented by man.  
“अणावाए असलोए अणावाए चेव-  
होइ संलोए” उक्त० २४, १६; नाया० १६; भग०  
८, ६, संत्या० ६६, ओघ० नि० २६६; प्रव०  
७१६;

अणाविल. त्रि० ( अनाविल ) रागद्वेषरूपी  
मल रहित, स्वच्छ. रागद्वेषरूपी मल रहित;  
स्वच्छ. Clear, free from dirt in  
the form of passions. “धम्मे हरए  
बंभे, संति तित्थे अणाविले । असपसज्जलेसे”  
उक्त० १२, ४६; सूय० १, २, २, ७;

अणाविल. त्रि० ( अणाविल ) ऋणरूपी मेजुं.  
ऋणरूपी मल से मलिन Sullied with  
indebtedness आउ०—उम्हाण न०  
( -ध्यान ) ऋणदारनु थितयन—थिता.  
ऋणी की चिंता the anxiety of a  
debtor आउ०

अणाविलप्प. पुं० ( अनाविलात्मन् ) उपाय  
रहित आत्मा. कपाय रहित आत्मा Soul  
unsullied with passions. “अभयंकरे  
भिक्षू अणाविलप्पा” सूय० १, ७, २८;

अणावुट्टि स्त्री० ( अनावृष्टि ) अनावृष्टि, वरसा-  
दनी भोसभमां वरसाद न वरसे ते. अनावृष्टि;

वर्षा का अभाव; वर्षाऋतु में वर्षा का न होना.

Drought. सम० ३४; जं० प० १, १०;

अणासन्न-य त्रि० (अनाशय) पूजा-महत्ता-  
दिङ्ना आशय-अलिप्राय-लालसा वगैरहो;  
द्रव्यार्थी समवसरणादि छां लावर्त्थी तेना  
अनाङ्गि-तीर्थङ्कर पूजा-महत्तादि की  
लालसा रहित, समवसरणादि के होने पर भी  
भावसे उनकी आकाक्षा से रहित-तीर्थंकर  
Mentally unattacked e. g. a  
Tirthankara; not covetous of  
honour etc. “अणासण जते दंते, ददे  
आरयमेहुणे” सूय० १, १५, ११, (२) इक्ष्णी  
आशा विनाशो. फल की आशा से रहित.  
without any desire for the  
fruits of actions. अणासण जो उ  
सहेज कंठए” दस० ६, ३, ६;

अणासग त्रि० (अनश्वक) घोड़ा विनाश;  
अश्व रहित विना घोड़े का, अश्व से रहित.  
Devoid of horses. भग० ७, ६,

अणासच्छिन्न. त्रि० (अच्छिन्ननास) जेनुं नाक  
छेदायेनुं नहीं ते जिसकी नाक छिदी हुई  
न हो. With unperforated nose.  
निसी० १४, ६,

अणासण. त्रि० (अनासन्न) छेक पास नहि,  
अहु नछक नहि ते. जो बहुत नजदीक न हो.  
Not very near. “नाइदूरमणासणे,  
पंजली पडिपुच्छई” उक्त० २०, ७; १, ३३;

अणासत्ति स्त्री० (अनासक्ति) आसक्तिनो  
अभाव. आसक्ति का अभाव. Absence of  
attachment भग० १, ६,

अणासव त्रि० (अनाश्रव) आश्रव-कर्मबंध  
रहित. आश्रव-कर्मबंधसे रहित Free from  
the influx of Karma “अणासवे  
अममे अकिचये” ओव० भग० २५, ६,  
(२) आश्रवनो अभाव-संपर. आश्रव का

अभाव. stoppage of Karma. परह०  
२, १; उक्त० ३०, २; (३) पुं० स्त्री०  
शुश्रूषा वयन उपर लक्ष्य न आपनार; शुश्रूषो  
आदेश न सांलणनार गुरु के वचनों पर लक्ष्य न  
रखने वाला, गुरु का आदेश न सुनने वाला.  
one who does not pay heed  
to the instructions of the Guru  
or preceptor. “अणासवा धूलवया  
कुसीला” उक्त० १, १३; (४) पुं० न० आश्रवना  
अभाववाणी महाव्रत आदि. Mahāvratas  
etc which arrest Āśrava or  
Karmic influx. आया० १, ४, २, १३०;

अणासाइज्जमाण. त्रि० (अनास्वाद्यमान)  
रसेन्द्रियद्वारा अहणु न थतुं-न यभातुं.  
रसनेन्द्रिय के द्वारा न चखा जाने वाला. Not  
being tasted. भग० १, १,

अणासाएमाण. व० क० त्रि० (अनास्वादयत्)  
नयाभतो न चाखता हुआ Not tasting.  
नाया० १८, (२) नवाभतो. न चाहता हुआ.  
not longing for. “परस्स लाभं  
अणासाएमाणे” उक्त० २६, ३३,

अणासायअ. त्रि० (अनाशातक) अशातना-  
आधा-पीडा न करनार अशातना-पीडा न  
करने वाला Not giving pain. आया०  
१, ६, ५, १६५;

अणासायणा स्त्री० (अनाशातना) तीर्थ-  
ङ्करादिङ्ना धर्मनी अशातना-होइना न  
करवी ते, दर्शनविनयनो अेक लेद, धर्मनी  
लडित, अहुमान करवे। ते तीर्थंकरादि के धर्म  
की अवहेलना न करना, दर्शनविनय का एक  
भेद, धर्म का आदर करना Abstaining  
from disrespect towards the  
religion of Tirthankaras etc,  
a variety of Darśanavinaya  
अ० ७,—विणय. पुं० (-विनय) लुअे।

‘अणासायणा’ शब्द देखो ‘अणासायणा’ शब्द Vide ‘अणासायणा’. ठा० ७;

**अणासास.** पुं० ( \* अनाश्वास-अविश्वास ) अविश्वास; अभरोसा. अविश्वास; अभरोसा. Want of confidence; distrust. विशेष० १६३४;

**अणासिय.** त्रि० ( अनाशित ) लुप्ते। ‘अणासिय’ शब्द देखो ‘अणासिय’ शब्द. Vide ‘अणासिय’ “अणासिया ग्राम महासियाजा, पागडिभणो तत्थ सया सकोवा ” सूय० १, ४, २, २०;

**अणासिय** त्रि० ( अनाशित ) आश्रय रहित. आश्रय रहित. Unsupported; support-less. विशेष० ८६३;

**अणासेवणा.** स्त्री० ( अनासेवना ) दोषनी सेवनाने। अभाव, अतिचारादि न सेवना ते. दोष के सेवन का अभाव; अतिचारादिकों का सेवन न करना. Freedom from sinfulness. आया० १, ८, ३, २१०;

**अणाह.** त्रि० ( अनाथ ) अशरण; अनाथ; नाथ वगैरने। अशरण, अनाथ Helpless. परह० १, १; नाया० ८; ६; १३, ( २ ) रंक; बिभारी. रंक; भिखारी. beggarly; indigent. नाया० ८; ( ३ ) अनाथी मुनि, ३ जेणे श्रेष्ठिक राजनी पासे अनाथता अने सनाथताने २५४ पुलासे करी श्रेष्ठिक राजने पण पोते अनाथ होवानी पात्री करावी धर्म पभाउये। तेनुं विस्तृत यरित्र उत्त० २० भा अध्ययनभा छे. अनाथी मुनि, जिसने श्रेष्ठिक राजा के आगे अनाथता और सनाथता का स्पष्ट विवेचन करके श्रेष्ठिक को भी यह विश्वास करा दिया था कि, वह स्वयं भी अनाथ है, इसका विस्तृत वर्णन उत्त० के २० वें अध्याय में है. Anāthī Muni, who clearly explained the meaning of poverty and wealth to king

Śreṇika and convinced him of his poverty so that he was converted. “अणाहोमि महाराय! नाहो मज्झ न विज्झ। अणुकंपयं सुहिं वावि, कंची णाहि तुमे महं॥ तत्रो पडसिओ राया, सेणिओ मगहाहिवो, एवं ते इद्धिमंतस्स, कहां णाहो न विज्झ ॥ होमि णाओ भयंताणं, भोगो भुंजाहि संजया” उत्त० २०, ६; १०; ११;—पवज्जा स्त्री० (—प्रवज्या) उत्तराध्ययन सूत्रना २० भा अध्ययननुं अपर नाम. उत्तराध्ययन सूत्र के बीसवें अध्याय का दूसरा नाम. another name of the twentieth chapter of Uttarādhyayana Sūtra. उत्त० २०;—पिण्ड न० (—पिण्ड) अनाथने भाटे तैयार करेले। भोराक. अनाथ के लिये तैयार किया हुआ भोजन food prepared for the helpless poor. निसी० ८, १६;

**अणाहया.** स्त्री० ( अनाथता ) अनाथपणुं. अनाथपन. Helplessness; poverty. उत्त० २०, २३;

**अणाहरण.** न० ( अनाहरण ) धरवाने-धरी रा-भवाने अशक्त। आधार के अयोग्य. Unable to hold or support. भग० १८, ३;

**अणाहार.** पुं० ( अणाधार ) अरुणदार; देशुदार देनदार, ऋणी A debtor. विवा० १, अणाहार पुं० ( अनाहार ) आहारने अभाव. आहार का अभाव Absence of food. भग० १, १, १८, ३, क० गं० ३, २३, प्रव० १३३३;—भाव. पुं० (—भाव) अनाहारपणुं अनाहारपन. lack of food भग० १८, १;

**अणाहारअ-य.** पुं० स्त्री० ( अनाहारक ) आहार (अथवा आहार) रहित देवादि. आहार ( आसरूप आहार ) रहित देवादि. One who lives without food e. g. gods etc. विशेष० ४१२;

**अणाहारग.** पुं० ( अनाहारक ) अनाहारी  
 ७५; आहार न लेना ७५; ७५ न्याये विग्रह  
 गतिभां, केवलसमुद्घातभां के यौद्धे गुणक्षेत्रे  
 होय त्पारे अणुहारी होय, सिद्धभगवान्  
 पणु अणुहारी होय. अनाहारी जीव, आहार  
 न लेने वाला जीव, जीव जिस समय  
 विग्रहगति में, केवलसमुद्घात में या चौदहवें  
 गुणस्थान में होता है तब वह अनाहारी  
 होता है, सिद्धभगवान् भी अनाहारी होते हैं.  
 A soul living without food e.g.,  
 a soul in Vīgrahagati, Kevala-  
 smudghāta and the fourteenth  
 Guṇasthāna or Siddha state  
 “योरहया दुविहा पण्यस्ता, तंजहा-आहारगा  
 खेव अणाहारगा ” ठ० २, २, भग० ६, ४,  
 ७, १, ८, २, ११, १; १८, १, २५, १,  
 ३५, १, जीवा० ३;

**अणाहारिय** त्रि० ( अनाहत ) भूतकालनी  
 भावानी क्रियाथी परिणाम पायेले नहि ते  
 भूतकाल की खाने की क्रिया से परिणाम  
 नहीं पाया हुआ Undigested (food).  
 भग० १, १;

**अणाहिद्व** पुं० ( अनाधृष्ट ) वसुदेव राजाथी  
 थयेले धारिणी राजाथीने पुत्र, केनेने अधिकार  
 अंतगड सूत्रना त्रीण वर्जना तेरमा अध्ययन-  
 मा छे वसुदेव राजा की धारिणी राणी का  
 पुत्र, जिसका अधिकार अंतगडसूत्र के  
 तीसरे वर्ग के तेरहवें अध्याय में है. Son of  
 queen Dhārīnī by king Vasu-  
 deva mentioned in the  
 thirteenth chapter of the third  
 section of Antagada Sūtra अंत०  
 ३, १३; (२) अंतगड सूत्रना त्रीण वर्जना  
 तेरमा अध्ययननु नाम अंतगडसूत्र के तीसरे  
 वर्ग के तेरहवें अध्याय का नाम. name of  
 the thirteenth chapter of the

the third section of Antagada  
 Sūtra. अंत० ३, १३;

**अणाहिद्वि.** पुं० ( अनाधृष्टि ) लुओ उपयो  
 शब्द. देखो “ अणाहिद्व ” शब्द. Vide.  
 “अणाहिद्व”. अंत० ३, १३;

**अणाहुअ** त्रि० ( अनाहृत ) आभंत्रणु न  
 करेले, नोत३ न दीधेले, भुनि आभंत्रणु विना  
 आहार सेवा नय भाटे ते अणुहृत-अना-  
 भनित विना नोते के; अनामंत्रित. Un-  
 invited, e.g. an ascetic, because  
 he goes to take food uninvited.  
 भग० ७, १;

**अणिअ-य.** न० ( अनीक ) सैन्य, ६५;  
 ६५३२; ई०; सेना; फौज An army.  
 नाया० ८, पक्ष० २, जं० ५० ४, ७३;  
 सू० ५० १८, सु० च० २, ६४,

**अणीइ** स्त्री० ( अनीति ) लुओ ‘अणीइ’  
 शब्द. देखो “अणीइ” शब्द Vide  
 “अणीइ”. नाया० १,—पत्त. त्रि० (—पत्र)  
 लुओ ‘अणीइपत्त’ शब्द देखो “अणीइ-  
 पत्त” शब्द vide “अणीइपत्त” नाया०  
 १;

**अणिइय** त्रि० ( अनित्य ) अनित्य, चिरंकाण  
 नहि रहेनार. अनित्य; चिरकाल तक न टिकने  
 वाला Transitory आया० १, ५, २, १४७;

**अणिइय** पुं० ( अनितिक-इतिशब्दो नियतरूपो-  
 पदर्शनपर, ततश्च न विषते इतिर्ययासाव-  
 नितिकः ) नेनु नियत स्वरूप नथी ते;  
 संसार जिसका नियत स्वरूप न हो, संसार.  
 The world, that which has no  
 fixed form भग० ६, ३३;

**अणिअचचारि** पुं० ( अनियतचारिन्-अनि-  
 यतमप्रतिबद्ध चरितुं शीलमस्याऽसाव-  
 नियतचारी ) अप्रनियन्ध विहारी, अप्रनि-  
 यन्धपणु विहार करनार. विना प्रतिबन्ध

के विहार करने वाला One with unrestricted and unobstructed movements. “संभूइपरणे अणिएअचारी, ओहंतरे धीरे अणंतचक्खु ” सूय० १, ६, ५; “अखिले अणिद्धे अणिएअचारी, अभयं करं भिक्खु अणाविलप्पा ” सूय० १, ७, २८;

**अणिगाल.** त्रि० (अनङ्गार) धंगाल दोषधी रहित. अग्नि के दोष से रहित Free from the fault of having embers परह० २, १;

**अणिद** त्रि० (अनिन्द्र-नास्तीन्द्रो यस्मिन् सोऽनिन्द्र.) धं विनानुं बिना इन्द्र के. Devoid of Indra भग० ३, १,

**अणिदण्डिज्ज.** त्रि० (अनिन्दनीय) निन्दित या यो नहि; दूषण देवा यो नहि ते. दूषण देने के अयोग्य. Uncensurable, unrepachable जीवा० १;

**अणिदिय** त्रि० (अनिन्दित) अनिन्दित, जेनी निन्दान थर् शके ते अनिन्दित, जिसकी निन्दान हो सके. Uncensurable, unrepachable. उक्त० १२, २० (२) किन्नर नामे व्यतर देवनी पांचमी जत किन्नर नामक व्यंतर देव की पाँचवीं जाति. the fifth kind of Vyantara gods called Kinnaras पञ्च० १,—अंगी स्त्री० (—अङ्गी) दूषण वगरना अंगवाणी स्त्री; जेउ आं पणु वगरनी स्त्री दूषण रहित अंगों वाली स्त्री a woman without any defect in the body “भदेति णामेण अणिदियगी ” उक्त० १२, २०;

**अणिदिय** पुं० (अनिन्द्रिय) सिद्धभगवान् तथा देवगी; धृष्टिय तथा तेना उपयोग विनाना सिद्धभगवान् तथा केवली; इन्द्रियों से रहित A Siddha and a Kevali, free from senses or organs and their

processes. विशेष० १८६५; भग० १, ७; २, १०; ८, २; १०, १; ११, १; १६, ८; २५, ३; ३५, १; ठा० २, १; (२) त्रि० अपर्याप्तो; जेने धन्द्रियप्रण आंधी नथी ते. अपर्याप्त जीव, इन्द्रियों की पूर्णता से रहित जीव with senses yet undeveloped (Aparyāpta).

“शेरइया दुविहा परणत्ता, तंजहा—सद्धंदिया चेव अणिदिया चेव जाव वेमाणिया ” ठा० २, २; प्रव० १४४,—पपएस. पुं० (—प्रदेश) सिद्धज्जना प्रदेश. सिद्धजीव का प्रदेश. molecules of the Siddha souls. भग० १०, १; ११, ११,—पपएस पुं० (—प्रदेश) लुओ ‘अणिदियप्पएस’ शब्द देखो “अणिदियप्पएस” शब्द. vide ‘अणिदियप्पएस’. भग० १, १; ११, ११;

**अणिदिया** स्त्री० (अनिन्दिता) उर्वलोड, वासी छट्ठी दिशाकुमारी ऊर्ध्वलोक बासी छठी दिशाकुमारी The sixth Disā kumārī residing in the upper regions. ठा० ८;

**अणिकंप.** त्रि० (अनिष्कम्प) अनिश्चल; थले ओवा; पदिसह आदिथी उगे तेवा. निश्चलता रहित, परपिह आदि से गिरजाने वाला. Not firm; one who flinches from danger आया० २, २, ३, ८८;

**अणिकेय** पुं० (अनिकेत—न विद्यते निकेतो गृहं यस्य) धर वगरने (साधु) बिना घर का (साधु). One who has no house, an ascetic “अणिकेओ परिव्वए” उक्त० २, १६;

**अणिकट्ट** त्रि० (अनिकृष्ट) द्रव्यधी स्थूल शरीरवाणो अने लावथी ध्यायने वश नथी धर्या ते. द्रव्य से स्थूल शरीर वाला. और भाव से कषायों को जिसने वश में न किया हो. One who is physically developed but has not been able to



conquer passions ( Kasāyas )

ठा० ४, ४;

**अशिक्षकावाह पु०** ( अनेकवादिन्-सत्यपि कथञ्चिदेकत्वे भावानां सर्वथाऽनेकत्वं वदती-त्यनेकवादी ) पदार्थोभां द्वाध्र अपेक्षाये अेकपाण्डु डोवा छतां पण्डु तेने न जेतल सर्वथा पदार्थोनु अनेकपाण्डु स्थापित करनार वादी, पदार्थों में किसी अपेक्षा से एकत्व होते हुए भी उसे न देख कर सर्वथा पदार्थों का अनेकत्व स्थापित करने वाला वादी One not recognising unity in substances from any point of view and maintaining absolute difference among them, one inspite of the existence of similarity in substances from a certain point of view establishes the fact of absolute difference among them ठा० ८,

**अशिक्षिखत्त त्रि०** ( अनिश्चित ) त्याग करेड नहि; नापेड नहि बिना त्यागा हुआ, Not abandoned, not thrown नाया० १; १३; १६, भग० ६, ३१, १७, २; २०, ६, ( २ ) अविश्रान्त; विश्राम वगरनुं; निरन्तर, सदा. विश्राम रहित; निरन्तर, सदा un-interrupted; ceaseless, without rest नाया० १; १६, भग० २, १;

**अशिक्षिवित्ता सं० कृ० अ०** ( अनिश्चित्य ) भूक्या विना बिना छोडे Without placing, without having placed वेय० ४, १६, २०,

**अशिक्षण पु०** ( अनग्न-न विद्यन्ते नग्नास्तत्कालीना जना येभ्यस्तेऽनग्ना ) अर्धभूभिना भनुष्य-जुगलियाते वस्त्र पुरां पाउनार डेव-वृक्ष भोगभूमि के जुगलिया मनुष्यों को वस्त्र देने वाला कल्पवृक्ष Kalpavriksha 01

desire-yielding tree supplying garments to Jugalyās, the denizens of the land of inaction जीवा० ३, ३, सम० १०, जं० प० २, २०,

**अशिक्षाम त्रि०** ( अनिकाम ) परिमित परिमित. Limited ( २ ) तुच्छ तुच्छ, हलका inferior उत्त० १४, १३,—**सोफख त्रि०** ( -सौख्य ) तुच्छ सुख, थोडुं-अल्प सुख. तुच्छ सुख; थोडा सुख. scanty happiness “ अशिक्षामसोक्खा, संसार-मोक्खस्स विपक्खभूया ” उत्त० १४; १३;  
**अशिक्षुहिय त्रि०** ( अनिगूहित ) गोपवेड नहि बिना छिपाया हुआ Not concealed पंचा० १५, २७; १६, ३४;—**जलवीरिय पु०** ( -बलवीर्य ) जेणे अल-शरीरसामर्थ्य अने वीर्य-चित्तमे उत्साह-अ-दरनुं सामर्थ्य गोपव्या नथी ते जिसने बल-शरीर का सामर्थ्य और वीर्य-चित्त का उत्साह-अंतरंग का सामर्थ्य नहीं छुपाया हो वह one who has not concealed his physical and mental powers पंचा० १५, २७; प्रव० १५६१,

**अशिक्षगय त्रि०** ( अनिर्गत ) नहि नीडिजेड नही निकला हुआ Not come out, not started. विशेष० २३६, भग० १४, १,

**अशिक्षगह पु०** ( अनिग्रह-अविद्यमानो निग्रह-इन्द्रियनियन्त्रणात्मकोऽपेक्षति ) जेने इन्द्रियोना निग्रह-इन्द्रियो वश नथी ते जिसने इन्द्रियों का निग्रह न किया हो, जिसने इन्द्रियोंको वश में न किया हो One who has not obtained his senses परह० १, ४, ( २ ) त्रि० उद्धत, स्वच्छदी उद्धत, स्वच्छन्दचारी. selfwilled, insolent. परह० १, २; ( ३ ) न० अगीआग्नु गैण्डु अथल-विपय-मेवन ग्यारहवों गैण्डु अदम्य-विषय-वन्त,



Gauna Abrahma, sexual enjoyment. परह० १, ४,

अणिच्च. त्रि० ( अनित्य ) अनित्य, क्षणिक-  
शुभ्र; नाशवंत, नश्वर नाशवान्; क्षणभंगुर  
Transitory ओव० २०; ३४; पि० नि०  
१४१; भग० ६, ३३; नाया० १, परह० १, ५;  
आया० १, १, ५, ४६; मूय० १, ६, ४,  
—जागरिया स्त्री० ( —जागरिका )  
संसारतुं अनित्य स्वरूप स्थितवतु ते संसार  
के अनित्य स्वरूप का चितवन करना think-  
ing upon the transitory nature  
of the world “ अणिच्चजागरियं  
जागरंति ” भग० ३, १ १५, १, निर० ३,  
३; —भावणा. स्त्री० ( —भावना ) संसार-  
तु स्वरूप अनित्य छे ओवी लावना लावनी  
ते संसार का स्वरूप अनित्य है, ऐसी भावना  
करना. meditation upon the  
non-permanent nature of the  
world सूय० १, २, १, ५;—मेरासरूप  
पुं० ( —मर्यादास्वरूप ) अनित्यत मर्यादा  
रूप इत्य-वत्येना आवीश तीर्थक्षेत्रा साधु-  
ओनो आचार अनित्यतमर्यादारूप कल्प-वीच  
के बाबास तीर्थकरों के साधुओं का आचार  
the practices of the Sādhus  
(monks) of the 22 intermediate  
Tirthankaras, scripture in  
which rules of conduct are not  
precisely fixed पंचा० १७, ७,

अणिच्चय त्रि० ( अनित्यक ) नाशवंत;  
क्षिप्रकाल नहि रहेना नशवान्; अनित्य  
Transitory. आया० १, १, ५, ४६,

अणिच्चयत् स्त्री० ( अनित्यता ) अनित्यपण,  
नश्वरपण अनित्यपना, नश्वरपना Transi-  
toriness. मूय० १, २, १, ५,

अणिच्चारुण्येहा स्त्री० ( अनित्यानुमेता )  
धन, पुत्र, शरीर वगैरे सर्व अनित्य छे, ओवी

लावना धन, पुत्र, शरीर आदि सब अनित्य  
हैं, ऐसी भावना. Meditation upon  
the impermanence of wealth,  
sons, body etc. ठा० ४, १, भग०  
२५, ७,

अणिच्छंत. व० क० त्रि० ( अनिच्छन् )  
न छंछते, न आछते इच्छा न करता हुआ;  
न चाहता हुआ Not wishing. विशेष०  
२०१, सु० च० १, ३६०;

अणिच्छिय. त्रि० ( अनीप्सित ) छिद्यत  
नहि; अनिष्ट अनिष्ट, अनिच्छित Not  
desired, evil, पन्न० २८;

अणिच्छियत्ता स्त्री० ( अनीप्सित-ता ) पाभ-  
वानी अनिच्छा पाने की अनिच्छा-प्राप्त  
करने की इच्छा का न होना. Absence of  
desire to get भग० ६, ३;

अणिजिरण त्रि० ( अनिर्जीर्य ) छुवप्रदेशथी  
छुटा न पडेल डर्मपुद्गल; निर्जरा थयेल  
नहि जीवप्रदेश से न छूटा हुआ कर्म  
पुद्गल; जिसकी निर्जरा न हुई हो, ऐसा कर्म-  
पुद्गल-परमाणु Karmic atoms not  
worked off from the soul by  
Nirjarā. भग० ६, ३, कप्प० २, १८;

अणिज्जमाण त्रि० ( अन्वीयमान ) अनुसरतुं;  
अनुसरवामा आवतु जिसका अनुसरण  
किया जाता हो Being followed  
विवा० १,—मग्न त्रि० (—मार्ग ) अनुस-  
रवामा आवे छे मार्ग-पथ गेते ते वह  
मार्ग जिसका अनुसरण किया जाता हो  
which tenet is being followed  
“ सच्छिप्रा चहगरपहकरेण अणिज्जमाणमग्गे  
मियागासेणायं ” विवा० १, नाया० १६,

अणिज्जूह. त्रि० ( अनिर्जूह ) भोटा अथभाथी  
संतेपये उद्धार डरेल नहि वं प्रथ में में  
नक्षिप्त नही किया हुआ. Not epitom-

omised, not summarised from a larger work. भग० १, ६,

अणिज्भाहता सं० कृ० अ० ( अनिर्धार्य-  
चक्षुरव्यापार्येत्यर्थः ) यक्षुना व्यापार विना,  
आंभथी ज्ञेया विना आँखों से विना देखे  
Without seeing with the eye,  
without having seen with the  
eye. भग० ७, ७;

अणिष्ट. त्रि० ( अनिष्ट ) अनिष्ट, अप्रिय,  
अशुगमंतु. अनिष्ट, अप्रिय Unpleasant  
“अणिष्टा भवन्ति शादिज्जे दुव्विणीया ”  
परह० १, ३, भग० १, ५, ७, ३, २,  
६, ३३, १४, ५, ६; १६, ३, जीवा० १;  
ओघ० नि० भा० २५, ३०६; ठा० २, ३;  
सम० प० २२७, नाया० १, ८; ६, १२, १४,  
पञ्च० २८, ज० प० २, ३६, सु० च० २, ३१०,  
उवा० ८, २५६,—फल. त्रि० (—फल )  
जेनु इल अनिष्ट छे ते अनिष्ट फल वाला  
resulting in evil पचा० ११, ३६;  
—वयण. न० (—वचन ) अनिष्ट वचन,  
आक्रोश वचन अनिष्ट वचन, आक्रोश वचन  
evil speech, cruel speech “अणि-  
ष्टवयणेहिं सम्पमाणा ” परह० १, ३;  
—स्वर पु० (—स्वर ) अशुगमतो स्वर-  
अवाज अप्रिय स्वर unpleasant  
voice, sound भग० १, ७, ७, ६, ज०  
प० २, ३६;

अणिष्टतर त्रि० ( अनिष्टतर ) अति अनिष्ट;  
अतिशय अप्रिय. बहुत अनिष्ट, बहुत अप्रिय  
Extremely unpleasant विवा० १,  
नाया० ८, ६, १२,

अणिष्टतरय त्रि० ( अनिष्टतर-क ) अति  
अनिष्ट अति अनिष्ट Extremely bad;  
unpleasant नाया० ८ १६,

अणिष्टविय त्रि० ( अनिष्टापित ) पृथु न  
डरेल, असमाप्त, निष्ठा-समाप्तिने न पामेत्त

अपूर्ण, अकूरा Not finished. भग० ६,  
३३,

अणिदुहअ त्रि० ( अनिष्टीवक ) लुओ “अणि-  
दुहअ” शब्द देखो “अणिदुहअ” शब्द  
Vide “अणिदुहअ” परह० २, १,

अणिदुहअ त्रि० ( अनिष्टीवक ) मुभमांथी  
थुंझणणा वगेरे न परतवनार-इंठनार.  
मुख में से थूक-कफ वगैरह न फेंकने वाला.  
Not spitting out cough, saliva  
etc ओव० १६,

अणिद्धि स्त्री० ( अनद्धि ) आमर्षोपधि आदि ल-  
ब्धिने अभाव, ऋद्धिने अभाव आमर्षोपधि  
आदि लब्धियों का अभाव, ऋद्धि का अभाव.  
Absence of supernatural  
powers like that of Amarsosa-  
dhi etc, absence of prosper-  
ity नाया० ११, भग० १५, १,—पत्त  
त्रि० (—प्राप्त ) आमर्षोपधि आदि लब्धिने  
प्राप्त थयेल नहि, लब्धि रहित आमर्षोपधि  
आदि लब्धि रहित having attained  
without supernatural powers  
like that of Amarsosadhi etc.  
भग० १४, ५,

अणिद्धिमंत त्रि० ( अनद्धिमंत ) लब्धिपंत नहि;  
ऋद्धिने प्राप्त थयेल नहि लब्धि रहित,  
ऋद्धि रहित Without attaining  
supernatural powers; without  
prosperity “ छव्विहा अणिद्धिमता  
परयत्ता, तजहा-हेमवत्तगा हिरयवत्तगा ”  
ठा० ६,

अणिगहवण न० ( अनिलवन ) जेनी  
पामे अभ्यास इथो होय तेनु नाम न  
छुपावतु ते; जानने पायमे आय०.  
जिमके पाम अभ्यास किया हो उसका नाम  
न छिपाना, ज्ञान का पाँचवाँ आचार. Not  
concoaling the name of a

teacher, the fifth Āchāra of knowledge. पंचा० १२, २३;

अणिहवमाण त्रि० (अनिहवत्) भरी वात व धुपायतो. सत्य वात को न छिपाता हुआ.

Not concealing a truth नाया० १;

अणितिय त्रि० (अनित्य) अनित्य; क्षणभंगुर, नाशवंत अनित्य, क्षणभंगुर Transitory. आया० १, ५, २, १४७,

अणितिय. पुं (अनितिक-अनियत) लुओ।  
“अणिइय” शब्द. देखो “अणिइय” शब्द  
Vide “अणिइय” भग० ६, ३३, दसा०  
१०, ६;

अणित्यं त्रि० (अनित्यं-असुं प्रकारमा-  
पन्नमित्यं, इत्थं तिष्ठतीतीत्यस्यं न इत्थंस्थ-  
मनित्यंस्थम् ) दैह दौष्टिक प्रकार्थी न  
रहेनार, अदौष्टिक प्रकार्थी स्थितिवाणुं-  
अदौष्टिक संज्ञाणु, प्रसिद्ध संज्ञाणुधी विद-  
क्षण अलौकिक प्रकार की स्थिति वाला-  
अलौकिक संस्थान, प्रसिद्ध संस्थान से विलक्षण.  
One in a supernatural or extra-  
ordinary condition of existence  
“संठाणमणित्यं, जरासरणविप्पमुक्काणं”  
ओव० ४४, न, पञ्च० २; भग० २५, २, जीवा०  
१, विशेष० ३१७२;—संठाण. न० (—संस्थान)  
अनियत संस्थान; अदौष्टिक-विदक्षण संज्ञाणु;  
सिद्धानु संस्थान-आधार अनियत संस्थान;  
विलक्षण संस्थान; सिद्धों का संस्थान-आकार.  
extraordinary or supernatural  
structure of the body or form  
of Siddhas जीवा० १;

अणिदा. स्त्री० (अनिदा) अन्धालुपणु डरेली  
हिंसा; आमा प्राणीने असावधानतामें  
मारवा ले अज्ञानपन से जो हुई हिंसा;  
ज्ञानने वाले प्राणी को असावधानी में  
मारना. Unconscious killing; kill-  
ing a living being while it is

off its guard. भग० १६, ५; (२)  
अनिधारणु; अयोक्षस; भेषपरपणु. बे  
स्वरपना; अनिश्चित. uncertainty;  
absence of positive knowledge.  
“पुढविकाइया सव्वे असणिणभूया अणि-  
दाण वेयणं वेदंति” भग० १, २; पञ्च० १;  
३५;

अणिदाणता. स्त्री० (अनिदानता) नियाणुं न  
करनारनो भाव; इलाशसा रहितपणु; नरेंद्र,  
देवेंद्रआदिनी अधि न वांछनी ते फलाशा  
रहित भाव; नियाणा न करने का भाव;  
देवादिक की अदि की इच्छा न करना. Not  
desiring the prosperity of  
Indra etc; absence of an incli-  
nation for Niyānu ( e g.,  
intense longing for the fulfil-  
ment of an avowed desire in  
future birth. ) “सव्वत्य भगवया  
अणिदाणता पसत्था” ठा० ६; वेय० ६, १६;  
अणिदेस. त्रि० (अनिदेश) शब्दधी न डही  
शब्दाय ओषुं, अनभिदाप्य अनिर्वचनीय, शब्द  
से न कहे जान योग्य. Indescribable;  
inexpressible in words, विशेष०  
२५२;

अणिदेस पु० (अनिदेश) अमान्य; अस्वी-  
कार; अप्रमाणु करतु ते अमान्य; अस्वीकार.  
Denying the authority of; not  
accepting. उत्त० १, ३,—कर त्रि०  
(—कर) अमान्य करनार, डबूल न करनार.  
अमान्य करने वाला, कबूल न करने वाला.  
one who does not accept.  
“आणाणिदेसकरे गुरुणमणुववायकारण”  
उत्त० १, ३;

अणिपरा त्रि० (अनिपन्न) निपणुं नदि;  
तैयार थयेनुं नदि. अनुत्पन्न. Not  
produced; uncooked. भग० १५, ११

**अणिमंतेमाण** व० कृ० त्रि० ( अनिमन्त्रयत् )  
नहि आमन्त्रतो; न नोत्तरतो; आमन्त्रणं न  
आपतो. नोता न देता हुआ; आमन्त्रित न  
करता हुआ. Not inviting; not  
giving an invitation. आया० २, २,  
३, ६०;

**अणिमित्त.** न० ( अनिमित्त ) विना कारण;  
कारण विना. निना कारण, अकारण  
Unreasonably, without any  
cause. नाया० ११;

**अणिमिस.** त्रि० ( अनिमेष ) आंभनो पल्लकारे  
भार्या वगरनुं. पल्लक न मारा हुआ Wink-  
less; without twinkling. उत्त०  
१६, ६, नाया० ३, ८, भग० ६, ३३, ११,  
१०; १५, १; दसा० ७, १२; (२) वनस्पति  
विशेष + वनस्पति विशेष + a kind of  
vegetable. “बहु अट्ठिअं पोग्गलं अणि-  
मिसं बहुकंद्यं” दस० ५, १, ७३,—एयण  
पु० ( -नयन-न विद्यते निमेषो येषा  
तानि अनिमेषाणि, अनिमेषाणि नयनानि येषा  
तेऽनिमेषनयनाः ) ७ आंभनो पल्लकारे  
भारता नथी ते, देवता आँख के पल्लक न मारने  
वाला देव a god, with winkless  
eyes पंचा० १८, १६;

**अणिमुक्ख** पु० ( अनिमोक्ष ) मोक्षनो  
अभाव. मोक्ष का अभाव Absence of

salvation. विशेष० २४६८;

**अणियट्ठि.** न० ( अनिवर्त्तिन् ) मुक्ति भेज्वा  
विना निवर्त्ते नहि तेवुं ध्यान, शुक्लध्याननो त्रीजे  
भेद-पाथो. मुक्ति प्राप्त किये बिना उससे निवृत्त  
न हो ऐसा ध्यान; शुक्ल ध्यान का तीसरा भेद-  
पाथ Meditation which does not  
cease without attaining salva-  
tion, the third variety or stage  
of Śukladhyāna. “सुहुमकिरिण  
अणियट्ठि” ठा० ४, १; ओव० १०; उत्त०  
२६, ४१, पंचा० ३, २६, (२) पुं० ७६  
भो अह ७६ वौ ग्रह. the seventy-  
ninth planet. सू० प० २०; ठा० २,  
३, (३) जंबूद्वीपना भरतक्षेत्रभां आवती  
चौवीसीभा थनार २० भा तीर्थंकर जवू-  
द्वीप के भरतक्षेत्र की आगामी चौवांसी में  
होने वाले २० वें तीर्थंकर the future  
twentieth Tirthankara of  
Bharata Ksetra in Jambū-  
dvīpa in the coming Chovisī  
(cycle of Tirthankars) सम० प० २४१;  
—करण न० ( -करण ) समुद्रित प्राप्त  
करती वज्रते रागद्वेषनी ग्रंथिने भेदनार विशुद्ध  
अध्यवसायविशेष, ३ ७ ग्रंथिने भेदा विना  
निवर्त्ते नहि ते करणविशेष सम्यक्त्व प्राप्त  
करते समय रागद्वेष की ग्रन्थि को भेदने वाला

छनोट—टीकाकार ने पोग्गल शब्दको अर्थ भास अने अणिमिसनो अर्थ मत्स्य द्योते, पण ते  
उचित लागतो नथी, कारण ते आगण पाछण वनस्पतिविशेषनो अधिकार छे टीकाकार पोते पण  
ते वज्रतना पीण आचार्यो नो मत दर्शावता छे छे छे “अन्ये त्वभिदधति वनस्पत्यधिकारात्तथा-  
विधफलाभिधाने एते इति”

नोट—टीकाकार ने पोग्गल शब्द का अर्थ मत्स्य और अणिमिस शब्द का अर्थ मत्स्य किया है,  
परन्तु यह उचित नहीं प्रतीत होता, क्योंकि, आगे पीछे वनस्पति का वर्णन है और स्वयं टीकाकार  
भी उस समय के दूसरे आचार्यों का मत प्रकट करता हुआ कहता है कि, “अन्ये त्वभिदधति  
वनस्पत्यधिकारात्तथाविधफलाभिधाने एते इति”

\*Note—the commentary assigns the meaning “fish” but the  
context favours the meaning “fruit”

विशुद्ध अध्यवसायविशेष; जो ( रागद्वेषरूपी ) प्रथि कौ भेदे बिना निवृत्त न हो वह करणविशेष extremely pure thought-activity which does not subside without shattering the knot of passion and hatred at the time of initiation into the right faith. आया० नि० टी० १, ६, १, २८४,—वायर पुं० (—बादर—न विद्यतेऽन्योन्यमध्यवसायस्थानस्य व्यावृत्तिर्यस्यासावनिवृत्तिः स चासौ बादरश्चेति ) नवमे गुणुक्षाले वर्तते। अथ नवे गुणस्थान वाला जीव. a soul in the ninth Gunasthāna क० ग० ६, ५०, ( २ ) नवमा गुणुस्थानकं नाम; आदि उपायोदय दशमा गुणुस्थानकनी अपेक्षाये आदर—स्थूल छे, वणी आ गुणुक्षाले वर्तता धृष्टा अथेना अध्यवसायो परस्पर व्यावृत्ति-पृथक्करण पामता नथी, भाटे “ अणियट्टिवायरसंपराय ” अणुं सार्थ नाम छे नवे गुणस्थान का नाम; इस गुण स्थान में दशवे गुणस्थान की अपेक्षा कषायोदय स्थूल होता है और इस गुणस्थान वर्ती बहुत से जीवों के अध्यवसाय परस्पर पृथक्करण को प्राप्त नहीं होते अत इसका “ अनियट्टिवादरमपराय ” यह सार्थक नाम है. the ninth Gunasthāna so named because here the Samparāya or unclean passions are grosser than in the tenth ( Bādara, gross ). The activities of the souls in this stage are not differentiated. क० ग० ६, ५०,

अणियट्टिज्जमाण त्रि० ( अनिवर्त्तमान ) पाणिना तरंग वगेरे साथे अक्षत्ता—गोथा

भातुं; सामानां दृष्टाथी दृष्टातुं. पानी की लहर वगैरह से टकराने वाला; सामने के आक्रमण से दबजाने वाला. Being tossed to and fro e.g by waves. “ सलिलतित्तिस्ववेगोहि अणियट्टिज्जमाणी कोट्टिमंसि करतत्ताहते विव तेंदुसण ” नाया० ६;

अणियण. पुं० ( अनग्न ) अणुं “अणियण” शब्द देखो “अणियण” शब्द. Vide “अणियण”. ठा० ७; प्रव० १०८४;

अणियत त्रि० ( अनियत ) नियमित नहि ते; अथोक्तस. नियत नहीं. Irregular; uncertain, not fixed पंचा० १३, ३३; —लाभ पुं० (—लाभ ) अथोक्तस लाभ अनियत लाभ—फायदा uncertain gain. पंचा० १३, ३३;

अणियत्त त्रि० ( अनिवृत्त ) निवृत्त नहि थयेल; निवृत्ति न पामेय निवृत्ति रहित. Not quieted, in a state of activity. “ परिन्वयंते अणियत्तकामे ” उक्त० १४, १४; सूय० २, ६, २३,—काम. त्रि० (—काम ) जेनी धम्मा निवृत्त नथी थथ ते अनिवृत्ति—निवृत्ति रहित इच्छा वाला one who is not free from longing, one with yearnings unassuaged. उक्त० १४, १४;

अणियमित्ता. सं० कृ० अ० ( अनियम्य ) नियमित न करीने; न अटकावीने, नियमित न करके, न रोक करके Without checking, without having restrained. “ इह जीवियं अणियमित्ता ” उक्त० ८, १४,

अणियय-अ. त्रि० ( अनियत ) अप्रतिशब्द; डोढना बंधायेय नहि; नित्य वास रहित. अप्रतिबद्ध; किमीका बाधा हुआ नहीं; नित्य वास रहित. Unrestrained; free;



without premanent residence. “गामे अश्विन्याणो चरे” उत्त० ६, १७, पञ्च० १७; सूय० १, ६, ६; ( २ ) अनवस्थित, अनिश्चल अनिश्चल; अनवस्थित. not fixed, unsteady. परह० १, २, ( ३ ) न० ओडली नियतिथी नहि. पशु पांये समवायिधारणुथी उत्पन्न थतुं शुभ वगेरे केवल अकेली नियति से ही नहीं किन्तु पाँचों समवायिकारणों से उत्पन्न होने वाला सुख वगैरह happiness etc resulting from the collective operation of the five Samavāyi causes and not from one of them viz. Niyati नियतानियतं संतं, अयाणंता अजुद्धिया” सूय० १, १, २, ४, नाया० १, ( ४ ) पुत्रपार्थथी अन्यथा थध शडे तेवे लाव, लावीलावथी भिन्न पुरुषार्थ से अन्यथा हो सकने वाला भाव, भावी भाव से भिन्न capable of being altered by human efforts; not unalterably fixed, different from future happenings “अश्विन्यायया सव्वभावा” उवा० ६, १६६,—चारि पुं० (—चारिन् ) लुओ “अश्विणअचारि” श०६ देखो “अश्विणअचारि” शब्द. vide “अश्विणअचारि” सूय० १, ६, ६,—वट्टि पुं० (—वृत्ति) अप्रतिबद्ध विहार, प्रतिबध रहित वर्तन unrestricted manner of living दसा० ४, १२, दस० ४, ठा० ८,—वित्ति पुं० (—वृत्ति) लुओ उपलो श०६ देखो ऊपर का शब्द vide “अश्विन्यायवट्टि” ठा० ८, दसा० ४, १२, १३, १४;

अश्विन्याण त्रि० (अनिदान) लेशे संयमतप वगेरेनुं लावि इल भागी नथी सीधु ते; नियाणुं न करनार, निर्जरा सिवाय थीन

इलनी आशिक्षा न राभनार संयमतप वगैरह का फल न चाहने वाला, नियाणा न करने वाला, निर्जरा के सिवाय दूसरे फल की आकाक्षा न रखने वाला. Practising penance etc; without any motive save that of destroying Karma (actions). “अश्विन्याणो अकोडहले य जेस भिक्खू” पंचा० १६, ४१, दस० १०, १३; आया० १, ४, ३, १३६; उत्त० ३५, १६, भग० २, १, आव० ४, ८, जं० प० ५, ११५, ( २ ) त्रि० सावधा-नुष्ठान रहित पापानुष्ठान रहित free from sinfulness in performance, e g of penance ‘तित्विहेणवि पाण-माहणे, आयहिते अश्विन्याणसंवुडे’ सूय० १, २, ३, २१, ( ३ ) त्रि० भोग अने ऋद्धिनी प्रार्थनारूप आर्त्तध्यान विनातो भोग और ऋद्धि के प्रार्थनारूप आर्त्तध्यान से रहित free from the painful meditative prayer for future self-enjoyment and prosperity. ठा० ३, १,

अश्विन्याणभूय—अ त्रि० (अनिदानभूत) सावधानुष्ठान रहित, आश्रव रहित पापानुष्ठान रहित; आश्रव रहित Devoid of sinful conduct, not exposed to the inflow of Karma ( २ ) कुर्मना उपादान धारणु रहित—ज्ञानादि कर्म के उपादान कारणों से रहित—ज्ञानादि devoid of or free from the efficient cause of Karma i e knowledge etc. “अप्पडिक्खे भिक्खु समहिपत्ते, अश्विन्याणभूय सुपरिच्यएज्जा” सूय० १, १०, १,

अश्विन्याणया. छा० (अनिदानता) लुओ ‘अश्विदाणया’ श०६ देखो “अश्विदाणया” शब्द. Vide ‘अश्विदाणया’ वेय० ६, ६६.



अणिरुद्ध त्रि० (अनिरुद्ध) ध्यांय पशु अटके नहि तेपुं. कहीं भी न अटकने वाला Unobstructed सूय० टी० १, १२, ८; (२) पुं० प्रद्युम्न कुमारथी थयेल वैदर्भी राजीनी पुत्र, केने नेमनाथ प्रभु पासे दीक्षा लई शत्रुंजय पर सिद्ध था। प्रद्युम्न कुमार की वैदर्भी रानी का पुत्र, जिसने नेमिनाथ से दीक्षा ली और शत्रुंजय ऊपर सिद्ध गती प्राप्त की. the son of queen Vaidarbhi by Pradyumna Kumāra, who took Diksā from Neminātha, and obtained salvation on Śatruñjaya नाया० १६; —परण. पुं० (—प्रज्ञ) नेनी बुद्धि ध्यांय पशु स्खलित न थाय. अवे; तीर्थकर, देवणी आदि. अस्खलित बुद्धि वाला; तीर्थकर, केवली आदि. (one) of infallible, unobstructed intellect e. g. a Tirthankara etc. सूय० टी० १, १२, ८;

अणित पुं० (अनिल) वायु; पवन; वायरो वायु; हवा. Wind; breeze. जं० प० २, ३१; नाया० ६, दस० ६, ३७, उत्त० १४, १०, ओव० १७, परह० १, १, (२) गध येवीसीना भरतक्षेत्रना अेकवीसमा तीर्थकर भरतक्षेत्र की गत चौवीसी के २१ वे तीर्थकर. the twenty-first Tirthankara of the last Chovīsī of Bharataksetra. प्रव० २६१; (३) स्त्री० आवीसमा तीर्थकरनी प्रथम साध्वी नार्वास-वे तीर्थकर की प्रथम साध्वी. the first female disciple of the twenty-second Tirthankara. प्रव० २१०,

अणिल्लंछिय. त्रि० (अनिल्लंछित) आसीयत न डरेल; अण्ड आदि करने न समारेल खस्सी न किया हुआ. Not distinguished from others of the same class

by a special mark, spot etc. (an ox). भग० ८, ५;

अणिल्लिय. त्रि० (आनीत) लावेल; आणेल. लाया हुआ. Brought. नाया० १;

अणिवारअ. त्रि० (अनिवारक) अटका-वनार नहि; निवारणु डरनार नहि. न-रोक-ने वाला; न निवारण करने वाला Not preventing; not checking, विवा० २;

अणिवारिअ. त्रि०. (अनिवारित) रोकेल-अटकावेल नहि. बिना रोका हुआ. Not stopped; not obstructed नाया० १८; विवा० २; नाया० ४०

अणिवारिया. स्त्री० (अनिवारिका-नास्ति नि-वारको-मैवं कार्षीरित्येवं निषेधको यस्याः साऽनिवारिका) नेने साई नरसुं डरतां डोई अटकावनार नथी तेवी स्त्री. ऐसी स्त्री जिसे भला बुरा करने पर कोई रोकने वाला न हो. A woman without any body to check her “तप्यं सा सुमालिया अजा अयोहट्टिया अणिवारिया सच्छंदमई अभि-स्खणं हत्थे धोवेइ” नाया० १६; नाया० ४०

अणिवूढ त्रि० (अनिर्व्यूढ) सांभलीने निर्वाह डरेल नहि. सुनकर के उपयोग नहीं किया हुआ. Not made use of after hearing. सूय० २, ७, ३८,

अणिव्वत. त्रि० (अनिर्वृत-) ध्यांय शान्ति पामेल नहि जिसने कहीं भी शान्ति न पाई हो. Bereft of peace; destitute of mental ease. “अणिव्वते घातमुवेति वाले” सूय० १, ४, २, ५, (२) परिणाम पामेल नहि; अपरिणत. अपरिणत, परिणाम शून्य. not matured दस० ३, ६,

अणिव्वारण न० (अनिर्वाण) निर्वाण-मोक्षना अभाव मोक्ष का-अभाव. Absence of final emancipation पंचा० ७, १३.

अणिव्वुड. त्रि०. (अनिर्वृत) परिणाम

पामेक्ष नहि; अपरिणत; अपरिपक्व.  
अपरिणत; परिणाम रहित; अपरिपक्व. Not  
matured. “ तत्ता शिबुबुद्धभोद्धं आउ-  
रसरणाणि य ” दस० ३, ६;

अणिसं अ० ( अनिशम् ) हमेश, सदैव,  
निरंतर हमेशह; सदा Always, con-  
stantly. सु० च० २, ५७२,

अणिसिद्ध त्रि० ( अनिसृष्ट ) धिनिनी के सङ्गी-  
यारीनी अनुमति विना, धरना मुख्य  
भाणुसोमे ड्यूल न करेले घर के मुखियों  
द्वारा अस्वीकृत. Not consented to  
by the principal members of a  
family ओष० नि० ७०६, निसी०  
१६, ५; आया० १, ७, २, २०२, पि० नि०  
६३, ठा० ६, १, दसा० २, ७; ( २ ) धिनि  
भागीदारोनी साधारण वस्तुमांथी ओकनी  
पणु रण विना साधुने आहारादि आपवाथी  
दागतो ओक दे०; १६ उद्गमनना दोषमांने  
१५ मे दोष बहुत से भागीदारों की साधारण  
वस्तु भी एक की अनुमति के विना साधु  
को आहारादि में देने से लगने वाला एक दोष,  
१६ उद्गमन के दोषों में से १५ वौ दोष. a  
kind of sin incurred by giving  
food etc to a Sādhu from the  
property common to many part-  
ners without the permission  
of any of them, the fifteenth of  
the sixteen faults of Udgamana  
ठा० ६, १; पि० नि० ६३,

अणिसिद्ध त्रि० ( अनिसृष्ट ) लुओ “अणिसिद्ध.”  
शब्द देखो “ अणिसिद्ध ” शब्द  
Vide “ अणिसिद्ध ” अणिसिद्ध सामस  
गोट्टियभत्तार्इ देह पृगस्त ” परह० २, ५,  
भग० ८, ७; ६, ३३; ओष० ४०, निसी० ५,  
७६, १४, ४; सूय० २, ७, ३८;

अणिसिद्ध त्रि० ( अनिसिद्ध ) संमति आपेक्ष,

अनुमोदन आपेक्ष, निषेध न करेले अनुमोदित;  
निषेध न किया हुआ. Not prohibited;  
permitted. का० ८, ( २ ) सावधानुष्ठानथी  
निवृत्ति न पामेक्ष सावधानुष्ठान से निवृत्ति नहीं  
पाया हुआ not freed from faulty  
performance पंचा० १२, २५,

अणिसेस न० ( अनिशेचस ) अश्रेय,  
अकल्याण, अश्रेय. Absence  
of welfare, ruin “ अणिसेसाण  
अण्णाणुगाभिचत्ताण भवति ” दसा० ७, ३२,

अणिरस त्रि० ( अनिश्र ) सर्व जननी त्याग्य,  
अनाथ, निराधार सब लोगों द्वारा उपेक्षणीय  
अथवा त्याज्य, अनाथ, निराधार Abando-  
ned by all men, helpless  
supportless. “ ल्वे अदित्तो दुहिओ  
अणिरसो ” उक्त० ३२, ३१;

अणिरसर त्रि० ( अनिश्र ) असमर्थ, दरिद्री,  
गरीब असमर्थ, दरिद्री, गरीब. Powerless,  
poor सम० ३०; दसा० ६, १५;

अणिरसा स्त्री० ( अनिश्र ) निश्चा-भक्षणे  
अभाव; इच्छनी अपेक्षा न राखी ते  
सहायता का अभाव, किसीकी अपेक्षा न रखना  
Absence of help, absence of  
expectation वं० १, २१,

अणिसिञ्ज-य त्रि० ( अनिश्रित ) प्रतिबंध  
रहित; भभता रहित प्रतिबंध रहित, ममत्ता  
रहित Free from attachment  
“ एत्थवि समणो अणिसिञ्ज अणियाणे ”  
सूय० १, १६, २; दस० ७, ५७; परह० २,  
३; सूय० १, २, २, ७, ( २ ) अश्रुण्ड;  
अप्रवृत्त असम्बद्ध, अप्रवृत्त not  
connected with, not engaged in  
“ अणिदे सङ्कासेसु, आरभेसु अणिसिञ्ज ”  
सूय० १, ६, ३५, ( ३ ) न० इत्यदिनी अपेक्षा  
विना दैयावन्त्य वगेरे करनी ते कर्त्तव्य आदि

की अपेक्षा विना सेवा आदि करना service, worship etc without desire of fame परह० २, १; ( ४ ) न० दिग-हेतुनी निश्चा राभ्या विना थतुं ज्ञान; हेतु की अपेक्षा विना होने वाला ज्ञान knowledge not requiring syllogistic proof विशेष० ३१०, ठा० ६, १, ( ५ ) पुस्तकादिदिनी अपेक्षा विना थतु ज्ञान पुस्तकादि की अपेक्षा विना होने वाला ज्ञान knowledge not requiring reference of books etc. दस० ४, ( ६ ) त्रि० कोषणी पणु सहायता न पावते किसीसे भी सहायता की चाहना न करने वाला not needing help from any quarter “अणिस्सिओ इह लोए परलोए अणिस्सिओ” उक्त० १६, ६३, विशेष० १६६, ३०६,—वयण त्रि० (—वचन ) रागादिदोषरहित जेनां वयन छे ते, शुद्ध प्ररूपक रागादि दोषों से रहित वचनो वाला, शुद्ध प्ररूपक. free from attachment or hatred in speech २ दसा० ४, २७,—वयणया त्री० (—वचनता—वचन ) रागद्वेष आदि रहित वयन रागद्वेषादि रहित वचन. speech free from passions ठा० ८;

अणिस्सिओवस्सिय पुं० ( अनिश्रितो-पाश्रित ) निश्रित-राग अथवा आहारादिनी लोभुपता, उपाश्रित-द्वेष अथवा शिष्य आदि नी अपेक्षा. अ-नहि, रागद्वेष रहित, आहार अने शिष्यादिनी अपेक्षा रहित साधु रागद्वेष रहित, आहार और शिष्य आदि की अपेक्षा रहित साधु A Sādhu free from passion and hatred, also, one not yearning for sweet, food, disciples etc. “साहस्मियाणं अहि-

गरणंसि उप्यरणंसि तत्थ अणिस्सिओवस्सिओ अपक्खगाही ” ठा० ८, “अणिस्सिओ-वस्सियं सम्मं ववहारमाणे समणे शिगंथे आणाए आराहए भवइ ” भग० ८, ८, दसा० ४, १०५, वव० १०, ३;

अणिस्सिओवहाण न० ( अनिश्रितोपधान ) भीजनी सहाय विना करवाभां आवतुं तप, निष्काम तप; ३२ योगसंग्रहभांने योथे योगसंग्रह दूसरे की सहायता विना किया जाने वाला तप; निष्काम तप, ३२ योग-संग्रहों में से चौथा योगसंग्रह. Penance observed without the help of others, penance without desire of worldly fruit, the fourth of the thirty-two Yogasaṅgrahas. सम० ३२;

अणिह पुं० स्त्री० ( अनिह ) कोधादिथी अपी-डित. क्रोधादि से अपीडित ( One ) not afflicted by anger etc “अणिहे से पुट्टे अहियासए ” सूय० १, २, १, १३; ( २ ) पुं० स्त्री० माया, प्रपंच रहित; उपर रहित माया, प्रपंच रहित, कपट रहित. free from deceit, “अस्सिं सुठिच्चा अणिहे चरेज्जा ” सूय० २, ६, ४२, १, ८, १८, दस० १०, १, १७,

अणिह पुं० ( अनिहत ) उपसर्गादिथी अपराजित; उपसर्गथी पराभव न पावेला. उपसर्गादि से पराभव न पाया हुआ. ( One ) not overpowered by disturbance caused by human beings, celestial beings etc “अणिहे एण मप्पाय मपेहाए धुणे सरीर ” आया० १, ४, ३, १३५; सूय० १, २, २, ३०;

अणिह. पु० ( अजेह ) रागद्वेष वगरतो, स्नेह वगरतो रागद्वेष रहित, स्नेह रहित. Free from attachment. आया० १, ४,

३, १३५; सूय० १, २, २, ३०;

**अणिहतय** त्रि० (अनिहतक) धात नहि  
पाभेक्ष, निःपङ्कम आयुष्यवाणो. निरुपकम  
आयुष्य वाला, जिसकी आयुष्य घात न हो  
ऐसा. Not destroyed सम०

**अणिहयरिउ** पुं० (अनिहतरिषु) लद्धिपुर  
ना रहैवासी नाग नामे गाथापतिनी  
की सुलसातो पुत्र, के नेनो अधिकार अतगड  
सूत्रना त्रीण वर्गना योथा अध्ययनमा छे  
भदिलपुर के रहने वाले नाग नामक गाथापति की  
की सुलसा का पुत्र, जिसका अधिकार  
अंतगड सूत्र के तीसरे वर्ग के चौथे अध्याय  
में है. The son of Sulasā the wife  
of a petty ruler named Nāga,  
residing in Bhaddilapūra,  
mentioned in the fourth chap-  
ter of the third section of  
Antagada Sūtra अंत० ३, ४,

**अणिहुत** त्रि० (अनिभृत) उपशान्त थयेल  
नहि, शान्ति रहित अनुपशान्त, शान्ति रहित  
Devoid of peace, not calm  
ओव० २१; परह० १, ३,—इंद्रिय त्रि०  
(—इन्द्रिय) नेनी छद्रियो शात नथी ते  
अशान्त-शान्ति रहित इन्द्रियो वाला  
of uncontrolled, excitable  
senses, with senses not calm  
परह० २, ५,—परिणाम त्रि० (—परि-  
णाम) शान्ति रहित-उपायना उपशम  
रहित परिणामवाणो शान्ति रहित-कपाय के  
उपशम से रहित परिणामवाला possessed  
of sense-perception, thought  
etc; not free from evil  
passions परह० १, १,

**अणीइ** स्त्री० (अनीति) धृति-अतिवृष्टि,  
अनावृष्टि आदिनो अभाव अतिवृष्टि, अनावृष्टि  
आदि का अभाव. Absence of such

calamities as too much rain,  
no rain at all etc नाया० १,—पत्त  
त्रि० (—पत्र-न विद्यते इतिर्गडुरिका-  
दिरूपा येषु तान्यनीतीनि, अनीतीनि पक्षाणि  
येषा ते तथा ) नेना पादडा गाडर वगेरे  
डीडाथी अत्रायेक्ष-कैतरायेक्ष नथी ते जिमके  
पत्ते कीड़ों ने न खाये हों-न कतरे हो.  
with leaves not bitten by  
worms, insects etc ज० प०

**अणीय** न० (अनीक) दाथी, धोडा वगेरेनु  
सैन्य-लक्ष्मर हाथी, घोडा वगैरह का सेना An  
army consisting of elephants,  
horses etc भग० १४, ६, उत्त०  
१८, २, ओव० ३१, परह० १, ३, कप०  
२, १३, ज० प० ५, ११७, राय० ७६,

**अणीयस** पुं० (अणीयस) लद्धिपुरना निवासी  
नागनामे गाथापतिनी भार्या सुलसाथी  
थयेल पुत्र, के ने नेमनाथ प्रभुपासे दीक्षा लछ,  
१४ पूर्वना अभ्यास करी, २० वर्षनी प्रव्रज्या  
पाणी शत्रुण्य पर सिद्ध थया; छ लाधना  
नामथी प्रसिद्ध थयेल मुनिमाना ओइ  
भदिलपुर के निवासी नाग गाथापति (अधि-  
कारी) की भार्या सुलसा के गर्भ से  
उत्पन्न पुत्र, जो नेमिनाथ प्रभु से दीक्षा  
लेकर, १४ वर्षों का अभ्यास कर ओर २०  
वर्षों तक प्रव्रज्या पालन करने के पश्चात्  
शत्रुंजय पर्वत पर से मोक्ष गया, छ. भाईयों के  
नाम से प्रसिद्ध मुनियों में से एक मुनि  
A son born of Sulasā the wife  
of an officer named Nāga. a  
resident of Bhaddilapūra, who  
took Dikṣā from Neminātha,  
studied fourteen Pūrvas,  
practised asceticism for twenty  
years and obtained salvation on  
Śatruñjaya अंत० ३, १; ३, ४;

अणीया. लां० (\*अनीका-अनीकिनी) सेना; ३८६.  
सेना; कटक. An army भग० ३, १; राय०  
७३; ठा० ५, १, —अहिबइ. पुं० (-अधिगति)  
सेनातो अधिपति-प्रमुख; लक्ष्मरेतो उपरी  
सेनापति. the commander of an  
army; a general भग० ३, १,  
नाया० ८, ठा० ३, १; नाया० ८०

अणीहड त्रि० (अनिर्हृत) अहार नहि छोड़े.  
बाहिर नहीं निकाला हुआ. Not taken  
out. वेय० २, १३;

अणीहारि. न० (अनिर्हारिन्) जुओ 'अणीहा-  
रि' शब्द. देखो "अणीहारिम" शब्द Vide  
"अणीहारिम" उक्त० ३०, १३;

अणीहारिम न० (अनिर्हारिम) ज्यां शयनं  
अग्नि-संस्कार करनार न भणे तेवे विषम  
स्थाने-पर्वतादिनी गुफाभा सथारे करवे ते,  
संथारानो ओड प्रकार. जहां शव का अग्नि  
संस्कार करने वाला न मिले ऐसे विषमस्थल  
में-पर्वतादि की गुफा में सथारा करना, संथारे  
का एक भेद. Practising Santhārā  
in a cave of a mountain where  
there would be no one to cre-  
mate the dead body, a variety  
of Santhārās भग० १३, ७, २५, ७,  
ठा० २, ४,

अणीहिअ त्रि० (अनीहित) ओहापोह न  
करेले; अपिचारित अविचारित, विना ऊहापोह  
किया हुआ. Not argued with pros  
and cons विशेष २५७;

अणु. त्रि० (अणु) प्रमाणमा अतिथेपुं;  
प्रमाण में बहुत थोड़ा. Very small in  
size or proportion ज० प० ७,  
१३७, परह० २, ३; दस० ४, ( २ ) सूक्ष्म;  
पारीक; नानु, लुप्त. सूक्ष्म, दारीक; लुप्त; छोटा.  
small minute. क० गं० १, १८; भग०  
१, १, जीवा० १; मूय० १, २, १, ११;

आया० १, ५, २, १४६; ( ३ ) परमाणु;  
सूक्ष्ममां सूक्ष्म पुद्गलाश परमाणु, सूक्ष्म से  
सूक्ष्म पुद्गलाश. the smallest atoms.  
विशे० ४३२;

अणु. अ० (अणु) पश्चात्; पछी. पीछे, पश्चात्.  
Afterwards. " जीवा सोहिमणुपत्ता,  
आययंते मणुसयं " उक्त० ३, ७; पत्र० २;  
अणुअ त्रि० (अणुक) सूक्ष्म, जीलुं. सूक्ष्म;  
छोटा. Minute, small जं० प०

अणुअसत्त त्रि० (अनुवर्त्तक) अनुकूल वर्तनार.  
अनुकूल वर्तव करने वाला. Acting  
favourably. विशेष ३४०२;

अणुअसंत. व० क० त्रि० (अनुवर्त्तमान)  
पाछी आवतुं, अनुसरतुं. पीछे आता हुआ.  
अनुसरण करता हुआ. Following;  
succeeding राय० ४२;

अणुअसमाण व० क० त्रि० (अनुवर्त्तमान)  
जुओ उपलो शब्द देखो ऊपर का शब्द.  
Vide "अणुअसत्त." राय० ४२,

अणुआ ली० (अनुगा) जुवार, धान्यनी  
ओड नत जुवार. एक प्रकार का धान्य A  
species of corn; ( Juvāra )  
प्रब० १०१८,

अणुइरण त्रि० (अनुदीर्ण) आवेल. आया  
हुआ Come, approached. विशेष  
१२८८;

अणुइअ. त्रि० (अनुदीर्ण) उदीरणा न करेले.  
उदीरण न किया हुआ. Not caused to  
mature, not forced up into  
maturity क० प० ५, १,

अणुउद पुं० (अनृत-कालान्तर) पोतानो थपत  
नहि; पोताना समयथी पड़ेला अथवा पछी,  
थपत. अनियमित समय, अपने समय से  
पहिले अथवा पीछे, कुसमय. An improper  
time i. e. too early or too late.



‘विसमं पवालिणो परिणमन्ति अष्टाश्रये सुदेति  
पुष्पं फलं च ” ठा० ५, ३;

अष्टाश्रयः. त्रि० ( अनुयोजित ) प्रवर्तयित;  
गोष्ठवेद्य योजना किया हुआ, संगठित.  
Arranged; organised. नदी०

अष्टाश्रयः. पुं० ( अनुयोग-अष्टा सूत्र महानर्थः,  
महतोऽर्थस्याष्टासु सूत्रेण सह योगोऽनुयोगः  
अनुरूपो योगो वाऽनुयोगः सूत्रस्यार्थेन सहानु-  
कूलसम्बन्धः ) सूत्रेणो अर्थेनो साथे संबंध  
योगो ते; व्याख्या; विवरण; टीका; सूत्रेणो  
अर्थे प्रकाशितो ते. सूत्र का अर्थ के साथ सम्बन्ध  
करना व्याख्या; विवरण, टीका, अर्थ प्रकाशित  
करना. Exposition of an aphorism  
अष्टाश्रयः २; नदी० ५६; विशेष० १, ८४१,  
१३५०; भग० २५, ३, अष्टाश्रयः नि० १; ( २ )  
द्रव्यानुयोग, गणितानुयोग, धर्मकथानुयोग अने  
चरणकरणानुयोग अने चारों में से कोई भी एक  
अनुयोग. Any one of the four  
Anuyogas viz Dravya, Ganita,  
Dharmakathā and Chārāṇaka-  
raṇa. “ से किं तं अष्टाश्रये ? अष्टाश्रये  
दुविधे पश्यन्ते, तज्ज्ञा—मूलपदमाष्टाश्रये  
गच्छियाष्टाश्रये य ” ठा० १०, ( ३ ) दृष्टिवाद  
अंगेनो योथो विभाग. दृष्टिवाद अंग का  
चौथा विभाग. the fourth part of  
the Dristivāda Anga नदी० ५६,  
सम० ( ४ ) उपक्रम, निक्षेप, अनुगम, नय  
धर्मादि अनुयोगद्वारां गमे ते अष्ट  
द्वारां ज्ञान; श्रुतज्ञानो अष्ट प्रकार उपक्रम,  
निक्षेप, अनुगम, नय आदि अनुयोगद्वारों में  
से किसी भी एक का ज्ञान, श्रुतज्ञान का एक  
प्रकार. a variety of knowledge  
called Śrūta Jñāna, knowledge  
with regard to any one of the

ways of defining, namely Upa-  
krama, Niksepa, Anugama,  
Naya etc क० गं० १, ७;—अर्थ पु०  
(-अर्थ) व्याख्यानरूप अर्थ. व्याख्यानरूप अर्थ.  
meaning as shown by expla-  
nation. आया० नि० टी० १, १, १, १;  
—गम. पु० (-गत ) दृष्टिवाद अंतर्गत  
अष्ट अधिकार; अवयवमां समुदायना उप-  
चार्यी दृष्टिवाद सूत्र, पारमु अंगसूत्र. दृष्टि  
वाद के अंतर्गत एक अधिकार; अवयव मे  
समुदाय के उमचार से दृष्टिवाद सूत्र, बारहवां  
अंगसूत्र. a chapter in Dristivāda  
Sūtra; the twelfth Angasūtra.  
ठा० १०,—दायक-अ. पु० (-दायक )  
अनुयोग-सूत्रार्थ आपनार, सुधर्मास्वामी  
वगैरे अनुयोग-सूत्रार्थ प्रदान करने वाले  
सुधर्मास्वामी वगैरे an expounder of  
a Sūtra, e g Sudharmā Svāmī  
etc “वदितुं सव्वे सिद्धे, जिये य अष्टाश्रो-  
गदायण सव्वे ” आया० नि० १, १, १, १,  
—द्वार. पु० (-द्वार ) अनुयोग-व्याख्या  
करवानां उपक्रम, निक्षेप, अनुगम अने नय  
अने चार द्वार, व्याख्याननी रीति अनुयोग-  
व्याख्या करने के उपक्रम, निक्षेप, अनुगम  
और नय ये चार द्वार; व्याख्यान की रीति.  
the four points to be attended  
to in a commentary, viz Upa-  
krama, Niksepa, Anugama and  
Naya, a way of lecturing अष्टा-  
श्रयः २६, १४६, सम० प० १६८, भग० २, ४,  
१७, १, नदी० ४३, ४५, विशेष० ४४३,—  
द्वारसमास. पुं० (-द्वारसमास ) अनुयोग  
द्वारां समुदायनु ज्ञान, श्रुतज्ञानो अष्ट प्रकार.  
अनुयोगद्वारों के समुदाय का ज्ञान; श्रुतज्ञान का  
एक प्रकार. knowledge of the four  
points requisite for a collective



commentary. क० गं० १, ७;—धर पुं० (—धर) अनुयोग—सूत्रार्थ धारणु करनार; अनुयोगी. सूत्रार्थ धारण करने वाला; अनुयोगी (one) who follows the explanation of the Sūtras. कप्प० ८; क० प० २, १;—पर त्रि० (—पर) अनुयोग-सिद्धांतनी व्याख्या करवाभां तत्पर सिद्धान्त की व्याख्या करने में तत्पर. intent on explaining the established principle of Sūtras. जीवा० १,—समास. पुं० (—समास) ऐक्यी वधारे अनुयोगद्वारेणुं ज्ञान थवुं ते; श्रुतज्ञानने ऐक्य प्रकार एक से ज़्यादाह अनुयोगद्वारों का ज्ञान होना, श्रुतज्ञान का एक प्रकार. getting a knowledge of more than one Anuyogadvāra; a variety of scriptural knowledge. क० गं० १, ७;

अणुयोगि. पुं० ( अनुयोगिन् ) सूत्रनुं अव-तरणुं करवाने प्रश्न करवाभां आवे ते—जेभ “चउहिं समएहिं लोगो ” ऐ सूत्रनुं अव-तरणुं करवाने “कइहिं समएहिं ? ” ऐभ पु०७नुं ते सूत्र का अवतरण करने के लिये प्रश्न करना-जैसे “ चउहिं समएहिं लोगो ” इस सूत्र के अवतरण के लिये इस प्रकार पूछना कि, “कइहिं समएहिं ? ” A question asked with a view to a quotation of a Sūtra ठ० ६;

अणुयोगिअ-य. त्रि० ( अनुयोगिक ) प्र-न्या क्षीयेक्ष दीजित ( One ) who has entered the order of asceticism “ अणुयोगियवरवसभे नाइकुलवसनंदिकरे ” नदी० ३२; (२) व्या-ख्यात आपनार व्याख्यान देने वाला. a lecturer; an expounder नदी० ३२; अणुकंपअ-य. त्रि० ( अनुकम्पक—अनुरूप

कम्पते चेष्टत इत्यनुकम्पकः ) उचित प्रवृत्ति करनार; सेवा करनार उचित प्रवृत्ति करने वाला; सेवा करने वाला. Acting properly; serving properly. “अणुकंपओ तस्स महामुणिस्स” उक्त० १२, ८; कप्प० २, ३०; अणुकंपग त्रि० ( अनुकम्पक ) दया करनार; हितचिंतक. दया करने वाला; हितचिंतक. Compassionate; ( one ) who is a well-wisher. “अणुकंपगं सुहिं वावि, किंवि नाभिसमेमहं ” उक्त० २०, ६; ( २ ) आत्महितमां प्रवृत्त थयेक्ष आत्म-हितमें प्रवृत्त—तत्पर ( one ) engaged in self-weal. ठ० ४, ४;

अणुकंपण न० ( अनुकम्पन ) दुःखी-अनाथ उपर अनुकंपा करपी ते अनार्यों पर दया करना. Showing compassion to the poor अंत० ३, ८, कप्प० ४, ६१; अणुकंपमाण. व० कृ० त्रि० ( अनुकम्पयत् ) दया-अनुकंपा करतो. दया करता हुआ. Showing compassion. नाया० १;

अणुकंपा स्त्री० ( अनुकम्पा ) अनुकंपा; दया. अनुकम्पा, दया. Compassion; mercy; pity. भग० ८, ८, १५, १; पिं० नि० ३२५; ओघ० नि० ६११; पंचा० ६, ६; १०, १०; प्रव० ६५०; ( २ ) अक्षित; प्रेमनी लागणी भक्ति, प्रेम की लगन feeling of love भग० ८, ८;—आशय. पुं० (—आशय ) अनुकंपावाणुं थित; दयाणु दृश्य दयालु हृदय kind heart. अणुकंपासयप्पओगानिकालमइविसुद्धभत्तपा-याइं” सम०—दाण न० (—दान ) अनुकंपा-दयाथी दुःखी दीनने दान देवुं ते. अनुकम्पा-दया से दीन दुःखियों को दान देना. charity to the afflicted ones through compassion. ठ० १०,

अणुकट्टमाण. व० क० त्रि० (अनुकर्षत्) भेद्यते।  
खेचता हुआ. Drawing, pulling.  
विवा० १,

अणुकट्टि स्त्री० (अनुकृष्टि) अनुवर्तन-अनुसरण  
करवुं ते. अनुसरण करने की क्रिया. The  
act of following, imitation क०  
प० १, २६,

अणुकड्ढेमाण व० क० त्रि० (अनुकर्षत्) पोत  
तरङ्ग आकर्षणुं करतो, पोतानी पाछण भेद्यते।  
अपनी ओर आकर्षित करता हुआ Dragging  
behind, pulling behind towards  
one's self नंदी० १०;

✓ अणुकह धा० I (अनु+कथ्) कथिना कथा  
पछी कहेवुं, ओल्या पछी ओलवुं, भंडन करवु,  
वाद करवे। किसीके कहने के पीछे-बोलने के  
बाद बोलना, खंडन करना, वाद करना. To  
speak after another has spoken,  
to refute; to dispute.

अणुकाहयते णि० सूय० १, १३, ३;

अणुकुड्ड. अ० (अनुकुड्य) भित्तनी पासे दीवाल  
के पास Near a wall वेय० ३, २६;

अणुकूल त्रि० (अनुकूल) अनुकूल, सगवड  
पडवुं, मनगमवुं अनुकूल; मनचाहा; सुभीते  
का. Favourable, agreeable  
“अणुकूलेण धण्ये कुमारयंभचारी” सू० प०  
२०; पणह० २, ४, जीवा० ३, ३, कप्प०  
४, ६५,—कारि त्रि०—(कारिन्) अनुकूल  
कर्म करने वाला. act-  
ing favourably नाया० १७;—वाय  
पु० (—वात) अनुकूल पवन, जेधये तेवे।  
वायु, हितकर वायरो अनुकूल वायु, चाहिये  
जैसी हवा. favourable wind जीवा० १;

अणुकंत. त्रि० (अनुक्रान्त) अनुष्ठान करेले;  
सेवन करेले अनुष्ठान किया हुआ, सेवित  
Practised; performed “एस विहि

अणुकंते माहयेण मईमया बहुसो ” आया०  
१, ६, ४, १७,

अणुकंत त्रि० (अनुक्रान्त) आयरेले आचरित,  
व्यवहृत Practised, performed  
आया० १, ६, २, १६, १, ६, ३, १४,

अणुकम पु० (अनुक्रम) अनुक्रम, परिपाटी,  
अनुपूर्वी; क्रमसर अनुक्रम; परिपाटी, तरतां-  
वार Serial order, consecutive  
order. अणुजो० ४५; प्रव० १०५७, क०  
ग० ५, ५१,

अणुकमंत त्रि० (अनुक्रमत्) पग मुक्तां;  
प्रवेश करतां पैर रखते, प्रवेश करते Enter-  
ing. सूय० १, ५, १, ७,

अणुकसाइ पु० (अनुत्कपायिन्) सत्कार  
आदिनी उत्कंठाना अभाववाणो; अणु-  
पातणा उपायवाणो सत्कार आदि की  
उत्कंठा न रखने वाला; सूक्ष्म कपाय वाला.  
(One) not desirous of honour,  
reception etc. or, one with  
scanty Kasāya. “अणुकसाई अप्पिच्छे,  
अणाएसी अलोलुए ” उत्त० २, ३६,

अणुकसाइ त्रि० (अनुत्कपायिन्) कथि आदि  
उपायाने अणु-सूक्ष्म-पातणा पाडनार; स्वल्प  
उपायी, भद्रउपायी मंद कपाय वाला, कपायो  
को सूक्ष्म करने वाला Having slender  
or scanty moral impurity.  
“अणुकसाई लहु अप्प भक्खी, चिच्छा  
गिहं एग चरे स भिक्खू ” उत्त० १६, १६,

अणुकस्स त्रि० (अनुत्कर्षवत्) आठ भद्रमानो  
कथि भद्र न करतो, उत्कर्ष-भद्र रहित आठ  
प्रकार के मदों में से किसी भी प्रकार का मद  
न करने वाला; उत्कर्ष-मद रहित Free from  
any of the eight kinds of pride  
“अणुवत्तस्से अप्पलीये मज्जेण मुणी जावए”  
सूय० १, १, ४, २;

अणुकोस. पु० (अनुत्कर्ष) पोतानी

अणु-अभिमान; मानकपाय निजकी  
बड़ाई-अभिमान; मानकपाय. Self-con-  
ceit, pride सम० १२; ठा० ४, ४, भग०  
१२, ५; क० गं० ५, ७४;

अणुकोश. पुं० (अनुकोश) दया. Com-  
passion भग० १२, ५; ठा० ४, ४;  
✓अणुक्ख. धा० I. (अनु+ईच्) जेवुं, दृष्टि  
करवी देखना; दृष्टि करना To see; to  
look at.

अणुक्खिस्सामि आया० १, ७, ५, २१७;  
अणुक्खित्तं त्रि० (अनुक्षिप्त) पाछाँ डेकेलुं.  
पीछे फेंका हुआ Thrown from behind,  
thrown after. "अणुक्खित्तंसि धुगंसि"  
नाया० ८;

अणुग. त्रि० (अनुग) अनुसरनार, पाछाँ  
पाछाँ जनार अनुसरण करने वाला; पीछे  
पीछे जाने वाला. One who follows or  
goes after उत्त० ३२, २७; गच्छा०  
१२६;

अणुगंतव्व त्रि० (अनुगन्तव्य) अनुसरवुं;  
अनुसरवा ये अणु. अनुसरण करना, अनुसरण  
करने योग्य. Worthy of imitation,  
worthy of being followed निस्सी०  
१, ४१; ठा० ५, १, ज० प० ७, १६०;

✓अणुगच्छ धा० I (अनु+गम्) सन्मुख  
जानु; सत्कार करवाने रहामे जवुं सन्मुख  
जाना, सत्कार करने के लिये सन्मुख जाना  
To go forward to receive or  
welcome.

अणुगच्छइ नाया० १४, १८; ओव० १२; जं०  
प० ५, ११५;

अणुगच्छंति. जं० प० ३, ५३;

अणुगच्छह आ० विवा० १;

अणुगच्छइत्ता सं० क० नाया० ३, १४, भग०  
१२, १,

अणुगच्छमाण. व० क० सूय० १, १४, २३;

नाया० २; १८; भग० ३, २;

अणुगच्छणया. स्त्री० (अनुगमनता-अनुगमन)  
सत्कार करवाने शुश्री रहामे जवुं ते. सत्कार  
करने के लिये गुरु के सन्मुख जाना. Going  
forward to welcome a preceptor.  
ओव० २०;

✓अणुगम धा० I. (अनु+गम्) ज्ञुओ  
'अणुगच्छ' धातु देखो 'अणुगच्छ' धातु.  
Vide the verb "अणुगच्छ".

अणुगमह. सु० च० २, ४३८;

अणुगम्म. सं० क० सूय० १, १४, ११;

अणुगम पुं० (अनुगम-अनुगमनमनुगमः; अनु-  
गम्यतेऽनेनास्मिन्नस्मादिति वाऽनुगमः) नि-  
क्षेपधी पाठेल भेदमांथी प्रकरण या प्रसंगते अ-  
नुकूल अर्थ योजवो ते; सूत्रना अनुकूल अर्थतुं  
डहेवु ते निक्षेप से किये हुए भेदों में से प्रकरण  
या प्रसंग के अनुकूल अर्थ की योजना करना; सूत्र  
के अनुकूल अर्थ कहना Showing the  
connection of one chapter to  
another in the course of expla-  
nation. विशेष० २६०; ६१३; ६७१;  
१३५७; ठा० १; अणुजो० ६६, (२) ५६,  
५६२छे६, विग्रह, अन्वय वगैरे व्याख्यानना  
प्रकार पद, पदच्छेद, विग्रह, अन्वय वगैरह  
व्याख्यान के भेद. explanation by  
separation of words, paraphrase  
grammatical notes etc सम०

अणुगय-अ त्रि० (अनुगत) अनुसरैल; अनुकरैल  
करैल अनुसरण किया हुआ, अनुकरण किया  
हुआ Followed, imitated परह० १,  
३; (३) त्रि० प्राप्त थियैल प्राप्त obtained.  
उत्त० ३२, २७, (४) व्याप्त व्याप्त pervaded  
by "ते पेज्जदोसाणुगया परज्जा" उत्त० ४,  
१३; (५) आश्रित आश्रित dependent,  
supported पि० नि० मा० ४०;

✓अणुगवेस धा० I ( अनु+गवेष् )  
पाछणथी तपास करपी-शोध करपी पीछे से  
खोजना; बाद में शोध करना To make  
an inquiry in the absence of,  
to search after

अणुगवेसइ भग० ८, ४, ८,

अणुगवेसमाण व० कृ० भग० ५, ६, ८, ४;

६, नाया० १६,

अणुगवेसियव्व त्रि० (अनुगवेपितव्य) गवे-  
पण्णा करपी, तपास करपी, तपास करवा योग्य.  
जोच करना, गवेषणा करने योग्य. Worthy  
of inquiry भग० ८, ६, वेय० ३, २४,  
अणुगाम पुं० (अनुग्राम) ग्रामांतर गत्ता  
वन्त्ये ग्राम आवे ते, ग्राम पछीनु ग्राम, ग्हातु  
ग्राम. ग्रामान्तर जाते समय बीच में जो ग्राम  
आवे वह, छोटा गाँव A village on the  
way to another village, a hamlet.

“ गामाणुगामं दूइजमाणे ” आया० १, ५, ४,

१५६, नाया० १, अणुजो० १३१, भग० ८, ६,

अणुगामि त्रि० (अनुगामिन्) अनुकरणु  
करनार; नकल करनार, येष्टा के शब्द जोष्ट के  
साबणी ते प्रमाणे करी अतावनार अनुकरण  
करने वाला, चेष्टा या शब्द देख अथवा सुनकर  
उसके अनुसार कर बताने वाला (One)  
imitating anything or gesture  
or speech ओव० १६, (२) साध्यसाधक  
हेतु, दोष-वगैरहेतु हेतु माध्यसाधक हेतु  
दोष रहित हेतु the middle term or  
basis of proof, which is not  
fallacious ठ० ३, ३, (३) ने डेडाणे  
अवधिज्ञान उत्पन्न थयु होय त्याथी भीजे  
स्थणे पणु आपनी भाइइ साथे साथे जय ते,  
अवधिज्ञानने ओइ प्रज्ञा अवधिज्ञान का  
एक भेद; जो ज्ञान जिस स्थान में उत्पन्न हुआ  
हो वहासे दूसरे स्थान में भा साथ २ जाय वह  
a variety of Avadhi jñāna; that

division of knowledge which  
accompanies the soul from  
place to place. क० ग० १, ८,

अणुगामिअ-च पुं० (अनुगामिक) अनुगामि-  
अन्वयव्यतिरेकी हेतुथी थनो वस्तुनो निर्णय,  
आनुमानिक निश्चय अन्वयव्यतिरेकी हेतु से  
होने वाला वस्तुनिर्णय, आनुमानिक निश्चय  
Conclusion derived from syllo-  
gistic reasoning, an invariably  
concomitant mark leading to in-  
ference ठ० ३, ३, (२) त्रि० पाछण ननार,  
भीजने अनुसरनार पीछे चलने वाला, दूसरे  
का अनुसरण करने वाला (one) going  
after or following सूय० १, १, २, १८,  
२, २, २८, (३) लवपरपरा साथे आवता सुभने  
उत्पन्न करनार भवपरम्परा में साथ साथ आने  
वाले सुख को उत्पन्न करने वाला producing  
happiness accompanying one  
in rebirths जीवा० ३, ४, (४) अनु-  
यर; नोकर अनुचर, नौकर. an attend-  
ant सूय० २, २, २, (५) पु० अकर्त्तव्य २५  
चौद असद्व्यनुष्ठान. अकर्त्तव्यरूप-१४ असद्व्य  
अनुष्ठान. the fourteen evil prac-  
tices सूय० २, २, २, (६) क्षेत्रातरमा साथे  
साथे ननार अवधिज्ञानविशेष; अवधिज्ञान-  
नो ओइ लेद क्षेत्रान्तर में भी साथ साथ जाने  
वाला अवधिज्ञानविशेष; अवधिज्ञान का एक  
भेद a division of Avadhi jñāna,  
accompanying the soul from  
place to place पञ्च० ३३,

अणुगामियत्ता त्री० (अनुगामिकता-अनुगा-  
मिकत्व) लवपरपरा साथे ननार  
सातुयध सुभ. भवपरम्परा में साथ जाने वाला  
सातुवध सुख Happiness accompan-  
ing the soul in successive  
rebirths ओव० नाया० १३,

✓ **अणुगिरह** धा० I ( अनु+गृह् ) अनुग्रह-  
कृपा करनी. अनुग्रह करना; दया करना To  
favour; to oblige

अणुगिरहिता सं० कृ० दसा० १०, १;

अणुगिरहंत. व० कृ० सु० च० ३, २१६;

अणुगिरहमाण व० कृ० नाया० १६,

**अणुगिति** स्त्री० ( अनुकृति ) अनुकृत्यु;  
नकल नकल. An imitation; a copy.  
पंचा० ६, ३७,

✓ **अणुगिल** धा० I ( अनु+गृ ) आनु; भोजन  
करनु; भक्षण करनु. खाना, भोजन  
करना. To eat.

अणुगिलइ नाया० ७;

अणुगिलइता सं० कृ० नाया० ७,

**अणुगीय** त्रि० ( अनुगीत ) पाछगथी गावाभां  
आवेक्ष; तीर्थकरादिनी पासेथी सांलणीते पाछ-  
गथी स्थविरोये संपादन करेक्ष पाछे से गया  
हुआ; तीर्थकरादिओं से सुनकर पाछे से स्थविरो  
द्वारा संपादित किया हुआ Reiterated;  
e. g words of Tirthankaras etc  
by Sthaviras or monks. 'महत्तरूवा  
वयणप्पभूया, गाहाणुगीया नरसंवमज्जे"  
उत्त० १३, १२;

**अणुगुण** पुं० (अनुगुण) गुणु उपर गुणु करवे  
ते गुण के ऊपर गुण A good turn  
done in return for a good turn  
नाया० १,

**अणुग्गअ-य** त्रि० ( अनुगत ) अणुउत्थो,  
अणुउत्थोः उदय न पाभेक्ष. उदय रहित,  
बिना उगा हुआ Not come out; not  
risen वेय० ५, ६, प्रव० ५६८; निसी०  
३, ७२,—सूर पुं० (—सूर ) सूर्य उग्या  
पडेक्षानो वअन सूर्योदयके पहिलका समय  
time before sunrise; time pre-  
ceding sunrise प्रव० ५६८;

**अणुग्गह** पुं० ( अनुग्रह ) उपक्षर. उपकार.  
Benevolence. पि० नि० ४४८; ओघ०  
नि० १; ओव० १६; पंचा० ६, १; प्रव०  
१३८७; ( २ ) कृपा, भहेक्षानी; दया. कृपा;  
मेहरवानी, दया. favour; mercy, kind-  
ness विशेष० २०४, पि० नि० ४४८; ओघ०  
नि० भा० १; २७६; ओव० १६; दस० ५,  
१, ६४; नाया० ३; १४; सु० च० ७, १८५;  
उत्त० २५, ३७;—अट्ट पुं० (—अर्थ ) उपक्षर  
रूपप्रयोजन उपकाररूप प्रयोजन. bene-  
ficient motive. "सपरेसिसणुग्गहट्ठाए"  
पंचा० ६, १,

**अणुग्गहता** स्त्री० ( अनुग्रहता-अनुग्रह ) अनुग्रह  
करवे। ते. अनुग्रह. Favour, kindness  
विशेष० १८५४,

**अणुग्गहया** स्त्री ( अनुग्रहता-अनुग्रह )  
लुओ उपलो शब्द देखो ऊपर का शब्द.  
Vide "अणुग्गहता." विशेष० १८५४,

**अणुग्गइम** न० ( अनुद्घातिम-उद्घातो  
भागपातस्तेन निर्धृत्तमुद्घातिमं लघु तन्निर्ध्या-  
दनुद्घातिमं गुरु ) गुरु प्रायश्चित्त, भेदोत्तप.  
सारी प्रायश्चित्त Austere penance;  
severe expiation. ठा० ३, ४;  
( २ ) पुं० स्त्री० गुरु प्रायश्चित्ततेयोअ साधु सा-  
ध्वी. बहुत बड़े प्रायश्चित्त के योग्य साधु साध्वी  
a male or female ascetic liable  
to severe expiatory penance  
ठा० ५, २;

**अणुग्गइय** पुं० स्त्री० ( अनुद्घातिक ) नेणे  
अवेक्ष दोष सेव्यो होय के प्रायश्चित्तमां धराडा  
करी शक्य नहि ते; गुरुप्रायश्चित्तते योग्य  
जिसने ऐसा दोष किया हो कि, उसके प्रायश्चित्त  
में कमी नहीं की जा सके; बहुत बड़े प्रायश्चित्त  
के योग्य. One deserving un-  
mitigated severity of expiatory  
penance. "तओ अणुग्गइया पअत्ता,



तंजहा-हृथकम्मं करेमाणे मेहुणं सेवमाणे  
राइभोयणं भुंजमाणे " ठा० ३, ४, वेय० १,  
३६; ४, १; सम० २८; वव० ६, १६,  
निसी० १०, १६;

अणुगधाय पुं० ( अनुद्घात ) प्रायश्चित्तभा  
घटाडे न थाय ते, लघु प्रायश्चित्तनो अभाव,  
गुरु प्रायश्चित्त प्रायश्चित्त में कमी न होना,  
लघु प्रायश्चित्त का अभाव, बहुत बड़ा प्रायश्चित्त  
Unmitigated severity of ex-  
piation. ठा० ५, २,

अणुगधायण न० ( अणोद्घातन-अणत्यनेन  
जन्तुगणश्चतुर्गतिकं संसारमित्यणं कर्म,  
तस्योत्प्रादह्येन घातनमपनयनमणोद्घात-  
नम् ) धर्मेने दूर करवां ते, धर्मनी धात  
करवी ते कर्मों को दूर करना, कर्मों का नाश  
करना. Destruction of Karma.  
" से मेहावी जे अणुगधायणस्स खेयण्णे जे  
म बंधण " आया० १, २, ६, १०२,

✓अणुघास. धा० II. ( अनु+घस्+णि० ) भव-  
उपयुं, जभाउयुं. खिलाना, भोजन कराना. To  
feed

अणुघासेज्जा. वि० निसी० ७, २३,

✓अणुचर धा० I ( अनु+चर् ) तपनु आय-  
रुं तप का आचरण करना To practise  
penance or austerity.

अणुचरंति प्रव० ६१४,

अणुचरंत व० क० त्रि० ( अनुचरत् ) पाउण  
जतो, दासपणु सेवतो पीछे चलता हुआ,  
दासता को स्वीकारता हुआ. Attending,  
following as a servant गच्छा० ६८;

अणुचरणा त्रि० ( अनुचरक ) सेवा करनेवाले;  
अनुचर नौकर A servant, an  
attendant. प्रव० ६१४,

अणुचरिअ-य न० ( अनुचरित ) आश्रितने  
अनुसारे, चारित्र के अनुसार According  
to right conduct. अणुजो० १३१,

( २ ) त्रि० आसेवित, आयरेल आचरित,  
आसेवित served; practised;  
performed सग० ११, ११;

अणुचरित्ता न० क० अ० ( अनुचर्य्य )  
आश्रितने, सेविते आचरणकरके, सेवन  
करके Serving or having served,  
having practised. सम० ६, चउ०  
१८,

अणुचरिया. स्त्री० ( अनुचरिका ) यरिडा-गढ  
अने वसति वन्येनो रस्तो, तेनी पास. गढ और  
वस्ती के बीच के रास्ता के पास Near  
the road leading from the fort  
to the town वेय० ३, २६;

✓अणुचित धा० II ( अनु+चिन्त )  
विचार करने, विचारयुं विचारना, चिन्तन  
करना To meditate upon.  
अणुचितिय सं० क० सूय० १, ६, २५;  
जीवा० १,

अणुचित-ते-माण व० क० नाया० १, ६,  
१४, विवा० २,

✓अणुचिह धा० I ( अनु+स्था-तिष् )  
ठेला खड़ेयुं, स्थिर थपु खड़े रहना, स्थिर होना  
To stand, to become steady  
अणुचिह दस० ५, २, ३०,

अणुचेरण त्रि० ( अनुचीर्ण ) ससर्गभा  
आवेश ससर्ग में आया हुआ Come in  
contact with आया० १, ५, ४, १५८,  
प्रव० ४३७, जीवा० १;

अणुचिरणव त्रि० ( अनुचीर्णवत् ) जेणे  
अनुष्ठान कर्युं छे ते जिमने अनुष्ठान किया है  
वह. ( One ) who has performed  
a religious practice आया० १,  
७, ६, २२०

अणुचिय. त्रि० ( अनुचित ) अधिष्ठित;  
अणुउयिन उयिन नदि ते अचिन.  
Improper पि० नि० २०८,



अणुचीड-ति. सं० कृ० अ० ( अनुचिन्त्य )  
 चिंतनीते, विचारीते चितवन करके; विचार  
 करके. Thinking upon; having  
 thought; having meditated  
 upon. “ अणुचीड भासए सयाणमज्जे  
 लहइ पसंसणं ” दस० ७, ५५; सूय० १,  
 १, ३, १३;

अणुच्च त्रि० ( अनुच्च ) उयं नहि ते. जो  
 ऊँचा न हो Not lofty. “ अणुच्चे अकुए  
 थिरे ” उक्त० १, ३०; पि० नि० ३६४,

अणुच्चाकुइय. पुं० ( अनुच्चाकुचिक-न विद्यते  
 कुचश्चलनं यस्या. सा अकुचा, लिचमिच  
 शब्दमकुर्वाणा इत्यर्थ, अनुच्चा चासावकुचा  
 चानुच्चाकुचा, सा विद्यतेऽस्येति तथा )  
 उय्य-उयं दुय-परिस्पंद-छालतुं यावतुं, जेतु  
 आसन-शय्या-पथारी गुर् इतरां उयी नथी  
 अने यथायमान नथी ते गुरु की अपेक्षा  
 जिसका आसन-शय्या-विछौना ऊँचा और  
 चलायमान न हो One whose seat,  
 bed etc. are not higher than  
 those of the preceptor and are  
 motionless कप्प० ६, ५३,

अणुच्छिद्ध त्रि० ( अनुच्छिष्ट ) अेहुं लुहुं नहि  
 ते अमनिया, भूठन नहीं (Food etc)  
 which is not stale or tainted  
 ( i e a remnant of what others  
 have already eaten ) प्रव० ११६;  
 अणुजत्ता स्त्री० ( अनुयात्रा ) नीडणुं ते,  
 पाण्ण णुं ते. निकलना, पीछे जाना  
 Going after, starting. पि० नि०  
 ८८;

✓ अणुजा. वा० I ( अनु+या ) पाण्ण णुं;  
 अनुसरुं पीछे जाना, अनुसरण करना To  
 follow, to go after.  
 अणुजाइ. उक्त० १३, २३;

अणुजाअ-य. त्रि० ( अनुयात्त ) संपत्ति अने गुण  
 वगेरेथी पिताना तुल्य थाय ते पुत्र; जेम डे-  
 आदित्यशानो दीडरो महायशा राज्ञ संपत्ति  
 और गुण आदि से पिता के समान पुत्र, जैसे-  
 आदित्ययशा का पुत्र महायश राजा.  
 A son worthy of his father in  
 wealth, merits etc. e. g. king  
 Mahāyasa the son of Āditya-  
 yaśā. ठा० ४, १; ( २ ) सदश, सरणुं.  
 समान, सदश. similar. “ सरिसे वस-  
 भाणुजाए ” सू० प० १२; ( ३ ) पाण्ण  
 गथेव पीछे गया हुआ followed, gone  
 behind. पण्ह० १, २;

✓ अणुजाण वा० I. ( अनु+ज्ञा ) आज्ञा देवी; रण  
 आपवी आजा देना, छुट्टी देना To permit.  
 ( २ ) अनुमोदन आपवुं; संमति देवी अनुमोदन  
 करना, सम्मति देना to consent  
 अणुजाणइ. नाया० २, ५, निसी० ५, ८;  
 अणुजाणाइ सूय० १, १, २, १;  
 अणुजाणति. दस० ६, १५;  
 अणुजाणामि भग० १६, १;  
 अणुजाणउ भग० ११, ६;  
 अणुजाणह आ० पि० नि० ४६५, वव०  
 २, २६; दसा० १०, १,

अणुजाणित्ता. सं० कृ० नाया० ६;  
 अणुजाणित्तए हे० कृ० ठा० २, १;  
 अणुजाण व० कृ० उक्त० ८, ८,  
 अणुजाणवेउं. सि० सं० कृ० सु० च० २, १४२,  
 अणुजाणाविय. सि० सं० कृ० प्रव० ६८८,  
 अणुजाणावित्तए. सि० हे० कृ० वव० २, २६;  
 अणुजाणावणा. स्त्री० ( अनुज्ञापना ) रण  
 अपावपी ते छुट्टी दिलाना. Causing  
 another to consent or permit.  
 पचा० ६, १३;

अणुजाणावेयव्व. त्रि० ( अनुज्ञाप्य ) आज्ञा  
 देना योज्य, जेनी आज्ञा लघु प्रवर्तुं जेधये

ते आज्ञा लेने के योग्य; जिसकी आज्ञा पाकर कुछ किया जाय वह. ( One ) worthy of being asked permission to commence a work प्रव० ६६०;

**अणुजुति.** स्त्री० (अनुयुक्ति) अनुगत-संगत-युक्तिपूर्वक हेतुगर्भित दृष्टान्त संगत-युक्तिपूर्वक हेतु गर्भित दृष्टान्त A logically sound illustration to establish correct inference. “ सन्वाहिं अणुजुत्तीहिं अचयंता जवित्तण् ” सूय० १, ३, ३, १७, ( २ ) अनुक्त युक्ति-तर्क. अनुकूल युक्ति apt logical reasoning सन्वाहिं अणुजुत्तीहिं मतिमं पडिलेहिया ” सूय० १, ११, ६;

**अणुजेष्ठ** त्रि० (अनुज्येष्ठ-अनुगतो ज्येष्ठमनुज्येष्ठ.) सौथी भोला पछी त्रीजे नंथरे जे होय ते सब से बड़े के बाद तीसरे नंबर का जो हो वह. Third in order from the eldest. पंचा० ६, ४७;

**अणुजोग** पुं० (अनुयोग) तीर्थंकर, कुलंकर, यक्षवर्ती वगैरेना अधिकार जेमा दर्शाव्या हुता ते अनुयोग-दृष्टिवादेना ओइ विभाग, के जे हुल विच्छेद थछ गयेल छे तार्थकर, चक्रवर्ती कुलकर आदि के अधिकारों का जिसमें वर्णन था, वह अनुयोग-दृष्टिवाद का एक विभाग, जिसका हाल में विच्छेद हो गया है. A lost portion of Dristivāda dealing with the functions of Tīthāṅkaras, Kulakaras, Chakravartīs etc ठा० ४, १;

**अणुजोगि.** पु० (अनुयोगिन्) लुओ ‘अणुओगि’ शब्द देखो “अणुओगि” शब्द. Vide “अणुओगि”. ठा० ६, ४,

**अणुज्जा** स्त्री० (अनुद्या) महावीरस्वामीनी दीकरीनु नाम, प्रियदर्शाना अनुपर नाम

महावीरस्वामी की पुत्री का नाम; प्रियदर्शना का दूसरा नाम Name of the daughter of Mahāvīra Svāmī, another name of Priyadarśanā. “ तीसेणं दो नामधिज्जा एवमा० अणुज्जाह वा पियदंसणाह वा ” आया० २, १५, १७७;

**अणुज्जु** त्रि० (अनुजु) सरल-सीधे नहि ते, झपटी स्वभाववालो. कपटी स्वभाव वाला Crooked in nature deceitful. पि० नि० २८६,

**अणुज्जुय** त्रि० (अनुजुक) असरल, सीधे नहि ते, वा के कपटी, टेढ़ा. Not straight; crooked in nature. उत्त० ३४, २५, परह० १, २,

**अणुद्वारा** न० (अनुष्ठान) आचार, क्रिया-कलाप आचार, क्रियाकलाप Performance, religious practices. ठा० ७; भग० २, १, आया० १, ६, ३, १८७, पंचा० २, ४०, प्रव० ६६०,—**गोचर** त्रि० (—गोचर) अनुष्ठान-आचारना विषय आचार का विषय (that) which is a subject or province of practice or conduct पंचा० १६, ३८;

**अणुद्विय** त्रि० (अनुद्वित) आचरेल; सेवेल सेवन किया हुआ. Performed, practised “अहवा अवितहं णो अणुद्विय” सूय० १, २, २, ३१, पंचा० ६, ४५,

**अणुद्विय** त्रि० (अनुद्वित) उठेल नहि; तैयार थयेल नहि, ज्ञान, दर्शन अने आचरना उद्योगथी रहित ज्ञान, दर्शन और चारित्र के उद्योग से रहित. जो तैयार नहीं हुआ हो, नहीं उठा हुआ Not arisen, not performing vows etc to secure right knowledge, faith and conduct. आया० १,

४, १, १२६; प्रव० १४७; दसा० ३, ३०;  
निसा० ६, ११;

अणुडहमाण व० कृ० त्रि० (अनुदहत्)   
दाह करने। दहन करता हुआ। Burning;  
setting on fire. भग० १५, १;

अणुणइअ. न० (अनुनदीक) नदी समीपे;  
नदी मध्ये नदी के पास, नदी के बीच में।  
Near a river; in the midst of  
a river. अणुजो० १३१;

अणुणंत. व० कृ० त्रि० (अनुनयत्) पेटाने  
अभिप्राय ज्ञापितो-समन्वितो। अपना  
अभिप्राय प्रकट करता हुआ Reasoning  
with, expostulating, reconciling.  
“पुरोहितं तं कमसोऽणुणंत, शिमंतयंतं च  
सुष्टु धरणं ” उक्त० १४, ११;

अणुणाइ त्रि (अनुनादिन्) पडंछे-पडधे।  
छे अेवी रीते भोलनार ऐसा बोलना जो  
गूंज उठे या जिसकी प्रतिध्वनि हो। Speak-  
ing so as to start an echo.  
“ गजियसइस्स अणुणाइणा ” कप्प० ३,  
४४;

अणुणाइत्त न० (अनुनादित्व) पडंछे-पडधे।  
छे अेवे। अवाज; सत्यवचनना उप  
अतिशयमाने अेक। ऐसी आवाज जो गूंज  
उठे, सत्यवचन के ३५ अतिशयो में से एक।  
A voice starting an echo; one  
of the thirty-five Atisayas  
of truthful speech. सम० ३५;

अणुणाइरित्त. त्रि० (अनुनातिरिक्त)  
न्यून के अधिक नहि; परापर प्रमाण-माप  
सहित. न्यूनाधिकता रहित; बरोबर प्रमाण-  
माप सहित Neither more nor  
less, proportionate. उक्त० २६, २८;

अणुणास. पुं० (अनुनास) नासमाधी गावु  
ते; गायनना छे दोषमाने अेक दोष नाकमे से  
गाना; गायन के छे दोषो मे से एक दोष

Nasal melody; one of the six  
defects in singing. अणुजो० १२८;

अणुणेत्ता. सं० कृ० अ० (अनुनीय)  
पाभीने; ध्यान धरीने. पाकरके, ध्यान धरके।  
Having meditated upon; hav-  
ing obtained. सम० ६;

अणुणाय-अ. त्रि० (अनुजत) मद रहित; उन्नत  
नहि ते, गर्व विनाने मद रहित, जो उन्नत  
न हो वह; गर्व रहित. Free from  
pride; not conceited. ‘ एत्थवि  
भिक्षू अणुणाय विणीए’ सूय० १, १६, ४,  
दस० ५, १, १३;

✓ अणुणव. धा० I. (अनु+ज्ञा+णि०) भीम  
आदेशने अमल तथा पडी “ करेल पाठ धारी  
राभ अने भीमने लणाय ” अेवी रीते शिष्य  
प्रत्ये गुर्ने त्रीने आदेश थाय ते. दूसरे  
आदेश का पालन होजाने पर “किये हुए पाठ  
की धारणा रख और दूसरे को पढा” इस प्रकार  
गुरु का शिष्य के प्रति तीसरा आदेश होना To  
order a disciple to hold and  
teach what he has learnt, (this  
comes after two previous  
orders ). (२) अनुमोदन करवु अनुमोदन  
करना to approve of.

अणुणविज्जंति. अणुजो २,  
अणुणवित्तु. सं० कृ० दस० ५, १, ८१, ८३;  
अणुणवि-वे-त्ता सं० कृ० सम० ३३; दसा० ३,  
३२; ३३, वव० ७, १७; निसा०  
२, ५३; वेय० १, ३७, ३, २४,

अणुणविय. सं० कृ० दसा० ३, ३२, निसा०  
५, २३; ओघ० नि० १७;  
आया० २, १५, १७६;

अणुणवित्तए हे० कृ० वव० ८, १०;

अणुणवेमाण व० कृ० ठा० ६;

अणुणवणा छी० (अनुज्ञापना) आज्ञा;  
रग. आज्ञा, छुट्टी. Order, approval.

अनुमोदन; संमति. अनुमोदन सम्मति  
permission. प्रव० ६६;

अणुगणवणी स्त्री० ( अनुज्ञापनी ) वसति-  
भट्टाननीरञ्ज भागवानी भाषा वस्ती-मकान  
भागने की भाषा. Speech used in  
asking permission for a house  
ठा० ४, १; दसा० ७, १;

अणुगणना स्त्री० ( अनुज्ञा ) अधिकार आपवे।  
अधिकार देना. To invest with autho-  
rity "तिविहा अणुगणना प० तं० आयरियं-  
स्ताए उवज्झायस्ताए गणित्ताए " ठा० ३,  
३; ( २ ) अनुमोदन देवु, संमति आपवी,  
आज्ञा अनुमोदन करना; सम्मति देना, आज्ञा  
consent, approval of, order  
दस० ५, १, १६; ८३; अणुजो० २,

अणुगणनाअ-य त्रि० ( अनुज्ञात ) आज्ञा  
आपेक्ष. आज्ञा दिया हुआ Permitted,  
ordered प्रव० ४४५; पंचा० ६, ३१;

अणुगणनायव्व त्रि० ( अनुज्ञातव्य ) आज्ञा  
भागवी, रञ्ज लेवी ते. आज्ञा मांगना, मजूरी  
लेना. Asking permission वव० ३,  
२८;

अणुतडभेद. पुं० ( अनुतटभेद ) जेम वांसने  
शीरवाथी क्षुड पडे तेवी रीते डोर्ध वस्तुने  
शीरवाथी क्षुड पडे ते. बॉसको चीरने से जिस  
तरह चिम्याली हो जाती है उसी तरह किसी  
वस्तु के चीरने से जो चीर हो वह  
Lengthwise split like that in a  
bamboo. ठा० १०;

अणुतडियाभेय. पुं० ( अनुतटिकाभेद ) शेड्डी-  
ने शीरवाथी छातां उतरे तेम डोर्ध पणु शीरवाथी  
छात उतरे ते नतनेो द्रव्यभेद माठे को  
चीरने से जिस तरह उसका छिलका निकलता  
है उसी तरह किसी भी वस्तु की छाल निकले  
उस जात का द्रव्यभेद A variety of  
substance which is peeled off

lengthwise like a sugar-cane  
पञ्च० ११;

✓अणुतप्प धा० I ( अनु+तप् ) पन्तावे।  
डरेवे; धोभो डरेवे, थयेव लूखमाटे भेद  
डरेवे पश्चात्ताप करना, भूल के लिये खेद प्रकट  
करना To repent.

अणुतप्पह क० वा० सूय० १, ४, १, १०;

अणुताव. पु० ( अनुताप ) पश्चात्ताप पश्चात्ताप.  
Repentance, remorse "पच्छाणुता-  
वे य तवप्पभावं " उक्त० ३२, १०४, पंचा०  
१५, ३, जीवा० ३, १;

अणुतावअ त्रि० ( अनुतापक ) पश्चात्ताप  
डरना, भेद पाभनार पश्चात्ताप करने वाला.  
Repentant, penitent उक्त० १०,  
३३;

अणुताविया. स्त्री० ( अनुतापिका ) परने संताप  
उपभवनार भाषा दूसरे को संताप कराने वाली  
भाषा Language giving pain to  
others. " अणुतावियं खलु ते भास  
भासति " सूय० २, ७, ७;

अणुत्तम. त्रि० ( अनुत्तम-न उत्तमा अनुत्तमाः )  
उत्तम-श्रेष्ठ नडि ते; दुष्ट; नीच दुष्ट; नीच.  
Not best, wicked. पचा० २, ३१,

अणुत्तर त्रि० ( अनुत्तर ) सौथी श्रेष्ठ, प्रधान;  
सर्वोत्तम; सर्वोत्कृष्ट, जेनाथी उत्तर-प्रधान  
णीलुं नथी तेवुं सब से श्रेष्ठ, प्रधान, सर्वोत्तम  
Best, highest " केवलित्स य दस  
अणुत्तरा पणुत्ता, तंजहा-अणुत्तरे नाणे  
अणुत्तरे दंसणे अणुत्तरे चरिते अणुत्तरे तये "   
ठा० ५, १, भग० ६, ३१, १३, १,  
१४, ७; १६, ६, २५, ७, नाया० १,  
१४; दस० ४, १६; २०, ६, १, १६, जं०  
प० २, ३१; ओव० ३४, ४०, उक्त० २, ३७, १०,  
३५, दसा० १०, १; ११, आव० ४,  
८, काप० ५, १०६, ( २ ) पुं० वि० ५, ६-  
यत आदि पाय आणुत्तगविमान विजय,

वैजयंत आदि पाच अनुत्तर विमान.  
the five highest heavenly  
abodes viz Vijaya, Vaijayanta  
etc प्रव० ८३०; विशेष ६६७; भग० १,  
५; उत्त० ३६, २१०; ( ३ ) पु० आणुत्तर  
विमानवासी देवता. अनुत्तर विमानवासी  
देव. deities residing in the above  
heavens उत्त० ३६, २१०;—उववा-  
इय-अ पु० ( -उपपातिक ) अनुत्तर  
विमानना देवतामां उपज्जवावाणा; अनुत्तर  
विमानना देवता. अनुत्तरविमान के देवों  
में उत्पन्न होने वाला, अनुत्तरविमान का देव  
deities born among those of  
Anuttara heavens, gods of  
Anuttara Vimāna. “अत्थि णं भंते !  
अणुत्तरोववाइया देवा, हता अत्थि से  
केणट्ठेणं भंते ! एवं बुच्चइ अणुत्तरोववाइया  
देवा ” भग० १४, ७; सम० ११००; जं० प०  
२, ३१; नंदी० ५३; कप्प० ७, २२५, भग०  
५, ४, ६, १, ८, १; २४, २१, नाया० ८;  
पन्न० १५, ठा० १, १, जीवा० १,—  
गइ. पु० ( -गति ) सिद्धगतिने प्राप्त थयेल.  
सिद्धगति को प्राप्त. finally emancipat-  
ed, Siddha. “ एस्स करोमि पणामं  
तित्थयराणं अणुत्तरगईणं ” ( २ ) स्त्री०  
सिद्धगति. सिद्धगति Siddha-hood,  
final bliss, absolution. चं० प०  
—णाणदंसराधर त्रि० ( -ज्ञानदर्शनधर )  
सर्वोत्तम ज्ञान अने दर्शनना धरनार; तीर्थंकर,  
देवणी आदि सर्वोत्तम ज्ञान तथा दर्शन को वारण  
करने वाले, तीर्थंकर केवली आदि possess-  
ing absolute knowledge. o g  
Tirthaṅkaras, Kevalis etc “ एवं  
से उदाहु अणुत्तरदसी अणुत्तरणा-  
णदसण धरे ” सूय० १, २, ३, २२,  
—णाणि. त्रि० ( - ज्ञानिन् ) देवणी. केवली.

possessed of perfect and high-  
est knowledge, a Kevali उत्त०  
६, १८; सूय० १, २, ३, २२;—दंसि. त्रि०  
( -दर्शिन् ) देवणी दर्शनी. केवल दर्शन  
वाला. possessed of perfect  
and absolute right belief, a  
Kevali. उत्त० ६, १८,—विमाणं न०  
( -विमान ) विजय, वैजयंत, जयंत, अपराजि-  
त अने सर्वार्थसिद्ध, ये पांच आणुत्तर  
विमान विजय, वैजयंत, जयंत, अपराजित  
और सर्वार्थसिद्ध ये पांच अनुत्तर विमान.  
the five Anuttara heavens viz  
Vijaya, Vaijyanta, Jayanta,  
Aparājita and Sarvārthasiddha  
“पंच अणुत्तरविमाणा पणत्ता, तंजहा-विजये-  
वेजयंते जयंते अपराजिए सव्वट्ठसिद्धे य ”  
भग० १, ५; ६, ५, १६, ८; १६, ७, २५,  
६, अणुजो० १०४;

अणुत्तरग्गा स्त्री० (अनुत्तराग्र्या) धित्प्राग्भारः  
पृथ्वी; आठमी पृथ्वी; सिद्धिशिला. ईषत्  
प्राग्भार पृथ्वी, आठवी पृथ्वी, सिद्धशिला.  
A place called Īsatprāgbhāra  
in which the Siddhas live;  
Siddhasīlā “अणुत्तरगां परमंमहेसी”  
सूय० १, ६, १७,

अणुत्तरोववाइयदसा स्त्री० (अनुत्तरोपपातिक-  
दशा) नवमा नंभरनां अंगसूत्रनुनाभ, देवेभों  
दे मुनिओ अनुत्तरविमाने उपज्जया तेना  
त्रण वर्ग छे; ‘अणुत्तरोववाई’ नामे नवमु अंग  
सूत्र नवे अंगसूत्र का नाम, जिसमे जो मुनि  
अनुत्तरविमान मे उत्पन्न हुए है, उनके वर्गन  
के तीन वर्ग हैं; ‘अणुत्तरोववाई’ नामक नवों  
अंगसूत्र. The ninth Angasūtra  
describing the three classes  
of saints born in Anuttara  
heaven नंदी० ४४; सम० १, अणुजो० ४२;



अणुदह त्रि० ( अनुदयिन् ) उदय न  
पावनार; उदयमा न अवनार, जेनो उदय  
नथी थयो तेनी कर्मप्रकृति उदय न पाने  
वाला, उदय मे न आने वाला, जिसका उदय  
नहीं हुआ ऐसी कर्मप्रकृति. Not coming  
to rise, ( Karma ) that has not  
matured भग० ११, १, ३५, १;

अणुदय पुं० ( अनुदय ) कर्मना विपश्चिदयने  
अभाव कर्म के विपश्चिदय का अभाव  
Absence of the maturing of  
Karma. क० ग० २, १३;

अणुदिज्जंत त्रि० ( अनुदीयमान ) अंतर्भु-  
हूर्णपर्वत उदयमा न आवेत्तु. अतर्मुहूर्त-  
तक उदय मे नहीं आया हुआ Not  
maturing or rising for an  
Antarmuhūrta विशेष ५३०,

अणुदिरण त्रि० ( अनुदीर्य ) नजदीक  
भविष्यमां जेनी उदीरणा थयानी नथी अथी  
कर्मप्रकृति नजदीक के भविष्य में जिसकी  
उदीरणा न हो ऐसी कर्मप्रकृति  
Karma which is not to mature  
in very near future भग० १, ३,

अणुदिय त्रि० ( अनुदित ) उदयमा न आवेत्तु.  
उदय मे न आया हुआ Not risen, not  
come to rise or maturity क० प०  
५, ३३,

अणुदियहं अ० ( अनुदिवसम् ) दिन प्रतिदिन  
दिन प्रतिदिन Day after day, every  
day. सु० च० १, ३०४,

अणुदिसा स्त्री० ( अनुदिशा ) जन्मस्थानी  
पदवी यावज्जीवन की पदवी Life-long  
status or position. “ तीमे इत्तरिये  
दिसं वाअणुदिस वा ” वव० ६, २०,  
( २ ) विदिशा, भुज्जो, अग्नि, नैऋत्य, वायव्य  
अने धिशन ये चारमातो गमे ते ओइ  
भुज्जो विदिशा, अग्नि, नैऋत्य, वायव्य और

ईशान इन चारों मे से कोई एक विदिशा-कोना.  
any of the intermediate  
points of the compass पाईया पडियं  
वावि, उहं अणुदिसामवि ” दस० ६, ३४,  
सूय० २, १, १७, आया० १, १, १, २;

अणुदिसी स्त्री० ( अनुदिशा ) विदिशा,  
भुज्जो कोना An intermediate  
point of the compass कप्प० ६, ६१,  
अणुदीरग त्रि० ( अनुदीरक ) कर्मनी उदीरणा  
न करनार कर्म की उदीरणा न करने वाला  
Not forcing up Karma into  
maturity. भग० ११, १, २५, ६, ३५, १;  
क० ग० ४, ६५,

अणुदिट्ठ त्रि० ( अनुदिष्ट ) उद्देश दोषरहित  
आहार अदि उद्देश दोष से रहित आहारादि..  
Food etc free from the fault of  
being specially prepared भग०  
७, १,

अणुद्धरी स्त्री० ( अनुद्धरी-न उद्धर्तुं शक्येति )  
अंथवा; इथयानी ओइ जात कुथु आदि सूक्ष्म  
जीव विशेष, ( भुम्मण, पजावी ) A variety  
of minute insects कप्प० ५, १३१,  
६, ४५;

अणुद्धित त्रि० ( अनुद्धत ) लुओ ‘अणुद्धिय’  
शब्द. देखो ‘अणुद्धिय’ शब्द. Vide  
‘अणुद्धिय’. पचा० १५, ३८,

अणुद्धिय त्रि० ( अनुद्धत ) भेथी नहि  
इदिहुं खैचकर नहीं निकाला हुआ Not  
drawn out ओष० नि० ८०४,

अणुद्धुअ त्रि० ( अनुद्धत-अनु पश्चादुद्धत  
मनुद्धतम् ) तपावनी सत्ता इरेल तपाकर तैयार  
किया हुआ. Made ready by heat-  
ing नाया० १; भग० ११, ११; ज० प०  
५, ११२, काय० ५, १०१, —मृदग. न०  
( -मृदग ) सत्ता इरेल मृदग तैयार  
किया हुआ मृदग. a kind of drum or



tabor made ready for use. कल्प०  
५, ११०;

अणुधम्म पुं० ( अनुधर्म ) अनुकूल धर्म  
अनुकूल धर्म Conformable religion  
सूय० १, २, १, १४, — चारि पुं० (—च.रिन्)   
तीर्थंकरादिनाः परंपरे धर्मप्रमाणे यलनार.  
तीर्थकरादि के प्रहपित धर्मानुसार चलने वाला  
one conforming to the religion  
as expounded by Tirthankaras  
etc. “ जसि चिरता सणुट्ठिवा कासवत्स  
अणुधम्मचारिणो ” सूय० १, २, २, २५,

✓ अणुधाव. धा० I. ( अनु+धाव् ) धा० ७॥  
पाछे पाछे पाछे दौडना To run  
behind; to run in the foot-  
steps of.

अणुधावइ. प्रव० १५१७;

✓ अणुज्ञव. धा० I ( अनु+ज्ञा ) आता देवी  
आज्ञा लेना To ask permission.  
अणुज्ञाविय सं० कृ० प्रव० ६४५;  
अणुज्ञाविनु सं० कृ० प्रव० १२४,

अणुज्ञवणा स्त्री० ( अनुज्ञापना ) लुओ  
“अणुणवणा” शब्द देखो ‘अणुरणवणा’  
शब्द Vids “अणुरणवणा”. प्रव० ६६,

अणुज्ञवेयव्व त्रि० ( अनुज्ञापितव्व ) श्री०  
५२ आज्ञा देवी दूसरी बार आज्ञा देना.  
Giving command for the second  
time वेय० ३, २८ ( २ ) आज्ञा देना  
योग्य. आज्ञा देने योग्य worthy of  
being commnded वव० ४, २१,

अणुज्ञाय त्रि० ( अनुज्ञात ) जिनसमत;  
वीतरागे आश्र आपेक्ष जिनसम्मत, वीतराग  
भगवान् द्वारा आज्ञापित. Permitted  
by Tirthankaras etc. ठा० ३, ४,  
पिं० नि० २५२; -

✓ अणुपन्न. धा० I ( अनु+प्र+दा ) अपावतुं,

देवर वतुं दिताना, To cause to be  
given.

अणुपइजा. वि० आया० २, १, १, ५;

अणुपदावेत्ता. णि० सं० कृ० भग० ५, ६;

अणुपइन्न. त्रि० ( अनुप्रकीर्ण ) परस्पर भगी  
गथेल परस्पर में मिला हुआ Mixed up  
together कन० ३, ४६;

अणुपंथ न० ( अनुपथ ) मार्ग-पंथनी समी-  
पे मार्ग के समाप Near a road. वेय०  
३, २६,

अणुपत्त. त्रि० ( अनुप्राप्त ) पछीधी प्राप्त  
थयेल पाछे से प्राप्त Got after. “सिद्धि  
मगमणुपत्तो ” दस० ३, १५; नाया०  
१, १२, १४; कल्प० १, ६; ३, ५३,  
भक्त० ६५,

अणुपपण त्रि० ( अनुपपन्न ) उपपन्न नहि  
थयेल अनुपपन्न, जो उपपन्न नहीं हुआ हो  
Not arisen, not come to exist.  
दसा० १, १३,

✓ अणुपरियट्ट धा० I. ( अनु+परि+ट्ट )  
लटडनु; भ्रमाणु डरनु भटकना, भ्रमण  
करना To wander.

अणुपरिदट्ट. नाया० ३; ६; भग० १, ६;  
२, १; जं० प० ७, १६९;

अणुपरियट्टति सम० १३, उत्त० ८, १५,  
सूय० १, १, २, ३२, १, ६,  
११, जं० प० ७, १४०;

अणुपरियट्टिजा. वि० भग० १८, ७,

अणुपरिचट्टिस्तइ-ति. भ० नाया० २; ६;  
१५, १७, १८; भग० १३, ६;

अणुपरियट्टिस्तंति. सूय० २, २, ८२;

अणुपरियाट्टिता. सं० कृ० भग० ३, २; ६,  
५, १०; ६, ३३; १८, ७;

२०, ६; पम० ३६; ओव०  
४२;

अणुपरियट्टिजाण. व० कृ० सूय० १, ७, ३;

अणुपरिग्रहियव्व त्रि० ( अनुपरिग्रहित्तव्व )  
परिभ्रमणुं करुवु, परिभ्रमणुं करुवा यो०  
परिभ्रमण करना, परिभ्रमण करने योग्य  
Wandering frequently, deserving  
of frequent wandering or  
transmigration नाया० ६,

अणुपरिहारि पुं० ( अनुपरिहारिन्-परिहारिण  
अणु स्तोक प्रतिलेखनादिषु साहाय्यं करोतीति  
अणुपरिहारी ) परिहार तपय णो त्यां न्या  
न्या त्यां त्यां तेनी पण्ण दूरी तेने सहाय  
करनार साधु परिहार तप बोला जहा जहा  
जावे वहा वहा पीछे रहकर उमकी सहायता  
करने वाला साधु An ascetic who  
accompanies and renders  
services to a Parihārī saint  
ठा० ३, ४,

अणुपरिहारिअ. पुं० ( अनुपरिहारिक )  
अणो 'अणुपरिहारि' शब्द दसो 'अणु-  
परिहारि' शब्द Vido 'अणुपरिहारि' प्र०  
६१५, वव० २, ५;

अणुपविट्ठ त्रि० ( अनुपविष्ट ) पण्ण प्रवेश  
करेव पीछे प्रवेश किया हुआ. Entered  
after, next ज० प० ३, ५२, कप्प० ४,  
८७, वव० ८, ११,

✓अणुपञ्चय धा० I ( अनु+प्र+प्रञ् )  
देधनी साथे प्रन्या-दीक्षा लेरी अथवा  
देधनी अनुकरणीय प्रन्या लेरी किसीके  
साथ या किसीके अनुकरण से दीक्षा लेना.  
To follow another in taking  
Diksā

अणुपञ्चयति. नाया० ५;

✓अणुपस्स धा० I ( अनु+उस् ) जेवु,  
देणवु देखना To see.

अणुपस्सइ. दत्ता० ५, ३१,

अणुपस्सिय. सं० कृ० सूय० १, २, २, ५;

अणुपस्सम. व० कृ० उत्त० ६, १६,

अणुपस्सि पुं० ( अनुपस्सिन्-अनुपस्सिन् )  
शुभाशुभ कर्म अने तेना पण्णामने जेवा  
व जे शुभ शुभ कर्म ओर उसके परिणाम  
को देखन जाता ( One ) looking  
into good and evil Karmas  
and their results " विदुषकप्पे  
एणुपस्सो " आया० १, ३, ३, ११७, १,  
३, २, ७७,

अणुपाअ. धा० II ( अनु+पा ) पवुं मिलाना.  
To cause to drink

अणुपाअजा वि० नित्ती० ७, २३;

अणुपाण त्रि० ( अणुपाण अणवः सूक्ष्माः  
प्राणाः प्राणिनां येषु ते अणुपाणाः ) सूक्ष्म  
जंतुओंकी युक्त सूक्ष्म जंतुओंसे युक्त Full  
of minute insects " जय विहराहि  
जोगव, अणुपाणा पथा दुरस्ता " सूय० १,  
२, १, ११, क० ग० ५, ७५;

✓अणुपाल धा० II ( अनु+पाल ) निरंतर  
पालन करवुं, निरंतर भेजवुं, भक्षण करवुं;  
अथवा निरंतर पालन करना, निरंतर सदन  
करना, रक्षण करना, बचाना To observe  
constantly, to protect con-  
stantly

अणुपालइ. भग० २, १,

अणुपालो. आव० ४, ८;

अणुपालइ. दस० ६, ४७;

अणुपालिज्जा वि० आया० १, १, ३, १६;  
दम० ८, ६१,

अणुपालिज्जा. सं० कृ० उत्त० २६, १;

अणुपालिज्जा सं० कृ० ओव० ४१;

अणुपालिज्जा " कप्प० ६, ६३ व० ६, ३७;

अणुपालिज्जा " क० प० २, ६१;

अणुपालिज्जा न० कृ० भग० २, ५,

अणुपालित व० कृ० ज्ञान० ४, ८,

अणुपालणा क्री० ( अनुपालना-अनुपालना )  
संस्तु पण्ण पण्ण दीक्षा पण्णपण्ण पण्णपण्ण

पाण्ड्यां ते संकट आने पर भी ग्रहण किये हुए पचखाण का यथार्थ रीति से पालन करना Steady observance of vows of abstinence in spite of difficulties. ठा० ५, ३, —सुद्ध. न० (—शुद्ध) पच्य-आणुनो ओक भेद, दुष्काल, अटवी वगैरे अपवादों पर पच्यआणु परापर पाण्डु ते पचखाण का एक भेद; दुष्काल, वन आदि में भी पचखाण का ठीक ठीक पालन करना. steady observance of the vows of Pachchakhāṇa or abstinence even where exceptions are allowed, e. g. in famine etc. ठा० ५, ३,

अनुपालिय त्रि० (अनुपालित) आत्म-संयमनी अनुकूलतापणु पाण्डु आत्म-संयम की अनुकूलतापूर्वक पाला हुआ Observed consistently with self-restraint; e. g. a vow. ठा० ८;

अनुपिह न० (अनुपिह) अनुक्रम; परिपाटी अनुक्रम; परिपाटी Serial order. “अनुपिहसिद्धाह” सम० ४४;

अनुपुत्तिया. त्रि० (अनुपुत्तिका) संतति संतति. Progeny. नाया० १,

अनुपुव्व. न० (अनुपूर्व-आनुपूर्व) अनुक्रम; परिपाटी अनुक्रम; परिपाटी Serial order. सूय० १, ११, ५, ओव० १०; नाया० १; ३, ४, ५, ६; १३, १४; भग० ११, ११, १३, ६, आया० १, ७, २, २०४, ज० प० ४, ७४;

अनुपुव्वलो अ० (अनुपूर्वणस्) अनुक्रमप्रमाणे, अनुक्रमे अनुक्रमपूर्वक In serial order. आया० १, ६, १, १७२; उत्त० ३६, ४७;

अनुपुव्वी. त्रि० (अनुपूर्वी) अनुक्रम, परिपाटी अनुक्रम; परिपाटी. Serial order. नाया० ८; राय० ६८, उत्त० २, १, जं० प० ७, १३७; आउ० ६७;

अनुपुव्वी. त्रि० (अनुपूर्वी) नामकर्मनी ओक प्रकृति, के जेना उदयथी एव ओक गति-माथी एही गतिमा सिद्धिरीने जड शक्ये छे. नामकर्म की एक प्रकृति, जिसके उदय से जीव एक गति से दूसरी गति में सीधे तौर पर जा सकता है. A variety of Nāmakarma by the rise of which a soul can pass directly from one state of existence into another; क० गं० १, २४; ४३; ५, १६, प्रव० १२७७;

अनुपेहंत. व० क० त्रि० (अनुपेहमाण) चिंतयतो. सोचता हुआ Thinking, meditating. प्रव० ३६३;

अनुपपत्तं व० क० त्रि० (अनुपपदत्) अपायतो. दिलाता हुआ. Causing to be given निसी० १, २८,

अनुपपइय त्रि० (अनुत्पत्ति) उड़ी गयेल; उडेल; उधर गति करेल उड़ गया हुआ, ऊर्ध्व गमन किया हुआ, उड़ा हुआ Flown up, gone upwards “आगासेणु-पइओ ललियचवलकुंडलतिरीडी” उत्त० ६, ६०;

अनुपपगंथ. पु० (अनुपग्रन्थ-विरति-तयाऽणुः स्वलोऽपि प्रगतो ग्रन्थो धनादिर्यस्य स तथा) निर्ग्रन्थ, परिग्रह रहित-साधु. निर्ग्रन्थ, परिग्रह रहित-साधु. One freed from even the slightest worldly possessions, an ascetic. ठा० ६;

अनुपपण त्रि० (अनुत्पन्न) वर्तमान समयमा जेनुं अस्तित्व नथी ते, उत्पन्न नथील वर्तमान समय में जिसका अस्तित्व नहीं है वह; अनुत्पन्न, जो उत्पन्न नहीं हुआ है वह Not born, not existing. दसा० ४, ६१; विशेष० ४१;

✓ अणुपदा. धा० I (अनु+प्र+दा) आपनुं;

देनु. देना. To give; to bestow upon.

अणुपदाइ. निसी० १, २८;

अणुपदेजा. वि० वेय० ४, ११; १२;

अणुपदाउ हे० कृ० वव० २, २६,

अणुपदेमाण व० कृ० वेय० ४, ११,

अणुपदायव्व. त्रि० (अनुप्रदातव्य) देनु  
अणुपदे; देना योग्य देना चाहिये, देन योग्य.

Worth being given. भग० ८, ६,

अणुपयाहिणीकरेमाण त्रि० (अनुप्रद-  
क्षिणीकुर्वत्) प्रक्षिणा इरतो. प्रदक्षिणा

करता हुआ. Circumambulating

राय० १७३; भग० ६, ३३, ज० प० ३, ६८,

✓ अणुपवाअ धा० II. (अनु+प्र+वाच्).

निधारी वांय्यु, ध्यान दध वांय्यु ध्यान देकर  
पढना. To read attentively.

अणुपवाएति ज० प० ३, ४५,

अणुपवाएमाण. व० कृ० ज० प० ३, ४५,

अणुपवाय-अ पुं० (अनुप्रवाद) नवमा

पूर्वनु नाम; विद्यानुप्रवाद तेनु अपर नाम छे.

नवें पूर्व का नाम, जिसका दूसरा नाम विद्यानुप्र-  
वाद है. Name of the ninth Pūrva,

its other name is Vidyānupra-  
vāda नदी० (२) अेकना इला पछी इहेयुं

ते, अनुवाद एक के कहने के बाद कहना,

अनुवाद speaking after one has  
spoken सूय० २, ७, १३;

अणुपविह त्रि० (अनुप्रविष्ट) प्रवेश इरैल,

पेरेल-पेरेल प्रवेश किया हुआ Entered

नाया० १, ८, १४, १६, १८, भग० ३, १,

८, ६; ११, ११, १२, १, १५, १, १६, ५, ६,

निर० १, १, दस० ६, २, वेय० १, ३७,

✓ अणुपविस. धा० I II (अनु+प्र+विच्)

प्रवेश इरैल; अंदर जनु, दाखल थनु प्रवेश  
करना, भीतर जाना To enter.

अणुपविसइ भग० ७, ६; १२, १, १५, १;

राय० १७३; ओव० ३१; ज०

प० ३, ५४, नाया० १; २, ५;

८, १४; १६; निसी० १६, १;

अणुपवेसेइ. नाया० १६;

अणुपवाविसइ नाया० १;

अणुपविसति नाया० १; २, ८, ६, १६;

अणुपविससि. नाया० १६;

अणुपविसाभि. भग० १५, १;

अणुपविसे. वि० उत्त० २, १४,

अणुपविसेज्जा. वि० दसा० ७, १;

अणुपविस-से-ह. आ० नाया० ८, १४; १६;

अणुपविसइत्ता स० कृ० नाया० १, २;

८; १४, १५, १६, भग०

७, ६, १५, १;

अणुपवेसेइत्ता सं० कृ० नाया० १६,

अणुपा विसइत्ता स० कृ० नाया० १;

अणुपवेसित्ता स० कृ० निसी० १, १०;

अणुपविसित्ता. स० कृ० भग० ३, ४, आया०

२, ७, १, १५५, निसी० ५, ३७,

अणुपविसामित्ता सं० कृ० भग० १५, १;

अणुपविस्सा स० कृ० सूय० १, १३, १७,

अणुपविसित्तए हे० कृ० नाया० ८;

अणुपविसमाण व० कृ० भग० १६, ६;

अणुपसूय. त्रि० (अनुप्रसूत) जन्मेहुं. जन्मा

हुआ. Born. आया० २, १, ८, ४६,

अणुपिय. त्रि० (अनुप्रिय) अनुक्षु;

भीक्षुभीक्षु. अनुकूल Favourable;

agreeable “अन्नस्स पाणस्स इहलो-

इयस्स, अणुपिय भासति सेवमाणे” सूय०

१, ७, २६,

✓ अणुपेह धा० I (अनु+प्र+इच्) अनुपेक्ष-

चित्तवना इरवी, लावना लाववी, आलोचन-

भनन इरु चितवन करना, भावना करना;

आलोचन मनन करना To think; to

meditate upon.

अणुपेहंति ओव० २१;



without examining them with care. ठा० ६;

अणुबद्ध त्रि० (अनुबद्ध) आधेय, निरंतर  
अडलु करेय. बांधा हुआ, निरन्तर ग्रहण किया  
हुआ Tied, taken ceaselessly  
सम० ११, (२) निरंतर; सतत, अव्यवच्छिन्न  
निरंतर, सतत, अव्यवच्छिन्न constant,  
ceaseless परह० १, १, २, नाया०  
२; (१) व्याप्त pervading. नाया०  
२, (४) पूर्वसंचित, द्वेषबंधनशी आधेय  
पूर्वसंचित, द्वेषबंधन से बद्ध, fettered  
by the bond of hatred shown  
in past life. उक्त० ४, २,—खुडा लो०  
(-लुडा) अत्यन्त लूण, तीव्र क्षुधा बहुत  
ज्यादा भूख, तीव्र लुधा sharp hunger  
“अणुबद्धखुहापरद्धसीऊरहतएहवेयणादुग्घट  
घटियवित्रणमुहविच्छवित्रा ” परह० १,  
३,—णिरंतर. त्रि० (-निरन्तर) अत्यंत  
निरंतर; हमेश. सदा, हमेशह incessant;  
constant. “अणुबद्धणिरंतरवेयण सु ”  
परह० १, १;—तिव्वेय त्रि० (-तीव्वेय)  
निरंतरपणु तीव्र वैर शत्रुता निरन्तर  
तीव्र वैर रखने वाला given to impla-  
cable hostility. “अणुबद्धतिव्वेय,  
परोप्परं वेयण उदीरति ” परह० १, १,  
—धम्मज्झाण. त्रि० (-धर्मध्यान-अनुबद्धं  
सततं धर्मध्यानमाज्ञाविनयादिलक्षण येषां  
तेऽनुबद्धधर्मध्यानाः ) धर्मध्यान चिंतननी  
अहं सतत प्रवृत्ति शत्रुता धर्मध्यान  
चितवन में निरंतर प्रवृत्ति रखने वाला  
constantly engaged in religious  
meditation. परह० २, १,—रोसप्पसर  
त्रि० (-रोपप्सर-अनुबद्धः सततमव्य-  
वच्छिन्नो रोपस्य प्रसरो विस्तारो यस्य  
सोऽनुबद्धरोपप्सरः ) निरन्तर कोधी निरंतर  
कोधी; सदा क्रोध सहित. perpetually

in anger. गच्छा० टी० ८२;  
अणुबद्ध धा० I II (अनु+बृह्) बोलना, कहना  
To speak, to tell.

अणुबद्ध भग० ११, ११,

अणुबद्ध नाया० १;

अणुबद्धमाण व० कृ० नाया० १;

अणुभट्ट त्रि० (अनुभट्ट) अलिभान  
रहित आभिमान से रहित Free from  
pride or conceit. “अणुसुण  
जीवे अणुकरण अणुभट्टे विगयसेने” उक्त०  
२६, २६, (२) स्पष्ट नहिं ते, खुलु नहिं  
ते जो स्पष्ट नहीं हो-प्रकट नहीं हो वह  
not clear, not open. “अणुभट्ट-  
पसत्थं ज्ञेयं ” जीवा० ३,

✓अणुभव धा० I (अनु+भू) अनुभव, अनु-  
भोग अनुभव करना, भोगना.

अणुभवति भग० ११, १२,

अणुभविउं हे० कृ० उक्त० २०, ३१;

अणुभवमाण व० कृ० नाया० १३;

अणुभाग पु० (अनुभाग) कर्मोत्पत्ति-निष्पत्ति,  
तिक्ततर-वधारे तिक्तो, कटु, कटुतर वगेरे  
रस, कर्मोत्पत्ति के माध्यमसाधनानुसार के  
रस गटे ते, कर्मविपाक, कर्मपरिणति चर्परा,  
कटुआ वगेरह रस, कर्म के स्वरूपों में अव्यव-  
साय के अनुसार जो रस पड़े वह, कर्मविपाक;  
कर्मपरिणति Results of Karma  
with reference to their inten-  
sity caused by the degree of  
passion. क० ग० ४, ८२, ५, ६५;  
उक्त० ३३, २४, भग० १, ४, सम० ४;  
सूय० २, ६, ३४, (२) अनुभाग; स्वभाव.  
अनुभाग, स्वभाव. nature. क० प०  
१, २४;—अणुपाचयुय. (-अणुबहुत्व )  
अनुभाग-रस आशी कर्मोत्पत्ति अणुपाचयुय-  
परस्पर ओष्ठ वत्त. रूपे सरूप. मणी करवी ते.  
अनुभाग-रस की अवेद्याने कर्म का अणुबहुत्व-



न्यूनाधिकरूप से परस्पर तुलना करना. weighing the comparative intensity of Karmic results ठ० ४, २;—उदय. पुं० (—उदय) कर्मो अनुभाग-रसरूपे थते. उदय कर्म का अनुभाग-रसरूप से होता हुआ उदय maturing of Karma in greater or lesser intensity. क० प० ६, ५,—उदीरणा स्त्री० (—उदीरणा) उदयमां आवेशां कर्मो रसनी साथे उदयमां न आवेश रसने भेय्यते तेमा भोगवी भोगवो ते उदय में आये हुए कर्म के रस के साथ उदय में नहीं आये हुए रस को मिलाकर उसका फल भोगना blending the intensity of matured Karmas with that of unmatured ones and experiencing the results of this modified intensity. ठ० ४, २;—उदीरणोपक्रम पुं० (—उदीरणोपक्रम) उदयमा आवेशा रसनी साथे सत्तामां रहेला रसने भेय्यते वेदवानो आरंभ करेवो ते. उदय में आये हुए रस के साथ सत्ता में रहे हुए रस को खींचकर उसके भोगने का आरंभ करना beginning to experience the blended intensity of the matured and unmatured Karmas ठ० ५, १;—कम्म न० (—कर्मन्) कर्मो रस, तीव्र, तीव्रतर, मंद, मंदतर वगैरे कर्मप्रकृतिमा शुभ, अशुभ रस कर्म का रस, तीव्र, तीव्रतर, मंद, मंदतर आदि कर्मप्रकृति में का शुभ अशुभ रस greater or lesser intensity of the results of Karmas according to their nature. भग० १, ४;—णामानेहताउय न० (—नामनिधत्तायुप्-गत्यादीनां नाम कर्मणामनुभागवन्धरूपो भेदोऽनुभागनाम,

तेन सह निधत्तमायुरनुभागनामनिधत्ता-युरिति ) नामकर्मनी गति आदि प्रकृतिना अनुभागवंधनी साथे आयुष्य कर्मो निवड वंध करेवो ते, आधिपाना वंधो अेक लेद. नामकर्म की गति आदि प्रकृति के अनुभागवंध के साथ आयुष्य कर्म का घनिष्ठ सम्बन्ध करना, आयुष्य कर्म के वंध का एक भेद blending together the intensity of Nāmakarma with that of Āyusyakarma; a variety of the bondage of Āyusyakarma. भग० ६, ८; सम०—वंध पुं० (—वन्ध) कर्म अंदर तीव्र, तीव्रतर आदि रसो वंध कर्म में तीव्र, तीव्रतर आदि रस का वंध. the intensity of the bondage of Karma according to the degree of passion ठ० ४, २,—वंधद्वार न० (—वन्धस्थान) अनुभागवंधनां स्थानक; जे जे अध्यवसाये अनुभाग-अेक समयना कषायसंयधी अध्यवसायथी ग्रहण करेवो कर्मपुद्गल ना रससमुदायनु परिणाम थाय ते कषायोदयरूप अध्यवसायविशेष अनुभाग वंध के स्थानक, जिन जिन अध्यवसायों से अनुभागवंध का एक समय के कषायसम्बन्धी अध्यवसाय से ग्रहण किये हुए कर्मपुद्गलो के रससमुदाय का परिणाम हो वह कषायोदयरूप अध्यवसायविशेष. thought-activity in the form of passion giving rise to greater or lesser Karmic bondage प्रव० १०६५,—संकम. पुं० (—सङ्क्रम) कर्मो रसमां संक्रमण थयुं ते, संक्रमो अेक लेद. कर्म के रस में संक्रमण होना, संक्रम का एक भेद transformation of Karmic results; a variety of Sankrama क० प० १५, ७१;

—संतकर्म. न० (—सत्कर्मन् ) अनुभाग  
संबन्धी कर्मनी सत्ता; कर्मना अनुभाग—  
रसनी सत्ता अनुभाग सम्बन्धी कर्म की सत्ता,  
कर्म के रस की सत्ता existence of  
Karmic matter in relation to  
the intensity of bondage. क०  
प० ७, १,

अणुभाव पु० ( अनुभाव ) प्रभाव, शक्ति,  
सामर्थ्य प्रभाव, शक्ति. Power, prowess  
सू० प० १, १६; ( २ ) सुख, सुख glory,  
blessedness सम० १०, ( ३ ) तीव्र, मन्द-  
रूपे कर्मना रसने अनुभव करे तो, रसरूपे  
कर्मनु परिणाम-विपाक तीव्र, मन्दरूप से कर्म  
के रस का अनुभव करना, रसरूप से कर्म का  
परिणाम-विपाक. the result of Karma  
in greater or lesser intensity,  
experiencing this result पञ्च०  
२३, क० प० २, १, उत्त० ३४, ६१,  
—कर्म न० ( —कर्मन् ) अनुभाव-  
विपाकरूपे वेदात्त कर्म अनुभाव अर्थात्  
विपाकरूप से जिसका वेदन हो वह कर्म.  
Karma experienced in result.  
ठा० ४, ४,

अणुभासत्रि० ( अनुभासक ) गुरु पास  
सालगणीने पछी ओलना-उपदेश करनार  
गुरु द्वारा श्रवण करने के पश्चात् बोलने  
वाला-उपदेश करने वाला Preaching  
after hearing from a preceptor  
विशे० ३२१७,

अणुभासंत. व० कृ० त्रि० ( अनुभाषमाण )  
पाछी ओलतो पीछे से बोलता हुआ (One)  
speaking after another has  
spoken पंचा० ५, ५;

अणुभासणा स्त्री० ( अनुभाषणा-अनुभाषण )  
गुरु ने ह्म, दीर्घ डहे ते प्रभाणे शिष्ये  
ओलतुं ते, गुरुना ओल्याप्रभाणे ओलतुं ते

गुरु के बोलने के अनुसार बोलना, गुरु  
जैसे-ह्रस्व, दीर्घ कहें वैसा ही शिष्य का  
बोलना. Imitation of the accents  
of a preceptor by a pupil ठा०  
५, ३;

अणुभित्ति न० ( अनुभित्ति ) लीन समीपे,  
लीतनी पास दीवाल के समीप Near a  
wall वेय० ३, २६;

अणुभूइ. न० ( अनुभूति ) अनुभव अनुभव.  
Experience विशे० १६११,

अणुभूइमय. त्रि० ( अनुभूतिमय ) अनुभव  
भय अनुभवमय, अनुभव स्वरूप Full of  
experience विशे० १६११,

अणुभूय त्रि० ( अनुभूत ) अनुभव करे  
अनुभवित; अनुभव किया हुआ Expe-  
rienced. अणुजो० १३०; भग० ६, ३३;  
नाया० १,

अणुमइ स्त्री० ( अनुमति ) अनुमति-संमति,  
अनुमोदन अनुमति, सम्मति, अनुमोदन  
Consent, approval क० प० ५, २६,

अणुमइत्तो. अ० ( अनुमतितस् ) अनुमति छे  
भाटे. अनुमति होने से Because of,  
through, permission or consent.  
पंचा० ४, ३६;

अणुमगंगं अ० ( अनुमार्गम् ) पछी; पाछी;  
छे पीछे Behind; in the wake of  
नाया० १८;

अणुमगगाय-अ त्रि० ( अनुमार्गजात )  
पाछी जन्मे; न्हातो लाछ डे ज्हेन पीछे से  
जन्मा हुआ, छोटा भाई या बहिन. Born  
after, a younger brother or  
sister नाया० ८, १८; विवा० १,

अणुमरणा स्त्री० ( अनुमरणा-अनुमति )  
अनुमोदना, संमति. अनुमोदन Consent;

approval ( २ ) अनुमोदनजन्य अक्षेप  
दोष अनुमोदन से होने वाला एक दोष.  
a fault incurred by showing  
approbation पि० नि० १२८,

**अणुमत.** त्रि० ( अनुमत ) अवगुण ज्ञेया  
भङ्गी पणु ज्ञेया उपरथी प्रीति न उत्तरे तेवुं  
४४, ४५, ४६ अवगुण देखने के पश्चात् भी जिस  
परसे प्रीति कम न हो ऐसा, इष्ट Desired  
or liked inspite of faults  
भग० २, १, ओव० ३६; ( २ ) अनुकूलप-  
णाधी संभूत, मान्य. अनुकूलता से सम्मत;  
मान्य. acceptable; agreeable.  
जीवा० १.

✓ **अणुमन्न** धा० I ( अनु+मन्य-मन् )  
समति आपनी; मान्य राखनु सम्मति देना,  
मान्य करना To permit, to approve  
of, to assent to  
अणुमन्नसु आ० सु० च० १, ३४१;  
अणुमणित्था भू० भग० ६, ३३, नाया०  
१, १६;

**अणुमय** त्रि० ( अनुमत ) लुओ 'अणुमत'  
शब्द देखो "अणुमत" शब्द Vide  
"अणुमत." नाया० १, भग० २, १, ६,  
३३; १५, १; पञ्च० ११, सु० च० २, ७४,  
वव० ३, ६; कण्प० ६, १६, जं० प० २,  
२०;

**अणुमाण** पुं० ( अनुमान ) अणु-अल्प मान-  
अहंकार, थोडा पणु गर्व थोडा अभिमान,  
थोडा गर्व Some little pride; a  
little touch of pride "अणुमाण  
च मायं च, तं पडिण्णाय पंडिण् " सूय०  
१, ८, १८,

**अणुमाण** न० ( अनुमान ) हेतु-द्विगथी थनुं  
साध्यनु ज्ञान; अनुमान ज्ञान हेतु से जो  
साध्य का ज्ञान हो वह, अनुमान ज्ञान An

inference; knowledge got by  
syllogistic reasoning भग० ५, ४;  
अणुजो० १४७, ठा० ४, ३; विशेष० ६०,  
—गिराकिय त्रि० ( -निराकृत )  
अनुमानथी निराकरण करेला अनुमान से  
निराकरण किया हुआ. refuted by  
inference ठा० १०,

**अणुमाणइत्ता** सं० कृ० अ० ( अनुमीय )  
अनुमान करीने अनुमान करके. Having  
inferred भग० २५, ७;

**अणुमाय-अ** त्रि० ( अणुमात्र ) अणुमात्र;  
धलुं थोडा बहुत थोडा, नाममात्र. Very  
little "अणुमायंपि मेहावी, मायामोसं  
विवज्जण्" दस० ५, २, ४६, ८, २४;

**अणुमुलंत** व० कृ० त्रि० ( अनुन्मुञ्चत ) न तर्कतो;  
नहि मुक्तो; त्याग न करतो, न छोड़ता हुआ;  
न त्यागता हुआ Not abandoning  
उत्त० ३०, २३;

**अणुमेरा** स्त्री० ( अनुमर्यादा ) नगरमर्यादाही  
समीप नगर की मर्यादा-सीमा के समीप.  
Near the border of a town वेय०  
३, २६,

**अणुमोइय** त्रि० ( अनुमोदित ) अनुमति  
आपी उत्साही अनावेला; उत्तेजित करेला  
अनुमति देकर उत्साहित किया हुआ उत्तेजित  
किया हुआ Encouraged आउ० ११;

**अणुमोयण.न०** ( अनुमोदन ) लुओ 'अणुमोयणा'  
शब्द देखो 'अणुमोयणा' शब्द, Vide  
'अणुमोयणा' पंचा० ६, २८, परह० १, ३;

**अणुमोयणा** स्त्री० ( अनुमोदना-अनुमोदन )  
अनुमोदन, संमति, सहानुभूति, मदद करनी  
ते अनुमोदन, सहानुभूति, सहायता करना  
Approval, consent, sympathy.  
पि० नि० ६५; ११३;

**अणुम्मुक्** त्रि० ( अनुन्मुक्त ) मुक्तयेला नहि;

तज्जयेल नडि नहीं छोडा हुआ, नहीं त्यागा हुआ. Not abandoned परह० १, ४,  
अणुय त्रि० (अनुग) लुओ 'अणुग'  
शब्द देखो 'अणुग' शब्द Vide "अणुग".  
श्रव० ४१,

अणुयत्तणा. स्त्री० (अनुवर्त्तना) दुःखी-ग्लान-  
नयनानो उपचार करवो-सेवा करवी ते,  
अनुकूलपणे वर्तवुं ते दुःखी-ग्लानया निर्वल  
का उपचार सेवा-करना, अनुकूलतापूर्वक  
वर्ताव करना. Serving the afflicted,  
sympathetic conduct जीवा० १

अणुयत्तमाण. व० कृ० त्रि० (अनुवर्त्तमान)  
मानतो, अनुसरतो, स्वीकारतो, क्यल करतो  
मानता हुआ, अनुसरण करता हुआ, स्वीकार  
करता हुआ Accepting, following,  
acknowledging "छदमखुयत्तमाणो  
गुरुजणाराहण कुणइ" विशेष० १४५१;  
अत० ६, १५,

अणुयात त्रि० (अनुयातृ) पाछा ननार,  
अनुसरनार. पीछे जाने वाला, अनुसरण करने  
वाला (One) who follows भग०  
१२, ६;

अणुयास पुं० (अनुकाश) विकाश-प्रकाशने  
विस्तार विकाश-प्रकाश का विस्तार  
Expanse of light नाया० १,

अणुरंजिएल्लय त्रि० (अनुरजित—स्वार्थिक  
इल्लक प्रत्ययः) संप्रदायकमयी रंगायेल  
संप्रदायपरपरा से रंगा हुआ Coloured  
with traditional doctrine ज० प०

अणुरत्त त्रि० (अनुरक्त) स्नेहवाणो, अनु-  
रागी, प्रेमी तेहयुक्त, अनुरागी; प्रेमी  
Affectionate, loving "अणमणमण  
मणुरत्ता अणमणमणहिणसियो" उक्त० १३,  
५, श्रव० सू० प० २०; नाया० ३; १४,  
भग० १२, ६,

अणुरसिय न० (अनुरसित) भुंतेथी  
पोकार करवो ते, शब्द-अवाज करवो ते.  
जोर से पुकारना; शब्द करना Crying  
aloud, bawling out नाया० ५;

अणुराग पु (अनुराग) अनुराग, प्रीति;  
प्रेम, अत्यन्त स्नेह अनुराग, प्रीति, प्रेम;  
बहुत ज़्यादाह स्नेह Love, affection,  
भग० ६, ३३, राय० २२४, (२) वर्यु;  
किरमल आदिने रंग रंग, किरमची आदि  
का रंग colour पद्म० २,

अणुरागय न० (अन्वागत-रेफ आगमिक)  
अनुकूल आगमन, अनुकूलपणे आववु ते  
अनुकूलतापूर्वक आना Favourable  
arrival, agreeable arrival "अणु-  
रागय ते खट्या" भग० २, १,

अणुराय पुं० (अनुराग) लुओ 'अनुराग'  
शब्द देखो 'अनुराग' शब्द Vide 'अनुराग'  
नाया० ५, भक्त० ३२;—रक्त त्रि० (—रक्त)  
प्रेमथी रंगायेल प्रेमसे रंगा हुआ full of  
(lit coloured with) attachment.  
प्रव० ८२४,

अणुराहा स्त्री० (अनुराधा) अनुराधा नामनु  
नक्षत्र अनुराधा नाम का नक्षत्र. A con-  
stellation named Anurādhā  
सम० ४, सू० प० १०, अणुजो० १३१; ठा०  
२, ३, जं० प० ७, १५५;

अणुरूव त्रि० (अनुरूप) लायइ, धटित,  
उचित, अनुकूल योग्य, घाटित. अनुकूल,  
उचित Proper, fit, agreeable पिं०  
नि० ४८६, नाया० १६; ठा० ६, विशेष०  
१६२१;

अणुलग्ग त्रि० (अनुलग्न) पाछा लागेहुं.  
पीछे लगा हुआ Attached behind.  
विवा० ८,

अणुलाव पुं० (अनुलाप) चारवां ओलवुं  
ते इरी इरी ओलवुं-आवाप करवो ते.

बारंवार बोलना, बारंवार बात चीत करना.  
Speaking frequently. ठा० ७;

✓ अश्लिष. धा० I. II (अनु+लिप्) लिपवुं;  
गार डरवी लीपना. To daub with  
cowdung, (२) विलेपन डरवु; लेप डरवे।  
विलेपन करना; लेप करना. to smear.

अश्लिषद्. नाया० ५;

अश्लिषेद्. जीवा० २, ४;

अश्लिषंति नाया० १; भग० ६, ३३; जं० प०  
२, २३;

अश्लिषह. आ० भग० १५, १;

अश्लिषहत्ता. सं० कृ० नाया० १; ५, भग० १५, १;

अश्लिषेहत्ता सं० कृ० भग० ६, ३३;

अश्लिषित्त ए हे० कृ० ओव० १८; ३८;

अश्लिषण. न० (अनुलेपन) ओ३ वार लिपेक्षी  
भूमि इरीथी लिपवी ते, इरी विलेपन डरवुं ते.  
एक बार लीपी हुई भूमि को फिर-से लीपना,  
पुनः विलेपन करना. Daubing or  
smearing again. परह० २, ३;

अश्लिषत्ता. त्रि० (अनुलिप्त) अ३न वगेरेनुं  
विलेपन डरेक्ष चंदन आदि का विलेपन  
किया हुआ. Besmeared; anointed  
ओव० २२, नाया० १, ५; कप्प० ४, ६२;  
—गत्ता. त्रि० (—गात्र) जेना गात्र-शरीर  
अवयव अ३नादिथी विलेपन डरेक्ष छे ओवे।  
जिसके शरीरअवयव आदि चंदनादि से  
विलेपित हैं वह. with limbs anoint-  
ed with fragrant unction. तंडु०

अश्लिषंत. व० कृ० त्रि० (अनुलिखत) अ३न  
डरवु, स्पर्श डरवुं चुंबन करता हुआ; स्पर्श  
करता हुआ. Touching; licking;  
“ नगणतलमश्लिषंतसिहर ” सू० प०  
१८; ओव० ३१; सम० प० २१३; राय० ६६;  
नाया० ५; भग० ६, ३३; जं० प० ५, ११७;

अश्लिषेहत्ता सं० कृ० अ० (अनुलुक्ष्य)  
शरीर लुंछीने. शरीर पोंछ कर. Having

wiped the body, e. g. with a  
towel. भग० १५, १;

अश्लिषण. न० (अनुलेपन) विलेपन, विलेपन  
डरवुं ते. लेप करना; विलेपन. Besmea-  
ring; anointing ओव० २२; जं० प०  
प० २, —तल न० (—तल) इरी लीपेक्ष  
भूमि-भूमि फिर से लीपी हुई भूमि  
ground which has been daubed  
again “ मेयवसापूरुहरिमंसचिक्खि  
लित्ताणुलेवणतला ” सू० २, २, ३६;

अश्लोपत्ता. सं० कृ० अ० (अनवलोक्य)  
न जेछने; अवलो३न डर्या विना. विना  
देखे, विना अवलोकन किये. Without  
having seen. भग० ७, ७;

अश्लोम न० (आनुलोम्य) कृ०. क्रमवार.  
Natural order. पंचा० १५, १६,

अश्लोम. त्रि० (अनुलोमन्) अनु३क्ष;  
मनने गम३. अनुकूल; मन को रुचने  
वाला. Agreeable; pleasing, in  
natural order. जीवा० १; ३, ३;  
जं० प० २, ३१; नाया० १; ६; वव० १०, १;  
ओव० नि० ३६; पंचा० १५, १६, ओव० १०;  
(२) मा३मा३ी अनु३क्ष डरवाते पु३पु ते.  
आपस में अनुकूल करने के लिये पूछना.  
mutual consultation for coming  
to an agreement ठा० ६, १;  
—वाउवेग. त्रि० (—वायुवेग) जेना शरीर-  
नी अंदरना वायुने वेग अनु३क्ष छे ते;  
जेना पेटमा गु३मवायु नथी ते; जुगल  
मनु३थ. जिसके शरीर के भीतर की वायु का  
वेग अनुकूल है वह, जिसके उदर में गु३म  
वायु नहीं है वह, युगल मनु३थ free from  
unwholesome gases in the  
body; without vitiated windy  
humour in the stomach. जीवा० १;



**अणुलोमइत्ता** सं० कृ० अ० ( अनुलोम्य )  
अनुकूल करके, अपने पक्ष में लेकर Having  
made agreeable, having taken  
on one's side. ठा० ६, १,

**अणुलोमविलोम** पु० ( अनुलोमविलोम )  
आवलम्ब करती है; अणु अने आवणु  
आवागमन करना, जाना और आना Going  
to and from. पंचा० १६, १८,

**अणुल्लव-य** पुं० ( अनुल्लवक ) ३८६ विशेष  
एक प्रकार का जमीकन्द A kind of  
bulbous root उत्त० ३६, १२८, ( २ )  
ये ध्रिय अविशेष दो इन्द्रियो वाला जीव  
विशेष. a variety of living being  
having two senses उत्त० ३६, १२८,  
**अणुल्लग** त्रि० ( अनुल्लवक ) लुओ "अणुल्लव"  
शब्द देखो "अणुल्लव" शब्द. Vide  
"अणुल्लव". उत्त० ३६, १२६;

**अणुल्लाव** पुं० ( अनुल्लाव ) भाड़ा उल्लाव,  
कुत्सित रीतिथी वर्णन करने से कुत्सित रीति से-  
खराब रीति से वर्णन करना Contemptu-  
ous mention ठा० ७, १,

**अणुल्लोय** पुं० ( अनुल्लवक ) ये ध्रिय अविशेष  
दो इन्द्रियो वाला जीवविशेष. A  
kind of living being having  
two senses उत्त० ३६, १३०, ( २ )  
कंदविशेष कंदविशेष a kind of  
bulbous root उत्त० ३६, १३०,

**अणुवद्व** त्रि० ( अनुपदिष्ट ) आचार्य परंपरा-  
थी उपदेशों नहिं ते जिसका आचार्य परंपरा  
से उपदेश न हुआ हो वह. Not taught  
traditionally by preceptors.  
क० प० ५, २५; प्रव० १२२,

**अणुवउत्त** त्रि० ( अनुपयुक्त ) उपयोग वगरनु;  
उपयोग शून्य. उपयोग रहित Careless,  
lacking in due attention. अणुजो०

१४, भग० ५, ४, विशेष० ४२, ओष० नि०  
१३;

**अणुवपस** पुं० ( अनुपदेश ) उपदेशनो अभाव;  
स्वभाव; निसर्ग. उपदेश का अभाव; स्वभाव,  
निसर्ग. Absence of teaching;  
nature as opposed to art "निसर्गः  
स्वभावोऽनुपदेश इत्यनर्थान्तरम्" अणुजो०  
१५१, ठा० २, १,

**अणुवओग** पुं० ( अनुपयोग ) उपयोगनो  
अभाव; उपयोग शून्यता. उपयोग का अभाव;  
उपयोग शून्यता Want of proper  
care or attention "अणुवओगो दब्धं"  
अणुजो० १३, ७२; ( २ ) उपयोगनो अवि-  
षय; लावशून्य भावशून्य that which  
is not a province of Upayoga  
अणुजो० ७२; ( ३ ) निप्रयोगन;  
निप्रयोज्य. वेमत्तलव; निप्रयोजन, निष्कारण.  
without any purpose पंचा० ३, ३७;

**अणुवओगि** त्रि० ( अनुपयोगिन् ) उपयोग  
शून्य, निप्रयोगन. निष्कम्मा उपयोग  
शून्य Unnecessary, useless;  
purposeless पंचा० ३, ३७,

**अणुवकय** त्रि० ( अनुपकृत-उपकृतमुपकारो,  
न विद्यते उपकृतं येषां ते ) जेणे उपकार नहीं  
किया वह. Devoid of benevolent deeds.  
नाया० ३, ( २ ) भीमना उपकार नीचे  
आवेक नहिं ते दूसरे के द्वारा उपकृत न हुआ  
हो वह not under anybody's  
obligation विशेष० २१६३, नाया० ३;

**अणुवकंत** त्रि० ( अनुपक्रान्त ) निराकरणी करेक  
नहिं जिसका निराकरण नहीं किया गया  
हो वह Not repudiated ओव०

**अणुवघाद्वि-य** त्रि० ( अनुपघातिक ) अथां  
संयम आदिनी घात न थाय तेनुं स्थण.  
ऐसा स्थान जहा संयम आदि का घात न हो (A



place ) secure against impediments to self-restraint. प्रव० ७१६;  
उत्त० २४, १७,

अणुवदणगाउस त्रि० ( अनुपवर्त्तनीयायुक् )  
जेना आयुष्यनु अपवर्त्तन न थाय तेवां देवता,  
नारङ्गी वगेरे. जिनके आयुष्य का अपवर्त्तन  
न हो ऐसे देवता, नारकी आदि ( Gods, hell  
beings etc. ) whose life-term can-  
not be reduced or transferred  
क० प० १, ७५

अणुवद्वन्त त्रि० ( अनुपतिष्ठत् ) अध न भेसजुं;  
लागु न पडजुं. मेल न खाता, घटित न  
होता, ठीक न बैठता, संगति न खाता  
Not fitting; not applicable  
ओष० नि० ४०१;

अणुवद्वान्वियअ. त्रि० ( अनुपस्थापितक ) पील  
चारित्रनी उपस्थापना द्विधा वगरने। दूसरे  
चारित्र की बिना उपस्थापना किया हुआ  
( One ) who has not been re-  
admitted into the order of  
monkhood after a temporary  
expulsion for a fault वेय० ४, १३,

अणुवद्विअ. त्रि० ( अनुपस्थित ) धर्मायरणुमां  
प्रमाद डरनार, धर्मायरणुमाटे तैयार न थयेल  
धर्माचरण में प्रमाद करने वाला; धर्माचरण  
के लिये जो तत्पर न हो वह Negligent in  
religious observations; not  
prepared for religious practices  
आया० १, ४, १, १२६;

✓ अणुवद्व. धा० II ( अनु+वृद्ध्+णि० ) वधारुं;  
वृद्धि डरनी बढ़ाना; वृद्धि करना. To  
increase; to accumulate.

अणुवद्वेइ. भग० ७, ६;

अणुवद्वेमि. नाया० १;

अणुवद्वेहि आ० नाया० १४;

अणुवद्वेस्सामि. भ० विवा० ७,

अणुवद्वेइत्ता. सं० कृ० भग० ७, ६,

अणुवणीय. त्रि० ( अनुपनीत ) सोपेक्ष नहि  
ते जो सुपर्द न हुआ हो वह Not handed  
over. भग० ५, ६;

अणुवत्त त्रि ( अनुवृत्त ) पीछ वार प्रवृत्त  
थयेल दूसरी वार प्रवृत्त Re-engaged;  
occupied in doing again पि०  
नि० भा० १८;

अणुवत्तमाण व० कृ० त्रि० ( अनुवर्त्तमान )  
अनुसरतो. अनुसरण करना हुआ.  
Following भग० ११, ११;

अणुवत्ति त्रि० ( अनुवर्त्तिन् ) अनुसरनार.  
अनुसरण करने वाला. ( One ) who  
follows; following; a follower.  
गच्छा० ५२;

अणुवत्ति स्त्री० ( अनुवृत्ति ) गुरुनो मनोलाव-  
धगितादिइ येष्टाथी वर्त्तिने तेने अनुकूल वर्त्तवु  
ते. गुरु के मनो भाव-इशारे आदि से जान  
कर उसके अनुकूल वर्त्ताव करना. Shaping  
one's conduct by guessing the  
likes and dislikes of a precep-  
tor from his actions etc. गच्छा०  
५२,

अणुवत्तिय सं० कृ० अ० ( अनुवृत्त्य )  
अनुसरीने. अनुसरण करके having  
followed विवा० २, ६;

अणुवधारिय. त्रि० ( अनुपधारित ) धारणु न  
डरेल धारण न किया हुआ Not held,  
not put on. भग० १, ६,

अणुवम. त्रि० ( अनुपम ) अनुपम, उपमा  
रहित. उपमा रहित, अनुपम. Matchless,  
incomparable. विशे० ३१८३, कप्प०  
३, ३७,—सुक्ख. न० (—सौख्य ) अनुपम  
सुख; उपमारहित सुख; मोक्ष सुख  
उपमा रहित सुख, मोक्ष सुख. Matchless  
happiness; perfect bliss.  
नाया० १७;

अणुवसंत. त्रि० (अनुपशान्त.) उपशान्त  
 थयेन नहि, उदयमा आवेन उपशान्त नह्य  
 हुआ हो वह, उदय ने आया हुआ Not  
 subsided, matured into results.

भग० ७, ६, ठा० ४, १, ( २ ) कषाय  
वाणा; जेना कषाय उपशम्या नथी ते. कषाय  
वाला, जिसके कषाय उपशमित न हुए हो वह.  
with passions unsubsidied  
“उवसते चेव अणुवसंते चेव” सूय० २, २,  
१; “जहाअणुवसंतेण” उत्त० १६, ४३; .

अणुवसु त्रि० (अनुवसु) रागवाणो, राग  
सहित सरागी, राग वाला. Attached  
to worldly things. ( २ ) स्थविर,  
श्रावक स्थविर, श्रावक a Jainalayan.  
“वसु वा अणुवसु वा जाणित्तु धम्मं जहा  
तहा” आया० १, ६, २, १८१;

अणुवहं अ० (अनुपथम्) मार्गनी समीपे;  
मार्गनी पासे मार्ग के समीप In the  
vicinity of the road “अणुपथमे-  
वास्मदवसथो भवतां वर्तेत” आया० टी० १,  
८, १, १६८,

अणुवहय त्रि० (अनुपहत) अग्नि आदिथी  
नाश न पायेल अग्नि आदि से नाश न पाया  
हुआ. Not destroyed by fire etc  
पंचा० ४, ३६,

अणुवहारिय त्रि० (अनुपधारित) हृदयमां  
नडि अवधारेल हृदय में जिसकी अवधारणा  
न की हो वह Not decided in the  
mind सूय० २, ७, ३८;

अणुवहास त्रि० (अनुपहास) उपहास रहित,  
डोछनी मस्करि न करनार. उपहास रहित;  
किसीकी हंसी न करने वाला Not given  
to jesting पंचा० ६, ६,

अणुवाइ त्रि० (अनुपातिन्) पाछा ननार;  
अनुसरनार पीछे जाने वाला; अनुसरण करने  
वाला. ( One ) who follows  
( २ ) करनार. करने वाला ( one ) who  
does “नो विभूसाणुवाई भवइ निगथे”  
उत्त० १६, ६; सम० ६;

अणुवाय. पुं० (अनुवात) अनुसार, अनुसरतु

ते. अनुसार; अनुसरण किया. Act of  
following, pursuit “सहाणुवाए  
रूवाणुवाए” उवा० १, ५४, पञ्च० ३; १६;  
( २ ) धशारे इशारा. sign. प्रव० २८५,

अणुवाय पुं० (अनुवात) अनुकूल वायु-  
पवन. अनुकूल वायु-पवन Agreeable  
wind; favourable wind. जं० प० (२)  
अनुकूल वायु-पवनवाणो देश, जे देशमांथी  
अनुकूल वायु आवे ते अनुकूल वायु वाला  
देश, वह देश, जहां से अनुकूल वायु आवे  
country from which agreeable  
wind blows. भग० १६, ६; राय० ५६;

अणुवालय पुं० (अनुपालक) अनुपालक  
नामे गोशालानो मुख्य श्रावक गोशाला का  
अनुपालक नामक मुख्य श्रावक Name of  
the principal layman follower  
of Gosālā. भग० ८, ५;

अणुवासग. पुं० (अनुपासक-न उपासक:  
श्रावकोऽनुपासकः) अश्रावक; श्रावक नहि ते.  
जो श्रावक न हो वह. One who is not  
a Śrāvaka “अणुवासगो नायगमनायगो  
य” निसी० ८, १२;

अणुवासणा स्त्री० (अनुवासना) आभशनी  
नलीथी गुदाभार्गे पेटमां तेलविशेष नाभयुं  
ते चमडे की नली से गुदद्वार से पेट में तेल  
आदिका डालना Injection of a  
particular oil in the stomach  
through the rectum by means  
of a leathern tube. नाया० १३;

अणुवासरं. अ० (अनुवासरम्) हररोज;  
प्रतिदिन प्रतिदिन. Every day, daily  
प्रव० १५६६;

अणुवासिअ त्रि० (अनुवासित) संस्कार  
वडे वासित करेले संस्कारो द्वारा वासित-  
गन्ध युक्त किया हुआ. Perfumed e. g.

with good deeds जं० प० ५, ११२,  
विशे० २६,

अणुवाहण न० ( अनुवाहन ) वाहनरहित,  
स्थायी वगैरहो विना वाहन का, विना सवारी  
का Without a procession of  
vehicles etc नाया० १५;

अणुविग्ग. त्रि० ( अनुवृत्ति ) शांत; प्रशान्त  
रूप; व्यग्रपक्षाधी रहित, उद्वेगरहित  
शान्त, व्यग्रता से रहित, उद्वेग से रहित  
Free from worry, calm “ चरे मंद  
मणुविग्गे, अविक्खित्तेण चयसा ” दस०  
५, १, २,

अणुवित्ति. स्त्री० ( अनुवृत्ति ) प्रवृत्ति, धृष्ट  
वस्तुने प्राप्त करवाने किया इष्ट वस्तु को प्राप्त  
करने की किया, प्रवृत्ति Effort, action  
to gain a desired object विशे०  
१५६४;

अणुविरइ स्त्री० ( अनुविरति ) देशविरति,  
अव्यवस्था देशविरति, अवकपन Partial  
self-control e. g. on the part  
of a Jaina layman क० गं० १, १८,

अणुविवाग पु० ( अनुविपाक ) अनुरूप  
विपाक, कर्मनु अनुरूप परिणाम, कर्मप्रमाणे  
तेनुक्षल. अनुरूप विपाक, कर्म का अनुरूप  
परिणाम; कर्मानुसार फल Fitting  
results of Karma “ एवं तिरिक्खे  
मणुयासुरेसु, चउरत्तणं त तयणुविवाग ” सूय०  
१, ५, २, २५,

अणुवीह. सं० कृ० अ० ( अनुविचिन्त्य ) आलो-  
चनी, विचार करीने, चिंतनीने आलोचना  
करके, विचार करके, चिंतन करके Having  
reflected upon सूय० २, १, ५७, दस०  
७, ४४, ५५; परह० २, २, आया० १, १,  
३, २५, १, ६, ५, १६४, २, ४, १, १३२;  
—समिइजोग पु० ( —समितियोग )

विचारीने भोक्षवारूप भाषासमितिने व्यापार  
विचार कर बोलनेरूप भाषासमिति का व्यापार.  
careful speech परह० २, २;

अणुवीय. सं० कृ० अ० ( अनुविचिन्त्य ) धुणो  
‘ अणुवीह ’ शब्द देखो ‘ अणुवीह ’ शब्द.  
Vide “ अणुवीह. ” सूय० १, १०, १,

अणुवेदयंत व० कृ० त्रि० ( अनुवेदयत् )  
अनुभवतो, वेदना पाभतो, भोगवतो  
अनुभव करता हुआ, वेदना पाता हुआ  
Experiencing, feeling भग० २५,  
७, सूय० १, ५, १, १६,

अणुवेलंधर पुं० ( अनुवेलन्धर ) वेलन्धर भतिना  
देवताना अनुयायी—हुकुम उदावनारा नागकुमार  
भतिना देवता वेलन्धर जाति के देवों के  
अनुयायी—आज्ञा मानने वाले नागकुमार जाति के  
देव Deities of the Nāga-kumāra  
species of gods, followers of  
Velandhara gods “ कइणं भंते !  
अणुवेलंधरणागरायाणो परणत्ता ? गोयमा!  
चत्तारि अणुवेलंधरणागरायाणो परणत्ता,  
तंजहा—कइण्डए कइमए कइलासे अरुणप्पमे ”  
जावा० ३, ४, सम० १७,

अणुवेह. पु० ( अनुवेध ) भेदाणु, भेदाप सयोग;  
जोड़, मिलाप Meeting, contact.  
पि० नि० ५६;

अणुवेहमाण. व० कृ० त्रि० ( अनुप्रेक्षमाण )  
विचार करतो, विचारतो; लावना लावतो.  
विचार करता हुआ, भावना करता हुआ.  
Considering meditating upon  
“ धुणे उराल अणुवेहमाणे, चिचाण सोयं  
अणुवेक्खमाणे ” सूय० १, १०, ११,

अणुवचइय त्रि० ( अनुवचिक ) महाप्रतनी  
अपेक्षाये अलु—दाना प्रत—अलुप्रत संयधी,  
अलुप्रतरूप महाप्रत की अपेक्षा से लघु प्रत,  
अणुवचरूप. Relating to partial  
views. ओव० ३५,

अणुवृत्तिज्जमारा व० कृ० त्रि० (अनुद्वर्त्यमान)  
उद्धर्तन न पाभतो; ञ्हार दाववामा न  
आवतो उद्धर्तन न पाता हुआ, जो बाहिर लाने  
में नहीं आता हुआ. Not being drawn  
out. नाया० ३;

अणुव्वय न० (अणु-नु-व्रत) महाव्रतनी अपेक्षाये  
नहाना व्रतो, आवडनां प्रथमनां पांच व्रतो.  
महाव्रत की अपेक्षा से छोटे व्रत, आवक  
के प्रारम्भ के पांच व्रत. The first five  
partial vows of a Jaina layman.  
नाया० १२, आड० ३; राय० २२३; ओव० ४१,  
पंचा० १, ७; १०, १७, भत्त० ३६, — धारि  
त्रि० (—धारिन्) अणुव्रत धरनार, व्रतधारी—  
आवक व्रतधारी—आवक. ( a person )  
observing minor vows, a Jaina  
layman (observing minor vows)  
प्रव० ६६७;

अणुव्वयय. त्रि० ( अनुव्रतक ) आज्ञानुद्ध  
काम करने वाला; पाण्ड्या आलनार आज्ञानुकूल  
काम करने वाला, पीछे चलने वाला Obedi-  
ent, following in the footsteps  
of नाया० ३;

अणुव्वया. स्त्री० ( अनुव्रता—अन्विति कुलाऽ  
नुरूपं व्रतमाचारोऽस्या इत्यनुव्रता ) पतिव्रता  
स्त्री; पतिव्रता धर्म पाणनार स्त्री पतिव्रता स्त्री;  
पातिव्रत्य वर्म पालने वाली स्त्री A chaste  
woman “भारिया में महाराय! अणुरत्ता-  
मणुव्वया ” उक्त० २०, २८;

अणुव्वस्स. त्रि० (अनुव्वस) वश थयेल वशीभूत.  
Subdued; under the sway of.  
“ एवं तुव्वे सरागव्वा, अन्नमन्नमणुव्वसा ”  
सूय० १, ३, ३, १०;

अणुव्वारा त्रि० (—अनुव्वान—अनुम्लान) इंधक  
स्निग्ध अने धणु भागे करमायेहुं कुछ  
स्निग्ध और अधिकतर कुम्हलाया हुआ

Withered greatly but retaining  
some brilliancy ओव० नि० ४८८;  
अणुव्विग्ग. त्रि० (अनुव्विग्ग) लुभो “अणुव्विग्ग”  
शब्द देखो “अणुव्विग्ग” शब्द. Vide ‘अणु-  
विग्ग. नाया० ८, ६, दस० ५, १, २; ६०, ८, ४६.  
अणुसंगिय त्रि० (आनुपङ्गिक) प्रासंगिक, प्रसंगे  
प्राप्त थयेल. प्रासंगिक, प्रसंग में आया हुआ.  
Incidentally coming in, arising  
incidentally पंचा० ८, ४५;

✓ अणुसचर. धा० I. (अनु+सम्+चर) पाण्ड्या  
इरवुं, लटइवुं; परिभ्रमणु इरवुं पीछे फिरना;  
भटकना, परिभ्रमण करना. To move  
after, to wander.

अणुसंचरइ. आया० १, १, १, ४;

अणुसंचरंति. सूय० १, १२, १४;

अणुसचरंत. व० कृ० आया० १, १, १, ४;

अणुसंवेयण न० (अनुसंवेदन) पाण्ड्या वेदुं ते,  
अनुभववुं ते अनुभव करना, पीछे से संवेदन—  
ज्ञान होना Feeling afterwards;  
experiencing. “ अणुसंवेयणमप्याणं  
जं हंतव्वं ” आया० १, ५, ५, १६४,

अणुसंसर. धा० I ( अनु+सम्+स्मृ ) स्मरण  
इरवु; याद इरवु स्मरण करना, याद करना  
To recollect.

अणुसंसरइ. आया० १, १, १, ४;

✓ अणुसज्ज धा० I (अनु+ज्ज) प्रसंग प्राप्त  
थये। प्रसंगप्राप्त होना. To arise  
as an incident or occasion  
अणुसज्जति प्रव० ७६५;

अणुसज्जणा. स्त्री० ( अनुपज्जना—अनुपङ्ग )  
अनुसरणु इरवु; अनुवर्तन इरवु ते.  
अनुसरण करना, अनुवर्तन करना Act of  
following. उक्त० २६, १७,

अणुसज्जित्थ. त्रि० ( अनुपक्कवत् ) डाण  
परंपराथी आद्यु आवेल कालपरंपरा से  
चला आया हुआ Coming down from



times immemorial “छविहा मणुस्सा  
अणुसज्जित्था पणुत्ता ” भग० ६, ७, ज०  
प० २, २५, २६;

अणुसद्धि स्त्री० ( अनुशास्ति ) सद्गुणनी  
स्तुति करवाने उपदेश आपणे ते, सद्गुणनी  
तारीक्ष करवी ते सद्गुण की स्तुति करने का  
उपदेश देना; सद्गुण की प्रशंसा करना  
Instruction to laud virtue,  
praising of virtue “आहरणतद्दे-  
से चउविहे पन्नत्ते, तंजहा-अणुसद्धि उवात्तमे  
पुच्छा णिस्सावयणे ” ठा० ४, ३, ( २ )

शिभाभणु, ललाभणु शिक्षा advice,  
exhortation भक्त० ५३, सत्था०  
१०८, ( ३ ) दोष दर्शावी शिक्षणु आपणु ते  
दोष दिखाकर शिक्षा देना instruction  
after pointing out faults “ ति-  
विहा अणुसद्धी पन्नत्ता तंजहा-अणुसद्धी  
पराणुसद्धी तदुभयाणुसद्धी ” ठा० ३, ३,

अणुसमयं. अ० ( अनुसमयम् ) सभय  
सभय; प्रतिसभय प्रतिसमय, समय समय  
Every time, from time to time  
“अणुसमयं अविरहियं गिरतर उववज्जति”  
भग० १, १, २४, १२, १६, ४१, १,  
क० गं० ५, ८२, प्रव० १२, १०२२;

अणुसय पु० ( अनुशय ) गर्व, अहंकार  
गर्व, अहंकार, घमंड Pride, conceit  
( २ ) पश्चात्ताप पश्चात्ताप, पछतावा re-  
pentance परह० १, १,

✓अणुसर धा० I ( अनु+सृ ) अनुसरतुं;  
पाछण पाछण आलतुं अनुसरण करना, पीछे  
२ चलना, अनुगामी होना To follow  
अणुसरद्. विशेष० १६१,

अणुसरित्ता स० कृ० सूय० १, ७, १६

अणुसरअ व० कृ० विशेष० १६७,

अणुसरत. व० कृ० गच्छा० ३०,

अणुसरमाण. व० कृ० सु० च० ३, ४,

अणुसरण न० ( अनुस्मरण ) स्मरण, चिंतवन  
स्मरण, चिंतवन, याद Meditation,  
remembrance विशेष० २६१;

अणुसरिअव्व त्रि० ( अनुसर्तव्य ) अनुसरवा  
योग्य अनुसरण करने योग्य Worthy of  
being followed महा० प० ३१,

अणुसरिया त्रि० ( अनुस्मर्तृ ) पाछणधी स्मरण  
करनार पीछे से स्मरण करने वाला ( One )  
who remembers, recollects or  
meditates upon विशेष० ६२;

अणुसार पुं० ( अनुसार ) पाछण जुनु ते;  
सरतुं पनावतु, अनुसरतुं पीछे जाना;  
समान बनाना, अनुसरण करना The act  
of following विशेष० १, नाया० १, ( २ )  
परतंत्र पणु परतन्त्रतो dependence.  
विशेष० १,

अणुसार पु० ( अनुस्वार ) अक्षर उपरतु  
टपटुं-भिन्दु, अक्षरने उच्चार करती वभते  
नाकमाथी अवाज नीडणे ते अनुस्वार, अक्षर  
के ऊपर की बिन्दी, जिसका उच्चारण नाक  
से होता है A dot over a letter  
representing a nasal sound  
नंदी० ३८, विशेष० ५०१,

अणुसारओ अ० ( अनुसारतस् ) अनुसारे,  
प्रमाणे अनुसार. In pursuance  
of, in accordance with पचा०  
२, ३६,

अणुसारि त्रि० ( अनुसारिन् ) अनुसरनार;  
अनुसरणु करनार अनुयायी, अनुकरण करने  
वाला ( One ) who follows, an  
imitator पचा० ३, ६, ओव० १६,

✓अणुसास धा० I ( अनु+शाम् ) शिक्षा  
करवी, सत्ता अलाववी; अंडुशमा शम्भु,  
शिभाभणु देवी शिक्षा देना, दट देना; गत्ता  
चलाना, अकुश में रखना; नीग देना To



punish; to curb; to instruct  
अणुसासंति उत्त० २७, १०;

अणुसासण सु० च० १, ३५७;

अणुसासयंति “जे मे गुरुसययमणुसांसयंति”  
दस० ६, १, १३;

अणुसासमि सु० च० २, ३०२;

अणुसासंमि. उत्त० २७, १०,

अणुसासिउं हे० कृ० सु० च० १, ३५०;

अणुसासंत. व० कृ० उत्त० १, ३८;

अणुसासण नं० ( अनुशासन ) शिक्षा; शि-  
क्षा, शासन-आगमनुं अनुसरणु जेम  
थाय तेम उपदेश आपवे ते शिक्षा, आगम  
का अनुसरण जिस प्रकार हो उस प्रकार  
उपदेश देना Spiritual instruction.  
“ अणुसासणमोवायं, दुक्कडस्स य चोयण ”  
उत्त० १, २८, ६, ११; सूय० १,  
२, १, ११, १, १५, ११; सम० ६;  
नाया० १३,

अणुसासिअ. त्रि० (अनुशासित) जेने शिष्या-  
भणु-शिक्षा आपवामा आवे ते जिसे शिक्षा  
दी जाय वह Instructed; advised  
admonished “ अणुसासिओ न कुप्पि-  
ज्जा, खंतिं सेवेज्ज पंडिण ” उत्त० १, ६, पंचा०  
६, १५;

अणुसासिज्जंत. व० कृ० त्रि० (अनुशास्यमान)  
गुरुथी शुल धार्यमा प्रेरणा करातो. गुरुद्वारा  
शुभकार्य मे प्रेरित किया हुआ. Being  
advised or instructed by a  
preceptor “ अणुसासिज्जतो सुत्सूसइ ”  
दस० ६, ४, १,

✓ अणुसिज्ज. घा० I. ( अनु+सृज् )  
अविच्छिन्नपणु रહેवुं, धायम रહેवु; टटवु.  
अविच्छिन्न पनसे रहना, कायम रहना, टिकना.  
To remain constantly  
अणुसिज्जिस्सइ भ० भग० २०, ८,

अणुसिद्ध त्रि० ( अनुशिष्ट ) शिक्षा-शिष्या-  
भणु आपेक्ष शिक्षित, समझाया हुआ.  
Instructed, admonished. “ तत्तेण  
अणुसिद्धा ते, अपदिस्सेण जाणथा ” सूय० १,  
३, ३, १४; परह० १, ५;

अणुसिद्धि. स्त्री० ( अनुशिष्टि ) हितकारक  
उपदेश, शिक्षा; बोध हितकारक उपदेश,  
शिक्षा, बोध Good instruction, just  
advice. “ अत्थधम्मगइं नच्चं, अणुसिद्धिं  
सुणेह मे ” उत्त० २०, १;

अणुसिण. त्रि० ( अनुष्ण ) उष्ण नहि ते,  
शीतण. ठंडा Not hot, cold. क० ग०  
१, ४६;

अणुसूय त्रि० ( अनुस्यूत ) पीतनी नेत्राये  
रहेल-लुं, भाड्ड वगेरे. दूसरे के आश्रय में  
रहा हुआ-जू, खटमल आदि. Closely  
attached to, woven with; e. g.  
lice, bugs etc सूय० २, ३, २७,

अणुसूयत्ता. न० ( अनुस्यूतत्व ) पीतनी  
शरीरने आश्रिते; पारङ्गी नेत्रा-अपेक्षा.  
दूसरे के शरीर का आश्रय करके, दूसरे की  
अपेक्षा Having close connection  
with or dependence upon other  
bodies, close connection with  
other bodies. सूय० २, ३, २४,

अणुसेदि स्त्री० ( अनुश्रेणि ) लघु श्रेणि, न्हाणी  
श्रेणि, -आकाशप्रदेशपंक्ति लघु श्रेणि, छोटी  
श्रेणि; आकाशप्रदेशपंक्ति A small  
straight line parallel with  
east-west-north-south and up  
and down, either way भग० ३४,  
१; ( २ ) श्रेणि-आकाशप्रदेशपंक्ति, तेने  
अलिमुप रहीने अनुसूलपणु गति करवी ते  
श्रेणि अर्थात् आकाशप्रदेशपंक्ति के अभि-  
मुख रहकर गति करना moving in  
a straight line parallel with

one of the three above-said directions भग० २५, ३;

**अणुसोय** न० ( अनुस्रोतस् ) नदी वगेरेने प्रवाह, वेग नदी वगैरह का प्रवाह; बहाव A current of a river etc ठा० ४, ४;  
—**चारि** त्रि० (—चारिन् ) नदीना प्रवाहने अनुसारे आलनार भाछला वगेरे नदी के प्रवाह के अनुसार चलने वाली मछलियों वगैरह moving along with the current of a river e g fish etc  
( २ ) अभिग्रहविशेषथी उपाश्रय पासेथी कमसर शिक्षा-गोयरी करनेर साधु. अभिग्रहविशेष से उपाश्रय के समीप से क्रमानुसार भिक्षा मागने वाला साधु ( a Sādhū ) starting to beg food from his lodging-place and proceeding to beg in the order of houses ठा० ४, ४,

**अणुसोयमाण**. व० कृ० त्रि० ( अनुशोचत् ) शोक करते शोक करता हुआ Grieving, lamenting सु० च० ५, ८०,

**अणुस्सरि**. त्रि० ( अनुसारिन् ) अनुसरनार अनुसरण करने वाला ( One ) that follows, following भक्त० १७१;

**अणुस्सियत्त** न० ( अनुत्सृतत्व ) उद्धताधने अलाव, अहंकारने अलाव, निरभिमानिपण्य उद्धतपने का-उहंङता का अभाव, अहकार का अभाव; निरभिमानोपन Absence of pride or conceit उक्त० २६, ४६;

**अणुस्सुअ** त्रि० ( अनुत्सुक ) उत्सुक नहि ते, उछांछलापण्यथी रहित जो उत्सुक नहीं हो वह; उच्छृंखलता रहित Free from restless curiosity or eagerness. सूय० १, ६, ३०,

**अणुस्सुय**. त्रि० ( अनुश्रुत ) अपधारेण अवधारित; निश्चित. Determined, fixed.

उक्त० ५, १३; ( २ ) सालभेलुं मुना हुआ. heard सूय० १, २, २, २५, ( ३ ). भारत आदि पुराण भारत आदि पुराण a mythological work like Bhārata etc. मूय० १, ३, ४, ४,

**अणुस्सुयत्त** न० ( अनुत्सुकत्व ) दिव्य अने मानुषिक कामभोगमां निःस्पृहता दिव्य और मानुषिक कामभोगों में निःस्पृहता. Freedom from desire for celestial or worldly enjoyments “ सुहसाण्ण अणुस्सुयत्त जणयति ” उक्त० २६, २६,

✓ **अणुहव** धा० I (—अनु+भव-भू ) अनुभवणु, भोगणु अनुभव करना; भोगना To experience

अणुहवति सूय० १, १, १, २,

अणुहवित्तु सं० कृ० सु० च० १, ३०६,

अणुहविउं हे० कृ० पंचा० २, ४३;

अणुहवंत व० कृ० सु० च० २, ५१६;

**अणुहव** पु० ( अनुभव ) अनुभव अनुभव. Experience पचा० ३, २५,—सिद्ध त्रि० (—सिद्ध ) अनुभवसिद्ध; अनुभवथी-अभ्यासथीसिद्ध थयेण अनुभवसिद्ध, अनुभव-अभ्यास से सिद्ध proved by experience पचा० ३, २५,

**अणुहविय** त्रि० ( अनुभूत ) अनुभव करेण अनुभव में आया हुआ Experienced. सु० च० १, १०५;

**अणुहवियच्च**. त्रि० ( अनुभवित्त्य ) अनुभव करेण योग्य अनुभव करने योग्य Worthy of being experienced. सु० च० ४, २४१;

**अणुहियासण** न० ( अन्वध्यामन ) अणुहियासण सहन करेण ते निश्चल होकर-अटल होकर सहन करना Act of suffering bravely and courageously. जं० प० **अणुह्रस्व**. त्रि० ( अनुभूत ) अनुभव करेण;

अनुभव किया हुआ. Experienced. विशेष १७०३;

✓ अणुहो. धा० I. (अनु+भू) अनुभवयुं; भोगयुं; वेद्यु. अनुभव करना, भोगना. To experience; to feel.

अणुहोति. पत्र० २;

अणुहन्ति भग० ११, ६;

अणुहोह. आ० नाया० ६,

अणुहोहि. आ० भग ६, ३३;

अणुहोहिह. भ० नाया० १;

अणूण. त्रि० (अन्यून) न्यून-ओछुं नहि ते कम न हो वह. Not less; not falling short of. क० प० १, ७६; पि० नि० २६८;

अणैदिय. त्रि० (अनिन्द्रिय) लुओ 'अणैदिय' शब्द देखो "अणैदिय" शब्द. Vide 'अणैदिय' पत्र० ३;

अणैक. त्रि० (अनेक) लुओ 'अणैक' शब्द देखो "अणैक" शब्द. Vide "अणैक" अ० १, १; उत्त० ३६, ४८,—विह. त्रि० (-विघ) नानाप्रकारता; अनेकविध. नाना प्रकारका; अनेक प्रकार का. of various kinds. उत्त० ३६, ४८,—सिद्ध पुं० (-सिद्ध) ओछे समय ओछे करता वधारे सिद्ध थाय ते. एक समय में एक से अधिक सिद्ध होना. attainment of Siddhahood by more than one at a time. अ० १, १;

अणैकावाइ त्रि० (अनेकवादिन्) धण् आत्माने माननार वादी बहुत आत्माएं मानने वाला वादी. (One) believing in the existence of many souls. अ० ८, १;

अणैग. त्रि० (अनेक) अनेक; ओछेथी वधारे; धण्. अनेक; एक से ज्यादाह; बहुत Many, more than one "अणैगवन्दाए" राय० ४३; "अणैगसाहप्पसाहविडिमा" ओव० ५०, "अणैगरायवरसहस्साणुआयमग्गे" जं०

प० ३, ५४, "अणैगभूयभावमविए वि अहं" अ० १, १; नाया० १; ५; ७; ८; १६; उत्त० ८, १८, भग० २, १; ५; ३, २; ५, २, ६, ६; ६, ३३; १८, १०; २०, २, १०, विशेष ३१; पि० नि० ५४; आया० १, १, १, ६; निर० १, १; दस० ५, २, ४३; जं० प० ५, ११५,—कोडि त्रि० (-कोटि) अनेक करोड़ जेनी पासे धन अथवा कुटुम्बियों की संख्या अनेक करोड़ है वह possessed of crores in riches or in family connections. "अणैगकोडिकुटुम्बियाइणणिवुयसुहा" नाया० १, ओव०—खंडी. स्त्री० (-खण्डी) जेभां नीकणवाने अनेक छिडि-पारीओ होय ओवी नगरी. ऐसी नगरी जिसमें निकलने की अनेक खिडकिया हों. & town with many exits. नाया० १८, विवा० १, ३;—गुण पु० (-गुण) अनेक-अनंत गुण अनेक-अनन्त गुण. many qualities or attributes विशेष १३०;—चिन्त न० (-चित्त) अनेक वणगाणामां-विचारमा लागेथु चित्त अनेकप्रकार के विचारों में लीन चित्त mind plunged in many thoughts. "अणैगचित्ते खलु अयं पुरिसे" आया० १, ३, २, ११३;—जम्म न० (-जन्मन्) अनंत भव; अनेक जन्म. many births पंचा० ८, ६,—जीव. त्रि० (-जीव) जेभा धण्—अनेक छव छे ते, पृथ्वी, पाणी, अग्नि वगेरे जिसमें अनेक जीव हैं वह, पृथ्वी, पानी, अग्नि आदि. possessed of or containing many sentient beings; e. g. earth, water, fire etc. "पुढवीचित्तमंतमक्खाया, अणैगजीवा पुढो सत्ता" दस० ४, भग० ११, १,—जोगं-

धर. पु० (—योगधर—योग—हीराश्रवादि लब्धिकलापसम्बन्ध., अनेकाश्च योगाश्च, तथा, तान् धारयन्तीति ) अनेक लब्धिना धरनार, अनेक लब्धिसपन्न अनेक लब्धि का धारक; अनेक-अनंत लब्धिसपन्न possessed of many spiritual attainments or powers. सूय० नि० १, १, १, १६,—भूत. त्रि० (—भूत ) विविध भाछदी, नानी भोटी अनेक भाछदी छोटी, बड़ी अनेक मछलिया. many kinds of fishes. परह० १, १, —दंत. त्रि० (—दन्त ) अनेक दांतवाणो; अत्रीस दांतवाणो अनेक दातो वाला, बत्तीस दातों वाला having many teeth, having thirty-two teeth. तडु० —द्व्वक्खंध पु० (—द्रव्यस्कन्ध ) सचित्त, अचित्त अनेक द्रव्यनु अनेक ओं रूद्ध, अथवा प्रयोग-व्यापारथी विशेषरूप ओं परिणामवडे परिणत-परिणाम प.भेद सचेतन अने अचेतन द्रव्य ते अनेक द्रव्यरूद्ध सचित्त, अचित्तरूप अनेक द्रव्यों का एक जीव के व्यापार से विशेषरूप एक परिणाम द्वारा परिणत सचेतन और अचेतन द्रव्य वह अनेकद्रव्यस्कन्ध, a body made up of sentient and insentient substances. विशे० ८६७,—पासंड पु० (—पाण्ड ) अनेक-नाना प्रकारना पाण्ड नाना प्रकार के पाखंड various kinds of false beliefs, “अण्णपासंडपरिग-हिय” परह० २, २,—वहुविविह्वीससा पु० (—वहुविविधवित्तसा) अनेक-ओं नतीय पणु व्यक्ति भेदनी अपेक्षाओ अणु-धणु-अति-विविध लिन लिन नतिनी अपेक्षाओ नाना प्रकारनु विसूसा-स्वभाव, अर्थात् ओं नतीय के अनेक नतीय धणु स्वभाव व्यक्ति अथवा भिन्न भिन्न जाति की अपेक्षा से नानाप्रकार

का स्वभाव manifoldness of natu- res जीवा० ३, —भव पु० (—भव ) अनेक लव. अनेक भव-जन्म many births. नाया० ५,—भागस्थ त्रि० (—भागस्थ ) अनेक भागभां वहेथी शक्य ओं अनेक भागों में जो विभाजित हो सके वह divisible into many parts भग० १४, ४,—भाव त्रि० (—भाव ) अनेक भाववाणु, अणु पर्यायवाणु. अनेक भावों वाला; बहुत पर्याय वाला. of many qualities, having many modifi- cations. भग० १४, ४,—रूव त्रि० (—रूप ) अनेक रूप-प्रकारनु, विविध प्रकारनु. अनेक प्रकार का of various kinds or forms ‘मुहु मुहुं मोहगुणे जयंतं, अण्णरूवा समणं चरंतं’ उक्त० ४, ११, आया० १, ६, २, ७, ६; भग० ६, ६, ७, ६,—रूवधुणा. स्त्री० (—रूपधुना ) वस्त्रे साधे पडिलेहवाथी अथवा त्रणुथी वधारे वभत वस्त्रने धुणाववाथी लागतो देप, पडिलेहणुना दोपनो ओं प्रकार एक ही समय में अनेक वस्त्रों का एक साथ पडिलेहण से जो दोष लगें वह; पडिलेहण के दोष का एक भेद fault incurred by examining many garments at a time one or by examining more than three times “एगा मोसा अण्णरूवधुणा” उक्त० २६, २७,—वरण पु० (—वर्ण ) अनेक वर्ण-रंग, धाणो, धोणो आदि अनेक रंग, काला, सफेद आदि. many colours, e g black, white etc भग० ६, ६,—वयणप्पहाण पु० (—वचनप्र- धान ) अनेक भाषातो नणुना; लुदी लुदी भाषाभा व्यवहार करनार अनेक भाषाओं का जानकार, भिन्न भिन्न भाषाओं में व्यवहार करने वाला ( one ) knowing many lan- guages. जं० ५०—वायामजोग्ग त्रि० (—व्यायामयोग्य ) अनेक प्रकारनी कस्तनने

योग्य. अनेक प्रकार की कसरत के योग्य.  
fit for many kinds of physical  
exercise. कण्ठ० ४, ६१;—वाल्. पुं०  
(-व्याल) अनेक-सभ्याबंध व्याल-हिंसक  
जंगली जानवर. many wild and  
carnivorous animals “अणोगवाल  
सयसंकणिजे यावि होत्था” नाया० २,—विह  
त्रि० ( -विध ) अनेक तरे-प्रकारनु;  
विविध प्रकारनु अनेक प्रकार का of  
various kinds सिद्धाणोगाविहा बुत्ता,  
तं मे कित्तयडं सुण ” उक्त० ३६, ४६; पञ्च०  
१;—सयसहस्सखुत्तो अ० (-शत-  
सहस्रकृत्वस्) अनेक लाखवार, लाखों बार  
lacs of times. नाया० १६; भग० १५, १;—साहु पुं०  
(-साधु) अनेक साधु-मुनियो अनेक साधु;  
बहुत से मुनि many Sādhus or  
ascetics “अणोगसाहुपूइय” दस० ५, २,  
४३;—सिद्ध पुं० (-सिद्ध) अनेक समये  
अनेक सिद्ध थाय ते एक समय में अनेक  
सिद्ध होना, many persons attaining  
to Siddhahood at a time. पञ्च०  
१; नंदी० २१;

अणोगंत त्रि० (अनेकान्त) अनिश्रय, अक्षान्त  
नहि ते. जो एकान्त न हो वह अर्थात् जो अनेक  
दृष्टि से देखा जा सकता है वह. Looking at  
from various points of view  
सूय० टी० २, ५, ५; सम०—वाय पु०  
(-वाद) वस्तुनुं अक्षान्त स्वरूप न मानवुं  
ते; अनंत धर्मवाणी वस्तुनुं अनेकान्तपणे  
प्रतिपादन करवुं ते वस्तु का एकान्त स्वरूप  
न मानना; अनन्त धर्म वाली वस्तु का अनेकान्त  
स्वरूप प्रतिपादन करना system of Jaina  
logic by which things can be  
explained from several different

points of view सूय० टी० २, ५, ५,  
सम०

अणोगंतिग त्रि० (अनेकान्तिक) साध्यने मुझी  
अन्यत्र रहेनार हेतु, व्यभिचारी हेतु. साध्य  
को छोड़कर अन्यत्र रहने वाला हेतु; व्यभिचारी  
हेतु. A middle term consistent  
also with the absence of the  
conclusion; a deviating middle  
term विशेष० २८३६;

अणोगंतिय न० (अनेकान्तिक) लुओ “अ-  
णोगंतिय” शब्द देखो “अणोगंतिय” शब्द.  
Vide “अणोगंतिय.” विशेष० ५६;

अणोगभूय त्रि० (अनेकभूत) अनेकरूप-  
प्रकार अनेकप्रकार; नानाप्रकार Having  
many forms; of many kinds.  
“अणोगभूयभावभविण् अहं” “अणोगभूय  
भावभविण् भवं” नाया० ५, भग० १४, ४;  
अणोगया त्रि० (अनेकता) अनेकपणुं.  
अनेकपना, अनेकत्व Plurality. दसा०  
१०, ३;

अणोगहा अ० (अनेकधा) अनेक प्रकारे;  
धली रीते, धले प्रकारे अनेकप्रकार से; बहुत  
तरह से In many ways. सु० च० १४,  
५०; प्रव० १०६२; पचा० ५, ३०;

अणोगाह न० (अनेकाहन्) धला दिवस  
बहुत से दिन. Many days निसी० १६,  
१७,

अणोयाउय त्रि० (अनैयायिक-न्यायेन चरति  
नैयायिकः, न नैयायिकोऽनैयायिकः) अन्यायी;  
असह-न्यायवृत्तिवाणो. अन्यायी. Unjust;  
not impartial. “अपडिपुणो अणे-  
याउए असंसुदे” सूय० २, २, ३२;

अणोलिप्ति त्रि० (अनीदृश) अनन्यसदृश,  
अद्वितीय; अनुपम अद्वितीय; अनुपम; सादृश्य  
रहित Matchless, incomparable.  
“सत्त्वं नञ्चा अणोलिप्ति” आया० १, ७, ५,



१; १, ७, २, २०४; सूय० १, ६, १,  
( २ ) अना जेवुं नहि; विक्षल्य विलक्षण;  
असमान. dissimilar; different,  
strange. सूय० १, १५, २;

**अणोवभूय** त्रि० (अनेवभूत) अेवी रीते नहि,  
अेवी रीते उर्भयांभ्या छे तेवी रीते नहि किन्तु-  
तेथी जुदी रीते: इस प्रकार नहीं, जिस रीति  
से कर्म बाधे हैं उस रीति से नहीं, किन्तु जो  
भिन्न रीति है वह. Of a different  
manner or description; of a  
manner different from that by  
which Karma is incurred. “अणे-

**वभूयं पि वेययं वेयंति** ” भग० ५, ५,  
**अणोस्सणा** स्त्री० (अनेपणा) प्रमाददि दोष  
सहित अेषणा—आहारदिगवेपणा प्रमाद  
आदि दोषों सहित एषणा—आहारदिगवेपणा  
Lack of carefulness in receiving  
food etc. सूय० १, १३, १७; नाया० ध०  
३, ( २ ) अेषणा—गवेपणातो अभाव  
एषणा का अभाव; असावधानी absence  
of carefulness; negligence in  
proper examination e. g. of  
alms received. “एस्सणमणेस्सणं आलो  
एइरत्ता ” उवा० १, ८६, आव० ४, ५,

**अणोसणिज्ज** त्रि० (अनेपणीय) साधुने न  
कहेपे तेवुं, कथपणु दोषथी दुष्ट थयेल, अने-  
पणिक; असुअतुं साधु के लेने योग्य न हो  
वैसा, किसी भी दोष से जो अप्राप्त हो चुका हो  
वह Not fit to be taken by Sādhu,  
contaminated. “पूयं अणोसणिज्ज च,  
तं विज्जं परिजाणिया ” सूय० १, ८, १४,  
प्रव० ७६०, ठा० ३, १; भग० ५, ५; ८, ६,  
१८, १०, नाया० ५, वेय० ४, १३;  
आया० २, १, १, १;

**अणोस्सणीय** त्रि० (अनेपणीय) जुअो ‘अणे-  
सणिज्ज’ शब्द देखो ‘अणोसणिज्ज’ शब्द

Vide “अणोसणिज्ज ” पंचा० १७, ३३,  
**अणोउया** स्त्री० (अनृतुका—न विद्यते ऋतुः—र-  
क्तरूपः शास्त्रप्रसिद्धो वा यस्या सा अनृतुका)  
ऋतुकाल वगैरनी स्त्री, २०२५ला नहि ऋतु-  
काल रहित स्त्री, रजस्वला धर्म से रहित स्त्री A  
woman not in menses, a woman  
before menstruation. ठा० ५, २,  
**अणोक्कंत** त्रि० (अनुपक्कन्त) निश्चरल  
करेल नहि निराकरण न किया हुआ  
Not settled, not decided आव०  
**अणोगाढ** त्रि० (अनवगाढ) अवगाहन नहि  
करेल; अवगाहेल नहि अवगाहन नहीं किया  
हुआ Not localised, not entered  
into भग० २५, ४;

**अणोग्घसिय** त्रि० (अनवघपित) नहि धसेल-  
भाणेल, राख वगैरेथी धसी साध न करेल  
बिना माजा हुआ, राख वगैरह से साफ न  
किया हुआ Not cleansed. “अणो-  
ग्घसियणिम्मलाए द्वायाए सततो चेव समणु-  
वद्धा ” जीवा० ३;

**अणोघाहअ** त्रि० (अनवघातित) न सेवेल;  
सेव्या विनानु असेवित. Unserviced  
वव० २, २३,

**अणोज्ज** त्रि० (अनवद्य) निर्दोष निर्दोष, दोष  
रहित. Faultless, pure. नाया० ८,

**अणोज्जा** स्त्री० (अनवद्या) महावीरस्वामिनी  
पुत्री महावीरस्वामी की पुत्री The  
daughter of Mahāvīra Svāmī  
कप्प० ५, १०३;

**अणोद्धवेमाण** व० क० त्रि० (अनुपद्रवत)  
उपद्रव न करेले उपद्रव न करता हुआ Not  
causing any trouble or injury.  
भग० ८, ७, १८, ८;

**अणोद्धंसिजमाण** व० क० त्रि० (अनुपध्व-  
स्यमान) माहात्म्यथी अष्ट न थेतो. माहात्म्य  
से अष्ट न होता हुआ. Not degenerating



or falling off from greatness. ओव०  
अणोम त्रि० (अनवम) मिथ्यादृष्टि, अविरति  
आदि उर्ध्वधना हेतु जेणे दूर ध्या छे ते;  
मिथ्यात्व, अविरति आदि उर्ध्वधनेतुरहित.  
मिथ्यात्व, अविरति आदि कर्मवन्व के कारणों  
से रहित Free from false belief,  
attachment etc आया० १, २, २, ११४;  
—दंसि पुं० (-दर्शिन्) न्यूनदर्शी नहि; पूर्ण-  
दृष्टिवाणो; उच्च ज्ञान, दर्शन अने चारित्रवाणो  
पूर्णदर्शी; अन्यूनदर्शी; उच्चप्रकार के ज्ञान,  
दर्शन और चारित्र वाला possessed of  
perfect knowledge faith and  
conduct “अतरे पयासु अणोमदंसी  
णिसणो पावेहिं कम्मेहिं कोहाइमाणं हणिया-  
य वीरे” आया० १, २, २, ११४;

अणोमाणतर त्रि० (अनवमानतर) अतिशय  
धुटा धुटा; अति संकीर्ण-व्याप्त नहि ते विल्कुल  
पृथक् पृथक्; बहुत फैला हुआ Extremely  
scattered भग० १३, ४;

अणोरपार त्रि० (अनर्वाक्पार) आरपार  
वगइनु, आरपाररहित, विस्तीर्ण. विस्तृत,  
विस्तीर्ण; अपार रहित Boundless,  
extensive “आणोरपारं आगासं चैव  
निरालंब” परह० १, ३; सूय० २, ६, ४६,  
पंचा० १५, ४२, भत्त० १६५,

अणोवणिहिआ. स्त्री० (अनौपनिधिकी)  
अेअ वस्तुमां-तेना दृष्टिपत अशोमां पौर्वा-  
पर्य भाव-अनुक्रमनी धटना, द्रव्य आनुपूर्वीना  
अेअ प्रकार. एक ही वस्तु में या उसके कल्पित  
अंशों में पूर्वापररूप अनुक्रम की रचना, द्रव्यानु  
पूर्वी का एक भेद. Due arrangement  
of the parts of a thing or sub-  
stance as conceived. अणुजो० ७२;

अणोवदग्ग. त्रि० (अनवदग्ग) अन्-नहि  
अवदग्ग-अंत; अत वगइनु-अनंत अत रहित;  
अनंत; अन अर्थात् नहीं है अवदग्ग अर्थात् अन्त

जिसका वह Endless, infinite. सूय०  
१, १२, ६;

अणोवम त्रि० (अनुपम) अनुपम-उपमा  
रहित; तुलना रहित उपमा रहित, अतुलनीय,  
Matchless, incomparable “अतुल  
सुहसागरगया अच्चावाह अणोवमं पत्ता”  
ओव० सम० ६, नाया० ६; पन्न० २; जं०  
प० ३, ५४,—दंसि पुं० (-दर्शिन्) उच्च  
ज्ञान, दर्शन अने चारित्रवान् उच्च ज्ञान, दर्शन  
और चारित्र वाला (one) having  
high knowledge, vision, and  
conduct “अरतेपयासु अणोवमदंसी  
णिसणो पावेहि” आया० १, २, ३, ११४;  
—सिरीअ त्रि० (-श्रीक) अनुपम शोभा  
वाणु. अनुपम-उपमा रहित-अद्वितीय श्री-शोभा  
वाला one having matchless beau-  
ty “अणोवमसिरीआ दासीदासपरिवुडा”  
नाया० ८,—सुह त्रि० (-सुख) अतुल सुख  
वाणु. मोक्षसुख having highest, eter-  
nal bliss. “आणमणोवमसुहसुवगयाणं”  
सम० १;

अणोवमा स्त्री० (अनुपमा) सुखी-मिठाईनी  
अेअ अत मिठाई की एक जाति. A kind of  
sweetmeats पन्न० १७;

अणोवलेवय त्रि० (अनुपलेपक) उर्ध्वध-  
न उर्ध्वधनथी रहित कर्मलेप-कर्मबंधन से रहित.  
Free from Karmas. परह० १, २,

अणोवसंखा स्त्री० (अनुपसंख्या) अन्-नहि  
उपसंख्या-ज्ञान; अज्ञान; अविद्या अज्ञान;  
अविद्या. Ignorance, absence of  
knowledge. “अणोवसंखाइति ते उदाहू,  
अट्टे सउभासइ अम्ह एवं” सूय० १, १२, ४,

अणोवहिअ-य त्रि० (अनुपधिक) उपाधि  
रहित; द्रव्यथी उपाधि-सुवर्णादि धन, भावथी  
उपाधि भाया उपाय वगेरे, तेथी रहित. उपाधि  
से रहित; द्रव्यरूप अर्थात् धनधान्यादिरूप

और भावरूप अर्थात् मायाकषायादिरूप उपाधि से रहित Free from sources of trouble such as wealth, passions etc आया० १, ४, १, १२६,

अणोवाहणय त्रि० (अनुपानत्क) जेडा-पग२भा रहित. जेडा न पड़ेनार विनाजूते का, जूतान पहिने वाला Bare-footed भग० १, ६, अणोसिअ त्रि० (अनुपित) निवास नहि धरेल, अव्यवस्थित. निवास न किया हुआ, अव्यवस्थित. Not lodged, not settled "अणोसिएणतकरिंति णच्चा" सूय० १, १४, ४, अणोहंतर त्रि० (अनोघन्तर) जे प्रकारना ओधने नहि तरनार, १ द्रव्य ओध-नदीपूर २ भाव ओध-आठ प्रकारनां कर्म अथवा संसार, तेने न तरनार द्रव्य, भावरूप ओघ से नहीं तिरने वाला नदी आदि का पूर द्रव्यओघ और कर्मरूप संसार भावओघ कहलाता है. Not able to cross the stream of a river or that of Karmas "अणोहंतराएण यय ओहतरि-त्तए" आया० १, २, ३, ८०,

अणोहट्टअ-ट्टिअ. त्रि० (अनपघट्टक-ट्टिका-अविद्यमानोपघट्टको यदच्छया प्रवर्तमानस्य हस्तग्राहादिना निवर्त्तको यस्य तत्तथा ) गमे तेम वर्ततां जतां जेने छथ पडडी अटकावनार-रोदनार डोर्छ नथी ते मन-माना वर्तन करते हुए भी जिसका हाथ पकड़कर रोकने वाला कोई न हो वह Having no body to restrain in spite of wanton conduct. 'तवेण सा सुभद्दा अज्जा अणोहट्टिआ अणिवारिया सच्छदमई' नाया० १६, १८, विवा० २, नाया० ध० अणोहिया. स्त्री० (अनोघिका) जेनी अंदर पाणीनु डोर्छ पणु स्थान नथी जेवी अटवी ऐसा जंगल जिसमें पानी का एक भी स्थान नहीं हो. A forest having no place

containing water "एगं महं अगामियं अणोहियं छिन्नावायं दीहमद्धं" भग० १५, १; अरण न० (अर्ण) जल, पाणी पानी, जल Water "अरणवंसि महोहसि" उक्त० ५, १; अरण न० (अन्न) भात वगेरे धान्य, अनाज. चावल वगेरह धान्य, अन्न Corn, like rice etc नाया० १४, सूय० १, ४, २, ६; (२) भोजन; भोदक वगेरे भोराक भोजन; लड्डु आदि की खुराक food e g. sweet balls etc "अरण पभूय भवयाणमेयं" उक्त० १२, १०, (३) भिक्षा; गोथरी भिक्षा begging of food etc "अन्नस्स अट्टा इह मागग्रोपि" उक्त० १२, ६, पंचा० १६, १०,—गिलायक पु० (—ग्लायक) अन्न विना जलानि पामनार साधु; लुभ्या न रहेवाथी अथवा अलिग्रहविशेषथी सवारभाज आहार डरेनार साधु विना अन्न के ग्लानि पाने वाला साधु, भूखे न रहा जाने से अथवा अभिग्रहविशेष में सुबह ही आहार करने वाला साधु an ascetic experiencing trouble in fasting, a Sādhu who takes food in the morning, being unable to observe fast "जावइयंचणं भंते ! अरणगिलायए समये निग्गथे कम्मं णिज्जेरेति" भग० १६, ४, परह० २, १; ओव०—जंभग. पु० स्त्री० (—जृ-म्भक) जलडा देवतानी दस जलमाना पड़ेवी जल जम्भका देवों की दस जातियों में से पहिली जाति first of the ten kinds of Jambhaka gods "अरणजम्भा पाणजंभका" भग० १४, ८,—पाण. न० (—पान) अन्नपाणी अन्नजल food and water. नाया० १६,—पुरण न० (—पुरय) अनुडंपालावे अन्न-भोजन आपवाथी यतु पुण्य, अन्नपुण्य दयाभाव ने भोजन देने के कारण जो पुण्य हो वह. oliginous

merit acquired by giving food through charity. ण० ६;—**प्पमत्त**. त्रि० (—प्रमत्त ) भावानो गृद्धि-लोक्षपी. भोजन का लोलुपी. greedy of food. “अरण्यप्पमत्ते धणमेसमाणे” उक्त० १४, १४; —**भोग**. पुं० (—भोग ) भाद्यआदि भोग्य पदार्थ. खाद्य आदि भोग्य पदार्थ. materials of enjoyment consisting of food etc. “अरण्यभोगेहिं लेण भोगेहिं ” ओव०—**विहि**. पुं० (—विधि ) अन्न उत्पन्न करवानी, शोधवानी अने रांधवानी इणा. अन्न उत्पन्न करने की, साफ करने की और उसे सिमाने की कला. the art of producing, cleansing, or purifying and cooking food ओव० ४०; जं० प० २, नाया० १;

**अरण्य** त्रि० (अन्य) पोताथी लिन्न; पोता शिवाय; श्रीलुं, पृथक्; लुटुं. अपने से भिन्न; अपने सिवाय; दूसरा; भिन्न. Another; different. “नो अरण्यदेवे नो अरण्येहिं देवाणं देवीओ अभि जुंजिय” भग० २, १; ५; ३, ४, ५, ४; १५, १; १६, ६; १८, २; २०, १०; नाया० १; ५; ७; ८; १३; १४; १५; १६, ओव० १३; सूय० १, १, २, १, आया० १, १, १, ४; वव० १, २३; ५, ११, ८, १२, जं० प० १, १४; विशेष० ३४; ४६६; दसा० ६, ४,—**उत्त**. त्रि० (—उक्त) अन्य-अविवेदिनोअे इहेल-इथन इरेल अविवेकी जनों द्वारा कथित-कहा हुआ. mentioned by others; e.g. by undiscerning men. ओव०—**गण**. पु० (—गण) अन्य गच्छ अन्य गच्छ. another order of saints. वव० ६, २०;—**गुण**. त्रि० (—गुण-चैतन्या-दन्त्ये गुणा येषां तान्यन्यगुणानि ) अचेतन; ०८३ अजीव; जड. inanimate; insentient. “पंचणहं संजोए अरण्यगुणानं च चैवणाइ गुणो ” सूय० नि० १, १, १, ७;

—**दत्तहर** पुं० (—दत्तहर) श्रीलुंअे अक्षीश इरेली होय तेने रस्तामां छुटनार. दूसरे ने जो इनाम दिया हो उसे रास्ते में लूटने वाला ( one ) robbing a person on the road, of a gift received by him “अरण्यदत्तहरे तेणे, माई कन्नु हरे सवे” उक्त० ७, ५;—**धम्मिय**. पुं० (—धार्मिक) गृहस्थ; गृहस्थाश्रमी गृहस्थ; गृहस्थाश्रमी. a householder. ण० ३, ४;—**परिभोग** पुं० (—परिभोग) अन्य-अन्नपाणी शिवाय आदिम, स्वादिम आदिनो उपभोग अन्नजल के सिवाय खादिम, स्वादिम आदि का उपभोग. enjoyment of objects other than food and water. पंचा० ५, ३५;—**प्पमत्त** त्रि० (—प्रमत्त) अन्य-सगा संयन्धीमां आसक्त थयेल अन्य-नातेदारों में आसक्त. attached to others viz relatives “अरण्यप्पमत्ते धणमेसमाणे, पप्पोति मच्चुं पुरिसो जं च” उक्त० १४, १४,—**लिंग**. न० (—लिंग) अन्यलिंग, जैनतर लिंग-वेष. अन्य लिंग; जैनतर लिंग-वेष a non-Jaina characteristic mark भग० २५, ६; ७, सम० प० २३१;—**लिंगसिद्ध**. पुं० (—लिंगसिद्ध) अन्य-जैनशिवायना लिंगे-वेषे सिद्ध थाय ते अन्यलिंग-जैनलिंग के सिवाय अर्थात् अन्यधर्म से जो सिद्ध हो वह. a non-Jaina who has attained to Siddhahood. पन्न० १;—**ववएस** पुं० (—व्यपदेश) इधं वस्तु पोतानी होय छता ते श्रीलुंनी भालेदिनी छे अम इहेवुं ते; साधु ओहरवा आव्या होय त्तारे पोतानी वस्तुने श्रीलुंनो व्यपदेश इरेवाधी साधु न ल्ये तेथी लागतो भारमा प्रतनो श्रीलुंने अतिथार. किसी वस्तु के अपनी होने पर भी यह कहना कि वह दूसरे की है; साधु भिक्षार्थ आये हो तब अपनी वस्तु

को दूसरे का व्यपदेश करना जिससे साधु न लें इससे जो बारहवें व्रत का तीसरा अतीचार लगता है वह attributing falsely to another the ownership of a thing belonging to oneself; the third violation of the twelfth vow viz telling this kind of lie to an ascetic. प्रव० २८७; —संभोद्ध्र. त्रि० (—साम्भोगिक) अन्य भीष्म गच्छना साधुसाथे आहारपाणीना व्यवहारवाणे। अन्य गच्छ के साधुओं के साथ अन्नजल का व्यवहार रखने वाला one who keeps relation as regards food and drink with a Sādhu of another order वव० १, ३७,

अरण्यउत्थिय पु० (अन्ययूथिक—जैनयूथादन्य-द्यूथं सङ्घान्तरं तीर्थान्तरं तदस्ति येषां तेऽन्य-यूथिकाः) तीर्थान्तरीय, जैनैतर, जैनशिवाय-ना मतान्तर—शाक्य, चरक, परिव्राजक, कपिल, आजीवक, वृद्ध, श्रावक आदि। One belonging to a non-Jaina creed such as, Śākya, Charaka, Parivrājaka, Kapila, Ājīvaka, Vṛiddha-śrāvaka etc “ तस्सयं गुणसिलयस्स चेइयस्स अदूरसामंते वहवे अरण्यउत्थिया परिवसंति ” भग० ७, १०, “अरण्यउत्थियाणं भंते ! एवमाइस्संति ..... एगेण समणं दो आउयाइं पकरेइ ” भग० १, ६, “ अरण्यउत्थियाणं भंते ! एवमाइस्संति ..... चलमाणे, अज्झिप जाव निज्जरिज्ज-माणे अनिज्जिएणे ” भग० १, १०; “ अरण्य उत्थियाणं. .... एगे जीवे एगेणं समणं दो किरियाओ पकरेइ ” भग० १, १०; “ अरण्य-उत्थियाणं भंते ! ... .. कहं समणायं निगं-

थायं किरिया कजंति ” ठा० ३, २; “अरण्यउत्थि-याणं भंते ! ..... अरण्ये जीवे अरण्ये जीवाया ” भग० १७, २; २, १; ५, ५, २, ७, १, १५, १; १८, ७; नाया० ११, आया० २, १, १, ४; ओव० उवा० १; सम० १, १२, ३४, निसी० ३, ४; १२, १६,—देवय न० (—देवत) अन्यभतियो-अे मानेल हरिहरादि देव. अन्यमतियों द्वारा मान्य हरिहरादि देव a god of non-Jaina creeds e g. Hari, Hara etc उवा० १, ५८,—परिग्राहिय. त्रि० (—परिगृहीत) अन्य तीर्थियों अे ग्रहण करेले; अन्यभतियों अे पोतानु करी लीधेल अन्य धर्मावलम्बियों द्वारा ग्रहण किया हुआ; जिसे अन्यमतियों ने अपना कर लिया हो वह. adopted by followers of non-Jaina creeds. उवा० १, ५८;

अरण्यओ. अ० (अन्यतस्) भीष्मे स्थणे दूसरे स्थान पर At another place; else-where “ नहु दाहामि ते भिक्षं, भिक्षु जायाहि अरण्यओ ” उत० २५, ६; नाया० १;

अरण्यतर. त्रि० (अन्यतर) लुओ “अरण्यर” शब्द देखो ‘अरण्यर’ शब्द Vide “अरण्य-यर.” पञ्च० २८, ओव० १७, नाया० १४,

अरण्यतिथिय. पु० (अन्यतीर्थिक) अन्य-भति; अन्यदर्शनी; जैनैतर दर्शनवाणे। अन्यमतावलम्बी; जैनैतर दर्शन वाला A non-Jaina सम० २६,—पवत्ताणुओग. पु० (—प्रवृत्तानुयोग) कपिलादि के प्रवृत्तविशु शास्त्र, पापश्रुतविशेष. कपिलादिकों का प्रवृत्तया हुआ शास्त्र; पापश्रुतविशेष a scripture taught by non Jainas like Kapila etc, a variety of tainted scripture. सम० २६;

अरण्यतभावणा. स्त्री० (अन्यत्वभावना) देहथी आत्मा लुओ छे अेभ चित्तयन करवुं-लायना लायनी ने. देह मे आत्मा भिन्न है इम

प्रकार की भावना करना Meditation upon the non-identity of the soul with the body. प्रव० ५८०,

अरण्य पु० (अनर्थ) अर्थही विपरीत; अनर्थ. अर्थ से विपरीत; अनर्थ. Wrong interpretation, false meaning. भग० ७, २, विशेष० २५;

अरण्य त्रि० (अन्यस्त) शेष नहि. न्यास न किया हुआ, निक्षेप न किया हुआ. Not placed; not deposited. विशेष० ६१६;

अरण्य. अ० (अन्यत्र) भीजे अंध; शिवाय; वहाँ दूसरे स्थान पर, सिवाय, छोड़कर. Elsewhere; barring, excepting “अरण्यकथं” विवा० २; प्रव० ८६२, अरण्यकथं मरणं अकुर्वमाणे ” अणुजो० २७, सू० प० २०, पन्न० ११; नाया० ५;—अणाभोग पु० (अनाभोग) अनाभोग-अज्ञान-पणा शिवाय अनाभोग-अज्ञान के सिवाय Excepting ignorance or unconsciousness “अरण्यथाणाभोगेण” आव० ६, २;—गय त्रि० (गत) अन्यत्र-भीजे स्थाने गये. दूसरे स्थान को गया हुआ gone elsewhere. भग० ६, ६;

अरण्य. पु० (अन्वर्थ-अनुगतोऽर्थोऽन्वर्थ.) व्युत्पत्तिने अनुसारे यथा अर्थ विना शब्द, जेभा इन्द्रो अर्थ नथी जेवा डोई आण्डनु इन्द्र नाम पाउथुं ते. व्युत्पत्ति के अनुसार होने वाले अर्थ से शून्य शब्द; जैसे कि किसी साधारण बालक का नाम ‘इन्द्र’ रखा गया तो वहाँ इन्द्र शब्द का वह अर्थ घटित नहीं होता जो उस शब्द का वास्तविक अर्थ है. A word not bearing out its etymological significance; e. g. the name Indra given to a child not possessing the connotation

of the word Indra. पंचा० १२, १८, —जुय. त्रि० (—युत) व्युत्पत्ति अनुसार अर्थयुक्त. व्युत्पत्ति के अनुसार अर्थ वाला. bearing a meaning bearing out the etymological sense. पंचा० १६, ३७; —जोग. पु० (—योग) शब्द अने तेना अर्थो अनुगत-व्युत्पत्ति अनुसारो संबन्ध शब्द और उसके अर्थ का व्युत्पत्ति के अनुसार सम्बन्ध the etymological relation of a word and its meaning. पंचा० १२, १८;

अरण्यदा अ० (अन्यदा) भीजे डोई डोई. और किसी समय में At some other time, at another time भग० १६, ५;

अरण्यमरण त्रि० (अन्योन्य) अन्योन्य; परस्पर; एक दूसरे का. Mutual “अरण्यमरणमणुरत्तया अरण्यमरणमणुवया” नाया० २; “अरण्यमरणं खिज्जमाणो विव” राय० “अरण्यमरणं करेमाणे पारं चिए” ठा० ३, ४; जं० प० ३, ५६; “अरण्यमरणमणुरत्ता, अरण्यमरणं हिएसियो” उक्त० १३, ५, अणुजो० ६७, भग० १, ८, २, ५; ३, १; ५, २, ६, ७, ८; ८, ६; ११; १०; १५, १; १८, ७; नाया० १; ३; ५; ८; १३; १४; १६; दसा० १०, १, वव० ४, ५; ६, ८, ९; ५, ६; ७, १५, ओव० २७, ३६, निसी० ४, ६६; १४, ५, —अवभास. पु० (अवभास) अन्योन्य अवभास करेवा ते; जेभा भीजे गुण्डार डोई ते, जेभा डे ५×५=२५ अन्योन्य अवभास का करमा, एक दूसरे का गुणाकार करना. जैसे ५×५=२५; multiplication of a by the same number e. g. five into five. अणुजो० ६७, —ओगाढ त्रि० (अवगाढ) परस्पर क्षीरनीरनी पेडे अवगाढीने रहेल. आपस में मिल मिलकर दूधपानी के समान मिलकर रहा हुआ. remaining in mutual contact like milk and wa-



ter भग० १, ६, —किरिया. स्त्री० (—क्रिया) स्नायुमस्नायुमे ऐक्यं भीमना पण पुनवा, पण योणवा, मर्दन करुं वगेरे परस्पर में एक दूसरे के पैर दबाना, मर्दन करना आदि. reciprocal action, e. g. massaging feet mutually etc “से भिक्खु वा भिक्खुणी वा अरण्यमरणकिरियं अज्झत्थियं संसेइयं णो तं साइए णो तं णियमे से अरण्यमरणो पाए आमजेज्ज वा पमजेज्ज वा” आया० २, १३, १७२, —गंठिय. त्रि० (—प्रथित) ५२-२५२ गांठिणी गुंथेज्जुं, ५२२५२ गांठवाणु परस्पर में गांठ से गुंथा हुआ, परस्पर गठान वाला interwoven with knots भग० ५, ३, —गुरुयत्ता स्त्री० (—गुरुकता) ५२२५२ गुंथवाथी थथेल विस्तीर्णता, परस्पर में गुंथने से जो विस्तीर्णता हुई हो वह breadth got by intertwining one thing with another. भग० ५, ३, —घट्टता. स्त्री० (—घटता) ५२२५२ समुदायरचना; ५२२५२ संयुध परस्पर संबन्ध; परस्पर सामुदायिक रचना. mutual formation of society; interrelation “अन्नमन्नसियेहपडिबद्धा अरण्यमरणघट्टताए” जीवा० ३; भग० १, ६; —पुट्ट त्रि० (—रुष्ट) ऐक्यं भीमने अडेल-२५३३ डरेल एक दूसरे को छुआ हुआ. in reciprocal contact भग० १, ६; —वद्ध त्रि० (—बद्ध) ५२२५२ गाढतर आ-धेल, जेम छवसाथे डर्म अने डर्मसाथे छव भ्रदेश. परस्पर में बंधा हुआ, जिसप्रकार जीव के साथ कर्म और कर्म के साथ जीवप्रदेश in close interrelation, e. g. the soul with Karma and vice versa भग० १, ६, —भारियत्ता स्त्री० (—भारिकता—अन्योन्यस्य यो यो भार स विद्यते यत्र तद्भाभस्तत्तथा) ऐक्यं भीमना भार-भोजवाणुं. एक दूसरे का भार-बोझा

वाला state of bearing reciprocal burden भग० ५, ३, —अणुगय. त्रि० (—अनुगत) ऐक्यं भीमने अनुगयपणे वणगेल एक दूसरे से अनुकूलता पूर्वक मिला हुआ. united in mutual interest नंदी०—मसंपत्त त्रि० (—असम्प्राप्त) ऐक्यं भीमने प्राप्त थथेल नहि, ५२२५२ ऐक्यं भीमने अडेल नहि एक दूसरे को प्राप्त नहीं हुआ हो वह, परस्पर एक दूसरे से नहीं छुआ हुआ. not in mutual contact जीवा० ३; —समाउत्त त्रि० (—समायुक्त) ५२२५२ संयुध युक्त. पारस्परिक सम्बन्ध युक्त related mutually भग० १, ६, —सियेहपडि-वद्ध त्रि० (—स्नेहप्रतिबद्ध) अन्योन्य स्नेहयु-क्त, ऐक्यं भीमसाथे वणगेल—ऐक्ये सुधी डे ऐक्यं आले तो तेनी साथे भीमने पणु आलपुंन ५३ अन्योन्यस्नेहवद्ध, एक दूसरे के साथ स्नेह से इसप्रकार बंधे हुए कि एक चले तो दूसरे को भी चलनाही पड़े bound by close ties of mutual love, so much, so that if one walks the other also must walk in company जीवा० ३, भग० १, ६, अरण्यकर. त्रि० (आश्रवकर) आश्रव डन्नार आश्रव करने वाला. (One) who opens a door to the influx of Karma भग० २५, ७, अरण्यकर त्रि० (अन्यतर) गमे ते ऐक्यं, अ-नेरुं; भेमानु डे अनेडमांतुं डेअडि ऐक्यं चाहे जो एक, दो में से या अनेकों में से कोई एक One of two or more “अरण्यकरेषु अभियो-गेसु देवलोगेसु देवत्ताणु उववज्जइ” निमी० ४, २१; १०, ४, १२, १; २; १३, १२, १५, २५; ४०; १७, ३३, भग० १, १, ६; २, १; ६; ३, ४; ५, ६; ६, ५; ७, १, ७; ८, ३, १६, ६; २५, ६; नाया० १; १४; १५; १६; वेय० ४, १३, २६; ५, १३; नम० २२; आना० १, १; १, २; आंव०



३४; दसा० ६, ४; १०, ४; पञ्च० २२;  
वव० १, ११, ३७; १०, ११; कप्प० २, १७;  
—कुल. न० (—कुल) गमे ते ओक कुल. दूसरा  
कुल—वंश another family; any one  
family दसा० १०, ४;

अरण्यरग त्रि० (अन्यतर-क) लुओ। “अरण्य  
रग” शब्द. देखो “अरण्यरग” शब्द Vide  
“अरण्यरग” दसा० ६, ४;

अरण्यया अ० (अन्यदा) ड्यारेक, डोर्ध ओक सभये;  
डोर्ध वपते किसी एक समय मे, कभी. At  
some time or other. नाया० १; २,  
५, १६, भग० २, १; ३, १; ५, ४; विवा० १;

अरण्ययाकयाइं. अ० (अन्यदाकदाचित्)  
डोर्ध ओक वपते; डोर्ध ओक सभये; गमेते  
ओक वपते; अनिर्धारित सभये किसी एक  
समय में, चाहे जिस एक समय में, अनिश्चित  
समय मे. At some time or other;  
at an unfixed time. नाया० ५; ८;  
१२; १३; १४; १६, भग० ६, ३१; १५, १;

अरण्यव. पुं० (अरण्यव) समुद्र. (२) संसार.  
समुद्र. संसार Ocean. worldly ocean.  
“अरण्यवसि महोहंसि, एगे तिरणे दुरुत्तरे”  
उत्त० ५, १; विशेष० ११२७;

अरण्यव त्रि० (अरण्यवत्) २७ मुं लोकोत्तर  
मुहूर्त. २७ वाँ लोकोत्तर मुहूर्त The  
twenty-seventh Lokottara  
Muhūrta जं० प०

अरण्यवालय पुं० (अरण्यपालक) ओ नामने  
ओक अन्यतीर्थिक; डालोदायी धत्यादिमाने  
ओक. एक अन्यधर्मानुयायी का नाम,  
कालोदायी इत्यादियों में से एक. A non-  
Jaina of that name, one among  
Kālodāyī and others. भग० ७, ६;

अरण्यहा. अ० (अन्यथा) अन्यथा; अगर;  
आओ रीते, नहि तो; नहितर अन्यथा; दूसरी  
तरह से, नही तो, या. If not, otherwise;

in another way. “अरण्यहा को  
मुवेहमाणे” आया० १, ५, ३, १५४; नाया  
६; १६; पंचा० १४, २२,—भाव. पुं  
(—भाव) विपरीत भाव; सत्यने असत्य भा  
नयुं ते विपरीत भाव, सत्य को असत्य मानना  
regarding truth as untruth  
भग० ३, ६;—वाइ त्रि० (—वादिन्  
अन्यथावादी-असत्य ओलनार. अन्यथावादी  
असत्य बोलने वाला a liar; untruthful  
नाया० ३; भग० १६, ६;

अरण्यअ. त्रि० (अज्ञात) नहि ज्ञाओल;  
अपरिचित. न जाना हुआ; अपरिचित. Not  
known; unacquainted. ओष०  
नि० ६६;

अरण्यइह. त्रि० (अन्वाविष्ट) दैवताना  
आवेशथी व्याप्त थयेल-परवश थयेल देवता  
के आवेश से जो व्याप्त हो-परवश हुआ हो  
वह. Possessed, influenced, by a  
spirit or deity. भग० १५, १; १८, ६;

अरण्यउंछ. पुं० (अज्ञातोच्छ) लुओ। “अरण्य-  
यउंछ” शब्द. देखो. “अरण्ययउंछ”  
शब्द. Vide “अरण्ययउंछ”. दसा० ७, १;

अरण्यएसि. पुं० (अज्ञातैषिन्) जति, विद्वता  
आदिथी अज्ञात थयने आहारादिनी अपण्णा  
करनार, पोतानुं भाडात्म्य न ज्ञाता होयतेवा  
कुलमां भिक्षा करनार साधु. जाति, विद्वत्ता आदि  
न जताकर आहारादि की एषणा करने  
वाला, अपने महात्म को जो न जानता हो ऐसे कुल  
में भिक्षा ग्रहण करने वाला साधु An asce-  
tic begging alms from families  
ignorant of his greatness  
and learning. “अरण्यएसी परिव्वए जेस  
भिक्षू” उत्त० १५, १; उत्त० २, ३६;

अरण्यरण. न० (अज्ञान) अज्ञान, अज्ञानपणुं;  
विपरीत बुद्धि; विपर्यास अज्ञान; अज्ञानपन;  
विपरीत बुद्धि. Ignorance, nescience.

“अरण्याणो तिविहे पण्यते तंजहा-देस  
रण्याणे सब्बरण्याणे भावरण्याणे ” ठा० ३,  
३, भग० ५, ७, ८, १, २; ६, ३१; २६,  
१; नाया० ५; ओव० २०, विशेष० १०७, आव०  
४, ८;—किरिया स्त्री० (—क्रिया ) अज्ञान  
पणुं करवाभां आवती येष्टाथी लागती क्रिया-  
धर्मबंध, अज्ञानक्रियानो ओंके भेद अज्ञानपूर्ण  
चेष्टा से होने वाला कर्मबंध, अज्ञानक्रिया  
का एक भेद. Karma arising from  
actions done in ignorance,  
a variety of Ajñāna Kriyā  
ठा० ३, ३;—णिव्वत्ति स्त्री० (—निर्वृत्ति )  
अज्ञाननी उत्पत्ति, मति अज्ञान, श्रुत अज्ञान  
अने विभंग ओ त्रणु अज्ञाननी निष्पत्ति  
अज्ञान की उत्पत्ति; कुमति, कुश्रुत और विभंग  
इन तीनों अज्ञानों की निष्पत्ति rise of  
the three varieties of ignorance  
viz Mati, Śruta and Vibhanga  
ignorance “कइ विहाणं भंते ! अरण्याण-  
णिव्वत्ति परणत्ता ? गोयमा ! तिविहा अरण्या-  
णणिव्वत्ति परणत्ता, तंजहा-मइअरण्याण-  
णिव्वत्ति सुयअरण्याणणिव्वत्ति विभंगरण्याण  
णिव्वत्ति ” भग० १६, ८;—दोष पुं० (—दोष )  
कुशाखना संस्कारथी हिंसादि कृत्यामां धर्म  
भुद्धि राखवाथी लागतो ओंके दोष, रौद्रध्यानतु  
त्रीणु लक्षण कुशाख के संस्कार से हिंसा-  
दिभूत्यों में धर्मभुद्धि लाने से जो दोष लगता  
है वह, रौद्रध्यान का तीसरा लक्षण a sin  
arising from killing for religious  
purposes as a result of the  
teachings of false scriptures,  
the third variety of Raudra-  
dhyāna ठा० ४, १, भग० २५, ७,  
—परीसह. पुं० (—परीषह ) अज्ञान परिसह,  
अज्ञान ओंके विद्या न आवडवाथी थतुं कष्ट  
सहन करतुं ते. अज्ञानपरीषह, विद्या न आने से

होने वाले कष्ट का सहन करना. bearing  
without complaint troubles  
caused by ignorance; suffering  
without complaint the trouble  
of the sense of shame arising  
from the consciousness of  
want of learning. उत्त० २, ३;  
—फल. न० (—फल ) अज्ञानतुं कल-ज्ञाना-  
वरणरूप धर्म; धर्मगुरु वगैरेनी निंदा  
करवाथी बंधातुं ज्ञानावरणीय धर्म.  
अज्ञान का फल-ज्ञानावरणरूप कर्म, धर्मगुरु  
वगैरेह की निंदा से बंधने वाला ज्ञानावरणीय  
कर्म Jñānāvaranīya (knowledge  
obscuring ) Karma arising  
from censuring preceptors etc.  
“से नूण मण पुव्व कम्मायणाणफला कदा”  
उत्त० २, ३८,—लद्धि स्त्री० (—लब्धि )  
अज्ञाननी प्राप्ति; ज्ञानावरणीय धर्मना  
उदयथी थती अज्ञाननी प्राप्ति अज्ञान की प्राप्ति;  
ज्ञानावरणीय कर्म के उदय से होने वाली अज्ञान  
की प्राप्ति. ignorance resulting from  
the maturing of knowledge  
obscuring Karma अरण्याणलद्धिणं  
भंते ! कइविहा परणत्ता ? गोयमा ! तिविहा  
परणत्ता, मइअरण्याणलद्धी सुयअरण्याणलद्धी  
विभंगरण्याणलद्धी ” भग० ८, २,—वादि.  
त्रि० (—वादिन् ) अज्ञानवादी-अज्ञान-  
नेज् श्रेय माननार वादी; ज्ञानमा दोष दर्शा-  
पी अज्ञानतुं स्थापन करना अज्ञान  
वादी, अज्ञान को ही श्रेय मानने वाला  
वादी, ज्ञान में दोष बतलाकर अज्ञान की  
स्थापना करने वाला one establishing  
the superiority of no-science  
by pointing out the defects of  
knowledge. सुय० १, १, २, २३; नंदी०  
४६;—सत्थ न० (—शास्त्र ) अज्ञान शास्त्र;

भारत, काव्य, नाट्य आदि वैदिकशास्त्र  
अज्ञानशास्त्र-भारत, काव्य, नाटक आदि लौकिक  
शास्त्र. secular science such as  
that of poetry, drama etc;  
science or knowledge not  
dealing with spiritual matters  
ठ० ६;

अरण्याया. स्त्री० ( अज्ञानता ) अज्ञानता;  
अज्ञानपण. अज्ञानता; अज्ञान पन. Igno-  
rance. भग० १, ६, सम० ३२;

अरण्याणि. त्रि० ( अज्ञानिन् ) अज्ञानी,  
अज्ञानपणारी रहित; ज्ञानथी रहित; अज्ञान-  
वादी. अज्ञानी, ज्ञान से रहित, अज्ञानवादी.  
Ignorant; devoid of knowledge;  
professing the doctrine of  
nescience " अरण्याणि अरण्याणं  
विण्मत्ता वेणुइयवादी " सूय० नि० १, १२,  
११८; पंचा० ११, २६; भग० १, ५; ८, २,  
११, १; १८, १; २४, १; २६, १; सम० ३०,  
दसा० ६, ३०;

अरण्याणिअ-य. पुं० ( अज्ञानिक ) अज्ञानी,  
ज्ञानहीन; ज्ञानमा दोष दर्शाती अज्ञाननेत्र  
श्रेय माननार; अज्ञानी; ज्ञान से दोष  
बतलाकर अज्ञान को ही श्रेय मानने वाला  
Ignorant; devoid of knowledge,  
one establishing the superio-  
rity of nescience by pointing  
out the defects of knowledge or  
science भग० १, ६; ८, २, सूय० १, १२,  
२; अणुजो० ४१;—वाह. पुं० ( वादिन् )  
अज्ञानवादी; ज्ञानमा दोष दर्शाती अज्ञाननेत्र  
श्रेयरूप माननार वादी अज्ञान वादी, ज्ञान से  
दोष बतलाकर अज्ञान को ही श्रेयरूप मानने  
वाला वादी. ( one ) maintaining  
the superiority of nescience by  
pointing out the defects of

knowledge or science, भग० ३०,  
१, ठा० ४, ४;

अरण्याय. पुं० ( अन्याय ) अन्यायी; न्याय-  
रहित अन्यायी; न्याय से रहित. Devoid  
of justice, unjust सूय० १, १३, ६;  
—भासि. त्रि० ( भाषिन् ) अन्याययुक्त  
बोखनार; जेभ तेभ बोखनार. अन्याय  
युक्त बोलने वाला. one who speaks  
without a sense of justice or  
propriety. " जे विमहिण अरण्याभासी "  
सूय० १, १३, ६;

अरण्याय त्रि० ( अज्ञात ) अज्ञात; अज्ञात  
पगहन. बिना जाना हुआ. Unknown;  
not known. ओघ० नि० ६६; प्रव०  
५८७; भग० ३, ७; १८, ७,—उच्छ पुं०  
( उच्छ ) परिचय इत्यादि बिना शिक्षा,  
उपगहन वगैरे साधुओं से बिना ते. परिचय कस्ये  
बिना शिक्षा, उपकरण वगैरे का साधुद्वारा बिना  
जाना accepting of alms & begging  
of bowls by a Sādhu as a stran-  
ger. " अरण्यायउच्छं पुलनिपुलाय " दस०  
१०, १६;—चरअ पुं० ( चरक ) अज्ञात  
रहने—स्वभाव्यादि दर्शाया बिना गवेषणा इत्यादि  
अज्ञात रहकर-स्वजात्यादि प्रकट किये बिना  
गवेषणा करने वाला. ( one ) wandering  
about in search of alms in cogni-  
to. ओव० ३८,—पिंड पुं० ( पिण्ड )  
अज्ञात कुल की शिक्षा; अंतर्ग्रान्त शिक्षा.  
अज्ञात कुल की शिक्षा, अतर्ग्रान्त शिक्षा, alms  
from an unknown family, " अ-  
रण्यायपिंडेण हियालएज्जा, सो पूयणं तवसा  
आवहेज्जा " सूय० १, ७, २७,—सील. त्रि०  
( शील ) जेने स्वभाव पंडितो पणु न उणी-  
बोली शके तेणे. जिसका स्वभाव पंडित  
भी न जान सके ऐसे स्वभाव वाला.  
( one ) of a temperament

unknowable even by learned men. ( २ ) जेणे शीत-अलभ्य अर्थात् नदी कडुं येवे। जिसने ब्रह्मचर्य अंगीकार नहीं किया वह. ( one ) devoid of strict observance of chastity or continence “ ताण अरणायसीलाणं ( नारीणं ) ” तद्ध०

**अरणायया स्त्री० ( अज्ञातपणु )** अज्ञातपणु; यश कीर्तिनी वांछाये तपस्या वगैरेने प्रकाश न करवे। ते. अज्ञातपणु; यशःवार्ति की वाछा से तपस्या वगैरह का प्रकाश न करना Remaining unknown. not disclosing one's penance etc out of a desire for fame. सम० ३२,  
**अरणारंभणिवेत्ति स्त्री० ( अन्यास्मानिवृत्ति )** भेती आदि अरंभने त्याग खेती आदि आरंभ का त्याग. Giving up the pursuit of agriculture etc which involves killing “अरणारंभणिवेत्ति ए अप्रणाहिद्विष्य चैव” पंचा० ७, ३३;

**अरिण्याउत्त पुं० ( अन्निकापुत्र )** जयसिंह नामे त्रिपुत्रनी पुत्री अन्निकाने देवदत्तशी यथेष्ट पुत्र, के जेणे तरुणावस्थाभा जयसिंह आय र्यपासे दीक्षा लीधी अने थोडा वयनमां आचार्यपद भेगव्युं, वृद्धावस्थाभा ओडकेडाणे स्थिरवास होता दुष्टाण पडवथी शिष्येने भीजे मोडली आ.प्या ओड पुष्पचूला साध्वी तेगने आहार, पाणी लावी आपता ते साध्वीने केवलज्ञान उपज्युं तो पणु वेयावस्थ करता, ज्यारे आचार्यने भयर पडी त्यारे तेनी सेवा अटकावी आ आचार्यने गंगा-नदी नावाधी उतरता नाविकेये नदीमां नाभी दीधा, त्या तेमने केवलज्ञान उपज्यानु डडे-व मां अव्यु छे. जयसिंह नामक वारिक पुत्र की पुत्री अन्निका का देवदत्तद्वारा उत्तर पुत्र, जिन्होंने तरुणावस्था में जयसिंह आचार्य

के पास दीक्षा ली थी और थोड़े समय में आचार्यपद प्राप्त किया फिर वृद्धावस्था में एक स्थान पर स्थिरतापूर्वक निवास करने लगे वहाँ दुष्काल पडने से उन्होंने अपने शिष्यों को दूसरे स्थान पर भेज दिया. एक पुष्प-चूला नामक साध्वी उनके लिये आहारादि लाती थी उस साध्वी को केवलज्ञान उत्पन्न हुआ परंतु तो भी वह साधु की वेयावस्थ करती रही. जब आचार्य को यह मालूम हुआ तब आचार्य ने उसे रोक दिया. इन आचार्य को नावद्वारा गंगा नदी पार करते समय नाविकों ने नदी में फेंक दिया था. कहा जाता है कि, वहा उन्हें केवलज्ञान उत्पन्न हुआ. The son of Devadatta by Annikā, the daughter of a merchant named Jayasimha He, in his youth, took Diksā from the preceptor Jayasimha and himself soon became a preceptor. In his old age he was living permanently at one place. Owing to famine he sent his disciples to another place One female ascetic named Puspachūlā used to bring food and water for him. She attained to perfect knowledge yet she used to serve the preceptor; when the latter came to know this he stopped her service. While this preceptor was crossing the Gāṅgā river in a boat he was thrown into the water by the sailors, where, it is said he obtained perfect knowledge. संत्था०

अरण्य. त्रि० ( अन्योन्य ) लुओ। “ अरण्य-  
मरण ” शब्द देखो “ अरण्यमरण ” शब्द  
Vide “ अरण्यमरण ”. कप्प० ३, ४६;

अरण्य त्रि० ( अनून-अन्यून ) न्यूनतायी  
रहित; पूर्ण. न्यूनता से रहित; पूर्ण. Com-  
plete; perfect, not wanting. नाया०  
८;

अरण्येसरा न० ( अन्वेपण ) तपास करी लेवुं  
ते. गहरी जांच करना. Act of search-  
ing or looking minutely into  
पंचा० १३, २५;

अरण्येसि. त्रि० ( अन्वेपिन् ) गवेषणा करनेवाला;  
भागणी करनेवाला गवेषणा करने वाला; खोज  
करने वाला, प्रार्थी (One) who searches  
after; one who solicits. “ जे य  
बंधपमुखसमसेसी कुसले पुण नो बद्धे नो मुक्के ”  
आया० नि० १, १, १, ६६; आया० १, २,  
६, १०२;

अरण्योराण. त्रि० ( अन्योन्य ) लुओ। “ अरण्य-  
मरण ” शब्द देखो “ अरण्यमरण ” शब्द  
Vide “ अरण्यमरण ”. विशेष० ६१८;  
पन्न० २; जं० प० ७, १४१;—अंतरिअ  
त्रि० (—अन्तरित ) अक्षेपित होने आंतरे रहैल.  
एक दूसरे से अन्तर पर रहा हुआ situated  
at alternate intervals of  
each other पंचा० ३, १६;—अनुगत  
त्रि० (—अनुगत ) अन्योन्य-अक्षेपित होने  
अनुसरीने रहैल एक दूसरे का अनुसरण  
कर रहा हुआ. situated in alternate  
succession. पंचा १८, ४५, —गमण.  
त्रि० (—गमन ) परस्पर गमन करवा योग्य  
परस्पर गमन करने योग्य. fitted for  
mutual intercourse. “ अरण्यो-  
रण्यगमणं च होज्ज कम्मं ” परह० २, २;  
—जणिय त्रि० (—जनित ) परस्पर करैल;  
स्वाभिसंवासे करैल परस्पर किया हुआ.

done mutually. “अरण्योराणजणियं च  
होज्ज हासं” परह० २, २;—पग्गाहियत्त.  
न० (—प्रगृहीतत्वं ) वाक्य वाक्यनी अने पद  
पदनी परस्पर सापेक्षता; परस्पर सापेक्ष  
वाक्य बोधवां ते, सत्यवचनना उप अतिशय-  
भांति १७ भो. वाक्य वाक्य की और पद  
पद की परस्पर सापेक्षता; परस्पर सापेक्ष  
वाक्य का बोधना; सत्यवचन के ३५ अतिशयों  
में से १७वां अतिशय. interdependence  
of sentences or words uttered;  
utterance of inter-related  
sentences; the seventeenth of  
the thirty-five Atisayas of  
truthful speech. सम० ३५, राय०  
—समणुबद्ध त्रि० (—समनुबद्ध ) परस्पर  
बंधायेल-लेखियेले. परस्पर बंधा हुआ-  
जुड़ा हुआ inter-linked. “ अरण्योराण  
समणुबद्धं शिच्छयतो भाणियविसयंतु ” पंचा०  
६, २७,

अरण्य. न० ( अह-अहन् ) दिवस. दिन.  
A day. “ पुण्णावण्हकालसमयंसि ”  
उवा० ६, १६४;

\*अरण्य पुं० ( आश्रव-अभिविधिना श्रौति  
श्रवति कर्म येभ्यस्ते आश्रवाः ) पापु ६१३;  
कर्म आवधानो मार्ग, कर्मबंध हेतु. पाप का  
द्वार, कर्म आने का मार्ग; कर्मबन्ध का हेतु.  
An inlet for the influx of Ka-  
rma; cause of Karmic bondage.  
परह० १, १, ओव० २०, —कर. पुं०  
(—कर ) आश्रव-कर्मग्रहण करनेवाला;  
कर्म आवधान. आश्रव-कर्मग्रहण करने वाला;  
नवीन कर्म बाधने वाला. one who in-  
curs fresh Karmas ठा० ७; ओव०  
—भावणा. स्त्री० (—भावना ) आश्रवना  
अनिष्ट इलतुं चितवन करवु ते; आश्रवना-  
भांती सातमी भावना. आश्रव के अनिष्ट फल



का चितवन करना; बारह भावनाओं में से सातवीं भावना meditation upon the evils of Karmic inflow; the seventh of the twelve Bhāvanās. प्रव० ५८०;

अण्डयंत. व० कृ० त्रि० ( अश्नत् ) भोजन करने भोजन करता हुआ. Taking food, eating तंडु० श्रव०

✓ अण्डा. धा० I ( आ+श्रु ) आश्रय-कर्म्म-धथे। ते, कर्म्मनी आवड थवी ते आश्रव होना, कर्म का आना. Inflow of Karmic matter into the soul.

अण्डाति. श्रव० ३८,

अण्डाणग न० ( अस्नानक ) स्नान न करने ते. स्नान न करना. Not bathing भग० १, १, श्रव०

अण्डाणय. त्रि० ( अस्नानक ) स्नानरहित स्नान से रहित. Bathless भग० १, ६,

अतक्रेमाण व० कृ० त्रि० ( अतर्कयत् ) कल्पना न करने। कल्पना न करता हुआ Not thinking about; not imagining “ परस्स लाभं अणासाणमाणे अतक्रेमाणे अपीहेमाणे ” उक्त० २६, ३३;

अतत्थ त्रि० ( अत्रस्त ) त्रास न पामेक्ष. त्रास नहीं पाया हुआ. Not terrified, not frightened. “ एवं बुत्ते समाणे अभीए अतत्थे अणुविग्गे ” उवा० २, ६६, नाया० ८, ६,

अतर पु० ( अतर-न तरितुं शक्यते इत्यतरः ) रेत्नाकर; सागर, समुद्र. रत्नाकर; समुद्र The ocean प्रव० ४०१, ( २ ) त्रि० दुस्तर; तरवाने अशक्य दुस्तर, जिसे पार करना अशक्य हो वह insurmountable “ जे तरंति अतरं वणिया वा ” उक्त० ८, ६;

अतरंत. त्रि० ( अतरत् ) रोगी, अक्षान.

रोगी; उदास. Diseased, sickly; invalid. पंचा० ५, ४१; ( २ ) अशक्य; असहिष्णु अशक्य; सहनशीलता से रहित. incapable of endurance. सु० च० २, ५०४,

अतरण. त्रि० ( अतरण-ग्लान ) दुर्बल; अक्षान. दुर्बल, कमजोर; ग्लानियुक्त Feeble; sickly, lethargic. श्रव० नि० १४८,

अतव. न० ( अतपस् ) तपने अभाव तप का अभाव Absence of penance. “ हसा अमरिस अतवो अविज्जमाया अहिरियाय ” उक्त० ३४, २३;

अतवस्सि. त्रि० ( अतपस्विन् ) तपस्वी नहीं; तपस्या न करनेवाला. तप न करने वाला ( One ) not practising penance. दसा० ६, २३, सम० ३०;

अतसी सी० ( अतसी ) वनस्पतिविशेष; अलसीने छोड़-आड़ अलसी का पौधा. A kind of vegetation; a linseed plant पञ्च० १;

अतह न० ( अतथ-अतथ्य ) असत्य, मिथ्या; असद्भूत; झूठ, झूठ, मिथ्या, असद्भूत. A falsehood, a lie. “ अणवज्जमतहं तेसिं, ण ते सबुद्धचारिणो ” सूय० १, १, २, २६, आया० १, ६, ३, १६१; १, ६, २, १८३;

अतहकार पुं० ( अतथाकार ) गुरुके शिष्यने इंधि आज्ञा करता शिष्ये ‘ तेमं करीश ’ अथ शब्दने प्रयोग न करने ते गुरु शिष्य को कुछ आज्ञा दे उस समय शिष्य का ‘ ऐसा ही करुंगा ’ ऐसा न कहना Non-utterance of the words “ I shall do so ” on the part of a disciple in response to an order given by a preceptor. पंचा० १०, १७;



अतद्दृष्टान्त. त्रि० ( अतथाज्ञान-न विद्यते यथावस्तु तथाज्ञानं यस्य तत्तथा ) अयथार्थ ज्ञानुत्तर; अज्ञानी अयथार्थ जानने वाला; अज्ञानी Ignorant; possessed of false knowledge ( २ ) न० अयथार्थ ज्ञान; अनेकान्तरने अनेकान्तर ज्ञानुत्तर ते अयथार्थ ज्ञान, अनेकान्त को एकान्तरूप से जानना incorrect knowledge. टा० १०, ( ३ ) त्रि० प्रश्नोत्तरने अज्ञान न ज्ञानुत्तर पृ० ७३. प्रश्नोत्तर को ठीक ठीक न जानने वाला पृच्छक an inquirer without a clear knowledge of questions and answers. भग० ६, ८;

अताण त्रि० ( अत्राण ) त्राण-शरणरहित शरण रहित. Without protection. परह० १, १;

अतार. त्रि० ( अतार ) तरवाने अशक्य; न तरी शक्य तेडुं विशाल. दुस्तर, जिसका तैरना अशक्य हो वह. Insurmountable; too vast to cross “ अत्याहमतारम-पोरिसिअं सीओदगाम्मि अप्पाण सुयंति ” नाया० १४; भग० ७, १;

अतारग. पुं० ( अतारक ) तरी न शक्य तेडुं; अगाध पानी वगेरे जिसका तैरना असंभव हो वह, अगाध जल आदि Impossible to cross; e g. unfathomable water etc नाया० ६,

अतारिम. त्रि० ( अतारिम ) मुश्किली तरी शक्य तेडुं, दुःप्रेक्षरी तरवा योग्य. कठिना से तैरा जा सके वह Difficult to swim across. “ एते संगम मणुस्साणं, पाताला व अतारिमा ,, सूय० १, ३, २, १२;

अतारिस त्रि० ( अतादृश ) तेना जेवुं नहि; तेना सरभुं नहि; तेथी विलक्षण. उसके समान नहीं; उससे विलक्षण. Dissimilar;

of a different nature. “ अतारिसे मुणी ओहंतरे ” आया० १, ६, १, १८०;

अतालिस. त्रि० ( अतादृश ) तेना प्रकारनु नहि; तेना जेवुं नहि. उस प्रकार का नहीं; उसके समान नहीं. Of a different nature; dissimilar. “ अतादृशे से कुणई पओसं ” उक्त० ३२, २६;

अतावक्खेत्त. न० ( अतापक्षेत्र ) तापनुं क्षेत्र नहि ने; रात्रि ताप का अक्षेत्र; रात्रि. That which is not a province of sunlight; night प्रव० ८२७;

अति. अ० ( अति ) धलुं; अतिशय. ज्यादा; बहुत. Very much; excessive. नाया० १;

अतिउट्ट. त्रि० ( अतिवृत्त-अतिक्रान्तो वृत्ता-दतिवृत्तः ) पैताना कृत्यने न ज्ञानुत्तर. अपने कृत्य को न जानने वाला. Ignorant of the nature of one's own actions “ जंसि गुहाए जलणे तिउट्टे, अविजाणओ डक्कइ लुत्तपओ ” सूय० १, ५, १, १२;

अतिविशेष. त्रि. ( \* अतिन्तिन ) निराशानां कारणो होवा छातां कथवाणु राभी जेम तेम न ओलनार साधु निराशा के कारण होते हुए भी कुछ का कुछ न बोलने वाला साधु. ( A Sādhu ) not losing control of speech in spite of reasons for disappointment. “ अतिविशेषे अचवसे, अप्पभासी मियासणे ” दस० ८, २६, ( २ ) कड वयन सांलणीने पणु शांति राभी अप्पगत न करनार. कटु वचन सुनकर भी शान्ति रखकर बड़बड़ाहट न करने वाला. keeping quiet and not losing control over speech in spite of bitter words. “ जियवचणए अतिविशेषे ” दस० ६, ४, ५;

**अभिकार्य.** त्रि० ( अभिकार्य ) लु० 'अभिकार्य'  
शब्द. देखो 'अभिकार्य' शब्द. Vide 'अभिकार्य'.  
मग० १५, १;

**अतिक्रिष्ट.** त्रि० ( अतिक्रिष्ट ) अत्यंत  
भलीन; उत्तेशयुक्त. अत्यन्त मलीन. क्लेशयुक्त  
Highly perturbed or agitated.  
क० प० ६, २०;

**अतिक्रान्त.** त्रि० ( अतिक्रान्त ) अतीत-भूत  
क्षणमां थये. अतीत-भूतकाल में हो चुका  
हुआ Past, gone by. " जे य बुद्धा  
अतिक्रान्त, जे य बुद्धा अयागया " सू० १,  
११, ३६;

**अतिक्रम.** पुं० ( अतिक्रम ) लु० 'अतिक्रम'  
शब्द. देखो " अतिक्रम " शब्द Vide  
" अतिक्रम ". मग० ७, ६, सू० १, ८, २०;

**अतिक्षत्र.** त्रि० ( अतिक्षत्र ) तीक्ष्ण नहि ते.  
तिक्ष्ण-सम्पत् नहि ते. जो तीक्ष्ण न हो वह,  
कठोर न हो वह. Not sharp; not  
severe. पंचा० १६, ६;—तुंड त्रि०  
( -तुण्ड ) जेनी आंख तीक्ष्ण-सम्पत्-उद्दिन  
नथी तेवा पक्षी. जिसकी चोंच कठिन या  
तीक्ष्ण न हो ऐसा पक्षी a bird without  
sharp or hard beak पंचा० १६, ६,

**अतिगच्छमाण.** व० कृ० त्रि० ( अतिगच्छत् )  
अतिक्रमण करतो; उल्लंघन करतो. अतिक्रमण-  
उल्लंघन करता हुआ Transgressing,  
violating निसी० ६, ८; नाया० १,

**अतिगमण.** न० ( अतिगमन ) लु० 'अतिगम-  
ण' शब्द देखो 'अतिगमण' शब्द.  
Vide " अतिगमण ". नाया० २,

**अतिगत.** त्रि० ( अतिगत ) प्राप्त थये. प्राप्त  
हुआ. Obtained; got. नाया० १;

**अतिचार.** पुं० ( अतिचार ) लु० 'अतिचार'  
शब्द. देखो " अतिचार " शब्द Vide  
" अतिचार ". परह० २, १; आब० १, १;

**अतिच्छिन्न.** त्रि० ( \*अतिक्रान्त ) लु०

'अतिच्छिन्न' शब्द देखो 'अतिच्छिन्न' शब्द.  
Vide " अतिच्छिन्न ". ओष० नि० ४१४;  
उत्त० ७, २१;

**अतिताणगिह.** न० ( अतिताणगृह ) नगरमां  
प्रसिद्ध उंचा घर, जे नगरमां पेसतां ओच्छिन्न  
लगाय आये नगर का प्रसिद्ध ऊंचा घर, जोकि,  
नगर में प्रविष्ट होते ही एक दम दिख जाय  
A lofty & conspicuous building  
in a town. टा० २, ४;

**अतितिक्षत्र.** त्रि० ( अतितिक्षत्र ) अतितिक्षत्र;  
तीक्ष्ण तीक्ष्ण बहुत ज्यादा तीक्ष्ण. Very  
pungent or sharp. मग० १६, ४;

**अतितेज.** त्रि० ( \* अतितेज ) आदशनी  
रात्रि नमः चतुर्दशी का रात्रि का नाम,  
The night of the fourteenth  
day of a month, so named जं०  
प० सू० प० १०;

**अतित्त.** त्रि० ( अतृप्त ) असंतोषी; अतृप्त;  
संतोष प्राप्ति नहि. तृप्त थये नहि संतोष  
न पाया हुआ, असन्तुष्ट, तृप्त न हुआ हो वह.  
Unsatisfied "फासे अतित्त य परिगहेय"  
उत्त० ३२, ८१, " अतित्त कामाणं " परह०  
१, ४,—लाभ. पुं० ( -लाभ ) संतोषनी  
लाभ नहि; असंतोष; अतृप्ति असन्तोष,  
अतृप्ति, संतोष की प्राप्ति न होना lack of  
contentment or satisfaction.  
"संभोगकाले य अतित्तलाभे" उत्त० ३२, २८;

**अतित्ति.** स्त्री० ( अतृप्ति ) असंतोष; अतृप्ति.  
असंतोष, तृप्ति का अभाव. Want of con-  
tentment or satisfaction. उत्त०  
३२, ८०,—लाभ पुं० ( -लाभ ) संतोष-  
नी अप्राप्ति, असंतोष का लाभ-प्राप्ति.  
absence of satisfaction or con-  
tentment. " संभोगकाले य अतित्ति  
लाभे " उत्त० ३२, ८०;

**अतिथ्य न० ( अतीर्थ )** तीर्थंकरे तीर्थ स्थाप्या पड़ेलानेो समय अने तीर्थव्यवच्छेद थया पछीनेो समय; तीर्थ-संघस्थापनानेो अलाव तीर्थकर के द्वारा तीर्थस्थापित होने के पहिले का और तीर्थविच्छेद के पीछे का समय; तीर्थ-संघस्थापना का अभाव Time preceding the establishment of Tirthas or orders of community by Tirthankara & also the time succeeding their break-down, भग० २५, ६, ७; नाया० १; पञ्च० १;—**सिद्ध. पुं०** (—सिद्ध) तीर्थंकरे संघस्थापना कर्या पड़ेलां अथवा तीर्थ व्यवच्छेद थया पछी सिद्ध थाय ते, तीर्थने अलावे सिद्ध थाय ते, जेम मरुदेवी माता वगेरे तीर्थकर के संघ स्थापन करने के पहिले या तीर्थविच्छेद होने के बाद सिद्ध होना, तीर्थ के अभाव में सिद्ध होना, जैसे कि, मरुदेवी आदि. one who became Siddha when the orders of community were not founded or had suffered a break-down, e. g. Marudevi etc पञ्च० १;

**अतिथ्यगर. पुं० ( अतीर्थकर )** तीर्थंकर नहि ते; तीर्थंकरनी पदवी न पाभनार डेवणी; गौतमस्वामी वगेरे. जो तीर्थकर न हो वह; तीर्थकर की पदवी न पाने वाला केवली; गौतम स्वामी वगैरह. One not entitled to be called Tirthankara e. g; a Kevali; Gautamasvāmī etc. पञ्च० १;—**सिद्ध पुं०** (—सिद्ध) तीर्थंकर पद पाभ्या विना सिद्ध थयेत; गौतम स्वामी आदि. तीर्थकर की पदवी पाये विना जो सिद्ध हुए हों वे; गौतमस्वामी आदि. one who has attained salvation without being Tirthankara; e. g. Gauta-

masvāmī etc. पञ्च० १; नंदी० **अतिथ्ययर पुं० ( अतीर्थकर )** तीर्थंकर नहि पणु तीर्थंकर जेवा डेवणी वगेरे. तीर्थकर नही किन्तु उनके जैसे केवली आदि A person who is not a Tirthankara but who is like one; e. g. a Kevali. प्रव० ४७६;

**अतिदुक्ख. न० (अतिदुःख)** लुओ “अइदुक्ख” शब्द देखो ‘अइदुक्ख’ शब्द Vide “अइदुक्ख”. “पिहिया व सक्खामो अति दुक्खेहिमगसंफासा” आया० १, ६, २, १४;—**धम्म. पुं०** (—धर्म) अत्यंत दुःख आपवाने जेनेो धर्म-स्वभाव छे ते; ज्यां निमिषे मात्र पणु विश्रांति नथी तेवां नरकादि स्थान. अत्यन्त दुःख देने का जिसका स्वभाव है वह, जहाँ निमिष-क्षणमात्र भी विश्रान्ति नहीं है ऐसे नरकादि स्थान. that, the nature of which is to give extreme pain (hell etc., in which there is acute and incessant misery). “सया य कलुणं पुण धम्मठाणं, गाढोवणीयं अतिदुक्खधम्मं” सू० १, ५, १, १२;

**अतिधुत्त. त्रि० ( अतिधूत-अतीव धूतमष्ट प्रकारं कर्म यस्य सोऽतिधूतः )** भारे डर्मी, ण्डुल डर्मी कर्म के बहुत भार से युक्त बहुत कर्मा. Heavily loaded with Karmas. “अभिकंतकूरकम्मे खलु अयं पुरिसे अतिधुत्ते” सूय० २, २, ३२,

**अतिपंडुकंवल्लो स्त्री० ( अतिपाण्डुकम्बला )** लुओ “अइपंडुकंवल्लो” शब्द देखो ‘अइपंडुकंवल्लो’ शब्द. Vide ‘अइपंडुकंवल्लो’ ठा० २, ३;

**अतिपास. पुं० ( अतिपार्श्व )** लुओ “अइपास” शब्द देखो ‘अइपास’ शब्द. Vide ‘अइपास’. सम० प० २४०;



✓ अतिवय. धा० I ( अति+वज् ) उल्लघन  
 કરવું; અતિક્રમણ કરવું ઉલ્લઘન કરના;  
 અતિક્રમણ કરના To transgress; to  
 violate.

अतिवयंति परह० १, १;

अतिवाति. त्रि० ( अतिपातिन् ) लुओ 'अइवाइ'  
 शब्द. देखो "अइवाइ" शब्द. Vide  
 "अइनाइ" सूय० १, ५, १, ५;

अतिविज्ज त्रि० ( अतिविज् ) लुओ "अइ-  
 विज्" शब्द देखो "अइविज्" शब्द. Vide  
 "अइविज्." "तम्हातिविज्जं परमंति णच्चा"

आया० १, ३, २, १११; १, ४, ३, १६६;

अतिवेलं अ० ( अतिवेलम् ) लुओ "अइवेलं"  
 शब्द. देखो "अइवेलं" शब्द Vide  
 "अइवेलं." सूय० १, ६, २६; १, १४,  
 २५;

अतिसंकिलेस पुं० ( अतिसंक्लेश ) अत्यंत  
 चित्तनी मदीनता चित्त का बड़ा भारी मैलापन  
 Extreme impurity or turbidity  
 of the mind. पंचा० १५, ६,

अतिसेस त्रि० ( अतिशेष ) लुओ "अइसेस"  
 शब्द देखो "अइसेस" शब्द Vide "अइ-  
 सेस." ठा० ५, २; ओव० १०, भग० ११, ६,

अतिहि. पुं० ( अतिथि ) अभ्यागत; लोन्न  
 વખતે આવેલો પ્રાણી. અમ્યાગત, ભોજન  
 के समय आया हुआ पाहुना; मिहमान. A  
 guest; a mendicant who comes  
 at dinner time ( २ ) જેને આવવાની  
 तिथि मुझर नथी એવા સાધુ जिसके आने  
 की तिथि नियत नहीं है ऐसा साधु. a Sādhu  
 whose date of arrival is not  
 fixed आया० १, ८, ४, ११; अणुच० ३,  
 १, आड० ५, ठा० ५, ३; नाया० १२;  
 —पूया स्त्री० ( -पूजा ) अतिथिनी पूजा-  
 સત્કાર-પરોણાગત-આકરી-બરદાસ અતિથિ  
 का सत्कार. hospitality निर० ३, २,

भग० ११, ६,—संविभाग पुं० (संविभाग)  
 શ્રાવકનાં બાર વ્રત પેટી બારમુ વ્રત; જમતી  
 વખતે પોતાના લોન્નમાંથી અમુક ભાગ  
 અતિથિને આપવાની ભાવના ભાવવી તે. શ્રાવક  
 के वारह व्रतों में से वारहवाँ व्रत, भोजन  
 करते समय भोजन में से अमुक भाग अतिथि  
 को देने की भावना करना the last of  
 the twelve vows of a Jaina  
 layman, the earnest wish at the  
 time of dinner, that a portion  
 of it might be given to a guest  
 भग० ७, २, आड० ५,

अतीत पुं० ( अतीत ) भूतकाल भूतकाल  
 The past. भग० १२, ४; नाया० ७;  
 विशेष० ४१,—अद्धा स्त्री० ( -अद्धा ) अन-  
 તા પુદ્ગલપરાવર્તનપ્રમાણે અતીત-ભૂતકાળ  
 अनन्त पुद्गलपरावर्तन के अनुसार अतीतकाल  
 past time viewed from the  
 point of changes in infinite  
 particles of matter, i e time  
 connected with past changes  
 अणुजो० ११५,—णिमित्त न० ( -निमित्त )  
 અતીત-ભૂતકાળનું નિમિત્ત અતીત-ભૂતકાળ  
 का निमित्त instrumental cause of  
 past time निसी० १३, १५,

अतीय. पुं० ( अतीत ) लुओ "अतीत" शब्द  
 देखो "अतीत" शब्द. Vide "अतीत"  
 अणुजो० १४७, नाया० १, भग० १, ६,  
 ( २ ) त्रि० भूतकालनं भूतकाल का. of the  
 past. सूय० १, २, २, ५;—अद्धा. स्त्री०  
 ( -अद्धा ) अतीतकाल; भूतकाल. भूतकाल.  
 past time, the past. प्रव० १०५२;  
 —वयण न० ( -वचन ) अतीतवचन-भूत  
 કાળવાચક પદ—જેમ કે કહું, ખાધું, પીધું  
 વગેરે ભૂતકાલવાચક શબ્દ, जैसे कि, खाया,  
 पिया, किया आदि. a word inflected



in the past tense; e g did etc  
आया० २, ४, १, १३२;

**अतीरंगम** त्रि० ( अतीरङ्गम ) तीरे-डाँठे जल्पा-  
ने असमर्थ, सँसारने डाँठे नहि पहुँचानार  
सँसार के तीर पर-किनारे पर पहुँचने में  
असमर्थ Unable to reach the  
opposite shore, e g of worldly  
existence आया० १, २, ३, ८०,

**अतीव** अ० ( अतीव ) अति, धातु, अतिशय  
बहुत, ज्यादा, अतिशय Excessively  
भग० २, १, नाया० ११;

**अतुच्छ** त्रि० ( अतुच्छ ) तुच्छ नहि ते, उदार,  
श्रेष्ठ, प्रधान जो तुच्छ न हो वह, उदार,  
श्रेष्ठ, मुख्य Not mean or insignifi-  
cant, high पचा० ७, २४,—भाव पु०  
(-भाव) उँचा भाव, प्रधान-श्रेष्ठ भाव, उदा-  
रता ऊँचा भाव, श्रेष्ठ भाव, उदारता high  
or liberal feeling, nobility,  
excellence पंचा० ७, २४,

**अतुष्टि** स्त्री० ( अतुष्टि ) असंतोष, अतृप्ति  
असन्तोष, तृप्ति का न होना. Dissatis-  
faction, discontent “ अतुष्टिदोषेण  
टुही परस्स, लोभाविले आययई अदत्त ”  
उत्त० ३२, २६,

**अतुरिय** त्रि० ( अत्वरित ) उतावगुं नहि,  
धीमु जो जल्दी वाला न हो वह, ठंडा, धीरे  
धीरे काम करने वाला Slow, not fast  
“ उद्ध धिर अतुरियं, पुव्वं चेव ”  
उत्त० २६, २४, नाया० १, भग० २,  
५; ७, १०, कप्प० १, ५,—भासि त्रि०  
(-भापिन्) शांतिथी भोलनार, उतावगुंथी  
नहि भोलनार शांति से बोलने वाला, बोलने  
में शीघ्रता न करने वाला speaking  
without haste “अतुरियभासि विवेग  
भासि समियाण् ” आया० २, ४, १, १४०,

**अतुल** त्रि० ( अतुल ) जेनी तुलना न करी  
शुद्ध, अतुल्य, असाधारण अनुपम;  
जिसकी तुलना न की जा सके वह Incom-  
parable, extraordinary सम० ३०;  
पणह० १, १;

**अतो** अ० ( अतस् ) ऐथी, अहिंथी, ऐनाथी.  
इससे, यहासे Hence, from the  
place, therefore “ अतोपरं तुमं  
जाणासि ” नाया० १६; दसा० २, ८, ६, १;  
**अत्त** त्रि० ( आत्त-आ-अभिविधिना त्रायते  
दुं खात् सरद्धति सुखं चोत्पादयतीत्यात्त )  
दुःख हरनार, सुख आपनार. दुःख हरने-  
वाला, सुखप्रद ( One ) removing  
misery and giving happiness.  
“ येरइआणं भंते । किं अत्ता पोग्गला अणत्ता  
पोग्गला वा ” भग० १४, ६;

**अत्त** पु० ( आत्त-आसिहिं रागद्वेषमोहानामै-  
कान्तिक आत्यन्तिकश्च सत्यः सा यस्यास्ति  
स आत्त ) यथार्थदर्शी, रागद्वेषादि सर्व  
दोषरहित, निर्दोषआगमना प्रणेता,  
वीतराग यथार्थदर्शी, रागद्वेषादि सब  
दोषों से रहित, निर्दोषआगम का प्रणेता,  
वीतराग One absolutely free  
from love, hatred etc, one with  
perfect vision of truth, an  
author of faultless scriptures,  
one devoid of passions सूय० १,  
६, ३३,—पद्देसि. त्रि० (-प्रज्ञान्वेपिन्-  
आप्तो रागादिविप्रमुक्तस्तस्य प्रज्ञा केवल  
ज्ञानारया तामन्वेष्टुं शीलं वेपां ते तथा )  
सर्वजननी उद्दिष्टनुं अन्वेष्टुं करनेवाला  
सर्वज की उक्तियों की खोज करने वाला.  
( one ) who searches into ( i.  
e reflects upon ) the words or  
sayings of the omniscients “वीरा  
जे अत्तपन्नेमी ” सूय० १. ६, ३३,—मुद्धव.



पुं० (—मुख्य ) आत्त पुरुषोभां मुख्य, के-  
वलज्ञानी. आत्त पुरुषो मे मुख्य; केवलज्ञानी.  
one chief among persons with  
perfect knowledge; a Kevali  
तुंड०

अत्त त्रि० ( आत्त ) ग्रहणु इरेल; स्वीकारेण  
ग्रहण किया हुआ, स्वीकृत. Taken; ac-  
cepted ठा० २, ३; नाया० १,—परणह.  
पुं० (—प्रज्ञाहन् ) पोतानी के परनी आत्त-  
ग्रहणु इरेल अथवा आत्त-हितकर बुद्धिने  
हलुनार; आत्मसम्बन्धी प्रज्ञाने हलुनार-हल-  
वनार; पाप श्रमणुं ओके लक्षणु अपनी या  
दूसरे की आत्त-ग्रहण की हुई या आत्त-हितकर  
बुद्धि को हनन करने वाला, आत्मसम्बन्धी  
प्रज्ञा को हनन करने वाला, पाप श्रमण का एक  
लक्षण. ( one ) destroying one's  
own or another's (आत्त)acquired,  
or ( आत्त ) wholesome inte-  
llect, ( one ) repudiating spir-  
itual wisdom; ( a mark of a  
sinful ascetic ) “अहम्मे अत्तपरणहा”  
उत्त० १७, १८;

अत्त त्रि० ( आर्त्त ) पीड़ित, दुःखी, इंटाणी  
गयेल. पीड़ित; दुःखी, घबराया हुआ  
Afflicted, troubled. सूत्र० १, ३,  
१, ६; उत्त० ६, १०; ओव० २०,—गवे-  
सणया. त्री० (—गवेणता-गवेणता) आर्त्त-  
दुःखी-गरीय भाणुमेनी गवेणता इरवी ते,  
डोणु दुःखीछे? तेनु दुःख डेम दूर थाय? ओम  
शोध इरवी ते दुःखी मनुष्यों की खोज करना;  
दुःखी कौन है? उसका दुःख किन तरह दूर  
हो सकता है? इस प्रकार खोज करना. In-  
vestigation into the causes and  
cures of distress; finding out  
means and ways to remove  
their distress भग० २५, ७,—मड.

त्रि० (—मत्ति-आर्त्त आर्त्तध्याने मत्तियेपां ते  
तथा ) आर्त्तध्यानमा जेअओल आर्त्तध्यान  
में लीन. engaged in painful  
meditation. आउ०

अत्त पुं० ( आत्मन् ) शुच, आत्मा; येतन  
पदार्थ जोव, आत्मा, चैतन्य पदार्थ. A soul,  
a living being विशेष० ७५७, १३४३,  
आया० १, ६, ५, १६५, उत्त० २, १७,  
दस० ८, ३०, नाया० ५; १४, १६, भग०  
२, १, ३, १, ३; ६, १०; १२, २, १७, ४,  
पन्न० १५; ( २ ) पोते; जते; पंडे स्वयं,  
खुद one's self ओव० ४१; नंदी०  
( ३ ) स्वभाव; प्रकृति. स्वभाव; प्रकृति  
nature अत्ताणं द्वि० ए० गच्छा० ४६;  
अत्तणो प० ए० गच्छा० १३;—आगम  
पुं० (—आगम ) तीर्थंकरनी अपेक्षाये भूय  
सूत्रपाठ; अत्तागम तीर्थंकर की अपेक्षा से  
मूल सूत्रपाठ; आत्तागम the older or  
original Jaina Sūtra, the Attā-  
gama. भग० ५, ४;—उक्करिस पुं०  
(—उत्कर्ष ) अस्मिमान; आत्मश्लाघा  
अभिमान, आत्मप्रशंसा pride; self-  
applause “ तम्हा अत्तुकरिसो, वजेयवो  
जत्तिजणेणं ” सूत्र० नि० १, १३, १२६;  
—उक्कोसिय पुं० (—उत्कर्षिक—आत्मो-  
त्कर्षोऽस्ति येषां ते आत्मोत्कर्षिकाः ) गर्विष्ठ  
वानप्रस्थ. गर्वयुक्त वानप्रस्थ a proud  
hermit ओव०—उवणीय. पुं० (—उपनी-  
त ) दुराग्रह इरी पोतानी मत स्थापन  
इरवे ते, जेम शुच हलुवा नहि ते अगमर  
पणु पापीओने तो हलुवाळ जेअओ  
धत्यादि, पोताना मतमा देप, आवे तेवी  
रीते परमतनुं उत्थापन इरवु ते दुराग्रह  
पूर्वक अपने मत का स्थापन करना, जैसे जाव-  
हिसा करना नहीं परंतु पापी को तो मारना ही

चाहिये इत्यादि; अपने मत को दोष लगे इस प्रकार दूसरे के मत की उत्थापना करना establishing one's own tenet by specious and perverse reasoning, refuting the opponent's doctrine by arguments damaging to one's own doctrine ठा० ४, ३,—उवमा स्त्री० (—उपमा) पोतानी उपमा, आत्मतुलना, पोतासाथेनी सरभामणी अपने आपकी उपमा; आत्म तुलना self-comparison सूय० १, ११, ३३,—कड त्रि० (—कृत) पोतानु डरी स्वीकारेख, पोतानु डरी राखेख अपना बनाकर स्वीकार किया हुआ, अपनाकर रखा हुआ accepted as one's own भग० १, ६, १७, ४,—कम्म न० (—कर्मन्) पोतानु दुश्चरित-दुष्कृत्य अपना दुश्चरित-दुष्कृत्य one's own wicked action “णिच्चुव्विग्गो जहातेणो, अत्तकम्मे-हि दुम्महं” दस० ५, २, ३६, (२) नेनाथी आत्मा डमें डरी दोपाय तेयु कार्य, आधा-डर्भी आहारदि ऐसा कार्य जिससे, आत्मा कर्मों से लिप्त हो, आधाकर्मों आहार आदि action causing the inflow of Karma, accepting Ādhākarmī food etc दसा० ६, ६,—गवेसअ त्रि० (—गवेषक) आत्मवित्त-गवेष, शोध आत्मा की खोज करने वाला (one) meditating upon the nature of the soul दसा० ६, ३१, (२) (आत्मान चारित्रात्मान गवेपयतीति) आत्रिआत्मानो गवे-पय-शोध चारित्रात्मा की शोध करने वाला (one) meditating upon the nature of the soul and right conduct “ तिगिच्छं नाभिनेदजा, सचि-क्खेत्तगवेसण ” उत्त० २, ३२,—गवेसि

त्रि० (—गवेषिन्) आत्मानो गवेपय-शोध करने वाला; आत्माथी. आत्मा की शोध करने वाला, आत्माथी (one) meditating or reflecting upon the nature of the soul, दस० ६, ५७,—गामि पुं० (—गामिन्) आत्मानो प्राप्त करने वाला मुनि, मुमुक्षु आत्मा को प्राप्त करने के लिये मोक्षमार्ग में चलने वाला मुनि, मुमुक्षु a sage striving after final emancipation “ मुसं न वूया मुणी अत्तगामी ” सूय० १, १०, २२; —छट्ट पु० (—पट्ट) सूयगडगसूत्रना पड़ेला अध्ययनना पड़ेला उद्देशानो पायभो अर्थाधिकार, डेनेमा पाय भूत अने छट्टा आ-त्मानु निरूपण छे सूयगडगसूत्र के पहिले अध्याय के पहिले उद्देश का पौचवौ अधिकार, जिसमें पंचभूत और छठे आत्मा का निरूपण है. the fifth subject of the first sub-division of the first chapter of Sūyagadānga dealing with the five elements and the soul “ अत्तछट्टो पुणो आहु, आया लोगे य सासण ” सूय० १, १, १, १२,—त्ताण न० (—त्राण) आत्मरक्षा, आत्मानु रक्षण. आत्मरक्षा, आत्मा का रक्षण protec- tion of the soul सूय० १, ११, ३२; —दुक्कड न० (—दुष्कृत) पोतानु दुष्कृत्य अपना दुष्कृत्य one's own evil action “ सपराइय णियच्छति, अत्तदुक्कड-कारिणो ” सूय० १, ६, ६,—दोस पु० (—दोष) पोतानो दोष-आभी अपना दोष; निजकी त्रुटि. one's own fault सम० ३२. भग० २५७ —दोपोपसंहार पु० (—दोषोपसंहार) पोतानो दोषोप-संहार-अट्टापया ते; उर योगभेदुआनो ओडदीगभो योगभेद अपने दोषो न द

करना; ३२ योगसंग्रहों में से इकबोसवों योग-संग्रह removing one's own faults; the twenty-first of the thirty-two Yogasaṅgrahas. सम० ३२; —परणोसि पुं० (—प्रज्ञान्वेषिन्-आत्मनः प्रज्ञामन्वेष्टुं शीलं यस्य स तथा) आत्मज्ञान-नो शोधक; आत्महितनी गवेषणा ३२ना२७५ आत्मज्ञान की शोध करने वाला, आत्महित की गवेषणा करने वाला जीव (one) seeking after the knowledge of the soul for one's spiritual evolution “वीरा जे अत्तपरणोसा, धितिमंता जिहंदिया” सूय० १, ६, ३३, —परहह पुं० (—प्रश्नहन्-आत्मनि प्रश्न आत्मप्रश्नस्तं हन्तीत्यात्मप्रश्नहा) आत्म संबंधी प्रश्नने ७७नुना२-७७वना२, पापश्रम-णुनुं येक लक्षण आत्मसंबन्धी प्रश्न का हनन करने वाला, पापश्रमण का एक लक्षण one who evades a question relating to the soul, a mark of Pāpaśramana “अहम्मे अत्तपरहहा” उक्त० १७, १२; —लब्धिय. पु० (—लब्धिक-आत्मन एव सत्का लब्धिर्भक्तादिलाभो वा यस्यासावात्मलब्धिकः) पोतानी लब्धिवाणे आत्मलब्धि वाला, निज की लब्धि वाला. (one) possessed of one's own Labdhi or attainment पंचा० १२, ३५, —लाभ पुं० (—लाभ) स्वरूपनो लाभ स्वरूप का लाभ attainment of (one's own) real or essential form or nature. क० गं० २, २६; —संपगगहिय त्रि० (—संग्रहणीत) दरेक डर्यमा पोतानी उत्कृष्टता-श्रेष्ठता पतावनार, आत्मप्रशंसा ३२ना२. प्रत्येक कार्य में अपनी श्रेष्ठता बताने वाला; आत्मप्रशंसा करने वाला. given to self-praise in all matters. “नयभ-

वह अत्तसंपगगहिय ” दस० ६, ४, १; —सम. त्रि० (—सम) आत्मतुल्य, पोता समान; आत्मवत्. आत्मतुल्य; अपने समान; आत्मवत्. like one's self; equal to oneself. “अत्तसमे मन्नेज छप्पिकाये” दस० १०, १, ५; —समाहिअ. पुं० (—समाधिक) स्वपक्षनी सिद्धि ३२वाभाटे पणु मध्यस्थपणु रही परने दु प न उपज-वतु ते. स्वपक्ष की सिद्धि करने के लिए भी मध्यस्थभाव से रहकर दूसरे को दुख न उप-जाना. not defending one's own side for fear of giving pain to others. “कुजा अत्तसमाहिअ ” सूय० १, ३, ३, १६; —समाहिअ-य. त्रि० (—समाहित) सदा स्वउपयोगमां नेजयेथ; निर्विकल्पसमाधियुक्त. सदा आत्मोपयोग में लगा हुआ, निर्विकल्पसमाधियुक्त absorbed in Nirvikalpa meditation i. e. one in which there is no distinction between the knower and the known “एवं अत्तसमाहिय-अणिहे” आया० १, ४, ३, १३५, —हिय. न० (—हित) आत्महित, आत्मानुं हित-श्रेय. आत्मा का हित कल्याण. well-being of the soul, one's own welfare. दस० ४,

अत्तग त्रि० (आत्मग-आत्मनि गच्छतीत्यात्मग) आतरिक; आत्मिक. आन्तरिक, आत्मिक Inward, relating to the soul. “चिच्चाण अत्तगं सोयं” सूय० १, ६, ७; अत्तद्व पुं० (आत्मार्थ) आत्मानो अर्थ-स्वर्ग, मोक्षादि. आत्मा का अर्थ-स्वर्ग, मोक्ष आदि. Final goal of the soul such as heaven, emancipation from births etc. “इह कामनियदस्स, अत्तद्वे नावरज्जु” उक्त० ७, २६; (२) पोतानी

मतलब; स्वार्थ अपना मतलब; स्वार्थ. self-interest. "अत्तद्वा गुरुओ लुद्धो, बहुपावं पकुच्चइ" दस० ५, २, ३२,

अत्तद्विय. त्रि० (आत्मार्थिक-आत्मार्थे भव-मात्मार्थिकम्) पोतानेभाटे; पोतानी जत-भाटे अपने लिये For one's own person "अत्तद्वियं सिद्धमिहेगपक्खं" उक्त० १२, ११, (२) पोतानुं करेह; स्वीकृत-रेह अपना किया हुआ; स्वीकृत accepted as one's own. आया० १, ६, १, १,

अत्तता. स्त्री० (आत्मता-आत्मनो भाव आत्म-ता) आत्मानुं अस्तित्व, अपनी हुयाती आत्मा का अस्तित्व, Existence of the soul; state of being of the soul (२) पोताना करेह कर्मनु परिणाम अपने किये हुए कर्मों का परिणाम. result of one's own Karma "इह खलु अत्त-ताए तेहि तेहि कुलेहि अभिसेप्पुण संभूता" आया० १, ६, १, १७६;

अत्तत्तासंबुड त्रि० (आत्मात्मसंवृत-आत्म-न्यात्मना संवृतः) आत्मावडे आत्माभा-लीन थयेह आत्मा के द्वारा आत्मा में लीन Absorbed in the contemplation of one's own soul भग० ३, ३;

अत्तत्थ त्रि० (अत्रस्त) त्रास वगरनो, लय वगरनो; त्रास पाभेल नहि त्रास रहित, भय रहित, त्रास नहीं पाया हुआ Not terrified, without fear, not frightened नाया० ६, १५;

अत्तय-अ पुं० (आत्मज) छोडरे, दीडरे, पिताना वीर्यथी उत्पन्न थयेह पुत्र. लडका, पिता के वीर्य से उत्पन्न पुत्र A son ठा० १०; भग० ६, ३३, ११, ६; नाया० १, २, ७, ८; ६; १२, १४; १६, १८, विवा० १; निर० १, १,

अत्तया स्त्री० (आत्मजा) दीडरी, पुत्री लडकी, पुत्री A daughter नाया० ८, १४, विवा० ६,

अत्तरण. न० (आस्तरण) पथारी उपर ढांडवा-नु वस्त्र, ओछाड विस्तर के ऊपर टांकने का वस्त्र, चादर A bed-cover विशेष० २३२२;

अत्तवं पुं० (आत्मवत्) आत्माना उपयोग-वाणो, साधयेत साधु आत्मोपयोगी, सावधान साधु (One) self-restrained, (one) reflecting upon the soul, e. g. a Sādhu "भासं निसिर अत्तवं" दस० ८, ४६; (२) अडपायी आत्मा. कषाय रहित आत्मा soul free from Kasāya or evil passions. 'अत्तवतो' ष० ए० ठा० ६, १,

अत्ता पु० (आत्मन्) आत्मा अथ आत्मा, जीव Soul पि० नि० भा० ४,

अत्ताण. त्रि० (अत्राण) त्राण-शरणुरहित; जेनो डोछ रक्षक न होय ते. त्राण-शरण-रहित, जिसका कोई रक्षक न हो वह Defenceless, destitute of refuge; helpless परह० १, १, विवा० ६;

✓ अत्तीकर ना० धा० II. (आत्मी+कृ) पोता-नुं करी लेवुं, पोताना ड्यलभा लेवु अपना बना लेना, अपने कब्जे में लेना To take possession of, to make one's own. अत्तीकरेह. पि० नि० ११२, निसी० ४, १, अत्तीकरंत व० कृ० निसी० ४, १.

अत्तेय पु० (आत्रेय) आत्रेय-ऋषि आत्रेय-ऋषि The sage Ātreya विशेष० २७६६,

✓ अत्थ धा० I (आस्) भेसवुं बैठना To sit. अत्थाहि आ० नाया० १,

✓ अत्थ धा० I. (अस्) थवु, होवु. होना To be, to exist

अत्थि. ओव० १७, नाया० १; २, ८, १६; भग० २, १, ५, ६, १८, ८,

अत्थु ओव० १२; जीवा० ३, ४;

अत्थ न० (अस्त) आधमवुं ते, अधम्य थवुं,

चंद्र, सूर्य वगैरेतुं देशांतर-क्षेत्रांतरभां गुरुं ते  
अस्त होना, अदृश्य होना, चन्द्र, सूर्य आदि का  
क्षेत्रान्तर में जाना Setting, disappear-  
ing; e.g. of the sun, the moon  
etc. सू० प० १, २, ३, जीवा० ३, दसा० ७, १;  
अथ न० (अस्त्र) ईडवानां लुथीयार-तीर वगैरे.  
फैंकने का अस्त्र; तीर वगैरह A missile; e.g.  
an arrow etc परह० २, २; विशेष० ३० १६,  
अथ. अ० (अत्र) आदि, अंदि, धंदि यहा  
Here; in this place भग० ८, १,  
पञ्च० २;  
अथ. पुं० (अर्थ) धन, द्रव्य, संपत्ति, परिग्रह  
धन; संपत्ति, परिग्रह Wealth; riches  
ओव० ३२, सू० प० २०; परह० १, २; भग०  
१२, ६; सु० च० १०, ६५; भक्त० १०३, नाया०  
१, १४, १८; उत्त० ३२, १०७; (२) लक्ष्मी-  
ना भज्जनारूप पर्वत, मेरुपर्वत लक्ष्मी  
का भंडाररूप पर्वत, मेरुपर्वत the Meru  
mountain, treasure of immense  
wealth. सम० १६, (३) तात्पर्य, मतलब;  
सारांश; भावार्थ तात्पर्य; मतलब, सारांश  
meaning, gist, sense. ओव० ४०,  
उत्त० १, २३; ३२, ३; नंदी० ४०, विशेष०  
१०३६; (४) शब्दतो अलिधेय, वाच्यार्थ;  
विषय. शब्द का वाच्यार्थ, विषय. the ex-  
pressed meaning of a word. विशेष०  
१०७१, १३६६; ओव० १६; भग० ५, ४, ८,  
८, २५, ७; पि० नि० ६७, १२६, १६०, (५)  
अपेक्षा अपेक्षा standpoint; expecta-  
tion, relation जीवा० १; (६) पदार्थ,  
अभिलाष्य पदार्थ पदार्थ; अभिलाष्य पदार्थ.  
a substance. विशेष० १२८; १०३७,  
(७) शब्दादि पांच विषय शब्दादि पांच  
विषय the sense-contacts. पञ्च० १५;  
विशे० १७६, (८) मोक्ष; परमार्थ मोक्ष  
immortality. दस० ५, २, ४३;

—अथि. त्रि० (-अर्थिन्) धनतो अर्थी;  
धनतो याचक धन का अर्थी; धन का याचक.  
needy of wealth, (one) begging  
money भग० १५, १,—अथिय-अ.  
त्रि० (-अर्थिक) लुभो “अथअथि” शब्द  
देखो “अथअथि” शब्द vide ‘अथअथि’  
नाया० १; जं० प० ३, ६७,—अभि-  
मुह. त्रि० (-अभिमुख) अर्थ ग्रहण करने में चतुर.  
clever in grasping meaning.  
विशे० ८०,—अभिसंकि त्रि० (-अभि-  
संकिन्) धननी चाहना-छानना इरना धन  
की चाहना करने वाला (one) longing  
for wealth, (one) desirous of  
getting wealth नाया० १८,  
—अलिय न० (-अलीक) द्रव्यतो  
लुगुं भोलवुं ते द्रव्य के लिये असत्य बोलना.  
telling a lie for the sake of  
wealth परह० १, २;—अवग्रह पु०  
(-अवग्रह) पदार्थतो धृष्टियोनी साथे स्पष्ट  
संबंध थाय ते; भतिज्ञानतो अर्थ भेद पदार्थ  
का इन्द्रियों के साथ स्पष्ट सम्बन्ध होना; मति  
ज्ञान का एक भेद connection of an  
organ of sense with its object,  
a variety of Matijñāna. नाया० १,  
सम० २८,—आदाण. न० (-आदान)  
द्रव्योपाजन इरवाना इरलुरुप अधिग  
निमित्त, आह प्रकाशना निमित्त प्रकाशना ते.  
द्रव्योपाजन करने के कारणरूप अष्टांग  
निमित्त interpreting any or all  
of the eight varieties of signs  
and omens with a view to  
earn money. ठा० ३, ४,—आलोचण.  
न० (-आलोचन) अर्थतुं आलोचन इरवु-  
चितवन इरवुं ते. अर्थ का आलोचन-  
चितवन करना. reflecting upon the



meaning of. पंचा० ३, ६;—उग्राह्य पुं० (—अवग्रह) व्यंजनावग्रह पछी अर्थनुं सामान्यपक्षे अहणु करुं ते, पांच इंद्रिय अने मनसाथे पदार्थनो व्यक्त संबंध थाय ते व्यंजनावग्रह के पश्चात् अर्थ का सामान्यतया ग्रहण करना, पांच इंद्रिय और मन के साथ पदार्थ का व्यक्त सम्बन्ध होना perception of a determinable sense-object, the definite connection of the sense-object with five sense-organs and the mind सम० ६; नंदी० २७; क० गं० १, ५;—उग्राह्य न० (—अवग्रहण) करणीना इल्ले निश्चय करवे। ते करनी-कर्म के फल का निश्चय करना determining about the results of actions भग० ११, ११, —ओग्राह्य पुं० (—अवग्रह) पांच इंद्रिय अने मननी साथे पदार्थनो संबंध यतां ने प्रथम सामान्य बोध थाय ते पांच इंद्रिय और मन के साथ पदार्थों का सम्बन्ध होने पर जो प्रथम सामान्य बोध होता है वह the first perception of a determinable sense-object due to the connection of the object with the five sense-organs and the mind. कप्प० १, ७, विशेष० २६५, भग० ८, २, ठा० २, १,—ओग्राह्य न० (—अवग्रहण) इल्लनिश्चय फल का निश्चय certainty about result भग० ११, ११,—कंप्पिस्सय त्रि० (—काह्-चिन्) अर्थ-धननी आकाक्षा-तृष्णावाणे धन की तृष्णा वाला. desirous of, hankering after, wealth भग० १, ७, १५, १;—कर त्रि० (—कर) धन भेजवतार धन उपार्जन करने वाला, द्रव्य संपादन करने वाला. one, acquiring we-

alth वच० १०, ४,—कहा. स्त्री० (—कथा) अर्थ-द्रव्यसंबंधी कथा, जेम के द्रव्य विनाने मनुष्य तृण तुल्य छे धियादि. धन संबंधी कथा, जैसे कि, धनहीन मनुष्य तृण के समान है इत्यादि. talk about wealth; e g talking about the miseries of poverty. ठा० ३, १,—कामअ-य त्रि० (—कामक-अर्थे द्रव्ये कामो धाम्कामाद्रं यस्याऽसावर्थकामकः ) द्रव्यनी वाञ्छना-वाणे। द्रव्य की चाह वाला. desirous of wealth भग० १, ७;—गवेसणया. स्त्री० (\*—गवेपणता-गवेपणा) धननी गवेपण-शोध करवी ते धन की खोज करना search after wealth. भग० १५, १;—गवेसि त्रि० (—गवेसिन्) धननी गवेपण-शोध करतार धन का अन्वेषण-खोज करने वाला (one) searching after wealth भग० १५, १,—ग्राहण न० (—ग्रहण) अर्थ-पदार्थनुं ज्ञान; पदार्थनो निश्चय करवे। ते अर्थ-पदार्थ का ज्ञान, पदार्थ का निश्चय करना. knowledge of the meaning of a word or words etc. विशेष० ७, —जाय न० (—जात) द्रव्यना प्रकार-जमीन, गरास, जलवर वगेरे द्रव्य का भेद-जमीन, जागीर, पशु आदि different forms of wealth, e. g land, animals etc वेय० १०, १८, पचा० १०, १३,—जोषि. त्रि० (—योनि) पैशानी उत्पत्तिना स्थान, पैशा भेजवताना उपाय धन की उत्पत्ति का स्थान; धन उपार्जन करने का उपाय. means of gaining money. तिविहा अर्थजोषी पत्तता, तंजहा-सामे वडे भेष्ट ” ठा० ३, १;—णय पुं० (—नय) अर्थप्रधान नय, अर्थनो आश्रय करतार-नैगम, सग्रह, व्यवहार अने अलुप्त्ये ये चार नय. अर्थप्रधान नय, अर्थ का आश्रय लेने वाले नैगम, सग्रह, व्यवहार



और ऋजुसूत्र ये चार नय. standpoint relating to the object considered. It is the collective name of four standpoints viz Naigama, Saṅgraha, Vyavahāra and Rijusūtra. “नैगमाद्याश्चत्वारोऽप्यर्थनया अर्थमेव प्राधान्येन शब्दोपसर्जनमिच्छन्ति” सूय० टी० २, ७, ४०;—णिउर. पुं० (—निकुर) ८४ लाख अर्थनिकुरांगप्रमाण कालविशेष. a period of time measuring eighty-four lacs of Arthanikurāṅga जीवा० ३, ४, जं० प० २, १८;—णिउरंग पुं० (—निकुराङ्ग—निपूराङ्ग) ८४ लाख नलिनप्रमाण कालविशेष. a period of time measuring eighty-four lacs of Nalinas जीवा० ३, ४,—दंड पुं० (—दण्ड) शरीरादि निर्वाह अर्थे कर्मवध थाय ते; स्वार्थे दंडायु ते शरीरादि के निर्वाह के लिये कर्मवध होना, स्वार्थ के लिये दंडित होना Karma arising from actions done to support one's body etc. प्रव० ८२६, परह० २, ५;—धर त्रि० (—धर) शास्त्रने अर्थधरनार; अर्थवेत्ता शास्त्र का अर्थ धारण करने वाला; अर्थवेत्ता (one) well-versed in the meaning of Śāstras. ठा० ३, ३;—निज्जवञ्च त्रि० (—निर्यापक) नयप्रमाण लागु पाडी सूत्रना अर्थने निर्वाह धरनार. नय प्रमाण को अन्विन कर सूत्र के अर्थ का निर्वाह करने वाला (one) explaining the Sūtras with logical reasoning of stand points. दसा० ४, ३१,—पज्जय. पुं० (—पर्याय) अर्थना अर्थ देशनु प्रतिपादन

धरनार पर्याय; अर्थरूप पर्याय. अर्थ के एक देश का प्रतिपादन करने वाला पर्याय; अर्थरूप पर्याय a modification explaining a part of a substance. विशेष० ३६८,—पय. न० (—पद) “उत्पाद, व्यय अने ध्रौव्ययुक्त सत्” इत्यादि अर्थ प्रतिपादक—प्रधान पद उत्पाद, व्यय और ध्रौव्य युक्त पदार्थ होते हैं” इसप्रकार अर्थ का प्रतिपादन करने वाला—प्रधान पद. a term such as one conveying the meaning of a substance with the three attributes of creation, sustained existence and destruction प्रव० १५१७;—पिवासिय. त्रि० (—पिपासित) धननी तृष्णावाणो; धन भोगवाने आतुर थयेन धन की तृष्णा वाला, धन प्राप्त करने के लिये आतुरित greedy, thirsty of wealth. भग० २, ७, १५, १,—पुहुत्त न० (—पृथुत्व—पृथु-विस्तीर्ण तस्य भाव पृथुत्वम्, अर्थस्य पृथुत्वमर्थपृथुत्वम्) इत्यादि पदार्थना विस्ताररूप श्रुतज्ञान; सामान्य श्रुतज्ञान जीवादि पदार्थों का विस्ताररूप श्रुतज्ञान, सामान्य श्रुतज्ञान Śrutajñāna consisting of a detailed description of Jīva or soul and other categories “जं वा अत्येण पुहुं अत्यपुहुत्तंति तवभावो” “अत्यपुहुत्तस्स तेहि कहियस्स” विशेष० १०७२,—भाव पुं० (—भाव) शब्दना अर्थभा लाय—उपयोग लेवे ते शब्द के अर्थ में भाव का जोड़ना associating action or use with the meaning of a word “तद्धभावा श्रियोणेण” पंचा० ३, ४५,—मास पुं० (—मास) भासा, सोनुं, रुपुं लेखवानुं ८ रति लारनुं अर्थवग्न माशा, सुवर्ण तोलने का ८ रत्ती भर का एक

काट a measure of weight equal to eight Rattis, ( one, Ratti—about two grains) नाया० ५, भग० १८, १०;—लाभ पु० (—लाभ ) धनने लाभ, धननी प्राप्ति धन का लाभ, धन की प्राप्ति acquisition of wealth भग० ११, ११, नाया० १,—लाह पु० (—लाभ ) धननी प्राप्ति धन की प्राप्ति acquisition of wealth काप० १, ८,—लुब्ध त्रि० (—लुब्ध ) द्रव्यनी लालसावाणे, द्रव्यलुब्ध, द्रव्यने लेली द्रव्य का लोभी, द्रव्य की लालसा वाला greedy of wealth भग० १५, १,—वायग न० (—वाचक ) अर्थवाचक पद, जेम के वृक्ष छे, घट छे धत्यादि अर्थवाचक पद, जैसे वृक्ष है, घट है आदि a complete or inflected word expressive of a meaning विशेष० १००३,—वि त्रि० (—वित् ) शब्दार्थने ज्ञानुत्तर शब्दार्थ को जानने वाला knowing the meaning of words पि० नि० भा० १,—विणिच्छय पु० (—विनिश्चय ) पदार्थने—यथार्थ निश्चय पदार्थ का यथार्थ निश्चय correct and well-established meaning of scriptural words, categories etc “ बहुस्तुअं पञ्चवासिजा, पुच्छिज्जत्थविणिच्छय ” दस० ८, ४४,—व्यावण पु० (—व्यापन ) सर्व अर्थप्रत्ये व्याप्त धनार सब अर्थों में व्याप्त होने वाला pervading the whole Aitha 1 e meaning etc विशेष० ८६,—संयुक्त त्रि० (—संयुक्त ) अर्थसहित, सार्थक अर्थसहित, सार्थक accompanied with meaning “ विउल अत्थसंयुत्तं, कित्तइस्सं सुण्ह मे ” दस० ५, २, ४३,—संपदा स्त्री० (—सम्पदा ) धनने पैलव, धननी संपदा धन का वैभव, धन की संपदा.

opulence or magnificiance of wealth. विवा० १, नाया० ८, १३;—संपदाणं न० (—सम्पदान) अर्थ-धननुं दान देवु ते धन का देना, वन दान करना gift of wealth नाया० १६,—सत्थ न० (—शास्त्र ) अर्थशास्त्र; पैसो डेवी रीते बेगो धरवो तेनी रीति अतावनार शास्त्र. अर्थशास्त्र, धनसचय करने की रीति बताने वाला शास्त्र science of wealth, political economy सु० च० ४, ३१३, राय० २०६;—सत्थकुशल त्रि० (—शास्त्रकुशल ) अर्थशास्त्रमा कुशल—दुशीयार अर्थशास्त्र में निपुण-कुशल well-versed in political economy ज० प० ३,—सार पु० (—सार ) प्रधान धन; रोकड द्रव्य, सार द्रव्य, तत्त्वभाव प्रधान धन, नन्दमाल, रोकड धन cash money, essence नाया० २,—सिद्धि स्त्री० (—सिद्धि ) धार्थ सिद्धि. कार्यसिद्धि, मतलब का पूरा होना accomplishment of object गणि० प० १; नाया० ८,—सुरण त्रि० (—शून्य ) अर्थ-वगरनु, निरर्थक अर्थ रहित, निरर्थक, बिना मतलब का useless, meaningless. ठा० १, १;

अर्थश्रो अ० ( अर्थतम् ) अर्थनी अपेक्षाये, अर्थथी, अर्थ आश्री, अर्थरूपे अर्थ की अपेक्षा से, अर्थसे, अर्थरूप से In the form of meaning from the point of meaning “सो होइ अभिगमरुई, सुयनाण जेण अर्थश्रो दिट्ठ” उक्त० २८, २३, नाया० १; प्रव० ६७०,

अर्थश्रंग पु० ( घस्ताङ्ग ) धरनक्षेत्रना गध् थोनीसीना पदमा तीर्थरनु नाम भरत क्षेत्र का गत चौबीसी के १५ वे तीर्थकर का नाम, Name of the 15th Tirtha-inkara of Bharata Ksetra

in the past Chovisi. प्रव० २६२;  
अर्थगय. त्रि० ( अस्तङ्गत ) आथमेले; अस्त  
थेले। अस्तंगत; अस्त हो चुका हुआ Set;  
e.g. the sun, the moon etc  
“ अर्थगयामि आइसे, पुरथाय अणुगण ”  
दस० ८, २८;

अर्थत. व० कृ० त्रि० ( अस्तमयत् ) आथमते;  
अस्त थते-पामते अस्त होता हुआ.  
Setting. “ अर्थतमिय सूरमि, आहारेइ  
अभिवखण ” उत्त० १७, १६;

\* अर्थक. न० ( अनवसरे ) अवसर विना;  
वपत वगर. विना अवसर के, बेमौके.  
At an improper time, too early  
or too late. सु० च० २, ३८०;

अर्थगघ त्रि० ( अर्थघ्न ) अर्थनीहानि करनार  
अर्थ की हानि करने वाला. Destructive  
of Artha i.e. wealth etc. ओघ०  
नि० ३४;

अर्थगघरग. पुं० ( आस्थानगृहक ) ज्यो  
आवी देवता सुपे भेसे जेवां धर. ऐसा घर  
जहाँ देवगण आकर सुख पूर्वक बैठें. A  
house worthy of abode for  
gods. राय० १३६;

अर्थमण न० ( अस्तमन ) सूर्यनु आथमनुं  
ते: सूर्यनु अस्त थनुं ते सूर्य का अस्त होना  
The setting of the sun राय० ६२;  
जं० ५० ७, १३६; सम० १६;—मुहुत्त. न०  
(—मुहुत्त ) सूर्यास्त थवानु मुहुत्त-वपत  
सूर्यास्त होने का मुहुत्त-समय. time of  
sunset भग० ८, ८;

अर्थमय न० ( अस्तमय ) सूर्यवगेरेनुं अस्त  
थनुं—अदृश्य थनुं ते सूर्यादि का अस्त  
होना. Setting of the sun etc भग०  
२, १०;

अर्थमाण व० कृ० त्रि० ( आसीन ) भेसते;  
श्मशानादिमा पास करतो बैठता हुआ, श्मशा-

नादि में रहता हुआ. Sitting; residing  
in such places as a cemetery  
etc. “ तत्थ से अर्थमाणस्स, उवसणा-  
भिधारण ” उत्त० २, २१; भग० ७,  
१, ८, ४;

अर्थमिअ त्रि० ( अस्तमित ) अस्त पामेले;  
आथमेले; सूर्य आथमी गयेले. अस्त प्राप्त;  
अस्त हुआ. Set; e.g. the sun. वेय०  
५, ६; विशेष० १५६८; ओघ० नि० ५०७, सूय०  
१, २, २, १४;—उदिय. त्रि० (—उदित )  
जे आथमीने पाछा उग्या होय ते, अर्थात्  
हीनकुलमां जन्मी महत्पद भेणवुं होय  
ते, जेम हरकेशी मुनि अस्त होकर फिर  
उदय होने वाला; अर्थात् हीनकुल में उत्पन्न  
होकर महत्पद प्राप्त करने वाला, जैसे कि, हर-  
केशी मुनि. risen after having set;  
i.e. a person of low birth  
rising to greatness, like the sage  
Harakesī ठ० ४, ३,—अर्थमिय.  
त्रि० (—अस्तमित) आथमीने पुन. आथमेले  
होय ते अर्थात् हीनकुलमां उत्पन्न थध पुनः  
जेवा दुष्कर्म करेके मरीने दुर्गतिमां जाल्यो  
जय-जेम कालसुरियो कसार्थ अस्तंगत  
होते हुए फिर अस्त होना, अर्थात् हीन कुलमें  
उत्पन्न होकर फिर इस प्रकार के दुष्कर्म करना  
जिससे दुर्गति प्राप्त हो जैसे कालसूरिया नामक  
कसार्थ set once more i.e. a person  
born in a low family and ensur-  
ing the same kind of birth by  
evil actions like the butcher  
Kālasūriyā ठ० ४, ३;

✓ अर्थमे. धा० I ( अस्त+इण् ) आथमनुं;  
अस्तपामनुं अस्त होना. To set ( as  
opposed to “ to rise ” ).

अर्थमेइ प्रव० ५८८;

अर्थरग न० ( आस्तरक ) आच्छादन;

ओछाड आच्छादन, चादर A covering; a bed-cover. नाया० १, जीवा० ३, ४, भग० ११, ११,

अथरग त्रि० ( अस्तरजस् ) निर्मल; स्वच्छ निर्मल, स्वच्छ, साफ़. Free from dirt; pure. "अथरयमिडमसूरगोत्थयं" भग० ११, ११;

अथरण न० ( आस्तरण ) ओछाड आच्छादन, पर्दा. A covering; a bed-cover ओघ० नि० ७२;

अथरय न० ( आस्तरक ) जुओ। "अथरग" शब्द. देखो "अथरग" शब्द. Vide "अथरग." नाया० १; जीवा० ३, ४, भग० ११, ११; कप्प० ४, ६३;

अथर्वण पुं० ( अथर्वण ) अथर्वणनामे आर वेदमांने ओक वेद चार वेदों में से अथर्वण नामक एक वेद. the Atharvana Veda, one of the four Vedas "जाब अथर्वणकुसले यावि होत्था" विवा० १, ५, नाया० ५; १६, भग० ६, ३३;

अथसिद्ध पुं० ( अर्थसिद्ध ) जंयूदीपना औरावतक्षेत्रमां आवती उत्सर्पिणीमा थनार भीज्ज तीर्थंकर. जम्बूद्वीप के ऐरावतक्षेत्र में आगामी उत्सर्पिणी में होने वाले दूसरे तीर्थंकर The future second Tirthankara of the coming Utsarpini in the Airāvata Ksetra of Jambūdvīpa नाया० ८; सम० प० २४२, ( २ ) पक्षना दशमा द्विसनुं लोकोत्तर नाम. पक्ष के दसवे दिन का लोकोत्तर नाम name of the 10 th day of a fortnight in the Lokottara world "अथसिद्धे अभिजाते अजासक्ये य सतजए" सू० प० १०, १४, जं० प० ७, १४२;

अथा. स्त्री० ( आस्था ) जिनशासनप्रत्ये

पहुमानपणुं; आस्था; श्रद्धा जिनशासन के प्रति श्रद्धा रखना, आस्था रखना. Faith, reverence, e. g. for Jainism. जीवा० १;

अथाण. न० ( अस्थान ) अविषय; अप्रसंग. अप्रसंग. Anything inappropriate. विशेष० ६७१;

अथाण. न० ( आस्थान ) सभागृह, भेड्ड. सभागृह; सभास्थान. A council hall; a meeting-house सु० च० २, ३६६; ४, ३६,

अथाणी स्त्री० ( आस्थानी ) सभा; भेड्ड. सभा; बैठक. A meeting पिं० नि० ८८,

अथात्यमणपविभत्ति पुं० ( अस्तास्तमन-प्रविभक्ति ) जेमां चद्रमा, सूर्य आथमवाना दृश्य अताववाभां आदे ओवो ओक नाट्य प्रकार, देवताना अत्रीश प्रकारना नाटकमानो नवभो प्रकार. एक प्रकार का नाटक, जिसमें सूर्य, चंद्र के अस्त होने का दृश्य बतलाया जाय, देवताओं के वस्तीम प्रकार के नाटकों में से ६ वें प्रकार का नाटक A variety of drama exhibiting scenes of the setting sun and moon, the ninth of the thirty-two kinds of dramas of gods. राय० ६२,

अथाम त्रि० ( अस्थामन् ) शारीरिक अक्ष रहित, सामान्य शक्ति वगरना. शारीरिक बल से रहित, सामान्य शक्ति रहित Physically weak नाया० १, ८; १३, १६, १८; १६; भग० ७, ६,

अथावत्ति स्त्री० ( अर्थावत्ति ) प्रत्यक्षादि प्रमाण्यी जण्युयेल अर्थ जेना विना उपपन्न न थाय, तेवा अदृष्ट अर्थनी कल्पना कवी ते अर्थावत्ति, जेमा "पीनो देवदत्तो दिवा म भुक्ते" ओ वाक्यमा देवदत्तनुं पुष्टपणुं रात्रि भोजन विना उपपन्न नथी, तेथी रात्रिभोजननी

उपना थाय छे ते अर्थापत्ति. प्रत्यक्षादि प्रमाणों से परिज्ञात अर्थ जिसके बिना उपपन्न न हो ऐसे अदृष्ट अर्थ की कल्पना, जैसे मोटा ताजा देवदत्त दिन में नहीं खाता, परन्तु भोजन बिना मोटा ताजा हो नहीं सकता तो रात में अवश्य खाता होगा, ऐसी कल्पना करना अर्थापत्ति है. An inference used to account for an apparent inconsistency e. g from the sentence "Fat Devadatta does not dine by day" the inference is that he dines by night पिं० नि० ४५७; पंचा० ४, ३६,—दोस पुं० ( -दोष ) ज्यां अर्थापत्तिथी अनिष्टपणानी प्राप्ति थाय त्यां लागतो सूत्रनो ओक दोष जेम " ब्राह्मणो न हन्तव्य." अमुं सूत्र पांथ्यु होय तो ब्राह्मण न मारवो त्यारे अब्राह्मण-क्षत्रियादिकने मारवानु अर्थापत्तिथी आवी पडे छे, के जे अनिष्ट छे, माटे त्यां अर्थापत्तिदोष छे. सूत्र रचनामां ते दोष टागवो जेधये अर्थापत्ति से होने वाला दोष-सूत्रदोष, जैसे कि, " ब्राह्मणो न हन्तव्य. " अर्थात् ब्राह्मण को नहीं मारना चाहिए, यह एक सूत्र बनाया, परन्तु अर्थापत्ति से इसका यह अर्थ भी होता है कि, ब्राह्मण को नहीं मारना चाहिये पर क्षत्रियादि को मारना चाहिए, ऐसा अर्थ अनिष्टकारक होने से यह एक दोष है, जो अर्थापत्ति के कारण होता है, इस दोष को सूत्र रचना में न आने देना चाहिए a faulty construction of an aphorism involving by Arthāpatti, an undesired result e. g " a Brāhmana should not be killed", here the inference viz. a non-Brāhmana may be killed, is involved. पंचा० ४, ३६; अर्थाह त्रि० ( अस्ताव ) अगाध; धणु उडुं.

अगाध बहुत ऊंडा-गहरा. Very deep unfathomable. भग० १, ६; ७, १; नाया० ६, १४; १६, पिं० नि० ३३२, अर्थाहिंगार पुं० ( अर्थाधिकार ) प्रकरण वगेरेनु अभिधेय-विषय; उपक्रमनो ओक भेद. प्रकरण वगेरह का विषय. उपक्रम का एक भेद. The subject or topic of a chapter etc; a sub-division of Upakrama. " अहवा उवक्कमे छुविहे परणत्ते, तंजहा-आणुपुव्वी नामं पमायं वतच्चया अर्थाहिंगारे, समोआरे " अणुजो० ७०, ५८;—जाणअ. त्रि० ( \*-ज्ञायक ) अर्थनुं स्वरूप परापर समजनार ओटले सुधी के ते अर्थना उपयोगमां तन्मय पनी जय; दाभला तरीके ओक भाणुस ' धर्म ' शब्दना अर्थमां उपयोगवंत होय, धर्मनुं स्वरूप परापर समजतो होय तो ते भाणुसने शब्दादि नयवाणा धर्म तरीके ओणजे अथवा ' धर्म ' कही ओलावे. अर्थ का स्वरूप यहाँ तक ठीक ठीक समझने वाला कि, उस अर्थ के उपयोग में तन्मय हो जाय; उदाहरणार्थ एक मनुष्य " धर्म " शब्द के अर्थ में इतना उपयोग वाला हो और वह धर्म का स्वरूप इतना ठीक ठीक समझता हो कि, उस मनुष्य को शब्दादि नय वाले धर्मरूप ही समझें और " धर्म " कह कर उसे बुलावें. ( one ) thoroughly knowing the meaning and so much absorbed in it that he is unable to perceive any thing else properly. अणुजो० १४८; अतिथि अ० ( अस्ति ) छे, विद्यमान; ६या-तिमां. है, विद्यमान, मौजूद. Being; existent, so it is. " अतिथयं भंते, जीवाण पाणाइवाणुणं किरिया कज्जइ " ओव० ३४; भग० १,



१, ६, १०, २, १; ३, २, ५, ६, १८, ३, दस०  
५, २, २७; १०, १, ७, अणुजो० ८०; सू०  
प० २०; नाया० १, २, ८, १४, १६; ( २ )  
पुं० धर्मास्तिकाय आदिना प्रदेश-सूक्ष्म  
अंश धर्मास्तिकाय आदि का प्रदेश. atomic  
portions of Dharmāstikāya etc  
( ३ ) पन्नवणा सूत्रना त्रीज पदना ओडपीस-  
मा दारनुं नाम, जेभां धर्मास्तिकाय आदि  
छ द्रव्यनुं अल्पायुतु दशांयुं छे पन्नवणा  
सूत्र के तीसरे पद के २१ वें द्वार का नाम,  
जिसमें धर्मास्तिकायादि छः द्रव्यों का अल्पा-  
बहुत्व दिखाया गया है name of the  
twenty-first Dvāra of the third  
Pada of Pannavanā dealing  
with the six substances such as  
Dharmāstikāya etc पन्न० ३;

अस्थि त्रि० ( अर्थिन् ) धनिक; श्रीमत  
धनवान् A wealthy man पचा० १०, २६,  
( ४ ) सूत्र अने अर्थने ज्ञानार गुरु  
सूत्र और अर्थ को जानने वाला गुरु ( one )  
knowing a Sūtra and its mean-  
ing, e. g. a preceptor विशेष० १४४६,

अस्थि न० ( अस्थि ) हड्डी हड्डी The bone  
प्रब० १३८४, —खंड न० (—खण्ड) हड्डिनी  
डडडी हड्डी का टुकड़ा. a piece of bone  
प्रब० १३८४, —मिज्ज न० (—मज्जा)  
हड्डी भिन्न हड्डी की मज्जा the marrow  
of the bones दसा० १०, ८,

अस्थिअ त्रि० ( अस्तिक ) श्रव, अश्रव, स्वर्ग,  
नरक, मोक्ष आदिने मानवावाणो; अस्तिक  
जांव, अजीव, स्वर्ग, नरक, मोक्ष आदि का अस्तित्व  
मानने वाला, आस्तिक ( One ) believing  
in the existence of soul, heaven,  
hell, absolution etc डा० ४, ६,

अस्थिअ त्रि० ( अर्थिक ) धृष्टिवाणु, अर्थी;  
लाभयु, इच्छा वाला; अर्थी, लालची Desir-

ous of; covetous of ओव० ३२;  
अस्थिअ. पुं० ( अस्थिक ) अलुभीजवाणु वृक्ष-  
विशेष, अगस्थियानुं आऽ बहुबीज वाला वृक्ष-  
विशेष. A kind of tree with many  
seeds ( २ ) न० ते आऽनां इल बहुबीज  
वाले वृक्ष का फल a fruit of the above-  
said tree दस० ५, १, ७३, जीवा० १;  
पन्न० १, भग० २२, ३;

अस्थिउद्देश्य. पुं० ( अस्त्युद्देशक ) भगवती  
सूत्रना २० भा शतकना पीज उद्देशानुं नाम.  
भगवती सूत्र के २० वें शतक के दूसरे उद्देश  
का नाम Name of the second Udd-  
eśā of the twentieth Śataka  
of Bhagavatī Sūtra भग० २०, २;

अस्थिकाय पु० ( अस्तिकाय ) धर्मास्तिकाय  
आदि पांच द्रव्य, अस्तित्व-प्रदेश, काय-समूह-  
प्रदेशना समूह रूप काण शिवायना पांच द्रव्य,  
तेभा यार अश्रव अने ओड श्रव धर्मास्तिकाय  
आदि पांच द्रव्य, अस्तित्व-प्रदेश, काय-समूह  
प्रदेश के समूह रूप काल द्रव्य के सिवाय अन्य  
पांच द्रव्य, जिनमे चार अजीव और एक  
जीव है. One of the five embodied  
substances viz Dharma, Adha-  
ma, Ākāśha, Pudgala and  
Jīva “ चत्तारि अस्थिकाया अजीवकाया  
पञ्चत्ता तंजहा—धम्मस्थिकाए अधम्मस्थिकाए  
आगासस्थिकाए पोगलस्थिकाए ” डा० ४,  
४, सूय० २, १, २३, पन्न० १५; सम० ५;  
भग० २, १, १०, ७, ६, २५, ४, —धम्म  
पुं० (—धर्म) अस्तित्वरूप धर्म, गतिभां  
सहाय करनार धर्मास्तिकारूप द्वाभर्ग  
अस्तिकाय रूप धर्म, गति में सहायता करने  
वाला धर्मास्तिकाय रूप द्रव्यधर्म. a sub-  
stance which is the medium of  
motion to soul and matter.  
डा० १०, प्रब० ६७४,



अस्थिक न० ( अस्तिक्य ) अस्तिक्यपणुं, ७५, अ७५, स्वर्ग, नरकादिने मानवां ते. अस्तिकपन; जीव, अजीव, स्वर्ग, नरक आदि का मानना Belief in the existence of soul, non-soul, heaven etc. पंचा० १०, ६;

अस्थित्त. न० ( अस्तित्व ) अस्तित्व; विद्यमानपणुं; होवापणुं, हयाती मौजूदगी, विद्यमानता Existence. “से गणुं भंते । अस्थित्तं अस्थित्ते परिणामह ” भग० १, ३;

अस्थिनस्थिपञ्चाय पुं० ( अस्तिनास्तिप्रवाद ) अस्तित्नास्ति नामनो योथोपूर्व; यौधपूर्व-शास्त्रमांनु ओ३, जेमां अस्तित्व, नास्तित्वनुं विवेचन हतुं; ह्यक्ष तेनो विच्छेद थयेल छे. अस्ति नास्ति नामक चौथा पूर्व, चौदह पूर्वों में से एक पूर्व, जिसमें अस्तित्व, नास्तित्व का विवेचन था हाल में उसका विच्छेद हो गया है. The fourth Pūrva of the scriptures; one of the fourteen Pūrvas dealing with existence and non existence It is no longer extant; सम० १४; १८; नंदी० ५६, प्रव० ७१६;

अस्थिनिऊर पुं० ( अर्थनिपूर ) लुओ “अस्थ णिउर ” शब्द. देखो “ अस्थणिउर ” शब्द. Vide “ अस्थणिउर. ” अणुजो० ११५, भग० ५, १,

अस्थिनिऊरंग. न० ( अर्थनिपूराङ्ग ) लुओ “अस्थ णिउरंग ” शब्द देखो “ अस्थणिउरंग ” शब्द Vide “ अस्थणिउरंग. ” भग० ५, १; अणुजो० ११५;

अस्थिभाव पुं० ( अस्तिभाव ) विद्यमानपणुं; अस्तित्व विद्यमानपन; अस्तित्व. Existence; ( २ ) सत्पदार्थ; विद्यमान वस्तु. सत्पदार्थ, विद्यमान वस्तु. an existing thing भग० ७, १०; ओव० ३४;

अस्थिया. स्त्री० ( अस्तित्ता ) अस्तित्व; होवा पणुं मौजूदगी; अस्तित्व. Existence. विशेष० १७२१;

अस्थिर त्रि० ( अस्थिर ) अपरिचित. अपरिचित; बिना पहिचान का. Unacquainted, unfamiliar “अस्थिरस्स पुम्बगहियस्स वत्तणा जं इह धिरीकरण ” पंचा० १२, ४५; ( २ ) अटडाडि; आजो वपत आले नडि ओवुं. ज्यादह समय तक न टिक सकने वाला. not lasting. भग० १, ६;—छुक्क. न० (—पट्क ) अस्थिर, अशुभ, दुर्भग, दुःस्वर, अनादेय अने अयशकीर्ति ओ नाम कर्मनी छ प्रकृतियोनो समुदाय. अस्थिर, अशुभ, दुर्भग, दुःस्वर, अनादेय और अयशःकीर्ति इन नाम कर्म की छः प्रकृतियों का समुदाय. the group of the six varieties of Nāmakarma viz. Asthira, Aśubha, Durbhaga, Dusvara, Anādeya and Ayaśakīrti क० गं० १, २८;—णाम. न० (—नामन् ) जेना उदयथी कान, आंख वगैरह शरीर के अवयव स्थिरता रहित हों. a variety of Nāmakarma maturing into unsteadiness of eyes, ears etc क० गं० ५, ६;—तिग. न० (—त्रिक ) अस्थिर नाम, अशुभ नाम अने अयशकीर्ति नाम ओ त्रलु नाम कर्मनी प्रकृति अस्थिर नाम, अशुभ नाम और अयशःकीर्ति नाम ये नामकर्म की तीन प्रकृतिया the group of the three varieties of Nāmakarma viz Aśubhanāma, Ayaśakīrtināma and Asthiranāma क० प० २, १०२,—दुग न० (—द्विक ) अस्थिर

नाम अने अशुभनाम ये नामकर्मनी ये प्रकृति अस्थिरनाम और अशुभ नाम ये नामकर्म की दो प्रकृतिया. the group of the two varieties of Nāma-karma viz Asthira-nāma and Aśubhanāma. क० गं० २, ७,

अस्थिवाय पु० ( अस्थिवाद ) सत्पदार्थोंनुं अस्तित्व स्थापन-येस अत्मा छे, कर्म छे, मोक्ष छे, मेक्षनो उपाय छे धत्यादि सत् पदार्थोंनुं सत्त्व अने शशशृंग, अपुष्प आदि असत्पदार्थोंनुं असत्त्व स्वीकारयु ते. सत्पदार्थों का अस्तित्व स्थापन करना, जैसे कि, आत्मा है, मोक्ष है, कर्म है आदि सत्पदार्थों का सत्त्व और आकाशकुसुम, बंध्यापुत्र आदि असत्पदार्थों का असत्त्व स्वीकार करना Doctrine accepting the existence of realities like soul, Karma, absolution etc “अस्थि लोए अलोए वा, रोच सत्त निवेसए। अस्थि लोए अलोए वा, एवं सत्त निवेसए” सूय० २, ५, १२;

अस्थुय त्रि० ( अस्तुत ) भि० वेदु विद्याया हुआ. Spread विशेष० २३२१, नाया० १३, १७,

✓ अस्थुव धा० I - ( अस्तु- ) भि० वपुं, पथरी पाथरवी विद्याना, विस्तर करना To spread, e.g. a bed.

अस्थुवइ क० वा० विशेष० २३२१,

अस्थुवत व० कृ० विशेष० २३२१,

अस्थेगइअ-य त्रि० ( सन्त्येकक ) छे डेटला ओक हैं कुछ Some there are “अस्थे गइया समाउया समोववरणगा अस्थेगइया समाउया विसमोववरणगा अस्थेगइया विसमाउया समोववरणगा अस्थेगइया विसमाउया विसमोववरणगा” भग० १, २, १६, ३;

अस्थेगइअ-य त्रि० ( अस्त्येकक ) छे डेटला ओक, गमे ते डेटला ओक. है कोई एक, कोई भी

एक One there is; some one. भग० २, १, ३, ३; ५, ४, ६, ५; न०, १०, १८, ८, २०, १; न०, २६, १, नाया० १, १५, १६; जं० प० ५, १२७,

अस्थेरय. पुं० ( आस्तरक ) भि० जानुं विस्तर. A bed नाया० १;

अथ अ० ( अथ ) प० ११; पश्चात्; आ० पीछे, पश्चात् Afterwards. सू० प० १०; अथव्वणवेय पुं० (अथर्वणवेद) लुओ “अथव्वण ” शब्द देखो “अथव्वण ” शब्द. Vide “अथव्वण ” भग० ६, ३३; नाया० ५; कप्प० १, ६,

अथिर त्रि० ( अस्थिर ) लुओ “अथिर ” शब्द देखो ‘अथिर’ शब्द Vide ‘अथिर’ सूय० २, ६, २, सम० २८; भग० १, ६, सु० च० १०, ६५, पञ्च० २३, क० गं० १, २७, २, ३२,—आसण न० (—आसन ) डालतु आसन हिलता हुआ आसन. an unsteady seat “अथिरासणो कुक्कुइए, जत्थ तत्थ निसीयइ ” उक्त० १७, १३,

अदंड पु० ( अदण्ड ) हिंसा वगेरे दंडो अलाव, मन, वचन अने कायाना प्रशस्त योग; हिंसा वगेरह के दंड का अभाव, मन, वचन और काया का प्रशस्त योग Absence of such sins as killing etc, pure, sinless operations of mind, speech and body “एमे अदंडे ” सम० १, ( २ ) दंड-सज्जतो अलाव सजा का अभाव. absence of punishment भग० १३, ११, —कुदंडिम न० (—कुदण्डिम ) लुओ “अदंडकोदंडिम ” शब्द देखो ‘अदंडकोदंडिम’ शब्द vide ‘अदंडकोदंडिम’ भग० ११, ११;—कोदंडिम. त्रि० (—कुदण्डिम—दण्डलभ्य द्रव्य दण्ड, कुदण्डेन निर्दुत्त कुदण्डिमं तज्जास्ति यत्र तत्तथा ) अपराध प्रमाणे दंड ते दंड, अपराध करतां ओछो.

पतो दंड ते कुदंड, आ यनेनो जयां अभाव  
होय ते अपराध के अनुसार दंड, दंड कहलाता  
है और कमता बढ़ता कुदंड कहलाता है, इन  
दोनों का जहाँ अभाव हो वह. absence  
of disproportionate punishment.  
“ अभद्वप्पवेसं अदंडकोदंडिम ” भग० ११,  
११, जं० प० ३, ६८, कप्प० ५, १०१;

अदंतधुवणय न० ( अदन्तधावनक ) लुओ।  
“ अदंतवण ” शब्द देखो “ अदंतवण ”  
शब्द. Vide “ अदंतवण ” “ अण्हाणय  
अदंतधुवणय अच्चत्तयं ” भग० १, ६,  
अदंतवण त्रि० ( -अदन्तवन-अदन्तधावन )  
दंतधावन-दातवु डरवानो जेभा निषेध छे ते;  
दंतधावन-दत्त करने का जिसमे निषेध है  
वह Prohibiting the cleansing of  
teeth ठा० ६;

अदंसण न० ( अदर्शन ) दर्शननो अभाव;  
आभेडरी न जेवु ते दर्शन का अभाव; आँखों  
से न देखना Not seeing; not being  
seen “ अदसण चव अपत्थण च ” उक्त०  
३२, १५, (२) त्रि० दर्शन-दृष्टि विना; नो, आध-  
णो दृष्टि रहित, अंधा blind (३) थिणद्धि  
निद्राना उदयवाणो थिणद्धि निद्रा के उदय  
वाला one overpowered by Thina-  
ddhi Nidrā, a somnambulist (४)  
दर्शन-समझित वगरनो, मिथ्यात्वी सम्यक्त्व  
रहित, मिथ्यात्वी heretic प्रव० ७८७.

अदंसणिज्ज त्रि० ( अदर्शनीय ) जेवा लायड  
नहि, न देण्वा योग्य देखने के अयोग्य  
Unfit to be seen “ कयरे तुम ह्य  
अदंसणिज्जे ” उक्त० १२, ७;

अदक्ख त्रि० ( अदत्त ) अणुसमजु. वे  
समझ, मूर्ख Stupid, foolish पि० नि०  
१०६;

✓ अदक्खु धा० I ( दृश् ) देण्वा, जेवु देखना.  
To see, to observe

अदक्खु. भ० प्र० व० “ अदक्खुकामाह  
रोगव ” सूय० १, २, ३, २, भग० ५,  
४, १६, ३;

अदक्खु. त्रि० ( अदृष्ट ) अर्वाग्दर्शन; दुंदी  
दृष्टि अर्वाग्दर्शन, संकुचित दृष्टि. Shortness  
of vision “ अदक्खु व दक्खु वाहिं ”  
सूय० १, २, ३, ११,

अदक्खु. त्रि० ( अपश्य-पश्यतीति पश्यो न  
पश्याऽपश्य ) अन्ध; आंधणो अन्धा.  
Blind सूय० १, २, ३, ११;

अदक्खु त्रि० ( अदक्ष ) अनिपुण; कुशल-  
होशियार नहि ते चातुर्य रहित; निपुणता  
रहित Inexpert, not proficient.  
सूय० १, २, ३, ११,—दंसण. त्रि०  
( -दर्शन ) असर्वज्ञशासनना अनुयायी;  
अन्यमति, अन्यदर्शनी असर्वज्ञ द्वारा प्र-  
पित शासन का अनुयायी; अन्यमतावलम्बी  
following a creed founded by  
non-omniscient persons, non-  
Jaina “ सहसु अदक्खुदंसणा ” सूय०  
१, २, ३, ११;

अदक्खुव त्रि० ( अपश्यवत् ) अंधतुल्य;  
आधणा जेवो; कार्यकार्य न ज्ञानार अंधे के  
समान, कार्यकार्य न जानने वाला Like a  
blind man, without discrimi-  
nation सूय० १, २, ३, ११;

अदच्चा. सं० क० अ० ( अदत्त्वा ) दान कर्था  
विना; नहि आपीने दान किये बिना, बिना  
दिये Without having given in  
in charity. ठा० ३, २;

अदत्त. त्रि० ( अदत्त ) अणुदीधुं, दीधा  
वगरनु, अणुदीधेणु बिना दिया हुआ. Not  
given उक्त० ३२, २६, परहं० १, ३;  
भग० ८, १;—आदाण न० ( -आदान )  
लुओ ‘अदिरणादाण’ शब्द देखो ‘अदिरणाः’

दाण" शब्द. Vide "अदिण्यादाण". ठा० १, १,—आहार पु० (—आहार) दीधा विना नु हरनार—योरनार, योर बिना दिये ग्रहण करने वाला, चोर a thief "अदत्ताहारो वा से अवहरंति रायाणो वा से विलुपति" आया० १, २, ३, ८०,—हरं त्रि० (—हर) अथुदीधु हरनार—योरनार बिना दिये लेने वाला, चोर. (one) who steals; one who takes away without being given. उत्त० ७, ५,

**अदम्भ** त्रि० ( अदम्भ ) अनल्प; धर्तु; अति अनल्प; अल्प नहीं हो वह, बहुत Not little, much, excessive जं० प०—वाह त्रि० (—वाह—अदम्भमन्त्रं बहतीत्यदम्भवाह ) धर्तु। ओओ उपाडी ननार—धोडा वगेरे बहुत भार उठाने वाला—घोडा, गधा आदि carrying heavy load, e g horses etc "अदम्भवाहं भ्रमेत्तनयणको कासियबहलपत्तलच्छं" जं० प०

**अदाउं** सं० कृ अ० ( अदात्वा ) न आपीने न देकर. Having not given, without having given पचा० १५, ३६;

**अदारुय** त्रि० ( अदारुक ) लाडला वगरनु, काष्ठरहित काष्ठरहित Without wood, devoid of wood. तंडु०

**अदिह** पु० ( अदिति ) लुओ "अइह" शब्द देखो 'अइह' शब्द. Vide 'अइह' सू० प० १०, **अदित** व० कृ० त्रि० ( अददत् ) नहि आपतो नहीं देता हुआ Not giving "तस्सावि संजमो सेओ, अदितस्स भि किंचणं" उत्त० ६, ४०, दस० ५, २, २८,

**अदिज्ज** त्रि० ( अदेय ) न देवा येअ. न देने योग्य Unfit to be given पि० नि० ५६५; ( २ ) न्यां लेती देती करवानी मना

करवाभां आवी होय तेनुं नगर वगेरे ऐसा नगर वगैरह जहाँ लेन देन करने की रोक टोक की गई हो ( a city etc ) in which exchange is prohibited भग० ११, ११, कप्प० ५, १०१,

**अदिज्जमाय** त्रि० ( अदीयमान ) नहि अपातुं, न देवातुं. नहीं दिया जाता हुआ. Not being given पि० नि० ५०८,

**अदिहं** त्रि० ( अदष्ट ) नहि जेओलुं; नहि जेओलु नहीं देखा हुआ, नहीं जाना हुआ. Unseen, unknown सूय० २, ७, ३८, भग० १, ६, ३, ७, १८, ७, ( २ ) न० पूर्व-जन्मना कर्म पूर्वजन्म का कर्म Karmas of the past life नदी०—दोष. त्रि० (—दोष ) जेतो डाध होय जेवामा न आओ होय ते जिसका कोई दोष देखने में नहीं आया हो वह ( one ) whose fault is not seen, free from any fault brought to notice नाया० १६, —धम्म पु० (—धर्म ) जेओ श्रुतधर्म के आरित्रधर्म ओणओ नथी ते जिसने श्रुत-धर्म या चारित्रधर्म नहीं पहिचाना वह. one not familiar with principles of scriptures or of right conduct. "अदिहधम्मे विणए अकोविण" दस० ६, २, २३, दसा० ४, ७७,—**फल** त्रि० (—फल ) जेतु प्रयोजन जेवामा न आओ होय ते जिसका प्रयोजन देखने में न आया हो वह of unseen purpose. "दिट्ठादिष्टफलमेयं" पंचा० ७, २१, —**लाभिअ**—य पु० (—लाभिक) पूर्वे नहि जेओल—अपरिचित दत्तार आपे तो न लेवुं ओवा अभिग्रहणी गवेपणा करनार ( साधु ). अपरिचित दाता दे तो ही लेना, इस प्रकार के अभिग्रह से गवेपणा करने वाला ( साधु ). one, e g a Sādhu in quest of

alms with a vow to accept them from strangers only. ओव० १६; परह० २, १,—सेवक पुं० (—सेवक) देशपार थयेव सेवक; स्वामिने भों न पतावनार सेवक. देश से निकाला हुआ सेवक; मालिक को मुख न दिखाने वाला नौकर. an exiled servant. “ तं गच्छतु खं देवाणु-प्पिया ! पंच पंडवा दाहिणिहं वेयालं तत्थ पंडु महुरं णिवेसंतु ममं अदिद्वेसेवगा भवंतुत्ति-कट्टु ” नाया० १६;—हड त्रि० (—हन) दीक्षवगर अणुणु डरेव विना देखे लिया हुआ accepted without being seen. आव० ४, ५;

अदिरण. त्रि० ( अदत्त ) स्वामी, तीर्थंकर के गुरुनी रज विना लीधेनुं; अणुदीवेनुं. स्वामी, तीर्थंकर अजवा गुरु की आज्ञा बिना लिया हुआ Not given, got without the permission of a preceptor, Tirthāṅkara etc. “ अदिरणे सेवि अवि-वित्तए ” ओव० ३४; “ अदिरण भुजामो ” “ अदिरण साइजामो ” भग० ८, ७, ओव० ३४, अदिरणादान न० ( अदत्तादान ) अदत्तादान; अणुदीधेनुं लेवु ते, चोरी, पापनुं त्रीज्जु स्थानक. बिना दिया हुआ लेना, चोरी, पाप का तीसरा स्थानक Theft, the third Sthānaka of sin. सम० २१, ओव० ३४; परह० १, ३; वेय० ६, २; नाया० १, ५, भग० ८, ५; १२, ४, १६, ३, दसा० २, १५, १६, पन्न० २२,—वत्तिय पुं० (—प्रत्ययिक—अदत्तादानं रतेयं तत्प्रत्ययिको द-ण्डस्तथोत्त) अदत्तवस्तु अणुणु डरेवाथी अत्मा होय ते, तेर कियास्थानकमानु सातमु किया-स्थानक. अदत्तवस्तु ग्रहण करने से आत्मा का दंडित होना, तेरह कियास्थानकों में से सातवों कियास्थानक. sin incurred by the soul for dishonest gain, theft

etc: the seventh of the thirteen Kriyāsthānakas. “ अहावरे सत्तमे कि-रियाठाणे अदिरणादाणवत्तिवृत्ति आदिज्जइ ” सूय० २, २, १५, सम० १३;—विरइ. त्रि० (—विरति) अदत्तादाननी निवृत्ति; अदत्त वस्तु अणुणु डरेवातो त्याग अदत्तवस्तु ग्रहण करने का त्याग, abstaining from taking things not given; abstention from dishonest gain. महा० प० ७,—वेरमण न० (—विरमण) अदत्त वस्तु लेवातो त्याग, त्रीज्जुं व्रत, ते जे स्थूल विरमणु होय तो आवडनुं त्रीज्जुं अणुव्रत अने सर्वथा विरमणु होय तो साधुनुं त्रीज्जुं महाव्रत अदत्तवस्तु लेने का त्याग; तीसरा व्रत, यदि स्थूल विरमण रूप हो तो आवक का अणुव्रत होता है और सर्वथा विरमण रूप हो तो साधु का तीसरा महाव्रत होता है. the third vow viz abstention from taking things not given; abstention from dishonest gain, partial in the case of a layman and total in that of an ascetic. परह० २, ३,

अदिति पु० ( अदिति ) लुओ “ अइइ ” शब्द देखो “ अइइ ” शब्द Vide “ अइइ. ” अणुजो० १३१, जं० ५०७, १५७, अदिज्ज. त्रि० ( अदत्त ) लुओ “ अदिरण ” शब्द देखो “ अदिरण ” शब्द. Vide “ अदिरण. ” आया० १, ७, १, १६६, भग० १, ६, ६, निस्ती० ४, १७, भत्त० १०४;

अदिज्जवित्ति. त्रि० ( अदत्तवृत्ति ) प्रेताने के परने अर्थे अणुदीधु लेवनी वृत्ति; सातमु किया स्थानक. अपने या औरों के लिये बिना दिया हुआ लेने की वृत्ति, सातवों कियास्थान-क The - 7th Kriyāsthānaka ( source of incurring Karma )



viz desire or inclination to take  
( for oneself or for another )  
what is not given. प्रव० ८३३;

अदिज्ञादान. न० ( अदत्तादान ) लुओ “अदि-  
ज्ञादान” श०६. देखो “अदिज्ञादान” शब्द  
Vide “अदिज्ञादान.” दस० ४, आव०  
४, ७, आया० १, १, ३, २६,—चित्त. न०  
(—प्रत्ययिक ) सातमु क्रियस्थानक, अद-  
त्तादान—चोरी करवायी, कराववायी अने करतां  
रुहुं लाववायी लागती क्रिया सातवों क्रिया-  
स्थानक; अदत्तादान—चोरी करने, कराने और  
करते हुए का अनुमोदन करने से होने वाला  
कर्मबंध. Karma incurred by  
committing theft, causing an-  
other to commit theft or  
approving of theft. सम० १३,  
सूय० २, २, १५;

अदिस्स. त्रि० ( अदृश्य ) देखाय नहिं आये,  
अदृश्य. अदृश्य; नहीं दिख सके ऐसा.  
Invisible “ पच्छिमे आहारनीहारे, अ-  
दिस्से-मंसचक्खुणा” सम० ३४, “अदिस्साण  
च भूयाणं, आसीं तत्थ समागमो” उक्त० ३३,  
२०, प्रव० ४४७, विशेष० १७४६, सु० च० ३, ३१,  
अदिस्समाण त्रि० ( अदृश्यमान ) जेवामां  
न आयु. दिखो में नहीं आता हुआ  
Being unseen, invisible आया०  
१, २, ५, ८८,

अदीण. त्रि० ( अदीन ) दीनता—गरीबी  
रहित दीनता रहित. Not poor “सीलवंता  
सविसेसा, अदीणा जति देवयं” नाया० ८;  
दस० ५, २, २६; ओष० नि० ५३७; उक्त० ७, २१  
—चित्त. त्रि० (—चित्त ) भेडाटा मनवाणो;  
प्रसन्न चित्तवाणो उदार मनवाला; प्रसन्न चित्त-  
वाला magnanimous, of a blithe,  
sanguine temper; cheerful.  
पंचा० १८, ३६;—मणस. त्रि० (—मनस् )

भेडाटा मनवाणो; प्रसन्न मनवाणो उदार मन  
वाला; प्रसन्न मनवाला magnanimous;  
high-minded; of blithe, sangui-  
ne spirits. “ मायजे असणराणस्स,  
अदीणमणसो चरे” उक्त० २, ३,—चित्ति  
त्रि० (—वृत्ति ) दीनवृत्ति पगरनो. दीनवृत्ति  
रहित. not-mean or poor in spirits.  
दस० ६, ३, १०;

अदीणसत्तु पुं० ( अदीनशत्रु ) कुरुदेशना  
हरितनागपुर नगरना राजानु नाम कुरुदेश  
के हस्तिनागपुर नगर के राजा का नाम Name  
of a king of Hastināgapura, a  
city of the country called  
Kuru. “ अदीणसत्तुस्स रणणे धारणी  
पामोक्खाणं देवीसहस्स ओरोहेयावि होत्था”  
विवा २, १, ठा० ७, १, नाया० ८, ( २ ) पु०  
२२ भा तीर्थकरना त्रीण पूर्वजवनु नाम २२ वें  
तीर्थकर के तीसरे पूर्वज का नाम name  
of the third past birth of the  
twenty-second Tirthankara.  
सम० ५० २३०, ( ३ ) यप नगरीना जित-  
शत्रुराजने अदीणशत्रु नामे युवराज—कुमार  
चंपा नगरी के जितशत्रु राजा के युवराज का  
नाम name of the hen-apparent  
of Jitasātru, king of Champā  
city. नाया० १२,

अदु अ० ( अथ ) पछी, पश्चात्, बाद  
पीछे, पश्चात्, अनन्तर, बाद Afterwards  
“ अदु पोरासि तिरियं भित्ति” आया० १,  
६, १, ५, सूय० १, २, २, २,

अदुक्ख न० ( अदुःख ) दुःखता अभाव.  
दुःख का अभाव. Absence of misery.  
भग० १, १०,

अदुक्खणया स्त्री० ( अदुःखनता—अदुःख )  
दुःखी न थवु ते, दुःख न वेदुं ते. दुःखी  
न होना. Not suffering misery.



non-endurance of misery. भग० ७, ६;

अदुःखमसुहा स्त्री० ( अदुःखसुखा ) जेभां दुःख नथी तेमन् सुख नथी ओवी स्थिति ऐसी स्थिति जिसमें दुःख, सुख न हो. A feeling free from pain as well as pleasure. “नेरइयाण भते! किं दुःखं वेयणं वेयंति सुहं वेयणं वेयति अदुःखमसुहं वेयणं वेयंति ? ” भग० १०, २;

अदुःखावणया स्त्री० ( अदुःखापना-अदुःखापन ) डाधने दुःख न आपनुं ते; डाध दुःखी थाय ओवां साधने उभा न करवा ते किसीको दुःख न देना; ऐसे सावन खडे न करना जिनसे किसीको दुःख हो Not giving pain to any body, non-injury. भग० ३, ३;

अदुःखिख त्रि० ( अदुःखिन् ) सुखी; दुःखथी रहित सुखी, दुःखसे रहित Not miserable, happy. भग० ७, १; १४, ४,

अदुगुच्छिद्य-अ त्रि० ( अजुगुप्सित ) अनिन्दित; उत्तम अनिन्द्य; उत्तम Such as would not excite disgust or censure, excellent. “कुलेसु अदुगुच्छिद्यसु ” आया० २, १, २, ११,

अदुद्व त्रि० ( अदुष्ट-अद्विष्ट ) द्वेष-अद्वेषाध रहित द्वेष-ईर्ष्या रहित Not envious or jealous परह० २, १,

अदुद्व त्रि० ( अदुष्ट ) दोषरहित; दोष-पाप वगरने दोषरहित Free from fault or

sin. दस० ७, ५५, परह० २, १; पंचा० ४, ३६, जं० प० २, ३१,

अदुत्तरं. अ० ( अथोत्तरम् ) † अथवा; एवं पक्षी. † अथवा, इसके बाद × Or, hence forward.

“अदुत्तरं चणं गोयमा । पभूणं चमरे असुरिंदे ” भग० ३, १, ७, ६, अदुत्तरं चणं मम समया निगंथा ” नाया० १; २, १६, जं० प० २, ३६;

अदुत्तरंचणं अ० ( अथोत्तरंचणं ) लुओ। “अदुत्तरं ” शब्द देखो “अदुत्तरं ” शब्द.

Vide “अदुत्तरं ” भग० ३, १, ७, ६,

अदुयं. अ० ( अद्रुतम् ) विलंबे; उतावणे नहि विलंब पूर्वक, शीघ्रतासे नहीं Without haste. भग० ७, १, परह० २, १;

अदुयत्त न० ( अद्रुतत्व ) सत्य वयनना उप अतिशयमानो २७ भो अतिशय सत्य वचन के ३५ अतिशयो मे से २७ वॉ अतिशय. The twenty-seventh of the thirty-five Atisayas or supernatural manifestations of truthful speech सम० ३५,

अदुवा अ० ( अथवा ) अथवा, या या, अथवा Or (an alternative conjunction).

दस० ५, १, ७५, ६, २, भग० २, ३; ११, १; २१, १, ३५, १, उत्त० १, १७, २, १२, आया० १, १, ३, २६; १, ६, २, १८३; १, ६, ४, १६१, सूय० १, ४, १, २१, दसा० ६, ७;

अदुस्समाणा व० क० त्रि० ( अद्वेष्यत् ) द्वेष नहि करतो. द्वेष नहीं करता हुआ Not hostile, not hating. सूय० १, १२, २२;

† नोट—टीकाकारे “अथापरम्” जेभ सस्कृत अनुवाद कर्योछे. पण तेना करतो “अथोत्तरम्” भा वलु साधर्म्य वधारे होवाथी तथा अर्थ पण वधारे अंध जेसतो होवाथी ते स्वीकार्य छे

+ नोट—टीकाकारने ‘अथापरम्’ इस प्रकार सस्कृत पर्याय दिया है, परन्तु उससे ‘अथोत्तरम्’ में वर्णसाधर्म्य अधिक होने से तथा अर्थ भी अधिक संगत होने से ऐसा किया है.

× Note—This appears preferable to the commentator’s rendering “अथापरम्.”

**अदूर** त्रि० ( अदूर ) पासैनु, नज्दीकं समीप-  
वर्ती; नज्दीक का Not far off, in the  
vicinity कप्प० ४, ६३, भग० २, १,  
निसी० २, ४५. ( २ ) न० पासै; नज्दीक समीप,  
नज्दीक. vicinity; neighbour-  
hood. ज० प० ५, ११२, नाया० २, १२,  
१४, अत० ६, ३; भग० १, १, २, १, ३, ५, ५,  
६,—**आगय** त्रि० (—आगत) नज्दीक आवेल,  
पासै आवेल नज्दीक आया हुआ, समीप  
आया हुआ situated in the vicinity;  
not far off “ अदूरागए बहुसपत्ते  
अद्दाणपडिवरणे अतरापहे वट्टइ” भग० २, १,  
—**सामंत** पुं० (—सामन्त) अतिदूर के  
अतिनज्दीक नहिं आवे। प्रदेश-उचितप्रदेश  
ऐसा प्रदेश जो न तो बहुत दूर हो और न बहुत  
पास हो region at a moderate  
distance नाया० १, ३, १२, १४; १६,  
राय० १००, अत० ६, ३; ओव० भग० १,  
१; २, १, ४; ५, ६, ७, ६, १०, ६, ३३,  
१८, ७,

**अदूसिय** त्रि० ( अदूषित ) दूषण  
रहित Free from fault or  
blemish. पचा० ६, २०,

**अद्** पुं० ( अर्द्ध-अर्धते गम्यतेऽनेनेत्यर्द्धः )  
आकाश आकाश The sky भग० २०, २;

**अद्** त्रि० ( आर्द्र ) बिलुं, लीलुं, सज्जल भीजा  
हुआ, गीला, सजल Wet, moist. पन्न०  
१७, ओघ० नि० ३६, राय० ५०; ओव० २२,  
—**चंदण** न० (—चन्दन) लीलु चन्दन-सुपुड  
हरा चन्दन, बिना सूखा हुआ चन्दन green  
sandalwood, sandalwood-un-  
ction “ अद्दचदणाणुलित्तगत्ता इसिसि-  
लिधपुण्णगासाहं सुहुमाइ असकिलिद्वाइ  
वत्थाइ पवरपरिहिया ” ओव० २२,

**अद्दइज्ज** न० ( आर्द्रकीय ) सूयगडांगसूयना  
शील श्रुतस्मरणा छद्वा अभयननु नम, के

जेभां आर्द्रकुमार मुनिने गोशाला वगेरेनी  
साथे वाद थये छे तेनु वणुन छे. सूत्रकृतांग  
सूत्र के दूसरे श्रुतस्कंध के छठे अध्याय का  
नाम, जिसमें आर्द्रकुमार मुनि का गोशाला  
वगैरह से जो विवाद हुआ है उसका वर्णन  
है The sixth chapter of the  
second Śrutaskandha of  
Sūtrakṛitāṅga treating of the  
discussion between Ārdraku-  
māra and Gośālā etc. सूय० २, ६,  
५५, सम० २३, अणुजो० १३१;

**अद्गकुमार** पु० ( आर्द्रककुमार ) आर्द्रक  
पुरना आर्द्रकराजने आर्द्रक नामे कुमार, के जेने  
अभयकुमारे मोडनेल पक्षीश उपरथी  
जतिस्मरण ज्ञान उत्पन्न थता, पोतानी  
मेजे दीक्षा दीधी ते पक्षी महावीरस्वामी  
पासे जाता, रस्तामा गोशालाने समागम  
थता, तेनी साथे धरो वाद थये छे  
गोशालाना आक्षेपोना उत्तर सारी रीते  
आप्या छे तेने विस्तार-शील श्रुत  
स्कंधना छद्वा अध्ययनमा छे आर्द्रकपुर नगर  
के आर्द्रक राजा का आर्द्रक नामक कुमार,  
जिसे कि, अभयकुमारद्वारा भेजे हुए पारि-  
तोषिक पर से जातिस्मरण ज्ञान उत्पन्न हुआ  
और अपने आप दीक्षा ली उसके बाद महावीर  
स्वामी के पास जाते समय रास्ते में गोशाला  
के मिलने पर उससे बहुत विवाद हुआ  
और उसके आक्षेपों का उत्तर अच्छी तरह से  
दिया इसका विस्तृत वर्णन दूसरे श्रुत  
स्कंध के छठे अध्याय में है Ārdraka,  
son of Ādiaka king of Ār-  
drakapura got the knowledge  
of birth-recollection on the  
occasion of a present sent to  
him by Abhayakumāra and  
became a monk. On his way

to a visit to Mahāvīrasvāmī he met Gośālā and a long discussion took place between them in which he answered or rather refuted all the objections raised by Gośālā. This is related in the sixth chapter of the second Śrutaskandha of Sūyaga-lānga. सूय० नि० २, ६, १६२;  
**अद्गपुर.** न० (आर्द्रकपुर) ये नामनु अनार्य देशनु आर्यीन नगर, ३ जया आर्द्रकुमारने। जन्म थये। उतो। अनार्यदेश का प्राचीन नगर, जहाँ आर्द्रकुमार का जन्म हुआ था An ancient city of the Anārya country—the birth-place of Ardiakumāra. सूय० नि० २, ६, १६२,  
**अद्गसुच्छा.** स्त्री० (आर्द्रमूर्च्छा) ३-द्विविध। कन्दविशेष. A variety of bulbous root. भग० ७, ३;  
**अद्गव.** त्रि० (अद्गव) नडि गायेतुं दिना गला हुआ. Not melted. प्रव० १०७;—**दहि** न० (-दधि) ३-तु दहि; परापर जमी गये। दहि. गाढ़ा दही Fully curdled (and so solid) milk प्रव० २०७;  
**अद्गव.** न० (अद्गव) रूपीया आदि ३-यने। अभाव रुपये आदि द्रव्य का अभाव Want of, lack of wealth; e g. money etc. पंचा० ३, ३६,  
**अद्ग** धा० II. (अद्ग) ५-तु, तलना, पकाना. To bake; to fry.  
**अद्गहेद** उवा० ३, १३२;  
**अद्गहेमि.** उवा० ३, १२६; १३५; ४, १४७;  
 ७, २२७;  
**अद्ग** स्त्री० (आर्द्रा) अर्द्रा नक्षत्र आर्द्रा नक्षत्र. The constellation Ārdā “दो अद्ग खलु” ठा० २, ३; “अद्ग खलु नकखत्ते”

सू० प० १०; अणुजो० १३१; सम० १;  
 विशेष० ३४०८; जं० प० ७, १५५;  
**अद्ग** पुं० (आदर्श) अरीसो; दर्पण; आरसी; तडतो. कौच, दर्पण. “a looking glass; a mirror. “ अद्गयं पेहमाणे मणुस्से किं अद्गयं पेहति” पन्न० १५; नंदी० ५४; अणुजो० १६; (२) स्फटिक मणि. रफटिक मणि crystal. ओव० नि० २१५; —**पस्त्रिण.** पुं० (-पश्त्र) प्रश्नविद्याविशेष-ने विद्यावडे अरीसामां देवतानुं आहुवान् इरी तेनी भारद्वाज ज्ञान अपावयमां आवे. प्रश्नविद्याविशेष, जिसके द्वारा दर्पण में देवता का आव्हान करके उसके द्वारा प्रश्न का उत्तर दिलाया जाता है. the science of getting questions answered by a deity invoked in a mirror ( २ ) प्रश्नव्याकरणनु अरीसाना प्रश्नविद्यावाणुं आहुमुं अध्ययन, ३ ने हाड विच्छेद यथ गये। छे. प्रश्नव्याकरण के दर्पण का प्रश्नविद्या वाला आठवां अध्ययन, जिसका वर्तमान में विच्छेद हो गया है. the eighth chapter, which is now extinct, of Prāśna Vyākarna dealing with the above science. ठा० १०,—**समाण.** त्रि० (-समान) दर्पणनी पेडे साधु उपर निर्मल भाव राणी तेना छिताहितने दर्शयनार आवड. दर्पण के समान साधु के ऊपर निर्मल भाव रखकर उसके हितार्थ को दिखलाने वाला श्रावक. ( a layman ) pointing out with transparent love and honesty things beneficial or otherwise, to a monk. ठा० ४, ३;

\***अद्ग** न० (आदर्श) लुओ “अद्ग” शब्द देखो “अद्ग” शब्द Vide “अद्ग” पन्न० १५;  
**अद्गजमाण** त्रि० (आर्द्रायमान) स्नेहयी आर्द्र-कामण थतु, स्नेहार्द्र. स्नेह से कैमल

होता हुआ, स्नेहार्द्र Melting with affection; tender with affection

आया० १, ५, ३, १५५,

अहिस्स त्रि० ( अदृश्य ) आंखों में न आये जहाँ जो देखने में न आवे.

Invisible. प्रव० १०४०;

अद्ध पुं० ( अध्वन् ) मार्ग; रस्ते। रास्ता, मार्ग  
A road; a way नाया० १४, भग० २,  
१, २५, ५; उत्त० ६, १३; सूय० १, १, २, १६,

अद्ध न० ( अर्द्ध ) अर्ध; अर्ध, जो सत्त्वा  
भाग; द्वितीयांश आधा; दो समान भाग; द्विती-  
यांश A half, one of two halves.

“ अद्धगुलसोणिको जेदुप्पमाणो असी  
भणियाओ ” ज० प० ३, ओव० १०; अणु-  
जो० १६, उत्त० २६, ३५, ३४, ३४; पञ्च०  
२; सम० १, पिं० नि० ६४३, ६५०; राय० ५३;  
भग० १, ६, ७, २, ८; १०, ३, २; ७, ७,  
१, २०, २; निर० १, १,—आढय पुं०  
(—आढक) आढक—मगधदेश में प्रसिद्ध मान-  
विशेष, तेना अर्ध भाग मगधदेश में प्रसिद्ध  
आढक नामक मापविशेष का आधा हिस्सा  
half of an Ādhaka, a measure

of weight current in the Mag-  
adha country राय० २७२,—आसन

न० (—आसन ) अर्धासन, अर्ध आसन  
अर्धासन, आधा आसन a half-seat.

नाया० १; १४,—उद्ध त्रि० (—चतुष्क )  
साढ़ा त्रय; साढ़े तीन three and half

“ अद्धुद्धाओ कुमारकोटिओ ” नाया० १६,  
परह० १, ४, जीवा० ३, ३, नंदी० ५०, विशेष०

६६३, नाया० ध० २, निर० ५, १; प्रव०  
१०६८,—उरुग न० (—उरुक ) साध्वीने

आध्यात्मपर धारण करवानु पत्र; साध्वीना  
२५ डिपकरणुमानुं अर्ध साध्वी का कटिपर

धारण करने का वस्त्र, साध्वी के २५ उप-  
करणों में से एक उपकरण. a loin-cloth

of a nun, one of the twenty-five  
articles permitted to a nun. प्रव०

५४१, ओघ० नि० ६७६,—करिस्स पुं० (—कर्ष)

अर्ध पलना आधे भाग, मगधदेश में प्रसिद्ध  
अर्ध प्रकारना तोल एक पल का आठवाँ

हिस्सा, मगधदेश में प्रसिद्ध एक प्रकार का माप.  
a measure of weight current

in Magadha, equal to the eighth  
of a Pala अणुजो० १३३,—कविद्ध

पुं० (—कपित्थ ) डाल इलतुं अर्ध-  
धीयुं कवीट फल का आधा हिस्सा.

( form of ) half a wood-apple.  
“अद्धकविद्धसठाणसंठिय”सू० प० १०; जं० प०

७, १६५,—काय पुं० (—काय ) अर्ध शरीर;  
शरीरना अर्ध भाग शरीर का आधा हिस्सा.

half of a body राय० ११८;—कुडव  
पुं० (—कुडव ) लुओ “ अद्धकुलव ” श० ६.

देखो ‘अद्धकुलव’ शब्द. vide “अद्धकुलव”.  
राय०—कुलव. पुं० (—कुडव ) मगधदेश

प्रसिद्ध धान्यना अर्ध माप—मानविशेष.  
मगधदेश में प्रचलित धान्य का एक मापविशेष.

a measure of weight current  
in Magadha. राय०—कोस पुं०

(—कोश) अर्ध कोश—गाडि, अर्ध हजार धनुष्य  
प्रमाण अर्धगाडि, अर्ध माप आधा कोस,

एक हजार धनुष्यप्रमाण क्षेत्र, एक माइल.  
a mile; half of a Krośa ( two

miles) जं० प०—घडय पुं० (—घटक )  
अर्ध घडा आधा घडा. half a pot.

“ घडय अद्धवडय कलसण य ” उवा०  
७, १८४,—चन्द्र त्रि० (—चन्द्र) अर्धचन्द्रा-  
कार अर्धचन्द्राकार of the shape of

half-moon. सम० प० २१३, (२) अर्धवि-  
शेष ग्रहविशेष a particular planet.

जीवा० ३, ३, (३) अर्धचन्द्र आकारनी सीडी-प-  
गथीया. अर्धचन्द्र के आकार की सीडी.

a stair-case of the form of half moon. “ मणिकयगरयणधूमिविडकजालद्वचंद ” नाया० १, परह० १, १;—चक्रवा-  
ल न० (—चक्रवाल ) गतिविशेष, जेभां अर्ध  
यु० पडे ऐवी गति. गतिविशेष, अर्धचक्राकार  
में होने वाली गति semi-circular mo-  
tion ठा० ७;—चक्रवाला स्त्री० (—चक्र-  
वाला ) अर्धयु०-गोला आकार ऐली अर्ध  
गोलाकार ऐली a semi-circular line  
भग० २५, ३; ३४, १, ठा० ७, —चक्रि पुं०  
(—चक्रिन् ) यु०वर्ती इरता जेनी अर्धी सत्ता  
होय ते, वासुदेव चक्रवर्ती की अपेक्षा आधी सत्ता  
वाला one whose power is half  
that of Chakravartī; a Vāsu-  
deva. क० गं० १, १२, —च्छिकडक्ख  
न० (—अच्छिकटाक्ष ) अर्धी आप भावनी ते,  
अर्धु ३टाक्ष आधी आँख का मारना, आधा  
कटाक्ष a glance with half an eye.  
“ अद्भच्छिकडक्खचिद्विण्हि लूसमाणा ”  
जीवा० ३;—जाम पुं० (—याम ) अध  
पहर आधा प्रहर. half a Prahara  
( a Prahara=3 hours). गच्छा० ३,  
—जोयण. न० (—योजन ) जे गाँडे, अर्धु  
जेवन. दो कोस, आधा योजन. half a  
Yojana ( eight miles), four  
miles निसी० ११, ३; वेय० ४, ११; १२;  
जं० प० १, ४;—ट्ट. त्रि० (—अष्ट) साड सात;  
७। सादे सात. seven and a half  
भग० ११, ११;—ट्टम. त्रि० (—अष्टम)  
साड सात; ७। सादे सात seven and  
a half. “अद्भहमाणा य राहंदियाणं च  
विड्वकंतायं” ठा० ६, कप्प० १, ८, जं० प०  
२, ३१;—ट्टमसय. न० (—अष्टमशत )  
साड सात सौ. सादे सात सौ; ७५० seven  
hundred and fifty, 750 कप्प० ६,  
३६५, —णाराय न० (—नाराच-अर्द्ध ना-

राचसुभयतो मर्कटवन्धो यत्र तदर्द्धनाराचम् )  
जेते ऐ० पडे मर्कटवन्धन अने जीजे  
पडे जीवी होय तेनुं डाड्डानुं आधारणु; ७  
संधयणुमानु योयुं संधयणु जिसके एक ओर  
मर्कटवन्धन और दूसरी ओर खील हो, ऐसा  
शरीर की अस्थियों का संगठन, छः संहननों  
में से चौथा संहनन a physical consti-  
tution in which the bones have  
become partially loosened and  
so deprived of their strength;  
the fourth of the six varieties of  
bone-structure क० गं० १, ३८; ठा० ६, १;  
—णारायसंघयण. न० (—नाराचसंहनन)  
लुगो “अद्भणाराय” शब्द देखो “अद्भणाराय”  
शब्द vide “अद्भणाराय.” जीवा० १;  
—तुला स्त्री० (—तुला ) पचास पलनी  
अर्धतुला; प्राचीन समयमां मगधदेशप्रसिद्ध  
तोलाविशेष. पचास पलों की अर्धतुला, प्राचीन  
समय में मगधदेश में प्रसिद्ध एक माप. a  
measure of weight prevalent  
in the Magadha country equal  
to fifty Palas अणुजो० १३३;  
—तेरस त्रि० (—त्रयोदश) साड आर; १२॥,  
सादे बारह twelve and a half विवा०  
१, भग० ३, ७; १०, ६, सु० च० ३, २०; प्रव०  
१८४, जं० प० ४, ७४;—द्ध न० (—अर्द्ध)  
अर्द्धानुं-अर्ध; ५। भाग; योथो भाग. आधे  
का आधा, पाव हिस्सा, चौथाई. a quarter;  
half of a half; a fourth. भग० १४,  
६; पिं० नि० ६४३, क० प० १, ७७, —नवम.  
त्रि० (—नवम ) साड आठ. सादे आठ,  
eight and a half. कप्प० १, २; ७,  
२२७;—पंचम त्रि० (—पञ्चम) साड आर;  
४॥ सादे चार four and a half. भग०  
१४, ६, पञ्च० ४, जीवा० १;—पंचममुहुत्त.  
न० (—पञ्चममुहुत्त ) आधाड सुदि पुनमे



१८ मुहूर्तनो दिवस होय त्यारे साअ नार  
 मुहूर्त-८ घडी परिमित ओक प्रहर थाय ते;  
 दिवसनो ओथो लाग आषाढ सुदी १५ को  
 १८ मुहूर्त का दिन होता है, तब साढ़े चार मुहूर्त-  
 ६ घडी परिमित जो एक प्रहर होता है वह,  
 दिन का चौथाई भाग the fourth part  
 of a day, equal to four and a  
 half Muhūrtas, taking the  
 whole day to consist of eighteen  
 Muhūrtas as on the full-moon  
 day of Āṣāḍha. “जयाणं भंते । उक्को-  
 सिया अद्धपंचममुहुत्ता दिवसस्स राहए वा  
 पोरिसी भवइ ” भग० ११, ११,—पल न०  
 (-पल) ओे कर्षप्रमाण, अर्ध पल आधा  
 पल, दो कर्षप्रमाण a measure of  
 weight equal to two Karsas.  
 अणुजो० १३३,—पलियंका स्त्री० (-पर्यङ्का)  
 अउधी पलाहीओे ओेसवुं ते, ओेक पग साथण  
 उपर अने ओेक पग नमीन उपर मुकवुं ते  
 आधी पालकी मारकर बैठना, एक पैर जाघ  
 पर और एक जमीन पर रखकर बैठना, आधा  
 पद्मासन a sitting posture with  
 crossed legs, one touching the  
 ground and the other resting  
 on the thigh ठ० ५, १,—बल न०  
 (-बल) अर्धु पल आधा बल half the  
 strength क० गं० १, १२,—भरह. पु०  
 (-भरत) भरतभंडनो अर्धो लाग भरत  
 खण्ड का आधाहिस्ता half of Bharata-  
 takhaṇḍa. “अद्धभरहस्स सामिका  
 भीरवित्तिपुरिसा ” परह० १, ४, जं० प०  
 नाया० १६,—भरहप्पमाण त्रि० (-भरत-  
 प्रमाण) भरतक्षेत्रनु अर्ध प्रमाण, अर्धा  
 भरतक्षेत्रप्रमाणे भरतक्षेत्र के आधे हिस्से  
 जितना. of the measure of half of  
 Bharatakhanda. ठ० ४, ४,—भरह-

प्पमाणमेत्त त्रि० (-भरतप्रमाणमात्र-  
 अर्धभरतस्य यत्प्रमाणं तदेव मात्रा-प्रमाण  
 यस्य स तथा) अनुओे “अद्धभरहप्पमाण” श० ५.  
 देखो “अद्धभरहप्पमाण” शब्द. vidē  
 “अद्धभरहप्पमाण” “अद्धभरह-  
 प्पमाणमेत्तं वौदिविसेयं विसपरिणयं” ठ०  
 ४, ४;—भार पु० (-भार) अउधी भार;  
 तोलविशेष आधा भार, तोलविशेष. a  
 particular measure of weight  
 अणुजो० १३३,—मंडल न० (-मण्डल)  
 भंडनो अर्ध लाग मण्डल का आधा हिस्ता.  
 a semi-circle, a hemi-sphere  
 सू० प० १,—मागह त्रि० (-माग-  
 ध) धरविशेष. गृहविशेष. a kind  
 of a house जीवा० ३, ३;  
 —मागही स्त्री० (-मागधी-मागध  
 भाषालक्षणं किञ्चित् किञ्चिच्च प्राकृत-  
 भाषालक्षणं यस्यामस्ति सा, अर्द्ध मागध्या  
 इति व्युत्पत्त्याऽर्धमागधी ) प्राकृतभाषानी  
 ओेक पेटा भाषा, ३ ओे मडावीर स्वा-  
 मीना वणतमा भगधदेशना अर्ध लागभा  
 ओेलाती हुती अने ओे भाषामा तीर्थक्षेत्रोओे  
 उपदेश आप्थो छे ते भाषा, जैन आगमनी  
 भूण भाषा प्राकृतभाषान्तर्गत एक उपभाषा,  
 जो कि, महावीरस्वामी के समय में मगधदेश  
 के आधे हिस्से में प्रचलित थी और जिस  
 भाषा में तीर्थक्षेत्रों ने उपदेश दिया है, जैनागम  
 की मूलभाषा one of the varieties of  
 the Prākṛita language current  
 in half of the Magadha country  
 in the time of Mahāvīrasvāmī;  
 the original language of  
 Jaina scriptures “भगव चणं  
 अद्धमागहीए भासाए धम्मसाइक्खइ” सम०  
 ३४, “अद्धमागही भासा भासिजमाणा  
 विसिजइ” भग० २, ४, पन्न० १, ओव० ३४,



—माणिआ खी० (—माणिका) अर्ध माणी, माणीनुं द्वितीयाश; धान्यनो मापविशेष आधी मानी, धान्य का मापविशेष half a Māṇī; a measure of weight for corn. अणुजो० १५३;—मणी. खी० (—माणी ) अर्ध माणी, १२८ पलप्रमाण आधी मानी, १२८ पलप्रमाण. a measure of weight equal to 128 Palas. अणुजो० १३२;—मास पुं० (—मास) अर्द्ध मास, पक्ष अर्ध मास; पक्ष, पखवाड़ा half a month; a fortnight. विशेष० ६१०, दसा० ६, ४; भग० १५, १, प्रव० १३२४, —मासि-अ-य त्रि० (—मासिक) पाक्षिक; पक्षसंयन्धी पाक्षिक; पक्षसम्बन्धी fortnightly “अद्ध-मासिषु कत्तरि मुदेसि ? ” कण्ठ० ६, ५७, ( २ ) पाक्षिक तप; पंद्रह दिवसना भोगा उपवास करवा ते; पञ्चमासीआनु तप पाक्षिक तप, पंद्रह दिन का इकट्ठा उपवास करना a continuous fast of fifteen days “ मासद्वमासिषुं तु, आहारेणं तव चरे ” उक्त० ३६, २५३; भग० २५, ७, ओव० १६, —राजिय पुं० (—राज्यक) अर्ध राज्यनो धणी, अर्द्ध राज्यनो म लिङ् आवे राज्य का स्वामी owner of half a kingdom “ तव्यं अहं तुह्यं अद्धराजिय करिस्सामि ” विवा० ६;—रत्त न० (—रात्र) मध्यरात; मध्यरात्रि आधी रात, मध्यरात्रि midnight; midnight time सु० च० १०, ७३; भग० ११, ११, नाया० १; २, १८; ठा० ४, २, निसी० १६, २;—रत्तकाल पुं० (—रात्रकाल) अर्द्धरात्रिनो समय, मध्यरात्रिनो वधत आधी रात का समय, मध्यरात्रि का समय. midnight time नाया० २, —रत्तकाल-समय. पुं० (—रात्रकालसमय) अर्ध रातनो समय, मध्यरात्रिनो वधत. आधी रात का समय midnight time “अद्धरत्तकाल-

समयसि सुत्तजागरा ओहरिमाणी ओही रमाणी ” भग० ११, ११, विवा० २; ६ —विसुद्ध त्रि० (—विशुद्ध) अर्ध शुद्ध अर्ध अशुद्ध आधा शुद्ध और आधा अशुद्ध partly correct and partly incorrect; partly pure and partly impure. क० गं० १, १४, —वेयाली खी० (—वैतालिकी) वैतालिक विद्याने सभावनारी-दभावनारी विद्या वैतालिक विद्या को दबाने वाली विद्या an art enabling one to counteract Vaitālika-Vidyā i.e. science dealing with ghosts, magic etc. सूय० २, २, ३०;—सम. न० (—सम) जे अरुणमा सरभा अक्षर होय अने जेमां सरभा न होय तेवो छे ऐसा छन्द, जिसके दो चरणों में तो समान वर्ण हों और दो चरणों में असमान वर्ण हों a class of meters in which the first and third and the second and fourth lines have the same syllables and Ganas अणुजो० १२८, ठा० ७;

अद्धद्धा. खी० (—अद्धाद्धा-अद्धाया अद्धा अद्धाद्धा) दिवस या रात्रिनो ओड भाग, प्रहर वगेरे दिन या रात्रि का एक भाग, प्रहर वगेरह A part of a day or a night; e.g. a Prahara etc पञ्च० ११; ठा० १०; प्रव० ६००; —मिसय न० (—मिश्रक) दिवस रात्रि आशी मिश्र भाषा ओलपी, जेभ पहर दिवस यजे होय छता डहेतुं डे अपोर तो थर्ग गभा छत्यादि, सत्य मृषा भाषानो ओड प्रकार. दिन और रात्रि के संबंध में मिश्रित भाषा बोलना, जैसे कि, प्रहर दिन चढ़ा हो तो यह कहना कि, दुपहर हो गया, इत्यादि सत्यमृषा भाषा का एक भेद. speech which is a mixture of truth and falsehood in relation to-day

and night, e g saying that it is mid-day when it is not yet mid-day; a variety of speech partly true and partly false ठ० १०;

**अद्भुतपेडा** स्त्री० ( अद्भुतपेडा ) साधु गृहस्थनां धरोनी आरे दिशाभा आर पंक्ति कल्पी, तेमाथी अने पंक्तिने छेडे छोडरे, वयमा अली राखे ते, गोचरीनी आठ वीथीमानी छडी वीथी गोचरी की आठ वीथियों में से छठी वीथी, जिसमें साधु गृहस्थ के घरों की चारों दिशाओं में चार कल्पित पंक्तिया बनाकर उनमें से दो दो पंक्तियों छोड़कर भिक्षा ग्रहण करता है A way of begging alms in which a Sādhu the dwellings of householders into four imaginary lines and begs food from the ends of every two succeeding lines, the sixth of the eight Vithis (modes or paths of movement) of Gocharī (proceeding to alms) ठ० ६, १, दसा० ७, १, प्रव० ७५५,

**अद्भुतसागर.** पुं० ( अद्भुतसागर ) अद्भुत सागरोपम, दश कोटि अर्द्धा पल्योपम परिमित काण्विभाग, कायस्थिति अने कर्मस्थितिमां आ सागरोपमनो उपयोग थाय छे अद्भुतसागरोपम, दस करोड अर्द्धा पल्योपम परिमित कालविभाग; कायस्थिति और कर्मस्थिति में इस सागरोपम का उपयोग होता है Addhā Sāgaropama; 10 x crore x Addhā Palyopama of time, ( this Sāgaropama of time is used as a unit in calculating the duration of Kāyasthiti and Karmasthiti ) “सुहुमेण उ अद्भुतसागरस्स माणेणं सच्चजीवाणं ” प्रव० १०४४,

**अद्भुतहार.** पुं० ( अद्भुतहार ) नवसरो हर,

गुणामां पहेरवानुं आभरणविशेष नौ लङ्गहार, नौ लङ्गों का हार, गले में पहिरने का एक आभरण A kind of necklace. कप्प० ४, ६२, ओव० २७, जीवा० ३, ३; भग० ११, ११, राय० १८६, ज० प० ५, ११६; निसी० ७, ८, दसा० १०, १, ( २ ) अने नामनो अेड द्वीप अने अेड समुद्र इस नाम का एक द्वीप और एक समुद्र. name of an island and a sea जीवा० ३,—ओभास पु० ( -अवभास ) अने नामनो अेड द्वीप अने अेड समुद्र इस नाम का एक द्वीप और एक समुद्र. name of an island and a sea जीवा० ३; —ओभासभद्र पु० ( -अवभासभद्र ) अर्धहारावलास द्वीपनो अधिपति देवता. अर्धहारावलास द्वीप का अधिपति देव the presiding deity of the Ardha-hārāvabhāsa Dvīpa. जीवा० ३; —ओभासमहाभद्र पु० ( -अवभासमहाभद्र ) अर्धहारावलास द्वीपनो अधिपति देवता अर्धहारावलास द्वीप का अधिपति देव the presiding deity of the Ardha-hārāvabhāsa Dvīpa जीवा० ३,—ओभासमहाचर पु० ( -अवभासमहाचर ) अर्धहारावलास समुद्रनो अधिपति देवता अर्धहारावलास समुद्र का अधिपति देव. the presiding deity of the Ardha-hārāvabhāsa ocean जीवा० ३,—ओभासवर पुं० ( -अवभासवर ) अर्धहारावलास समुद्रनो अधिपति देवता अर्धहारावलास समुद्र का अधिपति देव the presiding deity of the Ardha-hārāvabhāsa ocean जीवा० ३,—भद्र. पु० ( -भद्र ) अर्द्धहार द्वीपनो अधिपति देवता अर्धहार द्वीप का अधिपति देव. the presiding

deity of the Ardhahāra Dvīpa.

जीवा० ३;—महाभद्र पुं० (—महाभद्र )

अर्धहार द्वीपने अधिपति देवता. अर्धहार

द्वीप का अधिपति देव. the presiding

deity of the Ardhahāra Dvīpa.

जीवा० ३;—महावर पुं० (—महावर )

अर्धहार समुद्र अने अर्धहारवर समुद्रने

अधिपति देवता. अर्धहार समुद्र और अर्ध

हारवर समुद्र का अधिपति देव. the

presiding deity of the Ardhahāra

and Ardhahāravara

oceans. जीवा० ३;—वर पुं० (—वर )

अर्धहार समुद्रने अधिष्ठातृ देवता अर्ध-

हार समुद्र का अधिष्ठातृ देव. the

presiding deity of the Ardhahāra

ocean. जीवा० ३; ( २ ) ये

नामने अर्ध द्वीप अने अर्ध समुद्र एक द्वीप

और एक समुद्र का नाम. name of an

island, also, the name of an

ocean. जीवा० ३;—वरमद् पुं० (—वर-

मद् ) अर्धहारवर द्वीपने अधिष्ठातृ देवता.

अर्धहारवर द्वीप का अधिष्ठातृ देव. the

presiding deity of the Ardhahāra

hāravara Dvīpa जीवा० ३,

—वरमहावर. पुं० (—वरमहावर ) अर्ध

हारवर समुद्रने अधिष्ठातृ देवता अर्धहारवर

समुद्र का अधिष्ठातृ देव. the presid-

ing deity of the Ardhahāravara

ocean जीवा० ३;—वरवर पुं० (—वर

वर ) अर्धहारवर समुद्रने अधिपति देवता

अर्धहारवर समुद्र का अधिपति देव. the

presiding deity of the Ardhahāra

hāravara ocean. जीवा० ३;

अज्ञा. स्त्री० ( अघ्वन् ) मार्ग; २२तो. मार्ग,

रास्ता. A road “ अघो अघं पदं गितो,

वरमन्दागुगच्छद् ” सूय० १, १, २, १६, उत्त०

६, १३; ओव० ३६; ४३; भग० १५, १;

अज्ञा. स्त्री० ( अघ्वन् ) भूत, भविष्य अने

वर्तमान काण भूत, भविष्य और वर्तमान

काल. Time, past, present and

future. अणुजो० १७; भग० ७, २; १६,

८; ओव० ४३; ( २ ) काण आश्री मिश्र

वयन भोलवुं, जेभ रात छतां छेउने कहेवुं

“ उठ उठ दिवस उगी गयो; ” मिश्रभाषाने

नवभेद प्रकार. मिश्रभाषा का ६ वीं प्रकार; काल

के बारे में मिश्र वचन कहना, जैसे रात रहते हुए

भी कहना कि, “ उठ उठ दिन निकल आया ”

the 9th variety of speech

partly true and partly false;

viz that relating to time; e. g.

saying to another “ Get up, it

is day ” while yet it is night.

प्रव० ६००;—ओवमिय न० (—ओपम्य-

ओपम्यमुपमा पल्यसागररूपा सत्प्रधाना

अज्ञा-कालोऽद्वौपम्यम् ) पल्योपम, साग-

रोपम आदि उपमाकाण; उपमा विना जेतुं

अलक्ष्य न थई शके तेवे काण. पल्योपम,

सागरोपम आदि उपमाकाल, उपमा के बिना

जिसका ग्रहण न हो सके वह काल long

periods of time such as Palyo-

pama Sāgaropama etc. which

are used as units to convey

the idea of a certain period

“ दुविहे अद्वौवमि पञ्जते, तंजहा-पलिओव-

मे चेव सागरोवमे चेव ” ठा० २, ४;

—काल पुं० (—काल ) सूर्यक्रियावाण

समयक्षेत्र-अदीद्वीपमां वर्तते काण. सूर्य

क्रियाविशिष्ट समयक्षेत्र-अद्वी द्वीपवर्ती काल.

time in Samayaksetra ( i. e.

Adhī-Dvīpa ) marked by the

motion of the sun e g. setting,

rising etc. भग० ११, ११, ठा० ४, १;

—છેદ્ય. પું. (—છેદ ) કર્મની સ્થિતિરૂપ કાળનો છેદ-ઉચ્છેદ; સ્થિતિધાત. કર્મ કી સ્થિતિરૂપ કાલ કા ઉચ્છેદ; સ્થિતિધાત. the wearing out or destruction of the time which constitutes the duration of Karma ( from the point of view of its being worked off ) ક. પ. ૪, ૩૨,

—પચ્ચક્ષાણ. ન. (—પ્રત્યાખ્યાન ) કાળની મર્યાદા બાધી પચ્ચખાણુ કરવા તે; નોકારસી, પોરસી વગેરેનાં પચ્ચખાણુ, પચ્ચખાણુનો દશમો પ્રકાર કાલ કી મર્યાદા બાંધકર પ્રત્યાખ્યાન કરના; નોકારસી, પોરસી વગેરહ કા પ્રત્યાખ્યાન, પ્રત્યાખ્યાન કા ૧૦ વાં પ્રકાર taking a vow i e. Pachchakhāṇa for limited periods of time; e. g. Pachchakhāṇas known as Nokārasī, Porasī, etc.; ( This is the 10th variety of Pachchakhāṇa ) પ્રવ. ૨૦૧,

—પજ્જાય. પું. (—પર્યાય ) કાળનો પર્યાય કાલ કા પર્યાય. modifications of time. ઠા. ૭;—પરિવિસિ. સ્ત્રી. (—પરિવૃત્તિ ) કાળનું પરાવર્તન. કાલ કા પરાવર્તન. turning back of the wheel of time, ક. પ. ૫, ૩૪, —મીસય ન. (—મિશ્રક ) કાળ આશ્રી સત્યમૃષા બાધાનો એક પ્રકાર, જેમકે દિવસ હોય છતાં “ઉતાવળ કરો, રાત પડી ગઈ” એમ કહેવું તે કાલ કા આશ્રય કર સત્યમૃષા ભાષા કા એક ભેદ, જૈસે દિન હોને પર મી યહ કહના કિ, ‘ જલ્દી કરો રાત હોગઈ ’ a kind of speech in relation to time half true and half false; e.g. saying that it is night when it is yet day time, ઠા. ૧૦;—મીસિયા સ્ત્રી.

(—મિશ્રિતા ) બુદ્ધિ “ અદ્વામીસય ” શબ્દ. ૧૦૬. દેખો “ અદ્વામીસય ” શબ્દ vide “ અદ્વામીસય ” પદ્ય. ૧૧;—રૂવ ન. (—રૂપ-અદ્વા કાલ, તસ્ય રૂપં સ્વભાવોઽદ્વારૂપમ્ ) કાળનો સ્વભાવ. કાલ કા સ્વભાવ nature of time પંચા. ૫, ૩; —સમય-અ પું. (—સમય ) કાળનો અવિભાજ્ય-ઝીણુમાં ઝીણો અંશ કાલ કા અવિભાજ્ય-વિભાજિત ન હો સકે એસા સૂક્ષ્મ અંશ. the smallest indivisible part of time અણુજો. ૬૮, મળ. ૨, ૧૦; ( ૨ ) વસ્તુનું પરિવર્તન કરનાર એક દ્રવ્ય; છ દ્રવ્યમાનું કાળનામે એક દ્રવ્ય વસ્તુ કા પરિવર્તન કરને વાલા એક દ્રવ્ય, છ દ્રવ્યોં મેં સે કાલ નામક એક દ્રવ્ય. time, regarded as one of the six substances; a substance which is the cause of changes in things ઉત્ત. ૧૬, ૬, અણુજો. ૧૩૧; પદ્ય. ૧; મળ. ૧૦, ૧; ૧૧, ૧૦, ૨૫, ૪,

અદ્વાઉચ્ચ-ય. પું. ન. ( અદ્વાયુષ્ ) કાળપ્રધાન આયુષ્ય, મનુષ્ય અને તિર્યચનું આયુષ્ય કાળ-પ્રધાન છે, એટલે કે એક ભવ થયા પછી પશુ કાંઈને પુન તેજ ભવ પ્રાપ્ત થતાં મનુષ્ય કે તિર્યચનું આયુષ્ય ફરીથી વેદાય છે—ભોગવાય છે કાલ પ્રધાન આયુષ્ય, મનુષ્ય ઐર તિર્યચ કા આયુષ્ય કાલપ્રધાન હૈ અર્થાત્ એક ભવ પૂર્ણ હોને પર કિસીકો પુનઃ વહી ભવ પ્રાપ્ત હોને પર મનુષ્ય યા તિર્યચ કા આયુષ્ય ફિર સે ભોગના પદ્ધતિ હૈ Life period of human beings and animals In case of their re-birth in the same class their life-period is the same. “ દોણં અદ્વાઉચ્ચ પચ્ચસે તજહા-મણ્ણસાયાં જેવ પંચિદિયતિરિક્કજોણિયાયાં જેવ ” ઠા. ૨, ૩, ૪;

अद्धाण न० ( अध्वान ) प्रयाणु करवु ते; मुसफिरी करवी ते मुसाफिरी करना. यात्रा करना Travelling “अद्धाणेहिं सुहेहिं पातरासेहि जेणेव सात्तादवी चोरपल्ली तेणेव उवागच्छद्” विवा० ३;

अद्धाण पु० ( अध्वन् ) मार्ग; रस्ता. A road; a way वेय० १, ४५; ओव० ३८, गणि० १४, नाया० १४, १५, वव० ८, ४, १३; प्रव० ५१६,—गमण न० ( -गमन ) मार्गमां पंथ करवे ते; विहार करवे ते विहार करना. travelling on foot ( by an ascetic ) “शरण्यथ अद्धाणगमणे खो कप्पइ” ओव०—पडिवरण त्रि० ( -प्रतिपन्न ) मार्गने पामेद, पथे पडेद रास्ते लगा हुआ, मार्गप्राप्त. on the road भग० २, १;

अद्धापलिय. न० ( अद्धापल्य ) ऐक जेज्जनेतो लाणे, पडोणे अने उडे कुवे वाणाग्रथी भरेले होय, तेमाथी से से वरसे ऐक वाणाग्र डाढता जेटला वप्पतमा आदी थाय तेढले वप्पत एक योजन का लम्बा, चौडा और ऊँडा बानाग्रो से भरा हुआ कूप हो उसमे से सौ सौ बरसमें एक २ बालाग्र निकालने में जितना समय लगता है उस समय का नाम a pit one Yojana in length, one Yojana ( i. e. eight or nine miles ) in breadth and one Yojana in depth is to be filled with the finest points or ends of hair. At the close of every period of 100 years one point of hair is to be taken out The time required to empty the whole pit in this way constitutes the division of time known as Addhā-Palya. प्रव० १०३७;

अद्धापल्ल. न० ( अद्धापल्य ) लुओ “अद्धापलिय” श०६. देखो “अद्धापलिय” शब्द. Vide “अद्धापलिय.” प्रव० १०४३;

अद्धामलय न० ( अद्धामलक ) आरी ज्वरनुं भेर अथवा पीजुं खारी जुवार के मोर. The blossoms of the Juvāra having a saltish taste. प्रव० २२४;

अद्धिइ. स्त्री० ( अधृति ) अधीराध; धीरनेतो अभाव धैर्य का अभाव, अधीरता. Lack of patience. पि० नि० ४८७;

अद्धुट्ठ. त्रि० ( अद्धुत्तुर्थ ) साडा त्रयु. साडे तीन Three and a half कप्प० ६, १६४; —सय. न० ( -शत ) साडा त्रयु से। साडे तीन सौ, ३५०. three hundred and fifty ; 350. कप्प० ६, १६४;

अधुव त्रि० ( अधुव ) लुओ “अधुव” श०६ देखो “अधुव” शब्द Vide “अधुव”. ओव० १४, परह० १, ३, क० गं० ५, ७; क० प० ७, १;—उदया. स्त्री० ( -उदया ) जेते उदय विच्छिन्न थाया पछी पणुद्रव्य, क्षेत्र, क्षण, भाव अने लवरूपहेतुना सांनिध्यथी पुन उदय थाय ओवी कर्मप्रकृति जिसका उदय विच्छिन्न होने के बाद भी फिर द्रव्य, क्षेत्र, काल, भाव और स्वरूपहेतु के सांनिध्य से उदय हो ऐसी कर्मप्रकृति a variety of Karma coming again into rise through the vicinity of contributory causes like substance, space, time etc ; a Karmic variety of an uncertain period of maturity; a variety of Karmic ( Prakriti ) nature. Though the development of it is at a stand still, yet on account of its close contact with substance, space, time and



the desire for worldly existence, it matures again क० ग० ५, ७;—वंधिणी. स्त्री० (—बन्धिनो ) लुओ 'अधुवबंधी' शब्द देखो 'अधुवबंधी' शब्द vide "अधुवबंधी." क० प० २, १०२;—संतकम्म न० (—सत्कर्मन् ) अधुव सत्तावाणा कर्म, जे कदाय बंधाय कदाय न बंधाय ओवी कर्म-प्रकृति अधुव सत्ता वाला कर्म, कदाचित् बंध होने वाली और कदाचित् बंध न होने वाली कर्मप्रकृति a Karmic variety which may or may not come into existence. क० प० २, ७२, —सक्कम्मिया स्त्री० (—सत्कर्मिका ) ध्रुव सत्कर्मनी प्रतिपक्ष प्रकृति ध्रुव सत्कर्म की प्रतिपक्ष प्रकृति a Karmic variety contrary in nature to Dhruvasatkarma क० प० २, ३७, —सत्तागा स्त्री० (—सत्ताका ) जेनी सत्ता केध वण्णते होय केध वण्णते न होय ओवी कर्मप्रकृति ऐसी कर्मप्रकृति, जिसकी सत्ता किसी समय में हो और किसी समय में न हो. a variety of Karma with uncertain periods of existence क० ग० ५, १, —साहण न० (—साधन ) भुत्तुयन्म वगेरे अनित्य साधन; अधुव हेतु मेनुण्यजन्म आदि अनित्य साधन; अधुव हेतु. transitory, uncertain means of accomplishment like birth in the human body etc. पंचा० १२, ४०,

अधरण त्रि० ( अध्वन्य ) निन्ध, निन्दापात्र,

सौभाग्यहीन निन्ध, निन्दा का पात्र; सौभाग्यहीन. Blameworthy, unfortunate. "अधरण सुलगाभिज्जहेहा" परह० १. ३, "नरगा उवाट्टिया अधरण ते विय दीसति" परह० १, १, नाया० २, ६; १६, राय० २७६; पंचा० ६, २७, निर० १, १,

अधम्म त्रि० ( अधम्म ) दुष्ट; नीच; दुष्ट अधम्मः नीच, दुष्ट. Mean, low, wicked. "अहो वयइ कोहेणं, माणेण अधम्मा गई" उत्त० ६, ५४;

अधम्म पुं० ( अधर्म ) स्थितिहेतुभूत अधर्मास्तिकाय, ७ द्रव्यभांनु भील्लुं द्रव्य. स्थितिहेतुभूत अधर्मास्तिकाय, छ द्रव्यों में से दूसरा द्रव्य. One of the six Dravyas which is a cause or rather a source of rest to soul and matter "एणे अधम्मे" सम० १; उत्त० २८, ७, ३६, ५; सग० २०, २; पञ्च० १, ठा० ७, ( २ ) मिथ्यात्व, अविरति, प्रमाद, कषाय अने अशुभयोगरूप कर्मबंध कारणभूत आत्मपरिणाम मिथ्यात्व, अविरति, प्रमाद, कषाय और अशुभयोगरूप कर्म बंध कारणभूत आत्मपरिणाम thought-activity of the soul consisting of false belief, passions etc. causing Karmic bonds. "णत्थि-धम्मे अधम्मे वा, शेवं सन्नं शिवेसए" सूय० २, ५, १४, दसा० ६, ४, ( ३ ) सावधानु-ष्ठानरूप पाप सावधानुष्ठानरूप पाप. sinful performance. "अधम्मेण चैव वित्तिं कप्पेमाणे विहरइ" नाया० १८, ( ४ ) अप्रत्यक्षार्थनु सोणमु गौण नाम. अप्रत्यक्षार्थ का सोलहवाँ गौण नाम the sixteenth description of unchastity परह० १, ४;—अणुय त्रि० (—अनुग ) अधर्मेने अनुसरनार. अधर्म का



अनुसरण करने वाला. following sinful ways. भग० १२, २; नाया० १८; विवा० १;—खाइ. त्रि० (—ख्याति ) अधर्म्मितरीडे नेनी ज्याति—प्रसिद्धि होय ते जो “अधर्म्म” के नाम से प्रसिद्ध हो वह. notorious as a sinful person. भग० १२, २; विवा० १;—खाइ. त्रि० (—ख्यायिन् ) अधर्म्मनु आप्यान—प्रतिपादन करना अधर्म्म का प्रतिपादन करने वाला. ( one ) preaching sin. नाया० १८; भग० ३, ७; दसा० ६, ४, विवा० १;—जीवि त्रि० (—जीविन् ) अधर्म्मवृत्तिथी उपनार. अधर्म्म वृत्ति से जाने वाला earning livelihood by sinful means दसा० ६, ४;—जुत्त न० (—युक्त ) तद्दोष उदाहरणुना ओक प्रकार, डे ने सालगवाथी श्रोताने अधर्म्म बुद्धि थाय तद्दोष उदाहरण का एक भेद, जिसके सुनने से श्रोताओ में अधर्म्मबुद्धि उत्पन्न होती है an illustration breeding heresy in the mind of the hearer ठा० ४, ३,—स्थिकाय पु० (—अस्तिकाय ) उप अने पुद्गलानी गति अटकाववाभां—स्थिति करवाभां रहाय आपनार द्रव्य, छ द्रव्यमनु अधर्म्म—स्तिकाय नामे थीनु द्रव्य जीव और पुद्गल की गति का अवरोध करने का कारणभूत द्रव्य; छ द्रव्यों मे से दूसरा द्रव्य one of the six Dravyas or substances which is a medium of rest to soul and matter “अधर्म्मस्थिकायुण भंते ! जावाण कि पवत्तइ ? ” भग० १३, ६, “अधर्म्मस्थिकायस्स ए भंते ! केवइया अभिवयणा ? ” भग० २०, २, भग० २, १०, ७, १०; सम० ५, अणुजो० ६७, १३१, राय० २७,—दाण. न० (—दान ) अधर्म्म भोपड दान, अधर्म्म—पापीने अपातु दान, डे ने

अधर्म्मने उत्तेजन आपे ते. अधर्म्मपोषक दान, अधर्म्म को दिये जाने वाला दान, ओकि, अधर्म्म को उत्तेजन दे. charity encouraging or promoting sin. ठा० १०;—दार. न० (—द्वार ) आश्रवदार; प्रश्नव्याकरणसूत्रनुं प्रथम द्वार. आश्रव द्वार; प्रश्नव्याकरणसूत्र का प्रथम द्वार. the first Dvāra of the Sūtra called Praśna-vyākaraṇa; door for the inflow of Karma “पदमं अधर्म्मदारं संमत्तसिद्धेमे ” परह० १, १;—पक्ख पुं० (—पक्ष ) क्रियावादी, अक्रियावादी, अज्ञानवादी, विनयवादी वगेरे पाप्मडी; अधर्म्म-पक्ष क्रियावादी, अक्रियावादी, अज्ञानवादी, विनयवादी आदि पाखण्डी; अधर्म्मपक्ष a heretic, e g. Kriyāvādī, Akriyāvādī, Ajñānavādī, Vinayavādī etc. सूय० २, २, ३५;—पजण्ण. न० (—प्रजनन ) लोकोभा अधर्म्म उत्पन्न करना. लोगों मे अधर्म्म उत्पन्न करने वाला. propagating heretical creed amongst people. राय०—पडिमा स्त्री० (—प्रतिमा ) अधर्म्मप्रतिज्ञा; अधर्म्मप्रधान प्रतिमा—शरीर अधर्म्मप्रतिज्ञा, अधर्म्मप्रधान शरीर. a sinful vow, a body full of sin. “एगा अधर्म्मपडिमा जंसि आया परिकिलेसत्ति ” ठा० १, १;—पलज्जण. त्रि० (—प्ररजन—न भर्मे प्ररज्यन्ते ये ते) अधर्म्मभां रज्जन थनार, अधर्म्मप्रेमी. अधर्म्म से प्रसन्न होने वाला; अधर्म्मप्रेमी sin-loving नाया० १८; विवा० १; दसा० ६, ४,—पलोइ त्रि० (—प्रलोकिन्—न धर्म्ममुपादेयतया प्रलोकयति यः स तथा ) अधर्म्मनेण उपादेयरूपे नेनार. अधर्म्म को ही उपादेयरूप से देखने वाला. (one) preferring sin to piety etc. नाया० १८; विवा० १; दसा० ६, ४,—राइ.

त्रि० (—राग्नि) अधर्मेनो रागी, अधर्म प्रेमी. अधर्म का प्रेमी sin-loving, attached to sin दसा० ६, ४,  
—समुदायार त्रि० (—समुदाचार—समा-  
चार—अधर्मात्मकः समुदाचारः सप्रमोदो  
वाऽऽचारो यस्य स तथा ) आरित्री विक्षल;  
दुराचारी, अधर्मेना आचरन्तुमां भग्न रहेनार  
अधर्माचरण में भग्न रहने वाला, दुराचारी  
engrossed in vicious practices,  
steeped in vice. नाया० १८; विवा०  
१,—सीलसमायार त्रि० (—शीलसमा-  
चार ) अधर्मरूप स्वभाव अने आचार छे  
नेने ते जिसका अधर्मरूप स्वभाव और  
आचार हैं वह. of sinful nature and  
conduct दसा० ६, ४;

अधर्मि. त्रि० ( अधर्मिन् ) धर्महीन, अधर्मी.  
धर्म हीन, अधर्मी. Sinful, irreligious  
सम० ३०,—जोय. पुं०, (—योग ) निमित्त,  
वशीकरण आदि प्रयोग करना ते. निमित्त,  
वशीकरण आदि प्रयोग करना practis-  
ing such arts as fascination  
etc. सम० ३०;

अधर्मिद्व त्रि० (—अधर्मिष्ठ—अतिशयेन धर्मी  
धर्मिष्ठो न धर्मिष्ठोऽधर्मिष्ठ ) अतिशय अधर्मी,  
अतिनिन्द्य कर्म करने वाला. Highly  
sinful; doing highly wicked  
deeds नाया० १८; विवा० १,

अधर्मिय. त्रि० ( अधर्मीक ) अधर्मी  
वर्तनार, अधर्मी, पापी, असज्जित अधर्म-  
मय वर्ताव करने वाला, अधर्मी, पापी Sinful,  
impious. नाया० १८, विवा० १; ठा०  
४, १;

अधर. त्रि० ( अधर ) नीचेनुं नीचे का  
The lower. जं० प० नंदी०—उट्ट.  
पुं० (—ओष्ठ ) नीचेने। होइ नीचे

का ओठ. the lower lip “ ओयद्विय  
सिलप्पवालाविक्कफलसस्सिणभाधरुद्धा ” नदी०  
—गमण. न० (—गमन ) अधोगति गवा-  
ना कारणे। अधोगति में ले जाने के कारण.  
cause of fall or degradation.  
“तद्वा गवालीकं च गह्वरं भणति अधरगमण”  
परह० १, २;

अधरिम त्रि० ( अधरिम—अविद्यमानं धरिम  
मृणद्रव्यं यस्मिंस्तत्तथा ) जयां अभुक्  
वज्रभाटे काष्ठे काष्ठनी पासेथी करण लेवुं  
नहि छे ते संयधी तकरार करपी नहि अवे।  
हुकम इरभाववाभां आव्यो छे.य तेवु नगर  
वगेरे ऐसा नगर वगैरह, जहा यह आज्ञा दी  
गई हो कि, अमुक समय तक कोई भी किसीके  
पास से कर्ज न ले और न उस सम्बन्ध में  
झगडा करे (A city etc) in which  
exaction of money due or  
quarrel about it is prohibited  
for a time. भग० ११, ११, नाया० १,  
काप० ५, १०१;

अधरी व्री० ( अधरी ) वाटवानी छिप्पर;  
भरल खरल A stone mortar  
“ अधरीसठाणसठिया दोवि तस्स पाया ”  
उवा० १, ६४,—लोह पु० (—लोष्ठ ) वाटव नी-  
लढवानो पथरो, ओरसीयो। वाटने का गोल  
पथर. a round flat stone used  
to pound substances as in a  
mortar “ अधरीलोहसठाणसठिआओ  
पाएसु अणुलिओ ” उवा० १, ६४,

अधारणिज्ज त्रि० (अधारणीय) अभुक् वज्र  
भाटे परपर करणनी लेती देती या ते संयधी  
तकरार करवानी जया भना करवाभा आवी  
छे.य तेवु नगर वगेरे अमुक समय तक  
परस्पर ऋण लेने देने या उम संवधी झगडा  
करने की जहाँ मनाही की गई हो ऐसा नगर  
वगैरह (A city etc) in which

payment of debt or quarrels arising in connection with it are prohibited for a time. नाया० १; विवा० ३; ( २ ) प्राणु धारणु करवाने असमर्थ; जवनयात्रा-निर्वाह न थछ शके तेषुं. प्राण धारण करने मे असमर्थ; जवन यात्रा-निर्वाह न कर सकने योग्य incapable of maintaining life नाया० ८; १३; १६; भग० ७, ६,

अधि. उप० ( अधि ) अधिकपणुं अधिकता, अधिकत्व. An indeclinable showing addition, excess etc भग० १, १, अधिकरण न० ( अधिकरण ) कलह, कलुये कलह, झगडा. Quarrel दसा० ४, १०५; सम० २०, ( २ ) अरलु; दोहार के सोनीनुं अेक धउवानु साधन लुहार अथवा सुनार का एक ओज़ार. anvil भग० १६, १; ( ३ ) कृषि आदि आरलनु साधन-हुथीयार कृषि आदि आरंभ के साधन an implement of agriculture. “ जन्नेणं भंते ! अधि-करणे कि आयप्पओगाणिन्वासिण् ? ” भग० १६, १,

✓ अधिगम धा० I. ( अधि+गम् ) ज्ञाणु जानना. To know, to come to know.

अधिगम्मह क० वा० विशेष० २२;

अधिगम पुं० ( अधिगम ) गुरुनो उपदेश साभणवाथी थयेल भोध गुरु का उपदेश सुनने से जो बोध हुआ हो वह Knowledge derived from the teaching of a preceptor. ठ० २, १;—रुइ पु० ली० (—रुचि-अधिगमो दिशिष्टं ज्ञानं तेन रुचिः—तत्त्वाभिज्ञाया यस्याऽसौ तथा ) गुरुनो भोध साभणी थयेल तत्त्वजिज्ञासा, समझितनो अेक प्रकार गुरु के उपदेश से उत्पन्न तत्त्वजिज्ञासा, सम्यक्त्व का एक भेद

desire for spiritual knowledge excited by the teaching of a preceptor, a variety of Samyaktva. प्रव० ६७०,—सम्मदंसण. न० (—सम्यग्दर्शन ) गुरुनो उपदेश साभणवाथी थयेल सम्यग्दर्शन-तत्त्वभोध. गुरु के उपदेश से उत्पन्न सम्यग्दर्शन-तत्त्वबोध. right belief caused by the sermon of a preceptor. “अभिगमसम्मदंसणे दुविहे पणत्ते, तंजहा-पडिवाई चेव अपडिवाई चेव ” ठ० २, १,

अधिगय. न० ( अधिकृत भावे क्तः ) अधिकार. अधिकार Fitness by reason of qualifications, authority; governing influence. पंचा० ६, ३६; अधिगय. त्रि० ( अधिगत ) ज्ञाणुवां आवेल जाना हुआ Known, understood. पंचा० ६, ३६;

अधिगरण. न० ( अधिकरण ) ज्ञुओ ‘अधिकरण’ शब्द. देखो ‘अधिकरण’ शब्द. Vide “ अधिकरण ”. भग० १६, १; —किरिया ली० (—क्रिया ) अधिकरण-आरंभ, समारंभना हुथीयार-तक्षवार आदि निमित्तथी लागती क्रिया-कर्मबंध अधिकरण-आरंभ, समारंभ के ओजारों के निमित्तसे होने वाला कर्मबंध Karma due to the use of implements of injury, killing etc; e.g. a sword etc “ अहिगरणकिरिया पवत्तगा बहुविहं अनत्थं अवमहं अप्पणो परस्स य करेति ” परह० १, २;

अधिगरणिया. ली० (\*आधिकरणिका-आधिकरणिकी-अधिक्रियते नरकादिष्वात्मा येन तदधिकरणं कलहः खड्गादिकं वा तत्र भवा तेन वा निर्वृता आधिकरणिकी ) क्लेश के हिसादिशना साधनो उभां करवाथी लागती

क्रिया; अधिकरणिङी क्रिया क्लेश अथवा हिंसादिक के साधनों को खड़ा करने से होता हुआ कर्मबंध, अधिकरणीकी क्रिया Karma due to the manufacture, storing up etc. of implements of conflict, injury, killing etc “अधिगरणियाणं भंते ! किरिया कइविहा-पणत्ता<sup>१</sup>, मंडियपुत्ता ! दुविहा संजोयणा-हिगरणकिरिया य निव्वत्तणाहिगरणकि-रिया य” भग० ३, ३, पन्न० २१, सम० ७; ठा० २, १,

**अधिगरणी** स्त्री० (अधिकरणी) अेरणु निहाई An anvil ठा० ८, १;—**संठिय** त्रि० (—संस्थित) अेरणुने आकारे रडेह निहाई के आकारमें स्थित anvil-shaped, ठा० ८, १;—**साला** स्त्री० (—शाला) दोढारनी डोड, न्या दोढुं धडाय ते धर लुहार की दुकान, जहाँ लोहे की चीजें बनाई जाती हैं. a smithy भग० १६, १;

**अधिगार.** पुं० (अधिकार) व्यापार Activity, business “अधिगारो तस्स विजयणं” आया० नि० १, २, १, १६६, प्रव० ८४,

**अधिय** त्रि० (अधिक) धलुं, वधारे, अधिक बहुत; अधिक More, additional सू० प० १,

**अधीर** त्रि० (अधीर) बुद्धिरहित, धीरन् वगरने बुद्धि रहित धैर्य रहित Foolish, lacking in patience उत्त० ८, ६, —**पुरिस** पुं० (—पुरुष) हिम्मत वगरने भाणुस, मदशक्तिवाणे पुरुष. साहस रहित मनुष्य; हीनशक्ति वाला पुरुष a man devoid of courage, a feeble-minded person “नो सुजहा अधीरपु-रिसोहिं” उत्त० ८, ६;

**अधुव.** त्रि० (अधुव) अनिश्चल, यल; अस्थिर अस्थिर, चंचल Unstable, in-constant; impermanent. “अधुवा अणियया असासया सडणपडणविद्धसण-धम्मा कामभोगा” नाया० १, “अधुव-धणधणकोसपरिभोगविज्जिया” परह० १, ३, “अधुवे असासयंमि” उत्त० ८, १, दस० ८, ३४, भग० ६, ३३, आया० १, ५, २, १४७; दसा० १०, ६,—**अच्चित्ता** स्त्री० (—अचित्ता) धुवअयित्त द्रव्यनी वर्गणु पडीनी अधुव अयित्त पुद्गलनी वर्गणु धुवअचित्त द्रव्य की वर्गणा के बाद की अधुवअचित्त पुद्गल की वर्गणा material molecules of impermanent lifeless objects. क० प० १, १६,—**बंधी.** स्त्री० (—बन्धिनी) ने युगल प्रकृतिभाथी अेकनो बंध यतां भीछनो बंध न थाय ते, नेम हास्य अने रतिनो बंध यता शोक अने अरतिनो बंध न थाय ते जिस युगल प्रकृति में से एक का बंध होते हुए दूसरी का बंध न हो, जैसे हास्य और रति का बंध होते हुए शोक और अरति का बंध न हो वह mutually exclusive pairs of Karmic nature e g the pair of the two sentiments of humour (laughter) and love excludes that made up of grief and ennui क० गं० ५, ४;—**सत्ता.** स्त्री० (—सत्ता) ने कर्मप्रकृतिनी सत्ता छवने सर्वदा न होय ते. जिस कर्मप्रकृति की सत्ता जीव को सदा न हो वह, Karmic-influence which does not always accompany the soul क० गं० ५, ६;

**अधो.** अ० (अधस्) नीयुं. नीचे Below; beneath. नाया० २;

**अधोगामि.** त्रि० ( अधोगामिन् ) पाणीना प्रवाहनी पेडे अधो-नीचे न्तर. पानी के प्रवाह के समान नीचे जाने वाला. Down-rushing like a torrent of water. निसी० १८, ११;

**अधोहि.** पुं० ( अधोवधि-परमावधेरधोवर्त्य-वधिर्यस्य सोऽधोवधि. ) परमावधिथी उत्तरता प्रकारना अवधितानवाणोऽथ परमावधि से नीचे की श्रेणी के अवधिज्ञान वाला जीव. A soul falling short of the highest Avadhijñāna. “ अधोहिसमोहणं चेव अप्पाणेणं आया अहेलोगं जाणइ ” ठा० २, २;

**अनंत** त्रि० ( अनन्त ) अन्त-पार वगरनुं नेना पार पायी शक्य नहि ते अनन्त; अन्त-पार रहित. Endless; infinite दस० ६, २, १६;—**हिय** न० (—हित ) अन्त वगरनेो हित; मोक्ष अन्त रहित-शाश्वत् हित; मोक्ष external bliss; salvation दस० ६, २, १६,—**हियकाम** त्रि० (—हितकाम-अनन्तहितं मोक्षं कामयत इति ) मोक्षनी धृष्टा करनार मुक्ति की कामना करने वाला (one) desirous of eternal bliss or final emancipation. दस० ६, २, १६,

**अनन्न.** त्रि० ( अनन्य-न अन्योऽनन्यः ) अन्य-लिन्न नहि ते. जो भिन्न-दूसरा न हो वह. Not different; not other than; identical; without a second पिं० निं० १५०;

**अनल.** पुं० ( अनल ) अग्नि, आग अग्नि; आग. Fire. सु० च० १, २;—**सेवा** स्त्री० (—सेवा) अग्निनु सेवन अग्नि का सेवन. resorting to fire; making use of fire. प्रव० ५२५;

**अनलस.** त्रि० ( अनलस ) आलस्यरहित;

दिसाही. आलस्य रहित; उत्साही. Not lazy; energetic. “ जुंजे अनलसो धुवं ” दस० ८, ४३;

**अनवरयं.** अ० ( अनवरत्तम् ) सतत; निरंतर. सतत; निरंतर. Constantly; ceaselessly, uninterruptedly. पंचा० १, ५०; **अनह** न० ( \*अनह-अक्षत-निर्विघ्न ) विघ्न वगरनुं. विघ्न रहित. Unobstructed; unopposed; unfettered सु० च० १, १०५;

**अनाउत्त.** त्रि० ( अनायुक्त ) उपयोग वगरनुं. उपयोग शून्य. Careless; inattentive. ओव० २०;

**अनागत.** त्रि० ( अनागत ) आवता काणनुं. भविष्य काल संबंधी. Future, belonging to the future. निसी० १०, ८;

**अनागार.** पुं० न० ( अनाकार ) आकार-भेद-विशेष वगरनुं आकार-भेद रहित. Shapeless, without any difference “ अनागारोवउत्ते बंधइ ” भग० ६, ३;

**अनाण** न० ( अज्ञान ) लुओ “ अणाण ” शब्द देखो “ अणाण ” शब्द. Vide “ अणाण ”. क० गं० ३, १८;—**तिग.** न० (—त्रिक) त्रय अज्ञान; मति, श्रुत अने विभंग ये त्रय विपरीत ज्ञान तीन अज्ञान; मति, श्रुत और विभंग ये तीन विपरीत ज्ञान. the group of three kinds of ignorance viz Mati, Śruta and Vibhanga. क० गं० ३, १८;

**अनाणत्त** त्रि० ( अनानात्व-न विद्यते नानात्वं येषां तेऽनानात्वाः ) नाना लाय-भेद-रहित; प्रकार विनानु. भेद रहित Undifferentiated; homogenous. “ एगविहमनाणत्ता, सुहुमा तत्थ वियाहिया ” उक्त० ३६, ७७;

**अनादेज्ज** त्रि० ( अनादेय ) नाभकर्भनी ओक प्रकृति, के नेना उदयथी ओवे छेद



हितकारी वचन पणु कोष्ठ स्वीकार करे नहि  
अने उपकृतमाणस पणु तिरस्कार करे छे  
नाम कर्म की एक प्रकृति, जिसके उदय से  
जीव के द्वारा प्रतिपादित हितकर वचनों को  
भी कोई अंगीकार न करे और उपकृत पुरुष भी  
घृणा करे A variety of Nāmakarma  
by the rise of which a person's  
words even though wholesome  
are not trusted or are derided  
and disregarded पञ्च० २३;

**अनावाह** त्रि० (अनावाध) लुओ "अणावाह"  
श०६. देखो 'अणावाह' शब्द. Vide  
"अणावाह" ओघ० नि० ३७;

**अनाय** त्रि० (अज्ञात) लुओ "अणाय"  
श०६. देखो 'अणाय' शब्द. Vide  
"अणाय" विशेष० २६६, ४८५;

**अनायभासि** त्रि० (अन्यायभाषिन्)   
यद्वा तद्वा न्यायविद्वा भोलनार यद्वा तद्वा  
न्यायविरुद्ध बोलने वाला Speaking  
recklessly and without regard  
to justice. "जे विग्गहिण् अनायभासी,  
न से समे होइ अकंभपत्ते" सूय० १, १३, ६,

**अनायरं** व० क० त्रि० (अनाचरत्) नहि आचर  
ते। नहीं आचरता हुआ Not practising,  
not performing पंचा० ११, ३६;

**अनारिय** त्रि० (अनार्य) लुओ 'अणा-  
रिय' श०६ देखो 'अणारिय' शब्द. Vide  
"अणारिय" आया० १, ४, २, १३३;

**अनाविल** न० (अनाविल) लुओ "अणा-  
विल" श०६ देखो "अणाविल" शब्द  
Vide "अणाविल" सूय० १, २, २, १४,

**अनासन्न** त्रि० (अनासन्न) आसन्न-न०  
नहि ते, दूरवर्ती दूरवर्ती. Not in the  
vicinity; situated at a distance.  
प्रव० ७१७;

**अनिअअ** त्रि० (अनियत) नियत-नियम  
रहित अनियमित, नियम रहित Without  
fixed rules or principles. विशेष० १;  
**अनिअट्ठिवायर** पुं० (अनिवृत्तिवादर) उपाय-  
ना अष्टकने अपाववाना आरंभथी अने  
नपुंसकवेदना उपशमथी भाडी पादर दोष-  
अने अपावे के उपशमावे त्या सुधीनी  
स्थितिमा नवमे गुणक्षेत्रे वर्तते ७४. कषाय  
के अष्टक का क्षय करने के आरंभ से और  
नपुंसकवेद के उमशम से लेकर बादर लोभ-  
खंड को क्षय करे या उपशमित करे वहाँ  
तक की स्थिति में नवें गुणस्थान में विद्य-  
मान जीव A soul in the ninth Gu-  
nasthāna when eight of his  
passions begin to be wholly  
destroyed, he begins to feel  
sexless, and his greed of a  
grosser nature is destroyed or  
subsided सम० १४,

**अनिअम** पु० (अनियम) अनिवृत्ति, असं-  
यम असयम. Absence of control  
over senses; attachment to  
worldly objects क० गं० ४, ५४,

**अनिकेत** त्रि० (अनिकेत) धरण्यारहित अ-  
निकेतन, विना घरवारका. Houseless,  
possessionless उत्त० २, १६;

**अनिक्खित्त** त्रि० (अनिक्षिप्त) निरंतर;  
अक्षु, आयो पाउया विना. निरंतर, लगातार.  
Continuous; uninterrupted.  
"छट्ठं छट्ठेणं अनिक्खित्तेणं तवोकम्मेषं"  
ओव० ४०, भग० २, ५३, १, ७, ६;  
निर० ३, ३;

**अनिगिण** पुं० (अनग्न) उपपक्षणी दशमी  
जल, अनग्न-नग्नपशुने टाणनार-वत्प्रादिक  
आपनार उपपक्ष. कल्पवृक्ष की दसवीं  
जाति, नग्नता को दूर करने के साधनरूप



वस्त्रादिक देने वाले कल्पवृक्ष. Tenth variety of Kalpavriksha removing nudity by yielding clothes etc मम० १०;

**अनिग्गह** पुं० ( अनिग्रह ) धन्द्रियेने क्षुभं न राप्पी शके ते; धन्द्रियेने अधीन इन्द्रियों को वश न कर सकने वाला; अजितेन्द्रिय Want of control over the senses; lack of self restraint. उत्त० ११, २;

**अनिच्च** त्रि० ( अनित्य ) अनित्य, अस्थिर चलायमान, अस्थिर Transient; transitory; not permanent दस० ८, ५६;

**अनिज्जिएण** त्रि० ( अनिज्जिएण ) निर्जरा धरेल नहि; आत्मप्रदेशथी अरीने दूर थयेल नहि. आत्मप्रदेश से जो पृथक् न हुआ हो वह, जिसकी निर्जरा नहीं हुई हो वह. Not worked off by Nirjarā भग० १, १०;

**अनिज्जूढ** त्रि० ( अनिर्यूढ ) लुहुं इत्थेपुं ष्ठा लुहुं ष्ठेथी नहि आपेसु पृथक् माना हुआ होने पर भी पृथक् नहीं किया गया हो वह Imagined as separate but not actually divided in fact. वेय० २, १८,

**अनिष्ट** त्रि० ( अनिष्ट ) धष्ट नहि ते; अशुभ अनिष्ट, अशुभ, अभद्र. An evil; any thing not desired. भग० २०, १,

**अनिदा** स्त्री० ( अनिदा ) लुओ 'अणिदा' शब्द. देखो 'अणिदा' शब्द. Vide "अणिदा" पन्न० ३५; भग० १६, ५;

**अनिमिस** पुं० ( अनिमिष ) आंभना पण-क्षर न मारवा ते आख का पलक न मारना Absence of the twinklings of the eyes; winklessness भग० ३, २;

**अनियट्ठ** पुं० ( अनिवर्त्त ) न्यांथी क्षरी निवर्त्तवानुं नथी ते; मोक्ष जहाँ से फिर

वापिस आना नहीं होता वह; मोक्ष. Final emancipation; lit. that from which there is no return. आया० १, ४, ४, १३७;

**अनियट्ठ** त्रि० ( अनिवृत्त ) निवृत्ति पाभेल नहि निवृत्ति नहीं पाया हुआ Unabstained. "इह कामानियट्ठस्स, अत्तट्ठे अवरज्जइ" उत्त० ७, २५,

**अनियट्ठि** न० ( अनिवर्त्तिन्-अनिवृत्ति ) लुओ 'अणियट्ठि' शब्द. देखो 'अणियट्ठि' शब्द Vide "अणियट्ठि". क० प० २, ६७; ४, २४; क० गं० २, २; ५, ७; विशेष० १२०६; —वायर पु० (—वादर ) लुओ "अणियट्ठि-वायर" शब्द. देखो "अणियट्ठिवायर" शब्द. vide 'अणियट्ठिवायर'. क० गं० ६, ५०; क० प० २, ४३;

**अनियट्ठिकरण** न० ( अनिवर्त्तिकरण ) लुओ "अणियट्ठिकरण" शब्द. देखो 'अणियट्ठिकरण' शब्द. Vide "अणियट्ठिकरण" विशेष० १२०३;

**अनियत्त** त्रि० ( अनिवृत्त ) निवृत्ति नहि पाभेल; अट्ठेल. निवृत्त नहीं हुआ. Not retired from; not turned away from उत्त० १४, १४,

**अनियय** त्रि० ( अनियत ) नियत नहि ते अनियत; नियत न हो वह. Unsettled. उत्त० ६, १७; प्रव० ५५०,—वित्ति त्रि० (—वृत्ति ) अनियत-अप्रतिबद्धपणु वृत्ति-विहार उरनार अनियतवृत्ति से विहार करने वाला. roaming or wandering from place to place unrestrained or unchecked प्रव० ५५०,

**अनिया** स्त्री० ( अनिदा ) लुओ 'अणिदा' शब्द. देखो 'अणिदा' शब्द Vide "अणिदा." पिं० नि० १०३;

**अनियाण** त्रि० ( अनिदान ) उरणीनु क्ष

न भागनार, नियाणा विनातो; आवी इलनी  
 कामना विनातो भावी फल की कामना नहीं  
 करने वाला; निदान रहित. Free from  
 desire of the fruits of actions  
 “ अनियाणे अकोउहल्ले जे स भिक्खु ” दस०  
 १०, १, १३; भत्त० ३०,

**अनिरुद्ध** पुं० ( अनिरुद्ध ) प्रद्युम्नकुमारनी  
 वैदर्भी राणीनी पुत्र, जे नेमनाथप्रभुनी  
 पासे दीक्षा लई, पार अंगनो अभ्यास करी,  
 सोण वरसनी प्रव्रज्या पाणी, शत्रुंजय पर्वत  
 उपर अक मासतो संथारो करी सिद्ध थया.  
 प्रद्युम्नकुमार का वैदर्भी रानी से उत्पन्न पुत्र, जो  
 नेमनाथप्रभु के पास से दीक्षा लेकर, बारह  
 अंगों का अभ्यास कर और सोलह वर्ष तक  
 प्रव्रज्या का पालन कर शत्रुंजय पर्वत पर  
 एक मास का संधारा कर सिद्ध हुआ The  
 son of Vaidarbhi the queen of  
 Pradyumnakumāra who took  
 Diksā from, Nemanātha, studied  
 twelve Āngas, observed ascetic  
 ism for sixteen years and obtain-  
 ed salvation after a months'  
 fasting on the Śātruñjaya  
 mountain. ( २ ) अंतगडसूत्रना येथा  
 वर्गना आठमा अध्ययननु नाम अतगड सूत्र के  
 चौथे वर्ग का षाँवाँ अध्याय. name of the  
 eighth chapter of the fourth  
 section of Antagada Sūtra  
 परह० १, ४; अंत० ४, ८,

**अनिला** पुं० ( अनिल ) पवन, वायु, हवा  
 Wind. भग० ५, १, ७, ६, दस० १०, १,  
 ३, क० गं० ४, १३, ( २ ) भरतक्षेत्रना गध  
 येवीसीना सत्तरमा तीर्थंकरनु नाम भरत  
 क्षेत्र की गत चौवीसी के १७ वें तीर्थंकर का  
 नाम. name of the 17th Tirthan-  
 kara of Bharataksetra in the

past Chovīsī ( cycle of time ).  
 प्रव० २६१;

**अनिला** स्त्री० ( अनिला ) ऐकवीशमा तीर्थंकर-  
 मुनिसुव्रतस्वामीनी प्रथम साध्वीनु नाम  
 २१ वें तीर्थंकर-मुनिसुव्रतस्वामी की प्रथम  
 साध्वी का नाम Name of the first  
 female ascetic disciple of Muni-  
 Suvrata Svāmī, the 21st  
 Tirthānkara प्रव० ३१०,

**अनिर्वाण** न० ( अनिर्वाण ) अतृप्ति, असंतोष.  
 अतृप्ति, असन्तोष Absence of content-  
 ment “ अयसो य अनिर्वाणं, सययं च  
 असाहुया ” दस० ५, २, ३२; ३८,

**अनिर्बुद्ध** त्रि० ( अनिर्बुद्ध ) अग्निदि शत्र-  
 थी परिणत-अग्नि तथेव नहि, सयित्त.  
 अग्नि आदि से जो अचित नही हुआ हो वह;  
 सचित्त Not made lifeless by fire  
 etc, having life. “ उच्छुखंहे अनिर्बुद्धे ”  
 दस० ३, ७;

**अनिसद्ध** त्रि० ( अनिसद्ध ) लुओ “ अणिसद्ध ”  
 शब्द देखो “ अणिसद्ध ” शब्द Vide  
 “ अणिसद्ध ” पंचा० १३, ६,

**अनिस्सिअ**. त्रि० ( अनिस्सिअ ) निश्चा-  
 लीजनी भद्व भेगवाननी धम्म विनातो  
 दूसरे की सहायता प्राप्त करने की इच्छा रहित  
 Self-reliant दस० १, ५, सम० ३२;  
 दस० ४, ४१, ५२,—चयण त्रि०  
 (—चचन ) रागद्वेषनी निश्चा रहित जेनां वचन  
 होय ते रागद्वेष से रहित वचन कहने वाला.  
 (one) whose speech is free from  
 passion or hatred. प्रव० ५५१,

**अनिहत्**. त्रि० ( अनिहत् ) निरुपक्रम आ-  
 युध्यवाणो; जेनु आयुष्य नुटे नहि—कोई भी  
 हलाय नहि ओवे अखंड आयु वाला, जिसकी  
 आयु किसीसे भंग न हो वह Indestruct-  
 ible सम० ५० २३५,

**अनिहुत.** त्रि० ( अनिभृत ) अनुपशान्त  
अशान्त. Not calmed, not quieted;  
not peaceful परह० १, ३;

**अनीश.** न० ( अनीक ) सैन्य, ६१६२ सेना  
An army कप्प० २, १३,—अहिवइ  
पुं० (-अधिपति) सेनातो नायक सेना का  
नायक-अधिपति. commander of an  
army. कप्प० २, १३;

**अनीसा** स्त्री० ( अनिश्रा ) नेत्रा-भीमनी  
अपेक्षातो अलाप. दूसरे की अपेक्षा का अभाव  
Self-reliance, self-help पिं० नि०  
१४५;

**अनीहारिम** न० ( अनिर्हारिम ) लुओ  
“अणीहारिम” शब्द देखो ‘अणीहारिम’  
शब्द. Vide “अणीहारिम.” भग० २, १,

**अनुच्च** त्रि० ( अनुच्च ) द्रव्यथी अल्पमूल्य  
अने लापथी गुरुता आसनथी उच्युं नहि  
‘द्रव्य से अल्पमूल्य और भाव से गुरु के आसन  
से ऊंचा न हो Less in value and not  
more elevated from devotional  
point of view than the seat of  
a preceptor उत्त० १, ३०;

**अनुत्पन्न** त्रि० ( अनुत्पन्न ) उपज्जेल नहि ते.  
उत्पन्न नहीं हुआ Not produced; not  
born, not created निसी० ४, २२,

**अनुप्पयाहिणीकरेमाण.** व० कृ० त्रि० ( अनु-  
प्रदक्षिणीकुर्वत् ) आसपास प्रदक्षिणा  
करता हुआ  
Cir-cum ambulating; moving  
round an object, राय० ६७,

**अनुप्पविसित्ता** स० कृ० अ० ( अनुप्रविश्य )  
प्रवेश करके. प्रवेश करके. Having  
entered “से अनुप्पविसित्ता गामं वा जाव  
रायहाणि वा” आया० २, ७, १, १५५,

**अनुभूय-अ** त्रि० ( अनुभूत ) अनुभवेलुं,

परिचयमां - आवेलु अनुभूत, परिचित.  
Experienced, familiarly known.  
अणुजो० १३०;

**अनुरत्त.** त्रि० ( अनुरक्त ) अनुरागी, आस-  
क्त, प्रेमी अनुरागी, प्रेमी Full of attach-  
ment to or love for सु० च० १,  
२७६;

**अनुलेवणतल** न० ( अनुलेपनतल ) लुओ  
‘अणुलेवणतल’ शब्द देखो ‘अणुलेवण-  
तल’ शब्द Vide ‘अणुलेवणतल’ दसा०  
६, १,

**अनुलोम** त्रि० ( अनुलोम ) लुओ ‘अणु-  
लोम’ शब्द देखो ‘अणुलोम’ शब्द Vide  
“अणुलोम.” वव० ८, १०; परह० १, ४;

**अनुलोमेयव्व** त्रि० ( अनुलोमितव्य ) अनु-  
इल पनापवु ते अनुकूल करना Making  
agreeable, वव० ८, १०;

✓ **अनुसास** धा० I ( अनु+शास् ) अनुशासन  
करवु, शिक्षा आपनी अनुशासन करना, शिक्षण  
देना To teach, to instruct.

अनुसासंति उत्त० १, २७;

**अनेरइअ-य** त्रि० ( अनैरायिक ) नारकी शि-  
वायना, नारकीथी भिन्न नारकी के सिवाय;  
नारकी से भिन्न Not Nārakī; other  
than Nārakī. भग० ४, ६; ६, १०;

**अन्न** न० ( अन्न ) अनाज; दाण्डा अनाज.  
Corn, grain. राय० २४१,—जीविय.  
(-जीवित-अन्नेन जीवितं प्राणधारणं यस्या-  
ऽसावन्नजीवितः) अन्नने आधारे जिवनार  
अन्न के आधार से जीने वाला depending  
on food for life. राय० २४१;

**अण्ण** त्रि० ( अन्यत् ) लुओ ‘अण्ण’ शब्द  
देखो ‘अण्ण’ शब्द Vide “अण्ण.”  
राय० १६; दस० ४; ५, २, ३६; ६, १२;  
७, १६, अणुजो० १३०, नंदी० स्थ० ४३;

उत्त० १, ३३, ६, ४२; ३०, २५, सु० च० ४, १५२, विशेष० १५४; पिं० नि० भा० ४,  
 —धर्मिअ. त्रि० ( -धार्मिक ) भिन्न धर्मवाणो, विधर्मी अन्यधर्मी, विधर्मी following another religion, belonging to a different creed  
 ओष० नि० १५;—भव पुं० ( -भव ) भीजे भव दूसरा भव another birth क० प० ६, १०,—मण त्रि० ( -मणस् ) भीष्ट तर्क्ष भटकता भववाणो जिसका मन दूसरी ओर भटकता हो वह having mind wandering elsewhere आया० १, १, ३, १५,—लिंग पुं० न० ( -लिङ्ग ) अन्यदर्शनीतो वेप अन्यदर्शन वाले का वेप non-Jaina in dress etc उत्त० ३६, ४६; प्रव० ४७६,—वेलचरग पुं० ( -वेलाचरक ) भोजननी वेणा पीतापीने भिक्षा करवानो अतिग्रह धरनार साधु भोजन का समय निकल जाने पर भिक्षा लाने का अभिग्रह रखने वाला साधु a Sādhu, begging food after the time of dinner has passed ठा० ५, १,  
 —संभोइय त्रि० ( -साम्भोगिक ) भिन्न सामायारीवाणो ( साधु ) भिन्न सामाचारी वाला साधु ( an ascetic ) differing in religious practices पचा० ५, ४१,  
 अन्नउत्थिय त्रि० ( अन्यवृत्तिक ) लुओ 'अणउत्थिय' शब्द देखो 'अणउत्थिय' शब्द Vide "अणउत्थिय" सम० ३४, नाया० ११, आया० २, १, १, ४, ओव० ४०,  
 अन्नतर त्रि० ( अन्यतर ) लुओ 'अणय' शब्द देखो 'अणय' शब्द Vide "अणय" दस० ४, ६, ७,  
 अन्नतित्थि त्रि० ( अन्यतीर्थिन् ) अन्यतीर्थी, जैनेतरमतवाला अन्य तीर्थी, जैनेतर मतनुयायी A non-Jaina प्रव० ६५१,

—देव पुं० ( -देव ) अन्य मतना देव-प्रह्ला, विष्णु प्रभृति अन्यमत के देव a god of a different ( i. e. heretical ) creed, e. g. Brahmā, Viṣṇu etc प्रव० ६५१;  
 अन्नतित्थिअ पुं० ( अन्यतीर्थिक ) जैनेतर जैनेतर A non-Jaina प्रव० ६५१;  
 अन्नत्त न० ( अन्यत्व ) अन्यत्वभावना; सकल संबंधी वस्तुत पोतापी लुहा छेओम थितवु ते अन्यत्व भावना Meditation upon the fact that all relatives etc are in reality unconnected with one's soul प्रव० ५७६,  
 अन्नत्थ अ० ( अन्यत्र ) लुओ 'अणत्थ' शब्द देखो 'अणत्थ' शब्द Vide "अणत्थ" सू० प० १, पिं० नि० १०८, २८३, ओष० नि० ७८; सु० च० ४, १६८,  
 अन्नमन्न त्रि० ( अन्योन्य ) लुओ 'अणमण' शब्द देखो 'अणमण' शब्द Vide "अणमण" ठा० २, ३, नाया० ८, राय० ४२, वेय० ४, २,  
 अन्नयर त्रि० ( अन्यतर ) लुओ 'अणयर' शब्द देखो 'अणयर' शब्द Vide 'अणयर' आया० १, ६, २, १८३, २, ५, १, २४५, दस० ४, ६, ७; १६, ३३, ६०, सूय० १, २, २, ४, उत्त० ३०, २२, जीवा० ३, ३, निसी० १, १०, सु० च० २, ६०१, क० ग० २, २२, ५, ८७; क० प० २, ५३, कप्प० ४, ७६; दसा० १०, ३, ज० प० २, २१,  
 अन्नया अ० ( अन्यदा ) लुओ "अणया" शब्द देखो 'अणया' शब्द Vide 'अणया' ओव० ४०, पिं० नि० ८४; सु० च० १, ४२, दसा० १०, १;  
 अन्नयाकयाई अ० ( अन्यदाकदाचित् ) लुओ 'अणयाकयाई' शब्द देखो 'अणया-

कयाइ"शब्द Vide "अणयाकयाइ." जं०  
प० ३, ४३, भग० ७, ६;

अज्ञय पुं० ( अर्णव ) समुद्र; दरीयो. समुद्र;  
सागर. Ocean. उत्त० १०, ३४,

अज्ञहा. अ० ( अन्यथा ) लुओ 'अणहा' शब्द. देखो 'अणहा' शब्द Vide 'अणहा'.  
आया० १, २, ५, ६१; १, ५, ६, १७०;  
सूय० १, १, ३, १४; उत्त० २८, १८; विशेष०  
१८७; सु० च० ४, २४०; क० गं० १, २१;  
५६, २, ८३

अज्ञहि. अ० ( अन्यत्र ) लुओ स्थले दूसरी जगह.  
In another place; elsewhere.  
"अज्ञहि मच्छे" प्रव० ६०२;

अज्ञागय. त्रि० ( अन्वागत ) युक्त; जोडिये.  
मिला हुआ; जुडा हुआ Joined, con-  
nected. आया० १, ५, ३, १५५;

अज्ञाण न० ( अज्ञान ) लुओ 'अणाय' शब्द  
देखो 'अणाय' शब्द. Vide "अणाय".  
प्रव० ४५७; भग० १, ६, उत्त० १८, २३;  
—परिसह. पुं० (—परिषह ) ज्ञानना  
अभावे यत्तु दुष्ट सहन करने के ज्ञान के अभाव  
से होने वाला कष्ट सहन करना. endur-  
ance of the dis-comforts of  
ignorance. सम० २२;

अज्ञाण्या. स्त्री० ( अज्ञानता—अज्ञान ) अज्ञान-  
ता; अज्ञानपण अज्ञानता; अज्ञानपन.  
Ignorance सूय० २, ७, ३८,

अज्ञाणि. त्रि० ( अज्ञानिन् ) लुओ 'अणायि' शब्द  
देखो 'अणायि' शब्द. Vide  
"अणायि". दस० ४, १०, विशेष० ३१८;  
भक्त० ८१;

अज्ञाणिय. त्रि० ( अज्ञानिक ) सम्यग्ज्ञान-  
रहित; अज्ञानी. सम्यग्ज्ञान से रहित,  
अज्ञानी. Ignorant; devoid of right  
knowledge. सूय० १, १, २, १६; ( २ )

अज्ञाननेत्र श्रेय माननार वादी, के जेना ६७  
प्रकार छे. अज्ञान को ही श्रेष्ठ मानने वाला  
वादी, जिसके ६७ प्रकार हैं. one who  
holds that ignorance alone is  
the highest bliss. (there are 67  
varieties of this tenet). प्रव०  
१२०२;—वाइ त्रि० (—वादिन् ) "अज्ञान-  
थी श्रेय थाय छे, ज्ञानमां तकरारे थाय छे,  
पुरे पुरे ज्ञान काधने थतुं नथी, अधुरा  
ज्ञानथी अनेक भतो थाय छे, भाटे ज्ञान  
भेणवतुं नहि," ऐम माननार ऐक वादी.  
"अज्ञान से ही कल्याण होता है, ज्ञान में भगड़ा  
हो जाता है, पूर्णज्ञान किसीको होता नहीं,  
अधूरे ज्ञान से भिन्न २ मतों की उत्पत्ति होती  
है, इस लिये ज्ञान प्राप्त करने की आवश्यकता  
नहीं है" ऐसा मानने वाला एक वादी. (one)  
who believes that knowledge is  
a curse and that ignorance is  
bliss सूय० २, २, ७६;

अज्ञाय त्रि० ( अज्ञात ) अपरिचित. अपरि-  
चित, विना पहिचान का, विना जाना हुआ.  
Not known, unfamiliar. दस० ६,  
३, ४;—उच्छ पु० (—उच्छ ) लुओ  
'अणायउच्छ' शब्द. देखो 'अणायउच्छ'  
शब्द. vide 'अणायउच्छ' दस० ६, ३, ४;  
१०, १, १६;—एस्ति. पुं० (—एस्तिन् ) अज्ञात  
थई आहारनी गवेषणा करने वाला. अज्ञात होकर  
आहार की गवेषणा करने वाला one who  
seeks food incognito. उत्त० १५, १;  
—चरअ. पु० (—चरक) लुओ 'अणायचरअ'  
शब्द देखो 'अणायचरअ' शब्द. vide  
'अणायचरअ'. ठा० ५, १;

अज्ञिआपुत्त. पुं० ( अज्ञिकापुत्र ) ऐक प्राचीन  
धर्माचार्यनु नाम. एक पुरातन धर्माचार्य.  
Name of an ancient religious  
preceptor. संथा० ५६,

अज्ञिय त्रि० ( अज्ञित ) युक्त; सहित. युक्त;



साहित. Joined to; accompanied with. सू० १, १०, १०;

✓ **अज्ञेस** धा० I ( अनु+एष् ) अन्वेष्टुं; शोधयुं, तपास करपी. अन्वेषण करना, खोजना; शोध करना To inquire after; to search, to scrutinize.

**अज्ञेसि** वि० आया० १, १, ७, ५६;

**अज्ञेसअ.** त्रि० (अन्वेष्टक) अन्वेष्टु-तपास करनार खोजी One who looks into or inquires into प्रव० ६४२;

**अज्ञेसण.** न० (अन्वेषण) गवेष्टुं; तपासयुं; ज्ञेयुं खोजना; शोध, अन्वेषण Inquiry, search विशेष० १३८१;

**अज्ञेसि.** त्रि० (अन्वेष्टिन्) ज्ञुओ "अज्ञेसि" शब्द देखो "अज्ञेसि" शब्द. Vide "अज्ञेसि" आया० १, २, १, १०२; १, ५, २, १४६;

**अज्ञोअ.** त्रि० (अन्योन्य) ज्ञुओ "अज्ञोअण" शब्द देखो "अज्ञोअण" शब्द Vide "अज्ञोअण". पि० नि० ५१,—**अज्ञेस** पुं० (प्रवेश) ओक जीनने शृङ्खलाबन्ध सम्बन्ध connection as of the links of a chain क० प० १, ४;

**अज्ञाणय.** पुं० (अज्ञानक) ज्ञुओ "अज्ञाणय" शब्द देखो "अज्ञाणय" शब्द Vide "अज्ञाणय". भग० १, ६;

**अपअ.** त्रि० (अपद्) पशु वगैरनु, गति विना ना आउ वगैरे. बिना पैर का, गति रहित वृक्षादिक Devoid of feet; devoid of motion, e.g. trees etc भग० १८, ४, पि० नि० ७६; आया० १, ५, ६, १७०, अणुजो० ६१,

**अपइहाण** पुं० (अप्रतिष्ठान) ज्ञुओ "अपइहाण" शब्द देखो "अपइहाण" शब्द,

Vide "अपइहाण" जीवा० ३, ठा० ५, ३, पञ्च० २;

**अपइद्विय** त्रि० (अप्रतिष्ठित) ज्ञुओ "अपइद्विय" शब्द देखो "अपइद्विय" शब्द.

Vide "अपइद्विय" ठा० ४, १,

**अपइरणपसरियत्त** न० (अप्रकीर्णप्रसृतत्व) ज्ञुओ "अपइरणपसरियत्त" शब्द देखो "अपइरणपसरियत्त" शब्द Vide "अपइरणपसरियत्त" सम० ३५;

\* **अपउल्ल** त्रि० (अपक्व) पाकेयुं नहि, कच्चा; न पका हुआ Unripe, raw. पंचा० १, २२,

**अपएस** त्रि० (अप्रदेश) प्रदेशरहित, अंश वगैरनुं; अवयव विनानुं; जेना विभाग पडी शके नहि तेयुं, परमाणु वगैरे प्रदेश रहित; अवयव बिना का; अविभाजित-परमाणु वगैरह Indivisible; e.g. an atom. भग० ५, ७, ८; ६, ४, २०, ५, ठा० ३, २; —**द्वया** स्त्री० (अर्थता) अप्रदेशपणुनी अपेक्षा अप्रदेशत्व की अपेक्षा. stand point of indivisibility भग० २५, ४;

**अपओस** पुं० (अपद्वेष-अपगतो द्वेषोऽपद्वेष) द्वेषनो अभाव, अभिसरिपणुं; मध्यस्थपणुं. द्वेष का अभाव, अमात्सर्यभाव, माध्यस्थ भाव Absence of malice; neutrality पंचा० ३, ४८,

**अपंडिय** त्रि० (अपरिणत) भूर्ध; अज्ञाण. मूर्ख, अज्ञानी. Ignorant; stupid. सू० च० ४, ६८,

**अपक्व** त्रि० (अपक्व) अग्नि आदिथी पुरे पुरे पाकेयुं नहि, कच्चा आदिसे बराबर नही पका हुआ, कच्चा Not well cooked; raw. परह० २, ५; प्रव० २८२,—**ओसहिभक्खणया** स्त्री० (ओषधिभक्षणता) अग्नि आदि उपर पकाव्या विनानुं अनाज पावुं ते, श्रावकना सातभा व्रतनो प्रथम



अतिथार. अग्नि आदि द्वारा बिना पकाया हुआ  
अन्न खाना, श्रावक के सातवें व्रत का प्रथम  
अतिचार. eating uncooked or  
raw food; the first partial  
violation of the seventh vow of  
a layman. उवा० १, ५१;

अपक्वखगाहि. त्रि० ( अपक्षग्राहिन्-न पक्ष  
गृह्णातीत्यपक्षग्राही ) शास्त्राधीन पक्ष  
अपक्षनाश नहि; अपक्षपाती. शास्त्राधीन  
पक्ष का आग्रह न करने वाला; अपक्षपाती  
Impartial, not specially advocat-  
ing any cause दसा० ४, १०५,  
ठा० ६;

अपक्वखेवग त्रि० (अप्रक्षेपक) मार्गनी पश्ये  
नेतुं द्रव्य परत्याग्यु डोय ते मार्ग के बीच  
में ही जिसका धन खर्च हो चुका हो वह.  
(One) whose money has been  
spent up in the midst of his  
travel नाया० १५,

अपगंड त्रि० ( अपगण्ड-अपगतं गण्डं दोषो  
यस्मात्तदपगण्डम् ) निर्दोष; दोषरहित  
निर्दोष, दोष रहित Innocent, fault-  
less ( २ ) पानीना झीलु पानी का फेन  
foam of water “ सुसुकसुक अपगंड  
सुकं ” सूय० १, ६, १६,

अपञ्चअ पुं० ( अप्रत्यय ) अप्रतीति, अवि-  
श्वास. अविश्वास Disbelief; distrust  
परह० १, २;

अपञ्चकखाण पुं० न० ( अप्रत्याख्यान ) प-  
ञ्चकखाण-त्याग-विरतिपरिणामने अलाव  
पञ्चकखाण-त्याग-विरतिपरिणाम का अभाव  
Not taking the vow of giving  
up or abstaining from. भग० ६, ४,  
( २ ) देशविरतिपरिणामने अटकावनाश  
कषाय; अपञ्चकखाणवरणीय कषायनी  
योक्छी देशविरतिरूप परिणाम को रोकने

वाला कषाय, अपञ्चकखाणवरणीय कषाय की  
चौकड़ी. a sort of moral unclean-  
liness which is an obstacle to  
the vow of partial abstinence  
from पञ्च० १४;—कसाय पुं० (—कषाय)  
अपञ्चकखाणवरणीय कषाय-क्रोध, मान,  
माया अने लोभ, जेना उदयथी देशविरतिपरि-  
णाम न आवे, जेनी कषायनी योक्छी अप  
ञ्चकखाणवरणीय कषाय-क्रोध, मान, माया और  
लोभ, जिसके उदय से देशविरतिरूप परिणाम  
न हो सके. Kaṣāya which pre-  
vents one from the vow of Pā-  
chchakhāṇa or abstaining from  
certain kinds of enjoyment  
or gratification. भग० ६, ३१;  
—किरिया स्त्री० (—क्रिया) पञ्चकखाण-  
त्याग न करवाथी लागती क्रिया-कर्मबंध;  
अपञ्चकखाण क्रिया त्याग न करने से होने  
वाला कर्मबंध, अपञ्चकखाण क्रिया Karmā  
resulting from non-abstinence  
“अपञ्चकखाणकिरिया दुविहा पं० तं० जीव  
अपञ्च० अजीवअपञ्च० ” ठा० २, १,  
“अपञ्चकखाणकिरियाणं भते ! कस्स कज्झ ?  
गोयमा ! अन्नयरस्स वि अपञ्चकखाणिस्स ”  
पञ्च० २२, १७, “ से एणं भंते ! सेठिस्स य  
तण्णयस्स किण्हणस्स खत्तियस्स य समा चेव  
अपञ्चकखाणकिरिया कज्झ ? ” भग० १, २,  
६, ७, ८;—कोह पुं० (—क्रोध) जे क्रोध  
उत्पन्न थया पछी तलावनी झटपेटे अक  
वरसमुधी लुंसाय नहि अने क्रोध पणु पञ्च-  
कखाण आववा छे नहि ते, अपञ्चकखाण-  
वरणीय क्रोध अपञ्चकखाणवरणीय क्रोध, जो  
उत्पन्न होने के बाद एक वर्ष तक न छूटे और  
न कोई पञ्चकखाण-त्याग वगैरह होने दे.  
anger lasting long and obstru-  
cting the vow of abstinence.

ठा० ४, १,—शिष्यस्तिय त्रि० (—निर्वर्त्ति-  
त ) अविरतिपरिणामयी निष्पन्न-थयेत्।  
अविरतिपरिणाम से निष्पन्न-उत्पन्न,  
resulting from the absence of  
the vow of abstinence भग० ६, ४,

अपचक्ष्वाणि त्रि० (अप्रत्याख्यानिन्) पश्य-  
भाषु-त्याग न करना, विरतिरहित. पक्षखा-  
ण-त्याग न करने वाला, विरति रहित Devoid  
of the vow of abstinence. भग०  
६, ४, ७, २;

अपचक्ष्वाणिया स्त्री० (\*अप्रत्याख्यानिका-  
की) अपश्यभाषु निमित्ते लागती क्रिया-  
कर्मबन्ध अपचक्षाण के निमित्त से होने वाला  
कर्मबन्ध Karma due to absence  
of the vow of abstinence भग०  
५, ६,

अपचक्ष्वाय त्रि० (अप्रत्याख्यात) जेने।  
त्याग नहीं किया ते, न तजेतुं जिसका त्याग  
नहीं किया हो वह Not given up, not  
renounced भग० ८, ५, नाया० १६,  
सूय० २, ४, १,

अपचक्ष्मिजाणमाणा व० कृ० त्रि० (अप्रत्याभि-  
जानत्) 'आ ते नहीं पणुं पीणुं छे' ऐम न-  
णुतो, तेने तेरूपे न नणुतो 'यह वह  
नहीं है किन्तु दूसरा है' इस प्रकार जानता हुआ,  
उसे उस रूप से न जानता हुआ. Not re-  
cognising, not able to identify  
" तत्तेयं सा बोवई 'देवी पडिबुद्धा  
समाणी तं भवण असोगवणियं च अ-  
पचक्ष्मिजाणमाणी " नाया० १६,

अपचक्ष्य पुं० (अप्रत्यय) असत्यनुं ऐक नाम  
असत्य का एक नाम Disbelief परह० १,  
२, (२) अदत्तादाननुं सत्तरमु नाम. अदत्ता  
दान का सत्रहवाँ नाम a variety of  
falsehood, the seventeenth

synonymous word for Adattā-  
dāna परह० १, ३;—कारण त्रि०  
(—कारक) विश्वासघाती;—भरोसे। उडाडनार  
विश्वासघाती committing breach  
of trust परह० १, २,

अपच्छरण त्रि० (अप्रच्छन्न) शुभ नहि;  
प्रगट, छानुं नहि बिना छिपा हुआ, प्रकट.  
Manifest, not concealed भग०  
१५, १,

अपच्छाणुतावि त्रि० (अपश्चात्तापिन्)  
अपराध आलोचनीने पश्चात्ताप न करना,  
गुरुनी समीपे दोषनी आलोचना करी राख  
थनार अपराध की आलोचना करके पश्चात्ताप न  
करने वाला, गुरु के समीप दोष की आलोचना  
करके संतुष्ट होने वाला Not repenting  
after confession of faults to a  
Guru, feeling delighted after  
confession of faults to a Guru  
भग० २५, ७,

अपच्छायमाण व० कृ० त्रि० (अप्रच्छादयत्)  
न छुपावतो; छानु न राखतो नहीं छुपाता  
हुआ Not concealing " अणिरहव-  
माणा अपच्छायमाणा जहाभूयमवि-  
तहमसंविद्धं एयमद्वं आहक्खइ " नाया० १,

अपच्छिद्रम् त्रि० (अपश्चिम-न विद्यते पश्चिमो  
ऽस्मादित्यपश्चिम) सौथी छेदु, जेना पंछी  
डाध नहीं ते, अतसमयनुं, आपरनु सब से  
आखिर का, अंतिम. Last, final. भग० ६,  
३३, २०, ५, सम० ७, ओव० ३४; नंदी०  
स्थ० २, नाया० १,—मारणंतियसंलेहणा.  
स्त्री० (—मारणान्तिकसंलेखना-मरणमे-  
वास्तो मरणान्त, तत्र भवा मारणान्तिकी,  
संलिख्यते कृशीक्रियतेऽनया शरीरकषाया-  
दिकमिति संलेखना सपोविशेषकषाया  
तत् कर्मभारय ) भरलुसमये-अतवपते  
क्षपापने उपशमावी देहनी मूर्च्छा टाणी

करवाभां आवतुं तपविशेष-संधारो. मृत्यु के समय कषाय का उपशमकर और देह में मूर्च्छा न रखकर जो तपविशेष किया जाता है वह-संधारा. an austerity practised at the approach of death, consisting in assuaging evil passions and giving up food and water etc. उवा० १, ७३; भग० ७, २;

**अपञ्ज.** त्रि० (अपर्याप्त) अपर्याप्तं दुर्दु रूप-नाम अपर्याप्त का छोटा नाम. An abbreviation of 'अपर्याप्त.' क० गं० १, २०; ३, १३;—बायर. न० (—बादर) आदर ऐकेन्द्रियतो अपर्याप्ति, जेणे पर्याप्ति पूरी नहीं आंधी ऐवे आदर ऐकेन्द्रिय. जिसने पर्याप्ति पूरी न बांधी हो ऐसा बादर ऐकेन्द्रिय. an undeveloped one-sensed Jīva (living being) with a gross body. क० गं० ४, १०;—सन्नि त्रि० (—संज्ञिन्) संज्ञी पञ्चेन्द्रियतो अपर्याप्ति, अपर्याप्ति संज्ञी. अपर्याप्त संज्ञी, संज्ञी पञ्चेन्द्रिय का अपर्याप्त. an undeveloped five-sensed rational living being क० गं० ४, ७;

**अपञ्जग** त्रि० (अपर्याप्तक) अपर्याप्ति, जेणे आहारादि ७ पर्याप्तिमांती पर्याप्ति पूरी नहीं करी ते जिसने आहारादि छः पर्याप्तियों में से पर्याप्ति पूरी न करी हो वह. Undeveloped; (the soul) that has not developed the six Paryāptis viz Āhāra etc. क० प० २, ४३;

**अपञ्जस्त.** त्रि० (अपर्याप्त-अपर्याप्तयो विद्यन्ते यस्य सोऽपर्याप्तः) अपर्याप्ति-नामकर्मना उद्यथी आहारादि पर्याप्ति आंधीने पूरी करी न होय ते; ते जे प्रकारना होय-जोके लब्धि-अभ्याप्ति पीजे करुण्यअपर्याप्ति, जे पोतानी

अति योग्य पर्याप्ति पूर्ण कर्या विना भरथ पामे ते लब्धि अपर्याप्ति अने जेणे ७ पर्याप्ति पूर्ण करी नहीं पथु अवश्य पूर्ण करी पर्याप्ति थरो ते करुण्यअपर्याप्ति; दरेक ७५ उत्पन्न थवाने पहेले अंतर्मुहूर्ते करुण्यअपर्याप्ति थधने ७ पर्याप्ति थाय छे. अपर्याप्ति-नामकर्म के उदय के कारण आहारादि पर्याप्ति का बंध करके जिसने उन्हें पूर्ण न किया हो वह; उसके दो प्रकार होते हैं—एक लब्धि अपर्याप्त, दूसरा करुण्यअपर्याप्त. जो अपनी जाति योग्य पर्याप्ति पूर्ण किये बिना मरण को प्राप्त हो वह लब्धिअपर्याप्त और जिसने अभी पर्याप्ति पूर्ण न की हो पर अवश्य पूर्ण करके पर्याप्त होगा वह करुण्यअपर्याप्त. प्रत्येक जीव उत्पन्न होने के पहिले अंतर्मुहूर्त तक करुण्यअपर्याप्त अवस्था में रहकर फिर पर्याप्त होता है. (A soul) without a full development of the characteristics of the body into which it is to incarnate It is of two sorts: (1) Labdhi-Aparyāpta i. e. dead in an Aparyāpta state; (2) Karaṇa-Aparyāpta i. e. sure to attain to the Paryāpta state. भग० ५, ४; ८, १, २; २४, २०; ३३, १; पञ्च० १; नंदी० १७; क० गं० २, ३३; ३, १०, ४, ५, प्रव० ११६५; (२) अपूर्ण; पूर्ण नहीं ते. जो पूर्ण न हो वह imperfect. “सर्वं वि ते अपञ्जस्तं, नेव तावदाप तं तव ” उक्त० १४, ३६; राय० २४७;—नाम न० (—नामन्) नामकर्मनी ओक प्रकृति, जे जेना उद्यथी ७५ पोताने योग्य पर्याप्ति पूर्ण करवाभां समर्थ थतो नहीं. नामकर्म की एक प्रकृति, जिसके उदय से जीव अपने योग्य पर्याप्ति पूर्ण करने में समर्थ नहीं होता. a variety of Nāma-

Karma by which the soul remains Aparyāpta क० गं० २, ३३;

अपज्जत्तग त्रि० ( अपर्याप्तक ) लुओ  
“ अपज्जत्त ” श०६ देखो “ अपज्जत्त ”  
शब्द Vide “ अपज्जत्त ” “ दुविहा  
नेरइया पणत्ता, तंजहा-पज्जत्तगा चेव अप-  
ज्जत्तगा चेव जाव वेमाणिया ” भग० ८, १,  
१६, ३, २५, १, पञ्च० १, २३; क० प०-१,  
६८, ठा० २, २,

अपज्जत्तय-अ त्रि० ( अपर्याप्तक ) लुओ  
“ अपज्जत्त ” श०६ देखो “ अपज्जत्त ”  
शब्द Vide “ अपज्जत्त ”, भग० ६, ३;  
२४, १, १२, ३४, १; सम० १४;

अपज्जत्ति. स्त्री० ( अपर्याप्ति ) पर्याप्तिनी  
अपूर्णता; पोताना स्थान योग्य पर्याप्ति आधी  
पूर्ण करी न होय ते पर्याप्ति की अपूर्णता,  
अपने स्थान योग्य पर्याप्ति बाधकर उसे पूर्ण  
न किया हो State of being Aparyā-  
pta भग० १८, १;

अपज्जवसिय-अ. त्रि० ( अपर्यवसित ) नेतुं  
पर्यवसान-छेड़ नथी ते, अनन्त जिसका अन्त  
नहीं वह, अनन्त Endless, infinite  
“ एत्थणं सिद्धा भगवतो सादिया अपज्जव-  
सिया च्छिद्वत्ति ” पञ्च० २ आया० १, ७, १,  
१६६, ठा० २, १, ओव० ४३, भग० २, १,  
६, ३; ८, २, ८, २५, ३, उक्त० ३६, ८,

अपज्जवसियत्त न० ( अपर्यवसितत्व ) अन्त-  
रहितपण, अनन्तपण अन्त रहितपणा, अन-  
न्तत्व Infinity; endlessness विशेष  
३१३१,

अपज्जुदास पु० ( अपर्युदास ) अनिषेध  
निषेध रहित Non-prohibition, ab-  
sence of prohibition विशेष १८३;

अपज्जुवासणा स्त्री० ( अपर्युपासना ) पर्यु-  
पासना-सेना न करती ते सेवा न करना.

Not serving; absence of wor-  
ship. नाया० १३,

अपडिक्कम्म. न० ( अप्रतिकर्मन् ) लुओ  
“ अपडिक्कम्म ” श०६ देखो “ अपडिक्कम्म ”  
शब्द Vide “ अपडिक्कम्म ”, पञ्च० २, ५;  
अपडिक्कंत त्रि० ( अप्रतिक्रान्त ) दोष-अति-  
आरथी निवृत्ति पाभेन नहि. दोष-अतिचार  
से निवृत्ति नहीं पाया हुआ Not abstained  
from sins or faults. दसा० १०, ३;

अपडिक्कम पुं० ( अप्रतिक्रम ) लुओ “अप-  
डिक्कम्म ” श०६ देखो “ अपडिक्कम्म ” शब्द.  
Vide “ अपडिक्कम्म ” भग० २, १;  
२५, ७;

अपडिक्कमित्तु सं० कृ० अ० ( अप्रतिक्रम्य )  
पडिक्कमणु न करीने प्रतिक्रमण किये बिना  
Without having performed  
Pṛāikamana ( repentance for  
sin ) उक्त० २६, २२,

अपडिग्गहा. स्त्री० ( अपतद्ग्रहा ) जे अंधाती  
कर्मप्रकृतिमा पीछ प्रकृतिना दलियानुं संक-  
मणु न थाय ते प्रकृति तयारे ‘ अपतद्ग्रहा ’  
कहेवाय, जेम-संज्वलनकषायनी योडडीनी  
ओक समय छिणी तणु आगद्विडानी स्थिति  
शेष रहे तयारे ते ‘ अपतद्ग्रहा ’ कहेवाय जिस-  
ववती हुई प्रकृति में दूसरी प्रकृति के दल-समूह  
संकमण नहीं होता तब वह प्रकृति ‘ अपतद्ग्रहा ’  
इस नाम से कही जाती है, जैसे-संज्वलनकषाय  
की चौकड़ी की एक समय न्यून तीन आव-  
लिका की स्थिति जेष रहे तब वह ‘ अपतद्ग्रहा ’  
कही जाती है That Karmic nature  
or Kaima into which another  
Karmic nature or Kaima can-  
not be transformed while the  
former is yet being shaped क०  
प० २, ५;

अपडिक्क त्रि० ( अप्रतिचक्र ) लुओ ‘अप-

डिचक्क ' शब्द. देखो 'अपडिचक्क' शब्द  
Vide " अपडिचक्क " नदी०

अपडिण त्रि० (अप्रतिज्ञ) अ-नहि-प्रतिज्ञा-  
नियायु, नियायु न करना, करणीनु क्ष  
भागी लेना नहि प्रतिज्ञा न करने वाला  
कर्म के फल की चाह न रखने वाला.  
Not desiring the fruits of  
Karma सूय० १, २, २, २०, ( २ )  
कोषादिना आवेशमां 'अमुकने भागीश, अमु-  
कनुं अनिष्ट करीश' धृत्याऽऽतिज्ञान करना  
क्रोधादि के आवेश में किसीका अनिष्टादि करने  
की प्रतिज्ञा न करने वाला or not  
swearing to kill or injure an-  
other in a fit of rage. आया० १,  
२, ५, ८, १, ७, ३, २०६, ( ३ ) राशेप  
रहित रागद्वेषरहित free from attach-  
ment and hatred " तत्तेण अणुसि-  
द्धा ते अपडिणणेण जाणया " सूय० १,  
३, ३, १४;

अपडिणवेत्ता सं० कृ० अ० (अप्रतिज्ञाप्य)  
आज्ञा लीधा विना आज्ञा लिये विना  
Without having taken permis-  
sion कप्प० ६, ५२;

अपडिणुण त्रि० (अप्रतिपूर्ण) अधुरे,  
तुच्छ, गुणहीन अधूरा, तुच्छ; गुण रहित  
Imperfect, mean, devoid of  
merit. सूय० २, २, ५७,

अपडिणूय त्रि० (अप्रतिपूजक) लुओ  
'अपडिणूय' शब्द देखो 'अपडिपूय' शब्द  
Vide " अपडिपूय " दसा०  
६, २०; २१,

अपडिपूरेमाण व० कृ० त्रि० (अप्रतिपरयत्)  
साथीत न करतो, पुरवार न करतो साक्षित नहीं  
करता हुआ, सिद्ध नहीं करना हुआ Not  
proving, not adducing evidence  
वेय० ६, २;

अपडिचद्ध त्रि० (अप्रतिवद्ध) विषयभोग के  
स्थानना प्रतिबंधी रहित विषयभोग या  
स्थान के प्रतिबंध से रहित Unrestrai-  
ned, e g in sensual pleasure,  
movement in space etc. "अप-  
डिचद्धो अनलो व्व " परह० २, ५; ठा०  
४, ४, जं० प० २, ३१;—विहार. पुं०  
(—विहार) अनिबंध-द्रव्यादि अलिप्यंगरहित  
विहार प्रतिबंध-द्रव्यादि अभिष्वग रहित  
विहार. movement unfettered  
by attachment to wealth etc.  
प्रव० ७७६,

अपडिचद्धया स्त्री० (अप्रतिवद्धता) लुओ  
"अपडिचद्धया" शब्द देखो "अपडि-  
चद्धया" शब्द Vide "अपडिचद्धया"  
उत्त० २६, ३१,

अपडिबुज्झमाण व० कृ० त्रि० (अप्रतिबुध्य-  
मान) शब्दान्तरने न समजतो; धारणा न  
करतो शब्दान्तर को न समझता हुआ, धारणा  
न करता हुआ. Not grasping the  
import of a word. जं० प० ३, ६७;  
भग० ६, ३३,

अपडिदार पुं० (अप्रतिकार) दुःख अना उपा-  
यतो अभाव. दुःख के उपाय का अभाव.  
Absence of remedy for misery,  
पंचा० २, १०,

अपडिलद्ध त्रि० (अप्रतिलब्ध) न प्राप्त  
थेय; नहीं पाया हुआ; अप्राप्त. Not re-  
ceived, not obtained. "अपडिलद्ध  
सम्मत्तरयणपडिलंभे" नाया० १;

अपडिलेस्स त्रि० (अप्रतिलेख्य) लुओ  
"अपडिलेस्स" शब्द देखो "अपडिलेस्स"  
शब्द Vide "अपडिलेस्स." ओव०

अपडिलेहण न० (अप्रतिलेखन) पडिलेहण  
न करतु ते, नजरे ओष्ठ नहि ते पडिलेहण



न करना, दृष्टि से नहीं देखना Not examining, not inspecting आव० ४, ६, अपडिलेहणा स्त्री० ( अप्रतिलेखना ) आगे न जेवु ते आँखों से नहीं देखना Not examining, not inspecting कप्प० ६, ५३,—सील त्रि० ( -शील ) जेने जेधने यावधानी टेव नथी ते जिसे देखकर चलने की आदत नहीं है वह used to walk without carefully inspecting कप्प० ६, ५३,

अपडिलेहिय त्रि० ( अप्रतिलेखित ) ज्वनी रक्षाभाटे नजरे जेजेव-तपासेव नहि जीव की रक्षा के लिये आँखों से नहीं देखा हुआ Not examined with a view to the protection of lives उवा० १, ५५,—दुप्पडिलेहियउच्चारपासवणभूमि स्त्री० ( -दुष्प्रतिलेखितोच्चारप्रसवणभूमि—अप्रत्युपेक्षिता जीवरक्षार्थं चक्षुषा न निरीक्षिता दुष्प्रत्युपेक्षिताऽसम्यग् निरीक्षिता पुरीषमूत्र निमित्त भूमि स्थण्डिलं तत कर्मधारय ) पोषामा वडीनीत-आडे, लधुनीत-पेशाण पर-ध्वानी भूमि न जेवाथी अथवा सारी रीते न जेवाथी पोषामा लागतो अतिचार, आवडना अगीयारमा व्रतनो त्रीजे अतिचार पोषव-व्रत में शौच, पेशाव करने की भूमि न देखकर उन क्रियाओं के करने से जो दोष लगता है वह; आवक के ग्यारहवें व्रत का तिसरा अतिचार sin arising from casting away or laying down feces, urine etc without examining or properly examining the ground, during the time of Posadha vow of a layman, the third partial violation of the eleventh vow of a layman. उवा० १, ५५,—दुप्पडिलेहियसिज्जासंधारय

पुं० (—दुष्प्रतिलेखितराव्यासंस्कारक ) पोषा-मां सुधानी पथारी न पडिजेडुवाथी अथवा सारी रीते पडिजेडुवु न डरवाथी पोषामा लाग-ते अतिचार, आवडना अगीयारमा व्रतनो प्रथम अतिचार पोषव से सोने का विद्यौना-विस्तरा अच्छी तरह पडिलेहण न करने से जो दोष लगता है वह, आवक के ग्यारहवें व्रत का प्रथम अतिचार partial violation of Posadha vow accruing to a layman through not examining or properly not examining his bed, the first partial violation of the eleventh vow of a layman उवा० १, ५५,

अपडिलोमया स्त्री० ( अप्रतिलोमता ) अनु-द्वेष्टता अनुकूलता Favourableness, agreeableness भग० २५, ७,

अपडिवज्जचित्ता सं० कृ० अ० (अप्रतिपद्य) अगीकार कर्था बिना अंगीकार किये बिना. Without having accepted वव० ६, २०,

अपडिवाइ त्रि० (अप्रतिपातिन्) अपडिवाध; आन्धु ज्ञय नहि तेवु-आयडसमडित, डेवण ज्ञान वगेरे जो उत्पन्न होकर कभी नष्ट न हो ऐना ज्ञावकसम्यक्त्व, केवलज्ञान आदि Not passing away, permanently remaining e g Kevala-Jñāna etc ठा० २, १, (२) न० डेवण ज्ञान उत्पन्न थायत्या सुधी रहेवावाणु अवधि-ज्ञान केवलज्ञान उत्पन्न होने तक रहने वाला अवधिज्ञान Avadhyjñāna lasting till omniscience is attained to. “से कि त अपडिवाइ च ओहिनायं” नंदी० विशेष० ७०३,

अपडिविरत्र-य त्रि० ( अप्रतिविरत ) जुओ “अपडिविरय” शब्द देखो “अप्य-



‘डिविरय’ शब्द. Vide “ अप्पडिविरय.”  
दसा० ६, १; ४;

अपडिसंलीण. त्रि० ( अप्रतिसंलीन ) जेणे  
धद्रिओ अने कषायनो निग्रह नथी कर्यो ते.  
जिसने इन्द्रिय और कषाय का निग्रह नहीं  
किया वह. Having passions and  
senses uncontrolled. “ चत्तारि  
अपडिसंलीणा प० तं० कोहअपडिसंलीणे  
मा० मा० लो० अपडि० ” ठा० ४, २,  
“ पंच अपडिसंलीणा प० तं० सोइंदियअप-  
डिसंलीणे जाव फासिंदियअपडिसंलीणे ”  
ठा० ५, २,

अपडिसुणणे न० ( अप्रतिश्रवण ) गुरुनां  
वचन सांख्य्यां छता ते वचनने गणुडारया  
नहि ते; गुरुनी आज्ञानो स्वीकार करी न्वाण  
न वाणवो ते गुरु के वचन सुनकर भी उन्हें  
न गिनना, गुरु की आज्ञा मानकर उत्तर न  
देना. Not giving a response to  
the order of a preceptor i. e.  
not signifying acceptance of  
his order in words. प्रव० १३०;

अपडिसुणित्ता स० कृ० अ० ( अप्रतिश्रुत्य )  
जुओ “ अप्पडिसुणित्ता ” शब्द देखो  
“ अप्पडिसुणित्ता ” शब्द Vide “ अप्प-  
डिसुणित्ता ” दसा० ३, १४; १५, २०, २१,

अपडिसेवय पु० स्त्री० ( अप्रतिसेवक )  
अतिथार आदि दोषने न सेवनार; दोष न  
लगानार अतिचार आदि दोषों को न लगाने  
वाला. One, not incurring sins  
like those of partial violation  
etc. भग० २५, ६; ७,

अपडिसेह. पुं० ( अप्रतिषेध ) निषेध न करवो  
ते; अटकाव नहि निषेध न करना रोक  
टोक का अभाव Non-obstruction;  
not stopping पचा० ६, ३६,

अपडिहट्टु. सं० कृ० अ० ( अप्रतिहत्य ) पाछुं  
आप्पा विना. पाछे दिये विना. Without  
having given back. वेय० ३, २२;  
निसी० २, ५६;

अपडिहय त्रि० ( अप्रतिहत ) जुओ ‘ अप्प-  
डिहय ’ शब्द. देखो ‘ अप्पडिहय ’ शब्द.  
Vide “ अप्पडिहय. ” नाया० १६; उत्त०  
११, २१, भत्त० ५०,

अपडिहारय. त्रि० ( अप्रतिहारक ) अपाढी-  
यारा-धक्षिने पाछा न आपवा योग्य सेज,  
संधारे वगेरे मालिक को पाछे न देने योग्य  
शय्या, विस्तर आदि Unfit to be re-  
turned to the owner; e.g. bed,  
bed-cover etc. आया० २, २, ३;

अपडिकार. त्रि० ( अप्रतीकार ) प्रतीकार-  
छलाव वगरेतो, रक्षाणुना उपाय विनानो.  
प्रतीकार रहित, रक्षा के उपाय विना का.  
Ir-remediable; having no  
means of protection against.  
“ कि ते सीउरहतएहखुहवेयणं अपडिकार-  
अडविजम्मणा ” परह० १, १;

अपढम त्रि० ( अप्रथम ) प्रथमतारहित;  
जेमां प्रथमपाछुं नथी ते; अनादि, शरुआत  
विनानुं प्रथमता रहित; आदि रहित, अनादि.  
Having no beginning. भग० १८,  
१; ३५, ३; ( २ ) प्रथम-पाछेनुं नहि;  
भीजु, त्रीजुं वगेरे प्रथम-पाहिला न हो वह  
अप्रथम कहलाता है अर्थात् दूसरा, तीसरा  
आदि not first, e. g. second, third  
etc क० गं० ५, १६; ठा० २, १, भग०  
२५, ६;—खगइ. स्त्री० (—खगति ) अगति-  
विहायोगति-यावतुं, ते याव जे प्रकारनी छे  
शुभ अने अशुभ तेमानी अपढम-भीजु अ-  
शुभ-अप्रशस्त विहायोगति वह विहायोगति  
जो दूसरी प्रकार की अर्थात् अशुभ है, क्योंकि  
कि, विहायोगति शुभ और अशुभ इस तरह दो

प्रकार की होती है. the second of the two kinds of Vihāyogati viz (1) good and (2) bad, gait or movement of a bad kind क० गं० ५, ५७; अपढमसमय पुं० ( अग्रथमसमय ) प्रथम समय नहीं, पीछे, त्रीने समय वगेरे प्रथम समय नहीं, दूसरा, तीसरा आदि समय Samaya or unit of time other than the first भग० ३५, ५, ठा० २, २;—उववरणग त्रि० (—उपपन्नक ) नेने उपनये ऐक्यी वधारे-ये, त्रलु आदि समय था होय ते जिसे उत्पन्न हुए एक से अधिक अर्थात् दो तीन आदि समय हुए हैं वह (one) after whose birth more than one Samaya have elapsed. “ येरहया दुविहा पन्नता, तं० पढमसमयो-ववरणगा अपढमसमयोववरणगा जाव वेमा-णिया” ठा० २, २;—उवसंतकसाय पुं० स्त्री० (—उपशान्तकषाय) नेने ऐक्यी वधारे-ये, त्रलु आदि समय कषाय उपशमाव्याने-उ-पशमभ्रेणीये यथाने था छे ते जिसे कषाय का उपशम किये एक से अधिक अर्थात् दो, तीन समय हुए हैं वह one after whose assuaging of impure passions more than one Samaya have elapsed ठा० ८, —एगिंदिय पुं० (—एकेन्द्रिय ) नेने ऐक्यी वधारे-ये, त्रलु आदि समय ऐक्यी वधारे-ये, त्रलु आदि समय प्राप्त किये-ऐक्यी वधारे-ये, त्रलु आदि समय प्राप्त किये एक से अधिक समय हुआ है वह. (a soul) after whose becoming one-sense-organed more than one Samaya have elapsed. ठा० १०, —कखणिकसाय. पुं० स्त्री० (—क्षीणकषाय) नेने कषाय क्षय किये-क्षयभ्रेणीये यथे ऐक्यी वधारे समय था होय ते. जिसे कषाय को क्षय किये-क्षयभ्रेणी

पर चढ़े एक से अधिक समय हुआ हो वह one after whose starting on the path of destruction of impure passions more than one Samaya have elapsed. ठा० ८, —सजोगि-भवत्थ पुं० (—सयोगिभवत्थ ) नेने सजे-गिलवत्थ थये-तेरमे गुणुहाणे यथे ऐक्यी वधारे समय था छे ते जिसे सयोगिभवत्थ हुए-तेरहवे गुणस्थान पर चढ़े एक से अधिक समय हुआ हो वह one after whose reaching the thirteenth Gunasthāna ( Sayogibhava ) more than one Samaya have elapsed. ठा० २, १, —सिद्ध. पुं० (—सिद्ध ) सिद्ध पर्याय-सिद्धपणुना पीण, त्रीण आदि समय-मा वर्तमान सिद्धलगव न; नेने सिद्ध था ने ऐक्यी वधारे समय था छे ते सिद्धपर्याय के दूसरे तीसरे आदि समय में वर्तमान सिद्ध भगवान्, जिसे सिद्ध हुए एक से अधिक समय हुआ हो वह one after whose attainment to Siddhahood more than one Samaya have elapsed. पन्न० १, —सुहुमसंपरायसंजम पुं० (—सूक्ष्मसंपरायसंयम ) नेने सूक्ष्मसंपराय संयम प्राप्त किये-दशमे गुणुहाणे यथे ऐक्यी वधारे समय था होय ते जिस सूक्ष्मसाप-रायसंयम प्राप्त किये-दशवे गुणस्थान पर चढ़े एक से अधिक समय हुआ हो वह one after whose attaining to the tenth Gunasthāna ( Sūkṣma-samparāya Saṁyama ) more than one Samaya have elapsed. ठा० ८;

अपत्त त्रि० ( अपात्र ) अयोग्य; पात्र-लायक नहीं. अयोग्य, पात्र-योग्य नहीं Unfit; unworthy. निती० १६, २२,

अपत्त त्रि० ( अप्राप्त ) पामेक्ष नहि, प्राप्त न  
 करेक्ष प्राप्त नहीं किया हुआ; नहीं पाया हुआ.  
 ( One ) not in possession of,  
 ( anything ) not obtained नाया०  
 ६, भग० १८, १,—कारि न० (—कारिन् )  
 स्वविषयसाथे संबंध पाभ्या विना विषयने  
 ग्रहण करने वाली इन्द्रियाँ—आँख और मन.  
 an organ of sense which be-  
 comes conscious of its object  
 without actual touch; i.e. the  
 eye and the mind विशेष० २४५,  
 —जोवणा. स्त्री० ( —जौवना ) यौवन  
 अवस्थाने न प्राप्त थयेक्ष स्त्री, कुमारिका,  
 याक्षा यौवनावस्था को अप्राप्त स्त्री, कुमारिका,  
 बाला. a young girl; a maiden  
 ठा० ५, २;—विसय. न० (—विषय—अप्रा-  
 प्तोऽस्मिन् विषयो ग्राह्यवस्तुरूपो यस्य तद-  
 प्राप्तविषयम् ) अप्राप्यकारी इन्द्रिय, जे इन्द्रिय  
 विषयने पाभ्या विना विषयने ग्रहण करे ते—  
 आँख और मन अप्राप्तकारी इन्द्रिय, जो  
 इन्द्रिय विषय को प्राप्त किये विना विषय को  
 ग्रहण करे वह, आँख और मन an organ  
 of sense which becomes con-  
 scious of its object without  
 actual touch; i.e. the eye and the  
 mind “ लोयणमपत्तविसयं मणो न्न जम-  
 खुग्गहाइ सुणत्ति ” विना० १, २; विशेष०  
 २०६;

अपत्तजात. त्रि० ( अपत्रजात ) जेने पाँपे  
 नथी आपी अये पक्षीवुं अत्र्युं जिसे पंख नहीं  
 आये ऐसा पक्षी का बच्चा An unfledged  
 bird. “ जहा दियापोत्तमपत्तजातं,  
 साक्षासगा पत्रिडं सन्नमायं ” सूत्र० १,  
 १४, २;

अपत्ति स्त्री० ( अप्राप्ति ) अप्राप्ति अप्राप्ति.  
 Not getting, non-acquisition.  
 क० ग० २, १३,

अपत्तिग त्रि० ( अप्रीतिक ) प्रीति वगरनु.  
 प्रीति रहित Devoid of pleasure पंचा०  
 ७, १०,—रहिय. त्रि० (—रहित ) अप्रीति  
 रहित. अप्राप्ति हीन free from dis-  
 pleasure or disgust. पंचा० ७, १०;

अपत्तिय त्रि० ( अपात्रिक ) जेने कुछ आधार  
 नथी ते जिसे कुछ आधार नहीं है वह.  
 Help-less; supportless. भग०  
 १६, ४,

अपत्तियंत. त्रि० ( \* असंवदित—अप्राप्त ) न  
 पामतो; न भणतो प्राप्त न होता हुआ, नहीं  
 मिलता हुआ Not obtaining, not  
 being obtained. सु० ज्ञ० १०, ३८,

अपत्तियमाण व० कृ० त्रि० ( अप्रतीयत् )  
 प्रतीति—विश्वास न राखतो; लरोसे न राखतो  
 विश्वास न रखता हुआ Not believing;  
 not putting trust in. भग० ३,  
 १; ६, ३३; १५, १, नाया० १५; १६;

अपत्त्य. त्रि० ( अपत्त्य ) अपत्त्य, शरीरनी प्रकृतिथी  
 प्रतिदूष—भोजन वगेरे पथ्यरहित भोजन, शरीर  
 की प्रकृति से विरुद्ध भोजन आदि Unwhole-  
 some, e.g. food etc. “ अपत्त्यं अंशगं  
 भुञ्जा, राया रजं तु हारणं ” उक्त० ७, ११; पंचा०  
 ८, १०; १५, ४०;—अयण त्रि० (—अदन )  
 पथ्य—हितकर भोजन विनातो, संयत्त  
 वगरने; परलवसां सुख आये तेवा सुकृत्य  
 विनातो. हितकर—पथ्यरूप भोजन रहित; पर  
 भव में सुख देने वाले सुकृत्य से रहित de-  
 stitute of wholesome food, de-  
 stitute of good actions which  
 would give happiness in the next  
 birth. नाया० १५;—पत्तिथय. त्रि०

(-प्रार्थित-अपत्यं प्रार्थितं येन स तथा )  
अपत्य-अनिष्टने धृष्टानार अपत्य-अनिष्ट  
की इच्छा करने वाला. desirous of  
(things) unwholesome or evil  
जं० पं० ३, ४५; निर० १, १;

अपत्यण. न० ( अप्रार्थन ) धृष्टान न करती  
ते, प्रार्थनानो अभाव इच्छा का न करना,  
प्रार्थना का अभाव Absence of prayer  
or desire. "अदंसणं चेव अपत्यणं च"  
उत्त० ३२, १५,

अपत्थिय त्रि० ( अप्रार्थित ) न धृष्टेयुं, न  
भागेयुं अनिच्छित, नहीं मागा हुआ Not  
sought, not wished नाया० १६,  
—पत्थिय त्रि० (-प्रार्थक) लुभो 'अप्प-  
त्थियपत्थय' शब्द देखो 'अप्पत्थियपत्थय'  
शब्द. Vide 'अप्पत्थियपत्थय' नाया० ८,  
६, निर० १, १,

अपत्येमाण व० कृ० त्रि० (अप्रार्थयमान) प्रार्थना  
न करतो, अणु धृष्टतो प्रार्थना न करता हुआ,  
इच्छा न करता हुआ Not entreating,  
not wishing उत्त० २६, ३३,

अपद पुं० ( अपद-न विद्यते पदमवस्थाविशेषो  
यस्य सोऽपद ) मुक्त आत्मा, सिद्ध भगवान्  
मुक्तात्मा; सिद्ध भगवान् A liberated  
soul, Siddha "अपदस्स पय णत्थि"  
आया० १, ५, ६, १७०, ( २ ) ढाडिम, आंभो,  
भीजेरा वगेरे अउ आम, अनार, बिजोरा  
आदि वृक्ष a variety of trees  
like mango, pome-granate,  
Bijorā etc भग० १८, ४;

अपदार न० ( अपद्वार ) नगरनी आणवगेरे,  
अपदार, दुष्टमार्ग दुष्टमार्ग, नाला-मलमूत्र बहने  
की नाली A passage for draining  
filth etc, a gutter etc, नाया० ८,  
अपदुस्समाण व० कृ० त्रि० (अप्रद्विष्यत्) दूषन

करतो. द्वेष न करता हुआ Not hating,  
not despising अंत० ४,

अपदेस्स, पुं० ( अप्रदेश ) निन्द्य प्रदेश-स्थल.  
निन्द्य स्थल. A bad place, an in-  
famous quarter पंचा० ७, ११,

अपद्वदंत व० कृ० त्रि० (अपद्रवत्) मरण पा-  
भतो मरण पाता हुआ Dying, depart-  
ing the world. भग० २, १,

अपप्यकारिस्स न० ( अप्राप्यकारित्व ) विषय-  
ग्राह्यवस्तुना स्थणप्रत्ये गया विना विषयनो  
परिच्छेद करनार धृष्टियोनो धर्म, आप्य अने  
मन ये ये शिवाय यार धृष्टियो प्राप्यकारी  
छेत्यारे आ ये अप्राप्यकारी छे माटे ये  
येमा अप्राप्यकारित्व रहे छे. विषय-ग्राह्यवस्तु  
स्थल के प्रति गये विना विषय का परिच्छेद करने  
वाला इन्द्रियों का धर्म, आँख और मन ये दो  
इन्द्रियाँ अप्राप्यकारी हैं और बाकी की चार  
प्राप्यकारी हैं, इसलिये इन दो में अप्राप्यकारित्व  
धर्म है The property of a sense-  
organ by which it can cognise  
its object without actual  
contact with it The eye and  
the mind have this property.  
नदी०

अपमज्जण. न० ( अप्रमार्जन ) पुण्यं नहि  
ते, प्रमार्जन न करयुं ते परिमार्जन नहीं  
करना, जीव, जन्तु, रज आदि को नहीं हटाना  
Not removing away, not cleans-  
ing of dust etc सम० १७,

अपमज्जणासील. त्रि० ( अप्रमार्जनशील )  
रजोहरण, पुण्य वगेरेथी प्रमार्जन न करवाना  
स्वभाववाणा ( साधु साध्वी ) रजोहरण आदि  
से प्रमार्जन न करने वाला ( साधु, साध्वी ) ( A  
monk or a nun ) not given to or  
disposed to cleanse vessels,

ground etc. by means of a long-handled brush कप्प० ६, ५३;

**अपमज्जिय.** त्रि० ( अप्रमार्जित ) २०६७२७  
आदिथी पुं० नहि; प्रमार्जन न करे।  
रजोहरण आदि से परिमार्जन नहीं किया  
हुआ Not cleansed by a brush  
etc; not removed away. प्रव० २८६;  
—चारि. पुं० (—चारिन् ) पुं० या विनाश  
स्थानमां भेसना, आलना, परस्परना साधु;  
असमाधितुं भीष्णुं स्थानक सेवन। अपरि-  
मार्जित स्थान में बैठने वाला, चलने  
वाला साधु, असमाधि का दूसरा स्थानक  
सेवन करने वाला. ( an ascetic )  
sitting, walking etc. in a place  
not cleansed with a brush etc,  
( one ) incurring the second  
Sthānaka of Asamādhī सम०  
२०, दसा० १, ५, —दुष्पमज्जियउच्चार-  
पासवणभूमि. स्त्री० (—दुष्प्रमार्जितोच्चार-  
प्रवणभूमि) पोषाभा उच्यते पासवण परस्पर-  
वानी भूमि मुद्गल न पुं०वाथी के अन्तर न  
पुं०वाथी पोषधनतमां लागते अतिचारः  
प्रोषधव्रतमें मलमूत्रादि प्रक्षेपण करने की भूमि  
को मलमूत्रादि प्रक्षेपण करते समय बिल्कुल न  
पूजने-जीवजंतु रहित न करने या विधि-  
पूर्वक न पूजने से जो अतिचार लगे वह  
partial violation incurred  
during the Posadha vow by  
not cleansing or by improperly  
cleansing (with a brush etc ) the  
ground for laying down feces  
and urine. उवा० १, ५५;—दुष्पम-  
ज्जियसिज्जासंथार पुं० (—दुष्प्रमार्जित  
शय्यासंस्तार ) पोषाभां सुवानी पथारी  
मुद्गल न पुं०वाथी के विधिपूर्वक न पुं०वाथी  
लागते अतिचार; आवडना अगीयारमा

मतने। ओक अतिचार-दोष प्रोषध में सोने  
का विस्तरा बिल्कुल न पूजने से-जीवजंतु रहित  
करने से या विधिपूर्वक न पूजने से लगता हुआ  
दोष, आवक के ग्यारहवें व्रत का एक अतिचार.  
a fault incurred by a layman  
during the Posadha vow by  
not cleansing or by improper-  
ly cleansing his bed ( with a  
brush etc.), partial violation  
of the eleventh vow of a  
layman. आव० ४, ६, उवा० १, ५५;  
**अपमत्त.** त्रि० ( अप्रमत्त ) भद, विषय, कषाय,  
निद्रा, विकथा आदि प्रमाद वगैरहो; अप्रमादी;  
सतत उपयोगी, सातमाथी साधुमा गुणस्थानक  
पर्यंतना शुच प्रमाद रहित जीव; विषय,  
कषाय, मद, निद्रा आदि प्रमादों से रहित  
सातवें से चौदहवें गुणस्थान तक का जीव.  
Free from pride, passions,  
Kasāya, and such other faults;  
souls between the seventh and  
the fourteenth stages of evolu-  
tion. क० गं० २, १, २, ४, ६०; नदी०  
१७,—अंत. न० (—अन्त ) सातमा अप्र-  
मत्तसंयति गुणस्थान पर्यंत सातवें अप्रमत्त-  
संयति गुणस्थान तक. up to the 7th  
Gūṇasthāna, called Apramatta  
Gūṇasthāna. क० गं० ४, ६२;—संजय.  
पुं० (—संयत ) सातमे गुणस्थाने वर्तते  
शुच; प्रमादरहित-अप्रमादी साधु सातवें  
गुणस्थानवर्ती जीव; प्रमाद रहित साधु.  
a soul in the seventh stage of  
spiritual evolution; a Sādhu  
free from Prāṇāda i e passions  
etc “अपमत्तसंजयस्स गं भते ! अपमत्त  
सजमे वट्टमाणस्स सव्वा वि य गं अपमत्तदा  
कालओ केवचिरं होइ ” भग० १, १, २, ३१



—संजयगुणद्वारं. न० (—सयतगुणस्थान) सातमा गुणस्थानकं नाम, अभ्यस्तसयत नामे गुणस्थान सातवें गुणस्थान का नाम the seventh Gunasthāna so named प्र० ३२४;

अपमार्. त्रि० (अप्रमादिन्) अप्रमादी; प्रमादरहित. प्रमाद रहित. Free from negligence or idleness. क० गं० ५, ७०,

अप्रमाण न० (अप्रमाण) प्रमाणीय बिभ; प्रमाणीयरहित. प्रमाण से रहित. Any thing not in harmony with the fixed standard. परह० २, ३, ( २ ) प्रमाण उपरान्त आधार करवायी साधुने लागतो अेक दोष; आधारनो भीजे दोष. प्रमाण से अधिक भोजन करने से साधु को लगने वाला दोष, आहार का दूसरा दोष a fault incurred by a monk by eating beyond a fixed limit, the second fault connected with eating. परह० २, ३;—भोइ त्रि०. (—भोजिन्) अत्रीश कवल-कौर-ग्रास से अधिक भोजन करने वाला (one) eating more than thirty-two morsels of food. परह० २, ३.

अप्रमाय पु० (अप्रमाद) प्रमादो अभाव, अत्रीश योगसंग्रहमानो २६ मे योगसंग्रह प्रमाद का अभाव, वत्तीस प्रकार के योगसंग्रहों में से २६ वाँ योगसंग्रह. Absence of Pramāda i. e. entertaining passions etc. through inadvertance; the twenty-sixth of the thirty-two Yogasaṅgrahas. सम० ३२; पंचा० १, ३८,—पडिलेहा स्त्री० ( \*—प्रतिलेखा—प्रत्युपेक्षणा ) प्रमाद

वर्तते पडिलेहणु करवुं ते; “अण्वाविय” धत्यादि छ प्रकारे पडिलेहणु करवुं ते. प्रमाद छोड़कर पडिलेहण करना, ‘अण्वाविय’ इत्यादि छ प्रकार से पडिलेहण करना careful inspection of garments etc. ठा० ६,—भावणा. स्त्री० (—भावना) मदिरा आदि प्रमादनुं सेवन न करवुं ते मदिरा आदि प्रमाद का सेवन न करना. abstention from such faults or vices as drinking etc आया० २, १५, १७६;—बुद्धि स्त्री० (—वृद्धि) अप्रमादनी वृद्धि-वधारो. अप्रमाद की वृद्धि progress or increase of carefulness पंचा० ५, १३.

अप्रमेय त्रि० (अप्रमेय) लुओ “अप्पमेय” शब्द देखो “अप्पमेय” शब्द Vide “अप्पमेय” परह० १, ३,

अपर त्रि० (अपर) अन्य, पूर्वे कहेल दोष तेनाथी लुहुं. अन्य, पूर्वकथित से भिन्न-दूसरा. Different. निसी० २०, १०, ( २ ) पश्चिम विभाग पश्चिम विभाग—हिस्ता. latter part, remaining part राय० ६३;—परिगगहिय-अ त्रि० (—परिगृहीत-अपरै परिगृहीतोऽपरपरिगृहीत ) भीज डोछये (साधुये) ग्रहणु करेअ अन्य-द्वारा ग्रहण किया हुआ accepted by another (monk). “अव्वोगहेसु अपर-परिगगहेसु अपरपरिगगहिणसु” वेय० ३, २७; वव० ७, २२,

अपरक्कम त्रि० (अपराक्रम) पराक्रम-सामर्थ्यहीन,, नेतु न्धाअलक्षणीय थयुं छे ते पराक्रम हीन; जिसका जंघावल चीण हुआ है वह. Powerless; incapacitated. नाया० १, आया० नि० १, ८, १, २६६; भत्त० ११; अपरत्त. न० (अपरत्त) अपरपाणु; परतयधी



विपरीत अपरभाव, परत्व से विपरीत भाव  
Condition of being different  
विशे० २४६१,

अपराजय-अ. पुं० ( अपराजित ) लुओ।  
'अपराजिय-अ' शब्द देखो 'अपराजिय-अ'  
शब्द Vide 'अपराजिय-अ' जीवा० ३,  
२, जं० प० ३, ४२;

अपराज्या-आ स्त्री० ( अपराजिता ) लुओ।  
लुओ "अपराजिया-आ" शब्द देखो "अपरा-  
जिया-आ" शब्द Vide "अपराजिया-आ" जं०  
प० १, ११४, ७, १५२;

अपराजित पुं० (अपराजित) लुओ। 'अपरा-  
जिय-अ' शब्द देखो 'अपराजिय-अ' शब्द  
Vide 'अपराजिय-अ' सम० जं० प० १, ७,

अपराजिता स्त्री० ( अपराजिता ) लुओ।  
'अपराजिया-आ' शब्द देखो 'अपराजिया-आ'  
शब्द Vide 'अपराजिया-आ' जं० प०

अपराजिय-अ पुं० ( अपराजित ) आवती  
चौवीसीना छठ्ठा प्रतिवासुदेवनु नाम आगामी  
चौवीसी के छठे प्रतिवासुदेव का नाम  
Name of the sixth Prativāsudeva of the coming Chovīsī.  
सम० प० २४२, (२) आठमा षडदेवना त्रीज  
पूर्वभवनु नाम आठवें बलदेव के तीसरे  
पूर्वभव का नाम name of the third  
preceding birth of the eighth  
Baladeva. सम० प० २३६, (३) पांच  
अनुत्तर विमानपैठी योथा अनुत्तरविमाननु  
नाम पाँच अनुत्तरविमानों में से चौथे अनुत्तर  
विमान का नाम name of the fourth  
out of the five celestial abodes  
कण्प० ६, १७, भग० ५, ८, २४, २४,  
जीवा० ३, २, (४) योथा अनुत्तरविमानना  
देवता चौथे अनुत्तरविमान के देव the deity  
of the fourth celestial abode पञ्च०

१, (५) जम्बूद्वीपनी जगती-डोटना उत्तरदिशाना  
दरवाजानु नाम जम्बूद्वीप के जगती-डोट का  
उत्तरदिशा के द्वार का नाम. the north-  
ern gate of the fort of Jambū-  
dvīpa, so named. जीवा० ३, ४, जं०  
प० (६) ८८ महाग्रहमांसे ७२ में महाग्रह,  
८८ महाग्रहों में से ७२ वों महाग्रह. seven-  
ty-second of the eighty-eight  
Mahāgrahas or large planets.  
'दो अपराजियाओ' ठा० २, ३, (७) लवण  
समुद्र, धातकीखंड द्वीप, कालोदधिसमुद्र अने  
पुष्करोद समुद्रना ओके दरवाजानु नाम  
लवणसमुद्र, धातकीखंड द्वीप और कालोदधि  
समुद्र के एक द्वार का नाम name  
of a gate of Dhātakikhandā  
Dvīpa, Kālodadhi Samudra,  
and Puskaroda Samudra  
and the Lavana Samudra  
जीवा० ३; (८) ऋषभदेव स्वामीना  
६३ मा पुत्रनु नाम ऋषभदेव स्वामी  
के ६३ वें पुत्र का नाम. name of  
the 63rd son of Rṣabhadeva  
Svāmī कण्प० ८, (९) मेरुनी उत्तरे  
रुचकपर्वतनु ओके दूट मेरु के उत्तर की  
और रुचकपर्वत का एक कूट a summit  
of the Ruchaka mountain to  
the north of Meru ठा० ८, (१०)  
त्रि० पराजय नहि पायेस; अजित अपराजित,  
पराजय नहीं पाया हुआ not defeated,  
not subdued सम० ४००, सूय० १,  
२, २, २३, (११) पुं० १८ मा तीर्थकरने प्रथम  
बिक्षा आपनार गृहस्थनु नाम १८ वें तीर्थ-  
कर को प्रथम बार भिक्षा देने वाले गृहस्थ का  
नाम name of a gentleman who  
first gave alms to the eighteenth  
Tirthāṅkara. सम० प० ३३२,

अपराजिया-आ जी० ( अपराजिता ) महा-  
 वच्छ विजयनी मु० ५ राजधानी. महावच्छा  
 विजय की मुख्य राजधानी The capital  
 of Mahāvachchhāvijayā “ दो  
 अपराजियाओ ” ठा० २, ३, ज० प० ( २ )  
 वप्रकावती विजयनी राजधानी वप्रकावती  
 विजय की राजधानी the capital of  
 Vapākāvativijaya ज० प० ( ३ )  
 दशमनी रात्रिनुं नाम दशमी की रात्रि का  
 नाम name of the night of the  
 tenth day of a fortnight ज० प०  
 सू० प० १०, ( ४ ) अंजनगिरिनी उत्तर  
 तरङ्गी पु० ३२१-वावडीनुं नाम अजनगिरि  
 की उत्तर दिशा की ओर की वावडी का नाम  
 name of a well to the north of  
 Añjanagiri प्र० १५०३, जीवा० ३,  
 ४, ( ५ ) अगारक महाग्रह की पटरानी का नाम the  
 crowned queen of Angāraka  
 planet भग० १०, ५, ठा० ४, २, ( ६ )  
 अधा महाग्रहनी योथी अग्रमहिषी सब महाग्रहों  
 की चौथी पटरानी the fourth principal  
 queen of all large planets  
 ठा० ४, १, जीवा० ४, १, ( ७ ) रुचकपर्वत  
 वारी आठमी दिशाकुमारिका रुचकपर्वत पर  
 रहने वाली आठवीं दिशाकुमारी the eighth  
 Dīśākumārī residing on the  
 Ruchaka mountain ज० प० ५,  
 ( ८ ) आठमा अश्वदेव अने वासुदेवनी मातानु  
 नाम आठवे बलदेव और वासुदेव की माता का  
 नाम name of the mother of the  
 eighth Baladeva and Vāsudeva.  
 सम० प० २३५, ( ९ ) आठमा अद्रप्रभतीर्थ-  
 ३२ दीक्षा लेती वधते ने शिथिका-पाणभीमा  
 भेदा हुताते पाणभीनुं नाम आठवें तीर्थकर  
 चद्रप्रभस्वामी दीक्षा लेते समय जिस पालकी

पर आरुढ हुए थे उस पालकी का नाम name  
 of the palanquin of the eighth  
 Chandīaprabha—Tirthankara  
 in which he sat at the time of  
 taking Dīksā सम० ७१,

अपराह. पु० ( अपराध ) गु-हो; अपराध  
 अपराध, गुन्हा. A fault; a crime.  
 महा० प० ११,

अपरिआइत्ता सं० कृ० अ० ( अपर्यादाय )  
 भ्रष्ट धर्मा विना ग्रहण किये बिना With-  
 out having taken or accepted  
 “ बाहिराई पोमाले अपरिआइत्ता ” भग०  
 ३, ४, २५, ७,

अपरिकम्म त्रि० ( अपरिकर्मन् ) लुगो  
 ‘ अप्पडिकम्म ’ शब्द देखो ‘ अप्पडिकम्म ’  
 शब्द Vide ‘ अप्पडिकम्म ’ उक्तं ३०,  
 १३,

अपरिक्रम त्रि० ( अपराक्रम ) पराक्रमरहित;  
 सामर्थ्य विनातुं पराक्रम रहित, सामर्थ्य रहित  
 Unheroic, powerless “ तएणं तुमं  
 मेहा अत्थामे अबले अपरिक्रमे ” नाया० १;

अपरिक्ख स० कृ० अ० ( अपरीक्ष्य ) परीक्षा  
 धर्मा विना, तपास्या विना परीक्षा किये बिना;  
 जाँचे बिना Without having examin-  
 ed सू० १, ७, १६,

अपरिक्खऊण स० कृ० अ० ( अपरीक्ष्य )  
 परीक्षा न करीने; तपास्या विना परीक्षा न  
 करके, बिना जाँचे Without having  
 examined सु० च० ३, १६६,

अपरिखेदित्त न० ( अपरिखेदित्तत्त्व ) अना-  
 यामे उत्पत्तिरूप ३४ मे वयनातिशय.  
 अनायास उत्पन्न होने वाला वचन वचन का  
 ३४ वाँ अतिशय The thirty fourth  
 Atīśaya of speech viz speech  
 without effort ओव०

**अपरिग्रह.** त्रि० ( अपरिग्रह ) निष्परिश्रुही, जेनी पासे धर्मना उपगच्छ विना इष्ट परिग्रह नथी ते. परिग्रह रहित; जिसके पास धार्मिक उपकरणों के सिवाय कुछ भी परिग्रह नहीं है वह A possessionless monk “अपरिग्रहा अणारंभा, भिक्षू त्वायं परिव्रज” सय० १, १, ४, ३; भग० ५, ७; परह० २, १;

**अपरिग्रहिया** स्त्री० ( अपरिग्रहीता ) वेश्या; रंभात; अनाथ स्त्री वेश्या, रखेलस्त्री, अनाथ स्त्री. A prostitute; an unmarried (public) woman. पंचा० १, १६; ( २ ) विधवा विधवा. a widow. प्रव० २७८; ( ३ ) दासी. दासी. a maid-servant प्रव० २७८,—गमण न० ( -गमन-अपरिग्रहीताया गमनं मैथुन सेवनम् ) अपरिग्रहेत स्त्रीनी साथे मैथुन सेवयुं ते; श्रावडना येथा व्रतनो भीन्ते अतिचार अविवाहिता स्त्री के साथ मैथुन सेवन करना, श्रावक के चौथे व्रत का दूसरा अतिचार adultery, the second Atichāra of the fourth vow of a layman उवा० १, ४८;

**अपरिग्रहेमाण.** व० कृ० त्रि० ( अपरिग्रहण ) परिग्रह न राखतो; धन, धान्यादि परिग्रह उपर भूयर्था न राखतो परिग्रह नहीं रखता हुआ; धन, धान्यादि परिग्रह में मूर्च्छा न रखता हुआ. Not keeping any worldly effects. आया० १, ७, ३, २०७,

**अपरिचत्त.** त्रि० ( अपरित्यक्त ) न तजेव, न भुङ्क्ते नहीं त्यागा हुआ, नहीं छोड़ा हुआ Not given up; not abandoned. ठा० २, ४,—कामभोग त्रि० ( -कामभोग-कामौ शब्दरूपे भोगाश्च गन्धरसरुपर्शा अथवा काम्यन्ते ते कामा मनोज्ञा, भुज्यन्ते इति भोगाः शब्दादयः, न परित्यक्ता यैस्ते तथा ) जेणे कामभोग-मनोज्ञ शब्दादि पाय

विषय तज्या नथी ते जिसने कामभोग-मनोज्ञ शब्दादि पांच विषय छोड़े नहीं हैं वह. ( one ) who has not renounced pleasures of the senses छ० २, ४;

**अपरिच्छिन्न** त्रि० ( अपरिच्छिन्न ) परिवार रहित. परिवार रहित. Without dependants, attendants etc. वव० ३, १,

**अपरिजणमाण** व० कृ० त्रि० ( अपरिजानत् ) लज्जु न जणुतो; अनुमोदन न आपतो. भला नहीं जानता हुआ, अनुमोदन नहीं करता हुआ. Not supporting; not approving उवा० ७, २१५, नाया० १६;

**अपरिजाणिज्जमाण** त्रि० ( अपरिज्ञायमान ) जेना भाटे मनभा रुडुं न जणुवाभां आवे ते; आदरभाव रहित. Not respected; not regarded with respect “तण्णं से गोसाले आणडाइज्जमाणे अपरिजाणिज्जमाणे ” उवा० ७, २१६;

**अपरिणय** न० ( अपरिणत-न परिणत प्रासुकीभूतसपरिणतम् ) जे वस्तु पुरे पुरी प्रासुक्-अयित्त न थर्छ होय ते वस्तु लेवाथी मुनिने लागतो ओषणुदोष; ओषणुना दश दोष-भानो आहो दोष जो वस्तु ठीक तौर पर-पूर्णतया प्रासुक न हुई हो उस वस्तु के ग्रहण करने पर साधु को जो दोष लगे वह दोष; एषणा के दस दोषों में से आठवाँ दोष. A fault of an ascetic caused by eating food which is not rendered perfectly free from life. निसी० ७, ३०; आया० २, १, ८, ४६; पिं० नि० ५२०, भग० १६, ५; ( २ ) त्रि० २२२, रुधिररूपे परिणाम न पायेला ओराड. रस, लविर आदि रूप से परिणाम न पाया हुआ भोजन. un-assimilated ( food ) पंचा० ३, १२;

**अपरिणाम.** पु० ( अपरिणाम ) तणु प्रकाशना

शिष्य पैकी प्रथम प्रकारना शिष्य; अपरि-  
शुभ-अल्प बुद्धिवाला अने जिनवचनना  
रहस्यना अन्वेषु शिष्य. तीन प्रकार के शिष्यों  
में से प्रथम प्रकार का शिष्य, अल्पबुद्धि वाला और  
जिनवचन के रहस्य को न जानने वाला शिष्य.  
A dull-headed disciple unable  
to grasp the real meaning  
of the words of Tirthankara  
etc; a disciple of the first of  
the three sorts of disciples.  
विशे० २२६२;

अपरिणिष्ठाण न० ( अपरिनिर्वाण-नपरित.  
समन्ताभिर्वाणं सुखमपरिनिर्वाणम् ) आरे  
तरङ्गनी शारीरिक अने मानसिक पीडा-दुःख  
चारों ओर की शारीरिक और मानसिक पीडा  
All-round misery of mind and  
body “ सन्वेसि सत्तायं अस्सायं अपरि-  
णिष्ठाणं महम्मयं दुक्खं ” आया० १, १,  
६, ५०;

अपरिणाय. त्रि० ( अपरिज्ञात-ज्ञपरिज्ञया  
स्वरूपतोऽनवगत प्रत्याख्यानपरिज्ञया  
चाप्रत्याख्यात ) अपरिज्ञा-समन्वृथी स-  
मन्वृते प्रत्याख्यान-परिज्ञाथी पश्यन्नाणु  
करेव नहि ज्ञपरिज्ञा (समम्) से प्रत्याख्यान  
न किया हुआ अर्थात् बिना समम् के ब्रूमे  
प्रत्याख्यान किया हुआ Not consciously  
or intelligently given up. भग०  
८, ५, आया० १, १, १, ८; १, २, ५, ६४,  
ठा० ५, २; दसा० ६, २;

अपरितंत त्रि० ( अपरितान्त ) थोड़े नहि,  
परिश्रम न पायेव नहीं थका हुआ. Not  
fatigued; not tired. अणुत्त० ३, १,  
विशे० ३४०२;—जोगि. त्रि० ( -योगिन्-  
अपरितान्तोऽविश्रान्तो योगः समाधिर्यस्य स  
तथा ) थक-थेद-कटाणा विना योग-समाधि-  
वाला; अविश्रान्त सयमवाला थकावट-

खेद रहित योग-समाधि वाला, अविश्रान्त  
संयम वाला ( one ) with tireless  
meditation or self-control अणुत्त०  
३, १, परह० २, १;

अपरितापणया स्त्री० ( \*अपरितापनता-अप-  
रितापन ) शरीरमां परिताप-संतापनुं न  
उपयुते शरीर में सताप का उत्पन्न न  
होना Freedom of the body from  
mental distress भग० ५, ६;

अपरितापिय त्रि० ( अपरितापित ) पीताथी के  
भीनथी नेने क्षयिक अने मानसिक ताप-  
दुःख नथी थयुं ते अपने से अथवा दूसरे से  
जिसे मानसिक और शारीरिक कष्ट न हुआ हो  
वह Free from mental or physi-  
cal pain self-inflicted or other-  
wise भग० ३, २;

अपरित्त पुं० ( अपरित्त ) अनंतत्व वर्ये  
येक साधारण शरीरवाला जव. अनंत  
जीवों के बीच में एक साधारण शरीर वाला  
जीव A soul sharing a common  
body with infinite souls ठा० ३,  
२, जीवा० १०, ( २ ) अनतकाणसुधी  
संसारमा परिभ्रमणु करनार जव; अनत  
संसारी जव अनतकाल तक संसार में परि-  
भ्रमण करने वाला जीव, अनंतसंसार जीव a  
soul eternally wandering in the  
worldly existence “अपरित्ते बंधइ”  
भग० ६, ३, “अपरित्ते दुविहे प० तं० काय  
अपरित्ते य संसारअपरित्ते य संसार-  
अपरित्ते दुविहे प० तं० अणादिण् अपज्जवसिण्  
अणाइण् सपज्जवसिण्” पञ्च० १८, जीवा० २;  
विशे० ४११;

अपरिनिष्ठाण. न० ( अपरिनिर्वाण ) ज्यो  
“अपरिणिष्ठाण” शब्द देखो “ अपरिणि-  
ष्ठाण ” शब्द. Vide “अपरिणिष्ठाण.”  
आया० १, ४, २, १३३;

अपरिपूत्र. त्रि० ( अपरिपूत ) अणुगण;  
वस्त्रादिकृती गणेश नहि. न छना हुआ.  
Unfiltered. कप्प० ६, २५;

अपरिभूय. त्रि० ( अपरिभूत ) ने डोहथी  
पराभवो-गंजयो न जय ते, जेतो डोह  
पराभव डरी शके नहि ऐवो धनवान् या जण-  
वान्. जिसका कोई पराभव न कर सके ऐसा  
धनवान् या बलवान्. Not vanquished,  
invincible in point of wealth,  
power etc. ठा० ७; नाया० ५; ७; ८;

अपरिभोग. पुं० ( अपरिभोग-परि-पुनः पुनः  
भोग. परिभोग, न परिभोगोऽपरिभोगः )  
वारंवार भोगवाय ते वस्त्र, धरेणुं वगेरेतो  
अभाव. बार बार भोगने में आने वाले वस्त्र,  
आभूषण आदि का अभाव. Absence of  
things not consumed by one  
enjoyment; e g. clothes, orna-  
ments. ठा० ५, २;

अपरिमाण त्रि० ( अपरिमाण-न विद्यते परि-  
माणं यस्य स तथा ) क्षेत्र के डोहथी परिमाण-  
भर्या विनातो. क्षेत्र या काल की सर्यादा  
रहित. Unlimited in point of time  
or space "अपरिमाणं विज्ञायाह, इहमेगे-  
सिमाहियं" सूय० १, १, ४, ७; निसी० ८, १०,  
अपरिमित-अ त्रि० ( अपरिमित ) परिमाण  
रहित, अत्यंत भेदुं; विशाल परिमाण रहित,  
विशाल; बहुत बड़ा. Unlimited, ex-  
tensive. "अपरिमितमहिच्छकलुसमति-  
चाउवेगडद्धम्ममाणं." परह० २, ३; "अपरि-  
मिचनायदंसणधरेहिं" परह० २, १, ओव०  
२१; ३४, कप्प० ६, २५,

अपरियत्त. त्रि० ( अपरिवृत्त ) ने धर्मप्रकृति  
पोताना अध के उदय वपते भीष्ट प्रकृतिने  
अध अउशवे नहि ने; अपरावर्तमान धर्म

प्रकृति अपरावर्तमान कर्मप्रकृति, जो अपने  
बंध या उदय के समय दूसरी प्रकृति के बंध  
या उदय को नहीं रोकती. ( Karmic  
nature ) which does not either  
at the time of its own formation  
or of maturity, hinder the for-  
mation or rise of another Kar-  
mic nature i e. Karma; Karma  
Prakriti known as Aparāvarta-  
māna क० गं० ५, १८;

अपरियाइज्जमाण. त्रि० ( अपर्यादीयमान )  
न अहणु डरातुं; न स्वीकारातु. ग्रहण नहीं  
किया जाता हुआ, स्वीकार न किया जाता हुआ  
Not being accepted भग० ३, १;

अपरियाइत्ता सं० कृ० अ० ( अपर्यादाय )  
अहणु धर्मा विना. ग्रहण किये विना. With-  
out having accepted. भग० ६, ६;  
७, ६; १६, ५; ठा० १, १;

अपरियाणमाण व० कृ० त्रि० ( :: अपरिज्ञान-  
मान-अपरिज्ञानत् ) लघु न जणतो, अनुमोदन  
न आपतो मला न जानता हुआ; अनुमोदन  
नहीं करता हुआ. Not approving,  
not supporting. नाया० १; १४,

अपरियाणित्ता. सं० कृ० अ० ( अपरिज्ञाय )  
अपरिज्ञाथी जणया विना अने प्रत्याख्यान  
परिज्ञाथी त्याग धर्मा विना. अपरिज्ञा से जाने  
विना और प्रत्याख्यानपरिज्ञा से त्याग किये  
विना Without having had con-  
sciousness of ( knowledge or  
giving up ) ठा० २, १,

अपरिचार त्रि० ( अपरिचार ) परिचारणा-  
मैथुनसेवारहित परिचारणा रहित; मै-  
थुनसेवा रहित. Free from Parichā-  
ranā i e. sexual intercourse.  
पन्न० ३४;

अपरियावर्णय त्रि० ( :: अपरित्यापत्ता -



અપરિતાપન ) પરિતાપના-દુઃખ-સંતાપનો અભાવ દુઃખ-સંતાપના અભાવ. Absence of misery or distress મગ ૩, ૩, ૭, ૬, ૮, ૬,

અપરિયાધિય સં ૦ કૃ ૦ અ ૦ ( અપરિતાપ્ય ) પરિતાપ-સંતાપ ઉપજાવ્યા વિના. પરિતાપ-સંતાપ ઉત્પન્ન કિયે વિના Without causing distress or misery જીવા ૩, ૩, જં ૦ પ ૦ ૨, ૨૫;

અપરિવડિય. ત્રિ ૦ ( અપરિપતિત ) સ્થિર, અચળ. Fixed, steady પવા ૭, ૨૮,

અપરિવાગ પું ૦ ( અપરિપાક ) અપરિપાક-પરિપાકનો અભાવ અપરિપાક-પરિપાક ના અભાવ Absence of full ripeness મગ ૧૭,

અપરિસાહિ પું ૦ ( અપરિશાટિ ) ખાતાં ખાતા નીચે એક ન ખેરવી તે ખાતે ખાતે નીચે ઝૂંઠન ન ઢાલના Not allowing scraps of food to drop while eating મગ ૭, ૧,

અપરિસાહિય ત્રિ ૦ ( અપરિશાટિક ) નીચે ખેર્યા વગરનું નીચે ન ઢાલા હુઆ Not dropped below, e g scraps of food while eating “ જયં અપરિ-સાહિયં ” ઉત્ત ૦ ૧૦, ૩૫, પરહ ૦ ૨, ૧;

અપરિસ્તાવિ ત્રિ ૦ ( અપરિસ્તાવિન્ ) જુઓ ‘ અપરિસ્તાવિ ’ શબ્દ દેખો ‘ અપરિસ્તાવિ ’ શબ્દ Vide ‘ અપરિસ્તાવિ ’ ઠા ૦ ૮, ૧,

અપરિસુદ્ધ ત્રિ ૦ ( અપરિશુદ્ધ ) દોષસહિત; અશુદ્ધ દોષ સહિત, અશુદ્ધ. Impure, faulty પંચા ૩, ૩૬;-(૨) અયુક્તિવાળું અયુક્તિવાળા lacking-in-art-or skill પંચા ૩, ૩૬,

અપરિસેસ ત્રિ ૦ ( અપરિશેષ ) નિ શેષ, સર્વ

સધગ્ન નિ શેષ; સર્વ; સમ્પૂર્ણ Whole, entire પરહ ૦ ૨, ૧, મગ ૦ ૩, ૧, ૮; ૮, ૬, ૧૧, ૧, ૨૧, ૨,

અપરિસેસિય ત્રિ ૦ ( અપરિશેષિક ) જેમાં શેષ કંઈ રહ્યું નથી તે, પુરે પુરે जिसमें शेष कुछ न रहा हो वह, पूर्ण Complete, entire. મગ ૦ ૫, ૪,

અપરિસ્સવ પું ૦ ( અપરિશ્રવ ) પાપનું ઉપાદાન-કારણ પાપ ના ઉપાદાન કારણ Material cause of sin આયા ૦ ૧, ૪, ૨, ૧૩૦,

અપરિસ્સાવિ ત્રિ ૦ ( અપરિસ્તાવિન્-પરિસ્ત્રવિતું ) શીલમસ્યેતિપરિસ્તાવી ન પરિસ્તાવી-અપરિ-સ્તાવી જેમાંથી પાણી ઝરી ન જાય તેવા તુબડા વગેરે, ન ઝરનાર जिसमें से पानी बगैरह न मर सके ऐसा तुवा आदिक, न मरने वाला, Not causing to leak, e g water from gounds etc ઠા ૦ ૪, ૧, ૫, ૩; મગ ૦ ૨૫, ૬, ગચ્છા ૦ ૨૨, ( ૨ ) ભાવથી અપરિસ્તાવી-કર્મબ-ધરહિત, જેનો કર્મપ્રવાહ આવતો અટક્યો છે તે માવ સે અપરિસ્તાવી, અર્થાત્ કર્મવધ રહિત, जिसका कर्मप्रवाह आने से रुक गया है वह without influx of Karma મગ ૦ ૨૫, ૬, ઠા ૦ ૪, ૧, (૩) શિષ્યે આલોચ્યેલ પોતાના દોષ ખીજા કાઢી પાસે પથ ન પ્રકાશનાર ગુરુ; સાગર જેવા ગંભીર પેટવાળા ગુરુ-આચાર્ય વગેરે શિષ્ય ને જિન અપને દોષોં કી આલોચના કી હો ઉન દોષોં કી પ્રકટ ન કરને વાલા-સમુદ્રવત્ ગંભીર ગુરુ ( a Guru or preceptor) who does not disclose the faults confessed by a disciple “જો અજ્ઞયસ્સ ડ દોસે ન કહેદ્ અપરિસ્તાવી સો હોદ્ ” ઠા ૦ ૮, ૧; પંચા ૦-૧૫, ૧૪ મગ ૦ ૨૫, ૭,

અપરિહારિય પું ૦ ( અપરિહારિક ) મૂલ્યશૂન્ય દોષ અને ઉત્તરશૂન્યપનો પરિહાર-ત્યાગ



करनार नहि; पासत्थो, अवसन्न, कुशीलीयो, संसक्त अने यथाच्छंदरूप दूषित साधु. मूल गुणदोष और उत्तरगुणदोष का त्याग न करने वाला, शिथिलाचारी, अवसन्न, कुशीली, संसक्त और यथाच्छंदरूप पांच प्रकार के दूषित साधु. A Sādhu not abstaining from Mūla Guṇa and Uttara Guṇa; one of the five sorts of tainted Sādhus e. g. Pāsāttha, Avasaṇṇa etc आया० नि० १, १, १; ( २ ) अन्यतीर्थी गृहस्थ. जैनतर गृहस्थ. a non-Jaina वव० २, २७;

**अपरोवघाद्या** स्त्री० ( अपरोपघातिका ) परने-भीज्ज लयने उपधात-दु.भ-त्रास न उपज्जवनार भाषा, सांभज्जनारने आघात न थाय तेरी भाषा-भोली दूसरे जीव को दुःख-त्रास आदि न पहुंचाने वाली भाषा, जिससे सुनने वाले को आघात न हो ऐसी बोली. Inoffensive speech भग० १८, ७;

**अपलापय** त्रि० ( अप्रलापक ) प्रलाप न करनार प्रलाप न करने वाला ( One ) not prattling भग० १५, १;

× **अपलिउंचमाण** व० कृ० त्रि० ( अपरि-कुञ्चयत् ) न छुपावतो; न संताडतो नहीं छिपाता हुआ. Not concealing, not hiding आया० २, ५, १,

**अपलिउंचिय** सं० कृ० अ० ( अपरि-कुञ्चय ) भाषा न करीने माया-कपट न करके Without having recourse to fraud निसी० २०, १०; वव० १, १;

**अपलिउज्जिय** त्रि० ( अपरियोगिक-परि-समं-तात् योगिकाः परियोगिकाः परिज्ञानिनः, न

परियोगिका अपरियोगिकाः ) आरे आनुना ज्ञानवाणो नहि; विशाल ज्ञानरहित विशाल ज्ञान रहित; विस्तृत ज्ञान रहित; चारों ओर के ज्ञान से रहित. Not possessed of thorough and extensive knowledge. भग० २, ५;

\***अपलिओवमाण** व० कृ० त्रि० ( अगोपयत् ) न गोपयतो; न संताडतो. न छिपाता हुआ. Not hiding; not concealing. आया० १, ७, ४, २११;

**अपलिक्खीण** त्रि० ( अपरिक्खीण ) क्षय पाभेक्ष नहि. जिसका क्षय नहीं हुआ हो वह, जिसका विनाश नहीं हुआ हो वह. Not destroyed; not decayed. ओव० ४२;

**अपलिच्छिण** त्रि० ( अपरिच्छिन्न ) लुप्तो "अपरिच्छिण" शब्द देखो 'अपरिच्छिण' शब्द. Vide 'अपरिच्छिण'. वव० ३, १;

**अपलिमंथ** पुं० ( अपरिमन्थ ) स्वाध्याय आदि कार्यभा परिमंथ-अंतराय-विघ्नो अभाव. स्वाध्याय आदि कार्य में विघ्न का अभाव. Absence of obstacles in the work of religious study etc. उत्त० २६, ३४;

**अपवग्ग** पुं० ( अपवर्ग ) भोक्ष मोक्ष Abso- lution, final emancipation. भत्त० ४,

**अपवडय** पुं० ( अपवटक ) तपो; तापडी. तवा. A pan to bake bread भग० ११, ११;

**अपवत्तण** न० ( अपवर्तन ) प्रवृत्तिनो अभाव प्रवृत्ति का अभाव Absence of activity. पंचा० ४, ४५;

**अपवरक** पुं० ( अपवरक ) ओरडे; डोडो. कमरा, कोठा A room. जीवा० ३, ३;

× नोट—आया० १, ७, ४, २११; आ-स-आ० भां 'अपलिओवमाण' ओवे पाठ छे.

× नोट—आया० १, ७, ४, २११; आ-स-आ-में 'अपलिओवमाण' यह पाठ है.

× Note, one reading is. 'अपलिओवमाण'

**अप्रसंसणिज्ज** त्रि० ( अप्रशंसनीय ) सारा भाष्योत्प्रेषणं प्रशंसा करवा योग्य नहि, वभाषुवा लायक नहि प्रशंसा के अयोग्य, अच्छे मनुष्यों द्वारा प्रशंसा न करने योग्य Not praiseworthy. तंडु०

**अप्रसत्थ**. त्रि० ( अप्रशस्त ) भराभ्य; अशोभन. खराब, बुरा, शोभाहीन Not good, bad प्रव० १३०२; भग० ४, १०, ( २ ) अश्रेय; देवा योग्य नहि अश्रेय; लेने के अयोग्य unacceptable ठा० ३, ३, ( ३ ) वभाषुवा लायक नहि प्रशंसा न करने योग्य. not laudable अणुजो० ६६, —कायविणाय पुं० (—कायविनय ) दुष्ट कार्यथी कायाने रोकवी ते, अशुभकार्यमा शरीरने न प्रवर्त्तावपुं ते दुष्टकार्य करने से शरीर को रोकना, अशुभकार्य में शरीर को प्रवृत्ति न करने देना restraining the body from sinful act भग० २५, ७,

**अप्रसन्न**. त्रि० ( अप्रसन्न ) लुप्तो “अप्रसन्न” शब्द देखो ‘अप्रसन्न’ शब्द. Vide ‘अप्रसन्न’ दस० ६, १, ५,

**अप्रसिण** पुं० ( अप्रश्न ) प्रश्न पुण्या विना सवाल कर्त्ता विना विधिपूर्वक विद्या के मंत्रना नपवामात्रथी शुभाशुभ इल कही शक्य ते. प्रश्न पूछे विना विधिपूर्वक विद्या या मन्त्र का जाप करने मात्र से शुभाशुभ फल का कह सकना Foretelling good or evil result without asking questions, simply by the force of science or repetition of incantations. नंदी० ५४;

**अपसु** पुं० ( अपशु ) पशु—गाय, बैस, घोडा वगैरे जेनी पासे नथी ते, साधु जिसके पास गाय, बैस, घोडा आदि पशु नहीं हैं वह, साधु One not possessed of domestic animals, a Sādhu “समये भवि-

स्सामि अणगारे अकिंचणे अपुत्ते अपसु परदत्तभोगी” आया० २, ७, १, १५५,

**अपस्समाण** व० कृ० त्रि० ( अपश्यमान—अपश्यत् ) न देखतो, न जेतो न देखता हुआ. Not seeing. “अपस्समाणे पस्सामि, देवे जक्खे य गुज्झगे” सम० ३०, ओव० ३६; दसा० ६, २६,

**अपहय**. त्रि० ( अपहत ) हलुयेल, अटकेल. मारा हुआ; अटका हुआ Struck; killed, obstructed. प्रव० ४६३;

**अपहिट्ठ** त्रि० ( अप्रहट्ट ) लुप्तो “अपहिट्ठ” शब्द देखो ‘अपहिट्ठ’ शब्द. Vide ‘अपहिट्ठ’. दस० ५, १, १३,

**अपहुप्पंत** त्रि० ( अप्रभवत् ) परिपूर्ण न थपुं, ओधु रडेपु परिपूर्ण न होता हुआ. Remaining insufficient “बहुसुय अपहुप्पते” भण्णइ अन्नपि रंधेह” पिं० नि० २७२, भत्त० ११,

**अपाइया** स्त्री० ( अपात्रिका ) पातरा विनानी ( साध्वी ) पात्र रहित ( साध्वी ). (A nun) having no bowls. “नो कप्पइ य निमांथीए अपाइयाए हुंतए” वेय० ५, २०;

**अपाउड**. त्रि० ( अपावृत—न विद्यते प्रावृतं प्रावरणं यस्येत्यप्रावृत ) वस्त्ररहित वस्त्र रहित. Uncovered, naked ठा० ५, १;

**अपाउरण** त्रि० ( अप्रावरण ) प्रावरण—वस्त्र रहित वस्त्र रहित Devoid of covering 10 clothes प्रव० ५००;

**अपाण** न० ( अपान ) शुद्ध गुदा; मलद्वार. Anus; rectum विवा० ६; जं० प० २, ३१;

**अपाणग** त्रि० ( अपानक ) लुप्तो “अपाणय” शब्द देखो ‘अपाणय’ शब्द. Vide ‘अपाणय’. प्रव० ५६४;

**अपाणय** त्रि० (अपानक) पाणी विनानुं, जल रहित Having no water, waterless. “छट्ठेणं भत्तेणं अपाणयणं” जं० प० २; दशा० ७, ८; (२) दाहने शमावनार पाणी जेवा शीतल स्थालीपानक आदि पदार्थ, जे जे गोशालाने संमत हुता. दाह को शमन करने वाले पानी के समान शीतल स्थाली-पानक आदि पदार्थ, जो गोशाला के मत से ग्रह्य समझा जाता था. substances such as Sthālīpānaka etc. which were acceptable in the opinion of Gośālā भग० १५, १, ( ३ ) जेमां पानकद्रव्य—दूध, दाल, रायडी, पाणी वगैरेने त्याग करवाया आवे जेवा उपवास वगैरे. जिसमें पान करने के द्रव्यों—दूध, रवडी, पानी आदि का त्याग किया जाय ऐसा उपवास आदि (a fast etc) in which drinkables like milk etc are abstained from प्रव० ५६०; कप्प० ७, २११, ठा० ६; पंचा० १८, १४,

**अपादान** न० (अपादान) उपादान कारण, जेम—कुंडलनु सुवर्ण, धातुं माटी उपादान कारण, जैसे कुण्डल का उपादान कारण सुवर्ण और घट—उपादान कारण मिट्टी. Material cause e.g. earth of an earthen pot विशेष० २११७,

**अपायच्छिण**, त्रि० (अपायच्छिन्न) जेना पग छेदाजेल नथी ते जिसका पाँव छेदा हुआ नहीं है वह One whose foot is not pierced with thorn etc निसी० १४, ६,

**अपार** त्रि० (अपार) पार—तीर विनानुं, जेना छेडा नथी ते, अनन्त, पार विनानु अपार—पार रहित, अन्त रहित; अनन्त, जिसका किनारा न हो ऐसा Infinite; endless नाया० ६, सम० ६;—दुक्ख न० (—दुख) अनन्त दुःख, पार विनानु दुष्ट अर्थात् दुःख;

ऐसा कष्ट जिसका पार न हो. infinite misery. सम० ६,—संसार. पुं० (—संसार) जेना पार नथी जेना संसार पार रहित संसार; अनन्त संसार. endless world; world without an end नाया० ६;

**अपारंगम**, त्रि० (अपारङ्गम—पारस्तट परकूलं तद्वच्छतीति पारङ्गम, न पारङ्गमोऽपारङ्गमः) संसार समुद्रना पारने न पामनार. संसार समुद्र के पार को न पाने वाला. Not reaching the opposite shore of the worldly ocean. “अपारंगमा एष, ए य पारं गमित्तए” आया० १, २, ३, ८०;

**अपाव**, त्रि० (अपाप) पापरहित; सर्वथा शुद्ध. पाप से रहित; सर्वथा शुद्ध. Without sin भक्त० २३; दस० ८, ६३;—भाव त्रि० (—भाव) लब्धि आदिनी अपेक्षा विनानुं अपाप—शुद्ध-निर्मल जेनुं चित्त छे ते; निर्मल भावसहित. लब्धि वगैरह की अपेक्षा से रहित शुद्ध-निर्मल चित्त वाला; निर्मल भाव सहित having the heart unsullied by any sin, e.g. the desire of supernatural attainment भक्त० २३, दस० ८, ६३;

**अपावमाण** व० कृ० त्रि० (अप्राप्नुवत्) न पामतो, प्राप्त न करतो. नहीं पाता हुआ, प्राप्त न करता हुआ Not getting; not obtaining. ओघ० नि० १६;

**अपावय** पुं० (अपापक) शुद्ध चित्तवनरूप प्रशस्त मनोविनय शुभ चित्तवन करने रूप प्रशस्त (प्रशंसा योग्य या उच्च) मनो विनय. Reverential attitude of mind consisting in pure and pious thoughts सूय० १, १, ३, ११; ठा० ७; ( २ ) पाप विनानी वाणी जोखवा रूप वाणीविनय पाप रहित वाणी बोलने

रूप वाणीविनय. reverential speech consisting in expressions free from sinfulness भग० २५, ७, ( ३ ) सर्वथा शुभैकलंकरहित सम्पूर्णतया कर्मकलंक से रहित wholly unsullied by Karma. सूय० १, १, ३, ११,

**अपावा** स्त्री० ( अपापा ) न्या महावीर स्वामी निर्वाणपद पाया तेनगरी, हस्तिपाल राजधानी जहाँ महावीर स्वामी ने निर्वाण पद प्राप्त किया वह नगरी, हस्तिपाल राजा की राजधानी. The town where Mahāvīra-svāmī attained to Nirvāna or final beatitude; the capital of king Hastipāla पंचा० १६, १७,

**अपास** पुं० ( अपाश ) पाश-बंधनतो अभाव बंधन का अभाव Absence of fetters आया० १, १, ३, २५,

**अपासंत** व० कृ० त्रि० ( अपश्यत् ) न ज्ञेते, न देखते. नहीं देखता हुआ. Not seeing “ जाइं रात्रो अपासंतो, कहमेसणीयं चरे ” दस० ६, २४, सूय० १, ६, ३४,

**अपासत्थया** स्त्री० ( अपार्श्वस्थता-नपार्श्वस्थो-पार्श्वस्थस्तस्य भावस्तत्ता ) पासत्थापणुतो परिहार-त्याग करवे। ते. पार्श्वस्थपन का शिथिलाचार का त्याग करना Giving up the attitude of a Pāsaththa, giving up looseness in ascetic life ठा० १०,

**अपासमाण** व० कृ० त्रि० ( अपश्यत् ) न देखते, न ज्ञेते. नहीं देखता हुआ Not seeing. नाया० २, ८; ६, १६, भग० १५, १,

**अपाहेज्ज** त्रि० ( अपाथेय ) पाथेय-संभण-लातुं, ते विनाने, लाता वगरेने पाथेय-कलेवा-रास्ते का भोजन जिसके पास न हो वह Without provision of food dur-

ing journey etc. “ अद्धानं जो महं तंतु, अपाहेज्जो पव्वज्जइ ” उक्त० १६, १८, **अपिज्ज** त्रि० ( अपथेय ) पीवा लायक नहि; पान करवाने अयोग्य न पीने योग्य Unfit for drinking पि० नि० १६४;

**अपिट्ठणया** स्त्री० ( अपिट्ठनता-अपिट्ठन ) लाडली आदिथी ताउन न करवुं, कुटवुं पिटवुं नहि ते लकड़ी वगैरह से न पीटना, मार पीट का अभाव Not striking with a stick etc भग० ७, ६;

**अपियं** त्रि० ( अप्रिय ) अप्रीतिकर, देखवाभां अप्रिय-अनिष्ट देखने में जो अच्छा न लगे वह, अप्रीतिकारक, अनिष्ट Unpleasant in sight, of unpleasant appearance भग० ६, ३३, जीवा० १,

**अपिवणिज्जोदग** पु० ( अपानीयोदक ) जेतुं पाणी पीवा योग्य न होय तेवे। मेघ ऐसा मेघ, जिसका पानी पीने योग्य न हो Rain water which is not drink-worthy भग० ७, ६,

**अपिसुण** त्रि० ( अपिशुन ) आडी चुगणी न करना, डोढनुं आधु पोछु न करना. चुगली न खाने वाला Not given to back-biting, not being a tell-tale “ अपिसुणे आवि अदीणवित्ति ” दस० ६, ३, १०,

**अपीइकारग** त्रि० ( अप्रीतिकारक ) अभनोइ; जेनाथी अप्रीति उपजे तेनु अमनोज; अप्रीतिकारक, जिससे अप्रीति उत्पन्न हो वह; मनोहरता रहित. Unpleasant. ठा० ३, १,

**अपीइतर** त्रि० ( अप्रीतितर ) अतिशय अभनोइ अतिशय मनोहरता रहित, अति अप्रिय Highly unpleasant. विवा० १,

अपुच्छिअ-य. त्रि० (अपृष्ट) पुछ्या विना नो,  
नेने पुछ्यामां नथी आव्युं ते विना पूछा  
हुआ Unasked “अपुच्छिओ न भासिजा,  
भासमाणस्स अंतरा” दस० ८, ४७;

अपुच्छिअ. सं० क० अ० (अपृष्ट्वा) पुछ्या  
विना; अणुपुछे विना पूछे, न पूछकर. Un-  
asked. निसी० २, ४८, ६, ७, १५,  
३४,

अपुट्ठ. त्रि० (अपुष्ट) पुष्ट नहि; दुर्बल दुर्बल,  
कमजोर; कृश Not robust; weak  
सूय० १, १४, ३;

अपुट्ठ त्रि० (अपृष्ट) नेने पुछ्युं नथी ते;  
पुछ्यामां न आवेय विना पूछा हुआ Un-  
asked. “पुट्ठो वावि अपुट्ठो वा, लाभालाभं  
न निद्विसे” दस० ८, २२, उत्त० १, १४,  
भग० ३, १,—लाभिअ. पुं० (—लाभिक) ‘शुं आपु?’ अेम पुछ्या विना शिक्षा आपे  
ते लेवी अेवो अलिग्रह धरनार साधु ‘क्या  
दू?’ ऐसा पूछे विना जो भिक्षा दे वह भिक्षा  
लेने का अभिग्रह-नियम धारण करने वाला  
साधु an ascetic taking only  
those alms which are not pre-  
ceded by the question “What  
may I give you?” ओव० १६,  
—वागरण न० (—व्याकरण) पुछ्यामां  
न आव्युं होय छांतिं प्रतिपादन करवुं ते. विना  
पूछे प्रतिपादन करना. explaining a  
thing that is not asked “एवं  
सब्बं अपुट्ठवागरणं नेयच्च” भग० ३, १,  
कप्प० ५, १४६;

अपुट्ठ त्रि० (अपृष्ट) स्पर्श न करेय, नेने  
अड्यामां नथी आव्युं ते. विना छुया हुआ  
Untouched. “अपुट्ठे उदाद्वि” भग०  
२, १; “अपुट्ठं भासंते” भग० ८, ८, १,  
६, ५, ४, १७, ४;—धम्म पुं० (—धर्मन्)  
नेने धर्म अणुहीन छे ते, नेने धर्म इक्ष्णे

नथी ते. जिसका धर्म बलहीन है वह;  
जिसने धर्म का स्पर्श न किया हो वह. (one)  
of feeble religion; (one) un-  
touched by religion. “एवं नु सेहं  
वि अपुट्ठधम्मो, धम्मो न याणाइ अबुज्झमाणे”  
सूय० १, १४, १३,

अपुण अ० (अपुनर्) इरी नहि. फिर नहीं.  
Not over again. पंचा० १२, ११;

अपुणकरण न० (अपुन.करण) इरीने  
न करवुं ते फिर से न करना Not doing  
over again पंचा० १५, २८,

अपुणकरणसंगय त्रि० (अपुन करणसङ्गत-  
पुनरिदं मिथ्याचरणं न करिष्यामीत्येवं निश्च-  
यान्वितः) ‘इरीने आवुं आयरणु नहि करुं’  
अेवा निश्चयवाणे ‘फिर से ऐसा आचरण  
नहीं करूंगा’ ऐसा निश्चय करने वाला Re-  
solving not to do a particular  
act again पंचा० १२, ११,

अपुणच्च पुं० (अपुनश्च्यव-न पुनश्च्यवनं  
च्यवोऽपुनश्च्यवः) देवतामांथी यथीने तिर्य्य  
आदिमां उत्पन्न न थवु ते; इरीने अयवानो  
—भरवानो अभाव देवयोनि से च्युत होकर—  
देव शरीर को छोड़कर तिर्य्यच आदि गतियों  
में उत्पन्न न होना, फिर से मरने का अभाव.  
Not being born among animals  
etc after finishing life among  
gods, not being required to  
die again. “मज्झंता अपुणच्चवं” उत्त०  
३, १४;

अपुणबंधग. पुं० (अपुनर्बन्धक) लुओ  
‘अपुणबंधय’ शब्द देखो ‘अपुणबंधय’  
शब्द Vide ‘अपुणबंधय’. पंचा० २,  
४४;

अपुणबंधय पुं० (अपुनर्बन्धक-न पुनरपि बन्धो  
मोहनीयकर्मोत्कृष्टस्थितिनिबन्धनं यस्य स



तथा ) जेणे ग्रंथिभेद कथ्यो छे-रागद्वेषनी भज्युत गाठ भेदी छे ते, मोहनीयनी उत्कृष्ट स्थिति क्षी, न पांधनार ७५ जिसने ग्रंथिभेद किया है-रागद्वेषरूपी मजबूत गाठ का भेदन किया है वह, धर्म का अधिकारी ( One ) who has shattered the bonds of love and hatred; ( one ) fitted for religion पंचा० २, ४४;

अपुण्यभव त्रि० ( अपुनर्भव ) जेने क्षीने जन्म नथी करवे ते, पुनर्जन्मरहित. जिसे फिर जन्म नहीं धारण करना वह, पुनर्जन्म रहित Freed from rebirth "सिद्धि-गङ्गिलयं सासयमन्वावाहं अपुण्यभवं" परह० १, १;

अपुण्यरावत्तय. त्रि० ( अपुनरावर्त्तक ) जथा क्षी आवर्त्तन-आगमन नथी तेवुं, पुनर्जन्मरहित पुनरागमन रहित; पुनर्जन्म, मरणादि रहित, जहाँ फिर से आवर्त्तन-आगमन नहीं ऐसा From which there is no return; freed from the cycle of birth and death भग० १, १,

अपुण्यरावत्ति. त्रि० ( अपुनरावृत्ति ) ज्यो 'अपुण्यरावत्ति' शब्द देखो 'अपुण्यरावत्ति' शब्द. Vide 'अपुण्यरावत्ति' आव० ६, ११;

अपुण्यरावत्तिअ त्रि० ( अपुनरावृत्तिक ) ज्यो 'अपुण्यरावत्तय' शब्द देखो 'अपुण्यरावत्तय' शब्द Vide 'अपुण्यरावत्तय' ओव० १०,

अपुण्यरावत्ति त्रि० ( अपुनरावृत्ति-न पुनरावृत्ति संसारेज्वतारो यस्मात्तत्तथा ) सिद्धि स्थान, मुक्ति सिद्धिस्थान, मुक्ति, मोक्ष Salvation; Siddhahood जं० प० ५, ११४, सम० १; राय० २३; कप्प० २, १५; नाया० १,

अपुण्यरुत्त. त्रि० ( अपुनरुत्त ) पुनरुक्ति दोष

रहित; जेने जे वात क्षी कहेवी ते पुनरुक्ति, तेथी रहित पुनरुक्ति दोष रहित, एक ही वात को दुबारा कहना पुनरुक्ति होती है, उससे रहित Free from tautology राय० १६०; ज० प० २, ३०, ५, १२२; विशेष० ४७२;

अपुण्यगम त्रि० ( अपुनरागम ) जथा क्षी क्षी जन्म धारण नथी करवे ते, मोक्ष जहाँ से फिर जन्म धारण नहीं करना वह स्थान, मोक्ष. ( That ) from which there is no re-birth, salvation "समुद्पाले अपुण्यगम गइं, गण्ति" उत्त० २१, २४, "उवेइ भिक्खू अपुण्यगमं गइं" दस० १०, १, २१,

अपुण्योच्चय पुं० ( अपुनश्चय ) क्षीने भरवाते अव्यय, अमरपणु फिर से मरने का अभाव, अमरत्व Absence of any further death; freedom from death उत्त० ३, १४;

अपुण्य त्रि० ( अपुण्य ) पुण्यहीन; जेनशीण पुण्यहीन, अभाग Devoid of religious merit, unfortunate नाया० २, १६; १६, विवा० १, ७, राय० २७६, निर० १, १, ( २ ) तीव्र असातावेदनीयता उदयवाले तीव्र असातावेदनीयकर्म के उदय वाला ( one whose Karmas giving keen pain have matured. "सामा योरइयाण पवत्तयती अपुण्यणा" सूय० नि० १, ५, १, ७५, ( ३ ) अनार्य; पापात्यरणी अनार्य; पापाचरणी sinful. आया० १, ६, १, ८,

अपुण्य त्रि० ( अपूर्ण ) अधुअ, अपूर्ण भनोरथवाले अधूरा; अपूर्ण, अपूर्ण मनोरथ वाला. Imperfect, incomplete, of unsatisfied desires "अहयं अधरणा अपुण्यणा" विवा० १, ६, जं० प० ३, ४३,



अपुत्त. त्रि० ( अपुत्र ) पुत्र विनातो, दीक्षर  
वगरेतो पुत्र रहित Sonless; having  
no son आया० २, ७, १, १२५, नाया० १४;

अपुम. पुं० ( अपुंस् ) पुरुषात्न वगरनुं; नपुं-  
सक. पुरुषत्व रहित; नपुंसक An impo-  
tent क० प० ४, ४५; ओघ० नि० २२३;

अपुरस्कार. पुं० ( अपुरस्कार ) पुरस्कार-  
लोडभां गुणी तरीडे मनावायी भगता  
सत्कारनेो अभाव; अवज्ञा, अनादर लोगो  
द्वारा गुणी जनों को जो सत्कार मिलता है,  
उसका अभाव, अनादर, अवज्ञा Lack of  
respect; disrespect “ गरहणयाए  
अपुरस्कारं जणयइ ” उक्त० २६, ७;  
—गअ. त्रि० (—गत ) असत्कारने प्राप्त  
थयेल, अनादर पाभेल. असत्कार प्राप्त; अनादर  
पाया हुआ. dishonoured; an  
impotent उक्त० २६, ७;

अपुरिस. पुं० ( अपुरुष—न पुरुषोऽपुरुषः )  
नपुंसक; पुरुषत्वनेो अभाव. पुरुषत्व रहित,  
नपुंसक. An impotent ठा० ६;—वाय  
पुं० (—वाद ) नपुंसकवाद; डाधना उपर  
नपुंसकपणानेो आरोप भुक्वेो ते; डाधनी  
नपुंसक तरीडे वात देलावपी ते. नपुंसकवाद,  
किसीके ऊपर नपुंसकत्व का आरोप करना;  
किसीके नपुंसक होने की बात प्रकट  
करना. accusing a man for being  
impotent “अपुरिसवायं वयमाणे दासवायं  
वयमाणे ” वेय० ६, २;

अपुरिसकारपरक्रम त्रि० ( अपुरुषाकारपराक्रम-  
पुरुषाकार. पौरुषाभिमान पराक्रमो निष्पादि-  
तप्रयोजनं सामर्थ्यं तौ न विद्येते यस्य तत्तथा )  
पुरुषाकार-भाणुसाध-भनुष्यने छाज्जता परा-  
क्रम विनातो. मनुष्यत्व के योग्य पराक्रम  
से रहित. Devoid of manly exploits  
—नाया० १३; १६, भग० ७, ६; विवा० १, ३,

अपुरोहित. त्रि० ( अपुरोहित—नास्ति पुरोहितो

यत्र ) पुरोहित-शान्तिकर्मकरनार ज्यां नथी  
ते. पुरोहित-शान्तिकर्म करने वाला जहाँ नहीं  
है वह. Devoid of a family-  
priest भग० ३, १;

अपुव्व त्रि० ( अपूर्व ) नवीन; विलक्षण;  
अन्य साधारण नहि. असाधारण; नवीन.  
Novel; extraordinary. क० प० ४,  
२०; क० गं० २, ६; ४, ४८, विशेष० १२०३;  
प्रव० ३१४ पंचा० ३, २६; (२) पूर्वे न अनु-  
लवेल, अपूर्वकरण; तणु डरणमानुं ओक.  
जो पहिले कभी अनुभव से न आया हो वह;  
अपूर्वकरण, तीन करणों में से एक करण. not  
experienced before; one of the  
three Karanas अणुजो० १३०; नाया०  
१७;—चिंतामणि. पुं० (—चिन्तामणि )  
अपूर्व-अद्वितीय चिन्तामणि रत्न. अपूर्व  
चिन्तामणिरत्न. unrivaled or un-  
paralleled philosopher's stone.  
पंचा० ४, ३८;—नाण. न० (—ज्ञान )  
अपूर्वज्ञान; ननुं ननुं ज्ञान अपूर्व ज्ञान; नया-  
नया ज्ञान. knowledge which one  
did not possess before; new  
knowledge. प्रव० ३२०;

अपुव्वकरण. त्रि० ( अपूर्वकरण—अपूर्वमभिनवं  
प्रथमं करणं स्थितिघातरसघातगुण  
श्रेणिगुणसङ्क्रमस्थितिबन्धानां पञ्चाना  
मर्थानां निर्वर्तनं यस्यासावपूर्वकरण )  
स्थितिघात, रसघात, गुणश्रेणि, गुणसंक्रम  
अने अन्यस्थितिवंध ये पांचनी अपूर्व-  
पहेलीज वार निष्पत्ति करनार एव; आहमे  
गुणश्रेणि निरुक्त पायस्थिति प्राप्त करनार  
एव स्थितिघात, रसघात, गुणश्रेणी, गुण-  
सक्रम और अन्यस्थितिवंध इन पांचों की  
प्रथम ही वार निष्पत्ति करने वाला जीव;  
आठवें गुणस्थान में उक्त पांचों स्थिति प्राप्त  
करने वाला जीव. (A soul) attaining

for the first time to a stage (the eighth stage of spiritual evolution) in which the five things occur viz Rasaghāta, Sthitighāta, Gunaśreni, Guna-sankrama and Anyasthitibandha. क० गं० २, ६; ( २ ) न० ( अग्र-सं पूर्वमपूर्व-स्थितिघातसंघाताद्यपूर्वार्थ निर्वर्तनं वा तच्चतत्करणञ्चापूर्वकरणम्-भव्या-नां सम्यक्त्वाद्यनुगुणो विशुद्धतरपरिणाम विशेष ) ७७ परिणाम-अध्यवसायार्थी स्थिति घात, रसघातादि अपूर्व अर्थनी ओकेन समये साथे साथे निष्पत्ति थाय ते परिणाम विशेष, समदित आदिने अनुकूल अव्यञ्जन वि-शुद्धतर परिणामविशेष जिस परिणाम से स्थितिघात, रसघात आदि अपूर्व-अर्थ की एक ही समय में साथ साथ प्राप्ति हो वह परिणाम विशेष; सम्यक्त्व आदि के अनुकूल भव्यजीव का विशुद्धतर परिणामविशेष modifications undergone by the soul simultaneously acquiring as result of them unique conditions of Rasaghāta etc. जं० प० ३, ७, भग० ६, ३१, क० प० ४, २०, क० गं० ४, ४६; ( ३ ) आठम गुणस्थानक the eighth Guna-sthānaka नाया० ८, १४,—आलिगा स्त्री० (—आवलिका ) अपूर्वकालनी आव-लिङा-समयविशेष. अपूर्वकरण की आवलि-का-समयविशेष the particular time of the attainment of Apūrva-kalana क० प० २, ६८;

अपुन्यरागग्रहण न० ( अपूर्वज्ञानग्रहण-अपूर्वज्ञानस्य निरन्तरं ग्रहणम् ) निरन्तर अपूर्व अपूर्वज्ञान प्राप्त करवु ते, तीर्थकर-नमिर्कर्म विनाशवाना वीश स्थानकमानुं

१८ मु स्थानक. सदा अपूर्व अपूर्व ज्ञान प्राप्त करना, तीर्थकरनामकर्म उपार्जन करने के बीस स्थानको में से १८ वॉ स्थानक Ceaselessly acquiring new knowledge, the eighteenth of the twenty sources of attaining to Tirthanakara-Nāmakarma. नाया० ८,

अपुहत्त त्रि० ( अपृथक्त्व-अविद्यमानं पृथक्त्वं प्रस्तावात्संयमयोगेभ्यो विमुक्तत्वस्वरूपं यस्यासौ तथा ) निरन्तर संयमयोगमां वर्त-नार सदा संयमयोग मे प्रवृत्त Ceaselessly engaged in the practice of self-control. “अपुहत्ते सुप्पणिहिण विहरइ” उक्त० टी० २६,

अपूअ-य. पुं० न० ( अपूप ) पुरी, माणपुआ. पूरी, मालपुआ A small round cake of flour; a bun आया० २, १, ४, २४, ओव० ४२; जीवा० ३, १, जं० प०

अपूइवयण न० ( अपूतिवचन-न पूति अपूति तच्चतद्वचनं चापूतिवचनम् ) सडेलु-डावाध गयेलुं वयन नहि, अर्थात् ओइलुं पाणे तेवा उत्तमपुरुषेणु वयन पवित्र व्यक्तियों का वचन, जिनके कहे हुए वचन की पालना हो सके ऐसा उत्तमपुरुषों का वचन Words of men of character, words never growing rotten or stale. नाया० १६;

अपूप पु० ( अपूप ) ओओ ‘अपूअ-य’ शब्द. देखो ‘अपूअ-य’ शब्द Vide ‘अपूअ-य’.

अपूया स्त्री० ( अपूजा ) पूजनी अभाव. पूजा का अभाव. Absence of worship.

“पूयापूया हियाहिया” ठा० ५३ ३; अपूरिअ. त्रि० ( अपूरित ) अपूर्ण; अधुन.

अधूरा; अपूर्ण Imperfect; incomplete. पि० नि० २१६;

अपूर्ह पुं० (अपोह) अवाय; निश्चय; विशिष्टज्ञान. निश्चय, विशेषप्रकार का ज्ञान. Definite, determinate knowledge; certainty. नाया० १, ८;

अपेच्चमाण. व० कृ० त्रि० (अपेत्यमान-अनाक्रमत्) आक्रमण न करते; डोचना उपर छेद न करते आक्रमण न करता हुआ. Not attacking; not assailing. भग० ८, ७, १८, ८;

अपेज्ज. त्रि० (अपेय) पीवा योग्य नहीं; मदिरा वगैरे अपेयपदार्थ न पीने योग्य, मदिरा आदि अपेयवस्तु Not drink-worthy; e g wine etc. जीवा० ३, ४;

अपोग्गल पुं० (अपुद्गल-न विद्यन्ते पुद्गला कर्मरूपा येषां ते तथा) धर्मपुद्गलरहित सिद्ध भगवान् कर्मपुद्गल रहित सिद्धभगवान् One free from Karmic atoms; a liberated soul ठा० २, १;

अपोरिसिय त्रि० (अपौरुषिक-पुरुष प्रमाण मस्येति पौरुषिकं तन्निषेधादपौरुषिकम्) पुरुषप्रमाणार्थी अधिक ऊँडुं, अगाध जल वगैरे पुरुषप्रमाण से अधिक ऊँडा; अगाध जल वगैरे. Of a depth exceeding the height of a man; (water etc.) very deep. “अथाहमपोरिसियं पक्खिवेज्जा” नाया० ६; भग० १, ६;

अपोरिसीय. त्रि० (अपौरुषेय) पुरुषप्रमाण-वाभ्यर्थी वधारे ऊँडुं; अगाध. पुरुषप्रमाण से अधिक ऊँडा-गहरा. Of a depth exceeding the height of a man; unfathomable. नाया० १४, (२) पुरुषना डेहल नहीं; अमानुषिक. पुरुषद्वारा न कहा हुआ, अमानुषिक. ठा० १०;

अपोरिसिय. त्रि० (अपौरुषिक) अनुभूति 'अपोरिसिय' शब्द. देखो 'अपोरिसिय' शब्द. Vide 'अपोरिसिय'. भग० ७, १;

✓ अपोह धा० I. (अप+ऊह्) छिड़ापोह डरी निश्चय करे. ऊहापोह करके निश्चय करना. To settle after discussion. अपोहण. विशेष० ५६१;

अपोह. पुं० (अपोह) छिड़ा पछी थतो निश्चय; अवाय; भतिज्ञानतो त्रीजे लेह. ईहा के बाद होने वाला निश्चय; अवाय; भतिज्ञान का तीसरा भेद Judgment; ascertained knowledge, the third variety of Matijñāna. जं० प० नंदी ३६; विशेष० ३६६, (२) विपक्षनी कुयुक्तिभूतो निरास-त्याग करवाने विशेष विचार करे तो; तर्क; विशिष्ट ज्ञान; बुद्धि तो छोड़ो शुशु विपक्ष की कुयुक्तियों का परिहार करने के लिये विशेष विचार करना; तर्क; विशिष्ट ज्ञान, बुद्धि का छठा गुण minute logical reasoning to refute the objections raised by an opponent; the sixth merit of intellect. भग० ६, ३१; (३) पडिदेहणुतो अेक प्रकार. पडिलेहण-प्रतिलेखन (बत्नों का निरीक्षण) का एक प्रकार. a variety of Padīlehana i. e. minute inspection of garments etc. ओष० नि० ६२;

✓ अप्प. धा० II (अर्प) अर्पण करवुं; सौ-पी देवुं; अर्पण करना, सौंप देना. To present; to give.

अप्पेह. सु० च० ४, ८०;

अप्पणामि. नाया० १६;

अप्पेज्जा. वि० पंचा० ८, ७;

अप्पाविउं. सं० कृ० सु० च० ४, १२६;

अप्य त्रि० ( अल्प ) थोड़ा, ज़री, स्वल्प, लघु-  
 रेड थोड़ा, स्वल्प Little; small  
 भग० १, १; २, २; ३, २, ५, ६, १०; ७,  
 ३, १३, ४, नाया० १, १२, १६, दस० ४,  
 ५, १, ७४, ६, १४, जीवा० १, आया० १,  
 २, १, ६२, १, २, ३, ८०, उत्त० १, ३५,  
 ११, ११, २५, २४, वव० ६, ४१, ४२,  
 कप्प० ४, ६७, पि० नि० २०४; ३७६, सू०  
 प० १०, २०, ओव० ११, १६, ३८, ( २ )  
 अभाव, नहि अभाव. absence of,  
 negation of ठ० ७; राय० ३२, आया०  
 १, ८, ६, २२२;—अंड त्रि० (—अण्ड-  
 अल्पानि—न सन्ति अण्डानि क्रीटिकादीनां  
 यत्र तदल्पाण्डम् ) धडां वगरनुं, जयां झीडी  
 वगेरेनां धडां मुद्द नथी ते अंड रहित,  
 जहा चिजंटियों आदिक के अंडे नाममात्र के भी  
 नहीं हैं वह. absolutely free from  
 eggs; free from eggs of ants  
 and other insects. आया० २, १,  
 १, १, वेय० ४, २६,—अहिगरण  
 त्रि० (—अधिकरण—अल्पमविद्यमानमधिकरण  
 कलहो यस्य तत्तथा ) डलडरहित, डलेश  
 विनाने कलह रहित, क्लेश रहित free  
 from feud or quarrel, peaceful  
 ठ० ६, १,—आउ त्रि० (—आयुष् ) लुओ  
 ‘अप्यआउअ-य’ शब्द देखो; ‘अप्यआउअ-य’  
 शब्द vide “अप्यआउअ-य” क० प० ४, ७३,  
 —आउअ-य. त्रि० (—आयुष्क) अल्प—थोडा  
 आठिआवालो; थोडी निंदगी लोगवनार  
 थोड़ी आयु वाला. having a short  
 life, short lived सू० २, ७, २३,  
 परह० १, १,—आउअत्ता स्त्री० (—आयु-  
 ष्कता—अल्पमायुर्यस्यासावल्पायुष्कस्तस्य भा-  
 वस्तत्ता ) जघन्य आठिभुं, दुंडुं आयुष्य,  
 दुंडी निंदगी थोड़ी आयु, जघन्य आयु  
 shortness of life भग० ५, ६; ठ०

३, १,—आगम त्रि० (—आगम ) अल्प  
 आगमनो जलुनार, अल्पत अल्प-थोड़ा आगम  
 जानने वाला, अल्पज्ञ. (one) possessed  
 of a smattering knowledge of  
 scriptures, a smatterer वव० ६,  
 २,—आयंक त्रि० (—आतङ्क—अल्प सर्वथाऽ-  
 विद्यमान आतङ्को ज्वरादिर्यस्यासावल्पातङ्कः)  
 निरोगी, रोगरहित निरोगी, रोग रहित  
 free from disease, healthy.  
 “अप्यायंके महापन्ने, अभिजाणु जसोवले”  
 उत्त० ३, १८, भग० १६, ३, आया० २, ५,  
 १, १४१,—आरंभ त्रि० (—आरम्भ )  
 पृथ्वी आदि एवोनो थोडा आरंभ समारंभ  
 डरनार पृथ्वी आदि जीवों का थोडा आरंभ-  
 समारंभ करने वाला injuring or  
 killing to a slight extent the  
 sentient beings of earth—bodies  
 etc ओव०—आसव पुं० (—आश्रव )  
 थोडा आश्रव—डर्मप्रवाह थोडा आश्रव-कर्म  
 प्रवाह, slight influx of Karma.  
 भग० १६, ४,—आसवतर पुं० (—आश्रवतर)  
 धलोन थोडा आश्रव; अतिशय थोडी डर्मनी  
 आवड बहुत थोडा आश्रव, बहुत कम कर्म की  
 आय slight influx of Karma.  
 भग० १६, ५,—आहार पुं० (—आहार )  
 स्वल्प आहार, थोडा भोराड. स्वल्प आहार;  
 थोड़ी खुराक scanty food अट्टकुक्कुडि-  
 अंडगप्पमाणमेत्ते कवले आहारमाहारेमाणे  
 अप्पाहारे” भग० ७, १, दसा० ५, २६;  
 पि० नि० ६४८, वव० ८, १५; ( २ ) त्रि०  
 भिताहारी, थोडुं भानार भिताहारी; थोडा  
 खाने वाला (one) taking scanty  
 food पि० नि० ६८८, वव० ८, १५;  
 —इच्छ त्रि० (—इच्छ—अल्पा स्तोकाऽ-  
 विद्यमाना वा इच्छा यस्य तत्तथा) धर्मोपदेशं  
 शिवाय अन्य वस्तुनी धृच्छा न राप्पनार.

धर्मोपकरण के सिवाय दूसरी वस्तुओं की इच्छा न रखने वाला. ( one ) having desires limited only to implements of religious practices. सूय० २, २, ३६; जीवा० ३; (२) स्वल्प आहार करने वाला; आहार का त्यागी taking scanty food, one who gives up food. “ लूहवित्ती सुसंतुष्टे, अपिच्छे सुहरे सिया ” दस० ८, २५;—इच्छया स्त्री० (—इच्छता-इच्छा ) अल्प भोजन, भोजनो अभाव. थोड़ी इच्छा, अल्प इच्छा; इच्छा का अभाव. scantiness of desire, absence of desires. “अपिच्छया अहलाभेवि संते” दस० ६, ३, ५;—इच्छा स्त्री० (—इच्छा ) आहारदिग्मां थोड़ी भोजन, स्वल्प वांछा आहारादि में थोड़ी इच्छा. scantiness of desire for food etc भग० १, ६;—इद्विय. त्रि० (—ऋद्धि) थोड़ी ऋद्धिवाणो. थोड़ी ऋद्धिवाला possessed of limited means भग० ३, २, १०, ३, १६, १०, इद्वियतर. त्रि० (—ऋद्धिकतर ) अतिशय थोड़ी ऋद्धिवाणो बहुत ही कम ऋद्धिवाला having very scanty means भग० १३, ४,—उत्तिग त्रि० (—उत्तिग) उत्तिग-झीडीना नगररहित, झीडीना नगर विनानु चिजंटीयों के नगराओं ( घरों ) से रहित free from ant-hills वेय० ४, २६;—उत्थाह. त्रि० (—उत्थायिन्-अल्पमुत्थातुं शीलमस्येत्यहोत्थायी ) अथेनन पथे पथ वारंवार उठनेसे उठवानो जेतो स्वभाव नहीं ते प्रयोजन होने पर भी बार बार उठने बैठने का जिसका स्वभाव नहीं हो वह ( one ) not getting up from his seat frequently in spite of necessity “ अप्पुट्टाई निरुट्टाई, निसीण्णप्पकुक्कुप्प ”

उत्त० १, ३०,—उदय त्रि० (—उदक) पाणि विनानु; पाणिरहित जल रहित; विना पानी का. devoid of water; waterless आया० १, ८, ६, २२२;—उयय. त्रि० (—उदक ) लुओ ‘अप्पुदय’ शब्द. देखो ‘अप्पुदय’ शब्द. vide ‘अप्पुदय’. नाया० १;—उस्स. त्रि० (—अवश्याय) ओस-झाड़ना पिन्दु वगरनु; नीचे के उपर धारना पिन्दु नहीं तेनु ओस के बिन्दुओं से रहित; जिसके ऊपर या नीचे ओस की बूंदें नहीं हैं ऐसा. free from dew-drops आया० १, ८, ६, २२२; वेय० ४, २६,—उस्सुय त्रि० (—औत्सुक्य) उछांछापापलाथी रहित; विह्वल नहीं उत्सुकता रहित, विह्वलता रहित free from restlessness भग० २, १; ३, २; आया० २, ३, १, ११६,—कम्मतर. त्रि० (—कर्मतर) अल्प थोड़ा कर्मवाणो. बहुत ही थोड़े कर्मों वाला. having very slight Karmas. “ तन्नो पच्छा अप्पकम्मतराए चेव ” भग० ५, ६, १, २; १६, ५,—कम्मतरय त्रि० (—कर्मतरक) धुण्ण थोड़ा कर्मवाणो, धुण्ण हण्णवाकर्मो, बहुत थोड़े कर्मों वाला. having very slight Karmas भग० ७, १०; १८, ५;—कालिय त्रि० (—कालिक) थोड़ा वधत रहेनार; थोड़ा डाणुं थोड़ा समय रहने वाला; थोड़े समय का of a short duration of time, resting for a short time. भग० ६, ३३,—किरिय. त्रि० (—क्रिय) थोड़ी क्रियावाणो, जेने थोड़ी क्रिया लागे छे ते. थोड़ी क्रिया वाला, जिसका थोड़ा कर्मबंध होता है वह. having slight Karma ठा० ४, ३;—किरिया. स्त्री० (—क्रिया) थोड़ी क्रिया; अल्प क्रिया. थोड़ा कर्मबंध. slight Karma,



भग० १६, ४,—किरियातरा स्त्री० (—क्रियातरा ) धृष्टी थोड़ी क्रिया—कर्मबन्ध बहुत थोड़ा कर्मबन्ध very slight Karma  
भग० १६, ५;—किलंत त्रि० (—क्लान्त—अल्पं स्तोत्रं क्लान्तं क्लमो येषां ते तथा ) जेने थोड़े-परिश्रम नहीं ते जिसे परिश्रम-खेद नहीं है वह unfatigued, slightly fatigued “अप्यकिलंताय बहुसुभेण भे”  
आव० ३, १;—कुक्कुत्र त्रि० (—कौकुच्य—अल्पमसत् कौकुच्यं करचरणादिचेष्टाऽस्येति तथा ) हाथ, पैर, मस्तक वगैरे धुल्लुववानी येषां पिनातो हाथ, पैर, मस्तक आदि हिलाने की चेष्टा से रहित free from movements of hands, feet, head etc  
“ निसीपुज्जप्पकुक्कुट्ट ” उक्त० १, ३०,  
—क्रोध त्रि० (—क्रोध ) क्रोधरहित, भाव ऊनोदरी का एक भेद free from anger; a variety of mental Unodari.  
भग० २५, ७, ओव०—क्खर न० (—अक्षर—अल्पान्यक्षराणि यस्मिंस्तत्तथा ) शुशुयुक्त सूत्र, जेमा अक्षर थोड़ा अने अर्थ गंभीर होय तेतुं सूत्र. गुण सहित सूत्र, जिसमें अक्षर थोड़े हों और अर्थ बहुत हो ऐसा सूत्र an aphorism concise in form but comprehensive in meaning ओव०  
—गघ त्रि० (—अर्ध-अल्पोऽर्धो मूल्य यस्य तत्तथा ) थोड़ी किम्मतवाणुं, अल्प मूल्यवान् पदार्थ, सस्तु अल्प मूल्य वाला, थोड़ी कीमत वाला; सस्ता cheap; of small price जीवा० ३, ३, दस० ७, ४६, भग० ३, ७,  
—जोग पुं० (—योग ) न्यून-योग-भन आदिने व्यापार जघन्य योग minimum or lowest degree of thought vibration and other activities क० गं० ५, ५३, —भंक्क त्रि०

(—भंक्क-विगततथाविधविप्रकीर्णवचनं )  
उलेश-अगडानां वचन न भोलनार; भाव उल्लोदरी करने लड़ाई, झगड़े के वचन न बोलने वाला, भाव ऊनोदरी करने वाला. not given to offensive or quarrelsome speech, practising mental Unodari ठ० ८, भग० २५, ७,—इद्धि त्रि० (—अद्धि ) थोड़ी अद्धिवाणुं, जेनी पासे थोड़ी अद्धि छे ते. थोड़ी अद्धि वाला, जिसके पास थोड़ी अद्धि है वह having limited wealth.  
भग० १४, ३, १६, ११, पंज० १७;  
—णिज्जरा स्त्री० (—निर्जरा ) थोड़ी निर्जरा थोड़ी निर्जरा, कम प्रमाण में कर्मों का नाश a modicum of Nirjarā.  
भग० १६, ४;—तुमंतुम त्रि० (—त्वम्त्वम् ) क्रोधने वशे ‘तु’ करी अथवा भीज्जनु अपमान न करने क्रोध के वश होकर ‘तू तू’ आदि हीन शब्दों द्वारा एक दूसरे का अपमान न करने वाला not insulting one another by the use of the term “thou” in anger भग० २५, ७, ठ० ८, दस० ४, १०५,—त्थामअ त्रि० (—स्थामन् ) थोड़ा अल्पवाणुं; अल्प सामर्थ्यवान्. कम शक्ति वाला, अल्प सामर्थ्यवान्. of small or limited strength. “ से अंतसो अप्पत्थामए ” सूय० १, २, ३, ५;—द्धा स्त्री० (—अद्धा ) अल्प काल; थोड़ा वधत थोड़ा समय short time, a small duration of time क० प० २, १०१, ७, ४३,—पणसग्ग त्रि० (—प्रदेशाग्र-अल्पं प्रदेशाग्र कर्मवलिक्कपरिमाण यस्य तत् ) थोड़ा प्रदेशवाणा कर्म; जेने प्रदेशाग्र-कर्मदलने नथे थोड़ा होय ते कर्म वगैरे थोड़े प्रदश वाला कर्म, जिस कर्म का प्रदेशबंध थोड़ा हो वह कर्म (Karmas etc) covering



a narrow space भग० १, १;  
 —परिग्रह त्रि० (—परिग्रह) धन धान्यादि  
 थोडा परिग्रहवाणो वनधान्यादि थोड़े परिग्रह  
 वाला. having limited worldly  
 possessions ओव०—परिचाय पुं०  
 (—परित्याग ) थोडा त्याग. थोड़ा त्याग;  
 अल्प त्याग slight abstention  
 पंचा० १८, ३२,—प्राण त्रि० (—प्राण-  
 अल्पा असन्त प्राणा प्राणिनो यत्र तत्तथा)  
 प्राणिरहित; जहाँ प्राणी पणु प्राणी-नंतु  
 नथी तेवा उपाश्रय वगेरे प्राणी रहित स्थान;  
 जहा कोई भी प्राणी-जीवजन्तु नहीं ऐसा उपा-  
 श्रय वगैरह free from living beings  
 e g a monastery or a monk's  
 abode. आया० १, ६, ८, ७; वेय० ४,  
 २६;—पाणासि त्रि० (—पानाशिन-अल्पं  
 पानमशितुं शीलमस्यासावल्पपानाशी ) थोडुं  
 पेय द्रव्य पीनार; पाणी वगेरेनुं थोडु पान  
 करने पिय पदार्थ को थोड़ा पीने वाला;  
 पानी वगैरह को अल्प प्रमाण में पीने वाला  
 (one) taking a limited quantity  
 of fluid substances like water  
 etc. सूय० १, ८, २५,—पिंडासि. त्रि०  
 (—पिण्डाशिन-अल्पं पिण्डमशितुं शीलमस्ये-  
 ति ) थोडा आहारनो करने, मितहारि,  
 अल्पाहारी अल्प प्रमाण में आहार करने  
 वाला, मितहारी (one) taking a  
 limited quantity of food; mode-  
 rate in food. “अप्यपिंडासिपाणासि,  
 अप्यं भासेज सुवप ” सूय० १, ८, २५;  
 —पुरण त्रि० (—पुरण ) पुण्यहीन, पापी;  
 अनार्थ पुरण हीन, पापी, पुरण रहित; अनार्थ  
 sinful; devoid of religious  
 merit आया० १, ६, १, ८;—बहु त्रि०  
 (—बहु ) ओष्ठुवतुं, थोडुं धणु, थोडुं अणुं  
 न्यूनाधिक, थोडा बहुत more or less

जीवा० २, जं० प० ७, १६२,—बहु त्रि०  
 (—बहुक ) ओष्ठु उरता पीळुं ओष्ठुं वा वधारे-  
 थोडुं वा धणु एक की अपेक्षा दूसरा कम या  
 ज्यादा; कम ज्यादाह. more or less.  
 क० प० १, ५; भग० ७, २;—वीज त्रि०  
 (—बीज-अल्पमसद् बीजं यत्र तत्तथा) पीळ  
 रहित; जहाँ धान्य वगेरे पी विद्यमान नथी ते  
 स्थान वगेरे. बीज रहित; जहाँ धान्य आदि के  
 बीज मौजूद नहीं हो वह स्थान आदि. barren  
 of seeds वेय० ४, २६;—भक्षि त्रि०  
 (—भक्षिन्-अल्पं भक्षितुं शीलमस्येति )  
 अल्पाहारी; मितहारि अल्पाहारी, कम  
 आहार करने वाला moderate in food;  
 taking a modicum of food “अ-  
 णुक्साई लहुअप्यभवसी ” उक्त० १५  
 १६;—भार त्रि० (—भार ) जेनुं भूय धणुं  
 छता भार थोडा होय ते, थोडा वजनवाणु.  
 जिसका मूल्य बहुत होने पर भी वजन कम  
 हो वह, थोड़े वजन वाला. small in  
 weight. भग० २, १,—भाव. पुं०  
 (—भाव ) अल्प लाव-लागणी. अल्प भाव.  
 slender or feeble feeling. पंचा०  
 ६, १६,—भासि. त्रि० (—भाषिन् ) मित-  
 लापी, विडथा आदिथी रहित मितभापी;  
 विकथा आदि न करने वाला; अल्प प्रमाण में  
 बोलने वाला given to speak little;  
 not prolix. “अतितिर्ये अचवले, अप्य-  
 भासी मियासखे ” दस० ८, २६,—भूय.  
 त्रि० (—भूत ) सत्त्व-प्राणीरहित स्थान  
 वगेरे. प्राणी रहित स्थान आदि (a place  
 etc ) free from living beings.  
 ठा० ५, १,—मइ त्रि० (—मति ) थोडी  
 बुद्धिवाणो थोडी बुद्धि वाला. of slender  
 intellect. क० प० ७, ५६,—महग्घ.  
 त्रि० (—महार्घ ) जेनो भार-वजन थोडुं अने  
 डिम्भत धणु होय तेनुं जिसका वजन थोडा

हो और कीमत बहुत हो वह. small in weight but of high price. राय० २३८; नाया० ध०—महर्घाभरणं त्रि० (—महर्घाभरणं—अल्पानि स्तोकभारवन्ति महर्घाणि बहुमूल्यान्याभरणानि यस्यासौ तथा ) थोडुं वजन अने धली डिम्भतवाणां आभूषणो राभनार. थोडे वजन और अधिक कीमत वाले आभूषणों को रखने वाला having ornaments of small weight and high price. उवा० १, १०,—रय त्रि० (—रजस् ) धर्मरत्नरहित; अक्षपद्भी कर्मरज रहित, अल्पकर्मों वाला sullied with slight Karma, unsullied with Karma “ सिद्धे वा हवद् सासण, देवे वावि अप्परए महिद्धिए ” उत० १, ४८,—रय त्रि० (—रत—अल्पमविद्यमानं रत क्रीडनं यस्येति ) श्रीडारहित-डाम लोगनीधृच्छ विनाना—अनुत्तरविमानना देवता वगेरे क्रीडा रहित, कामभोग की इच्छा रहित, अनुत्तरविमाननिवासी देवादि free from carnal lust, e g gods of Anuttara heavenly abode दस० ६, ४, २, ३,—लेवा स्त्री० (—लेपा) जेनाधी पात्र भरदाय नहि अेवा यण्ण, पडुंवा वगेरे आहार लेवानी प्रतिज्ञा करवी ते, पिंडे-पण्णोने येथे प्रहार जिन वस्तुओं से पात्र न लिप्त हों उन वस्तुओं को आहार में ग्रहण करने की प्रतिज्ञा करना, पिंडेषणा का चौथा भेद the fourth variety of caae in food, a vow to take food consisting of grams, beans etc which do not bespatter or stick to a vessel ठा० ७,—लोभ पु० (—लोभ) लोभ घटाउवे या न करवे ते; भाव उल्लासरीने अेक प्रहार लोभ का घटाना या न करना, भाव ऊनोदरी का एक भेद. mti-

gation of or cessation of greed; a variety of mental Unodari. भग० २५, ७,—लोह पु० (—लोभ) णुअे ‘ अप्पलोभ ’ शब्द देखो ‘ अप्पलोभ ’ शब्द vide ‘ अप्पलोभ ’. भग० २५, ७,—वुट्ठि स्त्री० (—वृष्टि) थोडी परसाद. अल्प वर्षा, थोडी वर्षा. scanty rain ठा० ३, ३,—वुट्ठिकाय. पु० (—वृष्टिकाय—वर्षणधर्मचुक्कमुदकं वृष्टिस्तस्या कायः समूहो वृष्टिकाय स चासावल्पः स्तोकोऽविद्यमानो वालवृष्टिकाय ) थोडी परसाद परसे अथवा मुदक न परसे ते. थोडी वर्षा हो अथवा विल्कुल वर्षा न हो वह. scantiness or complete absence, of rainfall “ तिहिं ठाणेहिं अप्पवुट्ठिकाए सिया तंजहा ” ठा० ३, ३, “ अन्नयाकया पढमसरदकालसमयंसि अप्पवुट्ठिकायसि ” भग० १५, १, काप० ६, ३१,—वेयणा-तरगा स्त्री० (—वेदनतर-का ) अतिशय थोडी वेदना, धलीज थोडी वेदना बहुत कम वेदना—कष्ट very slight pain भग० १, २, १८, ५; १६, ५,—वेयणा स्त्री० (—वेदना) थोडी वेदना—दुःख थोडी वेदना, अल्प कष्ट slight pain. भग० ६, १; ७, ६, १६, ४,—सत्तिय त्रि० (—सात्त्विक) सत्त्व वगरना, मनोव्यग विनाना सत्त्व रहित; मनोबल रहित lacking in will-power, stuffless सूय० नि० १, ४, १, ६१;—सद् पु० (—शब्द) राउ न पाउवी, धीमे धीमे ओलवुं ते, भाव उल्लासरीने अेक प्रहार ऊचे स्वर से न चिल्लाना, धीमे स्वर से बोलना; भाव ऊनोदरी का एक भेद not shouting, speaking in a low tone; a variety of mental Unodari भग० २५, ७, ( २ ) डुअे करवा गुरसाथी न ओलवुं ते झगडा हो जानि की संभावना के

कारण क्रोध या गुस्से से न बोलना not shouting with a view to quarrel. ओव०—ससरक्ख. त्रि० (—सरजस्क ) २०—इयरे। डाढीने साइ सुइ इरेइ कचरा निकालकर साफ किया हुआ. cleansed by the removal of dirt. आया० २, २, १, ११०;—सागारिय. त्रि० (—सागारिक ) द्रव्यादिइथी रहित. द्रव्यादि से रहित not possessed of wealth etc वेय० १, २४;—सावज्जकिरिया स्त्री० (—सावज्जक्रिया ) जेभां सावज्जक्रिया थोड़ी छे जेपी वसति—स्थान. जिसमें पाप किया थोड़ी हो ऐसी वस्ती—स्थान. a residence with very few sinful actions in it आया० २, २, २, ८६;—सुअ. त्रि० (—श्रुत ) शास्त्र—आगमनो अज्जलु, थोडुं ज्जलुनार; अल्पज्ञ. शास्त्रों को थोड़ा जानने वाला, अल्पज्ञ ignorant of scriptures; possessed of meagre knowledge. “उहरे इमे अप्पसुएत्ति णच्चा” दस० ६, १, २; वव० ६, २;—सुह त्रि० (—सुख ) थोडुं सुअ आपनार; नहि जेपु सुअ जेभां छे ते. थोड़ा सुख देने वाला; नाममात्र का सुख जिसमें है वह giving but little happiness परह० १, १,—हरिअ. त्रि० (—हरित) ज्ज्यां हरित-वनस्पति नहीं तेपु, वनस्पतिरहित. जहां हरी वनस्पति नहीं हो वह (स्थान), वनस्पति रहित free from green vegetation वेय० ४, २६,

अप्य पुं० ( आत्मन्—अतति सततं गच्छति विशुद्धिसंक्लेशात्मकपरिणामान्तराणीत्यात्मा ) ज्ज, आत्मा; जेतन; स्वयं; पोते; पडे. जीव; आत्मा, चेतन; खुद व खुद; स्वयं. Consciousness; soul; self; oneself. “अप्पणा चैव उदीरेइ ” भग० १, ३;

“अप्पणा अप्पणो कम्मक्खयं करित्तए ” नाया० ५; “अप्पणो भासाए परिणामेण ” “अप्पा णई वेयरणी, अप्पा मे कूडसामली ” उत्त० २०, २६; पिं० नि० भा० ३०; विशेष० १५६; १५६८; निसी० १३, ३०; १५, १; दस० १, २; ६, २२, कप्प० १, ७, गच्छा० ६६, आव० १, ३; नाया० ७; १६; भग० १५, १, दसा० ५, १६; वव० २, २७; ५, ११; ८, १२; अप्पाणं. द्वि० ए० उत्त० १, ६; २६; जं० प० ३, ६८; नाया० १४; निसी० ११, १३; अप्पणा. तृ० ए० वेय० १, ३३; ४, ११; १२; भग० २, ५; २४, १; २३; नाया० २, दसा० १०, ७; अप्पणो ष० ए० ओव० ३४; सूय० १, १, १, ३; अणुजो० १६४; दस० ४; नाया० १; ८; वेय० ४, २५; उत्त० १०, २८, भग० ५, २; ६; १५, १; १७, १; १८, ८; भत्त० ३६; पंचा० ६, ५०; दसा० ६, १२; पन्न० २२; निसी० ३, ३४; १६, १७, अप्पे. स० ए० उत्त० ६, ३६;—अभिणिवेस. पुं० (—अभिनिवेश ) पुत्र, कुलत्रादिइभा पोतापणुनो आग्रह; जे वास्तविक रीते पोताना नहीं तेने विषे आग्रहपूर्वक भक्त्य राखपुं ते जो वस्तुएं वास्तविक रीति से अपनी नहीं हैं उनमें आग्रहपूर्वक भक्त्य रखना; पुत्र, कुलत्र आदि में अहंभाव. excessive attachment to family, worldly possession etc. which are not really a part of one's self or soul नंदी०—उपमा. स्त्री० (—उपमा ) आत्मतुलना; पोतानी उपमा आत्मतुलना; अपने आपकी उपमा comparison with one's own self. सूय० १, ११, ३३;—उत्सुय. त्रि० (—उत्सुक ) भीजनी संपत्तिनी अवगलुना इरी पोतानी संपत्तिने विशेष माननार, आत्मप्रशंसा इरनार दूसरे

की संपत्ति की अवहेलना करके अपनी संपत्ति को विशेष मानने वाला, अपनी प्रशंसा करने वाला. self-applauding, self-exalting ज० प०,—चउत्थ. त्रि० (—चतुर्थ ) जेभां पोताने येथे नं० २ छे ते, पोते जेभा येथे छे ते जिसमे अपना चौथा नंबर हो वह having oneself as the fourth of a series or group वेय० १, ४८; वव० ४, ५, ६; ८, ६; १०; ११; ५, ३; ८,—छुट्ट. त्रि० (—षष्ठ ) जेभां पोते छे छे ते जिसमें खुद का छठा नंबर हो वह. having oneself as the sixth of a group or series नाया० ६, १६, १८,—तइय त्रि० (—तृतीय ) पोते जेभां त्रीजे नं० २ छे ते स्वयं जिसमें तीसरे नंबर पर हो वह. having one-self as the third of a group or series वेय० १, ४७, ४८, वव० ४, ५, ६, ८, ५, ३,—पंचम त्रि० (—पञ्चम) जेभां पोते पांचमे छे ते, पोता सहित पांचमे जिसमें खुद पांचवां हो वह, अपने सहित पांचवां having oneself as the fifth of a group or series. वव० ५, ८;—पर त्रि० (—पर-आत्मा च परआत्मपरौ तथा ) पोते अने भी-न, पोते अथवा भीने खुद और दूसरा, स्वयं अथवा दूसरा oneself and others, oneself for another. नाया० ७;—विइ-ति-य. त्रि० (—द्वितीय ) पोते जेभां भीने छे ते, पोता सहित जे स्वयं जिसमे दूसरा है वह. having oneself as the second of a group or series; forming a group of two inclusive of oneself वेय० १, ४; ४७; वव० ४, २; ५, १,—वस. त्रि० (—वश ) स्वतंत्र; पोताने वश, परवश नहि आत्मवश, स्वाधीन, जो परवश नहीं है वह. self-dependent,

independent गच्छा० ६८, नाया० १६;—वसा स्त्री० (—वशा ) स्वच्छंद स्त्री, निरं-कुश नारी स्वच्छंद स्त्री, स्वच्छाचारिणी नारी. a self-willed woman, a woman without any body to curb her नाया० ४०.—वह पु० (—वध ) आत्मघात; पोताने वध-घात करवी ते आत्महत्या sui-icide भत्त० ६३,—वाइ पुं० (—वादिन् ) 'पुरुष एवेदं सर्व' जे इंधं देआय छे ते सर्व आत्मा शिवाय भीनुं इंधं नथी—जेकर आ-त्मतत्त्वेने प्रातिपादन करनार वादी, अद्वैत-वादी "पुरुष एवेदं सर्व" जो कुछ दिखता है वह सब आत्मा है, आत्मा के सिवाय दूसरा कुछ नहीं है, इस प्रकार केवल आत्म-तत्व का प्रतिपादन करने वाला वादी, अद्वैत-वादी a pantheist, a non-dualist. नंदी०—सत्तम त्रि० (—सप्तम ) जेभां पोते सातमे छे ते, पोता सहित सातमे. जिसमें स्वयं सातवां हो वह having oneself as the seventh of a series or group 'मह्नीणं अरहा अण्णसत्तमे मुंडे भवित्ता' ठा० ७,—द्विय न० (—द्वि) आत्महित; आत्मानुं श्रेय-भलुं आत्मा का भला, आत्मा का हित welfare of the soul or self. नाया० ७;

अण्णइहाण पुं० (अप्रतिष्ठान-न विद्यते प्रतिष्ठानमौदारिकशरीरादे. कर्मणो वा यंत्रसो अप्रतिष्ठान ) मोक्ष; मुक्ति मोक्ष, मुक्ति. Salvation, final liberation. आया० १, ५, ६, १७०; ( २ ) सातमी नरकना पांच नरकावासामाने मध्यवर्ति जेकर नरकावासो. सातवें नरक के पांच नरकावासों में से मध्यवर्ती एक नरकावास. name of the middle of the five infernal abodes of the seventh

hell “अप्पइड्डाणे नरए एगं जोयणसयसहस्स आयामविक्खंमेण ’ ठा० ५, ३; पन्न० २; जीवा० ३, १; भग० १३, १; सम० ५० २०६; अप्पइड्डिअ त्रि० (अप्रतिष्ठित) प्रतिष्ठान-रहित; पाया विना-निमित्त विना स्वभावे उद्भववेद प्रतिष्ठान रहित; विना निमित्त के अपने आप उत्पन्न. Self-born ठा० ४, १; (२) प्रतिबंधरहित; अशरीरी. प्रतिबंध रहित, अशरीरी. free from obstruction; bodiless; unembodied. आया० २, १६, १२;

अप्पइरणपसरियत्त न० (अप्रकीर्णप्रसृतत्व) जेभा असय्यपणुं अने अतिविस्तार नथी जेवी वाणी; तीर्थंकरनी वाणीना ३५ अतिशयमानो जे. जिसमे असंबद्धता और विस्तार नहीं है ऐसी वाणी; तीर्थंकर की वाणी के ३५ अतिशयों में से एक अतिशय Speech free from irrelevance and prolixity; one of the thirty-five Atishayas of a Tirthankar's speech सम० ३५;

अप्पउल्लिअ. त्रि० (अप्रज्वलित) अप३५; अरापर रंधाजेल नहि. विना पका हुआ; अच्छीतरह से न सीका हुआ Raw; imperfectly cooked. “अप्पउल्लिओ सहिभवस्सणया” उवा० १, ५१;

अप्पकंप. त्रि० (अप्रकम्प) अ३५; अचल, डंभे नहि-हले नहि तेवु, ६६. हलन चलन रहित; अचल; दृढ. Firm, steady. “मंदरो इव अप्पकंपे” ठा० १०; ओव० १७,

अप्पकम्म. त्रि० (अल्पकर्मन्) उ३५५ डर्भा; जेनेथेडां डर्भ भोगववाना छे ते जिसे थोड़े कर्मों का फल भोगना है वह. Having slight Karmas. ठा० ४, ३, —पच्चायाय. त्रि० (प्रत्यायात-अल्पै. स्तोकै कर्मभिः प्रत्यायातः प्रत्यागतो मानुषत्वमित्यल्पकर्मप्र-

त्यायातः) भोगवतां डे अपावतां थेडां डर्भो पाडी रखा तेथी डरी मनुष्ययोनिमां जन्मेथ; थेडां डर्भो साथे मनुष्यरूपे जन्मेथ. थोड़े कर्मों सहित मनुष्ययोनि में उत्पन्न; भोगते या क्षय करते २ जो थोड़े कर्म शेष रहे हों उनसे फिर मनुष्ययोनि में उत्पन्न born again in the human womb on account of a few remnants of Karmas. ठा० ४, १;

अप्पच्चक्खाण न० (अप्रत्याख्यान) जुओ “अपच्चक्खाण” श७६ देखो ‘अपच्चक्खाण’ शब्द Vide ‘अपच्चक्खाण.’ क० गं० १, १७; ठा० २, १; विशेष १२३१; —वत्तिया खो० (प्रत्यया) पय्यप्पालु न डरवाथी दागती क्रिया-डर्भबंध. पच्चक्खाण-प्रत्याख्यान न करने से जो कर्मबंध हो वह. Karma arising from not taking a vow of giving up sense-pleasure etc ठा० ४, ४;

अप्पच्चक्खाय. सं० क० अ० (अप्रत्याख्याय) पय्यप्पालु न डरीने, त्याग न डरीने. प्रत्याख्यान न करके, त्याग न करके. Without having given up or abandoned “इहमेगे उ मज्जंति, अप्पच्चक्खाय पावगं” उत्त० ६, ६;

अप्पजुहिअ त्रि० (सिद्ध) पाडीने तैयार थयेथ; रंधाई रहेथ. पककर तैयार; सीका चुका हुआ. Cooked; ripe for eating. आया० २, १, ४, २३;

अप्पडिकंटय. त्रि० (अप्रतिकण्टक-न विद्यते प्रतिमल्ल कण्टको यत्र तदप्रतिकण्टकम्) जेने डाष्ठ प्रतिपक्षी नथी ते. जिसका कोई प्रतिपक्षी नहीं हो वह. Unrivalled; having no rival. राय०

अप्पडिकम्म. न० (अप्रतिकर्मन्) जेभां प्रतिडर्भ-शरीर-संस्कार, शरीरचेष्टा-संकेत,



विस्तार वगेरे इंध न थर्ध शडे तेवे। संथा-  
रानो। ऐक प्रकर, पादपोपगमन संथारा-  
नो ऐक भेद जिसमें शरीरसंस्कार, शरीर  
चेष्टा अर्थात् संकोच, विस्तार वगैरह कुछ न हो  
सके ऐसा देह त्यागने का एक भेद, पादपोपगमन  
नामक उपवास का एक भेद A variety  
of Pādapopagamana ( bodily )  
austerity; a variety of bodily  
austerity in which an ascetic  
gives up food and drink and  
awaits death without moving  
any part of the body “सुजागारे य  
अप्पाडिकम्मे ” परह० २, ५; ठा० २, ४,  
ओव० १६;

अप्पाडिकुट्ट त्रि० ( अप्रतिकुट्ट ) निषेध न  
करे।, मनाध न करे।; अनिन्द्य निषेध न  
किया हुआ; अनिन्द्य, जिसकी मनाही न की  
गई हो वह। Unforbidden, unpro-  
scribed ठा० २, ४,

अप्पाडिकंत त्रि० ( अप्रतिक्रान्त ) प्रति-  
क्रमण द्वारा पापपीछे पाया न छोड़ल प्रतिक्रमण  
द्वारा पाप से पीछे न हटा हुआ Not freed  
from sin through Pratikramana  
उत्त० १३, २६; ओव० ३८, नाया ध०

अप्पाडिकमित्तु सं० क० अ० ( अप्रतिक्रम्य )  
पडिकम्या विना; सवारना प्रतिक्रमणभाटे डा-  
उसगा कथा विना प्रातःकालीन प्रति-  
क्रमण के लिये कायोत्सर्ग किये विना With-  
out performing Pratikramana  
or confession of sin; without  
performing Kāyotsarga for the  
morning Pratikramana. “अप्पाडि-  
कमित्तु कालस्स, भायण पडिजेहए ” उत्त०  
२६, २२;

अप्पाडिकम्मावेत्ता सं० क० अ० ( अप्रति-  
क्रम्य ) पडिकम्या विना. प्रतिक्रमण कराये

विना. Without performing Prati-  
kramana or confession of sins.  
वव० ६, २०;

अप्पाडिगहिय त्रि० ( अप्रतिगृहीत ) ग्रहण  
न करे।. अग्रहीत, ग्रहण न किया हुआ.  
Not accepted, not taken भग०  
८, ७;

अप्पाडिचक्क त्रि० ( अप्रतिचक्र-न विद्यते  
प्रति-अनुरूप समान चक्र यस्य तदप्रतिचक्रम् )  
पर्यङ्क जेनी परापरि न करी शडे तेवु  
पर्यङ्क आदि जिसके समान दूसरा चक्र आदि  
न हो ऐसा चक्र आदि Unrivalled by  
unapproached by other schools  
of philosophy such as that of  
Charaka etc “ अप्पाडिचक्कस्स जज्जो  
होइ सया संघचक्कस्स ” नंदी०

अप्पाडिन्न त्रि० ( अप्रतिज्ञ ) जुओ। ‘ अपडि-  
रण ’ शब्द देखो ‘ अपडिरण ’ शब्द  
Vide ‘ अपडिरण ’ सूय० १, १५, २०;

अप्पाडिपूअय त्रि० ( अप्रतिपूजक ) गुरुनी  
पूजा-सेवा न करना। गुरु की पूजा-सेवा न  
करने वाला Not worshipping a  
preceptor “ अप्पाडिपूअय थद्धे, पावस-  
मणेत्ति बुच्चइ ” उत्त० १७, ५; सम० ३०,

अप्पाडिवद्ध त्रि० ( अप्रतिवद्ध ) जुओ।  
‘ अपडिवद्ध ’ शब्द देखो ‘ अपडिवद्ध ’  
शब्द Vide “ अपडिवद्ध ” प्रव० २४;  
सत्या० ६१,

अप्पाडिवद्धया स्त्री० ( अप्रतिवद्धता )  
नि सगपणु, अप्रतिबंध विहार नि सगपना;  
अप्रतिबंध विहार State of being  
unaccompanied by any body,  
unobstructed movement from  
one place to another “ अप्पाडि-  
वद्धयाए यं भंते ! जीवे किजणयइ ? ” उत्त०  
२६, २, भग० १, ६; १७, ३;



**अप्पडिम** त्रि० ( अप्रतिम ) सीमा-७६  
वगरनुं. असोम, सोमा रहित Unlimited,  
limitless सु० च० २, ७०;

**अप्पडिरुव** त्रि० ( अप्रतिरूप ) नेनी अराअर  
पीअनुं रूप नथी ते. जिसके समान दूसरे का  
रूप नहीं है वह. Of matchless appear-  
ance or beauty. “ अप्पडिरुवे  
अहाउयं ” उक्त० ३, १६;

**अप्पडिलद्ध** त्रि० ( अप्रतिलब्ध ) लुओ  
‘ अपडिलद्ध ’ श०६. देखो ‘ अपडिलद्ध ’  
शब्द. Vide “ अपडिलद्ध ” नाया० १;

**अप्पडिलेस्स** त्रि० ( अप्रतिलेश्य ) नेनी भो-  
वृत्ति अतुल अगवाणी होय ते जिसकी  
मनोवृत्ति अतुलबल वाली हो वह Of very  
strong desires or emotions “अ-  
प्पडिलेस्सासु सामणारया दंता इयमेव  
णिगंथं पावयणं पुरओ काइ विहरंति” ओव०

**अप्पडिलेहण** न० ( अप्रतिलेखन ) लुओ  
‘ अपडिलेहण ’ श०६ देखो ‘ अपडिलेहण ’  
शब्द. Vide “ अपडिलेहण ” आव० ४, ६,

**अप्पडिलेहिय** त्रि० ( अप्रतिलेखित ) लुओ  
‘ अपडिलेहिय ’ श०६ देखो ‘ अपडिलेहिय ’  
शब्द. Vide ‘ अपडिलेहिय. ’ प्रव० २६६,  
उवा० १, ५५,

**अप्पडिलोमता** स्त्री० ( अप्रतिलोमता )  
लुओ ‘ अपडिलोमया ’ श०६ देखो ‘ अपडि-  
लोमया ’ शब्द Vide ‘ अपडिलोमया ’  
भग० २५, ७,

**अप्पडिवाइ** त्रि० ( अप्रतिपातिन् ) लुओ  
‘ अपडिवाइ ’ श०६ देखो ‘ अपडिवाइ ’ शब्द.  
Vide ‘ अपडिवाइ. ’ ओव० २०, नंदी० ६,  
कप्प० ५, १०६, विशेष० ८२३;

**अप्पडिविरय** त्रि० ( अप्रतिविरत ) पा०पी  
अनिवृत्त थयेल पाप से अनिवृत्त, जो पाप से  
निवृत्त न हुआ हो वह Not free from

sinfulness; not refraining  
from sin सू० २, १, १६,

**अप्पडिसुणेत्ता** त्रि० ( अप्रतिश्रोतृ ) प्रत्युत्तर  
नहि आपनार प्रत्युत्तर नहीं देने वाला.  
(One) who does not respond  
to सम० ३३;

**अप्पडिसेह** पुं० ( अप्रतिषेध ) प्रतिषेध नहि ते  
अप्रतिषेध; रोक टोक का अभाव. Absence  
of prohibition; absence of  
check पंचा० ६, ३६,

**अप्पडिहय** त्रि० ( अप्रतिहत ) प्रतिधातरहित;  
अप्यडित प्रतिघात से रहित; अखरिडत.  
Unbroken, unimpaired नाया०  
१६, ( २ ) क्थांय पलु रप्पलना पामेल नहि.  
जो कहीं भी स्वलित न हुआ हो वह un-  
obstructed, unimpeded सम० १;  
( २ ) केअ अटकावी न शेके केअ तेनु उल्लधन  
न करी शेके तेनु कोई रोक न सके या कोई उसका  
उल्लधन न कर सके ऐसा. irresistible.  
“ अप्पडिहयबले जोहे, एवं हवइ  
वहुस्सुए ” उक्त० ११, २१; उक्त०

११, १८, काप० २, १५, सम० १,  
ओव० १७, अणुजो० ४२; सु० च०  
२, १७६, नाया० १, १६, भग० ८, ६, जं०  
प० ५, ११५,—गइ त्रि० (—गति ) अप्रति-  
अध विहारी अप्रतिबंध विहारी, विना रोक  
टोक के विहार करने वाला moving  
unimpeded “ अप्पडिहयगई गामे गामे  
य एगरायं गगरे गगरे पंचरायं दूइअंते य  
जिइंदिए ” जं० प० २, ३१, परह० २, ५;

ठा० ६,—प्पच्चक्खायपावकम्म. त्रि०  
(—प्रत्याख्यातपापकर्मन्—प्रतिहतं निराकृत-  
मतीतकालकृतं निन्दादिकरणेन प्रत्याख्यातं  
च वर्जितमनागतकालविषयं पापकर्म  
—प्राण्यातिपातादि येन स तन्निषेधात्तथा )  
अतीत-अने अनागत क्षण संबंधी पाप

कर्मना जेणे पश्यणाले नथी कर्याते. भूत और भविष्य कालसम्बन्धी पापकर्मों का जिसने प्रत्याख्यान नहीं किया वह ( one ) who has not repudiated past sinful acts by censuring them and future ones by vowing to abstain from them भग० १, १, —बल त्रि० (—बल) जेनु यण डोड्डी डोड्डी नहि-डोड्डी नहि ते जिस केवल का किसीके द्वारा नाश न हो अथवा उल्लघन न हो वह. of irresistible might उत्त० ११, २१, —सासण त्रि० (—शासन) जेते डुकम अप्यणाले पणाय तेवे जिसकी आज्ञा अखंडित रीति से पाली जाय ऐसा of unchecked, irresistible authority “अप्यणहियसासणे असे-णावई” नाया० १६, —वरणाणदंसणधर पु० (—वरज्ञानदर्शनधर) क्या न अटके तेवा ज्ञान-डेवणज्ञान अने दर्शन-डेवण दर्शनना धरनार कहाँ भी न रुके ऐसा ज्ञान-केवलज्ञान और केवलदर्शन धारण करने वाला one possessed of irresistible or invincible perfect knowledge and right faith आव० ६, ११, भग० १, १,

अप्यण न० (अर्पण) अर्पणु करु ते, भेट आपनी ते भेट करना, अर्पण करना Act of giving, act of presenting विशेष० १८४३,

अप्यण पु० (आत्मन्) आत्मा, पोते आत्मा, स्वयं खुदखुद Soul, self, oneself “अप्यणहा परहा वा, उभयस्सतरेण वा” उत्त० १, २५, —अट्ट. पु० (—अर्थ) स्वार्थ, पोतानुं प्रयोजन-मतलब स्वार्थ, खुद का मतलब, अपना प्रयोजन self interest, one's own interest दस० ६, १२, ६, २, १३, उत्त० १, २५,

अप्यणिच्चिय त्रि० (आत्मीय) आत्मसंबन्धी, पोतानु अपना, आत्मसम्बन्धी One's own, relating to oneself. “यो अप्यणिच्चियाओ देवीओ अभिजुजिय” भग० २, ५;

अप्यणिज्जिय. त्रि० (आत्मीय) पोतानुं आपणु, आत्मानु अपना, निजका. Relating to one's self or soul; one's own दस० १०, ६, ७;

अप्यतर त्रि० (अल्पतर) अतिशय अल्प; थोडु थोडु बहुत थोडा Very little. “अप्यतराणु से पावे कम्मे कज्जइ” भग० ८, ६, भग० १, १, २, ओव० ३८; क० गं० ५, २२, पचा० ५, १६, —बन्ध. पुं० (—बन्ध) अत्यंत थोडा कर्मबंध; ज्यारे आठ प्रकृतिनो यधक थरने सातनो यंधक थाय तयारे प्रथम अल्पतर-धरो थोडा यंध होय बहुत थोडा कर्मबंध जब कि आठ प्रकृतियों का बंधक होकर सात प्रकृतियों का बंधक होता है तब पहिले जो बहुत थोडा बंध हो वह. very little Karmic bondage क० ग० ५, २२;

अप्यत्तिट्ठाण न० (अप्रतिष्ठान) जुओ “अप्यट्ठाण” शब्द देखो ‘अप्यट्ठाण’ शब्द Vide “अप्यट्ठाण” जीवा० ३;

अप्यत्त त्रि० (अप्राप्त) न प्राप्त थयेल जो प्राप्त न हुआ हो वह Unobtained पिं० नि० भा० २६, प्रव० ८७१, —कारि त्रि० (—कारिन्) जुओ ‘अपत्तकारि’ शब्द देखो ‘अपत्तकारि’ शब्द vide ‘अपत्तकारि’ विशेष० ३४०, —जाल पु० (—ज्वाला) थूला उपर रहेल जे वासणुने अग्निनी जाल न स्पर्शनी होय ते चूल्हे पर रखे हुए जिस वर्तन को अग्नि की ज्वाला न लगती हो वह. untouched by flames (e g a vessel on an oven) पिं० नि० २६६;

**अप्यत्तिय.** पुं० ( अप्रत्यय ) अविश्वास. अवि-  
श्वास. Distrust सूय० २, २, ६५; ( २ )  
दुष्ट ध्यान. दुष्ट ध्यान evil contempla-  
tion. सूय० २, २, ६५,

**अप्यत्तिय.** न० ( अप्रीतिक ) अप्रीति; द्वेष;  
अप्रेम. अप्रीति, द्वेष, प्रेम का अभाव.  
Hatred; absence or want of  
love. “अप्यत्तियं जेण सिया, आसु कुप्पि-  
ज्ज वा परो” दस० ८, ४८, “अप्यत्तियं सिया  
हुज्जा, लहुत्तं पवयणस्स वा” दस० ५, ९,  
१२; “महया अप्यत्तिणं मणो माणसिणं  
नुक्खेणं अभिभूए समाणे” भग० १३, ६,  
सूय० १, १, २, १२; भग० ७, १,

**अप्यत्थिय** त्रि० ( अप्रार्थित ) लुओ “अप-  
त्थिय” श०६ देखो ‘अपत्थिय’ शब्द.

Vide ‘अपत्थिय’ नाया० ५, भग० ३, २,

**अप्यत्थियपत्थअ** त्रि० ( अप्रार्थितप्रार्थक )  
जेने कोर्छि न छच्छे ते अप्रार्थित-मरण, तेने  
छच्छनार, मोतनेो अलिदापी. जिसे कोई न  
चाहे वह अप्रार्थित-मरण, उस मरण को चाह-  
ने वाला. ( One ) desiring what  
nobody desires viz death “कस्सणं  
एस अप्यत्थियपत्थए दुरतपंतलवखणे”  
भग० ३, २; जं० प० ३;

**अप्यत्थुय** त्रि० ( अप्रस्तुत ) प्रस्तुत नहि,  
असंयुक्त असंबद्ध Irrelevant, void  
of the mark सु० च० ४, ६६,

**अप्यदुस्समाण** व० कृ० त्रि० ( अप्रद्विष्यत् )  
द्वेष न करता द्वेष न करता हुआ Not  
hating. अंत० ४.

**अप्यप्प** त्रि० ( अप्राप्य ) न भणी शडे ऐवु;  
प्राप्त न थर्छ शडे ऐवु जो न मिल सके वह.  
Unobtainable विशेष० २६८०,

**अप्यवहुअ.** न० ( अल्पवहुक-त्व ) लुओ  
‘अप्यवहुत्त’ श०६ देखो ‘अप्यवहुत्त’ शब्द  
Vide ‘अप्यवहुत्त’ प्रव० ६१,

**अप्यवहुता.** स्त्री० ( अल्पवहुता ) लुओ  
“अप्यवहुत्त” श०६ देखो ‘अप्यवहुत्त’ शब्द.  
Vide “अप्यवहुत्त.” क० प० ३, २६;

**अप्यवहुत्त** न० ( अल्पवहुत्व ) ओच्छावता-  
पणुं, सरप्पाभणुि करतां कोणु केटलुं वधु-  
ओणुं छे ते अतावणुं ते. कमती बढ़ती,  
मुकाबले में कौन ज्यादा कम है सो बताना.  
Excess or defect in point of  
comparison क० गं० ४, १, ३,

**अप्यभु** त्रि० (अप्रभु) प्रभु-भालिक नहि ते माल-  
कियत से रहित; जो स्वामी न हो वह One  
who is not a master भग० २, ५;

**अप्यमज्जण** न० (अप्रमार्जन) लुओ “अपम-  
ज्जण” श०६ देखो ‘अपमज्जण’ शब्द.  
Vide ‘अपमज्जण.’ सम० १७;

**अप्यमज्जणा** स्त्री० ( अप्रमार्जना ) प्रमार्जना  
नहि ते प्रमार्जना का अभाव Absence of  
cleansing or brushing. आव० ४, ६,

**अप्यमज्जिय.** त्रि० ( अप्रमार्जित ) लुओ  
‘अपमज्जिय’ श०६ देखो ‘अपमज्जिय’  
शब्द. Vide ‘अपमज्जिय.’ उवा० १,  
५५, उत्त० १७, ७,

**अप्यमत्त** त्रि० ( अप्रमत्त ) लुओ ‘अपमत्त’  
श०६ देखो ‘अपमत्त’ शब्द Vide  
‘अपमत्त’ “अहो य राओ य अप्यमत्तेण  
हुंति” परह० २, ५, ‘अप्यमत्तो जए णिच्चं’  
दस० ८, १६; उत्त० ४, ६; नाया० १;  
भग० ६, ३३, ओव० १७, सु० च० २,  
६५; दसा० ४, १०५, पंचा० ४, ४६; प्रव०  
८४२, क० गं० २, ८, क० प० ४, १६; ६,  
२, आया० १, १, ४, ३३,—लंजय पुं०  
( -संयत ) सर्वथा प्रमादरहित साधु;  
सातमे गुणहाले वर्तते लुव. सर्वथा  
प्रमाद रहित साधु; सातवें गुणस्थानवर्ती  
जीव. an ever vigilant ascetic

free from errors due to negligence; a soul in the seventh Gunasthāna सम० १४;

**अप्पमत्तया.** छी० ( अप्रमत्तता ) प्रमादने अभाव, अप्रमत्तपणुं प्रमाद का अभाव, अप्रमत्तपना Absence of negligence or errors due to it सम० ५, अप्रमाद-य पुं० ( अप्रमाद ) प्रमादने अभाव, प्रमाद का अभाव. Absence of carelessness or errors due to it परह० २, १;

**अप्पमाद पुं०** ( अप्रमाद ) प्रमादने अभाव, प्रमादने त्याग प्रमाद का अभाव, प्रमाद का त्याग Absence of negligence or errors due to it सम० ३२, उत्त० १३, २६,

**अप्पमेय त्रि०** ( अप्रमेय ) प्रमाणग्राह्य नहि, जेने माप न थई शई ते जो प्रमाण में न आ सके वह Immeasurable “अणंतमप्पमेय-भविष्यधम्मचाउरंतचक्कवट्टी चमोत्थु ते अरि-हतासिकट्टु” परह० १, ३,

**अप्पयओ अ०** ( आत्मतस् ) आत्मानि अपेक्षाये, पोतानी अपेक्षाये आत्मा की अपेक्षा से, अपनी-निज की अपेक्षा से Regarding one's self, regarding the soul विशेष० ६१६,

**अप्पयर त्रि०** ( अल्पतर ) लुओ ‘अप्पतर’ शब्द देखो ‘अप्पतर’ शब्द. Vide ‘अप्पतर.’ दसा० ६, १, क० प० ७, ५१; क० गं० ५, ८६;

**अप्परिसाडिय न०** ( अपरिशादित ) परिशाट-भोज्यपदार्थनु नीये भरवु न थाय ते, अथवा परिशाट-यावता यावता ‘अययय’ ओवे अवाज न करेवे ते भोज्यपदार्थ का नीचे न गिरना, अथवा चवाने में ‘बचवच’ आवाज

का न होना Not dropping down food while eating; not making a chuckling noise while chewing.

“आलोए भायणे साहु, जयं अप्परिसाडियं” दस० ५, १, ६६, उत्त० १, ३५,

**अप्पलीण त्रि०** ( अप्रलीन ) असंयुक्त, संग-रहित; अनासक्त संबध रहित, आसक्ति रहित Unattached. free from attachment “अणुक्खसे अप्पलीणे” सूय० १, १, ४, २,

**अप्पलीयमाण त्रि०** ( अप्रलीयमान ) काम भोग, संपत्ति, स्वजन आदिमा लीन-आसक्त थयेल नहि, स्नेहमां अनासक्त कामभोग, संपत्ति, स्वजन आदि में जो आसक्त न हुआ हो वह, स्नेह में अनासक्त Unattached to wealth, pleasures, relatives etc आया० १, ६, २, १८३,

**अप्पलेवडा छी०** ( अल्पलेपकृत् ) जेथी वा-सणु न भरजाय तेवा यणु, पटाणु वगेरेनी शिक्षा लेवी ते, ओपणुने ओइ प्रकार एषणा का एक प्रकार, जिससे बरतन न लिपे ऐसा चना आदि का आहार लेना. Begging only that food which does not soil or bespatter the vessel in which it is placed, e.g. grams, peas etc, a mode of Esanā. प्रव० ७४८,

**अप्पवत्त त्रि०** ( अप्रवृत्त ) प्रवृत्त न थयेल. जो प्रवृत्त नहीं हुआ हो वह (One) who has not engaged himself in or set himself to क० प० ५, ७३,

**अप्पवत्तण न०** ( अप्रवृत्त ) प्रवृत्तिने अभाव प्रवृत्ति का अभाव Absence of activity पंचा० ४, ४५,

**अप्पचित्त त्रि०** ( अप्रवृत्त ) निवृत्ति पायेल; प्रवृत्त न थयेल निवृत्ति पाया हुआ, जो प्रवृत्त

न हुआ हो वह. Not engaged in activity; retired पचा० १४, १४,  
**अप्पविचार** त्रि० (अप्रविचार) मैथुन-विषय-  
 सेवननी प्रवृत्ति विनाना. विषयसेवन की  
 प्रवृत्ति विना का Not engaging in  
 sexual intercourse प्रव० १४५४;  
**अप्पसंत** त्रि० (अप्रशान्त) शांत थयेन नहि  
 अशान्त, जो शान्त न हुआ हो वह. Not  
 calmed पंचा० २, २;—**चित्त** त्रि०  
 (-चित्त) जेनुं यित शांत नथी थयुं ते  
 जिसका चित्त शान्त नहीं हुआ वह with a  
 mind not calm पंचा० २, २;  
**अप्पसत्थ** त्रि० (अप्रशस्त) अराय, अशो-  
 भन; प्रशंसवा योग्य नहि खराब; अशोभ-  
 नीय, बुरा, मनोहरता रहित, प्रशंसा न करने  
 योग्य. Evil; not praise-worthy  
 उत्त० २६, २८, ३४, १६, भग० ६, ३१,  
 २४, १, प्रव० ५३, ६४८,—**मणविणय**  
 पुं० (-मनोविनय) दुष्ट मननो निरोध करवे  
 ते, मनने दुष्ट चिंतवनाथी अटकावयुं ते मन  
 को दुष्ट चिंतवन-विचार आदि से पराङ्मुख  
 करना restraining the mind  
 from wicked thoughts भग० २५,  
 ७;—**वड्ढविणय** पुं० (-वाग्विनय) दूषित  
 वाणीनो उच्यार न करवे ते; दुष्ट वचनो न  
 ओत्रवा ते. दूषित वाणी का उच्चार न करना,  
 खराब वचन न बोलना abstaining from  
 wicked speech भग० २५, ७;  
**अप्पसन्न** त्रि० (अप्रसन्न) अप्रसन्न, प्रसाद  
 रहित, खुशी नहि अप्रसन्न, प्रसन्नता रहित, ना-  
 खुश. Not pleased, displeased  
 “आयरियपाया पुण अप्पसन्ना” दस० ६, १, ५;  
**अप्पहाण** त्रि० (अप्रधान) प्रधान-श्रेष्ठ नहि  
 ते. जो प्रधान न हो वह Not prominent  
 or predominant. पचा० ३, ७, ६, १२;

**अप्पहिट्ट** त्रि० (अप्रहृष्ट) ‘संपदि यस्य न  
 हर्षो’ संपत्ति भोग्ये पुलाय न जनार; शुभ  
 वस्तु भोगवाधी राउन थनार; सुख के दुःख-  
 भां समभाव राखनार संपत्ति मिलने पर न  
 फूलने वाला; शुभ वस्तु मिलने से प्रसन्न न  
 होने वाला, सुख दुःख में समभाव रखने  
 वाला Not transported with joy  
 in prosperity, balanced in mind  
 in weal and woe “अप्पहिट्टे  
 अणाउले” दस० ५, १, १३,

**अप्पा** पु० (आत्मन्-अतति सातत्येन गच्छति  
 तौस्तान्पर्यायानित्यात्मा) आत्मा; श्रव;  
 पोते आत्मा, जीव; स्वयं Soul; self;  
 oneself. दस० १, २, ५, १, ५, ८०, ६,  
 ६८, ८, ७, नाया० १, ५; ६, १२, १३;  
 १४, १६; भग० १, १; ६, ६, १२, २; २५,  
 ७; राय० २७; सू० प० १, ओव० १२, पि०  
 नि० ६६, सु० च० ३, ४७,

**अप्पाउड** पुं० (अप्रावृत) वस्त्र न पहरेवानो  
 अलिग्रह धरनार, वस्त्र परतवे अलिग्रह-  
 विशेषधारी मुनि वस्त्र न पहिरने का नियम  
 लेने वाला, वस्त्रसम्बन्धी अभिग्रहविशेष  
 धारण करने वाला मुनि An ascetic who  
 has vowed nudity सूय० २, २, ३८,  
**अप्पाउरण** पु० (अप्रावरण) वस्त्र न पहरे-  
 वानो अलिग्रह धरनार; वस्त्र विना रहेवुं  
 ऐवी प्रतिज्ञा लेनार मुनि वस्त्र न पहिरने का  
 अभिग्रह धारण करने वाला, वस्त्र रहित रहने  
 की प्रतिज्ञा लेने वाला मुनि An ascetic  
 with a vow of nudity. परह० २,  
 १, प्रव० २०६, पंचा० ५, १०;

**अप्पाण** पुं० (आत्मन्) आत्मा; श्रव, पंडे;  
 पोते. आत्मा; जीव, स्वयं Soul; self,  
 oneself. “अप्पाण भावेमाणे विहरइ”  
 भग० १, १, “अप्पाणं विसंजोएइ” भग०



६, ३१, “ अप्याणं मरणम् ” भग० १५, १; “ अप्याणं मज्जावेह ” नाया० १४, “ अप्याणं ” तृ० ए० नाया० १६,—र-  
क्खि त्रि० (—रक्षिन्—आत्मान रक्षति पापेभ्यः  
कुगतिगमनाद्वा स आत्सरक्षी ) पापशी के  
दुर्गतिशी आत्माने अयावनार पाप से या दुर्गति  
से आत्मा को बचाने वाला saving the  
soul from sin or perdition

“अप्याणरक्खी व चरेप्पमत्तो” उक्त० ४, १०,  
अप्याणग त्रि० ( अपानक ) जुओ ‘अप्याणय’  
श०६ देखो ‘ अप्याणय ’ शब्द Vide  
‘ अप्याणय ’ नाया० ८, १६;

अप्यावहुअ-य न० ( अल्पवहुत्व—अल्पवच  
बहु चाल्पबहु तद्भावोऽल्पवहुत्वस् दीर्घत्वा-  
संयुक्तत्वे चार्धत्वात् ) ये वस्तुनी सरभाभ-  
णीमां परस्पर तारतम्य—ओजावत्तापणु  
कहेवुं ते, मुझापलाभा न्यूनताधिकता—थोडा  
अजापणु दर्शावु ते दो वस्तुओं की सह-  
शता में परस्पर तारतम्यतापूर्वक न्यूनाधिकता  
बताना Pointing out proportions  
of two things by comparison.  
“ अउव्विहे अप्यावहुए प० तं० पगइ  
अप्यावहुए ठिइ० अणुभाव० पएसअप्यावहुए ”  
ठा० ४, २, पन्न० ३, विशेष० ४०६,

अप्यावहुग न० ( अल्पवहुत्व ) जुओ  
‘अप्यावहुअ-य’ श०६ देखो ‘अप्यावहुअ-य’  
शब्द Vide ‘अप्यावहुअ-य’ भग० २०, १०,

अप्यावहुत्त न० ( अल्पवहुत्व ) जुओ  
‘अप्यावहुअ-य’ श०६ देखो ‘अप्यावहुअ-य’  
शब्द Vide ‘अप्यावहुअ-य’ अणुजो० ८०,  
अप्यावय त्रि० ( अप्रावृत्त ) ढाकेल नहि, अंध  
न करेल बिना ढँका हुआ, बंद न किया  
हुआ Not covered, सूय०  
२, ६, ३,—दुवार पुं० (—द्वार—अप्रावृत्त-  
मस्थगितं द्वारं गृहमुखं यस्य स तथा ) ६६  
अभक्षितवाणो श्रावक, के जेणे धरनां ६१२

पुट्ला मुझा छे ओट्ला भाटे के कोछ पणु  
दुभी, लायार स्हाय लेवाने आवे अथवा  
कोछ पणु वाही वाद करवाने आवे तेनो  
उत्तर आपवाने सामर्थ्य छे दृढ सम्यक्त्व  
वाला श्रावक, जिसने अपने घर के द्वार इसलिये  
खुले रखे हैं कि, कोई दुखी सहायता लेने को  
आवे तो उसे सहायता देने की सामर्थ्य है यह  
प्रकट हो इसी तरह कोई वादी विवाद करने  
आवे तो उसे भी विदित हो कि, उत्तर देने की  
सामर्थ्य है an enlightened Śrā-  
vaka with his doors wide open  
for the helpless or for religious  
controversialists सूय० २, ६, ३,

अप्याविउं. सं० कृ० अ० ( अर्पयित्वा ) अर्पण  
करीने अर्पण करके Having given or  
presented सु० च० ४, १२६,

\*✓अप्याह धा० I ( सम्+दिष् ) सभायार  
कहेवा, संदेशो पढोयाउवे, बात कहेवी  
समाचार कहना, संदेश भेजना, बात कहना.  
To convey a message.

अप्याहति वव० १, ४,

अप्याहे ओघ० नि० २४२,

अप्याहिकरण सं० कृ० पि० नि० ५७६,

अप्याहद्दु सं० कृ० अ० ( आत्मनि+आहत्य )  
आत्माभा—मनमां व्यवस्थापन करीने, मान-  
सिद्ध निश्चय करीने आत्मा में—मन में  
निश्चय करके Having decided in  
mind सूय० २, १, १२;

\*अप्याहरणि पुं० ( सन्देश ) संदेशो, सभायार.  
संदेश, समाचार. Message, news.  
पि० नि० ४३०,

अप्याहरण न० ( अप्राधान्य ) अप्रधानपणु;  
भुज्यपणु नहि अप्रधानता; मुख्यता नहीं.  
Subordinate position; sub-  
sidiary position. पंचा० ६, १३;



\*अप्पाहित. त्रि० (सन्विष्ट) संदेशो भोक्तेल.  
संदेश दिया हुआ. Communicated  
through message पि० नि० ४३०;  
अर्पित. व० कृ० त्रि० (अर्पयत्) देतो; अर्पण  
करेता. देता हुआ; अर्पण करता हुआ. Giv-  
ing; presenting. सु० च० १, १७३;  
अप्रिय. त्रि० (अर्पित) अर्पण करेता; ता-  
त्पर्यार्थी; देवाले करेता अर्पण किया  
हुआ; कब्जे में दिया हुआ; सुपुर्द किया हुआ.  
Given; consigned; presented.  
“अप्रिया देवकामायं” उक्त० ३, १५;  
अग्रजो० २७; ( २ ) विशेषने मुष्पिता  
आपेता; विशिष्ट करेता. विशेष को मुख्यता दी  
हुई. with the particular made  
prominent. “अप्रियमयं विसेसो  
सामान्यमप्रियमयस्स” विशेष० ३५८८;  
ठा० १०; जं० प० २, ३६;—व्यवहार. पुं०  
(—व्यवहार—अर्पित इति व्यवहारो यस्मिन् स  
तथा ) ‘आज्ञाता आनुज्ञान’ इत्यादिवचन-  
रूपे वक्तव्ये स्थापित करेता व्यवहार. यह  
‘ज्ञाता और इसका ज्ञान’ इत्यादिरूप से वक्ता द्वारा  
स्थापित व्यवहार particular arised  
speech; e. g. this is the knower,  
he has a knowledge of this  
particular thing etc उक्त० टी० १;  
अप्रिय. त्रि० (अप्रिय) अनिष्ट; अरुचिकर;  
नैवाथी प्रेमने अदले द्वेष उपजे तेवुं; ना-  
पसंद. अप्रिय; अरुचिकर, जिसे देखने से प्रेम  
के बदल द्वेष उत्पन्न हो वह Evil; unplea-  
sant, exciting disgust “अग्रिष्टा अ-  
कंता अप्रिया असखुजा असणा एगट्टा” विवा०  
१, १, “कोहं असखं कुव्विजा, धारिजा  
पियमपियं” उक्त० १, १५, जीवा० १; ठा०  
८; नाया० १, ८; भग० १, ५; ७; ३, २;  
२, ३; ६, ३३; पञ्च० २८;—कारिणी. स्त्री०  
(—कारिणी) अनिष्ट समाचार—देखना मृत्युना

समाचारवाणी भाषा; सामाने अप्रिय लागे  
तेवी भोली. अनिष्ट समाचार—मृत्यु आदि के  
समाचार वाली भाषा; सामने वाले को जो  
अप्रिय लगे ऐसी बोली. unwelcome  
language; speech conveying  
unwelcome news. “.....अप्रिय-  
कारिणि च, भासं न भासेज्ज सया स पुज्जो”  
दस० ६, ३, ६;—वह त्रि० (—वध) वध-  
भार या भरणे नेने अप्रिय छे ते जिसे वध  
या मरण अप्रिय है वह one who fears  
death. “सन्वे पाया पियाउया सुहसाया  
दुक्खपडिक्खता अप्रियवहा” आया० १, २,  
३, ८०;—स्वर. त्रि० (—स्वर—अप्रिय स्वरों  
येवां ते तथा ) नेने आवाज दरेकने अप्रिय  
लागे ते जिसका स्वर प्रत्येक को अप्रिय लगे  
वह, of harsh or jarring voice भग०  
१, ७, ठा० ८;—संवास पुं० (—संवास-  
अप्रियेषु संवासो निवास. ) दुश्मनोर्मा  
वसतु ते शत्रुओं में रहना. residence  
among enemies. सूय० २, २, ८२,  
अप्रियता. स्त्री० (अप्रियता) अप्रियपण.  
अप्रियता. Unpleasantness, dislike.  
भग० ६, ३;

अप्रियत्त. न० (अप्रियत्व) अप्रीति, स्नेहने  
अभाव अप्रीति, स्नेह का अभाव. Dislike;  
absence of affection. पि० नि०  
३६७;

अप्रियाणप्रिय. न० (अर्पितानर्पित—अर्पितं  
विशेषितं अनर्पितं सामान्य, अर्पितं च तदन-  
र्पितं चेत्यर्पितानर्पितं) द्रव्य सामान्य अने  
विशेष उभयरूप छे ओम प्रतिपादन करवुं ते;  
द्रव्यानुयोगेनो अर्थ प्रकार. ‘द्रव्य सामान्य और  
विशेष उभयरूप है’ इस प्रकार प्रतिपादन  
करना, द्रव्यानुयोग का एक भेद. Declaring  
substance (Dravya) to be two-

fold viz. general and particular, a variety or an aspect of Dravyā-nuyoga. ठा० १०;

अप्पीइकारय. त्रि० (अप्रीतिकारक) अप्रीति करनेवाला, प्रेमरहित अप्रीति करने वाला, प्रेमरहित Exciting dislike or displeasure, devoid of affection. भग० ५, ६,

अप्पीकय त्रि० (आत्मीकृत-आत्मना गाढत-रमागूहितं तनुलगतोयवदात्मप्रदेशैर्मिश्रीभू-तम् ) आत्मप्रदेशसाथे मिश्र थयेल-ओकता पामेल आत्मप्रदेशों के साथ मिला हुआ. Struck to the soul, made a part of the soul 'पुट्टं रेणुं व तणुस्मि षडमप्पीकयं' विशेष० ३३७,

अप्पेगइय-अ. त्रि० (\*अप्येकक) केअ ओक, गमे ते ओक; केटला ओक कोई एक, कोई भी एक Some, any, some one नाया० १, ५, ८; ११, १३, १४, भग० १५, १, जं० प० १, ११, ५, ११५,

\*अप्पोल्ल त्रि० (अपोल्ल) पोख विनाजुं, नछर ठोस. Without hollows, solid प्रव० ६८१;

अप्पोलंभ. पुं० (आप्तोपालम्भ-आसेन गुरुणा दत्त उपालम्भ आप्तोपालम्भ ) अविधिसे आलता शिष्यने ठेकाए लाववाने गुरुसे आ-पेल उलंभो-दृष्टांत, युक्ति अने उपद्रासाथे शिष्यामणु अविधिपूर्वक चलने वाले शिष्य को ठिकाने लाने के लिये गुरु ने दिया हुआ उपालभ-दृष्टान्त, युक्ति और उपालंभ के साथ शिक्षा. Admonition administered by a Guru to a disciple. 'अप्पो-लंभनिमित्तं पढमस्स णायज्जकयणस्स अयमट्ठे पणत्तेत्तिवेमि' नाया० १,

✓अप्फाल धा० II (आ+स्फाल्) पीछे थापडी जनावरने सज्ज-सावधान करवुं,

थापोटा मारवा पीठ पर थपकी मारकर पशु को सावधान करना To pat e. g. an animal on the back.

अप्फालेइ दसा० १०, १, ओव० ३०;

अप्फालसु आ० म० ए० सु० च० ३, ५७,

अप्फालिस्सइ सु० च० ७, १६६,

अप्फालिज्जत शि० व० कृ० 'अप्फालिज्जं-तीरां भभाणं होरंभाण' राय० ८८;

अप्फालण न० (आस्फालन) हाथेकरे था-पोटा मारवा, थापडवुं-उत्तेजित करवुं ते हाथ से थपकी मारना, उत्तेजन देना Patt-ing with the hand; encourag-ing by patting ओव० (२) लंभा, होरंल वगेरे वान्निवतु वगाडु मंभा, होरंम वगैरह बाजों का बजाना playing upon a musical instrument. राय०

अप्फुडिअ-य त्रि० (अस्फुटित) फुटेल नहि; अपंड, अकण्ठ न फूटा हुआ, सावित Unbroken, entire नाया० ७, ओव० १०, (३) सर्व विराधनानो त्याग करवाथी अतिथारहित करेल, अपंड रापेल सब प्रकार की विराधना का त्याग करने से निरति-चार-निर्दोष किया हुआ preserved in tact 'अखंडप्फुडिआ कायच्चा, तं सुणेह जहातहा' दस० ६, ६,—दंत त्रि० (—दन्त) जर्जरित के वेभावाणां दातवाणो नहि; मज्जुत दातवाणो मज्जुत दांतों वाला, जिसके दांत जर्जरित-सडे गले या छिद्र वाले न हों वह having strong teeth, having teeth unimpaired ज० प० ओव०

\*अप्फुरण त्रि० (आक्रान्त-हेनाप्फुरणादय इति सूत्रेणाक्रान्तस्याप्फुरणादेशः) व्याप्त; आक्रान्त व्याप्त; आक्रान्त Pervaded by, overpowered by अणुजो० १४३ जं० प० राय०

अफोआ-या. स्त्री० ( अस्फोता ) ये नामनी  
येक वेक-लता, वनस्पतिविशेष इस नामकी  
एक वनस्पति, एक जाति की लता Name of  
a creeper; a variety of vegeta-  
tion. पञ्च० १, जीवा० ३, ४; जं० प०

✓ अफोड धा० II. ( आ + स्फुट्-स्फाल् )  
थापडुं, थापोटा मारवा; थपेटा मारवा  
थपकी देना, थपड़ी मारना. To pat; to  
stroke gently with the hand.  
अफोडेइ-ति भग० ३, २; अंत० ५, १;  
अफोडेति राय० १८२, जीवा० ३, ४, जं०  
प० ५, १२१,

अफोडेइत्ता सं० कृ० भग० ३, २;

अफोडंत. व० कृ० नाया० ८; उवा० २, ६५,

अफोडिअ. न० ( आस्फोटित ) हाथना थापो-  
टा-थपेटा हाथ की थपकी Patting जं०  
प० ७, १६६, ( २ ) पछाडुं पछाडना  
causing to dash against; fling-  
ing against कप्प० ३, ३५;

अफोव पु० ( \*अफोव ) वृक्ष, गुच्छ, गुल्म, लता  
वगेरही व्याप्त प्रदेश, गीय आडीवाणो प्रदेश  
वृक्ष, गुच्छ, लता आदिसे व्याप्त प्रदेश, झाड़ी  
से भरा हुआ प्रदेश. A region covered  
with thickets of trees, a woody  
region उत्त० १८, ५;—मंडव. पु०  
(—मण्डप ) नागवेक, दाय आदि धट्ट लता-  
ओथी बिटायेल मंडप-मांडवे। नागवेल, दाख  
आदि की सघन लताओं से घिरा हुआ मंडप  
a bower densely covered with  
creepers “ अफोवमडवम्मि, भायइ  
भविआसवे ” उत्त० १८, ५, राय० ३७७,

अफल त्रि० ( अफल ) अक्ष, क्षत्र पगरनु;  
निष्फल. फल रहित, निष्फल Fruitless;  
unsuccessful दसा० ६, ४;

अफास. त्रि० ( अस्पर्श-न विद्यते स्पर्शोऽष्ट-  
विधो यत्र तत्तथा ) स्पर्शरहित; स्पर्श

विनानु स्पर्श रहित Untouched;  
without a touch भग० २, ५, १०;  
११, १,

अफासाइज्जमाण व० कृ० त्रि० ( अस्पृश्य-  
मान ) स्पर्श न करतो स्पर्श न कराता हुआ  
Being untouched भग० १, १;

अफासुय-अ त्रि० ( अग्रासुक-न प्रगता अस-  
वोऽमुमन्तो यस्मात्तदग्रासुकम् ) सञ्च, स-  
चित्त, आसुड-अचित्त नहि सजीव,  
सचित्त, साधु के न लेने योग्य Con-  
taining living beings, unworthy  
of being received by a Sādhu.  
आया० २, १, १, १, दस० ८, २३, भग०  
५, ६, ८, ६, नाया० ५,—पडिसेवि त्रि०  
(—प्रतिसेविन्-अग्रासुकं सचित्त प्रतिसेवितुं  
शीलमस्येति तथा ) सचित्त वस्तुना भोग-  
वनार सचित्त वस्तु का उपभोग करने वाला  
using or enjoying things con-  
taining sentient beings अफासुय-  
पडिसेवी य, शांमं भुज्जो य सीलवादी य  
सूय० नि० १, ७, ८६,

अफुडिय त्रि० ( अस्फुटित ) सर्व विराधना-  
रहित सर्व प्रकार की विराधना रहित Not  
injuring in any way “ अखड-  
फुडिआ कायव्वा तं सुणेह जहातहा ” दस०  
६, ६; ओव० १०, नाया० ७;

अफुस त्रि० ( अस्पृश्य ) स्पर्श करवाने अ-  
योग्य स्पर्श करने के अयोग्य. Untouch-  
able “ अफुसं दुक्खं ” ठा० ३, २, भग०  
१, १०;

अफुसमाणगइ पु० ( \*अस्पृशद्गति-अस्पृशन्ती  
सिद्धयन्तरालप्रदेशान् गतिर्यस्य स तथा )  
अंतरालना व्याडाशप्रदेशने स्पर्श्या विना  
उर्ध्वगति करनार ७व; सिद्ध भगवान्.  
अंतराल के आकाशप्रदेशों का स्पर्श किये बिना  
ऊर्ध्व गति करने वाला जीव, सिद्ध भगवान्.

A Siddha; a soul that ascends to the region of Siddhahood without touching the intervening space. “ उज्जुसेदिपडिवो अफुसमाणगई उहुं एक्कसमएणं अविगहेण उहुं गता सागारोवउत्ते सिज्झिहिति ” ओव०

अफेणग त्रि० ( अफेनक ) क्षीणं विनातुं फेन विना का Having no froth or foam, frothless. प्रव० ८०२,

अवध पुं० ( अवन्ध ) कर्मना अंधेता अलाव कर्मबन्ध का अभाव Absence of Karmic bonds. क० गं० २, ५, ५, ५७, —ठिइ छी० (—स्थिति) कर्मने अंध न होय ते वपतनी स्थिति कर्म का बंध न हो उस समय की स्थिति condition or state at the time when there is no Karmic bondage क० गं० ५, ५७,

अबंधग त्रि० ( अवन्धक ) कर्मने न आंधनार, आठ कर्म पैडी ओक, जे अथवा सर्वने न आंधनार कर्मबन्ध न करने वाला, आठ कर्मों में से एक, दो या सब कर्मों को न बाधने वाला Not incurring the bondage of Karma partially or wholly भग० ८, ८, ६, ११, १, २१, १, २५, ३; ६, क० गं० ४, ६२,

अबंधव त्रि० ( अवान्धक ) अंधुनरहित, अनाथ, निराधार बन्धुजन रहित, अनाथ, आश्रय रहित Having no friends and relatives, helpless परह० १, १, नाया० ६, पि० नि० ४४६,

अबंधिता-सु सं० कृ० अ० ( अवध्वा ) न आधीने न बाधकर Without having tied or fastened. क० प० २, १०४, १०५;

अवंभ. न० ( अव्रह्मन् ) अश्रद्धार्थ, मैथुन; विषय सेवन मैथुन, ब्रह्मचर्य का अभाव,

विषयसेवन Absence of chastity; sexual intercourse. ‘ अट्टारसविहे अवंभे ओरालिखं च दिव्वं ’ परह० १, ४; “ जंजू ! अवंभं च चउत्थं सदेव मणुयासुरस्स लोयस्स पत्थाणिज्जं पंकपणगपासजालभूयं ..... चउत्थं अहम्मदारं ” परह०

१, ४, आव० ४, ७, प्रव० १००२, पंचा० १, ४६, १०, ३, परह० १, ३,—वज्जण. न० (—वर्जन) मैथुन-विषय सेवानो त्याग करवो ते, आवकनी छट्ठी पडिमा मैथुन-

विषय सेवन का त्याग करना; आवक की छठी प्रतिमा abstention from sexual enjoyment, the sixth vow of a Jaina परह० १, १,—सेवण न० (—सेवन) अश्रद्धा-मैथुन सेवतुं ते, विषय सेवन करतुं ते विषय सेवन करना sexual enjoyment ‘ तहेव हिंसं अलिय, चोज्जं अवमसेवणं ’ उक्त० ३५, ३,

अवंभचरिय न० ( अव्रह्मचर्य ) अश्रद्धार्थता अलाव, मैथुन सेवन ब्रह्मचर्य का अभाव; मैथुन सेवन Absence of chastity; sexual intercourse ‘ अवंभचरियं वोरं, पमायं दुरहिद्वियं ’ दस० ६, १६,

अवंभयारि त्रि० ( अव्रह्मचारिन् ) अश्रद्धा-यारी, अश्रद्धायारी नहि अव्रह्मचारी, ब्रह्मचर्य से रहित Not abstaining from sexual intercourse दसा० ६, १२,

अवजम्भमाणी. स्त्री० ( अवध्यमाना ) न अंधाय तेवी कर्मप्रकृति, जेने उदय थाय पणु अंध न थाय, जेवी के समकितमोहनीय, मिश्रमोहनीय वगेरे न बधने वाली कर्मप्रकृति, जिसका उदय होता है परन्तु बन्ध नहीं होता, समकित मोहनीय, मिश्रमोहनीय आदि Karmic nature i e Karma which has got no Bandha (bondage with soul) but which has got Udaya

(i e. maturity); e g. Samakita Mohaniya, Misra Mohaniya etc क० प० २, ८०;

अवज्झा स्त्री० ( अवध्या ) लुओ। “ अवज्झ-  
मारी ’ श०६ देखो ‘ अवज्झमारी ’ शब्द.

Vide ‘ अवज्झमारी. ’ क० प० २, ६६;

अवज्झा स्त्री० ( अवध्या ) गंधिलाविजयनी  
मुખ्य राजधानी गंधिलाविजय की मुख्य  
राजधानी The capital city of  
Gandhilāvijaya. ‘ दो अवज्झाओ ’  
ठ० २, ३, ( २ ) अयोध्या नगरी अयोध्या  
पुरी. the city of Ayodhyā जं० प०

अवद्ध. न० ( अवद्ध ) पद्यबंधरहित ग्रंथ.  
पद्यबंध से रहित ग्रंथ A non-metrical  
work. विशेष० ३३५५,

अवद्धिय. पु० ( अवद्धिक-जीवन कर्म स्पृष्ट-  
मेव नतु चद्धं वन्मत्तमेवामस्तीत्यवद्धिका. )  
‘ ७५ अने कर्मनो बंध थतो नथी पणु र्परशं  
थाय छे ’ ओम माननार ओद्ध निन्हुव; गोष्ठा-  
माहिलना अनुयायी ‘ जीव और कर्म का बंध  
नहीं होता किन्तु स्पर्श होता है ’ ऐसा मानने  
वाला एक निन्हव, गोष्ठामाहिल का अनुयायी  
One believing that Karma  
touches but does not bind the  
soul; a follower of Gosthā-  
māhila ठ० ७, ओव० ४१, विशेष० २३००;

अवल त्रि० ( अवल-नास्ति बलं येषां ते  
‘ तथा ) अणरहित, दुर्बल; अशक्त; अस-  
मर्थ निर्वल; दुर्बल, शक्ति रहित Feeble,  
powerless. विवा० १, ३, उक्त० ४, ६,  
१०, ३३, भग० १, ३, ७, ६, नाया० १;  
८; १३, १६;

अवहिम्मण. त्रि० ( अवहिर्मनस्-न विद्यते  
वहिर्मनो यस्यासौ तथा ) सर्वज्ञ प्रभुना  
उपदेश अनुसार वर्तनार; मनने ज्ञेयां त्यां  
अटकावना नहि स्वज्ञ प्रभु के उपदेश के

अनुसार चलने वाला, मन को इधर उधर न  
भटकाने वाला. ( One ) not allowing  
the mind to wander outside the  
teachings of the omniscient,  
आया० १, ५, ६, १६७;

अवहिल्लेस्स. त्रि० ( अवहिल्लेश्य-नास्ति  
संयमाद्धिल्लेश्या मनोवृत्तिर्यस्यासौ तथा )  
संयमभां मनोवृत्ति राप्पनार; निरंतर आत्म-  
संयमभां रभी रडेल संयम में मनोवृत्ति  
रखने वाला, निरन्तर-सदा आत्मसंयम में रत.  
(One) absorbed in self-restraint.  
आया० १, ५, ६, १६५, भग० २, १;

अवहुवाइ त्रि० ( अवहुवादिन्-न बहु वदितुं  
शीलमस्येति ) अहु ओलो नहि; वधारो ओ-  
लनार नहि ज्यादह न बोलने वाला. Not  
prolix, not flippanant. आया० १, ६,  
२, १०;

अवहुवादि त्रि० ( अवहुवादिन् ) लुओ।  
‘ अवहुवाइ ’ श०६. देखो ‘ अवहुवाइ ’ शब्द.  
Vide ‘ अवहुवाइ ’ आया० १, ६, २, १०;

अवहुसंपन्न. त्रि० ( अवहुसम्पन्न-न बहुभ्यः  
सम्पन्न दर्शितं यत्तत्तथा ) धणा नणुने दर्शविध  
नहि ते बहुतसों को न दिखाया हुआ Not  
shown to or exposed to the view  
of many persons. कप्प० ६, २५,

अवहुस्सुय-अ\* पु० ( अवहुश्रुत-बहुश्रुतं  
यस्य स बहुश्रुत, न बहुश्रुतोऽवहुश्रुतः ) जेणे  
अ.चारप्रकल्प नामे निशीथना अध्ययननो  
अभ्यास नथी क्यो अने नीचेनां सूत्रो  
सांख्यना नथी ते, अहुशास्त्रवेत्ता नहि जिसने  
आचारप्रकल्प नामक निशीथ का अध्ययन  
नहीं किया और नीचे के सूत्र नहीं सुने वह,  
बहुत शास्त्र न जानने वाला Not pro-  
found in the study of scriptures.  
‘ अविणीए अवहुस्सुय ’ उक्त० ११, २, सम०  
३०, दसा० ६, २२,



अवुज्झ सं० कृ० अ० (अवुध्वा) समया  
विना, न समञ्जते विना समये Without



having understood. सूय० १, १३, २०;

**अबुद्ध.** त्रि० ( अबुद्ध ) अशुभ; अविवेकी; तत्त्वने न ज्ञानार मूर्ख, बुद्धि रहित, अविवेकी, तत्त्व को न जानने वाला Ignorant, incapable of knowing right from wrong 'जे अबुद्धा महाभागा, वीरा समत्त-दंसिणो' सूय० १, ८, २२,—जागरिया. स्त्री० (—जागरिका—अबुद्धानामकेवलिनं छद्मस्थानामिति यावत् जागरिकाऽबुद्धजागरिका) छद्मस्थनी जगर्डा—विचारणा. छद्मस्थ का विचार the thought of those who are not Kevali or omniscient. भग० १२, १;

**अबुद्धिय-अ.** त्रि० ( अबुद्धिक ) तत्त्वज्ञान-रहित; अशुभ; बुद्धिहीन. तत्त्वज्ञान रहित, बुद्धि रहित Ignorant; devoid of intelligence; not possessed of philosophical knowledge. सूय० १, १, २, ४; नाया० १७;

**अबुध.** त्रि० ( अबुध ) अज्ञान; अशुभ, मूर्ख. मूर्ख; बुद्धि रहित. Ignorant, foolish. परह० १, १, —जण पुं० (—जन) अज्ञान भाषुस; मूर्ख मूर्ख, देवकूफ, बुद्धिहीन मनुष्य a fool, an ignorant fellow. सम० १०;

**अबुह.** त्रि० ( अबुध ) अशुभ; बुद्धिरहित बुद्धि रहित. Ignorant, devoid of intellect भग० ६, ३३;

**अबोहि** स्त्री० ( अबोधि—न बोधिर्ज्ञानमबोधिः ) समज्जने अभाव; अज्ञान, अरा धर्मनी अप्राप्ति बुद्धि का अभाव; समझ का अभाव; सत्य धर्म की अप्राप्ति; अज्ञान. Ignorance, ignorance of true religion. 'अबोहिं परियायामि' आव० ४, ८, दस० ४, १; २०; २१; ८, २१; ६, १, ५; सूय० १, २,

३, १; २, ६, २५; २, ७, ३८,—कलुस. त्रि० (—कलुष ) मिथ्यादृष्टि, अज्ञानी मिथ्या-दृष्टि, अज्ञानी, ज्ञान रहित. ignorant; deluded in the matter of true religion 'अबोहिकलुसं कदं' दस० ४, २१;—वीय. न० (—बीज) सम्यग् मार्गना अभावपुं० डारण, अज्ञानपुं० बीज. सम्यग् मार्ग के अभाव का कारण; अज्ञान का बीज. the root-cause of the ignorance of the right path पंचा० ४, १२, ७, १५; **अबोहिय-अ** त्रि० ( अबोधिक ) बोधिरहित, अज्ञानी. ज्ञान शून्य, बोध रहित. Ignorant, devoid of true knowledge. 'निच्छयत्थं न याणंति, मिलक्खुव्व अबोहिया' सूय० १, १, २, १६, २, ७, ३८; अप्पणो य अबोहीए, महामोहं पकुव्वइ' सम० ३०, दस० ६, ५७; ( ३ ) धर्मप्राप्तिमां लंगाणु पाउनार धर्मप्राप्ति मे बाधा डालने वाला causing hinderance in spiritual progress दसा० ६, ४; ६, २५;

**अबोहिया** स्त्री० ( अबोधिता—अबोधि-अबोध ) अभोधि; सन्मार्गनी अप्राप्ति. सन्मार्ग की अप्राप्ति Ignorance, non-attainment of the right path. आव० ४, ८,

✓ **अव्ववी** ब्रू धा० प्र० ए० ( अव्रवीत् ) बोधपुं० बोलता हुआ He said.

अव्ववी. भू० सूय० १, ५, १, २;

**अव्व** न० ( अव्व-अपो विभर्तीति अव्वम् ) वादल; मेघ. बादल, मेघ. A cloud जीवा० ३, ३; ठा० ३, ३; अणुजो० १२७; ओव० १०; विशेष० १६२६; भग० ३, ७, जं० प० ५, ११३,—**मुक्क.** त्रि० (—मुक्त) वादलरहित बादल रहित, मेघ रहित cloudless. दस० ६, १, १५;—**राग.** पुं० (—राग) संध्यानी राग. संध्या का राग-रंग; संध्या की लालिमा.

colour of twilight पञ्च० १७,—रु-  
कख पु० (—वृत्त) वादणानुं अ३; अ३ने आकाशे  
परिणुमेव वादण भाङ् के आकार मे परिण-  
मित बादल & tree-shaped cloud  
अणुजो० १२७; भग० ३, ७, ८, ६; जीवा०  
३;—वहलय न० (—वार्दलक—वारोजलस्य  
दलकं वार्दलकं अभ्ररूपं तत्तथा ) पाणीवाणी  
वादण पानी वाला बादल clouds filled  
with water “अबभवहलए विउव्वह”  
राय० ३४; भग० १५, १, ठा० ३, ३,  
—संघट्ट. पुं० (—संघट्ट) वादणानी धटा  
बादलों की घटा thick or dense clouds  
ठा० ४, ४,—संज्झा स्त्री० (—सन्ध्या)  
संध्या सभये रंग भेरंगी वादण देभाय छे  
ते. वादणनी संध्या संध्या समय जो रंग वेरंग  
बादल दिखते हैं वह, बादलों की संध्या party-  
coloured, chequered clouds  
at the time of twilight जीवा० ३,  
—संथड न० (—संस्तृत) वादणथी आकाशनुं  
धवाध नुते बादलों से आकाश का छा जाना  
being overcast with clouds  
( e g the sky ) ठा० ४, ४,

✓ अभंग धा० II ( अभि+अञ्ज् ) भर्दन  
करवु, तेल वगेरेथी शरीर योणवु मालिश  
करना, तेल आदि से शरीर मलना To rub  
the body with oil etc

अबभगेह नाया० ६, १६,

अबभंगति. सु० च० २, १७१,

अबभगेति ज० प० ५, ११४,

अबभंगिज्ज वि० आया० २, १३, १७२,

अबभगेजा वि० निसी० १, ५,

अबभगेत्ता सं० कृ० ठा० ३, १,

अबभंगित्तए. हे० कृ० वेय० ५, ४०;

अबभंगंत व० कृ० निसी० १, ५;

अबभंगावेह रि० सु० च० ४, ७६, विवा० ६;

अबभंग पुं० ( अभ्यङ्ग ) तेल आदिथी भर्दन

करवु ते तेल आदि से भर्दन करना Rubb-  
ing the body with oil etc विशेष  
१६४१,

अबभंगण न० ( अभ्यञ्जन ) तेल वगेरे  
योणीने भर्दन करवु ते. तेल आदि लगा-  
कर मालिश करना Rubbing the body  
with oil etc नाया० १, पणह० २, ४;  
आया० १, ६, ४, २, ओघ० नि० ५४६;

अबभंगावय त्रि० (\* अभ्यङ्गापक ) तेल योण-  
नार, भर्दन करनार तेल चुपड़ने वाला;  
मालिश करने वाला One who rubs  
the body with oil etc निसी० ६, २४,  
अबभंगिय त्रि० ( अभ्यङ्गित ) तेल आदिथी  
भर्दन करेले तेल आदि से भर्दन किया हुआ  
( One ) with body smeared or  
rubbed with oil etc. ‘अबभंगिए  
समाये’ नाया० १, १६, कप्प० ४, ६१,  
पि० नि० ४२३,

अबभंतर त्रि० ( अभ्यन्तर ) अंदर; भाँडि,  
भाँडिली डेर, अंदरने भाग अंदर, भीतर,  
भीतरी हिस्सा Internal; interior  
जीवा० ३, १, सू० प० १, भग० ११, ११,  
ओव० अणुजो० १३२, निर० १, १; पचा०  
१३, ४८, जं० प०—ठावणिज्ज पुं०  
(—स्थापनीय ) अंगत नोकर, अंगत भाणुस,  
ढुलुरी निजी नोकर, खास आदमी & per-  
sonal attendant ‘अबभंतरठावणिजे  
पुरिसे सहावेह’ विवा० ६, नाया० १२, १४,  
—तव न० (—तपस्—अन्तरस्यैव शरीरस्य  
तापनात्सम्यग्दृष्टिभिरेव तपस्तया प्रती-  
यमानत्वाच्चाभ्यन्तरं तच्च तत्तपश्च तथा )  
भोक्षने अंतरंग हेतुभूत प्रायश्चित्त आदि छ  
प्रकारनुं तप; आंतरिष्ठ तप मोक्ष का अन्तरंग  
हेतुभूत प्रायश्चित्त आदि छ प्रकार का तप,  
अन्तरंग तप sixfold austerity  
leading to Moksa, e.g. expiatory

practices, reverence etc छविह  
 अब्धन्तरिण तवे पं० तं० पायच्छित्तं विणओ  
 वेयावच्चं सज्जाओ उक्काणं विउस्सगो '   
 ठ० ६, परह० २, ५; ओव०—परिसा.  
 स्त्री० (—परिषत् ) अंदरनी सभा; समिति  
 नामे देवेन्द्रनी आंतरिक सभा; मित्रमंडली.  
 अन्तरंग सभा; देवेन्द्र की समिति नामक  
 आन्तरिक सभा, मित्रमण्डली inner circle  
 of friends; a private assembly  
 of Devendra styled Samiti-  
 जं० प० ५, ११६, नाया० ८; १४; राय०  
 —पाणीय. त्रि० (—पानीय—अभ्यन्तरे पानी-  
 यं यस्य तत्तथा ) नेनी अंदर पाणी छे अथवा  
 योरपल्ली आदि स्थान. जिसके भीतर पानी  
 है ऐसा चोरपल्ली आदि स्थान. ( places  
 like Chorapalli ) containing  
 water in the interior. नाया० १८;  
 —पुक्खर. पुं० (—पुष्कर ) पुष्करद्वीपनी  
 अंदरनी भाग. पुष्कर द्वीप का भीतरी हिस्सा.  
 सू० प० ८;—पुक्खरद्ध. न० (—पुष्करार्द्ध )  
 मानुषोत्तर पर्वतनी अंदरनी पुष्करद्वीपनी  
 अर्द्ध भाग; अर्द्ध द्वीप अंतर्गत पुष्करार्द्ध द्वीप  
 मानुषोत्तर पर्वत के भीतरवाले पुष्करद्वीप  
 का आधा भाग; अर्द्ध द्वीपान्तर्गत पुष्करार्द्ध  
 द्वीप. half of Puskaradvīpa in  
 the interior of the mountain  
 Manusottara. भग० ८, २; जीवा०  
 ३,—पुष्पफल त्रि० (—पुष्पफल—अभ्यन्तरा-  
 णि अभ्यन्तरभागवर्त्तिनि पुष्पाणि फलानि च  
 येषां ते तथा ) नेनां फूल फल, पत्रे दांडेल होवाथी  
 फूल न देखातुं वृक्ष जिस वृक्ष के फूल  
 फल पत्तों से ढके होने के कारण नहीं  
 दिखते ऐसा वृक्ष. (trees) with fruits  
 and flowers hidden by foliage  
 राय०—वास पुं० (—वास ) अंदरनी निवास,  
 आंतरिक निवासस्थान. आन्तरिक निवास-

स्थान. residence in the interior  
 parts. नाया० ८,—संबुद्धा. स्त्री०  
 (—शम्बुका—अभ्यन्तरान्मध्यभागात् शम्बुका  
 संखवृत्तगत्या भिक्षुसायस्य बाहिर्विस्तरणे  
 भवन्ती गोचरभूमिरभ्यन्तरशम्बुका ) गामनी  
 अंदरथी रांभना आवर्तननी भाक्ष गोचरी  
 इरतां फूल नीडणवु ते, अथवा फूलथी  
 तेथी रीते गोचरी इरतां अंदर आववु ते;  
 गोचरीनी ओड प्रहार गाँव के भीतरसे शंख  
 के आवर्त के समान गोचरी करते हुए बाहिर  
 निकलना, अथवा बाहिर से उसी प्रकार गोचरी  
 करते हुए भीतर आना, गोचरी का एक भेद.  
 coming out of or going into  
 a town after begging alms or  
 to beg alms, in a zigzag course  
 like the lines in a conch ठ० ६;  
 —सगडुद्धिया स्त्री० (—शकटोद्धिका )  
 अंगुली मे लेगा अने पेनीने फोणी इरी  
 डाडिसगग इरवे। ते, डाडिसगगनी ओड  
 दोप दोनो पैरों के अंगूठे एकत्रित करके और एड़ी  
 को चौड़ी करके कायोत्सर्ग करना, कायोत्सर्ग  
 का एक दोष a fault in the perfor-  
 mance of Kāusagga viz.  
 joining the toes together and  
 extending apart the heels.  
 प्रव० २५६;

अब्धन्-विम्-तरंग. त्रि० ( अभ्यन्तरक )  
 अंदरतुं, आंतरिक भीतर का, आन्तरिक.  
 Internal, interior ओव० १८, जं०  
 प०

अब्धन्-विम्-तरंगो. अ० ( अभ्यन्तरतत् )  
 अंदर आने, मध्ये मध्य में, बीच में. In  
 the midst; in the interior  
 नाया० १;

अब्धन्-विम्-तरंग त्रि० ( अभ्यन्तरक )  
 अंतर्गत भाग, अंतर्गत भाग, अंतर्गामी प्रकृति.

नज़दीकी सम्बन्ध रखने वाला मनुष्य-मंत्री आदि. ( A person ) remaining in constant touch e g a minister etc. विवा० १, ३;

**अभं-भिं-तरतो** अ० ( अभ्यन्तरतस् )  
लुभे। “ अभिन्तरश्चो ” शब्द. देखो  
“ अभिन्तरश्चो ” शब्द. Vide  
“ अभिन्तरश्चो. ” निर० २, १,

**अभं-भिं-तरभूअ** त्रि० ( अभ्यन्तरभूत )  
अन्तर्गत, अंदर समायेहुं भीतर समाया हुआ,  
अन्तर्व्याप्त, अन्तर्गत. Internal; form-  
ing the interior. विशेष० ६;

**अभं-तरिय.** त्रि० ( अभ्यन्तरिक ) अंदरतो,  
अंदर रहेनारं; आंतरिक भीतर का, भीतर  
रहने वाला, आंतरिक Internal, in-  
terior नाया० १, २; ७, ८, भग० ६,  
३३; ११, ११, दसा० ६, ४,

**अभक्खइज्ज.** त्रि० ( अभ्याख्यातव्य ) डोहना  
ऊपर जोटा आरोप मुकवो, योर न डोय तेने  
योर डोवो छत्ताहि किसी पर झूठा आरोप  
करना, चोर न होने पर उसे चोर कहना आदि  
False accusation, false imputa-  
tion आया० १, १, ३, २२,

✓ **अभक्खा** धा० I. ( अभि+आ+ख्या )  
डलक यडावुं, जोटा आरोप मुकवो कलंक  
लगाना, मिथ्या आरोप करना To accuse  
falsely; to charge falsely with  
guilt.

अभक्खाइ. भग० ५, ६,

**अभक्खाण.** पुं० न० ( अभ्याख्यान-आभि-  
मुख्येन आख्यानं दोषाविष्करण अ-  
भ्याख्यानम् ) डोहना ऊपर प्रगटरीति जोटा  
आरोप मुकवो-आण यडावो किसी पर  
प्रकटरीति से आरोप करना False public  
imputation of guilt. “ एगे अभ-

क्खाणे ’ ठा० १, १, ओव० ३६, सूय० २,  
१, ५१; परह० १, २, पन्न० २२, नाया०  
१, भग० १, ६; ६; ५, ६, दसा० ६, ४,  
कप्प० ५, ११७, प्रव० १३६६;

**अभ्यगुरणा** स्त्री० ( अभ्यनुज्ञा ) कर्तव्यानुष्ठाननी  
अनुमति देवी ते; अनुष्ठान विषयक आज्ञा  
करने योग्य अनुष्ठान की आज्ञा देना Giving  
permission to or ordering the  
performance of religious duties  
etc ‘पंच ठाणाइं समणेणं भगवया महावीरेणं  
समणाणं निगंथाणं. ...णिच्चमब्भगुरणाइं  
भवन्ति तं खंती मोत्ती अज्जवे महवे लाघवे ’  
ठा० ५, १, भग० २, १, ५, ४, विवा० १,

**अभ्यगुरणाय.** त्रि० ( अभ्यनुज्ञात ) कर्तव्य-  
रूपे आज्ञा आपेक्ष; कर्तव्यरूपे अनुमत.  
कर्तव्यरूप से आज्ञा-आज्ञा दिया हुआ, कर्तव्य  
रूप से अनुमत Ordered or permitted  
to perform as a duty नाया०  
१, २; ५; ८, ६, १२; १३, १४, १६, भग०  
६, ३३, ठा० ५, १; कप्प० ३, ४६, ४,  
८६, ५, १०४, विवा० ७,

✓ **अभ्यत्थ** धा० I ( अभि+अर्थ ) आर्थन  
करपी, भागणी करपी मागना To pray  
for, to request; to solicit  
अभ्यत्थिज्ज वि० प्रव० ७६६;

**अभ्यत्थ** त्रि० ( अभ्यस्त ) अभ्यास करेक्ष;  
वारंवार आवृत्ति करेक्ष अभ्यस्त, बार बार  
आवृत्ति किया हुआ. Studied, revised  
again and again. सूय० १, २, २, १६,  
( २ ) गुणाकार करेक्ष, गुणोक्त गुणाकार किया  
हुआ, गुणा हुआ multiplied. विशेष० २६८;

**अभ्यत्थणा.** स्त्री० ( अभ्यर्थना ) परस्पर  
प्रवृत्ति करावपी ते, आग्रहणी नहि पणु तेनी  
छत्तापूर्वक कार्य करवानु डोवु ते. परस्पर  
प्रवृत्ति कराना, आग्रहपूर्वक नहीं किन्तु स्वेच्छा-  
पूर्वक कार्य करने को कहना Mutual

encouragement of activity, a request to a person to do an act without exerting pressure on him. पंचा० १२, ४;

अभ्यन्त्रिय त्रि० ( अभ्यर्थित ) प्रार्थना-याचना इरेव मगनी किया हुआ. Requested, solicited कृष्ण० २, १६, ५, १०३, प्रव० ७७०,

अभ्यपडल. न० ( अभ्रपटल ) अभ्रक, सञ्चित इहिन पृथ्वीनो ऐक प्रकार. अभ्रक; सञ्चित कठिन पृथ्वी का एक भेद. Talc; mica, उत्त० ३६, ७४, ( २ ) वादणनो समूह बादलों का समूह a group of clouds, "अभ्यपडलपिगलुजलेण" ओव० पञ्च० १,

अभ्यवालुया स्त्री० ( अभ्रवालुका ) अभ्रक-धातुविशेषी मिश्रित रेती, कडलु आदर पृथ्वीनो ऐक प्रकार अभ्रक से मिश्रित रेती, कठिन स्थूल पृथ्वी का एक भेद. Sand mixed with mica, उत्त० ३६, ७४; पञ्च० १;

अभ्यहिय त्रि० ( अभ्यधिक ) विशेष, वधारे, अधिक्, अत्यन्त अविक, ज्यादाहः विशेष Additional; in excess. 'अभ्यहियभीमभेरवप्पगारेण' नाया० १; भग० १, ५, ७, ३, ८, १, ६, १२, ४, २४, १; १२; २५, १, ६; जीवा० २; ओव० ३१, ३८, अणुजो० १४२; उत्त० ३४, ३५, सम० १; कृष्ण० ४, ६२, नाया० व० ७; ८,

अभ्यहियतरग. त्रि० ( अभ्यधिकतर-क ) अतिशय अधिक्; धातुं वधारे. बहुत ज्यादाह Much in excess; excessive. नंदी०

✓ अभ्याइक्ख. धा० I ( अभि+आ+ख्या ) पोरो आरोप मुडवे, आण व्यसवो मिथ्या

आरोप करना To accuse falsely; to impute guilt falsely.

अवभाइक्खइ. आया० १, १, ३, २२;

अवभाइक्खंति. सूय० २, ७, ७;

✓ अवभाइक्ख धा० I. ( अभि+आ+चच् ) अपक्षाप इरेवो; सत्य वात छुपावपी. सच्ची वात छिपाना. To suppress a fact.

अवभाइक्खजा आया० १, १, ३, २२;

अवभागमित. त्रि० ( अभ्यागत ) आगंतुक; भेमान. मिहमान; अतिथि. A guest. सूय० १, २, ३, १७;

अवभावगासिय. न० ( अवभावकाशिक ) आंणा वगेरे अउना भूगनी नीयेनुं धर; अउनी नीये अउथी छवायेदी अगासी आम वगैरह झाड़ के नीचे बना हुआ घर, जिस घर की छत झाड़ से छाई हुई हो वह A house situated below the roots of trees like mango trees etc, a terrace covered with dense trees वेय० २, १० ;

अवभास. पुं० ( अभ्यास ) अभ्यास इरेवो; वारंवार आवृत्ति इरेवी. अभ्यास करना; बार बार आवृत्ति करना. Reading over and over again. अणुजो० ६७; १३०; ओव० २०; क० गं० ४, ८६; क० प० १, ४; ओघ० नि० ६६, पंचा० ६, ३७; ( २ ) समीप. समीप near, in the vicinity. सम० ६१,—आसण न० (—आसन ) पास से भेसवु ते समीप बैठना sitting near. सय० ६६;—करण. न० (—करण ) धर्मधी पतित थयेव पासत्थादिने, पुनः धर्मभां स्थापन इरी, तेनी साथे आधारपाणीनो व्यवहार इरेवो ते, संभोगनो ऐक प्रकार धर्म से पतित हुए पासत्ये आदि को धर्म में पुनः स्थापितकर, उनके साथ आहार, पानी का व्यवहार करना; संभोग का एक भेद. १७०



establishing an apostate in true religion and then entering into social relations ( e g eating and drinking ) with him, a variety of Sambhoga सम० ६;—गुण. पुं० (—गुण ) पूर्वना अभ्यासजन्य सरकारी उत्पन्न थयेल शुश्रूषा-भोग आदि जन्मतां, शीषव्या विना पशु स्तनपान करे छे धत्यादि पूर्व के अभ्यासजन्य संस्कारों से उत्पन्न गुण, जैसे बिना सिखाये बालक उत्पन्न होते ही स्तनपान करने लग जाता है यह उसके पूर्व अभ्यास का संस्कार-गुण है intuitive qualities, qualities born of impressions in a past birth. आया० नि० १, ३, १, १७२,—वर्त्तिय न० (—वर्त्तित्व-अभ्यासो गुर्वादिसामीप्यं तत्र वर्त्तितुं शीलमस्येति तद्भावस्तत्त्वम् ) गुर्वादिकनी पासे-नल्लक भेसवु ते, लोकोपचार विनयनो अेक प्रकार गुरु आदि के समीप-नजदीक बैठना, लोकोपचार विनय का एक भेद sitting in the proximity of a preceptor etc, a kind of formal reverence paid to a Guru etc भग० २५, ७,—वर्त्तिय त्रि० (—प्रत्यय-अभ्यासो हेवाको वर्णनीयास-ज्ञता वा प्रत्ययो निमित्तं यत्र तत्तथा) अभ्यास-वर्णनीय पुरुषोनी, पासे रहवु, ते निमित्त छे जेभा अेवु सहशुश्रूषा दीपावतु वगेरे अभ्यास वर्णनीय पुरुषों के पास रहने का निमित्त है जिसमें ऐसे सद्गुणों को प्रकाशित करना इत्यादि adorning or illumining virtues by coming into contact with saints and sages. 'चउहि ठायेहि सते गुणे दीवेजा तंजहा-अभ्यास-वर्त्तियं परछुदाणुवर्त्तिय कजहेउ कयपढिका-

इवा " ठा० ८, ४,—वर्त्तिय न० (—प्रीतिक ) गुरु आदिनी पासे भेस-वामां प्रीति राखी ते; लोकोपचार विनयनो अेक प्रकार गुरु आदि के समीप बैठने से प्रीति रखना, लोकोपचार विनय का एक भेद delight in the company of a Guru, fondness for sitting near a preceptor भग० २५, ७;—वर्त्तिय. स्त्री० (—वृत्ति ) नरेन्द्र आदिनी पासे भेसवु ते नरेन्द्र-राजा आदि के पास बैठना. sitting or remaining in the proximity of a king etc दस० ६, १,

अभ्याहय त्रि० ( अभ्याहत ) पीडा पाभेल; दुःखी दुःखायेल पीडित, दुःख से सताया हुआ. Struck with pain, afflicted with misery " अभ्याहयमि लोगमि, सव्वओ परिवारिए " उक्त० १४, २१-

अविभग पुं० ( अभ्यङ्ग ) तेल आदिथी मर्दन करवु ते तेल आदि स मर्दन करना Rubbing the body with oil etc ओव० ३१, नाया० १८, विवा० १,

अविभगिय त्रि० ( अभ्यङ्गित ) लुओ 'अवभगिय' शब्द देखो 'अवभगिय' शब्द. Vide 'अवभगिय' नाया० १,

अविभक्तर त्रि० ( अभ्यन्तर ) लुओ 'अवभक्तर' शब्द देखो 'अवभक्तर' शब्द Vide 'अवभक्तर' नाया० १, १८, भग० २, ६, ५, १, १४, २, सु० च० १, ३६१, पञ्च० १५, भक्त० १३१, कप्प० ३, ३२, प्रव० २७२, अविभक्तर त्रि० ( अभ्यन्तर अभ्यन्तरे भवमाभ्यन्तरम् ) अद्वैत, आतङ्गिक आन्तरिक; भीतर का Inward, internal 'सव्व-वभक्तराणंतर मडल उवसकमिक्ता' जं० प० ५, ११६, (२) पु० न० आतङ्गिक १५, प्राय-



श्रित्त, विनय, वेयावय्य, सन्नयाय, ध्यान अने डाडिसण ओ छ प्रधारनुं अभ्यन्तर तप आन्तरिक तप; प्रायश्चित्त, विनय, वेयावय्य, स्वाध्याय, ध्यान और कायोत्सर्ग ये छ प्रकार के तप internal austerity of six kinds e. g. expiatory performance, reverence etc. 'तवो च दु-विहो वुत्तो, बाहिरविन्तरो तहा' उत्त० २८, ३४; सम० ६; भग० २५, ७,—दुवार. न० (-द्वार) अंदरनुं आरखुं भीतर का दरवाजा. inner door; inside door. प्रव० ६६८;—संबुक्का. छी० (-शम्बूका) लुओ 'अवमंतरसंबुक्का' शब्द देखो 'अवमंतर-संबुक्का' शब्द. vide 'अवमंतरसंबुक्का' प्रव० ७५६;

अभिन्तरओ अ० (अभ्यन्तरतत्त्व) अंदर भीतर.

In; inside. क० प० १, ८२;

अभिन्तरिय. त्रि० (आभ्यन्तरिक) आन्तरिक-तप वगेरे; प्रायश्चित्त आदि छ प्रधारनुं आन्तरिक तप आभ्यन्तरिक-तप आदि, प्रायश्चित्त आदि छ प्रकार का आन्तरिक तप. Internal austerity etc; sixfold internal austerity e.g. expiation etc. भग० ११, ११, २५, ७; विवा० २: कण्ठ० ४, ६३;

अबुअ पुं० (अद्भुत) डोछ पणु अपूर्व वस्तु जेवाथी डे साक्षणवाथी आश्चर्यरूप रस उत्पन्न थाय ते, नव रसमानो ओड रस कोई भी अपूर्व वस्तु देखने या सुनने से जो आश्चर्यरूप रस उत्पन्न हो वह, नव रसों में से एक रस One of the nine sentiments viz the sentiment of wonder. अणुजो० १३०; (२) त्रि० आश्चर्य जनक आश्चर्यजनक wonderful. चउ० ३;

अबुअ वा० II (अभि+उच्) पाणीथी

सिंयतुं; उपरथी पाणी रेडुं पानी से सांचना, ऊपर से पानी का छिड़काव करना. To sprinkle with water.

अबुअवेइ-ति. जीवा० ३, ४; नाया० २; जं० प० ३, ४३;

अबुअखित्ता. सं० कृ० नाया० १६; नाया० व०

अबुअखेइत्ता. सं० कृ० नाया० २;

अबुअखेइ. शि० अत० ३, ८;

अबुगय. त्रि० (अभ्रौदत) आकाशमां पहुँचये तेडुं उयुं. आकाश में पहुँचे इतना ऊँचा Touching the sky; so tall as to touch the sky. भग० १२, ५;

अबुगय त्रि० (अभ्युद्गत-अभिमुखमुद्गतोऽभ्युद्गत) सर्व तरङ्गथी ऊँहार निकलेल; उगी आवेल; अंदरनी भाङ्क अग्रभाग डुंछ उन्नत थयेल चारों ओर से बाहिर निकला हुआ; जगा हुआ, अंकुर के समान कुछ उन्नत अग्रभाग वाला. Shot up; sprouted up भग० ११, ११; १४, ६; १५, १, सम० प० २१२; ओव० ३१; नाया० १, ६, १६; जं० प० १, १४; (२) जेनारने रमणीय लागे तेवी रीते रहेल. देखने वाले को रमणीय प्रतीत हो इस तरह से स्थित of a charming situation; beautifully situated 'अबुगयमउलमल्लियाविमलधवलदंत' उवा० २, १०१; 'अबुगयमउलमल्लियाधवलसरिस-संठाण' जं० प० १, १४, भग० ६, ३३; राय० ५८; (३) उपाडेल ऊपर उठाया हुआ. lifted up; raised up. ओव०—भिगार. पुं० (-भृङ्गार-अभिमुखमुद्गत उत्पादितो भृङ्गारो यस्य स तथा) जेनी आगण डोटे उपाडी ओड भाणुस आले, तेवे भाग्यशाली भाणुस. जिसके आगे लोटा उठाकर एक मनुष्य चले, ऐसा भाग्यशाली मनुष्य. a person favoured of fortune whose pot is borne for him by

another walking in front ओव०  
दसा० १०, ३,—मुस्सिय. त्रि० (—उच्छित्त-  
अभ्युद्गतश्चासावुच्छित्तश्चेत्यभ्युद्गतोच्छित्त. )  
अत्यंत उंचुं. बहुत ज़्यादा ऊंचा. very  
tall; very lofty 'अब्भुगयमुस्सिय  
पहसिया' भग० २, ८; जं० प० १, १४,  
७, १६५;

अब्भुगगम पुं० ( अभ्युद्गम ) उदय; अ३ती,  
उगुं ते उदय, चढ़ती; उगना. Rise;  
prosperity सूय० १, १४, १२,

अब्भुज्जय त्रि० ( अभ्युद्यत ) वधवा भाडेल,  
वृद्धिगत. वृद्धिगत; बढ़ने को उद्यत  
Attained to growth, in a state  
of growth नाया० १, ( २ ) उद्यम-  
सहित, उद्यतविहारी, जिनकल्पी, परिहार-  
कल्पी अने यथाबंदकल्पी ये त्रयुभानो  
गमे ते येकं सद्यम-सहित, विहार के लिये  
उद्यत, जिनकल्पी, परिहारकल्पी और यथा-  
बंदकल्पी इन तीनों में से कोई भी एक full  
of industry, one of the three  
viz Jinakalpī, Parihānakalpī  
and Yathālandakalpī नाया० ५,  
भत्त० ८,—मरण न० (—मरण ) जिन-  
कल्पी आदि अभ्युद्यतविहारिणुं मरण-  
पादपोषगमनादि जिनकल्पी आदि अभ्युद्यत-  
विहारी का मरण—पादपोषगमनादि the  
death of Jinakalpī ascetics etc  
caused by the vow Santhāra  
etc. संस्था०

✓ अब्भुट्ठ. धा० II ( अभि+उत्+स्था ) उठुं,  
उठा थवु; तैयार थवुं, सज्ज थवुं उठना,  
खड़े होना, तय्यार होना, सज्जित होना To  
rise up, to stand up; to be  
ready or prepared

अब्भुट्ठे भग० २, १, ३, २, सूय० २, २,

२०; राय० २२; २०८, ओव० १२, जं०  
प० ५, ११५, नाया० १, २, ५, १४;  
दसा० १०, १;

अब्भुट्ठेति. भग० ५, ४;

अब्भुट्ठेमि. भग० २, १, ८, ६, ६, ३३;  
नाया० १; राय० २२२,

अब्भुट्ठामो. सूय० २, ७, १५;

अब्भुट्ठेज्जा वि० वेय० १, ३३; ४, २५;

अब्भुट्ठेहि. आ० नाया० १४;

अब्भुट्ठित्ता स० कृ० दसा० ४, ८२; १०४;  
१०५,

अब्भुट्ठेत्ता सं० कृ० भग० २, १; ६, ३३;  
१५, १, नाया० ३, ८, १४;

अब्भुट्ठित्तण् हे० कृ० ठा० २, १, वव०  
१, ३७,

अब्भुट्ठाणं न० ( अभ्युत्थान ) गुर्वादिक पासे  
आव्ये उठी उठा थवु ते, गुरुसेवाभा उद्यत  
रहेणुं ते, दश प्रकारनी सामाचारिभानो  
नवमे प्रकार गुरु आदि के समीप आने पर  
उठकर खड़े होना; गुरुसेवा में उद्यत  
रहना; सामाचारी के दस भेदों में से नौवा भेद  
Revering a preceptor etc.  
by rising up from one's seat;  
being prompt and ready for the  
service of a preceptor etc, the  
ninth of the ten varieties of  
Sāmāchārī अब्भुट्ठाणं नवमं दसमा  
उवसपया' उत्त० २६, ४, भग० १४, ३;  
उत्त० २, ३८, ओव० २०; सम० १२, सु०  
च० १, ८०; प्रव० १८२,

अब्भुट्ठिय. त्रि० ( अभ्युत्थित ) उद्यत थयेल;  
तैयार थयेल, सज्ज थयेल उद्यत; तय्यार.  
Ready; prepared 'अब्भुट्ठिएसु मेहेसु'  
नाया० १; 'अब्भुट्ठियं रायरिसिं, पव्वजाठाण-  
मुत्तम' उत्त० ६, ६, ओव० १७, वेय० १,

६३; जं० प० ओष० नि० ५३७; आव० ४, ८; निसी० १०, ४४,

अवभृङ्गता त्रि० ( अभ्युत्थात् ) शुर्वादिङने सन्मुख जन २ गुण आदि के सन्मुख जाने वाला. ( One ) going forward to receive a preceptor etc ठा० ५, १;

अवभृङ्गयव. त्रि० ( अभ्युत्थातव्य ) रहामे लघु सत्कार करवाने योग्य सामने जाने योग्य, सन्मुख जाकर सत्कार करने योग्य. Worthy of a reception by going forward to receive. ठा० ८;

अवभृङ्गय. त्रि० ( अभ्युन्नत ) उन्नत; उभार निकले. उन्नत; बाहिर निकला हुआ. Rised up; prominently coming out. " अवभृङ्गययइयतलिणतंबसुइनिद्धनखा ' परह० १, ४; अवभृङ्गयपीणरइयसठियपयोहरा ' जीवा० ३; नाया० १; जं० पं० ७, १६६,

अवभृङ्ग त्रि० ( अद्भुतक ) अद्भुत डारक; आश्चर्य जनक आश्चर्य उत्पन्न करने वाला. Wonderful; astonishing. ' अच्छे-रामवभृङ्ग ' उक्त० ६, ५१,

अवभृङ्ग पुं० ( अभ्युदय ) उदय, उत्थि उदय; चढती. Rise, prosperity. नाया० १; २; परह० १, ३,—हेउ पुं० (—हेतु) इत्याणुनो हेतु-डारण. कल्याण का कारण. cause of prosperity. पंचा० ८, १६,

✓ अवभृव धा० II. ( अभि+उप+इ ) प्राप्त करवु, पासे आवुं; भोगवुं प्राप्त करना; समीप आना To obtain; to acquire; to go to.

अवभृवैति. सम० ६,

अवभृवगअ-य. त्रि० ( अभ्युपगत-अभि-आभि-मुख्येनोपगत ) प्राप्त थयत; रहामे आवेत्,

उदयप्राप्ते उदयप्राप्त, सन्मुख आया हुआ; प्राप्त. Obtained, attained to; come to; come towards सूय० २, ७, ११; आया० २, ३, १, १११;

✓ अवभृवगच्छ. धा० I ( अभि+उप+गम् ) स्वीकार करवे। स्वीकार करना. To-accept. अवभृवगच्छेजामि. नाया० १६, अवभृवगंतु. सं० कृ० विशेष ३१४;

अवभृवगम पुं० ( अभ्युपगम ) अंगीकार, स्वीकार करवे। ते. स्वीकार करना; अंगीकार करना. Acceptance, acknowledgement. ठा० २, ४;

अवभृवगमिया. स्त्री० ( अभ्युपगमिकी-अभ्युपगमेनाङ्गीकरणेन निर्वृता तत्र भवा अभ्युपगमिकी ) पोतानी धृष्टाथी स्वीकारेख शिरोलुंचन, भूमिशयन, ब्रह्मचर्य, उपवास वगैरे य रित्रना कष्टथी यती वेदना. अपनी इच्छा से स्वीकार किये हुए शिरोलुंचन, भूमिशयन, ब्रह्मचर्य, उपवास आदि चारित्र के कष्टों द्वारा उत्पन्न वेदना Pain caused by the voluntary acceptance of the hardships of right conduct such as pulling out hair, fasting etc. 'दुविहा वेयणा प० तं० अवभृवगमिया य उवक्कमिया य' पञ्च० ३४, ३५; ठा० २, ४; भग० १, ४,

अभय-य. न० ( अभय-न भयमभयम् ) लयने। अक्षय, निर्भयपण निर्भयता, भय का अभाव. Fearlessness; absence of fear 'अभयो पत्थिवा तुवमं, अभयदाया भवाहि य' उक्त० १८, ११; परह० २, १, सम० १; नाया० १६; राय० २३; ( २ ) पु० श्रेष्ठिक राजनी नंदा राजीनो पुत्र अलयकुमार, के ने महावीर स्वामी पासे दीक्षा लई, ११ अंग लली, शुश्रूषण तप तपी, पात्र वस्त्रनी प्रत्यक्षा पाणी, विपुत्र पर्यंत उपर ओड भासने।

संधारो करी, विन्ध्य नामे अनुत्तरविमानमा  
उत्पन्न थया, त्याथी ओके अवतार करी भोक्ष  
प्राप्त करेशे श्रेणिक राजा की नंदा रानी के  
गर्भ से उत्पन्न पुत्र अभयकुमार, जो कि  
महावीरस्वामी से दीक्षा लेकर ११ अंगों का  
अभ्यास कर गुणारयण तप करके पांच वर्ष तक  
प्रव्रज्या का पालनकर अंत में विपुल  
पर्वत पर एक मास का संधारा धारणकर  
अनुत्तरविमान में उत्पन्न हुआ, वहा से  
एक भव धारणकर मोक्ष को प्राप्त होगा  
Abhayakumāra the son of  
Nandā the queen of Śrenika  
who took Diksā from Mahā-  
vira Svāmī, studied eleven An-  
gas, observed Gunarayana  
penance entered the order of  
asceticism for 5 years and  
breathed his last on the Vipula  
mountain after remaining with-  
out food and drink for one month  
and was born in Anuttara  
heavenly abode named Vijaya  
Therefrom after one birth he  
will get salvation अणुत्त० १, १०;  
नाया० १; (३) अणुत्तरोपपात्त सूत्रना प्रथम व-  
र्गना दशमा अभ्ययननुं नाम अणुत्तरोपपात्तिक  
सूत्र के प्रथम वर्ग के दशवे अध्याय का  
नाम name of the tenth chapter  
of the first section of Anutta-  
rovavāi Sūtra अणुत्त० १, १०, (४)  
प्राणिरक्षा; संयम प्राणिरक्षा; संयम.  
protection of living beings; self-  
control. आया० १, १, ५, ३६; सूय० १,  
६, २३,—दय. पुं० (—दक-अभय ददाती-  
त्यभयदः) सर्वे ज्ञाने अलपदान आपनार  
अपावनार तीर्थकर भगवान् सम्पूर्ण जीवों

को अभयदान देने और दिलाने वाले तीर्थकर  
भगवान् Tirthankara, the giver  
and admonisher of the blessing  
of freedom of fear to all living  
beings ' अभयदयाणं चक्षुदयाण  
भग० १, १, ओव० नाया० १; आव० ६, ११;  
कप्प० २, १५,—प्पयाण न० (—प्रदान) जुओ  
'अभय-य-दय' श०६. देखो ' अभय-य-दय '  
शब्द vide " अभय-य-दय ". ' दायाण-  
सेट्टं अभयप्पयाणं ' सूय० १, ६, २३;  
अभंगक त्रि० ( अभङ्गक ) जुओ ' अभंगय '  
श०६ देखो ' अभंगय ' शब्द Vide  
" अभंगय. " भग० ६, ४,

अभंगय त्रि० ( अभङ्गक ) नेमा लांगो—विद्वेष  
न ठेते, लांगो विनानुं जिससे शंका न  
उठे वह Free from any kind of  
doubt or mis-giving भग० १, ५;  
६, ४;

अभंगसेण पुं० ( अभङ्गसेन ) विन्ध्य नामे  
येरना सेनापतिना पुत्र, के ने पुरिमताल  
नगरने ईशान पुण्णे आवेली सालाटवी नामे  
येरपक्षीमा पायसो येरनी साथे रहेतो  
हुतो पुरिमतालना महापण राज्ञे तेने  
पकडवाने लश्कर भोक्ष्यु पण ते पकडालो  
नहि, आप्पर भोत्सव प्रसंगे सत्कारपूर्वक  
तेने गाममा ओलावी, दणो करी, राज्ञे ते  
येरने पकडावी क्षासीये यडाव्यो. २७ वरसनी  
उभरे भरणु पाभी पहेली नरके गयो.  
विजय नामक चोर के सेनापति का पुत्र, जो कि  
पुरिमताल नगर के ईशान कोन की ओर साला-  
टवी नामक चोरपल्ली में पाच सौ चोरों के साथ  
रहता था. पुरिमताल नगर के राजा महाबल ने  
उसे पकडवाने के लिये अपनी सेना भेजी, परन्तु  
वह नहीं पकड़ा जा सका, अन्त में महोत्सव के  
अवसर पर राजा ने उसे सत्कारपूर्वक ग्राम  
में बुलवाया और कपट से उसे फासी पर

चढ़ा दिया. वह २७ वर्ष की अवस्था में मरकर पाहेले नरक में गया. The son of Vijaya the leader of thieves who was staying with 500 thieves in a place called Sālātavī in the North East of Purimatāla city Mahābala the King of Purimatāla sent a great army to arrest him but he escaped. At last he was invited to a festival and was hanged treacherously. He went to the first Hell after his death at the age of twenty-seven years विवा० १, ३;

**अभंड.** त्रि० ( अभण्ड ) लांड-उपकरण विनाले. पात्र-उपकरण सहित, उपकरण विना क. Not possessd of necessary materials like vessels etc. भग० ८, ४;

**अभक्ख** त्रि० ( अभक्ष्य-न भक्षितुं योग्यमभक्ष्यम् ) आवा योग्य नहि; लक्षणु करवा योग्य नहि. न खाने योग्य; न भक्षण करने योग्य Unfit to be used as food. नाया० ५, भग० १८, १०;

**अभक्खय** त्रि० ( अभक्ष्यक ) लुओ " अभक्ख " शब्द देखो " अभक्ख " शब्द Vide 'अभक्ख' नाया० ५; भग० १८, १०;

**अभग्ग.** त्रि० ( अभग्न ) लांगेल नहि; अपंड जो अखंड हो-टूटा फूटा न हो वह. Not broken; whole "एवमाइएहि आगारेहि, अभग्गो अविराहिओ " आव० १, ५; भग० ६, ३३; कप्प० ५, १०८, ( २ ) विपाकसूत्रना प्रथम श्रुतस्कंधना त्रील अभ्ययनतु नाम. विपाकसूत्र के प्रथम श्रुतस्कंध के तीसरे अध्याय का नाम. name of the third chapter of the second

Śrutaskandha of Vipāka Sūtra. विवा० १, १;

**अभडप्पवेस** त्रि० ( अभटप्रवेश-न विद्यते भटानां राजानादायिनां पुरुषाणां प्रवेशः कुटुम्बिगृहेषु यत्र तत्तथा ) " जयां अभुड वभतभाटे कोष्ठ पणु गृहस्थने धर कोष्ठ कुडम लधने लय नहि " अभ भनाष्ठ करवाभां आवी छे तेनुं नगर वगेरे. जहाँ अमुक समय के लिये इस प्रकार हुक्म दिया गया हो कि "कोई भी राजकर्मचारी किसी गृहस्थ के घर पर किसी भी प्रकार का हुक्म लेकर न जाय " ऐसा नगर वगेरह. ( A city etc. ) where the visit of an official carrying any order to a citizen's house is prohibited. नाया० १; भग० ११, ११; जं० प० कप्प० ५, १०१;

**अभणिअ** त्रि ( अभणित ) न लणेल-कहेल न कहा हुआ. Not said, unsaid; unspoken. गच्छा० ८६;

**अभत्त.** न० ( अभक्त ) लकत-अनले त्याग; उपवास. उपवास A fast आव० ६, ६;

**अभत्तट्ट** पुं० ( अभक्तार्थ-भक्तेन भोजनेनार्थः प्रयोजनं भक्तार्थः, न स तथा यद्वा न विद्यते भक्तार्थो यस्मिन् प्रत्याख्यानविशेषे स तथा ) लोअनले त्याग करवाना पय्यङ्गणु; उपवास. भोजन का त्याग करने का प्रत्याख्यान; उपवास. Vow, to give up food; fasting. "सूरे उग्गए अभत्तट्ट पच्चक्खाइ" प्रव० १६१, वव० १०, २; पंचा० ५, ६,

**अभत्ति.** स्त्री० ( अभक्ति ) लकितले अलाव. भक्ति का अभाव. Absence of devotion. नाया० १६६ ( २ ) त्रि० लकितरहित; लकित विनाले. भक्ति रहित, भक्ति विना का. devoid of devotion. नाया० १६;

**अभत्तिमंत.** त्रि० ( अभक्तिमत् ) लकित वि-



नामो. भक्ति रहित. Void of devotion  
भक्त० ७२;

**अभयंकर पु०** ( अभयङ्कर-अभयं प्राणिरक्षा-  
रूप स्वयं हिसानिवृत्तत्वेन परतश्च हिसां मा  
कार्पांरित्युपदेशदानेन करोतीत्यभयङ्कर )  
सर्वं श्रुते पोते अलपदान आपी भीमनी  
पासे अलप अपावनार भडत्मा सम्पूर्ण  
जीवों को स्वयं अभयदान देकर दूसरो से भी  
अभय दिलाने वाला महात्मा. A great  
person protecting living beings  
against injury personally and  
through others. “ अभयकरे वीरे  
अणतचक्खु ” सूय० १, ६, २५,

**अभयंकरा स्त्री०** ( अभयङ्करा ) १७मा तीर्थ-  
कर-कुंथुनाथस्वामी प्रव्रज्या लेती वपते ने  
पाणभीमां भेदा उता ते पाणभीनु नाम  
सम्रहवे तीर्थकर कुंथुनाथस्वामी दीक्षा लेते समय  
जिस पालकी में बैठे थे उस पालकी का नाम  
Name of the palanquin used  
by Kunthunātha Svāmī, the  
seven-teenth Tirthankar  
a, at the time of his Pravrajyā  
सम० प० २३१,

**अभयकुमार पुं०** ( अभयकुमार ) श्रेणिक  
राजनी पुत्र; विशेषभाटे लुओ ‘ अभय-य’  
शब्दने भीने अर्थ श्रेणिक राजा का पुत्र,  
विशेष जानने के लिये देखो ‘अभय-य’ शब्द  
का दूसरा अर्थ Son of king Śienika,  
vide ‘अभय-य’ नाया० १,

**अभयकुंदा स्त्री०** ( अभयनन्दा ) नन्दा राणीने  
पुत्र, बुद्धिनिधान अलपकुमार नन्दा रानी  
का पुत्र, बुद्धिनिधान अभयकुमार Abha-  
yakumāra the son of queen  
Nandā अणुत्त० १,

**अभया. स्त्री०** ( अभया ) ६२३. हर, हरितकी

Name of a plant, the myrobalan  
tree or its fruit प्रव० १०१६, ( २ )  
दधिवहन राजनी अलया नामे ओक राणी.  
Abhayā, a queen of king Da-  
dhivāhana तंडु०

**अभवत्थ पु०** ( अभवत्थ-भवे संसारे न ति-  
ष्ठतीत्यभवत्थ ) भव-संसारमा न इरनारः  
सिद्धभगवान् संसार में न फिरने वाला,  
सिद्ध भगवान् An emancipated  
soul, a Siddha. भग० ८, २;

**अभवसिद्धि. त्रि०** ( अभव्यसिद्धि ) लुओ।  
‘अभवसिद्धिय’ शब्द देखो ‘अभवसिद्धिय’  
शब्द Vide ‘अभवसिद्धिय’ क० प० ५,  
७०,

**अभवसिद्धिय-अ पुं०** ( अभव्यसिद्धिक-  
न भव्यसिद्धिकोऽभव्यसिद्धिक ) सिद्धि पागवाने  
अयोग्य, अव्यय श्रु सिद्धि पाने के अयोग्य,  
अभव्य जीव A soul not fitted to  
get absolution “ गेरइया दुविहा  
प० त० भवसिद्धिया चेव अभवसिद्धिया  
चेव ” ठा० १, १, राय० ७६, अणुजो०  
१४५, भग० १, ६, ३, १, ६, ३, ४, १०;  
८, २; १६, १, २५, १०,

✓ **अभविंसु धा० भूत० प्र० व०** ( अभूवन् )  
भू धातुना भूतकालना प्रथम पुरुषनु णडु-  
वयन भू वातु के भूतकाल का प्रथम बहुवचन.  
They became, they were सूय०  
१, २, ३, १६,

**अभविय पु०** ( अभव्य ) लुओ। ‘ अभव्य ’  
शब्द देखो ‘ अभव्य ’ शब्द Vide  
‘ अभव्य. ’ दसा० १०, ३; क० प० १, ६३;

**अभव्व पु०** ( अभव्य ) सिद्धि भेगववाने अयोग्य;  
अव्यय श्रु सिद्धि प्राप्त करने के अयोग्य;  
अभव्य जीव. A soul not fitted



to get salvation विशेष ४११; क० गं० ३, २३; ४, २२; क० प० १, १८, पंचा० ३, ६, ४६;

अभवत्त. न० (अभवत्त्व) अव्ययपणुं, मोक्ष प्राप्तवाने अव्ययपणुं अव्ययता; मोक्ष पाने की अव्ययता Unfitness for attaining to final bliss क० गं० ४, ६६;

अभाव पुं० (अभाव) दुस्सित भाव, निन्द्य भाव दुस्सित भाव, खोटा भाव, निन्द्य भाव Bad or wicked thought. “सुशिया भाव साणस्स, सूयरस्स नरस्स य” उक्त० १, ६; (२) अव्यय, निषेध अभाव, निषेध, नैर मौजूदगी absence, negation भग० ४२, १; पिं० नि० २०४, विशेष २८६, पंचा० ३, २३;

अभावित त्रि० (अभावित) बोध न पायेला बोध न पाया हुआ Not enlightened प्रव० ८६२,

अभाविय-अ, त्रि० (अभावित) सम्भववाने योग्य नहि, अव्यय, अनुभवरहित. समझाने के अव्यय, अनुभव रहित Unfit; inexperienced. “अभाविया परिसा ” ठा० १०, पिं० नि० ६४१; ओष० नि० ५५६,

अभावुग, त्रि० (अभावुक-न भावुकमभावुकम्) भीष्म वस्तुने योग्य पानीने पणु तेना गुणुभा परिणुत न थना पोताना स्वरूपभावा अवस्थित रहे ते दूसरी वस्तु का संयोग मिलने पर भी जो उसके गुणों में परिणामित न होकर निज स्वरूप में ही स्थित रहे वह Maintaining one's own quality inspite of contact with another object and its qualities ओष० नि० ७७३;

अभास पुं० (अवभास) प्रकाश; अण्ड. प्रभा, कलक, आभास Lustre; light पञ्च० २;

अभासअ. पुं० (अभाषक) लुओ ‘अभासग’ शब्द देखो ‘अभासग’ शब्द. Vide ‘अभासग’, विशेष १४८, भग० १, १०; ६, ३;

अभासग. त्रि० (अभाषक) भाषापर्याप्ति विनाने; अवेन्द्रिय, अव्यगी, सिद्ध, वाटे नहेते अव्य वगेरे भाषापर्याप्ति रहित, एकेन्द्रिय, अव्यगी, सिद्ध आदि जीव. Having no speech development; e g. a one sensed being etc जीवा० ८,

अभासा. स्त्री० (अभाषा) मृषा अने सत्य-मृषा अने प्रकाशनी भाषा; भोटुं अथवा मिथ्र भोलवु ते मृषा और सत्यमृषा यह दो प्रकार की भाषा; झूठ अथवा झूठसच मिला हुआ बोलना False or half-false speech; untrue or half-true words भग० २५, ३;

अभासित्ता सं० क० अ० (अभाषित्वा) भोल्या विना, भाषणु कर्था विना बिना बोले बिना भाषण किये Without speaking, without having spoken ठा० ३, २;

अभासिय त्रि० (अभाषित) न भाषेला; न डलेल न कहा हुआ Not said, unsaid, unspoken क० प० ७, २६;

अभासिय त्रि० (अभाषिक) दीप्ति-प्रकाश विनाना पदार्थ-भूमि आदि. प्रकाश रहित पदार्थ-भूमि आदि (Things like earth etc) without light or lustre. क० प० ७, २६;

अभि. उप० (अभि) अभिमुख अभिमुख, In front राय० ५७;

अभिप्रावण त्रि० (अभ्यापन्न) स-मुख आवेल. सामने आया हुआ, Come towards or in the direction सूय० १, ४, २, १४;

**अभिज्ञ. न० ( अभिजित् )** अहं जेनो देवता छे जेवुं नक्षत्र, अभिजित्-अभिय नामे नक्षत्र जिसका देवता ब्रह्म है वह नक्षत्र, अभिजित् नामक नक्षत्र Name of a constellation styled as Abhijit " दो अभिर्ज्ञ " ठा० २, ३, अणुजो० १३१, जीवा० ६, जं० प० ७, १५१, सू० प० ६; ( २ ) वीतभय नगरना उदायन राजानो पुत्र-अभिजितकुमार, छे जेने पिताजे शत्रु न आपवाथी तेना उपर द्वेष रह्यो छतो, तेथी श्रावकपणुं लीधा छतां विराधक थछ ते असुरकुमारमां उपज्यो वीतभय नगर के उदायन राजा का पुत्र अभिजितकुमार, जिसे कि पिता के राज्य न देने से उस पर क्रोध उत्पन्न हुआ था, जिससे श्रावक के व्रत ग्रहण करने पर भी विरावक होकर वह असुरकुमार जाति के देवों में उत्पन्न हुआ Abhijitakumāra, the son of king Udāyana of the city of Vitabhaya His father did not give him the throne and so he bore grudge towards him The result was that inspite of having accepted the Jainalayman's vow, he violated them and consequently had to take birth as Asurakumāra. भग० १३, ६;

✓ **अभिजंज** धा० I ( अभि+युज् ) भोलपु; वात चीत करपी बोलना, वात चीत करना To speak ( २ ) वशीकरण करवुं वशीकरण करना to enchant, to fascinate ( ३ ) आलिंगन करवुं आलिंगन करना. to embrace.

अभिजंजे वि० ' अयाइसुद्धं वययां भिजंजे ' सू० १, १४, २४,

अभिजंजित्ता. सं० कृ० विवा० २,

**अभिज्ञोग. पुं० ( अभियोग-अभियोजनमभि-**

योग. ) दयाणु, अलाटकार, जपरदस्ती. दबाव, जवरदस्ती Pressure, force सू० २, ६, १७, प्रव० ६५३, ( २ ) आज्ञा, हुक्म; आज्ञा command; order ओव० ठा० १०, ( ३ ) मंत्र, जंत्र वगेरेथी वशीकरणो प्रयोग करवो ते, जेथी आलियोगिक जतना छलका देवतामां उत्पन्न थयुं पडे तेवी लावना. मन्त्र, तन्त्र आदि वशीकरण का प्रयोग करना, जिससे अभियोगिक जाति के नीचश्रेणी के देवों में उत्पन्न होना पड़े ऐसी भावना fascination by charms and incantations, thought activity leading to birth among lower gods like Abhiyogika उत्त० ३६, २६४,

**अभिज्ञोगिय** पुं० स्त्री० ( अभियोगिक ) तावेदार-नौकर देवता, छलकी जतनुं काम करनार देवता हलकी श्रेणी के काम करने वाला देव, तावेदार-नौकर देव. A subordinate kind of gods, a lower class or order of deities. जीवा० ३, ३,

**अभिज्ञोगी** स्त्री० ( अभियोगी-आ समन्ता-दाभिमुख्येन युज्यन्ते प्रेक्ष्यकर्मणि व्यापार्यन्त इत्याभियोग्या. किङ्करस्थानीया देवविशेषा-स्तेपामियमाभियोगी ) आलियोगिक देवतामां उत्पन्न थयु पडे तेवी लावना, मन्त्र, जंत्र, वशीकरण आदि प्रयोग ऐसी भावना जिससे अभियोगिक देवों में उत्पन्न होना पड़े, मन्त्र, तन्त्र, वशीकरण आदि प्रयोग Practice of fascination by charms and incantations, leading to a birth among lower deities called Abhiyogika उत्त० ३६, २६४; प्रव० ६४८,

✓ **अभिकंख. धा० I. ( अभि+काङ्च् )**

धृ०, धृ०, धृ०, इच्छा करना; चाहना.  
To wish, to desire.

अभिकंखण् दस० १०, १, १२;

अभिकंखसि आया० २, १, ६, ३३;

अभिकंखेज्ज वि० सूय० १ २, २, २६;

अभिकंखे वि० सूय० १, २, २, २७;

अभिकंख सं० कृ० आया० २, ४, १, १३३;

अभिकंखमाण व० कृ० दस० ६, ३, २,

अभिकंखि त्रि० ( अभिकाङ्क्षिन् ) आकांक्षा  
राभनार, धृ०, धृ०, आकांक्षा रखने  
वाला, इच्छा करने वाला (One) desiring,  
(one) having a desire उत्त० ३२,  
१७,

अभिकंखंत त्रि० ( अभिक्रान्त ) लुप्त  
उद्ध्वी गये; भोतनी नष्ट आवेक्ष जुवानी  
को उलाघ चुका हुआ, मृत्यु के समीप पहुंचा  
हुआ. Past the period of youth,  
nearing death आया० १, २, १, ६३;  
( २ ) पराभव पाये, चेतनरहित पराभव  
पाया हुआ; चैतन्यरहित overpowered,  
deprived of consciousness आया०  
२, १, १, २, ( ३ ) प्रवृत्त थये  
प्रवृत्त, काममें लगा हुआ set to work;  
engaged in working सूय० २, २,  
२६;—किरिया स्त्री० (—क्रिया ) यरक्ष  
आदि पंथना साधुओंमें न सेवेक्षी नृप्या, न  
मदानमा भीष्म डोई मतना त्यागिओ। उतर्या  
न होय ते मदान चरक आदि संप्रदाय के  
साधुओं द्वारा सेवन न की हुई जगह, जहा दूसरे  
किसी मत के साधु न उतरे हों वह स्थान a  
house in which ascetics of  
other religious orders are not  
lodged आया० २, २, २, ८०,—कूर-  
कम्म त्रि० (—कूरकर्मन् ) कूरकर्म—हिसादि  
क्रियाभा प्रवृत्त थये। कूरकर्म—हिसादि क्रिया

में प्रवृत्त (one) engaged in cruel  
acts, e. g. killing etc. सूय० २, २,  
३२;

✓ अभिककम धा० II. ( अभि+क्रम् )  
सन्मुख आवपुं; रहामे आवपुं सन्मुख आना;  
सामने आना. To come towards  
अभिकमेइ. सूय० २, १, ६;

अभिकम्माय स० कृ० सूय० १, १, २, २६;

अभिककमण न० ( अभिक्रमण ) सन्मुख  
जपुं; रहामे आवपुं ते. सन्मुख जाना, सामने  
आना. Act of coming or going  
towards. सूय० १, ८, ८,

अभिकखणं. अ० ( अभीक्ष्णम् ) निरंतर, पुनः  
पुनः; बारबार सदा, बार बार Fre-  
quently, continually “ एगे समुप्प-  
ज्जेजा अभिक्खणं इत्थिकहं भत्तकह ” ठा०  
२, ४, नाया० १; २, ८, १३, १४, १६; भग०  
१, २, ७, ७, ६, १५, १, उत्त० ११, २, २७,  
४, ११, आया० २, २, २, ७७, सूय० १,  
४, १, ३, ठा० ४, २, सम० २०, पण्ह० २,  
४, जं० प० १, १०; दस० ५, १, १०, पिं०  
नि० ३८७; ५८५; पञ्च० १७, निसी० १२, ३,  
दसा० १, ११, २, ८; ६, ६, १; कप्प० ६,  
४४,—णाणोवओग पुं० (—ज्ञानोपयोग )  
बारबार ज्ञानमा उपयोग लगावो ते, तीर्थंकर  
नामगोत्र आधवाना २० प्रक्षारमानो जेड.  
बार बार ज्ञान में ध्यान लगाना, तीर्थंकर  
नामगोत्र को वावने के २० भेदोंमें से एक भेद.  
repeated contemplation of know-  
ledge, one of the twenty varie-  
ties of attaining to the Tir-  
thankara Nāma-gotra. नाया० ८;  
अभिक्खा स्त्री० ( अभिक्खा ) नाम, संज्ञा.  
संज्ञा; नाम Name; appellation;  
denomination विशेष० १०४८,

**अभिक्षालाभिय पुं०** ( अभिक्षालाभिक )  
 गोथरी संयधी अभिग्रहविशेष धरनार सधु.  
 भिक्षा-गोचरी सम्बन्धी अभिग्रहविशेष धारण  
 करने वाला साधु An ascetic observ-  
 ing a particular vow as regards  
 begging of alms or food ओव०

**अभिगंतुं** हे० कृ० अ० ( अभिगन्तुम् ) लण्-  
 वाने जानने को In order to know.  
 क० प० १, १०२,

✓ **अभिगच्छ** धा० I (अभि+गम) सन्भुभ  
 न्नुं सन्मुख जाना. To go towards  
 (२) नेउवु जोडना. to join (३) पाधवुं  
 बाधना. to acquire (४) प्राप्त करवुं  
 प्राप्त करना to obtain

**अभिगच्छइ-**ति नाया० १; दस० ४, २१,  
 २२, ६, २, २, २२, सूय०  
 १, १, २, २७, राय० २३५,

**अभिगच्छंति** भग० २, ५,

**अभिगच्छिज्जा** वि० दस० ५, १, १४,

**अभिगच्छिहिइ** भ० नाया० १८,

**अभिगज्जंत.** व० कृ० त्रि० (अभिगर्जत्) सन्भुभ  
 गर्जना करतो सामने गर्जना करता हुआ  
 Roaring in front of नाया० ८, १८,

**अभिगम पुं०** (अभिगम) सन्भुभ न्नुं, रडामे  
 न्नुं सन्मुख जाना, सामने जाना Going  
 in front of, going towards भग०  
 २, ५, ६, ३३, नाया० १, ( २ ) उपदेश  
 साधुवाणी थतो ओध उपदेश सुनने से  
 जो बोध हो वह knowledge acquired  
 by hearing a religious sermon  
 प्रव० ६६३, जीवा० १, ठा० २, १, दस० ६, ४,  
 २, ३, भग० १, ६, ( ३ ) साधुओंनी पासे  
 न्ता उपाश्रयनी हदमा दापल थती वपते  
 आवडोये सचित्तवस्तुतो त्याग करवो, पडेरल  
 वस्त्रो व्यवस्थित मर्यादाभा रापवां, अभी  
 उपर पेस-हुपटानो उत्तरासग करवो, ओहाथ  
 नेडी अनलि पाधवी अने मननी वृत्तिओ



ओकाग्र करवी ओ पाय नियम सायववा ते, आ-  
 वडनां पाय अभिगमन साधुओं के समीप जाते .  
 समय उपाश्रय की सीमा में प्रवेश करते ही आवको  
 का सचित्त वस्तु का त्याग करना, पहिरे हुए  
 वस्त्रों को व्यवस्थित मर्यादा में रखना, दुपट्टे  
 का उत्तरासग ( मुह पर ) करना, दोनों हाथ  
 जोडना और मनोवृत्तियों को एकाग्र करना इन  
 पांच नियमों का पालन करना, आवक के पांच  
 अभिगमन observance by a layman  
 of the five rules (e g abandoning  
 things with life or living beings in  
 them, covering the mouth with  
 a garment, folding of hands  
 etc while entering an Upāsāya  
 and approaching an ascetic राय०  
 २७८, —रुइ. स्त्री० (—रुचि) उपदेश साधुनी  
 थओल तत्परुचि, समदिततो ओड प्रधार.  
 उपदेश सुनने में जो तत्परुचि हुई हो वह  
 सम्यक्त्व का एक भेद desire for right  
 knowledge engendered by  
 listening to a religious sermon.

पञ्च० १; उत्त० २८, प्रव० ६६४;  
—सम्मदं सण न० (सम्मदं दर्शने) नव-  
तत्त्वनी परीक्षापूर्वक समझित प्राप्त थाय ते,  
नव तत्त्वनी समझणपूर्वकनुं सम्यक्त्व. नव  
तत्त्वों की परीक्षापूर्वक जो सम्यक्त्व प्राप्त हो वह,  
नव तत्त्व का ज्ञानपूर्वक सम्यक्त्व. right  
belief after due examination of  
the nine categories. “ अभिगम-  
सम्मदसणे दुविहे प० तं० पडिवाई चैव  
अपडिवाई चैव ” ठा० २, १;

**अभिगमण.** न० ( अभिगमन ) सन्मुख जाना, समीप  
जाना. Act of going towards,  
approaching भग० २, १, ६, ३३, राय०  
६७; दसा० १०, १, जं० प० ५, ११७;—अहु.  
न० (—अर्थ ) रहामे जवाने भाटे सामने जाने  
के लिये in order to go towards or  
to approach नाया० १२, (२) ओध-  
ज्ञानभाटे बोध-ज्ञान के लिये in order  
to acquire knowledge. नाया० १२;  
—जोग्ग त्रि० (—योग्य ) सन्मुख जवाने  
योग्य सन्मुख जाने के योग्य. worthy of  
being approached राय०

**अभिगमणया.** स्त्री० (अभिगमनता-अभि-  
गमन ) रहामे जवुं सामने जाना. Going  
towards, approaching ओव० २७,

**अभिगमणिज्ज.** त्रि० ( अभिगमनीय ) आक्षीने  
रहामे जवा योग्य चलकर सन्मुख जाने योग्य  
Worthy of being honoured  
by going forward to meet. राय०

**अभिगय.** त्रि० ( अभिगत ) ज्ञानेधु; सम-  
झेधु, जाना हुआ; समझा हुआ Known;  
comprehended. ओव० ४०; नाया०  
५, ८; १२; १४; भग० २, ५; ७, ६, १८,  
१०; (२) प्राप्त करेधु; सन्मुख आवेधुं  
प्राप्त किया हुआ, सन्मुख आया हुआ.

obtained, approached; come  
towards. ओव० ४०;—अहु. त्रि०  
(—अर्थ ) जेहे अर्थ ज्ञायो छे ते, अर्थने  
निश्चय करनार. जिसने अर्थ जाना है वह, अर्थ  
का निश्चय करने वाला. (one) who has  
comprehended the meaning.  
नाया० १; भग० २, ५, कप्प० ४, ७२;  
—जीवाजीव. पुं० स्त्री० (—जीवाजीव )  
जेहे जिव अने अजिवनुं स्वरूप ज्ञायु छे ते  
जिसने जीव और अजीव का स्वरूप जाना है  
वह. ( one ) who has compre-  
hended the nature of the  
soul and the non-soul विवा० १;  
नाया० १२; दसा० १०, ७; ८;

**अभिगहिअ** न० (अभिगृहीत) गुण, अवगुण  
ज्ञायो विना कुभतने आग्रह करेवो ते.  
गुण, दोष को जाने बिना अपने मत का आग्रह  
करना Obstinately persisting  
in one's own belief or opinion  
without regard to merits or  
demerits. क० गं० ४, ५४;

✓ **अभिगाह** धा० I. ( अभि+गाह् ) सेवधुं,  
भोगवधुं सेवन करना, भोगना To resort  
to; to enjoy; to experience.

अभिगाहइ आया० १, २, २, ७४,

✓ **अभिगिज्झ** धा० I ( अभि+गृह् ) गृहि-  
धुं, लेली धनधुं. लोभी बनना, किसी विषय  
में आसक्त होना To be greedy of, to  
covet. (२) स्वीकारधुं. अगीकार करना.  
to accept

अभिगिज्झंति सूय० २, २, ५७;

अभिगिज्झ सं० कृ० ठा० २, १, दस० ७, १७;

✓ **अभिगिरह** धा० II ( अभि+गृह् ) अभि-  
ग्रह धारण करेवो; नियमविशेष धारणे;  
आहारादि लेवामां द्रव्य, क्षेत्र, दाण अने लावथी  
अभुद्धि पांधवी. अभिग्रह धारण करना;



नियमविशेष का धारण करना, आहारादिक लेने में द्रव्य, क्षेत्र, काल या भाव के अनुसार अमुक सीमा बाधना. To take a vow, to observe certain restrictions in the matter of food etc. (२) ग्रहण करने, स्वीकार करना to accept

अभिगेहहृ. भग० ७, ६,

अभिगिरहृ नाया० १३, १६; भग० ३, १,

अभिगिरिहस्सामि. भग० ३, १;

अभिगिरहस्सामि. भग० ११, ६,

अभिगिरहृत्ता सं० कृ० भग० ३, १; ७, ६; नाया० १६;

अभिगह पुं० (अभिग्रह) आहारादि छोड़ना-भा दुंदी मर्यादा बांधनी ते, अमुक वेष के रंगने। भाषुस अमुक स्थितिमां आपे तोलेवु धत्यादि नियमधारणे ते आहारादि ग्रहण करने में मर्यादा-बाधना, अमुक वेष या वर्ण का मनुष्य अमुक-स्थिति में देवे तोही आहारादि लेना इस प्रकार का नियम धारण करना Imposing various kinds of voluntary restrictions upon oneself in the matter of accepting food etc e g to accept food from a person of a particular colour etc. नाया० १३, १६; ओव० १६, भग० ३, १, ७, ६, उत्त० ३०, २५, कप्प० ४, ६४, निर० ३, ३, पिं० नि० १३८, (२) स्त्री० जेनेो अर्थ अशय्यर स-भण शक्य तेवी भाषा जिसका अर्थ बराबर समझ में आ सके ऐसी भाषा clear and intelligible language पज० ११, (३) ग्रहण करने, हाथमा लेवु ते ग्रहण करना, हाथ में लेना accepting; act of undertaking ओव० १६, (४) आग्रह; पकड़ आग्रह, पकड़, obstinately holding

fast to anything, insistence. प्रव० ६०२,

अभिगहिय. त्रि० (अभिग्रहिक) कुमतनी पकड़ करना, दुराग्रही, अलिग्रहिक मिथ्यात्व-वाणे। कुमत की पकड़ करने वाला, दुराग्रही, अभिग्रहिक मिथ्यात्व वाला. (One) obstinately holding fast to a wrong doctrine or heretical belief ठ० २, १, (२) न० कुमतनी पकड़ करवी ते, अलिग्रहिक नामे मिथ्यात्व कुमत सबन्धी हठ करना; अभिग्रहिक नामक मिथ्यात्व stubborn maintenance of heretical faith. ठ० २, १, (३) स्त्री० जेनेो अर्थ स्पष्ट समझ शक्य तेवी भाषा ऐसी भाषा, जिसका अर्थ स्पष्टता से समझ में आ सके lucid and perspicuous language. भग० १०, ३,

अभिगहिय त्रि० (अभिगृहीत-अभि-आभि-मुख्येन गृहीत) जे आपतनेो अलिग्रह दीधेल होय ते जिस बाबत अभिग्रह लिया हो वह (An object, a matter) in connection with which a vow is taken or a restriction is imposed 'नो कप्पह निगंथाय वा निगंथीय वा अणभिगहियसिज्जा-सणिए ण हुत्तए' कप्प० ६, ५४; —सिज्जासणिय त्रि० (—शय्यासनिक) जेजे शेज्ज, आसन ग्रहण कर्या छे ते (साधु) जिसने शय्या और आसन ग्रहण किया हो वह (साधु) (an ascetic) who has accepted a seat and a bed कप्प० ६, ५४;

अभिघट्टियमाण व० कृ० त्रि० (अभिघट्टयमाण) वेगथी होउतो वेग से-शीघ्रता से दौड़ता हुआ. Running fast; scampering. राय० १३९,



अभिघडिज्जमाण व० कृ० त्रि० (अभिघट्ट्य-  
मान) लुओ 'अभिघट्टियमाण' शब्द देखो  
“अभिघट्टियमाण” शब्द Vide ‘अभि-  
घट्टियमाण’ राय० १३०;

अभिघाय पुं० (अभिघात) लाडडी वगेरेथी  
प्रहार भारवा ते, गोक्षु वगेरेथी गोणा ड़ेडवा  
ते लकडी वगैरह से प्रहार करना, गोफन  
वगैरह से गोला फेंकना. Act of giving  
blows with a stick etc, throwing  
missiles by a sling etc परह० १,  
१, कप्प० ३, ४३;

अभिचंद. पुं० (अभिचंद्र) अंधकवृष्णि  
राजनी धारणी राजीना पुत्र, डे ने नेमनाथ  
अशु पासे दीक्षा लध, गुणुरयणु तप करी, सोण  
वरसनी प्रवज्या पाणी, ओड भासनेो संभारे  
करी, शत्रुजय छिपर निर्वाणु पढ पाभ्या अंधक-  
वृष्णि राजा की धारणी नामक रानी का पुत्र,  
जिसने नेमिनाथस्वामी से दीक्षा ली और गुण-  
रयण तप किया तथा सोलह वर्ष तक प्रवज्या  
पालनकर अंत में एक मास का संयारा कर  
शत्रुजय पर निर्वाण प्राप्त किया Name of  
the son of Dhāranī the queen  
of king Andhakavrisnī He  
took Diksā from Lord Neminā-  
tha, practised Gunaryan pena-  
nce, observed ascetic vows for  
sixteen years and after one  
month's Santhārā got salvation  
on Śatruñjaya अंत० २, ८, (२)  
अंतगड सूत्रना भीज वगैना आहमा अध-  
यननु नाम अंतगड सूत्र के दूसरे वर्ग के  
आठवें अध्याय का नाम. name of the  
eighth chapter of the second  
section of Antagada Sūtra अंत०  
२, ८; (३) द्विसना छडी मुहूर्तनु नाम  
दिन के छठे मुहूर्त का नाम. name of

the sixth Muhūrta of a day.  
सू० प० १०, सम० ३०; (४) यालु अव-  
सर्पिणीमां भरतक्षेत्रना पंदरमांना दशमा अने  
सातमांना योथा कुलगरनु नाम. वर्तमान अव-  
सर्पिणी काल के पंद्रह कुलकरो मे से दसवे और  
सात कुलकरो में से चौथे कुलकर का नाम  
name of the tenth of the fifteen  
and the fourth of the seven  
Kulagaras of Bharataksetra in  
the present Avasarpinī. जं० प०  
२, २८, सम० १५६, (५) महावज राजनेो  
ओड अभियंद नामथी प्रसिद्ध मित्र  
महाबल राजा का अभिचन्द नामक एक प्रिय  
मित्र. name of a beloved friend  
of king Mahābala नाया० ८;

अभिजयंत न० (अभिजयन्त) माणुव गणुथी  
नीक्षेज कुणनुं नाम माणव गण से निकले  
हुए कुल का नाम Name of a family  
descended from Mānavagana.  
कप्प० ८,

✓ अभिजा. धा० I. (अभिजा) नगरथी  
ज्हार ननुं. नगर से बाहिर जाना To go  
out of a town.

अभिजाहिति भ० भग० १५, १;

अभिजाइ. स्त्री० (अभिजाति) कुलीनपणुं,  
आनदानी कुलीनता; खानदानी Nobi-  
lity. उत्त० ११, १३,

अभिजाइअ. त्रि० (अभिजातिग) लुओ  
“अभिजाइग” शब्द देखो ‘अभिजाइग’  
शब्द Vide ‘अभिजाइग’. उत्त० ११,  
१३;

अभिजाइग त्रि० (अभिजातिग-अभिजाति)  
कुलीनतां गच्छतीत्यभिजातिगः) कुलीन, आन-  
दान. कुलीन, उच्च कुल का. Noble; born  
in a high family. कलहडगरवजण, उड्डे  
य अभिजाइगो’ उत्त० ११, १३;

✓ अभिजाण धा० I ( अभि+ज्ञा ) ज्ञातुं;  
समज्जुं जानना; समझना To know,  
to understand.

अभिजाणंति सू० १, १, २, १३,

अभिजाणामि. उत्त० २, ४०,

✓ अभिजाय धा० I ( अभि+जन् ) जन्मवुं,  
उत्पन्न थवुं, उपज्जु जन्मना; उत्पन्न होना,  
To be born.

अभिजायइ उत्त० ३, १७;

अभिजाय-अ त्रि० (अभिजात-अभि-प्रशस्त  
जातं जन्म यस्य स तथा ) कुलीन, आनन्दन  
कुलमां जन्मेव. कुलीन, उच्च कुल मे जन्मा हुआ  
Noble, born in a high family  
भग० ६, ३३, उत्त० ३, १८, ( ३ ) अगीयारसनु  
नाम, पक्षना अगीयारमा द्विसनु नाम ग्यारस  
का नाम, पखवाढे की एकादशी तिथि का नाम  
name of the eleventh day of a  
fortnight ज० प० ७, १५१, सू० प० १०,  
( ३ ) उत्पन्न उत्पन्न born, produced  
उत्त० १४, ६;—सङ्ग त्रि० (—अद् ) जेने  
श्रद्धा-तत्त्वस्य उत्पन्न थल होय ते जिसे  
श्रद्धा तत्त्वस्य उत्पन्न हुई हो वह ( one )  
in whom a desire for right  
knowledge has been excited  
“अभिजायसङ्गे तातं उवागम्म इमं उदाहु”  
उत्त० १४, ६,

अभिजायत्त न० ( अभिजातत्व ) भूमिधाने  
अनुसरवारूप सत्यवचनता उप अतिशय-  
माने अद् भूमिका में कहे हुए वचनों के  
अनुसार वचन, सत्य वचन के ३५ अतिशयो में  
से एक अतिशय. One of the thirty-  
five Atisayas, of truthful speech  
making a man conform to what  
he has stated in the intro-  
duction. सम० ३५;

✓ अभिजुंज धा० I ( अभि+युज् ) योज्जुं;  
जोड्जुं. जोड़ना To unite ( २ ) जोड्जुं,  
झांमे लगाड्जुं काम में लगाना, जमाना.  
to arrange, to employ. ( ३ )  
झेड्जुं; आदिगन देवुं मिलना, आलि-  
ङ्गन करना to embrace ( ४ ) वश डरुं,  
वशीकरण प्रयोग डरवे। वशीकरण प्रयोग  
करना, वश करना to enchant, to  
fascinate ( ५ ) विद्यादि सामर्थ्यथी  
प्रवेश डरवे। विद्यादि सामर्थ्य से प्रवेश करना  
to make an entrance by the  
power given by knowledge or  
science

अभिजुंजिति परह० १, २,

अभिजुंजित्तए हे० कृ० भग० ३, ५;

अभिजुंजिय सं० कृ० ठा० ३, १, भग० २,  
५, दसा० १०, ६,

अभिजुंजिया सं० कृ० सू० १, ५, २, १५,  
आया० १, २, ३, ८०,

अभिजुत्त त्रि० ( अभियुक्त ) पडित, प्राज्ञ.  
परिष्ठित, विद्वान्, प्राज्ञ Learned, wise.  
नंदी० ( २ ) अपराधी, यु-हेगार अपराधी,  
दोषी guilty, accused नाया० १४,  
अभिजेतुं हे० कृ० अ० ( अभिजेतुम् ) आरे  
तरङ्ग उत्त भेगववाते चारों ओर विजय प्राप्त  
करने के लिये In order to be  
victorious everywhere ज० प०

अभिज्झा ली० ( अभिध्या ) असतोप, लो-  
भ असन्तोष, लोभ Discontent, ava-  
rice, greed सम० ५२, ( २ ) विषय  
चिंतन, रौद्र ध्यान विषयों का निरन्तर चिन्त-  
न, रौद्र ध्यान contemplation of  
sensual pleasures, wicked con-  
centration परह० १, ३, भग० १२, ५,

अभिजिह्वयत्ता ली० ( अभिधेयता-अभि-  
ध्यातु योग्योऽभिधेयोऽनृततया पुन पुनर-

मिलपणीयस्तद्भावस्तथा ) अतृप्ति; वस्तु  
भेगववाने वारंवार उद्भवती धृष्टा वस्तु-  
विशेष को प्राप्त करने के लिये बार बार उत्पन्न  
होने वाली इच्छा; असन्तोष Restless  
longing after an object; want  
of contentment. “ अभिङ्गुयत्ताए  
अहत्ताए नो उद्धत्ताए दुक्खत्ताए नो सुहत्ताए  
एतेसिं भुज्जो भुज्जो परिणमंति ” पञ्च० २८,  
भग० १, १; ६, ३;

अभिङ्गुय. त्रि० ( अभिद्रुत ) गर्भाधानादि  
दुःखी पीडयेत् गर्भाधानादि दुःखों से  
पीडित Troubled with the pain of  
pregnancy etc सूय० १, २, ३, १८;  
नाया० ६, ( २ ) अध्यवसायरूपे व्याप्त  
अध्यवसायरूप से व्याप्त. pervading  
through or by the instrumenta-  
lity of thought activity. सूय०  
१, २, ३, १८;

✓ अभिङ्गु. धा० I. ( अभि+नन्द ) स्तुति  
करनी, अभिनन्दन आपवु स्तुति करना, अभि-  
नन्दन करना To praise, to congratu-  
late. ( २ ) अनुमोदन आपवु; भुशी  
थयुं; समति आपवी अनुमोदन करना, सम्मति  
देना, खुश होना to support, to give  
consent to; to be delighted.

अभिङ्गुद्व संत्था० २६,

अभिङ्गुद्वति भग० ६, ३३,

अभिङ्गुदिज्जा. वि० उत्त० २, ३३;

अभिङ्गुद्वंत व० कृ० ओव० ३२, भग० ६, ३३,

ज० प० २, ३०; नाया० १, ८,

अभिङ्गुद्वमाण व० कृ० कप्प० ५,  
१०४,

अभिङ्गुद्विज्जमाण. क० वा०

३२, नाया०

अभिङ्गुद्व पुं० ( अभिनन्द ) आपवु भक्षिनायुं  
लोकोत्तर नाम श्रावण मास का लोकोत्तर  
नाम The celestial name of the  
month of Śrāvana सू० प० १०;

अभिङ्गुद्व पुं० ( अभिनन्दन-अभिनन्दते  
देवेन्द्रादिभिरित्यभिनन्दन ) आपवु अवसर्पि-  
णीमां भरतक्षेत्रना योथा तीर्थक्षरनुं नाम  
वर्तमान अवसर्पिणी काल में भरतक्षेत्र के चौथे  
तीर्थकर का नाम Name of the fourth  
Tirthankara of Bhartakse-  
tra in the present Avasarpinī  
अणुजो० ११६; भग० २०, ८; सम० २४;

✓ अभिङ्गुच्च धा० I ( अभि+नृत् ) ना-  
चयुं, नृत्य करवु नाचना, नृत्य करना To  
dance.

अभिङ्गुच्च वि० निसी० १७, ३२;

अभिङ्गुय पुं० ( अभिनय-अभिनयति बोध-  
यत्यर्थमित्यभिनयः ) ओगण्णिसगा भक्षिनाथ  
तीर्थक्षरना गणधरनुं नाम उर्द्धासवे तीर्थकर  
मल्लिनाथ के गणधर का नाम. Name of  
the Ganadhara of the nine-  
teenth Tirthankara Mallinātha.  
सम० प० २३३; ( २ ) अभिनय, भावव्यञ्ज  
येष्टविशेष; नाट्यकलायु प्रधान अंग अभिनय;  
नाट्यकला का एक प्रधान अंग dramatic  
gestures, acting ‘चउन्विहे अभिङ्गुए  
परणत्ते, तंजहा-दिद्विहिए पाडिसुए सामंतो-  
वणिए लोगमज्झवासिए ‘ जं० प० राय०  
६६, जीवा० ३, ४,

अभिङ्गुव. त्रि० ( अभिनव ) नवीन, नूतन;  
नयु नवीन, नया New; novel जीवा० ३;

अभिङ्गुय पुं० ( अभिनादित ) आपवु भा-  
नुं लोकोत्तर नाम श्रावण मास का लोकोत्तर

नाम. The celestial name of the month of Śrārvana ज० प०

अभिलिखित त्रि० ( अभिनिष्क्रान्त )  
आचारांगादि शास्त्रना अर्थतुं मनन  
करवाधी चारित्ररूप परिणाम जेतो  
वृद्धिगत थयो छे ते आचारागादि शास्त्रो  
के अर्थका मनन करने से जिसका  
चारित्ररूप परिणाम वृद्धि को प्राप्त  
हुआ है वह Developed in  
light conduct on account of the  
study of and meditation  
upon Śāstras like Āchārāṅga  
etc आया० १, ६, १, १७६,

✓ अभिलिखिच्छ धा० I ( अभि+नि+गम् )  
ज्झर नीकणुं बाहिर निकलना To go  
out, to stir out

अभिलिखिच्छति नाया० १६,

अभिलिखिच्छत्ता सं० कृ० नाया० १६,

अभिलिखिज्झ सं० कृ० अ० ( अभिनिगृह्य )  
रोकने, अटकावने, निरोध करीने रोककर,  
अटकाकर Having stopped, having  
restrained आया० १, ३, ३, ११८,

अभिलिखारिया स्त्री० (अभिनिचारिका-आभि-  
मुख्येन नियता चारिकाऽभिनिचारिका )  
ऐक्यता थधने दिखरवुं ते, समुदायरूपे आ-  
लवुं ते इकट्ठे होकर विचरण करना, समुदाय-  
रूपसे चलना Moving about slowly  
in a group वव० ४, १६,

✓ अभिलिख्ज धा० I ( अभि+नी- )  
अभिनय करवे; ऐक्यता करवी, लाववववव  
ऐक्यता करवी अभिनय करना, रंगभूमि पर  
खेलना To act as in a dramatic  
performance

अभिलिख्ज् क० वा० राय० २७६,

✓ अभिलिखुज्झ धा० I. (अभि+नि+बुध्-य)

अर्थने निश्चित रीते ज्ञावुं अर्थ का निश्चित  
रीति से जानना To know a meaning  
definitely.

अभिलिखुज्झ-ए विशेष० ८१, ६८, नदी० २४;

अभिलिखोह पु० ( अभिनिबोध-अर्थाभिमुखो  
नियत. प्रतिनियतस्वरूपो बोधो बोध-  
विशेषोऽभिनिबोध, अभिनिबुध्यतेऽनेना-  
स्मादस्मिन् वाऽभिनिबोध ) भतिज्ञान; आ-  
भिनिबोधिज्ञान; पाय ज्ञानमानुं प्रथम  
ज्ञान भतिज्ञान, पाच ज्ञानों में से प्रथम  
ज्ञान Matijñāna, knowledge  
acquired by the five senses and  
the mind नदी० ( २ ) भतिज्ञाना-  
वरणीय धर्मतो क्षयोपशम भतिज्ञानावरणीय  
कर्म का क्षयोपशम destruction and  
subsidence of Kamas which  
obscure Matijñāna नदी०

✓ अभिलिखट्ट वा० I ( अभि+नि-वृत् )  
व्यावर्तन करवुं व्यावर्तन करना. To  
separate, to interrupt.

अभिलिखट्टिजा वि० आया० १, ३, ४, १२५,  
अभिलिखट्टिता सं० कृ० भग० ५, ४;

अभिलिखिट्ट त्रि० ( अभिनिविष्ट ) आग्रही,  
पकड करनार, ऐक्य निश्चयवाणो आग्रही, हठी;  
एक निश्चय वाला Determined,  
determinate, holding fast to.  
'बहि विहाराभिलिखिट्टित्ता' उक्त० १४,  
४, (२) व्याप्त थधने प्रवेश करेव, व्याप्तपणु-  
भगवत रीते ऐक्यता पामेव व्याप्त होकर  
प्रवेश किया हुआ, मजबूत रीति से मिला हुआ.  
strongly and thoroughly assimila-  
tated, entered through and  
through भग० १, ७, १२, ४,

अभिलिखेस पु० ( अभिनिवेश ) पोटी पातनी  
पकड, दुराग्रह, पोटी आग्रह करवे। अमत्य

घात का आग्रह करना, झूठा आग्रह करना, दुराग्रह. Obstinacy in a wrong cause; perverseness. ओव० ४१,

अभिरिण्वगडा स्त्री० ( अभिनिवगडा-अभि-प्रत्येकं नियतो वगड परिक्षेपो यस्यां साऽभि-निवगडा ) ज्यां दरेडनी ५३५१-३६१-यो३-वा३-लु६ लु६ छे ओवी ज्या-वसति जहाँ प्रत्येक-हरएक का चौक पृथक् २ है ऐसी जगह-वस्ती A residence with a separate courtyard to the habitation of each person or family वव० ६, १६, ६, १३;

अभिरिण्वट्ट त्रि० ( अभिनिर्वृत्त ) सांगो-पाग निपन्नवेतुं; पेशीभाथी अंगोपांगरूपे परिणत थयेल सांगोपाङ्ग उत्पन्न किया हुआ, पेशी में से अंगोपाङ्गरूप परिणत Developed, produced with all parts in tact आया० १, ६, १, १७६,

अभिरिण्वुड त्रि० ( अभिनिर्वृत्त ) क्रीडादि उपायने टाणी शीतल थयेल; परम शान्ति पामेल क्रोधादि कषायों को नष्टकर शीतलता को प्राप्त, परम शांति पाया हुआ Calm and happy on account of the banishment of passions 'खंतेभिरिण्वुडे दंते, वीतगिद्धी सया जए' सूय० १, ८, २५, सूय० १, २, १, १२, ( २ ) पेशी-भाथी अंगोपांगरूपे परिणाम पामेल पेशी में से अंगोपाङ्गरूप से परिणमित with all limbs fully developed आया० १, ६, १, १७६;

अभिरिण्वड त्रि० ( अभिनि सट-अभिविधिना निर्गता सटास्तदवयवरूपा केशरिस्कन्धसटा वा यस्य तत्तथा ) जेतो अवयव ५६२ नीडगेल छे ते. जिसके अवयव बाहिर निकले

हुए हैं वह. With limbs come out, shot out, having limbs come out. भग० १५, १,

अभिरिण्विज्जा स्त्री० ( अभिनिषद्या-अभि-दिवसमभिव्याप्य स्वाध्यायनिमित्तमागत निषीदन्त्यस्यामित्यभिनिषद्या ) ज्यां भेसीने मुनि दिवसे स्वाध्याय करे ते वसति, स्वाध्यायभूमिडा जहाँ बैठकर मुनि दिन में स्वाध्याय करें वह वस्ती, स्वाध्याय भूमि. A place of study for an ascetic during day time एगंतओ अभिरि-सिज्जं अभिनिसीहियं वा चेइएत्तए ' वव० १, २२;

अभिरिण्विड त्रि० ( अभिनिसृष्ट ) ५६२ नीडगेतुं पनावेल ऐसा बनाया हुआ जो बाहिर निकला हो Made in a way to jut out or appear prominently. जीवा० ३; राय०

अभिरिण्वेहिया स्त्री० ( अभिनैषेधिकी-निषेधः स्वाध्यायं विना सकलव्यापारप्रतिषेधस्तेन निर्वृत्ता नैषेधिकी, अभिमुख्येन संयतप्रायोग्यतया नैषेधिकी अभिनैषेधिकी ) दिवसे स्वाध्याय करीने रात्रे मुनि ज्या रडे ते वसति. दिन में स्वाध्याय करके रात्रि में मुनि जहाँ रहें वह वस्ती A night-residence of an ascetic after his study during day time. वव० १, २२,

अभिरिण्वसड त्रि० ( अभिनिस्रुत ) ५६२ नीडगेतुं बाहर निकलता हुआ Projecting, coming out prominently. वहिया अभिरिण्वसडओ पभासेति ' भग० १४, ६,

✓ अभिरिण्वसव. धा० I. II ( अभि+नि+वृ ) ५६२ नीडगेतुं; अरुतुं; टपडतुं; पसरतुं बाहर निकलना; भरना; टपकना, फैलना.

To ooze, to come out, to spread

अभिणुस्सवति जीवा० ३; भग० २, ५;

अभिणुस्सवति भग० १५, १;

अभिणुस्सवति. राय० ५७,

**अभिणूमकड** त्रि० ( अभिनूमकृत-आभि-  
मुख्येन नूमेन मायया कर्मणा वा कृतम-  
भिनूमकृतम् ) भाषा ३६ धर्मथी अलिमुप डरेतुं  
माया या कर्म से सन्मुख किया हुआ Made  
to incline towards by deceit or  
any other action ' अभिणूमकडेहिं  
मुच्छिष्ट, तिव्वं से कम्मेहिं किञ्चति ' सूय०  
१, २, १, ७;

**अभिण** त्रि० ( अभिन्न ) भेदेतुं नहि, अणु-  
भेदेह, अणु३; आणु अखंड, बिना भेदा  
हुआ Not pierced, whole, entire,  
not broken वेय० १, १, ३, ८, नाया०  
८, निसी० २, २४, ६, ११, दसा० ३, ३०, (२)  
णुतुं नहि, ओझीभूत भिन्नतारहित, एकमेक  
same, not separate वव० ६, १०,  
१३, सम० ३३,—आचार पु० (—आचार-  
न भिन्नो न केनचिदप्यतिचारविशेषेण खण्डित  
आचारो यस्यासौ तथा ) अणु३ आचार-ज्ञाना-  
यारादिनो पालन करनार. अखंड आचार-ज्ञा-  
नाचारादि को पालने वाला जीव a soul ob-  
serving right conduct, in all  
respects वव० ३, ३,—गंठि पु०  
(—ग्रन्थि ) जेणुग्रंथिभेद करी ओझ वार पणु  
समहित प्राप्त कर्युं नथी ते णव जिसने ग्रंथि  
भेद करके एक बार भी सम्यक्त्व प्राप्त नहीं  
किया वह जीव a soul that has not  
even once acquired right belief,  
cutting off the knot that binds  
him पंचा० ११, ३८,—**मुहराग** त्रि०  
(—मुखराग ) जेना मोढातो-भेरातो रंग  
भेदाणु नथी ते जिसके मुख का रंग  
बदला न गया हो वह (one) with the

colour of face unaffected, un-  
changed नाया० ८;

**अभिणाय** सं० कृ० अ० ( अभिज्ञाय )  
जणुनीने; समज्जने, निर्णय करीने जान करके;  
समझ करके, निर्णय करके Having  
known, having decided आया० १,  
६, २, १८३, १, ६, १, १३,

**अभिणाय** त्रि० ( अभिज्ञात ) जणुनाभां  
आवेस जानने में आया हुआ Known;  
understood भग० ३, ७,

**अभितज्जेमाण** व० कृ० त्रि० ( अभितर्जयत )  
यारे तरङ्गथी तर्जना डरेतो चारो ओर से  
तर्जना-भर्त्सना करता हुआ Threaten-  
ing from all sides नाया० १८,

**अभितत्त** त्रि० ( अभितप्त ) अग्निथी तपा-  
वेस अग्नि से तपाया हुआ. Heated by  
fire सूय० १, ४, १, २७,

**अभितप्पमाण** त्रि० ( अभितप्यमान ) डे-  
र्यना पामतो, परिताप पामतो परिताप  
पाता हुआ Being troubled, being  
afflicted with pain सूय० १, ५,  
१, १३,

**अभिताव** पुं० न० ( अभिताप ) तापनी  
रुढाभे, सूर्यनी सन्मुख ताप के सन्मुख, सूर्य  
के सामने, In front of the sun  
आया० १, ६, ४, ४, ( २ ) सताप, दुःख,  
दाह, जलन, कष्ट.  
agony of mind, distress. सूय० १,  
५, १, १७,

**अभितासेमाण** व० कृ० त्रि० ( अभित्रासयत् )  
त्रास उपज्जतो, भय पमाडतो त्रास देता  
हुआ, भय उत्पन्न करता हुआ Frighten-  
ing, terrifying नाया० १८,

✓ **अभितुर** धा० I ( अभि + त्वर् ) उतावण  
करि; वेगथी ज्जुं शीघ्रता करना, वेग से



जाना. To make haste; to hasten.

अभितुर. आ० “अभितुर पारं गमित्तु”

उत्त० १०, ३४,

✓ अभितोस धा० I. (अभि + तुष् + णि०)

संतोष उपनयवे। संतोष देना. To satisfy, to cause satisfaction

अभितोसइज्जा वि० दस० ६, ३, ५;

✓ अभित्युण धा० I (अभि + स्तु) स्तुति

करवी; गुणगान करवा; सन्मुख रही तारीफ़ करवी स्तुति करना, सन्मुख रहकर प्रशंसा करना To praise any body in his presence.

अभित्युणति भग० ६, ३३,

अभित्युणामि. विशेष० १०५४;

अभित्युणंत व० कृ० “एवं अभित्युणंतो”

उत्त० ६, ५५, ज० प० २, ३०;

नाया० १, ओव० ३२;

अभित्युणमाण व० कृ० नाया० ८,

अभित्युण्वमाण. क० वा० व० कृ० ओव०

३२, कप्प० ५, १०४,

अभित्युय त्रि० (अभिष्टुत) विशिष्ट गुण

कीर्तन करी वर्णुवेद विशेष प्रकार के गुण कीर्तन करके वर्णित Mentioned with appreciation and praised

“एवं मए अभित्युया” आव० २, ५,

अभिदुग्ग त्रि० (अभिदुर्ग) अतिविषम, गहन

अतिविषम, गहन Very difficult of access, very dense. सूय० १, ५,

१, ८;

अभिदुदुय त्रि० (अभिदुत) दुःखना अध्व-

वसायरूपे व्याप्त. दुःख के अध्यवसाय द्वारा व्याप्त. Pervading in the form of

painful thought activity. (२)

गर्वावास आदि दुःखथी पीडयेल गर्मा-

वासादि के दुःख से पीडित troubled by

the pain of having to stay in the womb सूय० १, २, ३, १८; जीवा०

३, १;

✓ अभिधार. धा० I. (अभि + धृ + णि०)

निन्दानी धारणा राभी डोचना छिद्र उधाडा पाडवा, शत्रुनी रक्षामे छाती डोडी लडवुं.

निन्दा के भावों से किसीका दोष प्रकट करना, शत्रु के सन्मुख छाती ठोककर लड़ना.

To disclose the foibles or weak points of others with a view

to cast censure on them; to fight bravely against an

enemy

अभिधारयामो सूय० २, ६, १३,

अभिधारण. वि० उत्त० २, २१; दस० ५, २, २५;

अभिधारण न० (अभिधारण) मनमां धारणा

धारवी तै; अमुकनी पासे प्रवर्णया लक्ष्मि ओम मनमा धारवु ते मन में धारणा करना;

अमुक के पास से दीक्षा लूंगा ऐसी मन में धारणा करना Contemplating in the

mind; e g upon taking Diksā from a certain preceptor. ओष०

नि० १६६,

अभिधारणा स्त्री० (अभिधारणा) गोभ;

अरुणो; पवन आववानो मार्ग. करोखा; हवा आने की खिड़की A sheltered

window jutting out from a building generally below the

roof, a lattice window. आया० १, १, ७, १७०,

अभिनन्दण. पुं० (अभिनन्दन) लुओ “अभि-

रन्दण” शब्द देखो “अभिरन्दण” शब्द.

Vide ‘अभिरन्दण’ सम० २४;

अभिनन्दिय त्रि० (अभिनन्दित) अभिनन्दन-

आनंद पाभेल. अभिनन्दन-आनंद पाया हुआ.

Delighted; congratulated  
सम० ५;

अभिनव. पुं० ( अभिनव ) लुओ ' अभिणव ' शब्द देखो ' अभिणव ' शब्द. Vide " अभिणव " क० गं० २, ३;

अभिनिक्खंत व० कृ० त्रि० ( अभिनिष्क्रमत् ) संसार छोड़ी ऊहार नीडणतो, प्रवण्या-दीक्षा लेतो संसार छोडकर बाहर निकलता हुआ, दीक्षा लेता हुआ (One) who has abandoned the world and taken to asceticism " चिच्चा अभिनिक्खंतो, एगतमहिट्टिओ भयवं " उक्त० ६, ४; आया० १, ६, १, १७६,

✓ अभिनिक्खम. धा० I ( अभि + नि + क्रम् ) संसार छोड़ी ऊहार नीडणतुं, प्रवण्या लेवी संसार छोडकर बाहर निकलना; दीक्षा लेना To take to asceticism, abandoning the world

अभिनिक्खमाहि. आ० " आयाणहेउं अभिनिक्खमाहि " उक्त० १३, २०,

✓ अभिनिवट्ट धा० I ( अभि + नि + वृत् ) भेंथी ऊहार डाढतुं, लुहुं पाडतुं खैचकर बाहर निकालना, पृथक् करना To draw out, to sever

अभिनिवट्टिता स० कृ० सूय० २, १, १६, राय० २६८,

अभिनिवट्टेत्ता स० कृ० भग० ५, ४, ६, १०,

अभिनिवट्टमाण व० कृ० सूय० २, ३, २२,

अभिनिविट्ट त्रि० ( अभिनिविष्ट ) लुओ " अभिणिविट्ट " शब्द देखो ' अभिणिविट्ट ' शब्द Vide ' अभिणिविट्ट ' भग० १, ७, कप्प० ५, १०७;

✓ अभिनिवेस धा० II. ( अभि + नि + विश् + शि० ) आग्रहपूर्वक डरतुं आग्रहपूर्वक

करना To act with great ardour or attachment

अभिनिवेसण " विसणसु सणुज्जेसु, पेसं नाभिनिवेसण " दस० ८, २६,

अभिनिवेशिअ-न० ( अभिनिवेशिक ) पोतानुं वयन स्थापवामाटे दुयुक्ति दगाडी सूत्रनो विपरीत अर्थ डरवो ते; अभिनिवेशिक मिथ्यात्व. अपने वचन को स्थापन करने के लिये कुयुक्ति लगाकर सूत्र का विपरीत अर्थ करना, अभिनिवेशिक मिथ्यात्व Sophistical twisting or distorting of scriptural meaning in order to establish one's own preconceived notion; the heresy called Abhinivesika क० ग० ४, ५४;

अभिनिव्वुड त्रि० ( अभिनिर्वृत ) लुओ " अभिणिव्वुड " शब्द देखो " अभिणिव्वुड " शब्द Vide ' अभिणिव्वुड ' सूय० १, २, १, १२, १, ८, २५,—अच्च त्रि० (—अच्च—अभि निर्वृता अर्चा-शरीरं यस्य तत्तथा ) शरीर सतापरहित शरीर के संताप से रहित free from physical pain आया० १, ७, ६, २२१,

अभिनिस्सड त्रि० ( अभिनिस्त ) लुओ " अभिणिस्सड " शब्द देखो " अभिणिस्सड " शब्द Vide ' अभिणिस्सड ' भग० १४, ६,

अभिज्ञाण न० ( अभिज्ञान ) धंधाणु; निशानी निशानी चिन्ह A mark or token of recognition ओघ० नि० ४३६;

✓ अभिपत्थ धा० I ( अभि + प्र + अर्थ ) यायवु, मागवु, प्रार्थना डरवी; धय्य डरवी मागना, प्रार्थना करना, इच्छा करना To request, to ask for; to pray for. अभिपत्थण उक्त० २, ६,

अभिप्पवुड त्रि० ( अभिप्रवृष्ट ) वरसेल;  
वरसाद थयेल. वरसा हुआ. Rained  
'वासावासे अभिप्पवुडे बहवे पाणा' आया०  
२, ३, १, १११,

अभिप्पाइयणाम. पुं० न० ( आभिप्रायिक-  
नामन् ) अलिप्राय प्रमाणे पाडेल नाम, गुण  
निरपेक्ष भरल मुल्य पाडेल नाम, जेम आ-  
यो, ध्यरे धत्यादि. अभिप्राय के अनुसार रखा  
हुआ नाम, गुणों की अपेक्षा न कर इच्छापूर्वक  
रखा हुआ नाम, जैसे ग्राम, कचरा आदि A  
name given without reference  
to the qualities of a thing  
simply at one's will 'से किं तं  
अभिप्पाइयणामे अभिप्पाइयणामे अबण  
निवुण वकुलण' अणुजो० १३१;

अभिप्पाय. पुं० ( अभिप्राय ) लाव, आशय;  
धच्छा, मननी धारणा भाव; अभिप्राय,  
आशय; इच्छा, मन की वारणा Intended  
meaning; intention, aim,  
purpose. आया० २, १५, १७६, विशेष  
२६, पि० नि० भा० ४; सु० च० १, ११४;

अभिप्पेअ त्रि० ( अभिप्रेत ) धारेणु; धच्छेणुं  
चाहा हुआ, धारा हुआ Desired,  
wished; intended. 'तओ काले  
अभिप्पेण' उक्त० ५, ३१;

✓ अभिभव. धा० I ( अभि + भू ) जितपुं;  
जय भेगवपी जीतना, विजय प्राप्त करना  
To conquer, to overpower. (२)  
अलिखव-तिरस्कार करेवा. तिरस्कार करना  
to insult, to hate; to scorn  
अभिभवे. वि० "सूरो अभिभवे परं"  
उक्त० २, १०,

अभिभविय. सं० कृ० भग० ६, ३३;

✓ अभिभास. धा० I. ( अभि + भाप् )  
जोखवुं; वातयित डरवी बोलना, बात चीत  
करना. To talk; to speak

अभिभासे आ० आया० १, ६, १, ८;

अभिभूय सं० कृ० अ० (अभिभूय) अलिखव-  
तिरस्कार करीने अभिभव-तिरस्कार करके.  
Having despised. आया० १, १, ४, ३३,  
१, ५, ६, १६७; सूय० २, १, २६, दस०  
१०, १, १४; परह० १, ३; उक्त० २, १८,

अभिभूय-अ त्रि० ( अभिभूत ) जितायेल;  
पराभव पायेल; हारी गयेल. पराजित,  
पराभव को प्राप्त, हारा हुआ Defeated;  
vanquished, overpowered दस० ६,  
६०; विवा० १, १, ५; ७, ठा० ३, १; उक्त०  
३२, ३०, ( २ ) दु अथी पीडित. दु ख से  
पीडित afflicted with pain or  
misery भग० १५, १; नाया० १; ( ३ )  
व्याप्त थयेल व्याप्त pervaded;  
occupied भग० ६, ३३; १३, ६, नाया०  
१, २, ८, ६; १२; १३, १६, १८;

अभिभूयणाणि पु० (अभिभूयज्ञानिन्-अभि-  
भूय परिपहादीन् मत्यादीनि चत्वारि ज्ञाना-  
नि वा यद्वर्तते ज्ञानं केवलाख्यं तदस्यास्ती-  
त्यभिभूयज्ञानी ) देवण ज्ञानी केवल ज्ञानी  
One possessed of perfect  
knowledge, a Kevalī; an  
omniscient person "से सबदंसी  
अभिभूयणाणी" सूय० १, ६, ५;

अभिमय त्रि० ( अभिमत ) संमत; धष्ट  
सम्मत, इष्ट. Desired, wished;  
acceptable. नाया० १,—अट्ट पु०  
(—अर्थ ) अलिमत अर्थ, धष्ट अर्थ.  
अभिमत-स्वानुकूल अर्थ; इष्ट अर्थ accept-  
able meaning; desired meaning.  
नाया० १;

अभिमाण. पुं० ( अभिमान ) अलिमान,  
अहंकार अभिमान, अहंकार; घमंड. Pride;  
conceit सूय० १, १३, १०,—वद्ध त्रि०

(-बद्ध) अलिमानुं धर, धरो। अलिमान्नी  
अभिमान का खजाना, बहुत अभिमानी  
extremely proud, highly  
conceited सू० १, १३, १०,

अभिमुह त्रि० ( अभिमुख-अभि भगवन्त  
लक्ष्मीकृत्य सुखमस्येति अभिमुख ) स-मु-  
प्यथ्येक्ष, स्हामे, मोहा आगण सन्मुख,  
सामने, मुह आगे In front of, with  
the face, turned towards  
भग० १, १, ३, २, ५, ४, ७, १; ६, ६,  
३३, ११, १०; नाया० १, ८, ओव० १२,  
२२, २६, राय० २२, विशेष० १८४,  
कप्प० २, १४, ज० प० ५, ११५, पि० नि०  
३५६,

अभियागम पुं० ( अभ्यागम ) आगमन,  
आवपुं ते आगमन, आना Coming,  
arrival सू० १, १, ३, २,

अभियावण त्रि० ( अभ्यापन्न-अभिमुख्येन  
भोगानुकूल्येनापन्नो व्यवस्थितोऽभ्यापन्न )  
सावध अतुष्टानमा तत्पर थ्येक्ष पाप कर्मों  
में तत्पर Bent on, intent upon  
sinful performances सू० १, ४,  
२, १४,

अभियोग पुं० ( अभियोग ) आलियोगिक  
देवता, आकर देवता; ताभेदार देवता अभियो-  
गिक जालि का देव; नौकरी करने वाला देव  
An attendant deity, a subordi-  
nate deity भग० ३, ७,

अभियोगिअ त्रि० ( अभियोगिक ) अलि-  
योग-आज्ञा-हुकमं उक्तावनार, ताभेदार हुकम  
बजाने वाला, सेवक, नौकर Subordi-  
nate. विवा० २,

✓ अभिरक्ष धा० I. ( अभि + रक्ष् ) रक्ष्यु  
करुं, अथावपुं रक्षा करना; वचाना. To  
protect, to save

अभिरक्षउ भग० ११, ६; निर० ३, ३,

अभिरक्षअ त्रि० ( अभिरक्षक ) रक्षा कराने  
रक्षा करने वाला ( One ) who saves  
or protects भग० ११, ६,

अभिरक्षिज्जमाण व० कृ० त्रि० ( अभिरक्ष-  
माण ) रक्ष्यु करतो रक्षा कराता हुआ Be-  
ings saved or protected नाया० ८,

✓ अभिरम धा० II ( अभि + रम् ) रति-  
कीला करणी, लीला-विलास करवे। क्रीडा  
करना, लीला-विलास करना To enjoy  
amorous sport, to enjoy  
dalliance

अभिरमइ-ति भग० ५, ४, नाया० २,

अभिरमयंति दस० ६, ४, १;

अभिरमउ. आ० सु० च० १, १६;

अभिरमेत्था भू० कृ० नाया० १;

अभिरममाण व० कृ० “ अभिरममाण  
तुट्ठा ” परह० १, १, भग० १३, ६, ज०  
प० ५, १२३, नाया० २, ४, ६, १३, १८,

अभिराम त्रि० ( अभिराम ) रमणीय;  
सुंदर, मनोहर, मनोहर रमणीय, मनोहर, खू-  
सुरत, सुंदर Charming; beautiful.  
“ वाला भिरामेसु दुहावहेसु ” उक्त० १३,  
१७, जीवा० ३, ३, नाया० १; १७; सू०  
प० २०, सम० ३४, पन्न० २, ओव० ३०;  
३४, कप्प० ३, ४२, ज० प० ५, ११५,

अभिरुइय त्रि० ( अभिरुचित ) रुयेक्षु, गभेक्षु;  
मनपसद थ्येक्षु चाहा हुआ, मन पसद;  
रुचिपूर्ण Agreeable, liked नाया० १,  
५, भग० ६, ३३, १८, २, नाया० व०

अभिरुज्झ तं० कृ० अ० ( अभिरुध्य ) आरे  
तरक्ष्णी रेक्षिने चारों ओर ने रोककर  
Having obstructed from all  
sides आया० १, ६, १, ३;

अभिरुच त्रि० ( अभिरुच-अभि-प्रतिच्छयं  
नवं नवमिवरूपं यस्य तत्, द्रष्टार द्रष्टारं

प्रत्यभिमुखं न कस्यचिद्विरागहेतुरूपमाकारो यस्य तत् ) क्षणे क्षणे ननु ननु देभाय तेवु सुंदर, जेतां जेतां डोछते डंटाणे। न आवे तेवुं भनोहर. प्रतिक्षण नया नया दिखे ऐसा सुंदर; जिसे देखते देखते थकावट या अक्षयि न हो ऐसा मनोहर Perpetually charming; ever pleasing; never growing stale. " अभिरूवं अभिरूवं पडिरूवं पडिरूव " आया० २, ४, २, १३६, नाया० १, ५; ६, १३; भग० २, ५, १८, ५, राय० २, २२७, ओव० ज० प० १, ३;

अभिरू-ह-वा. ली० ( अभिरू-म-वा ) मध्यमग्राभनी सातमी मूर्च्छना मध्यम ग्रास की सातवीं मूर्च्छना ( A term in music) the seventh modulation of the middle scale of a musical instrument ठ० ३, १, अणुजो० १२८;

✓ अभिरोय धा० I. ( अभि + रुच् ) रुचि-इच्छा; इच्छा इच्छा करना; चाहना; रुचि करना To desire, to wish; to like

अभिरोयप्. वि० उत्त० ३५, ६;

अभिरोहिय. वि० ( अभिरोहित ) रोड़ा गये; रोड़ाभा आवे; रुक गया हुआ रोका हुआ Obstructed, stopped नाया० ६;

अभिलंघमाण व० कृ० वि० ( अभिलङ्घमान ) उल्लंघन इरतो. उल्लंघन करता हुआ Transgressing नाया० १,

अभिलप्य वि० ( अभिलाप्य-अभिलपितुं चोग्यमभिलाप्यम् ) वाणीथी जेनुं कथन थड शडे तेवुं वाणी से जिसका कथन हो सके ऐसा. Expressible in speech विशेष० १५२, ४२२,

✓ अभिलस धा० I ( अभि + लप् ) इच्छा इच्छा; अभिलाषा इच्छा करना; अभिलाषा करना. To desire, to long for

अभिलसइ दसा० १०, १; उत्त० २६, ३३, नाया० ६;

अभिलसंति. ओव० ११,

अभिलसमाण. व० कृ० विवा० १;

अभिलसणिज्ज वि० ( अभिलषणीय ) इच्छा योग्य; अभिलाषा इच्छा योग्य इच्छा करने योग्य Desirable; fit to be desired. दसा० १०, ५, ६;

अभिलाव पुं० ( अभिलाप-अभिलप्यते आ-भिसुख्येन व्यक्तसुख्यतेऽनेनार्थ इत्यभिलाप.) शब्दसंदर्भ. सूत्रपाठ; अलापो शब्दसन्दर्भ; सूत्रपाठ, आलाप Words expressive of a meaning, words as distinguished from the meaning or sense they convey. नाया० १; भग० ५, १, ८, १; १६, ५, १७, १, ३२, २; कप्प० ६, १५१; (२) इहेवुं, कथन इरवुं. कहना, कथन करना to tell, to speak जीवा० १, नाया० ८; भग० ६, ३१, पञ्च० १५, अणुजो० ४६ विशेष० २०६०, ओव० ३४ जं० प० ७, १६१, सू० प० १८; १६; —पुरिस पुं० (—पुरुष ) नरजातिना शब्द, जेम-घट ५२; इत्यादि नरजाति वाचक पुल्लिङ्ग शब्द. यथा-घट, पट आदि a word in the masculine gender ठ० ३, १;

अभिलास पुं० ( अभिलाप ) इच्छा; आर्थना, इच्छना; अभिलाषा इच्छा, चाह, कामना A wish; a desire; a prayer, a longing ठ० ४, ३, नंदी० नाया० ६, अणुजो० १३०; पचा० १, १६;

✓ अभिवंद धा० I ( अभि + वदि ) वादना

जुनु; दर्शन करवा जनु, पगे लागवा जनु  
वदन करने को जाना, दर्शन करने जाना,  
पोंव पड़ना To go to bow to, to go  
to prostrate at the feet of  
अभिवंदण हे० कृ० “ निजाइस्सामि .

महावीर अभिवंदण ”

ओव० २६,

अभिवंदित्तण्. ” दसा० १०, १,

अभिवंदआ ,, “ महावीरं अभिवदआ ”

ओव० ३०,

अभिवदिउं ,, भस० २०;

अभिवंदण न० ( अभिवन्दन ) नमस्कार,  
स्तुति नमस्कार, प्रणाम; स्तुति. A bow,  
a salutation; praise. राय० ४२,

अभिवंदित्त त्रि० ( अभिवन्दित ) स्तुति  
करायेल, जेने वदन करेले होय ते जिसकी स्तु-  
ति की गई हो, जिसका अभिवादन किया गया  
हो वह ( One ) praised, ( one )  
saluted. “ नरिंददेविदभिवदिण्ण ”

उत्त० १२, २१,

अभिवग्गंत व० कृ० त्रि० ( अभिवल्गात् )  
जमीन खोदते जमीन खोदता हुआ Digging  
the ground, scratching the  
earth नाया० ८,

✓ अभिवद्ध वा० II ( अभि + वृद्ध् ) वृद्धि  
पामची, आयास थवु, वधवु. वृद्धि पाना,  
आवाद होना, बढ़ना To increase, to  
prosper, to grow

अभिवद्धामि भग० ३, १,

अभिवद्धामो कप्प० ५, १०३,

अभिवद्धेमाण व० कृ० जं० प० ७,

अभिवद्धिय-अ त्रि० ( अभिवद्धित ) अधिक  
मास, ऐकत्रीश दिवस अने ऐक सो योची-  
स या १२१ लागने महिने अधिक मास,  
इकतीस दिन और एक सौ चौबीस या १२१  
भाग का महीना An intercalary

month (२) अधिक मासवाणु वरस, जे  
वरसमां तेर यद्रमास होय ते, ३८३ दिवस अने  
३४ लागणु वरस जिस वर्ष में तेरह चन्द्र  
मारा हो वह वर्ष, अधिक मास वाला वर्ष;  
अर्थात् ३८३ दिन और ३४ भाग का एक  
वर्ष an year having an in-  
tercalary month “तेरसउ च्चदमासा  
एसो अभिवद्धिओ उ नायव्वो ” ज० प० २,  
ठा० ५, ३, सू० प० १२, प्रव० ६०६,  
६०८,

अभिवयण. पु० न० ( अभिवचन ) पर्याय शब्द;  
जेने जे अर्थने पीजे शब्द, जेम-घट, कलश  
धृत्यादि पर्याय वाची शब्द, उसी अर्थ का  
दूसरा शब्द, जैसे-घट, कलश आदि An  
other word of the same mean-  
ing, a synonym “अहम्मत्थिकायस्सण  
भंते! केवइया अभिवयणा प० तं० अहमेत्ति  
वा अहम्मत्थिकाएत्ति वा पाणात्ति वा ”  
भग० २०, २,

अभिवाइऊण सं० कृ० अ० ( अभिवाच ) प्रणाम  
करने प्रणाम करके Having saluted  
सु० च० ८, ३०३,

अभिवादण न० ( अभिवादन ) लुगो “ अ-  
भिवायण ” शब्द देखो ‘ अभिवायण ’  
शब्द Vide ‘ अभिवायण ’ उत्त० २, ३८,

अभिवायण. न० ( अभिवादन ) वचन  
स्तुति करवी वचन में स्तुति करना. Prais-  
ing in words उत्त० २, ३८, ( २ )  
भस्तक नमाडी थरणु स्पर्श करवे ते भस्तक  
नमाकर चरण छूना touching the  
feet ( of a Guru etc ) by bow-  
ing down the head. उत्त० २, ३८,

अभिवायमाण व० कृ० त्रि० ( अभिवादयत् )  
अभिवादन करने प्रणाम करना हुआ Salut-  
ing, bowing to आया० १, ६, १, ८;



अभिवाहरणा. स्त्री० (अभिव्याहरणा) गुरु शिष्यनी उक्ति प्रत्युक्ति-संवाद व्याख्य, संवाद गुरु शिष्य की उक्ति प्रत्युक्ति, प्रश्नोत्तर; संवाद A dialogue or discussion between a Guru and his disciple पंचा० २, २६;

अभिवाहार पुं० (अभिव्याहार-अभिव्याहरणा-अभिव्याहारः) दालिदश्रुतपरत्वे शिष्य रते। गुसंवाद-संवाद व्याख्य कालिक श्रुत सम्बन्धी गुरु शिष्य का संवाद A religious discussion between a Guru and his disciple विशेष ३४१२,

अभिविधि. पुं० (अभिविधि) दालिदश्रुतनी सर्व तरङ्ग; आरे व्याख्य किसी भी वस्तु के सब तरफ; चारों ओर Complete comprehension or inclusion "आलोचयणं अक्रियं, अभिविहिता दंसणं तिलिगेहि" पंचा० १५, २,

अभिवुद्धि पुं० (अभिवृद्धि) उत्तरभाद्रपद नक्षत्र उत्तरभाद्रपद नक्षत्र The constellation named Uttarā Bhādrapada जं० प० ७;

अभिवुद्धिस्ता. स० कृ० अ० (अभिवृद्धि) वृद्धि इरीने, वधारीने बढ़ाकर Having increased; having caused to increase. सू० प० १;

अभिसंका स्त्री० (अभिशङ्का) आशङ्का, संशय आशंका, संदेह Doubt; suspicion. "भूयाभिसंकाइ दुगुच्छमाणे" सूय० १, १४, २०,

अभिसंकि त्रि० (अभिशङ्किन्) शंका राखने वाला (One) doubting or suspecting "उज्जु माराभिसकी मरणा पमुच्चति" आया० १, ३, १, १०६;

अभिसंग पुं० (अभिष्वङ्ग) लाव राग; द्रव्यादि प्रतिबंध भाव राग, द्रव्यादि प्रतिबंध. Attachment to wealth etc ठा० ३, ४,

अभिसंजाय. त्रि० (अभिसंजात) दलल अवस्थाभाधी पेशीरूपे अनेक कलल अवस्थामें से पेशीरूप बना हुआ. Formed in the shape of a womb. आया० १, ६, १, १७६,

✓ अभिसंधार धा० II. (अभि + सम् + धृ + णि०) संकल्प आधवे, मनमा धरणा इरवी, विचार आधवे संकल्प करना, विचार करना, मन में धारणा करना. To conceive, to imagine, to think अभिसंधारेइ निसी० ६, ८, १६, १७, १७, ३३,

अभिसन्धिज न० (अभिसन्धिज) बुद्धि के धरादापूर्वक इरवामा आवता क्रियारूपे परिणुमनार वीर्य, वीर्यने अने प्रकार वीर्य का एक प्रकार, बुद्धिपूर्वक की जाती हुई क्रिया के रूप में परिणमने वाला वीर्य The vital power which finds expression in a volitional act; a variety of vital power क० प० १, ३,

अभिसंबुद्ध त्रि० (अभिसम्बुद्ध) विज्ञानमेण-वेद, अध पाभेद बोध को प्राप्त, विज्ञान को प्राप्त Enlightened, instructed आया० १, ६, १, १७६;

अभिसंभूय त्रि० (अभिसम्भूत) प्रादुर्भाव पाभेद, प्रगट थयेल जिसका प्रादुर्भाव हुआ हो वह; उत्पन्न, प्रकटीभूत Manifested; come to light आया० १, २, ३, १; (२) वीर्य अने रुधिरना मिश्रणुथी दललरूपे थयेल वीर्य और रुधिर के मिश्रण में कललरूप बना हुआ formed

into an embryo by the blending of blood and semen आया० १, ६, १, १७८,

अभिसंबुद्ध त्रि० ( अभिसंबुद्ध ) प्रसूती पाभी वधवा मांडेल, जन्म पाभी डिछरवा मांडेल प्रसूत होकर-जन्म पाकर बढ़ने लगा हुआ Growing and developing in body after birth आया० १, ६, १, १७६,

अभिसमणाय त्रि० ( अभिसमन्वागत-अभि-अभिमुख्येन सम्यगिष्टानिष्टावधारणतया अन्विति-शब्दादिस्वरूपावगमात् पश्चादागतो ज्ञातः परिच्छिन्नोऽभिसमन्वागतः ) सन्मुख रहेल धृष्टानिष्ट पदार्थोंनु अवधारणु करी शब्दानुसारे ज्ञातयेत, शब्दस्वरूप समझने अवधारणु करेन सन्मुख रहे हुए इष्ट, अनिष्ट पदार्थों का अवधारणकर शब्दानुसार जाना हुआ Known after a proper comprehension of words, (anything) understood after a due and critical knowledge of the words that convey its sense जं० प० ३, ४५, आया० १, ७, ४, २१३, नाया० १४, (२) भजेत, प्राप्त थयेत, परिभोग पछी उपभोगमा आवेत्, सन्मुख आवेत् प्राप्त, मिला हुआ, परिभोग के पश्चात् उपभोग में आया हुआ, सम्मुखीभूत obtained, got come towards or in front of come to Upabhoga after Paribhoga नाया० २, ४, ८, १३, राय० ७८, भग० १, ८, ३, १, २, ५, ४, १२, ४, १६, ५, १७, २, ( ३ ) न० (अभिविधिना समन्वागतानि सम्प्राप्तानि जीवेन रसानुभूति समाश्रित्योदयावलिकायामागतानि अभिसमन्वागतानि ) आभ्या पछी सर्व तरङ्गथी उदयावलिप्रभां आवेत्, निपाद व्याख्याने सन्मुख थयेत् बाधने के बाद चारों ओर से उदयावलि-

का में आये हुए कर्म, फल देने को उद्यत, on the point of maturing, in readiness to mature भग० १, ७, ठा० ४, ३, पत्र० २०,

अभिसमागच्छुः धा० I ( अभि + सम् + आ + गम् ) सन्मुख आववु, स्थापने आववु सन्मुख आना, सामने आना To come towards, to come in front of ( २ ) गुण दोष ज्ञातवा, समज्जु. गुण दोष जानना, समझना to understand; to come to know the merits and demerits of a thing

अभिसमागच्छइ भग० ५, ६, ७, ६, ३३, नाया० ८,

अभिसमागच्छेज्ज वि० भग० ६, ५,

अभिसमागम स० कृ० आया० १, ६, ४, १६, दसा० ५, ४१, ६, ३०;

अभिसमागम पु० ( अभिसमागत-अभि-अर्थभिमुख्येन सम्यक् संशयाभावेन आ-मर्यादया गमो ज्ञानमभिसमागम ) अलि-अर्थलिभुपपणे, सम्-सम्पद्-सशयरहित, आ-मर्यादासहित, गम-ज्ञान, अर्थात् अर्थविषयक सशयरहित मर्यादापूर्वक ज्ञान; वस्तुपरिच्छेद-निर्णय सशय रहित अर्थविषयक मर्यादापूर्वक ज्ञान, वस्तुनिर्णय A due and full comprehension of meaning freed from all doubts “ तिविहे अभिसमागमे प० तं० उद्गु ग्रह तिरियं जयाण तहारुवस्स समणस्स वा माहणस्स वा अइसेले णाणज्जणे समुपज्जइ से ण तज्जडमयाण उद्गुमभिसमेइ तत्रो तिरियं तत्रो पच्छा अहे अहोलोगेण दुरभिगमे पज्जते समणाउमो । ” ठा० ३, ४,

अभिसमागय त्रि० ( अभिसमागत ) सन्मुख आवेत् सामने आया हुआ Come towards; come in front of भग० ७, १, अभिसमे धा० I. ( अभि + सम् + इ )

सारी रीते संशय रहित जानयुं, समज्यु.  
अच्छी तरह से नि संशयपूर्वक जानना, समझना  
To grasp, to understand fully.

( २ ) स-मुष् गति डरवी, पास जायुं.  
सन्मुख जाना, समीप जाना to go to,  
to go towards

अभिसमेष्ट-ति. "ददुथल नाभिसमेष्ट तारं"  
उत्त० १३, ३०, नाया० १; भग०  
११, ११,

अभिसमेष्ट सं० कृ० ठा० २, १;

अभिसमेष्टा " आया० १, १, ३, २१,  
अभिसमिष्टा., आया० १, ३, ४, १२४; १,  
६, ३ १८५;

अभिसरण न० ( अभिसरण ) स-मुष् जायुं  
सन्मुख जाना; सामने जाना To go  
towards, to go in front of.  
परह० १, १,

अभिसरमाण व० कृ० त्रि० ( अभिसरमान-  
अभिसरत् ) सरडते.; गाड धसडीया डरी  
यावतो सरकता हुआ, सरककर चलता हुआ  
Creeping; crawling; moving on  
slowly or feebly नाया० २, विवा० ७,

✓ अभिसिंच वा० I ( अभि+सिच् )  
गल्याभिषेक डरवा; पदवी धारण निमित्त  
पण्डि सिंचयुं राज्याभिषेक करना, पदवी  
धारण करने के निमित्त जल छिटकना  
To sprinkle with water on the  
occasion of coronation

अभिसिंच-ति. भग० ६, ३३, नाया० १२;  
१४; १६, विवा० ६, जं०  
प० २, ३०;

अभिसिंचति नाया० १, ५, ८, १८; विवा०  
३; जं० प० ५, १२१,

अभिसिंचामि नाया० १६;

अभिसिंचामो. नाया० १८,

अभिसिंचेह. आ० नाया० ८; १४,

अभिसिंचेहिति. भग० १५, १,

अभिसिंचित्तु हे० कृ० नाया० १८,

अभिसिंच-चे-इत्ता सं० कृ० नाया० १६; १६;  
भग० ६, ३३;

अभिसिंचित्ता " कण्ठ० ७, २१०;

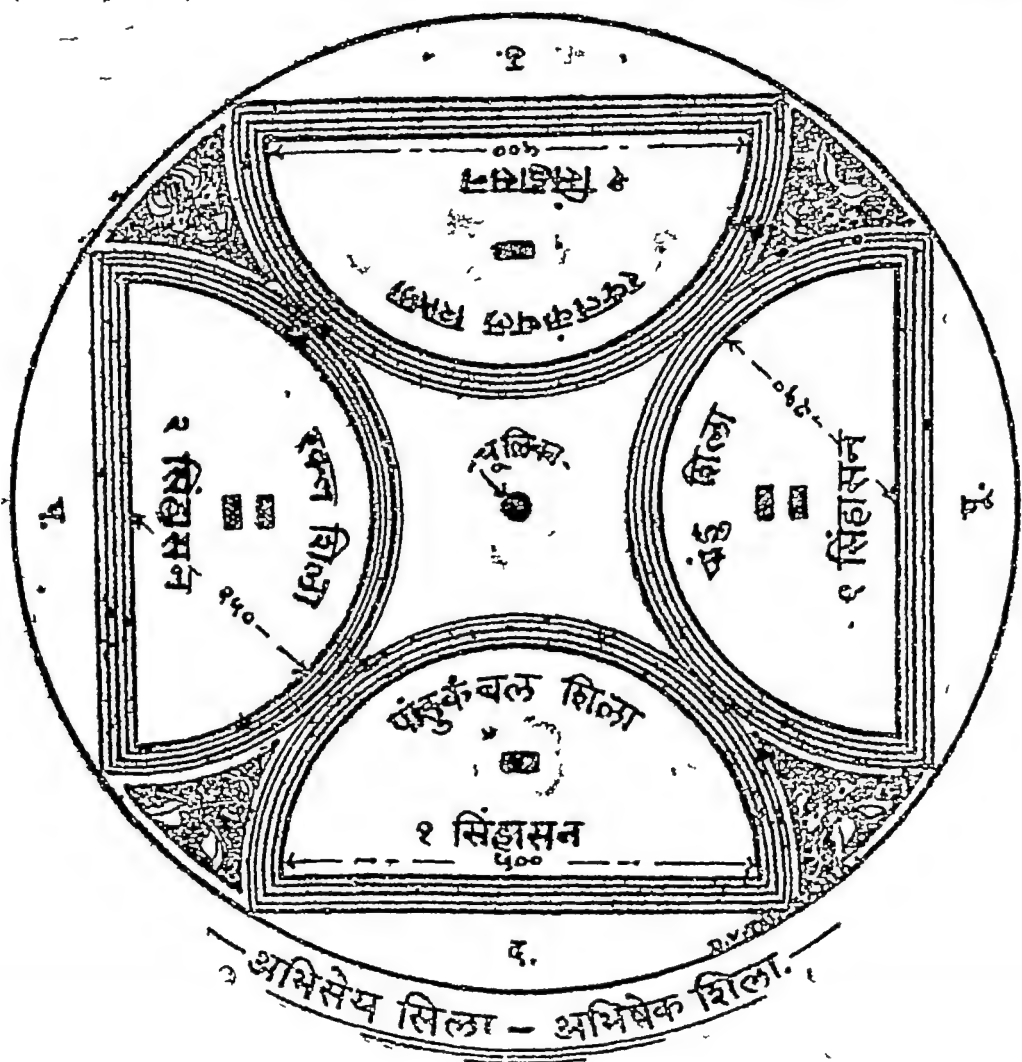
अभिसिंचमाण. त्रि० ( अभिसिंचमान )  
अभिषेक डरतु अभिषेक किया जाता हुआ  
Being sprinkled with holy  
water at the time of coronation,  
installation etc कण्ठ० ३, ३६;

अभिसेक. त्रि० ( अभिषेक ) अभिषेक डरवा  
योग्य; मुख्य; नायक, पाटवी. अभिषेक करने  
योग्य; मुख्य; नायक, उत्तराधिकारी. Fit to  
be crowned; to be crowned  
in course of time, e. g. an heir-  
apparent, a leader etc "अभिसेक  
हृत्थिरयणं " नाया० १६; निर० १, १;  
निसी० ६, २०;

अभिसेक-य. पुं० ( अभिषेक ) सर्व ओपधि  
सहकृत तीर्थना पवित्र जलानी मंत्रोच्चारपूर्वक  
राज्य आदि पदवीनुं आरोपण डरवाने म-  
स्तक उपर सिंचन डरवुं ते, राज्याभिषेकनी  
क्रिया; राज्यागादीये भेषवाती क्रिया-महोत्सव.  
सब ओपधियों सहित तीर्थ के पवित्र जल से  
मंत्रोच्चारपूर्वक राज्य आदि पदवी का आरोपण  
करने के लिये मस्तक सिंचन करने-मस्तक पर  
जल छिटकने की क्रिया; राज्याभिषेक की क्रिया;  
राज्यागादी पर बैठने का महोत्सव Coro-  
nation ceremony, coronation  
festivity, sprinkling holy and  
medicated water on the head  
at the time of coronation भग०  
३, ७; १०, ६, ११, ११; नाया० १; ८;  
अत० ५, १; जं० प० ४, ६०; ५, १२१;  
ओव० ३८; राव० ६५, नंदी० ५६; कण्ठ०  
१, ४;—अरिह त्रि० (—अर्ह) गल्या, आ-  
चार्य, उपाध्याय आदि पदवीना अभिषेक  
डरवाने योग्य-वापड राज्य, आचार्य, उपा-  
ध्याय आदि पदवीयां का अभिषेक करने के  
योग्य fit to be installed as king,

religious head etc नाया० १४,—जल  
न० (—जल) राज्या आदिनो अलिपेड इरवानु  
पवित्र पाणी राज्यादि का अभिषेक करने योग्य  
पवित्र जल holy water for corona-  
tion ceremony “ अभिसेयजलपू-  
ष्पा ” ओव०—ठाण न० (—स्थान) रा-  
ज्यादि अलिपेड इरवानी जग्या राज्यादि  
अभिषेक करने का स्थान the place of  
coronation निगी० १२, ३२,—पेढ  
पु० (—पीठ) अलिपेड मंडपनी अदर रडेडु  
अलिपेड इरवानु आगेडं अभिषेकमंडप के  
भीतर स्थित अभिषेक करने का पाट-चौकी  
a square-stool used at the time of  
coronation ceremony जं० प० ३,

६८,—अंड न० (—आण्ड) राज्यालिपेडमा  
अप लागे तेरा उपगरेणु राज्याभिषेक की  
क्रिया के उपयोग में आने लायक उपकरण  
materials used in coronation  
ceremony राय०—महिसा पुं०  
(—महिमन्) अलिपेडनो उत्सव अभिषेको-  
त्सव coronation festivity, in-  
stallation or coronation  
festivity कप्प० ५, ६८,—सभा स्त्री०  
(—सभा) जग्या राज्यालिपेड थाय ते सभा-  
स्थान जहा राज्याभिषेक होता है वह स्थान  
the place of coronation “ जेणामेव  
अभिसेयसभा तेणामेव उवागच्छति ” राय०  
१६८, ठा० ५, ३, जीवा० ३, ४,—सिला स्त्री०



(-शिला) मेरु पर्वतना पंडग वन उपर आवेली चार अभिषेक शिला, के जेना उपर धंदा तीर्थंकर महाराजने। अभिषेक-नवलु करे छे तेमां दक्षिण तरङ्गनी पांडुकंवल शिला उपर भरतक्षेत्रना तीर्थंकरने, उत्तर तरङ्गनी रक्तकंवल शिला उपर धरवतक्षेत्रना तीर्थंकरने, पूर्व दिशानी पांडुशिला उपर पूर्व महाविदेहना तीर्थंकरने अने पश्चिम दिशानी रक्तशिला उपर पश्चिम महाविदेहना तीर्थंकरने। जन्माभिषेक करवामां आवे छे मेरुपर्वत-के पडगवन की चार अभिषेक शिलाएं, जिनके ऊपर इन्द्र तार्थंकरों का जन्माभिषेक करते हैं, उनमें से दक्षिण तरफ की पांडुकवल शिला ऊपर भरतक्षेत्र के तीर्थंकर का, उत्तर तरफ की रक्तकवल शिला ऊपर धरवतक्षेत्र के तीर्थंकर का, पूर्व दिशा की पांडुशिला ऊपर पूर्व महाविदेह के तीर्थंकर का और पश्चिम दिशा की रक्तशिला ऊपर पश्चिम महाविदेह के तीर्थंकर का जन्माभिषेक करने में आता है Four celestial slabs of stone namely Pāndukambala in the south, Raktakambala in the north, Pāndu in the east and Rakta in the west, on which the birth ceremony of the Tīrthan-karas of Bharataksetra, Dhavataksetra, eastern Mahāvideha respectively is celebrated by Indras These slabs are situate in the Pandaga forest on the mountain Meru “चत्वारि अभिसेयसिलाओ प० तं० पंडुकंवलसिला अतिपंडुकंवलसिला रक्तकंवलसिला अतिरक्तकंवलसिला” ठा० ४, २; जं० प० ५, ११५,

अभिसेज्जा स्त्री० ( अभिशय्या ) अलिनैषेधि-डीमां दिवसनी के रात्रिनी सज्जाय करी रात-वासो रही सवारभा भुनि जे जग्यामां आवे ते जग्या अभिनैषधिकी में दिन या रात्रि का स्वाध्याय करके रात्रि में रहने के बाद प्रातः-काल सुनि जिस स्थान में आवें वह स्थान A place a monk comes to in the morning after spending his night in Abhinaisedhikī in study during day or night विशेष ३४६१-अभिस्संग पु० ( अभिष्वङ्ग ) लुओ “अभि-संग” शब्द देखो ‘अभिसंग’ शब्द. Vide “अभिस्संग” ठा० ३, ४, पचा० २, ३४; ६, १८,

अभिहट्ठ सं० कृ० अ० ( अभिहृत्य ) पक्ष-ट्ठार करीने, जबरदस्ती करीने बलात्कार करके, जबरदस्ती करके. Forcibly, violently, by main force. ‘सेवं वदंतस्स परो अभिहट्ठं अतो पडिग्गहंसि’ आया० २, १, १०, ५८;

अभिहड. त्रि० ( अभिहृत ) सन्भुष आलुलुं, गाममाथी के उडार गामथी लघु रहामे आलुल. सन्मुख लाया हुआ, गाँव में से या गाँव के बाहिर से लाकर सन्मुख किया हुआ. Carried towards; taken to (२,) न० साधुने भाटे धेरथी के दुडानेथी उपाश्रयमां लघु आवेल आहारादि आपवाथी साधुने लागतो दोष, उद्गमनना १६ दोषमानो ११ भो दोष साधु के लिये घर से या दुकान से लाकर उपाश्रय में आहारादि देने से साधु को जो दोष लगे वह, उद्गमन के १६ दोषो मे से ११ वॉ दोष a kind of fault incurred by a Sādhu by food being brought to him in Upas h r a y a from a house or a shop ‘उद्देसियं कीयगडं, नि-यागं अभिहडाणि य’ दस० ३, २; भग० ६, ३३;

आया० १, ७, २, २०२; सूय० १, ३, ३, १५,  
ओव० ४०, निसी० ३, ५, ६, ४, ११, ८; १४,  
४, १६, ४, पि० नि० ६३, ३०६, पंचा० १३, ६;

✓ अभिहण. धा० I. (अभि+हन्) सन्भुष  
आवता प्राणीने मारवुं, घात करती. सन्मुख  
आते हुए प्राणी को मारना, घात करना To  
kill a living being coming in  
front, to kill.

अभिहणह भग० ५, ६;

अभिहणंति पत्र० ३६,

अभिहणामो. भग० ८, ७,

अभिहणिज. वि० आया० २, १, ७, ३७,

अभिहणोजा वि० भग० १६, ३,

अभिहणह आ० भग० ८, ७, १८, ८,

अभिहणमाण व० कृ० भग० ८, ७;

१६, ३,

अभिहणण. न० (अभिहनन) सन्भुष आव-  
ताने हलुवुं-प्रहार मारवा, रूढ़ांमे लातो  
मारवी, घात करवी सामने आते हुए को  
मारना; सामने लाते मारना, घात करना  
To strike, kick or kill any living  
being coming in front परह० १, १,

अभिहय त्रि० (अभिहत-आभिमुख्येन हतो-  
ऽभिहत) पगथी दृष्टावेक्ष, लात मारेक्ष  
पैरों से दबाया हुआ, लातों से मारा हुआ.  
kicked, trodden under foot.  
“अभिहया वत्तियलेस्सिया” आव० ४, ३,  
भग० १४, ८;

अभिहाण न० (अभिधान-अभिधीयते येन  
तदभिधानम्) नाम, संज्ञा नाम; संज्ञा.  
Name, appellation नाया० ७, विशेष०  
२०, प्रव० ६४,—वज्र पुं० (—वर्ण) नामना  
वर्ण-अक्षर नाम के अक्षर. one of the  
constituent letters of a word  
or name पचा० ३, २२;

अभिहिय त्रि० (अभिहित) उक्त, इहेक्ष.

कहा हुआ Said, expressed प्रव०  
६७४;

अभीह पुं० (अभिजित्) लुओ 'अभिह' शब्द.  
देखो 'अभिह' शब्द. Vide 'अभिह'  
भग० १३, ६; सम० ३, कप्प० ७, २०५;  
जं० प० २, ३३,—पंचम त्रि० (—पञ्चम)  
अभिय नक्षत्रथी पांयमु (उत्तराभाद्रपद) नक्ष-  
त्र अभिजित् से पाचवौ नक्षत्र, उत्तराभाद्रपद  
(a constellation) fifth in order  
from Abhijit, the constella-  
tion named Uttarābhādrapada.  
कप्प० ७, २०५,

अभीय-अ त्रि० (अभीत) भयरहित, डर  
विनालो, निडर निर्भय; डर रहित, निडर  
Fearless उवा० २, ६६, १०३, १०६;  
नाया० १, ८, ६,

अभीरु त्रि० (अभीरु) निडर; सात प्रकारना  
लय विनालो सात प्रकार के भयों से रहित;  
निर्भय Fearless आया० २, १५, १; (२)  
मध्यम आभनी ओड भूर्च्छना मध्यम ग्राम  
की एक मूर्च्छना. a modulation in the  
middle scale of a musical  
instrument ठा० ७,

अभुंजमाण व० कृ० त्रि० (अभुञ्जान) भोजन न  
करतो भोजन न करना हुआ. Not eating  
or dining पंचा० १६, १२;

अभुंजित्ता स० कृ० अ० (अभुक्त्वा)  
अभुभोगवीने, भोगव्या वगर विना भोगे.  
Without having enjoyed.  
or suffered ठा० ३, २,

अभुच्चा. स० कृ० अ० (अभुक्त्वा) खाया  
विना, भोगव्या विना. विना खाये, विना भोगे.  
Without having eaten or  
enjoyed आया० १, ६, १, ११,

\*अभुक्षित त्रि० (अभ्रशनशील) भुक्षनार  
नहि; अशुभलित. जो भूल करने वाला या



चूकने वाला न हो वह; अस्खलित  
Infallible, not likely to commit  
a mistake पु० च० ४, २८०;

अभूअ-य त्रि० (अभूत) असद्भूत; न यत्नेपुं  
न बना हुआ; असद्भूत. Not taken  
place, not come into existence  
सम० ३०, दसा० ६, ६; विशेष० १८४;

अभूइ स्त्री० (अभूति) भूति-संपद्नेो अभाव  
संपत्ति का अभाव. Absence of wealth  
or prosperity दस० ६, १, १,—भाव  
पुं० (-भाव) ज्ञानरूपी संपद्नेो सद्भाव  
नहि ज्ञानरूपी संपत्ति का अभाव absence  
of wealth of knowledge 'सा चेव  
ओ तस्स अभूइभावो' दस० ६, १, १,

अभूयाभिसंकर पु० (अभूताभिशङ्कन-  
न भूतान्यभिशङ्कन्ते यस्मात् स तथा )  
भूतोने लय न आपनार, जेनाथी प्राणीओ  
भीओ नहि ते, प्रशस्तवाणीविनयनेो  
ओइ प्रकार जिससे प्राणी न डरें वह, प्रशस्त  
वाणीविनय का एक भेद. ( One ) who  
is not a source of fear to living  
beings, a variety of reverential  
speech ठा० ७, भग० २५, ७,

अभेज्ज त्रि० (अभेद्य) न भेदी शक्य तेपु,  
धणु मज्जत, अभेद्य अभेद्य; जो भेदा न  
जा सके वह; बहुत मज्जत. Very strong,  
impenetrable भग० २०, ५, ठा० ३, २,  
—कवच पुं० (-कवच-अभेद्य कवचो  
यस्य स तथा ) अभेद्य-मज्जत इत्ययणो  
अभेद्य-मज्जत कवच वाला (one) having  
an impenetrable armour. ज०  
प० ३, ५२, ५५, भग० ७, ६;

अभेय. पुं० (अभेद) इभनु उल्लघन न डरपुं ते,  
अनतिक्रम अनतिक्रम, कर्म का उल्लघन न  
करना Sameness, non-transgres-  
sion. विशेष० ६४३,

अभेल त्रि० (-अभीरु) निर्भय; निडर भय  
रहित; निडर Fearless ज० प० ३, ५७;  
अभोज्ज त्रि० (अभोज्य) भोगववा योग्य नहि.  
न भोगने योग्य Unfit to be enjoyed  
नाया० १६;

अमइ स्त्री० (अमति) मति-शुद्धिनेो अभाव.  
बुद्धि का अभाव. Lack, absence  
of intellect विशेष० १०६;

अमइल त्रि० (-अमलिन) स्वच्छ; निर्मल; भेद  
विनापुं मलिनता रहित, स्वच्छ, साफ, विना  
मैल का Free from dirt; pure;  
clear नाया० ११, परह० १, ४,

अमंगल. न० (अमङ्गल) अमंगल-अनिष्ट मंगल-  
शुभ का अभाव, अशुभ, अनिष्ट Inausp-  
icious; evil परह० १, २;—निमित्त  
त्रि० (-निमित्त) अमंगल-अनिष्ट  
सूचक अगस्त्यपुरादि३. अमङ्गलसूचक,  
अशुभसूचक अङ्गस्फुरणादिक निमित्त of  
evil omen ( throbbing of limbs  
etc ) indicative of an evil. परह०  
१, २,

अमंगलत्ता. स्त्री० (अमङ्गलता) अमंगलपणुं;  
अमङ्गलपना; अशुभपना Inauspici-  
ousness. विशेष० १५;

अमग्ग पुं० (अमार्ग) मिथ्यात्व, इपाय आदि अ-  
मार्ग मिथ्यात्व, कपायवगैरह, आत्मा का अहित  
करने वाला मार्ग A wrong path,  
e g of heresy, evil passion etc.  
“अमग्गं परियाणामि मग्ग उवसपप्पामि”  
आव० ४, ८,

अमग्घाय पु० (अमाघात) लुओ 'अमाघाय'  
शब्द देखो 'अमाघाय' शब्द. Vide  
“अमाघाय” उवा० ८, २४१; परह० २, १,

अमच्च. पुं० (अमात्य) प्रधान; मंत्री, दिवान,  
राज्यनेो डारलार यज्ञावतार मंत्री; दीवान;

प्रधान, राज्य का मुख्य कारोबार करने वाला  
A minister; an administrator  
of a state नाया० १, ८, १२, १४, विवा०  
४, ६, राय० २५३, ओव० अणुजो० ६६,  
परह० १, ४, संथा० ८०, विशेष० ६२८,  
कप्प० ४, ६२; सु० च० ११, ५६,

**अमच्छर** त्रि० (अमत्सर) भत्सर-ईर्ष्या  
विनातो; पारङ्गा गुणुने सहन करने वाला मत्सर-  
ईर्ष्या के अभाव वाला, दूसरे के गुणों को सहन  
करने वाला Free from jealousy  
सम० प० २३६,

**अमच्छरि** त्रि० (अमत्सरिन्) भत्सर  
रहित, परगुणुग्राहक मत्सर रहित, दूसरों के  
गुणों को ग्रहण करने वाला Free from  
malice or jealousy परह० १, ४;

**अमच्छरियत्ता** स्त्री० (अमत्सरिकता) लुओ।  
'अमच्छरियया' शब्द देखो 'अमच्छरियया'  
शब्द Vide "अमच्छरियया". ओव० ३४,  
भग० ८, ६,

**अमच्छरियया** स्त्री० (अमत्सरिकता) भात्सर्य-  
ईर्ष्या अभाव, पारङ्गा गुणु सहन करने वाला ते  
मत्सरता-ईर्ष्या का अभाव, दूसरों के गुणों को  
सहन करना. Absence of malice or  
jealousy. ओव० ३४, भग० ८, ६,

**अमज्जमंसासि** त्रि० (अमज्जमासाशिन्)  
भक्षित अने मांस न वापरने वाला मदिरा और  
मांस का सेवन न करने वाला, मद्य और मांस को  
व्यवहार में न लाने वाला. (One)  
abstaining from wine and flesh  
सूय० २, २, ३८,

**अमज्झ** त्रि० (अमज्झ-नास्ति मध्य यस्मिन्  
तत्) मध्य विना, जेभा जे भाग न थछ  
शेडे तेषु मध्य रहित, जिसमें दो भाग न हो  
सकें ऐसा. Having no middle part,  
incapable of being divided into  
two or more parts. "तत्रो अमज्झा

प० तं० समणु पणुसे परमाणू " ठा० ३, २,  
भग० ५, ७, २०, ५,

**अमण** न० (-अमन) ज्ञानु ते; आंतरिक  
निर्णय जानना, आन्तरिक अथवा मानसिक  
निर्णय Knowing, mental decision  
ठा० ३, ४, (२) अत, अवसान अन्त,  
आखिर, अवसान end विशेष० ३४५३,

**अमण** न० (-अमनस्) विचारशून्य मन.  
विचारशून्य मन Vacant mind, mind  
void of thought "तिविहे अमणे  
प० तं० शोतम्मणे शोतयज्जमणे अमणे" ठा०  
३, ३, (२) असज्जी, मन विना असज्जी, मन  
रहित devoid of the possession  
of a mind क० प० १, १६, क० ग० ५,  
५०, प्रव० ११२५,—तिरिय त्रि०  
(-तिर्यच्) असंजी तिर्यच् असज्जी तिर्यच्  
sub-human living beings devoid  
of consciousness प्रव० ११२५,

**अमणक्ख** त्रि० (अमनक्ख) मननी प्रवृत्ति  
रहित मन की प्रवृत्ति रहित Devoid of  
mental activity सूय० २, ४, २,

**अमणाम** त्रि० (अमनाम-अमनआप-न कदा-  
चिदपि ग्राह्यतया जन्तूनां मनांसि आगोती-  
त्यमनआपम्) मनने ग्राह्य न थाय ते, जैसे  
मनने अप्रिय लागे तेषु, मनने प्रतिकूल मन  
को जो ग्राह्य न हो वह, जो सदा मन को अप्रिय  
लगे, मन के प्रतिकूल Disagreeable to  
the mind, distasteful नागा० १,  
१६, जीवा० १, पन्न० २८, भग० १, ५; ७;  
३, २, ७, ६, ६, ३३, ज० प० २, ३६,

**अमणाम** त्रि० (अमनोम-न मनमा अम्यते  
गग्यते पुन पुन स्वरणतो वत्तदमनोमस्)  
मनने अत्यंत अनिष्ट मन को अत्यंत अनिष्ट  
Most disagreeable to  
the mind भग० १, ५,—स्तर  
पु० (-स्तर) अप्रिय स्व०-अवाग,

मनने अणुगमतो स्वर मनोहरता रहित स्वर;  
अप्रिय स्वर; मन को न रुचने वाला स्वर.  
unpleasant sound, harsh voice.  
भग० १, ७;

अमणामतर. त्रि० (अमनआपतर) मनने अति-  
शय अणुआमणु मन को अत्यंत अप्रिय.  
Highly displeasing to the  
mind. नाया० १२; १६;

अमणामत्ता. स्त्री० (अमनोमत्ता) मनने  
अनिष्टपाणु; मननी प्रतिदूषिता. मन का प्रति-  
कूलपना; मन का अनिष्टपन Disagree-  
ableness to the mind; mental  
disrelish भग० ६, ३;

अमणुरण. त्रि० (अमनोज्ञ-मनसोऽनुकूलं  
मनोज्ञं न मनोज्ञममनोज्ञम्, अथवा न मनसा  
ज्ञायतेऽसुन्दरतया इत्यमनोज्ञम्) मनने गम-  
तुं नहि; मनने आनंददायक नहि, अशोभन,  
असुंदर, अनिष्ट; मनने प्रतिदूष मन को जो  
अप्रिय हो वह, मनोहरता रहित; अनिष्ट; अशो-  
भन; मन के प्रतिकूल. Not agreeable  
to the mind, not charming,  
ugly. पञ्च० २८; ओव० २०; निसी० ७,  
२७; सूय० १, १, ३, १०; नाया० १; १२;  
१६; जीवा० १; भग० १, ५, ७; ३, २; ६,  
३; ६, ३३; २५, ७; ज० प० २, ३६;  
—पाणियग. न० (—पानीयक) अनिष्ट-  
अराय पाणी; न पीवा योग्य पाणी  
खराब पानी; न पीने योग्य जल bad  
water; water unfit for drink-  
ing purposes. भग० ७, ६;—स्तर.  
पुं० (—स्वर) अराय स्वर: अभधुर अवाळ  
अनिष्ट-खराब स्वर bad voice, harsh  
voice. भग० १, ७,

अमणुरणतर. त्रि० (अमनोऋतर) अतिशय  
अमनोज्ञ-अनिष्ट अत्यन्त अनिष्ट-अमनोज्ञ.

Highly disagreeable; highly  
unpleasant विवा० १, १,

अमणुरस पुं० (अमनुष्य) मनुष्य नहि ते; देवता  
आदि. जो मनुष्य न हो वह; देव वगैरह. Not  
man, 1 e. gods etc. नंदी० (२) नपुंसक.  
नपुंसक an impotent भग० ८, ६;

अमत्त. न० (अमृत) सुधा; अमृत अमृत.  
Nectar नाया० १; (२) क्षीरोदधि समुद्रतुं  
जल. क्षीरोदधि समुद्र का जल. water of  
the Ksīrodadhi ocean जीवा० ३, ४;

अमत त्रि० (अमत) संमत नहि, अमान्य.  
असम्मत; अमान्य Not assented to;  
not acceptable. भग० १८, ७;

अमति. स्त्री० (अमति) दुर्भति, दुष्पुद्धि.  
कुबुद्धि, दुर्मति Wickedness of thou-  
ght “समाययंति अमति गहाय” उक्त०  
४, २,

अमत्त न० (अमत्र) पात्र; लाजल. पात्र, वरतन;  
भाजन A vessel, a utensil सूय० १,  
६, २०, ओव० १७;

अमम त्रि० (अमम-नास्ति मम ममत्वं यस्य स  
तथा) डाल पणु वस्तु उपर जेने मारापणुं  
नथी ते; भभत्वरहित; निर्दोषी किसी भी  
वस्तु पर जिसका ममत्व नहीं है वह Self-  
less, free from attachment to  
any object, free from greed.  
ओव० १०, १७; दस० ६, ६६; ८, ६४, भग०  
६, ७; (२) जम्बूद्वीपना भरतक्षेत्रमां  
आवती चोवीसीमां थनार पारमा तीर्थकर.  
जंबूद्वीप के भरतक्षेत्र में आगामी चौवीसी में  
होने वाले बारहवें तीर्थकर the would-  
be twelfth Tirthankara in the  
coming Chovīsi in the Bha-  
rataksetra of Jambūdvīpa अंत०  
५, १; सम० प० २४१, प्रव० २६६, (३)  
दिवसना २५ भा मुहूर्तपुं नाम. दिवस के

२५ वें मुहूर्त का नाम name of the twenty-fifth Muhūrta of a day जं० प० २, २५; ७, १५२, सू० प० १०; ( ४ ) देवकु३, उत्तरकु३ना जुगलिया मनुष्यनी ओ३ नत देवकुरु, उत्तरकुरु के जुगलिया मनुष्यों की एक जाति a species of the Jugahyās of Devakuru, Uttarakuru. जीवा० ३, ४,

**अममायमाण व० कृ० त्रि० (अममीकुर्वत्)** भारं भारु न डरतो, वस्तु उपर भभत्व न राभतो किसी भी वस्तु पर भभत्व न रखता हुआ, “यह वस्तु मेरी है, वह वस्तु मेरी है” इत्यादि न कहता हुआ. Not saying “mine, mine,” not attached to any thing. आया० १, २, ५, ८८,

**अमममणा. स्त्री० (अमन्मना)** अरुणदित-२५४ वाणी, जेभां अयडाथ नहि-उयडा न आय-भभम थाय नहि तेनी वाणी अस्खलित-स्पष्ट वाणी, धाराप्रवाह वाणी, जिसमें अटके नहीं ऐसी वाणी Uninterrupted clear speech, distinct, unstammering speech ओव० ३४,

**अमय त्रि० (अमत)** लुओ ‘अमत’ शब्द देखो ‘अमत’ शब्द Vide ‘अमत’ पि० बि० १६४;

**अमय न० (अमृत)** लुओ ‘अमत’ शब्द देखो ‘अमत’ शब्द Vide “अमत” उत्त० १७, २१; नाया० १, राय० ६२, भक्त० १६७, पचा० ३, १२,—कलस पु० (—कलश) अमृते ज्यों धडे अमृत से भरा हुआ घडा. a pot full of nectar नाया० ६,—फल. न० (—फल) अमृतोपम फल, अतिश्वादृष्ट फल अमृत के समान फल, अतिशय स्वादिष्ट फल a nectar like fruit a very delicious fruit

नाया० ६,—मेह पु० (—मेघ) भरत आदि क्षेत्रमा उत्सर्पिणीने पीने आरे जेसतां सात दिवस सुधी योथे वरसाद वरसे तेनु नाम भरत आदि क्षेत्रों में उत्सर्पिणी के दूसरे आरे का—दूसरे कालविशेष का प्रवेश होते ही सात दिनों तक जो चौथी वर्षा हो उसका नाम the fourth shower of rain lasting seven days at the commencement of the second aeon of Utsarpini in Bhrataksetia etc जं० प० २, ३८,—रस पु० (—रस) अमृतरस अमृतरस nectar पंचा० १६, १०; —रसायण न० (—रसायन—अमृतमिव रसायनं जराव्याधिरौषधममृतरसायनम्) अमृतरूप रसायण, हितकारी अमृतरूप रसायन हितकर an elixir prolonging youth and life like nectar, anything wholesome गच्छा० ४५,—वल्ली स्त्री० (—वल्ली) अमरवेल, एक लता—विशेष a kind of creeper प्रव० २४०,—वास पु० (—वर्षा) तीर्थंकरना नम आदि प्रसंगे देवता वृष्टि करे ते तीर्थंकर के जन्मादि के समय देवगण जो वृष्टि करते हैं वह a shower of rain sent by gods at the time of the birth of a Tirthankara आया० २, १५, १७६;

**अमयघोस पु० (अमृतघोष)** डाड्डी नगरीने ओ३ प्राचीन राजा, जे जे सनम लध परम पद पाभ्यो उतो काकंदी नगरी का एक प्राचीन राजा, जो कि सयम लेकर परम पद—मोक्ष को प्राप्त हुआ Name of an ancient king of a city named Kākandī who became a monk and attained to Moksa संत्या० ७५,

**अमर पु० (अमर)** देवता, देव देवता, देव. God. क० ग० १, १८, प्रव० १३३३;

पन्न० २, परह० १, ४, ओव० २१.  
 ( २ ) ऋषभदेवस्वामी तेरमा पुत्रनु  
 नाम. ऋषभदेवस्वामी के १३वें पुत्र का नाम  
 the name of the thirteenth son  
 of Rṣabhadeva Svāmī कप्प० ७, (३)  
 सिद्ध भगवान् सिद्ध परमेष्ठी, सिद्ध भगवान्  
 soul that has obtained salvation  
 “इमस्स चेष पडिबूहणद्वाए अमराय महा-  
 सत्थी” आया० १, २, ५, ६४, ओव०—इंद्र  
 पु० (—इन्द्र ) देवतानो ध३, देवतानो राज.  
 देवों का इन्द्र—राजा a king of gods चउ०  
 १०,—ईस्सर पु० (—ईश्वर ) देवतानो ईश्वर-  
 ध३. देवों का ईश्वर—इन्द्र the lord of gods,  
 viz Indra प्रव० १४६६,—तिरिआउ.  
 न० (—तिर्यगायुप्) देवता अने तिर्ययनु आयुष्य  
 देवता और तिर्यच का आयुष्य the life  
 period of gods and sub-human  
 living beings क० ग० ५, ५२,—अ-  
 च्चण न० (—अचन ) देवताना विमान,  
 स्वर्गलो३ देवों का विमान, स्वर्गलोक  
 abodes of gods heaven दस०  
 ४, २८,—वइ. पु० (—पति) देवतानो ध३.  
 देवों का इन्द्र king of gods, Indra of  
 gods भग० ३, ८, पन्न० २, ज० प०—वर  
 पु० (—वर ) महद्धि३ देव महद्धिकदेव a  
 god of great wealth and power  
 तंडु०—सुह. न० (—सुख ) देवतानुं मुष्य  
 देवताओं का सुख, happiness of  
 gods. आव० ४,

अमरकंका खी० ( अमरकङ्का ) द्रौपदीनु  
 डरणु डरनार धातकी भउता पद्मेत्तर  
 राजनी मुष्य राजधानी द्रौपदी का  
 हरण करने वाले धातकी खंड के राजा  
 पद्मेत्तर की मुख्य राजधानी. The capital  
 of Padmottara king of Dhāta-

ki Khanda who had kidnapped  
 Draupadī नाया० १, १६,

अमरजिअ. पु० ( अमरजीव ) अमरकुमारनो  
 ७५, डे जे आवती येवीसीमां नेवीसमा  
 अनंतवीर्यनामे तीर्थंकर थशे अमरकुमार  
 का जीव, जो आगामी चौवीसी में अनन्तवीर्य  
 नाम का २३ वां तीर्थंकर होगा. The soul of  
 Amarakumāra which will take  
 birth as the 23rd Tirthankara  
 Anantavīrya by name, in the  
 coming Chovīsī (cycle of time).  
 प्रव० ४७५,

अमरवइ. पु० ( अमरपति ) ज्ञातवंशनो  
 ओ३ कुमार, डे जेले मल्लीनाथ प्रभु साथे  
 प्रवज्या लीधी ज्ञातवंश का एक कुमार,  
 जिसने मल्लीनाथ प्रभु के साथ दीक्षा ली थी A  
 prince of Jñāta dynasty who  
 entered the order of asceticism  
 with Mallinātha नाया० ८,

अमरसेण. पु० ( अमरसेन ) ज्ञातवंशना ओ३  
 कुमार, डे जेले मल्लीनाथनी साथे प्रवज्या  
 लीधी ज्ञातवंश का एक कुमार, जिसने कि  
 मल्लीनाथ के साथ दीक्षा ली. A prince of  
 the Jñāta race who entered  
 monkhood with Mallinātha  
 नाया० ८;

अमरिस पु० ( अमर्ष ) ईर्ष्या, असूया; अदे-  
 भाध ईर्ष्या, अदेखाई. Jealousy, envy.  
 भग० ३, २, १५, १. ( २ ) डोप, रोप; अ-  
 सहनशीलता कोप- रोप, सहनशीलता  
 का अभाव anger; impatience,  
 परह० १, ३; विशेष १६०६; ( ३ ) महा-  
 द्वायद बहुत अधिक झगडा. deadly  
 strife. “ ईसा अमरिस अतवा ”  
 उक्त० ३४, २३,

अमरिसण त्रि० ( अमर्षण ) अपराध सहन  
 नहि डरनार, अपराधी उपर क्षमा न राख-



नार अपराध सहन न करने वाला, अपराधी के ऊपर क्षमाभाव न रखने वाला Unforgiving परह० १, ४, सम० प० २३६, अमल त्रि० ( अमल ) निर्मल, स्वच्छ निर्मल, साफ Pure, clear राय० ४७, ( २ ) पु० ( न विद्यते मल कर्म यस्यासावमल ) सिद्ध भगवान् सिद्ध भगवान् one free from the bondage of Karma, a Siddha प्रव० १२५४, ( ३ ) ऋषभदेवस्वामीना सातमा पुत्रनु नाम ऋषभदेवस्वामी के सातवें पुत्र का नाम name of the seventh son of Risabhadeva कप्प० ७,

अमला स्त्री० ( अमला ) शकेंद्री पायभी अथ-भडिपीनु नाम शकेंद्र की पाँचवीं पटरानी का नाम Name of the fifth principal queen of Sakindra ठा० ४, २, भग० १०, ५,

अमवस्सा स्त्री० ( अमावस्या ) अभावास, कृष्ण पक्षने छेले दिवस अमावस, कृष्ण पक्ष की अन्तिम तिथि The 15th day of the dark half of every lunar month

“अमवस्सपडिवयाहि” पंचा० १६, २०,

अमहग्घय त्रि० ( अमहर्घिक-महती अर्घा मूल्यं यस्यासौ महार्घः, न महार्घोऽमहार्घे स एवामहर्घिक ) अलु मूल्यवानुं नहि, सस्तुं, थोड़ी किम्मतनु, छलकुं. सस्ता, थोड़ी कीमत वाला, हलका Cheap, of small value or price “अमहग्घए होइ हु जाणएसु” उक्त० २०, ४२,

अमहच्छण त्रि० ( अमहाधन ) लुओ ‘अमहग्घय’ शब्द देखो ‘अमहग्घय’ शब्द Vide “अमहग्घय” पंचा० १७, १३,

अमाइ त्रि० ( अमायिन्-न मायाऽस्यास्तीत्य-मायी ) माया-कुटिलता रहित, सरल; विश्वास-पात्र माया-कुटिलता रहित. सरल, विश्वास-पात्र Free from guile, guileless “अलोलुए अकुहए अमाई” दस० ६, ३, १०, भग० ३, ४, ५, उक्त० ११, १०. पंचा०

१५, १२,—रूच त्रि० (—रूप-अमायि रूपं यस्यासावमायिरूप ) सर्वथा मायारहित सर्वथा माया-रूप से रहित perfectly free from guile, perfectly guileless “एगत्तदिट्ठी य अमाइरूवे” सूय० १, १३, ६,

अमाइल्ल त्रि० ( अमायाविन् ) मायारहित छल कपट रहित Free from guile or deceit आया० १, ६, ४, १६,

अमाइल्लया स्त्री० ( अमायावित्ता ) मायानो अभाव, मायानो त्याग इतना माया-छल कपट का अभाव Guilelessness, freedom from deceit ठा० १०, १०,

अमाघाय पु० ( असाघात-मा लक्ष्मीः सा च द्वेधा धनरूपा प्राणरूपा च तस्या घातो हनन तस्याभावोऽमाघात ) चोरी न इतनी ते, छेड़ने भारनुं नहि ते, अमारी चोरी का न करना, किसीको न मारना Absence of killing or stealing or both “तएण रायगिहे नयरे अन्नयाकयाइं अमाघाए घुट्टे यावि होत्था” उवा० ८, २४१, परह० २, १,

अमाणत्त न० ( अमानत्व ) अमानिपणुं, मानने अभाव मान का अभाव Absence of conceit भग० १, ६,

अमाणुस त्रि० ( अमानुष ) मनुष्य सम्बन्धी नहि, मनुष्य शिवायनुं जो मनुष्य सम्बन्धी नहीं वह Not human, pertaining to things, not human “अमाणुसासु जोणिसु, विणिहम्मति पाणियो” उक्त० ३, ६,

अमाणुस्सअ त्रि० ( अमानुषक ) मनुष्य सम्बन्धी नहि, मनुष्य शिवायनुं जो मनुष्य सम्बन्धी नहीं वह, मनुष्येतर Pertaining to things not human सम० ३०;

अमाय त्रि० ( अमाय ) मायारहित माया रहित. छल कपट रहित Free from guile or deceit आया० १, १, ३, १८,

अमार्यत व० क० त्रि० ( अमात् ) न माते, न समाते न समाता हुआ Incapable of being contained सु० च० २, ६८;



**अमायत्त.** न० ( अमायत्व ) अभायिपण्यं, मायानो अभाव माया 'का अभाव Absence of guile or deceit भग० १, ६; **अमायि.** त्रि० ( अमायिन् ) लुओ 'अमाइ' शब्द देखो 'अमाइ' शब्द Vide "अमाइ". भग० ५, ४; १८, ५, २५, ७;—**सम्मदिट्ठि** पुं० (—सम्यग्दृष्टि) मायारहित सम्यग् दृष्टिवाणो ७५; दुटिलतारहित समझिती. माया-छल कपट रहित सम्यग्दृष्टि जीव a soul full of guileless right faith भग० १, २; ३, ६; १६, ५;

**अमावस्सा.** स्त्री० ( अमावस्या ) अभावस अमावस. The last day of the dark half of a month. प्रव० १५६६; जं० प०—**चंद्र.** पु० (—चन्द्र) अभासने। यद्रमा. अमावस्या का चंद्र a moon on the fifteenth day of the dark half of a month नाया० १०, प्रव० १५६६,

**अमावासा.** स्त्री० ( अमावास्या ) अमावास, कृष्ण पक्षने छेत्सेो दिवस अमावस्या, अमावस, कृष्ण पक्ष का अन्तिम दिन. The last day of the dark half of a month "दुवालस अमावासाओ प० तं० सावट्ठी पोढवती जाव आसाडी" सू० प० १०, "जयाणं भंते! साविट्ठिपुण्णिमा भवइ तयाणं माही अमावासा भवइ" जं० प० ७, १५३; वव० १०, २; कप्प० ५, १२७,

**अमिज्ज** न० ( अमेय ) लुओ 'अमेज्ज' शब्द देखो 'अमेज्ज' शब्द Vide "अमेज्ज." कप्प० ५, १०१;

**अमि-मे-ज्ज.** त्रि० ( अमेय ) डोर्ध पाणु वस्तु मापीने आपवानी-इय विक्रय डरवानी अमुक समयमाटे ज्या भनार्थ डरवामा आवी छे ओवुं नगर वगेरे. ऐसा नगर वगैरह, जहाँ किसी भी वस्तु को नापकर क्रय विक्रय करने की अमुक समय तक के लिये मनाही की गई हो. ( A city etc ) prohibited from buying or selling any thing by

a measure of capacity जं० प० ३; भग० ११, ११,

**अमि-मे-ज्झ** न० ( अमेध्य ) विष्टा; अशुचि. विष्टा, मल, अशुचि Filth, dirt तंडु०—**पूरण.** त्रि० (—पूर्ण) अशुचिथी भरल. अशुचि से भरा हुआ. full of filth; filthy. तंडु०—**रस** पु० (—रस) अवाही विष्टा, अशुचि रस बहने वाली विष्टा, अशुचि रस liquid excrement तंडु०—**संभूय.** त्रि० (—सम्भूत) विष्टामांथी उत्पन्न थयेल. विष्टामें से उत्पन्न produced from excrement or filth. तंडु०

**अमिज्झमय** न० ( अमेध्यमय ) विष्टामय, अशुचिमय विष्टामय, अशुचियुक्त Filthy, full of filth. तंडु०

**अमिज्ज.** न० ( अमित्र ) अहित डरनार; दुश्मन अहित करने वाला, शत्रु, दुश्मन. An enemy; a foe. ठा० ४, ४, नाया० १४;

**अमिय.** पुं० ( अमृत ) जेनेो भरवानेो धर्म नथी ते; सिद्ध लगवान् जिसका मरने का धर्म नहीं है वह, सिद्ध भगवान्. A Siddha, one not subject to death. पन्न० २; ( २ ) न० अमृत, सुधा अमृत; सुधा. nectar. भग० ६, ३३, सम० प० २३२, गच्छा० ४६,

**अमिय.** त्रि० ( अमित-न मित परिमितममितम् ) अपरिमित; परिमाणरहित, असंख्येय वा अनंत असीम, परिमाण रहित, असंख्य, अनन्त Unlimited innumerable. "केवली...मियपि जाणइ अमियंपि जाणइ" भग० ५, ४, ६, १०; उत्त० ३२, १०४, कप्प० २, ३४, ( ३ ) दक्षिण तरङ्गा दिशाकुमार देवतानेो धन् दक्षिण की ओर के दिशाकुमार देवों का इन्द्र. the Indra of the Disākumāra gods of the south पन्न० २;—**आसणिय** पुं० (—आसनिक ) वारंवार डेहाणुं पहलवाना

उभेस ३२ना२ बार बार ठिकाना बदलाने वाला; एक स्थानपर न रहने वाला one changing his seat frequently कप्प० ६, ५०,—ग्याणि पु० (—ज्ञानिन् ) अनंतज्ञानी; सर्वज्ञ, देवज्ञानी अनंत ज्ञान वाला, सर्वज्ञ, केवली one having perfect knowledge सम० प० २४०,—मेह पु० (—मेघ ) लुओ 'अमयमेह' शब्द देखो 'अमयमेह' शब्द vide "अमयमेह" "एत्थण अमियमेहे ग्यामं महामेहे पाउब्भविस्सइ" जं० प०

अमियगह पु० (अमितगति) दक्षिण दिशाना दिशाकुमार जतिना देवतानो धन्द्, भवन-पतिना २० धन्द्भानो ओक दक्षिण दिशा के दिशाकुमार जाति के देवों का इन्द्र, भवनपतियों के २० इन्द्रों में से एक इन्द्र The Indra of the Disākumāra gods of the south, one of the twenty Indras of Bhavanapatis ठा० २, ३, पञ्च० २; सम० ३२, भग० ३, ८; जं० प० ७, १६६;

अमियभूय त्रि० (अमृतभूत) अमृत पु० अमृत के समान Nectarious 'जिणवयणसुभासिय अमियभूय' आउ० ६३,

अमियवाहण पु० (अमितवाहन) उत्तर दिशाना दिशाकुमार देवतानो धन्द्; भवन-पतिना २० धन्द्भानो ओक उत्तर दिशा के दिशाकुमार देवों का इन्द्र, भवनपतियों के २० इन्द्रों में से एक इन्द्र The Indra of the Disākumāra gods of the north, one of the twenty Indras of Bhavanapatis सम० ३२; ठा० २, ३, पञ्च० २, भग० ३, ८;

अमिल. न० (अमिल) अमिल देशनी पनावटनु वस्त्र, उननु वस्त्र अमिल देश का वना हुआ वस्त्र; उन का कपड़ा A cloth made in the Amila country; a wollen cloth आया० २, ५, १, १४५,

अमिलक्खु पु० (अम्लेच्छ) भेदछ लापा न

जालुना२, आर्य म्लेच्छ भाषा न जानने वाला, आर्य A civilized man, an Ārya सूय० १, १, २, १५,

अमिला स्त्री० (अमिला) २१ मा नमिनाथ तीर्थंकरनी मुख्य साध्वी इक्कीसवे नमिनाथ तीर्थंकर की मुख्य साध्वी The chief female ascetic of the twenty-first Tirthankara Naminātha सम० प० २३४;

अमिलाण त्रि० (अम्लान) ३२भा३ गयेल नहि, मलिन थयेल नहि, ताणुं ताजा, बिना-मुरमाया हुआ, जो मलिन न हुआ हो वह Unwithered, fresh ओव०

अमिलाय. त्रि० (अम्लान) लुओ 'अमिलाण' शब्द देखो 'अमिलाण' शब्द Vide "अमिलाण." भग० ११, ११; जं० प० —मल्लदाम न० (माल्यदामन्) न ३२भा३येल फूलनी भाणा न मुरमाये हुए फूलों कीमाला a garland of unwithered flowers भग० ११, ११, कप्प० ५, १०१,

अमिलिअ त्रि० (अमिलित) ओक सूत्रेमा भीजं सूत्रे मेणवी-लेण संमेण करी भोलवुं ते मिलित दोष, ते दोष जेभां नथी ओवुं एक सूत्र में दूसरे सूत्रों को मिलाकर-गट पट करके बोलना मिलित दोष कहलाता है, यह दोष जिसमें नहीं है ऐसा Free from the fault of causing confusion by intermixing one Sūtra with another अणुजो० १३, भग० ४२, १, विशेष० ८५४,

अमुद्र त्रि० (अमोचिन्) लीधेल कार्यने न छोडना२-अधवय न मुकना२ उठाये हुए काम को बीच में न छोड़ने वाला (One) not leaving a work half done. विशेष० ३४०२;

**अमुंचओ** व० कृ० त्रि० (अमुंचत्) (अमुञ्चत्) ( 'अमुञ्चत्' शब्दानी पढ़ीनुं ओइ पयन, 'अमुञ्चत्' ओ संस्कृत शब्दनी अनुवाद छे ) न भुक्तो; न छोडतो. "अमुञ्चत्, शब्द की षष्ठी विभक्ति का एक वचन" नहीं छोड़ता हुआ; त्याग न करता हुआ Not abandoning, not leaving off. उत्त० ३६, ८१;

**अमुग.** त्रि० (अमुक) अमुक, इलाखो; गमे ते कोछ ओइ. अमुक; फलों; कोई एक. Certain, some one. वच० २, २२; ७, ५; नंदी० ३५; दस० ७, ६; ५०; विशेष० १५६०;

**अमुच्चमाण.** व० कृ० त्रि० (अमुच्यमान) न छोडतो नहीं छूटता हुआ Not being abandoned. भग० ६, ३३;

**अमुच्छा** स्त्री० (अमूच्छा) मूर्च्छा नी अभाव मूर्च्छा का अभाव. Absence of attachment. भग० १, ६;

**अमुच्छिअ-य.** त्रि० (अमूच्छित) मुच्छा-आसक्तिरहित. मूर्च्छा रहित; ममत्व रहित, आसक्ति रहित. Free from attachment दस० ५, १, १; ५, २, २६; १०, १, १६; उत्त० ३५, १७, नाया० १७; १६; भग० १४, ७, आया० २, १, ५, २६;

**अमुणंत.** व० कृ० त्रि० (अजानत्) न जानतो नहीं जानता हुआ. Not knowing विशेष० ३३२,

**अमुणिय** त्रि० (अमुणित-अज्ञात-नास्ति मुणितं ज्ञानं यत्र तदमुणितम्) अजानयो, ज्ञानरहित नहीं जाना हुआ, ज्ञान रहित. Ignorant, devoid of knowledge परह० १, २, प्रव० २४८, उत्त० १२४; —नाम. त्रि० (अनामत्) जेनु नाम जानवामा नथी तेनी वस्तु. अज्ञातनाम की वस्तु. ( a thing )

of unknown name. प्रव० २४८; —संख. त्रि० (असंख्य) जेनी संख्या जानवामां नथी ते; अपरिमित संख्या रहित; जिसकी संख्या की जानकारी न हो वह; परिमाण रहित. of unknown measure or quantity, unlimited in quantity सु० च० २, ६४१;

**अमुत्त** त्रि० (अमुक्त) संसारथी मुक्त नथी थयो ते; संसारी. जो संसार से मुक्त नहीं हुआ वह, संसारी. Not liberated from worldly existence. ठा० ४, ४; १०, जं० प० ५, ११२;

**अमुत्त.** त्रि० (अमूर्त) अभूर्त; वर्ण, गंध, रस अने स्पर्शरहित धर्मरहितकाय वगेरे अमूर्त, मूर्ति रहित; वर्ण, गंध, रस और स्पर्श रहित धर्मास्ति-काय आदि अमूर्त द्रव्य ( Substance like Dharmāstikāya ) devoid of colour, smell, taste and touch. विशेष० ६८८; —भाव. पुं० (अभाव) अभूर्तपदं, अमूर्तता state of being devoid of colour, smell, taste and touch. "अमुत्तभावा विय होइ शिचो" उत्त० १४, १६,

**अमुत्ति** स्त्री० (अमुक्ति) मोक्षनी अभाव. मोक्ष का अभाव Absence of salvation. ( २ ) लोल लोभ. greed; avarice, परह० १, ५;

**अमुय** त्रि० (अमुक) लुओ 'अमुग' शब्द देखो 'अमुग' शब्द. Vide 'अमुग' पि० नि० ५२८,

**अमुय.** त्रि० (अस्मृत) स्मृतिभां नहि आवेक्ष स्मृति में नहीं आया हुआ Not remembered, unrecollected. मूय० २, ७, ३८, भग० ३, ७,

**अमुयंत.** व० कृ० त्रि० (अमुञ्चत्) न छोडतो;

न मुक्ती नहीं छोड़ता हुआ, न त्यागता हुआ  
Not abandoning, not giving  
up. भग० ६, ३२;

**अमुय-द-ग. त्रि० (अमृतक)** आल अने  
आभ्यन्तर पुद्गल की धा विना वैक्रियशरीर  
अनावनार बाह्य और आभ्यन्तर पुद्गल ग्रहण  
क्रिये बिना वैक्रियशरीर बनाने वाला (One)  
who makes or creates a Vai-  
kriya body (i.e. one which can  
be made large or small at will)  
without taking particles of  
matter either from inside the  
body or outside it ठा० ७;

**अमुला अ० (अमृषा)** सत्य. सत्य, सचाई  
Truly, not falsely. सूय० १, १०,  
१२,

**अमुह त्रि० (अमुख)** निरुत्तर; जवाब न आपी  
शके ते. जो उत्तर न दे सके वह Having no  
answer to give, tongue-tied.  
भग० ८, ६,

**अमुहरि त्रि० (अमुखरिन्)** वायाण नडि ते,  
अडुभोडो नडि ते; जो बातू न हो वह,  
जो ज़्यादाह नहीं बोले वह Not loqua-  
cious, not flippanant. “ निसंते सिया  
मुहरी” उत्त० १, ८,

**अमूढ त्रि० (अमूढ)** भूढ नडि ते, तरवने  
जलानार, सन्मार्ग जलानार जो मूढ न हो  
वह, तत्त्वज्ञ सन्मार्ग जानने वाला (One) not  
a block-head, (one) who knows  
the reality, (one) knowing the  
true path नाया० १७; दस० १०, १, ७,  
—दिष्टि छा० (—दृष्टि) अन्य दर्शननी  
धाम धुम तरङ्ग मोड वगरनी दृष्टि-भुद्धि;  
समझितना आठ आचारमाने येथो आचार  
अन्य धर्मों की ओर मोह रहित दृष्टि, सम्यक्त्व  
के आठ आचारों में से चौथा आचार. eight

or view uninfatuated by the  
pomp etc. of other creeds; the  
fourth of the eight practices of  
right faith पञ्च० १, उत्त० २८, ३१;  
प्रव० २६६, पंचा० १५, २४; —लक्ष्य.  
त्रि० (—लक्ष्य-अमूढ) सुनिर्णयो लक्ष्यो बोध-  
विशेषो यस्य स तथा ) वस्तुना स्वरूपने  
यथार्थ जलानार. वस्तु के स्वरूप को यथार्थ  
रीति से जानने वाला. (one) knowing  
the real nature of things;  
possessed of a correct know-  
ledge of the reality of things.  
पंचा० १४, २८; —हृत्थ त्रि० (—हस्त)  
हाथनी कृताभा दुशीयार, हस्तकृता दुशल  
हाथ की कारीगरी में कुशल proficient  
in handicrafts; skilful in  
manual arts. नाया० ६,

**अमूढ त्रि० (अमूढ)** जुओ ‘अमूढ’ शब्द देखो  
‘अमूढ’ शब्द Vide ‘अमूढ’ नाया० ६;

**अमेज्ज न० (अमेय)** डोअये अमुक वपत  
सुधी डोअ वस्तुने भापीने डोअने पेयाती  
आपवी नडि अवेो नीडणेअ दुअम  
‘कोई भी अमुक समय तक किसी वस्तु को  
नापकर न वेंचे’ इस प्रकार की निरुली  
हुई आज्ञा Temporary prohibition  
of sale by measurement ज० प०  
भग० ११, ११,

**अमेअम्भ त्रि० (अमेध्य)** अपवित्र. अपवित्र;  
पवित्रता रहित Impure, unfit for  
religious purposes. विशे० ३४०५;  
न० पिशा; नरग विष्टा; मल excreta;  
faeces तदु०

**अमोसलि. न० (अमुसलि—न मुसली)**  
क्रिया यस्मिन् प्रत्युपेक्षणे तदमुसलि )  
पडिबेडणु इरता वस्त्रने मुशान-साधेवानी  
भादङ्क उयु नीयुं. इरी उपर डे नीये

भीनने न अडाडुं ते; पडिलेहनुओ ओइ गुणु  
पडिलेहन करते समय वस्त्र को मूसल के समान  
ऊचा नीचा करके ऊपर या नीचे जमीन से न  
छुआना; पडिलेहन का एक गुण. A virtue  
in the examination of clothes  
or garments, not raising up or  
lowering down like a pestle the  
cloth to be examined and so  
preventing it from touching  
the ground etc उत्त० २६, २५; ठ०  
६, १;

अमोह त्रि० (अमोघ) अवन्ध्य; सफल  
सफल; जो वन्ध्य न हो वह; जो कभी  
असफल न हो वह. Unfailing, sure  
of effect विशेष० १८४; ३०१६; विवा०  
४, उत्त० १४, २१; दस० ८, ३३, ( २ ) पुं०  
झाड़ वधते सूर्यना गियनी नीचे गाडीनी  
उध-धोरीआने आकारे डाडी डेपील रगती  
रेपा देपाय छे ते कभी कभी सूर्य के नीचे गाडी के  
ऊद के आकार की काली या दूसरे किसी रंग की जो  
रेखा दिखलाई पड़ती है वह lines which  
some times appear under the  
disc of the sun resembling the  
front narrow pole of a cart  
अणुजो० १२७, जीवा० ३, ३, भग० ३, ७;  
( ३ ) वादणा वगरती विजली. बिना बादलों  
का बिजली lightning without  
clouds in the sky जीवा० ३,  
—दसि त्रि० (—दशेन्) यथार्थ ज्ञेनार  
यथार्थ देखने वाला. of uninfatuated  
sight or vision: ( one ) knowing  
the real nature of things विवा०  
३, दस० ६, ६८, —वयण न० (—वचन)  
सार्यक—सरण ययन सार्यक वचन, सरल  
वचन. sensible or straight

forward speech; speech pro-  
ductive of proper effects. ठ०  
४, ३;

अमोह. त्रि० (अमोह) मोह रहित. मोह  
रहित. Free from delusion or  
infatuation. भग० १७, २; ( २ ) पुं० लंघू  
भंदरना रुचक पर्वतना ओइ दूट —शिपर.  
जंबू मदर के रुचक पर्वत के एक शिखर का  
नाम name of a summit of the  
Ruchaka mountain of Jambū  
Mandara. ठ० ८,

अमोहा. स्त्री० (अमोघा) लंघू सुदर्शनानु  
अपर नाम जंबू सुदर्शना का दूसरा  
नाम. Another name of the  
Jambū Sudarśanā. जं० प०  
जीवा० ३, ४, ( २ ) पश्चिम दिशाना अंजनक  
पर्वतनी दक्षिण तरङ्गनी ओइ वावडीनुं नाम  
पश्चिमीय अंजनक पर्वत की दक्षिण ओर  
की एक वावड़ी का नाम. name of a  
well in the south of the western  
Añjanaka mountain. जीवा० ३,  
४, ठ० ४, २, प्रव० १५०२;

अम्म. स्त्री० (अम्मा) माता, मा मा, माता  
Mother. नाया० ८, —आअ पुं० (—तात)  
मायाप, मातापिता. सावाप, माता  
पिता father and mother, parents  
नाया० ६, —ताअ-य पुं० (—तात) लुओ  
'अम्मआअ' शब्द देखो 'अम्मआअ' शब्द  
vide 'अम्मआअ' उत्त० १६, ११;  
भग० ६, ३३; —आई स्त्री० (—धात्री)  
धावमाता, धाई धाय a wet-nurse,  
a nurse who suckles a child  
for its mother भग० ६, ३३; नाया०  
८, १४, १६; —याअ पुं० (—तात) लुओ  
'अम्मआअ' शब्द देखो 'अम्मआअ' शब्द.  
vide 'अम्मआअ' अंत० ६, ३; नाया० ८,



अम्मगा स्त्री० ( अम्मा ) माता, मा. माता, मा.

Mother. भग० ६, ३३,

अम्मड पुं० ( अम्बड ) ओ नाम्ने ओड संन्यासी, डे जेणे महावीरस्वामीना शासनमां तीर्थकरनामगोत्र उपार्जन कथुं. इस नाम का एक संन्यासी, जिसने कि महावीरस्वामी के शासन में तीर्थकरनामगोत्र उपार्जन किया A hermit so named who attained Tirthankara Nāmagotra during the rule of Mahāvīra भग० १४, ८; ठा० ६, १, ओव० ३६;

अम्मया. स्त्री० ( अम्बिका ) माता; मा मा, माता. Mother. विवा० २, नाया० २,

अम्मा स्त्री० ( अम्मा ) माता, मा माता, मा Mother अंत० ३, ८, सम० प० १७६; भग० १, ७, ८, ५, ६, ३३, १५, १, कप्प० ५, १०२, नाया० १, ६; १८, —पिहसमाण पुं० (—पितृसमान ) माता पिता समान, साधु-मुनिने ओकात हितकारी आवड माता पिता के समान, साधु-मुनि के लिये एकान्त हितकारी आवड (any body) equal to or in the place of parents, a Jaina householder devoted wholly to the interests of ascetics ठा० ४, ३,—पिड पुं० (—पितृ) मातापिता, मायाप माता पिता, मावाप parents राय० २८६, ठा० ३, १, ओव० ३८, नाया० १,—पिति पुं० (—पितृ) मातापिता; मायाप माता पिता, मावाप parents अंत० ६, ३,—पितिसमाण पुं० (—पितृसमान ) ओओ 'अम्मापिहसमाण' शब्द. देखो 'अम्मापिहसमाण' शब्द vide 'अम्मापिहसमाण.' ठा० ४, ३, —पियर पुं० (—पितृ) मातापिता; मायाप मावाप, माता पिता parents निर० १, १; भग० ६, ३३; ११, १०, १५,

१, सु० च० २, ३६३; दसा० १०, ३; नाया० १; ८; ६; १६, १८; ठा० ३, १, अंत० ६, ३, कप्प० ५, १०२,—पेइय. त्रि० (—पैतृक) मातापिता संबंधी माता पिता सम्बन्धी of parents "अम्मापेइयणं भंते । सररिए केवइयं कालं संभिडइ" भग० १, ७;

अम्मह त्रि० (अस्मद्) डु; पोते में, खुद व-खुद, स्वयं I, the first person singular

अहं प्र० ए० ठा० ५, १, आया० १, १, १, २; मं प्र० ए० विशेष० २४,

अम्मह प्र० व० नाया० १, २, ४, ८, १४; १६, भग० ३, १, २, ७, १०, ११, ११; १५, १,

अहं प्र० व० नाया० १, ३, ५; ८, ६, १४, १६; भग० १, ३, ६, १, १, ५, ४, ७, १०, ८, ७, ६, ३३, १२, १, १८, २; ८, १६, ३; अंत० ६, १५; राय० ३०; २४१, पंया० ६, २७, ज० प० ५, ११२;

मे द्वि० ए० नाया० १, ८, १६, नाया० थ० भग० ३, २, दस० ५, २, ३७; ६, १, १३,

मम द्वि० ए० भग० ३, २, १३, ६, १५, १; नाया० १, ५, ८, ६, १४, १५; १६, १८,

मम द्वि० ए० नाया० १, ७; १६, भग० १५, १; अम्महं द्वि० व० नाया० १, ३, ५, ८, ६, १४, १६,

अम्महे द्वि० व० नाया० ३, ६, १४, अम्महं तृ० ए० ठा० ४, १, निर० १, १; आया० १, १, १, १,

मे. तृ० ए० नाया० १, ८; भग० १४, ७, दस० ४, ५, २, ३१, ६, ४, १; मए तृ० ए० भग० १, ४, २, १; ३, २, ७, ६, ८, १०, १५, १, १७, २;



३४, १; नाया० १; २; ५; ७; ८;

६; ११; १२; १३; १४; १६;

अम्हेहिं. तु० व० नाया० १; ८; १६; भग० २,

१; ६, ३३; १५, १, जं० प० २, २४;

ममाहितो. पं० ए० भग० १५, १; नाया० १६;

ममं. प० ए० भग० ३, २; ६; ५, ४, ६, ३३;

१८, ८; २०, ८, नाया० ५; ७; ६;

१२; १४; १६, १८;

मज्झ-ज्झं. प० ए० नाया० ६; दसा० ६, २४;

२५; विशेष० १६१, पि० नि०

३७६; सु० च० १, २;

महं-अम्हं. प० ए० नाया० १२; १६;

आया० १, ६, २, १८३;

मम. प० ए० भग० २, १; ३, २; ५, ४; ७,

६; १५, १, ४२, १, नाया० १;

२; ५; ७; ८; ६; १२; १४;

१५;

मे. प० ए० भग० १, ३; २, १; ३, १; २;

५, ४; ८, ११, ११; १८, १०;

नाया० १; ५; ८; ६; १३; १६;

दस० ४; ५, १, ५२; ७६, ६४;

५, २, ३१; ३७, ६, ४; ८, १;

वव० १, ३७; निसी० १४, १२;

अम्हं. प० व० नाया० १; २; ३; ४; ५; ७;

८; ६, १४, १५; १६; १८; भग०

७, १०; ६, ३३; ११, ११;

१५, १; १८, २; विवा० ६; पि०

नि० ४८६;

अम्हे प० व० नाया० ७; ६, १०; १४, १६;

भग० १२, १; ओव० ३८, विवा०

५; जं० प०

अम्हाणं प० व० नाया० ५; ८; भग० ३, १;

अम्हारिस्. त्रि० ( अस्मादृश ) अभास

येवा. हमारे जैसा; हमारे समान. Simi-

lar to us; like us; resembling us.

“जे दुजया अजो अम्हारिसेहि ” उत्त० १३,  
२७; सु० च० १, १६;

अय. पुं० (अज) पूर्वाभाद्रपद नक्षत्रने अधिष्ठाता  
देवता. पूर्वाभाद्रपद नक्षत्र का अधिष्ठातृ देव.

The presiding deity of the Pūr-  
vā Bhādrapada constellation.

“दो अया” ठा० २, ३; अणुजो० १३१; (२)

अडरे। बकरा. a goat. पञ्च० १; जं० प०

५, ११४,—ककरभोई. त्रि० (—कर्करभोजि-

नू-अजस्य कर्करं कर्करायितं मांसं भोक्तुं

शीलमस्येति ) अडराना डर्कर मांसनु लक्ष्यु

डरना२. बकरे के कर्कर मांस का भक्षण करने

वाला. (one) eating the crisp flesh

of a goat. ‘अयकककरभोई या, तुंदिस्ले चिय

सोणिण्” उत्त० ७, ७;—करगा पुं० (—करक)

अध्यासी ग्रहमानो १७ मे। महाग्रह. अध्यासी

ग्रहों में से १७ वॉ महाग्रह. the seven-

teenth major planet of

the ८८ planets. ‘दो अय-

करगा ‘ठा० २, ३; सू० प० २०; जं० प०

७, १७०;—गर. पुं० (—गर-अजं गिरती-

स्यजगरः ) अण-अडराने पणु गणान्तर;

सर्पनी अेड जात; भेडोटे। सर्प. बकरो को

भी लील जाने वाला, सर्प की एक जाति;

बडा भारी सर्प; अखगर a huge kind

of serpent swallowing even

a goat; a boa-constrictor. जीवा०

१; पञ्च० १; सूय० २, ३, २४; जं० प० ३,

२४;—पोसय. त्रि० (—पोषक) अडराने

पाणाना२-पोषक. बकरो को पालने वाला.

a shepherd; herdsman.

निसी० ६, २३;—वीहि खो० (—वीधि)

हस्त, चित्रा, स्वाति, विशाखा अने अनुराधा

अे पांच नक्षत्रनी आश-गतिविशेष हस्त,

चित्रा, स्वाती, विशाखा और अनुराधा इन

पांच नक्षत्रों की चाल-गतिविशेष. the

motion of (peculiar to) the five

constellations viz Hasta, Chitrā, Svāti, Viśākhā and Anurādhā ठ० ६, १;

अय. न० ( अयस् ) लोहं; धातुविशेष, लोह.  
लोहा. Iron. जीवा० ३, १; राय० २५३;  
पञ्च० १, श्रव० ३८, उत्त० ३६, ७३; दस०  
५, १, २३; ८, २३; भग० ३, ३, ५,  
२, १६, १; १८, ६;—आगर. पुं०  
(—आकर ) लोहानी भाषु लोही लोहे की  
खदान. iron-mine निस्त्री० ५, ३७;  
ठा० ७,—कवल्ल. न० ( \*कवल्ल )  
लोहानो तवा; लोही लोहे का तवा. an iron  
pan ' केइ पुरिसे तत्तंसि अयकवल्लंसि '  
भग० ६, १,—कुंडिया स्त्री० (—कुण्डिका)  
लोहानी कुंडी लोहे की कुंडी. an iron  
vessel resembling a large or a  
small tub. विवा० ६;—कोट्टय. न०  
(—कोष्ठक ) लोहं तपायवानी डोडी-भट्ठी.  
लोहा तपाने की भट्ठी. an oven to heat  
iron; a furnace भग० १६, १;—गोल  
पुं० (—गोल ) लोहानो गोला लोहे का गोला.  
an iron-ball. ठा० ४, ४, सूय० २, २,  
६५; पिं० नि० ४६०,—णिञ्वत्तिय त्रि०  
(—निर्वर्त्तित ) लोहानुं अनेसु, लोहथी निपनेसु  
लोहे का बना हुआ, लोह से उत्पन्न made of  
iron भग० १६, १;—पाय न० (—पात्र)  
लोहानुं पात्र-वासथु. लोहे का बरतन an  
iron vessel. आया० २, ६, १, १५२,  
निसी० ११, १,—बंधण न० (—बन्धन)  
लोहानुं अंधन-अंध लोहे का बंध; लोहे का  
बंधन. an iron band or fetter  
निसी० ११, २,—भार. पुं० (—भार)  
लोहाने भार. लोहे का भार-वजन. load  
of iron भग० १३, ६;—रासि. पुं०  
(—राशि ) लोहानो ढगैलो. लोहे का ढेर  
a heap of iron. भग० १६, ६;—लोह

पुं० (—लोभ ) लोहानो लोल-संग्रहवृत्ति.  
लोहे का लोभ; लोहा संग्रह करने का लोभ.  
g l o e d to store up iron.  
निसी० ७, ५; १७, ६,—हारि त्रि० (—हारि-  
त्र ) सोनुं रुपु वगेरेने मुशी लोहानेन छपा-  
उनार, लोहवाणियो. सोना चादी वगैरह छोड़  
कर लोहे को ही उठाने वाला, लोहिया-लोहे  
का व्यापारी ( one ) carrying away  
iron leaving aside gold, silver  
etc. सूय० १, ३, ४, ७;

अयं पुं० ( अयम्-इदम्-प्र० ण० ) आ, २६।मे.  
न०२ आगण यह, सन्मुख, निगाह के आगे  
This नाया० ८, १४; १६, १८, भग० १, ४;  
२, ५; ६; ७, १०, १६, १, दस० ५, २, ३४;  
अणुजो० १६, वव० ४, १३;

अयंतिय त्रि० ( अयन्त्रित ) राजनी म्हेर-  
छाप पिनातु; जेना उपर राजनी मुद्रा नथी  
अवे। सिद्धे वगेरे राजा की मुद्रा रहित  
सिक्का वगैरह ( A coin etc ) not bear-  
ing the seal of the king पोस्तेव  
मुट्टी जह से असारे, अयंतिष् कूडकहा वणे  
वा " उत्त० २०, ४२,

अयंपुल पुं० ( अयंपुल ) अयंपुल नामे गो-  
शालानो अेध सेवक गोशाला का अयंपुल  
नाम का एक सेवक A devotee of Go-  
śālā by name Ayampula भग०  
३, ७,

अयंपुलय पुं० ( अयंपुलक ) लुओ। उपलो  
शब्द देखो ऊपर का शब्द Vide the  
above word भग० ८, ५; १५, १;

अयंसंधि त्रि० ( अयंसन्धि-अयं सन्धिर्यस्य  
साधोरसावयंसन्धिः—यथाकालमनुष्ठानविधा-  
यी, यो यस्य-वर्तमानः कालः कर्तव्यतयो-  
पस्थितस्तस्य तत्करणतया तमेव सन्धस्त इति  
छान्दसत्वादिभक्तेरलुक् ) जे वपतनुं २५।-

ध्याय, पडिलेहुण आदि जे काम होय ते वप्प-  
तेज ते काम करनार; वप्पतसर काम करनार.  
स्वाध्याय, पडिलेहन आदि जो काम जिस  
समय का हो वह काम उसी समय पर करने  
वाला; समय पर काम करने वाला Pun-  
ctual in the performance of  
religious and other actions  
आया० १, २, ५, ८७,

अयण पुं० ( अयन ) सूर्य अंदरने मांडलेथी  
जुहार जय के जुहारने मांडलेथी अंदरने मांडले  
आथी ओक आवृत्ति पुरी करे तेहलो वप्पत,  
त्रय ऋतु अथवा छ मास प्रमाणे ओक अयन  
थाय छे, ओक वर्षमां जे अयन थाय पोषथी  
आषाढ सुधी उत्तरायण अने आषाढथी पोष-  
सुधी दक्षिणायन सूर्य की अन्तरंग या बाह्य  
मंडल की एक पूरी आवृत्तिमें जो समय व्यतीत  
हो वह, एक वर्ष में दो अयन होते हैं एक दक्षि-  
णायन दूसरा उत्तरायण पौष मास से आषाढ  
तक उत्तरायण होता है और आषाढ से पौष  
तक दक्षिणायन यह अयन का समय सूर्य की  
गति पर अवलंबित है The duration  
of time required for the sun  
to make a complete revolution  
from outer to the inner orbit or  
vice versa जीवा० ३, ४, ज० प० २, १८;  
अणुजो० ११५; ओव० १७, सू० प० ठा०  
२, ४, भग० ५, १, ६, ७, २५, ५, विशेष  
२०७१; ओघ० नि० २८२, ( २ ) ओ नामनु  
ओक शास्त्र. इस नाम का एक शास्त्र. a  
science of this name ओव० ३८,  
अयण न० ( अतन-अत्सातत्यगमने, भावेबुज,  
अतनमनादिकालात्सातत्यभवनप्रवृत्तम् ) अ-  
नादि ज्ञाथी निरंतर उत्पन्न थवाभा प्रवर्तुं.  
अनादि काल से निरंतर उत्पन्न होने में जो  
प्रवृत्त हो वह Being eternally and  
ceaselessly produced 'अत्तायमयण-

महया सावज्जमई य जोगंति' विशेष० ३५७८,  
अयण न० ( अदन ) अन्न; भोराक. खुराक,  
अन्न. Food, food-stuff प्रव० १३६;  
अयत्त. त्रि० ( अयत्न ) जयण विनानुं, यतना-  
रहित. यत्नाचाररहित Without inspec-  
tion in the matter of living  
beings दसा० ६, ४,

अयर पुं० न० ( अतर ) सागरोपमरूप का  
परिमाणविशेष सागरोपम प्रमाण काल  
विभाग A period of time measured  
by or equal to a Sāgaropama  
“ तीसहिं अयरेहिं रयरहिओ ” प्रव० ४०१;  
१०४७, विशेष० ३३३५;

अयल पुं० ( अचल ) अंधकवृष्णिना पुत्र-  
छ्वा दशार्ह, के जे नेमिनाथ प्रभु पासे दीक्षा लध,  
आर वरसनी प्रव्रज्या पाणी, शत्रुंजय उपर  
ओक मासने संथारो करी, सिद्ध थया अन्धक-  
वृष्णि का पुत्र-छ्वा दशार्ह, जो कि नेमिनाथ प्रभु  
के पास से दीक्षा लेकर, बारह वर्ष तक प्रव्रज्या  
का पालन करके, शत्रुंजय पर्वत पर एक मास  
का संथार कर, सिद्धगति को प्राप्त हुआ The  
sixth Daśārha, son of Andhaka-  
vr̥isni. He took Dīksā from  
Neminātha, observed ascetic-  
ism for twelve years, practised  
Santhārā for one month on  
mount Śatruñjaya and became a  
Siddha. अत० १, ६, ( २ ) अंतगड सूत्रना  
पहेला वर्गना छ्वा अध्ययननुं नाम अंतगड सूत्र  
के पहिले वर्ग के छठे अध्याय का नाम name  
of the sixth chapter of the first  
section of Antagada Sūtra. अंत०  
१, ६, ( ३ ) त्रि० निश्चल; स्थिर. निश्चल;  
स्थिर. steady; motionless जं० प०  
३, ५२; भग० १, १; कप० २, १५; ५,  
१०३; ( ४ ) प्रथम अजदेवतुं नाम. प्रथम

बलदेव का नाम name of the first  
Baladeva. प्रव० १२२५,

अयलभाया पुं० ( अचलभ्रातृ ) लुओ  
'अचलभाया' शब्द देखो 'अचलभाया'  
शब्द Vide 'अचलभाया' विशेष० १६०५,  
अयला स्त्री० ( अचला ) लुओ 'अचला'  
शब्द देखो 'अचला' शब्द Vide 'अचला'  
नाया० ध० ६,

अयस न० ( अयशस् ) अपयश, अपकीर्ति  
अपयश, बुराई Infamy, ill fame  
“अयसो य अणिवाण” दस० ५, २, ३८,  
ओव० ४१; भग० १४, ८, क० प० ४, ३७,  
—कर. त्रि० (—कर ) अपयश डरना  
बुराई करने वाला defaming, bringing  
on ill fame, scandalous भग० ६,  
३३,—कारय. त्रि० (—कारक ) अपकीर्ति  
डरना बुराई करने वाला scandalising,  
defaming. भग० १५, १,—बहुल त्रि०  
(—बहुल ) जेनी अपकीर्ति धुली थयेली छे  
येवे। जिसकी बुराई बहुत हुई है वह  
highly infamous, notorious.  
दसा० ६, १;

अयसी स्त्री० ( अतसी ) अलसी, ओड जातुं  
तेलवाणुं धान्य. अलसी, एक तरह का  
तेल वाला धान्य A kind of oily seed,  
linseed नाया० ८, ६, भग० ६, ७, २१,  
३, ओव० २२; जीवा० ३, ४, उत्त० ३४, ५,  
पञ्च० १; जं० प० प्रव० १०१३, (२) अल-  
सीनुं ओड-छेओवे। अलसी का माद. a  
plant of the above seed पञ्च०  
१७, ओघ० नि० ४०६,—कुसुम  
न० (—कुसुम ) अलसीनुं फूल. अलसी का  
फूल the flower of the Alasī  
plant. नाया० ५,—पुष्प न० (—पुष्प )  
लुओ उपयो शब्द देखो ऊपर का  
शब्द vide the above word

उत्त० ३४, ६, —वण न० (—वन ) अल-  
सीनुं वन अलसी का वन a forest of  
Alasī plants भग० १, १,—वण. पुं०  
(—वर्ण ) अलसीना फूलनो रंग; श्याम-  
वर्ण अलसी के फूल का रंग, श्याम वर्ण  
bluish colour of the flower of  
the Alasī plant (२) त्रि० अलसीना  
जेवा रगवाणे, डाणा रगनो अलसी के  
समान रग वाला black, of the colour  
of the Alasī plant or flower.  
उत्त० १६, ५६,

अया स्त्री० ( अजा ) अडरी. बकरी A  
she-goat भग० १२, ६; पिं० नि०  
१३२,—कुच्छि नि० (—कुच्छि-अजाया-  
कुच्छिरिव कुच्छिर्यस्य स तथा ) अडरीनी भाइक  
नाना पेटवाणे बकरी के समान छोटे पेट  
वाला having a small belly like  
that of a she-goat उवा० २, १०१,  
—वय पुं० (—वज ) अडरीनो वाडे.  
बकरियों का बाड़ा a fold or pen in  
which goats are enclosed “केह-  
पुरिसे अयासयस्स एगमहं अयावयं करेजा”  
भग० १९, ७,

अयाणंत व० क० त्रि० ( अजानंत ) अजानंत  
जानतो. अजान, नहीं जानता हुआ Not  
knowing, ignorant पञ्च० १, सूय०  
१, १, १, ६, १, १, २, ४, उत्त० ८, ७,  
पिं० नि० ४१६, पंचा० ११, ३७,

अयाणग त्रि० (—अज्ञायक-अजानान ) अज्ञ, न  
जानतो, न जानने वाला, अज्ञ Not know-  
ing, ignorant पञ्चा० १७, २५;

अयाणमाण व० क० त्रि० ( अजानान )  
न जानतो, अजान अजान, न जानता हुआ  
Not knowing, ignorant “पावस्स  
फलविवागं अयाणमाणा वट्ठति” परह० २, १;

अयाचणिज्ज त्रि० ( अयापनीय ) जेनाथी

कार्य न सरे तेतुं; प्रयोजन पुरतुं नहि.  
जिससे काम न हो सके ऐसा; जिससे प्रयोजन  
पूरा न हो वह. Not capable of ac-  
complishing one's purpose; fall-  
ing short of one's requirements.

भग० ७, ६, —उदग. न० (—उदक) प्रयोजन  
न सरे. तेतुं पाएली उतना जल जिससे कार्य  
भाग न हो सके. water not enough to  
serve the purpose. भग० ७, ६;

**अथावयव.** त्रि० ( अथावदर्थ—न यावदर्थो-  
यत्र तत्तथा ) अपरिपूर्ण, लोभये तेतुं नहि;  
अधु३. अपूर्ण; जितना चाहिये उतना नहीं,  
अधूरा Inadequate, insufficient;  
incomplete. “अथावयवा सोच्चारणं, जइ  
तेण न सथरे” दस० ५, २, २;

**अयुत.** न० ( अयुन ) लुभो “अउअ” शब्द.  
देखो ‘अउअ’ शब्द Vide “अउअ”.  
जीवा० ३, ४;

**अयो.** न० (अवस्) लोहं, लोह लोहा. Iron  
भग० १६, ४, —कवल्ता. न० (—कवल्ल)  
तवे; लोही, डडाध. तवा, लोहे की कड़ाही.  
iron pan; iron caldron. भग० १६,  
४; सूय० १, ५, १, १५; —कुम्भी. त्री०  
(—कुम्भी) लोहानी डोही-डुंडी. लोहे की  
कुंदा. an iron vessel resembling  
a large or small tub राय० २५३;  
—गोल पुं० (—गोल) लोहानो गोला  
लोहे का गेला an iron ball दसा०  
६, १; —वरा. न० (—वन) लोहं डुटवानुं  
धनु लोहा पीटने का घन a sledge-  
hammer सूय० १, ५, २, १४,

**अयोमय.** त्रि० ( अयोमय ) लोहमय,  
लोहानुं लोहनय, लोहे का Iron; made  
of iron, consisting of iron.

भग० १६, १, वल्ता० ६ ३ ६; राय० २५३,

**अयोपुह** पुं० ( अयोपुहा ) लवण समुद्रमां  
पायव्य भुशुमा पांचसो जेजन उपर

आवेद ओड अंतरद्वीप; ५६ अंतरद्वीपमानो  
११ भो अंतरद्वीप लवण समुद्र के वायव्य  
कोन में पाच सौ योजन पर स्थित एक अंतर  
द्वीप; ५६ अन्तरद्वीपों में से ११ वाँ अन्तरद्वीप.  
The eleventh of the 56 Antara-  
dvīpas; an Antara-dvīpa in  
the Lavaṇa ocean in the  
north-west at a distance of  
500 Yojanas. ठा ४, २, ( २ ) त्रि०  
अयोमुह अंतरद्वीपमां रहेनार भुष्य. उक्त  
अन्तरद्वीप में रहने वाले मनुष्य. the  
people residing in the  
Ayomukha Antara-dvīpa.  
पञ्च० १;

**अर. पुं० ( अर )** यालु अवसर्पिणीमां भरत  
क्षेत्रना सातमा यक्षवर्ती अने १८ मा  
तीर्थंकर वर्तमान अवसर्पिणी के भरतक्षेत्र  
के सातवे चक्रवर्ती और १८ वे तीर्थंकर.  
Name of the eighteenth Ti-  
rthankara and the seventh  
Chakravartī of Bharataketra  
in the present Avasarpinī.  
“अरोय अरयं पत्तो” उत्त० १८, ४०; भग०  
२०, ८; सम० २४; अणुजो० ११६;

**अरञ्ज पुं० ( अरञ्ज )** पैडानी वज्ये यक्षनी नाभि  
अने नेमि वज्येनां आडां लाडडां; आरा.  
आरा. A spoke of a wheel. जं० प०

**अरञ्ज. पुं० ( अरञ्ज )** ८८ महाग्रहमां  
७० भो महाग्रह ८८ महाग्रहों में से ७० वाँ  
महाग्रह. The seventieth of the  
eighty-eight major planets.  
सू० प० २०;

**अरञ्ज. न० ( अरञ्ज )** पांचमा अहोदेवलोडनो  
अरत नामे ओड पाथडो पांचवें ब्रह्मदेव-  
लोक के एक पाथडे (परत) का नाम Name  
of a layer in the fifth Brahma



Devaloka. ठ० ६, १; (२) रागरहित; प्रीति विनाने. राग रहित, बिना प्रीति का unattached, free from attachment आया० १, ३, २, ११४,

अरह स्त्री० ( अरति-न रति. संयमविषया छतिररति ) संयमभां उद्वेग, ज्ञान, दर्शन, चारित्र, तप अने वीर्य ये पांच आचारभां भेयेनी, मोहनीयना उदयथी थतो उद्वेगरूप चित्तविकार. संयम में उद्वेग, ज्ञान, दर्शन, चारित्र, तप और वीर्य इन पाचों आचारों में बेचैनी, मोहनीय के उदय से होता हुआ उद्वेगरूप चित्तविकार Discomfort experienced in the practice of selfrestraint, feeling of uneasiness in ascetic practices leading to right knowledge etc. "अरहं आउट्टे से मेहावी" आया० १, २, २, ७२; १, ३, ३, ११७, जं० प० नाया० १, दस० ८, २७; सूय० २, १, २६; उत्त० १०, १७; ३२, १०२, प्रव० ४५७; क० प० २, १०३; भक्त० १०६, क० गं० २, ७; ५, ३१; ठा० ६, १; (२) आवीस परिषडभांने ओक परिषड. २२ परिषडों में से एक परिषह one of the twenty-two varieties of sufferings उत्त० २, १४, भग० ८, ८, (३) छष्ट वियोग के अनिष्ट संयोगथी थतुं मानसिक दुःख. इष्टवियोग या अनिष्ट संयोग से होता हुआ मानसिक दुःख mental distress caused by an unfavourable event. भग० १, ६,—कर्म. न० (—कर्मन्) जेना उदयथी जवने संयम वगेरेभां अरति उत्पन्न थाय तेवी ओक नोकषाय मोहनीयनी प्रकृति, अरतिमोहनीय कर्म जिसके उदय से जीव को संयम आदि में अरति उत्पन्न हो ऐसी एक नोकषाय मोहनीय की प्रकृति, अरतिमोहनीय कर्म. a variety of Karma known as Nokaṣāya Mohaniya the maturing of which

produces distaste for ascetic practices; Arati Mohaniya Karma. ठा० ६, १, —परि-री-सह. पुं० (—परिषह) साधुना २२ परिषडभांने ओक; अरतिनामे परिषड. साधु के २२ परिषडों में से एक अरति नामक परिषह. one of the twenty-two varieties of sufferings; a suffering known as Arati उत्त० २, १४, भग० ८, ८;—मोहनिज्ज. न० (—मोहनीय) अरति नामे मोहनीयकर्मनी ओक प्रकृति. अरति नामक मोहनीय कर्म की एक प्रकृति a variety of Karma known as Arati Mohaniya. क० ग० १, २१;—रह स्त्री० (—रति) अरति रति, धर्मभां अरति अने पापभां रति अरति रति, धर्म में अरति और पाप में रति dislike for virtuous actions and inclination towards evil deeds "एगा अरतिरती" ठा० १, १,—रहसह वि० (—रति-सह) अरति अने रतिने सहन करनेवाला और रति का सहन करने वाला one who can remain indifferent to the feelings of attachment or dislike towards an object. आया० १, ३, १, १०८,

अरंजर पुं० ( अरंजर ) लंजर तरीके प्रसिद्ध पाणीना धडा लंजर के नाम से प्रसिद्ध पानी का घड़ा A pot of water known by the name of Lanjara ठा० ४, ४; अरकबुरी. स्त्री० ( अरकबुरी ) जिनचन्द्र ध्वज राजनी ओक नगरी, सूर्यनी अग्रमहिषी—सूर्यप्रलानी पूर्वलवनी लम्बनगरी. जिनचन्द्र ध्वज राजा की एक नगरी, सूर्य की अग्रमहिषी सूर्यप्रग की जन्मपुरी A town belonging to king Jinachandra Dhvajaja; a town in



which the previous birth of Sū-  
ryaprabhā the principal queen  
of Sūrya took place नाया० ७,  
अरग पुं० (अरक) पैडानी वयेनी आडां लाडडी;  
आरा. आरा The spoke of a wheel.  
भग० २, १, ३, ५; ५, ५, राय० १२६;  
—आउत्त.त्रि० (—आयुक्त—अरकैरभिविधिना  
युक्तोऽरकायुक्त.) सर्व तरङ्ग आराथी युक्त  
चारों ओर आराओं से युक्त. furnished  
with spokes on all sides भग० ३, १;  
—उत्तासिय. त्रि० (—उत्त्रासित—अरका  
उत्त्रासिता आस्फालिता यत्र ) जेमां पैडानी  
आरा अक्षलवामां आव्या छे ते जिसमे आरे  
हिलते हों वह with the spokes of the  
wheel caused to shake भग० ३, १;  
अरज्जंत. व० क० त्रि० (अरज्यत्) रक्त—आसक्त  
न थतो; रागथी न रंगातो आसक्त न होता  
हुआ Being unattached, not  
affected by passions “ विसणुसु  
अरज्जतो, रज्जंतो संजमम्मि य” उक्त० १६, १०,  
अरज्जुय त्रि० (अरज्जुक ) २००—दो२३  
विनानु डोर विना का. Devoid of a  
rope. तंडु०—पास. पुं० (—पाश ) दो२३  
वगरनो पाश—अंधन डोरी विना का बन्धन  
bondage without a rope तंडु०  
अरणि पुं० (अरणि) अरणिनुं लाड्डुं, जेने  
माछोमाछि धसवाथी अग्नि अरे तेनुं लाड्डुं  
आपस मे घिसने पर अग्नि को उत्पन्न करने  
वाली अग्नि की लैकड़ी A fire—produc-  
ing wooden stick; wood of  
Arani tree used to kindle fire  
by friction “ जहा य अग्गो अरणी  
असंतो ” उक्त० १३, १८, नाया० १८, राय०  
२६४, सूय० २, १, १६, भग० ११, ६, १८,  
७; भत्त० १२३; जं० प० ५, ११४,  
अरणिआ स्त्री० (अरणिका) जेने अंध  
पीजरूप छे ओवी ओड वनस्पति एक

वनस्पति; जिसका स्कंध ही बीजरूप है वह.  
A variety of vegetation grow-  
ing out of the branches of the  
original stem. आया० १, १, ५, १३०;  
अरराण. न० (अरय) निर्जन जंगल;  
वसति विनानी अटवी निर्जन वन. A  
forest, a tenantless forest. उत्त०  
२५, २६, भग० ७, ६; पराह० २, ३; ओव०  
नि० १६६, सूय० १, १, १, १६, जं० प० २,  
३१, विशेष० १४५५;  
अरराणवडिसग पुं० (अरय्यावतंसक )  
अगीयारमा देवलोकनु अरय्यावतंसक नामे  
ओड विमान, डे जेने देवतानी २१ सागरनी  
स्थिति छे ग्यारहवें देवलोक का अरय्यावतंसक  
नामक एक विमान, जहां के निवासी देवों की  
२१ सागर की स्थिति—आयु है. A heaven-  
ly abode of the eleventh  
Devaloka, Aranyāvatamsaka  
by name, the gods of this abode  
live for twenty-one Sāgaras  
of time सम० २१;  
अरति स्त्री० (अरति) जुओ ‘अरइ’ शब्द.  
देखो ‘अरइ’ शब्द. Vide ‘अरइ’ सम० २१;  
ठा० १, १, ओव० २१; भग० १, ६, पञ्च० २३;  
—परिसह. पुं० (—परिषह ) जुओ  
‘अरइपरिसह’ शब्द. देखो ‘अरइपरिमह’ शब्द.  
vide ‘अरइपरिसह’. सम० २२,—रति.  
स्त्री० (—रति) जुओ ‘अरइरइ’ शब्द. देखो  
‘अरइरइ’ शब्द. vide ‘अरइरइ’. पञ्च० २२;  
अरय. पुं० (अरक) पैडानी आरा. पहिये का  
आरा. A spoke of a wheel. नदी० ५;  
अरय. पुं० (अरजस्) धर्मरहित; सिद्ध  
लगवान् कर्मरूपी रज रहित, सिद्ध भगवान्.  
Free from Karmic dust; a  
Siddha भग० ३, १; ( २ ) ८८ ग्रहमांने  
ओड महाग्रह. ८८ ग्रहों में से एक  
महाग्रह. a major planet out  
of eighty-eight planets ठा०

२, ३; सू० प० २०; ( ३ ) पांचमा देवलोक  
विमानो ओ३ पाथडो. पाचवें देवलोक  
के विमान का एक पाथड़ा-परत. a layer  
of the heavenly abode of the  
fifth Devaloka. ठा० ६; ( ४ ) त्रि०  
२०-भेदरहित. रज रहित; निर्मल free from  
dirt. कप्प० २, १३;—अंबर न० (-अम्बर)  
२०-रहित वस्त्र. स्वच्छ वस्त्र; रज रहित वस्त्र.  
cloth or garment free from dust  
जं० प० ५, ११८, कप्प० २, १३,—अं-  
बरवत्थ न० (-अम्बरवस्त्र) २०-रहित  
आकाश जेवां स्वच्छ वस्त्र, निर्मल लुगडा रज  
रहित आकाश के समान स्वच्छ वस्त्र, निर्मल वस्त्र.  
a clean cloth; cloth as clean as  
the sky. भग० ३, २; जं० प०

अरयणि पुं० ( अरत्नि ) विस्तृत आंगुलि  
सहित हाथ विस्तृत-खुली अंगुली सहित हाथ.  
A hand with the fingers  
stretched ठा० ४, ४,

अरया स्त्री० ( अरजा-अरजस् ) कुमुद विजयनी  
मुष्प राजधानी. कुमुद विजय की मुख्य  
राजधानी The capital city of  
Kumuda Vijaya. जं० प०

अरवग त्रि० ( अर्वक ) अर्व देशमां रहेनार  
भनुष्प वगेरे अर्व देश के रहने वाले भनुष्प  
वगेरह. ( A resident etc ) of the  
Arva country. पञ्च० १,

अरविन्द न० ( अरविन्द ) कमल, पद्म  
A kind of lotus. ' पुष्पेसु वा  
जह अरविन्दमाहु ' सूय० १, ६, २२;  
२, ३, १८, पञ्च० ३, परह २, ४,  
—लोअण त्रि० (-लोचन ) कमल समान  
नेत्रवाणो अरविन्द-कमल के समान 'हैं नेत्र'  
जिसेके, वह. lotus-eyed कप्प० ३, ४७;

अरस. त्रि० ( अरस ) हिंस्र आदि द्रव्यथी

संस्कारेय नहि; रस विनानुं, नीरस हींग  
आदि द्रव्य से संस्कारित न किया हुआ, रस  
रहित; नीरस. Insipid, tasteless;  
juice-less " अरस चिरसं वाचि, सूहयं  
वा असूहयं " दस० ५, १, ६८, ओव० १६;  
नाया० १६, भग० २, १०, ६, ३३, ११, १, २०,  
५,—आहार पुं० (-आहार) रस विनानो  
आहार. रस रहित आहार. in-sipid  
food; tasteless food ठा० ५, १, ( २ )  
नीरस आहार लेवानो अभिग्रह धारण करने  
साधु नीरस आहार ग्रहण करने का अभिग्रह  
धारण करने वाला साधु. an ascetic who  
has vowed to receive tasteless  
food ठा० ५, १, परह० २, १,—जीवि पु०  
(-जीविन्-अरसेन जीवितु शीलमस्येति) अरस  
आहारथी लवनार; अभिग्रह धारी मुनिविशेष.  
रसहीन आहार में जीने वाला, अभिग्रहधारी मुनि  
विशेष an ascetic living on taste-  
less food. ठा० ५, १; भग० ६, ३३;  
—मेह पुं० (-मेव) रस विनानो वरसाद;  
जेतो धणो त्रेह न रहे तेवो वरसाद.  
रस रहित वर्षा unsubstantial rain.  
जं० प० २, ३६, भग० ७, ६;

अरह पु० ( अरहस्- न विद्यते रहो गुप्तं यस्या-  
सावरहा ) धर्म पणु रहस्य जेनी जणु अरह  
नथी ते; अरिहंत भगवान् कोई भी रहस्य जिस  
से छिपा नहीं है वह, अरिहंत भगवान् One to  
whom nothing can be a secret;  
an Arihanta. ठा० ४, १, ८, १,—स्सर.  
त्रि० (-स्वर) जेतो प्रगट स्वर-अवाज छे ते,  
भोटा अवाजवाणो, खुदकी वात करनेार.  
उच्च स्वर वाला, बड़ी आवाज वाला (one)  
having a loud voice, frank.  
" अरहस्सरा केइ चिरठितीया " सूय०  
१, ५, २, ११,

अरह पुं० ( अर्हत् ) धर्म आदिना पूजनीय;

तीर्थंकर; अरिहंत भगवान् इन्द्रादिकों का पूज्य, तीर्थकर; अरिहंत भगवान् One worthy of worship by Indra etc, a Tirthankara (२) अवधिज्ञानी अने मन पर्यवज्ञानी. अवधिज्ञानी और मनपर्यवज्ञानी. one possessed of Avadhijñāna and Manahparyavajñāna. “ तत्रो अरहा प० तं० ओहिनाणअरहा मणपज्जवनाणअरहा केवलनाणअरहा ” ठा० ३, ४; नंदी० ४३, उत्त० ६, १८; सू० प० २०; ओव० १०; नाया० ५; ८, १६; भग० १, ४, २, १; ७, १; ६, ३२; जं० प० २, ३०;—प्ललावि पुं० (—प्रलापिन् ) पोते अरिहंत नहि छता पोताने अरिहंत तरीके ओलनार, ‘हुं अरिहंत छुं’ ऐस मिथ्या प्रलाप करनार. अरिहंत न होते हुए भी ‘ मैं अरिहंत हूं ’ ऐसा मिथ्या प्रलाप करने वाला. one vainly pretending to call himself Arihanta; one hypocritically calling himself an Arihanta. भग० १५, १;

अरहन्-य. पुं० ( अर्हन् ) लुओ ‘अरह’ शब्द. देखो ‘अरह’ शब्द. Vide ‘अरह’ नाया० ८; १६, नाया० ध० १०; भग० ५, ६, ७, ६, अरहओ. प० ए०

अरहंत. पुं० ( अर्हन् ) लुओ ‘अरह’ शब्द. देखो ‘अरह’ शब्द. Vide ‘अरह’. भग० ३, २; ७, ६; १२, २; १५, १; २०, ८, आया० १, ४, १, १२६; दसा० ६, ४; वव० १, ३७, नाया० १; ८; १३; ओव० २०; ओघ० नि० १, जं० प० २, ३४, ५, ११५;—लद्धि ली० (—लब्धि ) लब्धिविशेष; जेथी अरिहंतपणुं प्राप्त थाय तेवी लब्धि. लब्धिविशेष; जिससे अरिहंतता प्राप्त हो ऐसी लब्धि. a spiritual acquirement leading a man to the

state of an Arihanta. प्रव० १५०७; अरहट्ट पुं० ( अरहट्ट ) पाली काठवानुं रेंट; धटीयंत्र; धटभाण पानी निकालने का घटीयंत्र; रहट A water-wheel with pots fixed in it to draw water from a well. “ जम्ममरणारहटे भित्तूय भवा विमुच्चिहिसि ” आउ० ५६; परह० १, १; पिं० नि० ८३;

अरहणय. पुं० ( अरहणक ) चंपा नगरी निवासी जेक ओहाणुवटी आवक, के जेने समुद्रमा देवताजे परिपह आधो, व्रतथी यत्नाववाने ओहाणुने दुष्काडवा जेवो देभाव कथो तो पणु ते यक्षित थयो नहि; त्यारे देवता तेना उपर प्रसन्न थय जेक दुंडुणनीजेड भेट आपी आत्यो गयो. अरहणके ते दुंडुण भस्वीनाथने भेट आप्या. चंपा नगरी निवासी एक जहाजी आवक, जिसे समुद्र में देवता मे कष्ट दिया और व्रत से चलित होने के लिये जहाज को डुबा देने का दृश्य दिखलाया, तो भी वह चलित नहीं हुआ. तब देवता ने प्रसन्न होकर उसे एक जोड़ी कुंडल भेंट में दिये. अरहणक ने वे कुंडल मल्लीनाथ को भेंट में दिये. A Śrāvaka living in Champā city and also a seafaring merchant; he was greatly troubled by a god in the ocean; the god in order to tempt him to give up his vows threatened to sink his vessel but in vain. The god then became pleased and presented him a pair of golden earrings. Arhannaka presented them to Mallinātha. नाया० ८; ( २ ) तारी नगरीना दत्तनो पुत्र, के जेणे पोताना भाणप साथे अर्हन्मित्र आया. पासे दीक्षा लीधी, आपनो स्वर्गवास थपा

पछी अरहणिक मुनिने गोयरी ज्यु पड्यु तड्डे सहन न थवाथी ते पातत थयो, पछु तेथी तेनी मा जे आर्या थया छे, तेने थहु दु.प लाग्युं, ते गांज थछ गया आभर भोगमां इसायेल अरहणिके मातानी अवदशा जेछ त्यारे इरी वैराग्य धारणु कर्यु माना कहेवाथी इरी दीक्षा लीधी, धगधगती शिला उपर संथारे इरी, तापने परिषद सहन कर्यो तारी नगरी के दत्त का पुत्र, जिसने कि अपने माता पिता के साथ अर्हन्मित्र नामक आचार्य से दीक्षा ली पिता के स्वर्गवास हो जाने के पश्चात् अरहणिक को भिक्षार्थ जाना पड़ा, परन्तु धूप सहन न होने से वह दीक्षा से पतित हो गया और भोग में फँस गया, इससे इसकी माता को बहुत दुःख हुआ और इस दुःख से वह पागलसी हो गई माता की यह दशा देखकर भोग में फँसे हुए अरहणिक को वैराग्य हुआ और माता के कहने से फिर दीक्षा धारण की, तथा तप्त शिला ऊपर संथारा कर ताप का पार्षद सहन किया. the son of Datta of the city of Tārī. He along with his parents took Dikṣā from the Āchārya Arhanmitra After the death of his father he (Araṇika Muni) had to go out to beg alms. He could not bear the heat of the sun and fell off from his ascetic vows The mother, greatly distressed at this became mad At length Aranika pitying her again became a monk at her request and performed Santhānā on a hot slab of stone and endured the pain caused by

heat उत्त० टी० २; —समणो-वात्सग पुं० (—अमणोपासक) अरहणिक नामे अमणोपासक—श्रावक अरहणिक नामका साधुओं की उपासना करने वाला श्रावक. a Jaina layman of the name of Arāhannka नाया० ८;

अरहस्स न० (अरहस्य—नास्ति रहस्य-मपरं यस्मात्तदरहस्यम्) गुप्तभा गुप्त छेद शास्त्रनु तरव—रहस्य छेद शास्त्र का गुप्त से गुप्त तत्व—रहस्य The most abstruse and deep meaning of Chhedā Sāstra ठा० ६,—भाणि पुं० (—भाणिन् (—रहस्यस्याभावोऽरहस्य तद्भाजते य.स तथा) जेनाथी इंध रहस्य—गुप्त नथी ते , सर्वज्ञ, अरिहत भगवान् जिससे कोई रहस्य छिपा न हो वह; सर्वज्ञ, अरिहंत omniscient; Arihanta ठा० ६;

अरहा पुं० (अर्हत्) जुओ 'अरह' शब्द देखो 'अरह' शब्द Vide 'अरह' भग० १६, ५, १८, २, २०, ८, २४, ६; निर० ३, १, अणुजो० १२७, सूय० २, ३, २२; ठा० ३, ४, कप्प० ५, १२०, ज० प० २, ३०;

अरहिय त्रि० (अरहित) निरंतर, विरह विना. निरंतर, सदा Ceaseless, continuous "अरहियाभितावा तहवि तविति" सूय० १, ५, १, १७;

अराग त्रि० (अराग) रागरहित राग रहित. Free from passion or attachment. भग० १७, २,

अरि पुं० (अरि) दुश्मन, वेरी, शत्रु शत्रु; दुश्मन An enemy जीवा० ३, ३; नाया० २, जं० प० २, —छवग्ग पुं० (—पड्वर्ग-पण्णां वगं समुदायः पड्वर्ग) काम, ईर्ष्या, लोभ, मान भद अने मोह (दुर्ग) ये छ आतरिक

दुश्मननो समुदाय काम, क्रोध, लोभ, मान, मद, और मोह इन छ आन्तरिक शत्रुओं का समुदाय. the collection of the six internal enemies viz lust, anger, greed, pride, intoxication and rapture. सूय० टी० १, १, ४, १; अरिष्ट पुं० न० (अरिष्ट) लिं० अ० अ३. नीम का झाड़. the Nimb tree melia azadirachta पञ्च० १, २, (२) अरीक्षुं वृक्ष अने इक्षु; जेना झोलुथी वस्त्र धोवायछे ते. अरीठे का वृक्ष और फल, जिसकी माग से वस्त्र धोये जाते हैं वह the soap berry tree. पञ्च० १; ६; राय० ५०, ( ३ ) पंढरमा धर्मनाथ-तीर्थंकरना प्रथम गणधरनु नाम. पन्द्रहवें तीर्थंकर धर्मनाथ के पहिले गणधर का नाम. name of the first Ganadhara of the 15th Tirthankara Dharma-nātha. सम० प० २३३; ( ४ ) वृषभासुर वृषभासुर Vrisabhāsura; name of a demon परह० १, ४, (५) याधु योवीसीना आवीसमा तीर्थंकर नेमिनाथजुं अपर नाम वर्तमान चोवीसी के बावीसवें तीर्थंकर नेमिनाथ का दूसरा नाम. another name of the twenty-second Tirthankara Neminātha of the present Chovīsī सम० १०; ठा० २, ४, (६) पांथमादेव-लोका त्रीज पाथजुं नाम. पाचवें देवलोक के तीसरे पाथड़े ( परत ) का नाम. name of the third layer or stratum of the 5th Devaloka. प्रव० १४५५; ( ७ ) आदमा अनन्तनाथ तीर्थंकरना प्रथम गणधरनु नाम. १४ वें तीर्थंकर अनन्तनाथ के पहिले गणधर का नाम. name of the first Ganadhara ( apostle ) of Anantanātha the 14th Tirthankara प्रव० ३०७,

अरिष्टनेमि. पुं० ( अरिष्टनेमि ) याधु योवीसीना लरतक्षेत्रना आवीसमा तीर्थंकर; यदुवशमा उत्पन्न थयेल नेमिनाथ तीर्थंकर, जे जे परलुता जता पशुओनो पोडार सांलगरी राजुलने परएया विना पाछा वज्या सज्जम दीधो अने आवीसमा तीर्थंकर थया वर्तमान चोवीसी के बावीसवें तीर्थंकर, यदुवशी नेमिनाथ तीर्थंकर, जो कि विवाह के लिये जाते समय रास्ते में पशुओं की पुकार सुन राजुल से विवाह किये बिना पीछे लौटे और दीक्षा धारण कर बावीसवें तीर्थंकर हुए. The twenty-second Tirthankara of the Bharataksetra of the present Chovīsī; the Tirthankara Neminātha born in the Yaduvamśa While on his way for marriage, he heard the piteous cries of animals, as a result of which he turned back without marrying Rājulā ( the proposed bride ) and became a monk. He became the twenty-second Tirthankara. “ तेणं का० ते० स० अरहा अरिष्टनेमी पंच चित्ते होत्था ” कप्प० ६, १६६; ठा० २, ४, सम० १०; नाया० ५; उत्त० २२, ४, अणुजो० ११६; निर० ५, १, अंत० १, १;

अरिष्टपुरा. स्त्री० ( अरिष्टपुरी ) दुग्धगावध विजयनी मुख्य राजधानी कच्छकावती विजय की मुख्य राजधानी. The principal capital of Kachchhakāvati Vijaya. जं० प०

अरिष्टा. स्त्री० ( अरिष्टा ) महाकच्छा विजयनी मुख्य राजधानी महाकच्छा विजय की मुख्य राजधानी. The principal capital of Mahākachchhā Vijaya जं० प०



अरिस्ता स्त्री० (अरित) दुश्मना ॥८, शत्रु ॥१४  
दुश्मना, शत्रुता Enmity, hostility.  
भग० १२, ७,

अरिदमण पुं० (अरिदमत) श्री सायने २॥  
भीमासीनेरमापुत्रपुंताम आश्वत्थामदवस्वामी  
के ७० व पुत्र का नाम Namo of the  
seventieth son of Śrī Rābha-  
deva Svāmī कण० ७, (२) व. तपु-  
रने ओक राजा के जेनी राज्ञीओ येरने  
अभयमान आयेथु इत वसन्तपुर का एक  
राजा, जिसका राजी ने चार को अभय  
दान दिया था an ancient king of  
Vasantapura whose queen had  
given an assurance of safety  
to a thief सूय० टां० १, ६, २३;

अरिस्त न० (अरिस्त) ६२५, पुं०ना भया;  
ओक जनने रोग बवासार, मस्स की बगधि  
Piles, hemorrhoids जीवा० ३, ३;  
भग० ३, ७, नाया० १३, ज० प० २, २४;  
आध० ति भा० १८४;

अरिस्ता स्त्री० (अरिस्त) ६२५, ओक प्रदरने  
रोग मस्स का रोग Piles, hemor-  
roids प्रव० १३६०;

अरिस्तल्ल त्रि० (अरिस्त) ६२५, रोगयागे  
बवासीर की बगमाती वाला (One) suffer-  
ing from piles विवा० ७,

✓ अरिह धा० I (अरिह) योग्य जनपुं, लायक  
थ०, पूज्य थ० योग्य बनना, लायक हो १,  
पूज्य होना To deserve, to be  
deserving of worship.

अरिहइ-ति सूय० १, ३, २, ७; दस० ८,  
२०, भग० २५, ७,

अरिहण आया० १, ३, २, ११३;

अरिहसि. भग० १५, १;

अरिह त्रि० (अरिह) योग्य, लायक. योग्य;  
लायक. Deserving; fit, worthy.  
नाया० ८, ओव० २०; भग० ३, १, सु० च०  
१, ३८६, (२) आचार्य आदिनी पदवी  
योग्य, पूज्य आचार्य आदि की पदवीयोग्य;  
पूज्य possessing the qualities  
of a preceptor सम० ८, नाया० ५;  
पंचा० १५, ८, प्रव० १३५;

अरिह पु० (अरिह) भूय. किम्मत. मूल्य;  
कीमत Price, cost, value सय० ८०;

अरिहंत पु० (अरिह-अरिहन्ति सिद्धिसोधशि-  
खरारोहणं चैत्यहन्ति) मोक्ष जगने लायक;  
तीर्थकर, अरिह भगवान्. मान जाने के योग्य;  
तीर्थकर; अरिह भगवान्. One worthy of  
final liberation, a Tirthankara.

“अरिहति बंधनमंसणाणि अरिहति पूय-  
सकार सिद्धिगमयं च अरिहा तेण बुद्धति.”

ज० प० भग० १, १, ३, १, १८, ७; २५,  
७, नाया० १, ८, १६, पञ्च० १, आव० ३४;  
अणुजा० ४२ दस० ६, ४, २, कण० १, १;  
आव० १, २, प्रव० ४,

अरिहंत पु० (अरिहन्त-अरीनष्टकर्माणि हन्तीत्य-  
रिहन्ता) कर्मरूपी दुश्मनने मारना, अरिहंत  
जगवान् कर्मरूपी दुश्मन को मारने वाला,  
अरिहत भगवान् Destroyer of ene-  
mies in the form of Karmas; Ari-  
hanta ओव० १२, भग० १, १; अणुजा०  
१३१, नाया० १६; दसा० १, १,—चैत्य.  
पु० न० (—चैत्य) अरिहंत संन्यासी इंध पथु  
रम रक्षित-स धु, साधुने वेध, धुम-स्तूप  
वगैरे अरिहत सम्पन्नी के इ भी स्मारक चिन्ह-  
साधु साधु का वेध और स्तूप आदिक. any  
of the marks by which an  
Arihanta is brought to mind,  
e g. an ascetic, the gar-  
ments of an ascetic etc.



भग० ३, २; ओव० ३६;—आसिय  
त्रि० (-आसित) अरिहंतना लाभेल-  
परूपेस अरिहंत कथित, अरिहंत का कहा  
हुआ. told by or explained by  
Arihanta. सू० १, ६, २६;—अणु-  
रणाय त्रि० (-अनुज्ञात) अरिहंते कर्तव्य  
रूपे लणुपेस अरिहंत द्वारा कर्तव्यरूप बत-  
लाया हुआ prescribed as a duty  
by Arihanta पन्न० १२, —वंस पु०  
(-वंश) अरिहंतने वंश अरिहंत का वंश the  
genealogy of Arihanta ठा० ३,  
१;—सासन न० (-शासन) अरिहंत-  
तीर्थंकरनु शासन-दर्शन, जैन दर्शन अरिहंत-  
तीर्थंकर का शासन, जैन दर्शन the canon  
of Arihantas; the Jaina canon  
or church. परह० २, ५;

अरिहदत्त. पु० ( अरिहदत्त ) आर्य सुस्थित  
अने सुप्रतिबुद्धना पंचमः शिष्यनु नाम  
आर्य सुस्थित और सुप्रतिबुद्ध के पाचवें शिष्य  
का नाम Name of the fifth disciple  
of Ārya-Susthita and Suprati-  
buddha. कप्प० ८;

अरिहदिरण पु० ( अरिहदत्त ) आर्य सिंहगिरिना  
चौथा शिष्य आर्य सिंहगिरि का चौथा शिष्य.  
The fourth disciple of Ārya-  
Simhagiri कप्प० ८,

अरिहदिन्न. पु० ( अरिहदत्त ) लुओ ' अरिह-  
दिरण ' शब्द देखो ' अरिहदिरण ' शब्द  
Vide ' अरिहदिरण ' कप्प० ८,

अरिहया. त्री० ( अरिहत्ता ) अरिहंतपणुं,  
तीर्थंकरपणुं अरिहंतपणा Status of an  
Arihanta; Tirthankara-hood  
पंचा० ८, ४०;

अरुअ. त्रि० ( अरुअ ) रोगरहित; निरोगी रोग,

रहित; निरोगी Free from disease;  
healthy भग० १, १, ओव० १०; कप्प०  
२, १५; सम० १; नाया० १;

अरुण पु० ( अरुण ) हरिवास क्षेत्रना विषा-  
वर्ष नामे वाटला वैताढ्य पर्वतने अधिष्ठाता  
देवता. हरिवर्ष क्षेत्र के विषावर्ष नामक वाटला  
वैताढ्य पर्वत का अधिष्ठाता देव. The presi-  
ding deity of Vātālā Vaitāḍhya  
mountain called Viyarhāvai  
in Harivarṣa Kṣetra जं० प० ठा०  
२, ३, ( २ ) ८८ महाग्रहमांते ५४ मोग्रह.  
८८ महाग्रहों में से ५४ वॉ ग्रह. the  
54th of the 88 great planets.  
सू० प० २०, ठा० २, ३, ( ३ ) सूर्यनी प्रभा  
दूटवाने समय. सूर्य की प्रभा दूटने का समय.  
dawn ओघ० नि० २६६, ( ४ ) नन्दी-  
श्वरवर समुद्र अने अरुणोदग समुद्रनी  
पंच्येनु द्वीप नन्दीश्वरवर समुद्र और अरुणो-  
दग समुद्र के बीच का द्वीप the  
island between the two oceans  
viz Nandīśvaravara and Aru-  
nodaya सू० प० १६, जं० प०

अरुणपिभ पु० ( अरुणप्रभ ) अनुवेलधर  
देवाना चौथा नागराजनु नाम अनुवेलधर देवों  
का चौथा नागराज The fourth king of  
the Anuvelandhara gods. जीवा०  
३, ४, ( २ ) लवण समुद्रमा उत्तर दिशाये ४२  
हजार योजन उपरे आवेल अनुवेलधर देवाने  
आवास पर्वत लवण समुद्र की उत्तर दिशा में  
४२ हजार योजन की दूरी पर अनुवेलधर देवों  
का आवास पर्वत-निवास स्थान the  
mountain-bode of the Anu-  
velandhara gods in the north of  
Lavana ocean at a distance of  
42 thousand Yojanas ठा० ४, २, ( ३ )  
राहुनां लालकान्तिवाणा पुद्गल. राहु के लाल

कान्ति वाले पुद्गल the red particles of matter of the body of Rāhu चं० प० २०;

**अरुणप्रभा.** स्त्री० ( अरुणप्रभा ) ६ मा तीर्थंकरनी प्रवज्जा पालकी नाम ६ वें तीर्थंकर की प्रवज्जा पालकी का नाम. Name of the Pravrajyā palanquin of the ninth Tirthankara. सम० प० २३१, **अरुणभद्र.** पुं० ( अरुणभद्र ) अरुणवर समुद्र का अधिपति देवता अरुणवर समुद्र का अधिपति देव The presiding deity of Arunavara ocean सू० प० १६, जीवा० ३,

**अरुणमहाभद्र** पुं० ( अरुणमहाभद्र ) ७७ ओं उपरो शब्द देखो ऊपर का शब्द Vide the above word सू० प० १६, जीवा० ३;

**अरुणवर** पुं० ( अरुणवर ) ओ नामने ओं द्वीप अने ओं समुद्र इस नाम का एक द्वीप और एक समुद्र. An ocean of that name; an island of that name. पञ्च० १५; सू० प० १६, जीवा० ३, ४; अणुजो० १०३;—**दीव** पुं० (—द्वीप) ओ नामने ओं द्वीप एक द्वीप का नाम an island of that name भग० २, ८,—**समुद्र.** पुं० (—समुद्र) ओ नामने ओं समुद्र, ३ नेमांथी तमस्काय नीकणेल छे. एक समुद्र का नाम, जिसमें से तमस्काय निकला हुआ है name of an ocean from which Tamaskāya has emanated. प्रव० १४१२,

**अरुणवरमह** पुं० ( अरुणवरमह ) अरुणवर द्वीपने अधिपति देव अरुणवर द्वीप का अधिपति देव The presiding deity of Arunavara island. जीवा० ३, ४,

**अरुणवरमहाभद्र.** पुं० ( अरुणवरमहाभद्र ) अरुणवर द्वीपने अधिपति देवता अरुणवर द्वीप का अधिपति देव The presiding deity of Arunavara island. जीवा० ३, ४,

**अरुणवरोभास.** पुं० ( अरुणवरोभास ) ओ नामने ओं द्वीप अने ओं समुद्र. एक द्वीप और एक समुद्र का नाम Name of an ocean, also the name of an island जीवा० ३, ४,

**अरुणवरोभासमह** पुं० ( अरुणवरोभासमह ) अरुणवरोभास द्वीपने अधिपति देवता अरुणवरभास द्वीप का अधिपति देव The presiding deity of Arunavarabhāsa island. जीवा० ३, ४, सू० प० १६,

**अरुणवरोभासमहाभद्र** पुं० ( अरुणवरोभासमहाभद्र ) अरुणवरोभास द्वीपने अधिपति देवता अरुणवरभास द्वीप का अधिपति देव. The presiding deity of Arunavarabhāsa island जीवा० ३, ४; सू० प० १६,

**अरुणवरोभासमहावर** पुं० ( अरुणवरोभासमहावर ) अरुणवरोभास समुद्रने अधिपति देवता अरुणवरोभास समुद्र का अधिपति देव The presiding deity of Arunavarabhāsa ocean सू० प० १६, जीवा० ३, ४;

**अरुणवरोभासवर** पुं० ( अरुणवरोभासवर ) अरुणवरोभास समुद्रने अधिपति देवता अरुणवरोभास समुद्र का अधिपति देव The presiding deity of Arunavarabhāsa ocean जीवा० ३, ४, सू० प० १६;

**अरुणप्रभा** पुं० ( अरुणप्रभा ) राहुना लावकान्तिवाणी पुद्गल राहु के लालकान्ति वाले पुद्गल The

red material particles of Rāhu. सू० प० २०; ( २ ) प० यम. देवलो० ३; अरुणा नाम० विमानः पाचये देवलोक का अरुणा नामक विमान. the heavenly abode of the fifth Devaloka, Arunābha by name सम० ८; भग० ७, ६; १८, ७; सू० प० १६;

अरुणावडिसग. पुं० ( अरुणावतंसक ) अग्नी-  
आरमा देवलो० ३; नुं० नामनुं० एक विमान, ३  
नेना देवत नुं० आयु० य० अक्षीस सागरोपमनुं०  
छे. ग्यारहवें देवलोक के एक विमान का नाम,  
जिसके निवासी देवों की आयु २१ सागरपम  
की है. The name of an abode of  
the eleventh heavenly region;  
the resident gods of which have  
a duration of life for twenty-  
one Sagaropamas. सम० २१,

अरुणोत्तरवडिसग पुं० ( अरुणोत्तरवतंसक )  
अरुणोत्तरवतंसक नामनुं० प० यम. देवलो० ३  
अक्ष विमान पाचये देवलोक के एक विमान  
का नाम. A heavenly abode of  
the fifth Devaloka, Arunottara-  
vātamsaka by name. सम० ८

अरुणोद पुं० ( अरुणोद ) अरुणोद नामे अक्ष  
द्वीप अने अक्ष समुद्र अरुणोद नाम का एक  
द्वीप और एक समुद्र. An island of  
that name; an ocean of that  
name सू० प० १६;

अरुणोदग पुं० ( अरुणोदक ) अरुण द्वीप  
के अने अरुणोदग नामने समुद्र. अरुण द्वीप  
को घेरे हुए अरुणोदक नामक समुद्र.  
An ocean named Arunodaka  
encircling the Arun Dvīpa  
सू० प० १६; भग० १३, ६,

अरुणोदय. पुं० ( अरुणोदक ) अग्ने  
“ अरुणोदग ” शब्द दत्ता “ अरुणोदग ”  
शब्द. Vids “ अरुणोदग ”. भग०  
६, ४;—समुद्र. त्रि० ( समुद्र ) अग्ने  
“ अरुणोदग ” शब्द दत्ता “ अरुणोदग ”  
शब्द vide “ अरुणोदग ”. भग० २, ८;  
६, ४;

अरुणोववाय. पुं० ( अरुणोववाय ) ७२ सूत्र-  
मानुं० अक्ष ३ त्रि० सूत्र, ३ नेमा अरुण  
देवत नी उत्पाते संधी लीकत ली लाव  
ते लवच्छेद थ० गयेछे ७२ सूत्रों में से  
ए० कातिक सूत्र, जवन अरुण दत्ता का  
उत्पात क मन्त्र में वर्ण था इस सूत्र का  
अवच्छिन्न होना है A Kālika Sutra,  
forming one of the seventy-  
two Satras It contained an  
account of the origin of Arun-  
god. It is at present not in  
existence नदी० ४३, वक्० १०, २८,  
अहय न० ( अ० ) अ० यम, १९, था जलम,  
घात, वक्ता A wound, a cut. “ नाति-  
कहूँ सेयं अत्यस्तावत्कर्त्तुं ” सू० १,  
३, ३, १३,

अरुह पुं० ( अरुह ) अ० ती० १२, अरिहंत  
अरिहंत, तीर्थर Arihanta, Tirthan-  
kara. विशेष० २०८५;

अरुह त्रि० ( अरुह ) योग्य, लयक योग्य;  
लायक. Worthy, deserving विशेष०  
३३६८,

अरुह पुं० ( अरुह-न रोहति भूयः सतारे  
समुत्पद्यत इत्यरुहः ) अ०-भरदिन; सिद्ध-  
लग्न न जन्म रहित, सिद्ध भगवान्. Free  
from birth; a Siddha. भग० १. १;

अरुहंत पुं० ( अरुह-न रोहति संतारे भूते  
दग्धबीजत्वदित्यरुहन् ) अरिहंत लग्न न  
अरिहन्त भगवान्. Arihanta. भग० १, १;

अरूच त्रि० (अरूप-न विद्यते रूपां यस्यासावरूपः  
रूपरहित; वर्णरहित रूपरहित, वर्ण रहित.  
Formless; colourless भग० ७, १०,  
—काय पुं० (-काय) धर्मास्तिकाय, अध-  
र्मास्तिकाय, आकाशास्तिकाय अने अणु-  
स्तिकाय धर्मास्तिकाय, अधर्मास्तिकाय, आकाश-  
स्तिकाय और जीवास्तिकाय. the four  
substances viz Dharmāstikāya,  
Adharmāstikāya, Ākāśastikā-  
ya and Jivāstikāya. भग० ७, १०,  
अरूचि. त्रि० (अरूपिन्-रूप मूर्तिवैर्ण्यादिमत्त्व  
तन्नास्ति यस्यैत्यरूपी) रूपरहित, रूपवगरजं  
‘अमूर्त; रूप रहित; अरूपी Formless,  
‘colourless उत्त० ३६, ४, ६५, टा०  
२, १; ४, १, भग० २, १०, ७, ७, ११, १०;  
१३, ७; १६, ८, १७, २; आया० १, ५, ६, १७०,  
—अजीव त्रि० (-अजीव) धर्मास्तिकाय  
आदि चार अणुव द्रव्य. धर्मास्तिकाय आदि  
चार अजीव द्रव्य. the four material  
substances viz Dharmāstikāya  
etc. भग० १०, १, ११, १०, —अजीवद्रव्य  
न० (-अजीवद्रव्य) अरूपी अणुव पदार्थ;  
धर्म, अधर्म, आकाश अने काण अने चार द्रव्य  
रूप रहित अजीव पदार्थ; धर्म, अधर्म, आकाश  
और काल ये चार द्रव्य. the four  
formless material substances  
viz Dharma, Adharma, Kāla  
and Ākāśa भग० २५, २,  
—अजीवपणवणा. स्त्री० (-अजीवप्रज्ञा  
पणा) अरूपी अणुवती परुषा-निरूपण  
रूप रहित अजीव पदार्थों का निरूपण  
explanation of the formless  
material substances. पञ्च० १,  
—काय. पुं० (-काय) लुओ “अरूचकाय”  
शब्द. देखो “अरूचकाय” शब्द. vide  
“अरूचकाय.” भग० ७, १०;

अरोग त्रि० (अरोग) पीडाग्रहित; रोगग्रहित.  
पीडा रहित, रोग रहित; नारोग Free  
from disease or pain भग० १८, १;  
अरोगि त्रि० (अरोगिन्) लुओ “अरोग” शब्द  
देखो “अरोग” शब्द Vide “अरोग” दस०  
६, ६१, पि० नि० ४१३; निसी० ५३, ३७;  
अरोगा. त्रि० (अरोग) लुओ “अरोग” शब्द.  
देखो “अरोग” शब्द. Vide “अरोग”  
आया० २, १५, १७६,  
अरोप-प-माण व० कृ० त्रि० (अरोचयत्) न  
रे यवतो ही रुचता हुआ Not pleasing  
भग० ३, १, ६, ३३, नाया० १५, १६,  
अल त्रि० (अल) भट्ट कार्य करय म समर्थ.  
इष्ट कार्य करन में समर्थ. One able to  
perform a desired work आया०  
२, ५, १, १४७; ( २ ) अलादेवी  
सिंहासन अलादेवी का सिंहासन the  
throne of Alādevī नाया० ध० ३,  
अलं अ० (अलम्) परेपू, परिपू, परेपू, परेपू,  
पर्याप्त Full; full of perfection.  
भक्त० ५, पचा० ६, ५०; आया० १, ३, २,  
१११, १, ७, ५, २११; ( २ ) समर्थ समर्थ  
able, capable दस० ७, २७, ८, ६२,  
भग० ११, ११ १५, १, नाया० १, ८, १४;  
१६, निसी० १४, ७; उत्त० ६, ३ ( ३ )  
प्रतिषेध, निषेध न कर प्रातवय, निषेध,  
नामजू an indeclinable showing  
prohibition, no more सूय० नि०  
टा० २, ७, २०४, ( ४ ) अति, धन्य;  
अत्यन्त बहुत, अत्यन्त. enough, too  
much. आव०  
अलंकरण त्रि० (अलङ्करण) शोभाकारक  
शोभाकारक Adorning, beautify-  
ing, embellishing कप्प० ३, ३६;  
अलंकार. पुं० (अलङ्कार) आभूषण केशाभूष-  
ण, भूषणकारक, वस्त्र लंकार अने आभूषण-

लंकार ये चार प्रकारना अलंकारमानो अमे ते ओइ प्रकार आभूषण, गहना; केशालंकार, मालालंकार, वस्त्रालंकार और आभूषणालंकार इन चार प्रकार के अलंकारों में से कोई भी एक प्रकार का अलंकार. Any one of the four kinds of embellishment, viz those for the hair, those consisting of garlands, rich clothes, and gold and silver ornaments.

“ तपस्य से सूरियाभे देवे केशालंकारेण मालालंकारेण वस्त्रालंकारेण आभूषणालंकारेण चउविहेण अलंकारेण अलंकिए विभूसिए समाप्ते’ राय० १८६, नाया० १, २, १४, १६, १८; दस० २, २, भग० ३, १, ७, ६, ६, ३३, १५, १; ठा० ४, ४, दसा० ६, ४; कप्प० ४, ८२; ज० प० ५, ११७,—सभा स्त्री० (—सभा) अलंकार-धरेण पड़ेरानी सभा-ओइ-धर. गहने पहिरने का घर a chamber reserved for putting on ornaments जीवा० ३, ४,

अलंकारिय पु० ( अलंकारिक ) छलम, नाई, वांछुं, नापित नाई A barber विवा० ६; नाया० १३, ( २ ) अलंकार, धरेण अलंकार, गहना. an ornament. नाया० १३, ठा० ५, १, ज० प० ४, ८८,—कम्म न० (—कर्मन् ) केश आदि समारवानु कर्म, क्षुरकर्म, नभ्य आदि उतारवा ते. केश-वाल वगैरह बनाने का कर्म, चौकरम, बाल नख आदि काटना shaving, hair-cutting etc. विवा० ६, नाया० २, १६;—सभा स्त्री० (—सभा) जग्या भेसा अलंकार-धरेण पड़ेराय तेतुं स्थान, आभूषण पड़ेरानी सभा-धर जहा बैठकर आभूषण पहिरे जाय वह घर. a chamber reserved for putting on ornaments ज० प० ४, ८८; राय० १६; ठा० ५, ३; ( २ ) छलमत इरावानी जग्या. हजामत कर-

वाने की जगह. a room set apart for shaving purposes नाया० २; १३,—सहा स्त्री० (—सभा) जुओ उभनी शब्द. देखो ऊपर का शब्द. vide the above word. नाया० १३, ठा० ५, ३;

अलंकारिय. त्रि० ( अलंकारित ) आभूषण वगेरही अलंकृत करे. आभूषण-गहनों से अलंकृत. Adorned; ornamented. भग० ६, ३३,

अलंकिअ-य त्रि० ( अलंकृत ) अलंकृत; विलूषित, मुकुट आदिथी शलुगारे, शोभा-वे, अलंकारयुक्त अलंकृत, सुशोभित, मुकुट आदि से शृंगारा हुआ; अलंकार युक्त Adorned, ornamented ओव० ११; ३१; आया० २, २, ४, १७०; अणुजो० १२८; ठा० ७, १, उत्त० ३०, २२; नाया० १, भग० ६, ३३, १८, ५, निसी० १२, ३४, कप्प० ४, ६२; ६७; ( २ ) न० २५४ अलग अलग स्वरथी गावु ते; गायनने ओइ गुण. गायन का एक गुण, स्पष्ट स्वर से गाना. singing in distinct tunes or strains, regarded as a merit in music. अणुजा० १२८, जीवा० ३;

अलंघसिज्ज. त्रि० ( अलंघनीय ) उल्लंघन करवा योग्य नहि उल्लंघन करने के अयोग्य.

Intransgressible. सु० च० २, ४४४,

अलंब. त्रि० ( अलम्ब ) लायु नहि, दुर्लभ. जो लंबा न हो वह, छोटा. Not long, short.

“ अयाकुच्छि अलंबकुच्छि ” उवा० २, १०१;

—कुच्छि त्रि० (—कुच्छि) लंब धरित कुच्छि छे जेनी ते, जेनी कुच्छि वधारे लायनी नथी ते. जिसकी कुच्छी-कोख बहुत लंबी न हो वह ( one ) of small womb; having a womb not very long. नाया० १;

अलंबुसा स्त्री० ( अलम्बुसा ) उत्तरायण पर्यंत उपर वसनागी आदिमांसी पड़ेसी दिशा कुमारिका. उत्तर



रुचक पर्वत पर रहने वाली आठ दिशाकुमारियों में से पहिली दिशाकुमारी The first of the eight Dīśākumārīs residing on Uttara Ruchaka mountain ज० प० ५, ११४;

अलंभिता स० कृ० अ० (अलम्बिता) न पा-  
भीने; भोग्या वगर. विना पाये; विना प्राप्त  
किये Without getting, without  
having obtained. ठा० ३, २.

अलंभोगसमर्थ. त्रि० (अलंभोगसमर्थ)  
भोग भोगवाने पुरती रीते समर्थ यथेष्ट,  
अर बुवानीमा आवेष्ट भोग भोगने में पूर्ण  
रीति से समर्थ Fully capable of  
worldly enjoyments, in the  
full spring of life. ओव०

अलकापुरी. स्त्री० (अलकापुरी) लौकिक  
शास्त्र प्रमाणे कुबेरनी नगरी लौकिक शास्त्र के  
अनुसार कुबेर की नगरी The city  
belonging to Kubera according  
to popular mythology ज० प०  
३, ४१;

अलक पु० (अलक) वाराणसी नगरीना  
राज वाराणसी नगरी का राजा A king  
of the city of Vārāṇasī. अत० ६,  
१६;

अलक पु० (अलक) अंतगड सूत्रना छठा  
वर्गना सोपाना अध्ययननु नाम अन्तगड सूत्र  
के छठे वर्ग के सोलहवें अध्याय का नाम. The  
sixteenth chapter of the sixth  
section of Antagada Sūtra अत०  
६, १६; (२) महावीरस्वामीना समयमा काशी-  
वाराणसी (वाराणसी) नगरीना अंके राजा,  
के जेठे भोटा पुत्रने राज्य सोपी महावीर  
स्वामी प से दीक्षा लीधी, अगीयार अगने  
अभ्यास करी, धरु वरसनी प्रवचना पाणी,  
विपुल पर्वत उपर सथारो करी सिद्धि भोगी

महावीरस्वामी के समय का काशी (वाराण-  
सी) नगरी का एक राजा, जिसने अपने  
बड़े पुत्र को राज्य दे, महावीर स्वामी से दीक्षा  
ली और ग्यारह अंगों का अभ्यासकर बहुत  
वर्षों तक दीक्षा का पालन किया, तथा अन्त में  
विपुल पर्वत के ऊपर संन्यासकर सिद्धि प्राप्त  
की a king of Benares contem-  
porary with Mahāvīra Svāmī,  
who resigned his kingdom in  
favour of his eldest son, took  
Dīksā from Mahāvīra, studied  
eleven Angas, practised asce-  
ticism for many years per-  
formed Sānthārā on Vipula mount  
and became Siddha अंत० ६, १६;

अलक्खण. न० (अलक्खण) अपक्षय.  
कुलक्षण; खराब चिन्ह. A bad sign, a  
bad habit (२) त्रि० सारा लक्षण  
रहित अच्छे लक्षणों से रहित devoid of  
good signs. नाया० २;

अलक्खणया स्त्री० (अलक्खणया) असमन्वस  
भाषण, यद्वा तद्वा भोक्तु ने असमञ्जस भाषण,  
यद्वा तद्वा बोलना Reckless, wanton  
speech विशेष० ३४७;

अलकापुरी स्त्री० (अलकापुरी) लुओ  
“अलकापुरी” शब्द देखो “अलकापुरी”  
शब्द. Vide “अलकापुरी” अत० १,

अलग्ग. त्रि (अलग्ग) असम्बद्ध, न लागेष्ट.  
न लगा हुआ; असम्बद्ध. Unconnected;  
not joined together पंचा० ३, २१;

अलत्त पु० (अलत्त) लाक्षा रस, अलत्तो  
लाख का रस, लाक्षारस Lac, a dark-  
red trans-paerent substance.  
निर० ३, ४,

अलत्तत्रय. पुं० (अलत्तक) अलत्तो.  
लाख Lac, a dark-red trans-



parent substance. (२) त्रि० लाभ्यती  
रंगले, लाख लाख से रंगा हुआ, लाल  
dyed with lac; of scarlet colour.

‘जे रत्तए ते अलतए’ अणुजा० १३१;

अलत्तग न० (अलक्तक) अक्षतो; लाल रंगतुं  
ये ३५. लाख, लाल रंग का एक द्रव्य.  
Lac; a dark-red transparent  
substance. अणुत्त० ३, १;

अलद्ध त्रि० (अलब्ध) नहि भगेल; प्राप्त न  
थयेल नहीं मिला हुआ: अप्राप्त.  
Unobtained; not obtained  
ठा० ५, २, नाया० ५; भग० १८, १०;  
—पुव्व. त्रि० (-पूर्व) पूर्वं प्राप्त-  
नहि दरेल. कोछ प्राप्त नहि भगेल पहिले  
कभी न मिला हुआ. not obtained  
before; never obtained before.  
आया० १, ६, ३, ८;

अलद्धिजुत्त त्रि (अलब्धियुक्त) अक्षमिध-  
अप्रप्तियं, जेने अलार्हादिकेन ललन भगे  
ते अलब्धि सहित, जिस आहारादिक का लाभ  
न हो वह (One) with non-attain-  
ment of e. g. food etc. पंचा० १८,  
३६,

अलद्धिय. त्रि० (अलब्धिक) अक्षमिधयां,  
लान वगरतुं, अक्षमिधरहित. लब्धि रहित, लाभ  
विना का. (One) having no attain-  
ment or acquirement of. भग०  
८, २, ओ३०

अलद्धुअं सं० कृ० अ० (अलब्ध्या) भेगव्या  
यन, न भेगव्याने विना प्राप्त किये, बिना पाये  
Without having obtained; hav-  
ing not obtained. “अलद्धुअं नो  
परिदेवज्जा” दस० ६, ३, ४;

अलभमाण व० कृ० त्रि० (अलभ्यमान) न प्राप्त  
थं, न भग्यु. प्राप्त न होता हुआ; न मिलता  
हुआ. Being not obtained; not

being obtained. नाया० ६; १६;

अलभमाण व० कृ० त्रि० (अलभमान) न  
पाभते देहा प्राप्त न करता हुआ. Not  
obtaining. निसी० १०, ४४; नाया० २;  
८, ६; १६, ओ३० ३६;

अलभसिरी त्रि० (अलभत्री) अलादेवीनी  
पूर्वनी माता. अलादेवी की पूर्वकी माता.  
The former mother of Alādevī.  
नाया० ध० ३;

\*अलमंथु त्रि० (अलमस्तु-समर्थ) समर्थ;  
शक्तिमान्. समर्थ, शक्तिवाला Powerful;  
strong. ठा० ४, २;

अलमत्थु. त्रि० (अलमस्तु) यस्य कुरो-भ  
कुरो येवी रीते निषेध करनार ‘वस, समाप्त,  
अब न करो’ इस प्रकार निषेध करने वाला.  
Enough of it; don't do it. भग०  
७, ८, ठा० ४, २;

अलय. न० (अलक) विछिनो कोटी. विच्छू  
का डंक. A scorpion's sting. “अलए  
भंजावेइ” विवा० १, ६;

अलया. स्त्री० (अलका) लुओ “अलकापुरी”  
शब्द देखो “अलकापुरी” शब्द. Vide  
“अलकापुरी”. नाया० ४;

अलयापुरी स्त्री० (अलकापुरी) लुओ  
“अलकापुरी” शब्द देखो “अलकापुरी”  
शब्द. Vide “अलकापुरी” अंत० १, १,  
नाया० ५;

अलव त्रि० (अलप-लपन्तीति लया वाचला,  
न लग अलया सैनवतिनः) भौतव्रतधारी.  
मौन व्रत धारण करने वाला (One) with  
a vow of silence सूय० २, ६, १५;

अलस. त्रि० (अलस) आणसु; प्रमादी  
आलसी, प्रमादी. Lazy; idle; negligent.  
नि० नि० २६५; ओ३० नि० भा० ४८, (२)  
भ०६; धीमु. मंद; ठंडा, सुस्त. slow; not  
quick; dull ओ३० नि० ४८, (३) ५०

अलसीयो। एक प्रकार का बरसाती दो इन्द्रिय वाला जीवविशेष, अलसीया the snake-like worms that originate in the rainy season mostly in Aślesā constellation 1 e about the beginning of July “अलसा मा इवाहया” उक्त० ३६, १२७, ( ५ ) उत्तर भरतमानो अेक देश उत्तर भरत क्षेत्र मे का एक देश name of a country in Uttara ( northern ) Bharata ज० प०

अलसग त्रि० ( अलसक ) आणसु आलसी Lazy, idle, inert सूय० २, २, ५४;

अलसमाण व० कृ० त्रि० ( अलसायमान-अनलसोऽलसो भवतीत्यलसायते, अलसायत इत्यलसायमान ) आलस्य करतो आलस्य करता हुआ Remaining idle; keeping lazy गच्छा० ४,

अलसय. त्रि० ( अलसक ) विश्वयिद्धविशेष, आऽानो अेक रोग. विश्वचिकाविशेष, दस्त का एक रोगविशेष A disease connected with stools, a disease affecting stools “ एवं खलु तुम अतो सत्तरत्तस्स अलसण्ण वाहिणा अभिभूया समासी” उवा० ८, २५५,

अलसिअ त्रि० ( आलस्यिक ) आणसु, प्रमादी आलसी, प्रमादी Idle, lazy, negligent. उक्त० २७, १०,

अलसिरी स्त्री० ( अलसी ) वाराणसी नगरीना अल गाथापतिनी स्त्री, धरणेन्द्रनी अला नामनी अग्रभक्षिणीनी पूर्वभवनी माता वाराणसी नगरी के अल गाथापति की स्त्री, धरणेन्द्र की अला नामक पटरानी की पूर्वभव की माता का नाम The wife of the Gāthāpati Ala, of the city of

Vārānasī, the mother of Alā the crowned queen of Dharanendra in her previous birth. नाया० ध० ३,

अलसी स्त्री० ( अलसी ) अलसी, धान्य-विशेष अलसी धान्यविशेष A kind of corn आया० नि० टी० १, १, ५, १२६; भग० २२, २;

अलहुय त्रि० ( अलघुक ) अत्यन्त सूक्ष्म; जेनाथी पीजे केछ लघु नथी ते. अत्यन्त सूक्ष्म, जिससे दूसरा कोई लघु न हो वह Very minute, infinitesimal ठा० १०;

अला त्रि० ( अला ) धरणेन्द्रनी प्रथम अग्रभक्षिणीनु नाम. धरणेन्द्र की प्रथम पटरानी का नाम. Name of the first principal queen of Dharanendra भग० १०, ५; नाया० २, ( २ ) विद्युत्कुमार ज्ञातनी भोऽरी देवी विद्युत्कुमार जाति की बड़ी देवी a great goddess of the Vidyutkumāra class ठा० ६;

—वर्डिसय न० (—अवतंसक ) अला देवीनु भवन अलादेवी का भवन the palace of Alā Devī नाया० २, नाया० ध० ३,—सीहासण न० (—सिहासन ) धरणेन्द्रनी पटरानी अलादेवीनु सिंहासन. धरणेन्द्र की पटरानी अलादेवी का सिंहासन. the throne of Alā Devī the crowned queen of Dharanendra नाया० ध० ३,

अलाअ-य न० ( अलात ) उआऽीउ, सणगतु-धुधवातुं आणु अथवा लाकटुं सिलगता-धुधकता हुआ कंडा अथवा काष्ठ A burning piece of fuel विशेष० २२४; २४३३, दस० ४, ८, ८, नदी० १०; पन्न० १; नाया० १६; ओघ० नि० भा० २१, जीवा० ३, १; ठा० ५, १,

**अलाउ. न० ( अलावु )** तुं०। तूवा A gourd अणुजो० १३१, आया० २, ६, १, १५२; सूय० १, ४, २, ४;—**च्छेद न०** (—च्छेद) तुं०। छेदवानुं छेदियार—यधुवगेरे. तूवा छेदने का हथियार an instrument (e g knife) to cut or bore a gourd “अलाउच्छेदं पेहेहि” सूय० १, ४, २, ४, —**पाय न०** (—पात्र) तुं०। पात्र तूवे का पात्र a vessel or receptacle made of gourd आया० २, ६, १, १५२, **अलाउय न०** (अलावुक) तुं०। तूवा A gourd आया० २, ६, १, १५२; **अलाघवया स्त्री०** (—अलाघवता—अलाघव—अविद्यमान लाघव लघुता यस्य स तथा तद्भावो—लाघवता ) लघुतानो अभाव लघुता का अभाव Absence of lightness or smallness प्रव० ८१३, पंचा० १७, १८; **अलादेवी स्त्री०** (अलादेवी) लुओ ‘अला’ शब्द देखो ‘अला’ शब्द Vide ‘अला’ नाया० ध० ३; **अलावु न०** (अलावु) लुओ ‘अलाउ’ शब्द देखो ‘अलाउ’ शब्द Vide ‘अलाउ’ विशेष० २३७०; जं० प० **अलाभ पुं०** (अलाभ) अलाभ, आहारादिनी अप्राप्ति अलाभ, आहारादि की अप्राप्ति Non-acquisition e g of food etc “अलाभो तं न तज्जण” उक्त० २, ३१, दस० ५, २ ६,—**परिसह पुं०** (—परिपह) आहारादिनी अप्राप्तिनो परिपह आहारादिक की अप्राप्ति का परिपह bearing calmly pain arising from not obtaining food etc सम० २२, मग० ८, ८; **अलाहि अ०** (अलम) निवाग्ल, निषेध निवारण, निषेध; ननाहो An indeclinable meaning “enough” “don't do”

( २ ) संपूर्ण, पर्याप्त सम्पूर्ण. पर्याप्त fully; perfectly मग० ६, ३३; १५, १, नाया० १; १६,

**अलाहि धा०** (अलाभि) लल धातुनु ओड रूप, लुओ ‘लम्’ धातु लम धातु का एक रूप, देखो ‘लम्’ धातु A form of the root “लम्” q v. कप्प० ६, १८

**अलिआ स्त्री०** (अलीका) लुओ लुवाणी लापा, असत्य लापा झूठ भरी भाषा False speech falsehood प्रव० १३३५;

**अलिजर पुं०** (अलिजर) धडो, लादीयो, पाणी भरवानुं क्षम घडा, पानी भरने का बरतन A pot of water, a vessel in which water is kept जीवा० ३, ठा० ४, २;

**अलिजरय पुं०** (अलिजरक) लुओ “अलिजर” शब्द देखो “अलिजर” शब्द Vide “अलिजर” “कलसण य अलिजरण य जंबूलण य” उवा० ७, १८४,

**अलिंद न०** (अलिन्द) ओटडो, चोतरा. ओटला, चवूतरा Verandah (२) कुंड कूडा a round tub-like vessel ओघ० नि० ४७६;

**अलिंदअ-य. न०** (अलिन्दक) लुओ ‘अलिंद’ शब्द देखो ‘अलिंद’ शब्द. Vide “अलिंद” अणुजो० १३२,

**अलित्त त्रि०** (अलिप्त) लेपाओल—परडाओल नहि बिना लीपा हुआ Unsmeared, not bespattered उक्त० २५, २६,

**अलित्त न०** (अरित्र) लुओ, नावाने लाववानुं वांसधु नाव चलाने का वास—डाड An oar “अलित्तेण वा पीडण वा” आया० २, ३, १, ११६,

**अलित्तत्र न०** (अरित्रक) लुओ ‘अलित्त’ शब्द देखो “अलित्त” शब्द Vide “अलित्त” निरी० १८, १९,

अलिपत्त पु० ( अलिपत्र ) विष्ठीनी पुष्पीना  
आकारे जेनां पादडा छे अेवुं वृक्ष वृक्षविशेष,  
जिसके पत्तों का आकार विच्छू की पूछ के  
समान होता है A tree with leaves  
of the shape of the tail of a  
scorpion विवा० १, ६,

अलिय-अ. न० ( अलीक ) लुहुं, जेहुं,  
मिथ्या, असत्य झूठ मिथ्या, असत्य  
Falsehood, untruth “नापुटो वागरे  
किचि, पुटो वा नालिय वए” उक्त० १,  
१४, ३४, ३, भग० ५, ६, सम० १० सु० च०  
१३, ३३, ओव० नि० ७८७, ठा० ६, १,  
परह० १, २, ओव० ३४, पंचा० १, ११, भक्त०  
१०१,—वयण. न० (—वचन ) असत्य-  
लुहुं वयन; असत्य वचन. झूठ वचन false-  
hood, false speech प्रव० ४५७,  
भग० ८, ६, वय० ६, १,

अलिसंद. पु० (अलिप्यन्द) योणानी अेक नत.  
धान्यविशेष चोला, वान्यविशेष A kind  
of corn. पत्र० १,

अलुक्खि त्रि० ( अलुक्खिन् ) स्निग्ध-स्नेहयुक्त  
स्पर्शवाणो, लुभु नहि ते. स्त्रुवापन रहित,  
चिकना Sticky, not dry भग० १४, ४,  
अलुग न० (अलुक) आलु-पटाटा, उदविशेष.  
आलू, कंदविशेष A bulbous root, e g  
a potato. पत्र० १,

अलुद्ध त्रि० ( अलुद्ध ) लोल वगरनो,  
सतोषी लोभ रहित, सतोषी Free from  
greed, contented “लद्धूण तय न  
अत्तट्ठे एम अलुद्धो ” परह० १ ५,

अलूसअ त्रि० ( अलूपक ) अ-नहि लूपक-  
विराधक, जरा पणु संयमनी विराधना न  
डरनार. संयम की अणुमात्र भी विराधना, न  
करने वाला (One) not in the least  
violating the vows of asceti-  
cism. सूय० १, २, २, ६;

अलूसअ व० कृ० त्रि० (अलूपयत्) परितापना-  
पीडा न उपज्जयते, डोधना प्राण न लुटते.  
किसीको पीडा न देता हुआ, किसीके प्राण न  
लेता हुआ (One) not troubling  
others, one not depriving  
anybody of life आया० २, १६, ४;

अलेव पु० ( अलेप ) लेपनो अभाव, अलिप्त  
पणुं लेप का अभाव, अलिप्तपना State  
of being unsmeared, unbespat-  
tered आव० ६, १०,—कड त्रि० (—कृत)  
जेनाथी पात्र भरडाय-लेपाय नहि तेवी वस्तु;  
झण्णीया, यण्णा, वटाण्णा वगेरे जिमसे पात्र न  
लिप्त हो ऐसी वस्तु, चना, बटला वगेरह  
( anything ) which does not  
bespatter the vessel in which  
it is put, e g grams etc.  
पंचा० १८, ६,

अलेवड त्रि० ( अलेपकृत ) लुओ “ अलेव-  
कड ” शब्द देखो “अलेवकड ” शब्द Vide  
‘ अलेवकड ’ पि० नि० भा ३७, प्रव० ५८५,

अलेवाड त्रि० ( अलेपकृत ) लुओ ‘ अलेव-  
कड ’ शब्द देखो ‘ अलेवकड ’ शब्द Vide  
‘ अलेवकड ’ नाया० ८, अत० ८, १, प्रव०  
७५१,

अलेसि पु० ( अलेसियन् ) लेभ्यारहित एव,  
सिद्ध भगवान् तथा अयोगी-यौदमा गुणुडाला  
वाणा एव, कृष्ण आदि ७ लेश्यामांनी डोड  
पणु लेश्या वगरना लेज्या रहित जीव, सिद्ध  
भगवान् तथा चौदहवें गुणस्थान वाला  
अयोगी जीव, जिसमें कृष्ण आदि छ लेश्याओं  
में से कोई लेज्या नहीं होती ऐमा जीव  
A soul free from thought-tint  
or thought colours, a Siddha or  
a soul in the 14th Gunasthāna.  
ठा० ३, ४,

अलेस्स पुं० ( अलेश्य ) लेश्यारहित शुव;  
 यौद्धमा शुशुक्षावाणा तथा सिद्ध भगवान्.  
 लेश्या रहित जीव; चौदहवे गुणस्थान वाला  
 जीव तथा सिद्ध भगवान्. A soul free  
 from Leśyā or thought-tint  
 e. g. a soul in the fourteenth  
 spiritual stage and a Siddha  
 भग० ६, ४; ८, २, १७, २; १८, १; २५,  
 ६, २६, १, जीवा० १;

अलोअ-य. पुं० ( अलोक ) लोड-जगत  
 ँडारने प्रदेश; अलोड. लोक-जगत् के बाहर  
 का प्रदेश; अलोक Place outside the  
 world; place beyond the uni-  
 verse. ठा० ५; उत्त० ३६, १, नदी० १५;  
 ओव० ३४, सूय० २, ५, १२; भग० १, ६,  
 २०, २; प्रव० ४६३,

अलोग पुं० ( अलोक ) लुओ 'अलोअ-य'  
 शब्द देखो 'अलोअ-य' शब्द Vide  
 'अलोअ-य' दसा० ५, ३३; भग० २, ४;  
 १४, ८;—अंत पुं० (—अन्त ) अलोडने  
 अंत-छेडो अलोक का अंत. the end of  
 Aloka ( i. e. region beyond  
 the universe). प्रव० ६१६;

अलोगाकास पुं० ( अलोकाकाश ) लोडाडा-  
 शनी ँडार अलोडाडाश. अलोकाकाश,  
 लोक के बाहर का आकाश; Ākāśa or  
 space beyond the universe. भग०  
 २५, ३,—सेढी. स्त्री० (—श्रेणी) अलोडा-  
 डाशनी श्रेणी-पंक्ति. अलोकाकाश की श्रेणी-  
 पंक्ति. the line of space beyond  
 the universe. भग० २५, ३;

अलोभ. त्रि० ( अलोभ ) लोभरहित लोभ  
 रहित. Free from greed. ( २ ) पुं०  
 लोभने अभाव लोभ का अभाव. absence  
 of greed सम० ३२; क० ग० ४, ६१;

अलोभत्त. न० ( अलोभत्व ) लोभने  
 अभाव. लोभ का अभाव. Absence of  
 greed. भग० १, ६;

अलोभया स्त्री० ( अलोभता ) लोभने अ-  
 भाव; ३२ योगसग्रहमांने आहमे योग-  
 सग्रह. लोभ का अभाव: ३२ योगसग्रहों में  
 से आठवों योग संग्रह. Absence of  
 greed, the eighth of the thirty-  
 two Yoga-Saṅgrahas सम० ३२,

अलोयंत. पुं० ( अलोकान्त ) अलोडने अन्त-  
 छेडो अलोक का अंत. End of the space  
 beyond the universe भग० १, ६;  
 ११, १०;

अलोयागास पुं० ( अलोकाकाश ) लुओ  
 'अलोकाकास' शब्द देखो 'अलोकाकास'  
 शब्द. Vide 'अलोकाकास' भग० २,  
 १०, २०, २;

अलोल. त्रि० ( अलोल ) अलुब्ध; लोलुपता  
 रहित; डोहनी पासे प्रार्थना करने नहि.  
 लोलुपता रहित, किसीसे भी प्रार्थना न करते  
 वाला. Not greedy; not soliciting  
 anything from anybody. दस०  
 १०, १, १७,—भिक्षु. पुं० (—भिक्षु )  
 डोहनी पासे प्रार्थना करीने शिक्षा नहि भाग-  
 नार ( साधु ). किसीसे प्रार्थना करके भिक्षा  
 नहीं मांगने वाला ( साधु ). a Sādhū not  
 asking food by solicitation  
 "अलोलभिक्षू न रसेषु गिज्जे" दस०  
 १०, १, १७;

अलोलुअ-य. त्रि० ( अलोलुप ) लोलुप-रस  
 लंपट नहि; आवाते गृहि नहि लोलुपता  
 रहित. Not greedy of sensual  
 pleasures, of food etc. उत्त० २,  
 ३६; २५, २७, दस० ६, ३, १०;

अलोलुप त्रि० ( अलोलुप ) लुओ 'अलो-

लुअ-य' शब्द. देखो "अलोलुअ-य" शब्द.  
Vide 'अलोलुअ-य.' उक्त० २, ६६;

\*अल्ल त्रि० (आर्द्र) लीलु; सल्ल, भीनु गीला;  
सजल भीगा हुआ Wet, damp "अल्ल  
चम्मं दुरूहइ" नाया० १२; १८, निर० १, १;  
प्रव० २३८;—कच्चूर. पुं० (कच्चूर) ओ३  
लतनी आर्द्र वनस्पति; लीलो क्यूरे। एक जाति  
की हरी वनस्पति, कच्चूर. a kind of green  
vegetation. प्रव० २३८;—चम्म न०  
(चर्मन्) आलु आमड़. आर्द्र चर्म,  
गीला चमड़ा; wet leather. विवा०  
३,—मुत्था. स्त्री० (मुस्ता) नागरमोथ  
नागरमोथा. a kind of fragrant  
grass. प्रव० २४०,

अल्लई स्त्री० (अल्लकी) गुच्छ लतनी ओ३  
वनस्पति, दूधी एक जाति की गुच्छ वनस्पति,  
दूधी A kind of vegetation grow-  
ing in bunches राय० ५४, पञ्च० १७, भग०  
२२, ४,—कुसुम न० (कुसुम) दूधीनु फूल  
दूधी का फूल. a flower of अल्लई (q v)  
पञ्च० १; राय० ५४;

\*अल्लक. न० (आर्द्रक) आलु अदरक  
Ginger. ज० प०

\*अल्लग. पुं० (आर्द्रक) लुओ 'अल्लक' शब्द  
देखो 'अल्लक' शब्द Vide 'अल्लक'  
प्रव० २३८,

अल्लियावण त्रि० (अल्लायन-सन्धि) कणाय  
नहि तेवे। साधो-ओ द्रव्यतो परस्पर भेगाप  
मालूम न हो ऐसा जोड़; दो वस्तुओं का पर-  
स्पर मेल Union of two substances  
without the dividing line  
being visible भग० ८, ६,—वंध. पु०  
(वन्ध) ओ३ द्रव्यर्ते भील द्रव्यनी साथे  
योटाउवु ते, साधो कणाय नहि तेवी रीते शु६  
वगेरेथी योउवु ते. एक द्रव्य को दूसरे द्रव्य के

साथ चिपकाना, जोड़/न मालूम हो इस रीति से  
गोंद वगैरह से जोड़ना. joining two sub-  
stances in such a way that the  
joint is not visible "से किं ते  
अल्लियावणवधे ? अल्लियावणबंधे चउविहे  
पणत्ते, तंजहा-लेसणावधे उच्चयवधे  
समुच्चयबंधे साहणणाबंधे" भग० ८, ६,

✓अल्लीअ धा० I (आ+ली) आश्रय  
करवे। आश्रय करना. To resort to.  
(२) ध्रिये। गोपववी-वश करवी इन्द्रियो  
को वश करना to restrain or  
control the senses.

अल्लिए वि० गच्छा० ४६;

अल्लियावेइ णि० नाया० २;

अल्लियावेइत्ता स० कृ० नाया० २,

अल्लीण. त्रि० (आलीन) गुर्वादि३ने आश्रि  
रहेल गुरुआदि के आश्रित रहा हुआ (One)  
relying or depending upon a  
preceptor etc. नाया० १६; राय० २८६,  
भग० १, ६, ओव० १०, ३८, अत० ३,  
१, (२) आ-समन्तात् सर्व क्रियाभा  
लीन-गुप्त, गभीर येशा करनार सम्पूर्ण क्रियाओं  
में लीन-गभीर चेष्टा करने वाला seriously  
or solemnly performing  
all actions ज० प० २, २०, (३) मन,  
वचन अने कायाथी गुप्त थयेल मन, वचन  
और काया से गुप्त controlled in mind;  
speech and body. उक्त० २३, ६, भग०  
२, १, २५, ७; नाया० १, कप्प० ४, ६१;  
अणुत्त० ३, १; (४) उत्पन्न थयेल, वृद्धि  
पायेल उत्पन्न; वृद्धि को प्राप्त born;  
developed. नाया० १६; (५) मनोहर;  
सुंदर मनोहर, सुन्दर, खूबसूरत charming;  
beautiful नाया० १, (६) न० शरीर  
शरीर. body. नाया० १, (७) त्रि० नि संग,



देपरहित नि संग; लेप रहित free from attachment; unattached कम्प० ७, २१०,—**पल्लीणगुत्त**. त्रि० (—प्रलीनगुत्त) अंगोपाग वगेरेने सारी रीते सयमभां राभनार अंगोपाग वगेरह को अच्छी तरह से सयम में रखने वाला well-controlled in the actions of the limbs and sub-limbs of the body दस० ८, ४१:—**प्पमाण**. न० (—प्रमाण) शरीर प्रमाण शरीर प्रमाण शरीरानुसार the measure of the body. नाया० १; जं० प० २, २०,

**अल्लीण** त्रि० (अलीन) गुप्त नहि ते जो गुप्त न हो वह Not secret, open. जांवा० ३, ३;

**अल्लीण्या**. स्त्री० (अलीनता) गुप्तेन्द्रियपणु गुप्तेन्द्रियपना Restraint of the senses भग० ६, ३१;

**अल्लेसा**. स्त्री० (अल्लेश्या) देश्याने अभाव लेश्या का अभाव Absence of Lesyā (1 e thought tint or thought colours). क० गं० ४, ५३;

**अव** अ० (अव) अधिःपणुं अविकता A prefix showing addition, excess सम० १;

**अवङ्गण** त्रि० (अवतीर्ण) उतरेलु; तरीने पार गयेलुं उतरा हुआ, तिरकर पार गया हुआ Crossed; descended सु० च० १, २२८, ४, ३५;

**अवउज्जिय** स० कृ० अ० (अवकुब्ज्य) नीचे नभीने; नीचे शरीर सङ्कोचीने नीचे मुककर, शरीर नीचे को सिकोडकर Bowing down, contracting the body and lowering it आया० २, १, ७, ३७;

✓ **अवउज्झ** धा० I (अप+उज्झ्) त्याग करेवा; तज्जु; मुझी देव त्याग करना; छोड़ना. To abandon; to give up अवउज्झइ. 'अवउज्झइ पायकंबल' उक्त० १७, ६; पंचा० १६, ६,

**अवउड**. न० (अवकोट—ग्रीवाभङ्गन) ग्रीवा-डोड मरुपी ते गर्दन मरोड़ना To turn or twist the neck. नाया० २,

**अवउडग** न० (अवकोटक) लुओ उपले शब्द देखो ऊपर का शब्द Vide the above word विवा० २;—**बंधण**. न० (बन्धन) मस्तकने मरुडीने लुल साथे पीठना लागमा पाधवु ते, मुश्केटाट पाधवु ते. मस्तक को मरोडकर भुजा साथ के पीठ पर बाधना to bind fast e. g. by twisting the arms and the head and tying them to the back विवा० २, ६, अंत० ६, ३, राय० २५३, परह० १, १;

**अवउडय** न० (अवकोटक) लुओ "अवउड" शब्द देखो "अवउड" शब्द Vide "अवउड." विवा० १, २,

**अवउसग**. न० (अपवसन—अवजोषण) उपवास. उपवास A fast, fasting "अवउसगा उ जे चित्ता" पंचा० १६, २५;

**अवउसणग**. न० (अपवसनक) वस्त्र विना रही टाढ वगेरे सहन करवा ते, तपविशेष सेववु ते वस्त्र रहित होकर ठंड आदि का सहन करना, तपविशेष करना. Endurance of cold etc without putting on clothes, a kind of austerity पचा० १६, ३७,

**अवंक** त्रि० (अवक्र) अ—नहि वक्र—वांङु; सीधु सरल वक्रता रहित, सीधा, सरल. Straight, straightforward. not tortuous. राय० ८६;

अवंग पु० ( अपाङ्ग ) आपनो भुणो आख  
का कोना The corner of the eye  
राय० ११२, जं० प० (२) त्रि० अगनी भोऽ  
आपणुवाणे शारिरिक ऐव चाला. ( one )  
having a physical defect  
ज० प० जीवा० ३, ३,

अवंगुय त्रि० (अपावृत्त) उधाडु मुकेलुं, भुएलु  
मुकेलु उघाड़ा रखा हुआ, बिना ढका हुआ  
Kept open, open भग० २, ५, परह०  
२, ८, वेय० १, १८, राय० २२५, ओव० ४०,  
—दुवार त्रि० (—द्वार) उधाडु मुकेलु ६१२—आ-  
री आरुछे नेनु ते जिसका द्वार या खिड़की  
खुली हुई हो वह with door open,  
with the gate open “अवगुयदुवारा”  
भग० २, ५;

अवज्जजाय त्रि० (अव्यञ्जनजात—व्यञ्जनान्यु-  
पस्थरोमाणि न जातानि यस्य स तथा) नेने  
दाढी, भुएछ वगेरे उग्या नथी अवे। जिसकी  
डाढी और मूछ उगी न हो वह ( One )  
having beard, moustaches etc  
not yet grown. वव० १०, २०, कप्प०  
६, २०;

अवंभ त्रि० ( अवन्ध्य ) वध्य नहि, सङ्ग  
अर्थकर्ता जो वन्ध्य न हो, सफल कार्य-  
कर्ता Not barren, unfailing in  
doing work सूय० २, १, २२. (२) सङ्ग  
सफल fruitful, bearing fruit in due  
season विशेष ११०३ (३) पु० सङ्ग-  
शुभाशुभ कर्मना विवेचनवाणे ११ भो पूर्व  
शुभाशुभ कर्म का विवेचन करने वाला ग्यारहवाँ  
पूर्व the eleventh Pūrva  
discussing knowledge etc. and  
so fruitful in result सम० १४, नदी०  
५६, प्रव० ७२३,

अवंभा स्त्री० ( अवन्ध्या ) गंधिधाविन्धनी  
मुख्य राजधानी गविलाविजय की मुख्य  
राजधानी The principal capital  
city of Gandhīlāvijaya ज० प०  
अवंतिसुकुमाल पुं० ( अवन्तिसुकुमार )  
उज्जयिनी नगरी निवासी लघा सेक्षाणीने  
पुत्र, के नेणु आचार्य पासे दीक्षा लई, तुरत  
सथारे डर्यो, वनमां ओड सियावणीओ तेनी  
ब्रह्मानुं भास भाधु, तथापि ते समाधि  
परिणामथी पतित न थता डाणधर्म  
पाणी सद्गति पाभ्या उज्जयिनी नगरी  
निवासी भद्रा सेठाणी का पुत्र, जिसने कि आ-  
चार्य से दीक्षा लेकर तुरत संन्यास किया वनमे  
एक लोवड़ी ने उसकी जघा का मांस खाया तो  
भी वह समाधि से च्युत न हुआ और मरकर  
सद्गति को प्राप्त हुआ The son of Bha-  
diā the wife of a merchant of  
Ujjain He took Diksā from  
his preceptor and immediately  
performed Santhārā The flesh  
of his thigh was eaten by  
a she-jackal but he got  
absolution as a result of  
his Samādhi, after his death  
सत्या०

अवंतीगंगा स्त्री० ( अवन्तीगङ्गा ) गोशालाना  
मतने अनुसार ओड डाणविलाग गोशाला  
के मत के अनुसार एक कालविभाग. A  
division of time according to  
the tenet of Gośālā भग० १५, १,  
अवंदंत व० कृ० त्रि० ( अवन्दमान ) वन्दना न  
करतो वन्दना न करता हुआ. Not salut-  
ing, not bowing to प्रव० ६२८,  
अवंदशिज्ज त्रि० ( अवन्दनीय ) न  
वाङ्मया योग्य, नमन करवा योग्य नहि वन्दना  
करने योग्य नहीं Unworthy of be-

ing saluted, not deserving salutation. प्रव० १०३;

✓ अवकंख. धा० I. (अव+काङ्क्ष्) आकांक्षा करवी; अभिलाषा करवी आकांक्षा करना; अभिलाषा करना. To desire. (२) पा० ७१ नेतुं. पीछे देखना. to look behind or backward.

अवकंखइ. भग० १, ६;

अवकंखंति. आया० १, १, ७, ५७, १, २, २, ७५;

अवकंखमाण. व० कृ० नाया० ६;

अवकंखा. स्त्री० (अवकाङ्क्षा) उत्सुकपणुं, उत्सुकता. उत्सुकता. Longing, yearning. ठा० ४, २;

अवकर. पुं० (अवकर) ड्यरो. कचरा. Refuse; dirt. भग० १५, १;—रासि पुं० (—राशि) ड्यरातो ढगदो. कचरे का ढेर heap of dirt or refuse भग० १५, १;

अवकरअ पुं० (अवकरक) अवकरक—ड्यरा नामतो डोर् भाणुस किसी मनुष्य का नाम. Name of a person. अणुजो० १३१;

अवकास पुं० (अवकाश) आश्रयविशेष. आश्रयविशेष. A place of shelter of a particular kind परह० २, ४;

अवकिरियव्व. त्रि० (अवकिरणीय) छोडवा लायड; त्यागवा येअ. छोडने लायक त्यागने योग्य. Worth being cast away or thrown away. परह० १, ३; ५;

अवकोडग न० (अवकोटक) माथुं नमाडी हाथ साथे पछवाडे आंधतुं ते. सिर नमाकर हाथों के साथ पीछे बांधना. Lowering or bending the head backward and tying it to the hands. परह० १, १;

अवकंति त्रि० (अपक्रान्ति) सर्व शुभ भावथी

अष्ट थअेल—पतित थअेल सम्पूर्ण शुभ भावों से अष्ट—पतित. Utterly sinful or degenerate “रयणप्पभाए पुढवीए छ अवकंतमहानिरया प० तं० लोले लोलुए उदहे निदहे जरए पजरए ” “पंकप्पभाए पुढवीए छ अवकंतमहाणिरया प० तं० आरे वारे मारे रोरे रोएए खाडखडे ” ठा० ६;

अवकंति. स्त्री० (अपक्रान्ति) परित्याग; तणुं ते. छोडना; त्यागना. Abandonment; leaving off. नाया० ८;

✓ अवक्रम. धा० I. II. (अव+क्रम) गति करवी; गतुं. गमन करना, जाना. To go; to move. (२) पा० ७६ हतुं. पीछे हटना. to retreat; to turn back.

अवक्रमइ. राय० ४४; नाया० १; २; ६; १२; १३; भग० १, ४, २, १; ३, २; ७, ६; दसा० १०, १;

अवक्रमेइ. नाया० १;

अवक्रमंति जं० प० ५, ११२; नाया० ४; ८; १७, भग० ३, १; १५, १;

अवक्रमामि नाया० २; ७;

अवक्रमामो नाया० २;

अवक्रमिजा. वि० आया० १, ७, ६, २२२; २, १, १, १; दस० ६, १, ६;

अवक्रमेजा. वि० भग० १, ४;

अवक्रमित्ता सं० कृ० नाया० २; १६; आया० २, १, १, १, दसा० १०, १, चड० १४,

अवक्रमम सं० कृ० वेय० ४, १५; वव० १, २६;

अवक्रमइत्ता. सं० कृ० नाया० १; ७, ६; १३, भग० २, १; ३, २; ७, ६; ६, ३३; ११, ६;

अवक्रमंतिता. सं० कृ० भग० १५, १;

अवक्रममाण व० कृ० विवा० ६,

अवक्रमण न० (अपक्रमण) नीकण्यु निकलना.

To come out, to go out भग० ६,  
३३, ठा० ७, (२) पाछा हटवु, पाछा सरकवु  
पीछे हटना, पीछे सरकना to retreat,  
to turn back भग० १५, १, पि० नि०  
२११,

अवक्रास पु० (अप्रकाश) अलिमानथी  
अन्ध थवुं ते, मोहनीयकर्मनो ओक भेद  
अभिमान से अन्धा हो जाना, मोहनीय कर्म  
का एक भेद. Being blinded with  
pride, a variety of Mohaniya  
Karma सम० १२, भग० १२, ५,

अवक्रास पु० (अपकर्ष) ऋद्धि आदिनो  
अत्यन्त प्रकाश करवो ते, समृद्धिनु अत्यन्त  
अभिमान राखवु ते ऋद्धि आदि का अत्यन्त  
प्रकट करना, सपत्ति का बहुत ज्यादा ह अवभिमान  
रखना. Trumpeting forth one's  
opulence or prosperity, bound-  
less pride of one's prosperity  
भग० १२, ५,

अवक्रोश पु० (अपक्रोश) भीलनु धसातु भोक्षति  
ते, गिन्दा निन्दा, दूसरे को चुभता हुआ बोलना  
Casting obloquy or censure  
upon others सम० ५२, भग० १२, ५,

✓ अवक्ख धा० I (अप+इच्) अपेक्षा  
राखवी, राखनेवी अपेक्षा रखना, वाट जोहना  
To expect, to wait with eager-  
ness

अवक्खह आ० नाया० ६,

अवक्खार पु० (अवस्कार) विषा, भग  
विषा, मल. Dirt; excrement विशेष  
३४०५,

अवक्खारण न० (अपक्षारण) अपशब्द  
भोक्षवा ते अपशब्द बोलना Speaking  
indecent words परह० १, २;

४२

अवक्खारण न० (अपक्षारण) सानिध्य न  
करवु ते, प्रसन्न न थवुं ते सगति न करना,  
प्रसन्न न होना Not to be associated  
with, not to be pleased with  
परह० १, २;

अवक्खेवण न० (अपक्षेपण) नीये ईकवु  
से, उत्क्षेपणादि पाच कर्म पैडी भीलु कर्म  
नीचे फेंकना, उत्क्षेपणादि पाच कर्मों में से  
दूसरा कर्म Flinging, throwing  
down, the second of the five  
varieties of action viz throwing  
up etc विशेष २४६२,

अवग. न० (अवक) पाण्णीमां उत्पन्न थती  
ओक जलनी वनस्पति पानी में उत्पन्न होने  
वाली एक जाति की वनस्पति A kind of  
aquatic plant. सूय० २, ३, १८,

अवगअय त्रि० (अपगत) भरी गयेलुं, दूर  
थयेलु मर गया हुआ, दूर होगया हुआ Dead;  
removed ओव० ३१, नाया० १, २; राय०  
२२५; भग० ८, ८, उत्त० २८, २०, दस० ७, ५७,  
८, ६४, प्रव० ६६७, कप्प० ४, ६१,—वेय  
त्रि० (—वेद) पुरुषवेद, स्त्रीवेद अने नपुसक  
वेद, ओत्रय वेदथी रहित पुरुषवेद, स्त्रीवेद  
और नपुसक वेद, इन तीनों वेदों से रहित  
having no sex, either, masculine  
feminine or neuter. प्रव० १४३४;  
भग० ८, ८,

अवगअय. त्रि० (अवगत) ज्ञेयुं;  
अवधारणु करेज जाना हुआ, अवधारित.  
Known, understood आया० टी०  
१, १, १, ३,

अवगारिणय त्रि० (अपकर्णित-प्रवर्णित)  
अवगणुना करेज, अनादर करेज अनादर किया  
हुआ Despised; disrespected.  
जीवा० १;

अवगत त्रि० (अपगत) नष्ट थयेज, क्षीण

थमेव नाश को प्राप्त. Destroyed; faded; decayed पंचा० १०, ७६;  
 अवगम पुं० ( अवगम ) विनाश. विनाश  
 Destruction. विशेष० २७६;  
 अवगम. पुं० ( अवगम ) निश्चय. निश्चय.  
 Determination. विशेष० २७६;  
 अवगार. पुं० ( अवकर ) लुओ 'अवकर' शब्द  
 देखो " अवकर " शब्द. Vide 'अवकर'  
 भग० ८, ६;—राशि. पुं० (—राशि )  
 इयर.नो. राशि-दण्डो. दुर्लभ पदार्थों का  
 राशि-ढेर. heap of worthless  
 things. भग० ८, ६;  
 अवगाढ त्रि० ( अवगाढ ) अवगाहीने रहेल;  
 आश्रीने रहेल आश्रय में रहा हुआ,  
 पकड़कर रहा हुआ. Resorting to,  
 dependent upon. नदी० स्व० १२;  
 विशेष० २८२२, भग० १, ६; ओव०  
 अवगारि. त्रि० ( अवकारिन् ) अपकार करने  
 वाला. ( One ) who  
 does an ill turn; ( one ) who  
 injures. पंचा० १४, ३७,  
 अवगास. न० ( अवकाश ) उत्पत्ति स्थान.  
 उत्पत्ति स्थान. Place of origin;  
 source of birth, place of pro-  
 duction. मूय० २, २, १;  
 अवगाह. पु० ( अवगाह ) अवगाहना; क्षेत्र  
 स्पर्शना. अवगाहना, क्षेत्रस्पर्शना. Per-  
 vasion or occupation of space.  
 क० न० ५, ७६;  
 अवगाहणा स्त्री० ( अवगाहना ) शरीरदिनी  
 उच्यते, शरीरदिने आकाशप्रदेशने अवगहीने  
 रहेल छे ते आकाशप्रदेशनु परिभाष्य शरी-  
 रादि की ऊंचाई, आकाश के जितने प्रदेश में  
 गरीगादि गे हुए हैं उतने आकाशप्रदेश का  
 परिमाण The height of a body

etc; the measure of space  
 occupied by a body etc. which  
 remains in it प्रव० ११, भग० २, १;  
 विशेष० ३८१, ( २ ) अरकाश आपवे। ते.  
 अवकाश देना, जगह देना. giving room  
 or space to. भग० १३, ४, ( ३ ) अंद्  
 प्रवेश करवे ते. भोंतर प्रवेश करना. en-  
 trance into विशेष० १०२६;—गुण पुं०  
 (—गुण ) अवकाश आपवाने गुण अवकाश  
 देने का गुण the attribute of giv-  
 ing room or space to टा० ५, ३;  
 भग० २, १०;—लक्षण न० (—लक्षण )  
 अवकाश आपवानुलक्षण छे जेनु ते, आका-  
 शास्तिताय अवकाश देना हा जिसका लक्षण  
 है वह; आकाशास्तिकाय that of which  
 the property is to give room  
 or entrance into viz Ākāśa-  
 stikāya. भग० १३, ४.

अवगाहिया स० कृ० अ० ( अवगाह ) प्रवेश  
 करीने, घेरीने. प्रवेश करके, घुसकरक. Hav-  
 ing entered उत्त० १०, ३३;

अवगाहिक्य स० कृ० अ० ( अवगूह ) उद्दे-  
 शीने; लक्ष्मीने उद्देश करके, लक्ष करके.  
 Alluding to, aiming at. कप्प० ६,  
 ६१;

✓ अवगूह वा० II. ( अवगूह ) उभाऽ  
 उद्देश्य. किताब खोलना. To open the  
 doors.

अवगूह नाग० १६;

अवगूहति. भग० १५, १;

अवगूहता सं० कृ० नाया० १६;

अवगूहतिता सं० कृ० भग० १५, १;

अवगूहंत व० कृ० भग० १५, १;

अवगूह. त्रि० ( अवगूह ) व्याप्त, व्यापितुं. व्याप्त.

Pervading; pervasive नाया० ८;

अवगूहिटं. सं० कृ० अ० ( अवगूह ) आवि-

गन धने आलिगन देका, भेंट करके  
Having embraced सु० च० १०, २६,  
अवचय पु० ( अवचय ) धराडे, ढानि घाटा,  
नुकसान. Decrease, loss. भग०  
११, ११;

अवचिन्न-य त्रि० (अवचित) ध० १; कृश थगे १,  
शेपायेधुं. कृश, घटा हुआ, सूखा हुआ. De-  
creased, weakened; attenuated  
नाया० १, भग० २, १, ११, ११, ओव०  
५३, ( २ ) त्रि० अवप्रदेशरहित, अचित्त.  
जीवप्रदेश रहित, अवरो मर्यादित  
विशे० ८६७ — त्वं न वे शित त्रि० ( -न. स-  
शोणित ) जेना भास अने लेही शेपायेना  
छे ते जिसका मांस और रुधिर सूख गया हो  
वह. ( one ) whose flesh and  
blood have been dried up  
“ तवस्मिन् किस दत्त, अवचिप्रसक्तोऽयम् ”  
उत्त० २५, २२,

✓ अवचिज्ज धा० I ( अप+चि+य ) अपत्यय  
पाभवे, धटी नु घट जाना, कम हो जाना.  
To decrease, to be diminished.  
अवचिज्जइ क० वा० सूय० १, २, ३, १,  
अवचिज्जति. क० वा० भग० २५, २,

अवचुल्ल पु० ( अवचुल्ल ) युधानी पाभेने  
ओगे चूल्हेके पास का आला-ताक A niche  
behind an oven पि० नि० भा० ३४,  
अवचुल्ली स्त्री० ( अवचुल्ली ) लुओ 'अवचुल्ल'  
शब्द देखो 'अवचुल्ल' शब्द Vide 'अवचुल्ल'  
पि० नि० भा० ३४,

अवचूलग न० ( अवचूलक-अवचूलमधोमुखी-  
कृता चूडा यथा भवति तथा कृतमवचूलकम् )  
योऽक्षी नीचे रहे तेरी रीते मस्तक  
नभाउनुं ते इस प्रकार मस्तक नमाना, जिस से  
कि चोटो नोवे हो Bonding down the  
head in such a way that the

tuft of hair on it also becomes  
lowered in the act नादा० १६,  
अवच त्रि० ( अवच ) न डहे ॥ योय;  
अऽथनीय, अर्पणीय. न कहने योग्य;  
अकथनीय Inexpressible; un-  
worthy of being said or spoken.  
विशे० ६१;

अवच्छ न० ( अवच्छ-न पतन्ति यस्मिन्नुत्पत्ते  
दुर्गतो अग्रा पक्षे वा पूर्वजस्तदपत्यम् )  
सतान, पुत्र-पुत्री सन्तान, पुत्र-पुत्री.  
Issue progeny दा० ४, ४; अगुजो०  
१३१, भग० ३, ७, त्रि० ३००७, — नेह  
पुं० ( -स्नेह ) पुत्र, पौत्र आदिने स्नेह पुत्र,  
पौत्र आदि का स्नेह parental affection.  
सु० च० ४, ३१८,

अवच्छेय पु० ( अवच्छेद ) विभाग, भाग,  
अंश विभाग, टुकड़ा, अंश, हिस्सा. A  
part, a portion, a division दा०  
३, ३,

अवजाअ-य. पुं० ( अवजात ) पिता  
इस्ता ओग गुणवागे पुत्र, जेम लग्न  
यक्षवर्तिना पुत्र आदित्यया पिता की  
अपेक्षा कम गुणों वाला पुत्र, जैसे भरत  
चक्रवर्ती का पुत्र आदित्यया A son in-  
ferior in qualities to his father,  
e g Adityayaśā the son  
of Bharata Chakravartī. दा० ४, १,

✓ अवजाण धा० I ( अप+जा ) अपलाप  
इरवे, नाइलुन थनु, वत छुपावरी नामजूर  
करना, बात छिपाना To hide or  
suppress a fact, to deny a fact.  
अवजाणइ सू० १, ४, १, २६,

अवज्ज न० ( अवज ) पाप, निन्द्य कर्म-अनु-  
ष्ठान पाप; निन्द्य कर्म A sinful deed  
or performance. सू० २, २, ६५;



ओष० नि० ६४७;—इयर. त्रि० (-इतर) पापथी सिन्न. पाप से भिन्न. different from, opposed to sin. पंचा० १, २५; —कर. त्रि० (-कर-अवद्यं पापं तत्करण-शीलः) पापी; पाप करनेवाला पापी. sinful; given to sin. “तज्जातिआ इमे कामा वज्जकरा य एवमक्खाए” सूय० १, ४; ३, १६;—भीरु. त्रि० (-भीरु) पाप करनेवाला भीरु. पाप करने में भीरु-डरपोक. timid in the matter of sinfulness; afraid of sin. उत्त० ३४, २८;—विरुद्ध. लो० (-विरुद्ध) अवध्य-पापनी निवृत्ति पाप की निवृत्ति. cessation of sin क० प० ५, २८:

अवज्झ त्रि० (अवध्य) वध करने योग्य नहीं वध न करने के योग्य. Unworthy of being killed नाया० १६,

अवज्झाण न० (अपध्यान) मादु ध्यान, दुष्ट ध्यान, आर्त अने रौद्र ध्यान बुरा ध्यान आर्त और रौद्र ध्यान Evil meditation viz painful and revengeful meditation. ओव० ४०; पंचा० १, २३,

अवज्झाणया. लो० (अपध्यानता) आर्त अने रौद्र ध्यान ध्यातुं ते आर्त और रौद्र ध्यान का करना Act of meditating painfully or revengefully. ज० ३, ३,

अवज्झाय त्रि० (अपध्यात्) दुष्ट चिंतन करनेवाला, दुष्ट ध्यान करनेवाला. दुष्ट-खराब चिन्तन करने वाला. (One) who performs an evil kind of meditation नाया० १४,

अवट्ठमासु व० क० त्रि० (अवर्तमान) न वर्तता न वर्तता हुआ Not present, not existing गन० ३ ३

अवट्ठंभ पु० (अवट्ठम्भ) भिन्न. थाली

वगेरेने टेका आपवे ते. दिवाल, स्तम्भ आदि को जो सहारा दिया जाता है वह. Supporting; leaning upon a wall, a pillar etc. for support. ओव० नि० २६३, ३२३;

अवट्ठंभिय सं० क० अ० (अवट्ठम्भ) अटेलीने; टेका धने टेका देकर. Leaning against, supporting oneself on or against. प्रव० २५२,

अवट्ठावणा लो० (अवस्थापना) महाप्रतनु आरोपण करनेवाला महाव्रत का आरोपण करना. Investing (a disciple) with Mahāvratas i. e. full vows. पंचा० १७, २६;

अवट्ठिअ-य त्रि० (अवस्थित) स्थिर रहेला; पथधट न थाय तेनु स्थिर, न्यूनाधिक न होने वाला. Steady, unchanging; remaining fixed. नाया० ५, ओव० १०, ३४; सम० ३४; प० २०४, सू० प० ८, भग० २, १०; ५, १; ८, ६, ३३; १८, १०; २०, ८, २५, ७; पंचा० १०, १३, जं० प० १, १५, (२) शाश्वत, नाश न पामे ऐवुं. शाश्वत, नित्य. eternal, imperishable. ज० ३, ३; नंदी० ५७, (३) पु० अप्रतिपाति (नेतुं पतन न थाय ते) अवस्थित अवधिज्ञान; यावज्जिव पर्यंत रहे तेनु अवधि ज्ञान. अवस्थित अवधिज्ञान; जीवन पर्यन्त रहने वाला अवधिज्ञान. steady Avadhi-Jñāna supported by proper circumspection and spiritual power. पञ्च० ३३ विशेष० ५७७, (४) प्रथम समये नेटली प्रवृत्ति पाये तेटली नीचे नीचे आदि समये पाये ते अवस्थित अध प्रथम समय में प्रवृत्ति का जितना बंध हो उतना ही बंध दूसरे तीसरे आदि समयों में होता वह अवस्थित बंध.

Karmic bondage uniformly increasing or rising with every Samaya, beginning with the first (Samaya). क० गं० ५, ७६, क० प० ७, ५१, —परिणाम पुं० (—परिणाम) स्थिर परिणाम स्थिर परिणाम. steady thought-activity. भग० २५, ६, —बंध पुं० (—बन्ध) पहेले समये जेठली प्रकृति बाधे तेठली नीले आदि समये बाधे ते, प्रकृतिबंधनो ओक प्रकार पहिले समय में जितनी प्रकृति बाधे उतनी ही दूसरे और तीसरे आदि समय में बांधने वाला, प्रकृतिवध का एक भेद. steady bondage of Karmic matter, i. e. the same amount in every unit of time, a variety of Prakriti-bandha. क० गं० ५, ७६, क० प० ७, ५१, अवट्टि स्त्री० (अवस्थिति) मर्यादा, ७६ सीमा, मर्यादा. Limit, boundary ठा० ३, ४, अवड पुं० (अवट) कुआँ कूप, कुआँ. A well. पिं० निं० १६१, ठा० २, ४, अवडिस पुं० (अवतंस) भूषण. भूषण, गहना. An ornament सू० प० १८, —कूट पुं० (—कूट) मेरुना लक्ष्मण पनना आठ दिग्दक्षिण द्वाभ्यां सातमु द्वा-शिखर मेरु पर्वत के भद्रसाल वन के आठ दिग्दक्षिण कूटों में से सातवाँ कूट. the seventh of the eight Dig-hastī summits of the Bhadrāsāla forest of mount Meru. ज० प० अवडिसअ. पु० (अवतंसक) शिखर. शिखर A summit, a pinnacle जीवा० ३; (२) मेरु पर्वत मेरु पर्वत mount Meru ज० प०

अवडिसग पु० (अवतंसक) मुगट, शिखर मुकुट, शिखर. A diadem, a summit. पण० २, ४, जीवा० ३, ४, अवड पुं० (—अवड—कृकाटिका) श्रीवा- डोडनो पाछो भाग. श्रीवा, गर्दन का पिछला भाग The back part of the neck. भग० १५, १, अवड्ड त्रि० (अपाद्ध—अपगतमर्द्ध यस्य तदपाद्धम्) अर्ध, अर्ध आधा Half ओव० १६; भग० २५, ६, ओघ० नि० भा० ६६; पञ्च० १८, (२) अर्द्ध दिवस. आधा दिन. half of a day. भग० १६, ३; —उमोयरिया स्त्री० (—अवमोदरिका) उमोदरी तपनो ओक भेद, अर्ध जोराड लेवो ते. ऊनोदरी नामक तप का एक भेद; नित्य के भोजन से आधा भोजन करना a variety of Unodari kind of austerity viz taking half the amount of food required वव० ८, १५, भग० ७, १, —खेत्त न० (—क्षेत्र) अर्ध क्षेत्र—पंदर मुहूर्त सुधी चंद्रनी जेठे योग डरनार नक्षत्र अर्ध क्षेत्र अर्थात् पंद्रह मुहूर्त तक चंद्र के साथ योग करने वाला नक्षत्र a constellation which remains in conjunction with the moon for Aidhaksetra i. e. 15 Muhūrtas च० प० १०; ठा० ६, —गोल पुं० (—गोल) अर्ध गोला, गोलाओ अर्ध भाग. आधा गोला, गोले का आधा हिस्सा. half of a globe, hemi-sphere सू० प० ८, —गोलगोल पुं० (—गोलगोल) अर्ध गोलाभा सभाओल नील अनेक गोला. आधे गोले में समाये हुए दूसरे अनेक गोले. several other spheres contained in a hemi-sphere. चं० प० ८; —चंद्रसंठाण. न० (—चन्द्रसंस्थान) अर्ध

चन्द्राकार. हाथीना दंतते। आ३२ अर्धचन्द्रा-  
कार; हाथों के दंत का आकार shape of  
the half-moon; shape of the  
tusk of an elephant. अ० २, ३;  
—अर्धस. पु० (—दिवस) अर्ध दिवस.  
आधा दिन. half a day भग० १६, ३;  
—पुद्गलपरिवर्तन. पुं० ( पुद्गलपरिवर्तन )  
अर्ध पुद्गलपरिवर्तन; पुद्गलपरिवर्तन-  
क्षणविशेष, तेने अर्ध भाग.  
पुद्गल परिवर्तन; अर्थात् कालावधिभागविशेष  
के आध भाग का अर्ध पुद्गलपरिवर्तन कहते हैं.  
half the time required for  
Pudgala change पचा० ३, ३२,  
भग० ८, ६; १२, ६; ज्ञाना० १,

अवण. न० (अवन) गमन करने; गति  
करनी। ते. गमन करना; गति करना. Act of  
going; motion (२) ज्ञानपुं० ते  
जनना. act of knowing नदी०

अवणद्ध. त्रि० (अवनद्ध) बंधे हुए बांधा  
हुआ Bound; fastened. भग० २, १;  
अवणमंत व० कृ० त्रि० (अवनमन्) नीचे नमजुं  
नीचे नमता-नम्र हाता हुआ. Bending  
low. राय०

अवणव. पु० (अवनव) दूर करने, निषेध करने।  
ते. दूर करना, निषेध करना Removal, pro-  
hibition. अ० ८, —वयण. न० (—वचन)  
दोषदर्शक वचन; निन्दा वचन दोषदर्शक वचन,  
निन्दा वचन. words of censure,  
fault-finding speech. प्रव० ६०३;  
अवणयण. न० (अवनयन) निषेध करने, ते,  
दूर करने, निषेध करना; दूर करना.  
Act of removing; act of  
forbidding. विशेष० १८८, १०२८, वि०  
नि० ४०३, पचा० १६, ३४;

अवणि. स्त्री० (अवनि) पृथ्वी पृथ्वी, जमीन  
Earth, land. वि० नि० ६१६;

✓अवणो. धा० I. (अप+नी) दूर करने, निकालना. To  
remove, to drive out.

अवणोह. नाग० ८; पचा० १७, ४;

अवणोह. आ० वि० नि० २२३;

अवणोज्ञा. वि० “एतन्मवणोज्ञा” दस० ६;

अवणीत्तु स० कृ० आ० नि० ४०१;

अवणजंत. व० कृ० विशेष० १२६६;

अवणोय. न० (अपनीत) निन्दास्पद. निन्दा

सूचक Slanderous; scandalous पचा०

११; दस० ६, २, २०; (२) त्रि० दूर करने।

दूर किया हुआ. removed; forbidden.

सु० च० २, ६; —उवणीयवयण न०

(—उपनीतवचन) निन्दा साथे स्तुति संयुक्त

वचन जेम् ‘अ स्त्री रूपमां भराय पणु

आयरणुमां सारी छे. वचनना से. प्रशंसा-

म नो आरमो प्र३२ निन्दा के साथ साथ स्तुति

सूचक वचन, जैसे ‘अमुक स्त्री कुरूप

है परन्तु है सदाचारणी,’ वचन के सोलह भेदों

में से बारहवाँ भेद. an expression

combining praise with cen-

sure; e. g. this woman is not

fair but she is well-behaved.

आमा० २, ४, १, १३२, —चरश्च. त्रि०

(—चरक) क्षय मोक्षप्रद आ० अ० १०५,

अक्ष स्थाने श्री श्री स्थाने राखनामां

आ० १०५, तेनी गवेण्डा करने २, अलिखित

विशेषधारी कहाँ भेजे हुए या एक स्थान से

दूसर स्थान पर रखे हुए की गवेषणा करने

वाला; अभिग्रहविशेष का धारी. (one)

who searches after a thing

transferred from one place to

another, (a person) with a

particular kind of vow. ओव० १६;

अवणोय. न० (अपनीत) दूर करने. Removal. विशेष० ६८२;

अवर्ण. त्रि० ( अवर्ण-त विद्यते वर्णः पञ्च विधः सितादिरस्मेत्यवर्णम् ) वर्णरहित, रंगरहित; अभूर्त द्रव्य. वर्णरहित त्रिना रंग का, अनूर्त द्रव्य. Colourless, having no colour; formless (substance) भग० २, १०; ११, १; २०, ५; ( २ ) निन्दा. निन्दा censure, obloquy त्रि० नि० भा० २७,—कर त्रि० (—कर) अव-गुण्य भोक्षयावाणो; निन्दा करने वाला, निन्दा करने वाला. ( one ) who detracts or censures भग० ६, ३३.—कारअ-य. त्रि० (—कारक) अगुण्य भोक्षनर, अवर्ण्य भोक्षनर. अवर्ण्य कहने वाला ( one ) who detracts or censures भग० १५, १,—वाइ पु० (—वादिन्-अवर्णं वादितुं शीलमस्येत्यवर्णवादी ) अवर्ण्य कहने वाला, निन्दा करने वाला, निन्दक. ( one ) who detracts or censures “ माई अवर्ण्यवाई, किविस्सिय भावण कुण्ह ” उक्त० ३६, २६३; दसा० ४, १०१; प्रव० ६६५०;—वाय. पु० (—वाइ ) अवर्ण्य भोक्षनर; निन्दा करने वाला, निन्दा करना, अवर्ण्यवाद बोलना. detracting, censuring. “ अवर्ण्यवाय च परमुहस्व ” प्रव० ३१७, ६४५;

अवर्णवत् त्रि० ( अवर्णवत् ) निन्दा. निन्दक. ( One ) who detracts or censures. दसा० ६, १८,

अवर्णवन्त. त्रि० ( अवर्णवन्त ) अवर्ण्यवादी भोक्षनर, निन्दा. अवर्ण्यवाद बोलने वाला, निन्दा करने वाला. ( One ) who detracts or censures. सम० ३०;

अवर्ण्य. स्त्री० ( अवर्ण्य ) अपमान; अनिन्द. अपमान, अनिन्द Insult, disrespect ओव० ४१; पंचा० १, ३५, प्रव० ८७२,

अवर्ण्य न० ( अवर्ण्य ) तथाविध अरु-रित जगती स्नान करने से शरीर की चिकनाई दूर करने वाले द्रव्यों के मिश्रित जल से स्नान करना A bath with water mixed with a dirt-removing substance विवा० १; नाया० १३,

अवतट्ट त्रि० ( अवतट्ट ) छोटीने पातलुं करने. छोटा कर पतला किया हुआ Made slender by chopping off the outer parts सूय० १, ५, २, १४,

अवत्त पु० ( अव्यक्त ) आठ वरस की अवस्था का बालक, अपरिणत अवस्था का बालक A boy under eight years of age; a boy of immature age ओव० नि० ४६७,

अवस्तव त्रि० ( अवस्तव्य ) उड्डेवाये अ-नद्वि; अनिर्वचनीय. न कहने योग्य; अनिर्वचनीय. Inexpressible, indescribable; unspeakable दस० ७, ४३; पञ्च० १०; अणुजो० ७४, भग० १०, १०, प्रव० १२१३; क० प० ७, ५२;—बन्ध. पु० (—बन्ध ) अवस्तव्य अन्ध, जे कर्मप्रकृतिने अन्ध तथा पृथी पुन जगताय ते प्रथम समये अवस्तव्य अन्ध उड्डेवा।। जिस कर्मप्रकृति का अवस्तव होने के बाद पुन बंध हो वह प्रथम समय में अवस्तव्य बन्ध कहलाती है that Karmic nature which binds a man again after once freeing him from bondage is at its initial stage called Avaktavya-bandha. क० प० ५, २२,

**अवत्तवग. न०** ( अवक्तव्यक-न कति नाप्य-  
कतीति वक्तुं शक्यते यत्तदवक्तव्यकमेकमि-  
त्यर्थ ) इति डे अइति शब्दधी डहेवा योग्य  
नहि ते; ओइनी संख्या कति अथवा अकति  
( कितने हैं ? या कितने नहीं हैं ? ) शब्द  
के द्वारा न कहने योग्य एक की संख्या.  
The numerical figure one in  
speaking about which we can  
not say " how many ? or how  
many not ? " ठा० ३, १; भग० २०, १०,  
—संचिय. त्रि० (—सञ्चित-अवक्तव्यकेनैकेन  
सञ्चिता.) ओइ समये ओइर उत्पन्न थाय-  
ओइ संख्याधी गणाय तेवा नारकी वगेरे. एक  
समय में एक ही उत्पन्न हो अर्थात् एक ही संख्या  
से गिना जाय ऐसा नारकी आदि Nārakis  
( hell-beings ) etc. that are born  
one at a time or that can be  
counted one at a time ठा० ३, १,  
भग० २०, १०;

**अवत्तव्वा त्ती०** ( अवक्तव्या ) न डहेवा योग्य  
भाषा न कहने योग्य भाषा. Speech  
unworthy of being expressed  
or uttered. " जा य सच्चा अवत्तव्वा "   
दस० ७, २;

**अवत्थ. त्रि०** ( अवस्थ-अवतिष्ठन्तीत्यवस्था )  
रहेनार. रहने वाला ( One ) who  
resides. " तत्तगणविहुमलवणो, बला-  
दथो सासयावत्था " विशेष० १७५६,

**अवत्थग. न०** ( अपार्थक ) पूर्वापरना संभन्ध  
विनाली वध्यरचना; सूत्रतो ओइ दोष.  
पूर्वापर सम्बन्ध रहित वाक्यरचना; सूत्र का एक  
दोष. A fault in the construction  
of a Sūtra, faulty grammatical  
construction of a sentence  
परह० १, २;

**अवत्था. छी०** ( अवस्था ) दशा; स्थिति. दशा,  
स्थिति Condition; state, plight

पंचा० १६, ३६; १८, २६; प्रव० ६६;  
( २ ) छद्मस्थ, डेवणी अने सिद्धपणुं ओ  
त्रणु अवस्था. छद्मस्थ, केवली और सिद्धपना  
यह तीन अवस्थाएं. The three states  
viz that of a Chhadmastha, a  
Kevali and a Siddha. प्रव० ६६,  
—अंतर. न० (—अन्तर ) दशाविशेष दशा  
विशेष. a particular, specified state  
or condition ( २ ) पर्याया-तर-ओइ  
पर्यायमाधी प्लीज पर्यायमां जयुं ते एक  
पर्याय में से दूसरे पर्याय में जाना. passing  
from one modification to  
another. पंचा० १८, २६,—आभरण.  
न० (—आभरण ) अवस्थाने उचित आभरण-  
धरेणुं. अवस्था के योग्य आभूषण—गहना an  
ornament befitting a particular  
condition. ठा० ८, १;—उचिय. त्रि०  
(—उचित ) अवस्थाने उचित, अवस्था योग्य.  
अवस्था के योग्य. befitting a particular  
stage or condition. पंचा० ४, ६,  
—तिग. न० (—त्रिक) छद्मस्थ, डेवणी अने  
सिद्ध ओ त्रणु दशा. छद्मस्थ, केवली और सिद्ध  
ये तीन दशाएं. the three conditions  
viz that of a Chhadmastha, a  
Kevali and a Siddha प्रव० ६६;  
**अवत्थाण. न०** ( अवस्थान ) स्थिति, ओइ  
देहाणु स्थिः रहेवु ते. स्थिति; एक स्थानपर  
स्थिर रहना. Steady residence in  
a place; steady condition. विशेष०  
११०, प्रव० २७५;

**अवत्थिय त्रि०** ( अवस्तृत ) पसारेल; बिछा-  
वेल फैलाया हुआ बिछा हुआ. Spread;  
extended. नाया० ८;

**अवत्थु. न०** ( अवस्तु—न विद्यते वस्त्वनिधे-  
योऽर्थो यत्र तदवस्तु ) निरर्थक; अर्थ  
शून्य. निरर्थक; अर्थ रहित Meaningless,



fruitless; purposeless. परह० १, २;

अवदग्ग. न० ( अवदग्ग ) अन्त; छेडे, पर्यन्त.

अन्त, आखिरी सिरा; पर्यन्त. End. सूय० २, ५, २,

अवदल. त्रि० ( अपदल-अपदलमपसदं द्रव्यं कारणभूतं मृत्तिकादि यस्याऽसावपदलः ) दलदारनखि ते, तक्षलादी विना तह का, नाजुक. Not solid, fragile. ठा० ४, ४,

अवदहण. न० ( अपदहन ) अभुङ्ग प्रकारने। जल किसी प्रकार की डाह A brand or burn of a particular kind. नाया० १३;

अवदात. त्रि० ( अवदात ) निर्मल; शुद्ध, स्वच्छ. निर्मल, साफ़, स्वच्छ Pure, clean, clear. “ संखिंदुणगतवदातसुकं ” सूय० १, ६, १६;

अवदाय. त्रि० ( अवदात ) गौर; सफ़ेद. गोरा; सफ़ेद. White; spotless. परह० १, ४,

✓ अवदाल. धा० II. ( अप+दल् ) विदारणु करवुं, चीरवुं, क्षुब्धवुं. चीरना, फाड़ना, विदारण करना To cut; to tear, to cut into two or more pieces.

अवदालेह. भग० १६, ४,

अवदालिय स० कृ० भग० १३, ६,

अवदालिय त्रि० ( अवदारि-लित ) विकसित, प्रकुक्षित विकसित, फूला हुआ. Opened, budded. जीवा० ३, ३, ओव० १०; नाया० १, उवा० २, ६५,

अवहार. न० ( अपहार ) नानी पारी; छोटी. छोटी खिड़की. A small window, a back-door. “ तेण अवहारेण सो अतिगतो असोगवणियाण ” नाया० २, १४,

✓ अवहाल. धा० II. ( अप+उद्+दल् ) उधा-उं; ओलवुं. उघाड़ना; खोलना To open

अवहालेह. पञ्च० ३६, भग० ६, १०;

अवहालेत्ता सं० कृ० भग० ६, १०,

अवहाहण. न० ( अपदाहन ) लुब्धो ‘अवदहण’ शब्द. देखो ‘अवदहण’ शब्द. Vide ‘अवदहण’. विवा० १;

अवद्धंस. पुं० ( अपध्वंस ) चारित्र तथा तेना इणने नि सार पनावनार लावना, के जे लावनाथी असुरादिभूमां उत्पत्ति थाय ते. चारित्र और उसके फल को नि.सार बनाने वाली भावना, जिससे असुरादि पर्याय में उत्पत्ति होती है. A thought showing right conduct and its fruits as useless, this sort of thought causes a man to be born among demons etc. “ चउव्विहे अवद्धंसे प० तं० आसुरे अभियोगे संमोहे देसकिव्विसे ” ठा० ४, ४;

अवद्धंसि. त्रि० ( अपध्वंसिन् ) ध्वंस करनेवाला; नाश करनेवाला, ध्वंस करने वाला. A destroyer; a killer. “ पच्छा परिणया य मलावद्धंसी ” उक्त० ४, ७,

अवधट्ठ. त्रि० ( अवधट्ठ ) तृप्त थयेल. तृप्त. Satisfied, having enough. नाया० १८;

अवधारियव्व. त्रि० ( अवधारितव्य ) अवधारणु करवुं ते. अवधारण करना. Thinking, considering. पंचा० ३, २५,

अवनमिय सं० कृ० अ० ( अवनम्य ) नीचा थधने, नभीने नम्र-नीचा होकर. Having bent low, bowing down. आया० २, १, ६, ३२,

✓ अवपंगुर. धा० I ( \*अव+अप+गृ ) उभाउ उधाउवा-ओलवा. किवाड़ खोलना To open a door.

अवपगुरे वि० ‘अप्पणा नावपंगुरे’ दस० ५, १, १८;

अवपुट्ट त्रि० ( अवस्पृष्ट ) स्पर्श करेक्ष. स्पर्श किया हुआ. Touched. सु० व० १, ३२,



✓ अवपेक्ष. धा० I (अव + प्र + ईच्) योतश्  
दृष्टिही ज्ञेयुं; तपासयु; निरीक्षण करुं चारों  
ओर देखना; जाच करना, निरीक्षण करना.  
To examine; to investigate.

अवपेक्षह. आ० उक्त० ६, १२;

✓ अवबुज्झ. धा० I (अव + बुज्) ज्ञेयुं;  
समज्जु. जानना, समझना. To know,  
to understand

अवबुज्झति विशेष० १६७;

अवबुज्झसि उक्त० १८, १३;

अवबोध पु० (अवबोध) स्मृति; स्मरण.  
स्मृति, याद, स्मरण. Recollection;  
remembrance. आया० टी०  
१, १, १;

अवभास. पु० (अवभास) दृष्टाव दिखाव, दृश्य.  
Show, manifestation, appear-  
ance. जीवा० ३, १, (२) तेज अने ज्ञानते  
प्रकाश तेज और ज्ञान का प्रकाश. lustre  
of knowledge and power.  
जीवा० ३, १;

अवभासय. त्रि० (अवभासक) ज्ञेयुनाः;  
यर्थः ॥ २ वलास करुनाः जानने वाला,  
पदार्थों का ज्ञान करने वाला. (One) who  
knows or understands. विशेष० ३१७.

अवम त्रि० (अवम) हीन, ओष्ठ हीन,  
हलका. Less आया० २, १, ३, १७,

अवमरण. धा० II. (अव + मन्) अपमान  
करुं, अनादर करुं, तिरस्कार करुं  
अपमान करना; तिरस्कार करना. To insult,  
to disregard.

अवमरणेति सूय० २, २, १७;

अवमरणति भग० ३, १, नाया० ध०

अवमरणह. आ० उक्त० १२, ३६; भग० ५, ४;

१२, १;

अवमाणिता. स० कृ० अ० ३, १;

अवमाणिता. सं० कृ० भग० ५, ६,

अवमरणत. व० कृ० सूय० १, २, ४, ७;  
२, ४, ७;

अवमह. पु० (अपमर्द) मसणु-मर्दन  
करुं ते. मलना, मर्दन करना. Act of rub-  
bing "अवमहं अप्पणो परस्स य करेति"  
परह० १, २,

अवमारा. न० (अपमान) अपमान, अनादर;  
तिरस्कार अपमान; तिरस्कार. Insult,  
disregard भग० ३, २; राय० २६४;  
ओव० २१;

अवमाण. न० (अवमान) अपमान—हाथ,  
गज, फुट वगैरेथी वस्तुने भरपी ते,  
अपविशेष. अवमान—हाथ, गज, फुट  
वगैरह से वस्तुविशेष का माप करना.  
Measurement of a thing  
by the hand, by a yard etc, a  
kind of measurement. अ० ४,  
१; अणुजो० १३२, (२) माननीय  
पुरुषने तुकारे ओझावु ते; अपमान  
करुं ते. मान्य पुरुष को तू तहाक से  
बुलाना, अपमान करना. insulting;  
showing disrespect to a worthy  
person. परह० २, ५; ओव० २१;

अवमाणिय-य त्रि० (अपमानित) अप-  
मान पायेला. अपमानित. Insulted. सु०  
च० १२, ५; पि० नि० ४६५; भग० ३, २;  
११, ११, ओव० नि० ५२८;

अवमार. पु० (अपस्मार-अपस्मर्यते पूर्ववृत्तं वि-  
स्मर्यतेऽनेन यपस्मार) रोगविशेष; जेभां  
पूर्वनी दुष्टीकृतनुं विस्मरण थछ जय ओवी  
जानतो ओष्ठ रोग, प.छ, भृगी, हिस्टेरीया एक  
रोगविशेष, जिसमें पूर्व की स्मृति नष्ट हो जाय  
वह रोग, मृगा A disease such as  
hysteria, epilepsy etc. in which  
a person becomes unconscious

of his former condition आया० १,  
६, १, १७२;

अवमारिय. त्रि० ( अपस्मारित—अपस्मार  
संजातो यस्येति ) अपस्माररोगवाणे;  
वाध-भृगी रोगवाणे। अपस्मार-भृगी रोग  
वाला। Suffering from epilepsy  
etc. आया० १, ६, १, १७२;

अवय. न० ( अवक ) ओ३ साधारण वनस्पति,  
सेवाण. एक साधारण वनस्पति; सिवार. A  
kind of vegetation, moss. पञ्च० १,  
अवय न० ( अम्बज ) कमल. A lotus.  
पञ्च० १,

✓ अवयक्ख. धा० I ( अप+ईच् ) अपेक्षा  
राप्ती, आकांक्षा करवी अपेक्षा रखना,  
आकाक्षा रखना To expect; to  
desire (२) जेवुं, आगणपाछण निरी-  
क्षण करवुं. देखना, आगे पीछे निरीक्षण  
करना to observe.

अवयक्खइ नाया० ६;

अवयक्खति नाया० ६,

अवयक्खसि. नाया० ६,

अवयक्खमाण. व० कृ० भग० १०, १,

अवयक्खत. व० कृ० नाया० ६, ओष० नि०  
भा० १८८,

अवयग्ग पुं० ( \*अवदग्र-पर्यन्त ) अन्त, छेडे,  
पर्यन्त अन्त, आखिरी End, limit ठा०  
२, १, भग० १, १,

अवयण. न० ( अवचन ) नि-द्य वचन, अयोग्य  
वचन नि-द्य वचन, अयोग्य वचन Im-  
proper speech, censurable  
speech. वेय० ६, १, ठा० ३, ३;

अवयमाण व० कृ० त्रि० ( अवदत् ) जुहु न भो-  
लो, भोटुं न भोलतो झूठ न बोलता हुआ Not  
telling a lie. आया० १, ५, २, १४६,

✓ अवयर. धा० I. ( अप+कृ ) अपहर  
करवे; अपमान करवुं. अपकार करना,

अपमान करना To injure, to insult.

अवयरइ सम० ४०,

अवयरण न० ( अवतरण ) उतरवुं; नीचे  
आवुं. नीचे उतरना. Act of descend-  
ing, coming down प्रव० ८६२,

अवयरिल त्रि० ( अपकर्ष ) थोडुं. थोड़ा.  
Small, little. विशेष० १५०३,

अवयव. पुं० ( अवयव ) अवयव, अवयविनो  
ओ३ विभाग. अवयव, अवयवी का एक  
विभाग. A limb, a part of a body.  
अणुजा० १३१, विशेष० २८, प्रव० १५११,  
क० ग० १, ४८,—फरिस पुं० ( -स्पर्श )  
अवयव-ओ३ देशनो स्पर्श एक देश का छूना  
touch or contact of a part. “जस्स  
वरसासणावयवफरिसविकसिवविमलसद्धकिर-  
णा ” क० प० ७, ५७,

अवयवि त्रि० ( अवयविन् ) अवयववाणुं, जेना  
भाग पडी शे ओवुं अवयवों वाला; जिसके  
भाग हो सकें वह. Having limbs or  
parts; divisible into parts or  
limbs. ठा० १, १, सम०

अवयार पु० ( अपकार ) अपहर. अपकार.  
Damage; hurt, injury विशेष०  
३२६८,

अवयार पु० ( अवतार ) समावेश, अन्तर्भाव.  
समावेश, अन्तर्भाव Inclusion, state  
of being included प्रव० ६६६,

\*अवयास त्रि० ( मत्त ) गाडे पागल  
Mad पिं० नि० ५८१,

अवयास न० ( अवकाश-आलिङ्गन )  
आलिङ्गन, भेटवुं ते आलिङ्गन, भेट करना  
Embrace. ओष० नि० भा० २४४,

अवयासाविय त्रि० ( अवकाशित-आश्ले-  
षित ) आलिङ्गन आपेक्ष आलिङ्गन किया  
हुआ. Embraced. विवा० १, ४,

अवयासेऊण. सं० कृ० अ० ( \* अवकाश-  
आलिङ्ग्य ) आलिङ्गन दधने. आलिङ्गन देकर.  
Having embraced. तंडु०

अवर. त्रि० ( अपर ) अन्य; भी०। अन्य;  
दूसरा. Another; other. पि० नि०  
२१५; ४१५; नाया० १; भग० ३, ७; सू०  
प० १८; प्रव० ५२७; विशेष० ३४६; चं० प० ३;  
(२) पडीनुं; पाछणीनुं. पीछे का; आखिर का.  
following; next. सूय० २, ६, २; (३)  
पश्चिम दिशा. पश्चिम दिशा. the west;  
the western direction. सम० १४;  
(४) पर नहि ते, पोते. जो दूसरा न हो  
वह; स्वयं, खुद. self. विशेष० ३३५२;  
—उत्तर पुं० (—उत्तर) उत्तर अने पश्चिम  
दिशा वय्येने प्रदेश, वायव्य प्रदेश. उत्तर और  
पश्चिम दिशा के बीच का प्रदेश, वायव्य प्रदेश.  
the region between the north  
and the west; the north-west.  
राय० ६४, जं० प० ४, ७३, ५, ११६; —उत्तरा.  
स्त्री० (—उत्तरा) वायव्य भुजो, पश्चिम अने  
उत्तर वय्येनी विदिशा. वायव्य कोण, पश्चिम  
और उत्तर के बीच की विदिशा. the  
north-west. प्रव० ६६०, —रह. पुं०  
(—अह) दिवसने पाछले भाग. दिन का  
पिछला पहर—पिछला हिस्सा the latter  
part of the day. “पुन्वावररह-  
कालसमयंसि” निसी० १६, ७; ८; ठा०  
४, २; अणुजो० २५, पि० नि० २२५;  
प्रव० ५६८, —दक्खिणा स्त्री० (—दक्षिणा)  
नैऋत्य भुजो, पश्चिम अने दक्षिण वय्येनी  
विदिशा. नैऋत्य कोण. the inter-  
mediate point of the compass  
called the south-west. प्रव०  
७६०; —दारिय न० (—द्वारिक) पश्चिम  
तरफ रही अरुनी साथे जोग जेउना

नक्षत्रो. पश्चिम की ओर रहकर चंद्र के साथ  
संयोग करने वाला नक्षत्र. constellations  
causing a conjunction with the  
moon, remaining in her west.  
“ पुस्साइयाणं सत्त णक्खत्ता अवरदारिया  
पण्णत्ता, तंजहा—पुस्सा असिलेसा मघा पुग्वा  
फग्गुणी उत्तरफग्गुणी हत्थो चित्ता ” ठा० ४,  
४; —दाहिण. पुं० (—दक्षिण) पश्चिम अने  
दक्षिण वय्येने प्रदेश; नैऋत्य भुजो. पश्चिम  
और दक्षिण के बीच का प्रदेश; नैऋत्य कोन.  
the region between the west  
and the south i. e. the south-  
west. पंचा० २, १६; —पओगज. त्रि०  
(—प्रयोगज) स्वाभाविक; भी०। प्रयोग-  
व्यापारथी उत्पन्न थयेल नहि. स्वाभाविक;  
प्राकृतिक; अकृत्रिम. natural, naturally  
produced. विशेष० ३३५२; —मम्मवे-  
हित्त न० (—मर्मवेधित्व) भी०। मर्म  
विधाय नहि अयेवुं भोलेवुं ते, सत्य वचनने  
२० भो अतिशय. मर्मभेदी वचन न बोलना;  
सत्य वचन का २० वॉ अतिशय inoffen-  
sive speech, speech not wound-  
ing the feelings of others, the  
twentieth Atisaya of truth-  
ful speech. सम० ३५; —मय. त्रि०  
(—मत) भी०। मत. दूसरे का मत.  
another's opinion or judg-  
ment. विशेष० ६८४, —राय. पुं० (—रात्र)  
पाछली रात. पिछली रात. the latter  
part of a night. ‘पुन्वावररायं जयमाणे’  
आया० १, ५, ३, १५३;

अवरकंका. स्त्री० ( अपरकंका ) धातडी अ-  
उना भरतक्षेत्रनी पदमेत्तर राजनी राज-  
धानी, जयां द्रौपदीनुं हरण थयुं लवुं. राता  
धर्म इथाना १६ भा अध्ययनमा तेना विस्तार  
छे. धातकी खंडान्तर्गत भरतक्षेत्र के पश्चोत्तर

राजा की राजधानी, जहाँ द्रौपदी का हरण हुआ था. ( इस का वर्णन शाता धर्म कथा के १६वें अध्याय में है ) The capital of the Padmottara king of the Bharata-kṣetra of the Dhātakikhan-da where Draupadī was kidnapped. This is described in the 16th chapter of Jñātādharma-kathā सम० १६, नाया० १५;

अवरच्छ. न० ( अपरोक्ष-अविद्यमानानि परेषामस्त्रीणि द्रष्टव्यतया यत्र तदपरोक्षम् ) असमक्ष चोरी करनी ते, चोरीनुं त्रीशमं नाम. गैर मौजूदगी में चोरी करना, चोरी का तीसवाँ नाम. The thirtieth kind of theft; stealing in the presence of the owner or others when inattentive. परह० १, ३;

✓ अवरज्झ धा० I. ( अप+राध् ) अपराध करने, अपराधी बनना. To offend, to commit a crime ( २ ) नाश पाना. नाश पाना. to be destroyed; to be ruined

अवरज्झ-ति. विवा० २, नाया० २, राय०

२६६, उत्त० ७, २५, ३२,

२५, सूय० १, १, ३, ११,

१, ३, ३, १३,

अवरज्झन्ति. नाया० २,

अवरण. न० ( अवरण्य ) शाकविशेष शाकविशेष A kind of vegetable. ज० प०

अवरत्त. पुं० ( अपररात्र ) रात्रीने पाछले भाग; पाछली रात रात्रि का पिछला भाग, पिछली रात. The latter part of a night. “पुन्नावरत्तकालसमयांसि ” विवा० १, ६,—कालसमय. पुं० (—कालसमय ) पाछली रातने काण-वपत्त. पिछली रात का

समय. time after midnight. कप्प० ६, १५०,

अवरद्ध. न० ( अपराद्ध ) अपराध करने, अपराध करने, दूसरे को कष्ट पहुँचाना. Act of offending others. वव० १, ३७, विवा० ४; सु० च० १, ८१; ( २ ) विनाश करे. विनाश किया हुआ destroyed; ruined. नाया० १,

अवरद्धिय पुं० ( अपराद्धिक-अपराधनं अपराद्धं पीडाजनकतया तदस्यास्तीत्यपराद्धिको लूता-विस्फोट सर्पादिदंशो वा ) सर्पदंश सर्पदंश. Snake-bite ( २ ) लूता रोगने झेला. लूता रोग का फोड़ा. an insectbite. पिं० नि० भा० १४,

अवरद्धिगा. स्त्री० ( अपराद्धिका ) असनी झेला खजली की फुन्सी A tumour of itches ओघ० नि० ३४१;

अवरविदेह. पुं० ( अपरविदेह ) पश्चिम महाविदेह-मेरुथी पश्चिम तरफने महाविदेह क्षेत्रने अधो भाग पश्चिम महाविदेह-मेरु से पश्चिम की ओर के महाविदेहक्षेत्र का आधा भाग. The western Mahāvideha, the half of Mahāvideha in the west of Meru mount. ‘दो अवरविदेहाई’ ठा० २, ३, अणुजो० १३४; पञ्च० १६, ज० प० जीवा० १,—कूड न० (—कूट) निपध पर्वतनुं आठमं तथा नीलवंत पर्वतनुं सातमं शिखर. निपध पर्वत का आठवाँ और नीलवंत पर्वत का सातवाँ शिखर. the eighth summit of Niṣadha mount and the seventh summit of Nilavanta mountain. ज० प० —वास्त. पुं० (—वर्ष) ऋग्यो “अवरविदेह” शब्द. देखो ‘अवरविदेह’ शब्द vide ‘अवरविदेह.’ नाया० ८,

अवरविदेहअ. त्रि० (अपरविदेहक) पश्चिम महाविदेह क्षेत्रमां लन्भेल पश्चिम महा-विदेह क्षेत्र मे जन्मा हुआ. Born in the western Mahāvideha region अणुजो० १३१;

अवरा. स्त्री० (अपरा) नलिना विजयनी मुख्य नगरी. नलिना विजय की मुख्य नगरी. The chief city of Nalinā Vijaya ठा० २, ३; (२) पश्चिम दिशा. पश्चिम दिशा. the west प्रव० ७६०;

अवराइआ. स्त्री० (अपराजिता) पश्चिम महाविदेहना दक्षिण भागानी पांचवी वप्रा विजयनी मुख्य राजधानी. पश्चिम महाविदेह के दक्षिण भाग की पांचवी वप्रा विजय की मुख्य राजधानी. The capital of the fifth Vapra Vijaya of the southern part of western Mahāvideha ज० ५०

अवराजिया. स्त्री० (अपराजिता) शष्प विजयनी मुख्य नगरी शंख विजय की मुख्य नगरी The capital of Śaṅkha-Vijaya. ठा० २, ३;

अवराह. पुं० न० (अपराध) अपराध; गुन्हा; दुष्ट; लूट. अपराध, गुनाह, मूल. Fault, offence. 'अवराहसहस्सधरणीओ' तंडु० नाया० ६; दस० ६, २, १८, सु० च० ४, १२४; वव० १, ३७, दस्ता० ६, ४, पिं० नि० १२७, प्रव० ७३६, पंचा० १५, १७; (२) अतिचार; व्रत लांगवानी डोशीश अतिचार; व्रत मंग करने का प्रयत्न. an attempt to violate a vow. पंचा० १६, १४,—खामणा. स्त्री० (—क्षमापना) अपराधनी क्षमा मांगनी ते. अपराध की क्षमा मांगना. asking pardon for a sin or a fault प्रव० ६६;—पय. न० (—पद) धृष्टि धपाय आदि-भोक्ष भार्गने रोडनार. इन्द्रियविषयक कपाय आदि; मोक्ष

को रोकने वाला. an obstacle in the path of salvation; e. g. passion etc. भक्त० ४६;—वण. पुं० (—वण) अपराधरूपी वण-धा. अपराधरूपी वण. a wound or a scar in the form of a sin. पंचा० १५, ४०;—सल्ल. त्रि० (—शल्ल) अतिचाररूप शल्ल. अतिचार रूप शल्ल. a fault rankling in the heart like a thorn. पंचा० १६, १४,—सल्लप्पभव. त्रि० (—शल्ल-प्रभव) सचित पृथ्वीना संसर्गरूप अतिचार-भूत शल्लयथी उत्पन्न थयेल. सचित पृथ्वी का संसर्ग रूपी जो अतिचार उससे उत्पन्न. born of, arising from Atichāra (partial violation) incurred by touching animate earth i. e. earth-bodied sentient being. पंचा० १६, १४,

अवराहि. त्रि० (अपराधिन्) गुन्हेगार, अपराधी अपराधी Guilty, criminal. राय० २४७,

अवरिल्ल. त्रि० (अपरत्य) पश्चिम तरङ्ग. पश्चिम की ओर का Western. "अवर-वणसड" नाया० ६;

अवरुद्. पु० (अपरुद्) नारकीना हाथपग लाग-नार परमाधामी. नारकी के हाथ पैरों को तोड़ने वाला परमाधामी. One who breaks off the hands and feet of Nārakīs; the Paramādhāmī सम० १५;

अवरोप्पर. न० (परस्पर-प्राकृतत्वादादि रकार.) अन्योन्य. अन्योन्य. Mutual. विशेष० २५१; पिं० नि० २३४;

अवरोह. पुं० (अवरोध) अन्त-पुर. अन्त पुर; जनान खाना A harem सु० च० ३, ४०३, (२) आवरण आवरण; अटकाव absence of obstruction. विशेष० १०३;



✓ अवलंब धा० I ( अव+लम्ब ) आश्रय  
करवे; अवलंबन करे. आश्रय करना अवल-  
म्बन करना To lean upon, to resort  
to.

अवलंबियाण सं० कृ० आया० १, ६, १, २२,

अवलंबिअ-य. सं० कृ० आया० २, १, ६,  
३२; सु० च० ४, २३२;

अवलंबिऊ. भक्त० १६३,

अवलंबित हे० कृ० दसा० ७, १,

अवलंबमाण व० कृ० ठा० ५, २,

अवलंब. त्रि० ( अवलम्ब ) पगुड्या अने माथुं  
नियुं करी लटकनार. पाँव ऊँचे ओर सिर नीचे  
करके लटकने वाला. (One) in a topsy-  
turvy posture of the body,  
one suspending him-self head  
over heels. ओव०

अवलंबण. न० ( अवलम्बन ) वस्तुना सामान्य  
तथा विशेष अशेनो अवग्रह वस्तु के सामान्य  
तथा विशय अश-भाग का अवग्रह-अवलम्बन  
Grasping the general and  
particular parts of a thing नदी०  
३०; ( २ ) आश्रय, आधार; टेका आश्रय;  
आधार, टेका support जीवा० ३, ४, ज०  
प० १, निसी० १, १२, ( ३ ) ओटलो. ओटला.  
a verandah. ( ४ ) मस्तक नमावुं  
ते. मस्तक नमाना, सिर झुकाना act of  
lowering the head. ठा० ५, २,  
—बाहा स्त्री० ( \*बाहु ) डोडो, डोरे  
कठहरा A railing. ज० प०

अवलंबणया स्त्री० ( अवलम्बनता ) अवग्रह;  
मतिज्ञाननो ओक भेद, अवग्रह; मतिज्ञान का  
एक भेद. A variety of Matijñāna;  
perception, apprehension of an  
object Here the state of mind

is such that it has a vague idea  
of an object. नदी० ३०;

अवलंबिअ-य. त्रि० ( अवलम्बित ) निरंतर;  
हमेशा. निरन्तर, हमेशा, सदा. Always,  
eternally नाया० १, ( २ ) त्रि० अव-  
लंबन करे. अवलम्बन किया हुआ. 10-  
sorted ( to ). दस० ५, २, ६;

अवलम्ब. त्रि० ( अपलब्ध ) अपमानपूर्वक;  
भजेतु अपमानपूर्वक मिला हुआ Obtained  
with insult. "परघरपवेसे लब्धवलब्ध"   
अत० ५, भग० १, ६;

अवलंबिजंत व० कृ० त्रि० ( अपलपत्र ) अडतो;  
अडतो बकता हुआ, बड़बड़ाता हुआ.  
Prattling; talking nonsense सु०  
च० ५, ६०;

अवलंब पु० ( अवलम्ब ) ओक देशनु नाम.  
एक देश का नाम. Name of a  
country ठा० २, ४;

अवलंबित. त्रि० ( अवलंबित ) व्याप्त. व्याप्त.  
Pervaded by सूय० १, १३, १४;

✓ अवलिप्प. धा० I ( अव+लिप्+क०+त्ता० )  
लेपावुं, भरपावु. लेप का किया जाना To  
be smeared, to be bespattered.  
अवलिप्पइ क० वा० उत्त० २५, २६; भग०  
६, ३३;

अवलिय त्रि० ( अवलित ) नहि वणेधुं, धडी  
पाडेन नहि, वाणेन नहि विना मुड़ा हुआ,  
न झुकाया हुआ. Not folded, not  
bent उत्त० २६, २५;

अवलुय. न० ( \*अवलुक-नौकादण्ड ) हलेशा  
विशेष, नावाने यत्तावतानुं ओक उपकरण. एक  
प्रकार का वांस, नाव चलाने का एक उपकरण.  
A kind of oar. आया० २, ३, १, ११६;



**अवलेहणिया** स्त्री० (\*अवलेखनिका-वंशत्वग्) वांसनी उपरी छाल-छोछ। वांस के उपर की छाल। The outer bark of a bamboo. ठा० ४, २; निसी० २, २६;

**अवलेहिया** स्त्री० (अवलेहिका) आटणु. अवलेह, चटनी. Semi-fluid medicine to be licked. प्रव० २२८;

**अवलेही** स्त्री० (\*अवलेहिका-वंशवल्कल) वांसनी छोछ वास के ऊपर की छाल, जो वास पर पत्ती के आकार में होती है। The outer bark of a bamboo tree. क० गं० १, २०;

**अवलोक्यमाण** व० कृ० त्रि० (अवलोकयत्) अवलोकन करतो. अवलोकन करता हुआ Observing; inspecting. नाया० १, १६; भग० १०, १,

**अवलोच** पुं० (अवलोप) वस्तुना सहभावने छुपावणे ते; असत्यजुं त्रीशमुं नाम. वस्तु के सद्भाव को छिपाना, असत्य का तीसवाँ नाम. Concealing the real nature of a thing; the thirtieth variety of untruth. परह० १, २;

**अवव** न० (\*अवव-अवयव) ८४ लाख अवयंग प्रमाण कालविशेष. ८४ लाख अवयंग प्रमाण कालविशेष A period of time, measuring eighty-four lacs of Avavangas. ठा० २, ४; भग० ५, १; २५, ५; अणुजो० ११५, जीवा० ३;

**अववंग** न० (\*अववाङ्ग-अवयवाङ्ग) ८४ लाख अवट्ट प्रमाण कालविशेष. ८४ लाख अवट्ट प्रमाण कालविशेष. A period of time measuring eighty-four lacs of Aatas. जीवा० ३; ठा० २, ४; भग० ५, १; २५, ५; अणुजो० ११५;

**अववका** स्त्री० (अवपाक्या) तपी; तवे, तवा A pan; a metal or earthen vessel to bake bread. भग० ११, ११;

**अववट्टणा** स्त्री० (अपवर्तना-अपवर्त्यते ह्रस्वी-क्रियते स्थित्यादि यया सा) ने अध्यवसायथी कर्मनी दीर्घ स्थिति अने तीव्र रसमां धटाडो करवामां आवे-स्थितिधात या रसधात कराय ते अध्यवसायविशेष. जिस प्रयत्न से कर्म की दीर्घ स्थिति और तीव्र रस में कमी की जा सके वह प्रयत्नविशेष. Thought activity lessening the duration, and intensity of Karma. क० प० १, २;

**अववरोविता** स्त्री० (\*अव्यवरोपिता-अव्यवरोपण) व्यपरोप-नाशने अभाव; अविनाशनाश का अभाव. Non-destruction- eternal existence. " जिह्मामयाओ सोवक्खाओ अववरोविता भवइ " ठा० ६५,

**अववाअ** पुं० (अवपात) आगमन; आवतुं ते. आगमन; आना Act of coming; arrival. " साहूणमणुवाओ किरियाणसो उ अववाए " पंचा० ७, ११;

**अववाय** पुं० (अपवाद) भीमजुं अराअ भोलजुं ते; नि-दा. निन्दा, खराब बोलना. A censure; scandal. परह० २, २; पंचा० ५, १६;

**अवविह** पुं० (अवविध) गोशालानो ओक. श्रावड-उपासक गोशाला (एक मतप्रवर्तक) का एक श्रावक-अनुयायी. A follower of Gosālā. भग० ८, ५;

**अवस** त्रि० (अवश) परवश, परतंत्र; कर्मवश; अस्वतंत्र. परवश; कर्मवश, पराधीन. Dependent; not free; under the controlling influence of Karma. भग० ३, २; नाया० ६; सूय० १, ३, १, १७; उत्त० ७, १०; १३, २४

अवसोहिय. त्रि० ( अवशोभित ) शोभतुं; शोभनीक. सुशोभित. Beautiful, charming. नाया० १;

अवसस. न० ( अवश्य ) अवश्य; नञ्ङी; ७२२, निश्चे अवश्य, जरूर, निश्चय. Certain, unavoidable अखुजो० २८; नाया० १, भग० ६, ३३, पि० नि० ३५२;—कायव्व त्रि० (—कर्त्तव्य ) अवश्य करवा योग्य. अवश्य करने योग्य. necessarily to be done गच्छा० १२;—विप्पजहिय त्रि० (—विप्रहेय ) अवश्य त्यागवा योग्य. अवश्य त्यागने योग्य. necessarily to be given up or abandoned नाया० १८;

अवस्सय पुं० ( अवश्रय—अवश्रावण ) ओहिगणु—आलंघन आपवानुं साधन अवलम्बन—सहारा देने का साधन A means to lean upon; a support वेय० ५, ३२,

अवहदहु सं० कृ० अ० ( अपहृत्य ) अपहरीने; हूर करीने, छोड़ी देने, अगुं मुग्रीने. हूर करके; अलग करके, छोड़ करके. Having abandoned; having removed. सूय० १, ४, १, १७, ओष० नि० भा० १७२, ओव० १२; ३२, भग० १, ६;

अवहदुलेस्स त्रि० ( अवहृत्यलेश्य—अपहत-लेश्य ) लेखु लेश्या हूर करी छे ते. जिसने लेश्याओंका नाश किया हो वह. One who has removed thought-tint. दसा० ५, ३०;

अवहदुसंजम. पुं० ( अपहृत्यसंयम—अपहत-संयम ) उच्यारादि अविधिमे परव्यायी लागतो असंयम; असंयमना १७ प्रकारभां-ने ओड. मल नूत्रादि अविधिसे जालने से होने वाला असंयम, असंयमके १० प्रकारोंमें से एक प्रकार A sin arising from laying

down excreta etc. in improper ways; one of the seventeen kinds of Asamyama or lack of asceticism. सम० १७,

अवहड. त्रि० ( अपहृत ) लहने पीने भुकेल. लेकर दूसरी जगह रखा हुआ. Carried to another place “वालगं अवहाय अवहडे विसुद्धे ” भग० ६, ७,

अवहत्थिअ त्रि० ( अपहस्तित ) हाथ पक-डीने पहार डाटी भुकेल हाथ पकड़कर बाहिर किया हुआ. Pushed out by holding the hand; turned out by holding the hand नदी०

✓ अवहर धा० I. ( अप+हृ ) डरवु, डरवुं डरवुं; येरवुं. हरण करना, चुराना. To remove, to take away; to steal. ( २ ) स्वीकार डरवो. स्वीकार करना. to accept.

अवहरइ. सु० च० १५, ५४; नाया० १६; १८; दसा० ६, १६; भग० १०, ३; निसी० १०, १०;

अवहरि—रे—जा. वि० भग० ५, ६; ८, ७;

अवहरिसु. भू० ठा० १०;

अवहरिमाण. व० कृ० भग० ३५, १;

अवहरिअ त्रि० ( अपहृत ) अपहार करेले; लह लीयेले. चुराया हुआ या छीना हुआ Taken away; removed; robbed. प्रव० ६१, नाया० २; १८;

✓ अवहस धा० I. ( अप+हृ ) डसवुं; डसवुं डरवुं हसना. To laugh,

अवहसइ ठा० ५, १; नाया० १८,

अवहसिय स० कृ० नाया० ८;

अवहाण न० ( अवधान ) साक्षात् अर्थनुं पणि—छेदन—ज्ञान. वास्तविक अर्थ का बोध. Knowledge of the actual or true meaning. विशे० ८२;

अवहाय सं० कृ० अ० (अपहाय) तञ्जने,  
छोड़ करके, त्याग करके. Having  
abandoned. भग० ६, ७; १३, ६, १५,  
१; जं० प० २, १८,

अवहाय. सं० कृ० अ० (अपहृत्य) अपहृत्य  
क्षरीने, उपाड़ी लधने. अपहरण करके, चुरा  
करके Having carried away;  
having taken away अणुजो० १३६,

अवहार. पुं० (अपहार) गर्भंजुं अपहृत्य  
करुते. गर्भ का अपहरण करना. Act of  
removing an embryo by caus-  
ing miscarriage etc. भग०  
१८, ४, २१, १; २३, १; ३१, १, ३५ १,  
४१, १; प्रव० १०४०, (२) थोरी, डरुण  
चोरी, हरण theft परह० १, ३, (४)  
जलचर प्राणीविशेष. एक प्रकार का जलचर  
प्राणी. a kind of aquatic animal  
परह० १, २,

अवधारण न० (अवधारण) अवधारण  
करुते, निश्चय करुते ते निश्चय करना.  
Deciding, determining. विशेष  
२५६, ६८७,

अवहारवं. त्रि० (अवधारवत्) अवधारण  
वाणो; निश्चयवान् निश्चयवान्, दृढ (One)  
who has made a determina-  
tion or decision, determined.  
श० १०,

अवहि पु० (अवधि-अव-अधो विस्तृतं वस्तु  
धीयते परिच्छिद्यतेऽनेनेत्यवधि, यद्वा  
अवधिर्मर्यादा स्तरेष्वेव वस्तुषु द्रव्येषु  
परिच्छेदकतया प्रवृत्तिरूपतया तदुपलक्षित  
मानमप्यवधि) अवधिशान; पाच ज्ञानमांजुं  
त्रींशु ज्ञान. अवधि ज्ञान; पाच ज्ञानों में से  
तीसरा ज्ञान. The third of the five  
kinds of knowledge; visual  
knowledge. क० ग० ४, १४, पञ्च० २८;

(२) मर्यादा. मर्यादा, हद्द. limit सु०  
च० ३, ५५,

अवहित्र त्रि० (अवष्टित) नियमित, थोड़ा  
कराये. नियमित, निश्चित किया हुआ.  
Settled, fixed विशेष० २६३२;

अवहित्र त्रि० (अव्यथित) नेतुं मन दीन  
नथी ते जिसका मन दीन न हो वह Of  
unafflicted mind दस० ८, २७,

अवहित्र त्रि० (अवहृत) आकर्षित;  
भेयाये. आकर्षित, खींचा हुआ Drawn;  
attracted उत्त० ३२, ८६, (२) अपहार  
करेन, लध लीये. चुराया हुआ या छीना  
हुआ taken away, removed;  
robbed प्रव० १०३७, नाया० १६,

अवहिठ नं० (अवहिठ-अवहृष्ट) मैथुन,  
स्त्रीपुरुषसमागम मैथुन, स्त्रीपुरुषसमागम  
सूय० १, ६, १०; Sexual intercourse.

\*अवहित्त. हे० कृ० अ० (चालयितुम्)  
यत्नायवाने. चलाने को In order to  
cause to move. नाया० १७,

अवहिय त्रि० (अवहित) डहेल कहा हुआ.  
Said, related पञ्च० १५;

अवहियमण ति० (अवहितमनस्) सावधान;  
शान्त. सावधान; शान्त Attentive,  
calm सु० च० १, १०४;

अवहिरिच. त्रि० (अवहृत) अपहृत्य करेन;  
लध लीये. चुराया हुआ, लूटा हुआ.  
Snatched, robbed भग० ११, १;  
१२, २, ३५, १,

अवहीय न० (अवधीक) उदायी बुद्धि  
भेदायंजुं वचन तुच्छ बुद्धि से कहा हुआ वचन.  
Speech proceeding from mean  
motives परह० १, २,

✓ अवहीर. धा० II. (अव+हृ) अपहरणं; आली  
करुणं. खाली करना, अपहरण करना. To  
clear away; to take away.

अवहीरइ. भग० १२, २; २३, १;

अवहीरंति. अणुजो० १४५; पञ्च० १२,  
भग० ११, १;

अवहीरैति. भग० ३५, १;

अवहीरमाण. व० कृ० अणुजो० १४५; भग०  
११, १; १२, २; २३, १; ३१,  
१, ४१, १; जीवा० ३, १,  
नाया० १८;

अवहीरेमाण. व० कृ० भग० १८, ४;

अवहीरिऊण. सं० कृ० अ० (अवधीर्य) धीरज  
आपीते; धैर्य दधति. धीरज बंधाकर; धैर्य  
देकर. Having calmed; having  
consoled. सु० च० १४, ४६;

अवहेडिअ-य. त्रि० (\*अवहेडित-अवहेलित)  
मायुं नीचे नभावेत्त; पीठं मुधी ओंठ नभावेत्त.  
नीचे सिर किया हुआ, पीठ तक मस्तक नमाया  
हुआ. With the head bent as far  
as the back, with head lowered  
down. " अवहेडियविट्टिसउत्तमंगे "  
उत्त० १२, २६;

अवहेरी. स्त्री० (अवहेला) मज्जक; हंसी  
हँसी. मजाक. Joke. सु० च० १४, ७४;

अवहोलंत. त्रि० (अवघोलयत्) दोषायमान;  
यथायमान. चलायमान; चलित; हलचल  
सहित. Moving; swinging; waving;  
unsteady. नाया० ८;

अवाञ्च-य पुं० (अपाच) रागादिषु उत्पन्न  
थमेष्ट दोष; अनर्थ. रागादि से उत्पन्न  
हुआ दोष; अनर्थ. Sin arising from  
passion etc. ओव० २०; ठा० ४, १;  
३; क० गं० १, ५;—अणुप्पेहा. स्त्री०

(—अनुप्रेक्षा—अपायानामाश्रवजन्मानर्थानाम-  
नुप्रेक्षानुचिन्तनमपायानुप्रेक्षा ) आश्रव  
आदि दोषोक्तुं चिंतयनं करुणं ते; शुद्ध  
ध्यानतो अेक भेद; आश्रव आदि दोषों का  
चिंतयन करना; शुद्धध्यान का एक भेद.  
a variety of Śukla Dhyāna  
viz meditation upon the  
influx of Karma etc.  
ओव० ठा० ४, १; भग० २५, ७,—दंसि.  
पुं० (—दर्शिन) अनर्थ वगेरे दोष अतापनार;  
दोषदर्शि. अनर्थ आदि दोष बताने वाला; दोष-  
दर्शी. one who points out fault;  
fault-finding. भग० २५, ७; ठा० ८,  
१; पंचा० १५, १४,—भीय. त्रि० (—भीत)  
अपाय—पापदोषधी लय पाभेष्ट. पापदोष  
से डरा हुआ. frightened or terri-  
fied by sin; fearful of  
sin पंचा० ७, ३६—विजय. न०  
(—विचय—अपाया रागादिजनिता अनर्था;  
विचयन्ते निर्णयन्ते पर्यालोचयन्ते वा  
यस्मिंस्तदपायविचयम् ) रागद्वेष आदि दोषोक्तुं  
चिंतयनं करुणं ते; धर्मध्यानतो पहिलो भेद.  
रागद्वेषादि दोषों का चिन्तयन करना; धर्मध्यान  
का प्रथम भेद. meditating upon  
faults arising from passions etc,  
the first variety of Dharma  
Dhyāna भग० २५, ७, ठा० ४, २;

अवाञ्च-य. पुं० (अवाच) उदापोह करी  
वस्तुतो निश्चय करवो ते, जेम् के आ  
ध्वज छे; मतिज्ञानतो त्रीजे भेद. ऊहापोह  
(तर्कवितर्क) के द्वारा वस्तु का निश्चय  
करना, जैसे यह ध्वजा ही है; मतिज्ञान का  
तीसरा भेद. Specific determination  
of a thing by the process of  
thinking and mental reason-  
ing, e. g. this is a banner and

nothing else; the third variety of Mati-Jñāna. दसा० ४, ४५, नंदी० २६, पक्ष० १५; विशेष० १७८, सम० २८; नाया० १५; भग० ८, २; १२, ५, १७, २,—मइ. स्त्री० (—मति) छहथी वस्तुनो निश्चय करेवा ते, मतिज्ञाननो त्रीने भेद, ईहा से वस्तु का निश्चय करना, मतिज्ञान का तीसरा भेद, the third variety of Mati-Jñāna; determining the nature of a thing by exertion or dealing with perception to arrive at judgment ठा० ४, ४; ६, १,

**अवाइड** त्रि० (अन्यादिग्ध) वक्रताथी रहित, अवक्र. वक्रता से रहित, अवक्र, सीधा Not crooked, free from crookedness. भग० १६, ४,

**अवाइण** त्रि० (अवातीन-वातीनानि वातो-पहतानि, न वातीनानि-अवातीनानि) वायुथी न पडे अेवा दृढ भूणवाणु. वायु से न गिर-सकने वाला; दृढ मूल वाला. Firmly, deeply rooted, not to be uprooted by wind राय०

**अवाउड** त्रि० (अप्रावृत) वस्त्ररहित, नग्न. वस्त्र रहित, नग्न, नंगा Naked, devoid of clothes प्रव० ५२६, ओघ० नि० भा० २५२, दस० ३, १२, (२) न० वस्त्रनो अभाव वस्त्र का अभाव absence of clothes, nudity. भग० २, १;

**अवाउडअ** त्रि० (अप्रावृतक) वस्त्र ओढया विना शियाणामां टाढ अने उनाणामा तड्डे सेवनार; नग्न थध आतापना लेनार; विना वस्त्र पहिने शीतकाल में ठंड और ग्रीष्म ऋतु में गर्मी सहने वाला (One) enduring cold and heat without putting

on clothes; one practising austerity in a condition of nudity.

नाया० १, ठा० ५, १; ओव० १६;

**अवाउयाइय** पुं० (अवायुकायिक) वायुकाय नहि; वायुकायथी बिन. वायुकाय से भिन्न. One not an air-embodied soul. भग० ८, १; ६,

**अवापत्ता** सं० कृ० अ० (अवाचयित्वा) अणुवा-यीने; वाय्या विना विना पढे, विना वाचे. Without having read निसी० १६, १६;

**अवायणिज्ज** त्रि० (अवाचनीय) वायना आपवा येअय नहि, लणुववा लायक नहि. बचाने के अयोग्य, पढाने के अयोग्य Unfit to be taught, unfit for teaching. “ चत्तारि अवायणिजा प० तं० अविणीए विगइपडिबद्धे अविउसवियपाहुडे माई ” ठा० ४, ३;

**अवायाण** न० (अपादान) जे वस्तुभांती अेक वस्तु, जेनाथी छुट्टी पडे ते अपादन; पायभी विभक्तिनो अर्थ. जिससे दो वस्तुओं में से एक वस्तु पृथक् हो जाय वह अपादान; पाचवीं विभक्ति का अर्थ Taking away from; separation of one thing from another, the meaning of the ablative case पि० नि० भा० २६; अणुजो० १२६, ठा० ८, १;

**अवारिय** त्रि० (अवारित) निवारण नहि करेद; डोछअे अटकावेद नहि; निरंकुश. निवारण न किया हुआ, किसीसे न अटकाया-रोका हुआ, निरंकुश. Unhindered; unchecked “ अजा अवारियाओ, ह्थीरज्जुं न तं गच्छ ” गच्छा० ६५;

**अवाचकहा** स्त्री० (अवाचकधा-पाचकथा) शाक, घी वगैरे भोजन संबंधी बातचीत करवी ते. शाक, घी वगैरह भोजन के सबन्ध की बात



चीत करना. Talk about the articles of food such as ghee, vegetables etc. ठा० ४, २;

अवावड. त्रि० ( अप्रावृत ) वस्त्ररहित; नग्न. वस्त्र रहित, नंगा Naked, devoid of clothes. प्रव० १५८१,

अवि. अ० (अपि) પણ भी, हाँ. Also; but also. दसा० १, ४; ३, ३१; निसी० २०, १०; १५; ओव० ११, नाया० १; २; १२; १६; १८; अणुजो० ३; सूय० १, १, २, १; वेय० १, ४४; वव० १, ६; १६, विशेष० ४५३; दस० ५, १, ६८; क० प० १, २१; ( २ ) संभावना. संभावना, मुमकिन. a particle showing possibility. प्रव० ८१४;

अविअ. अ० (अपि च) समुच्चय. समुच्चय An indeclinable meaning "moreover." जं० प० ४;

अविआरि. त्रि० (अविचारिन्) जे स्थितिमां शुद्धी अर्थमा अने अर्थथी शुद्धमा तेमन मन वगेरे योगोतुं परिवर्तन-हलन अक्षन नथी ते; शुद्धध्याननो जीने लेद. जिस स्थिति में शब्द से अर्थ में और अर्थ से शब्द में उसी प्रकार मन आदि योगों का भी परिवर्तन-हलन चलन नहीं होता वह स्थितिविशेष, शुक्लध्यान का दूसरा भेद. The second variety of Śukladhyāna, the condition of mind in which the thought-process is stopped and there is no passing of the mind from word to meaning and meaning to word. ओव० २०;

अविइअ. त्रि० (अविदित) अनपेक्षित; नहि ज्ञेयुं. विना जाना हुआ. Not known; unknown पि० नि० ३३६;

अविइय. त्रि० (अद्वितीय) जेनी साथे जीने नथी ते, अकेलो. जिसके साथ दूसरा न हो वह; अकेला. Alone, unaccompanied by a second. भग० ३, २;

अविउक्कंतिअ. त्रि० (अव्युत्क्रान्तिक) व्युत्क्रान्ति-मृत्युने न प्राप्त थयेध; जेमां जिव मरी गया नथी ते; सचित्त. विना मरा हुआ; सचित्त; जीव सहित. Sentient; full of sentient beings. भग० १, ७;

अविउट्टमाण. व० कृ० त्रि० (अवित्रुट्यमान) पीडातो; दुःख पाभतो. दुःख पाता हुआ. Suffering pain; being afflicted. सूय० २, २, २०;

अविउप्पगडा. स्त्री० (अव्युत्प्रकटा-न विशेषत उक्त् प्रावृत्तपतश्च प्रकटा अव्युत्प्रकटा) विशेषे इरीने प्रगट नडि ते. विशेषता से अप्रकटित. Not conspicuous; not prominently visible. भग० ७, १०,

अविउप्पगडा. स्त्री० (अविद्वत्प्रकृता) अविद्वानोअे शरु इरेअ.-इहेअ अविद्वानोंके द्वारा कहा हुई (कथा). Told by those who are not learned "अमहं इमा कहा अविउप्पगडा " भग० १, १; १८, ७,

अविउसरण्या. स्त्री० (अव्युत्सर्जनता-अव्युत्सर्जन) अयित वस्तु-वस्त्र वगेरेने व्यवस्थित राखवा ते; आयज्जा पाय अलिगमन-मनो जीने अलिगमन अचित्त वस्तु-वस्त्र आदि को व्यवस्थित रखना; आवक के पांच अभिगमनों में से दूसरा अभिगमन. The second of the five Abhigamanas of a Jain layman; orderly arrangement of inanimate objects such as clothes etc. नाया० १;



**अविउसविता.** सं० कृ० अ० (अव्युपशम्य-  
अव्युपशम्य) उपशमाया विना विना उपशम  
किये. Without having calmed or  
quieted. वेय० १, ३३;

**अविउसविय.** त्रि० (अव्युपशमित) उप-  
शमावेन नहि न उपशम किया हुआ Not  
calmed, not quieted वेय० १,  
३३.—**पाहुड.** त्रि० (—प्राभृत) जेणे क्कोधने  
शांत नथी क्यो ते क्रोध को जिसने शान्त न  
किया हो वह. (one) who has  
not assuaged or calmed his  
anger निसी० १०, १४, ठा० ४, ३;

**अविउसिय.** सं० कृ० अ० (अव्युत्सज्य)  
नहि छोडीने; नहि तजने न छोडकर; न  
त्यागकर. Without having aban-  
doned; without giving up सूय०  
२, ६, २३,

**अविओग.** पुं० (अवियोग) वियोगने अभाव;  
पुत्र, मित्र आदिने अपिरह वियोग का  
अभाव; पुत्र, मित्र आदि का अविरह Ab-  
sence of separation, e. g. from  
sons, friends etc. परह० १, ५;

**अविओसिय.** त्रि० (अव्यवसित) अनुप-  
शान्त; उपशमावेन नहि अनुपशान्त, न  
उपशमाया हुआ Not calmed; not  
assuaged ठा० ३, ४,—**पाहुड.** त्रि०  
(—प्राभृत) जेणे क्कोध उपशमाये नथी ते  
जिसने क्रोध का उपशम नहीं किया वह  
(one) who has not calmed his  
anger “बहुसो उदीरयंतो, अविओसिय-  
पाहुडो सखंडु” ठा० ३, ४,

**अविदमाण.** व० कृ० त्रि० (अविन्दमान) न भेज-  
वतो प्राप्त न करता हुआ. Not getting,  
not obtaining. विवा० १, २;

**अविकंप** त्रि० (अविकम्प) अथल, स्थिर-  
अचल, स्थिर. Immoveable, steady;  
firm पंचा० १८, १५, प्रव० ५६१;

**अविकंपमाण.** त्रि० (अविकम्पमान) क्कोधनी  
न कम्पतो; न क्षुब्धो क्रोध से न कौपता  
हुआ Not trembling, e g with  
anger “विमिच कोहं अविकंपमाणे”  
आया० १, ४, ३, १३५;

**अविकत्थण** पुं० (अविकत्थन) अतिवधादे  
न भोक्षनार; हितकारी अने परिमित भोक्षनार-  
बहुत ज्यादा न बोलने वाला; हितकारी और  
परिमित बोलने वाला One, not given  
to speak too much, one mea-  
sured and beneficent in speech.  
प्रव० ५५६;

**अविकप्प** पुं० (अविकल्प) निश्चय-संदेहने  
अभाव, निश्चयपूर्ण संदेह का अभाव, नि-  
शंकपना Freedom from doubt;  
absence of misgiving “अविक-  
प्पेण तहक्कारो” प्रव० ७७१;

**अविकल** त्रि० (अविकल) परिपूर्ण, विश-  
लभित नहि ते. परिपूर्ण, अखंडित Perfect;  
entire, complete. पिं० नि० ७१;  
भग० ६, ३३; पचा० ६, ३६;

**अविकार.** पुं० (अविकार) निश्चयने अभाव.  
विकार का अभाव. Absence of modi-  
fication or change. अणुजो० १३०,

**अविकारि** त्रि० (अविकारिन्) जेनु रूपान्तर  
न थाय ते; अविधारी. जिसका रूपान्तर न  
हो सके वह, अविकारी. Unchangeable;  
constant पिं० नि० २७६;

**अविकिअ.** त्रि० (अविक्रेय) बेचया योग्य  
नहि न बेचने योग्य Unworthy of  
sale, unfit to be sold. दस० ७,  
४३;

**अविकल**. पुं० ( अपेक्षक ) अपेक्षा करने वाला. (One) who desires or expects. विशेष १७१६,

**अविकल**. न० ( अपेक्षणीय ) अपेक्षा करने योग्य. अपेक्षा करने योग्य. Worth desiring; worthy of being desired. विशेष १७१६;

**अविकल**. त्रि० ( अपेक्षणीय ) अपेक्षा करने योग्य. अपेक्षा करने योग्य. Worth desiring; worthy of being desired. विशेष १७१६;

**अविकल**. त्रि० ( अव्याचिन्त ) चंचलता रहित; विक्षेपरहित. चंचलता रहित. Free from distraction; free from instability. ( २ ) उपयोगपूर्वक गमन करने वाला उपयोगपूर्वक गमन करने वाला. (one) who walks attentively. दस० ५, १, २, ६०;

**अविकल**. त्रि० ( अविलोकित ) नज़र नज़र से देखे हुए. खुद का देखा हुआ. Seen; seen with one's own eyes. पि० नि० ४१७;

**अविकल**. त्रि० ( अविकृतिक ) विगय-धी आदि विकारी वस्तुओं का त्याग करने वाला. (One) abstaining from things increasing passions, e. g. ghee etc. सूय० टी० २, २, ३८,

**अविकल**. पुं० ( अविकल्प ) निश्चय; विकल्प-लेहने अभाव निश्चय; विकल्प का अभाव. Absence of doubt or difference of opinion; determined principle, settled principle. क० गं० ६, ३६,

**अविकल**. त्रि० ( अविकल ) अशुद्ध, अशुद्ध नहिंते. जो अशुद्ध न हो वह Not contaminated, unpolluted. नाया० ६, १६;

**अविकल**. त्रि० ( अविकल ) दक्ष; चतुर. दक्ष; चतुर; कुशल. Clever; skilful. विशेष १४३६;—कुल. त्रि० (—कुल ) अशुद्धि परिपूर्ण कुल. अशुद्धि से भरपूर कुल. a well-to-do, opulent family. भग० ६, ३३;

**अविकल**. त्रि० ( अविकल ) छद्म अंदरुन तप करने वाला. छद्म के अंदर का तप करने वाला (लगातार दो उपवासों से अधिक उपवास न करते हुए तप करने वाला ). ( One ) not practising the austerity of more than two consecutive fasts. पंचा० १२, ४७;

**अविकल**. त्रि० ( अविकल ) सरल; अविकल. सरल; सीधासादा. Straight; straightforward. ओव०—गइ. स्त्री० (—गति ) सरल गति, वांछ विनानी गति. सरल गति. straightforward gait; motion which is not crooked. भग० १४, ५;—गइसमाचरण. त्रि० (—गतिसमापन्न ) अशुद्ध गति संपादन करे, सरल गति पाये, अशुद्ध गति—सरल गति को प्राप्त. one who has acquired a straightforward gait. भग० १४, ५; २५, ४;—गइसमाचरणय. पुं० (—गतिसमापन्नक) अशुद्ध गति—सरल गति प्राप्त करे, अशुद्ध सरल गति पाया हुआ जीव. ( a soul ) that has acquired a straightforward gait भग० १, ७;

**अविकल**. न० ( अविकल ) विघ्न अभाव; निर्विघ्नपथ, अंतराय अभाव. विघ्न का अभाव; निर्विघ्नपथ; अंतराय का अभाव. Absence of or freedom from obstacles. विशेष १३; ओव० ३८, नाया० १; ५; ८; भग० ४२, १; भक्त० १४८; जं० ५० २, ३०;

अविष्टुट. न० ( अविष्टुट ) भेसुर न थाय,  
तेवी रीते गावु ते, गावनते अडे गुणु वेसुरा  
न होने पावे, इस रीति से गाना, गान का एक  
गुण. Singing without dis-  
cordance, a merit in singing.  
अणुजो १२८, ठा० ७, १;

अविचिंतिय. त्रि० ( अविचिन्तित ) चिंतन  
न डरेन न विचारा हुआ Not thought  
upon विशेष १११;

अविच्यवण. न० ( अविच्यवन ) विच्यवन-  
विनाशने अभाव, अविनाश विच्यवन-  
विनाश का अभाव Absence of  
destruction विशेष २६१,

अविच्युद्ध. स्त्री० ( अविच्युति ) स्मृति;  
धारणा स्मृति, याद Remembrance,  
recollection विशेष १८०;

अविच्छिण्ण. त्रि० ( अविच्छिन्न ) विच्छेद न  
पायेन, अतुटित; आलु विच्छेद न पाया हुआ,  
चालू Continuous, uninterrupt-  
ed ठा० ४, १, (२) नेमा प्रतिपक्षीने सदेह-  
छेदवामा नथी आव्यो ते. जिसमें प्रतिपक्षी  
का सन्देह दूर न किया गया हो वह (that)  
in which the doubt or objec-  
tion of an opponent has not  
been set at rest सूय० २, ७, ३८;

अविच्छेय पु० ( अविच्छेद ) विच्छेदने  
अभाव, निरंतरपणु विच्छेद का अभाव,  
लगातार. Continuity, absence  
of break प्रब० ६२;

अविज्ञाण. त्रि० ( अविज्ञानक ) अज्ञान;  
अधुअ, विज्ञानरहित अज्ञान; विज्ञान  
रहित Ignorant, devoid of know-  
ledge आया० १, १, २, १४,

अविज्ञाण. व० क० त्रि० ( अविज्ञानत् ) न  
जानतो नही जानता हुआ Not know-  
ing जसि गुहाए जलणे तिउट्टे, अविज्ञाणो  
डज्झइ लुत्तपरणो ' सूय० १, ५, १, १२,

अविज्ञा स्त्री० ( अविद्या ) मिथ्यात्वसहित  
अज्ञान, दुशात्र मिथ्यात्व सहित अज्ञान, कुशात्र.  
Ignorance accompanied with  
false belief उक्त० ६, १, ३४, २३;

अविणाय पु० ( अविनय-विशिष्टो नयो विनयः  
प्रतिपत्तिविशेषः, तत्प्रतिषेधोऽविनयः ),  
भेअदधी, अविनय वेअदवी, अविनय  
Immodesty. 'अविणायु ति विहे पणुत्ते,  
तंजहा-देसच्चाई खिरालवणया णायपेम्म-  
दोसे " ठा० ३, ३, पिं० नि० ५०४,—पणु-  
हाण त्रि० (—प्रधान ) अविनय नेमा  
प्रधानपणु छे ते जिसमें अविनय की प्रधानता  
है वह ( that ) in which false  
principles insolence etc. are  
predominant नाया० १६,

अविणिज्जमाण व० क० त्रि० ( अविनीयमान )  
पूर्ण न थतो पूर्ण न होता हुआ Not being  
complete विवा० २, ३, नाया० १;

अविणीअ त्रि० ( अविनीत ) अविनयवान्,  
विनयरहित, अविनीत, अविवेकी विनय  
रहित, अविनीत Immodest, insolent  
दस० ६, २, २२, उक्त० ११, २; ६; ठा० ४,  
३; वेय० ४, ६,—पणु पु० (—आत्मन् )  
विनयरहित आत्मा विनय रहित आत्मा.  
a soul devoid of modesty पत्र०  
३ —पणु पु० (—आत्मन् ) निन्ध आत्मा,  
विनयरहित आत्मा निन्ध आत्मा; विनय  
रहित आत्मा soul deserving cen-  
sure, soul devoid of politeness.  
दस० ६, २, ३

अविद्या. स्त्री० ( अविज्ञा ) अनपेक्षिते दोष सेवने।  
ते बिना जाने दोष का सेवन करना. Uncon-  
sciously resorting to sin सूय०  
नि० टी० १, १, १, —उचक्ष्व. न० (—उप-  
चित्त-अविज्ञानमविज्ञा तयोपचित्तम् ) अ-  
नपेक्षिते दोषेऽर्भं विना जाने किया हुआ  
कर्म Karma done unconsciously.  
सूय० नि० टि० १, १, १;

अविद्याय. त्रि० ( अविज्ञात ) न ज्ञातयेत्;  
अविदित अविदित, न जाना हुआ; वे सालूम.  
Unknown; not known. भग० १,  
६; ३, ७; १८, ७; —कर्म. त्रि० (—कर्म-  
अविज्ञातमविदित कर्म क्रियाव्यापारो मनो-  
वाक्कायलक्षणो यस्यासौ ) जेने मन, वचन अने  
कायांनी प्रवृत्तिनु ज्ञान नहीं ते. मन, वचन  
और काय की प्रवृत्ति के ज्ञान से रहित (one)  
who has no knowledge of the  
processes of mind, speech  
and body. आया० १, १, १, ८;  
—धर्म. त्रि० (—धर्म ) धर्मज्ञानरहित;  
धर्मतुं स्वरूप जेना ज्ञातुवामा नहीं ते. धर्म  
ज्ञान रहित; धर्म का स्वरूप जिसने नहीं जाना  
वह. ignorant of the real nature  
of religion. भग० ८, १०;

अवितर्क. त्रि० ( अवितर्क-न विद्यते वित-  
र्कोऽश्रद्धानक्रियाफलं देहलूपो यस्तु भिक्षो  
सोऽवितर्क. ) दुर्तर्क रहित, अपराध विचार  
रहित. कुतर्क रहित; अच्छे विचारों वाला.  
Free from bad or irreligious  
thought. “ सुसमाहितलेखस्तु, अवित-  
र्कस्तु भिक्षुस्तु ” दत्ता० २, ३१, ३२;

अवितर्क. त्रि० ( अवितर्क ) सत्य; साधु; अरुं,  
वास्तविक; यथार्थ. सत्य सच्चा, वास्तविक.  
True; correct, proper. ज० प० २,  
३१; सु० च० ४, २४०; ओव० १६; ३२;

नाया० १: ३, १२; भग० ६, ३३; ११, ११,  
परह० २, २; आद० ४, ८, कप्प० १,  
१२, ३, ५५. पचा० १२, १५, ( २ ) न०  
सम्यग् सच्चाई, सत्यता truth, ओव० १६;  
३२;

अवितर्क. त्रि० ( अवितर्क ) संसारने नहीं  
तरेल; संसार सागरने छोड़े नहीं पहुँचिये.  
संसाररूपी सागर के किनारे न पहुँचा हुआ;  
जन्म मरण में फँसा हुआ. ( One ) who  
has not crossed the worldly  
ocean, सूय० १, २, १, ६;

अवितर्क. त्रि० ( अवितृष्ण न-विगता तृष्णा  
यस्यासौ ) जेने काम भोगनी तृष्णा मटी नहीं  
ते जिसकी काम भोग की इच्छा नहीं मिटी  
वह. ( One ) whose thirst for  
sensual pleasure is not quenched  
नाया० १;

अवितर्क. त्रि० ( अवितृप्त ) अतृप्त तृप्ति से  
रहित. Unsatisfied; not satisfied  
परह० १, ४,

अवितर्क. त्रि० ( अद्वितीय ) लुप्तो ‘ अवि-  
द्य ’ शब्द देखो ‘ अविद्य ’ शब्द. Vide  
“ अविद्य ” भग० १२, १;

अविदलकड. त्रि० ( अविदलकृत ) कटका नहीं  
डरेल, छड़ा पगरनु, जेनी दाग डरवामां  
आयी नहीं ते टुकड़ा न किया हुआ, जिसके  
दो भाग न किये गये हों वह. Not reduced  
to pieces; not ground. e g pulse  
etc. आया० २, १, १, २;

अविदिरण. त्रि० ( अविदत्त ) अशुद्धिधेनु नहीं  
दिया हुआ. Not given वव० १, २२;  
६, १; निती० ४, २७, १६, २५; भक्त० १०२;

अविद्धकरण्य. त्रि० ( अविद्धकणिक ) क्षान  
विंध्या पगरने बिना विंधे-दिरे हुए  
फाने वाला. ( One ) with ears  
unperforated. भग० १२, १;

अविद्धत्थ. त्रि० ( अविद्धत्त ) जेभा छव  
नाश पामेव नथी ते; अयेत नहि ते, सयेत  
सचित्त, सजीव. Sentiient; living;  
having life निसी० १७, ३०; आया०  
२, १, ७, ४१; २, १, ८, ४६;

अविधूणित्ता. सं० क० अ० ( अविधूय )  
अभेर्या वगर; हूर कर्था विना खदेहे बिना;  
बिना दूर किये. Without shaking off;  
without removing सूय० २, ४, १०;

अविप्पओग. पु० ( अविप्रयोग ) विप्रयोग-  
वियोगनो अभाव, रक्षालु वियोग का अभाव;  
सरक्षण. Absence of separation,  
protection. “ सुक्खाणं अविप्पओगेणं ”  
ठा० ४, ४, भग० २५, ७,

अविप्पकट्ट त्रि० ( अविप्रकट्ट ) नछुड; हूर  
नहि ते नजदीक, समीप, पास. Near, in  
the vicinity. नाया० १,

अविप्पगड. त्रि० ( अविप्रकट ) अप्रकट,  
भुलु नहि; छुपु अप्रकट, छिपा हुआ. Not  
open, secret, hidden भग० ७, १०;

अविप्पमुक्क. पुं० ( अविप्रमुक्क ) नहि छुटेला,  
विशेषे करी न मुकायेला विशेषतया न  
छूटा हुआ Un emancipated,  
not released भग० १७, २,

अविभज्ज त्रि० ( अविभाज्य ) जेनो विभाग  
न थर्ध शेके ओवु; अवयव विनानु अविभाज्य,  
विभाग रहित, अवयव रहित Not divi-  
sible into parts ठा० ३, २, तहु०

अविभत्त त्रि० ( अविभक्त ) विभाग नहि  
करेव, भाग न पाडेव अविभाजित, जिसके  
विभाग न किये गये हों वह. Undivided,  
not divided into parts.  
वेय० २, १८;

अविभाइम. त्रि० ( अविभागिम-अविभागेन  
निर्वृत्तोऽविभागिमः ) भागशून्य, भागरहित,

ऐक रूप भाग शून्य; एक रूप. Having  
no parts, homogenous, whole.  
ठा० ३, २,

अविभाइय. त्रि० ( अविभाज्य ) जुओ ‘अवि-  
भज्ज’ शब्द देखो ‘अविभज्ज’ शब्द. Vide  
“अविभज्ज” “तत्रो अविभाइया परगत्ता”,  
तंजहा-समए पएसे परमाणू ” ठा० ३, २;

अविभाग पु० ( अविभाग ) विभागनो अ-  
भाव, अन्तररहितपणु विभाग रहितता.  
Absence of division into parts.  
भग० २०, ५, क० प० १, ५; ( २ ) जेना  
ऐकना जे भाग न थाय ते; निर्विभाज्य अंश.  
जिसके दो भाग न हो सकें वह अश. an  
indivisible portion क० प० १, ३०;

—उत्तरिय. त्रि० (—उत्तर ) रसना ओके  
अंशे उत्तरोत्तर वधतु रस के एक एक अश  
से उत्तरोत्तर बढ़ता हुआ. progressively  
increasing in intensity. क० प०  
१, ३०,—परिच्छेय पु० (—परिच्छेद-प-  
रिच्छिद्यन्त इति परिच्छेदा अंशा, ते च सवि-  
भागा भवन्त्यतो विशेष्यन्ते, अविभागाश्च ते  
परिच्छेदाश्चेत्यविभागपरिच्छेदा ) जेना  
विभाग न पडि शेके तेवा अश. ऐसा अंश  
जिसका विभाग नहीं किया जा सके.  
an indivisible part of a thing.  
भग० ८, १०;

अविभाव. त्रि० ( अविभाव्य ) पराभव करवा  
योग्य नहि पराभव न करने योग्य Un-  
worthy of being overpowered,  
defeated etc परह० १, १,

अविभावशिज्ज. त्रि० ( अविभावनीय ) अ-  
प्रशंसनीय, अप्रशंसापात्र अप्रशमनीय.  
Not praise-worthy, not com-  
mendable, blameworthy. सु० च०  
३, ३४६;



**अविभूषिय.** त्रि० ( अविभूषित ) विभूषण-  
रहित, शृंगाररहित. विभूषण रहित,  
शृंगार रहित. Devoid of ornaments,  
not adorned. प्रव० ६४६,—प्प. त्रि०  
(—आत्मन् ) विभूषणरहित देह छे जेनो ते  
जिसका देह आभूषणों से रहित हो वह.  
( one ) with body devoid of  
ornaments प्रव० ६४६,

**अविमण.** त्रि० ( अविमनस् ) शून्य चित्त  
वगरनुं; अशून्य चित्तवाणो शून्यता रहित  
चित्त वाला. Not absent-minded;  
not vacant-minded अणुत्त० ३,  
१, ( २ ) भोगादि विषयमां जेनुं मन लागेलु  
छे ते. भोगादि विषयों में आसक्त मन वाला.  
( one ) longing after sensual  
pleasures आया० १, ४, ४, १३७,

**अविमणिय.** त्रि० ( अवमानित ) लुओ  
'अवमानिय' शब्द देखो 'अवमानिय' शब्द.  
Vide " अवमानिय " कप्प० ४, ६५,

**अविमणियदोहला स्त्री०** ( अविमानितदो-  
हदा ) जेनो दोहलो-मनोरथ पूर्ण थयो छे  
ते स्त्री जिसका दोहला-गर्भावस्था का मनोरथ  
पूर्ण हुआ हो वह स्त्री A woman with  
her cravings during pregnancy  
fulfilled. भग० ११, ११,

**अविमुत्तया स्त्री०** ( अविमुक्तता ) परिग्रह  
वृत्ति, परिग्रह राखेते ते परिग्रह का रखना  
Attachment to worldly pos-  
sessions ठा० ४, ४,

**अविमुक्ति.** स्त्री० ( अविमुक्ति ) लोलवृत्ति, लोल  
इशेते ते लोभ करना. Avarice greed  
पंचा० १०, १८, ( २ ) न मुडुं ते न छोडना.  
not giving up, non-abandon-  
ment प्रव० ८१३;

**अविमोयणया स्त्री०** ( अविमोचनता-अवि-  
मोचन ) वस्त्रादिनो अत्याग. कच्चादि का

त्याग न करना. Not giving up or  
abandoning clothes etc भग०  
६, ३३,

**अविय.** अ० ( अपि च ) वणी; भीजुं; पणु  
परन्तु, और भी. Moreover, also.  
भग० १, ७; ३, २, १५, १; पि० नि० ३७६,  
**अविय.** पुं० ( अविक ) मेंढो, धेठो मेंढा. A  
ram आया० टी० १, १, ६, ४८;

**अवियत्त.** त्रि० ( अव्यक्त ) अस्पष्ट अस्पष्ट.  
Not clear, obscure. सूय० १, १, २, २५;  
( २ ) मुग्ध, सदसद् विवेकरहित, ज्ञान अने  
वयमा अपरिपक्व. मुग्ध; सदसद् विवेक शून्य;  
ज्ञान और वय में अपरिपक्व. young and  
inexperienced, raw आया० १, ५,  
३, १५६, सूय० १, १, २, ११,—जंभग. त्रि०  
(—जृम्भक) जलदा देवतानी ओइ जत. जृम्भक  
देवों की एक जाति a kind of gods  
called Jrimbhaka भग० १४, ८;

**अवियत्त त्रि०** ( अप्रीतिक ) अप्रीति कारक  
अप्रीति कारक Unpleasant, excit-  
ing disgust पण० १, ३; २, ३;  
—उचघाय पुं० (—उपघात ) प्रेमना  
अभावने लधने विनयनो उपघात-नाश.  
प्रेम के अभाव के कारण विनय का नाश  
destruction of modesty due to  
absence of love, lack of polite-  
ness arising from lack of  
love or affection ठा० १०,  
—विशोहि पुं० (—विशोधि ) प्रेम वगर  
विशोधि थयी ते; विशोधिने ओइ भेद. विना  
प्रेम के विशुद्धता का होना, विशुद्धि का एक भेद  
purity without love; a variety  
of purity. ठा० १०, १.

**अविद्याई.** अ० ( अपि च ) वणीपणु, संभा-  
वना. और भी, संभावना Moreover,



an indeclinable showing probability नाया० १६, आया० २, १, ६, ४६, तंडु० २४, सूय० २, ७, ५; (२) समये, अवसरे अवसर पर on an occasion; at a proper time. राय०-२३७,

\* अवियाउरी स्त्री० (अविजनित्री) वंध्या, वान्छी वंध्या, बाक. A barren woman नाया० २;

अवियाणत्र व० कृ० त्रि० (अविजानत्) नहि ज्ञातुते, अज्ञानी. अजानी, न जानता हुआ Not knowing, ignorant आया० १, १, ६, ४६,

अवियार न० (अविचार-न विद्यते विचारो-र्थव्यञ्जनयोरितरस्मादितरत्र तथा मन प्रभृती-नामन्यतरस्मादन्यत्र यस्य तदविचारम्) ओ३ योगमाथी भीष्म योगमा के अर्थमाथी व्यंजनमा जपु अ वपु ज्या नथी ते, शुक्लध्यानतो ओ३ प्रकार एक योग में से दूसरे योग में या अर्थ में से व्यंजन में जहाँ मन की वृत्ति का आना जाना नहीं होता वह ध्यान, शुक्लध्यान का एक भेद. A variety of Śukladhyāna, meditation in which one does not pass from one thought activity into another or from the meaning of a word to other notions suggested by it “एगत्त वितक्के अवियारे” ठा० ४, १, (२) निश्चेष्ट, छलन चलन विनानो-पादपोपगमन सथारे चेष्टा रहित-हलचल रहित-पादपोपगमन सथारा motionless, Santhārā known as Pādapopagamana “सवियारमवियारा, कायचिद्ध पई भवे” उक्त० ३०, १२, ( ३ ) त्रि० विचार्या वगरनु, असंगत, अशोभन विनाविचार किया हुआ, असंगत, असंबद्ध disconnected in

thought, inconsiderate thoughtless सूय० २, ४, १;

\* अवियासिय सं० कृ० अ० (आलिङ्ग्य) आलिङ्गन देने आलिङ्गन करके Having embraced नाया० २,

अविरइ स्त्री० (अविरति) पापनी अनिवृत्ति-अपच्युत्पाण, असन्म, आश्रवणुं भीष्म ६१२ पाप की अनिवृत्ति, अपच्युत्पाण, असयम; आश्रव का दूसरा द्वार Non-cessation from sin, not giving up sin, lack of ascetic practice, the second opening for Āśīava सूय० २, २, ३६, सम० ५, ठा० ५, २, नाया० ६; भग० १, ६, ७, ८, पि० नि० ६३; क० प० २, ६१, ओघ० नि० ४६, ( २ ) अश्रद्धार्थ. अव्रह्मचर्य, मैथुन incontinence, sexual intercourse ठा० ६,—वाद् पु० (—वादे-अविरतिरव्रह्म तद्वादो वार्ता ) मैथुन संबंधी यर्था मैथुन सबधी चर्चा talk about sexual intercourse ठा० ६;

अविरइय त्रि० (अविरतिक) पापनी निवृत्ति विनानो पाप की निवृत्ति से रहित (One) not free from sinfulness ओघ० नि० ६००,

अविरइया स्त्री० (अविरतिका-न विद्यते विरतिर्यस्या सा अविरतिका) व्रतरहित स्त्री व्रत रहित स्त्री A woman not observing vows ठा० ६, वेय० ६, २,

अविरति स्त्री० (अविरति) लुओ “अविरइ” शब्द देखो “अविरइ” शब्द Vide “अविरइ” भग० १, १;

अविरत्त त्रि० (अविरक्त) विरक्त थओ३ नहि; रागी, अनुरक्त जो विरक्त न हुआ हो वह; रागी Not free from attachment. ओव० नाया० १८, भग० १२, ६, १६, १;

अविरय-अ त्रि० (अविरत) सावध जोगथी निवृत्त  
 यथेव नहि, पापस्थानकथी निवृत्ति पाभेव नहि.  
 सावधयोग-पापकर्म से अनिवृत्त ( One )  
 not free from sinful practices.  
 भग० १, १; ८, ६; ११, १; १७, २, ३५,  
 १; ४०, १; पञ्च० ३, नाया० ५; १६; ठा०  
 २, १, ओव० ३८, उत्त० ३४, २१; पंचा०  
 ६, ४२; भक्त० ६७, ( २ ) अविरति;  
 सम्यग्दृष्टि आदि गुणस्थान. अविरति;  
 सम्यग्दृष्टि आदि गुणस्थान. non-cessa-  
 tion of attachment to worldly  
 objects; the Gunasthāna  
 called Avirati Samyagdristi  
 etc. क० ग० १, ५६; २, २; ५, ४२,  
 —भाव पुं० (—भाव ) अविरतपणुं, आरं-  
 भनी अनिवृत्ति अविरतता; पाप कर्म से  
 अनिवृत्ति. non-cessation of  
 sinful activity, non-abstinence  
 from a sin प्रव० १३२०;—मरण न०  
 (—मरण) अव्रतीपणुं भरपु ते; आणभरण  
 व्रतहीन अवस्था में मरना, जिसे जैन परिभाषा  
 में बालमरण कहते हैं death in a state  
 of vowlessness ( this is called  
 Bālamaraṇa, lit death in child-  
 hood) प्रव० १०२७,—वाइ पु० (—वा-  
 दिन्-वदनशीलो वादी, अविरतस्य वादी  
 अविरतवादी ) 'अविरत छुं' ऐम भोलनार;  
 परिग्रहधारी परिग्रहवारी, अपने को अविरत  
 कहने वाला. one who declares  
 himself to be not free from sin;  
 (one) having worldly possessions  
 आया० नि० १, ४, १, २२४,—सम्मत्त  
 पुं० (—सम्यक्त्व ) अविरत सम्यग्दृष्टिवाणो;  
 योथा गुणुदाणुवाणो छव. अविरत सम्यग्दृष्टि;  
 चौथे गुणस्थान वाला जीव. a soul in  
 the fourth Gunasthāna or spiri-

tual stage of evolution; a soul  
 with vowless right belief. क० ग०  
 ५, ४२;—सम्मदिट्ठि पुं० (—सम्यग्दृष्टि)  
 विरति विनातो केवल समकितदृष्टिवाणो; योथे  
 गुणुदाणु वरततो छव. व्रतरहित सम्यग्दृष्टि;  
 चौथे गुणस्थान वाला जीव. a soul in  
 the fourth Gunasthāna, with  
 right belief but without  
 abstention from sin. सम०  
 १४;—सम्मदिट्ठिगुणद्वारा न० (—सम्यग्-  
 दृष्टिगुणस्थान ) अविरतिसम्यग्दृष्टि नामे  
 योथुं गुणुदाणु. अविरत सम्यग्दृष्टि नामक  
 चौथा गुणस्थान. the fourth Guna-  
 sthāna so named. क० ग० २, २;  
 अविरयं. अ० ( अविरतम् ) सतत, निरंतर  
 हमेशा; निरन्तर; सदा. Constantly;  
 incessantly. प्रव० ४८३,

अविरल त्रि० ( अविरल ) छुटां छवायां  
 नहि; धातुं, धट्ट. विरलता रहित, जो तितर  
 वितर न हो; मिला हुआ; गाढा. Not  
 scattered, thick, dense. "अविरल-  
 समसहियचंदमंडलसमप्पमेहि " पणह० १,  
 ४, ओव० १०, ( २ ) निरंतर; आंतरा  
 रहित. निरंतर; अंतर रहित. perpetual;  
 having no intervening sub-  
 stance. ओव० १०; जीवा० ३, ३;—वृंत.  
 त्रि० (—दन्त) छिद्र वगैरना तथा सरणी पंक्ति-  
 भा रहेला दंतवाणो अंतर रहित समश्रेणी में  
 रहे हुए दातों वाला. (one) with regular  
 and closely set teeth. तंडु०—पत्त.  
 त्रि० (—पत्र) धाटां पांदांवाणा आऽ वगैरे.  
 सघन पत्तों वाला झाड़ वगैरह. ( trees  
 etc. ) with densely growing  
 leaves. "अविरलपत्ता अच्चिदपत्ता"  
 जीवा० ३;

**अविरह.** पुं० ( अविरह ) विरहनेो अभाव,  
निरंतर रहेवुं ते. विरह का अभाव. Ab-  
sence of separation·continuous  
stay or existence. “ अतोमुहुत्त-  
विरहो ” आया० नि० १, १, ६, १५६;

**अविरहित्र.** त्रि० ( अविरहित ) विरहरहित,  
निरंतर विरह रहित; निरन्तर. Having  
no separation; continuous. पचा०  
४, ५०, ६, ५०; भग० १, १, १०, १; १३,  
१, २४, १२; १६; ४१, १; वव० ८, ५;

**अविराहणा.** स्त्री० ( अविराधना ) विराधना-  
संभ्रमणानेो अभाव विराधना-संयम के  
खण्डित होने का अभाव Absence of  
breach of ascetic conduct. भग०  
२५, ६; ७;

**अविराहित्र-य.** त्रि० ( अविराधित-न विरा-  
धितोऽविराधित ) सर्वथा विराधना डरेत्र  
नहि. सर्वथा विराधना-खण्डन न किया हुआ.  
Not wholly violated,  
partially violated, (e g. ascetic  
conduct). परा० १, ३; प्रव० ११३३,  
—संजम. पुं० (—संयम) अंभुडित संभ-  
वान्, परापर पाणेल छे संभ्रम ढेले ओवा  
साधु अखंडित संयम वाला, संयम को यथा  
रीति से पालने वाला साधु an ascetic fully  
observing the rules of right  
conduct. भग० १, २;—संजमासंजम.  
पुं० (—संयमासंयम ) अंभुडित श्रावडपणुं;  
परापर पाणेल श्रावडपणुं अखंडित श्रावक  
मन, यथारीति पाला हुआ श्रावकाचार. flaw-  
less, complete observance of  
the rules of right conduct pre-  
scribed for a Śrāvaka भग० १, २,  
—सामरण त्रि० (—आमरण) ढेले चारित्र  
परापर आराधेल छे ते. चारित्र का विधिवत्

आराधन-पालन करने वाला (one) who  
has perfectly practised the  
rules of right conduct. भग०  
१५, १;

**अविरिय** त्रि० (अवीर्य) पीर्य-सामर्थ्यरहित.  
सामर्थ्य रहित. Powerless; devoid of  
powers. विवा० १, ३;

**अविरुद्ध.** त्रि० ( अविरुद्ध ) पूर्वापर विरोध  
रहित, संगतियुक्त पूर्वापर विरोध रहित.  
Not involving contradiction;  
having proper connection of  
parts पचा० १७, ३, (२) विनयवादी;  
देवता, मनुष्य, तिर्य्य, पशु, पक्षी वगेरे सर्वनेो  
विनय डरनार. विनयवादी, देव, मनुष्य, पशु,  
पक्षी आदि सबका विनय करने वाला (one)  
having reverence for all viz  
gods, men, lower animals etc.  
‘अविरुद्धो विण्यकारी देवाईणं पराणं भत्तिणं’  
नाया० १४, ओव० अणुजो० २०; (३) पुं० न०  
परस्पर विरोध न होय ओवा राज्यानां आमा-  
दि परस्पर विरोध रहित राज्य के ग्राम आदिक.  
villages of kingdoms which are  
not mutually at variance. प्रव०  
१३१०, (४) वडीयोनी मर्यादानु उद्धन न  
डरनार बड़े बूढ़ों की मर्यादा का उल्लंघन  
न करने वाला. obedient and  
respectful to elders. प्रव० १३१०;  
—वेणइय पु० (—वैनयिक ) माता आदि  
सर्वनेो अविरोधपणुं विनय डरनार माता,  
पिता आदि सब का अविरोधो भाव से विनय  
करने वाला. one invariably respect-  
ful to parents etc अणुजो० २०;

**अविरोह.** पुं० ( अविरोध ) विरोधनेो अभाव.  
विरोध का अभाव. Absence of hostili-  
ty. विशेष० ६३, पंचा० १, १७, ४, ८,

**अविल** न० ( अविल ) अस्वच्छ; डोलुं, मलीन. अस्वच्छ, मलिन. Not clear, turbid जीवा० ३, ४,

**अविलंबिय** त्रि० ( अविलम्बित ) विलम्ब-रहित, उतावगो. विलम्ब रहित, फुर्तीला, उतावला. Bearing no delay, hasty. नाया० १; भग० ७, १, ११, ११, परह० २, १, कप्प० १, ५;

**अविला** स्त्री० ( अवी ) धेड़ी; गाडर भेड. A owe पिं० नि० भा० ५०, पिं० नि० १६४;

**अविवक्षास** त्रि० ( अविपर्यास ) विपर्यास-विपरीततरहित. विपरीतता रहित. Free from a contrary state of things उत्त० २६, २८; भग० ३, ६,

**अविवज्जय** पुं० ( अविपर्यय ) विपरीत बुद्धिने। अभाव विपरीत बुद्धि का अभाव. Absence of a contrary inclination of the intellect (२) तत्त्वना अध्यवसाय-रूप समझित तत्त्व का अध्यवसायरूप सम्यक्त्व right faith consisting in a settled conviction about reality विशेष २७८४,

**अविवरिय** त्रि० ( अविवरित-अविवृत ) विवरण करेले नहि; अर्थरूपे व्याख्यान न करेले जिसका विवरण न किया गया हो. Not explained विशेष १३६६;

**अविविचिता** सं० कृ० अ० ( अविविच्य ) विवे-चन-पृथक्करणे ध्या विना, जुटा ध्या विना. विना पृथक्करण किये, विवेचन किये विना Without having distinguished, without having separated or analysed सूय० २, ४, १०,

**अविसंधि** पुं० ( अविसन्धि ) नेने सांधी बिधटे नहि ते; पूर्वापर विरोध आवे नहि तेनुं पूर्वापर विरोध रहित. जिसका जोड़ हटे नहीं वह. Anything not in-

volving its parts in mutual contradiction ओव० ३४,

**अविसंवाइ** त्रि० ( अविसंवादिन् ) विसंवादी नहि, अयथार्थ नहि. विसंवाद-वक्ता न करने वाला; अयथार्थता रहित. Not inconsistent, not incongruous परह० २, २, **अविसंवादणजोग** पुं० ( अविसंवादनयोग ) यथार्थ ओलवुं, ओलीने इरी न जयुं अने यथार्थ प्रवृत्ति करी ते. यथार्थ कहना और चलना-कहकर बदल न जाना. Consistency in speech and action. ठा० ४, १; भग० ८, ६,

**अविसंवादि** त्रि० ( अविसंवादिन् ) जुओ! “अविसंवाइ” शब्द. देखो “अविसंवाइ” शब्द. Vide ‘अविसंवाइ’ परह० २, २; **अविसंवायणजोग** पुं० ( अविसंवादनयोग ) जुओ! ‘अविसंवादणजोग’ शब्द. देखो ‘अविसंवादणजोग’ शब्द. Vide ‘अविसंवादणजोग.’ भग० ८, ६, ठा० ४, १,

**अविसम** त्रि० ( अविपम ) समतल; सपाट, उथु नीयुं नहि ते समतल, ऊचाई नीचाई रहित Level, not having ups and downs तंडु०

**अविसय** न० ( अविषय ) निर्विषय ज्ञान, ज्ञान-ने। अविषय ज्ञान के विषय से रहित. Objectless knowledge, (anything) not a province or object of knowledge पचा० ५, ४६,

**अविसाइ** त्रि० ( अविपादिन् ) जेद-रहित. खेद रहित, विपाद रहित Free from dejection, undejected परह० २, १,

**अविसाति** त्रि० ( अविपादिन् ) जुओ! ‘अविसाइ’ शब्द. देखो “अविमाइ” शब्द Vide ‘अविमाइ.’ परह० २, १;

**अविसारअ-य** त्रि० ( अविसारद ) अयतुं; अदुशक्ष. चातुर्य रहित Not clever; not

skilful; not proficient उत्त० २८,  
२६, प्रव० ६७३,

अविशुद्ध. त्रि० ( अविशुद्ध ) अविशुद्ध, शुद्ध  
नहि, विशुद्ध वर्ण आदिही रहित अशुद्ध,  
विशुद्ध वर्ण आदि से रहित Not clear,  
devoid of pure tint. पंचा०  
४, १३; क० गं० १, १४, ठा० ३, ४,  
क० प० २, २,—लेस्स त्रि० (—लेस्स)  
कृष्णादि अशुद्ध देश्यावागो; शुद्ध देश्यारहित.  
कृष्णादि अशुद्ध लेस्स वाला, शुद्ध लेस्स  
रहित. having black etc thought-  
tint; devoid of pure thought-  
tint; भग० १, २, (२) विभंग ज्ञानी, विभंग  
ज्ञानी. one having wrong visual  
knowledge. भग० ६, ६,

अविशेष त्रि० ( अविशेष ) विशेषरहित; सा-  
मान्य विशेष रहित, सामान्य Common,  
devoid of particularity. ठा० २,  
३; भग० १४, ८, ३४, १,

अविशेषण न० ( अविशेषण ) अविशेष,  
समान अविशेष, समान. Absence of  
particularity विशेष० ११५,

अविशेषित त्रि० ( अविशेषित ) सामान्य,  
विभागरहित सामान्य, साधारण, विभाग  
रहित Common, not specified or  
particularised विशेष० ११८, ४१८,  
नाया० ध० ३; ठा० १०, क० प० १, २४,

अविशोहि. पु० ( अविशोहि ) विशुद्धिने  
अभाव विशुद्धि का अभाव. Absence of  
purity पंचा० १३, १६, (२) अनियार,  
आरित्रने भलीन करु ते अतिचार; चारित्र  
को मलिन करना violation of rules  
of right conduct; sullyng one's  
conduct. प्रव० ५७८,—कोडि. लो०  
(—कोटि) संयमने अविशुद्ध करना आधा-

कर्पादि छदोपोतो समूह; पोने हणुवुं, पीज्जनी  
पासे हणुवुं, हणुतने अनुमोदवु, पेते  
संधवु, पीज्जनी प से संधवुं अने संधनारने  
अनुमोदवु, जो छते धर्म संयम को अशुद्ध  
करने वाले आदात्म्यादि छ दोषों का समूह,  
स्वयं मारना, दूसरे से मरवाना, मारने वाले  
का अनुमोदन करना, स्वयं पकाना, दूसरे से  
पकवाना और पकाने वाले का अनुमोदन करना,  
इन छ दोषों का समूह the collection of  
six faults like Adhākarma etc.  
which pollute ascetic conduct.  
These are as follows.—to kill, to  
cause another to kill, to approve  
of an act of killing on the part  
of another; to cook, to cause  
another to cook and to  
approve of cooking on the part  
of another आया० नि० टी० १, १, १;  
अविस्सससिज्ज त्रि० ( अविश्वयनीय ) वि-  
श्वास करवा योग्य नहि विश्वास न करने योग्य.  
Unworthy of trust तडु०

अविस्त्रास न० ( अविश्राम ) विश्रामो  
लीधा बिना, जरा पलु डेर बिना, निरन्तर.  
विश्राम का न लेना, जरा भी न ठहरना, निरन्तर;  
लगातार Without rest, without  
stopping; ceaseless. ओव० २४;  
उत्त० १६, ३५,—वेयसा. लो० (—वेडना)  
विश्रान्तिरहित वेडना, निरन्तर—अलु वेडना.  
विश्रान्ति रहित वेडना; निरन्तर होने वाली  
पांडा. ceaseless pain; perpetual  
pain पण्ह० १, १;

अविस्त्रास. त्रि० ( अविश्वास ) विश्वास  
करवाने अयोग्य विश्वास न करने योग्य.  
Unworthy of trust “अविस्त्रासो  
य भूयाणं” दस० ६, १३; (२) न०  
अविश्राम; अशान्ति; दुःख अशान्ति, दुःख



pain, restlessness जीवा० ३, १,

अविहरणमात्र त्रि० ( अविहन्यमान ) विविध परिप्लव, उपसर्गधी न ह्युतातो जो विविध परीषह और उपसर्गों से न मारा जा सके वह Not sinking under various sufferings; not succumbing to various kinds of pain. "अविहरण-माणो कलगावतट्टि" आचा० १, ६, ५, १६६,

अविहवा. स्त्री० ( अविधवा ) पतिवाणी स्त्री, सधवा सववा स्त्री. A woman whose husband is alive, a woman in coverture भग० ११, ११,—वहू स्त्री (-वधू) सधवा; विधवा नहि ते सधवा स्त्री a woman whose husband is alive नाया० १, भग० १२, २;

अविहार पुं० ( अविहार ) विहार न करवा ते, विहार न करना Absence of or cessation from peregrination ( Vihāra ) पचा० १७, ३६,—पक्ख. पुं० (-पक्ख) विहार न करवाने पक्ष-अलि-प्राय विहारन करने का पक्ष-अभिप्राय. the tenet that there should be no peregrination. पचा० १७, ३६,

अविहि पुं० (-अविधि) अविधि, शास्त्रविहित विधिना अभाव शास्त्र विहित-शास्त्रानु-दूल विधि का अभाव Absence of ceremony prescribed by Śāstias निसी० १, २४, ४, २०; पंचा० ७, १७,

अविहिंस त्रि० ( अविहिंस-न विधने विहिंसा चेपां तेऽविहिंसाः ) हिंसा वगर्नो. दयालु व्यालु, हिंसा से रहित. Kind, merciful, not injuring others आया० १, ६, ४, १६३;

अविहिंसा. स्त्री० ( अविहिंसा-विविधा हिंसा विहिंसा, न विहिंसा अविहिंसा ) हिंसानो अभाव; अहिंसा अहिंसा, हिंसा का अभाव. Absence of different kinds of injury, e g. killing, etc. "अवि-हिंसामेव पव्वण, अणुधम्मो सुणिणा पवेदितो" सूय० १, २, १, १४; अणुजो० १३०;

अविहिंसिय. त्रि० ( अविहिंसित-नास्ति विहिंसा यस्मिंस्तदविहिंसितम् ) सारी रीते निर्णय थयेल, अथित सम्यक् अचित्त, जीव रहित. Lifeless, insentient सूय० २, १, ५६;

अविहेडअ-य पु० ( अविहेठक-अविहेलक ) डोघने आधा-पीडा उपज्जवना नहि, पीज्जने दुःख उपज्जवना नहि. किसीको पीडा न देने वाला, दूसरे को दुःख न देने वाला. One, not giving pain or trouble to others. "उवसते अविहेडण जो स सिक्खू" दस० १०, १, १०; उत० १५, १५;

अवीइ त्रि० ( अवीचि ) डपायना तरंगधी रहित कपाय की तरंगों से रहित. Free from the waves or billows of passion भग० १०, १,—दव्व. न० (-दव्व-न वीचिद्रव्यमवीचिद्रव्यम्) सम्पूर्ण आहारद्रव्य, सर्वोत्कृष्ट आहारवर्गणा सम्पूर्ण आहार द्रव्य, आहार की सर्वोत्कृष्ट वर्गणा. substance excellent for being used as food भग० १३, ६, १४, ६;

अवीइकंत त्रि० ( अव्यतिक्रान्त ) अतिक्रमण नहि करेख, उलंघन न करेख न उलांघाहुआ, अतिक्रमण न किया हुआ. Not violated; not transgressed. भग० ८, ७,

अवीइमंत. त्रि० ( अवीचिमन् ) डपायना संयंघ वगर्नो कपाय के संयंघ से रहित. Free from any contact with passions. भग० १०, २,



अवीश्य सं० कृ० अ० (अवीविच्य) जुदा पाया विना बिना जुदा किये Without having separated or discriminated भग० १०, २,

अवीश्य. स० कृ० अ० (अविचिन्त्य) नहि विचारीने, विद्वत्पुत्र्या विना बिना विचारे, विकल्प किये बिना Without having thought भग० १०, २,

अवीय त्रि० (अद्वितीय) भीमानी सहाय विनाने, अकेला, अकेल दूसरे की सहायता से रहित, अकेला Alone, solitary, one without a second विवा० १, २, (२) अनुपम, जेना जेवे भीमे न होय ते अनुपम, जिसके समान दूसरा न हो वह matchless, univalled उत्त० २०, २२,

अवीयराग पु० (अवीतराग) वीतराग-डेवणी नहि ते, छद्मस्थ जिसका राग नहीं गया वह, छद्मस्थ One who is not a Vitarāga or an omniscient, one who is Chhadmastha (1 e in the 11th or 12th stage of the spiritual ladder) पचा० ६, ४३,

अवीरिय पुं० (अवीर्य्य) मननी शक्ति विनाने; वीर्यहीन मन की शक्ति से रहित, वीर्यहीन. Devoid of mental strength; devoid of power. नाया० ८, १३, १६, भग० १, ८, ७, ६,

अवीसंभ पुं० (अविश्रम्भ) अविश्वास; प्राणातिपातनु त्रीजुं गौण नाम. विश्वास का अभाव, प्राणातिपात का तीसरा गौण नाम Distrust, want of confidence, the third subordinate description of Prāṇātipāta (killing etc) परह० १, १,

अवीसत्थ. त्रि० (अविश्वस्त) विश्वासरहित विश्वास रहित Lacking in confidence. गच्छा० ६७,

अवुक्कंत त्रि० (अव्युत्क्रान्त) अयेत नहि थयेल; सयेत. सजीव Living; sentient निसी० १७, ३०;—जीव पुं० (जीव) सयेत, जेमाथी अव नीकणी गया नथी ते सवित्त, सजीव sentient or living matter निसी० १७, ३०,

अवुग्गहठारा न० (अविग्रहस्थान) अविग्रह स्थान; डलहुनु स्थान नहि अविग्रह स्थान, जो स्थान कलह का न हो वह Anything not a proper abode or object for quarrel “आयरियउवज्झाएणं गणंसि पच अवुग्गहठारा पराणत्ता, तजहा-आयरियउवज्झाएणं गणंसि आण वा धारण वा सम्म पडजित्ता भवइ १, एवं महाराइ णियाए सम्म २, आयरियउवज्झाएणं गणंसि जे सुपज्वजाए धारेइ ते काले सम्म ३, एवं गिलाणसेहवेयावषं सम्म ४, आयरियउवज्झाएणं गणंसि आपुच्छियचारी यावि भवइ णो अणापुच्छियचारी” ठा० ५, १,

अवुच्छिण त्रि० (अव्यवच्छिन्न) अव-रहित नहि, अवसरहित सजीव Living, sentient आया० २, १, १, २,

अवुत्त त्रि० (अनुक्त) कायथी न प्रेरायेल किसीसे प्रेरित न किया हुआ. Not directed or instructed by anybody. ठा० ८, √अवे धा० I (अप+इष्) अनु जाना To go (२) नाश पाभयुं नाश पाना to be destroyed

अवेति. पचा० १५, ७; पञ्च० २८, विशेष० ७०, अवेअ पु० (अवेद) वेदरहित, अवेदी वेद (स्त्री वेद, पुंवेद और नपुंसक वेद) रहित. (One) free from or devoid of sex-feeling क० प० ५, ४८,

अवेइय त्रि० (अवेदित) नहि वेदेय, नहि अनुभवेल, अनुभव न किया हुआ Not felt or experienced. कथ० ३, १८,

अवेउविद्यसरीर पुं० ( अवेउविद्यसरीर )  
अनङ्गरहित शरीर अलङ्कार रहित सरीर.  
Body devoid of ornaments  
भग० १८, ५;

अवेकखमाण व० कृ० त्रि० ( अवेकखमाण )  
निरीक्षण करतो निरीक्षण करता हुआ.  
Looking into, observing. नाया० ६;  
अवेकखयंत त्रि० ( अवेकख-अवेकखमाण )  
लुगो " अवेकखमाण " शब्द. देखो  
'अवेकखमाण' शब्द. Vide 'अवेकखमाण'  
नाया० ६;

अवेकखा स्त्री० ( अवेकखा ) अपेक्षा; आशय,  
द्रव्य, क्षेत्र, डाल, भाव आदिनो अलिप्राय.  
अपेक्षा, आशय; द्रव्य, क्षेत्र, काल, भाव आदि  
का अभिप्राय. Expectation; desire,  
aim, intention. विशेष० २५५; १०१६;  
पंचा० ५, ४२; पिं० नि० ४४२;

अवेत त्रि० ( अवेत ) लुगुं, लिन जुदा, भिन्न,  
पृथक् Different from, separated  
from. विशेष० २२१३;

अवेद पुं० ( अवेद ) पुरुषवेद, स्त्रीवेद आदि  
वेदरहित जिव, इसमा शुद्धाशुद्धी भाडी सिद्ध  
पर्यंत जिव पुरुषवेद, स्त्रीवेद आदि वेद रहित जीव,  
दसवें गुणस्थान ने सिद्ध पर्यन्त जीव. A soul  
free from Purusa-Veda, Stri-Ve-  
da etc, a soul between the tenth  
Gunasthāna and final emancipa-  
tion, a soul free from sex-feeling.

ठा० २, १, पञ्च० २, जीवा० १; भग० १७, २,

अवेदअ-य. पुं० ( अवेदक ) लुगो " अवेद "  
शब्द. देखो "अवेद" शब्द. Vide "अवेद".  
भग० ६, ३१; १८, १, २५, ६; २६, १;

अवेदग पुं० ( अवेदक ) लुगो "अवेद" शब्द.  
देखो "अवेद" शब्द Vide "अवेद."  
ठा० २, १, ४, ४; पण्ह० १, २, भग० ६,  
३; ४; ८, २; ११, १; २६, १, ३०, १;

अवेदइत्ता सं० कृ० अ० (अवेदइत्ता) वेदा वगर;  
भोग्या वगर अनुभव किये बिना, बिना भोगे.  
Without having experienced.  
भग० १, ४; सम० प० १६४, पण्ह० १, १;

अवेयग पुं० ( अवेदक ) लुगो " अवेद "  
शब्द देखो "अवेद" शब्द. Vide 'अवेद.'  
ठा० ४, ४, क० गं० ६, ५१, क० प० ५, ६५;

अवेयण त्रि० ( अवेदन-न विद्यते वेदना  
चर सौऽवेदन ) साता, असाता वेदनारहित;  
सिद्ध साता, असातारूप वेदना से रहित, सिद्ध  
(The soul) free from the feeling  
of pain and pleasure; (the soul)  
that has obtained salvation.  
विशे० २१२७, पञ्च० २;

अवेरमणउभाण न० ( अविरमणध्यान-  
न विरमणमविरमणम्, तस्य ध्यानम् )  
पापही न निवृत्त ध्यानु ध्यान पाप से निवृत्त  
न होने का ध्यान. Meditation upon  
non-abstention from sin. आउ०

अवेहिया सं० कृ० अ० ( अवेक्ष्य ) जेधने;  
आवे यीने देखकर, आलोचना करके.  
Having seen or observed.  
सूय० १, २, २, ८,

अवोगड त्रि० (अव्यकृत) विलग नहि पाडेस;  
लायातोणे वहुंशी न क्षीधेसुं अविभाजित;  
सगा संवन्धियों द्वारा न बाटा हुआ Not  
divided into shares. सम० ३३, वव०  
७, २२, ( २ ) त्रि० विशेषणों की लेद न  
पाडेस विशेषणों द्वारा जिसका भेद न किया  
गया हो वह not distinguished by  
adjectives; not differentiated  
by adjectives सम० ३३;

अवोगडा स्त्री० ( अव्यकृता ) गंभीर अर्थ-  
वाणी लाया अथवा अव्यक्ता-अव्यष्ट अक्षर

वाणी ल.पा. गम्भीर अर्थ वाली अथवा  
अस्पष्ट अक्षरों वाली भाषा Language  
with deep and profound mean-  
ing, language with obscure  
or illegible letters. “अवोच्छिन्नगण  
अवोगडाए” सम० ६, परह० २, १,

अवोच्छिन्न. त्रि० ( अव्युच्छिन्न ) व्यवच्छेद  
रहित, पृथक्त्वरहित, छिन्न बिन्न नहीं थगेल;  
लुप्त नहीं पाडेल. व्यवच्छेद रहित; पृथक्त्व  
रहित. Not scattered, not separat-  
ed. दसा० ६, २; वव० ७, २२; सम० ३३,  
वेय० २, १८, भग० ७, १, ८, ५, पंचा०  
४, ८;

अवोच्छिस्तिण्य. पुं० ( अव्यवच्छिस्तिन-  
अव्यवच्छिस्तिप्रतिपादनपरो नयोऽव्यव-  
च्छिस्तिनय. ) द्रव्यारिक्त नय, वस्तुनु  
निरन्तर अस्तित्व अत वनार नय. द्रव्यास्तिक  
नय, वस्तु का निरन्तर अस्तित्व बताने वाला  
नय Logical standpoint showing  
the eternal and continuous  
existence of things नदी०—दृ.  
पुं० (—अर्थ ) द्रव्य, शाश्वत पदार्थ. द्रव्य,  
शाश्वतपदार्थ eternally existing  
substance; substance. नंदी०  
—द्वया स्त्री० (—अर्थता ) द्रव्यनी अपेक्षा  
द्रव्य की अपेक्षा standpoint of  
substance or matter नदी०

अवोच्छेद. पुं० ( अव्यवच्छेद ) व्यवच्छेद-  
पृथक्करणो अभाव. पृथक्करण का अभाव.  
Absence of separation भग०  
२०, ८;

अवोह पुं० ( अपोह—अपोहनमपोह ) निश्चय  
निश्चय. Decision; determination  
सम० १;

अवर्द्धभाव. पुं० ( अव्ययीभाव ) अव्ययी-  
भाव समास, समासनी अेक प्रकार अव्ययी-

भाव समास, समास का एक भेद Avyayi-  
bhāva compound, a kind of  
compound adverbial in mean-  
ing अणुजो० १३१,

अव्यवित्त त्रि० ( अव्यावित्त ) विभेप  
वगर्नु, स्थिर, विक्षिप्त वृत्तिवाणो नहीं.  
स्थिर, विक्षेप रहित, बिना विक्षिप्त वृत्ति का.  
Undistracted in mind, steady.  
दस० ५, १, २, उत्त० १८, ५०;

अव्यग त्रि० ( अव्यग्र ) स्वरथ, चिन्ता  
वगर्नु स्वरथ, चिन्ता रहित Calm, free  
from anxiety or distraction.  
उत्त० १५, ३; —मण त्रि० (—मन्स् )  
स्वरथ चित्तवाणो, प्रवृद्धित चित्तवाणो  
स्वस्थ चित्त वाला, प्रफुल्लित चित्त वाला.  
( one ) having a calm and un-  
distracted mind उत्त० १५, ३;

अव्यङ्गभाग त्रि० ( अपार्द्धभाग ) अर्धभाग.  
अर्ध भाग, आधा हिस्सा. A half, half.  
निसी० २३४,

अव्यक्त त्रि० ( अव्यक्त ) निर्देश-नाम, जति  
आदिथी कथन करवा योग्य नहीं नाम, जाति  
आदि के द्वारा कथन करने के अयोग्य.  
Indistinct, incapable of being  
indicated by name, kind etc.  
सूय० २, ६, ४७, विशेष० १६६; २१२; पिं०  
निं० ५६८, नंदी० ३५; प्रव० २६३, ( २ )  
ज्ञान अने उमरमा न्हाणो, आठ वर्ष  
सुधीनो आण्ड ज्ञान और उमरमे छोटा, आठ  
वर्ष की अवस्था तक का बालक immature  
in age and knowledge, a boy  
up to eight years of age. निसी० १६,  
२१, ( ३ ) अपत्त, छेद सूत्रना रहस्यनो  
अणु. अल्पज्ञ, छेद सूत्र के रहस्य को न जानने  
वाला. shallow in knowledge; igno-

rant of the real deeper meaning of Chheda Sūtra भग० २५, ७; (४) साधुनामां सदेह राभनार अव्यक्तवादी ओइ निहव साधुत्व में संदेह रखने वाला अव्यक्तवादी एक निहव a Nihnava known as Avyaktavādī, having misgivings about asceticism विशेष० २३००,—गम. त्रि० (—गम) नारावाने असमर्थ. भागने में असमर्थ incapable of making an escape (२) पुं० गमनतो अभाव गमन का अभाव absence of going away or escape. (३) अस्पष्ट गतिवालो अस्पष्ट गति वाला (one) without clearly defined motion; (one) with indistinct gait. सूय० १, १४, २;—दंसण. पुं० न० (—दर्शन—अव्यक्तमस्पष्ट दर्शनं स्वमार्थानुभवो यत्रासावव्यक्तदर्शनः) अस्पष्ट दर्शन—देखाव; स्वप्न दर्शनतो ओइ लेह. अस्पष्ट दर्शन; स्वप्न दर्शन का एक भेद. a dim, dreamlike sight or appearance; a variety of dreamy appearances भग० १६, ६;—रूव. त्रि० (—रूप—अमूर्तत्वादव्यक्तरूपमस्याऽसावव्यक्तरूप ) अव्यक्तरूपी ७५; आत्मा. अव्यक्तरूप वाला जीव; आत्मा. soul, so called because it is formless. “ अव्वत्तरूवं पुरिसं महंतं ” सूय० २, ६, ४७,—लिंग. न० (—लिङ्ग ) अव्यक्त लिङ्ग, निनइदिपतो वेप. जिनकल्पी साधु का वेप. the dress of a Jaina ascetic. प्रव० ७६३;

अव्वत्तवगसंचिय. पुं० ( अव्यक्तव्यकसञ्चित ) लुओ “अव्वत्त” शब्द देखो “अव्वत्त” शब्द.

Vide “अव्वत्त ” भग० २०, १०;

अव्वभिचारि पुं० ( अव्यभिचारिन् ) अव्यभिचारी हेतु; साध्यते छोड़ी भीजे न बनार हेतु अव्यभिचारी हेतु; साध्य

को छोड़कर अन्यत्र घटित न होने वाला हेतु. (In logic) the middle term that invariably accompanies the Sādhya (i. e. major term), invariably concomitant middle term. पंचा० २, ३७,

अव्वय त्रि० ( अव्यय ) नाशरहित; अप्रिउत. नाश रहित. अव्यय—अखरिउत. Indestructible नंदी० ५७; सम० १३; भग० ६, ३३; १८, १०, नाया० ५, सूय० २, ६, ४७, ज० प० १, १५; ( २ ) पु० आत्मा. आत्मा soul. “धुवे णियए सासए अक्खए अव्वए” भग० २, १, ( ३ ) आचारंग आदि पार अंग शास्त्र—प्रवयन. आचाराङ्ग आदि बारह अङ्ग शास्त्र. 12 Āṅgaśāstras viz Āchārāṅga etc नंदी०

अव्ववसिअ त्रि० ( अव्यवसित ) पराक्रम वगरनो; निश्चय वगरनो. पराक्रम रहित, निश्चयरहित. Not heroic, not decisive; not firm ‘तत्रो ठाणा अव्ववसियस्स अहियाए असुहाए अक्खमाए अणित्तेसाए’ ठा० ३, ४; अव्ववसण. पुं० ( अव्यवसन ) दोडोत्तर रीते पक्षतो १२ भो दिवस, पारसनुं नाम. पक्ष का बारहवौं दिन, द्वादशी का लोकोत्तर नाम The name of the twelfth day of a fortnight. जं० प० ७;

अव्वह. त्रि० ( अव्यय ) पीडारहित; देव वगेरेना उपसर्गथी न भीजे तेवो. पीडा रहित, देवादि के उपसर्ग से न डरने वाला Free from affliction; fearless of troubles caused by deities etc ( २ ) न० व्यथानो अभाव, शुद्ध ध्यानतु ओइ आलभ्यन व्यथा का अभाव; शुद्ध ध्यान का अवलम्बन absence of or freedom from mental pain; practice of pure concentration

on the soul ठा० ४, १, ओव० २०,  
भग० २५, ७,

**अव्यभिच-य** त्रि० (अव्यथित) उदात्त  
ह्रस्वाणो, धीर. उदार मन वाला, धीर  
Lofty or courageous in heart  
“अहिया से अव्यभिचो” दस० ८, २७,  
( २ ) जेने डोप दुःख न आपे ते जिसे कोई  
दुःख न दे वह (one) not troubled by  
anybody. भग० ३, २; जीवा० ३, ३,  
पचा० ५, १०६, जं० ५० २, २५;

**अव्याद्ध** त्रि० (अव्याविद्ध) अविपरीत,  
उलटु सुलटु नहि ते. अविपरीत, जो  
उलटा सुलटा न हो वह. Not topsy-  
turvy, not turned upside down  
अणुजो० १३,

**अव्याघात** पु० (अव्याघात) व्याघात-विघ्नो  
अभाव व्याघात-विघ्न का अभाव. Absence  
of obstacles, absence of obstruc-  
tion विशेष ५६६;

**अव्याण** त्रि० (आम्लान) थोडुं रिनग्ध अने  
पधारे इरमायेलु. कुछ निगव और अविक  
मुरमाया हुआ. More withered than  
flesh ओघ० नि० ४८८,

**अव्याबाह** न० (अव्याबाध-न विघ्नते व्याबाधा  
यत्र तदव्याबाधम्) जेमा द्रव्यथी शरीर पीडा  
अने लावथी मिथ्यात्वादि दोषनी आधा-पीडा  
नथी ओवु सुख-स्वास्थ्य गुणादिदने वन्दना  
इरती वधते पुछु ते जिसमें द्रव्य से शरीर  
पीडा और भाव से मिथ्यात्वादि दोष की पीडा  
नहीं ऐसा सुख-स्वास्थ्य गुरु आदि को वन्दना  
करते समय पूछना A question about  
health and comfort to a pre-  
ceptor etc at the time of saluta-  
tion प्रव० ६६, ( २ ) शरीरनी पीडा  
अभाव. शारीरिक पीडा का अभाव. absence  
of physical pain. ‘किंते भंते! अव्याबाह

सोमिलाजंमे वातियपित्तियसंभिमसन्निवाइय  
... ‘सरीरगया दोसा उवसता’ भग० १८,  
१०, नाया० १, ५: (३) विविध आधा-पीडा विना  
सुख विविध प्रकार की बाधाओं से रहित सुख  
happiness unalloyed with vari-  
ous kinds of troubles ‘अव्याबाहम्;  
व्याबाहेण’ भग० ५, ४, ११, ६, १२, नाया०  
५, ओव० १०, सम० ३; दसा० १०, ८, ६,  
आव० ६, ११, कप्प० २, १५, २७, ( ४ )  
व्याध्याधारहित सिद्धिस्थान, मोक्ष. बाधा रहित  
सिद्धिस्थान, मोक्ष absolution पञ्च०  
३६, परह० २, ३, ( ५ ) कृष्णराजनी वय्ये  
आवेद सुप्रतिष्ठाभविमानवासि लोकान्तिक  
देवतानी ओक जत कृष्णराजी के बीच में  
आये हुए सुप्रतिष्ठाभ नामक विमान वासी लोका-  
न्तिक देवों की एक जाति a kind of  
Lokāntika deities residing in  
the Supratisthābha Vimāna  
situated between the Kṛṣṇa-  
lājīs प्रव० १४६२, नाया० ८, भग० ६, ५,  
१४, ८, ठा० ६, परह० २, ३,

**अव्यामोह** पु० (अव्यामोह) व्यामोह-आति-  
नो अभाव आन्ति का अभाव Absence  
of delusion or infatuation. विशेष  
८०६,

**अव्याय** त्रि० (\*अम्लान-अम्लान) इरमायेल  
नहि न मुरमाया हुआ Not faded or  
withered नाया० १;

**अव्यावड** त्रि० (अव्यापृत) व्यापार इग्वाने  
अयोग्य वस्तु व्यापार करने के अयोग्य वस्तु.  
( A thing ) unfit for trade  
purposes “ सडिचपडिच न कीरइ जहिय  
अव्यावडं तय वत्थु ” वेय० ३, २७;

**अव्यावन्न** त्रि० (अव्यापन्न) लेदेल नहि, नाश  
पामेल नहि. न भेदा हुआ, नाश न पाया हुआ.



Not pierced; not destroyed. भग०  
१, ७;

अव्वाहय. त्रि० (अव्वाहत) न हृष्टुं ओलो.  
नहीं मारा हुआ. Not killed; not  
struck or beaten. नंदी०

अव्वाहयपुव्वावरत्त न० (अव्वाहतपूर्वा-  
परत्वं) पूर्वापर वाक्यनो विरोध न आवे, तेही  
रीते ओल्यु ते; सत्यवचनना ३५ अतिशय-  
मानो ओल्यु. पूर्वार्थ विरोध रहित बोलना;  
सत्य वचन के ३५ अतिशयो में से एक अति-  
शय. Speech without inconsisten-  
cy; one of the thirty-five Ati-  
śayas of truthful speech राय०  
सम०

अव्वाहिअ त्रि० (अव्वाहृत) न ओलावेअ  
विना बुलाया हुआ Not called or  
spoken to "अव्वाहिअ कसाइत्था"  
आया० १, ६, २, ११;

अव्वो.अ० (\*अव्वो-हा!) ओल्यु-शोड सूयड् अन्वय.  
खेद सूचक अव्यय An interjection ex-  
pressive of sorrow. सु० च० ७, ३०५;

अव्वोक-ग-ड. त्रि० (अव्वोकृत) ओल्युओ  
"अव्वोगड" शब्द. देखो 'अव्वोगड' शब्द  
Vide 'अव्वोगड.' वेय० २, १८; ३, २७;  
भग० १, ६;

अव्वोगडा. स्त्री० (अव्वोकृता) ओल्युओ 'अव्वो-  
गडा' शब्द. देखो "अव्वोगडा" शब्द. Vide  
'अव्वोगडा' दसा० ३, ३०; सूय० २, ७, ३८;

अव्वोच्छिअण. त्रि० (अव्वोच्छिअण) ओल्युओ वगरनुं;  
भाप विना: सु सीमा रहित; भाप रहित.  
Unlimited, immeasurable. आया०  
१, ४, ४, १३८; (२) अन्वयित; छेद  
द्वारा विना: अखण्डित, विना छेदा हुआ.  
whole, unbroken. आया० २, ७, २,  
१२०; जं० १० ३, ४२;

अव्वोच्छिअण. त्रि० (अव्वोच्छिअण) ओ  
तुष्टित न थतां निरन्तर प्रवाहरूपे आल्युं आवे  
ते. जो विना छेदे निरन्तर प्रवाहरूप से चला आ  
रहा हो वह. Continuing ceaseless-  
ly or without a break. विशेष० १४;  
६६१; (२) स्त्री० अन्वयितो अभाव.  
व्यवच्छेद का अभाव. absence of break  
or separation भग० ७, ३;—रायड.  
पुं० (-नयार्थ) ओल्युओ "अव्वोच्छिअणयड्ड"  
शब्द. देखो "अव्वोच्छिअणयड्ड" शब्द.  
Vide 'अव्वोच्छिअणयड्ड.' भग० ७, ३;

अव्वोगडा स्त्री० (अव्वोकृता) ओल्युओ "अव्वो-  
गडा" शब्द. देखो "अव्वोगडा" शब्द.  
Vide "अव्वोगडा." भग० ७, ३; १०,  
३, प्रव० ६०२;

✓ अस. धा० I. (अस्) ओल्युं; थुं. होना.  
To be.

अस्थि. अणुजो० ८१; आया० १, १, १, ३;  
वेय० १, ३३; दस० ५, २, २६;

संति. सूय० १, १, १, ७, आया० १, १, २, १५;

अति सूय० २, १, ६, आया० १, १, १, २;

मो व० उ० व० भग० १५, १;

सिआ. वि० ओव० ३८; उत्त० ६, ४८; आया०  
१, १, २, १३;

आसी. भू० आया० १, १, १, ३; उत्त० २५,  
१; अणुजो० १६;

आसिमो. उत्त० १३, ५;

✓ अस. धा० I. (अस्) ओल्युं; लोअन थुं.  
खाना; भोजन करना. To eat; to dine.  
असड्ड. पि० नि० ११४; सु० च० १०, ३७;

असड्ड स्त्री० (असृति) अन्नाज भापरांनुं ओल्यु  
भाप; हथेली के २५ भाप; पसल. अन्नाज  
नापने का एक भाप; हथेली के बराबर भाप.  
A measure of capacity for



corn equal to the palmful of the hand अणुजो० १३२,

**असहं** अ० ( असहत् ) बारंवार, अनेक बार. बार बार, अनेक बार. Often; frequently 'असहं तु मणुस्तेहि, मिच्छादंडो पजुजइ' उक्त० ६, ३०, भग० ६, ५, ३५, १, जीवा० ३, १, दस० १०, १, १३, आया० १, २, ३, ७७,

**असई.** स्त्री० ( असती ) कुलटा, असती कुलटा, व्यभिचारिणी. A strumpet; an unchaste woman प्रव० २६७; ( २ ) दासी. दासी a maid-servant भग० ८, ६;—**पोस** न० (—पोषण—असत्यो दुःशीलास्तासां दासीसारिकादीनां पोषणं पालन-मसतीपोषणम् ) हिंसक अथवा दुर्भर्मी आणुनिं व्यापार अर्थे पोषणुं करुं ते; श्रावकना सातमा व्रतनो छेदो अतिचार. हिंसक अथवा कुकर्मी जीव का व्यापार के लिये पोषण करना, श्रावक के सातवें व्रत का अन्तिम कर्मादानरूप अतिचार feeding and keeping a cruel animal for the purposes of trade, the Atichāra of the last vow of a layman, styled its fifteenth Karmādāna प्रव० २६७;—**पोषणया.** स्त्री० (—पोषणता—पोषण ) दासी, वेश्या वगैरेणुं पोषणु—पालन करुं ते; सातमा व्रतनो अेक अतिचार दासी, वेश्या आदि का पालन—पोषण करना, सातवें व्रत का एक अतिचार maintenance of maid-servants, prostitutes etc, an Atichāra ( partial violation ) of the seventh vow भग० ८, ५; उवा० १, ५१;

**असं** त्रि० ( असत् ) अविद्यमान, असत् अविद्यमान Not existing, not being. सूय० १, १, १, १६,

**असंक** त्रि० ( अशङ्क—न विद्यते शङ्का यस्य तदशङ्कम् ) नि शङ्क, शङ्का वगैरेणो. नि शङ्क; शंका रहित Having no doubt, free from doubt आया० १, ३, २, ८०;—**मण** त्रि० (—मनस्—अशङ्क मनो यस्यासावशङ्कमनाः ) क्षणी शङ्का न राखनार; तंपना क्षणो संदेह न करनार. फल की शंका न करने वाला; तप के फल का संदेह न करने वाला free from any doubt about the efficacy of penance आया० १, ३, २, ८०,

**असंकपिय.** त्रि० ( असङ्कल्पित ) आलोचन न करेख, मनमा संकल्प न करेख मन में सकल्प न किया हुआ. Not even thought of विशेष० २४४, भग० ७, १, **असंकमाण** व० कृ० त्रि० ( अशङ्कमान ) शंका न करतो शंका न करता हुआ Not doubting or suspecting नाया० १, **असंकि.** त्रि० ( अशङ्किन् ) शंका नहिं करनार. शङ्का न करने वाला One who does not suspect or doubt सूय० १, १, २, ६;

**असंकिय.** त्रि० ( अशङ्क्य ) शंका करवा योग्य नहिं, शंका नु स्थान नहिं शङ्का न करने योग्य, शंका का जिसमें स्थान न हो. Not worthy of suspicion. "असंकियाहं संकति, संकियाहं असंकियो" सूय० १, १, २, ६,

**असंकलित** त्रि० ( असंक्लिष्ट ) सङ्क्षिप्त-दुष्ट नहिं; अदुष्ट, विशुद्ध परिणामवालो दुष्ट परिणाम रहित. विशुद्ध परिणाम वाला Not wicked; not impure in mind "असंकलिटाहं वरथाहं" ओव० ३८; परह० २, १, —**आचार** त्रि० (—आचार—असंक्लिष्ट इहपरलोकाशंसारूपसंक्लेशविप्रमुक्त आचारो यस्य सोऽसंक्लिष्टाचारः ) नेने

आचार सर्व दोषरहित छे ते; सङ्ग दोषनो परित्याग करनार. सम्पूर्ण दोष रहित आचार वाला; समस्त दोषों का परित्याग करने वाला ( one ) who has abandoned all sorts of sins प्रव० ३, ४,

**असंकिलेस** पुं० (असंक्लेश) संक्षेपशून्य अभाव, परिणामनी विशुद्धि. सक्लेश का अभाव, परिणाम की विशुद्धि Absence of impurity of thought, purity of thought-activity. “दसविहे असंक्लेशे पश्यते, तजहा—उवहि असंक्लेशे जाव चरित्त असंक्लेशे” टा० १०,

**असंक्लेश** त्रि० (असंस्कृत) संस्काररहित, अलङ्काररहित संस्काररहित; अलङ्कार रहित Devoid of purifying impressions, not civilized, devoid of embellishments प्रव० १, २,

**असंख** त्रि० (असंख्य) संप्रयातीत, जेनी गणनी न थछ शङ्के तेनुं; असंख्यात संख्यातीत, जिसकी संख्या न की जा सके ऐसा. Incalculable, countless क० गं० ४, ४०, नाया० १, ७, क० प० १, ६,—**अंश** पुं० (अंश) असंख्यातमो अंश-भाग असंख्यातवों अंश-हिस्सा. an infinitesimal portion क० गं० ५, ७६,—**आउय** त्रि० (आयुष्क) असंख्यात वर्णना आयुष्यवाणा, जुगलीया वगेरे. असंख्यात वर्ष की आयु वाला; जुगलिया आदिक. having a life of countless years (e.g. the Jugaliyās etc.) प्रव० १३६६,—**कोडि** पु० (कोटि) असंख्य टैड असंख्य करोड countless crores, an infinite number of crores. प्रव०

६११,—**गुणिय** त्रि० (गुणित) असंख्य गणुं असंख्य गुणा. multiplied countless times, infinitely multiplied क० प० १, १६; प्रव० १०६५,—**बल** न० (बल) असंख्य गण, असंख्य-अपरिमित सेना. असंख्य बल, असंख्य-अपरिमित सेना a countless host, an innumerable army. सु० च० २, ६४;—**वास** त्रि० (वर्ष) असंख्यात वर्षना आयुष्यवाणा जुगलीया वगेरे असंख्य वर्षों की आयु वाला जुगलिया आदिक. having a life of countless years (e.g. the Jugaliyās etc.). क० प० ४, १६;

**असंखगुण** त्रि० (असंख्यगुण) असंख्यात गणुं, संप्रयाती गुणाय नहि तेनुं असंख्यात गुणा, संख्या से गुना न जा सके उतना. Of countless multiples. क० गं० ४, ४२,—**विरिय** त्रि० (वीर्य) असंख्यात गणुं वीर्य-योगवाणा असंख्यात गुण वीर्य-योग वाला ( one ) whose power extends to incalculable multiples, of incalculably multiplied power क० गं० ४, ४२, **असंखड** पु० (असंखड-असंस्कृत-मौखिक-कलह) मोढनो डुल्लो शब्दनो डल्ल वार्तों की लड़ाई शब्दकलह A wordy quarrel, quarrel by exchange of angry words गच्छा० ११७,

**असंखडि** पुं० (असंस्कृति-कलह) डल्ल; डुल्लो. झगडावाजी Quarrel, strife प्रव० ७६२.

**असंखतम** त्रि० (असंख्यतम) असंख्यातमो. असंख्यातवों. Infinitesimal. क० प० १, ६;

**असंखय** त्रि० (असंस्कृत) संस्कार थछ शङ्के नहि तेनुं; दासना पासवानी भेडे दुटुं थछ पण

रीते संधाय नहि तेनुं जिसका संस्कार न हो सके वह, काच के बर्तन के समान टूटने पर पुन न जोड़ा जा सके वह Incapable of being restored to its original condition like a vessel of glass when it is broken “असंख्यं जीविय मा पमायए, जरोवणीयस्स हूं नत्थि ताणं” उत्त० ४, १; (२) उत्तराध्ययन सूत्रनामोथा अध्ययननु नाम : उत्तराध्ययन सूत्र के चौथे अध्याय का नाम the name of the 4th chapter of Uttarādhyayana अणुजो० १३१,

**असंख्य** त्रि० (असंख्य) संख्यातीत, जेनी गणुत्री न थछ शके तेहला, असंख्यात संख्यातीत; जिसकी गिन्ती न हो सके, असंख्यात Innumerable; countless उत्त० ६, ४८;

**असंखिज्ज** त्रि० (असंख्येय) जेनी संख्या थछ न शके ऐयुं, संख्याते उलंघी गयेनु; संख्यातीत. जिसकी संख्या न की जा सके वह, संख्यातीत Innumerable, countless अणुजो० ४८, सम० १, क० गं० ५, ६५, ज० प० २, १८, ५, ११७, कप्प० २, २७, —अंस पुं० (—अश) असंख्यातमे लाग असंख्यातवो भाग an infinitesimal portion क० ग० ५, ६५, —**पणसिअ** पु० (—प्रदेशिक) असंख्यप्रदेशिक रक्षध, असंख्यात परमाणु मणी अनेल ऐक थीज असंख्य प्रदेशिक स्कंव; असंख्यात परमाणुओं से मिलकर बनी हुई एक वस्तु. a thing made up of countless atoms अणुजो० १३२, —**समयाहिय** त्रि० (—समाधिक) असंख्यात समये क्षरी अधिष्ठ-वधारे. असंख्यात समय की अपेक्षा अधिक exceeding by an incalculable period of time भग० १, ५,

**असंखियभाग** पु० (असंख्यभाग) असंख्यातमे लाग असंख्यातवो भाग. An infinitesimal portion. क० प० १, १०; **असंखियमित्त** त्रि० (असंख्यमात्र) असंख्यात परिमाणवाणु असंख्यात परिमाण वाला. Occupying an infinitesimal portion of space. क० प० १, ८, **असंखेज्ज** त्रि० (असंख्येय) लुओ ‘असंखिज्ज’ शब्द देखो “असंखिज्ज” शब्द Vide “असंखिज्ज” भग० १, ५, २, ८, १०; ३, १, ५, ७, १३, १, १६, ८, १६, ७, २५, ३, ३२, १; ४१, ३, ठा० १, १, ज० प० २, ३१, नंदी० १०, विशेष० १६६, —काल. पुं० (—काल) असंख्यातो डाल; पल्लोपम, सागरोपम, उत्सर्पिणी, अवसर्पिणी वगैरे असंख्य समय, पल्लोपम, सागरोपम, उत्सर्पिणी, अवसर्पिणी वगैरह incalculable period of time. भग० ५, ७, ज० प० २, ४२, —**कालसमय** पु० (—कालसमय) असंख्यात डालरूप समय असंख्यात कालरूप समय. period of time incalculable in its extent. ठा० २, २, —**कालसमयद्वइ** पु० (—कालसमयस्थिति) असंख्याता डालसमयनी स्थितिवाणा अव; नारकी आदि असंख्यात समय की स्थिति वाला जीव, नारकी आदि. souls like Nārakī etc whose life (in hell etc) extends over incalculable periods of time “दुविहा गेरइया पणत्ता, तंजहा-सखेज्जकालसमयद्वइया चेव असंखेज्जकालसमयद्वइया चेव” ठा० २, २, —**जीविय** पु० (—जीवित) असंख्याता अव जेमा छे ते. जिसमे असंख्य जीव हैं वह (anything) containing countless lives “से किं त असंखेज्जजीविया ? असंखेज्जजीविया दुविहा पणत्ता, तंजहा-पणद्वइया बहुद्वइया य’

भग० ८, ३; ठा० ३, १; पन्न० १;—  
**दीवसमुद्द.** पुं० (—दीपसमुद्द) असंख्याता  
 द्वीप અને સમુદ્ર. असंख्यात द्वीप और  
 समुद्र. countless islands and  
 oceans. भग० ६, ८; जं० प० १, १४,  
 —**पप्साहिय** त्रि० (—प्रदेशाधिक) असं-  
 ख्याता प्रदेशे डरी अधिक् असंख्यात प्रदेशों  
 की अपेक्षा से अधिक exceeding by  
 incalculable units of space. भग०  
 १, ५;—**पप्सिअ-** पु० (—प्रदेशिक)  
 लुओ “असंखिज्जपप्सिअ” शब्द देखो  
 “असंखिज्जपप्सिअ” शब्द vide  
 “असंखिज्जपप्सिअ”. भग० २, १;—**पप्-  
 सोगाढ.** त्रि० (—प्रदेशावगाढ) आकाशना  
 असंख्याता प्रदेशने अवगाहीने रहैल  
 आकाश के असंख्य प्रदेशों को अवगाहन  
 करके ठहरा हुआ interpenetrating  
 the incalculable units of space.  
 भग० २, १;—**पप्सिये** पुं० (—प्रदेशिक)  
 लुओ “असंखिज्जपप्सिअ” शब्द देखो  
 ‘असंखिज्जपप्सिअ’ शब्द. vide “असंखिज्ज-  
 पप्सिअ.” भग० १८, ६;—**विट्थुड.** त्रि०  
 (—विस्तृत) असंख्याता लोन्नतना विस्तार-  
 वाला; असंख्यात लोन्नतनुं लावुं અને પહોળું.  
 असंख्यात योजन के विस्तार वाला असंख्यात  
 योजन का लंबा और चौड़ा. of the  
 length and breadth of countless  
 yojanas भग० ६, ५, जीवा० ३;—**सम-  
 यसिद्ध.** पुं० (—समयसिद्ध) नेने सिद्ध  
 થયાને असंख्याता समय થઇ ગયા છે તે  
 जिसे सिद्ध हुए असंख्य समय हो गया है वह  
 one after whose Siddhahood  
 countless units of time have  
 elapsed पन्न० १;

**असंखेज्जइ.** त्रि० (असंखेय) लुओ “अत-

खिज्ज” शब्द. देखो “असंखिज्ज” शब्द.  
 Vide “असंखिज्ज” भग० १८, ३;

**असंखेज्जइगुण.** त्रि० (असंखेयगुण) असं-  
 ख्यातगणुं, એકને અસંખ્યાતે ગુણીએ તેટલું.  
 एक को असंख्यात से गुणा करने के समान.  
 Multiplied innumerable times.  
 भग० २५, ६,—**हीण** त्रि० (—हीन)  
 असंख्यात गुणुडीणु; એક ખીળની અપેક્ષાએ  
 असंख्यात गुणु ओछुं. असंख्यात गुण हीन,  
 एक दूसरे की अपेक्षा असंख्य गुणा—भाग हीन.  
 falling short to an incalculable  
 extent. भग० २५, ६;

**असंखेज्जइभाग.** पुं० (असंखेयभाग) असं-  
 ख्यातभो लाग—અંશ, એક વસ્તુના અસંખ્યાત  
 अंश डरीये तेमानो એક અંશ असंख्यातवाँ  
 भाग, एक वस्तु के असंख्यात भागों में से एक  
 भाग. An infinitesimal part of a  
 thing. भग० १, १, ५, २, ७; १०;  
 ५, ७, ८, ६; १८, ३, २४, १; ३६, १;  
 —**हीण** त्रि० (—हीन) असंख्यातभो लाग  
 હીન—ઓછું. असंख्यातवाँ भाग हीन—कम.  
 less by an infinitesimal part.  
 भग० २५, १; ६,

**असंखेज्जग** त्रि० (असंखेयक) असंख्य.  
 असंख्य. Countless, innumerable.  
 क० प० १, ६,—**पप्स.** पु० (—प्रदेश)  
 असंख्यात प्रदेश. असंख्यात प्रदेश. an infi-  
 nitesimal particle of matter  
 occupying a unit of space. क०  
 प० १, ६;

**असंखेज्जगुण** पुं० (असंखेयगुण) असंख्यात  
 ગુણ; અસંખ્યાત ગણ. असंख्य गुणा, असंख्यात  
 गुणा Multiplied innumerable  
 times. भग० ५, ७, १६, ३, २०,  
 १०, २५, १; ४, ६;—**परिहीण.** त्रि०

(-परिहीण-असंख्येयगुणेन परिहीणो य स तथा) असंख्यातगुणुडीणु, असंख्यात गणु ओष्ठु असंख्यात गुण हीन, असंख्यात गुणा कम. falling short to an incalculable extent. ओव०—हीण त्रि० (-हीन) लुओ। “असंखेज्जगुणपरिहीण” शब्द. देखो “असंखेज्जगुणपरिहीण” शब्द vide “असंखेज्जगुणपरिहीण.” भग० २५, १;

असंखेज्जभागमेत्त. पुं० (असंख्येयभागमात्र) असंख्यातमे। भागमात्र असंख्यातवो भाग मात्र. The infinitesimal part of a thing. भग० ६, ५,

असंखेज्जहा. अ० (असंख्येयधा) असंख्या-  
ता प्रकारनु असंख्यात प्रकार का. In  
countless varieties. भग० १२, ४;

असंग पुं० (असङ्ग-न विद्यते सङ्गो मूर्तत्वा-  
वस्य स तथ<sup>१</sup>) परिग्रह तथा कषायनी उपाधि-  
रहित आत्मा परिग्रह तथा कषायरूप  
उपाधि से रहित आत्मा. Soul free  
from the troubles of worldly  
possessions and impure  
passions. ओव० (२) मोक्ष मोक्ष. ab-  
solute पञ्च० २, (३) सिद्ध भगवान्;  
मुक्त आत्मा सिद्ध भगवान्, मुक्त आत्मा.  
the soul that has obtained  
salvation; a Siddha ओव० (४)  
त्रि० आद्य अने आभ्यन्तर सगरहित बाह्या-  
भ्यन्तर ससर्ग से रहित free from  
physical and mental attach-  
ment. पञ्च० २;

असंगह. पुं० (असंग्रह) संग्रह न करना.  
संग्रह न करने वाला. (One) who does  
not collect विशेष ५०६, (२)  
विवाहने अभाव. विवाह का अभाव. ab-  
sence of marriage, celibacy.

पच्छाविय तं कज्जं असंगहो माय नासिज्जा”  
पिं० नि० ५०६,—रुह. पुं० (-रुचि-न  
विद्यते संग्रहे रुचिर्यस्य स) उपगणु आदिनी  
रुचि न करना; दोल वृत्तिवाणे नहि.  
उपकरण आदि की रुचि न करने वाला;  
लोभवृत्ति रहित one free from  
the desire of such materials as  
alms-bowl etc. परह० २, ३;

असंगहिय. त्रि० (असङ्गहीत) आश्रय  
विनाश, डोपथी संग्रह कराने नहि.  
आश्रय रहित; किसीके द्वारा भी जिसका  
संग्रह न किया गया हो वह. Not  
supported or harboured by  
anybody. ठ० ८,

असंघयण. न० (असंहनन) पणू अणुल नाराय  
आदि संघयणुने अभाव वज्र, ऋषभ, नाराच  
आदि संहनन का अभाव Absence of such  
physical constitutions of bones  
as Vajra, Rishabha, Nārācha  
etc (adamantine structure)  
भग० १, ५,

असंघयणि. त्रि० (असंहननिन्) संघयणु  
वगर्णे, नारकी, देवता प्रभृति संहनन रहित;  
नारकी, देव आदि. Having no phy-  
sical constitution consisting of  
bony joints like adamant  
bony joints etc, Nārakī, gods  
etc. भग० १, ५, २४, १२,

असंजम पुं० (असंयम) संयमने अभाव;  
पापनी प्रवृत्ति, प्राणतिपात आदि सावध  
अनुष्ठान. संयम का अभाव, पाप की प्रवृत्ति,  
प्राणतिपात आदि सावध अनुष्ठान. Ab-  
sence of ascetic conduct, sinful  
conduct, e. g. killing injuring  
etc आव० ४, ७, परह० १, ३; उत्त० ३१,



२; भग० २, ५; २५, ६; ७; दस० ५, १, ६६, ६, ५१; प्रव० १३०७, ( २ ) संयमनी विराधना संयम की विराधना-नाश destruction of right or ascetic conduct. एगिंदियाणं जीवा समारंभ माणस्स पंचविहे असंजमे कजइ ” ठा० ५, २; ७, १; —कर त्रि० (—कर) असं-जम डरनार-सेवनार; सावध प्रवृत्ति डरनार, असंयमी; पाप करने वाला. (one) acting sinfully; (one) acting against the rules of right conduct. दस० ५, १, २६,—जोग पु० (—योग) सावध जोग-पापनो व्यापार. पापकर्म sinful operation. पिं० निं० ४६०;

असंजय. त्रि० ( असंयत ) लुओ 'अविरय' शब्द. देखो 'अविरय'शब्द Vide 'अविरय' ओव० ३८; सूय० १, १, २, २८, आया० २, १, २, १३; ठा० ४, ४, भग० १, १; २; ६, ३; १७, २; नाया० १६; दस० ७, ४७, नदी० १७, प्रव० ८६३;—पूया त्री० (—पूजा) असंजय-अविरति-ब्राह्मण आदि मिथ्या-त्विनी पूजा, के जे नवमा अने दशमा तीर्थ-डरना आंतराभां आलु थछ डती; दश अचछेराभानो अछे अचछेरे अविरती-ब्राह्मण आदि मिथ्यात्वियों की पूजा, जो नवें और दसवें तीर्थकर के बीच के समय में शुरू हुई थी, दस अचछेरो में से एक अचछेरा-आश्रय. worship done of Brāhmanas and other heretics, not accompanied with restraint of senses etc. It commenced in the time that passed between the ninth and the tenth Tirthankaras कप्प० २;—भवियद्वचदेव. पुं० (—भव्य-द्रव्यदेव) अवल्य छव तथा चारित्र-यन्त्र लय छव, के जेने आलु अनुप्यवन

पूरु डरी देवतापणे उपरुं छे ते अभव्य जीव तथा चारित्रशून्य भव्य जीव. जिसे वर्तमान मनुष्यपर्याय पूराकर देवपर्याय में उत्पन्न होना है. an Abhavya soul and a Bhavya soul without right conduct to be born amongst gods after their death in their human existing birth. भग० १, २,

असंजल. पुं० ( असज्जल ) भरतक्षेत्रनी आलु अवसर्पिणीना आइभा अनंतनाथ स्वामीना समझादीन-धरवत क्षेत्रना तीर्थ-डर. भरतक्षेत्र की वर्तमान अवसर्पिणी के आठवें तीर्थकर अनन्तनाथस्वामी के समकालीन ऐरावत क्षेत्र के तीर्थकर. The Tirthankara of Iravata Ksetra, the contemporary of eighth Anantanātha Svāmī of the present Avasarpinī of Bharata Ksetra. सम०

असंजोएत्ता त्रि० ( असंयोजयितृ ) संयोग न डरावनार. संयोग न कराने वाला (One) who does not cause union with “ सौयामएणं दुक्खेणं असंजोएत्ता भवइ ” ठा० १०;

असंजोगि त्रि० ( असंयोगिन् ) संयोगरहित. संयोग रहित. Devoid of union with. (२) पुं० सिद्ध ७४. सिद्ध जीव. a soul that has attained to salvation. ठा० २, १;

असंठाचिय. त्रि० ( असंस्थापित ) संस्था-वगरनु सस्कार रहित Devoid of ceremony performed or impressions made. नदी० ८६;



**असंत** त्रि० ( असत् ) अविद्यमान; भ्रूट्, असत् अविद्यमान; भ्रूट्, असत् Non-existent, untrue अणुजो० १४६, उत्त० ६, ५१, पचा० १, ३५, ६, २१, १२, ३८, प्रथ० १२१३,

**असंत.** त्रि० ( अशान्त ) शान्त न थयेत्, क्रोधादिभ्यो न उपशमावेत् अशान्त, शान्ति रहित, क्रोधादि सहित With passions unassuaged परह० १, २,

**असंतश्च.** पुं० ( असत्क ) असत्, अविद्यमान असत्, अविद्यमान Non-existent सूय० २, ४, २,

**असंतक.** न० ( असत्क ) भ्रूट्, असत्य भ्रूट्, असत्य A lie, falsehood परह० १, २, ( २ ) अशुंदर सुन्दरता रहित devoid of beauty परह० १, २,

**असंतक** न० ( अशान्तक ) जेना क्रोधादि कषाय शान्त थया नथी ते जिसके क्रोध आदि कषाय शान्त न हुए हो वह ( One ) with unassuaged passions like anger etc परह० २, ३;

**असंतय** न० ( असन्तत ) रागादिनी प्रवृत्ति रागादि की प्रवृत्ति Active condition of attachment, passion etc परह० १, २;

**असंतोष** पुं० ( असन्तोष ) असन्तोष, परिग्रह तु अक्षे नाम असन्तोष, परिग्रह का एक नाम, Discontentment. परह० १, ५,

**असंथड.** त्रि० ( असंस्तृत ) अशक्त, असमर्थ, निर्वाह पुरतुं नहि अशक्त, असमर्थ, निर्वाह के अयोग्य. Insufficient, incapable, powerless “ असंथडा इमे अवा ” दस० ५, ३३, आया० २, ४, २, १३८,

**असंथडिअ.** त्रि० ( असंस्तृत ) असमर्थ अशक्त असमर्थ, अशक्त Incapable; powerless वेय० ५, ८,

**असंथरंत** व० कृ० त्रि० ( असंस्तरत् ) निर्वाह पुरतुं न थतां निर्वाह योग्य न होता हुआ. Insufficient for meeting the required purpose ओष० नि० १८१, निसी० १०, ४५,

**असंथरमाण.** व० कृ० त्रि० ( \* असंस्तरमाण-असंस्तरत् ) जुओ “ असंथरत ” शब्द देखो ‘ असंथरंत ’ शब्द Vide “ असंथरत ” ओष० नि० १८१, निसी० १०, ४५,

**असंथुय** त्रि० ( असंस्तृत ) असंयुक्त, संयुक्त नहि असंबद्ध, जो संबद्ध न हो वह Irrelevant. “ असंथुर्या णो वित्तिगिच्छतिन्ना ” सूय० १, १२, २;

**असंदिद्ध** त्रि० ( असन्दिग्ध ) सन्देह रहित सन्देह रहित Devoid of doubt भग० २, १, ६, ३३, ११, ११, नाया० १; ६, ठा० ६, १, दस० ७, ३, दसा० ४, ४१, ५२, निर० १, १; कप्प० १, १२, ३, ५५,—**फुडवयण** त्रि० (—स्फुटवचन) सन्देह रहित स्फुट वचन बोलने वाला (one) who speaks clear words devoid of doubt दसा० ४, २७,—**वयणया** स्त्री० (—वचनता) सन्देह रहित स्पष्ट वचन बोलना speaking clear words devoid of doubt ठा० १, १,

**असंदिद्धत्त** न० ( असन्दिग्धत्व ) सन्देह न डरवे। ते, निःशङ्कपणु; सत्यवचनने ११ भो अतिशय सन्देह न करना, निःशङ्कपणा, सत्य वचन का ग्यारहवाँ अतिशय. Freedom from doubt, eleventh Atisāya of true speech. सम० ३६, ओव० राय०

**असंदिद्धा.** स्त्री० ( असन्दिग्धा ) शंका रहित स्फुट भाषा Clear speech devoid of doubt. दस० ८, ४६,  
**असंदीर्ण** त्रि० ( असन्दीर्ण ) पंद्रह दिवस सुधी  
 जगमा मुसाक्षरी करी पडे ओटला छेडानुं  
 स्थान, सिंहलद्वीप आदि इतनी दूरी का  
 स्थान, जिसके लिये पन्द्रह दिनों तक जल मे  
 यात्रा करना पड़े, सिंहलद्वीप वगैरह ( A  
 place ) requiring fifteen days' voyage to reach, Simhala  
 Dvīpa etc आया० १, ६, ३, १८७,  
 ( २ ) समुद्री वेण अये पणु पाणीमां  
 दुमे नहि तेवे द्वीप. समुद्र की भर्ती-चढ़ाव  
 के समय भी पानी में न डूबने वाला द्वीप  
 ( island ) not covered under  
 water even by the waters of  
 the tide जं० प०

**असंप्रयोग** पुं० ( असम्प्रयोग ) विप्रयोग,  
 अयोग; संयोगतो अभाव. संयोग का  
 अभाव, वियोग. Separation; absence  
 of union भग० २५, ७;

**असंप्रगह** पु० ( असम्प्रग्रह-समन्तात् प्रकर्षण  
 जात्यादिप्रकृतलक्षणेन ग्रहणमात्मनोऽवधारणं  
 सम्प्रग्रहः, तदभावोऽसम्प्रग्रह ) नति  
 आदिना मदनो अभाव. जाति आदि के मद  
 का अभाव. Absence of pride of  
 caste etc ठा० ८,

**असंप्रगहिय.** त्रि० ( असंप्रगृहीत ) मान-मद  
 रहित मान रहित Free from pride  
 or conceit दसा० ४, १२, १३; १४,

**असंपत्त.** त्रि० ( असम्प्राप्त ) असंलग्न-लागेल  
 नहि; वणगेल नहि न लगा हुआ, न मिला  
 हुआ. Not joined or attached राय०  
 ६३, ( २ ) प्राप्त नहि थयेल, न पहुँचेल.  
 अप्राप्त; न पहुँचा हुआ not obtain-  
 ed, not reached. पञ्च० १; १६;

ओव० २२; नाया० १; १८, भग० ३,  
 २; ८, ६; ७; १४, १; ( ३ ) स्त्री आदिना  
 संगम थया पडेदानी कामनी दशा, स्त्रीनुं  
 चिन्तन-स्मरण वगेरे स्त्रीसङ्गम होने के पूर्व  
 की कामदशा; स्त्री का चिन्तन आदि.  
 mental condition of a lustful  
 person before the actual fruition  
 of desire, e g. meditating upon  
 a woman etc. प्रव० १०७७,

**असंपहिद्व** त्रि० ( असम्प्रहृष्ट ) पीनने पिझा-  
 रवाभां हर्ष वगरेतो. दूसरे को धिक्कार देने में  
 हर्ष न करने वाला. Not rejoicing in  
 hating others. "अवगमये असंपहिद्वो  
 जे स भिक्खु" उत्त० १५, ३;

**असंपुडिय** त्रि० ( असम्पुटित ) परस्पर न  
 भगेल, जुड़ुं. परस्पर न मिला हुआ, जुला  
 हुआ. Not mutually attached or  
 joined. नाया० १; २;

**असंपुरण.** त्रि० ( असम्पूर्ण ) अपूर्ण, सम्पूर्ण  
 नहि. अपूर्ण, अधूरा. Incomplete;  
 imperfect. नाया० १, भग० २५, ७;  
 प्रव० ५३५, पंचा० १४, ४८,

**असंबद्ध** त्रि० ( असम्बद्ध ) सम्बन्धरहित;  
 शब्दादि भोगमां सम्बन्ध विनातो; परिग्रह  
 आदिमां अभूर्जित सम्बन्ध रहित; शब्दादि  
 भोग में बिना सम्बन्ध वाला, परिग्रहादिक में  
 मूर्च्छा रहित. Not connected, not  
 attached to worldly possessions  
 and pleasures "मुहाजीवी असंबद्धो,  
 हविजा जगणिसिण" दस० ८, २४; भग०  
 १२, ६; विशेष० २०८;

**असंबुद्ध.** त्रि० ( असम्बुद्ध ) अनिष्ठ सम्बुद्ध-  
 सम्बन्धवालो; तत्त्ववेत्ता नहि, सम्बन्ध-  
 वालो नहि; दाधारीगो समक रहित; ज्ञान  
 रहित; तत्वो को न जानने वाला. One

lightened; ignorant अंत० ६, १५,  
उत्त० १, ३;

**असंभंत.** त्रि० ( असम्भ्रान्त ) भ्रमरहित,  
भ्रान्तिरहित भ्रम रहित. Free from  
delusion. कप्प० १, ५; दस० ४, १; ५,  
१, १, नाया० १, ८, ६; भग० २, ५; विवा०  
१, १, राय० ३३,

**असंभव** पुं० ( असम्भव ) न होय, असम्भा-  
वना असंभव, होने की आशा तक का अभाव  
Impossibility; improbability पि०  
नि० भा० २०; नाया० ३,

**असंभवि** त्रि० ( असम्भविन् ) जेने क्षयरे  
पणु सम्भव न होय ते, शून्य जिसका कभी  
अस्तित्व न हो वह; शून्य Impossible  
at all times, non-existent. "जोया  
वीस असंभविणो" प्रव० १३१०, क० गं०  
४, ७१;

**असंमुच्छिन्ना** सं० कृ० अ० ( असमुच्छिद्य )  
उच्छेदन क्षया विना. विना उच्छेदन किये  
Without eradicating, without  
destroying सूय० २, ४, १०;

**असंमुच्छिद्य.** त्रि० ( असम्मुच्छिद्य ) मूर्च्छा न  
पायेस मूर्च्छा रहित, मोह रहित Not  
enticed, not infatuated भग० ७, १,

**असंमोह.** त्रि० ( असम्मोह ) जेने देवता  
वगेरेनी मायाथी मोडु लागे नहि ते. देवादिक  
की माया से मोहित न होने वाला ( One )  
not thrown into delusion by  
the supernatural powers of  
gods etc ठा० ४, १, भग० २५, ७;  
( २ ) पुं० मूढतासे अभाव, शुक्लध्यान  
में लक्षण मूढता का अभाव; शुक्लध्यान  
का एक लक्षण absence of delusion,  
a mark of pure concentration.  
श्रव० २०;

**असंमोहय.** त्रि० ( असम्मोहक ) उपयोगशून्य;  
अनुपयुक्त. उपयोग शून्य, उपयोग रहित.  
Devoid of attention towards  
the soul भग० ६, ६;

**असंलप्य** त्रि० ( असंलप्यं ) जोड़ी न शक्य  
तेवुं; वाणीगोचर न थाय तेवुं कहा न जा  
सकने वाला, वचनातीत Inexpressible;  
incapable of utterance. अणुजो०  
१५०;

**असंलोक्य.** पुं० ( असंलोक ) अप्रकाश.  
प्रकाश का अभाव. Absence of light;  
darkness आया० २, १०, १६७, ( २ )  
त्रि० अप्रकाशवाणुं, अधारावाणु प्रकाश  
रहित स्थान, अंधेरा वाला dark, full of  
darkness आया० २, १०, १६७, ( ३ )  
न० जया हर रहुल माणुसनी नजर न पडे  
तेवु स्थान ऐसा स्थान, जो दूरी पर के मनुष्य  
को न दिख सके. a place not within  
range of sight from a distance.  
उत्त० २४, १६; प्रव० ७१६,

**असंघट्टया** स्त्री० ( असम्पत्तया ) अरस परस  
अनायाधपणुं, अर्थात् ओड किया भीछ  
क्रियाने आधा-विघ्नरूप यथा न पाये ते.  
परस्पर कृतवाधा रहितता, अर्थात् एक क्रिया  
का दूसरी क्रिया को बाधा न होना.  
Non-collision of one per-  
formance with another;  
harmony. विशेष० ३४७१;

**असंवर.** पुं० ( असवर-सवरणं सवर, न  
संवरोऽसंवरः ) आश्रय, संवरने अभाव  
आश्रय; सवर का अभाव. Absence of  
stoppage of karma, influx of  
Karma. "पंचविहे असवरे पणुत्ते, तं-  
जहा-सोइदियअसंवरे" ठा० ५, २; "छविहे  
असंवरे पणुत्ते, तंजहा-सोइदियअसंवरे  
फासइदियअसंवरे" ठा० ६;

असंवलिय. त्रि० ( असंवलित ) न वण्ण  
न मोढा-वल्याकार किया हुआ Not  
curved or bent. तंडु०

असंविग्ग. त्रि० ( असंविग्ग-न संविग्गोऽसंवि-  
ग्ग ) शिथिल आचारवाणा; पासत्था आदि  
शिथिल आचार वाला. Lax in spiritual  
discipline, Pāsattthās etc  
प्रव० ७१७, — पक्खिय. पु० ( -पाक्षिक )  
मुसाधुनी लुगु'सा डरनार, पासत्था आदिने  
पक्षपाती मुसाधु की जुगुप्सा-निन्दा करने वाला  
( one ) who is partial to well  
behaved Sādhus etc प्रव० ७१७;

असंविभाग पु० ( असंविभाग ) संविभागने  
अभाव, सरभा भाग न पाडवाते. संविभाग-  
समान भाग का अभाव Unequal divi-  
sion दस० ६, २, २३;

असंविभागी पु० ( असंविभागीन् ) आहारा-  
दिभूमा सरभो भाग न डरनार, भीजनी  
साथे विपमता राखनार. आहारादिक में एक  
समान भाग न करने वाला ( One ) not  
dividing equally, e g food etc  
“ असंविभागी न हु तस्स मोक्खो ” दस०  
६, २, २३, उक्त० ११, ६;

असंवेड त्रि० ( असंवृत ) पापना निरोध-  
रहित ध्रियनिग्रहथी रहित, जेणे आश्रयना  
दार रोड्या नथी ते पाप के विरोध से रहित,  
इन्द्रियनिग्रह से रहित; आश्रय के द्वारों को न रोकने  
वाला Unrestrained in senses,  
( one ) who has not stopped  
the gates of Āsrava. भग० १, १;  
७, १; २, ८, १६, ६, ओव० ३८; ( २ )  
अश्रुश-नियंदातो अेड प्रकार. लोड जणु तेवी  
'रीते प्रगटपणु दोष लगाडी संयमने भलीन  
'डरे ते 'वकुशनिचज्ज' दोष का एक प्रकार,  
जिनमें कुलनखुल्ला दोष लगाकर संयम को

मलिन किया जाय an ascetic who  
sullies his right conduct openly,  
a variety of Bakuśa Nīyan-  
ga. प्रव० ७३१, — वउस. ( -वकुश )  
प्रगट रीते दोष लगाडनार साधु प्रकटतया  
दोष लगाने वाला साधु. an ascetic  
openly ( shamelessly ) incurring  
sin ठा० ५, ३, भग० २५, ६,

असंसट्ट त्रि० ( असंसृष्ट ) भीजनी पिंड-आहारमां  
नहि भणुं दूनरे के आहार में न मिला हुआ  
Not mixed up with another's  
food वेय० २, १३; ( २ ) नहि भरडाअेल,  
नहि लेपाअेल न लिगा हुआ not  
bedaubed; not smeared ओव०  
१६, दस० ५, १, ३५, — चरअ-य. पु० स्त्री०  
( -चरक ) विना भरडाअेल हाथे अपाय तेज  
लेवुं अेवी गवेण्णा डरनार, अलिग्रहविशेष-  
धारी साधु विना लिपे हुए हाथों से लेने की  
प्रतिज्ञा करने वाला साधु; अभिग्रहविशेषधारी  
साधु a Sādhū who has made up  
his mind to accept only that  
( food ) which is given with  
an unsmeared hand ओव० १६,

असंसट्टा. स्त्री० ( असंसृष्टा ) हाथ तथा पात्र  
न अग्रय तेवी रीते भिक्षा लेवी ते, पिण्डे-  
प्रणतो पडेले प्रधार. इस प्रकार से भिक्षा  
लेना जिससे हाथ तथा पात्र लिप्त न हो, पिण्ड-  
पणा का पहिला भेद. Accepting food  
without smearing the hand or  
the alms-bowl, the first point  
of carefulness in begging food  
प्रव० ७४६;

असंसण न० ( -आशंसन-आशंसव ) विनाश.  
विनाश Destruction, ruin पण० १, ३,

असंसक्त त्रि० ( असंसक्त ) ससर्ग-संयंघ-  
परिग्रह-रहित सम्बन्ध रहित, जान पहिचान  
रहित Having no contact or con-  
nection. उक्त० २, १६, २५, २७, ( २ )  
अप्रतिषिद्ध, आसक्ति-भ्रमत्व-रहित आसक्ति  
रहित; ममत्व बिना का. unattached  
to worldly things दस० ५, १, २३,  
— ८, ३२, पराह० २, ३,

असंसार. पुं० ( असंसार ) संसार-तो अभाव,  
भोक्ष संसार का अभाव, मोक्ष. Absolution;  
—salvation. भग० १, ८; जीवा० १,  
—समावर्ण पु० (—समापन्न—न संसारोऽ-  
संसारो मोक्षस्त समापन्नोऽसंसारसमापन्न. )  
संसार-बिना-भोक्ष पाप-रहित, मुक्त, छुट, सिद्ध  
मोक्ष गया हुआ जीव, मुक्त जीव, सिद्ध.  
a liberated soul पञ्च० १, ठा० २, १,

असंस्कृत त्रि० ( असंस्कृत—न विद्यते संस्कृ-  
तं संस्कारो यस्य सोऽसंस्कृत ) संस्कार-  
रहित संस्कार रहित Unrefined, un-  
enlightened. पराह० १, १, —मसंस्कृत  
त्रि० (—असंस्कृत) अत्यन्त संस्कार-रहित,  
मुद्गल संस्कार-रहित सर्वथा संस्कारों से  
रहित altogether unrefined or  
unenlightened पराह० १, ४,

असत्कार पुं० ( असत्कार ) असत्कार, अना-  
दर, अपमान अपमान, अनादर Insult,  
disrespect (२) त्रि० सत्कार-रहित सत्कार  
रहित full of disrespect भग० १५, १,

असत्कारित त्रि० ( असत्कारित ) अनादर  
कराये, सत्कार न कराये अनादर पाया  
हुआ, सत्कार न पाया हुआ Dishonou-  
red, disrespected निर० १, १,

असत्कारिय त्रि० ( असत्कारित ) सत्कार  
नहीं करके सत्कार न किया हुआ Disre-  
pected, dishonoured नाया० १६,

असत्कारिय स० कृ० अ० ( असत्कार्य-  
असत्कृत्य ) सत्कार न करीने; अनादर करीने,  
असत्कार करीने सत्कार न करके, अनादर  
करके Having dishonoured or  
disrespected. नाया० ८,

असत्क्रिया स्त्री० ( असत्क्रिया ) भोली क्रिया;  
भराय येष्टा दुष्ट चेष्टा, खराब क्रिया A  
wrong action; a wicked action  
पचा० १०, १०, —रहित त्रि० (—रहित) भोली  
क्रिया—पापना व्यापार-रहित खराब क्रिया—  
पाप के व्यापार से रहित free from  
sinful actions पचा० १३, ४१,

असंग्रह पु० ( असंग्रह ) भोली आग्रह, दुष्ट-  
ग्रह, आपस-व्यनथी आधित अग्रह आपस-  
पक्ष पक्ष अग्रहों से दुराग्रह, आपस वचन  
से वावित विषय का भी पक्ष लेना  
Perverseness, obstinately  
maintaining things proved to be  
false by the words of competent  
authorities. विशेष० २३८३, पचा०  
१, ३,

असंग्रह त्रि० ( असंग्रह ) न प्रशंसा योग्य;  
श्लाघा न करवा योग्य प्रशंसा न करने योग्य  
Unworthy of praise विशेष०  
३५७८,

असच्च त्रि० ( असत्य ) मिथ्या—भोली;  
निष्फल, परिणाम-रहित मिथ्या, झूठा;  
निष्फल, परिणाम रहित Futile, false  
“ कोह असच्च कुव्विजा ” उक्त० १, १४,  
( २ ) न० असत्य लुट असत्य, झूठ false-  
hood, lie. भक्त० ६७, सम० १३,  
पराह० १, २, —मणजोग पु० (—मनोयोग-  
नास्ति जीव एकान्त—सदभूतो विश्वव्यापी-  
त्यादिकुविकल्पचिन्तनपरो मनोयोग )  
मनमां भोली रीते चिन्तन उक्त० ते;  
असङ्ग-न के विपरीत पदार्थ-चिन्तन उक्त०



ते. मन में मिथ्या चिन्तन करना, असद्भूत या विपरीत पदार्थ का चिन्तन करना. false and perverse thought-activity. क० गं० ४, २७;—**वद्भजोग. पुं०** (—वाग्योग) असत्य-मिथ्या वचनयोग-वचनव्यापार; वचनयोगनो अेक भेद. असत्य वचनयोग-असत्य वचनव्यापार; वचनयोग का एक भेद. false speech-activity; a false speech; a variety of speech-activity. क० गं० ४, २७;—**वाइ. त्रि०** (—वादिन्) असत्य भोक्तार. असत्य बोलने वाला a liar. दसा० ६, ८;—**संघत्तण. न०** (—सन्धत्व) असत्य संकेत; लुटुं २६ भुं नाम. असत्य सङ्केत; भूठ का २६ वाँ नाम. the twenty-sixth variety of falsehood, a false Sanketa. परह० १, २;

**असच्चमोस. त्रि०** ( असत्यमृषा-नारित सत्यं मृषा च यत्र तदसत्यमृषम् ) सत्य नहि तेभ असत्य पणु नहि तेभुं; व्यवहारभाषा सत्यता और असत्यता रहित. Neither true nor false; practical standpoint. विशे० ३७५; दस० ७, ३;—**भासा स्त्री०** (—भाषा-न विद्यते सत्यं मृषा च यत्र सा चासौ भाषा चासत्यमृषाभाषा) सत्य नहि तेभ असत्य नहि अेवी भाषा, व्यवहारभाषा. सत्यता और असत्यता रहित भाषा, व्यवहारभाषा. speech which is neither true nor false; practical speech. भग० १६, ८;—**मणजोग. पुं०** (—मनोयोग) सत्य नहि तेभ असत्य पणु नहि अेवी व्यवहार-भनो योग-भनो व्यापार, भनोयोगनो अेक भेद सत्यता और असत्यता रहित मनोव्यापार; मनोयोग का एक भेद practical thought-activity neither wholly true nor wholly false; conventional

thought भग० २५, १; सम० १३; क० ग० ४, २७,

**असच्चमोसा. स्त्री०** ( असत्यमृषा ) सत्य नहि तेभ असत्य नहि अेवी भाषा, व्यवहार भाषा सत्यता और असत्यता से रहित व्यवहार भाषा Language which is neither wholly true nor wholly false; practical speech; conventional speech. उत्त० २४, २०;

**असच्चा स्त्री०** ( असत्या ) असत्य भाषा असत्य भाषा. False, untruthful speech प्रव० ८६७;

**असच्चामोस त्रि०** ( असत्यमृषा ) लुओ "असच्चमोस" शब्द देखो "असच्चमोस" शब्द. Vide 'असच्चमोस'. भग० १६, ८;—**भासा. स्त्री०** (—भाषा) व्यवहार भाषा व्यवहार भाषा, सत्य और असत्य रहित भाषा conventional speech; language which is neither wholly true nor wholly false. भग० १६, ८;—**मणजोग. पुं०** (—मनोयोग) लुओ "असच्चमोसमणजोग" शब्द. देखो असच्चमोसमणजोग " शब्द. vide "असच्चमोसमणजोग." भग० २५, १;—**मणनिव्वत्ति स्त्री०** (—मनोनिवृत्ति) न सत्य तेभ न असत्य अेवी भनना व्यापारनी निष्पत्ति. सत्यता और असत्यता रहित मनोव्यापार की निष्पत्ति conventional thought neither wholly true nor wholly false. भग० १६, ८;—**मणप्पयोग पुं०** (—मनःप्रयोग) लुओ "असच्चमोसमणजोग" शब्द देखो "असच्चमोसमणजोग" शब्द. vide "असच्चमोसमणजोग". भग० ८, १, सम० १३;—**वद्भजोग. पुं०** (—वाग्योग) व्यवहार वचननो योग-प्रवृत्ति, वाग्योगनो अेक भेद.



सत्याऽसत्य वचनव्यापार; वचनयोग का एक भेद practical, conventional thought-activity neither wholly true nor wholly false भग० २५, १,

**असत्त्वामोसा.** स्त्री० (असत्यमृषा) लुओ।  
“असत्त्वामोसा” शब्द. देखो “असत्त्वामोसा” शब्द. Vide “असत्त्वामोसा” “जं शेष सत्त्वं शेष मोसं शेष सत्त्वमोस असत्त्वामोसं शामतं चउत्थं भासज्जातं” आया० २, ४, १, १३३, भग० १३, ७, १६, २, १८, ७, पञ्च० ११,

**असज्जमाण** व० कृ० त्रि० (असज्जमाण-असज्जत्) रक्त न थतो, संग न करतो सग न करता हुआ, अनुरक्त न होता हुआ Remaining unattached, free from attachment “ते कामभोगेषु असज्जमाणा, माणुस्सएसु जे यावि दिव्वा” उत्त० १४, १४, १४, ६, ३२, ६;

**असज्जम्** त्रि० (असाध्य) असाध्य, अशक्य, साधी न शक्य अमुं असाध्य, सिद्ध न हो सकने वाला Impossible to be accomplished विशे० २५६; सु० च० ६, ४०;

**असज्जमाअ.** पुं० (अस्वाध्याय) सञ्जानेनो अभाव. स्वाध्याय-शास्त्र के पठन पाठन का अभाव. Absence of the study of Śāstras वव० ७, १२, १३, निसी० १६, १४, १५;

**असज्जमाअ.** न० (अस्वाध्यायिक-आ मर्यादया सिद्धान्तोक्तन्यायेन पठनम् आध्याय, सुष्ठु शोभन आध्यायः स्वाध्याय स एव स्वाध्यायिकं नास्ति स्वाध्यायो यत्र तदस्वाध्यायिकम्) सञ्जानेनो अटकावनारा डारणो; लोही, परू, भांस वगैरे, पत्रीस असञ्जानेना डारणोभांनु गमे ते अेक. स्वाध्याय को रोकने वाला कारण, लोही, भांस वगैरह, वत्तीस अस्वा-

ध्याय के कारणोंमें से कोई एक कारण Any one of the thirty-two obstructions to the study of Śāstras; flesh, blood, puss etc. डा० ४, २, १०, प्रव० १४८१; आव० ४, ७,

**असत्त** त्रि० (अशठ) शङ्करहित; सञ्जन; रागद्वेषरहित, शुद्ध अंत डरणवाणो सज्जन; रागद्वेष रहित, शुद्ध अन्त करण वाला (One) not a rogue or a rascal, (one) of pure heart सु० च० १, ६०, पिं० नि० ३६६, विशे० ३४१०, प्रव० ७८५; १३७०,

**असण** न० (अशन) भोजन, पोराड, अन्न; आधानुं भोजन Food दस० ५, १, ४७; ५०, ५७; १०, १, ८, उत्त० २, ३, ३२, १२; राय० २६२; आया० १, ७, १, १६७, २, ११, १७०, पिं० नि० १३४; १६०, ६५०; परह० २, १, भग० २, १, ५, ७, १, पञ्च० १, सम० २१, ३३, वेय० १, १६, नाया० १; ५; १६, कप्प० ४, ८२, प्रव० १३५; पचा० ५, २५, (२) भीयडानुं अड एक विशेष प्रकार का वृक्ष a kind of tree. उत्त० ३४, ८,—पाण. न० (—पाम) अन्न पाणी. अन्नजल. food and water दस० ६, ५०; —वण न० (—वन) अशन-भीयडाना अडनुं वन एक विशेष जाति के वृक्षों का वन. a forest of Āśana trees भग० १, १;

**असणक.** पुं० (अशनक) भीयडानुं अड एक जाति का वृक्ष. A kind of tree ओव०  
**असणि** पुं० (अशानि) वज्र; इन्द्रको आयुध. वज्र, इन्द्र का आयुध India's thunderbolt, उत्त० २०, २१; (२) आडाशमांथी भरतो अग्निनो डणु आकाश से गिरता हुआ अग्नि का कण. particles of fire dropping from the sky. पञ्च० १;

( ३ ) विशेष. विशेष. particularity  
सू० ५० २०;—मेह. पुं० (—मेव ) डराने  
वरसाद ओलों की वर्षा a shower of  
hail भग० ७, ६;

असली. स्त्री० ( अशनी ) अलेन्दना सोडपाग  
सोमनी योथी पट्टराणी बलेन्द्र के लोकपाल  
सोम की चौथी पट्टरानी The fourth prin-  
ciple queen of Soma the Loka-  
pāla of Balendra भग० १०, ५, ठा०  
४, १; ( २ ) वैरोचनेन्दनी योथी पट्टराणी  
वैरोचनेन्द्र की चौथी पट्टरानी. the fourth  
principal queen of Vairocha-  
nendra भग० १०, ५;

असंज्ञिण पुं० ( असंज्ञिन् ) मननी संतारहित  
अव मन रहित जीव; असंज्ञी. A soul  
devoid of consciousness of  
mind. ठा० २, २; पञ्च० १७, भग०  
१, २, ७, ७, ८, २; २४ १; ३६, १; क०  
ग० ४, ३५;—आडय न० (—आयुष्क )  
असंज्ञिमे आधेनुं परलयनुं आयुष्य—आडिभुं.  
मन रहित जीव द्वारा बाधा हुआ परभव का  
आयुष्य. period of life for the  
next birth incurred by a soul  
without mind-consciousness  
भग० १, २,—पंचिन्द्रिय पुं० (—पञ्चेन्द्रिय)  
असंज्ञी पंचेन्द्रिय अव. संभूर्द्धिम मनुष्य,  
संभूर्द्धिम तिर्य्य वगेरे मन रहित पंचेन्द्रिय  
जीव. a soul having five senses but  
without mind-consciousness  
भग० २५, १, ३६, १;—मणुस्स पुं०  
(—मनुष्य ) मन विनाता—संभूर्द्धिम मनुष्य.  
मन रहित सम्भूर्द्धिम मनुष्य a Sammū-  
rchhima human being devoid of  
mind भग० २४, १; २०;—सुय. न०  
(—श्रुत.) मिथ्यादृष्टिनुं श्रुत—शास्त्र. मिथ्या-

दृष्टि का शास्त्र. a heretical Śāstra  
नंदो.

असंज्ञिणभूय. त्रि० ( असंज्ञिभूत ) मिथ्या-  
दृष्टि. मिथ्यादृष्टि. Heretical; having  
a false faith ( २ ) असंज्ञि—मनरहित  
तिर्य्य पंचेन्द्रिय वगेरे मन रहित तिर्य्य पंच-  
न्द्रिय वगैरह. devoid of mind, e. g.  
animals with five senses. भग० १, २;

असंज्ञिणहिसंचय पुं० ( असंज्ञिणहिसंचय )  
जेनी पासे वासी आवानुं नथी ते; सदा  
ताजुं आनार, जुगलिया मनुष्य जिसके  
पास वासी भोजन आदि न हो वह जुगलिया  
का मनुष्य. One who always eats  
fresh food, e. g. Jugaliyā जं० ५०

असंज्ञि अ० ( असंज्ञि ) जुगो ' असंज्ञि '  
शब्द देखो ' असंज्ञि ' शब्द Vide ' असंज्ञि.'  
भग० २, ३; ११, १; उत्त० ५, ३, १२, ७,

असतो. अ० ( अस्वतस् ) अस्व—परमतमा.  
परमत में. In another faith; not  
in one's own faith सुय० २, ६, १२;

असत्त त्रि० ( असक्त ) अशक्त, शक्ति वगरनु;  
सामर्थ्य वगरनुं शक्ति रहित, सामर्थ्य रहित.  
Incapable; powerless उत्त० १३,  
३२; पिं० निं० ६६४, विशेष० २२६३;

असत्त त्रि० ( असक्त ) निःसंग, अनासक्त  
अनासक्त; परिग्रह रहित निर्मोही Free  
from attachment "जे असत्ता पावेहि  
कम्मेहि ' आया० १, ५, २, १६७,

असत्त न० ( असत्त्व ) पारस्पर्ये अवि-  
द्यमानपणुं, जेम—भाटीनु सुवर्णरूपे असत्त्व,  
सुवर्णनुं भाटीनु असत्त्व दूसरे की  
अपेक्षा अस्तित्व की अभाव, जेम सुवर्ण  
की अपेक्षा नदी का और नदी की अपेक्षा  
सुवर्ण का अभाव Mutual non-exist-

ence, e g of earth in gold and  
of gold in earth. नदी०

असत्थ न० ( अशस्त्र ) निर्वध-निर्दोष आ-  
चाररूप सन्ध निर्दोष आचाररूप सयम  
Asceticism consisting in fault-  
less conduct. आया० १, ३, ३, १२४,  
(२) अग्नि आदि शस्त्रतो अभाव अग्नि आदि  
शस्त्र का अभाव absence of weapons  
such as fire etc आव० ६, १०, दस०  
५, २, २३,—परिणय त्रि० (—परिणत )  
अग्नि आदि शस्त्रतो परिणाम न पामेद,  
अयेत थयेद नहि सयेत वस्तु अग्नि आदि  
शस्त्रो से परिणाम ( विचार ) न पाया हुआ,  
सचित्त a living, sentient thing  
not deprived of life by fire  
etc दस० ५, २, २३, नाया० ५, भग०  
१८, १०,

असत्थामा पु० ( अश्वत्थामा ) अश्वत्थामा  
नामे ओ३ यादवकुमार अश्वत्थामा नामक या-  
दवकुमार Aśvatthāmā of Yādava  
family नाया० १६,

असदारंभ पु० ( असदारम्भ ) हिंसाकारक-  
कृषि आदि आरम्भ खोटा आरंभ An evil  
activity ( such as agriculture  
etc. involving killing ) पचा० ४,  
४३,—प्रवृत्त त्रि० (—प्रवृत्त ) जेती आदि  
आरम्भमा प्रवृत्त थयेद खोटे आरम्भो मे  
लगा हुआ ( one ) engaged in an  
evil activity, e g agriculture  
etc पचा० ४, ४३,

असद् त्रि० ( अशब्द ) शब्दरहित शब्द  
रहित Speechless, wordless भग०  
५, ७,

असद्दहण न० ( अश्रद्धान ) निगोद आदिनी  
हुडीकत उपर लरोसो न राभवे ते, अश्रद्धा,  
अविश्वास निगोद आदि के वर्णन पर श्रद्धा

न रखना, अविश्वास, अश्रद्धा. Want of  
trust, lack of faith in the  
account given about Nigoda  
etc पंचा० १५, ३४,

असद्दहमाण व० क० त्रि० ( अश्रद्धान-अश्र-  
द्धत् ) श्रद्धा न करतो-राभतो श्रद्धा न रखता  
हुआ Not putting faith in भग०  
३, १, ६, ३३, ११, १२, १५, १, नाया०  
१२, १५, १६, उवा० २, ११३,

असद्दहण त्रि० ( अश्रद्धत् ) श्रद्धा न  
राभतो श्रद्धा न रखता हुआ. ( One )  
having no faith in प्रव० ८२३,

असद्देय त्रि० ( अश्रद्धेय ) श्रद्धा करवा ये अ  
नहि श्रद्धा न करने योग्य Unworthy  
of faith, incredible नाया० १४;

असन्नि त्रि० ( असंजिन् ) जुओ ' असंजिन् '  
शब्द देखो " असंजिन् " शब्द Vide  
' असंजिन् ' भग० ६, ३, ३१, १, ठा० २, ३, क०  
प० १, ६८, क० गं० ३, २४,—पंचिन्द्रिय  
पुं० (—पञ्चेन्द्रिय ) मन विनाना पाय पञ्चिन्द्रिय  
वाला अ० असन्नि पञ्चेन्द्रिय जीव a liv-  
ing being with five senses but  
having no mind. क० ग० ४, ५,

असत्थ त्रि० ( अशब्द ) २१ सयणा  
दोषधी हर रहेनार, अतिचार अतिचार टाणी  
शुद्ध संयम पाणिनार २१ शब्द दोषों से  
दूर रहने वाला, अतिचार रहित शुद्ध चारित्र  
का आराधक One avoiding twenty-  
one Śābala faults, ( one ) lead-  
ing an ascetic life avoiding  
violations of the rules of right  
conduct ठा० ५, ३, परह० ३, १;  
भग० २५, ७,—आचार. पुं० (—आचार )  
विशुद्धाचार; निर्दोष चारित्र. शुद्धाचार, निर्दोष  
चारित्र faultless, unblemished  
conduct वव० ३, ३,

**असम्भ. त्रि०** ( असम्भ ) असम्भ; विवेकरहित.  
असम्भ; विवेक शून्य Impolite. ओव०  
—वयण न० (—वचन) असम्भ वचन;  
विवेकरहित वाक्य; दुर्वचन असम्भ वचन,  
दुर्वचन, खराब वचन. impolite words.  
“ असम्भवयणेहिं य कलुणाविवज्जुदा ”  
दस० ८, २; ६, २, ८;

**असम्भाव. त्रि०** ( असम्भाव ) आकाशकुसु-  
मनी पेड़ असम्भाव—पर्याय, न अनेक अनाव  
आकाश कुसुम के समान पदार्थ के अस्तित्व का  
अभाव A non-existing thing, e. g.  
a sky-flower. जीवा० ३, १, ओव० ४१;  
अणुजो० १५१, क० प० ५, २४,—**उच्चा-  
वणा स्त्री०** (—उच्चावना) असत् पदार्थनु  
प्रतिपादन करने के अस्तपदार्थ का प्रतिपादन  
करना. act of propounding false,  
non-existing things. नाया० १२,  
भग० ६, ३३;—**ठवणा स्त्री०** (—स्थापना) ते  
आधार न होय उता तेमा तेनी स्थापना  
करनी ते; जेम लाइतीने घोडे अनावणे—  
घोडानी उलपना करनी ते. वह आकार न होने  
पर भी उसमें उसकी स्थापना करना, जैसे  
लकड़ी का घोड़ा बनाना अथवा लकड़ी के डंडे  
में घोड़े की कल्पना करना imagining  
a thing to be that which it is  
not, e. g. to imagine a stick to  
be a horse. अणुजो० १५१;—**पञ्चव  
पुं०** (—पर्यव) पर पर्यायनी अपेक्षासे अस-  
द्वरूप पर्याय पर पर्याय की अपेक्षा से असद्व-  
रूप—नास्तिरूप पर्याय. false from the  
standpoint of the higher form  
of modification. भग० १२, १०;  
—**पठवणा स्त्री०** (—प्रस्थापना) असत्  
अर्थनी उलपना. असत् अर्थ की कल्पना  
imagining a false, non-existent  
meaning or thing. भग० ११, १०;

**असम्भावणा. स्त्री०** ( असम्भावना ) असत्य  
भावना असत्य—मूर्ख भावना. Medita-  
tion on an unreal thing.  
भग० १५, १,

**असम्भूय न०** ( असद्भूत—न सद्भूतमसद्-  
भूतम् ) असत्य, गूढ़. असत्य; मूर्ख Un-  
truth; falsehood. भग० ५, ४; ६;

**असमंजस त्रि०** ( असमंजस ) असंगत;  
अव्यक्त, अशोभन असंगत; अव्यक्त  
Unbecoming, improper; un-  
graceful. उत्त० ४, ११, आया० १, ६, १,  
१७२, गच्छा० ७३;—**चेष्टिय न०** (—चेष्टित)  
अव्यक्त चेष्टा करनी ते, प्राणीने वध आदि.  
अयोग्य चेष्टा का करना; प्राणी का वध आदि.  
improper action, e. g. killing  
etc. पंचा० १, ४८;

**असमण. पुं०** ( असमण ) असाधु, साधु  
नहिं असाधु; साधुत्व का अभाव. One, not  
a Sādhu. “ गंतुं ताय पुणो गच्छे, ण य  
तेणासमणो सिया ” सूय० १, ३, २, ७;  
—**पाउग्ग त्रि०** (—प्रायोग्य) साधुने आय-  
रवा योग्य नहिं. साधु के आचरण न करने  
योग्य. unworthy of practice for  
an ascetic निसी० ८, १;

**असमणुज. त्रि०** ( असमनोज ) अनिष्ट.  
अनिष्ट; हानिकारक Evil. ठा० ४, १; ( २ )  
शाक्यादि ३६३ पापंजी. शाक्यादि ३६३  
पापंजी. the 363 heretics like  
Śākya etc आया० १, ६, १, २;

**असमत्त. त्रि०** ( असमाप्त ) अपूर्ण, अपर्याप्त.  
अधूर. अपूर्ण; अपर्याप्त; अधूरा. Incom-  
plete. क० गं० ५, ५४; क० प० १, १५;  
६६, प्रव० ६२६; ( २ ) असमाप्त विधि.  
अधूराविधि. incomplete ceremony.  
वच० ४, ११; पंचा० ११, २७;—**कप्प. पुं०**

(-कल्प) अपूर्ण विधि. अधूरी विधि.  
incomplete ceremony. पचा०  
११, २७;

**असमत्त.** न० ( असम्यक्त्व-न सम्यक् असम्यक्  
तस्य भावस्तथा ) असम्यक्पणु, सम्यग्  
नहि. सम्यक्त्व का अभाव; यथार्थता का  
न होना The quality of not being  
right. सूय० १, ८, २२,--दंसि. त्रि०  
(-दर्शिन) सम्यग्दर्शी नहि; मिथ्या  
दर्शनी मिथ्यादृष्टि, असत्य दर्शनों को मानने  
वाला ( one ) having wrong  
belief, ( one ) who does not  
see things rightly. सूय० १, ८, २२;

**असमत्थ** त्रि० ( असमर्थ ) असमर्थ;  
अशक्त; डरडी आँखों वाली पीनार. अशक्त;  
कमजोर, कहीं नजर से भी डर जाने वाला.  
Feeble; weak, timid. सूय० नि० १,  
४, १, ६१,

**असमय.** पुं० (\*असमय-असम्यक्) असम्यग्  
आचार, जुठुं पचीसमु नाम खराब  
चालचलन; झूठ का पच्चीसवाँ नाम Bad  
conduct; 25th name of false-  
hood. परह० १, २,

**असमाण.** त्रि० ( असमान ) असाधारण,  
सर्वोत्कृष्ट असाधारण; सब से श्रेष्ठ Extra-  
ordinary, the best or highest of  
all “ असमाण चरे भिक्खु ” उत्त० २,  
१६,

**असमाणिय** त्रि० ( असन्मानित ) नते  
सन्मान नहीं थये ते, तिरस्कृत जिसका  
सन्मान नहीं हुआ वह, अपमानित Hated,  
unhonoured नाया० १६, निर० १, १,

**असमारंभ.** पुं० ( असमारम्भ ) समारंभतो  
अभाव, श्रवणी हिंसा न करी ते. समारम्भ

का अभाव; जीव की हिंसा न करना  
Absence of killing or injuring  
sentient beings “सत्तविहे असमारंभे  
परणत्ते, तंजहा-पुढवीकाइयअसमारंभे जाव  
अजीवकायअसमारंभे ” ठा० ७;

**असमारंभमाण** व० कृ० त्रि० ( असमारम्भ-  
माण ) समारंभ न करतो समारंभ न करता  
हुआ Not killing or injuring  
sentient creatures. ठा० ५, २;  
भग० ३, ३; ८, १;

**असमाहड** त्रि० ( असमाहृत ) अशुद्ध, शुद्धि-  
ही रहित शुद्धि रहित, अशुद्ध. Impure,  
full of dirt. “ वित्तिगिच्छसमावणणं  
अप्पाणं असमाहडाए लेस्ताए ” आया०  
२, १, ३, १८, (२) स्वीकारे नहि, ग्रहण  
नहि करेन. स्वीकार न किया हुआ, ग्रहण न  
किया हुआ not accepted or  
taken. सूय० २, २, २०,

**असमाहि** पु० ( असमाधि ), समाधिही विप-  
रीत; मोक्षमार्गही विपरीत मार्ग-असमाधि,  
चित्तनी अस्वस्थता समाधि से विपरीत, मोक्ष  
मार्ग से विपरीत मार्ग; चित्त की अस्वस्थता.  
Distraction of mind, lack of  
concentration of mind opposed  
to the path of salvation  
‘दसविहा असमाही परणत्ता, पाणाइवाए’  
ठा० १०, सूय० १, २, २, १८, उत्त० २७, ३;  
सम० २०,—कर त्रि० (-कर) असमाधि-  
चित्तनी अस्वस्थता करना अममाधि-चित्त  
की अस्वस्थता करने वाला. causing dis-  
traction of mind. नाया० १६; परह०  
२, ३,—कारअ. त्रि० (-कारक) पोताने  
अथवा पीजने असमाधि उपजाना  
अपनी अथवा दूसरे की अममाधि-चित्त की  
अस्वस्थता उत्पन्न करने वाला. ( one )



causing distraction to himself or others दसा० १, २; २१; २२;—द्वारा त्रि० (—स्थान ) असमाधिना २० स्थानक. असमावि के २० स्थान. the twenty causes or sources of distraction of mind परह० २, ५; ठा० १०; दसा० १, ३, आव० ४, ७;—पक्ष. त्रि० (—प्राप्त ) असमाधिने पाभेक्ष. असमाधि पाया हुआ ( one ) who has not got a concentrated, peaceful mind. “असमाहिपत्ता कालमासे कालं किञ्चा” उवा० ८, २५५;—मरण. न० (—मरण ) आक्षमरण. बालमरण. premature death, death in infancy. आउ०—मरणउभारण. न० (—मरणध्यान ) ‘सामो माणुस असमाधिओ’भरे ओम थितवयुं ते, जेम पावड अलव्ये अंधकमुनिना संअंधमां थितवयुं तेम किसी दूसरे मनुष्य का समावि रहित मरण चितवन करना, जैसे पालक नामक अभव्य ने खंधक मुनि के सम्बन्ध में चितवन किया था act of meditating that a particular person may die in a distracted condition of mind; the Abhavya Pālaka, wished this sort of death to Khandhaka Muni आउ०

असमाहिय त्रि० ( असमाहित ) भीलत्स; लुं. वीभत्स; भयानक Indecent, obscene. सूय० १, ३, १, १०; ( २ ) भोक्षमार्गरूप लाव सम. धिथी दूर वर्तनार; शुभ अध्यवसायरहित. मोक्षमार्गरूप भाव-समावि के अनुसार वर्ताव न करने वाला; शुभ अध्यवसाय रहित. devoid of the good thought-activity of meditation leading to salvation सूय० १, ३, ३, १३;

असमिक्खिय त्रि० ( असमीक्षित ) विचार्य विनानुं विना विचारा—सोचा हुआ Not properly thought of or considered. कप्प० ६, ५३;

असमित त्रि० ( असमित ) लुओ ‘असमिय’ शब्द देखो ‘असमिय’ शब्द. Vide “असमिय.” पंचा० १६, १६;

असमिति. स्त्री० ( असमिति ) ओलवाभां, आलवाभां, वस्तु लेवा, मुडना, डे परडववाभां यत्ना ( जतना ) न राखी ते, समितिने अभाव. बोलने, उठने, चलने, वस्तु लेने, रखने अथवा परोसने में यत्नाचार का न रखना; समिति का अभाव. Carelessness in speech, movement, taking up and laying down things or in laying down the filth of the body. भग० २०, २;

असमिच्च पुं० ( अश्वमित्र ) क्षत्रिभवाधने माननार अश्वमित्र नामनो योथो निहव. क्षत्रिकवाद को मानने वाला अश्वमित्र नामक चौथा निहव (मत प्रवर्तक). The fourth Nindhava named Āśvamitra; a follower of the doctrine of Kṣaṇika-vāda विशेष २३०१,

असमिय पुं० ( असमित ) ओलवा, आलवा, भावा, पीवा वगेरेभा उपयोगशून्य ( शून्य ). बोलना. चलना, खाना, पीना इत्यादि में उपयोग न रखने वाला ( जीव ). A soul devoid of carefulness in speech, gait etc. परह० १, २;—कारि. त्रि० (—कारिन् ) वगर विचार्युं डरनार. विना विचारे करने वाला. ( one ) acting thoughtlessly or rashly. दसा० ६, ४,—प्लवाचि. त्रि० (—प्रलापिन् ) वगर विचार्युं ओलनार विना विचारे बोलने



वाला. ( one ) speaking thoughtlessly or rashly. परह० १, २;  
—भासि. त्रि० (—भाषिन् ) विचार्या विना  
भोलनार विना विचारे बोलने वाला. (one)  
speaking thoughtlessly or  
rashly. परह० १, २,

असमिय. अ० ( असम्यक् ) अयुक्त अयोग्य,  
अयुक्त Improper, not right. 'अस-  
मियंति मरणमाणस्स एगदा समिया होइ  
समियंति मरणमाणस्स एगदा असमिया  
होइ" आया० १, ५, ५, १६३;

असमिय त्रि० ( अशमित ) शान्त न थयेल  
अशान्त, शान्ति रहित. Not calmed,  
not quieted आया० १, २, ३, ८१, १,  
२, ६, १०४;—दुख त्रि० (—दुःख )  
नेनुं दुःख उपशम्युं नथी ते, दुःखनी शान्ति  
वगरने जिसके दुःख का उपशम न हुआ हो  
वह, दुखी ( one ) whose pain or  
misery is not subsided, ( one )  
still troubled with misery.  
आया० १, २, ३, ८१; १, २, ६, १०४,

असमिया. अ० ( असम्यक् ) स'रुं नहि;  
अयथार्थ. अयथार्थ, अयुक्त. Improper,  
not right. भग० २, ५,

असमुपगणपुव्व. त्रि० ( असमुत्पन्नपूर्व )  
पूर्व उत्पन्न न थयेल जो पहिले उत्पन्न न हुआ  
हो वह. Not existing before,  
unprecedented. दसा० ५, १६, १८,  
१६, ७, १२;

असमोहय त्रि० ( असमवहत ) मृत्यु व'भते  
समुद्घात क'र्या विना अ'दु'क'ना लडाकानी  
भाइक अ'द'ी साथे ने उ'व'ना प्रदेश शरीरने  
छोडी परलो'क तर'क प्रयाणु करे ते, असमोहिया  
भरणे भरनार उ'व मृत्यु के समय में समुद्-  
घात किये बिना बंदूक की आवाज के समान

एक साथ जिस जीव के प्रदेश शरीर को छोड़  
जाय वह; असमोहिया नामक मृत्यु से मरने  
वाला. Simultaneous departure  
of all the soul-particles from  
the body at the time of death;  
a soul thus dying भग० ११, १;  
१६, ३, २४, १;—मरण न० (—मरण )  
मृत्यु व'भते समुद्घात क'र्या विना अ'दु'क'ना  
लडाकानी भाइक अ'द'ी साथे उ'व'ना प्रदेश श-  
रीरने छोडी परलो'क तर'क प्रयाणु करे ते, अस-  
मोहय भरणे मृत्यु के समय समुद्घात बिना  
किये बंदूक के भड़के के समान जीवप्रदेशों  
का एक साथ शरीर से निकल जाना; अस-  
मोहय नामक मरण death known as  
Asamohaya, simultaneous  
departure of all the soul-  
particles for good, from the  
body like the report of a gun.  
जीवा० १,

असम्म त्रि० ( असम्यक्—दृष्टि ) सम्यक् दृष्टि-  
रहित, समझित बिनाने सम्यक्त्व बिना का.  
Devoid of right faith क० प०  
२, ५६-

असम्मानिय त्रि० ( असन्मानित ) सन्मान-  
रहित सम्मान रहित Not honoured  
or respected नाया० १, ८, १६, निर०  
१, १,

असयं अ० (अस्वयम्) पोताना विना खुद के  
बिना, अपने बिना. Not oneself, any  
body else than oneself. भग०  
६, ३२,

असयारंभ पुं० ( असदारंभ ) लुओ 'अस-  
दारंभ' शब्द. देखो 'असदारंभ' शब्द.  
Vide 'असदारंभ.' पचा० १, १७,

असरण. त्रि० ( अशरण ) आधाररहित;

शरणरहित. आधार रहित; शरण रहित. Helpless. ठा० ४, १; परह० १, १; विवा० ६; ( २ ) न० जेमां शरण-धर नथी ते, संयम. ऐसा संयम जिसमें शरण-घर न हो. houselessness; asceticism. 'सोगे अदक्खु एताइं सोउलाइं गच्छति णायपुत्ते असरणाए' आया० १, ६, १, १०; (३) अशरण लावना; संसारमां धर्म सिवाय अन्य कोछ शरण नथी ऐम थितवुं ते 'संसारमें धर्म के सिवाय कोई शरण नहीं' इस प्रकार चिन्तवन करना. the meditation that excepting right religion there is nothing to help the soul. प्रव० ५७६; —अगुप्पेहा स्त्री० (-अनुप्रेक्षा) 'संसारमां जन्म मरण वगेरेमां ज्वनु रक्षणु करनार धर्म सिवाय भीलुं कोछ नथी' ऐम थितवुं ते, ज्वने जिन भगवान् सिवाय कोछ शरण नथी ऐवी लावना 'संसार और जन्म मरण से जीव को रक्षा करने वाला सिवाय धर्म के दूसरा कोई नहीं है' ऐसी भावना. meditation upon the soul's helplessness in the world ओव० २०; भग० २५, ७; ठा० ४, १, —भावणा. स्त्री० (-भावना) 'मरण समये अरिहंत देव सिवाय कोछ शरणु आवे तेम नथी' ऐम थितवुं ते, पार लावनामानी भीलु लावना. 'मृत्यु के समय अरिहंत देव के सिवाय दूसरा कोई शरण नहीं दे सकता' ऐसा चिन्तवन करना; बारह भावनाओं में से दूसरी भावना. the meditation that at the time of death nobody can afford any help or shelter to the soul except Arihanta, the second of the 12 Bhāvanās or meditations 'प्रव० १०६,

असरमाण. व० कृ० अ० ( अस्मर्यमाण ) न संलारातो; जेने सलारवामां न आवे ते. याद न किया जाता हुआ. ( One ) not being remembered वव० ४, १६;

असरिस त्रि० ( असदृश ) असमान; समान पणुथी रहित समानता से रहित. Dissimilar; not similar भग० १२, ६, परह० १, २;

असररीर. त्रि० ( अशरीर ) शरीररहित; सिद्ध. शरीर रहित, सिद्ध. Disembodied; a Siddha " असरीरा जीवघणा वंसणनाणोवउत्ता " भग० १७, २, १८, ४, —पडिवद्ध. त्रि० (-प्रतिबद्ध) सर्व उदारिष्ठ आदि शरीररहित. औदारिक आदि शरीरों से रहित devoid of all kinds of bodies such as physical etc. भग० १६, ३,

असररीरि. पुं० ( अशरीरिन् ) शरीररहित ज्व, सिद्ध भगवान्. शरीर रहित जीव; सिद्ध भगवान् A disembodied soul; a Siddha. भग० १, ७, २, १; १६, १; १८, १; जीवा० १०, ठा० ६, १;

असलेसा. स्त्री० ( अश्लेषा ) अश्लेषा नक्षत्र. अश्लेषा नक्षत्र. The constellation Aśleṣā. सम० ६,

असवणया. स्त्री० (\*अश्रवणता-अश्रवण) न सावणुं ते; श्रवणुने अभाव न सुनना; श्रवण का अभाव Not hearing, absence of hearing. सूय० २, ७, ३८; भग० १, ६;

असव्वराणु. त्रि० ( असर्वज्ञ ) असर्वज्ञ; जडमस्थ. असर्वज्ञ, द्युमस्थ. ( One ) not omniscient, ( one ) in the stage of Chhadmastha. भग० १५, १;

**અસહ.** ત્રિ० ( અસહ ) અસહ-દેવકુર અને ઉત્તરકુરક્ષેત્રના મનુષ્યની એક જાતિ. અસહ-દેવકુર અને ઉત્તરકુર કે મનુષ્યોની એક જાતિ A species of human beings residing in Devakuru and Uttarakuru. જીવા० ૩, ૪,

**અસહન.** વ૦ કૃ० ત્રિ० (અસહન) સહન ન કરતો સહન ન કરતા હુઆ (One) not enduring. નાયા० ૧૭,

**અસહન** ન૦ (અસહન) સહન ન કરવું તે સહન ન કરના. Not enduring; non-endurance. નાયા० ૧૧;

**અસહમાણ.** વ૦ કૃ० ત્રિ० (અસહમાણ) સહન ન કરતો; સહન ન કરતા હુઆ (One) not enduring. મગ० ૩, ૧, ૧૬, ૨; નાયા० ૧૬;

**અસહિજ્જ.** ત્રિ० ( અસાહાય્ય ) સહાયની અપેક્ષા-ધૃચ્છા ન કરનાર સહાયની ઇચ્છા ન કરનાર. ( One ) not wishing, expecting help. મગ० ૨, ૨,

**અસહુ.** ત્રિ० ( અસહ-ન સહત્ત્વસહ ) ચારિત્રનું કષ્ટ સહન કરવાને અસમર્થ રાજકુમારાદિ, તકલાદિ-સુકોમલશરીરવાળો. ચારિત્રના કષ્ટ સહન કરવાને અસમર્થ રાજકુમારાદિ; કોમલ શરીરવાળો. Delicate in body, ( one ) unable to endure the hardships of right conduct, e g. a prince etc. ઠા० ૩, ૩, ઓષ० નિ० મા० ૬૮,

**અસહેજ્જ.** ત્રિ० ( અસાહાય્ય-અવિચમાનં સાહાય્યં પરસાહાયિકમત્યન્તસમર્થત્વાદ્ ) જેવાં સ્વેડસાહાય્યા આપવાપિ દેવાદિસાહાય્યાનપેક્ષકાઃ, સ્વયંકૃતં કર્મ સ્વયમેવ ભોક્તવ્યમિત્ય-દીનમનોવૃત્તયઃ, જે પાશ્વણિકામિ પ્રારબ્ધાઃ સમ્યક્ત્વાદ્ વિચલનં પ્રતિ ન પરસાહાયિકમ-

પેક્ષન્તે કિન્તુ સ્વયમેવ તત્પ્રતિષ્ઠાતસમર્થત્વા-જિનશાસનાત્યન્તમવિત્ત્વાત્ તે સુશ્રાવકા. ) ખીખનીસહાયની ધૃચ્છા ન કરનાર, હુ ખમા પણ દેવતાની સહાયની ધૃચ્છા ન કરનાર; આપણા કીધેલા કર્મ આપણે-પોતેજ ભોગવવાં એવી અદીનમનોવૃત્તિવાળા શ્રાવક. દૂસરેની સહાયતાની ઇચ્છા ન રાખનાર; હુ ખ મેં દેવોની સહાયતા ન ચાહનાર; સ્વયં કરીએ હુએ કર્મોની સ્વયં જી ભોગનારે એવી અદીનમનોવૃત્તિવાળા શ્રાવક (One) who does not desire the help of others even in distress, a high-spirited Śrāvaka prepared to endure the results of his own Karma મગ० ૨, ૨,

**અસાહમૂઢ.** પું० ( આપાઢમૂઢિ ) આત્મીન-સમયમા ધર્મરુચિ સૂરિના શિષ્ય આપાઢમૂઢિ નામે એક સાધુ હતા; તે એકદા વિશ્વકર્મા નામે રાજનટને ઘરે વહોરવા ગયા. ત્યાંથી એક મોઢક-લાડવો મળ્યો, ખૂદાર તીકળ્યા પછી ‘આ એક તો ગુરુ લેશે, મને નહિ મળે’ એમ વિચારી રૂપ પરાવર્તન કરી ખીજી વાર નટને ઘરે ગયા વળી ‘આ તો ઉપાધ્યાય લેશે’ એમ વિચારી રૂપ અદલાવતા અદલાવતા કરી ફરી જવા માંડ્યું, કોઈ વખતે સુંદર તો કોઈ વખતે બેડોળ, કોઈ વખતે કાણો તો કોઈ વખતે કાઠી, એમ રૂપ અદલાવતાં વહોરવાં આવતા વિશ્વકર્મા નટે જોયા. તેણે પોતાની અતિ સૌંદર્યવતી બે પુત્રીઓને કહ્યું, કે કોઈ પણ પ્રકારે આ માણસને વશ કરો તો તે આપણને બહુ ઉપયોગી થઈ પડે. પુત્રીઓએ તેને ધીમે ધીમે લાલચમા નાખી વશ કર્યો. ચારિત્રથી પતિત થઈ ગુરુને છોડી નટનો વેપ પહેર્યો. નટકળામા પ્રવીણ થઈ નટનો સરદાર બન્યો. રજવાડાને રીઝવી વ્યવસાય ભોગવવા લાગ્યો. તેને મદિરા ઉપર ધણો તિરસ્કાર હતો,

तेथी नटनी लक्ष्मणुथी तेनी पुत्रीओओ  
मदिरानो त्याग क्यो हुतो, ओकदा कोध राज्ञओ  
स्त्रीओ विना मात्र नटोओओ राजसभामां  
आवी नाटक करवुं ओवुं इरमाओओ हुतुं.  
आपाढभूतिनी ओ स्त्रीओओ विचार क्यो, के  
आओ राते पति नहि आवे माटे मदिरा पान  
करीओ. तेम करी वस्त्ररहित थछ भेडी  
उपर सुती. राज्ञओ छंछ कारण पडवाथी  
नाटक पाडवानुं मुसतनी राज्ञुं; तेथी  
आपाढभूति घेर आवता, ओ स्त्रीओनी  
केडी दशा जेछ, विरक्त थयो अने पाछो  
वज्यो. आ ओओ विश्वकर्माने पडतां पुत्रीने  
हपका आपी तेने समजववा मोकली, आपाढ-  
भूतिने पगे पडी विनववा लागी, के डांतो !  
पाछा इरो अने डांतो ! अमारी छविकानो  
अंदोअस्त करो. आपाढभूतिओ ओक राष्ट्रपाल  
नाटक रच्युं राजगृह नगरना सिंहरथ राजने  
त्यां ते नाटक लजववा मुकरर क्युं पायसो  
राजकुमारोनी भागणी करी, राज्ञओ ते  
आप्या, त्यारे पोते भरतयक्षवर्ती ज्यो  
अने ५०० राजकुमारोने सामंतो अनानी  
जेव लज्यो. ओओओ थैर रत्न, नव-  
निधान, अरीसाधर वगेरेतो देभाव करी,  
आओ अरीसा लवनमां ५०० राजकुमारो-  
ओकरोनी साथे ओध पामी साधु थाय छे  
अने आलूषणो वगेरे पोतानी ओ स्त्रीओने  
छविका अर्थे सोंपी दीक्षा ल्ये छे. आ राष्ट्र-  
पाल नाटक ओटलु तो सरस रच्युं, के त्यार  
पछी पशु विश्वकर्माणे ज्यारे लज्युं त्यारे  
त्यारे क्षत्रियकुमारो प्रवर्जित थछ गया क्षत्रि-  
ओ अधा विरक्त थछ जशे ओवी दहेशतथी  
पाछण आ राष्ट्रपाल नाटक अग्निमां आणी  
देवामां आओ. प्राचीन समय में धर्मरुचि  
सूरि का आपाढभूति नामक शिष्य था । यह  
एक बार विश्वकर्मा नामक राजनट के घर  
पर भिच्चा लेने गया । वहां भिच्चा में उसे एक

लड्डू मिला, बाहिर आने पर उसने विचार  
किया कि ' यह लड्डू तो गुरु ले लेंगे, मुझे  
नहीं मिलेगा ' तब रूप बदल कर फिर नट के  
यहां भिच्चाई गया । दूसरी बार फिर लड्डू  
मिला, फिर उसने विचार किया कि ' यह तो  
उपाध्याय लेंगे ' फिर रूप बदल कर गया ।  
इस प्रकार बारं २ जाने लगा कभी सुंदर रूप  
धारण करता तो कभी कुरूप हो जाता कभी  
काने और कभी कोढ़ी का रूप धारण करता ।  
विश्वकर्मा नट ने उसकी यह चेष्टा जानकर अपनी  
अतिसौंदर्यवती दो पुत्रियों से कहा कि, किसी  
भी प्रकार इस पुरुष को वश में करें तो यह अपने  
बहुत काम आयेगा । पुत्रियों ने उसे वश में किया,  
और चारित्र से पतित होकर वह नट के यहां रहने  
लगा । नाट्य कला में प्रवीण होकर नटों  
का सरदार बना तथा राजाओं को प्रसन्नकर  
द्रव्य लाभ करने लगा । यह मदिरा का कट्टर  
विरोधी था । इस लिये नट की दोनों पुत्रियों  
ने भी अपने पिता के कहने से मदिरा का  
त्याग किया । एक बार किसी राजा ने बिना  
स्त्री के केवल नटों-पुरुषों को ही राजसभा में  
नाटक करने की आज्ञा दी । तब आपाढभूति  
की दोनों स्त्रियों ने विचार किया कि आज रात  
को पति नहीं आवेगा अतः मदिरा पान करना  
ठीक होगा और इस विचार के अनुसार मदिरा  
पानकर वस्त्र रहित अवस्था में मकान की  
छतपर सो गईं । उधर राजा ने किसी कारण  
से नाटक करना बंद करवा दिया । अग आपाढ-  
भूति घर पर आया और दोनों स्त्रियों की  
नशे की हालत में देखकर वह पीछे फिर गया  
और विरक्त होगया । विश्वकर्मा को जब यह  
विदित हुआ तब उसने पुत्रियों को फटकारा  
और आपाढभूति को फिर समझाने के लिये  
भेजा । वे स्त्रियाँ आपाढभूति के पास आईं  
और पैरों पर पड़कर कहने लगीं कि ' या तो  
आप घर चले या हमारी आजीविका का प्रबन्ध

करें' । तब आषाढभूति ने राष्ट्रपाल नामक एक नाटक की रचना की और राजगृह नगरी के राजा सिंहरथ की राजसभा में उस नाटक का खेलना निश्चित कर राजा से ५०० राजकुमार मागे । राजा ने देना स्वीकार किया तथा नाटक खेला गया । आषाढभूति ने भरतचक्रवर्ती का रूप किया और ५०० राजकुमार सामन्त बने । इस नाटक में चौदह रत्न, नव निधान, अरीसा भवन आदि का दृश्य दिखाया । फिर अरीसा भवन में ५०० राजकुमारों के साथ विरक्त होकर दीक्षा ली और अभूषण वगैरह अपनी स्त्रियों को जीविका के अर्थ दे दिये । यह राष्ट्रपाल नामक नाटक इतना सुंदर रचा गया था कि, विश्वकर्मा नट जब जब उसे खेलता तब तब क्षत्रिय राजकुमार दीक्षित होते थे । अतः सम्पूर्ण क्षत्रिय राजकुमारों के दीक्षित होने के भय से यह नाटक अग्नि में जला डाला गया । In ancient times Āsādhabhūti was the disciple of Dharmaruchisūri. Once he went to Viśvakarmā, a royal actor to ask for food. He got one sweet-ball from that place. While coming out from the house he thought that the Guru would take the ball and he would get nothing, so thinking he changed his form and went to the actor a second time. Thinking that the priest would take the second ball, he changed his form and went again. Viśvakarmā saw him coming with different forms—some times beautiful, some

times awkward, some times one-eyed, some times leprous. He told his two beautiful daughters that if the man were fascinated, he would be useful to them. The daughters after enticing, fascinated him. Having given up his asceticism, he abandoned his Guru and put on the dress of an actor. He became the leader of actors after becoming proficient in the art of acting. He used to earn a mass of wealth by propitiating princes. He disliked wine and so the two daughters of Viśvakarmā gave it up through his advice. Once a king had ordered that only the actors, without any woman, should perform a play at the court. The two wives of Āsādhabhūti thought that their husband would not be at home that night and so they could take wine. They did accordingly and slept upstairs quite naked. The king postponed the performance owing to some circumstances; so Āsādhabhūti returning, saw the drunken plight of the wives, lost all attachment for the world and returned. When Viśvakarmā came to know about this, he reproached his daughters and



sent them to conciliate him. They bowed down before Āsādhabhūti and requested him either to return or to arrange for their maintenance. Āsādhabhūti composed a drama named Rāstrapāla and settled to perform the drama before Simharatha, the king of Rājagriha city. He asked for 500 princes to act as players and the king consented. He took the part of Bharata, the suzerain and making the princes his tributary kings, performed the drama. He showed the actual scene of 14 jewels, 9 Nidhānas, house of looking-glasses etc. At last in the house of looking-glasses he, together with the 500 princes, became a Sādhu after getting knowledge, and entered the order of asceticism, giving all ornaments to his wives as the means of their support. The Rāstrapāla drama was so nicely composed that whenever Viśvakarmā performed it, the Kṣatriya princes entered the order of asceticism. Afterwards the Rāstrapāla drama was burnt in the fire through the fear that all Kṣatriyas would renounce the world by witnessing it. पि० नि० ४७४;

असाढ पुं० ( आषाढ ) अषाढ मास. आषाढ मास-आषाढ महीना The month Āsādha. नाया० ५; ( २ ) ओ३ ञतनी पर्व-गांधेवाणी वनस्पति. एक प्रकार की गाँठ वाली वनस्पति. a kind of vegetation with joints. पञ्च० १;

असाता. स्त्री० ( असात ) असातावेदनीय दुर्भ भोगवत् ते असातावेदनीय कर्म का भोगना. Act of bearing painful Karma. पञ्च० ३५;—वेदग. त्रि० (—वेदक) असातावेदनीय दुर्भ भोगवनारुण. असाता वेदनीय कर्म भोगने वाला जीव. a soul bearing painful Karma. पञ्च० ३; भग० २४, १, ३५, १;

असाय. न० ( असात ) वेदनीय दुर्भनी ओ३ प्रकृति, ३ जेना उदयथी एव असाता-दुःख -पीडा पाये वेदनीय कर्म की एक प्रकृति, जिसके उदय से जीव असाता-दुःख पाता है. A variety of Vedaniya Karma maturing of which the soul by the experiences pain. भग० ६, १; ठा० २, ३; उत्त० ३३, ७; पराह० १, १; पञ्च० ३४; क० गं० १, १२; २, २३; ३३; ५, १६; क० प० १, ६१; २, १०३;

असायण. पुं० ( आश्वयन ) अश्व ऋषिना वंशजे. अश्व ऋषि का वंशज. A descendant of Aśhva Rishi. जं० प०

असाय-या-वेयणिज्ज. न० ( असातवेदनीय ) वेदनीय दुर्भनी ओ३ प्रकृति, ३ जेना उदयथी एव दुःख पाये छे. वेदनीय कर्म की एक प्रकृति, जिसके उदय से जीव दुःख पाता है. A variety of Vedaniya Karma by the maturing of which the soul experiences pain. ठा० ७; सम० ३७; भग० १, १; ७, ६; ८, ६;



**असार.** त्रि० ( असार ) साररहित सारहीन; सार रहित. Worthless, unsubstantial. प्रव० ७३०;

**असारअ.** त्रि० ( असारक ) साररहित साररहित. Worthless, unsubstantial. “ साहारणं अयाणंतो, साहु होइ असारओ ” ओघ० नि० ५६७,

**असारंभ.** पुं० ( असारम्भ ) प्राणीना वधनो संकल्प न करवो ते, प्राणातिपातरूपी संकल्पनो अभाव. जीवों के वध का संकल्प न करना, प्राणातिपातरूपी संकल्प का अभाव. Absence of thought about killing etc. of sentient beings. “ सत्तविहे असारंभे पण्णत्ते, तंजहा-पुढवीकाइयअसारंभे ” ठा० ७; भग० ३, ३; ८, १;

**असारंभमाण.** व० कृ० त्रि० ( असारम्भमाण - असमारम्भमाण ) प्राणीना वधनो संकल्प न करतो. प्राणी के वध का संकल्प न करता हुआ. Not meditating on killing or injuring sentient beings भग० ३, ३;

**असारहिय.** त्रि० ( असारथिक ) सारथिरहित सारथी रहित. Devoid of a charioteer भग० ७, ६;

**असालिया.** स्त्री० ( आसालिका ) आसारीआवतनो ओड सर्प. आसारीया जाति का एक सर्प. A kind of serpent सूय० २, ३, २४;

**असावज्ज.** त्रि० ( असावच्च ) पापरहित; निर्दोष. पाप रहित, निर्दोष Sinless; faultless. “ अहो जिणोहिं असावज्जा वित्ति साहुण देसिया ” दस० ५, १, ६२, भग० २५, ७, उक्त० २४, १०,

**असावज्जा.** स्त्री० ( असावद्या ) निर्दोष भाषा; पापरहित-निरवध भाषा. निर्दोष भाषा; पाप

रहित भाषा. Sinless speech, harmless speech भग० १८, ७,

**असासय** त्रि० ( अशाश्वत ) नाशवंत; अनित्य, अस्थिर, नश्वर. नाशवान्, अनित्य. Perishable, evanescent. उक्त० ८, १, १३, २०; ठा० २, १, आया० १, १, ५, ४६; १, ५, २, १४७; दसा० १०, ६; दस० १०, १, २१, नाया० १, भग० १, ६; ७, २, ८; ६, ३३; १४, ४; १८, ७, जं० प० ७, १७५,

**असाधारण** त्रि० ( असाधारण ) साधारण नहि, ऐना जेवुं भीलुं नहि ते. असाधारण; जिसके समान दूसरा न हो वह. Extraordinary, having no parallel विशेष ८६; —कारण. न० (—कारण) असाधारण-मुज्य कारण, उपादान कारण. principal or material cause. विशेष १७४;

**असाहु** त्रि० ( असाधु ) अविनीत-कुत्सित साधु अविनीत-विनय रहित साधु. A Sādhu lacking in reverence, a disobedient Sādhu दस० ७, ४८; उक्त० १, २८, ( २ ) अभंगल, असुंदर. अभंगल; असुंदर inauspicious; bad सूय० २, ५, १२; ( ३ ) अनर्थकर; अनर्थहेतु अनर्थकारक, अनर्थहेतु cause of evil or calamity सूय० १, २, २, १८; ( ४ ) गेशाला आदि कुदर्शनना साधु गेशाला आदि कुदर्शन का साधु. ascetics of false faith like Goshālā etc दसा० ६, ४; ( ५ ) असंयति; अव्रती; अव्रतहारी अव्रती; व्रत रहित; अव्रतचारी. vowless; incontinent ठा० ७, १०,—कम्म पुं० (—कर्मन्) कूर कर्म; जन्मान्तरमां करेहु अशुल अनुष्ठान कूर

कर्म; पूर्व जन्म में किया हुआ अशुभ कर्म.  
cruel deed, evil deed done in  
past life. सूय० १, ५, १, ६; ( २ ) पुं०  
दूर धर्मवाणा परमाधामी. क्रूर कर्म करने वाला  
परमाधर्मी. Paramādhāmīs who do  
cruel deeds सूय० १, ५, १, ६;—दंस्त्रण.  
न० (—दर्शन) असाधु दर्शन, दुर्दर्शन असाधु  
दर्शन, कुदर्शन, मिथ्यादर्शन false faith;  
wrong belief. नाया० १३,—धम्म  
पुं० (—धर्म) स्नान इत्युं, तर्पणुं इत्युं इत्यादि  
असंयतिओये अतावेस धर्म असंयतियों  
का बताया हुआ—स्नान, तर्पण करने रूप धर्म.  
religion of the unrestrained in  
senses, e g. bathing, perform-  
ing Tarpana etc. “असाधुधम्माणि  
ण संवएजा ” सूय० १, १४, २०,

असाहुया स्त्री० ( असाधुता ) साधुताही  
अभाव; असाधुपणु साधुता का अभाव.  
Absence of goodness, absence  
of asceticism दस० ५, २, ३८;

असाहुवं. अ० ( असाधुवत् ) असाधुनी पेड़े.  
असाधु के समान Like a man who is  
not a Sādhu उत्त० २, २७;

असाहेमाण. व० कृ० त्रि० (असाधयत्) इर्थ  
न साधनो कार्य न साधता हुआ. Not  
accomplishing any purpose  
भग० १२, १,

असि पुं० ( असि ) अश्व, तलवार. खड्ग,  
तलवार. A sword सम० १४, भग० १,  
८, ३, ५, ६, ३३, १४, ८, नाया० १, ८;  
६, १५, १८, जीवा० ३, ३; जं० प० ( २ )  
पुं० न० तलवार आंधी नोडरी इस्वी ते,  
दुथीयार धर्म असि कर्म; शस्त्र आदि धारण  
करने का कर्म military service  
जीवा० ३, ३; जं० प० ( ३ ) न रक्षिता  
छवने तलवार वडे छेदना परमाधामी

नारकी जीव को तलवार से छेदने वाला पर-  
माधामी a Paramādhāmī who  
hacks the Nārakī beings  
with a sword. भग० ३, ६,—खेडग.  
न० (—खेटक) तलवारसहित म्यान तल-  
वार सहित म्यान a scabbard with  
a sword in it. परह० १, १, नाया० ६;  
—खेवणी. स्त्री० (—क्षेपणी—असिः क्षिप्यते  
यस्यां साऽसिक्षेपणी) ढाल ढाल a shield  
जं० प०—चर्मपाय. न० (—चर्मपात्र)  
म्यान, तलवारसहित म्यान. म्यान; तलवार  
साहित म्यान a scabbard “असिचम्म-  
पायहत्यकिञ्चगणं अप्पाणेरुत्ति ” भग०  
३, ५,—धारव्वय. न० (—धाराव्रत)  
तलवारनी ( आंशनी ) धार पर चलना  
जेवु व्रत, अतिदृष्टि व्रत. तलवार की  
धार पर चलने के समान व्रत, अतिकठिन व्रत,  
an austere vow, a vow as  
difficult as the act of walking  
on the edge of a sword नाया० १;  
—धारा स्त्री० (—धारा) तलवारनी धार  
तलवार की धार the edge of a sword.  
भग० ५, ७, १८, १०, उत्त० १६, ३७, नाया०  
१, १४,—धाराग. न० (—धाराक-  
असेधारा यस्मिन् व्रते आक्रमणीयतया  
तदसिधारकम् ) लुओ “असिधारव्वय”  
शब्द. देखो “असिधारव्वय” शब्द  
vide “असिधारव्वय.” “असिधारागं  
वयं चरियं” भग० ६, ३३,—धारागमण.  
न० (—धारागमन) अश्व-तलवारनी धारपर  
चलनुं ते तलवार की धार पर चलना. the  
act of walking on the edge of  
a sword उत्त० १६, ३८,—पंजर.  
न० (—पंजर) तलवारनुं पांजरुं; इस्वी  
तलवारनी अनेवु पांजरुं. तलवार का पिंजरा;  
फिरती हुई तलवार से बना हुआ पिंजरा.

a cage of swords. परह० २, २,—पञ्ज-  
रगश्च त्रि० (—पञ्जरगत ) इरता तरवार-  
वाणा भाणुसोथी धेराओक्ष. तलवार घुमाते  
हुए मनुष्यों से घिरा हुआ surrounded  
by men bearing swords. परह०  
२, २,—पत्त. न० (—पत्र ) तरवारनी  
धार जेवां पाँदवाणुं आउ, शाहमली नामे  
नरकुं ओउ आउ. तलवार की धार के समान  
पत्तों वाला झाड़, नरक में होने वाला शाल्मली  
नामक झाड़. a tree in hell  
named Sālmali, a tree having  
leaves like the edge of a  
sword उत्त० १६, ६०, भग० ३, ७,  
नाया० १६, ठा० ४, ४, जीवा० ३, १, विवा०  
६, ( २ ) तलवारना जेवा पाँदवाणु  
शाहमली नामे वृक्ष विदुर्वी तेनी नाये  
जेसाडीने नारकीना तलतल जेवग डटका डरी  
नाये ते, परमाधामी देवतानी नयमी जत  
तलवार के समान पत्तों वाले शाल्मली नामक  
वृक्ष को देवमायासे प्रकटकर उसके नीचे नार-  
कीयों को बैठाकर उनके टुकड़े २ कर डालने  
वाला, परमाधामी देवताओं की नवी जाति.  
the ninth kind of Paramā-  
dhāmī seating Nārakīs  
under supernaturally created  
Sālmali tree with its sword-  
like leaves and hacking  
them to pieces सम० १५, सूय०  
नि० १, ५, १, ७६;—रयण. न० (—रत्न )  
अक्षवर्तीनुं ओउ रत्न, अङ्गरत्न चक्रवर्ती  
का एक रत्न, खड्गरत्न a jewel of a  
Chakravartī ( a paramount  
king, ) a sword-jewel ठा० ७, १;  
पञ्च० २०, ज० प० ४, ६७,—लक्षणा.  
न० (—लक्षण ) तरवारना लक्षण ज्ञानुपानी  
उणा—ज्ञान तलवार के लक्षण जानने की कला  
the act of knowing the marks of

a sword सूय० २, २, ३०, ज० प० ३;  
नाया० १,—लट्टि स्त्री० (—यष्टि ) तरवार-  
वाणी लाडली, शुभी तलवार की लकड़ी, गुप्ति  
a sword-stick. विवा० १, ३, ओव०  
भक्त० ५८,—वण न० (—वन ) अङ्गना  
आकारे पाँदवाणां वृक्षनुं वन तलवार  
के आकार के समान पत्तों वाले वृक्षों का वन.  
a grove of trees having leaves  
of the form of a sword परह० १,  
१,—वर पु० (—वर ) श्रेष्ठ अङ्ग श्रेष्ठ  
खड्ग—तलवार the best sword, an  
excellent sword नाया० ६,

असिद्ध त्रि० (अशिष्ट—अकथित) न डहेयुं  
न कहा हुआ Not told परह० २, १;  
असिणाइ त्रि० (अस्नायिन्) स्नान नहि  
करन २ स्नान न करने वाला One who  
does not take a bath सम० ११,

असिणाण त्रि० (अस्नान) स्नानरहित;  
स्नान रहित. Unbathed, bathless.  
दस० ६, ६३, (२) न० स्नान नहि करयु ते  
स्नान का न करना absence of a bath.  
पवा० १०, १८,—अहिङ्गा त्रि० (—अधि-  
ष्ठातृ) जेभा स्नाननो प्रतिषेध छे ओयुं अनुष्ठान  
करन २ जिसमें स्नान का निषेध—मनाही है ऐसा  
अनुष्ठान करने वाला one who practises  
religious performance in which  
a bath is prohibited “जावजीववयं  
घोर असिणाणमहिङ्गा” दस० ६, ६३,

असिणाणअ त्रि० (अस्नानक) स्नानरहित;  
स्नान न करन २ स्नान रहित, स्नान न  
करने वाला Bath-less, one who  
does not take a bath दसा० ६, २;  
असित त्रि० (असित) पुत्र डलनादिथी  
अपह. मुनिविशेष. त्वां पुत्र आदि से न बधा  
हुआ, मुनिविशेष Not tied to or

fettered by wife, children etc.  
name of a saint आया० १, ५, ५, १६१;

**असिस्थ.** न० ( असिक्थ ) प्रवाही आहार;  
डाणीया वणी न शके येवे आहार. प्रवाही  
आहार; जिसका कवल-ग्रास न बंध सके ऐसा  
भोजन Liquid food कप्प० ६, २५;

**असिद्ध.** पुं० (असिद्ध) संसारी जिव. संसारी जीव.  
A worldly soul; a soul not  
liberated. भग० १, ६;

**असिद्धत्त.** न० ( असिद्धत्व ) असिद्धपणुं;  
सिद्धपणुतो अभाव. सिद्धपन का अभाव.  
Absence of Siddhahood i. e  
state of final emancipation.  
प्रव० १३०७;

**असिद्धि.** स्त्री० ( असिद्धि ) सिद्धिने अभाव,  
भोक्षने अभाव. सिद्धि का अभाव, मोक्ष का  
अभाव. Non-liberation from world-  
ly existence; absence of salva-  
tion. भग० १, ६; सूय० २, ५, १२;—**मग्ग.**  
न० (—मार्ग—न विद्यते सिद्धेमोक्षस्य विशिष्ट-  
स्थानोपलक्षितस्य मार्गो यस्मिन्नसाव-  
सिद्धिमार्ग ) जेमां भोक्षमार्ग नथी ते; भोक्ष  
मार्गथी विपरीत अनुष्ठान. मोक्ष मार्ग से  
विपरीत मार्ग. a performance which  
does not lead to salvation. सूय०  
२, २, ३२;

**असिप्पजीवि.** पुं० (असिप्पजीविन्) शिल्प-  
कारीगरी आदि धंधा करी जवन अलावनार  
नहि; कारीगरी वगेरे सावद्य व्यापारने  
तज्जनार शिल्पादि से आजीविका न चलाने  
वाला, कारीगरी आदि पाप व्यापार को न करने  
वाला One who does not main-  
tain himself by mechanical  
arts involving sinful opera-  
tions. “असिप्पजीवी अग्निहे अमित्ते” उक्त०  
१५, १६;

**असिय.** न० ( अशस् ) हरसने रोग. बवासीर;  
मस्से का रोग. The disease known  
as piles. “जे भिक्खु अप्पणो कायंसि गंडं  
वा पलियं वा अरियं वा असियं वा” निसी०  
३, ३४;

**असिय.** त्रि० ( असित ) कृष्ण; डाणुं; अशुभ.  
काला; अशुभ. Black; inauspicious.  
सु० च० २, ३५, जीवा० ३, ४; नाया० ८;  
पन्न० २; जं० प० पण्ह० १, ३; (२) विष-  
यादिक्कमां न अंधायेल. विषयादिक में न बंधा  
हुआ. not entangled in sensual  
pleasures etc. आया० १, ५, ५, १६१;  
—**केश.** त्रि० (—केश ) डाणा भोवाणा-केश  
वाणा. काले केशों वाला. black-haired.  
जीवा० ३,—**सिरय.** पुं० (—शिरोज) डाणा  
रंगना केश. काले रंग के केश. black hair.  
नाया० ८;

**असिय.** न० ( असिक ) नानी तलवार; दारुण.  
छोटो तलवार, हँसिया. A small sword;  
a scythe. नाया० ७; भग० १४, ७;

**असियग.** न० ( असितक ) दारुण. हँसिया;  
दारुण A scythe. भग० १४, ७;

**असिलाहा** स्त्री० ( अश्लाघा ) अश्लीति;  
श्लाघा नहि ते अश्लीति; अश्लाघा. Ill  
fame; disrepute. ठा० ४, १,

**असिलिद्ध.** त्रि० ( अश्लिष्ट ) छुटुं; योरेखुं नहि.  
पृथक्, न चिपका हुआ. Loose, not  
stuck नाया० ८;

**असिलेस.** पुं० ( अश्लेष ) अश्लेषन; अश्लेषने  
अभाव. बंधन का अभाव Absence of  
bondage गच्छा० ७०;

**असिलेसा.** स्त्री० ( अश्लेषा ) अश्लेषा नामदुं  
नक्षत्र. अश्लेषा नामक नक्षत्र. The  
constellation Aslesā “असिलेसा  
यक्खत्ते छ तारे परयत्ते” ठा० ६;

**असिलोत्र. पुं०** ( अश्लोक ) अपयश; अप्रशंसा. अपयश; बदनामी. Ill-fame; disrepute; dishonour. प्रव० १३३३;  
—भय न० (—भय) अपयशतुं लय बदनामी का डर. fear of dishonour प्रव० १३३४,  
**असिलोग. पुं०** ( अश्लोक ) अपकीर्ति; अपयश; अप्रशंसा. अपकीर्ति, निन्दा; अपयश. Obloquy, ill reputation, disrepute. सम० ७, विशेष० ३४५२;  
—भय-य. पुं० (—भय ) अपकीर्ति—अपयशने लय. अपकीर्ति—अपयश का भय. fear of infamy or disrepute. ठा० ७, १; सम० ७;

**असिव. त्रि०** ( अशिव ) अभंगल, अशुभ. अभंगल; अशुभ Inauspicious; evil, bad सु० च० २, ३१०, अणुजो० १३१;  
( २ ) देवताकृत उपद्रव; मार, भय, ताव वगेरे. लुद्र देवों द्वारा किया हुआ उपद्रव; मरी, दुखार आदि trouble caused by lowdeities. वव० २, ४,

**असी. स्त्री०** ( अशीति ) ८०; अंशी अस्ती; ८०. Eighty; 80. पञ्च० २, भग० ३, १,

**असीइ स्त्री०** ( अशीति ) ८०; अंशीनी संख्या अस्ती की संख्या, ८०. Eighty, 80. नाया० ८; भग० १, ५; सम० ८०, जं० प० २, २३; ५, ११८,

**असीइम त्रि०** ( अशीतिम ) असीमो, ८० भो. अस्तीवाँ, ८० वाँ Eightieth; 80 th. कप्प० ७, २२७,

**असीति स्त्री०** ( अशीति ) ८०; अंशी. अस्ती, ८०. Eighty, 80 पञ्च० ४, भग० ११, १, २०, ५, २१, ८,

**असील. त्रि०** ( अशील ) शीघ्र वगैरने, दुरा-

चारी. दुराचारी. Loose in character, vicious उत्त० ५, १२,

**असीलया स्त्री०** ( अशीलता—अशील ) शीघ्रने अलाव, मैथुन सेवतुं ते शील का अभाव; मैथुन का सेवन करना. Absence of chastity; sexual intercourse.  
( २ ) आरित्रने अलाव. चारित्र का अभाव. absence of right conduct परह० १, ४;

**असीलवं त्रि०** ( अशीलवत् ) सावध योग्यी निवृत्त थयेल नहि, आरित्रहीन. पाप से निवृत्ति न पाया हुआ, चारित्रहीन. Devoid of character, not free from sinful practices “असीलमंत” भग० ८, १०;

**असीविय. त्रि०** ( असीवित ) सीवेतुं नहि ते. बिना सिला हुआ, बिनासिलाई का. Unsewn, unstitched प्रव० ५४१;

**असुअ त्रि०** ( असुत ) पुत्ररहित. पुत्र रहित. Having no son, sonless “जहा न होइ असुआण लोगो ” उत्त० १४, ८;

**असुइ त्रि०** ( अश्रुति ) शास्त्ररहित शास्त्र रहित. Devoid of Śāstras, bereft of Śāstras. भग० ७, ६;

**असुइ त्रि०** ( अशुचि ) अपवित्र; अशुद्ध. अपवित्र; अशुद्ध. Impure, unholy. पिं० नि०भा० ३२, पिं० नि० १६५, निर० ३, ४, सु० च० ४, २८३, भग० ६, ३३, जं० प० २, ३६; वव० ३, २७; राय० २६; पञ्च० १; २; नाया० १२, भक्त० ३६, ( २ ) न० अपवित्रता; अशुद्धता. अशुचि, अपवित्रता, अशुद्धता. impurity; filth. जीवा० ३, ३; नाया० १, ६, भग० ७, ६; ११, ११; दस० १०, १, २१; ओव० ३८, अणुजो० १३०,  
—कुण्णिम. न० (—कुण्णिम) अपवित्र भास.



अपवित्र मांस. impure flesh; filthy flesh तंडु०—जायकर्मकरण. न० (-जातकर्मकरण ) जन्मती वप्यते नाऽ-च्छेदन वगेरे धर्म इत्युं ते, अशुचि-जन्म-धर्म. जन्म के समय नालच्छेदन वगैरह अशुद्ध कर्म करना; अशुचि-जन्मकर्म. the act of cutting the umbilical cord at the time of birth; an impure ceremony performed at the birth of a child. भग० ११, ११;—विल न० (-विल) अशुचि नीक्षणवातो छिद्र; शरीरमाथी अशुचि वहेवान्ना द्वार अशुचिद्वार; मलमूत्र निकलने का द्वार. a hole or aperture in the body to discharge its filth तंडु०—वेस. त्रि० (-विश्र) भण भूत्रादिये डरी विभ्र थयेतुं अथवा भीमत्स थयेतुं मल मूत्रादि से लिप्त अथवा बीभत्स. smeared and made dirty with filth. दसा० ६, १;—संकलित. त्रि० (-संकलित) अपवित्र पदार्थोंथी दूषित थयेतुं ( शरीर ). अपवित्र पदार्थों से दूषित ( शरीर ). (body) polluted with impure things भग० ६, ३३;—समुत्पण. त्रि० (-समुत्पन्न) अपवित्रतामा उत्पन्न थयेत. अपवित्रता में उत्पन्न. born in the midst of impurities. तंडु०—सामंत. त्रि० (-सामन्त) अपवित्र वस्तुनी समीप रहेतुं ( शरीर ). अपवित्र वस्तु के समीप रहा हुआ ( शरीर ). (body) remaining in the vicinity of filthy things. ठा० १०;

असुइत्त न० ( अशुचित्व ) अशुचि लावना, 'आ शरीर अशुचिनुं लावन छे, ऐम थितवतुं ते 'यह शरीर गन्दा है' ऐसा सोचना The meditation that the body (one's

body) is full of impurities. प्रव० ५७६,—भावणा. स्त्री० (-भावना) 'आ देह अशुचिभय छे' ऐम थितवतुं ते, आर लावनाभानी छट्टी लावना. देह की अशुचिता का चिंतन करना; बारह भावनाओं में से छट्टी भावना meditation upon the filthiness of the body; the sixth of the twelve Bhāvanās or meditations. प्रव० ५८०;

असुइत्ता सं० कृ० अ० ( असुप्त्वा ) अशुसुधने; सुता वगर. विना सोये, शयन न करके Without having slept; without sleeping. ठा० ३, २;

असुइय. त्रि० ( अशुचिक ) अशुचिरूप; भणभूत्रादि अशुचिरूप, मल मूत्र आदिक. Filthy; impure, urine etc. तंडु० ठा० १०,

असुक्क त्रि० ( अशुक्क ) न सुखायेतुं, सुख नहि ते, लीतुं. विना सूखा हुआ, हरा Not dry, green पि० नि० २७६;

असुज्झमाण. व० कृ० त्रि० ( अशुध्यमान-अशुध्यत् ) शुद्धि न पावतो; अशुद्ध थतो. शुद्धि को प्राप्त न होता हुआ, अशुद्ध होता हुआ. Not getting purity; becoming impure, not being purified. "असुज्झमाणे छेयविसेसा विसोहंति" पचा० १६, १८;

असुरणकाल. पुं० ( अशून्यकाल ) विवक्षित स्थानमा डोछ अहारथी नवे छव आपी उत्पन्न न थाय अने तेमांथी मरीने डोछ अहार नय नहि—नेटला वप्यत सुधी विवक्षित नारथी आदिनी आपी स्थिति रहे तेटलो डण; अविरह डण. जितने समय तक विवक्षित नार-की आदि की ऐसी स्थिति रहे कि, विवक्षित



स्थान में उससे बाहर का कोई नया जीव उत्पन्न न हो और न वहाँ का मरकर बाहर जाय उतना समय; अविरह काल. The period of time during which Nārakī and other such souls remain compactly together, no new soul coming in and no old soul going out of a particular area भग० १, २,

**असुद्ध.** त्रि० ( असुद्ध ) अशुद्ध, दोषसहित अपवित्र, शुद्धता रहित, दोष सहित Impure; faulty. प्रव० ३०, सम० प० १६८, परह० १, २; (२) सावधानुष्ठान करनेवाला. ( one ) doing a sinful performance. “असुद्धपरिणामसंकलितं भवति” परह० १, १; सूय० १, ८, २२,—भाव पुं० (—भाव ) अशुद्ध अव्यवसाय असुद्ध अव्यवसाय, असुद्ध-दुष्ट भाव impure thought-activity पंचा० १८, ३८;

**असुन्न** त्रि० ( असून्य ) शून्य नहि ते असून्य, शून्यता रहित. Not void; not blank, not solitary. क० प० १, १६;

**असुभ** त्रि० ( असुभ ) अशुभ; अमंगल, भराय. असुभ, अमंगल, बुरा Inauspicious; bad. अणुजो० १२७, सम० २५, दसा० ६, ४, ७, १२, नाया० ८, पिं० नि० ५२, जीवा० १, भग० १, ७, ३, २; ५, ६, ६, ७, ६, ज० प० ५, १२३; सूय० २, २, ३६, क० प० १, ६०, ( २ ) न० अशुभ-पापकर्म. असुभ-पाप कर्म. sinful Karma. ठा० ५, १, क० ग० १, ४२; —अज्झवसाण. न० (—अध्यवसान ) अशुभ परिणाम असुभ-खराब परिणाम

undesurable thought-activity. पंचा० १६, २८,—अणुप्पेहा लो० (—अनुपेक्षा ) संसारनी अशुभतानु चितवन करुनुं ते. संसार के अशुभपना का चितवन करना. meditation upon the evils of worldly existence. भग० २५, ७; ठा० ४, १, ओव० २०,—कम्म. त्रि० (—कर्मन् ) अशुभ कर्मवाला. असुभ कर्म वाला ( one ) having evil Karmas परह० १, १; —किरिया. लो० (—क्रिया) अशुभ-अमंगल चेष्टा-क्रिया. अमंगल क्रिया, असुभ चेष्टा an evil action, a pernicious action. पंचा० १३, ४०,—गंध पुं० (—गन्ध ) अशुभ-भराय गंध, दुर्गंध दुर्गन्ध, बदबू bad smell; odious smell. नाया० ६,—णाम. न० (—नामन् ) अशुभ नामकर्म, नामकर्मनी अशुभ-अनिष्ट प्रकृति. नामकर्म की असुभ-खराब प्रकृति. an evil variety of Nāma-Karma ठा० २, ४,—णामकम्म. न० (—नाम-कर्मन् ) नामकर्मनी अशुभ प्रकृति नाम कर्म की असुभ प्रकृति. An evil variety of Nāma-Karma. भग० ८, ६,—दुक्खभाणि त्रि० (—दुःखभागिन्) अशुभ प्रकृतिजन्य दुःख भोगी असुभ प्रकृति से उत्पन्न दुःख का भागी. ( one ) sharing in the misery arising from a variety of evil Karma भग० ७, ६, जं० प० २, ३६,—पोग्गल पुं० (—पुद्गल) अशुभ पुद्गल, भराय पुद्गल असुभ पुद्गल; खराब परमाणु. matter or substance bad in its nature नाया० ८, ६,—वरण. पुं० (—वर्ण ) भराय वर्ण-रूप. असुभ वर्ण-रूप. bad or repulsive colour or appearance. क० प० १, ५७,—चिचाग.

न० (—विपाक ) असातावेदनीयादिरूपे परिणाम आपनार डर्म. असातावेदनीयादि रूप से फल देने वाला कर्म. misery or pain-entailing Karma; Karma resulting in pain. ठा० ४, ४;

—स्वर. पुं० (—स्वर) अशुभ-अराय २४२-अवाज. अशुभ स्वर, कर्कश-अप्रिय आवाज. bad voice; harsh voice. भग० १, ७;

असुभतर त्रि० (अशुभतर) अति अशुभ. अति अशुभ; बहुत ज्यादा अशुभ Highly inauspicious; very bad नाया० ८;

असुभत्त. न० (अशुभत्व) अशुभपणुं; अशुभपना. Inauspiciousness; badness. भग० ६, ३,

असुमण. त्रि० (असुमन्) शुभ मन विनाश; अप्रसन्न. खराब मन वाला. Evil-minded; cynical in mind. प्रव० १५४;

असुय त्रि० (अश्रुत) नहि सांलण्डुं. न सुना हुआ. Not heard, unheard. भग० १, ६; ३, ७; १८, ७, नाया० १; राय० ४२, पि० नि० २३६; ठा० ८, १;—णिस्सिय.

त्रि० (—निश्चित) सांलण्या-अनुलब्धा विना उत्पातकी आदि बुद्धि-तर्कशी यतुं ज्ञान; उत्पातकी, वैनयिकी, कार्मिकी अने पारिणामिकी ये चार बुद्धि. विना सुने या अनुभव किये उत्पातकी आदि (उत्पातकी, वैनयिकी, कार्मिकी और पारिणामिकी ये चार प्रकार की) बुद्धि से होने वाला ज्ञान. knowledge derived from spontaneous thought; there are four kinds of intellect viz Utpātakī, Vainayikī, Kārmikī and Pāṇināmikī नंदी० २६; ठा० २, १;—पुव्व त्रि० (—पूर्व) पूर्व इंद्री नहि सांलण्डुं. पहिले कभी न सुना

हुआ. not heard before; unheard before. भग० ६, ३३;

असुयक्खरपरिणामा. त्री० (अश्रुताक्षरपरिणामा-न श्रुतानुसार्यक्षरपरिणामो यस्या सा) श्रुतानुसाररहित शब्दमात्र परिणामवाणी भति श्रुतानुसार न होकर केवल शब्दमात्र परिणाम वाली बुद्धि Intellect depending on words without following the Śāstras for its development. विशेष० १५७;

असुयवं. त्रि० (अश्रुतवत्) ज्ञानशी रहित. ज्ञान से रहित. Devoid of knowledge; ignorant. भग० ८, १०;

असुर. पुं० (असुर) लवनपति अने वाणव्यंतर ये ये ज्ञातना देवता. भवनपति और वाणव्यंतर इन दो जातियों के देव. The two kinds of subordinate gods viz Bhavanapati and Vānavyantara. (२) असुरकुमार देवता; असुरकुमार देव. the Asurakumāra kind of gods. नाया० ८; जीवा० १, ३, ४; भग० २, ५; १८, ७, नंदी० स्थ० ३; ठा० १, १; सम० ३४; उक्त० १२, २५; ३६, २०४, ओव० २२; अणुजो० १३०;—टिड्. त्री० (—स्थिति) असुरकुमार की स्थिति-आयुष्य. असुरकुमारों की आयु. the life period of Asurakumāra gods. भग० २४, १;—दार. न० (—द्वार) सिद्धायतनं दक्षिण द्वार, जहाँ असुर निवास करते हैं. the southern door of the abode of Siddhas where Asuras reside. ठा० २, २;—राज. पुं० (—राज) असुरकुमारों का राजा. the king of Asurakumāra gods. सम०

३३;—रायो. पुं० ( -राज ) लुओ 'असुरकुमारराया' शब्द. देखो "असुरकुमारराया" शब्द vide "असुरकुमारराया." भग० ३, १; जं० प० ५, ११६;

**असुरकुमार.** पुं० ( असुरकुमार ) भवनपति देवतानी ओक भति भवनपति देव की एक जाति A kind of Bhavanapati gods. सू० प० २०, भग० १, १, ८, १, पञ्च० १, ओव० २२, सम० १, ( २ ) आरभा तीर्थकर वासुपूज्यना यक्षुं नाम. बारहवें तीर्थकर वासुपूज्य के यक्ष का नाम a name of the Yaksha ( a kind of demi-god ) of Vāsupūjya the 12th Tirthankara. प्रव० ३७५, —आवास पुं० ( -आवास ) असुरकुमारना आवास-भेद-लवन; असुरकुमार देवतानुं निवासस्थान असुरकुमारों का निवासस्थान the residence of Asurakumāra gods भग० १, ५; १८, ५, —भवन न० ( -भवन ) असुरकुमार देवताने रहेवानु स्थान असुरकुमार देवों के रहने का स्थान the residence of Asurakumāra gods भग० २४, १२, —राया. पुं० ( -राज ) असुरकुमारना राज. असुरकुमारों का राजा the king of Asurakumāra gods भग० ७, ६,

**असुरकुमारत्त** न० ( असुरकुमारत्व ) असुरकुमारपणुं असुरकुमारपन. The state of being an Asurakumāra god भग० ६, ५, २०, ३,

**असुरसुर.** त्रि० ( -असुरसुर ) 'सुरसुर' शब्द रहित, 'सुरसुर' एवा आवाज विनाने 'सुरसुर' ऐसे आवाज रहित, Free from the hissing sound like " Sur, Suī " परह० २, १, भग० ७, १;

**असुरिन्द्र.** पुं० ( असुरेन्द्र ) असुरकुमार देवतानी छन्द, यमरेन्द्र अने अलेन्द्र असुरकुमार देवों का इन्द्र, चमरेन्द्र और बलेन्द्र India of the Asurakumāra gods, Chamarendra and Balendra भग० २, ८; ३, १, ७, ६, १८, ७; ओव० २३, ठा० २, ४, ३, १, सम० ३३, नाया० ८; कप्प० ५, ११५, जं० प० २, ३३, ५, ११८, —वज्जिय त्रि० ( -वज्जित ) असुरेन्द्ररहित, असुरकुमारना छन्दनी गेरहाजरी-वाणुं असुरेन्द्र रहित, असुरकुमारों के इन्द्र की अनुपस्थिति-गैर मौजूदगी वाला devoid of the presence of the Indra of Asurakumāra gods. भग० १४, ६,

**असुस्सुसणा** स्त्री० ( -अशुश्रूषणा-अशुश्रूषण ) गुरु आदिनी शुश्रूषा-सेवाभक्ति न करवी ते गुरु आदि की सुश्रूषा-सेवा न करना. Omission of proper services to elders etc. नाया० १३,

**असुह** न० ( असुख ) दुःख दुःख. Misery, pain. ठा० ३, ३,

**असुह** त्रि० ( अशुभ ) लुओ 'असुभ' शब्द देखो " असुभ " शब्द Vide 'असुभ' भग० १, ५, पिं० नि० १०६, उत्त० १०, १५, कप्प० २, २७, ( २ ) अशुल नामकर्म. अशुभ नामकर्म. bad or evil Nāma-Karma. क० ग० १, ४२, ५, ६, —गइः स्त्री० ( -गति ) अशुल गति, नरक आदि अशुल गति नरक आदि अशुभ गति bad or miserable condition of existence; e g that of hell-beings etc क० ग० ५, ६१, —जोग पु० ( -योग ) अशुल योग अशुभ योग evil thought-activity. भग० १, १, —नवग न० ( -नवक )

डाणो, नीलो ओ भे वरु, दुरसिगंध, तीणो, डडो ओ भे रस, गुरु, भरभरो, धुणो अने शीत ओ चार स्पर्श, ओ नाम-धर्मनी नव प्रकृतियोनो समूह. काला और नीला ये दो रङ्ग, दुर्गन्ध, तीखा और कड़वा ये दो रस, भारी, खुरदरा, रूखा और ठंडा ये चार स्पर्श इस प्रकार नामकर्म की नौ प्रकृतियों का समुदाय. the group of the following nine varieties of Nāma-Karma viz the two colours (viz black and blue) the three tastes ( viz pungent, bitter and stinking ) and the four kinds of touch (viz heavy, rough, dry and cold ). क० ग० १, ४२; —नाम. न० (—नामन्) लुणो 'असुभणाम' शब्द देखो 'असुभणाम' शब्द. vide 'असुभणाम.' उक्त० ३३, १३;

**असुहत्त.** न० (—अशुभत्व) अशुभपणुं. अशुभपणा. Evil; badness. सूय० १, ८, ११;

**असुहअ.** त्रि० (असूचित) सूयना नहि डरेव. सूचित न किया हुआ; बिना सूचना दिया हुआ. Not instructed; not suggested. ( २ ) व्यंजनादिही रहित. व्यजनादि से रहित. devoid of unseasoned eatables. दस० ५, १, ६८; ( ३ ) डला बिना आपेक्षुं अन्न वगैरे. बिना कहे दिया हुआ अन्न वगैरह. food etc. given without being asked for. दस० ५, १, ६८;

**असूया.** त्री० (असूचा-असूची-अज्ञद्वाराचेष्टा सूची न सूची असूची-स्फुटवचनम् ) स्फुट वचन. स्फुट वचन. Frank speech; clear speech. पि० नि० ४३७;

**असूरिय** त्रि० (असूर्य) जेभां सूर्य नथी ते; नरक्षत्राभो. जहां सूर्य नहीं है ऐसा स्थान;

नरकावास. Sunless; e. g. hell. "असूरियं नाम महाभितावं, अंधंतमं दुष्पतरं महंतं" सूय० १, ५, १, ११;

**असेदिगय** त्रि० (अश्रेणिगत) उपशम श्रेणि तथा क्षपक श्रेणिओ यडेव नहि ते श्रेणी (उपशम-श्रेणी और क्षपकश्रेणी) में नहीं पहुँचा हुआ. (One) that has not attained to the stage called Upasāma (subsidence) and Kṣapaka (wearing off). क० प० ५, ४१;

**असेलेसिपडिवन्नग.** पुं० (अशैलेशीप्रतिपन्नक) अयोगी अवस्थाने प्राप्त न थयेव; यौद्ध-मा गुणुहाणुनी शैलेशी अवस्थाने न पायेव. अयोगी अवस्था को न पाया हुआ; चौदहवें गुणस्थान की शैलेशी अवस्था को न पहुँचा हुआ. One who has not attained to the stage of complete cessation of physical and mental activity known as Śaileśī stage in the 14th Guṇasthāna भग० २४, ४; पन्न० २२;

**असेस.** त्रि० (अशेष) नि.शेष; सर्व; समग्र; संपूर्ण. नि.शेष; सर्व, सम्पूर्ण. Whole; entire; complete. सूय० १, ६, १७; दसा० ५, ३४, ३५; पंचा० १६, ३६; क० गं० ४, ७२, —सत्तहिय न० (—सत्तहित) समस्त प्राणिने हितकरनार. सम्पूर्ण प्राणियों का हित करने वाला. that which is beneficial to all living beings. "जिणिंदवयणं असेससत्तहियं" पंचा० १६, ३६;

**असेहिय.** त्रि० (असैदिक) अ-नहि सैदिक-भौतिक; सांसारिक; मोक्ष संबंधी नहि. जो मुक्ति संबन्धी न हो वह; सांसारिक; जिसका मोक्ष से संबन्ध न हो वह. Temporal; not

spiritual; not pertaining to  
absolution. सुहं वाजइ वा दुक्खं, सेहियं  
वा असेहियं ” सूय० १, १, २, २;

**असोग. पुं० ( अशोक )** कंडेली नामनु ओके  
इणीआवाणुं—आसोपालवनु आउ. एक वृक्ष-  
विशेष; अशोक वृक्ष. Name of a tree;  
the *Asoka* tree. सम० ३४; ओव०  
अणुजो० १६; नाया० ६, भग० २२, २;  
जीवा० १; पन्न० १; कप्प० ३, ३७;  
ज० प० ५, १२२; राय० ५७; ( २ )  
नेनी नीये १६मा तीर्थंकर मल्लीनाथ  
स्वामीने केवल ज्ञान उपण्युं ते आउ  
वह वृक्ष जिसके नीचे १६वें तीर्थंकर मल्लीनाथ  
स्वामी को केवल ज्ञान उत्पन्न हुआ था. the  
tree under which Mallinātha  
the 19th Tirthankarā attained  
to omniscience. सम० प० २३३, ( ३ )  
योथा अलदेवनुं त्रीण पूर्वलवनुं नाम चौथे  
बलदेव के तीसरे पूर्वभव का नाम. name of  
the third previous birth of the  
fourth Baladeva. सम० प० २३६; ( ४ )  
अशोकनामे ७२ मे महाग्रह the 72nd great  
planet named *Asoka* ठा० २, ३, सू०  
प० २०; ( ५ ) सूर्याभि विमानना अशोकवनने  
देवता सूर्याभि विमान के अशोकवन का  
देव. the deity of the *Asoka*  
forest of *Sūryābha* राय० १४०,  
( ६ ) अरुणद्वीपना देवतानुं नाम. अरुणद्वीप  
के देव का नाम. name of the deity of  
*Arunadvīpa*. जीवा० ३, ४, ( ७ ) किन्नर  
देवनी सभा आगणुं चैत्यवृक्ष—आसोपाल-  
वनु आउ. किन्नर देवता की सभा के आगे का  
चैत्यवृक्ष the *Asoka* tree in front  
of the council-hall of Kinnara  
god. ठा० ८, १; ( ८ ) ओ नामनी ओके

लता; अशोकलता. एक लता का नाम;  
अशोकलता. a creeper of that  
name, the *Asoka* creeper.  
पन्न० १;—लया स्त्री० (—लता ) अशोक  
वृक्षने विट्ठीने रहेली लता. अशोक वृक्ष से  
लिपटी हुई लता a parasite encir-  
cling an *Asoka* tree. जं० प० १;  
—वण. पुं० (—वन ) सूर्याभि विमानना  
पूर्वने दशवान्तेथी ५०० जेज्जनने अंतरे  
साउ आर डुअर जेज्जन लांयुं अने ५००  
जेज्जन पढोणुं अशोक वृक्षनुं वन. सूर्याभि  
विमान के पूर्व द्वार से ५०० योजन की दूरी  
पर साढ़े बारह हजार योजन लंबा और ५००  
योजन चौड़ा अशोकवृक्षों का वन name  
of an *Asoka* forest 12500  
Yojanas in length and 500  
Yojanas in width, situated at a  
distance of 500 Yojanas from  
the eastern gate of the *Sūryā-  
bha* celestial abode. राय० १२५;  
अणुजो० १३१, निसी० ३, ८१; भग०  
१, १;—वणिया स्त्री० (—वनिका )  
अशोक वृक्षनुं नानुं वन अशोक वृक्षों-  
का छोटासा वन a grove of *Asoka*  
trees. नाया० ८, १४; १६; १६; विवा०  
१०,—वरपायव पुं० (—वरपादप ) अति  
उत्कृष्ट—उत्तम अशोक वृक्ष. अत्युत्कृष्ट अशोक  
वृक्ष an excellent *Asoka* tree.  
“इंसि असोगवरपायवसमुवट्ठिया” जीवा०  
३; नाया० ५; ८, १४; १६, निर० ३, ३;  
कप्प० ५, ११३; जं० प० २, ३०;

**असोगजकख. पुं० ( अशोकयक्ष )** प्राचीन कालमें  
विजयपुरनगरना नन्दनवन नामना उद्यानने  
ओके यक्ष प्राचीन काल के विजयपुरनगर के  
नन्दन वन नामक उद्यान में रहने वाला  
एक यक्ष. A *Yakṣa* ( a kind of



demi-god ) residing in the garden called Nandanavana in the city of Vijayapura in ancient times विवा० २, ३,

असोगवडिंसग पुं० ( अशोकावतंसक )  
- लुग्यो " असोगवडिंसग " शब्द. देखो  
' असोगवडिंसग ' शब्द. Vide ' असोगव-  
डिंसग ' राय० १०२;

असोगवडिंसग. न० ( अशोकावतंसक )  
पहेला देवलोकना सौधर्म विमाननी  
पूर्व दिशाभा आवेश विमाननु नाम पहिले  
देवलोक के सौधर्म विमान की पूर्व दिशा  
में आये हुए विमान का नाम. Name  
of a celestial abode in the east  
of the Saudharma heavenly  
abode of the first Devaloka.  
राय० १०२;

असोगसिरी. पुं० ( अशोकश्री ) चंद्रगुप्तना दीकरा  
विन्दुसारना पुत्र, पाटलीपुत्र नगरना ओड प्रा-  
चीन राजा चन्द्रगुप्त के पुत्र विन्दुसार का लड़का;  
पाटलीपुत्र-पटना नगर का एक प्राचीन राजा.  
An ancient king of Pātaliputra  
( Patnā ) city; son of Bindu-  
sāra the son of Chandragupta  
चंद्रगुप्तस्स पुत्तो उ, विन्दुसारस्स नत्तुओ असोग-  
सिरिणो पुत्त, अंधो जायइ कागणि' विशे० ८६२;

असोगा स्त्री० ( अशोका ) नागकुमारना राजा-  
धरणीना लोडपाव डालनी पहेली पट्टराणी.  
नागकुमार देवों के राजा धरणी के काल नामक  
लोकपाल की पहिली पट्टरानी The first  
principal or crowned queen of  
Kāla, the Lokapāla of Dharane-  
ndra the king of Nāgakumāras.  
ठा० ४, १ भग० १०, २, (२) शीतलनायस्वामीनी  
शासनदेवीनुं नाम शांतलनायस्वामी की शास-  
नदेवी का नाम. name of the tutelary

goddess of Śitalanātha Svāmī.

प्रव० २७७, ( ३ ) नलिना विजयनी मुख्य  
राजधानी नलिन विजय की मुख्य राजधानी.  
the principal capital of Nalina

Vijaya " दो असोगाओ " ठा० २, ३, ज० प०

असोचछा सं० कृ० अ० ( अश्रुत्वा ) धर्मो-  
पदेश सांभल्या विना धर्मोपदेश सुने बिना.  
Without having heard reli-  
gious instruction " असोचछा भंते !  
केवलस्स वा केवलिसावगस्स वा केवलि-  
सावियाए वा केवलिउवासगस्स वा केवलि-  
उवासियाए वा " भग० ६, ३१,

असोणित. त्रि० ( अशोणित ) लोही वगरनुं.  
रक्त रहित, बिना रुविर का. Bloodless.  
पंचा० १६. ६;

असोत्थ पुं० ( अश्वत्थ ) पीपलनुं वृक्ष पीपल  
का वृक्ष The Pipala tree; the  
holy fig-tree. भग० २२, ३;

असोम्म. त्रि० ( असौम्य ) क्रूर, सौम्य नहि.  
क्रूर; जो सौम्य न हो वह. Cruel, not  
gentle परह० १, २;—गगह. पुं० (—ग्रह)  
क्रूर ग्रह—मंगल, शनि वगैरे. क्रूर ग्रह; मंगल,  
शनि वगैरह. a cruel planet, e. g.  
Mars, Saturn etc परह० १, २;  
—गगहचरिय. न० (—ग्रहचरित ) क्रूर ग्रह-  
नी याव, शनि आदि क्रूर ग्रहनी गति. क्रूर  
ग्रहों की चाल the motion of a cruel  
planet. परह० १, २;

असोय. न० ( अशौच ) अपवित्रता. अपवि-  
त्रता, अशुद्धता Impurity, absence  
of cleanliness ओव० नि० ३१६,

असोय. पुं० ( अशोक ) लुग्यो ' असोग '  
शब्द देखो " असोग " शब्द Vide  
' असोग '. राय० ४, जीवा० ३, ३; भग० ३,  
२; सु० त० ३, ८०;—पल्लव न० (—पल्लव )  
अशोकना पावडा. अशोक वृक्ष का पत्ता the



leaves of the Aśoka tree  
 राय० ६४;—पल्लवपविभक्ति न०  
 (-पल्लवप्रविभक्ति ) जेभा अशोकना  
 पांढांनी रचना करवाभा आवे छे  
 ओवु नाटक; ३२ नाटकांनुं ओक. जिसमें  
 अशोक वृक्ष के पत्तों की रचना की जाय ऐसा  
 नाटक, ३२ प्रकार के नाटकों में से एक प्रकार का  
 नाटक. a drama exhibiting ( a  
 bower etc ) of the leaves of Aśo-  
 ka trees; one of the 32 kinds  
 of dramas. राय० ६४,—वणषण्ड  
 न० (-वनषण्ड ) आसोपाववनु वन.  
 अशोक वृक्षों का वन a forest of Aśoka  
 trees. भग० ३, २,—वरपायव. पुं०  
 (-वरपादप ) जुओ. “ असोगवरपायव ”  
 शब्द. देखो “ असोगवरपायव ” शब्द.  
 vide “ असोगवरपायव ” नाया० ८,

असोयण्या. स्त्री० (-अशोचनता-अशोचन )  
 शैथ न करवे ते शोक न करना, रज्ज न करना.  
 Not giving way to grief, avoid-  
 ance of grief. भग० ७, ६,

असोयवडिसय न० ( अशोकावतंसक )  
 जुओ. “ असोगवडिसय ” शब्द देखो  
 “ असोगवडिसय ” शब्द. Vide  
 “ असोगवडिसय. ” भग० ३, ७, १०, ६,

असोया स्त्री० (अशोका ) कुमुदा विजयनी  
 मुख्य नगरी कुमुदा विजय की मुख्य नगरी  
 The capital city of Kumudā  
 Vijaya ठा० २, ३, ( २ ) दशभा  
 शीतलनाथ तीर्थकरनी शासन देवीनुं नाम  
 दसवें तीर्थकर शीतलनाथ की शासन देवी  
 का नाम name of the tutelary  
 goddess of the 10th Tirthankara  
 Sitalanātha प्रव० ३७७,

अस्स. अस्मद्, प० ए० (अस्य) जुओ. ‘एत’ शब्द-  
 ना पड़ीना ओक वयननुं रूप देखो ‘एत’ शब्द,

की षष्ठी विभक्ति के एक वचन का रूप. Vide  
 the genitive sing. of ‘एत’ क० गं०  
 ४, ८१,

अस्स पुं० (अश्व) घोडा घोडा A horse.  
 पञ्च० १, ओघ० नि० १६२, भग० ३, २, ( २ )  
 अश्विनी नक्षत्रनो देवता; अश्विनीकुमार.  
 अश्विनी नक्षत्र का देवता, अश्विनीकुमार.  
 the deity of the Aśvinī  
 constellation, Aśvinikumāra ‘दो  
 अस्सा’ ठा० २, ३, सू० प० १०,—चोरग.  
 पुं० (-चोरक ) घोडानी चोरी करना;  
 घोडानो चोर घोड़े की चोरी करने वाला.  
 a stealer of horses परह० १, ३,

अस्सकंता. स्त्री० ( अश्वकान्ता ) मध्यम  
 आभनी पायभी मूर्च्छना. मध्यम आभ  
 की पाँचवीं मूर्च्छना The fifth note of  
 the middle scale of music. ठा०  
 ७, १,

अस्सकरणा पुं० (अश्वकर्ण) ओ नामनो ओक  
 अतरद्वीप, ५६ अतरद्वीपमानो ओक  
 एक अन्तर्द्वीप का नाम, ५६ अन्तर्द्वीपों में से  
 एक An Antaradvīpa of that  
 name, one of the 56 Antara-  
 dvīpas. नंदी०

अस्सकरणी स्त्री० (अश्वकर्णी) घोडाना  
 डान जेवा पांढांवाणी वनस्पति, ओक  
 जतनो छन्द घोड़े के कानों के आकार के समान  
 पत्तों वाली वनस्पति, एक जाति का कन्द. A  
 kind of vegetation having leaves  
 of the shape of a horse's ear, a  
 kind of bulbous root उक्त० ३६,  
 ६६, जीवा० १, पञ्च० १, भग० ७, ३, २३, २,

अस्सतर पुं० (अश्वतर) ओक जतनो घोडा-  
 अश्वतर एक जाति का घोडा, खच्चर A kind  
 of horse, a mule. पञ्च० १,

अस्तथ. पुं० (अश्वत्थ) पिपला; असुरकुमारतुं  
चैत्य वृक्ष. पीपल, असुरकुमारों का चैत्य  
वृक्ष. The holy fig-tree; the  
Chaitya tree of Asurakumāra.  
ठ० १०, १;

अस्तपुरा. स्त्री० ( अश्वपुरी ) पश्चिम  
महाविदेहना दक्षिण भांडवानी प्रथम  
विजयनीमुष्य राजधानी. पश्चिम महाविदेह  
के दक्षिण खंड के प्रथम विजय की मुख्य  
राजधानी. The capital of the first  
Vijaya of the southern Khanda  
of western Mahāvideha.  
जं० प०

अस्तमाण. व० कृ० त्रि० ( \* आस्रवमाण-  
आस्रवत् ) सूयतुं; अस्तुं. भरता हुआ.  
Dropping; oozing. निसी० १८, १८;

अस्तमुह पुं० ( अश्वमुख ) आदर्शमुष  
उपरने ओष्ठ अन्तरद्वीप; ५६ अन्तरद्वीप-  
भानो ओष्ठ. आदर्शमुख के आगे का  
एक द्वीप; ५६ अन्तर्द्वीपों में से एक द्वीप.  
Name of an Antaradvīpa next  
to Ādarśamukha; one of the  
56 Antaradvīpas. पञ्च० १;

अस्तलेसा. स्त्री० ( अश्लेषा ) अश्लेषा नक्षत्र.  
अश्लेषा नक्षत्र. The constellation  
Āśleṣā. ठ० २, ३;

अस्तसेण. पुं० ( अश्वसेन ) पार्श्वनाथस्वामी-  
ना पिता. पार्श्वनाथस्वामी के पिता. The  
father of Paśvanātha Svāmī.  
प्रव० ३६; (२) १४ मे ३६ १४ वौ ग्रह. the  
fourteenth planet. चं० प० २०;

अस्तामाण. व० कृ० त्रि० ( \* आस्वादमान-  
आस्वादयत् ) थोड़ा खाओ; सेरडीना-सांझनी  
पेडे थोड़ा चुसतो अने धातुं नाभी देतो. थोड़ा  
चाखता हुआ; सांठे की तरह थोड़ा चूसकर  
अधिक फैक देता हुआ Tasting  
or relishing a little. भग० १२, १;

अस्ताकं. अस्मद्, व० व० ( अस्माकम् )  
आपणुं; अमारुं. अपना, हमारा. Our. सूय०  
२, ७, १३;

अस्तादेमाण. व० कृ० त्रि० ( आस्वादयत् )  
लुओ- “ अस्तामाण ” शब्द. देखो  
'अस्तामाण' शब्द. Vide 'अस्तामाण'.  
भग० १२, १;

अस्ताय. न० ( असात ) असातावेदनीयता  
उदयथी प्राप्त थयेतुं दुःख. असातावेदनीय  
कर्म के उदय से प्राप्त हुआ दुःख. Misery  
arising from the maturity  
of Asātāvedaniya Karma (i. e.  
one accompanied with  
pain-feeling ). आया० १, १, ६, ५०;  
क० गं० २, ७;

अस्तायण. पुं० ( अश्वयन ) अश्विनी नक्षत्रतुं  
गोत्र. अश्विनी नक्षत्र का गोत्र. The  
family line of the constellation  
Āśvinī. सू० प० १०; जं० प० ७, १५६;

अस्तायणिज्ज. त्रि० ( आस्वादनीय ) स्वाद  
लेना योग्य. स्वाद लेने योग्य. Tasteful;  
full of relish. नाया० १२;

अस्तावि. त्रि० ( आस्ताविन्-आसमन्ताद्  
स्रवति तच्छील आस्तावी ) छिद्रसहित; जेभां  
पाणी आवे ओतुं. छिद्र वाला; जिसमें पानी  
आ सके ऐसा. Having leaks or  
holes; leaking. “जहा अस्ताविणि  
नावं, जाइअंधो दुस्सु” सूय० १, १, २, ३०;

अस्ति. पुं० ( अस्ति ) पुण्यो. कोना. An angle, a corner, e.g. of a room etc ठा० ६;

अस्ति. पुं० ( अश्विन् ) अश्विनी नक्षत्रको देवता. अश्विनी नक्षत्रका देव The deity of the Aśvinī constellation. ठा० २, २;

अस्तिअ-य. त्रि० (आश्रित)आश्रय करी रहेल; ढाँधने आशरे रहेल, आश्रय करेला. आश्रित, किसीके आश्रय में रहा हुआ. Resorted to; resting on; dependent on उत्त० १३, १५; २८, ६; ३५, २; दस० ४; अणुजो० १२८,

अस्तिं. इदम्, स० ए० ( अस्मिन् ) आभां; ऐभां. इसमें In this; on this नाया० १, ५; भग० ५, ४, ६, ३३, ११, ६; २०, ८, अस्तिं इदम्, ष० व० ( एषाम् ) ऐभनु, आभनु इनका Of them, of these. भग० २, १; ५, ४;

अस्तिणी. स्त्री० ( अश्विनी ) अश्विनी नामतुं नक्षत्र. अश्विनी नामक नक्षत्र A constellation named Aśvinī. “ अस्तिणी णक्खत्ते तितारे पण्णत्ते ” सम० ३; सू० प० १०; जं० प० ७, १५१; ठा० २, ३, अणुजो० १३१,—णक्खत्त न० (—नक्षत्र) णुओ. उपरो शब्द. देखो ऊपर का शब्द. vide above नाया० ८;

अस्तिसेसा स्त्री० (अश्लेषा) णुओ ‘अस्तेसा’ शब्द. देखो ‘अस्तेसा’ शब्द. Vide ‘अस्तेसा.’ अणुजो० १३१;

अस्तुय. त्रि० ( अश्रुत ) न साँलणेलुं. न सुना हुआ Not heard, unheard. भग० ३, २; ओव० २७,

अस्तेसा. स्त्री० ( अश्लेषा ) अश्लेषा नक्षत्र अश्लेषा नक्षत्र The constellation

Aśleṣā. जं० प० ७, १५५; सू० प० १०; विशेष० ३४०८;

अस्सोई स्त्री० ( आश्वयुजी—अश्वयुजि भवा-ऽऽश्वयुजी ) आसो—आश्विन भासनी पूर्णिमा तथा अमावस्या. आश्विन मास की पूर्णिमा तथा अमावस्या का नाम. The full-moon and the new-moon days of the month of Āśvina. सू० प० १०;

अस्सोकिंता. स्त्री० ( अश्वोक्कान्ता ) मध्यम आभनी पायभी मूर्च्छना. मध्यम ग्रास की पाँचवीं मूर्च्छना. The fifth stage in the modulation of the middle gamut in the science of music. ठा० ७,

अह अ० ( अथ ) हुवे, हुवे पछी; तयार पछी; पछी. अब, इसके पश्चात्, उसके बाद; पीछे. Now, now then; after आया० १, ६, २, १८३; दस० ५, १, ६६, विशेष० ११८; १३४, नाया० १; ८, १७, निक्षो० ६, १२; २०, ११; दसा० ६, २, वव० ७, ५; वेय० २, २; सूय० १, २, १, ८; १, १६, १, उत्त० २, ४१; पिं० नि० ५३; भग० १, ६; ५, ६, (२) अक्षरं, वाक्य के शब्दों में शब्द-शुरूआत. प्रकरण, वाक्य या शब्द का प्रारम्भिक अव्यय, a word marking the beginning of a chapter, sentence etc भग० २०, ३, नाया० १, आया० १, ६, १, १७२; (२) भांगल्य. मांगल्य a word marking an auspicious beginning. सूय० १, १६, १; (४) पक्षान्तर देभाउवुं. पक्षान्तर दिखलाना. a word expressing vicinity or the other side. आया० नि० १, ८, १, २६२; (५) विक्षेप विकल्प. a word showing alternation.

क० प० १, २५, दस० ५, १, ७७, जीवा० १; ( १ ) विशेष. विशेष. a word showing particularity. ठा० ७; ( ७ ) वाक्यालंकार. वाक्यालंकार an expletive सू० १, ७, ५,

अह. अ० ( अधस् ) नीचे, अधोभाग नीचे, नीचे का भाग. Below, in the lower place. आया० १, १, ५, ४१, भग० १, १, दसा० ५, ३१, सू० प० १६, ( २ ) अधोगति, नीची गति अधोगति. damnation, low plight. ( ३ ) अधोलोक, पाताल लोक. अधोलोक, पाताल लोक. the nether world ठा० ३, ४, ( ४ ) दिशाभेद, अधोदिशा. अधो-दिशा, दिशा का एक भेद the nether quarter ठा० ६;

अह. न० ( अहन् ) द्विप्त, द्वाडो, दिन. दिन A day. जीवा० ३, १, सू० प० ८,

अहं. अस्मद्, प्र० ए० ( अहम् ) हुँ मैं I नाया० १, २, ५, ८, ६; १३; १४, १६, १८; १६, पञ्च० ११, दस० ७, ६, ६, १, १३, भग० १, ६, १०, २, १; ७, १०; १६, २, जं० प० ५, ११५;

अहंता. सं० कृ० अ० ( अहत्वा ) हृष्ट्या वगर, नहि हृष्टीने. बिना मारे, न मारकर Without having killed or struck ठा० ३, २,

अहकम. न० ( यथाक्रम ) यथाक्रम; अनुक्रम यथाक्रम; अनुक्रम In serial order. पंचा० ७, ४६;

अहकखाय. न० ( अथाख्यात-अथशब्दो यथार्थं याथातथ्येन ख्यात कथितमकषायं चारित्रमथाख्यातम् ) यथाख्यात नामे चारित्रनो पांयभो प्रक्षार; ने चारित्रमां सर्वथा क्षपायनो दोष लगावामां आवे नहि अत्रुं, विशुद्ध-निर्भण चारित्र, तीर्थक्षरे इहेक्ष स्वरूपने अंशे अंश पाणिनारुं चारित्र. यथाख्यात चारित्र का पांचवों भेद; जिसमें

कषाय का विल्कुल दोष न लगे ऐसा विशुद्ध चारित्र, तीर्थकर द्वारा कहे हुए स्वरूप का अंशतः पालन करने वाले का चारित्र. The fifth variety of right conduct styled Yathākhyāta i. e. right conduct strictly observing the words of Tīrthāṅkara. पंचा० ११, ४, क० गं० ३, १७; ४, १५, २३; ठा० ५, २; पञ्च० १, उत्त० २८, ३३, ओव० २०; सु० च० १५, ७२; विशेष० १२३८; भग० २५, ७,—चरण. न० ( -चरण ) यथाख्यातचारित्र. यथाख्यात चारित्र right conduct which is quite spotless explained or prescribed. प्रव० ६६३,—चरित्त. न० ( -चारित्र ) लुओ 'अहकखायचरण' शब्द. देखो 'अहकखायचरण' शब्द. vide 'अहकखायचरण.' भग० ८, २; क० गं० १, १८; —चरित्तलद्धिया स्त्री० ( -चारित्रलद्धिका ) यथाख्यात चारित्रनी लद्धि-प्राप्ति यथाख्यात चारित्र की लद्धि-प्राप्ति the attainment of absolutely spotless right conduct. भग० ८, २,—लद्धि. स्त्री० ( -लद्धि ) यथाख्यात चारित्रनी लद्धि-प्राप्ति यथाख्यात चारित्र की प्राप्ति. the attainment of perfectly spotless right conduct. भग० ८, २ —संजम. पु० ( -संयम ) यथाख्यात चारित्र. यथाख्यात चारित्र perfectly spotless, blameless right conduct ठा० ५, २; भग० २५, ६;—संजय. पुं० ( -संयत ) यथाख्यात चारित्रवान्; अक्षपायचारित्रि. यथाख्यात चारित्र वाला (one) possessed of absolutely spotless right conduct " अहकखायसंजय "

पुच्छा गोयमा । दुविहे पर्यत्ते, तंजहा-  
छुमत्थे य केवलो य ” भग० २५, ७;

**अहङ्क० पु०** ( यथाच्छन्द ) पोते सूत्रविरुद्ध  
आचरणे इरे अने उत्सूत्र परुपणा इरे ते  
साधु जो स्वयं सूत्रविरुद्ध आचरण करे और  
उत्सूत्रप्रवर्णना ( निरुण ) करे वह An  
ascetic who in his own conduct  
as well as in his scriptural  
explanations to others violates  
the teachings of the Sūtras  
प्रव० १०३;

**अहङ्क० त्रि०** ( अहत ) न हरेतु-येरेतु हरण  
न किया हुआ, न चुराया हुआ अथवा बिना  
छीना हुआ Not taken away; not  
stolen. “ तेष्वाहङ्के तत्करप्पमोगे ” उवा०  
१, ४७;

**अहण त्रि०** ( अवन ) धनरहित. धन रहित,  
निर्धन Poor, having no wealth  
दस० १०, १, ६,

**अहण त्रि०** ( अवन्त्य ) धन्यवादे पात्र  
नहि. धन्यवाद के अयोग्य Unfor-  
tunate, not worthy of compli-  
ments. नाया० १३, १६, ज० प० ५,  
११७,

**अहत त्रि०** ( अहत ) छुलायेन नहि, उपरा-  
येन नहि, नवीन वर्तन में न आया हुआ,  
नया; सचित्त Not struck, not  
killed, not used, new. च० प०  
१६; जीवा० ३, ४, भग० ३, ३; ८, ६, सूय०  
२, २, ५५; ज० प० २, ३३;

**अहस न०** ( अवस्त्व ) अध-न्यता, अध-न्यपणुं  
जघन्यता; जघन्यपन. State of being  
low or below. भग० ६, ३;

**अहत्थ त्रि०** ( यथास्थ ) यथानस्थित; जेवुं  
छेय तेवु रडेवुं. जैसा हो वैसा ही रहा हुआ.  
यथास्थित Being in the same  
condition in which it originally  
was, status quo ठा० ५, ३,

**अहत्थ त्रि०** ( यथार्थ ) यथार्थ, परापर यथार्थ;  
ठीक, उचित. Appropriate, proper.  
“ अहत्थे वा भावे जाणिरुपमि ” ठा० ५, ३;

**अहत्थच्छिण्ण त्रि०** ( अहस्तच्छिण्ण-हस्ता-  
वच्छिण्णो यस्य सोऽच्छिण्णहस्तः ) अभंउ  
हाथवाणो अखड हाथोंवाला. (One) with  
hands not cut or cut off; (one)  
having sound hands निसी० १४, ६;

**अहप्पहाणं अ०** ( यथाप्रधानम् ) प्रधानते  
अनुसरते, प्रधान-मुप्य वस्तुने अनुसार.  
प्रधान-मुख्य वस्तु के अनुसार In accord-  
ance with the principal thing;  
following the principal object.  
भग० १५, १;

**अहम त्रि०** ( अधम ) अधम, नीच, इनिष्ठ;  
छुद्र. नीच, जुद्र, अवम Low, base;  
mean ‘नरेन्द्रजाई अहमा नराण’ उक्त० १३,  
१८, ६, ५४, ठा० ४, ४;

**अहमंति पु०** ( अहमन्तिन्-अहमेव जात्यादि-  
भिरुत्तमतया पर्यन्तवर्तित्यहमन्ती ) अति  
आदिना अलिमानवाणो. जाति आदि के अभि-  
मान वाला One proud of caste etc.  
‘ दसहिं ठाणेहिं अहमंतीति थंभेजा तं०  
जाइमएण वा कुलनएण वा जाव इस्सरियम-  
एण वा नागसुवला वा मे अंतिअ हव्वमाग-  
च्छति पुरिसधम्माओ वा से उत्तरिए अहोवाहिए  
नाणदंसणे समुप्पत्ते ’ ठा० १०,

**अहमया स्त्री०** ( अधमता ) अधमपणुं, नीचता.  
अधमता; नीचता. Baseness, mean-  
ness. विशेष० १६१०,



अहम्म पुं० (अधर्म) अधर्म, पाप, सावध अनुश्रुति. अधर्म, पाप Sin, sinful performance, irreligion दसा० ६, ४; उत्त० ४, १३, ३४, ५६, परह० १, ४, राय० २०७; कप्प० ४, ६२, दत्त० ६, १७; पिं० नि० ६३, ( २ ) त्रि० अधर्म हेतु अधर्म का हेतु cause of sin उत्त० ४, १३, ( ३ ) धर्म वगैरहो. धर्म रहित, अधर्मी. irreligious विवा० १, २;—अट्ठि त्रि० (—अर्थिन् ) अधर्मना प्रयोजनवाणो. अधर्मरूप प्रयोजन वाला. (one) having a sinful or irreligious purpose आया० १, ६, ४, १६२,—अणुअ त्रि० (—अनुग ) अधर्मनी पाछी न्नार अधर्म के पीछे चलने वाला (one) following sin or irreligion. दसा० ६, ४,—अणुग त्रि० (—अनुग) लुओ उप्पो शब्द देखो ऊपर का शब्द vide above भग० १२, २;—इंदत्ता. स्त्री० (—इन्द्रता) अधर्मनु धरपणु, अधर्मनी सरदारी. अधर्म की सरदारी, अधर्म का अणुआवन. power, authority based on sin, injustice etc भग० २५, ६,—केउ पु० (—केतु ) अधर्मनी ध्वजरूप, अधर्म—पाप प्रधान अधर्म—पाप की ध्वजा के समान, अधर्मप्रधान the flag or banner of sin, anything outrageously sinful नाया० १८,—कखाइ. त्रि० (—आख्यायिन्-अधर्ममाख्यातुं शीलमत्येत्यधर्माख्यायी ) अधर्मनु प्रतिपादन करनेवाला अधर्म का प्रतिपादन करने वाला. one who establishes, propagates sin or irreligion भग० १२, १,—कम्माइ त्रि० (—ख्याति-अधर्मात् ख्यातिः प्रसिद्धिर्यस्य स तथा ) अधर्मनी नेनी प्यानि छे—अधर्मी तरीके ने प्रसिद्ध छे ते अधर्म के कारण,

जिसका प्रसिद्धि है वह (one) notorious for sinfulness or irreligiosity दसा० ६, ४,—जीवि. त्रि० (—जीविन्) अधर्मनी लवनार अधर्म से जीने वाला (one) maintaining himself by sinful deeds दसा० ६, ४;—दाण पु० न० (—दान ) योराहिते दान आपवु ते, अधर्मदान अधर्म दान, चोरादिक को दान देना irreligious charity, e g. to a thief ठा० १०,—पलज्जमाण त्रि० (—प्ररज्यमान) अधर्मभां राओ रहेतो-रंन थतो अधर्म में प्रसन्न होता हुआ. (one) taking delight in sin or irreligion भग० १२, २,—पलोइ. त्रि० (—प्रलोकिन्) धर्मनी विपरीत-अधर्मने नेवा-वाणो. धर्म से विरुद्ध-अधर्म को देखने वाला. (one) whose view is sinful भग० १२, २,—समुदायार. पु० (—समुदाचार ) धर्मनी विपरीत आचार, अधर्ममय आचार—अनुष्ठान धर्म से विपरीत आचार, अधर्ममय आचार. irreligious conduct, sinful performance भग० १२, २,—सेवि. त्रि० (—सेविन्) अधर्म सेवनार अधर्म का सेवन करने वाला one practising sin or irreligion दसा० ६, ४,

अहम्मओ अ० (अधर्मतस्) अधर्म अंगीकार करीते, अधर्म आशी. अधर्म से; अधर्म को अंगीकार करके Through sinfulness, sinfully परह० १, २,

अहम्मथिकाय पुं० (अधर्मास्तिकाय) लुओ "अधम्मथिकाय" शब्द. देखो "अधम्मथिकाय" शब्द. Vide 'अधम्मथिकाय.' भग० २०, २,



अहलंदि पु० ( यथालन्दिन् ) जिनकल्पी  
जेथी कस्ति क्रिया करनार, गोयरी-बिक्षाने माटे  
अमुक ह्म पाधनार साधु, केजे रोगनी त्रिडि-  
त्सा न करावे, आप्तो भेल पणु न डाढे,  
गाम ब्हार रहे, डारणु पउये पाछा गच्छमा  
आवे, तेना गणुमा पाय साधुओ होय.

जिनकल्पी के समान काठिन किया करने वाला; चोचरी के लिये खास सीमा बान्धने वाला, रोग की चिकित्सा न कराने वाला, आख का मैल भी न निकालने वाला, शहर के बाहर रहने वाला और कोई कारण पड़ने पर ही वापिस गच्छ में आने वाला साधु इसके गण में पाच साधु होते हैं. An ascetic practising hard austerities like those of a Jaina monk, e g. one who imposes severe limitations upon alms-begging, does not take medical treatment for a disease, does not remove dirt even from eyes, stays outside the town and returns to his order only when necessary. His following (Gana) consists of five Sādhus. प्रव० ६२१;

अहलंदिय. पु० ( यथालब्धिक ) लुप्तो 'अहलदि' शब्द. देखो 'अहलदि' शब्द. Vide 'अहलदि.' प्रव० ६२३,

अहल. त्रि० ( अफल ) क्षण विनाश, निष्फल. फल रहित, निष्फल. Fruitless. उत्त० १४, २४;

अहलोऽ. पु० (अधोलोक) नीचेनो लो०, पाताल लो०, सात राज परिमित लो० नीचलो भाग. अधोलोक; सात राज परिमित लोक के नीचे का हिस्सा The infernal world, the nether world प्रव० ६१६;

अहव अ० ( अथवा ) अथवा, अथवा अथवा, या Or, (an alternative conjunction) सम० पंचा० १०, ३०;

अहवण. न० ( गृह ) घरविशेष. घरविशेष. A particular house. जीवा० ३, ३;

अहवण. अ० ( अथवा ) अथवा. अथवा; वा. Or. पञ्च० १२;

अहवः. अ० (अथवा) विकल्प, अथवा. अथवा; वा, विकल्प. Or भग० १, ५; ६, ४; ८, ५, सु० च० १, १४; अणुजो० ३७; पि० नि० भा० ४; विशे० २२; सूय० नि० १, १३, १२३; क० गं० २, २८, क० प० ५, ३३; पंचा० ३, ३;

अहव्वण. पु० ( आथर्वण ) चार वेदभांति योथे अथर्वण वेद चार वेदों में से चौथा अथर्व वेद. The fourth Veda viz the Atharva Veda भग० २, १; ओव० ३८;—वेय. पु० ( -वेद ) लुप्तो उपलो शब्द. देखो ऊपर का शब्द. vide above. भग० २, १, ओव० ३८;

अहसुहुमत्र. पु० ( यथासूक्ष्मक ) मनभांति मनभांति क्रोधादि कुशीलनो सेवनार; कषाय-कुशील. मन ही मन में क्रोधादि कषायों का सेवन करने वाला, कषायकुशील. A morally impure person who cherishes anger etc. in his mind. प्रव० ७३२;

अहस्स. न० (अहास्य) हास्यनो त्याग-अभाव. हास्य का त्याग, हास्य का अभाव. Absence of laughter, giving up or abstaining from laughter. प्रव० ६४४;

अहस्सिर. त्रि० ( - अहस्सिर-अहसनशील ) भरा जोटा धारण यगर हुआवाना २१भाव-वाणो नहि विना सचे झूठे कारणों के न हंसने वाला (One) not given to laughter without a cause "अहस्सिरे सया दंते, न य मम्ममुदाहरे" उत्त० ११, ४; अहा. अ० ( अघस् ) नीचे, नीची दिशा. नीचे. Below, the nether quarter. ठा० ६; भग० २५, ३;

अहा. अ० ( अघा ) जेभ; जेथी रीते; जे प्रदारे, जिस प्रकार, जैसे. Just as; in

the way in which, as. रा० २६;  
भग० १, ६; ३, १; नाया० १;

**अहा अ०** ( अथ ) लु० 'अह' शब्द. देखो  
“अह”शब्द Vide ‘अह’ अणुजो० १६;

**अहाअत्थं अ०** ( यथार्थम्-अर्थमनतिक्रम्य )  
यथार्थ, अ० १२. यथार्थ, उचित. Properly;  
appropriately ठ० ७;

**अहाइरिक्क त्रि०** ( यथातिरिक्त ) यथातिरि-  
क्त-पोताने भाटे उपभोग इस्तां वधे ते.  
अपने उपभोग से बचा हुआ-शेष रहा हुआ.  
(That) which remains after one  
has enjoyed, (portion) remain-  
ing after enjoyment. आया० १,  
७, ७, २२५;

**अहाउ न०** ( यथायुप् ) जेठलुं आउपुं आधुं  
होय तेठलु जितनी आयु बांधी हो उतनी  
Period of life incurred by one's  
Karma. ठ० ४, १, भग० ११, ११;  
—णि०व्वत्तिकाल. पुं० (—निर्वृत्तिकाल-  
यथा यत्पकारं नारकादिभेदेनायुः कर्मविशेषो  
यथाऽऽयुः, तस्य रौद्रादिध्यानादिना निर्वृत्ति-  
र्बन्धने तस्याः सकाशात् यः कालो नारका-  
दित्वेन स्थितिर्जीवानां स यथायुर्निर्वृत्तिकालः )  
जेठलुं आयुष्य आधुं होय तेठलु भोगवधु ते,  
आधेय आयुष्य पुरेपुरी रीते भोगवधाने  
समय. जितनी आयु बांधी हो उतनी ही  
भोगना, बांधी हुई आयु पूर्ण रीति से भोगने  
का समय completing the period  
of life incurred by Karmas.  
“ से किं तं अहाउणि०व्वत्तिकाले ? अहा-  
उणि०व्वत्तिकाले जं ण येरइएण वा तिरिक्ख-  
जोयिएण वा मणुस्सेण वा देवेण वा  
अहाउणि०व्वत्तिं से तं पालेमाणे अहाउ-  
णि०व्वत्तिकाले ” भग० ११, ११; ठ०  
४, १, भग० ११, १०;

**अहाउअ-य. न०** ( यथायुक् ) जेठलुं आयुष्य  
आधेय होय ते प्रमाणे भोगवधाने काण.  
जितनी आयु बांधी हो उतनी ही भोगने का  
काल Duration of life incurred  
by Karmas. ‘दो अहाउय पालेइं  
तंजहा-देवेचेव नेरइएचेव’ ठ० २, ३;  
**अहाकड त्रि०** ( यथाकृत ) गृहस्थे पोताने  
भाटे तैयार इरेय आहारादि, आधाकर्मदि  
दोषरहित. गृहस्थ ने अपने लिये तैयार किया  
हुआ आहार वगैरह; आधाकर्मदि दोष रहित  
आहारादि Food etc. prepared by  
a house-holder for himself. पिं०  
नि० भा० ३३; ( २ ) साधुने भाटे आस तैयार  
इरेय आहारादि, आधाकर्म आदि दोष साधु  
के लिये खास तैयार किया हुआ आहारादि;  
आधाकर्म आदि दोष. food etc spe-  
cially prepared for a Sādhu;  
food tainted with Ādhākarma.  
“अहाकडं न से सेवे सव्वसो कम्म अदक्ख”  
आया० १, ६, १, १८;

**अहाकप्पं अ०** ( यथाकल्पम् ) इएय प्रमाणे;  
जे कियाते जे इएय-विधि शास्त्रमां  
अतावेय होय तेने अनुसरीने, इएयती रीते.  
कल्प के अनुसार, शास्त्राय विधि के अनुसार.  
According to scriptural rites.  
वव० ४, १३, ६, ३७, नाया० १; भग० २,  
१, कप्प० ६, ६३,

**अहाकम्म न०** ( आधाकर्मन् ) साधुने भाटे  
आस आरंभ समारंभ इरी निपज्जवेय  
आहारादि, साधुने भाटे आहारने अेइ दोष;  
उद्गमना १६ दोषमांने पडेयो दोष. खास साधु  
के लिये आरंभ समारंभ करके बनाया हुआ आहार  
वगैरह; साधु के लिये होने वाला आहार का  
एक दोष, उद्गम के १६ दोषों में से पहिला  
दोष. One of the 16 faults of  
Udgama, food etc. produced,

prepared for a Sādhu by injuring or killing sentient beings  
भग० १, ४; पण्ह० २, ३; सूय० २, ५; ८,  
अहागड. त्रि० ( यथाकृत ) जुओ 'अहाकड'  
श०६. देखो 'अहाकड' शब्द Vide  
"अहाकड." "अहागडेसु रीयंति पुप्फेसु  
भमरा जहा" दस० १, ४, ओघ० नि० २३२;  
प्रव० ८७८,

अहाचर. त्रि० ( अधश्चर ) दरमां रडेनार साप  
वगेरे. विल. में रहने वाला साप वगैरह  
(A serpent etc) living in under-  
ground holes आया० १, ८, ७, ६,

अहाच्छन्द. पुं० ( यथाच्छन्द ) पोतानी भरल  
मुज्ज पतनार, शास्त्रनी आज्ञाने आधीन न  
रहेता पोताना छादा-अभिप्राय प्रमाणे  
वर्तनार साधु. अपनी इच्छा के अनुसार वर्तव  
करने वाला, शास्त्र की आज्ञा के अधीन न रहकर  
स्वच्छन्दचारी साधु. One behaving  
wilfully, regardless of scriptures.  
निसी० ११, ३१, ३२; भग० १०, ४, ओघ०  
नि० १०४, वव० १, ३४; प्रव० १२१;  
—विहारि. त्रि० ( -विहारिन् ) पोतानी  
भरल मुज्ज आलनार; स्वेच्छाचारी. अपनी  
इच्छा के अनुसार चलने वाला, स्वेच्छाचारी.  
wilfully roaming, self-willed.  
नाया० ४० भग० १०, ४;

अहाजाय. न० ( यथाजात—जातं जन्म श्रम-  
णत्वप्रतिपत्तिर्वा, जन्मसमये रचितकरस-  
म्पुटो यथा दहिर्याति श्रमणत्वप्रतिपत्ति-  
काले च गृहीतरजोहरणमुखवस्त्रिकाघोल-  
पट्टकमात्रो भवति, एतद्द्वयमपि जातशब्दार्थः,  
जातमनतिक्रम्य यथाजातं वन्दनकमित्यर्थः )  
जन्म वप्पते जेम हाथ जेडेल होय तेवी रीते  
हाथ जेडीने अने दीक्षा वप्पते रजेडरलु, मुष्-  
वस्त्रिका अने योवपट्ट आदि जेम उपगरलु  
धारलु ड्या होय तेवनामात्र उपगरलु धारीने

वंदना करवी ते, वंदनानो ओइ प्रकार जन्म  
के समय जिस प्रकार हाथ जुडे होते हैं उसी प्रकार  
हाथ जोड़कर और दीक्षा के समय रजोहरण,  
मुखवस्त्रिका, चोलपट्ट आदि उपकरण जिस  
प्रकार धारण किये जाते हैं उसी प्रकार उतने  
ही उपकरण धारण करके वंदना करना; वंदना  
का एक भेद A mode of salutation  
viz with folded hands as at  
the time of birth and with those  
materials only upon the body  
which were there at the time  
of Diksā, e g mouth-cloth  
etc प्रव० २६; ८६७,

अहाणिगरणं अ० ( यथानिकरणम् ) जेवी  
रीते डर्म आंध्य छे—डर्मनी रयना करी छे तेवी  
रीते. जिस प्रकार कर्म बांधा है उसी प्रकार.  
In the way in which Karma  
is incurred भग० १, ४;

अहाणुपुव्वी. स्त्री० ( यथानुपूर्वी ) अनुक्रम;  
परिपाटी अनुक्रम; परिपाटी Proper  
order, serial order. भग० २, १, ५,  
६, ३३, नाया० १, ओव० ३१, जं० ५० ३,  
६७; ५, ११७,

अहातच्च न० ( यथातस्व ) जेवुं होय तेवुं  
डुहोवु ते, तत्त्वनु उल्लंघन न करवु ते जैसा  
हो वैसा कहना; तत्त्व का उल्लंघन न करना.  
Declaring what is truth, not  
going beyond truth भग० २, १;  
ठ० ५, १,

अहातच्चं. अ० ( यथातथ्यम् ) सत्य, वास्तविक;  
असत्य, वास्तविक, ठीक Truth;  
state of a thing being exactly  
as it has taken place. दसा० ४,  
१०१; भग० १६, ६, वव० ६, ३७, सम०-१०;  
कप्प० ६, ६३,

**अहातत्थिज्ज** न० ( यथातथ्यक ) सूयगडा-  
गसूत्रनां तेरमा अध्ययननु नाम. सूयगडाग  
सूत्र के तेरहवे अध्याय का नाम Name of  
the 13th chapter of Sūyaga-  
dānga Sūtra अणुजो० १३१,

**अहातहं** अ० ( यथातथ्यम् ) जेम होय तेम  
जैसे का तैसा Exactly, without the  
slightest deviation आया० १, ४,  
४, १४०,

**अहापज्जत्त** त्रि० ( यथापर्याप्त ) धञ्छा पु२तु प्राप्त  
थओल, जेमओ तेटलु भणेओ आवश्यकतानुसार  
मिला हुआ. Enough, obtained to  
one's fill विवा० २, ७; नाया० १६, १६,  
भग० २, ५, ७, १०;

**अहापडिग्गहिय** त्रि० ( यथाप्रतिगृहीत )  
जेटलु लीधु हुतु तेटलु, ओछुं थओलु नहि  
डिन्तु प्रथम लीधेल हुतु तेटलु. जितना लिया  
था उतना ही, कम नहीं Exactly as  
much as was taken or got,  
neither more nor less भग० २, ५,

**अहापडिरूव** त्रि० ( यथाप्रतिरूप ) यथायोग्य,  
उचित उचित, यथायोग्य. Proper, ap-  
propriate नाया० १, २, ५, १३, १४,  
१६; भग० २, ५, ६, ३३, राय० २७, विवा०  
१, दसा० १०, १, नाया० ध० निर० १, १,

**अहापणिहिय** त्रि० ( यथाप्रणिहित ) यथा-  
वस्थित यथावस्थित, जैसे का तैसा रहा  
हुआ Exactly in the condition  
in which a thing stands अहापणि-  
हिण्हिं गाण्हिं ” भग० ३, २, दसा० ७, १२;

**अहापरिग्गहिय** त्रि० ( यथापरिगृहीत ) जेपी  
रीते लीधु होय तेपी रीते स्वीकारेल. जिस  
प्रकार लिया हो उसी प्रकार स्वीकार किया  
हुआ. ( Anything ) as accepted,  
in the manner in which (it) is  
accepted. भग० २, ५; ११, १२;

**अहापरिग्गयायं** त्रि० ( यथापरिज्ञात ) जेटली  
जग्याने भाटे डहेवाभा-इरभाववाभां आओं  
होय तेटली जग्या. जितना जगह के लिये कहा  
गया हो उतनी जगह Room space  
exactly as ordered “अहापरिग्गयायं  
वसिस्सामो ” आया० २, २, ३, ८६;

**अहापवत्त** न० ( यथाप्रवृत्त ) अनादि काण्ठी  
जे स्वभावे वर्ते छे ते स्वभावे वर्तनार;  
स्वभावान्तरने पाभेलु नहि अनादि काल से  
जिस स्वभाव के अनुसार वर्ताव कर रही हो  
उसी स्वभाव के अनुसार वर्ताव करने वाली  
वस्तु, स्वभावान्तर को प्राप्त न होने वाली वस्तु.  
Unchanged in nature, maintain-  
ing the nature coming down  
from times immemorial क० प०  
२, ६, ५, ८, पचा० ३, ६, नाया० ५;  
—करण न० (—करण) जुओ ‘अहापवत्त’  
श०६. देखो ‘अहापवत्त’ शब्द vide  
‘अहापवत्त.’ क० प० ७, ४१,

**अहापवित्त** त्रि० ( यथाप्रवृत्त ) आलु प्रवृत्ति-  
मां जेटलु जेमओ तेटलु, यथायोग्य प्रच-  
लित प्रवृत्ति में जितना चाहिये उतना, यथा-  
योग्य Proper, appropriate, just  
as much as is needed. अत० ५,  
१, नाया० १६;

**अहापवित्ति** स्त्री० ( यथाप्रवृत्ति ) उचित  
प्रवृत्ति उचित प्रवृत्ति. Proper action  
or activity नाया० ५, —करण न०  
(—करण) समकितने अनुकूल अध्यवसाय-  
विशेष. सम्यक्त्व के अनुकूल अध्यवसायवि-  
शेष thought-activity favour-  
able to right faith क० गं० ५, ८;

**अहावद्ध** त्रि० ( यथावद्ध ) जेमओ तेतुं  
भोजुत आधेलु, दढ गोहवेलु आवश्यकता  
के अनुसार मजबूत बाधा हुआ. Strongly



fastened; tied; firmly fixed.

आया० २, २, ३, ६६;

**अहावादर. त्रि०** ( यथावादर-यथास्थूल )

स्थूल स्थूल; ननु ननु. स्थूलातिस्थूल; बहुत मोटा. Very gross. भग० १६, ४;

**अहावायर त्रि०** ( यथावादर-यथास्थूल ) लुओ।

उपलो शब्द देखो ऊपर का शब्द. Vide above. “अहावायराइं कम्माइं” भग०

६, १; आया० २, १५, १७६; कप्प० २, २६;

**अहावीय. न०** ( यथावीज ) जेभांथी आनी

उत्पत्ति थाय तेथीज. जिसमें से वृक्ष की उत्पत्ति हो वह बीज. A seed from which a

tree grows. तेसिचणं अहावीणं” सूय० २, ३, ४३;

**अहावुइय. न०** ( यथोक्त ) जेम डुछुं होय तेम;

जैसे का तैसा कहा हुआ (Anything) as said or mentioned. सूय० १, १४, २५;

**अहाभूत. त्रि०** ( यथाभूत ) जेम होय तेम;

तात्त्विक. जैसे का तैसा; तात्त्विक. As (it has) happened; true. ठ० १, १;

**अहामगं. अ०** ( यथामार्गम् ) ज्ञान आदि भोक्ष

मार्गने अनुसार. ज्ञान आदि मोक्ष मार्ग के अनुसार. Following the path of

knowledge etc leading to sal-

vation. नाया० १; वव० ६, ३७; भग०

२, १; कप्प० ६, ६३; ( २ ) औदयिक

भावने पसार डरीने; क्षयोपशम भावनुं

उल्लंघन न डरीने. औदयिक भाव को दूर

करके; क्षयोपशम भाव का उल्लंघन न करके

crossing or transgressing the

stages of destruction and sub-

sidence of Karma. ठ० ७;

**अहारायणिय. त्रि०** ( यथारात्तिक )

आग्नि डरी अधिष्ठ; दीक्षा-प्रव्रज्यामां

भोये. चारित्र को अपेक्षा से महान्.

Superior by reason of right conduct; superior in asceticism.

वव० ८, १; वेय० ३, १६; नाया० १;

**अहारायणियं. अ०** ( यथारात्तिकम् )

दीक्षामां न्हाना भोएटा होय तेना अनुक्रमने

अनुसार; न्हान भोएटाअ अनुसार-प्रमाणे.

दीक्षा की छोटाई बड़ाई के क्रम के अनुसार.

In the order of superiority,

seniority in asceticism ‘अहारायणि-

यं गामाणुगामं दूहजेज्जा’ आया० २, ३, ३,

१२८;

**अहारिय. न०** ( यथारीत-यथारीति ) यथायोग्य

रीति; रीति-आधु पद्धतिने अनुसरी. यथायोग्य

रीति; प्रचलित रिवाज के अनुसार. Accord-

ing to the current method or

fashion; following the proper

method. “अहारियं रीयइ” भग० ५, २;

**अहारिय. त्रि०** ( यथार्ह ) यथायोग्य; उचित;

वाजिभी; लोकाचार प्रमाणे. यथायोग्य;

वाजिब; लोकाचार के अनुसार. Proper;

appropriate; in accordance

with prevailing popular

opinion. ठ० २, १;

**अहारियं. अ०** ( यथैर्यम् ) जेम धरिया समिति.

शोधय-जणवाय तेरी रीते जिस प्रकार से

इरिया समिति का पालन हो सके उस प्रकार से.

In the way in which careful-

ness in walking is preserved.

“अहारियं रीएज्जा” आया० २, ३, २, १२८;

दसा० ७, १,

**अहारिह. त्रि०** ( यथार्ह ) लुओ। ‘अहारिय’

शब्द देखो अहारिय शब्द. Vide ‘अहारिय.’

दसा० १०, ११; वेय० ४, २५; भग० ८,

६; ठ० २, १; वव० १, ३७,



**अहालंद. पु०** ( यथालन्द ) जेटला वभतने भाटे कलु होय तेटलो वभत; यथालंदकाण न्धन्य होय तो पाणीथी बीनो हाथ सुकाय तेटलो वभत, उत्कृष्ट यथालंदकाण पांय दिवस अने मध्यम यथालंदकाण ते जेनी वज्येनो वभत. जितने समय के लिये कहा गया हो उतना समय; पानी से भांगा हुआ हाथ जितनी देरी में सूखे उतने समय को जघन्य यथालंद काल कहते हैं और पांच दिन की अवधि तक उत्कृष्ट यथालंद काल होता है तथा इन दोनों के बीच का समय मध्यम यथालंद काल कहलाता है. Specified time; the minimum Ythālānda time is that required by a wet hand to get dry; the maximum is five days the medium ranging between the two वेय० २, १; आया० २, ७, १, १५६; वव० ४, २१; कप्प० ६, ६, प्रव० १७,

**अहालंदिय. पुं०** ( यथालन्दिक ) जुओ। 'अहलंदि' शब्द देखो 'अहलदि' शब्द. Vide 'अहलंदि.' प्रव० ६३१;

**अहालहुग. त्रि०** ( यथालघुक ) अतिलघु, अति-छोटो बहुत छोटा, अत्यन्त लघु Very small, very young. सूय० २, २, १८;

**अहालहुय. त्रि०** ( यथालघुक ) जुओ। उपलो शब्द देखो ऊपर का शब्द Vide above नाया० ६; दसा० ६, ४;

**अहालहुसग. त्रि०** ( यथालघुस्वक ) छंछं नानो अने छलछो; न्छानामां न्छानो. कुछ छोटा और हलका, छोटे से भी छोटा. Some what small and light, smallest "देवाण अहालहुसगाइं रयणाइं हंता अत्थि" भग० ३, २; वव० ८, ११,

**अहावगासं अ०** ( यथावकाशम्—यो यस्या-वकाश उत्पत्तिस्थानं भूमिवीजसंयोगादिर्वा तदनतिक्रमेणैवार्थ ) जेवुं उत्पत्ति स्थान होय ते त्रेभाणे जैसा उत्पत्तिस्थान हो उसके अनुसार In accordance with the source or place of birth. "तेसिं चण अहावीणुणं अहावगासेणं इत्थीणु" सूय० २, ३, ४३;

**अहावच्च. पुं०** ( यथापत्य ) पुत्रस्थानीय; पुत्र समान पुत्रस्थानीय, पुत्र के समान. ( One ) in the place of a son; equal to a son भग० ३, ६, ७; —अभिरणाय त्रि० (—अभिज्ञात ) पुत्र समान ज्ञेयलो पुत्र के समान जाना हुआ. known as, treated as a son. भग० ३, ७,—देव. पुं० (—देव ) पुत्रस्थानीय देव; पुत्रसमान देव. पुत्र के समान देव. a god looked upon as a son, a god equal to a son. भग० ३, ७, ४, ४,

**अहावरं. अ०** ( अथापरम् ) त्थार पछी, वणी थिज्जु इसके बाद Again; moreover. सूय० १, १, २, २४, दस० ४,

**अहाविहि अ०** ( यथाविधि ) शास्त्रना न्यायने अनुसार, परापर विधिपूर्वक शास्त्र के न्यायानुसार, यथायोग्य विधिपूर्वक In accordance with prescribed, scriptural ceremony दसा० ४, ६३, ७, १,

**अहास. त्रि०** ( अहास्य ) हारयरहित हास्य रहित. Free from laughter, devoid of laughter भत्त० १३,

**अहासंथड न०** ( यथासंस्तृत ) जेथे तेथी रीते पाथरेल, शयनयोग्य जैसा चाहिये वैसा बिछाया हुआ. Properly spread, e g. a bed. आया० २, २, ३, १०२, दसा० ७, १३

अहासंथड. न० ( यथासंस्कृत ) जेवी रीते  
उपभोग थड शङ्के तेवी रीते संस्कार पमाडेहुं  
जिस प्रकार उपभोग किया जा सके उस प्रकार  
संस्कार किया हुआ. Properly refined  
and made fit for use ठा० २, ४,

अहासंविभाग. पु० ( यथासंविभाग-यथा-  
सिद्धस्य स्वार्थं निर्वर्तितस्याशनादेः पश्चात्क-  
र्मादिदोषपरिहारेण विभजनं साधवे दान-  
द्वारेण विभागकरणं यथासंविभागः )  
गृहस्थे जमती व्रजते, पुराश्च अने पञ्चा-  
श्रमं दोष न लागे तेवी रीते, पोताना भोराड-  
भांथी 'अमुक भाग साधु पधारै तो ळोरावुं'  
जेवी लावना लावपी ते, श्रावडनु पारमु व्रत  
भोजन करते समय पुराकर्म और पश्चात्कर्म  
दोष न लगे उस प्रकार अपने भोजन में से  
अमुक भाग साधु के पधारने पर देने की  
भावना करना, श्रावक का वारहवाँ व्रत  
The 12 th vow of of a Śrāvaka  
viz meditating in mind at the  
time of taking food that  
a portion of it might be given  
without incurring any fault to a  
Sādhu if he came up there at  
the time. उवा० १, १;

अहासच्च न० ( यथासत्य ) अरेअर, अर-  
अर, यथातथ्य; सायेसायुं, यथार्थ, सत्य;  
वास्तविक. Truly, truthfully आया०  
१, ४, २, १३१,

अहासरिणहियं अ० ( यथासन्निहितम् )  
जेटहुं जेठजे तेटहुं नलुड जितना समीप  
चाहिये उतना As near as is nece-  
ssary; within the necessary  
limits of proximity, नाया० ८, १८;  
भग० ७, ६;

अहासम्मं अ० ( यथासान्यम ) जेवे जेठजे  
तेवे समभाव जितना चाहिये उतना मन-

भाव. Proper equality; due even-  
handedness भग० २, १;

अहासुत्तं अ० ( यथासूत्रम् ) सूत्रानुसार;  
सूत्रभां डहुं छे ते प्रमाणे. सूत्र के कहे  
अनुसार. In accordance with what  
is given in the Sūtras. नाया० १;  
८, भग० २, १, ७, १; १०, १; सम० ४६;  
वव० ६, ३७; कप्प० ६, ६३;

अहासुयं अ० ( यथाश्रुतम् ) जेवुं सांलज्युं  
होय तेवुं, सांलज्या प्रमाणे जैसा सुना हो वैसा.  
In accordance with what is  
heard; as heard. आया० १, ६, १,  
१; सूय० १, ६, २,

अहासुहं अ० ( यथासुखम् ) सुप्पानुसार;  
जेम पोताने सुप्प थाय तेम डरवु. जिस रीति  
से अपने को सुख हो उस प्रकार करना. As  
one likes, according as one is  
pleased नाया० १; ५, १२, १४, १६;  
भग० १, ६, २, १, ५, ६, ३३; १६, ५,  
निर० ३, ४, सूय० २, ७, ४०,

अहासुहुम पु० ( यथासूक्ष्म ) निर्ग्रन्थो जेक  
प्रकाश, सर्व समयवर्ति निर्ग्रन्थ, पढम, अपढमादि  
विशेषणरहित सामान्य निर्ग्रन्थ सर्व समय-  
वर्ती साधारण निर्ग्रन्थ. An ordinary  
Jaina monk, a class of Jaina  
monks to be met with in all  
times प्रव० ७३३,—कसायकुसील.  
पु० (—कपायकुसील ) भनथी सद्धमरीते  
झाधादिने सेवन डरनार (साधु) मन द्वारा सूक्ष्म  
रीति से क्रोधादिक का सेवन करने वाला (साधु),  
( an ascetic ) harbouring anger  
etc in the mind in a slight  
diluted form भग० २५, ६;—णियंठ.  
पु० (—निर्ग्रन्थ ) शुशुद्धाणाना सर्व समयमा  
वर्तमान निर्ग्रन्थ; अरम समयादि विशेष भेद

रहित सामान्य निर्ग्रन्थ गुणस्थान के सर्व समय मे वर्तमान निर्ग्रन्थ, चरम समय आदि विशेष भेदों से रहित सामान्य निर्ग्रन्थ an ordinary ascetic who is not strictly confined to a particular Gunasthāna भग० २५, ६,—पुलाय पु० (—पुलाक ) मनथी ज्ञान आदिना अति-चार सेवी संयमने नि सार अनावनार (साधु) मन से ज्ञान आदि का अतिचार सेवन कर संयम को निःसार बनाने वाला ( साधु ) an ascetic frustrating the object of asceticism by harbouring in mind thoughts of violation of right knowledge etc भग० २५, ६;—वउस पु० (—बकुश) शरीर संयंधी के छिपगरेणु संयंधी द्विगित दोष लगाउनार ( साधु ) शरीर सम्बन्धी अथवा उपकरण सम्बन्धी किंचित् दोष लगाने वाला (साधु) a person who incurs a slight fault in the matter of his implements or his body. भग० २५, ६;

अहासुहुमं अ० ( यथासूक्ष्मम् ) जेधये तेयुं सूक्ष्म-आरीक जितना चाहिये उतना सूक्ष्म As fine as is necessary, as fine as is needed. नाया० १, भग० ३, १, २५, ६, कप्प० २, १६, जं० प० ३, ६८, अहि. पु० ( अहि ) सर्प; साप, नाग सर्प, साप. A serpent “से किं त अही ? अही दुविहा पणत्ता, तंजहा-द्विवियकरा य मउ-लिणो य ” पञ्च० १; अणुजो० १३१, जं० प० सूय० २, ३, २४, उत्त० ३६, १८०; जीवा० १, पि० नि० २००, नाया० १, भग० ६, ३३, पंचा० २, २२,—दट्ट न० (—दट्ट) सर्प दश ( उंश ) सर्प दश a serpent-bite. “ अहिदट्टाहसु छेयाइ वज्जयंतीह

तह सेसं” पंचा० १८, २७,—मड. पु० (—मृत) भरेवा सर्पनुं शरीर, सर्पनुं डलेवर मरे हुए सर्प का शरीर. a dead body of a serpent नाया० ८, ६, १२, उत्त० ३४, १६, विवा० १, १,—सिलागा स्त्री० (—शलाका) ओड तरेहुनो मुकुली सर्प. एक तरह का मुकुली सर्प a kind of serpent पञ्च० १,

अहिअ. पु० ( अस्त्रिक ) ढास, धार धार. Edge राय० ११६,

अहिआर. पु० ( अधिकार ) अधिकार; डे डे. अधिकार, ओहदा, पद Authority; high post पि० नि० ८६,

अहिंसअ त्रि० ( अहिंसक ) हिंसा न करने वाला; प्राणिनो वध न करने वाला, भीष्म डोषने दुष्प न आपनार हिंसा न करने वाला, किसी प्राणी को दुःख न देने वाला. (One) who does not kill or injure or give pain to another परह० २, १;

अहिंसया. स्त्री० ( अहिंसिता-अहिंसा ) अहिंसा; हिंसानो अभाव अहिंसा, हिंसा का अभाव. Absence of killing or injuring; state of being free from the sin of killing “ ज सोच्चा पडिव-जति, तवं खतिमहिसय ” उत्त० ३, ८,

अहिंसा. स्त्री० ( अहिंसा ) अहिंसा, प्राणिना वधनो अभाव, अथवा अहिंसा; प्राणिवध का अभाव; जीवदया. Mercy towards living beings; non-injury, non-killing दस० १, १, ६, ६, सूय० १, १, ४, १०, पंचा० ७, ४२;—समय पु० (—समय) अहिंसा प्रधान आगम, अहिंसाने प्रधानपणु दर्शावनार शास्त्र अहिंसा की प्रधानता से उपदेश देने वाला शास्त्र a scripture principally inculcat-

ing non-injury and non-killing

सूय० १, ११, १०;

अहिंसित. त्रि० ( अहिंसित ) नेने मार-  
वाभां न आवे ते जिसे मारा न जाय वह.  
'Not injured; non-killed.' सूय०  
१, १, ४, ६;

अहिक. त्रि० ( अधिक ) अधिक; विशेष.  
अधिक; विशेष More; additional  
अणुजो० १२८,

अहिकरण. न० ( अधिकरण ) लुओ 'अधि-  
गरण' शब्द देखो 'अधिगरण' शब्द.  
Vide "अधिगरण" "भिक्षू य अहि-  
करणं कटु तं अहिकरणं अविश्रोसमिता  
नो से कप्पइ गाहावइकुलं" निसी० १०, ४;

✓ अहिक्खव. धा० I. ( अधि+क्षिप् )  
तिरस्कार करवे, अपमान करवुं. तिरस्कार  
करना, अपमान करना. To insult; to  
show contempt.

अहिक्खवद्. उत्त० ११, ११;

अहिक्खेव. पुं० ( अधिक्षेप ) निन्दा.  
निन्दा. Censure परह० १, २;

अहिग. त्रि० ( अधिक ) लुओ "अधिक"  
शब्द देखो 'अधिक' शब्द. Vide 'अधिक'.  
पंचा० ३, १४;—पदाण न० (—प्रदान)  
ह्राव करता अधिक हेतुं ते ठहराव से अधिक  
देना. giving more than what is  
settled by contract or agree-  
ment पंचा० ७, २१;

अहिगन्त. न० ( अधिकत्व ) अधिकपणुं  
अधिकता. State of being more or  
additional. पंचा० ३, १४;

अहिगम. पुं० ( अभिगम ) उपचार; आवडना  
प्राप्त अभिगमनमाने गमे ते ओइ. उपचार;  
आवक के पांच अभिगमनों में से कोई भी एक  
Any one of the five Abhiga-

manas of a Śrāvaka; service,  
politeness of behaviour etc.

"अभिगमेण अभिगच्छंति" ओव०

अहिगम पुं० ( अधिगम ) लुओ "अधिगम"  
शब्द देखो "अधिगम" शब्द Vide  
"अधिगम." ठा० ७; दसा० ६, १३; विशेष  
२६५; ६०८; क० प० २, १०२,—रुइ.  
पुं० (—रुचि) उपदेश सांलणवाथी थओइ  
सम्यक्त्व (समझित); सम्यक्त्वनो ओइ  
प्रकार उपदेश सुनने से उत्पन्न हुआ सम्यक्त्व;  
सम्यक्त्व का एक भेद. right faith en-  
gendered dy hearing a reli-  
gious sermon प्रव० १४५;

अहिगमओ. अ० ( अधिगमतस् ) तीर्थंकर  
आदिनी समीपे धर्म श्रवणु करवाथी. तीर्थ-  
कर आदि के समीप धर्म श्रवण करने से.  
Through hearing religion ex-  
plained by Tirthankaras etc.  
विशे० २६७५;

अहिगमय. त्रि० ( अधिगमक ) अर्थने पता-  
पनाइ, अर्थ को बताने वाला (One) who  
explains the meaning. विशेष० ५०३;

अहिगय. न० ( अधिकृत ) लुओ "अधिगय"  
शब्द देखो 'अधिगय' शब्द. Vide "अधि-  
गय." विशेष० १२०;

अहिगय. त्रि० ( अधिगत ) दीक्षा लेवानी  
साथे स्वीकार करेला दीक्षा लेने के साथ स्वी-  
कार किया हुआ. Accepted at the  
time of taking Diksā पंचा० २, २३;  
पञ्च० १; उत्त० २८, १७,—जीव पुं०  
(—जीव) नेणे आत्मस्वरूप जण्युं छे ते;  
दीक्षा लेवाने योग्य जण्युं. जिसने आत्मस्वरूप  
को जान लिया हो; दीक्षा लेने के योग्य जीव.  
one who has known the real  
nature of a soul; a soul fitted to

take Diksā i. e. enter the ascetic order पंचा० २, २३;—जीवा-जीव. त्रि० (—जीवाजीव—अधिगतौ सम्य-ग्विज्ञातौ जीवाजीवौ येन स तथा ) ७५, अ७५ आदि नव तत्त्वने ज्ञानुनार जीव, अजीव आदि नौ तत्त्वों को जानने वाला. ( one ) who knows the nine categories viz soul, matter etc. राय०

**अहिगयर.** त्रि० ( अधिकतर ) अत्यंत अधिक बहुत ज्यादा. Much more; much in excess. पंचा० १, ५;—**गुण** पुं० (—गुण ) वधारे श्रेष्ठ गुण. अधिक श्रेष्ठ गुण. a superior quality. पंचा० १, ३, ४;  
**अहिगरण.** न० ( अधिकरण ) लुओ। “ अधि-गरण ” शब्द देखो “ अधिकरण ” शब्द. Vide “ अधिकरण. ” जं० प० ३, ६३; प्रव० २८३; पंचा० १, २४, कप्प० ६, ५८; राय० २२४; ११५, दसा० १, १३; विशेष० २२६०; वेय० १, ३३, ३, २३, पि० नि० १६६, ५०६, सूय० १, २, २, १६; भग० २, ५; १६, १;  
**अहिगरणिया.** स्त्री० ( अधिकरणिकी ) लुओ। ‘ अधिकरणिया ’ शब्द देखो ‘ अधिगर-णिया ’ शब्द. Vide “ अधिकरणियां. ” भग० १, ८; ३, ३; ८, ३, सम० ५; पञ्च० २२; आव० ४, ७;

**अहिगरणी.** स्त्री० ( अधिकरणी ) लुओ। ‘ अधिकरणी ’ शब्द देखो ‘ अधिगरणी ’ शब्द. Vide “ अधिकरणी ” भग० ६, १, जं० प०—**खोडी.** स्त्री० (—खोडि ) ७ लाड्डाभा ऐरणु भेसाडेली होय छे ते लाड्डुं जिस लकड़ी में ऐरन लगी हुई हो वह लकड़ी a piece of wood in which anvil is fixed. भग० १६, १,

**अहिगार.** पुं० ( अधिकार ) लुओ। ‘अधिगार’—शब्द देखो ‘अधिगार’ शब्द. Vide

‘अधिगार’ सु० च० २, ५५४; पि० नि० ६८; ओघ० नि० ४०६, प्रव० १; विशेष० ६;  
**अहिगारि.** पुं० ( अधिकारिन् ) अधिकारी. One who has got an authority, a right etc. प्रव० ६४;  
**अहिगिच्च.** सं० कृ० अ० ( अधिकृत्य ) प्रतीत करीने प्रतीति-यकीन करके. Having confided भग० १, १; पंचा० १३, ३७;  
**अहिच्छत्ता.** स्त्री० ( अहिच्छत्ता ) जंगल देश की मुख्य नगरी. The principal city of the country named Jangala “ चंपाए रायरीए उत्तरपुरस्थिमे अहिच्छत्ता नाम रायरी होत्या ” नाया० १६, १५; प्रव० १६०२, पञ्च० १;—**रायरी** स्त्री० (—नगरी ) लुओ। उपलो १७६. देखो ऊपर का शब्द vide above. नाया० १५;

**अहिजाय.** त्रि० ( अभिजात ) दुलीन, उँया दुलीमां उत्पन्न थयेले. कुलीन, कुँवे कुल में पैदा हुआ. Nobly born “ अहिजायं महक्खमं ” भग० ६, ३३,

✓ **अहिज्ज.** धा० I ( अधि + इ ) अध्ययन करने, लखने. अध्ययन करना, पढ़ना To study.

**अहिज्जइ** नाया० १; ५; १६, भग० २, १; ६, ३३, ११, ११, १६, ८; १८, २, वव० ३, १०, ११,

**अहिज्जंति** नाया० १६, सूय० १, ८, ४;

**अहिज्जेजा.** वि० भग० २५, ६, ७;

**अहिज्जिस्सामि.** वव० ३, १०;

**अहिज्जिउं** हे० कृ० दस० ४;

**अहिज्ज सं० कृ०** “ अहिज्ज वेए परिविस्स विप्पे ” उक्त० १४, ६; १२, १५;

**अहिज्जित्ता.** सं० कृ० नाया० ८, १२, १५;

दस० ६, ४, २, ३; भग० २, १;

उक्त० १, १०,



अहिज्जकण सं० कृ० सु० च० १, २३०,  
 अहिज्जि-ज-इत्ता सं० कृ० नाया० १; भग०  
 २, १; ६, ३३; ११, ११; १८, २;  
 अहिज्जा. सं० कृ० सूय० १, १२, ६,  
 अहीउं. सं० कृ० विशे० ५६३;  
 अहिज्जंत. व० कृ० उत्त० २८, २१; पन्न० १,  
 प्रव० ६६८,  
 अहिज्जअ. त्रि० (अध्येतृक) लुओ।  
 'अहिज्जग' शब्द देखो 'अहिज्जग' शब्द.  
 Vide "अहिज्जग." वव० ३, १०;  
 अहिज्जग. त्रि० (अध्येतृक) लणुनार; पाठ  
 -अध्ययन करनेवाला. (One)  
 who studies. "दिट्ठिवायमहिज्जगं"  
 दस० ८, ५०;  
 अहिज्जिभयत्ता. स्त्री० (अभिध्यतता-भिध्या  
 लोभः सा सज्जाता यत्र स भिध्यतः, न  
 भिध्यतोऽभिध्यतस्तस्य भावस्तत्ता )  
 अलोभ, लोभतो अभाव लोभ का अभाव  
 Absence of greed or avarice.  
 भग० ६, ३,  
 ✓ अहिट्ठ. था० II (अधि + स्था) लुओ।  
 'अधिट्ठ' धातु. देखो 'अधिट्ठ' धातु. Vide  
 "अधिट्ठ"  
 अहिट्ठेइ. "जे भिक्खू रयहरण अहिट्ठेइ"  
 निसी० ५, २२; १२, ६;  
 अहिट्ठिअइ. निसी० ५, ७८,  
 अहिट्ठए वि० उत्त० ३४, ६१;  
 अहिट्ठिए. वि० सूय० १, २, ३, १५,  
 दस० ६, ४, १;  
 अहिट्ठित्तए हे० कृ० वेय० ३, ३, वव० ८, ८;  
 अहिट्ठाण. न० (अधिष्ठान) भेसपुं; आश्रय  
 करनेवाला बैठना, आश्रय लेना. Sitting,  
 taking resort to. प्रव० ८८६ (२) भेसपुं,  
 गुदा प्रदेश; भेसपुं बैठक, गुदा प्रदेश. the  
 hips. ओघ० नि० भा० ७६,

अहिट्ठिअ त्रि० (अधिष्ठातृ) अनुष्ठान करनेवाला.  
 अनुष्ठान करने वाला (One) who  
 does or performs "संन्यासजोग न  
 सया अहिट्ठिए" दस० ८, ६२;  
 अहिट्ठिअ. त्रि० (अधिष्ठित) निवास करनेवाला;  
 रहेला. निवास किया हुआ, रहा हुआ.  
 Resorted to, having an abode  
 in; remaining. "एगंतमहिट्ठिओ  
 भयवं" उत्त० ६, ४, (२) वश थओल;  
 ताओ थओल वशीभूत; वश हुआ come  
 under control. "राजाहिट्ठिया"  
 नाया० १४,  
 अहिट्ठिज्जमाण व० कृ० त्रि० (अधिष्ठीयमान)  
 आक्रमण करनेवाला आक्रमण कराता हुआ.  
 Being invaded. ठा० ४, १;  
 अहिणव. त्रि० (अभिनव) नया, नवीन गुण-  
 वाला नया; नये-गुणों वाला. New;  
 fresh. राय०  
 अहिणिवोह. पुं० (अभिनिबोध) भतिज्ञान.  
 मतिज्ञान Matijñāna, knowledge  
 derived through the five  
 senses and the mind (२) भति  
 ज्ञानना आवरणतो क्षयोपशम मतिज्ञान के  
 आवरण का क्षयोपशम. the destruction  
 and subsidence of the  
 obstacles of Matijñāna. पन्न० २६;  
 अहिणए. त्रि० (अभिज्ञ) न भेदल. न भिन्न  
 हुआ. Unbroken; unpierced. पंचा०  
 ११, ३८,—गांठि. त्रि० (अग्रन्थि) बेल्ले  
 राग द्वेपनी मज्जवूत गांठि भेदी नथी ते जिसने  
 राग द्वेप की मज्जवूत गांठ नहीं भेदी वह.  
 (one) who has not broken or  
 pierced the hard tie of passion  
 and hatred पचा० ११, ३८,  
 अहित्त. त्रि० (अभितप्त) अति पीड़ाओला;  
 तपेला, ताता थओला. अति पीड़ाओला;  
 तपेला, ताता थओला. अति पीड़ाओला;  
 तपेला, ताता थओला. अति पीड़ाओला;



हुआ. Greatly afflicted, greatly heated उत्त० २, ६,

अहिताव. पुं० ( अभिताप ) गरमी, ताप. गर्मी, ताप Heat. “पुष्टे गिम्हाहितावेण” सूय० १, ३, १, ५,

अहिता. सं० कृ० अ० ( अधीत्य ) लक्ष्मीने; पढेन डरीने. पढकर Having studied. “अट्टंगमेयं बहवे अहिता, लोगंसि जाणंति अणागताइं” सूय० १, १२, ६,

अहिनव त्रि० ( अभिनव ) लुओ ‘अहिणव’ शब्द. देखो ‘अहिणव’ शब्द Vide “अ-हिणव.” पिं० नि० १८०,

अहिनायदंसण. त्रि० ( अभिज्ञातदर्शन ) अभिज्ञात-संभत छे दर्शन जेनु ते, शांत. जिसका दर्शन अभिज्ञात-सम्मत हो वह, शांत Of a calm, agreeable appearance, ( one ) whose sight is agreeable. आया० १, ६, १, ११,

अहिमर पु० ( अभिमर-अभिमुखा सन्तोत्रि-यन्ते परान् मारयन्ति वा ये तेऽभिमरा ) २६। मे २६। ने भरे अथवा मारे ते सन्मुख रहकर मरने, मारने वाला. ( One ) who stands face to face and kills or is killed विशेष १७६३, परह० १, ३, ओष० नि० भा० २५,

अहिय-अ त्रि० ( अधिक ) अधिक, वधारे, विशेष. अधिक, ज्यादाह. विशेष More; additional. उत्त० ३४, ३४, ओव० ३०, अणुजो० १३४, नंदी० १२, पिं० नि० २२६; ३२७, नाया० १, विशेष १३४, भग० ७, ६, ११, ११, २४, १, कप्प० ३, ४०, ४, ६२, क० ग० ४, ४१, जं० ५० ४, ६; ७, १३२, प्रव० ८२१, —खंति स्त्री० ( -क्षान्ति ) अत्यन्त क्षान्ति, अधिक क्षमा अधिक क्षान्ति-क्षमा greater forgiveness; additional pardon नाया० १०, —दिण पु० ( -दिन ) अधिक

दिवस अधिक दिन. an additional day ठा० ६,—पिच्छुणिज्जं. त्रि० ( -प्रेक्षणीय ) अधिक जेवा लायक. खूब देखने योग्य worthy of being particularly seen or observed कप्प० ४, ६३; —पोरिसीय. त्रि० ( -पौरुषीक ) पुरुष प्रमाण करता अधिक पुरुष प्रमाण से ज्यादाह. more than is natural to man “ कुंभी महत्ताहियपोरिसीया, समुसिता लोहियपूयपुण्णा ” सूय० १, ५, १, २४,—मंडल. पु० ( -मण्डल ) अधिक भङ्ग-भाङ्गो अत्रिक मंडल-घेराव an additional or a larger circle नाया० १०,—वरण पु० ( -वर्ण ) अधिक वर्ण-रंग. ज्यादाह रंग. more colour, deeper. नाया० १०,

अहिय-अ त्रि० ( अहित ) अहित करने वाला Injurious; harmful, दसा० ६, १, ४, ७, १२, ६, १२, सम० ३०, सूय० १, १, २, ६, ( २ ) पुं० अहित; असुख अहित, असुख. uneasiness, harm आया० १, १, २, १६, १, ३, १, १०६, दस० ६, १, ४,—गामिणी स्त्री० ( -गामिनी ) अहितकारी भाषा injurious, pernicious speech दस० ८, ४८,

अहिययर त्रि० ( अधिकतर ) अतिधलुं, अतिशय अधिक-वधारे. बहुत ज्यादाह Too much, excessive सु० च० २, ३५८,—वरण पु० ( -वर्ण ) अतिशय अधिक रंग बहुत ज्यादाह रंग too much colour, too deep colour नाया० १०,

✓अहियास. धा० II ( अधि + आस् ) सहन करु, सहन करना To bear; to endure.

अहियासेह. आया० १, ६, ३, १८५; २, १५, १७६; नाया० ११; जं० ५० २, ३१; अंत० ६, ३;

अहियासिजा. वि० आया० १, ६, २, १८४;

अहियासए. वि० दसा० ७, १; उत्त० २, २३; सूय० १, ६, ३०; दस० ५, २, ६; ८, २६, वव० १०, १; नाया० १;

अहियासिस्तं. भवि० उ० ए० भग० १५, १;

अहियासित्तए. हे० कृ० आया० १, ७, ४, २१५; भग० ६, ३३;

अहियास. पुं० ( अध्यास ) परिषद वगेरे सारी रीते सहन करवां ते; उपसर्गथी अलायमान न थतां चारित्र परापर पाणवुं ते परीषद वगेरेह कौं अच्छी तरह सहन करना; उपसर्ग से चलायमान न होकर चारित्र का बराबर पालन करना. Endurance of troubles and difficulties; maintenance of right conduct in spite of disturbances. पन्न० २;

अहियासण. न० (\*अध्यासन-अधिसहन) सहन करवुं; भमवुं. सहन करना. Endurance, bearing troubles etc सम० ७;

अहियासण्या. (अध्यासनता-अधिसहनता) अधिक सहन करवुं ते, सहनशीलपण सहनशीलता; बहुत अधिक सहन करना. Patient endurance; great patience. सम० २७;

अहियासण्या. स्त्री० (अहितासनता-अहितमननुकूलमासनं यस्य स तथा तद्भावस्तत्ता) अनुकूल आसन-पेडक न भणवु ते. अनुकूल आसन-बैठक का न मिलना. Not getting a proper, agreeable seat. ठा० ६;

अहियासण्या. स्त्री० (अध्यशनता-अध्यशनमधिकभोजनमेवाध्यशनता) अशुद्ध भोजन

भोजन करवुं ते अजीर्ण होते हुए भी भोजन का करना. Taking food in indigestion. ठा० ६;

अहियासिय. त्रि० (अध्यासित) परिषदादि सहन करेह; उपसर्ग आदि श्रुतेह परीषद आदि सहन किया हुआ. (One) who has endured and conquered troubles, disturbances etc भग० १५, १; (२) न० (भावे क्त) सहन करवुं ते. सहन करना. endurance; patience. "दवियाण पास अहियासियं" आया० १, ६, ३, १८५;

अहियासिय. त्रि० (अधिकासिक) वधारे नशुकरुं; धलु पासेनुं. बहुत नजदीकी. Very near; in the near; neighbourhood. ओघ० नि० ६३३;

अहिरणसोवणिय. त्रि० (अहिरण्यसौवर्णिक); सोनुं, रुपु आदि परिग्रह रहित. सोना, चांदी आदि परिग्रह से रहित. Devoid of such worldly possessions as gold, silver etc परह० २, ३;

अहिरि. त्रि० (अहारिन्) अनिष्ट; अभनोत. अनिष्ट, मनोहरता रहित Not attractive; not charming "जे य अहिरी जे य अहिरीमण" आया० १, ६, २, १८३;

अहिरिअ. त्रि० (अद्वीक) भेशरम; निर्लज्ज. निर्लज्ज, बे शर्म. Shameless. पिं० नि० ६३१;

अहिरीमण. त्रि० (अदीमनम्) शीत, उष्ण आदि परिसह भमवामा लाज न राखनार. शीत, उष्ण आदिक परीषद सहन करने में लज्जा न रखने वाला. (One) not feeling ashamed of patiently enduring of the troubles of cold, heat etc. आया० १, ६, २, १८३;

अहिसङ्क्षण. न० ( अभिव्यञ्जन ) क्रियाना।  
समयने उल्लघनीने ते क्रिया करपी ते, जेम ठे-  
गोयरीनो समय मध्याह्नकाण नियत होवा।  
छता कलाक अये कलाक मोडा गोयरीअे जवुं ते.  
किसी क्रिया के नियमित समय का उल्लघन  
करके वह क्रिया करना, जैसे भिक्षा का  
समय मध्याह्न काल निश्चित होने पर भी घंटे  
दो घंटे देरी से भिक्षार्थ जाना Doing a  
thing after the appointed time  
has lapsed, e g going to beg

too - in the afternoon when the me fixed for it is mid-noon.  
 ओघ० नि० भा० २१६, ( २ ) आसपास  
 दुधु ते आसपास-चारों ओर कूदना  
 jumping about; leaping to and fro. प्रव० १५७;

अहिंसहण. न० ( अघिसहन ) सहन करने। Act of bearing or enduring ठा० ६;

अहिसि. हु-भू वा० भूत० तृ० व० ( अभूवन् )  
 लुओ ' हु ' धातु. देखो ' हु ' धातु. Past  
 tense 3rd person of ' भू ' vide  
 the root ' हु. ' " एतीए सव्वसत्ता सुहिया  
 खु अहिसि तंमि कालंमि " पंचा० ६, २०;

अहिसिंचण. न० ( अभिषिञ्चन ) स्नान-अ-  
 लिपेक्ष; उपरथी पाणीनी धार सिंचनी ते स्नान,  
 अभिषेक, ऊपर से पानी की धारा डालना  
 Sprinkling of water from above.  
 सम० प० १६३;

अहिसिस्त त्रि० ( अभिषिक्त ) राज्याभिषेक्ष  
 इरेव. राज्याभिषेक किया हुआ. Appoi-  
 nted as a king ( one ) crowned  
 as a king / with coronation  
 ceremony. उ० च० १५, ५२,

अहिसिस्त त्रि० ( अभिषिक्त ) अक्षुण्णि,  
 Living read or

अहीण. त्रि० ( अधीन-अधिकः स्वायत्त इनः  
 स्वाधीनः ) स्वाधीन. स्वाधीन. Self-  
 dependent. परह० २, ४; विशेष० ६३;

अहीण त्रि० ( अहीन ) अधिष्ठत; संपूर्ण;  
 हीनताही रहित अविकल, संपूर्ण; हीनता से  
 रहित Full; perfect; not defect-  
 ive नाया० १; ७; ८; १२; १६; उक्त०  
 १०, १७; भग० २६, १; अगुजो० १३,

ओव०—अइरित्त. त्रि० (—अतिरिक्त ) हीन  
 नहि तेम अधिष्ठ नहि. हीनता और अधिकता  
 से रहित; यथार्थ. Neither more nor  
 less; neither defective nor  
 excessive. निसी० २०, ११;—पवि-  
 दिय. न० (—पञ्चेन्द्रिय ) पूरेपूरी पांच  
 धन्द्रियो जेभां छे ओवुं ( शरीर ). सपूर्ण  
 इन्द्रियों वाला(शरीर).(a body) having  
 all the five senses. नाया० १८,

✓अहीय. धा० I. ( अभि + इ ) अक्षुण्णुं; पढ़न  
 इरेवुं, अध्ययन इरेवुं. पढ़ना, अध्ययन करना.  
 To study; to learn.

अहीयइ. विशेष० ३१६६;

अहिस्त. भवि० प्रव० ७८६;

अहीय. त्रि० ( अधीत ) अक्षुण्णुं; पढ़न इरेव.  
 पढ़ा हुआ Studied, learned. प्रव०  
 ५३०;

अहीरग. न० ( अहीरक-छिद्यमानस्यैव न  
 विद्यन्ते हीरिकास्तन्तुलक्षणा मध्ये यस्य  
 तदहीरकम् ) तंतुरहित; जेने छेदता रेसा  
 न पडे ते तन्तु रहित; जिसमे छेदन भेदन  
 करते समय रेसा न निकले वह Anything  
 having no fibers in it. प्रव०  
 २४४;

अहीलणिज्ज त्रि० ( अहीलनीय-प्रशंसनीय )  
 वभाणुया धायइ, स्तुत्य प्रशंसनीय, स्तुति करने  
 योग्य. Praise-worthy; meritor-  
 ous. उक्त० १२, २३;

अहुणा अ० ( अघुना ) दमला; सघ; आ  
 धीओ. अभी, सघ., इसी समय Now; just  
 now. उक्त० ५, २७. निसी० १७, ३०;  
 भग० ३, २; ५, ६,—उवाचित्त. त्रि०  
 (—उपलित ) तरेतनुं दीपेधुं. अभी का लिपा  
 हुआ.freshly smeared; smeared  
 just a little time back. -दस० ५७

१, २०, २१,—उववन्न. त्रि० ( \*—उपपन्न उत्पन्न ) तत्कालिनो उत्पन्न थयेल तत्काल का उत्पन्न. born at that very moment, freshly born ठा० ४, ३, भग० ३, १, १६, ५, राय० २४८,—धोय त्रि० (—धौत) तत्कालिनो धोवल, ने शस्त्र परि-  
शुत—अचित्त न थयुं होय ते अभी का धुला हुआ, जो अचित्त न हुआ हो वह freshly washed, not freed from sentient beings. “अहुणाधोयं विवज्जए” दस० ५, १, ७५,—भिन्न त्रि० (—भिन्न) तत्कालिना पुटेल, नया अंकुर उगेल तत्काल का फूटा हुआ, नया अंकुर उगा हुआ freshly sprouted up आया० २, ३, १, १११;

अहे. अ० ( अधस् ) नीचे, अधो नीचे Below, beneath “अहे वयइ कोहेण, माणेण अहमा गई” उत्त० ६, ५४; ३६, ५०; विशेष० ४३२, जं० प० २, ३१; सूय० १, १, २, ८, १, ३, ४, २०, पि० नि० ६८, वेय० ४, २४, दस० ६, ३४, दसा० ६, १; ७, १; नाया० ६, ८; १४, १६, भग० १, ६, २, ५; ३, १; २, ५, ४, ६, ५; ८, ८, १७, १, कप्प० ५, ११४,

अहे. अ० ( अथ ) लुओ ‘अह’ शब्द देखो ‘अह’ शब्द Vide ‘अह’ वेय० २, १०, ठा० ३, १, जं० प० ७, १३६,

अहेउ पु० ( अहेतु ) हेत्वाभास, अनुमितिने न साधनार हेतु. हेत्वाभास, अनुमिति को सिद्ध न करने वाला हेतु. A fallacious middle term or mark, a middle term that does not prove the conclusion. ‘पच अहेउ पणत्ता, तंजहा—अहेउ य जाणइ० जाव अहेउ छउम-  
त्थमरण मरइ” ठा० ५, १, सम० अणुजो० १५१, भग० ५, ७, -

अहेउअ-य. त्रि० (अहेतुक) हेतुरहित; अन्य-  
न्य; नित्य हेतु रहित; अजन्य, नित्य Having no cause; eternally existing. विशेष० ७०,

अहेकम्म. न० ( अध कर्मन्—विशुद्धसयम-  
स्थानेभ्यः प्रतिपत्याऽऽत्मानमविशुद्धसंयम-  
स्थानेषु यदधोऽधः करोति तदधः कर्मन् )  
ने भोजन करवाथी साधुने अधोगतिमा  
जुं पडे ते, आधाकर्म दोषवाहुं भोजनः  
साधुने आक्षरदिमा लागतो आधाकर्म दोष  
जिस भोजन के करने से साधु को अधोगति में  
जाना पड़े वह आधाकर्म दोष वाला भोजन,  
साधु को आहार में लगने वाला आधाकर्म दोष  
Sin incurred by a Sādhu by  
Ādhākarmī food, food with the  
fault of Ādhākarma lowering  
down an ascetic in spiritual  
evolution. “भाव अहे करेइ तम्हा तं  
भावहेकम्मं” पि० नि० ६७,

अहेकाय पु० ( अधःकाय ) शरीरने नीचले  
भाग शरीर का अधोभाग—नीचे का हिस्सा  
The lower part of the body सू०  
४, १, ३,

अहेगाम पु० ( अधोगाम ) निचु गाम नीचे  
का गाँव A low village. भग० ६, ७,

अहेगारवपरिणाम पु० ( अधोगौरवपरि-  
णाम ) ने परिणामना स्वभावथी जयने  
अधोगतिमा जनु पडे छे तेनुं गौव परि-  
णाम; अलिमानवृत्ति जिस परिणाम के  
स्वभाव से जीव को अधोगति में जाना पड़ता  
है वह अभिमानपूर्ण वृत्ति Pride which  
degrades a man to a lower  
condition of existence भग० ६, ७;

अहेतारग पु० ( अवस्तारक ) पिशाचनीयेऽ  
न्तर्पिशाचो की एक जाति. A species  
of fiends or goblins पञ्च० १,



**अहेपन्नगद्धरुच.** त्रि० ( अधःपन्नगार्द्धरूप-  
अधोऽधस्तनं यद् पन्नगस्य सर्पस्यार्द्धं तस्यैव  
रूपमाकारो येषां तेऽधःपन्नगार्द्धरूपाः ) सर्पना  
नीयता पेदाणनी भाङ्ग सरण-सीधो. सर्प के  
नीचे के हिस्ते के समान सरल-सीधा.  
Straight like the belly of a  
serpent. जा० ३; रा०

**अहेभव.** पुं० (अधोभव) रत्नप्रभा आदि नार-  
कीना लव. रत्नप्रभा आदि नारकी का भव.  
Birth of Nārakīs like those of  
Ratnaprabhā etc. पि० नि० १०१;

**अहेलोग.** पुं० (अधोलोक) अधोलोड; नीचेतो  
लोड; पाताण लोड. अधोलोक; पाताल लोक.  
The lower world; the infernal  
world भग० ३, ४; जं० प० ५, ११२;

**अहेलोलो.** पुं० (अधोलोक) लुओ 'अहेलोग'  
शब्द. देखो 'अहेलोग' शब्द. Vide 'अहे-  
लोग.' भग० ११, १०; २०, २;—खेत्तणालो.  
छां० (—चेन्ननाली) अधोलोडमांनी तस नाडी;  
अधोलोडनी वच्चोवच्च ओड रत्न प्रभाण  
क्षेत्र. अधोलोक की तस नाडी; अधोलोक के  
बीचो बीच का एक राजु प्रमाण क्षेत्र. A  
region in the midst of the  
infernal world. भग० ३४, १;

**अहेवाय.** पु० (अधोवात) अधोवायु; नीची  
दिशानो वायु. अधोवायु; अधोदिशा का वायु.  
The lower wind. ज० ७, १;

**अहेत्ताणिज्ज.** त्रि० (अथैपणीच) सुधारवा,  
अगाडवा वगेरेता संस्कार वगरनुं; ले  
स्थितिमा होय तेज स्थितिनुं डुवारने और  
विगाडने वर्गरह के संस्कार से रहित; जिस स्थिति  
में हो उता स्थिति में रहने वाला. ( Any )  
thing in its actual condition;  
neither set right nor thrown

into disorder. "अहेत्ताणिजाई वत्थाइ  
जाण्जा " आया० १, ८, ४, २११;

**अहेसत्तमा.** स्त्री० ( अधःसत्तमी ) तमतमा  
प्रभा नामनी सातमी नरक तमतमा प्रभा नाम  
को सातवीं नरकभूमि. The seventh  
hell named Tamatamā Prabhā.  
" अहेसत्तमाए पुढवीए " ठा० २, ४; नाया०  
१६, भग० ३१, ५; ६;

**अहो.** अ० ( अहो ) आश्चर्य; विस्मय. आश्चर्य,  
विस्मय. An interjection of sur-  
prise, astonishment. विवा० १;  
दस० ५, १, ६२; ६, २३; अणुजो० १६;  
नाया० २; ३; १२; १३; १६; भग० ३, १,  
२; १५, १; १६, ५; ( २ ) दीनता. दीनता  
an interjection of helplessness;  
( ३ ) आमन्त्रण. आमन्त्रण. an inter-  
jection of address. प्रव० ६१२;  
**अहो.** अ० ( अधस् ) नीचे. नीचे. Below;  
beneath; lower; down. अणुजो०  
१०३; ओव० २१, ३८; भग० ३, २;

**अहोअहो** अ० ( अधोऽधस् ) नीचे नीचे  
नीचे नीचे. Below, lower and lower.  
पि० नि० १००;

**अहोक्रड्ढयग.** त्रि० ( अधःकरड्ढयक )  
नालिथी नीचे अंग्रेगनार. नाभी से नीचे  
खुजाने वाला. ( One ) who scratches  
below the navel भग० ११, ६;

**अहोणिसं.** अ० ( अहर्निशम् ) रातदिवस;  
अहोरात्र, हमेशा. रात दिन: अहर्निश. Day  
and night; always. " गिरए  
गेरड्ढयणं अहोणिसं पणमाणाणं " अणुजो०  
२८;

**अहोणिसि.** अ० ( अहर्निशम् ) लुओ 'अहो-  
णिसं' शब्द. देखो 'अहोणिसं' शब्द.  
Vide " अहोणिसं " विशेष० = ३७,



**અહોદાય** ન. ( અહોદાન ) આશ્ચર્યકારી દાન; બેહદ દાન આશ્ચર્યકારી દાન; અસીમ દાન Wonderful act of charity “ આગા-સે અહોદાય ને ઘુટું ” ઉત્ત. ૧૨, ૩૬; મગ. ૧૫, ૧;

**અહોદિશા**. સ્ત્રી. ( અધોદિશા ) નીચેની દિશા, અધોદિશા. નીચે કી દિશા, અધોદિશા. The lower quarter આયા. ૧, ૧, ૧, ૨;

**અહોનિસં**. અ. ( અહર્નિશમ્ ) રાત દિવસ. દિન રાત Day and night, always. સૂ. ૨, ૪, ૧૦;

**અહોભાગિ** ત્રિ. ( અધોભાગિન્-હતભાગિન્ ) કમભાગી; અભાગા; હતભાગ્ય. Unfortunate; unhappy. સૂ. ૨, ૩, ૫૬;

**અહોમુહ**. ત્રિ. ( અધોમુહ-અધોગત્યભિમુક્તા-નિ-અધોગતિનયનશીલાનિ-અધોમુક્તાનિ ) અધોગતિ-નરકાદિમા લઇ જનાર અધોગતિ-નરકાદિ મેં લે જાને વાલા. Leading to hell etc પિં. નિ. ૧૦૧, પ્રવ. ૪૫૨, ૬૧૨, —મહલગ પું. ( \*—મહલક-મૃત્પાત્ર ) નીચે મોઢું છે જેનુ એવો સરાવલો. નીચે મુલ વાલા મટ્ટી કા એક પાત્ર વિશેષ a kind of vessel with its mouth pointing downwards પ્રવ. ૬૧૨, \*અહોયરાત્રો અ. ( અહોરાત્રમ્ ) રાત દિવસ, નિરતર દિન રાત, નિરન્તર. Day and night, constantly. “ અહોયરાત્રો પરિતપ્પમાયે ” ઉત્ત. ૧૪, ૧૪, સૂ. ૧, ૧૩, ૨;

**અહોરત્ત**. ન. ( અહોરાત્ર ) સાઠ ઘડી પ્રમાણુનો કાળવિભાગ, રાતદિવસ, એક રાત અને એક દિવસ. સાઠ ઘડી પરિમિત કાલવિભાગ, રાત દિન, એક રાત અને એક દિન A day and a night. “ તિવિહે અહોરત્તે, તીતે પહુપ્પજે અણાગપ્ ” ઠા. ૩, ૪; ઠા. ૨, ૪, તંહુ. ૫, નાયા. ૮, મગ. ૫, ૧, ૬, ૭, ૨૫, ૫, અણુજો. ૧૧૫; ૧૩૮, જં. ૫. ૨, ૧૮, ૩૧, ૭, ૧૩૩, ઉત્ત. ૩૬, ૧૧૩; પ્રવ. ૮૬;

**અહોરત્તિયા**. સ્ત્રી. ( અહોરાત્રિકી ) બુએ ‘ અહોરાત્રિયા ’ શબ્દ. Vide “ અહોરાત્રિયા. ” દસા. ૭, ૧૧,

**અહોરાત્રિયા**. સ્ત્રી. ( અહોરાત્રિન્દિયા ) સાધુની ૧૧ મી પડિમા, કે જેમાં છઠ્ઠું તપ કરવામાં આવે છે અને એક અહોરાત્ર પ્રમાણુ ગામ બહાર રહી અમુક આસને કાઉસગ કરવામાં આવે તે બિશુકની ૧૧ મી પડિમા. સાધુ કી ગ્યારહવાં પ્રતિમા, जिसमें छठ का तप किया जाता है और एक अहोरात्र तक ग्राम के बाहर रहकर अमुक आसन से कायोत्सर्ग किया जाता है. The 11th vow of an ascetic in which the austerity known as Chhatha is performed and religious meditation is practised outside the town in a certain bodily posture for a day and a night. મગ. ૨, ૧, નાર્. ૧, દસા. ૭, ૧,

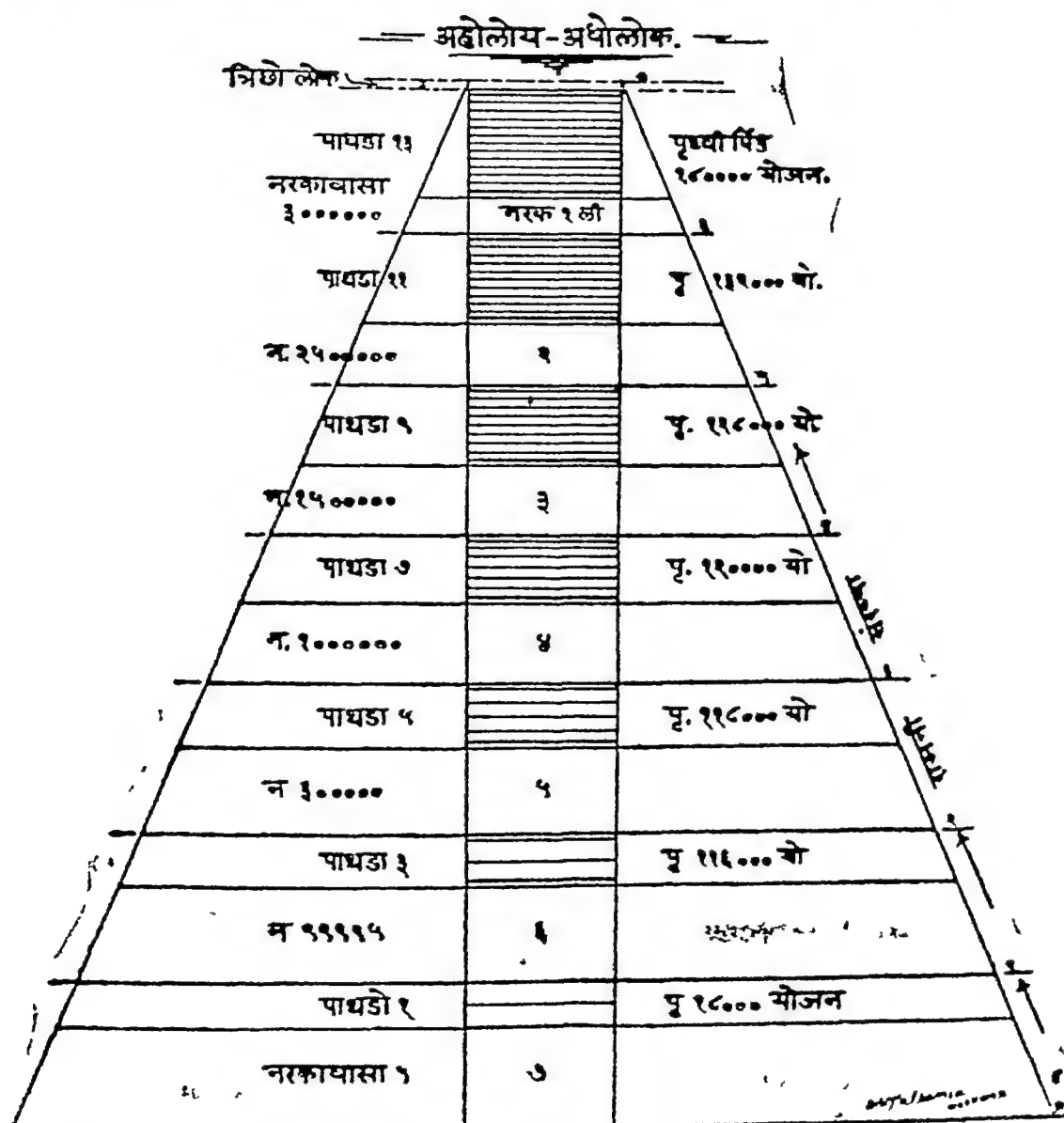
**અહોરાત્રિયા** સ્ત્રી. ( અહોરાત્રિકી ) બુએ ‘ અહોરાત્રિયા ’ શબ્દ. Vide “ અહોરાત્રિયા. ” પચા. ૧૮, ૩;

**અહોરાત્રિ** સ્ત્રી. ( અહોરાત્રિકી ) બિશુકની ૧૧ મી પડિમા, કે જેમાં છઠ્ઠું તપ કરી ગામ બહાર રહેવાનું હોય છે. બિશુક કી ગ્યારહવાં પ્રતિમા, जिसमें छठ का तप करके गाँव के बाहर रहना पड़ता है. The 11th vow of a monk by which he has to remain outside the town after fasting પ્રવ. ૫૬૫,

**અહોલોઝ-ય** પું. ( અધોલોક ) નીચેનો લોક; પાતાળ લોક, કે જેમાં સાત નરક આવેલ છે, તે નરકમાં ત્રસનાડીના ભાગમાં પાથડા છે તેના ઉપર નરકવાસા છે, તેમાં નારકી રહે છે. એકેડી

नरके डेटला डेटला पाथडा अने डेटला नरका-  
वासा छे, ते चित्रमां अतावेव छे, पहेली नरक  
अेक राजनी, भीछ अे राजनी, अेम अेकेक राज  
वधारता, सातमी नरक सात राजना विस्तारमां  
छे अधोलोकमा नारकी, भवनपति, वाणुव्यंतर  
अने नलका देवता रहे छे, ते उपरांत पांय  
स्थावर छे अधोलोक, पाताल लोक; जहाँ सात  
नरक हैं, त्रस नाडी के भाग मे पाथडे-स्तर हैं,  
उनके ऊपर नरकावास है, उनमें नारकी रहते हैं,  
एक एक नरक में कितने २ स्तर और कितने २  
नरकावास है सो चित्र में बताया गया है।  
प्रथम नरक एक राज का, और दूसरा दो राज  
का है, इस प्रकार एक एक राज की वृद्धि होने पर

सातवों नरक सात राज के विस्तार में है अधो-  
लोक में नारकी, भवनपति, वाणुव्यन्तर और  
जृम्भक देव रहते हैं, इनके अतिरिक्त पांच  
स्थावर भौरहते हैं. The nether world;  
the lower world consisting of  
seven Narakas ( hell ) each  
separated by a certain number  
of earth layers. The middle  
portion of this world is known  
as Trasanādi which is habitu-  
ated by Nāikī beings and  
Bhavanpati, Vanvyantara and  
Jrumbhāka gods. अणुजो० १०३,  
१४८; पञ्च० २, भग० २, १०;



**अहोलोग.** पुं० ( अधोलोक ) लुगो उपलो  
 १५६. देखो ऊपर का शब्द. Vide above.  
 ठ० ३, २,—वत्थव. त्रि० (—वास्तव्य)  
 अधोलोकां वसन्तः. अधोलोक में बसने  
 वाला ( one ) residing in the  
 nether world (२) स्त्री० अधोलोकासी  
 दिशाकुमारिका. अधोलोक निवासी दिशाकु-  
 मारिका Dishākumārīkā, living in  
 the nether world नाया० ८,  
**अहोवाय** पुं० (अधोवात) नीची दिशानो वायु.  
 नीची दिशा का वायु The wind of the  
 lower quarter ( २ ) अधोवायु;  
 अधोवा; अपानवायु अपानवायु, अधोवायु  
 the lower wind. पञ्च० १; नाया० १,  
**अहोविहार** पुं० ( अहोविहार ) आश्चर्य करक  
 विहार, यथोक्त समय अनुष्ठान आश्चर्य  
 कारक विहार, यथोक्त समय का अनुष्ठान.  
 Wonderful observance of the

rules of asceticism, e.g leaving  
 a place at a punctual time etc  
 “ सुमुद्रिण महाविहारण ” आया० १, २,  
 १, ६५,

**अहोसिर.** त्रि० ( अधोशिरस् ) ग्रेनुं माथुं  
 नियुं छे ते जिसका मस्तक नीचा है वह-  
 ( One ) with the head low or  
 down ward “अहोसिरा कंटया जायति”  
 सम० ३४, “उडुं जाण अहोसिरं” नाया० १,  
 भग० १, १, ८, ७, ११, २,

**अहोहिम्र.** त्रि० ( अधोऽवधिक—परमावधे-  
 रधोवर्त्यवधिर्यस्य सोऽधोऽवधिक. ) परम  
 अधिज्ञानवाणी करता उतगता अधि-  
 ज्ञानवाणी उत्कृष्ट अधिज्ञान वाले से कम  
 दर्जे के अधिज्ञानवाला Next or infe-  
 rior to one who has attained the  
 highest Avadhyñāna,  
 possessed of an inferior degree  
 of Avadhyñāna. राय० २४०,

इति श्री लाम्बडीसम्प्रदायतिलकायमानपूज्यपाद  
 श्री १००८ श्री गुलाबचन्द्रजित्स्वामिशिष्य-  
 श्रीजिनशासनसुधाकर—शतावधानि—परिणत  
 प्रवरमुनिराज श्री१०८ श्रीरत्नचन्द्रजित्स्वामी  
 विरचिते बृहदर्धमागधीकोषे सप्रमाण-  
 मकारादिशब्दसङ्कलनं  
 समाप्तम् ।  
 इति  
 प्रथमो भागः





# Extracts From Opinions.

---

17 Bendler Strasse

Berlin ( Germany )

June 14 th. 1922.

Dear Sir,

With many thanks I beg to acknowledge the receipt of the specimen of the Ardha Māgadhi Dictionary. Your work deserves a cordial welcome from all students of Prākṛit. It fills a decided gap in the literature devoted to this important branch of oriental studies and will be found invaluable to all who are interested in the language, literature and philosophy of Jainism. It bears evidence of a thorough grasp of the students requirements and is as far as I am able to judge from the specimen—comprehensive and well arranged. What I have seen of it, I consider interesting in the highest degree and a useful help to teachers and pupils.

Believe me dear sir,

Yours sincerely,

HELMUTH VON GLASENAPP, Ph. D.

*Privatdozent der indischen Philologie*

*an der Universität Berlin*

---

1 st July 1922.

Dear Sir,

I received your letter with the copy of the specimen of the Ardha Māgadhi Dictionary. I cannot find anything that should be noted with respect to the Dictionary. There is no doubt that your book will be a work of very great interest for all scholars who

are occupied with the study of the Indian languages For it is a matter of regret that there is up to this day no good dictionary of any of the Prākṛit language, so that it is very difficult for the students to read a Prākṛit text especially one in Ardha Māgadhī. This difficulty is a good deal greater for the European students on account of their being quite unacquainted with the element of Ardha Māgadhī whilst every man in India is familiar with it.

Hoping that we need not wait too long till your Dictionary will appear

*Preussische Staatsbibliothek*

*Orientalists*

*Underden Linden 38.*

*Berlin N. W. 7.*

I remain

Dear Sir,

Yours sincerely,

JOH. NOBEL,

---

*Bonn 15 th March 1922.*

Dear Sir,

I have received your circular letter and the specimen of an Illustrated Ardha Māgadhī Dictionary, and I congratulate you on succeeding to bring out this eminently important work at a comparatively moderate cost.

Yours truly,

PROF H. JACOBI.

---

*Godesberg, 4 th July 1922.*

Dear Sir,

I thank you for your letter accompanied with a copy of the Ardha Māgadhī Dictionary It will be the first complete Ardha Māgadhī Dictionary and certainly a very useful work for



scholars and students - I congratulate you for this great and prominent undertaking

I will acquire this indispensable work.

Yours faithfully.

PROF. Dr. W. KIRFEL.

---

*Hamburgische Universität.*

**Hamburg** 36, March 28 th 1922.

*Seminar Für Kultur und*

*Edmund Siemers Allee.*

*Geschichte Indiens.*

Dear Sir,

Please accept my best thanks for a copy of the printed specimen of an Illustrated Ardha Māgadhī Dictionary. To judge from the specimen pages, the work is done with great devotion and care and deserves the attention of the European Pāṇinists in a high degree.

The S S Jain Conference which is going to publish this work should gain a great merit by distributing a few copies among those German scholars who by long years' work promote the knowledge of Jain religion and literature in Europe

With my best wishes for good success of your undertaking.

I am dear sir,

Yours

PROF. W SCHÜBRING.

---

Prague ( *Czecho-Slovakia* )

*July 16 th. 1922.*

Dear Sir,

I am much obliged to you for sending me the specimen of the *Ardha Māgadhī Dictionary*. It will, as far as I can see from the specimen, be a very useful work for all scholars interested in Jaina literature.

I have asked the Librarian of our University Library to order a copy of the work.

Yours truly

M. WINTERNITZ.

---

*10 August 1922.*

Dear Sir,

I am in receipt of your letter dated 26th/s which owing to my removal I could not answer sooner.

The prospectus formerly sent to me made a very favourable impression upon me and I shall be pleased to obtain with the help of this valuable work a wider knowledge of Prākṛit and the Jaina writings.

*Valerius street 171,*

**Amsterdam.**

Yours Truly,

B. TADDEGON.

---

Katmandu, Nepal,

6 th July 1922.

Sir,

I am in receipt of your post card dated 22-6-22 asking for my opinion. My opinion is that you are doing a very useful work and which will be greeted by all scholars. I wish to be one of your first subscribers, and I shall send you the amount as soon as required. I am sure that I shall get several subscriptioners from my colleagues and pupils at home.

My compliments also for the illustrations which are a very happy feature of the work. I am myself particularly interested in this line and I have been in communication with Mr P C Nahar for getting photos of several of his Jain pictures. Perhaps I shall visit Indore next September, and I shall not miss to visit you.

Yours sincerely,

SYLVAIN LEVI.

*Professor*

*an Collège de France.*

---

56-58 Walkeshwar Road,

Malabar Hill,

Bombay.

The 18th June 1922.

Dear Sir,

As far as I can judge from the specimen, it seems to me to be a work of a real importance and very useful for every student of Jaina religious works. Already the simple fact, that there was not

any up-to-date Ardha-Māgadhī Dictionary, shows the importance of such a work. It is an excellent idea to illustrate the explanations of the words by pictures, as very often it is very difficult for a man, who never has been in India and did not study Indian knowledge by the help of an Indian native, to understand some of the abstruse theories about the Indian idea about the world, the heavens, hell's etc without proper diagrams. Therefore this book will be useful also to such students, who never have had the opportunity either to come to India or to have an Indian teacher.

The parallel explanation of each word in English, Gujarati and Hindi together will be useful not only to the Indian students, but also to the Europeans, specially to those of Non-English nationality, who will be helped very often by the Hindi translation especially.

The only suggestion I may make, is to advise you to carry the work through the press as soon as possible, because the work is badly wanted by all students of Jainism, and at the same time to care, that the printer's mistakes may be eliminated up to the unavoidable minimum, then very often the Indian books of a high importance lose all their value by heaps of either corrected or uncorrected printers' mistakes, which make often the book if not entirely useless, then at least a great hindrance in the scientific study of the respective subjects.

Hoping this will satisfy you.

I remain

Yours truly,

DR. O. PERTOLD. Ph. D.

*Senate House*  
*College Square Calcutta*

29-8-1922

Dear Sir,

Your letter of 13th instant and a specimen of an illustrated *Ardha-Māgadhī Dictionary* are to hand I have gone through the specimen pages and find that the Dictionary will be a very useful guide to Philologists Prākṛitists and lovers of Jain literature. It will remove a great want of students of ancient Indian literature

To the students of *Māgadhī* now known as *Pālī*, it also will be very useful. There are many common words in these two languages. You will do a great service to the cause of *Māgadhī* literature by bringing out the proposed Dictionary.

I shall subscribe a copy of your dictionary later on

Wishing you all success in your noble undertaking

Yours faithfully

S PURNANAND.

---

*48 Indian Mirror Street*

**Calcutta**

1922

Dear Sir.

I note with pleasure the publication of the *Prākṛit Dictionary* undertaken by you. I am sure it will be a scholarly work and will prove very useful to scholars interested in *Prākṛit* language.

As encouragement, I wish to subscribe 3 copies of Ardha Māgadhī Dictionary which please note.

Yours faithfully,

PURANCHANDRA NAHAR.

---

*Camp Indore*

*27 th June 1922.*

My dear Mr Bhandari,

I have gone over the specimen of the Ardha Māgadhī Dictionary which when completed will be very helpful to the students as well as to those who are in research work. Being pentalingual it should be very useful to almost all educated people of North India as well as elsewhere. It is not only a Lexicon but it is an, Encyclopaedia not a mere Glossary but attempt has been made to explain as clearly as possible the numerous technical terms that are met in the Ardha Māgadhī Literature. The quotations themselves give references to a rich Bibliography.

Suggestions are unnecessary when you have already taken so much pains and diligence to make the Dictionary exhaustive. Suggestions will merely add to your labour. As for my opinion I can only say your work is highly creditable.

Yours sincerely,

I. W. JOHORY. M. A B.D.

*Prof. Indore Christian College*



# कर्त्तव्य-कौमुदी ।

हिन्दी भाषानुवाद सहित ।

सम्पादक

सचित्र अर्ध-मागधी कोष के रचयिता

शतावधानी मुनि श्री रत्नचन्द्रजी महाराज ।

पृष्ठ संख्या ५५० ]

[ मूल्य सजिल्द का रु. २)

मानवीय जीवन को सफल एवं समुन्नत बनाने के लिये जिन २ कर्त्तव्य कर्मों की परमावश्यकता है, वे सब सामान्य और विशेष रूप से इस ग्रन्थ में बतलाये गये हैं । इस परमोपयोगी ग्रन्थ को बनाकर महाराजश्री ने जनसमाज पर बड़ा भारी उपकार किया है । यह ग्रन्थ स्त्री, पुरुष, बाल, युवा और वृद्ध सबके लिये अनुपम उपदेश देने वाला सिद्ध हो चुका है । भारत की साक्षर समाज में इसका प्रकाश आदर है तथा हिन्दी के प्रसिद्ध २ समाचार पत्र और पत्रिकाओं द्वारा पर्याप्त प्रशंसित भी हो चुका है । गायकवाड राज्य में पारितोषिक और पुस्तकालयों के लिये स्वीकृत किया गया है । इस ग्रन्थ के प्रथम खण्ड में सामान्य कर्त्तव्य, दूसरे में विद्यार्थियों के कर्त्तव्य और तीसरे में गृहस्थों के कर्त्तव्य बतलाये गये हैं । जैन तथा जैनेतर सर्व साधारण के लिये यह ग्रन्थ उपयुक्त और आदेय है । सत्य, क्षमा, शील, ध्यान, नीति, धर्म, व्यवहार, व्यायाम, चिकित्सा, व्यसन-त्याग आदि २ का मर्मस्पर्शी उल्लेख करते हुए पति का पत्नी के प्रति कर्त्तव्य, स्त्री का पति के प्रति कर्त्तव्य, पिता पुत्र का, माता पुत्र का, बहिन भाई का, सास बहू का, विधवा का कर्त्तव्य आदि २ गृहस्थाश्रम के प्रधान २ अंगों का प्रतिपादन पूर्ण विवेचन के साथ इस शैली से किया गया है कि प्रत्येक मनुष्य इसे एक बार पढ़ते ही अपने जीवन को सफल बनाने के वास्ते प्रतिज्ञाबद्ध हो जाता है । अपने चरित्र को उच्चतम बनाकर ऐहलौकिक और पारलौकिक सुख प्राप्त करने की सदिच्छा वालों को तत्सादनभूत इस अमूल्य ग्रन्थरत्न को अवश्य पढ़ना चाहिये तथा इसमें विन्यस्त सामयिक, सर्वमान्य सिद्धान्तों का रहस्य हृदयङ्गम करके तदनुसार व्यवहार करना चाहिये । इस ग्रन्थ के प्रत्येक श्लोक में प्रसादगुण कूट २ कर भरा हुआ है । हरएक पद्य आत्मसात् करने योग्य है । माधुर्य और अर्थगाम्भीर्य को विशेष स्थान दिया गया है । ग्रन्थकर्त्ता की असाधारण विद्वत्ता, बुद्धिमत्ता, वाक्यचातुरी, नीतिनिपुणता, तत्वावधारणता, तथा धार्मिकता का एवं जनता की वर्तमान परिस्थिति का साक्षात्कार करने वालों को इस ग्रन्थ का अवश्य अवलोकन करना चाहिये ।

इस ग्रन्थ रत्न का गुजराती संस्करण हजारों की संख्या में विक्रय हुआ है ।

मिलने का पता.—मुन्शी केसरीमल मोतीलाल रांका अर्जौनवीस

ऑनरेरी मैनेजर, जैन पुस्तक प्रकाशक कार्यालय, व्यावर (राजपुताना)



